Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ कोबातीर्थमंडन श्री महावीरस्वामिने नमः ॥

॥ अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः ॥ ॥ गणधर भगवंत श्री सुधर्मास्वामिने नमः ॥

॥ योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥ ॥ चारित्रचूडामणि आचार्य श्रीमद् कैलाससागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

पुनितप्रेरणा व आशीर्वाद

राष्ट्रसंत श्रुतोद्धारक आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

जैन मुद्रित ग्रंथ स्केनिंग प्रकल्प

ग्रंथांक : १

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-३८२००७ (गुजरात)
(079) 23276252, 23276204
फेक्स : 23276249
Websiet : www.kobatirth.org
Email : Kendra@kobatirth.org

शहर शाखा

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
शहर शाखा
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
त्रण बंगला, टोलकनगर
परिवार डाइनिंग हॉल की गली में
पालडी, अहमदाबाद – ३८०००७
(079) 26582355

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भारत-भैषज्य-रत्नाकर

भाग १

रसवैद्य नगीनदास छगनलाल शाह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आयुर्वेदीय साहित्य में फार्माकोपिया के अभाव को ध्यान में रखकर इस ग्रन्थ को परिश्रमपूर्वक तैयार किया गया था और आज भी यह ग्रन्थ उतना ही उपयोगी है जितना तब था। इसमें क्वाथ, चूर्ण, अवलेह, गुटिका, घृत, तैल, रस इत्यादि प्रकरणों में विभक्त दस सहस्र से अधिक प्राचीन एवं अार्वाचीन प्रयोगों का संग्रह सैकड़ों ग्रन्थों का मन्थन करके किया गया है।

इस ग्रन्थ में कोश-शैली का अनुसरण किया गया है, जिससे इष्ट प्रयोग बिना किसी कठिनाई के ढूंढा जा सकता है। एक और लाभ इस शैली का यह है कि भिन्न-भिन्न ग्रन्थों और पृथक्-पृथक् अधिकारों में एक नाम के जितने प्रयोग पाए जाते हैं वे सब इसमें एक ही स्थान में आ गए हैं। उद्धरण जिन ग्रन्थों से लिए गए हैं उनके नाम एवं अधिकार भी दे दिए गए हैं। रोगानुसारिणी सूची "चिकित्सापथ-प्रदर्शिनी" नाम से अन्त में दे दी गई है, जिससे ग्रन्थ की व्यावहारिक उपयोगिता बहुत बढ़ गई है।

(सम्पूर्ण ५ भागों में) **मूल्य : रु० ५००**

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भारत-भैषज्य-रत्नाकर

प्रथम भाग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भारत-भैषज्य-रत्नाकर

प्रथम भाग

संग्रहकर्ता
रसवैद्य नगीनदास छगनलाल शाह

व्याख्याकार
भिषग्रत्न गोपीनाथ गुप्त

संशोधक
कविराज निवारणचन्द्र भट्टाचार्य

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

© ऊँझा आयुर्वेदिक फार्मेसी, ऊँझा (उत्तर गुजरात)

मोतीलाल बनारसीदास

मुख्य कार्यालय : बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली ११० ००७

शाखाएँ : चौक, वाराणसी २२१ ००१

अशोक राजपथ, पटना ८०० ००४

६ अपर स्वामी कोइल स्ट्रीट, मैलापुर, मद्रास ६०० ००४

प्रथम संस्करण : ऊँझा (उत्तर गुजरात), १६२४-३७

पुनर्मुद्रण : दिल्ली, १६८५

मूल्य : रु० ५०० (पांच भागों में सम्पूर्ण)

नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ७
द्वारा प्रकाशित तथा शान्तिलाल जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस, ए-४५,
फेज-१, नारायणा, नई दिल्ली २८ द्वारा मुद्रित।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीमती सुशीलादेवीजी श्रीयुत् वैद्य गोपीनाथ गुप्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऊंझा आयुर्वेदिक फार्मसीके संस्थापक

रसवैद्य नगीनदास छगनलाल शाह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकाशकीय

आज से पांच-छः दशक पूर्व उत्तर गुजरात के ऊँझा-जनपद-स्थित "ऊँझा आयुर्वेदिक फार्मेसी" नामक आयुर्वेदीय औषधालय के अध्यक्ष रसवैद्य नगीनदास छगनलाल शाह द्वारा पांच भागों में प्रकाशित इस ग्रंथ का जनता की मांग पर पुनर्मुद्रण प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष हो रहा है।

आयुर्वेदीय साहित्य में फार्माकोपिया के अभाव को ध्यान में रखकर इस ग्रंथ को परिश्रमपूर्वक तैयार किया गया था और आज भी यह ग्रंथ उतना ही उपयोगी है जितना तब था। इसमें क्वाथ, चूर्ण, अवलेह, गुटिका, घृत, तैल, रस इत्यादि प्रकरणों में विभक्त दस सहस्र से अधिक प्राचीन एवं अर्वाचीन प्रयोगों का संग्रह सैंकड़ों ग्रंथों का मन्थन करके किया गया है।

इस ग्रंथ में कोश-शैली का अनुसरण किया गया है जिससे इष्ट प्रयोग बिना किसी कठिनाई के ढूंढा जा सकता है। एक और लाभ इस शैली का यह है कि भिन्न-भिन्न ग्रंथों और पृथक्-पृथक् अधिकारों में एक नाम के जितने प्रयोग पाए जाते हैं वे सब इसमें एक ही स्थान में आ गए हैं। उद्धरण जिन ग्रंथों से लिए गए हैं उनके नाम एवं अधिकार भी दे दिए गए हैं। रोगानुसारिणी सूची "चिकित्सा-पथ-प्रदर्शिनी" नाम से अंत में दे दी गई है, जिससे ग्रंथ की व्यावहारिक उपयोगिता बहुत बढ़ गई है।

आशा है कि पाठक हमारे इस प्रयास का अवश्य स्वागत करेंगे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशेष उपयोगी टिप्पणियों की सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
कषाय व्याख्या	५ से ७	अवलेह व्याख्या	४४ से ४५
स्वरस	५	पाक व्याख्या	४५
कल्क	६	घृत व्याख्या	५५ से ५६
कल्क में प्रक्षेप विधि	६	तैल व्याख्या	६३ से ६४
क्वाथ	६	अणुतैल की व्यवहार विधि तथा गुण	६५ से ६६
हिम	६ से ७	आसवारिष्ट व्याख्या	६६ से ७०
फाण्ट	७	रसनिर्माण सम्बन्धी विशेष ज्ञातव्य बातें	७६
कषाय में प्रक्षेप विधि	७	पुटपाक विधि	१३०
अनुवासन बस्ति व्याख्या	६ से १०	कवल व्याख्या	१३४
गण्डूष व्याख्या	१२	मण्डनिर्माण विधि	१४१
चूर्ण व्याख्या	१६	क्षारोदक	१४२ से १४३
गुटिका व्याख्या	२८	रसायन विषय में ज्ञातव्य	१४२
गोलियों पर सोने-चांदी के वर्क चढ़ाना	२८	शीताद	२१५
गुग्गुलु व्याख्या	४२		

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संक्षेप-सूची

अग्नि०	अग्निमांद्य
अर्श० चि०	अर्श चिकित्सा
अजी० चि०	अजीर्ण चिकित्सा
अति०	अतिसार
अनु०	अनुवादक
अनु० त०	अनुपान तरङ्गिणी
अपस्मा०	अपस्मार
अ० पि०	अम्लपित्त
अरु०	अरुचि
अर्बु०	अर्बुद
अवलेहा०	अवलेहाधिकार
अश्म०	अश्मरी चिकित्सा
आ० वा०	आमवात
आ० वे० प्र०	आयुर्वेद प्रकाश
आ० वे० सं०	आयुर्वेद संग्रह
आसवा०	आसवाधिकार
उ०	उल्लास
उ० अ०	उत्तरखण्ड, अध्याय
उ० खं०	उत्तर खण्ड
उ० चि०	उदर चिकित्सा
उ:मा०	उन्माद
उप०	उपदंश
उरु०	उरुस्तम्भ
उल्ला०	उल्लास
औ० मे०	औपसर्गिक मेह
अं० वृ०	अण्डवृद्धि
क० अ०	कल्पस्थान, अध्याय
कफ० रो०	कफरोग
कर्ण०	कर्णरोग
काम०	कामला
कु०	कुष्ठ
कु० चि०	कुष्ठ चिकित्सा
कुरं० चि०	कुरण्ड चिकित्सा
कृ०	कृमि
कृ० रो०	कृमिरोग
क्ष० चि०	क्षय चिकित्सा
क्षय०	,, ,,
क्षु० रो०	क्षुद्ररोग
क्षुद्र०	,,
खं०	खंड
ग० गं०	गलगण्ड
ग० नि०	गदनिग्रह
गं० मा०	गण्डमाला
गु० चि०	गुल्म चिकित्सा
ग्र० अ०	ग्रहणी अधिकार
च०	चरक
च० द०	चक्रदत्त
च० पा०	चक्रपाणि
च० सं०	चरक संहिता
चि० अ०	चिकित्सा स्थान, अध्याय
चूर्णा०	चूर्णाधिकार
छ० चि०	छर्दि चिकित्सा
ज्व० चि०	ज्वर ,,
ज्वरा०	ज्वरातिसार ,,
त०	तरङ्ग
तर०	तरङ्ग
त्वग्दो०	त्वग्दोष
ध्व० भं०	ध्वज भंग
नपुंसका०	नपुंसकामृत
न० मृ०	,,
ना० रो०	नासारोग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ना० व्र०	नाड़ी व्रण	यो० व्या०	योनिव्यापद्
ने ० रो०	नेत्ररोग	र० अ०	रसायन अधिकार
नेत्र०	,,	रक्ताति०	रक्तातिसार
पट०	पटल	र० खं०	रसायन खण्ड
प्र०	प्रथम	र० च०	रस चण्डांशु
परि०	परिशिष्ट	र० चि०	रस चिन्तामणि
पाका०	पाकाधिकार	र० वि०	रक्तपित्त
पां० चि०	पांडु चिकित्सा	र० प्र० सु०	रस प्रकाश सुधाकर
प्रमे०	प्रमेह चिकित्सा	र० मं०	रस मंगल
प्र० चि०	,, ,,	र० यो० सा०	रस योग सागर
प्र० वि०	प्रथम विलास	र० र०	रस रत्नाकर
प्ली०	प्लीहा चिकित्सा	र० र० स०	रस रत्नसमुच्चय
प्ली० चि०	,, ,,	र० रा०सुं०	रस राज सुन्दर
बा० रो०	बालरोग	र० सं० क०	रस संकेत कलिका
बृ० नि०	बृहन्निघण्टु रत्नाकर	र० सा०	रस सागर
बृ० नि० र०	,, ,,	र० सा० सं०	रसेन्द्रसार संग्रह
बृ० यो० त०	बृहद्योगतरङ्गिणी	रसा० सा०	रसायन सार
भग०	भगन्दर	रसे० चि०	रसेन्द्र चिन्तामणि
भग्न०	भग्नाधिकार	रा० नि०	राजनिघण्टु
भा०	भाग	रा० य०	राजयक्ष्मा
भा० प्र०	भाव प्रकाश	रो०	रोग
भै० र०	भैषज्य रत्नावली	वं० से०	वंगसेन
म० खं०	मध्यम खण्ड	वा० चि०	वायु चिकित्सा
मदा०	मदात्यय	वाजी०	वाजीकरण
मसू० चि०	मसूरी चिकित्सा	वा० र०	वातरक्त
मिश्राधि०	मिश्राधिकार	वा० व्या०	वात व्याधि
मु० रो०	मुखरोग	वि०	विलास
मुख०	,,	वि० ज्व०	विषम ज्वर
मू० कृ०	मूत्रकृच्छ्र	विष०	विषाधिकार
मूत्रा०	मूत्राघात	विस०	विसर्प
मेद०	मेदोरोग	वी० स्त०	वीर्यस्तम्भ
यो० त०	योग तरङ्गिणी	वै० क० द्रु०	वैद्यकल्पद्रुम
यो० चि०	योग चिन्तामणि	वै० जी०	वैद्य जीवन
यो० र०	योग रत्नाकर	वै० श० सिं०	वैद्यक शब्द सिंधु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्र० चि०	व्रण चिकित्सा	सन्नि०	सन्निपात
व्र० शो०	व्रण शोथ	संग्रह०	संग्रहणी
व्या० यो० सं०	व्यासयोग संहिता	सं० चि०	,, चिकित्सा
शा० ध०	शार्ङ्गधर	सु० सं०	सुश्रुत संहिता
शा० नि० भू०	शालिग्राम निघण्टु भूषण	सू० अ०	सूत्रस्थान, अध्याय
		सो० रो०	सोम रोग
शि० रो०	शिरोरोग	स्त्री० रो०	स्त्री रोग
शिरो०	,,	स्थौ०	स्थौल्याधिकार
शु० मे०	शुक्रमेह	स्व० भं०	स्वरभंग
शू०	शूल	हा० सं०	हारीत संहिता
श्ली०	श्लीपद	हिक्काचि०	हिक्काचिकित्सा
श्वा०	श्वास	हि० श्वा०	हिक्काश्वास
श्वा० का०	श्वास कास	हृ० रो०	हृद्रोगाधिकार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ	परि० पृष्ठ
मंगलाचरण	३	
कषाय प्रकरण	५	
कषाय व्याख्या	५	
स्वरस	५	
कल्क	६	
कल्क में प्रक्षेप देने की विधि	६	
क्वाथ	६	
हिमविधि	६	
फाण्ट विधि	७	
कषाय में प्रक्षेप विधि	७	
अ		
क्वाथ	८ तथा	३९२
चूर्ण	१७	३९६
गुटिका	२९	४०२
गुग्गुलु	४३	४०६
अवलेह	४५	४०६
घृत	५६	४०९
तैल	६३	४१२
आसवारिष्ट	६९	
लेप	७४	४१८
धूप	७६	४२४
धूम्र	७६	
अञ्जन	७६	४२४
नस्य	७८	४२७
रस	७९	४२९
मिश्र	७९	४६२
आ		
क्वाथ	१२९ तथा	४६७
चूर्ण	१३५	४६९
गुटिका	१३६	४७३
गुग्गुलु	१३८	
अवलेह	१३९	४७४
रसायनानि	१४२	
घृत	१४७	४७५
तैल	१४९	४७६
आसव	१५०	
लेप	१५०	४७७
नस्य	१५०	४७८
रस	१५१	४७९
कल्प		४८१
मिश्र	१५१	४८२
इ		
कषाय	१५६	४८६
चूर्ण	१५७	४८६
गुटिका	१५९	४८८
अवलेह	१६०	४८८
घृत		४९०
तैल		४९१
लेप		४९२
नस्य		४९४
रस	१६१	४९४
मिश्र		४९५

For Private And Personal Use Only

विषय	पृष्ठ	परि० पृष्ठ
उ		
कषाय	१६४	४९७
चूर्ण	१६६	४९८
गुटिका	१६७	
लेह	१६८	५००
घृत	१६८	५०२
तैल	१६८	
आसव	१६९	
लेप	१७०	५०२
धूप	१७२	५०३
अंजन		५०३
रस	१७३	५०४
मिश्र		५०९
ऊ		
कषाय	१८४	
चूर्ण	१८४	
ऋ		
	१८५	
ए		
कषाय	१८५	५१०
चूर्ण	१८७	५११
गुटिका	१८९	५१३
गुग्गलु	१९०	५१३
पाक	१९०	
लेह	१९२	५१४
घृत		५१४
तैल	१९३	५१५
अरिष्ट	१९४	
लेप	१९५	५१६
धूम्र		५१८
अंजन		५१८
नस्य		५१८
रस	१९५	५१९
मिश्र		५२०
ऐ		
कषाय		५२२
रसायन	१९६	
घृत	१९६	
तैल	१९७	
ओ		
लेप	१९७	५२२
मिश्र		५२३
औ		
कषाय	१९८	
मिश्र		५२७
अं		
कषाय	१९८	
तैल	१९८	
लेप	१९९	
अंजन	१९९	
क		
कषाय	१९९	५२७
चूर्ण	२१०	५३५
गुटिका	२२१	५४९
गुग्गलु	२३२	५५२
लेह	२३३	५५२
घृत	२५०	५५५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषय	पृष्ठ	परि० पृष्ठ
तैल	२५८	५६१
आसवारिष्ट	२६९	५७१
लेप	२७४	५७४
धूप	२७७	५८४
अंजन	२७७	५८५
नस्य	२७८	५८६
रस	२७९	५९१
मिश्र		६२२
ख		
कषाय	३२०	६३१
चूर्ण	३२२	६३१
गुटिका	३२३	६३२
लेह	३२७	६३२
घृत	३३२	६३४
तैल	३३३	६३५
आसवारिष्ट	३३३	
लेप	३३६	
रस	३३६	६३५
मिश्र		६४०
उपसंहार	३३८	
आयुर्वेदीय परिभाषा	३३९	

चिकित्सा-पथ-प्रदर्शिनी की अनुक्रमणिका

		परि०	पृ०
१.	अग्निमांद्याजीर्णाधिकार	३५३	६४३
२.	अतिसाराधिकार	३५४	६४४
३.	अपस्माराधिकार	३५५	६४५
४.	अर्बुदाधिकार	३५५	६४६
५.	अम्लपित्ताधिकार	३५५	६४५
६.	अरोचकाधिकार	३५६	६४६
७.	अर्शाधिकार	३५६	६४६
८.	अश्मर्यधिकार	३५७	६४७
९.	आमवाताधिकार	३५८	६४८
१०.	उदररोगाधिकार	३५९	६४८
११.	उदर्दाधिकार	३५९	
	उदावर्ताध्मान		६४९
१२.	उन्मादाधिकार	३५९	
१३.	उपदंशाधिकार	३६०	६४९
१४.	कर्णरोगाधिकार	३६०	६४९
१५.	कासाधिकार	३६१	६५०
१६.	कुष्ठाधिकार	३६२	६५१
१७.	कृमिरोगाधिकार	३६३	६५३
१८.	गण्डमालाधिकार	३६४	६५४
१९.	गुल्मरोगाधिकार	३६४	६५५
२०.	छर्द्यधिकार	३६५	६५६
२१.	जलोदराधिकार	३६५	
२२.	ज्वराधिकार	३६५	६५६
२३.	ज्वरातिसाराधिकार	३६८	६५८
२४.	तृष्णाधिकार	३६८	
२५.	त्वग्रोगाधिकार	३६८	
२६.	दाहाधिकार	३६९	६५८
	धात्वादिशोधनमारण		६५८
२७.	नासारोगाधिकार	३६९	६५९
	निद्रानाश		६६०
२८.	नेत्ररोगाधिकार	३६९	६६०
२९.	पाण्डुरोगहलिमका-धिकार	३७०	६६१

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

		परि०	पृ०
३०.	प्रमेहाधिकार	३७१	६६१
३१.	बस्तिप्रकरण	३७२	
३२.	बालरोगाधिकार	३७२	६६२
३३.	भगन्दराधिकार	३७३	६६३
३४.	भग्नाधिकार	३७३	
३५.	मदात्ययाधिकार	३७३	६६३
३६.	मसूरिकाधिकार	३७३	६६३
३७.	मिश्राधिकार	३७४	६६३
३८.	मुखरोगाधिकार	३७५	६६४
३९.	मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघाताधिकार	३७५	६६४
४०.	मूर्छाधिकार	३७६	६६५
४१.	मेदोरोगाधिकार	३७६	
४२.	यकृतप्लीहाधिकार	३७६	६६५
४३.	रक्तपित्ताधिकार	३७६	६६५
४४.	रसायन-वाजीकरणाधिकार	३७७	६६६
	रसोपरसादिशोधन		
४५.	राजयक्ष्माधिकार	३७९	६५३
४६.	वातव्याध्यधिकार	३८०	६६८
४७.	वातरक्ताधिकार	३८२	
	विद्रधि		६६९
४८.	विरेचनाधिकार	३८२	६६९
४९.	विषाधिकार	३८३	६६९
५०.	विसर्पाधिकार	३८३	६७०
५१.	वृद्धयधिकार	३८३	६७०
५२.	व्रणाधिकार	३८३	६७१
५३.	शिरोरोगाधिकार	३८४	६७२
५४.	शीतपित्ताधिकार	३८४	६७२
५५.	शूलाधिकार	३८५	६७२
५६.	शोथाधिकार	३८६	६७३
५७.	श्लीपदाधिकार	३८६	६७३
५८.	सन्निपाताधिकार	३८६	
५९.	संग्रहणी-रोगाधिकार	३८७	६५५
६०.	स्त्रीरोगाधिकार	३८८	६७४
	स्नायुक		६७६
६१.	स्वरभेदाधिकार	३८९	६७५
६२.	हिक्काश्वासाधिकार	३८९	
६३.	हृद्रोगाधिकार	३९०	६७६
६४.	क्षुद्ररोगाधिकार	३९०	६५४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रथम भाग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ॐ

भारत-भैषज्य-रत्नाकरः

अथ मङ्गलाचरणम्

(१)

संसारमन्धतमसावृतमेतमादा-
वालोक्य यस्य करुणाकिरणैरिदानीम् ।
पश्यामि दीप्तमभितोऽमितदृश्यभावं
तं भास्करोपमगुरुं मुहुरानतोऽस्मि ॥

(२)

आयासेन विनैव मर्म भिषजो जानन्तु सन्तोऽखिलम्
आयुर्वेदमहौषधेरिति धिया "भैषज्यरत्नाकरः" ।
वैद्यश्रील 'नगीनदास' सुधिया यः संगृहीतो मुदा
गोपीनाथभिषक् तनोमि विवृतिं तस्यात्र हिन्दी गिरा ॥

—इति—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीधन्वन्तरये नमः

अथ कषाय--प्रकरणम्

कषाय–व्याख्या

कषाय पांच प्रकारके होते हैं

यथा—स्वरसश्च तथा कल्कः क्वाथश्च हिमफाण्टकौ ।
ज्ञेयाः कषायाः पञ्चैते लघवः स्युर्यथोत्तरम् ॥

अर्थात् स्वरस, कल्क, काथ, हिम, और फाण्ट यह कषाय के पांच भेद हैं। ये उत्तरोत्तर लघु होते हैं, अर्थात् स्वरस सबसे भारी, कल्क उससे हलका इसी प्रकार फाण्ट सबसे हल्का होता है।

स्वरस–

आहतात्तत्क्षणाकृष्टादुद्रव्यात् क्षुण्णात्समुद्भवेत् ।
वस्त्रनिष्पीडितो यश्च रसः स्वरस उच्यते ॥

(गिलोय आदि के समान) गीली औषधियोंको कूटकर कपड़ेमें निचोड़नेसे जो रस निकलता है उसे स्वरस कहते हैं। यदि गीली औषधियां प्राप्त न होसकें तो:—

कुडवं चूर्णितं द्रव्यं क्षिप्तञ्च द्विगुणे जले ।
अहोरात्रं स्थितं तस्मात् भवेद्वा रस उत्तमः ॥

औषधिका एक कुड़व चूर्ण लेकर उसको दूने जलमें भिगोकर २४ घंटे रक्खा रहने दे फिर (प्रातःकाल मलकर) छानले। इसको भी स्वरस कहते हैं। अथवाः—

आदाय शुष्कद्रव्यं वा स्वरसानामसम्भवे ।
जलेऽष्टगुणिते साध्यं पादशिष्टश्च गृह्यते ॥

सूखी औषधियोंको आठ गुने जलमें पकाकर चौथाई बाकी रहनेपर छानलें; यह भी स्वरसका काम दे सकता है।

यथा–चीता, इन्द्रयव और आमले आदिका स्वरस न मिलनेपर इस विधिसे सिद्ध किया हुआ कषाय काममें ला सकते हैं।

स्वरसकी मात्रा–स्वरस (गीले द्रव्यसे निकाला हुआ) भारी होनेके कारण २॥ तोलेकी मात्रा में सेवन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना चाहिये और अग्निपर सिद्ध किये हुए स्वरस का ५ तोलेकी मात्रामें व्यवहार करना चाहिये।

नोट—आजकल प्रायः स्वरसको एक तोला और अग्निपर सिद्ध किये हुए स्वरस को दो तोलेकी मात्रा में व्यवहार किया जाता है।

कल्क—

द्रव्यमार्द्रं शिलापिष्टं शुष्कं वा सजलं भवेत्।
प्रक्षेपावापकल्कास्ते तन्मानं कर्षसम्मितम्॥

गीली औषधियों को योंही अथवा (इमली आदि) सूखी औषधियों को पानीके साथ पीस कर तय्यार की हुई लुगदीको कल्क, प्रक्षेप और आवाप कहते हैं। इसकी शास्त्रोक्त मात्रा १। तोला है किन्तु आजकल प्रायः ६ माषेकी मात्रामें प्रयोग किया जाता है।

कल्कमें प्रक्षेप देनेकी विधिः—

कल्के मधु घृतं तैलं देयं द्विगुणमात्रया।
सितां गुडं समं दद्याद्द्रवो देयश्चतुर्गुणः॥

यदि कल्क में शहद्, घी या तेल मिलाना हो तो कल्कसे दुगना और चीनी या गुड़ मिलाना हो तो कल्क के समान तथा (कांजी आदि) द्रव पदार्थ मिलाने हों तो कल्कसे चौगुने मिलाने चाहियें।

क्वाथ—

कर्षादौ तु पलं यावद् दद्यात् षोडशिकं जलम्।
ततस्तु कुडवं यावत् तोयमष्टगुणं क्षिपेत्॥
चतुर्गुणमतश्चोर्ध्वं यावत्प्रस्थाधिकं जलम्।
तज्जलं पाययेद् धीमान् कोष्णं मृद्वग्निसाधितम्।
शृतः क्वाथः कषायश्च निर्यूहः स निगद्यते॥

१। तोला से लेकर ५ तोला परिमाण पर्यन्त कूटी हुई औषधियोंको १६ गुने जलमें पकाना चाहिये; ५ तोले से २० तोले तक आठगुणे जलमें पकावें और इससे आगे ८० तोला तक चौगुने जलमें पकावें, इस जल को मन्द २ आंचमें पकाकर चतुर्थांश शेष रहनेपर छान लें। इसको क्वाथ, शृत, कषाय और निर्यूह कहते हैं। क्वाथकी शास्त्रोक्त मात्रा २॥ तोले से ५ तोले तक है। आजकल प्रायः २ तोले औषधियोंको ३२ तोले जलमें पकाकर ८ तोले शेष रहनेपर छानकर व्यवहार करते है।

हिमविधिः—

क्षुण्णं द्रव्यपलं सम्यक् षड्भिर्नीरपलैः प्लुतम्।
निशोषितं हिमः स स्यात्तथा शीतकषायकः॥

(नोट) क्वाथ २४ घंटे रखने से खराब हो जाता है। नवीन ज्वरमें कषाय नहीं देना चाहिए।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस्य मानं मतं पाने पलद्वयमितं बुधैः ।

५ तोले द्रव्यको भली प्रकार कूटकर रातको ३० तोले जलमें भिगोदे प्रातःकाल छानले, इसे हिम और शीतकषाय कहते हैं। इसकी शास्त्रोक्त मात्रा १० तोले है।

फाण्टविधिः—

क्षुण्णे द्रव्यपले सम्यग् जलमुष्णं विनिःक्षिपेत् ।
मृत्पात्रे कुडवोन्मानं ततस्तु स्नावयेत्पटात् ॥
स स्याच्चूर्णद्रवः फाण्टस्तन्मानंद्विपलोन्मितम् ।

(चायकी भांत्ति) कुटे हुए ५ तोले द्रव्यको गरम २ खौलते हुए २० तोले पानीमें मिट्टीके बर्तनमें डालदें फिर कुछ देर बाद छान लें। इसे चूर्णद्रव तथा फाण्ट कहते हैं। इसकी शास्त्रोक्त मात्रा १० तोले है।

(नोट १) क्वाथ सदैव मिट्टीके बर्तनमें बनाना चाहिये।

(नोट २) क्वाथ तैयार करते समय बर्तन का मुख ढकना न चाहिये क्योंकि ऐसा करनेसे क्वाथ दुर्जर होजाता है यथा शार्ङ्गधरोऽप्याह—

अपिधानमुखे पात्रे जलं दुर्जरतां व्रजेत् ।
तस्मादावरणं त्यक्त्वा क्काथादीनां विनिश्चयः ॥

कषायमें प्रक्षेपविधिः—

क्काथे क्षिपेत्सितामंशैश्चतुर्थाष्टमषोडशैः ।
वातपित्तकफातङ्के विपरीतं मधु स्मृतम् ॥
जीरकं गुग्गुलं क्षारं लवणं च शिलाजतु ।
हिंगु त्रिकटुकं चैव क्काथे शाणोन्मितं क्षिपेत् ॥
क्षीरं घृतं गुडं तैलं मूत्रं चान्यद्द्रवं तथा ।
कल्कं चूर्णादिकं क्काथे विक्षिपेत्कर्षसम्मितम् ॥

क्वाथमें-मिश्री वातज रोगोंमें चतुर्थांश, पित्तज रोगो में ८वां भाग और कफजरोगों में १६वां भाग मिलानी चाहिये। यदि मधु मिलाना हो तो इसके विपरीत अर्थात् वातमें १६ वां अंश, पित्तमें आठवां और कफमें चतुर्थांश मिलावें। ज़ीरा, गूगल, क्षार, लवण, शिलाजीत, हींग और त्रिकुटा* डालना हो तो एक शाण (३ मासा) डालना चाहिये। दूध, घी, गुड़, तेल, मूत्र और अन्य कोई द्रव पदार्थ तथा कल्क या चूर्ण आदि क्वाथ में मिलाना हो तो १। तोला लेना उचित है।

***सोंठ, मिर्च, पीपल**

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकारादि क्वाथ

[१] अजमोदादि क्वाथः [बृ० नि० र०]

अजमोदा वचा हिंगु लवणं बिडपूर्वकम् ।
शुंठी सुवर्चला कृष्णा दुह्लारी रिंगणी तथा ॥
बीजपूरस्य बीजानि तुम्बुरु सम भागतः ।
एतत्क्काथस्य पानेन यांति शूलान्यनेकशः ॥

अजमोद, बच, हींग, विडनमक, सोंठ, हुलहुल, पीपल, दुह्लारी, कटेरी, बिजौरेके बीज, तुम्बरु * सब समान भाग । इस क्वाथ के पीने से अनेक प्रकारके शूल नष्ट होते हैं ।

[२] अतिविषादि क्वाथः [बृ० नि० र०]

अतिविषाघनवालकधातकी-
कुटजदाडिमलोध्रमथोदकी ।
विहतमेभिरिदं सलिलं पिबेद्,
ग्रहणिकाविजितः प्रसभं नरः ॥
सर्वज्वरहरंज्ञेयं ग्रहणीवेगनाशनम् ।
अरोचमान्द्यदलनं धातुवर्द्धनकारकं ॥

अतीस, नागरमोथा, सुगन्धबाला, धायके फूल, कुड़ेकीछाल, अनारदाना, लोध, औरपाठा । सब समान भाग लेकर यथा विधि क्वाथ वनाकर पीनेसे प्रबल ग्रहणी, ज्वर, अरुचि और मन्दाग्नि आदिका नाश होता तथा धातुवृद्धि होती है ।

[३] अतस्यादि क्वाथः [बृ० नि० र०]

अतसीकुसुमसमंगावटप्ररोहास्तृणां भसा +पीताः।
साधयंति रक्तपित्तं यदि भुंक्ते मुद्गयूषेण ॥

अलसीके फूल, मजीठ, बडके अंकुर, कुश आदि पचं तृण । सब समान भाग लेकर यथा विधि क्वाथ बनाकर पीवे और पथ्यमें मूंगका यूष (और भात) खानेसे रक्तपित्तका नाश होता है ।

[४] अनुवासनोपगमहाकषाय दशकः [च० सं० सू० अ० ४]

रास्नासुरदारुबिल्वमदनशतपुष्पावृश्चीर-पुनर्नवाश्वदंष्ट्राग्निमन्थस्योनाका इतिदशेमानि अनुवासनोपगानि भवन्ति ।

रास्ना, देवदारु, बेल, मैनफल, सोया, श्वेत-पुनर्नवा, लालपुनर्नवा, गोखरू, अरणी, सोनापाठा । ये दश औषधियां अनुवासनके लिए उपयोगी हैं । (अनुवासन-देखो पृ० ९)

[५] अभयादि क्वाथः [भै० र०]

(१)

अभयामलकं दारु धन्याकं विश्वभेषजम् ।
द्राक्षा च शारिवेत्येषां क्वाथः क्लोमगदापहः ॥

हरड़, आमला, देवदारू, धनियां, सोंठ, दाख, सारिवा । यह क्वाथ क्लोम रोगोंमें लाभदायक है ।

[६] अभयादि क्वाथः [शा० ध० म० खं० अ० र०]

(२)

अभयामुस्तधन्याकरक्तचन्दनपद्मकैः ।
वासकेन्द्रयवोशीरगुडूचीकृतमालकैः ॥
पाठानागरतिक्ताभिःपिप्पलीचूर्णयुक्शृतम् ।
पिवेत्त्रिदोषज्वरजित् पिपासाकासदाहनुत ॥
प्रलापश्वासतन्द्राघ्नं दीपनं पाचनं परम् ।
विण्मूत्रानिलविष्टम्भवमिशोषारुचिच्छिदम् ॥

---

* तुम्बुरु-नैपाली धनिया

\+ तृण=(कुशः काशः शरोदर्भ इक्षुश्चेति तृणोद्भवं) कुशा, कांस, दाब, सरकड़ा और ईख । या गन्धतृण ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरड़, नागरमोथा, धनियां, लाल चन्दन, पद्माख, बांसा, इन्द्रयव, खस, गिलोय, अमलतास का गूदा, पाठा, सोंठ, और कुटकी। इनका क्वाथ बनाकर उसमें पीपलका चूर्ण डालकर पीने से त्रिदोषज्वर, पिपासा, खांसी, दाह, प्रलाप, श्वास, तन्द्रा, मल, मूत्र और अपान वायुका विबन्ध, वमन, शोष और अरुचिका नाश होता है तथा अग्नि दीप्त होती है।

[७] अभयादि क्वाथः (३)

(बृ. नि. र., भा. ४। ज्वर चि.)

अभयापर्पटमुस्ताकटुकीशम्पाकगोस्तनीक्वाथः।
पीतः करोति नाशं रुग्दाहरुजो न संदेहः॥

हरड़, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, कुटकी, अमलतासका गूदा और दाख। यह क्वाथ रुग्दाह सन्निपातको नष्ट करता है इसमें सन्देह नहीं है।

अनुवासन–बस्ति

पिचकारी द्वारा गुदामार्गसे तरल पदार्थ अन्दर पहुंचानेका नाम "बस्ति" (पिचकारी–डूश, एनिमा) है। उसीका एक भेद "अनुवासन बस्ति" है। यह बस्ति घी तेल आदि स्नैहिक पदार्थोंसे दी जाती है इसलिए इसे स्नेहबस्ति भी कहते हैं।

आयुर्वेद शास्त्र में सोना आदि धातुओं और बांस, नल, सींग तथा जानवरोंके अंडकोष आदिसे बस्ति बनानेकी क्रिया लिखी है परन्तु आजकल अंग्रेजी दवा बेचनेवालोंके यहां जो रबरकी नलीवाली बस्ति मिलती है उसीसे समस्त प्रकारका बस्तिकर्म सिद्ध हो सकता है।

बलवान मनुष्योंको बस्ति देनेके लिये ३० तोला, मध्यम बलवालेको १५ तोला और निर्बल मनुष्यको बस्ति देनेके लिये ७½ तोला स्नेह लेना चाहिये।

अनुवासन बस्तिका एक भेद मात्राबस्ति भी है इसमें ५ तोलेसे १० तोले स्नेह लिया जाता है।

अनुवासन बस्ति रुक्ष और बात रोगोंके लिये हितकारक है परंतु रोगीकी जठराग्नि तीव्र हो तभी यह बस्ति देनी चाहिए। मन्दाग्निवाले, कुष्ठी, प्रमेही, उदररोगी और स्थूल शरीर वाले पुरुषको स्नेहबस्ति न देनी चाहिये।

स्नेहबस्ति वसंत ऋतुमें सायंकाल और ग्रीष्म, वर्षा तथा शरद ऋतुमें रातमें देनी चाहिये।

पहिले रोगीको विरेचन दें, फिर ६ दिन बाद पूर्ववत् शक्ति आनेपर स्नेह बस्ति देनी चाहिये।

जिस रोज स्नेहबस्ति देनी हो उस दिन रोगीके शरीरमें तेल मर्दन करके पानीकी भापसे पसीना देना चाहिये और चावलोंकी पतली पेया आदि शास्त्रोक्त भोजन कराके जरा देर टहलाना चाहिये, इसके बाद यदि आवश्यकता हो तो मलमूत्रादि त्याग कराके यथा विधि बस्ति देनी चाहिये। उस रोज रोगीको अधिक स्निग्ध भोजन देना हानिकारक है।

बस्ति लेनेके समय रोगीको छींकना, जंभाई लेना या खांसना आदि कार्य न करने चाहियें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्नेहबस्ति लेनेके बाद रोगीको हाथ पैर सीधे फैलाकर लेटा रहना चाहिये । यदि स्नेहबस्तिका स्नेह मलयुक्त होकर २४ घंटे के अन्दर स्वयमेव बाहर न निकले तो रोगीको तीक्ष्ण निरूहण बस्ति, तीक्ष्ण फलवर्ति (शाफा), तीक्ष्ण जुलाब और तीक्ष्ण नस्य देने चाहियें ।

बस्ति देनेके बाद यदि समस्त स्नेह बाहर आगया हो और रोगीकी जठराग्नि तीव्र हो तो उसे सायंकालमें पुराने चावल या साठी चावलका आहार देना चाहिये।

[८] अभयादि क्वाथः (४)

(वृ० नि० र०)

अभयामलकी कृष्णा चित्रकोऽयं गणो मतः ।
दीपनः पाचनो भेदी सर्वश्लेष्मज्वरापहः ॥

हैड़, आमला, पीपल, चित्रक इनका क्वाथ दीपन, पाचक, भेदक और कफज्वर नाशक है ।

[९] अमृतादि क्वाथः (१)

(वृ० नि० र०, यो. र., । सन्नि. चि)

अमृतापटोलवासाव्योषयुतस्तंद्रिके क्काथः ।

गिलोय, पटोलपत्र, बांसा, सोंठ, मिर्च और पीपल इनका काथ तन्द्रिक सन्निपातको नष्ट करता है ।

[१०] अमृतादि क्वाथः (२)

(र० र०, भै० र., वृ. मा., च. द., वृ. यो. त; बं. से । विसर्प)

अमृतवृषपटोलं मुस्तकं सप्तपर्णं ।
खदिरमसितवेत्रं निम्बपत्रं हरिद्रे ॥
विविधविषविसर्पान्कुष्ठविस्फोटकण्डू-
रपनयति मसूरीं शीतपित्तज्वरञ्च ॥
(अत्रविरेचनार्थं गुग्गुलं केचित्क्षिपन्ति)

गिलोय, बांसा, पटोलपत्र, नागरमोथा, सतौने की छाल, खैर सार, कालाबेत, नीमके पते, हल्दी और दारुहल्दी । इनका काथ विविध प्रकार के विषदोष, विसर्प, कोढ़, विस्फोटक, खुजली, मसूरिका, शीतपित्त और ज्वरका नाश करता है ।

नोट—कोई कोई वैद्य इसमें विरेचनके लिये शुद्ध गूगल भी डालते हैं ।

[११] अमृतादि क्वाथः (३)

(वृ. यो. त, त. ७८; वृ. मा; हिक्का; यो. र., वृ. नि. र. । कासा०)

अमृतानागरफञ्जीव्याघ्रीपर्णी[१]सुसाधितः क्काथः।
पीतः सकणाचूर्णः कासश्वासौ जयत्याशु ॥

गिलोय, सोंठ, भारंगी, कटेली और शालपर्णी। इनके क्वाथमें पीपलका चूर्ण मिलाकर पिलाने से कास और श्वास शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं ।

[१२] अमृतादि क्वाथः (४)

(वृ० नि० र०, यो. र. । सन्निपात.)

अमृतारुबुकविश्वासुरतरुरास्नाहरीतकीक्काथः ।
सकलसमीरणरोगान् प्रातः सद्यो हरेत् पीतः ॥

गिलोय, अरण्डकी जड़, सोंठ, देवदारू, रास्ना और हरड़ । इनका क्वाथ, प्रातःकाल पीनेसे, सब प्रकारके वायु रोगों को शीघ्र ही नष्ट कर देता है ।

[१३] अमृतादि क्वाथः (५)

(भै० र०, वृ. मा. । मूत्रकृच्छ्र)

अमृता नागरं धात्री वाजिगन्धा त्रिकण्टकम् ।
प्रपिबेद्वातरोगार्तः सशूलो मूत्रकृच्छ्रवान् ॥

---

१ पाठान्तर—व्याघ्रपर्णी (वृ नि. र.)
व्याघ्रीपर्णास (वृ. मा.)
पर्णासः=काली तुलसी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गिलोय, सोंठ, आमला, असगन्ध और गोखरू, इनका क्वाथ वातव्याधि, शूल और मूत्रकृच्छ्र को नष्ट करता है।

[१४] अमृतादि क्वाथः (६)

(वृ० नि० र०, यो. र.। शीतपित्त.)

अमृतारजनीनिम्बधन्वायासैः पृथक् शृतम्।
प्राणिनां प्राणदं चैतच्छीतपित्तसमाचरेत्॥

गिलोय, हल्दी, नीमकी छाल और धमासा। इनमेंसे प्रत्येकका क्वाथ शीतपित्त से मरते हुवे रोगियोंके लिए प्राणदान देनेवाला है।

[१५] अमृतादि क्वाथः (७)

(वृ० नि० र० ज्वरा०)

अमृतानागरं मुस्तानिशाह्वययवासकैः।
वातज्वरे प्रदातव्यःकृष्णयुक्तकषायकः॥

गिलोय, सोंठ, नागरमोथा, हल्दी और जवासा। इनके क्वाथ में पीपलका चूर्ण डालकर पीनेसे ज्वरका नाश होता है।

[१६] अमृतादि हिमः

(वृ० नि० र० ज्वरा०)

अमृताया हिमः प्रातः ससितः पैत्तिकं ज्वरम्।
वासायाश्च तथा कासरक्तपित्तज्वरान् जयेत्॥

गिलोयके शीत कषायमें मिश्री मिलाकर प्रातः काल सेवन करनेसे पैत्तिक ज्वर नष्ट होता है। एवं वासा (अडूसा) का शीतकषाय सेवन करनेसे कास, रक्तपित्त और ज्वरका नाश होता है।

[१७] अमृतादि क्वाथः (८)

(वृ० नि० र०, बं० से०। ज्वरा०)

अमृतादशमूलीभ्यां साधितं विधिवज्जलम्।
सन्निपातज्वरं हन्यात्त्रयोदशविधं नृणां॥

गिलोय और दशमूलका क्वाथ १३ प्रकारके सन्निपातों का नाश करता है।

[१८] अमृतादि क्वाथः (९)

(हा० सं०)

अमृतापर्पटीधात्रीक्वाथः पित्तज्वरं हरेत्।

गिलोय, पर्पटी और, आमला इन का क्वाथ पितज्वरका नाश करता है।

[१९] अमृतादि क्वाथः (१०)

(वृ० नि० र०। रक्तपि०)

अमृता मधुकश्चैव खर्जूरं गजपिप्पली।
क्वाथः क्षौद्रयुतो ह्येष रक्तपित्तविकारनुत्॥

गिलोय, मुलैठी, खजूर और गजपीपल। इनका क्वाथ शहद डालकर पीनेसे रक्तपित्तका नाश होता है।

[२०] अमृताष्टकः

(भा० प्र०, भै. र०, च. द.। ज्वरा०।)

अमृताकटुकारिष्टपटोलघनचन्दनम्।
नागरेन्द्रयवं चैतदमृताष्टकमीरितम्॥
क्वथितं सकणाचूर्णं पित्तश्लेष्मज्वरापहम्।
हृल्लासारोचकच्छर्दितृष्णादाहनिवारणम्॥

गिलोय, कुटकी, नीमकी छाल, पटोलपत्र, नागरमोथा, चन्दन, सोंठ और इन्द्रजौं। इस अमृताष्टक क्वाथ में पीपल का चूर्ण डाल कर पीने से पित्त-कफ-ज्वर, उबकाई, अरुचि, छर्दि, तृषा और दाहका नाश होता है।

[२१] अम्बष्ठादिगणः

(सु० सं. सू. अ. ३८)

अम्बष्ठाधातकीकुसुमसमंगाकट्वङ्गमधुकबि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्वपोशकासावररोध्रपलाशनन्दीवृक्षाः पद्मकेशराणि चेति ।

पाठा, धायके फूल, मजीठ, अरलु(श्योनाक), मुलैठी, बेलगिरी, लोध्र,ढाककीछाल, तुनकीछाल और पद्मकेशर । इन औषधियोंके समूहको "अम्बष्ठादिगण" कहते हैं । (यह गण पक्वातिसार नाशक, पित्तशामक और व्रणरोपक है)

[२२] अर्कादि क्वाथः (१)

(वै० जी०, यो० र० । ज्वरा०)

अर्कानंताकिराताभरतरुरसनासिंदुवारोग्रगंधातर्कारीशिग्रुपंचोषणघुणदयितामार्कवाणांकषायः सद्यस्तीव्रांस्त्रिदोषाऽपहरति धनुर्मारुतं दंतबंधम् शैत्यंगात्रेषुगाढं श्वसनकसनकं सूतिकावातरोगान्

आककी जड़, अनन्तमूल, चिरायता, देवदारु, रास्ना, सफेद संभालू, बच, अरणी, सौंजनेकी छाल, पंचोषण (पीपल, पीपला मूल, चव, चीता, सोंठ) अतीस और भांगरा । इनका क्वाथ, भयङ्कर सन्निपात, धनुर्वात, दन्तबन्ध, तीव्र शीत, श्वास, खांसी, सूतिकारोग तथा वायुके रोगोंका नाश करता है ।

[२३] अम्लीका पानकम्

(भा० प्र०)

पक्वाम्लिका सिता शीतवारिणा वस्त्रगालिता ।
एलालवङ्गकर्पूरमरिचैरवधूलिता ।
पानकस्यास्य गण्डूषं धारयित्वा मुखे मुहुः ।
अरुचिं नाशयत्येव पित्तं प्रशमयेत्तथा ॥

पक्की इमली और मिश्री को ठंडे पानीमें भिगो कर मल और छान कर उसमें इलायची, लौंग, कपूर और मरिचका चूर्ण डाल कर बार बार गण्डूष× लेनेसे अरुचि का नाश होता है और पित्तको शमन करता है ।

[२४] अर्कादि क्वाथः (२)

(वृ० नि० र०, यो० र०, भा० प्र० । सन्नि०)

भास्वन्मूलं जीरकव्योषभार्गी
व्याघ्रीभृङ्गीपुष्करं गोजलेन ॥
सिद्धं सद्यः शीतगात्रातिमोह-
श्वासश्लेष्मोद्रेककासान्निहन्ति ॥

आककी जड़, जीरा, त्रिकुटा (सोंठ, काली मिर्च और पीपल) भारंगी, कटेली, काकड़ासिंगी, पोखर मूल । गोमूत्रमें इनका काढ़ा बनाकर पीनेसे शीताङ्ग सन्निपात, अत्यन्त मोह, श्वास, कफ और खांसीका शीघ्र नाश होता है ।

[२५] अर्कादि क्वाथः (३)

(वृ० नि० र०, यो० र० । सन्निपा०)

अर्कग्रंथिकशिग्रुदारुचविकानिर्गुण्डिकापिप्पलीरास्नाभृंगपुनर्नवानलवचाभूनिंबशुंठी कृतः ॥ क्वाथःसंहरति त्रिदोषमखिलं स्वापानिलंसूतिकाम् नानामारुतशैत्यशान्तिकृदपस्मारस्मरत्र्यंबकः ॥

आककी जड़, पीपलामूल, सौंजनेकी छाल, दारुहल्दी, चव्य, संभालू, पीपल, रास्ना, भांगरा, पुनर्नवा, चीता, बच, चिरायता और सोंठ । इनका क्वाथ सन्निपात ज्वर, तंद्रा, वायु, सूतिका रोग, अनेक प्रकारके वातरोग, शीत और अपस्मार (मिरगी) का नाश करता है ।

× गण्डूष—स्नेह, दूध, कषाय आदि द्रव द्रव्य मुखमें धारण करनेका नाम गण्डूष है । इसमें द्रव पदार्थ ५ तोले और चूर्णादि मिलाना हो तो १ तोला लेना चाहिये । जब तक मुख कफसे न भर जाय और नेत्र तथा नासिकासे पानी न निकलने लगे तब तक गण्डूषके पदार्थको मुखमें भरे रहना चाहिये ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[२६] अर्कादि गणः

(सु० सं० सू० अ० ३८)

अर्कालर्ककरञ्जद्वयनागदन्तीमयूरकभार्गीरास्नेन्द्रपुष्पीक्षुद्रश्वेतामहाश्वेतावृश्चिकाल्यलवणास्तापसवृक्षश्चेति ।

अर्कादिकोगणो ह्येष कफमेदोविषापहः ।
कृमिकुष्ठप्रशमनो विशेषाद् व्रणशोधनः ॥

सफैद और लाल आक, लता करंज, वृक्ष करंज, नागदन्ती, चिरचिटा, भारंगी, रास्ना, कलिहारी, श्वेत अपराजिता, कृष्ण अपराजिता, वृश्चिकाली(बिछवा घास), मालकांगनी और इंगुदी-वृक्ष। ये अर्कादिगण कफ, मेद, विष, कृमि, कोढ़ नाशक और विशेष कर व्रणशोधक हैं।

[२७] अर्कादि क्वाथः (४)

(यो० र०)

सेकस्तथाऽर्कवर्षाभूनिम्बक्काथेन शोफजित् ।
गोमूत्रेणापि कुर्वीत सुखोष्णेनावसेचनम् ॥
सौवर्चलसमं धृष्टं सर्षपैश्च प्रलेपनम् ॥

आक, पुनर्नवा और नीमकी छाल। इनका क्वाथ बनाकर सेकनेसे सूजनका नाश होता है। सूजन के ऊपर मन्दोष्ण गोमूत्रका अवसेचन करने से तथा सौंचल और सरसोंका लेप करनेसे भी होता है।

[२८] अर्क पुष्पयोगः

(यो० र०)

पक्वं तैलेऽर्कजं पुष्पं रुधिरस्रावकारि च ।

आकके फूल तेलमें पकाकर सेवन करनेसे स्त्रियोंका मासिक धर्म खुलकर होता है।

[२९] अर्कांकुरादिस्वरसयोगः

(वृ० नि० र०, भा. प्र०, व. से० । कर्णरोगा०)

अर्कांकुरानम्लपिष्टान् सतैलान्लवणान्वितान् ।
सन्निदध्यात्सुधाकांडे कोरिते मृत्स्नया वृते ॥
पुटपाकक्रियास्विन्नं पीडयेदारसागमात् ।
सुखोष्णं तद्रसं कर्णे प्रक्षिपेच्छूलशांतये ॥

आकके अंकुरोंको कांजी या नींबूके रसमें पीसकर तेल और नमक मिलाकर उसे थोहरके डंडेमें भरकर उसपर कपड़मिट्टी लगादे, फिर पुटपाक विधिसे पकाकर उसका रस निकाले उस रसको गुनगुना करके कानमें डालने से कानके दर्दका नाश होता है।

[३०] अर्कपत्रस्वरसयोगः

(वृ० नि० र०, भा० प्र०, बं० से., वृं० मा०; चं० द० । कर्णरोगा०)

अर्कस्यपत्रं परिणामपीत-
माज्येनलिप्तं शिखियोगतप्तम् ।
आपीड्य तस्याम्बु सुखोष्णमेव
कर्णे निषिक्तं हरतीति शूलम् ॥

आकके पके हुए पीले पत्तों पर घी लगाकर आग पर तपाकर उनका अर्क (स्वरस) निकालकर गुनगुना करके कान में डालनेसे कानका दर्द मिटता है।

[३१] अर्शोघ्नमहाकषाय दशकः

(च० सं० सू० अ० ४)

कुटजबिल्वचित्रकनागरातिविषाभयाधन्वयासकदारुहरिद्रावचाचव्यानीति दशेमानि अर्शोघ्नानि भवन्ति ।

कुड़ेकी छाल, बेलकी छाल, चीता, सोंठ,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतीस, हैड़, धमासा, दारुहल्दी, बच और चव्य। ये दस औषधियां बवासीर नाशक हैं।

[३२] अरल्वादि क्वाथः

(वृ० नि० र० । ज्वराति०)

अरल्वतिविषामुस्ताशुण्ठीबिल्वं सदाडिमम्।
सर्वज्वरहरो क्वाथः सर्वातीसारनाशनः॥

अरलु, (सोनापाठा), अतीस, नागरमोथा, सोंठ, बेलगिरी और अनारदाना। यह क्वाथ सब प्रकारके ज्वर और अतिसार (दस्तों) को नष्ट करता है।

[३३] अष्टादशांग क्वाथः (१)

(भाव० प्र०, यो. र., वृ. मा., यो० चिं., च. द., बं. से० । सन्नि० । वृ० यो० त० । त० ५९)

दशमूली शठी भृङ्गी पौष्करं सदुरालभम्।
भार्गी कुटजबीजश्च पटोलं कटुरोहिणी॥
अष्टादशाङ्ग इत्येष सन्निपातज्वरापहः।
कासहृद्ग्रहपार्श्वार्तिश्वासहिक्कावमीहरः॥

दशमूल, कपूर कचरी, काकड़ासिंगी, पोखरमूल, धमासा, भारङ्गी, इन्द्रयव, पटोलपत्र और कुटकी। यह अष्टादशाङ्ग क्वाथ सन्निपात ज्वर, खांसी, हृद्ग्रह, पसलीशूल, श्वास, हिचकी और वमनका नाश करता है।

[३४] अष्टादशांग क्वाथः (२)

(भा० प्र०, वृ० मा०, धन्व०; र० र०, च० द० सन्नि० । वृ० यो० त० । त० ५९)

भूनिम्बदारुदशमूलमहौषधाब्द-
तिक्तेन्द्रबीजधनिकेभकणाकषायः।
तन्द्राप्रलापकसनारुचिदाहमोह-
श्वासत्रिदोषजनितज्वरनाशनःस्यात्॥

चिरायता, देवदारु, दशमूल, सोंठ, नागरमोथा, कुटकी, इन्द्रयव, धनियां और गजपीपल। इनका क्वाथ तंद्रा, प्रलाप, खांसी, अरुचि, दाह, मोह, श्वास, और सन्निपात ज्वर नाशक है।

[३५] अर्शमें तक्रप्रयोगः

(च० सं० । चि० अ० ६)

त्वचं चित्रकमूलस्य पिष्ट्वा कुम्भं प्रलेपयेत्।
तक्रं वा दधि वा तत्र जातमर्शोहरं पिबेत्॥
वातश्लेष्मार्शसां तक्रात् परं नास्तीह भेषजम्।
तत् प्रयोज्यं यथादोषं सस्नेहं रूक्षमेव वा॥
सप्ताहं वा दशाहं वा पक्षं मासमथापि वा।
बलकालविशेषज्ञो भिषक् तक्रं प्रयोजयेत्॥

चीतेकी जड़की छालको पीसकर घड़ेमें लेप करके उसमें दही जमादे, उस दही को या उससे बनाये हुए तक्र (मट्ठे) को पीनेसे बवासीरका नाश होता है। वायु और कफकी बवासीर में तक्रसे अच्छी और कोई दवा नहीं है। छाछ (तक्र) को दोषोंके अनुसार बिना घी निकाले या घी निकालकर (वातज में बिना घी निकाले और कफज में घी निकालकर) सात दिन, दस दिन, पन्द्रह दिन, अथवा एक मास तक बल और कालके जाननेवाला वैद्य सेवन करावे।

[३६] अर्शनाशकयोगः

(च० सं० । चि० अ० ९)

दुःस्पर्शकेन बिल्वेन यमान्या नागरेण वा।
एकैकेनापि संयुक्ता पाठा हन्त्यर्शसां रुजम्॥
प्रागुक्तान् यमके भृष्टान्सक्तुभिश्चावचूर्णितान्।
करञ्जपल्लवान् दद्याद् वातवर्चोऽनुलोमनान्॥
मदिरां वा सलवणां शीधुं सौवीरकं तथा।
गुडनागरसंयुक्तं पिबेद्वा पौर्वभक्तिकम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जवासा, बेलकीछाल, अजवायन और सोंठ। इनमेंसे एक एक के साथ भी पाठेका क्वाथ करके पीनेसे बवासीरकी पीड़ाका नाश होता है। घृत और तेलमें पहिले वर्णन किये हुए करञ्जवे के पत्तोंको भूनकर सतू के साथ सेवन करने से अधोवायु और मल यथोचित–मार्ग–गामी होते हैं।

बवासीर में मदिरामें सैंधा नमक मिलाकर अथवा सीधु और सौवीरकसुरामें गुड़ मिलाकर पीना लाभदायक है।

[३७] अश्वत्थादि-प्रक्षालनम्

(वृ० नि० र० उप०)

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षवटवेतसजः शृतः।
व्रणशोथोपदंशानां नाशकः क्षालने स्मृतः॥

पीपल (अश्वत्थ), गूलर, पिलखन, बड़ और बेतके क्वाथ से धोनेसे घाव, सूजन और उपदंश (आतशक) का नाश होता है।

[३८] अश्वगंधादि गणः

(यो० र० । वा० व्या०)

वाजिगन्धा बलास्तिस्रो दशमूली महौषधम्।
गृध्रनख्यौ च रास्ना च गणो मारुतनाशनः॥

असगंध, खरैंटी, कंघी, गंगेरन, दशमूल, सोंठ, दो प्रकार की नखी और रास्ना। यह गण वायु नाशक है।

[३९] अश्वीपुरीषरस योगः

(वृ० नि० र० । शूले)

तुरंगीपुरीषोदकं हिंगुयुक्तं
महाशूलहारि प्रदिष्टं भिषग्भिः।
हिंगुविश्वाबिडैर्वापितोऽसौ
कुलत्थोद्भवो वा कषायः प्रदिष्टः॥

घोड़ी की लीदके रसमें हींग मिलाकर पिलाने से भयङ्कर शूल का भी नाश होता है। अथवा इसी रसके या कुल्थीके क्वाथके साथ हींग, सोंठ और बिडलवण मिलाकर पिलाने से भी शूलका नाश होता है।

[४०] अश्वत्थपत्ररस योगः

(वृ० नि० र०, भा० ५। र० पि०)

अश्वत्थपत्राग्ररसात् षडंशो
बोलोऽथ तस्माद् द्विगुणं मधु स्यात्।
रक्तप्रवाहं हृदयस्थितं वा
वातो यथाभ्रं हरते तथैव॥

पीपल (अश्वत्थ) के पत्तों के अग्रभागका रस १ भाग, बोलगूंद ६ भाग, मध १२ भाग सबको मिलाकर पीने से रक्तप्रवाह और हृदयमें संचित रक्त दूर होता है जैसे पवन बादलों को नष्ट करता है।

[४१] अश्वत्थवल्कलादि योगः

(वृ० नि० र० । छर्दि)

अश्वत्थवल्कलं शुष्कं दग्धं निर्वापितं जले।
तज्जलं पानमात्रेण छर्दिं जयति दुर्जयाम्॥

पीपलकी सूखी छालको जलाकर पानीमें बुझाकर उस पानी को पीने से प्रबल वमन (छर्दि) का नाश होता है।

[४२] अशोक क्वाथः

(वृ० नि० र० । भा० ६ स्त्री० रो०)

अशोकवल्कलक्वाथशृतं दुग्धं सुशीतलम्।
यथाबलं पिबेत्प्रातस्तीव्रासृग्दरनाशनम्॥

अशोककी छाल के क्वाथ से दूध को पकाकर ठंडा करके बलके अनुसार प्रातःकाल पीने से प्रबल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्तप्रदरका नाश होता है।

[४३] अरडूसी स्वरसः

(वृ० नि० र० । मसू० चि०)

वृषपत्ररसं दद्यात्पानार्थं मधुसंयुतम्।
कफजायां मसूर्यांतु कठिनायां विशेषतः॥

वांसे के पत्तोंका रस मधु मिलाकर पिलानेसे कफज मसूरिका (शीतला) को नाश करता है। विशेषकर कठिना शीतला में उपयोगी है।

अथ चूर्ण-प्रकरणम्।

चूर्ण-व्याख्या

अत्यन्तशुष्कं यद्द्रव्यं सुपिष्टं वस्त्रगालितम्
चूर्णं तच्च रजः क्षोदस्तस्य पर्याय उच्यते

अर्थात्—अत्यन्त शुष्क द्रव्यको पीसकर कपड़ेमें छान लिया जाय तो उसको चूर्ण, रज और क्षोद कहते हैं।

यदि एकाधिक औषधियोंका मिश्रित चूर्ण बनाना हो तो प्रत्येक औषधिका पृथक् पृथक् चूर्ण करनेके बाद तोल करके सबको यथा आवश्यक परिमाणमें मिलाना चाहिये क्योंकि सब औषधियोंको मिलाकर एक साथ कूटनेसे किसी दवाका छानस अधिक और किसीका कम निकलनेके कारण उनके परिमाण में अन्तर पड़ जाता है।

चूर्णकी मात्रा

कर्षश्चूर्णस्य कल्कस्य गुटिकानाञ्च सर्वशः
द्रव शुक्त्या स लेढव्यः पातव्यश्च चतुर्द्रवः

अर्थात्—चूर्ण, कल्क और गुटिका आदि की मात्रा १। तोला है। यदि इन्हें द्रव पदार्थ में मिलाकर चाटना होतो वह (द्रवपदार्थ) २॥ तोला, और यदि पीना होतो द्रवपदार्थ चूर्णादिसे ४ गुना लेना चाहिये। यह शास्त्रोक्त मात्रा है परंतु आजकल प्रायः चूर्ण लगभग ३ मासे की मात्रा में सेवन किये जाते हैं। चूर्ण दो मास पश्चात हीन वीर्य हो जाते हैं:—

मासद्वयात्तथा चूर्णं हीनवीर्यत्वमाप्नुयात्।

अतएव दो मास से अधिक पुराने चूर्ण इस्तेमाल करने ठीक नहीं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकारादि चूर्ण प्रकरणम्

[४४] अग्निकरं चूर्णम्

(व्यास० यो० सं०)

शर्करा दाडिमं पथ्या रुचकं गिरिमल्लिका।
एषामग्निकरं चूर्णमतिसारहरं परम् ॥

चीनी, अनारदाना, हैड़, काला नमक, कूड़े-कीछाल। इनका चूर्ण अग्नि दीपक और अतिसार नाशक है।

[४५] अग्निमुखं चूर्णम् (१)

(बं० से; अजी० चि०)

चित्रकहवुषाग्रन्थिकपिप्पली-
सौवर्चलाजमोदाभिः।
धान्यशटीयवपुष्करक्षाराजाजितिन्तिडीकैश्च ॥
चव्ययवानीदाडिममृद्वीकैलाम्लवेतसैश्च समैः।
अग्निमुखोऽयं चूर्णः काञ्जिकेन मस्तुना सीधुना॥
पीतोऽन्यतमेन नृभिर्गुल्मारुचि-
वन्हिसादशूलानि।
दुर्नामप्लीहोदरकफवातगदान्विनाशयति ॥

चीत, हाऊबेर, पीपलामूल, पीपल, काला नमक, अजमोद, धनिया, कपूरकचरी, इन्द्रयव, पोखरमूल, यवक्षार, सफेद जीरा, तिंतड़ीक, चव, अजवायन, अनारदाना, मुनक्का, इलायची और अमलवेत, सब समान भाग। इस अग्निमुख चूर्ण को कांजी वा मस्तु के साथ पीने से गुल्म, अरुचि, अग्निमांद्य, शूल, बवासीर, तिल्ली और कफज तथा वातज रोगोंका नाश होता है।

[४६] अग्निमुखं चूर्णम् (२)

(बं० से;च. प्र०,वृ. मा; यो० र०। अजी०चि०)

हिंगुभागो भवेदेको वचा च द्विगुणा भवेत्।
पिप्पली त्रिगुणा ज्ञेया शृङ्गवेरं चतुर्गुणम् ॥
यवानिका पञ्चगुणा षड्गुणा च हरीतकी।
चित्रकः सप्तगुणितः कुष्ठं चाष्टगुणं भवेत् ॥
एतद् वातहरं चूर्णं पीतमात्रं प्रसन्नया।
पिबेद्दध्ना मस्तुना वा सुरया कोष्णवारिणा ॥
सोदावर्तमजीर्णं च प्लीहानमुदरं तथा।
अङ्गानि यस्य शीर्यन्ते विषं वा येन भक्षितम्॥
अर्शोहरो दीपनश्च शूलघ्नो गुल्मनाशनः।
कासं श्वासं निहन्त्याशु तथैव क्षयनाशनः ॥
चूर्णो ह्यग्निमुखो नाम्ना न क्वचित्प्रतिहन्यते॥

हींग १ भाग, बच २ भाग, पीपल ३ भाग, सोंठ ४ भाग, अजवायन ५ भाग, हरड़ ६ भाग, चित्ता ७ भाग और कूठ ८ भाग,इनका चूर्ण बनाकर मात्रानुसार प्रसन्ना सुरा के साथ पीने से वायु का नाश होता है। तथा इसे दही, मस्तु, सुरा अथवा उष्ण जलके साथ सेवन करनेसे उदावर्त, अजीर्ण, तिल्ली, ऐसा उदररोग जिसमें अङ्ग विशीर्ण हो जाते हों तथा विषदोष का नाश होता है। यह चूर्ण बवासीर नाशक, दीपक, शूलहर, गुल्म-नाशक, खांसी, श्वास नाशक और क्षय को हरने वाला है। यह अग्निमुख चूर्ण कहीं भी निष्फल नहीं होता।

[४७] अग्निमुखं लवणम्

(यो० र०। उ० चि०)

चित्रकत्रिवृतादन्तीत्रिफलारुचकैः समैः।
यावन्त्येतानि चूर्णानि तावन्मात्रन्तु सैन्धवम्॥
भावयित्वा स्नुहीक्षीरैः स्नुक्काण्डे प्रक्षिपेत्ततः।
मृत्पङ्केनानुलिप्याथ प्रक्षिपेज्जातवेदसि ॥
सुदग्धं च ततो ज्ञात्वा शनैर्वैद्यः समुद्धरेत।
तक्रेण पीतं तच्चूर्णं यकृत्प्लीहोदरापहम् ॥
एतदग्निमुखं नाम्ना लवणं वन्हिवर्धनम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चीता, निशोत, त्रिफला, दन्ती, काला नमक, सब चीज़ें समान भाग और सबके बराबर सैंधा नमक लेकर चूर्ण करके थोहर के दूधकी भावना दे फिर थोहर के मोटे डंडे को भीतरसे खोखला करके बीचमें इसे भरदे, इस स्नुही कांड को मिट्टी से लेप करके अग्नि में दग्ध करे फिर चूर्ण बना कर रक्खे। इसे तक्र के साथ पीनेसे तिल्ली, जिगर और उदर रोगों का नाश होता है तथा अग्नि दीप्त होती है।

[४८] अजमोदादि चूर्णम् (१)

(वृ० नि० र०, वृ० यो० त०, स्व० भं०)

अजमोदां निशां धात्रीं क्षारं वन्हिं विचूर्णयेत्।
मधुसर्पिर्युतं लीढं त्रिदोषस्वरभंगनुत् ॥

अजमोद (अजवायन), हल्दी, आमला, यवक्षार, और चीता, इनका चूर्ण मधु और घी के साथ चाटने से त्रिदोषज स्वर–भंग का नाश होता है।

[४९] अजमोदादि चूर्णम् (२)

(शा० ध०, म० खं० अ० ६, वृ० मा०, यो० र० । अति०)

अजमोदा मोचरसं सशृङ्गवेरं सधातकीकुसुमम्।
गोदधिमथितयुक्तं गङ्गामपि वाहिनीं रुन्ध्यात्॥

अजमोद (अजवायन), मोचरस, सोंठ और धायकेफूल। इनका चूर्ण बनाकर गायके तक्र के साथ पीने से प्रबल अतिसार का नाश होता है।

[५०] अजमोदादि चूर्णम् (३)

(वृ० नि० । भा० ५ शू०)

अजमोदा वचा कुष्ठमम्लवेतससैन्धवम्।
सर्जिक्षारं तथा पथ्या त्रिकटु ब्रह्मदंडिका ॥
मुस्ता सुवर्चला विश्वा लवणं विडपूर्वकम्।
पीतं तक्रान्विते चूर्णममीषां सर्वशूलहृत् ॥

अजमोद (अजवायन), बच, कूठ, अम्लवेत, सैंधानमक, सज्जीखार, हैड़, त्रिकुटा, ब्रह्मदण्डी, नागरमोथा, हुलहुल, सौंठ और बिडलवण। यह चूर्ण तक्र के साथ पीनेसे सब प्रकार के शूलोंका नाश होता है।

[५१] अजमोदादि चूर्णम् (४)

(वृ० नि० र० भा० ५ । शू०)

अजमोदाभयापाठा त्रिकटुः सम चूर्णकम् ॥
भुक्तमुष्णांभसाऽजीर्णं शूलनिर्मूलनं क्षणात् ॥

अजवायन, हैड़, पाठा, त्रिकुटा, सब चीजोंको समान भाग चूर्ण करके गरम पानी के साथ खाने से अजीर्णका नाश होता है और शूल तो क्षण भरमें निर्मूल हो जाता है।

[५२] अजमोदादि चूर्णम् (५)

(शा० ध०, म० खं० अ. ६, यो० चि०)

अजमोदा विडंगानि सैन्धवं देवदारु च।
चित्रकः पिप्पलीमूलं शतपुष्पा च पिप्पली ॥
मरिचं चेति कर्षांशं प्रत्येकं कारयेद् बुधः।
कर्षास्तु पंच पथ्याया दश स्युर्वृद्धदारकात् ॥
नागराच्च दशैव स्युः सर्वाण्येकत्र चूर्णयेत्।
पिबेत्कोष्णजलेनैव चूर्णं श्वयथुनाशनम् ॥
आमवातरुजं हन्ति सन्धिपीडां च गृध्रसीम्।
कटीपृष्ठगुदस्थां च जंघयोश्च रुजं जयेत् ॥
तूनीप्रतूनीविश्वाचींकफवातामयाञ्जयेत्।
समेन वा गुडेनास्य वटकान्कारयेद् भिषक् ॥

अजमोद, बिडंग, सैंधा नमक, देवदारु, चीता, पीपलामूल, सोया, पीपल और काली मिर्च। प्रत्येक १। तोला; हैड़ ६। तोला, विधारा १२॥ तोला, सोंठ १२॥ तोला। सबका चूर्ण बनाकर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एकत्र मिलालें। इस चूर्णको गर्म पानी के साथ सेवन करने से सूजन, आमवात, गठिया, गृध्रसी, कमर, पीठ, गुद, जंघा आदि की पीड़ा, तूनि, प्रतूनि, विश्वाचि तथा कफ और वायु के रोगोंका नाश होता है। इस चूर्ण को समान भाग गुड़ में मिलाकर मोदक भी बना सकते है।

[५३] अजमोदादि चूर्णम् (६)

(वृ० नि० र० । वा० चि०)

अजमोदा कणा रास्ना गुडूची विश्वभेषजम्।
शतपुष्पाश्वगन्धा च शतमूली समांशतः ॥
सुलक्ष्णं चूर्णमेतेषां भक्षितं सर्पिषा सह।
हृत्कुक्षिकोष्ठकण्ठस्थं मारुतं हन्ति वेगतः ॥

अजमोद (अजवायन), पीपल, रास्ना, गिलोय, सोंठ, सोया, असगन्ध और शतावर। सब समान भाग। इनका चूर्ण करके घीके साथ खानेसे हृदय, कुक्षि (कोख) उदर और कण्ठगत वायु वेगपूर्वक शान्त हो जाती है।

[५४] अजाज्यादि चूर्णम्

(भै० र० । ग्र० चि०)

पलद्वन्द्वमजाज्यास्तु पलैकं यावशूकजम्।
अम्बुदं द्विपलं ज्ञेयं फणिफेनपलं तथा ॥
अर्कमूलभवं चूर्णं चतुःपलमितं स्मृतम्।
अजाज्यादिकमेतद्धि हन्त्युग्रं ग्रहणीगदम् ॥
सरक्तमथ नीरक्तमतीसारं सुदारुणम्।
ज्वरातिसारं शमयेद्विषूचीं घोररूपिणीम् ॥

सफेद जीरा १० तोला, यवक्षार ५ तोला, नागर मोथा १० तोला, अफीम ५ तोला और आककी जड़ २० तोला। यह चूर्ण प्रबल संग्रहणी रक्त सहित अतिसार या रक्त रहित ज्वरातिसार और घोर विसूचिका (हैज़े) का नाश करता है।

[५५] अजित अगद

(सु० सं० क० अ० ५)

विडङ्गपाठात्रिफलाजमोदा
हिङ्गूनि वक्त्रं त्रिकटूनि चैव।
सर्वश्च वर्गो लवणः सुसूक्ष्मः
सचित्रकः क्षौद्रयुतो निधेयः ॥
शृङ्गे गवां शृङ्गमयेन चैव
प्रच्छादितः पक्षमुपेक्षितश्च।
एषोऽगदः स्थावरजङ्गमानां
जेता विषाणामजितोहि नाम्ना ॥

बायविडंग, पाठा, त्रिफला, अजमोद, हींग, तगर, त्रिकुटा, लवणवर्ग (पांचो लवण) और चीता। इन सबका महीन चूर्ण करके शहद मिलाकर उसे गायके सींगमें भरदे और फिर उस सींगको १५ दिन तक सींगोंके ढेर में दबा रहने दे। फिर निकालकर काममें लावे। यह अगद स्थावर और जंगम विषोंका नाश करता है।

[५६] अतिविषादि चूर्णम् (१)

(च० सं० चि० अ० १५)

सामे सातिविषाव्योषलवणक्षारहिङ्गुवत्।
निःक्वाथ्य पाययेच्चूर्णं कृत्वा वा कोष्णवारिणा॥

आमयुक्त संग्रहणी में–अतीस, त्रिकुटा, सेंधा, नमक, यवक्षार और हींग इस चूर्णको उष्ण जलके साथ सेवन करनेसे सामग्रहणी रोग नष्ट होता है।

(५७) अतिविषादि चूर्णम् (२)

(वागभट। उ० अ० २)

मधुनाऽतिविषाशृङ्गीपिप्पलीर्लेहयेच्छिशुम्।
एकां वातिविषां कासज्वरच्छर्दिरुपद्रुतम् *॥

* कासज्वरादिभिरुपद्रुतमिति ससुचित पाठः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केवल अतीसका चूर्ण अथवा—अतीस, काकड़ासींगी और पीपल के चूर्ण को शहदके साथ चटानेसे बालकोंकी खांसी ज्वर और छर्दि का नाश होता है।

[५८] अतिविषादि चूर्णम् (३)

(यो० र० स्नायुका०)

अतिविषमुस्तकभार्ङ्गीविश्वौषध-
पिप्पलीविभीतानाम्।
चूर्णं तन्तुकमिघ्नं पुंसामुष्णेन
वारिणा पीतम्॥

अतीस, नागरमोथा, भारङ्गी, सोंठ, पीपल और बहेडा इनका चूर्ण गरम पानीके साथ सेवन करनेसे स्नायुक (नहरवा) नष्ट होता है।

[५९] अनन्तादि चूर्णम्

(वृ० नि० र०, वृ० यो० त०)

अनन्तं वालकं मुस्तं नागरं कटुरोहिणीम्।
सुखाम्बुना प्रागुदयात्पिबेदक्षसमं रवेः॥
एतत् सर्वज्वरान् हन्ति दीपयत्याशु चानलम्॥

अनन्तमूल, सुंगधवाला, नागर मोथा, सोंठ और कुटकी इनका १। तोला चूर्ण प्रातःकाल कुछ गरम (मन्दोष्ण) पानी के साथ सेवन करनेसे सब प्रकारके ज्वरों का नाश होता है और अग्नि दीप्त होती है।

[६०] अपामार्ग बीजादि चूर्णम्

(वृ० नि० र० । अर्श०)

अपामार्गस्य बीजानि वह्निः शुण्ठी हरीतकी।
मुस्ताभूनिम्बतुल्यांशं सर्वतुल्यं गुडं भवेत्॥
कर्षैकं भक्षयेच्चानु जीर्णान्ते तक्रभोजनम्।

अपामार्गके बीज, चीता, सोंठ, हैड़, नागरमोथा और चिरायता, सब समान भाग लेकर चूर्ण बनाकर इस में सब के बराबर गुड़ मिलावे। इसे प्रतिदिन १। तोला खावे और इसके पचने पर छाछ पिये।

[६१] अपामार्गादि कल्कः

(वृ० नि० र० अर्श भा० ४ शा. ध.)

अपामार्गस्य बीजानां कल्कस्तण्डुलवारिणा।
पीतो रक्तार्शसां नाशं कुरुते नास्ति संशयः॥

अपामार्ग के बीजोंका कल्क चावलों के पानी के साथ सेवन करने से खूनी बवासीर का नाश होता है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

[६२] अभयादि चूर्णम्

(वृ० नि० र० भा० ४ अति०)

अभयातिविषा हिंगु सौवर्चलकटुत्रयम्।
एतच्चूर्णं सुतप्ताम्भःपीतं श्लेष्मातिसारजित॥

हैड़, अतीस, हींग, काला नमक, त्रिकुटा। सब चीजें समान भाग लेकर चूर्ण को गरम पानी के साथ सेवन करने से कफज अतिसार का नाश होता है।

[६३] अभयादि योगः

(वृ० नि० र० भा० ५ गु० चि०)

अभया सैन्धवं तक्रं भोजनान्ते पिबेदनु।
त्रिफलां सुवर्चलाक्षारं तुल्यं गुञ्जैकैकं भक्षयेत्॥
त्रिदोषोत्थं हरेद् गुल्मं त्रिफला सच्चलं तथा।
उष्णे तक्रे पिबत्कर्षं मुण्डीमूलं च वारिणा॥

हैड़ और सैंधा नमक का चूर्ण छाछ में मिला कर भोजन के बाद पीने से अथवा त्रिफला और हुलहुल का क्षार ये दोनों समान भाग मिला कर इस में से १–१ रत्ती भर खाने से अथवा त्रिफला और कालानमक के चूर्ण को गरम छाछ के साथ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीने से या १। तोला मुण्डी की जड़ को पानी के साथ पीने से त्रिदोषज गुल्म का नाश होता है।

[६४] अभयालवणम्

(भै. र. प्ली. चि.)

पारिभद्रपलाशार्कस्नुह्यपामार्गचित्रकान् ।
वरुणाग्निमन्थवसुकश्वदंष्ट्रबृहती द्वय ॥
पूतिकास्फोत कुटज कोषातक्यः पुनर्नवा ।
समूलपत्रशाखाश्च क्षोदयित्वा उदूखले ॥
तिलनालप्रदीप्ताग्निसुदग्धं भस्मशीतलम् ।
क्षारप्रस्थं गृहीत्वा तु न्यसेत्पात्रे दृढे नवे ॥
जलद्रोणे विपक्तव्यं ग्राह्यं पादावशेषितम् ।
पूर्ववत् क्षारकल्पेन स्रावयीत विचक्षणः ॥
प्रस्थमेकं च लवणं तदर्द्धा च हरीतकीम् ।
तुल्याम्बुभागं गोमूत्रं साधयेन्मृदुनाग्निना ॥
किञ्चित्साबाष्पसान्द्रे च सम्यक् सिद्धेऽवतारिते ।
अजाजीत्र्यूषणं हिङ्गु यमानी पौष्करं शटी ॥
एतैरर्धपलैर्भागैश्चूर्णं कृत्वा प्रदापयेत् ।
अभयालवणं नाम भक्षयेच्च यथा बलम् ॥
व्याधिश्च वीक्ष्य मतिमाननुपानं यथः हितम् ।
ये च कोष्ठ गता रोगास्ताम्निहन्ति न संशयः ॥
यकृत्प्लीहोदरानाहगुल्माष्ठीलाग्निसादजित् ।
हन्याच्छिरोऽर्तिहृद्रोगान् शर्कराश्मरी नाशनम् ॥

पारिभद्र (फरहद) ढाक, आक, थोहर, चिरचिटा, चीता, बरना, अरणी, सफेद आक, गोखरु, दोनों कटेली, करंजवा, आस्फोत (कचनार) कुड़ेकी छाल, कड़वी तोरी और पुनर्नवा। इन सब वृक्षोंके मूल, पत्र, शाखा लेकर ओखली में कूट कर तिल-नाल की अग्नि में जलावे। जब इनकी भस्म (राख) ठंडी होजाय तो उसमें से १ सेर लेकर १६ सेर जल में मिलाकर पकावे। जब चौथाई पानी शेष रहे तो उसे (२१ बार) कपड़े में छान ले और फिर उस पानी (क्षारोदक) में सेंधानमक १ सेर, हैड़ १/२ सेर और गोमूत्र क्षारोदक के बराबर मिलाकर मंदाग्नि पर पकावे। जब गाढ़ा होजाय तो उतार कर गरम गरम में ही (इतना गरम रहना चाहिये कि भाप निकलती रहे) नीचे लिखी चीजोंका चूर्ण मिलावे—जीरा, त्रिकुटा, हींग, अजवायन, पोखरमूल और कपूरकचरी, प्रत्येक का चूर्ण २।।-२।। तोला।

इसे यथोचित मात्रा में और यथोचित अनुपान के साथ सेवन करने से उदररोग, जिगर और तिल्ली के रोग, अफारा, गुल्म अष्ठीला, मन्दाग्नि, शिरोरोग, हृद्रोग और शर्कराजन्य पथरी का नाश होता है। ×

[६५] अभया विरेचनम्

(सु. स. । उ० अ० ४०)

स्तोकं स्तोकं विबद्धंवा सशूलं योऽतिसार्यते ।
अभया पिप्पली कल्कैः सुखोष्णैस्तं विरेचयेत् ॥

हैड़ और पीपल समान भागका चूर्ण मन्दोष्ण पानी के साथ खाने से अल्प अल्प, बार २ होने वाले प्रवल और शूल सहित अतिसार का नाश होता है।

[६६] अमलतास रखने की विधि

(च. सं. क. ।)

फलकाले फलं तस्य ग्राह्यं परिणतश्च यत् ।
एषां गुणवतां भारं सिकतासु निधापयेत् ॥

१ ह्राफरमालीति बङ्गे

×अभया लवण तिल्ली और जिगर के लिये खास तौर पर फायदेमन्द है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सप्तरात्रात्समुद्धृत्य शोषयेदातपे भिषक् ।
ततो मज्जानमुद्धृत्य शुचौ भाण्डे निधापयेत् ॥

जिस समय अमलतासपर फल आवें उस समय उसके पके हुए भारी और उत्तम फल लेकर रेत में दबादे, फिर उन्हें सात दिन पश्चात् निकाल कर धूप में सुखावे और सूखने पर उनका गूदा निकाल कर अच्छे बरतन में भर कर रखदे ।

[६७] अमलतास के कल्प

(च. सं. । क. अ. ८)

द्राक्षारसयुतो देयो दाहोदावर्त्त पीडिते ।
चतुर्वर्षप्रमुखे बाले यावद्द्वादश वार्षिके ॥
चतुरङ्गुल मज्जस्तु प्रसृतं वाथवाञ्जलिम् ।
सुरामण्डेन संयुक्तमथवा कोलसीधुना ॥
दधिमण्डेन वा युक्तं रसेनामलकस्य वा ।
कृत्वा शीतकषायं तं पिबेत् सौवीरकेण वा ॥
चतुरङ्गुलसिद्धाद्वा क्षीराद्यदुदियाद्घृतम् ।
मज्ज्ञः कल्केण धात्रीणां रसे तत्साधितं पिबेत्॥
तदेव दशमूलस्य कुलत्थानां यवस्यच ।
कषाये साधितं कल्कैःसर्पिः श्यामादिभिः पिबेत्
दन्तीक्वाथेऽञ्जलिं मज्ज्ञः शम्पाकस्य गुडस्यच ।
दत्वा मासार्धमासस्थमरिष्टं पाययेत च ॥
यस्य यत्पानमन्नं च हृद्यं स्वाद्वपि वा कटु ।
लवणं वा भवत्तेन युक्तं दद्याद्विरेचनम् ॥

अमलतास को दाह और उदावर्त से पीडित रोगी को दाख के रस के साथ देना चाहिये ।

चार वर्ष की अवस्था से लेकर बारह वर्ष तक की उम्र वाले के लिये अमलतासके गूदेकी मात्रा १० तोला से २० तोला तक है । उसे सुरामण्ड, कोलशीधु, दधिमण्ड, आमले के रस या शीत कषाय बनाकर अथवा सौवीरक के साथ देना चाहिये ।

अमलतास की मज्जा (गूदे) के साथ दूधको सिद्ध करके उससे घी निकाले, फिर उस घीको आमलेके रस और उसके गूदेके कल्कसे सिद्ध करके सेवन करे । अथवा उसी घीको दशमूल कुल्थी और जौके कषाय तथा निसोत आदिके कल्कसे सिद्ध करके सेवन करे । अथवा दन्ती क्वाथ लेकर उसमें अमलतास की मज्जा (गूदा) २० तोला और गुड़ २० तोला मिलाकर यथा विधि सन्धान कर ४५ दिन तक रक्खारहने दे जब अरिष्ट सिद्ध होजाय तब उसे सेवन करे ।

जिस मनुष्य को मधुर, कटु या लवण जिस प्रकार का खान पान प्रिय हो उसको उसी के साथ अमलतास से विरेचन देना चाहिये ।

[६८] अमृत प्राश चूर्णम्

(र. र. स. । अ० २१)

ऐलेयकं समूलं हि मुद्गपर्णी तथैव च ।
शतावरी विदारी च वाराहीकन्दमेवच ॥
मधुकं च मधूकं च तुगाक्षीरी च गोस्तनी ।
एतानि द्विपलांशानि चूर्णीकृत्य पृथक् पृथक् ॥
सरलं चन्दनं चोचमुत्पलं कुमुदं जलम् ।
काकोली क्षीरकाकोली द्वे मेदे जीवकर्षभौ ॥
एतेषां चार्द्धपलिकं प्रत्येकं शर्करायुतम् ।
ऐलेयकं विदारी च वाराही मुद्गपर्णिका ॥
एतेषां स्वरसैः शुद्धैः शतावर्याश्च भावितम् ।
एतत्सर्वं समाहृत्य छाया शुष्कं तु सप्तधा ॥
इक्ष्वामलकयोः क्षौद्रैर्भावितं सप्तधा पुनः ।
पयसा तु पिबेत्प्रातर्यथाग्निबलवान्नरः ॥
अङ्गदाहं शिरोदाहं रक्तपित्तं सुदारुणम् ।
शिरोऽक्षिकम्पभ्रमणमित्यादिक गदाञ्जयेत् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एलेयक, मूल सहित मुद्गपर्णी, शतावर, विदारीकंद, वाराहीकंद, मुलहठी, महुवा, बंसलोचन और दाख प्रत्येक १०-१० तोले सरलकाष्ट, सफेद चन्दन, दालचीनी, नीलोफर, कुमुद, दोनों काकोली, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, चीनी प्रत्येक २॥ तोला। इन सब का चूर्ण कर उसे एलेयक, विदारीकंद, वाराहीकंद और मुद्गपर्णी तथा शतावर के रस की भावना दे और फिर सब को ईख, आमला और शहद की सात बार भावना देकर रक्खे। इस चूर्णको प्रातःकाल दूधके साथ पीनेसे अङ्गदाह, शिरोदाह, प्रबल रक्तपित्त, शिरका कांपना और आंखका फड़कना, भ्रम इत्यादि रोगोंका नाश होता है।

[६९] अमृतादि चूर्णम् (१)

(भा. प्र., म. खं. आ. वा.)

अमृतानागरगोक्षुरमुण्डितिकावरुणकैः कृतं चूर्णम्।
मस्त्वारनालपीतं सामानिलनाशनं ख्यातम्॥

गिलोय, सोंठ, गोखरु, गोरख मुण्डी और बरना। इनका चूर्ण मस्तु और आरनाल के साथ पीने से आमवात का नाश होता है।

[७०] अमृतादि चूर्णम् (२)

(वृ. नि. र., वा. र.)

अमृता कटुका शुण्ठी यष्टीकल्कं समाक्षिकम्।
गोमूत्रपीतं जयति सकफं वातशोणितं॥

गिलोय, कुटकी, सोंठ और मुलैठी। इनका चूर्ण शहद के साथ चाटकर ऊपर से गोमूत्र पीने से कफ दोषयुक्त वातरक्त को आराम होता है।

[७१] अमृताष्टक चूर्णम्

(भै. र. ज्व. चि.)

अमृतेन्द्रयवारिष्टपटोलं कटुरोहिणीम्।
नागरं चन्दनं मुस्तं पिप्पलीचूर्णसंयुतम्॥
अमृताष्टक इत्येष पित्तश्लेष्मज्वरापहः।
हृल्लासारोचकच्छर्दिपिपासादाहनाशनः॥

हरड़, इंद्रयव, नीम, पटोलपत्र, कुटकी, सोंठ, चन्दन, नागरमोथा और पीपल। इनका चूर्ण पितश्लेष्म-ज्वर, उबकाई, अरुचि, छर्दि, पिपासा और दाह का नाश करता है।

[७२] अम्लकादि चूर्णम्

(च. सं.)

चतुर्णां प्रस्थमम्लानां त्र्यूषणं च पलत्रयम्।
लवणानां च चत्वारि शर्करायाः पलाष्टकम्॥
संचूर्ण्य सूपान्नरागादिष्ववचारयेत्।
कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डामयगुल्मनुत्॥

चतुराम्ल १ सेर, त्रिकुटा १५ तोला, लवण २० तोला, चीनी ४० तोला, इस चूर्ण को दाल और अन्नादि में डाल कर सेवन करने से खांसी, अजीर्ण, अरुचि, श्वास, हृद्रोग, पाण्डु और गुल्म का नाश होता है।

[७३] अयोरजादि चूर्णम्

(वृ. नि. र. काम.)

अयोरजोव्योषविडङ्गचूर्णं
लिह्याद्धरिद्रात्रिफलान्वितं वा।
सशर्कराकामलिनांत्रिभण्डी
हितागवाक्षी सगुडाचशुण्ठी॥

लोहचूर्ण, त्रिकुटा, बिड़ंग, हल्दी और त्रिफला। अथवा निसोत और मिश्री वा इन्द्रायण का गूदा, गुड़ और सोंठ मिलाकर खाने से कामला को आराम होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[७४] अयोरजादियोगः

(वृ. नि. र. काम.)

तुल्यमयोरजः पथ्या हरिद्रा क्षौद्रसर्पिषा ।
चूर्णितं कामली लिह्याद्गुडक्षौद्रेण वामयाम् ॥

लोहचूर्ण, हरड़ और हल्दी । इनका चूर्ण शहत और घीके साथ अथवा हैड़ का चूर्ण गुड और शहद के साथ चाटने से कामला को आराम होता है ।

[७५] अरिष्टादि चूर्णम्

(यो. चि.)

निम्बच्छदो दशपलं त्र्यूषणं च पलत्रयम् ।
त्रिपलं त्रिफला चैव त्रिपललवणत्रयम् ॥
द्वौ क्षारौ द्विपलं चैव यवानी पलपञ्चकम् ।
सर्वमेकीकृतं चूर्णं प्रत्यूषे भक्षयेन्नरः ॥
एकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकञ्च तथा ज्वरम् ।
चतुर्थिकं महाघोरं सान्त्वयेत्सन्ततं ज्वरम् ॥

नीमके पत्ते ५० तोला, त्रिकुटा १५ तोला, त्रिफला १५ तोला, सैंधा, सौंचल और सांभर तीनो १५ तोला, दोनों क्षार १० तोला, अजवायन २५ तोला । इन सबका चूर्ण करके प्रातः काल खानेसे दैनिक, तिजारी, चौथिया आदिका नाश होता है ।

[७६] अर्कलवणम्

(च. द. उ. चि.)

अर्कपत्रं सलवणमन्तर्धूमं दहेत् ततः
मस्तुना तं पिबेत्क्षारं गुल्मप्लीहोदरापहम् ॥

आकड़े के पत्ते और लवण को मिट्टी के बरतन में बन्द करके मुख पर कपड़मिट्टी करके चूल्हे पर चढाकर अन्तर्धूम जला ले । इस क्षार को मस्तु के साथ पीने से गुल्म और तिल्ली का नाश होता है ।

[७७] अर्कपुष्पी योगः

(वृ. नि. र. भा. ५ अश्म.)

गव्येन पिष्ट्वा पयसार्कपुष्पीं
निपीयमाना त्रिदिनं प्रभाते ।
विदार्य वीर्येण निजेन तीव्रामप्यश्मरीं
या कुरुते च दाहम् ॥

अर्कपुष्पी (हुलहुल) गायके दूधमें पीसकर ३ दिन तक रोज प्रातःकाल पीनेसे दाह युक्त प्रवृद्ध पथरी का भी नाश होता है ।

[७८] अर्कादिक्षार

(वृ. नि. र. वातार्शे)

तरुणान्यर्क पत्राणि पञ्चैव लवणानि च ।
युक्तानि तैलेनाम्लेन दहेत्क्षारश्च युक्तितः ॥
उष्णोदकेन मद्यैर्वापीतो वातार्शसां हितः ॥

आकड़ेके कोमल पत्तोंको तेल और पांचो नमक तथा कांजी के साथ विधिवत् भस्म करके क्षार बनावे । इसे गरम पानी या मद्यके साथ सेवन करनेसे बादीकी बवासीरका नाश होता है ।

[७९] अर्जुनादि क्षीरम्

(यो. र. हृ. रो.)

अर्जुनस्य त्वचासिद्धं क्षीरं पित्तहृदर्तिजित् ।
सितया पञ्चमूल्या वा बलया मधुकेन वा ॥

दूधको अर्जुनकी छाल डालकर पकाकर मिश्रि मिलाकर पीनेसे अथवा पञ्चमूल या बला के साथ या मुलैठी के साथ पकाकर मिश्री डालकर पीनेसे पित्तज हृद्रोगका नाश होता है ।

[८०] अलम्बुषादि चूर्णम्

(भा. प्र. म. खं. आ. वा.)

अलम्बुषां गोक्षुरकं गुडूची वृद्ध दारकम् ।
पिप्पलीं त्रिवृतां मुस्तां वरुणं सपुनर्नवम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रिफला नागरं चैव श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत्।
मस्त्वारनालतक्रेण पयोमांसरसेन वा ॥
आमवातं निहन्त्याशु श्वयथुं सन्धिसंस्थितम् ॥

गोरख मुण्डी, गोखरु, गिलोय, विधारा, पिप्पली, निसोत, नागरमोथा, बरना, सांठीकी जड, त्रिफला और सोंठ। इन सबका महीन चूर्ण करके मस्तु, आरनाल, छाछ, दूध या मांसरसके साथ सेवन करनेसे आमवात और सन्धिगतशोथको शीघ्र आराम होता है।

[८१] अलम्बुषादि चूर्ण (२)

(भा० प्र०, म० ख० आ० वा०)

अलम्बुषागोक्षुरकं त्रिफला नागरामृताः।
यथोत्तरं भागवृद्धया श्यामाचूर्णं च तत्समम् ॥
पिबेन्मस्तुसुरातक्रकाञ्जिकोष्णोदकेन वा।
आमवातं जयत्याशु सशोथं वातशोणितम् ॥
त्रिकजानूरुसन्धिस्थं ज्वरारोचकनाशनम् ॥
अलम्बुषादिकंचूर्णं रोगानीकविनाशनम्।
हरीतक्यक्षधात्रीभिः प्रसिद्धा त्रिफला क्रमात्।
प्रत्येकं तेन वा युञ्ज्याद् भागवृद्धया यथोत्तरम्

गोरखमुंडी १ भाग, गोखरू २ भाग, हरड ३ भाग, बहेडा ४ भाग, आमला ५ भाग, सोंठ ६ भाग, गिलोय ७ भाग, और निसोत २८ भाग। इस चूर्णको मस्तु, सुरा, तक्र, कांजी अथवा गरम पानीके साथ पीनेसे आमबात तथा शोथ युक्त वातरक्त, त्रिक, जानु, उरु और संधियोंमें स्थित वायु तथा ज्वर और अरुचिका नाश होता है। यह अलम्बुषादि चूर्ण रोग समूहों कानाश करता है।

[८२] अलम्बुषादि चूर्णम् (३)

(भा० प्र०, म० ख० आ० वा०)

अलम्बुषा गोक्षुरकं मूलं वरुणकस्य च।
गुडूचीं नागरं चेति समभागानि कारयेत् ॥
काञ्जिकेन तु तत्पेयं विडालपदमात्रकम्।
आमवाते प्रवृद्धे च योगोयममृतोपमः ॥

गोरखमुण्डी, गोखरु, वरुणाकी जड़, गिलोय और सोंठ प्रत्येक सम भाग लेकर चूर्ण बनावे।

गुण—प्रबल आमवात (गठिया)को आराम करता है। मात्रा–१। तोला। अनुपान—काञ्जी। यह योग अमृतके समान गुणकारी है।

[८३] अविपत्तिकर चूर्णम्

(वं. से.; धन्व, भै. र; रसे. चि; रसे. सा. सं. अम्ल.)

त्रिकटु त्रिफला मुस्तं विडश्चैव विडङ्गकम्।
एला पत्रश्च सर्वाणि समभागानि कारयेत् ॥
यावन्त्येतानि सर्वाणि लवङ्गं तत्समं भवेत्।
सर्वचूर्णाद्विगुणितं त्रिवृच्चूर्णं तु कारयेत् ॥
यावन्त्येतानि सर्वाणि तावती शर्करा भवेत्।
सर्वमेकीकृतं पात्रे स्निग्धे चैव निधापयेत् ॥
भोजनादौ ततो भक्षेन्मासाष्टकमिदं शुभम्।
शीततोयानुपानं च नारिकेलोदकं तथा ॥
ततो यथेष्टमाहारं कुर्यात्क्षीरोदनं च वै।
अम्लपित्तं हरत्याशु शूलदुर्नामनाशनम् ॥
प्रमेहां विंशतिश्चैव मूत्रघातं तथाश्मरीम्।
अविपत्तिकरं चूर्णमगस्त्यमुनिभाषितम् ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, बिड नमक, बायबिडंग, इलायची, तेजपात, सब समान भाग, लवंग सबके बराबर, और इस सब चूर्णसे दो गुनी निसोत तथा इन सबके बराबर चीनी। सबका चूर्ण करके चिकने बरतन में भरकर रक्खें। फिर भोजन के पहिले ठंडे पानी या नारियलके पानीके साथ ८ माषा खाना चाहिए। फिर यथेष्ट दूध चावल का आहार करे। इसके सेवनसे अम्लपित्त, शूल, बवासीर, बीस प्रकारका प्रमेह, मूत्राघात, और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पथरीका नाश होता है । यह अविपत्तिकर चूर्ण अगस्त मुनिका निर्दिष्ट किया हुआ है ।

[८४] अश्वगन्धादि चूर्णम् (१)

(शा० ध० म० खं० अ० ६)

अश्वगन्धा दशपला तन्मात्रो वृद्धदारुकः ।
चूर्णीकृत्योभयं विद्वान् घृतभांडे निधापयेत् ॥
कर्षैकं पयसा पीत्वा नारीभिर्नैव तृप्यति ।
अगत्वा प्रमदां भूयाद् वलिपलितवर्जितः ॥

असगन्ध ५० तोला और विधारा ५० तोला इन दोनोंका चूर्ण करके चिकने बर्तनमें रक्खे । मात्रा—१॥ तोला अनुपान दूध ।

गुण—पौष्टिक और वाजीकरण है । इसको सेवन करनेके साथ यदि ब्रह्मचर्यका पालन किया जाय तो बलिपलित रोग नष्ट होता है ।

[८५] अश्वगन्धादि चूर्णम् (२)

(वं. से. रसाय. अ.)

अश्वगन्धातसी शुंठी निर्गुण्डी मागधी तथा ।
षड्वापराजितं चैव समभागानि कारयेत् ॥
कर्षैकं भक्षयेन्नित्यं पयसान्नं पिबेदनु ।
सन्धिवातं निहन्त्याशु साध्यासाध्यं न संशयः ॥
रसायनमिदंप्रोक्तं वलीपलितनाशनम् ॥

असगन्ध, अलसी, सोंठ, निर्गुण्डी, पीपल, अपराजिता । सब समान भाग । गुण—रसायन, पौष्टिक, सन्धिवात (गठिया) और वलिपलित नाशक है । मात्रा—१। तोला । अनुपान—दूध ।

[८६] अश्वगन्धादि चूर्णम् (३)

(वृ. नि. र. यो. र. क्ष. चि०)

अश्वगन्धादशपलं तदर्धं नागरान्वितम् ।
तदर्धंकणसंयुक्तं मरीचं च चतुर्थकम् ॥
चातुर्जातं वराङ्गं च भार्ङ्गी तालीसपत्रकम् ।
कर्चूराजाजि कैटर्यं मांसी कङ्कोलमुस्तकम् ॥
रास्नाकटुकरोहिण्या जीवन्ती कुष्ठकं तथा ।
प्रायः कर्षमितं चूर्णं चूर्णेन समशर्करा ॥
प्रातः काले त्विदं चूर्णं जलेनोष्णेन सेवयेत् ।
वातपित्तक्षये चैव अजागोघृत संयुतम् ॥
श्लेष्मक्षये क्षौद्रयुक्तं नवनीतेन मेहजित् ।
शिरोभ्रमणपित्तार्त्ते गोक्षुरेण समन्वितम् ॥
क्षतक्षीणे च देहेच विशेषवलवर्द्धनम् ।
मेदोदरं च मन्दाग्निं कुक्षिशूलोदरापहम् ॥
अनुपानविशेषेण सर्वरोगहरं परम् ॥

असगन्ध ५० तोला, सोंठ २५ तोला, पीपल १२॥ तोला, काली मिर्च ६। तोला, चातुर्जात, दालचीनी, भारंगी, तालीसपत्र, कपूरकचरी, सफेद जीरा, बकायन, जटामांसी, कंकोल, नागरमोथा, रास्ना, कुटकी, जीवंती, कूठ प्रत्येक १। तोला । सबका चूर्ण करके चूर्णके बराबर शर्करा मिलावे । साधारण अनुपान—गरम पानी । वातज और पित्तज क्षयमें बकरी या गायके घीके साथ, कफज क्षयमें मधुके साथ और प्रमेहमें नौनी घीके साथ खाना चाहिए । पित्त रोगोंमें और शिरके घूमने (चक्कर) में गोखरूके पानीके साथ सेवन करना चाहिए । यह चूर्ण क्षत, क्षीण, मेदोदर, मन्दाग्नि, शूल आदिका नाश करता है एवं बलवर्द्धक है । यह चूर्ण अनुपान भेदसे बहुतसे रोगोंको नाश करता है।

[८७] अश्वगन्धादि चूर्णम् (४)

(वृ. नि. र.)

अश्वगन्धामृताभीरुदशमूली बलाद्वयम् ।
पुष्करातिबला हन्ति क्षयं क्षीररसाशिनः ॥

असगन्ध, गिलोय, शतावर, दशमूल, बला, अतिबला और पोखरमूल इनका चूर्ण सेवन करने और दूधादि पथ्य आहार खानेसे क्षयका नाश होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[८८] अश्वगन्धादि चूर्णम् (५)
(वं. से. र. अ.)

अश्वगन्धा पलं त्रिंशच्चूर्णयित्वा विचक्षणः ।
वृद्धदारुकचूर्णेन समभागन्तु कारयेत् ॥
स्थापयित्वा घटे दिव्ये सर्पिषा परिभाविते ।
कर्षमेकं समश्नीयाच्चूर्णस्य पयसा सह ॥
करीव नित्यं स्रवति सर्वं दोष विवर्जितम् ॥
तेजसा प्रभत्वयुग्रो रश्मिमानिव भास्करः ।
भवत्येव चतुर्मासैर्वलिपलित वर्जितः ॥

असगन्ध चूर्ण १ सेर ७० तोला, विधारा चूर्ण १ सेर ७० तोला । दोनों चूर्णों को मिश्रित करके शुद्ध चिकने घड़े में भरकर रखदे । इस में से प्रतिदिन १। तोलाभर लेकर दूधके साथ सेवन करने से हाथीके समान नित्यप्रति मैथुन करनेकी शक्ति प्राप्त होती है।

तथा इसके सेवनसे ४ मास में मनुष्य अत्यन्त तेजस्वी और बलीपलित रहित होजाता है।

[८९] अश्वगन्धायोगः (वृ. नि. र.)

अश्वगन्धाकषायेण सिद्धं दुग्धं घृतान्वितम् ।
ऋतुस्नाताङ्गना प्रातः पीत्वा गर्भं दधाति हि ॥

असगन्धके कषायके साथ दूध पकाकर उसमें घी डालकर ऋतुस्नाता स्त्री प्रातःकाल पिए तो गर्भ रहे ।

[९०] अश्वत्थवल्कलादि योग
(यो. र. छ. चि.)

अश्वत्थवल्कलं शुष्कं दग्धं निर्वापितं जले ।
तज्जलं पानमात्रेण छर्दिं जयति दुस्तराम् ॥

पीपलकी सूखी छालको जलाकर पानीमें बुझावे उस पानीके पीनेसे छर्दी (वमन) का नाश होता है ।

[९१] अष्टाङ्ग लवणम् (चं. सं. चि. अ. १५)

सौवर्चलमजाजी च वृक्षाम्लं साम्लवेतसम् ।
त्वगेलामरिचार्द्धांशं शर्करा भागयोजितम् ॥
एतल्लवणमष्टांगमग्निसन्दीपनं परम् ।
मदात्यये कफप्राये दद्यात्स्रोतोविशोधनम् ॥

संचल नमक, जीरा, इमली, अमलबेत, दालचीनी, इलायची, कालीमीर्चे प्रत्येक आधा भाग, चीनी १ भाग । सबको महीन करके चूर्ण बनावे । इस अष्टाङ्ग लवणके सेवनसे मन्दाग्नि तथा कफज मदात्यय का नाश होता है और स्रोत शुद्ध होते हैं ।

[९२] असनादि योगः
(भा. प्र. म. खं. प्रमे.)

असनंच पियालं च शालं खदिरकं तथा ।
शालवर्ग तथा ग्राह्यं भवेच्चैतद्विचक्षणैः ॥
मधुमेहत्वमापन्नं भिषग्भिः परिवर्जितम् ।
योगेनानेन मतिमान् प्रमेहिणमुपाचरेत् ॥

पीतशाल, चिरौंजी, साल, खैर और साल वर्ग (दोनों प्रकार के साल, करंजद्वय, खैर, दोनों चन्दन, अर्जुन, भोजपत्र, दोनोंप्रकारकी लोध, सिरस, अगर, सुपारी, पिलखन, धाय, दारुहल्दी, और बेला) की औषधियों से मधुमेह और घोरतर प्रमेह का नाश होता है ।

[९३] अहिफेन योगः
(वृ. नि. र.)

अहिफेनं सुसंभृष्टं खर्परे मृदुवह्निना ।
पक्वातिसार शमनं भेषजं नास्त्यतः परम् ॥

अफीम को एक ठिकरे में डाल कर मन्दाग्नि पर पकाले । यह पक्वातिसारके लिये अत्यन्त उपयोगी है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ अकारादिगुटिका प्रकरणम्

गुटिका व्याख्या

औषधियोंके महीन चूर्णको मधु, गुड़, खांड आदि चाशनीमें मिलाकर अथवा औषधियोंको जल स्वरस या क्वाथ आदिमें पीसकर या पाक करके जो गोलियां बनाई जाती हैं उन्हें गुटिका कहते हैं—

वटको मोदकः पिण्डी गुडो वर्तिस्तथा वटी।
वटिका गुडिका चेति संज्ञावान्तर भेदतः ॥

वटक, मोदक, पिण्डी, गुड़, वर्ति, वटी और वटिका तथा गुटिका यह सब एक ही प्रकारकी बनावट है, केवल आकार और परिमाणमें भेद होता है। इनमें प्रधान भाग काष्ठौषधियोंका ही होता है।

भावनाविधि—

द्रवेण यावता द्रव्यमेकीभूयाद्रतां व्रजेत्।
तावत् प्रमाणं कर्तव्यं भिषग्भिर्भावना विधौ ॥
भाव्यद्रव्यसमं क्वाथ्यं क्वाथ्यादष्टगुणं जलम्।
अष्टांशशोषितः क्वाथो भाव्यानां तेन भावना ॥

जितने द्रव पदार्थसे औषधि अच्छी तरह भीग जाय उतना ही द्रव पदार्थ लेकर भावना देनी चाहिये। अथवा जिस चीज़के क्वाथसे भावना देनी हो वह भाव्य (जिसे भावना देनी हो) द्रव्यके बराबर लेकर आठ गुने पानीमें पकावे और आठवां भाग शेष रहने पर छानकर उससे भावना दे।

यदि गोलियोंको धूपमें सुखानेके लिये लिखा हो तो धूपमें और छायामें सुखानेके लिये लिखा हो तो छायामें ही सुखाना चाहिये, क्योंकि धूप और छांवके प्रभावसे भी दवाके गुणमें अन्तर पड़ जाता है।

गोलियों पर वर्क चढाना

यदि गोलियों पर सोने चांदी आदिके वर्क चढ़ाने हों तो पहिले उन्हें मुगलई बेदानेके लुआबमें अच्छी तरह तर करलें, फिर उनपर सोने या चांदी के (जैसी आवश्यकता हो) वर्क डालकर हाथसे मलदें और फिर चीनीके चौड़े मुंह वाले वर्तनमें डालकर तेज़ी के साथ उस वर्तनको गोल दायरेमें घुमाना चाहिये (जिस प्रकार चक्की पीसते हैं) इस क्रियासे गोलियां सुन्दर हो जाती हैं।

सेवन करते समय गोलियोंको पीसकर अनुपानके साथ मिलाकर सेवन किया जाय तो जल्दी असर होता है। धात्रीलोह आदि कितनी ही कठिन गोलियां तो साबित निगल जानेसे दस्तके साथ ज्यों की त्यों बाहर निकल जाती हैं अतएव कठिन गोलियोंको बिना पीसे न सेवन करना चाहिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ अकारादिगुटिका प्रकरणम्

[९४] अङ्कोट वटक (भा. प्र. अति.)

पलमङ्कोटमूलस्य पाठां दार्वी च तत्समाम् ।
पिष्ट्वा तण्डुलतोयेन वटकानक्षसम्मितान् ॥
छायाशुष्कांश्च तान्कुर्यात् तेष्वेकं तण्डुलाम्बुना ।
पेषयित्वा प्रदद्यात्तं पानाय गदिने भिषक् ॥
वातपित्तकफोद्भूतान् द्वन्दजान् सान्निपातिकान्
हन्यात् सर्वानतीसारान् वटकोऽयं प्रयोजितः ॥

अंकोट (ढेरा वृक्ष)की जड़, पाठा और दारु-हल्दी, प्रत्येक एक एक पल, । सब को चावलों के पानी में पीसकर १। तोला प्रमाण वटक बनावे और छाया में सुखा कर रखे फिर चावलों के पानी के साथ पीस कर सेवन करे। ये वटक वातज, पित्तज, कफज, और सान्निपातिक आदि सब प्रकार के अतिसारों का नाश करते हैं ।

[९५] अग्निकुमार मोदक (भा. प्र. अति.)

उशीरं वालकं मुस्तं त्वक्पत्रं नागकेशरं ।
जीरद्वयश्च भृंगी च कटफलं पुष्करं शटी ॥
त्रिकटु बिल्वकं धान्यं जातीफललवंगकम् ।
कर्पूरं कान्तलोहश्च शैलजं वंशलोचना ॥
एलाबीजं जटामांसी रास्ना तगरपादुकम् ।
समङ्गातिवला चाभ्रं मुरा वङ्गं तथैव च ॥
अस्य चूर्ण समा मेथी चूर्णार्धं विजयारजः ।
शर्करा मधुसंयुक्तं मोदकं परिकल्पयेत् ॥
कर्षमेकं प्रमाणन्तु भक्षयेत्प्रातरुत्थितः ।
शीततोयानुपानेन आजेन पयसाथवा ॥
ग्रहणी दुस्तरां हन्ति श्वासं कासमतीव च ।
आमवातमग्निमान्द्यं जीर्णश्च विषमं ज्वरम् ॥
विबन्धानाहशूलं च यकृत्प्लीहोदराणि च ।
हन्त्यष्टादशकुष्ठानि ग्रहणीदोषनाशनम् ॥
उदावर्तगुल्मरोगोदरामयविनाशनम् ।

खस, सुगन्धबाला, नागरमोथा, दालचीनी, तेजपात नागकेशर, सफेदजीरा, कालाजीरा, काकड़ा-सींगी, कायफल, पोखरमूल, कपूरकचरी, त्रिकुटा, बेलगिरी, धनियां, जायफल, लवंग, कपूर, कांतलोह-भस्म, शिलाजीत, बंसलोचन, इलायची के बीज, जटामांसी, रास्ना, तगर, मजीठ, अतिबला, अभ्रक-भस्म, मुरामांसी और बङ्गभस्म । सब समान भाग और सब के बराबर मेथी और फिर सब चूर्ण से आधी भांग लेकर चीनी और शहद के साथ मोदक बनावे । प्रातः काल १। तोला मोदक शीतल जल या बकरी के दूध के साथ खाने से प्रबल ग्रहणी, श्वास, खांसी, आमवात, मन्दाग्नि, जीर्णज्वर, विषमज्वर, विबंध, अफारा, शूल, जिगर, तिल्ली, अठारह प्रकारके कुष्ठ, उदावर्त और गुल्मादि उदर रोगोंका नाश करता है ।

[९६] अग्निगर्भा वटिका (र. र. प्ली. चि.)

शुद्धं रसं पलं ग्राह्यं गन्धकं द्विपलं भवेत् ।
लौहं टङ्कं वचाकुष्ठं रामठं त्रिकटुं निशाम् ॥
रसार्द्धभागमानेन सर्वमेकत्र कारयेत् ।
माणौत्वघण्टकर्णानां त्रिफलानां रसेन च ॥
रक्तीषोडशमानेन वटिका परिनिर्मिता ।
अग्निगर्भेयमुदिता प्लीहगुल्मोदरापहा ॥
शूलघ्नी यकृतं हन्यादष्ठीलां कामलानि च ।
हलीमकंच पाण्डुत्वं कृमिकुष्ठविनाशिनी ॥
चंद्रनाथेन गदिता रसमङ्गलभूषिता ॥
लवंगयोगे कर्तव्या महाग्निदायिनी मता ॥
आनाहकासशमनी व्रणविस्फोटनाशिनी ।
संग्रहग्रहणीं हन्याच्छ्लेष्म दोषोद्भवामपि ॥

शुद्ध पारद ५ तोला, शुद्ध गंधक १० तोला लोहभस्म, सुहागे की खील, बच, कूठ, हींग,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रिकुटा, और हल्दी प्रत्येक २॥ तोला सब को महीन करके मानकन्द, घण्टाकरण और त्रिफला के रस की भावना देकर १६-१६ रत्तीभर की गोलियां बनावे। अग्निगर्भा नामकीये गोलियां तिल्ली, गुल्म, उदररोग, शूल, जिगर, अष्ठीला, कामला, हलीमक, पाण्डु, कृमि और कुष्ठ का नाश करती हैं। लवंग के साथ सेवन करने से अत्यन्त अग्नि वृद्धि करती हैं। अफारा, खांसी, व्रण, विस्फोटक, तथा श्लेष्मज संग्रहणी का नाश करती हैं।

[९७] अग्नि जननी वटी

(र. र. स. अ. १६)

कणनागरगन्धकपारदकं
गरलं मरिचं समभागयुतम्।
लकुचस्य रसैश्चणकप्रमिता
गुटिका जनयत्यचिरादनलम्॥

पीपल, सोंठ, शुद्ध गंधक, शुद्ध पारद, शुद्ध विष, और काली मिर्च सब समान भाग लेकर, लकुच (बढल) के रस की भावना देकर चने के बराबरा गोलियां बनावे। इन गोलियों के सेवन से शीघ्र ही अग्नि दीप्त होती है।

[९८] अग्नितुण्डी वटी (भै. र. अ. मां)

शुद्धसूतं विषं गन्धमजमोदा फलत्रयम्।
सर्जिक्षारं यवक्षारं वह्निसैन्धवजीरकम्॥
सौवर्चल विडङ्गानि सामुद्रं टङ्कणं समम्।
विषमुष्टिं सर्वतुल्यं जम्बीराम्लेन मर्दयेत्॥
मरिचाभां वटीं खादेदग्निमान्द्यप्रशांतये॥

शुद्ध पारद, शुद्ध विष, शुद्ध गंधक, अजमोद, त्रिफला, सज्जीखार, यवक्षार, चीता, सेंधानमक, ज़ीरा, सौंचल नमक, बायबिडंग, सामुद्र लवण और शुद्ध सुहागा सब समान भाग लेवें तथा कुचला सब के बराबर ले सब को महीन करके जम्भीरी नींबू की भावना देकर मरिचके बराबर गोलियां बनावे। ये गोलियां अग्निमांद्य के लिये उपयोगी हैं। *

[९९] अग्नि दीपनी वटी (र. रा. सु.)

गन्धकं मरिचं शुंठी सैन्धवं यवजं तथा।
निम्बूरसेन वटिका चणमात्राग्निदीपनी॥

शुद्ध गन्धक, काली मिर्च, सोंठ, सेंधा नमक तथा यवक्षार। सबको महीन कर नींबू के रस की भावना देकर चने के बराबर गोलियां बनावे। ये गोलियां अग्नि दीपक हैं।

[१००] अगस्ति मोदक

(यो. र. अग्नि. चि)

हरीतकीनां त्रिपलं त्रीण्याप्राणि कटुत्रिकम्॥
त्वक्पत्रकं चार्धपलं गुडस्याष्टपलं मतम्।
अगस्ति मोदकानेतान् कल्पितान्परिभक्षयेत्॥
शोफार्शोग्रहणीदोषकासोदावर्तनाशनाम्॥

हैड़ १५ तोला, त्रिकुटा १५ तोला, दालचीनी और तेजपात २॥-२॥ तोला और गुड़ आधासेर। विधिवत मोदक बना कर सेवन करने से सूजन, बवासीर, ग्रहणी, खांसी और उदावर्त का नाश होता है।

[१०१] अगस्तिवटी (वृ. नि. र. शूला.)

दशाम्रकं हैमवतीसमेतं
स्विन्नं तुषोदे विषतिन्दुबीजान्।
कटुत्रिक क्षारयुगं त्रिदीप्यं
कृमिघ्नहिंगु त्रिपटु त्रिबिल्वम्॥
पृथक्प्लुते जम्भजलै वटीय-
मगस्त्यपूर्वा बदरप्रमाणा।
शूलानि गुल्मकृमिमन्दवह्नि-
प्लीहामवाताञ्जयति प्रसह्य॥

वच ५० तोला, कुचला ५० तोला, दोनोंको

* बच्चों के कृमि रोग के लिये अकसीर हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुषों के काढे में पका कर चूर्ण करे तथा इस में त्रिकुटा, सज्जीखार, जवाखार, अजवायन, अजमोद, खुरासानी अजवायन, वायविड़ंग, हींग, सैंधा नमक, बिडनमक तथा सौंचल नमक। प्रत्येकका चूर्ण १५ तोला मिला कर नींबू के रस में घोटकर बेर के समान गोलियां बनावे। ये गोलियां शूल, गुल्म, कृमि, मन्दाग्नि, तिल्ली और आमवात का नाश करती हैं।

[१०२] अजमोदादि वटक

(भै. र. आ. वा. चि.)

अजमोदामरिचपिप्पली—
विडङ्गसुरदारुचित्रकशताह्वाः।
सैंधवं पिप्पली मूलं—
भागा नवकस्य पलिकाःस्युः॥
शुण्ठी दश पलिकास्या—
त्पलानि तावन्ति वृद्धादारस्य।
पथ्या पञ्च पलानि च
सर्वाण्येकत्र संचूर्ण्य॥
समगुडवटकानदतश्चूर्णं वाप्युष्णवारिणा पिबतः
नश्यन्त्यामानिलजाः सर्वे रोगाः सुकष्टाश्च॥
विषूचिकाप्रतितूणीहृद्रोगा गृध्रसी चोग्रा।
कटिवस्तिगुदस्फुटनं चैवास्थिजङ्घयोस्तीव्रम्॥
श्वयथुस्तथाङ्गसन्धिषु
ये चान्येऽप्यामवातसम्भूताः।
सर्वे प्रयान्ति नाशं तम इव सूर्यांशु विध्वस्तम्
अजमोदादि वटके सर्वचूर्णसमोगुडः।
किञ्चिदुदकं दत्वा वन्हौ गुडं द्रवीकृत्य तत्र चूर्णं प्रक्षिप्य वटिकाः कार्याः। चूर्णं वेत्ति गुडं विहाय केवलमुष्णोदकादिभिः पेयमितिभानुः।

अजमोद (अजवायन), काली मिर्च पीपल, बायविड़ंग, देवदारु, चीता, सोया, सेंधानमक और पीपलामूल। प्रत्येक ५ तोला सोंठ ५० तोला, विधारा ५० तोला, हैड़ २५ तोला। सब को कूट कर चूर्ण करके रक्खे। अथवा इस चूर्ण में समान भाग गुड मिला कर वटक बनावे थोडा पानी डालकर गुड़को अग्निपर गरम करके पिघलावे तद-न्तर उसमें चूर्ण मिलावे इस प्रकार वटक बनावे अथवा तो गुड बगर का चूर्ण। इसे गरम पानी के साथ खाने से आमवात से उत्पन्न होने वाले रोग, हैजा, प्रतूनी, हृद्रोग, उग्र गृध्रसी, कमर, बस्ती गुदा और जंघाकी हडफूटन, तथा सूजन और गठिया आदि अनेक आमवातज रोगों का नाश होता है।

[१०३] अजमोदादिवटी

(वृ. निं. र. भा. ५ वा. व्या)

अजमोदा कणा वेल्लं शतपुष्पा सनागरम्।
मरिचं सैंधवादेव भागैकं च पृथक् पृथक्॥
पञ्चभागा हरीतक्याः शुंठी च दशभागिका।
वृद्धदारुर्दशांशःस्यात्षट्त्रिंशद्गुडभागिकाः॥
गुडपाकैर्वटीं कृत्वा मात्रा कर्षप्रमाणतः।
सन्धिवाते प्रदेयं तदामवाते सुदारुणे।
उष्णोदकानुपानेन सर्ववातान्नियच्छति॥
आढ्यवाते हनुस्तम्भे शिरोवातापतानके।
भ्रूशङ्ख कर्णनासाक्षिजिह्वास्तम्भ च दारुणे॥
कलायखंजतापङ्गुसर्वाङ्गैकाङ्गमारुते।
अर्दिते पादहर्षे च पक्षाघाते प्रशस्यते॥

अजमोद, पीपल, वायविड़ंग, सोया, नागर-मोथा, काली मिर्च, सेंधा नमक प्रत्येक १—१ भाग, हर्ड ५ भाग, सोंठ १० भाग, विधारा १० भाग, गुड़ ३६ भाग। गुड़ की चाशनी करके उस में अन्य सब द्रव्यों का चूर्ण मिला कर १।—१।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तोले की गोलियां बनावे। इनके सेवन से सन्धिवात, दारुण आमवात, आढ्यवात, हनुस्तम्भ, शिरोवात, अपतानक, भ्रूशंख, कर्ण, नाक, आंख और दारुण जिह्वास्तम्भ आदि तथा लंगड़ापन, लूलापन, सर्वांग वायु, एकांग वायु, अर्दित, पादहर्ष और पक्षाघात आदिका नाश होता है। अनुपानः—गरम पानी।

[१०४] अजाज्यादि गुटिका (वृ. नि. र.)

अजाजी पौष्करं पाठा त्र्यूषणं दहनं शिवा।
गुडेन गुटिका ग्राह्या सर्वार्शःशोधनक्षमा॥

जीरा, पोखरमूल, पाठा, त्रिकुटा, चीता, हरीतकी। इन सब चीजों का चूर्ण करके गुड़ के साथ गोली बनावे। यह गोलीयां हर प्रकार की बवासीर का नाश करती हैं।

[१०५] अजीर्णहरीवटी (यो. र. अ. चि.)

दन्तीबीजमकल्मषं सदहनं शुण्ठी लवंगं समम्
गन्धं पारदटङ्कणं च मरिचं श्रीवृद्धदारो विषम्।
खल्वे यामयुगं विमर्द्य विधिना दन्तीद्रवैर्भावना
देयाःपञ्चदशानुनिम्बुकजलैस्त्रेधा त्रिधा चित्रकैः।
त्रेधाचऽऽर्द्रकजै रसैः शुभधिया सप्त व चावेदिना
पश्चाच्छुष्ककलायसंमितवटीकार्या भिषक्सम्मता।
शुद्बोधप्रकरी त्रिशूलशमनी जीर्णज्वरध्वंसिनी
कासारोचक पांडुतोदरगदान्पामामरून्नाशिनी।
वस्त्याटोपहलीमकामयहरी मन्दाग्नि संदीपनी
सिद्धयं तु महोदधि प्रकटिता सर्वामयघ्नीसदा

शुद्ध जमालगोटा, चीता, सोंठ, लौंग, शुद्ध गंधक, शुद्ध पारद, शुद्ध सुहागा, काली मिर्चे विधारा, शुद्ध वच्छनाग, सब को समान लेकर खरल में डाल दो पहर तक खरल करे, फिर १५ भावना दन्ती के रस की, ३ भावना नींबूके रसकी, ३ चित्रक के क्वाथ की, तीन अदरख के रसकी और ७ भावना पद्माख की देकर उर्द के बराबर गोली बनावे। ये गोलियां क्षुधावर्धक, शूल, जीर्णज्वर, खांसी, अरुचि, पांडु, दाह, उदररोग, खुजली, आमवात, अफारा, हलीमक, मंदाग्नि आदि रोगों का नाश करने वाली हैं।

[१०६] अनङ्गमेखलागुटिका (वृ. यो. त.)

विषमुष्टिद्वयभिश्शोषोऽहिफेनं ऽकल्कः समाः।
भङ्गनीरेण गुटिका कार्या प्रकृतिरूपतः॥
सायान्हे भक्षयेद् वीर्यरोधिनीं कामवर्द्धिनीम्।
निम्बुनीरेण चोतार्या गुटिकाऽनङ्गमेखला॥

शुद्ध कुचला १ भाग, समुद्रझाग २ भाग तथा अफीम और अकरकरा १–१ भाग सबको भांग के रस में घोट कर गोलीयां बनावे और सायंकाल में सेवन करे। गुण—वीर्यस्तम्भक और कामवर्द्धक है।

[१०७] अनङ्गमेखलामोदक (वृ. यो. त.)

अहिफेनं पलमितं वरं दुग्धाढके पचेत्।
जातीफलं चतुर्जातं जातिकोशं लवङ्गकम्॥
व्योषमाकारकरभमजमोदा पतङ्गकम्॥
कङ्कोलं चन्दनं चपि कुङ्कुमैणमदेन्दुकाः॥
जातिफलाद्यं भैषज्यं प्रत्येकं कर्षसम्मितम्।
मृगनाभिश्च कर्पूरं प्रत्येकं माषयुग्मकम्॥
सितां ह्यष्टपलां दत्वा युक्त्वा गुरुमुखोत्थया।
सम्मेल्य गुटिका कार्या यथा देहं यथा बलम्॥
महाबलकरी वृष्या रतिरागविवर्द्धिनी।
शुक्रस्तम्भकरी पुंसां वनितानां समागमे॥
पाण्डुकासक्षयश्वासशूलमेहव्रणभ्रमान्।
निहन्ति जनयत्यग्निं सर्वदैवप्रपूजितः॥
उक्तप्रमाणादर्धान्तु गुटिकां ब्रुवतेऽपरे।
अनङ्गमेखला नाम शिवेन समुदीरिता॥

५ तोला अफीमको ४ सेर दूध में पकावे फिर जायफल, चतुर्जात जावित्री, लौंग, त्रिकुटु, अकरकरा, अजमोद अजवायन, पतंग, कंकोल,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चन्दन और केशर प्रत्येक १।–१। तोला तथा कस्तूरी और कपूर प्रत्येक २–२ मासे। चीनी आध सेर। यथा विधि गुटिका बनावे। गुणः—बलवर्द्धक, वीर्य वर्द्धक, कामशक्ति वर्द्धक, वीर्य स्तम्भक, पाण्डु, खांसी, क्षय, श्वास, शूल, प्रमेह, व्रण और भ्रम नाशक तथा अग्नि संदीपक है। यह शिवद्वारा बताई हुइ गुटिका है।

[१०८] अभयादिगुटिका

(वृ. नि. र. भा. ५. आ. वा.)

अभया सैन्धवं शम्पा विशाला विश्वभेषजम्।
इन्द्रवारूणिका मज्जा तथा सर्वं विमर्दयेत्॥
लोहभांडे विनिक्षिप्य यद्यादग्निं शनैः शनैः।
वदराभा प्रमाणेन वटी कार्या भिषग्वरैः॥
उष्णोदकानुपानेन भुक्त्वा दोषाद्यपेक्षया।
पथ्यं दध्योदनं देयमामरोगं विनाशयेत्॥

हरीतकी, सैंधा नमक, अमलतास, महाइन्द्रायण, सोंठ और इन्द्रायण की मज्जा। इन सब का चूर्ण करके लोहे के बरतन में डाल कर धीरे धीरे अग्नि दे। फिर बेर के समान गोळियां बनावे इन्हें ऊष्ण जल के साथ अथवा यथा दोष अपेक्षा सेवन करने से तथा दही चावल पथ्य खाने से आमरोग का नाश होता है।

[१०९] अभयादि चतुस्समवटी

(वृ. यो. त.)

अभया नागरं मुस्तं गुडेन सहयोजितम्।
चस्समेयं गुटिका त्रिदोषघ्नी प्रकीर्तिता।
आमातिसारमारनाहं सविबन्धं विषूचिकाम्
कामला रोचकं हन्यादीपयत्याशु चानलम्॥

हैड़, सोंठ, नागरमोथा और गुड़ सब समान भाग लेकर गुटिका बनावे। यह त्रिदोष, आमातिसार, अफारा, विबंध, हैजा, कामला और अरुचिका नाश करती है तथा शीघ्रही अग्नि को प्रदीप्त करती है।

[११०] अभयादिमोदक

(शा. ध. सं. उ. खं. अ. ४)

अभया मरिचं शुण्ठी विडंगामलकानिच।
पिप्पली पिप्पलीमूलं त्वक्पत्रं मुस्तमेवच॥
एतानि समभागानि दन्ती च द्विगुणा भवेत्।
त्रिवृदष्टगुणा ज्ञेया षड्गुणा चात्र शर्करा॥
मधुना मोदकान्कृत्वा कर्षमात्र प्रमाणतः।
एकैकं भक्षयेत्प्रातः शीतं चानुपिवेज्जलम्॥
तावद्विरिच्यते जन्तु यावदुष्णं न सेवते।
पानाहारविहारेषु भवेन्नियन्त्रणः सदा॥
विषमज्वरमन्दाग्निपांडुकासभगन्दरान्।
दुर्नामकुष्टगुल्मार्शो गलगंडभ्रमोदरान्।
विदाहप्लीहमेहांश्च यक्ष्माणं नयनामयान्।
वातरोगस्तथाध्मानं मूत्रकृच्छ्राणि चाश्मरीम्॥
पृष्ठपार्श्वोरुजघनजङ्घोदररुजं जयेत्।
सततं शीलनादेषां पलितानि प्रणाशयेत्॥
अभया मोदका ह्येते रसायनवराः स्मृताः॥

हरीतकी, काली मिर्च, सोंठ, बायबिड़ंग, आमला, पीपल, पीपलामूल, दालचीनी, तेजपात और नागर मोथा, सब एक एक भाग, दन्ती २ भाग, निसोत ८ भाग, चीनी ६ भाग। मधु के साथ १।–१। तोला भरके मोदक बनावे। प्रातःकाल १–१ मोदक खावे और उपर से शीतल जल पान करे। इससे जब तक ऊष्ण जल न पिया जाय तब तक दस्त आते रहते हैं। इसके सेवनमें किसी विशेष पथ्यकी आवश्यक्ता नहीं है। ये मोदक विषम ज्वर, मन्दाग्नि, पाण्डु, खांसी, भगंदर, दुष्ट कोढ़, गुल्म, बवासीर, गलगण्ड, भ्रम, उदररोग, विदाह, तिल्ली, प्रमेह, यक्ष्मा, नेत्ररोग, वातरोग,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अफारा, मूत्रकृच्छ, पथरी, पृष्ठ पार्श्व, उरू, जांघ तथा उदरशूल आदि अनेक रोगोंका नाश करते हैं। इसका लगातार सेवन करने से पलित रोग का नाश होता है तथा यह उत्तम रसायन है।

[१११] अभयामोदक (१) (वृ. यो. त.)

त्रिपलमभयाफलानां पलत्रयं
त्रिकटुकात्पलं मूलात् ।
दीप्यक चविका चित्रक
विडंगवृक्षाम्लसैन्धवार्धपलैः ॥
त्वक्पत्रैलाकर्षैस्त्रिभिर्युतं
चूर्णितं सूक्ष्मम् ।
त्रिंशत्पलगुडसहितास्त्वक्षमितास्तस्य
मोदकाः कार्याः ।
अभयावटका नाम्ना
प्लीहार्शो गुल्म जठरहराः ।
पांड्वामयिकामलिनां मन्दाग्निनां
च सर्वदा शस्ताः ॥

हैड़ १५ तोला, त्रिकुटा १५ तोला, पीपला मूल ५ तोला, अजवायन २॥ तोला, चव्य, चीता, बाय बिड़ंग, इमली और सैन्धव प्रत्येक २॥ तोला दालचीनी, तेजपात, इलायची प्रत्येक २॥ तोला सबका महीन चूर्ण करके १ सेर ७० तोला गुड़के साथ १।-१। तोलाके मोदक बनावे। यह मोदक तिल्ली, बवासीर, गुल्म, उदररोग, पाण्डु और मन्दाग्नि आदि में हितकर है।

[११२] अभयामोदक (२)
(वृ. नि. र. भा. ५ पा. चि.)

अयस्तिलत्र्यूषणकोलभागैः
सर्वैः समं माक्षिकधातुचूर्णम् ।
तैर्मोदकः क्षौद्रयुतो हि भक्तः
पाण्ड्वामये दूरगतेऽपि शस्तः ॥

लोहा, तिल, त्रिकुटा, प्रत्येक ½-½ तोला, सोनामक्खी सब के समान, इनको शहद में मिलाकर मोदक बनावे इनसे पाण्डु रोग का नाश होता है।

[११३] अभया वटी (रसे. चि. म.)

अभया मरिचं कृष्णा टङ्कणश्च समांशकम् ।
सर्वचूर्णसमं चैव दद्यात्कानकजं फलम् ॥
स्नुहीक्षीरैर्वटीकार्या यथा स्विन्नकलायवत् ।
वटी द्वयं शिवामेकां पिष्ट्वाचोष्णाम्बुना पिबेत् ॥
उष्णा विरेचयेदेषा शीते स्वास्थ्यमुपैति च ।
जीर्णज्वरं पाण्डुरोगं प्लीहाष्ठीलोदराणि च ॥
रक्तपित्ताम्ल पित्तादि सर्वाजीर्ण विनाशयेत् ॥

हरीतकी, काली मिर्च, पीपल, शुद्धसुहागा सब समान भाग, शुद्धजमाल गोटा सबके समान। थोहरके दूधकी भावना देकर भीगी हुई मटरके बराबर गोली बनावे। २ गोली और १ हैड़का चूर्ण ऊष्ण पानीके साथ खानेसे विरेचन होता है और शीतल जल पीनेसे विरेचन रुक जाता है। इनके सेवनसे सब जीर्णज्वर, पाण्डु, प्लीहा, उदररोग, रक्त पित्त, अम्लपित्त, पित्ताजीर्णादिक रोगोंका नाश होता है।

[११४] अभ्रकहरीतकी (र. रा. सु.)

मृताभ्रकं पलं विंशन्मृतलोहस्य पञ्चकम् ।
गन्धकस्य पलं पञ्च त्रिभिर्द्विगुणमाक्षिकम् ॥
पञ्चाशतपलं योज्यं धात्रीपलशतद्वयम् ।
सर्वमेकत्र तच्चूर्णं जम्बीरैर्मर्दयेद्दिनम् ॥
भृङ्गी पुनर्नवाद्रावैः पातालगरुडाकुलैः ।
भल्लातवन्हिकोरांटैर्हस्तिशुण्डी तु लाङ्गली ॥
क्षीरिणी जलकुम्भी च प्रत्येकं प्रत्यहं द्रवैः ।
भावयेन्मर्दयेदित्थं मध्वाज्याभ्यां विलोलयेत् ॥
स्निग्धभाण्डे स्थितं खादेन्नित्यं निष्कद्वयं द्वयम् ।
सिद्धसावरयोगोऽयं त्रिदोषार्शांसि नाशयेत् ॥

अभ्रक भस्म १। सेर, लोह भस्म २५ तोला,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गन्धक २५ तोला, सोना मक्खी भस्म ३॥। सेर, हरीतकी ६। सेर, आमला १२॥ सेर। इन सब को एकत्र चूर्ण करके जम्बीरी नींबू, भांगरा, पुनर्नेवा, पाताल गरुडी, भिलावा, चीता, हाथी सुण्डी, कलिहारी, दूधी तथा जलकुम्भी के रस में १–१ दिन खरल करके शहद और घृत में मिला कर चिकने बरतन में रक्खें। मात्रा ४--६ रत्ती। यह त्रिदोषज अर्श का नाश करती है।

[११५] अभ्रकादिवटी
(वृ. नि. र. भा. ४ सं. चि.)

रसं गन्धं विषं व्योषं टङ्कणं लोहभस्मकम्।
अजमोदाहिफेनं ज सर्वतुल्यं मृताभ्रकम् ॥
चित्रकत्वक्कषायेण मर्दयेद्याममात्रकम् ॥
मरिचाभां वटीं कृत्वा खादेदेकां जयेदसौ॥
चतुर्विधां च ग्रहणीं रहस्यं तदिदं स्मृतम्॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध विष, त्रिकुटा, सुहागेकी खील, लोहभस्म, अजमोद (अजवायन) अफीम, सब समानभाग, अभ्रक सब के बराबर। इन सब को चीते की छाल के क्वाथ में १ पहर तक खरल करके काली मिर्चके बराबर गोलियां बनावें। प्रतिदिन १-१ गोली खानेसे ४ प्रकारकी संग्रहणीका नाश होता है।

[११६] अभ्रवटिका (१) (रा. रा. सु.)

अथ शुद्धस्य सूतस्य गन्धकस्याभ्रकस्य च।
प्रत्येकं कर्षमानं तु ग्राह्यं रसगुणैषिणा ॥
ततः कज्जलिकां कृत्वा व्योषचूर्णं प्रदापयेत्।
केशराजस्य भृङ्गस्य निर्गुण्ड्याश्चित्रकस्य च ॥
ग्रीष्मसुन्दरकस्याथ जयन्त्याः स्वरसन्तथा।
मण्डूकपर्ण्याः स्वरसं तथा शक्राशनस्य च॥
श्वेतापराजितायाश्च स्वरसं तथा पर्णसम्भवम्।
दापयेत्तत्र तुल्यं च विधिज्ञः कुशलो भिषक्॥
रसतुल्यं प्रदातव्यं चूर्णं मरिचसम्भवम्।
शुभे शिलामये पात्रे घर्षणीयं प्रयत्नतः॥
शुष्कमातपसंयोगाद्वटिकां कारयेद्भिषक्।
कलाय परिमाणान्तु खादेत्तां तु प्रयत्नतः॥
दृष्ट्वा वयश्चाग्निबलं यथाव्याध्यनुपानतः।
हन्ति कासं क्षयं श्वासं वातश्लेष्मभवं रुजम्॥
परं वाजीकरः श्रेष्ठो बलवर्णाग्निवर्द्धनः।
ज्वरे चैवातिसारे च शुद्ध एष प्रयोगराट्॥
नातः परतरः श्रेष्ठो विद्यतेऽभ्ररसायनः।
चातुर्थके ज्वरे श्रेष्ठः सूतिकातङ्कनाशनः॥
भोजन शयने पाने नास्त्यत्र नियमः क्वचित्।
दधि चावश्यकं लक्ष्यं प्राह नागार्जुनो मुनिः॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, अभ्रकभस्म, प्रत्येक १। १। तोला सबकी कज्जली करके त्रिकुटेका चूर्ण× मिलावे और फिर भांगरा, काला भांगरा, निर्गुण्डी, चीता, गोमा, जयन्ती, मण्डूक पर्णी (ब्राह्मीभेद), भंग और श्वेत अपराजिताके पत्तोंके रसकी भावना दे। फिर इसमें पारदके बराबर कालीमिर्च डालनी चाहिये इसके बाद पत्थरके खरलमें घोट कर और धूपमें सुखाकर उर्दके बराबर गोलियां बनावे। ये गोलियां यथोचित अनुपान के साथ आयु, अग्नि, बल आदिके अनुसार सेवन करने से खांसी, क्षय, श्वास, कफ, वायुके रोग और ज्वर तथा अतिसारका नाश करती हैं। यह योग अत्यन्त वाजीकरण और बल तथा जठराग्नि वर्द्धक है। चातुर्थिक ज्वर, सूतिका रोगका नाश करता है। इसके ऊपर दही सेवन करना चाहिये।

× **त्रिकुटे का चूर्ण सब चीजों के बराबर या प्रत्येक के बराबर लिया जा सकता है।**

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[११७] अमरसुन्दरीवटी

(वृ. नि. र. भा. ५वा. व्या.)

त्रिकटु त्रिफला चैव ग्रन्थिका रेणुकानलम्।
मृतलोहं चतुर्जातं पारदं गन्धकं विषम् ॥
विडङ्गाकल्लकं मुस्ता सर्वेभ्यो द्विगुणो गुडः।
चणकप्रमाणगुटिका नाम्ना चामरसुन्दरी ॥
अपस्मारे सन्निपाते श्वासे कासे गुदामये।
अशीतिवातरोगेषु उन्मादेषु विशेषतः ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, पीपलामूल, चीता, लोह भस्म, चातुर्जात, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध मीठातेलिया, वायबिड़ङ्ग, अकरकरा, और नागरमोथा। सब समान भाग, गुड़ सबके वजनसे दोगुना। चनेके बराबर गोलियां बनावे। ये गोलियां अपस्मार, सन्निपात, श्वास, खांसी, गुदरोग, अस्सी प्रकारके वायुरोग और विशेष कर उन्मादका नाश करती हैं।

[११८] अमृतकल्पवटी

(र. सा. सं. अ. चि)

शुद्धौ पारदगन्धौ च समानौ कज्जलीकृतौ।
तयोरर्द्धं विषं शुद्धं तत्समं टंकणं भवेत् ॥
भृङ्गराजद्रवैर्भाव्यं त्रिदिनं यत्नतः पुनः।
मुद्गप्रमाणा वटिकाः कर्त्तव्याः भिषजां वरैः॥
वटीद्वयं हरेच्छूलमग्निमांद्यं सुदारुणम्।
अजीर्णं जरयत्याशु धातुपुष्टिं करोति च ॥
नानाव्याधिहरा चेयं वटी गुरुवचो यथा।
अनुपानविशेषेण सम्यग्गुणकरी भवेत् ॥

शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक दोनों समान भाग लेकर कज्जली करे फिर शुद्ध विष और सोहागे की खील प्रत्येक पारेकी बराबर डालकर भांगरेके रसमें ३ दिन तक घोटे और मूंगके बराबर गोलियां बनावे। मात्रा—२ गोली। गुण—शूल मंदाग्नि, अजीर्ण आदिका नाश करती हैं तथा धातु पुष्टि और अनुपान भेदसे अनेक रोगों का नाश करती हैं।

[११९] अमृतप्रभावटी

(वृ. नि. र. भा. ५; अरुचौ)

मरिचं पिप्पलीमूलं लवंगं च हरीतकी।
यवानी तिन्तिडीकं च दाडिमं लवणत्रयम् ॥
एतानि पलमात्राणि मागधी क्षारचित्रकम्।
त्र्यजाजी नागरं धान्यमेला धात्रीफलं समम् ॥
एतान् द्विपलिकान् भागान् भावयेद्बीजपूरकैः।
भावनात्रितयं दत्वा गुटिकां कारयेद्बुधः ॥
छायाशुष्कां प्रकुर्वीत ह्यजीर्णस्य प्रशान्तये।
अग्निं च कुरुते घोरं गुटिका चामृतप्रभा ॥

काली मिर्च, पीपलामूल, लोंग, हैड़, अजवायन, तिन्तड़ीक, अनारदाना, सेंधानमक, सौंचलनमक, सांभरनमक, प्रत्येक ५तोला, पीपल, यवक्षार, चीता, तीनों जीरे, (सफेद जीरा, कालाजीरा और कलोंजी) सोंठ, धनिया, इलायची और आमला प्रत्येक १० तोला। सबको महीन करके बिजौरे के रसकी ३ भावना देकर गोलियां बनावे और छायामें सूखाकर अजीर्ण तथा अग्निमांद्यमें प्रयोग करे।

[१२०] अमृतवटी (१)

(रसे. चि. म. अ. ९)

कुर्याद्गन्धविषव्योषत्रिफलापारदैः समैः।
भृङ्गाम्बुमर्दितैर्मुद्गमात्रामृतवटीं शुभाम्।
अजीर्णे श्लेष्मवातघ्नीं दीपनीं रुचिवर्धिनीम्।

शुद्ध गन्धक, विष, त्रिकुटा, त्रिफला, शुद्ध पारद। सब समान भाग लेकर प्रथम पारद गंधककी कज्जली बनावें फीर अन्य द्रव्योंका चूर्ण मिलाकर भांगरेके रसमें खरल करके मूंगके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बराबर गोलियां बनावे। ये गोलियां अजीर्ण, कफ रोग, वायुरोग नाशक तथा अग्नि दीपक और रुचि वर्द्धक है।

[१२१] अमृतवटी (२) (भै. र. अ. मां.)

अमृतवराटकमरिचैर्द्विपञ्चनवभागिकैः क्रमशः।
वटिका मुद्गसमानाकफपित्ताग्निमान्द्यहारिणी॥

शुद्ध मीठा तेलिया २ भाग, कौड़ी भस्म ५ भाग, काली मिर्च ९ भाग लेकर (पानी या नीबुके रसमें खरल करके) मूंगके बराबर गोलियां बनावे। इनके सेवन से कफ, पित्तरोग और अग्नि मान्द्यका नाश होता है।

[१२२] अमृतवर्तिका (भै. र. रसायने)

त्रिफला त्रिकटु ब्राह्मी गुडूची रक्तचित्रकम्।
नागकेशरचूर्णञ्च भृङ्गबेरं समार्कवम् ॥
सिन्दुवारो हरिद्रे द्वे शक्राशनगुडत्वचौ।
एला मधुकपर्णी च विडङ्गश्चोग्रगन्धिका ॥
चूर्णं प्रत्येकमेतेषां समादाय पलद्वयम्।
कामरूपसमुद्भूतैर्गुडैः पञ्चाशतं पलैः ॥
सषष्टिस्त्रिशती कार्या वर्तिस्तेन समानतः।
चन्द्रताराविशुद्धौ च पूजयित्वेष्टदेवताम् ॥
सुकृति प्रज्ञया प्रीतो वर्तिमेकां तु भक्षयेत्।
ततोऽनुपानं पानीयं सलिलं च सुशीतलम् ॥
कट्वम्ललवणश्चैव नातिमात्रं कदाचन।
यः प्रत्यहमिदं खादेत्कर्षमानं निरन्तरम् ॥
भोजनादौ प्रदोषे वा शृणु यादृक् फलं भवेत्।
नष्टवन्हिस्तुदीप्ताग्निर्वडवानलसन्निभः ॥
इष्टापि भास्वती कान्तिश्चन्द्रिकेव निशामुखे।
काशपुष्परुचःकेशाः शिखिकण्ठमनोरमाः ॥
पटलावहतं चक्षुर्लक्षयोजनदर्शनम्।
जराविश्लथदेहोऽपि लेपनिर्माणशाद्वलः ॥
निर्व्याधिनिर्जरः पङ्कुर्वेगेनोच्चैश्रवा इव।
दिनेश इव तेजस्वी कन्दर्प इव रूपवान् ॥
सहस्रायुर्महासत्त्वो गन्धर्व इव गायकः।
स्त्रीशतं रमते नित्यं नावसादं व्रजत्यसौ ॥
न भजन्त्यापदः काश्चित्कामरूपी भवेदसौ।
पद्मगन्धि वपुस्तस्य पुष्पस्येव सुकोमलम् ॥
जराचयैः सुजीर्णस्य नखकेशादयो यथा।
प्रभवन्ति बलादुग्रादथ कन्दा इवाम्बुदात् ॥
हृष्टः पुष्टश्च पापघ्नः शान्तो भवति मानवः।
श्रीअमृतवर्तिकानाम मृत्युञ्जयमुखोदिता।
रसायनानां श्रेष्ठेयं सर्वव्याधिनिषूदनी ॥

हरड, बहेड़ा, आमला, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, ब्राह्मी, गिलोय, लाल चीता, नागकेशर, सोंठ, काला भंगरा, संभालूके पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी, इन्द्रजौ, दालचीनी, इलायची, खंभारी, बायविडंग और बच, १०-१० तोले लेकर चूर्ण बनावें और उसे २५० तोले कामरूप देशके उत्तम गुड़की चाशनी में मिलाकर ३६० गोलियां बना लें।

शुभ दिन और शुभ नक्षत्रमें इष्ट देवताका पूजन करके प्रति दिन भोजनके प्रारम्भ या सायंकालमें १-१ गोली शीतल जलके साथ प्रेम पूर्वक सेवन करे। इनके सेवनकालमें कटु, अम्ल और नमकीन पदार्थों का अधिक सेवन कदापि न करना चाहिए।

इनके सेवनसे:--नष्ट जठराग्नि वडयानलके समान प्रदीप्त हो जाती है। कान्ती उगते चन्द्रमाके समान भास्मान होने लगती है। काशपुष्पके समान सफेद केश काले हो जाते हैं। पटल युक्त नेत्र भी लक्ष योजन तक देखने में समर्थ हो जाते हैं। जराजर्जरित शरीर भी सुगठित मांसल हो जाता है। सब व्याधियां और वृद्धावस्था नष्ट

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हो जाती है। गमनशक्ति अत्यन्त बढ़ जाती है। तेज सूर्यके समान और रूप कामदेवके समान हो जाता है। इसे सेवन करने वालेकी आयु एक हजार वर्षकी होनी संभव है। वह गन्धर्व के समान गायक और महा सत्ववान हो जाता है। सौ स्त्रियोंके साथ समागम करने पर भी उसमें शिथिलता नहीं आती, उसे कोई रोग नहीं सताता। उसका शरीर सुगन्धमय और पुष्पके समान कोमल हो जाता है। जिस प्रकार पत्र शाखा आदि से हीन कन्द वर्षासे पुनः अङ्कुरित हो जाते हैं उसी प्रकार इस प्रयोगके सेवनसे वृद्धावस्थासे मुरझाया हुवा शरीर नवयौवन युक्त हृष्ट पुष्ट पाप- (रोग) रहित और शान्त स्वभाव युक्त हो जाता है। इस "अमृतवर्तिका" नामक श्रेष्ठ रसायन का आविष्कार श्रीमृत्युञ्जय भगवान ने किया था।

[१२३] अमृतसारगुटिका

(र. र. रसायने)

फलत्रिकामृतामुस्तवृद्धदारविडङ्गकम्।
वचानामेकशश्चैव द्विपलं द्विपलं भवेत्॥
कटुत्रिकं कणामूलं जलमूलकचित्रकैः।
त्वगेलानागचूर्णानां प्रत्येकं च पलं पलम्॥
सर्वं चूर्णमिदं श्लक्ष्णं पलानां पञ्चविंशतिः।
द्विगुणेन गुडेनैव मोदकं परिकल्पयेत्॥
शतत्रयं षष्ट्यधिकं प्रत्यहं भोजनोपरि।
सुविशुद्धशरीरस्तु शस्ते काले शुभे दिने॥
एकैकं कृत्वा काले च भक्षयेदमृतोपमम्।
जलं वा अनुपातव्यं भोजनं सार्वकामिकम्॥
मासे तु प्रथमे सर्वान्व्याधींश्च नाशयेद् ध्रुवम्।
द्वितीये पुष्टिजननं तृतीये कनकप्रभः॥
चतुर्थे शुक्रबहुलः पञ्चमे तु महामतिः।
षष्ठे मागसहस्राणां बलादेवातिरिच्यते॥
सप्तमे वाजिवेगः स्यादष्टमे मन्त्रसाधकः।
सर्वज्ञो नवमे मासि दशमे पवनोपमः॥
स्त्रीजिदेकादशे मासे नाग्निना द्वादशे दहेत्।
वलीपलितनिर्मुक्तो युवकादधिको भवेत्॥
एवं संवत्सरं यावद्यः करोति पुमानिह।
वत्सराणां सहस्राणि जीवेन्नास्त्यत्र संशयः॥

हरड, बहेड़ा, आमला, गिलोय, नागरमोथा, विधारामूल, बायबिड़ंग और बच १०-१० तोले तथा सोंठ, काली मिर्च, पीपल, पीपलामूल, सुगन्धबालाकी जड़, चीतामूलकी छाल, दालचीनी, इलायची और नागकेशर ५-५ तोले लेकर बारीक चूर्ण बनावें। यह १२५ तोले चूर्ण, २५० तोले गुड़की चाशनीमें मिलाकर सबके ३६० मोदक बना लें।

(पञ्च कर्म द्वारा) शरीर शुद्धि करके शुभ दिनमें इनका सेवन आरम्भ करे। इनमें से १ मोदक प्रतिदिन भोजनके अन्तमें शीतल जलके साथ सेवन करनेसे १ मासमें समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं। दूसरे मासमें शरीर पुष्ट हो जाता है। तीसरे मासमें शरीर कान्ति स्वर्ण के समान हो जाती है। चौथे मासमें अत्यन्त शुक्र वृद्धि होती है और पाचवें मासमें मनुष्य अत्यन्त मतिमान हो जाता है। छठे मास में सहस्रों हाथियों से भी अधिक बल आ जाता है। सातवें मास में घोड़ेके समान तीव्र गमनकी शक्ति आ जाती है। आठवें मासमें मन्त्रसाधनकी सामर्थ्य आ जाती है। नवें मासमें मनुष्य सर्वज्ञ और दसवें में वायुके समान (वेगयुक्त) हो जाता है। ११ मास तक इसे सेवन करने से पुरुष स्त्रिजित हो जाता है तथा १२ मासके सेवनसे वह अग्नि में भी नहीं जलता एवं बलिपलित रहित युवकसे भी अधिक यौवनयुक्त हो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाता है। इसे १ वर्ष तक सेवन करने से एक हज़ार वर्षकी आयु हो जाती है।

[१२४] अमृताङ्कुरवटी (भै. र. क्षुद्र)

अमृतं पारदं गन्धं लोहमभ्रं शिलाजतु।
गुञ्जामात्रां वटीं कुर्यान्मर्दयित्वामृताम्भसा॥
एषामृताङ्कुरवटी पीता धात्र्यम्भसा सह।
क्षुद्ररोगानशेषांस्तु गदान् पित्तास्रकोपजान्॥
ज्वरं जीर्णं प्रमेहं च कार्श्यमग्निक्षयं तथा।
नाशयेज्जनयेत्पुष्टिं कान्तिं मेधां शुभां गतिम्॥

शुद्ध मीठातेलिया, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, लौहभस्म, अभ्रकभस्म और शिलाजीत सब समान। सबको गिलोयके रसमें खरल करके एक एक रत्ती की गोलियां बनावे। इन्हें आमले के रस के साथ सेवन करने से क्षुद्र रोग, पित्त और रक्तदोषज रोग, जीर्ण ज्वर, प्रमेह, कृशता और अग्निमांद्य का नाश होता है तथा बल पुष्टि और कान्ति तथा बुद्धि बढ़ती हैं।

[१२५] अमृतानामगुटिका
(र. रा. सु.)

पलत्रयं चित्रकश्च चेतकी च पलत्रयम्।
पारदं त्रिकुटं चैव पिप्पलीमूलमुस्तकम्॥
जातीफलंवृद्धदारु ग्राहयेच्च पलं पलम्।
एला शुभा कुष्ठगन्धं दरदं करहाटकम्॥
ज्योतिष्मती त्वगभ्रञ्च आयसं च पलार्धिकम्।
हालाहलं निष्कमेकं गुडं पलाष्टकम्॥
भृंगराजरसेनैव गुटिका कोलसम्मिता।
एकैकां भक्षयेन्नित्यं वाताशीतिर्विनश्यति॥
कुष्ठाष्टादश नश्यन्ति प्रमेहान् विंशतिस्तथा।
अपस्मारं षडेतानि सर्वनाडीव्रणाणि च॥
क्षयमेकादशकं हन्ति ऊर्ध्वश्वासं सुसुप्तिका।
शोथामवातपाण्डुत्वं कामलार्शो निहन्ति षट्॥

चीता, हैड, प्रत्येक १५ तोला, शुद्ध पारद, त्रिकुटा, पीपला मूल, नागरमोथा, जायफल, विधारा प्रत्येक ५ तोला, इलायची, बंसलोचन, कूठ, शुद्ध गन्धक, शुद्ध हिंगुल,मैनफल, मालकंगनी, दारचीनी, अभ्रकभस्म, लोहभस्म प्रत्येक २॥ तोला, हलाहल विष १ निष्क, (२—३ रत्ती) गुड़ आधा सेर। सबको भांगरे के रसमें मर्दन करके बेरके बराबर गोलियां बनावे। प्रति दिन एक एक गोली खानेसे ८० प्रकार की बात व्याधि, १८ प्रकार के कुष्ठ, २० प्रकार के प्रमेह, ६ प्रकार के अपस्मार, नाड़ी व्रण (नासूर) ११ प्रकारका क्षय, ऊर्ध्वश्वास, सूजन, प्रसूतवात, आमवात, पाण्डु, कामला,बवासीर आदि रोगों का नाश होता है। ×

[१२६] अम्लपित्तान्तको मोदकः
(भै. र. अ. पि.)

नागरस्य कणायाश्च पलान्यष्टौ प्रदापयेत्।
गुवाकस्य पलान्यष्टौ सर्वमेकत्र कारयेत्॥
घृतं क्षीरं ततः पश्चात्प्रस्थं प्रस्थं प्रदापयेत्।
लवङ्गं केशरं कुष्ठं यवानी कारवी वच॥
चन्दनं मधुकं रास्ना देवदारु फलत्रिकम्।
पत्रमेला वराङ्गं च सैन्धवं हबुषं शठी॥
मदनं कटफलं मांसी गगनं वङ्गरूप्यकम्॥
तालीशं पद्मकं मूर्वा समङ्गा वंशलोचना॥
ग्रन्थिकं शतपुष्पा च शतमूलकुरुण्टकम्।
जातीफलं जातीकोषं कक्कोलमम्बुदं कणा॥
कर्पूरश्च विडङ्गश्च अजमोदा बलामृता।
मर्कटी क्षुरबीजश्च चन्दनंदेवताडकम्॥

× इस प्रयोग को अत्यन्त सावधानी पूर्वक बनाना तथा व्यवहार करना चाहिये। हलाहल विष को शुद्ध करके लेना चाहिये अन्यथा हानि की संभावना है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लौहं कांस्यं प्रद तव्यं कर्षमात्रं भिषग्विदा ।
अन्यत्सर्वं कर्षमात्रं कर्षार्द्धं स्वर्णभस्मकम् ॥
चतुर्थं तु विधानेन मारितं ग्राहयेत्सुधीः ।
अम्लपित्तान्तको ह्येष मोदको मुनिभावितः ॥
वान्ति मूर्च्छाञ्च दाहञ्च कासं श्वासं भ्रमं तथा।
वातजं पित्तजञ्चैव कफजं सान्निपातिकम् ॥
सर्वरोगं निहन्त्याशु प्रमेहं सूतिकागदम् ।
शूलञ्च वह्निमांद्यञ्च मूत्रकृच्छ्रं गलग्रहम् ॥

सोंठ, पीपल, सुपारी प्रत्येक आधा सेर, दूध, घी प्रत्येक २ सेर, लौंग, केशर, कूठ, अजवायन, काली जीरी, वच, सफेद चन्दन, मुलैठी, रास्ना, देवदारु, त्रिफला, तेजपात, इलायची, दालचीनी, सेंधा नमक, हाऊबेर, कपूर कचरी, मैनफल, कायफल, जटामांसी, अभ्रक, वंग तथा चांदी भस्म, तालीश पत्र, पद्माख, मूर्वा, मजीठ, बंसलोचन, पीपलामूल, सोया, शतावर, कुरण्टा, जायफल, जावत्री, कंकोल, नागरमोथा, पीपल, कपूर, बायबिडंग, अजमोद (अजवायन) बला, गिलोय, कौंच के बीज, तालमखाना, चन्दन, देवताड़ (देवदाली), लोहभस्म, कांसी भस्म, प्रत्येक १। तोला, सोना भस्म ६० रत्ती । सब को एकत्र कर विधिवत् मोदक बनावे । गुण—ये मोदक वमन, मूर्छा, दाह, खांसी, श्वास, भ्रम, प्रमेह, सूतिका रोग, शूल, अग्निमांध, मूत्रकृच्छ्र, गलग्रह और अम्लपित्तादि को आराम करते हैं । *

[१२७] अर्जकादि वटिका

(भै. र. वी. स्तं.)

मूलमर्जकशङ्खिन्योनिर्गुण्डीकेशराजयोः ।
जातीफलं देवपुष्पं विडङ्गं राजपिप्पलीम् ॥
चातुर्जातं तुगाक्षीरीमनन्तां मुसलीं क्षीरीम् ।
विदारीं गोक्षुरं बीजञ्चाभातोयेन मर्दयेत् ॥
माषमात्रां वटीं कृत्वा सुरामण्डेन योजयेत् ।
वीर्य्यस्तम्भकरी वृष्या वटिकेयं प्रकीर्तिता ॥

सफेद तुलसी की जड, शङ्खपुष्पी की जड, निर्गुण्डी, भांगरे की जड, जायफल, लौंग, बायबिडंग, गजपीपल, चातुर्जात, बंसलोचन, अनन्तमूल, सफेद मूसली, शतावरी विदारी कन्द, गोखरू, सब को कीकर की छाल के रस में खरल करके एक एक माशे की गोलियां बनावे । ये गोलियां वीर्य स्तम्भक और वृष्य हैं । अनुपान—सुरामण्ड ।

[१२८] अर्द्धनारीश्वरः

(भै. र. शि. रो.)

वराटं टङ्कनं शुद्धं पञ्चभागसमन्वितम् ।
नवभागं मरीचस्य विषं भागत्रयं मतम् ॥
स्तन्येन वटिकां कृत्वा नस्यं दद्याद्विचक्षणः ।
शिरोविकारान्विविधान्हन्ति श्लेष्मोत्तरानपि ॥

कौडी भस्म, सुहागे की खील प्रत्येक ५ भाग मरिच ९ भाग, मीठा तेलीया ३ भाग । स्त्री के दूध में गोली बनाकर रक्खे । इसकी नस्य देनेसे अनेक प्रकारकी शिरो वेदना शान्त होती है ।

[१२९] अर्शोघ्नवटक

(र. र. स. अ. १५)

अर्शोघ्नं वटकं वक्ष्ये पुत्रक ! शृणु, भद्रक ।
पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यसूरणचित्रजम् ॥
मरिचं कण्टकारी च रक्तपुष्पी समांशकम् ।
पलमेकं पृथक् सर्वं श्लक्ष्णं दृषदि पेषयेत् ॥
गजाजपशुमूत्रेषु शुभे भाण्डे विनिक्षिपेत् ।
मृद्वग्निना पचेत्सर्वं चूर्णशेषं यथा भवेत् ॥

* इस प्रयोग में पहिले घी को कढाई में चढावे गरम होने पर उसमें दूध और अन्य चीजों का चूर्ण मिलाकर पाक सिद्ध करना चाहिये ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लवणत्रयञ्च तत्रैव पलमेकं तु निक्षिपेत् ।
अक्षप्रमाणवटकान्कुर्यादेवं पृथक् पृथक् ॥
त्रिंशद्दिनानि मतिमानर्शोघ्नं दीपनं परम् ।
घृततक्रसमायुक्तं भोजनं सम्प्रदापयेत् ॥

पीपल, पीपलामूल, वनसूरण, चीता, मरिच, कटेली, लाल सांठी की जड। प्रत्येक ५-५ तोला इन सबके कल्कको हाथी और बकरीके मूत्रमें मिट्टीके बरतनमें मन्दाग्नि पर पकावें। जब मूत्र जल जाय और केवल चूर्ण बाकी रहे तो उसमें त्रिलवण (सेंधा, सौंचल और सांभर) ५ तोला मिलाकर १।-१। तोला के वटक बनावे और एक मास तक सेवन करे तो बवासीर और मन्दाग्निका नाश हो। व्यवहारिक मात्राः—२ माशा। इस पर घृत और तक्रयुक्त आहार पथ्य है।

[१३०] अष्टांगलवणवटिका

(च. सं. चिं. अ. २५)

सौवर्चलमजाजीं च वृक्षाम्लं साम्लवेतसम् ।
त्वगेला मरिचार्द्धांशं शर्कराभागयोजितम् ॥
एतल्लवणमष्टांगमग्निसंदीपनं परम् ।
मदात्यये कफप्राये दद्यात्स्रोतो विशोधनम् ॥

सौंचल, जीरा, वृक्षाम्ल (इमली), अम्लवेत, दालचीनी, इलायची और मरिच, प्रत्येक आधा भाग, शकर (चीनी) १ भाग× । यह अष्टांग लवण अत्यन्त अग्नि सन्दीपक और कफ प्रधान मदात्यय नाशक तथा स्रोत शोधक है। मात्रा—२ माशा.

× **इन सब को पानी में पीसकर गोलियां बना लेनी चाहियें।**

[१३१] अष्टादशांगगुटिका

(वं. से. पां. चि.)

किराततिक्तं सुरदारु दार्वी,
मुस्ता गुडूची कटुका पटोलम् ।
दुरालभा पर्पटकं सनिम्बं,
कटुत्रिकं वापि फलत्रिकञ्च ॥
विडंगसारञ्च समांशकानि,
सर्वैः समं चूर्णमथात्रलौहम् ।
सर्पिमधुभ्यां गुटिका विधेया,
तक्रानुपानं भिषजा प्रयोज्यम् ॥
निहन्ति पाण्डुं श्वयथुं प्रमेहं
हलीमकं हृद्ग्रहणीप्रदोषम् ।
श्वासञ्च कासञ्च सरक्तपित्त-
मर्शांस्यधोवंग्रहमामवातम् ।
व्रणान्सकुष्ठान् कफविद्रधींश्च,
श्वित्राणि कृच्छं सततप्रयोगात् ॥

चिरायता, देवदारु, दारु हल्दी, नागरमोथा, गिलोय, कुटकी, पटोलपत्र, धमासा, पित्तपापड़ा, नीम की छाल, त्रिकुटा, त्रिफला और वायविडंग सब समान भाग, सबके बराबर लोह भस्म। इन सबका महीन चूर्ण करके घी और शहदमें मिला कर गोलियां बनावे। इन्हें छाछके साथ सेवन करनेसे पाण्डु, शोथ, प्रमेह, हलीमक, हृद्रोग, ग्रहणी, श्वास, खांसी, रक्तपित्त, अर्श, उरुग्रह, आमवात, व्रण, कुष्ट, कफ विद्रधी और श्वेत कुष्टका नाश होता है। मात्रा—२ से ४ रत्ती।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ अकारादि गुग्गुलु प्रकरणम्

गुग्गुलु व्याख्या

जिन औषधियों में प्रधान उपादान गुग्गुलु (गूगल) होता है उन्हें गुग्गुलु कहते हैं।

अनेक बार गुग्गुलु का पाक किया जाता है और अनेक बार दवाइयों में मिलाकर घी आदि के साथ कूटा जाता है, गुग्गुलु का पाक भी गुड़ आदि के समान ही किया जाता है। परन्तु गुड़ आदि का पाक सिद्ध होने पर पतला रहता है और गुग्गुलु घन रहता है। यदि पानी में डालने से नीचे बैठ जाय और इधर उधर फैल न जाये तो पाक सिद्ध समझना चाहिये।

यदि पाक न करना हो तो दवाइयोंका चूर्ण मिलाकर हामिन दस्ते में डालकर खूब कूटना चाहिये और बीच बीच में थोड़ा २ घी डालते रहना चाहिये। जितना ही अधिक कूटा जाय उतना ही उत्तम है।

अकारादि गुग्गुलु प्रकरणम्

[१३२] अभयादि गुग्गुलुः

(भै. र. परिशिष्टे)

अभयामलकीद्राक्षाः शताह्वां ब्रह्मयष्टिकाम्।
शारिवाद्वयमञ्जिष्ठानिशादारुनिशावचाः॥
शिथिलं वाससा बद्धं गुग्गुलुश्चाष्टमुष्टिकम्।
सार्द्धद्रोणे जले पक्त्वा पादे शिष्टेऽवतारयेत्॥
ततस्तं गुग्गुलं तस्मिन्क्वाथतोये पुनः पचेत्।
सिद्धप्राये क्षिपेत्पाके मुशलींमधुकं मुराम्॥
चातुर्जातं विडङ्गं च देवपुष्पं दुरालभाम्।
त्रिवृतां त्रायमाणाञ्च त्र्यूषणं च पलोन्मितम्॥
अभयादिरसौ हन्ति गुग्गुलुः स्नायुसम्भवान्।
मास्तिष्कानपि रोगांश्च मधुना सह सेवितः॥

हरीतकी, आमला, दाख, सोया, भारङ्गी, दो प्रकारकी शारिवा, मजीठ, हल्दी, दारु हल्दी और बचा, (५-५ तोला) सब को समान भाग ले अध कूटा कर २४ सेर पानी में चढा कर इसमें आध सेर गूगल पोटली में ढीला बांध कर डालदे और पकावे जब चौथाई पानी शेष रहे तब उतारले। फिर इस गूगलको इस क्वाथमें पकावे, पाक सिद्ध होने पर, सफेद मूसली, मुलैठी, मुरामांसी, चातुर्जात, वायबिडङ्ग, लौंग, घमासा, निसोत, त्रायमाणा, त्रिकुटा, प्रत्येक का ५-५ तोले चूर्ण मिलावे। यह गूगल स्नायु और मस्तिष्क सम्बन्धी रोगोंका नाश करता है। अनुपानः—मधु

[१३३] अमृतादि गुग्गुलः (१)

(भै. र. स्थौ.)

अमृतात्रुटिवेल्लवत्सकं,
कलिङ्गपथ्यामलकानि गुग्गुलम्।
क्रमवृद्धमिदं मधुप्लुतं,
पिडिका स्थौल्य भगन्दरं जयेत्॥

गिलोय, छोटी इलायची, वायबिड़ंग, कुड़ेकी छाल, इन्द्रयव, हैड़, आमला और गूगल यथा क्रम १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८ भाग लेकर गूगलमें समस्त औषधियोंका चूर्ण मिलाकर सुरक्षित रक्खें। इसे मधु में मिलाकर सेवन करने से पिड़िका, स्थौल्य और भगन्दर रोग का नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[१३४] अमृतादि गुग्गुलः (२)
(भै. र. कुष्ठे)

अमृतायाः पलशतं दशमूल्यास्तथा शतम्।
पाठा मूर्वा बला तिक्ता दार्वी गन्धर्वहस्तकाः॥
एषां दशपलान्भागान् विभीतक्याश्शतं हरेत्।
द्वे शते च हरीतक्या आमलक्यास्तथा शतम्॥
जलद्रोणत्रये पक्त्वा अष्टभागावशेषितम्।
प्रस्थं गुग्गुलुमाहृत्य प्रस्थार्द्धं च घृतं पचेत्।
पाकसिद्धौ प्रदातव्यं गुडूच्याः सत्वमेव च।
पलद्वयं तथा शुण्ठयाः पिप्पल्याश्च पल द्वयम्॥
ततो मात्रां प्रयुञ्जीत ज्ञात्वा दोष बला बलम्।
अष्टादशसु कुष्ठेषु वातरक्तगदेषु च॥
कामलामामवातं च अग्निमान्द्यं भगन्दरम्।
पीनसं च प्रतिश्यायं प्लीहानमुदरं तथा॥
एतान् रोगान् निहन्त्याशु भास्करस्तिमिरं यथा

गिलोय ६। सेर, दशमूल ६। सेर, पाठा, मूर्वा, खरैंटी, कुटकी, दारु हल्दी और एरण्ड मूल, प्रत्येक ५० तोला, बहेड़ा ६। सेर, १२॥ सेर हैड़ और आमला ६। सेर लेकर सबको ९६ सेर जलमें पकाकर आठवां भाग शेष रहने पर उतारकर छानले और उसमें गूगल १ सेर और घृत ०॥ सेर डालकर पुनः पकावे पाक सिद्ध होने पर गिलोयका सत, सोंठ और पीपल प्रत्येक १०—१० तोला मिलावे। इसे मात्रानुसार दोषके बला-बल को देखकर सेवन करने से १८ प्रकारके कुष्ट, वातरक्त, कामला, आमवात, मन्दाग्नि, भगन्दर, पीनस, प्रतिश्याय, प्लीहा और उदर रोग इस प्रकार शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं जिस प्रकार सूर्योदयसे अन्धकार।

[१३५] अमृतादि गुग्गुलः (३)
(भा. प्र. वा. र.)

प्रस्थमेकं गुडूच्याश्च अर्धप्रस्थं च गुग्गुलोः।
प्रत्येकं त्रिफलायास्तु तत्प्रमाणं विनिर्दिशेत्॥
सर्वमेकत्र संकुट्य साधयेदुल्वणेऽम्भसि।
पादशेषं परिस्राव्य कषायं ग्राहयेद्भिषक्॥
पुनः पचेत्कषायन्तु यावत्सान्द्रत्वमागतम्।
दन्तीव्योषविडङ्गानि गुडूची त्रिफला त्वचः॥
ततश्चार्द्धपलं चूर्णं गृन्हीयाच्च पृथक् पृथक्।
कर्षंतुत्रिवृतायाश्च सर्वमेकत्र चूर्णयेत्।
तस्मिन्सुसिद्धं विज्ञाय कोष्णे प्रक्षिपेद्बुधः॥
ततश्चाग्निबलं मत्वा खादेत्कर्षप्रमाणतः।
वातरक्तं तथा कुष्ठं गुदजान्यग्नि सादनम्॥
दुष्टव्रणं प्रमेहांश्च आमवातं भगन्दरम्।
नाड्याढयवातं श्वयथुं सर्वानेतान्व्यपोहति॥

गिलोय १ सेर, गूगल ०॥ सेर, हैड़, बहेड़ा, आमला, प्रत्येक आधा सेर लेकर सबको कूटकर ३२ सेर पानीमें पकावे, चौथा भाग शेष रहे जाने पर छानले और फिर पकावे जब तक घनता न आजावे और फिर दन्ती, त्रिकुटा, बायविड़ंग, गिलोय, त्रिफला, दालचीनी, प्रत्येक २॥ तोला, और निसोत १। तोला लेकर सबका चूर्ण करके उपरोक्त गरम २ पाकमें मिलावे। मात्रा:—१। तोला। गुण—वातरक्त, कोढ़, अर्श, मन्दाग्नि, दुष्ट व्रण, प्रमेह, आमवात, भगन्दर, नाडीव्रण, आढ्यवात सूजन आदिका नाश करता है।

[१३६] अमृतादि गुग्गुलः (४)
(भा. प्र. वा. र.)

त्रिप्रस्थममृतायाश्च प्रस्थमेकन्तु गुग्गुलोः।
प्रत्येकं त्रिफला प्रस्थं वर्षाभूप्रस्थमेव च॥
सर्वमेकत्र संकुट्य साधयेदुल्वणेऽम्भसि।
पुनः पचेत्पादशेषं यावत्सान्द्रत्वमागतम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दन्ती चित्रकमूलानां कणाविश्वफलत्रिकम्।
गुडूचीत्वर्गविडंगानां प्रत्येकार्द्धं पलंमतम्॥
त्रिवृता कर्षमेकन्तु सर्वमेकत्र चूर्णयेत्।
सिद्धे उष्णे क्षिपेत्तत्र अमृतागुग्गुलुं परम्॥
अतो यथाबलं खादेदम्लपित्ती विशेषतः।
वातरक्तं तथा कुष्ठं गुदजान्यग्निसादनम्॥
दुष्टव्रणं प्रमेहाँश्च आमवातं भगन्दरम्॥
नाड्याढ्यवातं श्वयथुं हन्यात्सर्वामयांस्तथा।
अश्विभ्यां निर्मितश्चायममृताख्योहि गुग्गुलुः॥

गिलोय ३ सेर, गूगल १ सेर, हैड़, बहेड़ा, आमला और पुनर्नवा हरेक १-१ सेर, सबको कूटकर ३२ सेर पानीमें पकावे। चौथा भाग शेष रहने पर छानकर फिर पकावे, गाढ़ा होने पर दन्ती, चीतामूल, सोंठ, पीपल, त्रिफला, गिलोय, दालचीनी और बायबिड़ंग, प्रत्येक २॥–२॥ तोला, निसोत १। तोला सबका चूर्ण करके मिलावे। यह भी नं० १३५ के समान ही गुणकारी है परन्तु अम्ल-पित्तमें विशेष गुणकारी है। इस गूगलकी योजना अश्विनीकुमारोंने की थी।

[१३७] अमृतादि गुग्गुलुः (५)

(वृ. यो. त.)

गुडूचीत्रिफलाक्वाथैर्गुग्गुलुः पिण्डितो वरः।
क्रोष्टुशीर्षं निहन्त्युच्चैः सेवितो मासमात्रतः।
हृते रक्तेऽनिलहरो विधिः कृत्स्नः प्रशस्यते।

उत्तम प्रकार के गूगल में गिलोय और त्रिफले का काढ़ा मिलाकर कूटे। इसे एक मास तक सेवन करने से क्रोष्टुशीर्ष का नाश होता है। क्रोष्टुशीर्ष में रक्त निकालने के बाद वायु नाशक उपाय करना चाहिये।

[१३८] अमृतादिवटिका गुग्गुलुः (६)

(र. र. व्र. चि.)

अमृतापटोलमूलत्रिफलात्रिकटुक्रिमिघ्नानाम्।
समभागानां चूर्णं सर्वसमोगुग्गुलोर्भागः॥
प्रति वासरमेकैकां गुडिकां खादेदक्षपरिमाणाम्
जेतुंव्रणवातासृग्गुल्मोदरश्वयथुपाण्डुरोगान्॥

गिलोय, पटोल की जड़, त्रिफला, त्रिकुटा और बायबिड़ंग, सब समान भाग, गूगल सबके बराबर। यह गूगल व्रण, वातरक्त, गुल्म, शोथ और पांडु का नाश करता है। मात्रा–१। तोला.

अथाकाराद्यवलेह प्रकरणम्

अवलेह व्याख्या

मधु, गुड़, स्वरस आदि द्रव पदार्थों में औषधियों का चूर्ण मिलाकर अथवा क्वाथ आदि को पुनः पकाकर जो चटनी तैयार की जाती है उसे अवलेह अथवा लेह कहते हैं।

यदि औषधियों का परिमाण न लिखा हो तो अवलेह पाकके लिये—

सिता चतुर्गुणाकार्याचूर्णाच्च द्विगुणोगुडः।
द्रवं चतुर्गुणं दद्यादिति सर्वत्र निश्चयः॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

औषधियों के चूर्ण से मिश्री ४ गुनी, गुड २ गुना और क्वाथादि द्रव पदार्थ ४ गुने लेने चाहियें। प्रथम घी, तेल आदि स्नेहों को कढ़ाई में चढ़ाकर गर्म करना चाहिये और यदि आमले का कल्क, पेठा आदि स्नेह में भूनने योग्य पदार्थ हों तो उन्हें भी इसी समय भून लेना चाहिये, फिर जब कल्कादि भुन जाएं तो उनमें क्वाथादि द्रव पदार्थ और चीनी गुड़ आदि मिला कर पकाना चाहिये। जब चाशनी तैयार हो जाय और उसमें तार छूटने लगे तो प्रक्षेप द्रव्योंका चूर्ण मिलाकर कौंचे आदि से खूब घोटना चाहिये और नीचे उतारकर ठण्डा होने पर शहद मिलाकर मिट्टी या ...र, चीनी आदि के चिकने पात्रमें भरकर रख देना चाहिये।

पाक

पाक भी अवलेह के समान ही बनाया जाता है परन्तु इतना भेद है कि अवलेह मे इसकी चाशनी कठिन होती है और तैयार होने पर यह जम जाता है परन्तु अवलेह नरम रहता है।

अकाराद्यवलेह प्रकरणम्

[१३९] अगस्त्यहरीतकी (वृ. नि. र. क्षय.)

हरीतकीशतं भद्रयवानामाढकं तथा।
पलानि दशमूलस्य विंशतिश्च नियोजयेत् ॥
चित्रकः पिप्पलीमूलमपामार्गः शठी तथा।
कपिकच्छूः शङ्खपुष्पी भार्गी च गजपिप्पली ॥
बला पुष्करमूलं च पृथक् द्विपलमात्रया।
पचेत्पश्चाढके नीरे यवैःस्विन्नैः भृतम् नयेत् ॥
तत्राभयाशतं दद्यात् क्वाथे तस्मिन्विचक्षणः।
सर्पिस्तैलाष्टपलकं क्षिपेद्गुडतुलां तथा ॥
पक्त्वा लेहत्वमानीय सिद्धे शीते पृथक् पृथक्।
क्षौद्रं च पिप्पलीचूर्णं दद्यात्कुडवमात्रया ॥
हरीतकीद्वयं खादेत्तेन लेहेन नित्यशः।
क्षयं कासं ज्वरं श्वासहिक्कार्शोरुचिपीनसान् ॥
ग्रहणीं नाशयेदेष बलीपलितनाशनः।
बलवर्णकरः पुंसामवलेहो रसायनः।
विहीतोऽगस्त्यमुनिना सर्वरोगप्रणाशनः ॥

हैड़ १०० नग, श्रेष्ठ इन्द्रजौं ४ सेर, दशमूल १। सेर, चित्रक, पीपलामूल, चिरचिटा, कर्पूरकचरी, कौंच के बीज, शंखपुष्पी, भारंगी, गजपीपल, खरैंटी और पोखरमूल प्रत्येक १०-१० तोले। हैड़ और इन्द्रजौं को पोटली में बांधे और बाकी द्रव्योंको मिलाकर अर्धकुटा करके २० सेर पानी में पकावे तथा इसमें पोटली रखदे। जब हैड़ और इन्द्रजौं उसीज (उबल) जायें तथा क्वाथ तैयार हो जाय तो उतार लें। इस क्वाथ को छान कर इसमें उसीजी हुइ हैडों को मिलावे, तथा ४०-४० तोले घृत और तेल तथा ६। सेर गुड मिलाकर पकावे। अवलेह सिद्ध होने पर तथा ठंडा होने पर मधु और पिप्पली-चूर्ण प्रत्येक २०-२० तोले मिलावे। इसमें से प्रतिदिन २ हैड़ खावे और लेह चाटे तो क्षय, खांसी, ज्वर, श्वास, हिक्का, अर्श, अरुचि, पीनस, ग्रहणिरोग और बलीपलित का नाश होता है। यह अवलेह रसायन है तथा बल और वर्ण का देने वाला है। इस अवलेह का अविष्कार अगस्त मुनिने किया है।

[१४०] अपराजितोलेहः

(बं. से. प्र. चि.)

पलार्द्धमरुणायास्तु द्विपले कुटजत्वचः।
केशराजस्य मूलानि कर्षं तत्सर्षमेकतः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सङ्कुट्य सलिलप्रस्थे पक्त्वा पादस्थिते रसे।
दत्त्वा सिता सप्तपलं छागक्षीरं चतुष्पलम् ॥
शोष्यं पक्वरसं भूयः पचेद्दर्वी प्रलेपनम् ।
विश्वातिविषयोश्चूर्णं मुस्तस्येन्द्रयवस्य च ॥
प्रत्येकमक्षमात्रन्तु क्षिपत्वा पक्त्वा च भक्षयेत् ।
शुद्धं तदनुभुञ्जीत काञ्जिकाम्बु प्रसाधितम् ।
माषगोक्षुरसिद्धं वा छागक्षीरं पिबेन्नरः ।
ग्रहण्यतिसारहरो लेहो ऽयमपराजितः ॥

अतीस २॥ तोला, कुड़ेकी छाल १० तोला, और काले भांगरे की जड़ १। तोला । सब को कूटकर १ सेर पानी में पकावे जब चौथा भाग रह जाये तो छान ले। फिर इसमें ३५ तोला खांड, २० तोला बकरी का दूध मिलाकर पुनः पकावे और सोंठ, अतीस, नागरमोथा, इन्द्रयव इनमें से प्रत्येक का चूर्ण १।–१। तोला मिलाकर सुरक्षित रक्खें।

इसे खाकर ऊपर से कांजी से तैय्यार किया हुआ आहार या उड़द और गोखरू से सिद्ध किया हुआ बकरीका दूध पीने से ग्रहणी और अतिसार का नाश होता है।

[१४१] अपराजितोलेहः (यो. र. कास.)

शटी शृङ्गीकणाभार्गीगुडवारिदयासकैः ।
सतैलैर्वातकासघ्नो लेहोयमपराजितः ॥

कपूर कचरी, काकड़ा सींगी, पीपल, भारंगी, गुड़, नागरमोथा और धमासा सब समान भाग लेकर चूर्ण बनावें और उसमें तिलका तेल मिलाकर चाटने योग्य करलें यह अवलेह वातज कासको नष्ट करता हैं।

[१४२] अभयादि लेहः (यो. र. अ. पि.)

अभया पिप्पली द्राक्षा सिता धन्वयवासकम् ।
मधुना कण्ठहृद्दाहमूर्छाश्लेष्माम्लपित्तनुत् ॥

हैड़, पीपल, दाख, मिश्री और धमासा। इन्हें मधु के साथ लेह बनाकर चाटने से कण्ठ और हृदय की दाह, मूर्च्छा, कफ और अम्लपित्तका नाश होता है।

[१४३] अभयामलकी रसायनम्

(ब्राह्म रसायनम्), (च. सं. चि. अ. १)

पञ्चानां पञ्चमूलानां भागान्दशपलोन्मितान्
हरीतकीसहस्रञ्च त्रिगुणामलकं नवम् ॥
विदारिगन्धां बृहतीं पृश्निपर्णी निदिग्धिकाम् ।
विद्याद्विदारिगन्धाद्यं श्वदंष्ट्रापञ्चमं गणम् ॥
बिल्वाग्निमन्थश्योनाकं काश्मर्यमथ पाटलम् ।
पुनर्नवा शूर्पपर्ण्यौ बलामेरण्डमेव च ॥
जीवकर्षभकौ मेदां जीवन्तीं सशतावरीम् ।
शरेक्षुदर्भकाशानां शालीनां मूलमेव च ॥
इत्येषां पञ्चमूलानां पञ्चानामुपकल्पयेत् ।
भागान्यथोक्तांस्तत्सर्वं साध्यं दशगुणेऽम्भसि॥
दशभागावशेषन्तु पूतं तद्ग्राहयेद्रसम् ।
हरीतकीश्च ताः सर्वाः सर्वाण्यामलकानि च ॥
तानि सर्वाण्यनस्थीनि फलान्यापोथ्य कूर्चनैः।
विनीय तस्मिन्निर्यूहे चूर्णानीमानि दापयेत्॥
मण्डूकपर्ण्याः पिप्पल्याः शंखपुष्प्याः प्लवस्य च
मुस्तानां सविडङ्गानां चन्दनागुरुणोस्तथा॥
मधुकस्य हरिद्राया वचायाः कनकस्य च ॥
भागाँश्चतुष्पलान् कृत्वा सूक्ष्मैलायास्त्वचस्तथा॥
सितोपलासहस्रन्तु चूर्णितं तुलयाधिकम् ।
तैलस्य द्व्याढकं तत्र दद्यात् त्रीणि च सर्पिषः॥
साध्यमौदुम्बरे पात्रे तत्सर्वं मृदुनाग्निना ।
ज्ञात्वा लेहमदग्धं च शीतं क्षौद्रेण संसृजेत् ।
क्षौद्रप्रमाणं स्नेहार्द्धं तत्सर्वं घृतभाजने ।
तिष्ठेत् सम्मूर्च्छितं तस्य मात्रां काले प्रयोजयेत्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

या नोपरुन्ध्यादाहारमेवं मात्रा जरां प्रति।
षष्टिकः पयसा चात्र जीर्णे भोजनमिष्यते॥
वैखानसा वालखिल्यास्तथा चान्ये तपोधनाः।
रसायनमिदं प्राश्य बभूवुरमितायुषः॥
मुक्त्वा जीर्णं वपुश्चाग्र्यमवापुस्तरुणं वयः।
वीततन्द्राक्लमश्वासानिरातङ्काः समाहिताः॥
मेधास्मृतिबलोपेताश्चिररात्रं तपोधनाः।
ब्राह्मं तपो ब्रह्मचर्यं चेरुश्चात्यन्तनिष्ठया॥
रसायनमिदं ब्राह्ममायुष्कामः प्रयोजयेत्।
दीर्घमायुर्वयश्चाग्र्यं कामांश्चेष्टान् समश्नुते॥

हैड़ १००० नग, नवीन आमले ३००० नग, १ शालपर्णी, २ छोटी कटेली, ३ प्रश्निपर्णी, ४ बड़ी कटेली, ५ गोखरू, (१ लघु पंचमूल), १ बेल की छाल, २ अरणी, ३ सोना पाठा, ४ खम्भारी, ५ पाढल (२ बृहद् पंचमूल, १ पुनर्नवा, २ मुद्गपर्णी, ३ माषपर्णी, ४ बला, ५ एरण्डमूल (३ पुनर्नवादि पंचमूल), १ जीवक, २ ऋषभक, ३ मेदा, ४ जीवन्ती, ५ शतावर(४जीवनीय पंचमूल) १ शर, २ ईख, ३ कास, ४ दर्भ, ५ शालीमूल (५ तृणपंचमूल), इन पांच प्रकार के पंचमूलों की प्रत्येक औषधि ५०-५० तोला लेकर सब को दस गुने पानी में पकावे जब दशवां भाग बाकी रहे तो उतार कर छान ले और हैड़ तथा आमलों की गुठली दूर कर के उन्हें कूटकर उस रसमें मिला दे और साथ ही नीचे लिखी दवाइयों का चूर्ण भी मिलावे:-मण्डूकपर्णी (ब्राह्मी), पिप्पली, शंखपुष्पी, केवटी मोथा, नागरमोथा, बायविडंग, चन्दन, अगर, मुलैठी, हल्दी, बच, नागकेसर, छोटी इलायची और दारचीनी प्रत्येक का चूर्ण २०-२० तोला, मिश्री ६८।। सेर, तेल ८ सेर, घी १२ सेर। सब को मिलाकर तांबे से कढ़ाव में मन्दाग्नि पर पकावे जब पाक सिद्ध हो जाये (खरपाक न होने पावे) तो ठंडा करके उसमें १० सेर शहद मिलाकर घी के चिकने बरतन में भर कर रखदे।

इसे उचित काल में उचित मात्रानुसार सेवन करे और पचने पर साठी के चावल और दूध खावे।

इसके सेवन से वैखानस और बालखिल्यादि ऋषिगणों ने अमित आयु और तरुणावस्था को प्राप्त किया था तथा तन्द्रा और क्लमरहित, निर्भय, मेधा और स्मृतिमान् एवं बलवान् होकर बहुत समय तक तप करते रहे थे। इस ब्रह्म रसायन के सेवन से दीर्घायु प्राप्त होती है।

[१४४] अमृतप्राश्यावलेहः

(वृ. नि. र. क्षय)

क्षीर धात्री विदारीक्षुक्षीरीणां च तथा रसे।
पचेत्समे घृतं प्रस्थं मधुरैःकर्षसम्मितैः॥
द्राक्षाद्विचन्दनोशीरशर्करोत्पलपद्मकैः।
मधूककुसुमानन्ताकाश्मरीतृणसंज्ञकैः॥
प्रस्थार्द्धं मधुनःशीते शर्करायास्तुलां तथा।
पलार्द्धकांश्च सञ्चूर्ण्य त्वगेलापत्रकेशरान्।
विनीय तस्य संलिह्यान्मात्रां नित्यं सुयन्त्रितः।
अमृतप्राश्यमित्येतन्निर्मितं त्रिपुरारिणा॥
क्षीरमांसासिनो हन्ति रक्तपित्तक्षतक्षयान्।
तृष्णारुचिश्वासकासछर्दिहिक्काभ्रमर्दनम्॥
मूत्रकृच्छ्रज्वरघ्नं च बल्यं स्त्रीरतिवर्द्धनम्॥

दूध, आमले का रस, विदारीकन्द का रस, गन्ने का रस, पंच क्षीरी वृक्षों का रस या क्वाथ और घी। प्रत्येक १-१ सेर मिलाकर पकावे फिर इसमें मधुरादि गण, दाख, दोनों चन्दन, खस, चीनी, नीलोफर, कमल, महुवेके फूल, अनंत मूल, खम्भारी, पंचतृणका कल्क १।-१। तोला डाल कर अवलेह बनावे, शीतल होने पर १ सेर मधु, ६। सेर चीनी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और दालचीनी, इलायची, तेजपात और नागकेशर २॥–२॥ तोला डाल कर भले प्रकार मिलावे। इसके यथोचित सेवन से रक्तपित्त, क्षत, क्षय, तृष्णा, अरुचि, श्वास, खांसी, वमन, हिचकी, मूत्रकृच्छ्र तथा ज्वर का नाश होता और बल तथा कामशक्ति बढ़ती है।

[१४९] अमृतभल्लातक्यवलेहः

(वृ. नि. र., भै. र. कुष्ठ.)

भल्लातकानां पवनोद्धृतानां,
वृन्तच्युतानां च यदाढकं स्यात्।
तच्चेष्टकाचूर्णकणैर्विघृष्य,
प्रक्षालयित्वा विसृजेत्प्रवाते॥
शुष्कं पुनस्तद्विदली कृतञ्च,
ततः पचेदप्सु चतुर्गुणासु।
तत्पादशेषं परिपूतशीतं,
क्षीरेण तुल्येन पुनः पचेत्तु॥
तत्पादशेषं पुनरेव शीतं,
घृतेन तुल्येन पुनः पचेत्तु।
तदर्द्धया शर्करया विमिश्रं,
ततः खजेनोन्मथितं विधाय॥
तत्सप्त रात्रादुपजातवीर्यं,
सुधारसादप्यधिकत्त्वमेति।
प्रातर्विशुद्धः कृतदेव कार्यो,
मात्राञ्च खादेत स्वशरीरयोग्याम्॥
न चान्नपाने परिहार्यमस्ति,
न चातपे चाध्वनि मैथुने च।
यथेष्टचेष्टो विहितोपयोगाद्,
भवेन्नरः काञ्चनराशिगौरः॥
अनन्यमेधा नरसिंहतेजो,
हृष्टेन्द्रियोऽव्याहतबुद्धिसत्त्वः।
दन्ताश्च शीर्णाः पुनरुद्भवन्ति,
केशाश्च शुक्ला पुनरेव दिव्या।
नीलाञ्जनालिप्रतिभा भवन्ति,
त्वचा विवर्णाः पुनरेव दिव्याः॥
विशीर्ण कर्णाङ्गुलि नासिकोऽपि-
कृम्यर्दितो भिन्नपलोऽपि कुष्ठी।
सोऽपिक्रमादङ्कुरिताग्रशाख-
स्तरुर्यथा भाति नभोऽम्बुसिक्तः॥
उष्ट्रान् मयूराञ्जयति स्वरेण-
बलेन नागस्तुरगो जवेन।
रसायनस्यास्य नरः प्रसादाद्
बृहस्पतेरप्यधिको हि बुद्ध्या॥
ग्रन्थान् विशालान् पुनरुक्तिदोषान्
गृह्णाति शीघ्रं न च नश्यते तु।
कुर्वन्निमंकल्पमनल्पबुद्धि-
र्जीवेन्नरो वर्षशतानि पञ्च।
राजाह्वयं सर्व रसायनानां
चकार योगं भगवानगस्त्यः॥

पवनसे टूटे हुवे और डंठलों से पृथक हुवे भिलावे ४ सेर लेकर ईंट के चूर्ण के कणों में मसल कर पानी से धोकर वायु में फैलादे सूखने पर बीचसे १–१ के दोदो दल करके चौगने पानी में पकावे। चौथाई भाग रहने पर छानकर ठंडा करके बराबर दूध डालकर फिर पकावे, चौथा भाग रहने पर ठण्डा करके समान भाग घृत डालकर घृतावशेष पकावे, पश्चात् घीसे आधी खांड मिलाकर कौंचेसे मन्थन करे और सातदिन तक रक्खा रहने दे, सात दिन पश्चात् वह पूर्ण वीर्ययुक्त और अमृत के रससे अधिक गुण वाला हो जाता है फिर प्रातःकाल शुद्ध होकर देवार्चन करके यथोचित यथाबल मात्रानुसार खावे। इसको सेवन करते हुए अन्न-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पान, ताप तथा मैथुन आदि का त्याग नहीं करना पड़ता। इसके सेवन से बल, पुष्टि, कान्ति, मेधा, बुद्धि आदि बढ़ती हैं, गिरे हुवे दांत निकल आते हैं, सफेद बाल काले हो जाते हैं, त्वचा का विवर्णत्व दूर होकर रंग सुन्दर हो जाता है। जिस कोढ़ी के कान, उंगली और नाक आदि गल गये हों और कीडे पड गये हों मांस भी गल गया हो इससे, जिस प्रकार वर्षा जलसिञ्चित वृक्ष पुनः अङ्कुरित हो जाता है वैसे ही इसको भी धीरे २ आराम हो जाता है। इसका सेवन करने वाला स्वर में ऊंट और मोरों को, बल में हाथी और गति मे घोड़ों को जीतने वाला हो जाता है। इस रसायन के सेवन से बृहस्पति के समान बुद्धि वाला हो जाता है, विशाल ग्रंथों को तथा पुनरुक्ति दोषों को शीघ्र ही ग्रहण कर लेता है और यह शक्ति फिर नष्ट नहीं होती, जो बुद्धिमान इस का कल्प करता है वह १०५ वर्ष तक जीता है। यह योग भगवान अगस्तजीने सब रसायनों का राजा बताया है।

[१४६] अमृतभल्लातक्यावलेहः
(वृ. नि. र. वा. र.)

निमज्जन्ति जले यास्तु भल्लातक्यश्च ता हिताः
ताश्च सर्वा विधातव्याः संछिन्नमुखमुद्रिकाः ॥
तासां प्रस्थद्वयं छित्वा द्विजलद्रोणे परिक्षिपेत् ।
प्रस्थद्वयं गुडूच्याश्च क्षुण्णं तत्राम्भसि क्षिपेत् ॥
चतुर्थांशावशेषन्तु कषायमवतारयेत् ।
वस्त्रपूते कषाये च वक्ष्यमाणानि निक्षिपेत् ॥
सर्वाण्येकत्र भाण्डे तु पचेन्मृद्वग्निना शनैः ।
सर्वद्रव्ये घनीभूते पात्रकादवतारयेत् ॥
तत्रक्षेप्याणि चूर्णानि ब्रूमो विश्वाऽमृता ।
वाकुची चक्रमर्दश्च पिचुमर्दो हरीतकी ॥
धात्री रात्रिश्च मंजिष्ठा मरिचं नागरं कणा ।
यवानी सैन्धवं मुस्तं त्वगेला नागकेशरम् ॥
पर्पटः बालमुशीरं चन्दनं तथा ।
गोक्षुरस्य च कचूरो रक्तचन्दनम ॥
पृथक्पलार्द्धमानानामेषां चूर्णमिदं क्षिपेत् ।
सम्यक् सम्मिश्र्य तद्रक्षेद् भाजने मृन्मये नवे ॥
प्रभाते भक्षिते जीर्णोऽमृतभल्लातकाभिधम् ।
अवलेहं समश्नीयात् पलमात्रं जलेनहि ॥
प्रकृत्या देहिनो यस्य सहतेऽरुष्करो न चेत् ।
सोऽरुष्करस्य संसर्गं सदा दूरात्परित्यजेत् ॥
भल्लातकावलेहोऽयं वातरक्तान्तकृन्मतः ।
वातरक्तसमुद्भूतान् विकारानाशु नाशयेत् ॥
कुष्ठानि सकलान्येव दुर्नामानि हरेदयम् ।
विसर्पं मण्डलं कण्डुं शमयेदेष सेवितः ॥
विकारान्वातिकान्सर्वांस्तथा रुधिरसम्भवान् ।
हरत्येव प्रयोगोऽयं यत्नतः सेवितः सदा ॥
व्यायाममातपं वह्निमम्लं मांसं दधि स्त्रियम् ।
तैलाभ्यङ्गं तथा ध्यानं नरो भल्लातके त्यजेत् ॥

पानीमें डूब जांय ऐसे भिलावे हितकर होते हैं। ऐसे भिलावे २ सेर लेकर १-१ के दो दो दल करके ३२ सेर पानीमें चढावे और उसमें कूटकर २ सेर गिलोय डालकर पकावे। चतुर्थांश रहने पर उतारे और छान कर गाढ़ा करके उसमें सोंठ, गिलोय, हैड़, बावची, पवांड, नीमकी छाल, आमला, हल्दी, मजीठ, काली मिर्च, सोंठ, पीपल, अजवायन, सेंधानमक, नागरमोथा, दालचीनी, इलायची, नागकेशर, पित्त-पापड़ा, तेजपात, सुगन्धवाला, खस, चन्दन, गोखरू, कचूर और लाल चन्दन, प्रत्येक का २॥-२॥ तोले का चूर्ण डाल कर खूब मिलावे फिर मिट्टी के नये बरतन में रक्खे। मात्रा.५ तोला

For Private And Personal Use Only

प्रातःकाल खावे। अनुपान–पानी। जिन्हे प्रकृति से ही भिलावा अनुकूल न आता हो उन्हे भिलावेका संसर्ग दूर से ही छोड देना चाहिए। गुण—वात रक्त और तज्जन्य अन्य विकार, सब प्रकारके कुष्ट, बवासीर, विसर्प, खुजली, मण्डल तथा वायु और रक्त के सब विकारोंको नाश करता है। व्यवहारिक मात्रा:—१ तोला। भिलावा सेवन करने के दिनों में व्यायाम, धूप, अग्नि खटाई, मांस, दही, स्त्रीप्रसंग, तेल मर्दन और ध्यान इन वस्तुओं से परहेज़ करना चाहिये।

[१४७] अमृतभल्लातकः (यो. र. वा. र.)

मल्लातकानां पवनोद्धूतानां
तरुच्युतानां च यदाढकं स्यात्।
घृष्ट्वेष्टिकाचूर्णकणैर्जलैश्च
प्रक्षाल्य संशोष्य च मारुतेन॥
शुष्काणि तानि द्विदली कृतानि
विपाचयेदप्सु चतुर्गुणासु।
तत्पादशेषं पुनरेव शीतं
क्षीरेण तुल्येन विपाचयेत्तत्॥
तदर्धया शर्करया विमिश्र्य
पश्चात्खजेनोन्मथनं विधाय।
सत्र्यूषणं त्रैफलचन्द्रमासी-
त्रिवृच्च वांशी खदिरामृतं च॥
सचन्दनाकल्लकणाकषायं
सदेवपुष्पं मुसलीद्वयञ्च।
कङ्कोलमोचाह्वयदीप्ययुग्मं
नतं समातङ्गकणा विदारी॥
जातीफलं मुस्तक जातिपत्री
कुबेरजीरागुरु साब्धिशोषम्।
मेदाद्वयं लोहं रसेन्द्रवङ्ग-
मभ्रं तथा कुङ्कुमकं च कर्षम्॥
तत्सम्प्रदानादतिजातवीर्यं
सुधारसाप्यधिकं वदन्ति॥
प्रातः प्रबुद्धः कृतदेवकार्यो
मात्रां भजेत्सात्म्यशरीरयोग्याम्॥
न चानुपाने परिहार्यमस्ति
न चातपे नाध्वनि मैथुने च।
यथेष्टचेष्टो विचरेत्प्रयोगा-
न्नरो भवेत्काञ्चनराशिगौरः॥
अनेन मेधानरसिंहवीर्यो
दृढेन्द्रियो व्याधिगतः सुबुद्धिः।
दन्ता विशीर्णाः पुनरेव दिव्याः
केशाश्च शुभ्राः पुनरेव कृष्णाः॥
नीलाञ्जनालि प्रतिमा भवन्ति
त्वचो विशीर्णाः पुनरेव भव्याः।
विशीर्णकर्णाङ्गुलिनासिकोऽपि
कृम्यर्दितो भिन्नगलोऽपि कुष्ठी॥
शुष्कः पुनःस्याद्धतमूलशाख-
स्तरुर्यथा भाति नवाम्बुसिक्तः।
बृहस्पतेरप्यधिको हि बुद्ध्या
ग्रन्थं विशालं च नवं करोति॥
गृह्णाति सद्यो न च विस्मृतिं च
करोति कल्पायुरनल्पवीर्यम्।
कुर्वन्निमं कल्पमनल्पबुद्धि-
र्जीवेन्नरो वर्षशतं सुखी स्यात्॥

पवन से गिरे हुवे और डंठल से पृथक हुवे भिलावे ४ सेर लेकर ईंट के चूर्ण के कणो में मसल कर जल से धोकर वायु में सुखावे, सूखने पर उनके दो दो दल करके चार गुने पानी में पकावे फिर चतुर्थांश रहने पर ठंडा करके समान भाग दूध डालकर तथा चतुर्थांश घृत मिलाकर घृतावशेष पकावे फिर उससे आधी चीनी डाल कर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घी में आलोडन करे फिर उसमें त्रिकुटा, त्रिफला, कपूर, जटामांसी, निसोत,बंसलोचन, खैरसार, शुद्ध विष(वत्सनाभ), चन्दन, अकरकरा, पीपल, कबाब चीनी, लौंग, दोनों प्रकार की मूसली, कंकोल, मोचरस, सफेद जीरा, काला जीरा, तगर, गज पीपल, विदारी कन्द, जायफल, नागरमोथा, जावित्री, करंजबीज, जीरा, अगर,समंदरशोष, मेदा, महा मेदा, लोहभस्म, रससिंदूर, बंगभस्म, अभ्रकभस्म और केसर प्रत्येक १।-१। तोला लेकर पहिले चूर्ण बनावे फिर घृतमें डाल कर भली प्रकार मिलाकर सातदिन तक रक्खा रहने दे इस प्रकार जातवीर्य होने पर यह अमृतसमान गुणदायी हो जाता है। मात्रा गुणपथ्यादि नं. १४६ के अनुसार।

[१४८] अमृतहरीतकी

(यो. र. अ. चि.)

तक्रे समुत्स्वेद्य शिवा शतानि,
तद्वीजमुद्धृत्य च कौशलेन।
पञ्चूषणं पञ्चपटूनि हिङ्गु,
क्षारावजाजीह्यजमोदकञ्च ॥
षड्षणादेस्त्रिवृदर्द्ध भागं,
गणे प्रदेयं पटगालितस्य।
विभाव्य चुक्रेण रजांस्यमीषां,
क्षिपेच्छिवाबीजनिवासगर्भे ॥
सम्मुद्रय घर्मेषु विशोष्य तासां,
हरीतकीमन्यतमां निषेवेत्।
अजीर्णमन्दानलजाठरामयान्,
समूलशूलग्रहणीगुदाङ्कुरान् ॥
विबन्धमानाहरुजो जयत्यसौ,
तथामवातामम्रृताहरीतकी ॥

१०० हैडों को तक्रमें पकाकर मुलायम होने पर उनकी गुठली कुशलतापूर्वक निकाल डाले फिर पञ्चूषण, पांचों नमक, हींग, यवक्षार, सुहागा, जीरा, अजमोद प्रत्येक १-१ भाग, निसोत सबका आधा। इनका महीन चूर्ण करके कपडे में छानकर चूकेके रसमें घोटकर उन हैडों के बीचमें बीजोंके स्थानमें भरकर डोरेसे बांधकर सुखा देवे। इसमें से प्रति दिन १ हैड खानेसे मन्दाग्नि, उदरविकार, शूल, ग्रहणी, मस्से, अफारा और आमबातका नाश होता है।

[१४९] अमृताख्या हरीतकी

(र. रा. सु. पां. चि.)

शतावरी भृङ्गराजपुनर्नवकुरण्टकः।
प्रतिसप्तपलं द्रव्यं जले क्वाथ्यं चतुर्गुणे ॥
पादशेषं कषायं तं वस्त्रपूतं समाहरेत्।
हरीतकीफलं तस्मिन् षष्ट्याधिकशतत्रयम् ॥
पाचयेच्छोषयेत्पश्चात्त्रिंशद्दुग्धपलैः पचेत्।
भित्त्वा निवारयेद्दण्डं तद्गर्भे च क्षिपेदिदम् ॥
षट्पलौ रसगन्धौ द्वौ सुपात्रे च क्षणं पचेत्।
उत्तार्य चालयेत्तावद्यावत्कठिनतां व्रजेत् ॥
चूर्णयित्वामृतासत्वपलान् सप्त विमिश्रयेत्।
मधुना वटिकाः कार्याः षष्ट्यधिकशतत्रयम् ॥
एकैकां ह्यभयागर्भे कृत्वासूत्रेण वेष्टयेत्।
मधु भाण्डे क्षिपेत्पश्चादेकैकं भक्षयेद्दिनम् ॥
शुष्कपाण्डुहरा सम्यगमृताख्या हरीतकी।

शतावर, भांगरा, पुनर्नवा, कुरंटक, प्रत्येक ३५ तोला, चारगुने जलमें पकाकर चौथा भाग रहनेपर कपड़ेमें छान ले। फिर उसमें ३६० हैड़ डालकर पकावे और सुखाकर फिर उन्हें १५० तोला दूधमें पकावे। फिर उनकी गुटली निकालकर उनके भीतर नीचे लिखी गोलियां भरे–शुद्ध पारा ३० तोला, शुद्ध गन्धक ३० तोला (कज्जली करके) किसी स्वच्छ पात्रमें थोड़ी देर तक पकावे फिर उतारकर उस समय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तक चलाता रहे जब तक कि कठिन न हो जाय कठिन होनेपर चूर्ण करके इसमें २५ तोला गिलोयका सत मिलाकर मधुमिश्रितकर ३६० गोलियां बनावे। इनमें से प्रत्येक हैड़में १-१ गोली भरकर उस पर लोग लपेट दे। इन हैड़ोंको शहदमें डालदे और इसमेंसे प्रतिदिन १-१ सेवन करे तो शुष्क पाण्डु रोगका नाश होगा।

[१५०] अमृताद्यवलेहिका

(यो. र. वा. र.)

अमृताकटुकाशुण्ठी यष्टीकल्कं समाक्षिकम्।
गोमूत्रपीतं जयति सकफं वातशोणितम्॥

गिलोय, कुटकी, सोंठ और मुल्हैठीका कल्क शहदमें मिलाकर चाटे और ऊपरसे गोमूत्र पीवे तो कफप्रधान वातरक्तका नाश होता है।

[१५१] अम्लपित्तहरपाकः

(वै. क. द्रु.)

त्रिकटुत्रिफलाभृङ्गजीरकद्वयधान्यकम्।
कुष्ठाजमोदलोहाभ्रं शृङ्गीकट्फलमुस्तकम्॥
एला जातीफलं मांसी पत्रं तालीशकेशरे।
गन्धपत्राशटी यष्टी लवङ्गं रक्तचन्दनम्॥
एतानि समभागानि शुण्ठीचूर्णं तु तत्समम्।
सिता द्विगुणिता तत्र गव्यक्षीरं चतुर्गुणम्॥
तोलप्रमाणं दातव्यं क्षीरेणापि जलेन वा।
अम्लपित्तं निहन्त्येतदरोचकनिषूदनम्॥
शूलहृद्रोगवमनं कंठदाहं नियच्छति।
हृद्दाहं च शिरःशूलं मन्दाग्निं च विनाशयेत्॥
शूलं हृत्पार्श्वकुक्षिस्थं बस्तिशूलं गुदेरुजम्।
बलपुष्टिकरं चैव वशीकरणमुत्तमम्॥
विशेषादम्लपित्तं च मूत्रकृच्छ्रं ज्वरं भ्रमम्।
निहन्ति नात्र सन्देहो भास्करस्तिमिरं यथा॥

त्रिकुटा, त्रिफला, दोनों जीरे, धनियां, कूट, अजमोद (अजवायन), लोहभस्म, अभ्रकभस्म, काकड़ासिंगी, कायफल, नागरमोथा, इलायची, जायफल, जटामांसी, तमालपत्र, तालीस पत्र, नागकेशर, अजवायन, कचूर, मुल्हैठी, लौंग और लाल चन्दन। सब समान भाग, सोंठका चूर्ण सबके बराबर, मिश्री सबसे दो गुनी, गायका दूध ४ गुना मिलाकर विधिवत पाक बनावे। मात्रा–१ तोला, पानी या दूधके साथ। गुण–अम्लपित्त, अरुचि, शूल, हृद्रोग, वमन, कण्ठदाह, हृदयकी जलन, शिर शूल, मन्दाग्नि, हृदय, पार्श्व, कोख, बस्तिका शूल और गुदाकी पीडाका नाश करता है तथा बल और पुष्टि देता है विशेषकर अम्लपित्त, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर और भ्रम का वैसे ही नाश करता है जैसा सूर्य अन्धकार का।

[१५२] अश्वगन्धापाकः (१)

(यो. र., वृ. नि. र.)

पलान्यष्टावश्वगन्धां विपाच्य
दुग्धे पद्शेरके मन्दवह्नौ।
दर्व्यालेपो यावदास्ते सुपक्व
श्चातुर्जातं क्षिप्य कर्षप्रमाणम्॥
जातीजातं केशरं वंशसत्वं-
मोचं मांसी चन्दनं कृष्णसारम्।
पत्रीकृष्णापिप्पलीमूलदेव-
पुष्पं कङ्कोलालिका क्षोदसारम्॥
भल्लीबीजं शृङ्गटं गोक्षुराख्यं-
सिन्दूराभ्रं नागवङ्गं च लोहम्।
कर्षार्द्धार्द्धं सर्वचूर्णं प्रकल्प्य-
संशोष्याथो शर्करापक्वपाके॥
पक्त्वा शीतं कारयेदश्वगन्धा-
पाकोऽयं वै हन्ति मेहानशेषान्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्वरं जीर्णं शोषगुल्मान्विकारान्-
वैत्तान्वाताञ्छुक्रवृद्धिं करोति ॥
पुष्टिं दद्यादग्निसंदीपनोऽयं-
कान्तिं कुर्यात्सौमनस्यं नराणाम् ॥

आध सेर असगन्धको ६ सेर दूधमें उस वक्त तक मन्द अग्निपर पकावे जबतक कि करछीको न लगने लगे, फिर चातुर्जात[1] १। तोला, जायफल, केसर, वंसलोचन, मोचरस, जटामांसी, चन्दन, खैरसार, जावित्री, पीपल, पीपलामूल, लौंग, कंकोल, पाढल, अखरोटकी गिरी, भिलावा, सिंघाडा, गोखरू, रससिन्दूर, अभ्रकभस्म, नागभस्म, बङ्गभस्म, और लोह भस्म प्रत्येक का चूर्ण ७॥-७॥ मासा मिलाकर सबको खांडकी चासनीमें डालकर यथा-विधि पाक बनावे। पकने पर इसे ठंडाकर रखे। यह अश्वगंध पाक सब प्रकारके प्रमेह, जीर्ण ज्वर, शोष, गुल्म और वायुपित्तके रोगोंका नाश करता है तथा इसके सेवनसे शुक्रवृद्धि, कान्तिवृद्धि, पुष्टि, और अग्नि संदीप्त होती है।

[१५३] अश्वगन्धपाकः (२) (यो. चि.)

पूर्वं कृत्वाऽश्वगन्धायाश्चूर्णं दश पलानि च।
तदर्द्धं नागरं चूर्णं तस्यार्द्धां पिप्पली शुभा ॥
मरिचानां पलं चैकं सूक्ष्मं चूर्णन्तु कारयेत्।
त्वगेलापत्रपुष्पाणि चैकैकन्तु पलं पलम् ॥
तुलार्द्धं महिषीदुग्धं तस्यार्द्धस्य च माक्षिकम्।
माक्षिकार्द्धं घृतं गव्यं खण्डादशपलानि च ॥
पयः खण्डाज्य माक्षिकं चत्वार्येकत्र कारयेत्।
कटाहे मृन्मये क्षिप्त्वा पाचयेन्मृदुवह्निना ॥
कृशानुज्वालयेतावद्यावदुत्कलितं भवेत्।
अश्वगन्धादिकं चूर्णं किञ्चित् दुग्धेन पाचयेत् ॥
पूर्वे क्वथित दुग्धेन क्षिप्त्वा चूर्णं पचेद्भिषक्।
दार्वीप्रलेपसंजाते चातुर्जातं विमिश्रयेत् ॥
यज्जातं तण्डुलाकारं तावन्निष्पन्नमाचरेत्।
पयोमुक्तं घृतं दृष्ट्वा तावदुत्तारयेत्ततः ॥
ग्रन्थिकं जीरकं छिन्ना लवंगं तगरन्तथा।
जातीफलमुशीरञ्च वालुकं मलयोद्भवम् ॥
श्रीफलाम्भोरुहं धान्यं धातकी वंशलोचनम्।
धात्री खदिरसारश्च घनसारं तथैव च ॥
पुनर्नवाजगन्धा च हुताशन शतावरी।
मात्रा गद्याणकांचैव द्रव्याणामेकविंशतिः।
सूक्ष्मं चूर्णकृतं चैव योगेह्यस्मिन् विनिर्दिशेत्।
पश्चात्सुशीतलं कृत्वास्निग्धभाण्डेनिधापयेत् ॥
पलार्द्धमपि भुञ्जित यदृच्छाहारभोजनः।
कासं श्वासं तथा हन्यादजीर्णं वातशोणितम् ॥
प्लीहानं मदश्च मेदश्च आमवातं च दुर्जयम्।
शोफं शूलञ्च वातार्शः पाण्डुरोगं च कामलाः ॥
ग्रहणीं गुल्मरोगञ्च अन्यं वातकफोद्भवम्।
विकारो विलयं याति यथा सूर्योदये तमः ॥
एकमासप्रयोगेण वृद्धः संजायते युवा।
मन्दाग्नीनां हितं बल्यं बालानाञ्चाङ्गवर्द्धनम् ॥
स्त्रीणाञ्च कुरुते पुष्टिं प्रसवेस्तन्य वर्द्धनम्।
यावत्स्तन्यं भवेस्तोकं तावद्दुग्धयुतं पिबेत् ॥
क्षीणानाञ्चाल्प वीर्याणां हितं कामाग्निदीपनम्।
सर्वव्याधिहरं श्रेष्ठं योगं सर्वोत्तमं विदुः ॥

असगन्धका चूर्ण ५० तोला, सोंठका चूर्ण २५ तोला, पीपलका चूर्ण १२॥ तोला तथा काली-मिर्चे चूर्ण ५ तोला, दालचीनी, इलायची, तेजपात और लौंग, प्रत्येक ५–५ तोला ले। फिर ६। सेर भैंसका दूध औटाकर उसमें ३ सेर १० तोला शहद और १ सेर ४५ तोला घी, ५० तोला खांड

[1] चातुर्जात-दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, इलायची।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेकर इन चारों को एकत्र मिलाकर मिट्टीके बरतन में मन्दाग्नि पर पकावे। जब उबाल आ जाय तो अश्वगन्धा आदि के उपरोक्त समस्त चूर्ण को थोडे दूधके साथ पकाकर इसमें डालदे और फिर मन्दाग्नि पर इतना पकावें कि करछी से लगने लगे तत्पश्चात् उसमें चतुर्जातका चूर्ण २ तोला डालकर पकावे जब उसमें चावलके समान दाने पड़ने लगे और घी अलग होने लगे तो उतार कर पीपलामूल, जीरा, गिलोय, लोंग, तगर, जायफल, खस, सुगन्धवाला, सफेद चन्दन, बेलगिरी, कमल, धनियां, धायके फूल, वंसलोचन, आमला, खैरसार, कपूर, पुनर्नवा, *वनतुलसी, चीता, शतावर, प्रत्येक चीज ०।।-०।। तोला लेकर महीन चूर्ण करके मिलावे और ठण्डा होने पर चिकने वर्तनमें भरकर रक्खे। यथा इच्छा भोजन करते हुए २।। तोला प्रतिदिन खानेसे खांसी, श्वास, अजीर्ण, वातरक्त, तिल्ली, मद, मेदरोग, दुर्जय आमवात, शोथ, शूल, बादी, बवासीर, पाण्डु, कामला, ग्रहणी, गुल्म और अन्य वायु और कफ से होने वाले रोगोंका इस प्रकार नाश होता है जैसे सूर्योदय से अंधकार। इसका एक मासपर्यन्त सेवन करनेसे वृद्ध युवा बन जाता है। मंदाग्नि वालों के लिये हितकर, शक्ति उत्पन्न करनेवाला तथा बालकों के शरीरों को बढानेवाला, स्त्रियों की पुष्टि करनेवाला प्रसवकालके स्तनोंमें दुग्ध वर्द्धक, जब तक दूध बढ न जावे तब तक इसे दूध के साथ पीवे। क्षीण और अल्पवीर्य पुरुषों के लिए यह विशेष गुणकारी काम और अग्निवर्द्धक है। यह सर्वव्याधिहर योग सर्वोत्तम है।

[१५४] अष्टाङ्गवलेहः (र. र.)

कट्फलं पौष्करं भृङ्गी व्योषं यासश्च कारवी।
विचूर्ण्य लेहयेद् युक्त्या क्षौद्रेणार्द्र रसेन वा ॥
अष्टांगाख्यमिदं हन्ति सन्निपातं सुदुर्जयम्।
प्रमेहं श्वासं कासञ्च तन्द्राहिक्कागलग्रहान् ॥
उर्द्धगश्लेष्महरणे उष्णे स्वेदादि कर्मणि।
विरोध्युष्णे मधुत्यक्त्वा कार्यैर्वार्द्रकजै रसैः ॥

कायफल, पोखरमूल, काकड़ा सींगी, त्रिकुटा, धमासा, काली जीरी, इनका चूर्ण बनाकर मधु वा अद्रकके रसके साथ चाटने से दुर्जय सन्निपात, प्रमेह, श्वास, खांसी, तन्द्रा, हिचकी, गलग्रह आदि का नाश करता है और ऊर्ध्वजत्रुगत कफको निकालनेके लिए उष्ण स्वेद आदि देना हो तो मधुमें न देकर यह अवलेह (या कोई भी औषध) अद्रकके रसमें देनी चाहिए क्यों कि मधु और उष्ण क्रियाका परस्पर विरोध होता है।

[१५५] अहिफेन पाकः (यो. चि.)

आकल्लकं केशरदेवपुष्पं,
जातीफलं भङ्गं सहंसपाकम्।
एतानि कुर्वीत समानि विद्वान्,
मूलार्द्धभागं क्षिप नागफेनम् ॥
क्षीरेण फेनं परिपच्य बध्वा,
मूलात्सितां षड्गुणमानयोग्या।
विमर्द्य कुर्याद् गुटिका निशायां,
मुखे कृते कामयते शतानि,
प्रसेवनं यः प्रकरोति नित्यं,
दृढोन्नताङ्गः स च मानवः स्यात्।
समस्तमातंगबलः सकामी,
व्रजन्ति रोगाः क्षयजाश्च सर्वे ॥

अकरकरा, केसर, लौंग, जायफल, भांग और शुद्ध सिंगरफ सब समान भाग, अफीम अकरकरेसे आधी। अफीमको दूधमें पकावे जब सख्त हो जाय

*फरञ्ज मुश्क।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तो उसमें उपरकी दवाइयां और अफीम से छः गुणी चीनी मिलाकर मर्दन करके गोलियां बनावे। इन गोलियोंको रातमें मुंहमें रखनेसे कामशक्ति बढ़ती है और स्तम्भन होता है। इस दवाको नित्य सेवन करनेसे शरीर हृष्ट पुष्ट और बलवान होता है तथा क्षयज रोगोंका नाश होता है।

अथ अकारादि घृत प्रकरणम्

घृत व्याख्या

घृत पाक करनेमें सबसे पहिले घृत को मूर्छित किया जाता है, इसके बाद उसमें क्वाथ, दूध, दही आदि द्रव पदार्थ और औषधियों का कल्क डाल कर पकाया जाता है फिर तैयार होने पर छान कर उसमें प्रक्षेप–द्रव्यों का चूर्ण डाला जाता है।

मूर्छा—१ सेर घी को मंदाग्नि पर गरम करके फेन रहित होनेपर उसमें हैड़, बहेड़ा, आमला, हल्दी और नागरमोथा इन सबको ५ तोला लेकर बिजौरे के रस में पीस कर डाले। इससे घृत साफ, आमदोष रहित और वीर्यवान हो जाता है।

क्वाथ—घृत पाक के लिये जिन चीजों का क्वाथ बनाना हो वह सब मिला कर घृत से दो गुनी लेनी चाहियें और आठ गुने पानी में पका कर चौथा भाग शेष रहने पर छान लेना चाहिये। यदि क्वाथ्य द्रव्यों का परिमाण बहुत अधिक हो तो सब का क्वाथ एक साथ ही न बनाकर ६।-६। सेर द्रव्य लेकर कइ बार में क्वाथ तैयार करे और सब क्वाथों को मिलाले। औषधि (क्वाथ्य द्रव्य) का परिमाण ६। सेर हो तो जल ३२ सेर लेना चाहिये।

दूध आदि—यदि केवल दूधसे ही घृत पाक करना हो और उसमें क्वाथ आदि अन्य द्रव पदार्थ न डालने हों तो दूध घृतसे आठ गुना लेना चाहिये और यदि अन्य द्रव पदार्थ भी डालने हों तो दूध घृत के समान लेना चाहिये। यदि २ द्रव पदार्थों से घृत पाक करना हो तो इन्हें बराबर २ मिलाकर घृतसे चार गुना लेना चाहिये और यदि चार या चारसे अधिक द्रव पदार्थ डालने हों तो प्रत्येक पदार्थ घृत के समान लेना चाहिये। यदि केवल स्वरस, दूध और दही आदि से पाक करने के लिये लिखा हो तब भी स्नेह से चार गुना जल अवश्य मिला लेना चाहिये क्योंकि केवल दूध दही आदि से स्नेहका पाक भली भांति सिद्ध नहीं होता।

कल्क—स्नेह में साधारणतः स्नेहका चौथा भाग कल्क डाला जाता है परन्तु यदि बासापुष्प आदि का कल्क डालना हो तो स्नेह से आठवां भाग लेना चाहिये। यदि केवल जलसे स्नेह सिद्ध करना हो तो कल्क चौथा भाग, क्वाथ से सिद्ध करना हो तो छटा भाग और स्वरस से सिद्ध करना हो तो आठवां भाग कल्क डालना चाहिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशेष ज्ञातव्य—१—स्नेहका परिमाण न लिखा हो तो १ सेर स्नेह लेना चाहिये और उसमें उपरोक्त परिभाषा के अनुसार क्वाथ, जलादि डालना चाहिये।

२—उपरोक्त परिभाषाएं केवल उस स्थान के लिये हैं जहां द्रव्यों का परिमाण न लिखा हो, जहां परिमाण लिखा हो वहां लेखानुसार ही सब पदार्थ लेने चाहियें चाहे परिभाषा इससे सहमत हो या विरुद्ध।

३—यदि गोमूत्रादि क्षारयुक्त पदार्थों के साथ स्नेह पाक करना हो तो बहुत सावधानी रखनी चाहिये कि कहीं स्नेह कड़ाही से बाहर न निकल जाए क्यों कि क्षार पदार्थों के योगसे स्नेह में अत्यधिक झाग आते हैं।

४—जिस प्रयोगमें जितने स्नेह का पाक करने का विधान हो उतना ही लेना चाहिये उससे आधे चौथाई या दो चार गुने स्नेह का पाक ठीक नहीं होगा।

५—जहां किसी गणकी समस्त औषधियां न मिल सकें वहां जितनी मिल जाएं उन्हीं से काम लेना चाहिये।

६—यदि स्नेह को दूधके साथ सिद्ध करना हो तो २ दिनमें, स्वरसके साथ सिद्ध करना हो तो ३ दिनमें और तक्र, कांजी आदि से सिद्ध करना हो तो ५ दिनमें पाक पूर्ण करना चाहिये अर्थात् पहिले दिन थोड़ी देर पका कर छोड़दे और फिर दूसरे दिन पकावे। इस प्रकार एक ही दिनमें पाक सिद्ध न करके कइ दिनमें पूर्ण करने से स्नेह अधिक गुणवान बनता है।

स्नेह सिद्धिके लक्षण—यदि स्नेह का कल्क अग्निमें डालने से किसी प्रकार का शब्द न हो तो स्नेह को सिद्ध समझना चाहिये। घृत का पाक पूर्ण होने के समय खूब झाग उठते हैं।

स्नेह पाक ३ प्रकार का होता है, मृदु, मध्यम और खर। यदि स्नेह का कल्क किञ्चित् रसयुक्त हो तो उसे मृदु पाक और नीरस किन्तु कोमल हो तो मध्यम पाक और कठिन हो तो खर पाक समझना चाहिये।

इन तीनों प्रकारके पाकोंमें मध्यम पाक सर्वोत्तम और खर पाक निकृष्ट माना गया है परन्तु मालिशके लिये खर पाक ही उत्तम होता है।

अकारादि घृत प्रकरणम्

[१५६] अग्निघृतम् (१) (वृ. नि. र.)

पिप्पली पिप्पलीमूलं चित्रकं गजपिप्पली।
हिङ्गु चव्याजमोदा च पञ्चैव लवणानि च॥
द्वौ क्षारौ हवुषा चैव दद्यादर्द्धपलोन्मिता।
दधिकाञ्जिकशुक्तानि स्नेहमात्रासमानि च॥
आर्द्रकस्वरसप्रस्थं घृतप्रस्थे विपाचयेत्।
एतदग्निघृतं नाम मन्दाग्निनां प्रशस्यते॥
अर्शसां नाशनं श्रेष्ठं तथा गुल्मोदरापहम्।
नाशयेद् ग्रहणीदोषं श्वयथुं सभगन्दरम्॥
ये च बस्तिगता रोगा ये च कुक्षिसमाश्रयाः।
सर्वांस्तान्नाशयत्याशु सूर्यस्तम इवोदितः॥

नोट-घृत के समान ही तैलादि समस्त स्नेहोंका पाक किया जाता है केवल मूर्च्छा विधिमें अन्तर होता है जो तैलप्रकरण में लिखा जायगा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीपल, पीपलामूल, चीता, गजपीपल, हींग, चव, अजमोद, पांचोनमक, साजीक्षार, यवक्षार और हाऊबेर। प्रत्येक २॥-२॥ तोला, दही, कांजी, शुक्त और अद्रकका रस प्रत्येक १-१ सेर। सबको १ सेर घृत में यथाविधि पकावे। यह अग्निघृत मन्दाग्निवालों के लिए श्रेष्ट है। अर्श, गुल्म, उदररोग, ग्रहणी, सूजन, भगंदर, और बस्ति तथा कुक्षि के समस्त रोगों का नाश इस प्रकार होता है जिस प्रकार सूर्योदयसे अन्धकार का।

[१५७] अग्निघृतम् (२) (ग. नि.)

भल्लातकात्पलशतं जलद्रोणे विपाचयेत्।
चतुर्भागावशेषं तु कषायमवतारयेत् ॥
त्र्यूषणं पिप्पलीमूलं चित्रको हस्तिपिप्पली।
हिङ्गु चव्याजमोदं च पञ्चैव लवणानि च ॥
द्वौ क्षारौ हबुषा चात्र दद्यादर्द्धपलोन्मिताम्।
मस्त्वम्लरसचुक्राणां प्रस्थं प्रस्थं प्रदापयेत् ॥
आर्द्रकस्य रसप्रस्थं घृतप्रस्थं विपाचयेत्।
एतदग्निघृतं नाम मन्दाग्निनां प्रशस्यते ॥
अर्शांसि वातरोगं च प्लीहोदरजलोदरम्।
ग्रन्थ्यर्बुदापचीशोफकुष्ठमेदोऽनिलांस्तथा ॥
ये च कुक्षिगता रोगा ये च वस्तिसमाश्रिताः।
तान्सर्वान्नाशयत्येतत्सूर्यस्तम इवोदितः ॥

६। सेर भिलावे लेकर ३२ सेर जलमें पकावे चौथा भाग रहने पर उतारले इस कषायमें त्रिकुटा, पीपलामूल, चीता, गज पीपल, हींग, चव, अजमोद, पांचों लवण, सज्जीखार, यवक्षार, हाऊबेर प्रत्येक २॥-२॥ तोले का कल्क, मस्तु, कांजी, चुक और अद्रकका रस प्रत्येक १-१ सेर मिलावे और इसमें १ सेर घृत मिलाकर पाक सिद्ध करे। यह अग्निघृत मन्दाग्निवालों के लिए अत्यन्त हितकारी है। इसके सेवनसे अर्श, वात व्याधि, प्लीहोदर, जलोदर, ग्रन्थि, अर्बुद, अपची, शोथ, कुष्ठ, मेद और बस्ति तथा कुक्षिगत रोग इस प्रकार नष्ट हो जाते हैं जिस प्रकार सूर्योदयसे अन्धकार।

[१५८] अग्निघृतम् (३) (ग. नि.)

चतुष्पलं चव्यचित्रकपाठा,
तेजस्विनी पिप्पलिमूलमेदाः।
दद्याच मुस्ता त्रिफलं विशुद्धं,
मुष्टिं समग्रामथ पल्लवानाम् ॥
आस्फोटजातीमथ सप्तपर्णं,
पटोलशाखोटकनक्तमालम्।
निम्बं प्रदद्यादथ कल्कमस्मि-
न्नधिश्रयेत्ताम्रमये कटाहे ॥
सुकथितं द्रोणजलेन पूर्णं,
पादावशिष्टं पुनरुद्धरेत्तत्।
पलार्द्धतुल्यातिविषा सभद्रा,
कल्कीकृतानि द्विपलानि दद्यात् ॥
सयावशूकं बिडसैन्धवं च,
पलानि चत्वारि च पिप्पलीनाम्।
कल्कैः कषायेण च सिद्धमेत-
न्मृद्वग्निसिद्धं ह्यवतारयेत्तत् ॥
पिबेच जीर्णे तु घृतस्य कर्षं,
विष्टम्भदोषे द्विगुणं पिबेच।
अनेन सर्वे ग्रहणी विकाराः,
शाम्यन्ति गुल्माश्च बहुप्रकाराः ॥
विंशतिक्रिमीणामथ जातयश्च,
शाम्यन्ति सर्वा विविध प्रयोगात्।
पाण्ड्वामयप्लीहगरोद्भवाश्च,
रोगाभविष्याश्च शमं व्रजेयुः ॥
सेवेत मद्यं पिशितानि चैव,
विवर्जकः स्यादपतर्पणस्य।
नाम्ना तदप्यग्नि घृतं प्रसिद्धं,
वह्निं च सन्दीपयति प्रसह्य ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चव्य, चित्रक, पाठा, वचा, पिप्पलीमूल, मेदा, नागरमोथा, त्रिफला, पाढल, अस्फोता के पत्ते, चमेली के पत्ते, सतौना, पटोल पत्र, सहारा, करञ्ज तथा नीम के पत्ते प्रत्येक का अधकुटा चूर्ण २०-२०तोले लेकर ३२ सेर जलमें तांबे के कढाव में पकावे, जब चतुर्थांश रह जाय तो उतार कर छानले, और फिर उसमें निम्नलिखित द्रव्यों का कल्क तथा घृत मिलाकर घृत सिद्ध करे। कल्क द्रव्यः—अतीस और नागरमोथा २॥-२॥ तोले, यवक्षार, विडनमक, सैंधानमक १०-१० तोले और पीपल २० तोले।

इस घृत की मात्रा १। तोला है तथा विष्टम्भ दोष (विबंध) में २ तोले सेवन करे।

इसके सेवन से सब ग्रहणिविकार, अनेक प्रकार के गुल्म, वीस प्रकारके कृमि, पाण्डु, प्लीहा और विषरोगों का नाश होता है। इसका सेवन करते हुए मद्य और पिष्टिका सेवन भी कर सकते हैं। अपतर्पण का त्याग करना चाहिए। यह अग्निघृत अग्नि को दीप्त करता है।

[१५९] अजापञ्चकघृतम् (भै. र. क्षय)

छागशकृद्रसमूत्रक्षीरैर्दध्ना च साधितंसर्पिः।
सक्षारं यक्ष्महरं श्वासकासोपशान्तये परमम्॥

बकरी की मींगनियों का रस, बकरी का मूत्र, दूध, और दही तथा यवक्षारके कल्कसे बकरीका घृत सिद्ध करे इसके सेवन से यक्ष्मा श्वास और खांसी में अत्यन्त शान्ति मिलती है।

[१६०] अजेयघृतम् (सु. सं.)

मधुकं तगरं कुष्ठं भद्रदारु हरेणवः।
पुन्नागैलैलवालूनि नागपुष्पोत्पलं सिता॥
विडङ्गं चन्दनं पत्रं प्रियङ्गुर्ध्यामकं तथा।
हरिद्रे द्वे बृहत्यौ च सारिवे च स्थिरा सहा॥
कल्कैरेषां घृतं सिद्धमजेयमिति विश्रुतम्।
विषाणि हन्ति सर्वाणि शीघ्रमेवाजितं क्वचित्॥

मुलहैठी, तगर, कूठ, देवदारु, रेणुका, पुन्नाग (सुलतान चंपा), इलायची, एलवालुक, नाग केसर, नीलोफर, मिश्री, वायबिडंग, चन्दन, तेजपात, फूल, प्रियंगू, रोहिषतृण, हल्दी, दारु हल्दी, कटेली, बडी कटेली, दोनों सारिवा, शालपर्णी और माषपर्णी या घृतकुमारी। इनके कल्क से सिद्ध घी शीघ्र ही सब प्रकार के विषों का नाश करता है।

[१६१] अमृत घृतम्

(च. सं. चि. अ. २३. विषचिकित्सा)

शिरीषत्वक् त्रिकटुकं त्रिफला चन्दनोत्पले।
द्वे बले शारिवास्फोता सुरभी निम्ब पाटलाः॥
बन्धुजीवाढकीमूर्वावासासुरसवत्सकान्।
पाठांकोलाश्वगन्धार्कमूलयष्ट्याह्वयवकान्॥
विशालां बृहतीं लाक्षां कोविदारं शतावरीम्।
कटभीदन्त्यपामार्गान् पृश्निपर्णी रसाञ्जनम्॥
श्वेतभण्डाश्वखुरकौ कुष्ठदारुप्रियङ्गुकान्।
विदारीं मधुकात्सारं करञ्जस्य फलं वचाम्॥
रजन्यौ लोध्रमक्षांशं पिष्ट्वा साध्यं घृताढकम्।
तुल्याम्बुछागगोमूत्र्याढके तद्विषापहम्॥
अपस्मारक्षयोन्मादभूतग्रहगरोदरम्।
पाण्डुरोगान् क्रिमीन्गुल्मान्
प्लीहोरुस्तम्भकामलाः॥
हनुस्कन्धग्रहार्दींश्च पानाभ्यञ्जननावनैः।
हन्यात्सञ्जीवयेच्चापि विषोद्वेगमृतान्नरान्॥
नाम्नेदममृतं सर्वं विषाणां स्याद् घृतोत्तमम्॥

सिरसकी छाल, त्रिकुटा, त्रिफला, सफेद चन्दन, नीलोफर, बला, अतिबला, शारिवा× आस्फोता, सुरभी (तुलसी), नीमकी छाल, पाढल,

× हाफरमालीति बंगे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बन्धुजीव (गुल्दुपहरी), अरहर, मूर्वा, वासा, तुलसी, कूड़ा, पाठा, बेर, असगन्ध, आक की जड़, मुल्हैठी, पद्माख, इन्द्रायन, कटेली, लाख, *कोविदार, शतावर, कटभि (कण्टक शिरीष), दन्ती, अपामार्ग, पृष्टपर्णी, रसौत, सफेद कोयल, नखी, कूठ, देवदारु, फूलप्रियंगु, विदारी कन्द, मुल्हैठी का सार, करंजवेके फल, बच, हल्दी, दारु हल्दी, लोध्र प्रत्येक १।-१। तोला, इन को पीसकर इस कल्क और ४ सेर पानी, बकरी का मूत्र तथा गोमूत्र प्रत्येक १२--१२ सेर के साथ ४ सेर घीका पाक सिद्ध करे। यह घी विष नाशक, अपस्मार, क्षय, उन्माद, भूतबाधा, ग्रहरोग, गर-विष विकार, उदररोग, पाण्डुरोग, कृमिरोग, गुल्म, प्लीहा, उरुस्तम्भ, कामला, हनुग्रह, स्कन्धग्रह आदिको पीने या अभ्यंग करने या नस्य लेनेसे आराम करता है यह घृत विषवेगसे मृत प्राणीको भी जीवित कर देता है।

[१६२] अमृतषट्पलघृतम् (वृ. नि. र.)

नागरं चविका क्षारः पिप्पलीमूल चित्रकम्।
कृष्णा च पलिकान् भागान् घृतप्रस्थं विपाचयेत्॥
शृङ्गवेररस प्रस्थं मधुप्रस्थं तथैव च।
एकाहिकं द्व्याहिकं च त्र्याहिकं च चतुर्थकम्॥
एतान्सर्वज्वरान्हन्ति स्थूलं च कुरुते भृशम्।
दुर्नामश्वासकासघ्नं बलवर्णाग्निवर्द्धनम्॥

सोंठ, चव्य, यवक्षार, पीपलामूल, चीता, और पीपल, प्रत्येक ५-५ तोला, घृत १ सेर, अदरकका रस १ सेर, शहद १ सेर। यथाविधि घृतपाक करे। यह घृत दैनिक, तिजारी, चौथिया आदि ज्वर और बवासीर श्वास तथा खांसीका नाश करता है तथा बल, वर्ण और अग्नि वर्द्धक है।

* काल कचनार

[१६३] अमृतादि घृतम् (१)

(र. र. वातर.)

अमृतायष्टिकाश्मर्यद्राक्षाब्ददारुरवधामरैः।
गोक्षुरेक्षुरवृश्चीरवृद्धदारबलावृषैः॥
रास्नैरण्डवरातिक्ताभीरुशुण्ठीकणोत्पलैः।
धात्रीरससमं सर्पिः साधितं त्रिगुणे जले॥
गम्भीरोत्तान वातास्रं त्रिकजङ्घोरुजानुजम्।
हन्त्युग्रं क्रोष्टुशीर्षं च रुद्दाहं सानिलं ज्वरम्॥
मेदोदावर्तब्रध्नादीनिदमायुर्बलप्रदम्॥

गिलोय, मुल्हैठी, खंभारी, दाख, नागरमोथा, अमलताम का गूदा, देवदारु, गोखरू, तालमखाना, श्वेत पुनर्नवा, विधारा, बला, वासा, रास्ना, एरण्ड मूल, त्रिफला, कुटकी, सतावर, सोंठ, पीपल, और नीलोफर, इनके कल्क और घी तथा घी के बराबर आमले के रस में ३ गुना पानी मिलाकर यथा-विधि घृत बनावे।

यह घृत त्रिक, जङ्घा और जानु तक फैले हुवे, गम्भीर तथा उत्तान वातरक्त, उग्र क्रोष्टु-शीर्ष, रुग्दाह सन्निपात, वातज ज्वर, मेद, उदावर्त और ब्रध्न आदि का नाश करता है तथा आयु और बल वर्द्धक है।

[१६४] अमृतादि घृतम् (२) (वृ.नि.र.)

अमृता त्रिफला पटोलयासैः,
संपाकैर्विधिवद्घृतं विपक्वम्।
विषमज्वरनाशनं प्रधानं,
क्षयगुल्मारुचिकामलापहारि॥

गिलोय, त्रिफला, पटोलपत्र, धमासा, और अमलतास इनके क्वाथ तथा कल्कसे सिद्धघृत विशेषतया विषमज्वर, तथा क्षय, गुल्म अरुचि और कामला का नाश करता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[१६५] अमृतादि घृतम् (३)

(वृ. नि. र., बं. से. वातर.)

अमृतायाः कषायेण कल्केन च महौषधम् ।
मृद्वग्निना घृतं सिद्धं वातरक्तहरं परम् ॥
आमवाताढ्यवातादीन् कृमिकुष्ठव्रणानपि ।
अर्शांसि गुल्मांश्च तथा नाशयत्याशु योजितम् ॥

गिलोय के कषाय और सोंठके कल्क से मृदु अग्निपर सिद्ध घृत वातरक्त नाशक श्रेष्ठ तथा आमवात, उरु स्तम्भ, कृमि, कुष्ठ, व्रण, अर्श, और गुल्म रोग नाशक औषधि है।

[१६६] अमृतादिघृतम् (४)

(वृ. नि. रयो. र. वातर.)

अमृतायाः पलशतं जलद्रोणे सुशोषितम् ।
घृतप्रस्थं विपक्तव्यं कल्कानष्टपलानि च ॥
चतुर्गुणेन पयसा वातासृक्कुष्ठनाशनम् ।
कामलापाण्डुरोगघ्नं प्लीहकासज्वरापहम् ॥

६। सेर गिलोय को ३२ सेर जल में पकाकर चौथाई रहने पर उस काढ़े और गिलोय के ४० तोला कल्क तथा ८ सेर दूध के साथ २ सेर घृत सिद्ध करे। यह घृत वातरक्त, कुष्ठ, कामला, पाण्डु, तिल्ली, खांसी, और ज्वर का नाश करता है।

[१६७] अमृतादिघृतम् (५) (वृ. नि. र.)

अमृता मधुकं द्राक्षा त्रिफला नागरं बला।
वासारग्वधवृश्चीरदेवदारुत्रिकण्टकम् ॥
कटुकारोहिणी कृष्णा काश्मर्याश्च फलानि च।
रास्नाक्षुरकगन्धर्वदेवदारुबलोत्पलैः ॥
कल्कैरेभिः समं कृत्वा सर्पिःप्रस्थं विपाचयेत् ।
धात्रीरसः समो देयो पयस्त्रिगुणसंयुतः ॥
सम्यक् सिद्धं च विज्ञाय भोज्ये पाने च शस्यते।
बहुदोषोत्थितं वातरक्तेन सह मूर्छितम् ॥
उत्तानं वापि गम्भीरं त्रिकजङ्घोरुजानुजम् ।
क्रोष्टुशीर्षे महाशूले चामवाते सुदारुणे ॥
महारोगोपसृष्टस्य वेदना चाति दुस्तरा ।
मूत्रकृच्छ्रमुदावर्तं प्रमेहं विषमज्वरान् ॥
एतान्सर्वान् निहन्त्याशु वातपित्तकफोत्थितान् ।
सर्वकालोपयोगेन बलवर्णाग्निवर्द्धनम् ॥
अश्विभ्यां निर्मितं श्रेष्ठं घृतमेतदनुत्तमम् ॥

गिलोय, मुल्हैठी, दाख, त्रिफला, सोंठ, खरैंटी, बासा, अमलतास, सफेद पुनर्नवा, देवदारु, गोखरू, कुटकी, पीपल, खम्भारी के फल, रास्ना, तालमखाना, एरण्डमूल, देवदारु, बला और नीलोफर, इन सब के कल्क में १ सेर घृत को १ सेर आमले के रस तथा ३ सेर दूध के साथ पाक करे। यह घृत पिलाने या भोजन के साथ सेवन करने से बहु दोषोंसे उत्पन्न हुए प्रबल वातरक्त, जो जंघा, जानु और त्रिक तक फैल गया हो, चाहे उत्तान हो या गंभीर को नष्ट करता है इसके अतिरिक्त यह क्रोष्टुशीर्ष, दारुण आमवात, कुष्ठादि की भयंकर वेदना मूत्रकृच्छ्र, उदावर्त, प्रमेह, विषम ज्वर आदि का नाश करता और सर्व कालोपयोगी है तथा बलवर्ण और अग्नि की वृद्धि करता है। इस श्रेष्ठ घृतका निर्माण अश्विनिकुमारोंने किया था।

[१६८] अमृतादि गुग्गुलु घृतम् (र.र.)

अमृतवृषपटोलं चन्दनं मुस्ततिक्ता,
कुटजकुटजबीजं पूतनाकाण्डतिक्ता ।
दहनविटपिमूलं दीर्घमूला यवं च
कलितरुफलधात्री सर्वतोभद्रविश्वम् ॥
समभरणधृतानां क्वाथमादाय चैषां,
विधिवदिति पचेत्तं सर्पिषः प्रस्थमेकम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भिषगपि विधिपूर्वं शोधयित्वा पुरस्य,
वसुपलपरिमाणं कल्कमत्रैव दत्वा ॥
सुतिथिदिवसचन्द्रे भास्करं पूजयित्वा,
नयनगदगदी यः सर्पिरेतच्च कुर्यात् ।
असितसितसमुत्थानर्बुदान् काचशुक्रान्,
पटलतिमिररोगान् पिल्वकण्ड्वामयांश्च ॥
विविधनयनदोषानश्रुपातामवातान् ,
समशनदिनपूर्वो भोजनान्ते निहन्ति ।

गिलोय, वासा, पटोलपत्र, लाल चन्दन, नागरमोथा, कुटकी, कूड़े की छाल, इन्द्रयव, हैड़, चिरायता, चित्रकमूल, कालीसर, जौं, बहेड़ा, आमला, खम्भारी और सोंठ प्रत्येक समान भाग मिलाकर क्वाथ बनावे । इनके क्वाथ तथा ४० तोला शुद्ध गूगल के कल्क से १ सेर घी विधिवत् पाक करके रक्खे । उत्तम तिथि और शुभ नक्षत्रमें सूर्य भगवानकी पूजा करके इसे सेवन करना आरम्भ करे । यह घृत सर्व प्रकार के नेत्र के काले और सफेद भाग का अर्बुद, मोतियाबिन्द, फूला, पटल, तिमिर, पिल्व (रोहे), कण्डु, और आंसुओं का बहना आदि नेत्ररोग तथा गठिया आदिका नाश करता है। इसे प्रातःकाल या भोजन के अन्त में सेवन करना चाहिये ।

[१६९] अर्जुन घृतम् (भै. र.)

पार्थस्य कल्कस्वरसेन सिद्धं,
शस्तं घृतंसर्वहृदामयेषु ।

अर्जुन की छाल के रस और कल्क से सिद्ध घृत समस्त हृद्रोगों के लिये लाभदायक है ।

[१७०] अवाक्पुष्प्यादि घृतम् (च.सं.)

आवाक्पुष्पी बला दार्विं पृश्निपर्णि त्रिकण्टकः।
न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थशुङ्गाश्च द्विपलोन्मिताः ॥
कषाय एषां पेष्याणि जीवन्ती कटुरोहिणी ।
पिप्पली पिप्पलीमूलं नागरं सुरदारु च ॥
कलिङ्गाः शाल्मलं पुष्पं वीरा चन्दनमुत्पलम् ।
कटफलं चित्रकं मुस्तं प्रियंग्वतिविषास्थिराः ॥
पद्मोत्पलानां किंजल्कं समङ्गा सनिदिग्धिका ।
बिल्वं मोचरसः पाठा भागाः कर्षसमन्विताः ॥
चतुः प्रस्थे शृतं प्रस्थं कषायमवतारयेत् ।
त्रिंशत्पलानि प्रस्थोऽत्र विज्ञेयो द्विपलाधिकः ॥
सुनिषण्णकचाङ्गेर्याः प्रस्थो द्वौ स्वरसस्य च ।
सर्वैरेतैर्यथोद्दिष्टैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥
एतदर्शस्यतीसारे रक्तस्रावे त्रिदोषजे ।
प्रवाहने गुदभ्रन्शे पिच्छासु विविधासु च ।
उत्थाने चातिबहुशः शोथशूले गुदाश्रये ॥
मूत्रग्रहे मूढवाते मन्देऽग्नावरुचावपि ।
प्रयोज्यं विधिवत् सर्पिर्बलवर्णाग्निवर्द्धनम् ॥
विविधेष्वन्नपानेषु केवलं वा निरत्ययम् ॥

सौंफ, बला दारुहल्दी, पृश्निपर्णी, गोखरू, वड़, गूलर और पीपल के अंकुर, प्रत्येक १०-१० तोला । इनके क्वाथ और नीचे लिखे कल्क तथा रस के साथ २ सेर घृत सिद्ध करे ।

कल्क-द्रव्यः-जीवन्ती, कुटकी, पीपल, पीपलीमूल, सोंठ, देवदारु, इन्द्रयव, सेमर के फूल, काकोली, चन्दन, नीलोफर, कायफल, चीता, नागरमोथा, फूलप्रियंगु, अतीस, शालपर्णी, लाल और नीलकमल का केसर, मजीठ, कटेली, बेल, मोचरस और पाठा । प्रत्येक १।-१। तोला । क्वाथ्य को ८ सेर जल में पकाकर २ सेर रहने पर छानलें । (यहां प्रस्थ ३२ पलका मानना चाहिए) चौपतिया का रस और तिपतयाका रस ४-४ सेर ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह घृत अर्श और अतिसार के रक्तस्राव, प्रवाहिका, गुदभ्रंश (कांच निकलना), गुदशोथ, मूत्रावरोध, मूढ़वात, मन्दाग्नि, अरुचि आदि का नाश करता है तथा बल वर्ण और अग्नि वर्द्धक है। इसे विविध प्रकार के अन्न पान के साथ अथवा अकेले ही सेवन करना चाहिये।

[१७१] अशोक घृतम् (भै. र. स्त्री. रो.)

अशोकवल्कलप्रस्थं तोयाढकविपाचितम्।
पादस्थेन घृतप्रस्थं जीरकक्काथसंयुतम्॥
तण्डुलाम्बुत्वजाक्षीरं घृततुल्यं प्रदापयेत्।
तथैव केशराजस्य प्रस्थमेकं भिषग्वरः॥
जीवनीयैः प्रियालैस्तु परुषैः सरसाञ्जनैः।
यष्ट्याह्वयाशोकमूलञ्च मृद्वीका च शतावरी॥
तण्डुलीयकमूलञ्च कल्कैरेभिर्पलार्द्धकैः।
शर्करायाः पलान्यष्टौ सिद्धशीते प्रदापयेत्॥
पीतमेतद्घृतं हन्ति सर्वदोष समुद्भवम्।
श्वेतं नीलं तथा कृष्णं प्रदरं हन्ति दुस्तरम्॥
कुक्षिशूलं कटीशूलं योनिशूलञ्च सर्वगम्।
मन्दाग्निमरुचिं पाण्डुं कृशतां श्वासकामलाम्॥
आयुः पुष्टिकरं बल्यं बलवर्णप्रसादनम्।
देयमेतत्परं सर्पि विष्णुना परिकीर्तितम्॥

१ सेर अशोक की छाल। ४ सेर जल में पका कर चौथाई रहने पर छान ले इस काढ़े और जीरेका क्वाथ, चावलों का पानी, बकरी का दूध तथा भांगरे का रस प्रत्येक १-१ सेर और जीवनीय गण, पियाल (चिरौंजी), फालसा, रसौत, मुलहैठी, अशोक की जड़ की छाल, मुनक्का, शतावर, चौलाई की जड़, प्रत्येक २॥-२॥ तोले इनके कल्क के साथ १ सेर घृतका पाक सिद्ध करे। फिर ठण्डा होने पर ४० तोला शर्करा मिलावे। यह घृत सफेद, नीला, पीला आदि सब प्रकार के प्रदर रोग, कोख का शूल, कमर और योनी की पीड़ा, मन्दाग्नि, अरुचि, पाण्डु, दुबला पन, श्वास, कामला, और स्त्रियों के सब रोगों का नाश करता है। बल, वर्ण, पुष्टि और आयु वर्द्धक है।

१ जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्यौ शूर्पपर्णिके।
जीवन्ती मधुकञ्चेति दशको जीवनो गणः॥
जीवनीय गण-जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, जीवन्ती, म्हैठी।

[१७२] अश्वगन्धादिघृतम् (न. मृ.)

अश्वगन्धा प्रस्थमेकं दुग्धं चैवाढकद्वयम्।
घृतप्रस्थमितं दद्याच्छनैर्मृद्वग्निना पचेत्।
त्रिकटुकं चतुर्जातं विडङ्गं जातिपत्रकम्।
बला चातिबला चैव श्वदंष्ट्रा वृद्धदारुकम्॥
पलैकञ्च प्रदातव्यं लोहं वङ्गं तथाभ्रकम्।
प्रस्थार्द्धं माक्षिकं दद्यात्प्रस्थार्द्धा शर्करा शुभा॥
सर्वमेतद्विनिक्षिप्य स्निग्धे भाण्डे निधापयेत्।
द्वौ कालौ भक्षयेन्नित्यं समीक्ष्याग्नि बलं यथा॥
अर्द्धं वातं हनुस्तम्भं सन्धिवातं कटिग्रहम्।
गर्भप्रसवजान्दोषाञ्छुक्रदोषांस्तथैव च॥
सर्ववातान्निहन्त्येतद्यथोन्मत्तगजं हरिः।
अश्वगन्धादिविख्यातं घृतं वाजीकरं परम्॥

आसगन्ध १ सेर, दूध ८ सेर, घृत १ सेर, यथा विधि पाक करके उसमें त्रिकुटा, चातुर्जात, बायविडंग, जावित्री, बला, अतिबला, गोखरू और विधारा, प्रत्येक ५-५ तोला, और लोह भस्म, बंग भस्म, अभ्रक भस्म, प्रत्येक ५-५ तोला, शहद ०॥ सेर और चीनी आधा सेर मिलावे फिर घृत के बरतन में भरकर रक्खे। इसके दोनों समय सेवन करने से अर्दित, हनुस्तम्भ, सन्धि बात, कमर का रह जाना, प्रसूत रोग, शुक्र दोष, और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समस्त वायुके रोगों का नाश होता है तथा यह अत्यन्त वाजीकरण है ।

[१७३] अश्वगन्धाघृतम्

(वृ. नि. र., ग. नि. बालरो.)

पादकल्केऽश्वगन्धायाः क्षीरेऽष्टगुणिते पचेत् ।
घृतं देयं कुमाराणां पुष्टिकृद्बलवर्द्धनम् ॥

आठगुणे दूध और चौथाई अश्वगन्धाके कल्क के साथ पाक किया हुआ घृत बालकोंके लिये पौष्टिक तथा बलवर्धक होता है ।

नोट—यह वास्तवमें घृत नहीं बल्कि अवलेह बनेगा । यदि घृत बनाना हो तो १ प्रस्थ असगंधको ८ गुने पानी में पकाकर २ प्रस्थ रहने पर छान ले, फिर इसमें दूध और घी मिलाकर पकावें । जब घृत मात्र शेष रहे तो छानकर अन्य सब पदार्थ मिलावें ।

[१७४] अष्टमङ्गलघृतम्

(भै. र., यो. त.)

वचा कुष्टं तथा ब्राह्मी सिद्धार्थकमथापि वा ॥
शारिवा सैन्धवञ्चैव पिप्पली घृतमष्टमम् ॥
मेध्यं घृतमिदं सिद्धं पातव्यञ्च दिने दिने ।
दृढस्मृतिः क्षिप्रमेधा कुमारो बुद्धिमान् भवेत् ॥
न पिशाचा न रक्षांसि न भूताः न च मातरः ।
प्रभवन्ति कुमाराणां पिबतामष्टमङ्गलम् ॥

वच, कूठ, ब्राह्मी, सरसों (सफेद), सारिवा, सेंधा नमक और पीपल, इनके कल्क से यथा विधि सिद्ध किया हुआ घृत पिलाने से बच्चोंकी मेधा, स्मरणशक्ति और बुद्धि बढती है तथा उन पर पिशाच, राक्षस और मातृका आदिका बुरा प्रभाव नहीं होता ।

अथ अकारादि तैल प्रकरणम्

तैल व्याख्या

तेलोंका पाक भी घृतके समान ही सिद्ध किया जाता है परन्तु मूर्छा विधि भिन्न होती है अतएव यहां केवल मूर्छाविधि का वर्णन कर देना ही उचित प्रतीत होता है ।

कटु तैल मूर्छा

आमला, हल्दी, नागरमोथा, बेलकी छाल, अनार की छाल, नागकेसर, पीपल, जीरा, सुगन्ध बाला और बहेड़ा । सब समान भाग मिलाकर १ सेर तेलमें १। तोलेके हिसाबसे ग्रहण करे । तैलको मन्दाग्नि पर गरम करके इनका कल्क धीरे धीरे थोड़ा थोड़ा करके मिलादे ।

तिल तैल मूर्छा

मजीठ, हल्दी, लोध, नागर मोथा, नलिका, बहेड़ा, हैड़, धीकुमार, बड़की जटा और सुगन्धबाला । इनमें से तेलका सोलहवां भाग मजीठ और मजीठ का चौथा भाग अन्य सब द्रव्य (समान मात्रामें मिले हुए लेने चाहियें ।)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एरण्ड तैल मूर्छा

मजीठ, नागरमोथा, धनियां, त्रिफला, जयन्ती, सुगन्ध बाला, खजूर, बड़की दाढ़ी, हल्दी, दारु हल्दी, नलिका, केतकी, दही और कांजी। १ सेर तैलको मूर्छित करने के लिये इनमें से प्रत्येक वस्तु ४-४ माशा लेनी चाहिये।

[१७५] आगार धूमाद्यं तैलम्

[देखो प्र. स. ४२३]

[१७६] अग्निमन्थादि क्षारतैलम्

(च. सं. अ. १३ उदर)

तथाग्निमन्थश्योनाकपलाशतिलनालजैः।
बलाकदल्यपामार्गक्षारैः प्रत्येकशः स्रुतैः॥
तैलं पक्त्वा भिषग् दद्यादुदराणां प्रशान्तये।
निवर्तते चोदरिणां हृद्ग्रहश्चानिलोद्भवः॥

अरणी, सोनापाठा, ढाक, तिलनाल, बला, केला और अपामार्ग, इनमेंसे किसी एकके क्षारसे सिद्ध तैल पिलानेसे उदररोग शान्त होता है, विशेषतः उदर रोगी को वातज हृद्ग्रह हो जाय तो यह तैल बहुत लाभ पहुंचाता है (क्षारजल १६ सेर, तेल ४ सेर। मिलाकर पकावें।)

[१७७] अजमोदादि तैलम्

(वृ. नि. र., ग. नि. तैला)

अजमोदा च सिन्दूरं हरितालं निशाद्वयम्।
क्षारद्वयं फेनयुतं सार्द्रकं सरलोद्भवम्॥
इन्द्रवारुण्यपामार्गकदलीकन्दकैः समैः।
एभिःसार्षपकं तैलमजामूत्रऽष्टयोजितम्॥
मृद्वग्नौ पाचयेदेतत् स्नुह्यर्कक्षीरसंयुतम्।
अजमोदादिकं तैलं गण्डमालां व्यपोहति॥
आमां विदग्धां तु पचेत् पक्वां चैव विशोधयेत्।
रोपणं मृदुभावं च तैलेनानेन कारयेत्॥

अजमोद, सिंदूर, हरताल, हल्दी, दारु हल्दी, यवक्षार, सज्जीखार, समुद्र फेन, अदरक, सरल काष्ठ, इन्द्रायण, चिरचिटा, केलेका कन्द। थोहर और आकका दूध २-२ सेर। इनके कल्क तथा १६ सेर बकरी के मूत्रसे यथाविधि २ सेर सरसों के तेल का पाक करे। इसे लगाने से कच्ची और अधपकी गण्डमाला पक जाती है और पकी हुई शुद्ध होकर भर जाती है तथा वह स्थान मृदु हो जाता है।

[१७८] अजित तैलम् (वं. से.)

तैलस्य पचेत्कुडवं मधुकस्य पलेन कल्कपिष्टेन।
आमलकरसप्रस्थं क्षीरप्रस्थेन संयुतं कृत्वा॥
अजितं नाम्ना तैलं तिमिरं हन्यान्निमिप्रोक्तम्।
विमलां कुरुते दृष्टिं नष्टामप्यानयेन्नयने॥

तिल तेल ४० तोले, मुलैठी का कल्क ५ तोले, आमले का रस १ सेर, दूध १ सेर एकत्र मिलाकर तैल पाक सिद्ध करें। यह निमि प्रणीत तेल तिमिर रोगको नष्ट करता है और नष्ट दृष्टिको भी पैदा कर देता है।

[१७९] अणुतैलम् (१)

(सु. सं. चि. अ. ४)

तिलपरिपीडनोपकरण-
काष्ठान्याहृत्यानल्पकालं तैलपरि
पीतान्यणूनि खण्डशः
कल्पयित्वाऽवक्षुद्यमहति कटाहे,
पानीये आप्लाव्य क्वाथयेत्
ततःस्नेहमम्बुपृष्ठाद्युदेति
तत् सरकपाण्योरन्यतरेणादाय
वातघ्नौषधप्रतीवापं च।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्नेहपाककल्पेन विपचेदेतदणु-
तैलमुपदिशन्ति वातरोगेषु,
अणुभ्यस्तैलद्रव्येभ्यो निष्पाद्यते इत्यणुतैलम् ।

कोल्हु (तेली लोग लकड़ीके जिस यन्त्र में तिल,सरसों आदि भरकर तेल निकालते हैं वह यन्त्र) जो बहुत पुराना हो और जिसने बहुत दिनों तक खूब तेल पिया हो, लाकर उसके छोटे २ टुकड़े करले और उन्हें कूट कर एक बड़े कढ़ावमें घने पानीमें भिगोदे फिर उसे अग्नि पर चढ़ावे ऐसा करने से पानी के ऊपर तेल आजायगा उसे हथेलीसे उतारकर अन्य पात्रमें एकत्रित करलो फिर उसे वातघ्न औषधियों* के कल्क के साथ यथा विधि सिद्ध करे । यह तेल वात रोगों का नाश करता है।

[१८०] अणु तैलम् (२)

(च. सं. । सू. अ. ५)

चन्दनागुरुणी पत्रं दार्वीत्वङ् मधुकं बलाम् ।
प्रपौण्डरीकं सूक्ष्मैलां विडङ्गं बिल्वमुत्पलम् ।
ह्रीबेरमभयं+ वन्यं त्वङ्मुस्तं शारिवां स्थिराम्
जीवन्तीं पृश्निपर्णीं च सुरदारु शतावरीम् ॥
हरेणुं बृहतीं व्याघ्रीं सुरभीं पद्मकेशरम् ।
विपाचयेच्छतगुणे माहेन्द्रे विमलेऽम्भसि ॥
तैलाद्दशगुणं शेषं कषायमवतारयेत् ।
तेन तैलं कषायेण दशकृत्वो विपाचयेत् ॥
अथास्य दशमे पाके समांशं छागलं पयः ।
दद्यादेषोऽणुतैलस्य नावनीयस्य संविधिः ॥
तस्य मात्रां प्रयुञ्जीत तैलस्यार्द्धं पलोन्मिताम् ।
स्निग्ध स्विन्नोत्तमाङ्गस्य पिचुना नावनैस्त्रिभिः
त्र्यहात् त्र्यहाच्च सप्ताहमेतत्कर्म समाचरेत् ।
निवातोष्णसमाचारो हिताशी नियतेन्द्रियः ॥
तैलमेतत्त्रिदोषघ्नमिन्द्रियाणां बलप्रदम् ।
प्रयुञ्जानो यथाकालं यथोक्तानश्नुते गुणान् ॥

लाल चन्दन, अगर, तेजपात, दारुहल्दी की छाल, मुलैठी, बला (खरैंटी), पुण्डरिया, छोटी इला-यची, बायबिड़ंग, बेल की छाल, कमल, सुगन्ध बाला, खस, दारचीनी, केवटी मोथा, सारिवा शालपर्णी, जीवन्ती, पृश्निपर्णी, देवदारु, शतावर, रेणुका, बडी कटेली, छोटी कटेली, शल्लकी और कमल केसर । (सब पदार्थ समान भाग मिलाकर ६। सेर लेकर अधकुटे करले) । सबको १०० सेर स्वच्छ आकाश जलमें पकाकर २५ सेर पानी शेष रहने-पर छानले । इसके बाद २॥ सेर तिलके तेल में समान भाग यह क्काथ डाल कर पकावे । इसी प्रकार १० बार करके इस दस गुने क्काथके साथ तैल पाक सिद्ध करे। इसके अन्तिम (दसवें) पाकमें समान भाग (२॥ सेर) बकरी का दूध भी डाल देना चाहिये ।

व्यवहार विधि—पहिले शिर में तेल लगाकर फिर स्वेद देकर (सीधा लिटाकर) रुई के फाहे से तीन बार करके २॥ तोला यह तेल दोनों नस्को-रोंमें निचोड़ना चाहिये ।

इस प्रकार इस तेलका नस्य एक एक दिन के अंतर से (तीसरे दिन) ७ दिन तक लेना चाहिये । नस्य सेवन काल में निर्वात स्थान, ऊष्ण और पथ्य आहार विहार करते हुए संयम से रहना चाहिये ।

---

* वातघ्न औषधियां:-यथा-भद्रदार्वादि गण (देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, भारङ्गी, बरनेकी छाल, मेंढासिंगी, पियाबांसा, गुन्द्र पटेर, त्रिफला, गोखरू, सफेद आक, अरणी, धतूरा, पाषाण भेद, शतावर, शालपर्णी, पटोल-पत्र, कुटकी, पुनर्नवा, अगथिया, जौ), इसी प्रकार दशमूल आदि अन्य वातनाशक औषधियां ले सकते हैं।

+ अभयामिति पाठान्तरम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह तेल त्रिदोष नाशक और इन्द्रिय-बल-वर्द्धक है। इसे यथाकाले सेवन करने से शास्त्रोक्त गुण प्राप्त होते हैं।

१ वर्षे वर्षेऽणुतैलं च कालेषु त्रिषुमाचरेत्।
प्रावृट्शरद्वसन्तेषु गतमेघे नभस्तले॥

प्रतिवर्ष प्रावृट (आषाढ, श्रावण) शरद् (कार्तिक, मार्गशीर्ष) और वसन्त (फाल्गुन, चैत्र) इन तीन ऋतुओंमें जब बादल आदि न हों तब अणु तैलका नस्य लेना चाहिये।

२ नस्यकर्म यथाकालं यो यथोक्तं निषेवते।
न तस्य चक्षुर्न घ्राणं न श्रोत्रमुपहन्यते॥
न स्युः श्वेता न कपिलाः केशाः श्मश्रूणिवा पुनः।
न च केशाः प्रलुप्यन्ते वर्द्धन्ते च विशेषतः॥
मन्यास्तम्भः शिरः शूलमर्दितं हनुसंग्रहः।
पीनसार्द्धावभेदौ च शिरः कम्पश्च शाम्यति॥
सिराः शिरः कपालानां सन्धयः स्नायु कण्डराः।
नावनप्रीणिताश्चास्य लभन्तेऽभ्यधिकं बलम्॥
मुखं प्रसन्नोपचितं स्वरः स्निग्धःस्थिरो महान्
सर्वेन्द्रियाणां वैमल्यं बलं भवति चाधिकम्॥
न चास्य रोगा सहसा प्रभवन्त्यूर्द्धजत्रुजा।
जीर्यतश्चोत्तमाङ्गे च जरा न लभते बलम्॥

यथोक्त कालमें अणु तैलका नस्य लेने से आंख, नाक और कानों की शक्ति क्षीण नहीं होती, शिर और दाढी मूछके बाल श्वेत या कपिल नहीं होते। बाल विशेष रूप से बढते हैं और गिरते नहीं। मन्यास्तम्भ, शिरशूल, अर्दित, हनुग्रह, पीनस, आधासीसी, सिरका कांपना आदि रोग शान्त होते हैं। नस्यकर्मके द्वारा तर्पित होने से शिर और कपाल की शिराएं, कण्डराएं तथा संधियां अधिक दृढ होती हैं। मुख प्रसन्न और पुष्ट होता है। स्वर मधुर, गम्भीर और तेज होता है। समस्त इन्द्रियां बलवान एवं निर्मल होती हैं। ऊर्द्धजत्रुगत (गलेसे ऊपरके) रोगों के आक्रमण से रक्षा होती है तथा वृद्धावस्था आजाने पर भी वलीपलित आदि वृद्धावस्थाके लक्षण अधिक नहीं होते।

[१८१] अपामार्ग क्षार तैलम्

(भै. र.। कर्णरोगा.)

मार्गक्षारजलेन च तत्कृतकल्केन साधितन्तैलम्
अपहरति कर्णनादं बाधिर्यं चापि पूरणतः॥

अपामार्ग के क्षारके जल और उसी के कल्क से सिद्ध किया हुवा तेल मन्दोष्ण कानमें डालनेसे कर्णनाद और बहिरापन का नाश होता है।

टिप्पणी—जिन तेलों में क्षार पडते हैं उन्हें बहुत बडे पात्रमें पकाना चाहिए क्योंकि क्षारके कारण फेन बहुत अधिक आते हैं और तेल बहार निकल जानेका भय रहता है। जब तेलमें फटे हुवे दूध के समान छिछडे से दीखने लगें तब उसे सिद्ध समझना चाहिए। क्षार सिद्ध तेल पाककी यही परीक्षा है।

[१८२] अमृतादि तैलम् (१)

(च. सं.। चि. अ. २८ वा. व्या.)

तुलाः पञ्च गुडूच्यास्तु द्रोणेष्वष्टास्वपां पचेत्।
पादशेषे समं क्षीरं तैलस्य द्यादकं पचेत्॥
एलामांसीनतोशीरशारिवाकुष्ठचन्दनैः।
शतपुष्पा बला मेदामहामेदर्धिजीवकैः।
काकोलीक्षीरकाकोलीश्रावण्यतिबलानखैः।
महाश्रावणिजीवन्तीविदारीकपिकच्छुभिः॥
शतावरी तामलकीकर्कटाख्याहरेणुभिः।
वचागोक्षुरकैरण्डरास्नाकालासहाचरैः॥
वीराशङ्खकिमुस्तत्वक्पत्रर्षभकवालकैः।
मञ्जिष्ठायास्त्रिकर्षेण मधुकाष्टपलेन च॥
कल्कैस्तत्त क्षीणवीर्याग्निबलसंमूढचेतसः।
उन्मादारत्यपस्मारैरार्तेश्च प्रकृतिं नयेत्॥
वातव्याधिहरं श्रेष्ठं तैलाग्र्यममृताह्वयम्।
कृष्णात्रयेण गुरुणा भाषितं वैद्य पूजितम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३१। सेर गिलोय को २५६ सेर जलमें पकावे चौथाई रहने पर छान ले। फिर इस क्वाथ और १६ सेर गायका दूध निम्नलिखित कल्कके साथ १६ सेर तिल तेल सिद्ध करे।

कल्क द्रव्य—इलायची, जटामांसी, तगर, खस, सारिवा, कूठ, सफेद चन्दन, बला, सोया, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, जीवक, काकोली, क्षीर-काकोली, गोरखमुण्डी, अतिवला (कंघी), नखी, सफेद मुण्डी, जीवन्ती, विदारीकन्द, कौंचके बीज, शतावर, भुई आमला, काकडासिंगी, रेणुका, बच, गोखरू, एरण्डमूल, रास्ना, काली निसोत, पियाबांसा, पृश्निपर्णी, शल्लकी (सलई), नागरमोथा, दारचीनी, तेजपात, ऋषभक, सुगन्ध बाला और मजीठ। प्रत्येक ३॥। तोले, महुवे के काष्ट का सार ४० तोले। यह तेलसे धातुक्षीणता, मन्दाग्नि, निर्बलता, चित्त-विभ्रम, उन्माद, बेचैनी, अपस्मार और वातव्याधि में अत्यन्त गुणकारी है। वैद्यों द्वारा प्रशंसित यह श्रेष्ठ तेल गुरुवर कृष्णात्रेयने बतलाया था।

[१८३] अमृतादितैलम् (२) (वृ. नि. र.)

तैलं पिबेचामृतवल्लिनिम्ब-
हिंङ्ग्वाभयावृक्षकपिप्पलीभिः।
सिद्धं बलाभ्यां च सदेवदारु
हिताय नित्यं गलगण्डरोगे॥

गिलोय, नीमकी छाल, हींग, हैड़, कुड़े की छाल, पीपल, बला, अतिबला (कंघी) और देवदारु के कल्क और क्वाथ से सिद्ध किया हुवा तेल गलगंड रोगमें लाभदायक है।

[१८४] अमृतादितैलम् (३) (भै. र.)

तैलं पिबेचामृतवल्लिनिम्ब-
हिंस्राह्वयावत्सकपिप्पलीभिः।
सिद्धं बलाभ्याञ्च सदेवदारु
हिताय नित्यं गलगण्डरोगे॥

गिलोय, नीम, बालछड, कुड़ेकी छाल, पीपल, बला, अतिबला, देवदारु। इनके कल्क और क्वाथ से सिद्ध तेल गण्डमाला के लिए लाभदायक है।

[१८५] अमृताख्यतैलम् (४)

(च. सं. अ. २९. वा. र.)

गुडूचीं मधुकं ह्रस्वं पञ्चमूलं पुनर्नवाम्।
रास्नामेरण्डमूलञ्च जीवनीयानि लाभतः॥
पलानां शतकैर्भागैर्बलापञ्चशतं तथा।
कोलबिल्वयवान्माषान् कुलत्थांश्चाढकोन्मितान्
काश्मर्याणां सुशुष्काणां द्रोणं द्रोणशतेऽम्भसि।
साधयेज्जर्जरं धौतं चतुर्द्रोणं च शेषयेत्॥
तैलद्रोणं पचेत्तेन दत्वा पञ्चगुणं पयः।
पिष्ट्वा त्रिपलिकांश्चैव चन्दनोशीरकेशरान्॥
पत्रैलागुरुकुष्ठानि तगरं मधुयष्टिकाम्।
मञ्जिष्ठाष्टपलं चैव तत्सिद्धं सार्वयौगिकम्॥
वातरक्ते क्षते क्षीणे भारार्ते क्षीणरेतसि।
बेपनोक्षिप्तभग्नानां सर्वाङ्गैकाङ्गरोगिणाम्॥
योनिदोषमपस्मारमुन्मादं विषमज्वरम्।
हन्यात्पुंसवनं चैतत्तैलाग्र्यममृताह्वयम्॥

गिलोय, मुल्हैठी, लघुपंचमूल, सांठीकी जड, रास्ना, एरण्डमूल और जीवनीय गण, प्रत्येक ६। सेर। बला ३१। सेर और बेर, बेल, जौ, उडद तथा कुलथी प्रत्येक ४–४ सेर। सूखे हुवे खम्भारी के फल १६ सेर इनको कूट धोकर २० मन जलमें पकावे। जब ६४ सेर शेष रहे तो छानले और इसमें १ मन दूध डालकर तथा सफेद चन्दन, खस, नागकेसर, तेजपात, इलायची, अगर, कूठ, तगर और मुल्हैठी प्रत्येक १५–१५ तोले और मजीठ ४० तोले का कल्क बनाकर उसके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साथ १६ सेर तेलका पाक सिद्ध करें। यह तेल वातरक्त, क्षत, क्षीणता, वीर्यकी अल्पता, भार उठानेसे उत्पन्न हुवे विकार, कंपन, भग्न, सर्वांग घात रोग, एकांग वात रोग, योनिदोष, अपस्मार, उन्माद और विषमज्वर का नाश करता है।

[१८६] अर्कपत्ररस-तैलम्

(वृ. नि. र.)

अर्कपत्ररसे पक्वं हरिद्राकल्कसंयुतम् ।
नाशयेत्सार्षपं तैलं पामां कच्छुं विचर्चिकाम् ॥

आकके पत्तोंका रस ४ सेर और २० तोला हल्दीके कल्कसे सिद्ध किया हुवा १ सेर सरसोंका तेल पामा, कच्छु और विचर्चिकाका नाश करता है।

[१८७] अर्कादितैलम्

(वृ. नि. र.)

अर्कस्य च रसप्रस्थं प्रस्थं धत्तूरकस्य च ।
श्वेतस्नुहीरसप्रस्थं प्रस्थं सौभांजनाद्रसात् ॥
कुष्ठसैन्धवयोः कल्कं पले द्वे द्वे प्रमाणतः ।
तैलप्रस्थं काञ्जिकेन पचन् मृदग्निना समम् ॥
खल्लीं विषूचिकां हन्ति पक्षाघातं च गृध्रसीम् ॥

आकके पत्तों का रस १ सेर, धतूरेका रस १ सेर, सफ़ेद थोहरका रस १ सेर, सौंजनेका रस १ सेर, काञ्जी १ सेर। कूठ और सेंधा नमक प्रत्येक १०–१० तोले का कल्क। इनके साथ १ सेर तेलका मंदाग्नि पर पाक सिद्ध करें। इस तैलकी मालिश से खल्ली (हाथ पैरों की ऐंठन), हैजा, पक्षाघात और गृध्रसी का नाश होता है।

[१८८] अश्वगन्धा तैलम्

(च. द., वा. व्या., ग. नि. तैला.)

शतं पक्त्वाश्वगन्धाया जलद्रोणेऽशशेषितम् ।
विस्राव्य विपचेत्तैलं क्षीरं दत्त्वा चतुर्गुणम् ॥
कल्कैर्मृणालशालूकबिसकिञ्जल्कमालती-
पुष्पैर्ह्रीबेरमधुकः शारिवापद्मकेशरैः ॥
मेदापुनर्नवाद्राक्षा मञ्जिष्ठाबृहतीद्वयैः ।
एलैलवालुत्रिफलामुस्तचन्दनपद्मकैः ॥
पक्वं रक्ताशयं वातं रक्तपित्तमसृग्दरम् ।
हन्त्यात्पुष्टिबलं कुर्यात् कृशानां मांसवर्द्धनम् ॥
रेतोयोनिविकारघ्नं व्रणदोषापकर्षणम् ।
षण्ढानपि वृषान् कुर्यात् पानाभ्यङ्गानुवासनैः ॥

६। सेर असगन्ध को ३२ सेर जलमें पकावे, चौथा भाग शेष रहनेपर छानले। फिर इस क्वाथ और ८ सेर दूध तथा निम्नलिखित कल्क से २ सेर तैल सिद्ध करें।

कल्क द्रव्यः—कमलनाल, कमलका कन्द, कमलनाल के भीतर के बारीक तंतु, कमल कोष (जिसमें कमलके बीज रहते हैं), मालतीके फूल, सुगन्धबाला, मुलैठी, सारिवा, कमलकेसर, मेदा, पुनर्नवा, मुनक्का, मजीठ, कटेली, बडी कटेली, इलायची, एलवालु, त्रिफला, नागरमोथा, लाल चन्दन और पद्माख। यह तैल रक्ताशयगतवायु (हृद्गतवात), रक्तपित्त, रक्तप्रदरका नाश करता है। इसके सेवनसे बल, पुष्टि और मांसवृद्धि होती है। वीर्यविकार, योनिविकार, व्रणदोष और नपुंसकता इसके प्रभाव से नाश होती है। इसे पान, अभ्यङ्ग और अनुवासन बस्तिके द्वारा सेवन करना चाहिये।

[१८९] अश्वगन्धादितैलम्

(वृ. नि. र; यो. र. ज्वर)

अश्वगन्धा बला लाक्षा प्रस्थं प्रस्थं पृथक् पृथक् ।
जले द्रोणे विपक्तव्यं चतुर्भागावशेषितम् ॥
तैलं त्रिमानकं दद्याद् दधि मस्तु चतुर्गुणम् ।
अश्वगन्धा शिला दारु कौन्ति कुष्ठाब्द चन्दनैः ।
निशा तिक्ता शताह्वा च लाक्षा मूर्वा समूलकैः ।
सुर दारु च मंजिष्ठा मधुकोशीर शारिवा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समभागानि सर्वाणि कल्कीकृत्य विपाचयेत् ।
सर्वज्वरान् हरत्याशु सर्वधातुविवर्द्धनम् ॥
एतदभ्यञ्जनेनाशु क्षयरोगं विमुञ्चति ॥

असगन्ध, बला, लाख प्रत्येक, १–१ सेर लेकर १६ सेर जलमें पकावे, जब चौथा भाग शेष रहे तो छानलें। फिर दधिमस्तु ६ सेर और असगन्ध, मनशिल, दारूहल्दी, रेणुका, कूठ, नागरमोथा, चन्दन, हल्दी, कुटकी, सोया, लाख, मूर्वा, मूली, देवदारू, मजीठ, मुल्हैठी, खस और सारिवा समान भाग मिश्रित २५ तोले इनका कल्क करके उसके साथ १॥ सेर तेलका पाक सिद्ध करे। यह तैल सब प्रकारके ज्वरोंका नाश तथा सब धातुओं की वृद्धि करता है। इसकी मालिशसे क्षयरोगका शीघ्र नाश होता है।

[१९०] अष्टकट्वर तैलम्

(भा. प्र., वृ. यो. त. त. ९२)

पलाभ्यां पिप्पलीमूलानागराद्दष्टकट्वरम् ।
तैलप्रस्थं समं दध्ना गृध्रस्युरुग्रहापहम् ॥
सस्नेहदधि सघृतं तक्रं कट्वरमुच्यते ।
अष्टकट्वरतैले च तैलं सार्षपमिष्यते ॥
पिप्पलीमूलशुण्ठयाश्च प्रत्येक द्विपलं कृतम् ॥

पीपलामूल और सोंठ १०–१० तोले लेकर कल्क बनावें, कट्वर (मलाई युक्त दहीसे बनाया हुवा घृत युक्त मट्ठा) सरसों का तेल और दही प्रत्येक १ सेर। इनसे पका हुआ तेल गृध्रसी और उरुग्रह रोग का नाश करता है।

अथ अकाराद्यासवारिष्ट प्रकरणम्

व्याख्या

आसव और अरिष्ट दोनों मद्यके भेद हैं—

यथा—यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः ।

अर्थात्—अपक्व औषधियों और जलसे जो मद्य तैयार किया जाता है उसे आसव कहते हैं।

अरिष्टः क्वाथसिद्धः स्यात् सम्पक्वो मधुरद्रवैः ।

औषधियों के क्वाथ और मधुर वस्तु तथा तरल पदार्थोंसे सिद्ध (मद्य) का नाम अरिष्ट है।*

यद्यपि आसव और अरिष्ट मद्य हैं परन्तु इनसे नशा नहीं होता।

निर्माण–विधि

पात्र—आसवारिष्ट साधारणतः मिट्टीके पात्रमेंही बनाये जाते हैं, यद्यपि किसी किसी स्थान पर स्वर्ण–पात्र में भी आसव संधान करनेका विधान है। जिस पात्रमें आसव अरिष्ट तैयार करना हो पहिले उसे भीतरसे घी से भले प्रकार चिकना कर देना चाहिये और साथ ही धाय के फूल तथा लोध के कल्क का लेप करके सुखा लेना चाहिये। एवं उपरोक्त विधि से पात्र तैयार करके

*** ये परिभाषाएं "परिभाषा प्रदीप" के अनुसार लिखी गई हैं परन्तु चरकसुश्रुत में यह विधान नहीं मिलता।**

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसमें क्वाथ (या जल) में मिश्रित गुड़, मधु, औषधियां का चूर्ण आदि डालकर उसके मुखको शराव से अच्छी तरह वन्द करके उसके ऊपर कपड़ मिट्टी कर देनी चाहिये कि किसी स्थान से वायु उसके अन्दर न जासके। अब इस बरतन को भूमि के अन्दर गढ़े में या किसी अन्य गरम स्थान में १५ दिन या १ महीने तक (जैसी शास्त्राज्ञा हो) रक्खे रहने देना चाहिये।

इसके बाद आसव या अरिष्ट को निकालकर छानकर बोतलों या पत्थर की बरनियों में भरकर बन्द करके रखदेना चाहिये ताकि अन्दर हवा न जा सके क्योंकि हवासे आसव खराब हो जाता है।

यदि बोतलों में भरना हो तो बोतलों को मुंह तक लबालब न भरना चाहिये बल्कि थोड़ा स्थान खाली छोड़ देना चाहिये क्योंकि मुंह तक बोतल भर देनेसे आसवमें जोश आकर उसके बाहर निकल जाने या बोतलके फट जानेका भय रहता है।

आसव और अरिष्ट ज्यों ज्यों पुराने होते जाते हैं त्यों त्यों उनमें गुणवृद्धि भी होती जाती है। यथा—

प्रायशोऽभिनवं मद्यं गुरुदोषसमीरणम्।
स्रोतसां शोधनं जीर्णं दीपनं लघुरोचनम्॥ (चरक सू. अ. २)

अर्थात्—प्रायः नवीन मद्य गुरु और वायु कारक होते हैं और पुराने होने पर (१ वर्ष बाद) स्रोत-शोधक, दीपन और रुचिवर्द्धक होते हैं।

सेवन-विधि

मात्रा—आसवारिष्ट १ तोले से २ तोले तक की मात्रामें सेवन किये जाते हैं।

समय—साधारणतः सभी आसव और अरिष्ट भोजन के पश्चात् पिये जाते हैं, परन्तु रोग और रोगी की परिस्थिति के अनुसार समय में फेर फार किया जा सकता है।

आसव या अरिष्ट में समान भाग पानी मिलाकर सेवन करना चाहिये क्योंकि पानी के साथ सेवन करने से प्रभाव शीघ्र होता है एवं पानी रहित सेवन करने से कभी कभी गले और छातीमें दाह आदि होने लगती है

[१९१] अभयारिष्टः (१)

(च. स. चि. अ. १४ अर्श)

हरीतकीनां प्रस्थार्द्धं प्रस्थमामलकस्य च।
स्यात्कपित्थाद्दशपलं पलार्द्धेनेन्द्रवारुणी॥
विडङ्गं पिप्पली लोध्रं मरिचं सैलबालुकम्।
द्विपलांशं जलस्यैतच्चतुर्द्रोणे विपाचयेत्॥
द्रोणशेषे रसे तस्मिन् पूते शीते समावपेत्।
गुडस्य द्विशतं तिष्ठेत् तत् पक्षं घृतभाजने॥
पक्षादूर्ध्वं भवेत्पेया ततो मात्रा यथा बलम्।
अस्याभ्यासादरिष्टस्य गुदजा यान्ति संक्षयम्॥
ग्रहणी पाण्डुहृद्रोगप्लीहगुल्मोदरापहः।
कुष्ठशोफारुचिहरो बलवर्णाग्निवर्द्धनः॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिद्धोऽयमभयारिष्टः कामलाश्वित्रनाशनः ।
क्रिमिग्रन्थ्यर्बुदव्यङ्गराजयक्ष्मज्वरान्तकृत् ॥

हैड़ आधा सेर, आमले १ सेर, कैथ ५० तोले, इन्द्रायन २॥ तोले, वायविड़ंग, पीपल, लोध, काली मिर्च और एलवालुक प्रत्येक १०–१० तोला। सबको १२८ सेर जलमें पकावे। ३२ सेर पानी बाकी रहने पर छानकर उसमें १२॥ सेर गुड़ डालकर चिकने मटके में भर कर यथा विधि सन्धान करके १५ दिन तक रक्खा रहने दे।

इसे यथोचित मात्रामें सेवन करने से अर्शके मस्से नष्ट हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह ग्रहणी विकार, पाण्डु, हृद्रोग, प्लीहा (तिल्ली), गुल्म, उदर रोग, कोढ़, सूजन और अरुचिका नाश होता है तथा बल, वर्ण और अग्निकी वृद्धि होती है। यह कामला, श्वेत कोढ़, कृमि, ग्रन्थि, अर्बुद, व्यङ्ग–झाईं, राजयक्ष्मा और ज्वर का नाश करता है। मात्रा–२ तोले।

[१९२] अभयारिष्टः (२)

(भै. र. अर्श)

अभयायास्तुलामेकां मृद्वीकार्द्धतुलां तथा ।
विडङ्गस्य दशपलं मधूककुसुमस्य च ॥
चतुर्द्रोणे जले पक्त्वा द्रोणमेवावशेषयेत् ।
शीतीभूते रसे तस्मिन् पूते गुडतुलां क्षिपेत् ॥
श्वदंष्ट्रां त्रिवृतां धान्यंधातकीमिन्द्रवारुणीम् ।
चव्यं मधुरिकां शुण्ठीं दन्तीं मोचरसं तथा ॥
पलयुग्मभितं सर्वं पात्रे महति मृन्मये ।
क्षिप्त्वा संरुध्य तत्पात्रं मासमात्रन्निधापयेत् ॥
ततो जातरसं ज्ञात्वा परिस्राव्य रसनयेत् ।
बलं कोष्ठश्च वन्हिश्च वीक्ष्य मात्रां प्रयोजयेत् ।
अर्शांसि नाशयेच्छीघ्रं तथाष्टावुदराणि च ।
वर्चोमूत्रविबद्धघ्नो वह्नि सन्दीपयेत्परम् ॥

हैड़ ६। सेर, दाख ३ सेर १० तोला, वायविड़ंग ५० तोला और महुवे के फूल ६० तोला। सबको १२८ सेर जलमें पकाकर ३२ सेर रहने पर ठंडाकरके छानले और फिर उसमें गुड़ ६। सेर, गोखरू, निसोत, धनियां, धायके फूल, इन्द्रायण, चव्य, सोया, सोंठ, दन्तीमूल और मोचरस प्रत्येक १०–१० तोले कूटकर डाले और यथाविधि मिट्टीके पात्रमें सन्धान करके अरिष्ट बनावे। १ मास पीछे छानकर सुरक्षित रक्खे। इसे अग्नि, कोष्ठ और बलादिके अनुसार सेवन करने से अर्श, आठ प्रकार के उदर रोग, मलावरोध, पेशाब बन्द होजाना और अग्नि मांद्य आदिका नाश होता है। मात्रा–१ तोलेसे २ तोले तक।

[१९३] अभयारिष्टः (३) (ग. नि.)

हरीतकीदलप्रस्थं प्रस्थमालकस्य च ।
विशालायाः कपित्थस्य पाठाचित्रकमूलयोः ॥
द्वे द्वे पले समापोथ्य द्विद्रोणे साधयेदपाम् ।
पादशेषे च पूते च रसे तस्मिन्प्रदापयेत् ॥
गुडस्यैकां तुलां वैद्यः संस्थाप्य मृतभाजने ।
पक्षस्थितं पिबेन्नित्यं ग्रहण्यर्शोविकारनुत् ॥
प्लीहहृत्पाण्डुरोगघ्नः कामला विषमज्वरान् ।
कासं श्वासं उदावर्तं फलारिष्टो व्यपोहति ॥

हैड़ (गुठलीरहित) १ सेर, आमला १ सेर, इन्द्रायण, कैथ, पाठा, चीतामूल प्रत्येक १०–१० तोला। सबको कूट कर ६४ सेर जलमें पकावे, चौथा भाग रहनेपर छानकर उसमें ६। सेर गुड़ घोलकर मिट्टीके चिकने बरतनमें विधिवत संधान करे। १५ दिन बाद निकालकर छानकर रक्खे। इसके सेवन से ग्रहणीविकार, बवासीर, तिल्ली, हृद्रोग, पाण्डुरोग, कामला, विषमज्वर, श्वास, खांसी और उदावर्तका नाश होता है। मात्रा–२ तोले।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[१९४] अभयारिष्टः (४) (ग. नि.)

अष्टौ पलानि वर्षाभू दशमूलार्कचित्रकाः।
दन्तीश्यामात्रिवृद्रास्नाश्चैवं स्युस्त्रिफलाढकम् ॥
अम्बुद्रोणाष्टके पक्त्वा पादशेषे रसे स्थिते।
द्वे गुडस्य तुले पूते तत्पश्चाद्घटके क्षिपेत् ॥
गवां मूत्राढकं प्रस्थौ द्वावयोरजसस्तथा।
विडङ्गं कुटजं कुष्ठं चित्रकं मरिचं वचाम् ॥
सञ्चूर्ण्य द्विपलान्यस्मिन्दत्वा मासस्थितं पिबेत्।
आभयोऽयमरिष्टेन्द्रो मेहार्शः कुष्ठशोफहा ॥
प्लीहपाण्डामयान् गुल्मान्
जठराणि च नाशयेत् ॥

पुनर्नवा, दशमूल, आक, चीता, दन्ती, काली निसोत, रास्ना ४०-४० तोले, त्रिफला (मिलित) ४ सेर। सबको २५६ सेर जलमें पकावे, चौथा भाग शेष रहनेपर छानकर ठंडा करके उसमें १२॥ सेर गुड़ डाले और फिर ८ सेर गोमूत्र, लोह चूर्ण (लोह भस्म) २ सेर, वायबिडंग, कुड़ेकी छाल, कूठ, चीतामूल, मिर्च और बच प्रत्येक १०-१० तोले। कूट कर डाले और यथाविधि संधान करके रक्खे। १ मास बाद निकाल कर छान ले। यह अरिष्ट प्रमेह, बवासीर, कोढ़, सूजन, तिल्ली, पाण्डु, गुल्म और उदररोगोंका नाश करता है।

[१९५] अमृतारिष्टः (आ. वे. सं. ज्वर.)

अमृतायाः पलशतं दशमूली शतं तथा।
चतुर्द्रोणे जले पक्त्वा कुर्यात् पादावशेषितम् ॥
शीते तस्मिन् रसे पूते गुडस्य त्रितुलाःक्षिपेत्।
अजाजीषोडशपलं पर्पटस्य पलद्वयम् ॥
सप्तपर्णं त्रिकटुकं मुस्तकं नागकेशरम्।
कटुकातिविषे चेन्द्रयवञ्च पलसम्मितम् ॥
एकीकृत्य क्षिपेद्भाण्डे निदध्यान्मासमात्रकम्।
अमृतारिष्ट इत्येष सर्वज्वरकुलान्तकृत् ॥

गिलोय ६। सेर, दशमूल ६। सेर। सबको १२८ सेर जलमें पकाकर चौथा भाग शेष रहने पर छान ले और इसमें गुड़ १८॥ सेर, जीरा १ सेर, पित्तपापड़ा १० तोले, सतोनेकी छाल, त्रिकुटा, नागरमोथा, नागकेसर, कुटकी, अतीस और इन्द्रजौं प्रत्येक ५-५ तोले मिलाकर यथाविधि मिट्टी के पात्र में सन्धान करके रक्खा रहने दे। यह अरिष्ट सब प्रकारके ज्वरोंका नाश करता है।

[१९६] अरविन्दासवः

(आ. वे. सं, भै. र. बालरोगा.)

अरविन्दमुशीरञ्च काश्मर्यं नीलमुत्पलम्।
मञ्जिष्ठैलाबलामांसीरम्बुदं शारिवां शिवाम् ॥
बिभीतकवचाधात्रीः शठीं श्यामां सनीलिनीम्।
पटोलं पर्पटं पार्थं मधुकं मधूकं मुराम् ॥
पलमानेन संगृह्य द्राक्षायाः पलविंशतिम्।
धातकीं षोडशपलां जलद्रोणद्वये क्षिपेत् ॥
शर्करायास्तुलां तत्र तुलार्धं माक्षिकस्य च।
मासं संस्थापयेद् भांडे मृत्तिकापरिनिर्मिते ॥
बालानां सर्वरोगघ्नो बलपुष्टयग्निवर्द्धनः।
अरविन्दासवः प्रोक्त आयुष्यो ग्रहदोषहृत् ॥

कमल, खस, खम्भारीके फल, मजीठ, नीलोफर, इलायची, बला, जटामांसी, नागरमोथा, सारिवा (अनन्तमूल), हैड, बहेड़ा, बच, आमला, कचूर, काली निसोत, नीलका पंचांग, पटोल पत्र, पित्तपापड़ा, अर्जुनकीछाल, महुवा, मुल्हैठी और मुरामांसी। प्रत्येक ५-५ तोले, मुनक्का १०० तोले, धायके फूल १ सेर, पानी ६४ सेर, खांड ६। सेर, शहद ३ सेर १० तोला। सबको मिलाकर यथाविधि मिट्टी के बरतनमें सन्धान करके १ मास तक रक्खा रहने दे। यह आसव बालकों के समस्त रोगोंका नाश करता है, बल, पुष्टि आयु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और अग्निकी वृद्धि करता है तथा ग्रह दोष नाशक है।

[१९७] अशोकारिष्टः

(आ. वे. सं.)

अशोकस्यतुलामेकां चतुर्द्रोणे जले पचेत्।
पादशेषे रसे पूते शीते पलशतद्वयम्॥
दद्याद् गुडस्य धातक्याः पलषोडशिकं मतम्।
अजाजीं मुस्तकं शुण्ठीं दार्व्युत्पलफलत्रिकम्॥
आम्रास्थि जीरकं वासां चन्दनश्च विनिक्षिपेत्।
चूर्णयित्वा पलांशेन ततो भाण्डे निधापयेत्॥
मासादूर्ध्वश्च पीत्वैनमसृग्दररुजां जयेत्।
ज्वरश्च रक्तपित्तार्शो मन्दाग्नित्वमरोचकम्।
मेहशोथारुचिहरस्त्वशोकारिष्टसंज्ञितः॥

अशोककी छाल ६। सेर लेकर १२८ सेर पानीमें पकावे। ३२ सेर पानी बाकी रहने पर छानकर ठंडा करके उसमें १२॥ सेर गुड़, १ सेर धायके फूल, जीरा, नागरमोथा, सोंठ, दारु हल्दी, नीलोफर, त्रिफला, आमकी गुठलीकी गिरी, काला जीरा, बासा और सफेद चन्दन, प्रत्येकका चूर्ण ५–५ तोला मिलाकर यथाविधि सन्धान करके १ मास तक रक्खा रहने दे। इसके सेवनसे लाल प्रदर, ज्वर, रक्तपित्त, बबासीर, मन्दाग्नि, अरुचि, प्रमेह और सूजनका नाशहोता है। मात्राः-२ तोला

[१९८] अश्वगन्धारिष्टः (भै. र.)

तुलार्द्धं आश्वगन्धायाः मुषल्याः पलविंशतिः।
मञ्जिष्ठाया हरीतक्या रजन्योर्मधुकस्य च॥
रास्नाविदारीपार्थानां मुस्तकत्रिवृतोरपि।
भागान् दशपलान् दद्यादनन्ताश्यामयोस्तथा॥
चन्दनद्वितयस्यापि वचायाश्चित्रकस्य च।
भागानष्टपलान् क्षुण्णानष्टद्रोणेऽम्भसःपचेत्॥
द्रोणशेषे कषायेऽस्मिन पूते शीते प्रदापयेत्।
धातक्याः षोडशपलं माक्षिकस्य तुलात्रयम्॥
व्योषस्यद्विपलश्चापि त्रिजातकचतुष्पलम्।
चतुष्पलं प्रियङ्गोश्च द्विपलं नागकेशरम्॥
मासादूर्ध्वं पिबेदेनं पलार्द्धं परिमाणतः।
मूर्छामपस्मृतिं शोषमुन्मादमपि दारुणम्।
कार्श्यमर्शांसि मन्दत्वमग्नेर्वातभवान् गदान्।
अश्वगन्धाद्यरिष्टोऽयं पीतो हन्यादसंशयम्॥

असगन्ध ३ सेर १० तोला, सफेद मूसली १०० तोला, मजीठ, हरीतकी, हल्दी, दारु हल्दी, मुलैठी, रास्ना, विदारीकन्द, अर्जुन की छाल, नागरमोथा, निसोत प्रत्येक ५०–५० तोले। अनन्तमूल, और काली निसोत, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, बच और चिता प्रत्येक ४०–४० तोले। सबको अधकुटा करके १२८ सेर पानीमें पकावे। जब ३२ सेर बाकी रहजाय तो छानकर ठंडा होनेपर उसमें धायके फूल १ सेर, शहद १८॥ सेर, त्रिकटु १०–१० तोले, त्रिजातक (तेजपात, दाल चीनी, इलायची) २०–२० तोले, फूल प्रियंगु १० तोले और नागकेशर १० तोले इन सबका चूर्ण डालकर यथाविधि सन्धान करके १ मास तक रक्खा रहने दे। इसे प्रतिदिन २॥ तोले पीनेसे मूर्छा, अपस्मार, शोष, दारुण उन्माद, कृशता, अर्श (बबासीर), मन्दाग्नि, और वातज रोगोंका अवश्य नाश होता है।

[१९९] अष्टशतोऽरिष्टः

(च. स. चि. अ. १२ श्वयथु)

काश्मर्यधात्रीमरिचाभयानां
द्राक्षाफलानां च सपिप्पलीनाम्।
शतं शतं क्षौद्रगुडात् पुराणात्
तुलान्तु कुम्भे मधुनाप्रलिप्ते॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सप्ताहमुष्णे द्विगुणं तु शीते,
स्थितं जलद्रोणयुतं पिबेन्ना ।
शोफान्विबन्धकफवातजांश्च,
स हन्त्यरिष्टोऽष्टशतोऽग्निकृच्च ॥

खम्भारी के फल, आमला, काली मिर्च, हैड़, बहेडा, मुनक्का और पीपल, प्रत्येक ६। सेर। पुराना गुड़ और शहद प्रत्येक १२॥ सेर। सबको ३२ सेर पानीमें मिलाकर शहद से लेप किये हुवे मटके में भरकर यथाविधि सन्धान कर– गरमियों में १ सप्ताह तक और जाड़ोंमें २ सप्ताह तक रक्खा रहने दे। यह अरिष्ट कफ वातज सूजन और विबन्ध का नाश तथा अग्नि प्रदीप्त करता है।

[२००] अहिफेनासवः (भै. र.)

तुलां मधूकमद्यस्य शुभे भाण्डे परिक्षिपेत् ।
फणिफेनस्य कुडवं मुस्तकं पलसम्मितम् ॥
जातीफलश्चेन्द्रयवं तथैलां तत्र दापयेत् ॥
रुद्ध्वा भाण्डं मासमात्रं यत्नतः परिरक्षयेत् ॥
हन्त्यतीसारमत्युग्रं विसूचीमपि दारुणाम् ॥

महुवेकी शराब १२॥ सेर, अथवा (रेक्टीफाइड स्प्रिट), अफीम २० तोले, नागरमोथा, जायफल, इन्द्रयव और इलायची प्रत्येक ५–५ तोले। सबको यथाविधि मिट्टी के बरतनमें सन्धान करके एक मास तक सुरक्षित रक्खे। इसके सेवनसे अत्यन्त प्रबल अतिसार और दारुण विसूचिका (हैजे)का नाश होता है। (मात्राः–१० बूंद)

अथ अकारादि लेप प्रकरणम्

[२०१] अजगन्धादि लेपः

(वृ. नि. र.)

अजगन्धाश्वगन्धा च काला सरलया सह ।
कम्पिल्लका च भृंगी च प्रलेपः श्लेष्मशोथहा ॥

बनतुलसी, असगन्ध, कालानिसोत, सरल काष्ठ, कमीला और काकड़ासींगी। इनका लेप कफजनित सूजन का नाश करता है।

[२०२] अजाज्यादि लेपः

(वृ. नि. र.)

अजाजी हबुषा कुष्ठं गोमयं बदरान्वितम् ।
काञ्जिकेन तु सम्पिष्टं कुर्याद ब्रध्नप्रलेपनम् ॥

जीरा, हाऊबेर, कूठ, गायका गोबर और बेर को काञ्जी में पीसकर लेप करने से वदका नाश होता है।

[२०३] अयोरजादिलेपः (१)

(वृ. नि. र., यो. चि.)

अयोरजो भृंगराजस्त्रिफला कृष्णमृत्तिकाः ।
स्थितमिक्षुरसे मासं लेपनात् पलितं जयेत् ॥

लोहका बुरादा, काला भांगरा, त्रिफला और काली मिट्टी को ईखके रसमें १ मास तक भीगा रहने दें। इसका लेप करने से पलित (बालोंका सफेद होना) रोगका नाश होता है।

[२०४] अयोरजादि लेपः (२)

(वृ. नि. र.)

अयोरजः सकासीसं त्रिफला कुसुमानि च ।
प्रलेपः कुरुते दार्व्याः सद्यएव नवत्वचि ॥

लोहेका बुरादा, कसीस, त्रिफला, लौंग और दारु हल्दी का लेप करने से नवीन त्वचाका रंग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पहिले जैसा होजाता है।

[२०५] अयोरजादि लेपः (३)

(वृ. नि. र.)

सायोरजः कृष्णतिलांजनानि
सावल्गुजान्यामलकानि दग्ध्वा।
पिष्ट्वा हि भृंगस्य सकृद्रसेन
हन्यात् किलासं परिघृष्ट लेपात् ॥

लोहेका बुरादा, काले तिल, सुरमा, बावची और आमला, इनको जला कर भांगरे के रस में पीस कर लेप करने से किलास कुष्टका नाश होता है।

नोट—लेप करने से पहिले कुष्ट को खुजा लेना चाहिये।

[२०६] अर्कादिलेपः (१) (वृ. नि. र.)

दशशतकरदुग्धं पुष्करत्वक्समेतम्।
दहनगुडनिकुम्भाकुष्ठकासीसयुक्तम् ॥
अपनयति वितीर्णं लेपनं सप्तरात्रात्।
श्वयथुहरणयुक्तं कर्णकग्रन्थिमेतत् ॥

पोखरमूल, दालचीनी, चीता, गुड़, दन्तीमूल (अथवा कायफल), कूठ, कसीस, और सांठी की जड़ को आकके दूधमें पीसकर लेप करने से कर्णमूल शोथ का नाश होता है।

[२०७] अर्कादि लेपः (२)

(यो. र; ग. नि. अर्शो)

आर्कं पयः सुधाकाण्डं कण्टकालाबुपल्लवाः।
करञ्जो बस्तमूत्रेण लेपनं श्रेष्ठमर्शसां ॥

आक का दूध, और थोहर का डंठल, गोखरू, कड़वी तोरीके पत्ते, करंजवे के पत्ते, इन सबको बकरे के मूत्रमें पीसकर लेप करने से मस्सोंका नाश होता है।

[२०८] अर्जुनत्वगादि लेपः (वृ. नि. र.)

व्यङ्गेषु चार्जुनत्वक् च मञ्जिष्ठा वृष माक्षिकैः।
लेपः सनवनीता वा श्वेताश्वखुरजा मसीः ॥

अर्जुनकी छाल, मजीठ और बांस को पीसकर शहद में मिलाकर लगाने से अथवा सफ़ेद घोड़ेके खुरकी राख नवनीत में मिलाकर लगाने से झांई और व्यंगका नाश होता है।

[२०९] अर्शोहर लेपः

(च. सं., चि. अ. १४ अर्शो)

कुञ्जरस्य पुरीषञ्च घृतं सर्जरसो रसः।
हरिद्राचूर्णसंयुक्तं सुधाक्षीरं प्रलेपनम् ॥
शिरीषबीजं कुष्ठञ्च पिप्पल्यः सैन्धवं गुडः।
अर्क क्षीरं सुधाक्षीरं त्रिफला च प्रलेपनम् ॥
पिप्पल्यः चित्रकाः श्यामाः किण्वं मदनतण्डुलाः
प्रलेपः कुक्कुटशकृद् हरिद्रागुडसंयुतः ॥

हाथीकी लीद, घी, राल, पारा और हल्दी इनको थोहर के दूधमें पीसकर लेप करने से अथवा सिरस के बीज, कूठ, पीपल, सेंधानमक, गुड़ और त्रिफले को थोहर और आक के दूध में पीस कर लेप करने से अथवा पीपल, चीता, काली निसोत, मैनफलके बीज, हल्दी, गुड़, और मुर्गेकी बींट इन सबको किण्व (सुरा बीज) में पीसकर लेप करने से अर्शका नाश होता है।

[२१०] अवल्गुजादि लेपः

(च. सं., यो. र.)

अवल्गुजं कासमर्दं चक्रमर्दं निशायुतम्।
माणिमन्थं च तुल्यांशं मुस्तकाञ्जिकपेषितम् ॥
कण्डूं कृच्छ्रां जयत्युग्रां सिद्ध एष प्रयोगराट् ॥

बावची, कसौंदी, पंवाड़, हल्दी, सेंधानमक और नागरमोथा। इन सब को समान भाग लेकर कांजी में पीसकर लेप करनेसे अत्युग्र कंडू (खुजली) का नाश होता है। यह सिद्ध प्रयोग है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ अकारादि धूप प्रकरणम्

[२११] अगुर्वादि धूपः (वृ. नि. र.)

अगुरुघनसारसल्लक
करुहनतनीर चन्दनैर्युक्तः ।
सर्जरसेन समेतो
धूपोरुग्दाहकं हन्ति ॥

अगर, कपूर, सल्लकी, नखी, तगर, सुगन्ध बाला, चन्दन, और राल । इनकी धूपसे रुग्दाह सन्निपात शान्त होता है ।

[२१२] अश्वगन्धादि धूपः (वृ. नि. र.)

अश्वगन्धोऽथ निर्गुण्डी बृहती पिप्पलीफलम् ।
धूपोयं स्पर्शमात्रेण ह्यर्शसां शमने ह्यलम् ॥

असगन्ध, निर्गुण्डी बड़ी कटेली और पीपल । इसकी धूनी के स्पर्श मात्र से ही अर्श नष्ट हो जाती है ।

[२१३] अष्टगन्ध धूपः (शा. नि. भू.)

कर्पूरं चन्दनं मुस्ता कुङ्कुमं देवदारु च ।
रोचना केशरोशीरं गन्धाष्टकमुदाहृतम् ॥

कपूर, चन्दन, नागरमोथा, केसर, देवदारू, गोरोचन, नागकेसर और खस । इनके योग को गन्धाष्टक कहते है ।

अथ अकारादि धूम्र प्रकरणम्

[२१४] अर्कमूलादि धूम्रः (वृ. नि. र.)

अर्कमूलशिलातुल्यं ततोर्द्धेन कटुत्रिकम् ।
चूर्णितं वह्निनिक्षिप्तं पिबेद्धूमं तु योगवित् ॥
भक्षयेदथ ताम्बुलं पिबेद्दुग्धमथापि वा ।
कासः पञ्चविधो याति शान्तिमाशु न संशयः ॥

आक की जड़ और मनसिल, १–१ भाग । त्रिकुटा आधा भाग । इनके चूर्णका विधिवत् धूम पान करके ऊपरसे ताम्बूल खानेसे अथवा दूध पीनेसे पांच प्रकारकी खांसीका नाश होता है ।

अथ अकारादि अञ्जन प्रकरणम्

[२१५] अञ्जन नं. १ (मूर्छान्तक)

शिरीषबीजं गोमूत्रं कृष्णामरिचसैन्धवैः ।
अञ्जनं स्यात् प्रबोधाय सरसोनशिलावचैः ।

सिरस के बीज, पीपल, काली मिर्च, सेंधा नमक, ल्हसन, मनसिल और बचको गोमूत्रमें पीसकर अञ्जन बनावे । इससे मूर्छा नष्ट होती है ।

[२१६] अञ्जन नं. २ (वृ. नि. र.)

अञ्जनं सम्यगारब्धं मधुसिन्धुशिलोषणैः ।
प्रमोहद्रोहि भवति भाषितं भिषजां वरैः ॥

शहद, सेंधानमक, मनसिल और मरिच । इनका अञ्जन मोहका नाश करता है ।

[२१७] अञ्जन नं. ३ (चातुर्थिकारी)
(वृ. नि. र.)

त्र्यूषणं हिंगुलवण वचा कटुरोहिणी ।
शिरीपनक्तमालानां वीजं श्वेताश्च सर्षपाः ॥
गोमूत्रपिष्टैरेतैस्तु वर्तिर्नेत्राञ्जने हिता ।
चातुर्थिकमपस्मारमुन्मादं च नियच्छति ॥

त्रिकुटा, हींग, लवण, बच, कुटकी, सिरस के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बीज, करञ्जवे की गिरी, सफेद सरसों । इन्हे गोमूत्रमें पीसकर वत्ती बनावे । इसे आंखमें आंजने से चौथिया ज्वर, अपस्मार और उन्माद का नाश होता है ।

[२१८] अञ्जन नं. ४ (वृ. नि. र.)

शिरीषपुष्पं लशुनं शुण्ठी, सिद्धार्थकं वचा ।
मञ्जिष्ठा रजनी कृष्णा बस्तमूत्रेण पेषयेत् ॥
वटी छायासु शुष्काया सा हिता नावनाञ्जने ॥

सिरसके फूल, लहसन, सोंठ, सफेद सरसों, बच, मजीठ, हल्दी, पीपल, इनको बकरेके मूत्रमें पीसकर गोलियां बनाकर छायामें सुखावे । इसका अञ्जन अथवा इसकी नस्यसे उन्माद का नाश होता है ।

[२१९] अञ्जन नं. ५ नेत्रशुक्र(फुला) नाशक (वृ. नि. र.)

तार्प्यं मधूकसारो वा बीजं चाक्षस्य सैन्धवम् ।
मधुनाञ्जनयोगास्युश्चत्वारः शुक्रनाशनः ॥

सोना मक्खी, महुवेका सार, बहेड़ेकी मींग और सेंधानमक । इनमें से किसी एकको मधुके साथ मिलाकर अञ्जन करने से आंखके फूलेको आराम होता है ।

[२२०] अञ्जनशलाका (यो.र.र. चं। नेत्ररोगा.)

त्रिफलाभृङ्गशुण्ठीनां रसैस्तद्वच्च सर्पिषा ।
गोमूत्रमध्वजाक्षीरैः सिक्तो नागः प्रतापितः ॥
कृष्णभागादधः कुर्यादपाङ्गं यावदञ्जनम् ।
प्रथमं सव्यमञ्जीयात् पश्चाद्दक्षिणमञ्जयेत् ॥
शलाकया साञ्जनया न च तन्नयनं स्पृशेत् ।
हेमन्ते शिशिरेवापि मध्याह्नेऽञ्जनमिष्यते ॥
पूर्वाह्ने वा ऽपराह्ने वा ग्रीष्मे शरदि चेष्यते ।
वर्षास्विनभ्रे नात्युष्णे वसन्ते च सदैव हि ॥

सीसेको तपा तपाकर त्रिफला, भांगरा, सोंठ, इनके रस या क्वाथ और घी, गोमूत्र, शहद तथा बकरीके दूधमें ७–७ बार यथा क्रम बुझावे । फिर इस शुद्ध सीसेकी सलाई बनवावे । यह सलाई आंख में अञ्जन लगानेके लिए अत्युत्तम है । अञ्जन काले भागके नीचे आंखके कोये तक करना चाहिये । सलाई से आंखके तिल का स्पर्श न होने दे । पहिले बांई आंखमें अञ्जन लगावें और फिर दाहिनी आंखमें । हेमन्त और शिशिर ऋतुमें अञ्जन मध्याह्नमें लगावें ग्रीष्म और शरदकालमें प्रातः तथा सायंकाल एवं वसन्त ऋतुमें चाहे जब लगा सकते हैं ।

[२२१] कामला हराञ्जनम् (वृ. नि. र.)

अञ्जनं कामलार्तानां द्रोणपुष्पीरसं शुभम् ।
निशागैरिकधात्रीणां चूर्णंर्वासंप्रकल्पयेत् ॥

कामलासे पीड़ित रोगीके लिये गोमाके रस अथवा हल्दी, गेरू और आमले के चूर्णका अञ्जन हितकर है ।

[२२२] अमृताञ्जन नं. ७ (र. चि. म.)

रसेन्द्रभुजगौ तुल्यौ ताभ्यां द्विगुणमञ्जनम् ।
ईषत्कर्पूरसंयुक्तमञ्जनं तिमिरापहम् ॥

शुद्ध पारा और सीसा १–१ भाग, इनसे दोगुना सुरमा और थोड़ासा कपूर मिलाकर बनाया हुवा सुरमा तिमिर (आंखों के आगे अंधेरा आना) रोगका नाश करता है ।

[२२३] अञ्जन नं. ८ (अपामार्गादि)
(वृ. नि. र.)

अपामार्गस्य पत्राणि मरिचानि समानि च ।
अश्वस्य लालया पिष्टान्यञ्जनाद्घ्नन्ति सूचिकाम् ॥

अपामार्ग (चिरचिटे) के पत्ते और कालीमिर्चे समान भाग लेकर घोड़े की लारमें पीसकर अञ्जन लगाने से हैज़ेका नाश होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[२२४] असुरादि अञ्जन नं. ९
(वृ. नि. र.)

असुराह्वस्य विट्चूर्णं कस्तूरीमधुसंयुतम् ।
अञ्जनाद्बोधयेन्मुग्धं तन्द्रितं सन्निपातिनम् ॥

कांसीके मैलका चूर्ण और कस्तूरीको बारीक पीसकर मधुमें मिलाकर अञ्जन लगानेसे सन्निपात की बेहोशी और तन्द्रा दूर होती है।

[२२५] अञ्जन नं. १० (बोधक) (हा. सं.)

शिरीषबीजं मरिचोपकुल्या
मूत्रेण घृष्टं सह सैन्धवेन ।
नेत्राञ्जनं स्यान्नयने नराणां
प्रनष्टसंज्ञं प्रकरोति बोधः ॥

सिरसके बीज, काली मिर्च, पीपल और सेंधा नमक इनको गोमूत्रमें पीसकर अञ्जन लगाने से बेहोशी दूर होती है।

अथ अकारादि नस्य प्रकरणम्

[२२६] अगस्तिपत्र-नस्यम् (वृ. नि. र.)

अखण्डितशरत्कालकलानिधिसमानने ।
चातुर्थिकहरं नस्यं मुनिद्रुमदलाम्बुना ॥

हेचन्द्रमुखि ! अगस्ति (अगथिया) के पत्तोंके रसकी नस्य लेनेसे चातुर्थिक ज्वरका नाश होता है।

[२२७] अपस्मारहरनस्यम् (१) (वृ.नि. र.)

आरण्यत्रपुसीचूर्णं नस्येनापस्मृतिं जयेत् ॥

बनखीरेके चूर्णका नस्य अपस्मार रोगका नाश करता है।

[२२८] अपस्मारहरनस्यम् (२) (च. सं.)

कपिलानां गवां मूत्रं नावनं परमं हितम् ।
श्वशृगालविडालानां सिंहादीनाञ्च शस्यते ॥
भार्ङ्गी वचा नागदन्ती श्वेता शता विषाणिका ।
ज्योतिष्मती नागदन्ती पादोत्था मूत्रपेषिताः ॥
योगास्त्रयोऽतः षड्बिन्दून् पञ्च वा नावयेद्भिषक्
त्रिफलाव्योषपीतद्रुयवक्षारफणिज्झकैः ॥
श्यामापामार्गकारञ्जफलैर्मूत्रेऽथ बस्तजे ।
साधितं नावनं तैलमपस्मारविनाशनम् ॥

अपस्मारमें कपिला गायके दूधकी नस्य अत्यन्त हितकारी है। एवं कुत्ते, गीदड़, बिल्ली तथा सिंहादिके मूत्रकी नस्य भी हितकर है।

(१) भारंगी, वच और नागदन्ती, (२) श्वेत अपराजिता और वृहत् मेढा श्रृङ्गी, (३) माल कंगनी और नाग दन्ती इन तीनों प्रयोगोंमें से किसीको गोमूत्रमें पीसकर पांच छः बिन्दु नाकमें टपकाने से अपस्मारका नाश होता है।

त्रिफला, त्रिकुटा, दारु हल्दी, यवक्षार, तुलसी, काली निसोत, अपामार्ग और करञ्जवेके फलोंके कल्क तथा बकरेके मूत्रसे सिद्ध तैलकी नस्य देनेसे अपस्मारका नाश होता है।

[२२९] अश्वगन्धादि नस्यम्

तुरंगगन्धा लवणोग्रगन्धा
मधूकसारोषणमागधीभिः ।
बस्ताम्बुशुण्ठीलशुनान्विताभि-
र्नस्यं स्वसंस्थम्रदृशं करोति ॥

असगन्ध, सेंधानमक, वच, महुवेका सार, मरिच, पीपल, सोंठ और ल्हसनको बकरेके मूत्रमें पीसकर नस्य लेनेसे नेत्र स्वच्छ होते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ अकारादि रस प्रकरणम्

ज्ञातव्य

रसों की शक्ति अचिन्त्य है, जहां अन्य समस्त औषधियां निष्प्रयोजन सिद्ध होती हैं वहां रस अपने अनन्य प्रभाव से पण्डितों तक को आश्चर्य में डाल देते हैं। रसों के सेवन से वृद्धावस्था का निरोध, रोगोंका बहिष्कार और स्वस्थ शरीरों में शक्ति का संचार होता है। सर्व साधारण का यह विचार कि ४० वर्षकी अवस्थासे पहिले रस सेवन न करना चाहिये, यह सर्वथा निर्मूल और शास्त्र विरुद्ध है, वस्तुतः शास्त्र लेख तथा अनुभव तो कहता है कि जन्म काल से अन्त समय तक हर अवस्था में निर्भय होकर रसोंका सेवन किया जा सकता है। रसों के समान गुणकारी हानि रहित अन्य वस्तु मिलना कठिन हैं, परन्तु वह सब गुण तभी प्राप्त हो सकते हैं कि जब औषधियां शास्त्रोक्त रीति से तैयार की गई हों अन्यथा लाभ के स्थान में हानि हो तो कोइ आश्चर्य की बात नहीं है। इसके अतिरिक्त रसोंमें जो धातु, उपधातु, रत्न, उपरत्न, उपरस, विष, उपविष आदि व्यवहृत होते हैं उन्हें भी विधिवत् शोधन, मारण करके ही लेना चाहिये चाहे पाठ में शोधन की आज्ञा स्पष्ट रूपेण लिखी हो अथवा इस विषय में मौन धारण किया गया हो।

[२३०] अगन्धखर्परपर्पटी (वृ. नि. र.)

भागौ रसस्य द्वावेकौ द्वावेकौ लोहभस्मनः।
एतद् घृते द्रवीभूतं मृद्वग्नौ कदली दले॥
पातयेद् गोमयगते तथैवोपरि योजयेत्।
ततः पिष्ट्वा द्रवैरेभिर्मर्दयेत् सप्तधा पृथक्॥
भार्ङ्गीशुण्ठीमुनिवराजयानिर्गुण्डिकाद्रवैः।
व्योषवासककन्यार्द्रद्रवैः शुष्कैः पुटेल्लघुः॥
अगन्ध खर्परो नाम्ना पर्पटीति रसोभवेत्।
सर्वरोगहरः स्वैः स्वैरनुपानैर्द्विमाषतः॥
ताम्बूलपत्रसहितः कासश्वासहरः परः।
सकणः सुरसाकाथोऽनुपानं वा सगोजलम्॥

शुद्ध पारा १२ भाग, लोह भस्म १२ भाग, इनको खूब घोट कर फिर थोड़ेसे घीमें मन्दी आग पर पिघलाकर विधिवत् गोवर केलेके पत्र पर पर्पटी बनावे फिर पीसकर नीचे लिखी चीजोंकी ७–७ भावना दे। भारंगी, सोंठ, अगथिया, त्रिफला, जयन्ती, निर्गुण्डी, त्रिकुटा, वासा, कन्या कुमारी। इनके रसकी ७–७ भावना देकर सुखाकर १ लघु पुट दे। यह रस उचित अनुपान के साथ सेवन करने से समस्त रोगों का नाश करता है और पान तथा तुलसी के काथ के साथ या गो मूत्र के साथ सेवन करनेसे स्वास और खांसी का नाश होता है। मात्रा २ माशे। व्यवहारिक मात्राः–२ रत्ती।

[२३१] अगस्ति सूतराजः (१) (र.से.चि.)

रसोऽशुमालीजयपाललोहः-
शिलाहरिद्रावलयः समांशाः।
व्योषाग्निभृङ्गार्द्रकनिम्बुनीरै-
निर्गुण्डिकारग्वधमूलकाभिः॥
पृथग्विमर्द्योदरनाशनोयम्-
बल्लद्वयो वा क्रमसात्म्यतो वा।
कम्पिल्लचूर्णेन समश्च दत्तो-
जलोदरादीञ्जयतीह रोगान्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अगस्तिसूतः सशिवा गुडोयम्-
सम्पाचनादि क्रम शुद्ध देहे।

शुद्ध पारा, ताम्र भस्म, शुद्ध जमाल गोटा, लोह भस्म, शुद्ध मनसिल, हल्दी, और शुद्धगन्धक प्रत्येक १-१ भाग लेकर प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिला कर खरल करें तत्पश्चात् त्रिकुटेके क्वाथ, चीते, भांगरे और नींबुके रस तथा अद्रकके रस और संभालु तथा अमलतासकी छालके रस की १–१ भावना दे। पाचनादि क्रमसे रोगीकी शुद्धि करके हरड़के चूर्ण और गुड़के साथ इसे ३-३ रतीकी मात्रामें खानेसे अथवा कवीलेके साथ खानेसे जलोदरादि उदररोगोंका नाश होता है।

[२३२] अगस्ति सूतराजः (२)

(यो.र., र.रा. सु., र.चं. ग्रहण्या., बृ.यो.तत. ६७)

रसबलिसमभागं तुल्यहिङ्गुलयुक्तं-
द्विगुणकनकबीजं नागफेनेन तुल्यम् ॥
सकलविहितचूर्णं भावयेद् भृङ्गनीरै– +
ग्रहणीजलधिशोषे सूतराजोह्य गस्ति ॥
घृतमरिचयुतोऽयं गुञ्जमात्रं प्रवाहं
हरति षडतिसाराञ्जीरजातीफलेन ॥
त्रिकटुकमधुयुक्तः सर्ववान्तिश्चशूलम्
कफपवनविकारं वह्निमांद्यं च निद्राम् ॥

पारा १ भाग, गन्धक १ भाग और हिंगुल १ भाग, धतूरेके बीज २ भाग तथा शुद्ध अफीम २ भाग। प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावे फिर अन्य पदार्थों का महीन चूर्ण करके सबको मिलाकर भांगरेके रसमें घोटे। यह रसराज ग्रहणी रोग रूपी समुद्रका उसी प्रकार नाम शेष कर देता है जिस प्रकार अगस्त्य मुनिने समुद्र का शोषण क्षणभरमें कर लिया।

इसे १ रत्ती की मात्रामें घृत और कालीमिर्च के चूर्णके साथ सेवन करानेसे प्रवाहिका, जीरे और जायफलके चूर्णके साथ देनेसे ६ प्रकारके अतिसार तथा त्रिकुटेके चूर्ण और मधुके साथ देनेसे हर प्रकारका वमन, शूल, कफ और वातके विकार अग्निमांद्य और निद्राका नाश होता है।

[२३३] अग्निकुमारो रसः (१)

(र. र. स. अं. बृ., र. च. गुल्मा)

जैपालगंधाश्मरसत्रयाणां–
फलत्रयस्यापि कटुत्रयस्य।
मूत्रे गवां षोडशभागमाने–
भागान्वैकत्र दिनत्रयं च ॥
विमर्द्य तेषां बदरप्रमाणां–
बद्धा वटीमुष्णजलानुपानात्।
एकात्र युक्ता सहसा निहन्ति–
सा रेचयित्वा मलजालमादौ ॥
गुल्मं यत्कृत्पाण्डुविबन्धशूलं–
मान्द्य ज्वरं चाथ जलोदरञ्च।
अग्नेः कुमारः सहसा निहन्या–
दुद्दीपितो दीप इवान्धकारम्।

शुद्ध जमाल गोटा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा, त्रिफला और त्रिकुटा, १–१ भाग ले प्रथम पारे और गन्धककी कजकी बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियां मिलाकर सबको १६ गुने गोमूत्रमें ३ दिन तक घोटकर छोटे बेरके समान गोलियां बनावें ये गोलियां ऊष्ण जलके साथ खानेसे विरेचन होकर उदरस्थ मल बाहर निकल जाता है। और गुल्म, पाण्डु, जिगर, कब्ज, शूल अग्नि मान्द्य ज्वर जलोदर, आदिका नाश होता है। मात्राः—१गोली

+ पाठान्तरः–निखिल विहत चूर्ण षोडशांशं विषं स्याद्

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[२३४] अग्निकुमारो रसः (२) (भै. र.)

मरिचोग्राकुष्ठमुस्तैः सर्वैरेव समं विषम्।
पिष्ट्वा चार्द्ररसेनैव वटिका रक्तिकामिता ॥
आमज्वरे प्रथमतः शुण्ठया च मधुपिष्टया।
आर्द्रकस्वरसेनापि निर्गुण्ड्याश्च कफज्वरे ॥
पीनसे च प्रतिश्याये आर्द्रकस्य च वारिणा।
अग्निमान्द्ये लवङ्गेन शोथे सदशमूलकः ॥
ग्रहण्ये सहशुण्ठया च मुस्तकेनातिसारके।
सामे च धान्यशुण्ठीभ्यां पक्के च कुटजं मधु।
सन्निपातज्वरारम्भे पिप्पल्यार्द्रकवारिणा ॥
कण्टकार्या रसैः कासे श्वासे तैलगुडान्वितम्।
पीत्वा वटीद्वयं रोगी स्वास्थ्यं समुपगच्छति॥
सर्वेषामेव रोगाणामामदोषप्रशान्तये।
अग्निवृद्धिकरोनाम्ना विख्यातोऽग्निकुमारकः॥

काली मिर्च, वच, कूठ और नागरमोथा, १-१ भाग तथा विष ४ भाग लेकर सबको अद्रकके रसमें घोटकर १-१ रत्ती भरकी गोलियां बनावें। इसे सोंठ और मधुके साथ खानेसे आमज्वर,अद्रक और निर्गुण्डीके रसके साथ खानेसे कफज्वर,अद्रकके रसके साथ सेवन करनेसे जुकाम और पीनसका नाश होता है। अग्निमांद्यमें लवंगके साथ,सूजनमें दशमूलके क्वाथके साथ। ग्रहणीमें सोंठके साथ, अतिसारमें नागरमोथेके साथ, आमतिसारमें सोंठ और धनियेंके साथ, पक्वातिसारमें कुड़ेकी छालके क्वाथ और मधुके साथ, सन्निपात ज्वरके आरम्भमें पीपल और अद्रकके रसके साथ, खांसीमें कटेलीके रसके साथ, श्वासमें तैल और गुड़के साथ २-२ गोली खानी चाहिएं। ये गोलियां समस्त रोगोंमें आमदोषकी शान्तिके लिये सेवन की जा सकती हैं। यह रस अग्निवृद्धिके लिए प्रसिद्ध है।

[२३५] अग्निकुमारो रसः (३)

(वृ. नि. र., र. से. चि., अ. र.)

द्वौ कर्षौ सूतकाद् ग्राह्यौ गन्धकाद् द्वौ तथैव च।
यत्नतस्तूभयं मर्द्यं दिनं हंसपदीरसैः।
कल्कस्य वटिकां कृत्वा निक्षिपेत्काचभाजने।
कर्षैकममृतं तत्र क्षिप्त्वा वक्त्रं निरोधयेत् ॥
कूपिकायाः परौ भागौ वालुकाभिश्च पूरयेत्।
सार्द्धं यावदहोरात्रं तावत्तत्र पचेद्रसम् ॥
दीपमात्रं समारभ्य पावकं वर्द्धयेच्छनैः।
स्वाङ्गशीतलतां ज्ञात्वा समाकृष्यरसं ततः ॥
तोलार्द्धममृतं तत्र क्षिपेत्तावत्तथोषणम् ॥
भक्षितोऽयंरक्तिमात्रो रसस्त्वग्निकुमारकः।
सन्निपातज्वरं हन्याद् वातं मन्दाग्नितामपि॥
शूलं संग्रहणीं गुल्मं क्षयं पाण्डुगदं तथा।
श्वासकासादिकान्सर्वान् गदानेष विनाशयेत्॥

शुद्ध पारद और गन्धक २॥-२॥ तोले लेकर दोनोंको १ दिन हंसापदीके रसमें खरल करें फिर उसका गोला बनाकर कपरमिट्टी की हुई आतशी शीशीमें डाल दे और उसमें १। तोला शुद्ध वच्छनाग डालें, फिर शीशीका मुख बन्द करके बालुका यन्त्रमें रखकर शीशीके गले तक रेत भरकर १॥ दिनतक अग्नि दे। प्रारंभमें दीप शिखाके समान अग्नि देकर धीरे धीरे बढानी चाहिए सर्वथा शीतल होने पर गोलेको निकालकर खरलमें डालें और उसमें आधा तोला शुद्ध विष तथा आधा तोला कालीमिर्च डालकर घोटें। यह 'अग्निकुमार रस' एक रत्ती की मात्रामें खानेसे सन्निपात ज्वर, वातज्वर, मन्दाग्नि, शूल, संग्रहणी, गुल्म, क्षय और पाण्डु, तथा श्वास खांसी का नाश करता है। मात्राः- १ रत्ती।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[२३६] अग्निकुमारो रसः (४)
(बृ. नि. र.)

सूतेन गन्धं सह टङ्कणेन-
समं विषं योजयमिह त्रिभागम्।
कपर्दशंखावपि तत्र भागौ-
मरीचकैरष्टगुणैर्विमिश्रम् ॥
जम्बीरनीरेण विमर्दनीयं-
सिद्धो भवेदग्निकुमार एषः।
देयो हि गुञ्जाद्वितयो हि शूले-
त्रिदोषजे योजय सानुपानम् ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध सुहागा १-१ भाग, विष ३ भाग तथा कौड़ी भस्म और शंख भस्म, २-२ भाग, कालीमिर्च ८ भाग। सबको जंबीरी नींबूके रसमें खरल करे यह 'अग्निकुमार रस' उचित अनुपानसे २ रत्ती मात्रामें सेवन करनेसे त्रिदोषज शूलका नाश करता है।

[२३७] अग्निकुमारो रसः (५)
(र. र., रसे. (चि.)

टङ्कणं रसगन्धौ च सम भागत्रयं विषात्।
कपर्दः स्वर्जिकाक्षारो मागधी विश्वभेषजम् ॥
पृथक्पृथक् कर्षमात्रं वसुभागमिहोषणम्।
जम्बीराम्लैर्दिनं घृष्टं भवेदग्निकुमारकः ॥
विषूचीशूलवातादिवह्निमान्द्यप्रशान्तये।

शुद्ध सुहागा, शुद्धपारा, शुद्ध गन्धक, प्रत्येक १।-१। तोला, शुद्ध विष ३॥। तोला, कौड़ी भस्म, सज्जीखार, पीपल और सोंठ, १।-१। तोला, काली मिर्च १० तोला लेकर, पहले पारे गन्धककी कज्जली करके सबको जम्बीरी नींबूके रसमें खरल करे। यह 'अग्निकुमार रस' विषूचिका, शूल, अग्निमांद्य और आमाजीर्ण का नाश करता है।

[२३८] अग्निकुमारो रसः (६) (र. र.)

शुद्धं सूतं विषं गन्धं प्रतिनिष्कत्रयं त्रयम्।
मरिचं सर्वतुल्यं स्यात्कण्टकारीफलद्रवैः ॥
मर्दयेद्भावयेत्तेन भावनाश्चैकविंशतिः ॥
देया गुञ्जाद्वयं खादेत्सर्वाजीर्णप्रशान्तये।
विषूचिकां निहन्त्याशु रसोह्यग्निकुमारकः।

शुद्ध पारा, शुद्ध विष, शुद्ध गन्धक १।-१। तोला, काली मिर्च सबके बराबर लेकर प्रथम पारा गन्धककी कज्जली करके सबको कटेलीके फलों के रसकी २१ भावना दे। यह 'अग्निकुमार रस' सर्व प्रकारके अजीर्ण और विसूचिका का नाश करता है। मात्राः-२ रत्ती।

[२३९] अग्निकुमारो रसः (७)
(र. र., र. र. स.)

शुद्धसूतं [1]विषं गन्धं [2]द्विक्षारं पटुपञ्चकम्।
दशकं तुल्यतुल्यांशं भर्जिता विजयानवा ॥
दशानां तुल्यभागानां ततोर्द्धं शिग्रुमूलकम्।
तत्सर्वं विजयाद्रावैः शिग्रुचित्रकभृङ्गजैः ॥
द्रवैर्दिनद्वयं मर्द्यं ततो भाण्डे पचेल्लघु।
दीप्ताग्निना तु यामैकं शुद्धं पक्वं समुद्धरेत् ॥
सप्तधा चार्द्रकद्रावैश्चित्रकैर्भावयेद् भिषक् ॥
दीपनोऽग्निकुमारोऽयं निष्कैकं मधुनालिहेत्।
प्रतिकर्षं गुडं शुण्ठीमनु स्यादग्निदीपनः ॥

शुद्ध पारद, शुद्ध विष, शुद्ध गन्धक, यवक्षार, सज्जी क्षार, पांचोंनमक। यह दशों चीज़ें समान भाग, ताजी भुनी हुई भांग सबके बराबर सौंजनेकी जड़की छाल भांगसे आधी लेकर प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य पदार्थों का चूर्ण मिलाकर सबको भांग, सौंजने, चीते और भांगरेके रसमें पृथक् पृथक् २-२

पाठान्तरः-१ मृतं २ त्रिक्षारं ३ त्रयं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिन खरल करके सम्पुटमें रखकर १ पहर तक दीप्ताग्निमें पकावे। फिर निकाल कर अद्रक और चीतके रसकी ७–७ भावना दे। इसे ५ माषा की मात्रा से मधुके साथ सेवन करनेसे और उपरसे गुड़ और सोंठ १।-१। तोला मिलाकर खानेसे अग्निप्रदीप्त होती है। (व्यवहारिक मात्रा २–३ रत्ती)।

[२४०] अग्निकुमारो रसः (८) (र. र.)

शुद्धसूतं विषं गन्धमजमोदां फलत्रिकम्।
स्वर्जिक्षारं यवक्षारं वह्निसैन्धवजीरकम्॥
सौवर्चलं विडङ्गानि सामुद्रं त्र्यूषणं समम्।
विषमुष्टिं सर्वसमां जम्बीराम्लेन मर्दयेत्॥
मरिचाभां वटीं खादेद् वह्निमान्द्यप्रशान्तये।
पथ्यां शुण्ठीं गुडं चानु पलार्द्धं भक्षयेत्सदा॥

शुद्ध पारा, शुद्ध विष, शुद्ध गन्धक, अजमोद, त्रिफला, सज्जीखार, यवक्षार, चीता, सेंधानमक, जीरा, सौंचल, वायविडंग, समुद्रनमक, त्रिकुटा प्रत्येक समान भाग, कुचला सबके बराबर लेकर प्रथम पारा गन्धककी कज्जली बनाकर सबको जंबीरीके रसमें घोटकर मरिचके बराबर गोलियां बनावे। इसको खाकर ऊपरसे हैड़ सोंठ और गुड़ २॥–२॥ तोला खानेसे अग्निमांद्य नष्ट होता है।

[२४१] अग्निकुमारो रसः (९) (र. र.)

रसभस्मसमं गन्धं धात्री द्विगुणटङ्कणम्।
दिनं जम्बीरजैर्द्रावैर्मर्द्य पूर्या वराटिका॥
रुद्ध्वा गजपुटे पक्त्वाद्यथा वैरोचनो रसः।
तथा कुर्याच्च रोगाणां फलं तद्वन्न संशयः
कुमारी सैंधवं चानु लेहयेदग्निदीपनम्।

रस सिन्दूर, गन्धक १-१ भाग, आमला, सुहागा २-२ भाग। १ दिन जम्बीरी नींबू के रस में खरल करके कौड़ियों में भरकर गजपुट में 'वैरोचन' रस की भांति पकावे। इसके सेवन करने से अनेक प्रकार के रोगों का नाश होता है। इसके ऊपर घी कुंवारके रसमें सेंधानोन मिलाकर लेहकी तरह बनाकर चाटें, यह अनुपान है। इससे अग्नि प्रदीप्त होती है।

[२४२] अग्निकुमारो रसः (१०) (र. र.)

पलैकं मूर्च्छितं सूतं मरीचं हिङ्गुजीरकम्।
प्रतिकर्षं वचाशुण्ठी तत्सर्वं भृङ्गजैर्द्रवैः॥
दिनं मर्द्य लिहेन्माषं मधुवह्निदिने पिवेत्।
माषैकं भक्षयेच्चानु दाडिमं नागरं गुडम्॥

कज्जली ५ तोला, काली मिर्च, हींग, जीरा, वच और सोंठ, १।-१। तोला लेकर सबको एक दिन भांगरे के रसकी भावना दें। इसे चीते के चूर्ण और शहद के साथ मिलाकर चाटने और ऊपर से गुड़ और सोंठ का चूर्ण तथा दाड़िम का रस पीनेसे अग्नि प्रदीप्त होती है। मात्रा:—१ माषा।

[२४३] अग्निकुमारो रसः (११) (र. र.)

द्विपलं शुद्धताम्रन्तु शुद्धसूतं पलत्रयम्।
पिष्टं जम्बीरजैर्द्रावैः कुर्यात्खल्वे भिषग्वरः॥
गन्धकं चामृतं तत्र प्रत्येकं पलपञ्चकम्।
कज्जलीकृत्य तत्सर्वं भाव्यं निम्बुकजैर्द्रवैः॥
चूर्णितं पिठरीमध्ये क्षिपेन्निम्बुकजेद्रवे।
घर्मे दिनाष्टकं भाव्यं द्रवो देयः पुनः पुनः॥
भृङ्गद्रावैस्त्र्यहं भाव्यं त्रिवारमार्द्रकजैर्द्रवैः।
त्रिधामृतारसैर्भाव्यं रसो ह्यग्निकुमारकः॥
अस्य गुञ्जात्रयं खादेदग्निमान्द्यप्रशान्तये॥

शुद्ध ताम्र (भस्म) १० तोला और पारा १५ तोला सब को जम्भीरी नींबूके रस में घोटे फिर गन्धक और शुद्ध वच्छनाग २५-२५ तोला डालकर कज्जली करके कांच की बरनी में भरदे और जम्भीरी नींबूके रसकी भावना दे। धूप में सुखाकर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फिर भावना दे इसी प्रकार ८ दिन नींबूके रसकी, ३ दिन भांगरे के रसकी, ३ दिन अद्रक के रसकी और ३ दिन गिलोय के रसकी भावना दे। इसको ३ रत्ती प्रमाण में सेवन करनेसे अग्निमांद्य का नाश होता है।

[२४४] अग्निकुमारो रसः (१२)

(र. र. उदरा.)

शुद्धं सूतं समं गन्धं शुद्धतालं मनःशिला।
तुल्यांशं चैत्रकं मूलं यवमासूरजैर्द्रवैः ॥
जम्बीरैश्च तथा मर्द्यं तद् गोलं श्रावसम्पुटे।
रुद्ध्वा बहिर्माषपिष्टैस्तयोर्लेप्यं च सम्पुटम् ॥
गोधूमपिष्टिका वाऽथ विलेप्या वस्त्रमृत्तिका।
विशोष्य पाचयेद्यन्त्रे द्विषड्यामैः सबालुके ॥
क्रमवृद्धयाग्निना पाच्यं स्वाङ्गशीतं समुद्धरेत्।
दशमांशं विषं दत्वा विषांशं मृतताम्रकम् ॥
ज्वालामुख्या द्रवैः सर्वं भावयित्वा त्रिसप्तधा।
रसो ह्यग्निकुमारोऽयं सेव्यं गुञ्जाद्वयं सदा ॥
ताम्बूलपत्रसंयुक्तं वातगुल्मोदरार्तिजित्।
काकजङ्घाकषायश्च ह्यनुपानं सदा पिबेत् ॥

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध हरताल, शुद्ध मनसिल, आम की जड की छाल प्रत्येक समान भाग। प्रथम कज्जली बनाकर उसमें औषधियों का चूर्ण मिलाकर सबको जौं और मसूर के क्वाथ तथा जम्बीरी नींबू के रसकी एक एक दिन भावना देकर गोला बनावे और उसे शराव सम्पुट में बन्द करके सन्धि पर उड़द या गेहूं की पिट्ठी का लेप करके कपड़ मिट्टी कर दे, फिर सुखाकर १२ पहर तक बालुका यन्त्र में मृदु, मध्यम और तीव्राग्नि पर पकावें। फिर यन्त्र के स्वांगशीतल होने पर उसमें से औषधको निकालकर उसका दसवां भाग शुद्ध वच्छनाग और वच्छनाग का चौथा भाग तांबे की भस्म मिलाकर ज्वालामुखी के रसकी २१ भावना दे। इसे २ रत्तीभर नागरवेल के पानमें रखकर खाने से वातगुल्म का नाश होता है। अनुपान काक जंघाका क्वाथ।

[२४५] अग्निकुमारो रसः (१३)

(र. र. स. अजीर्णा.)

हंसपादीरसैः पिष्टं रसगन्धकयोः पलम्।
कोलं च विषचूर्णस्य वालुकायन्त्रपाचितम् ॥
शाणं विषस्यार्धपलं मरिचस्य विमिश्रयेत्।
दीपनोऽग्निकुमारोऽयं ग्रहण्यां च विशेषतः ॥
सवातश्लेष्मजान् रोगान् क्षणादेवापकर्षति।
सन्निपातज्वरश्वासक्षयकासांश्च नाशयेत् ॥

शुद्ध पारे, और गन्धक की २॥–२॥ तोले की कज्जली बनाकर उसमें १। तोला शुद्ध वच्छनाग डाल कर हंसपादी के रस में मर्दन करे। फिर इसे शराव संपुट में बंद करके वालुका यन्त्र में १ पहर पकावे फिर इसमें शुद्ध वच्छनाग ५ माषा तथा २॥ तोला काली मिर्च मिलाकर खरल करे। यह रस अग्निदीपक, विशेषतः संग्रहणी नाशक है। इसके सेवन से वातकफजरोग क्षणभर में शान्त हो जाता है। यह रस सन्निपात ज्वर, श्वास, खांसी तथा क्षयका भी नाश करने वाला है।

[२४६] अग्निकुमारो रसः (१४)

(र. र., स. अग्निमां.

रसगन्धकयोः कृत्वा कज्जलीं तुल्यभागयोः।
पादांशममृतं दत्वा शुक्तिभस्म कलांशकम् ॥
हंसपादीरसैः सम्यङ् मर्दयित्वा दिनत्रयम्।
स्थूलगोलं ततः कृत्वा परिशोष्य खरातपे ॥
निरुध्य बालुकायन्त्रे क्रमपुष्टेन वह्निना।
पचेदेकमहोरात्रं स्वतः शीतं विचूर्ण्य च ॥
तुल्यांशममृतं दत्वा मर्दयेदार्द्रकजैर्द्रवैः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विलिप्य स्थालिकामध्ये ततोऽन्यस्थालिकोदरे ॥
पलार्धममृतं क्षिप्त्वा रसस्थालीं च तन्मुखे ।
न्युब्जां दत्त्वा दृढं रुद्ध्वा चुल्ल्यामारोप्य यत्नतः
यामं प्रज्वालयेदग्निं विचूर्ण्य तदनन्तरम् ।
करण्डके विनिक्षिप्य स्थापयेदतियत्नतः ॥
रसोह्यग्निकुमाराख्यो दिष्टो मन्थानभैरवैः ।
हन्यादत्यग्निमान्द्यं ज्वररुजमखिलं वातजातं क्षयार्तिम् ।
शोफाढ्यं पाण्डुरोगं कफजनितगदान्प्लीहगुल्मं गुदार्तिम् ॥
सर्वाङ्गीणं च शूलं जठरभवरुजं खंजतां पङ्गुलत्वम् ।
सर्वां श्चासाध्यरोगान्हरिरिवशुद्धदुरितं रक्तगुल्मं वधूनाम् ॥

पारा और गन्धक समान भाग लेकर कज्जली करके उसमें उसका चौथा भांग शुद्ध वच्छनाग तथा सीपी भस्म १६ वां भाग मिलाकर ३ दिन तक हंसपादी के रसमें मर्दन करे, फिर एक गोला बनाकर तेज धूपमें सुखावे और फिर १ दिन रात मृदु, मध्य और तीव्राग्नि पर वालुका यन्त्र में पकाकर ठण्डा होने पर निकालकर उसमें समान भाग शुद्ध वच्छनागका चूर्ण मिलाकर अद्रक के के रसकी भावना देकर घोंटे, फिर उस लुगदी को एक हाण्डी के बीचमें लेप करदे और दूसरी हाण्डी में २॥ तोला शुद्ध वच्छनागका चूर्ण डालकर उसके ऊपर पहली हांडी उलटी करके रखदे और सन्धिको अच्छी तरह बन्द करदे। इस यन्त्रको फिर चूल्हे पर चढ़ाकर १ पहर तक आग जलावे पश्चात् स्वांग शीतल होने पर दवाको निकालकर पीसकर रक्खे। इस अग्निकुमार रस का आविष्कार श्री मन्थानभैरवने किया था। यह रस अत्यन्त अग्निमांद्य, ज्वर, वातजरोग, शोथयुक्त पाण्डु रोग, कफरोग, तिल्ली, गुल्म, गुदपीडा, सर्वाङ्ग शूल, लूला, लंगड़ापन और स्त्रियोंके रक्तगुल्मादि असाध्य रोगों को इस प्रकार नष्ट कर देता है जिस प्रकार विष्णु भगवान पापों को।

[२४७] अग्निकुमारोरसः (१५)

(र. र. स. प्र. अ.)

दग्धां कपर्दिकां पिष्ट्वा त्र्यूषणं टङ्कनं विषम् ।
गन्धकं शुद्धसूतं च तुल्यं जम्बीरजैर्द्रवैः ॥
मर्दयेद् भक्षयेद्वल्लं मरिचाज्यं लिहेदनु ।
निहन्ति ग्रहणीरोगं पथ्यं तक्रोदनं हितम् ॥

कौड़ी भस्म, त्रिकुटा, शुद्ध सुहागा, शुद्ध वच्छनाग, गन्धक और शुद्ध पारा, सब समान भाग लेकर प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावें फिर उसमें अन्य औषधियोंका चूर्ण मिलाकर सबको जम्बीरी नींबू के रस में घोटकर रक्खे। यह ग्रहणी रोगका नाश करता है। मात्राः—२-३ रत्ती। अनुपान काली मिर्च का चूर्ण और घी। पथ्यः—छाछ और भात।

[२४८] अग्निकुमारो रसः (१६) (र.चि.)

टङ्कणं रसगन्धौ च समं भागत्रयं विषात्।
कपर्दशंखौ त्रिनवौ वसुभागं मरीचकम् ॥
दिनं जम्भाम्भसा पिष्टं भवेदग्निकुमारकः ॥
विसूचीशूलवातादिवह्निमांद्ये द्विगुञ्जकः ॥
अजीर्णे संग्रहण्यां वा प्रयोज्योऽयं निजौषधैः ॥

सुहागेकी खील, शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक १—१ भाग, शुद्ध वच्छनाग ३ भाग, कौड़ी भस्म ३ भाग, शंख भस्म ९ भाग, काली मिर्चका चूर्ण ८ भाग। प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर एक दिन जम्बीरी नींबूके रसमें घोटे। इसे रोगोचित

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुपानके साथ २-२ रत्तीकी मात्रामें सेवन करने से विसूचिका, शूल, मन्दाग्नि, अजीर्ण और संग्रहणीका नाश होता है।

[२४९] अग्निकुमारोरसः (१७)

(र. रा. सुं. अरुचौ)

यवक्षारं तथा स्वर्जी टङ्कणं लवणानि च।
त्रिकटुत्रिफलालोहं चूर्णं द्विविधभागकम् ॥
कर्पूरं च लवङ्गञ्च चव्यकं चित्रकं तथा।
दाडिमाम्लं विशेषेण शृङ्गवेरञ्च रेणुकाम् ॥
एतानि समभागानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत्।
यवानीनिम्बुनीरेण दिवसत्रयभावितम् ॥
तथामृतारसेनैव मर्दितं चाम्लवेतसैः।
चणकाकारमात्रेण दीयते रसउत्तमः ॥
अरोचकं वह्निविशेषमान्द्यं,
गुल्मप्रमेहं विनिहन्त्यवश्यम्।
चुक्रेण युक्तं खलु पक्तिशूलं,
सूर्योदयात् वृद्धमतीव जातम् ॥
श्वासकासकफातङ्कनाशनं प्राणवर्द्धनम् ॥
दद्यात् त्रिकटुकञ्चैव कफारोचकनाशनम् ॥
रसो ह्यग्निकुमारोऽयं सर्वरोगप्रणाशनम् ॥

यवक्षार, सज्जी खार, सुहागा, पांचो लवण, त्रिकुटा, त्रिफला और लोहचूर्ण २-२ भाग। कपूर, चव्य, लौंग, चीता, दाड़िम (अनार दाना) सोंठ और रेणुका १–१ भाग। सबका बारीक चूर्ण करके ३ दिन तक अजवायन और नीबूके रसमें घोटे फिर गिलोय और अमलवेतके रसमें ३–३ दिन घोटकर चनेके बराबर गोलियां बनावे। यह रस अरुचि, मंदाग्नि, गुल्म और प्रमेह का नाश करता है। चूकके (काञ्जी का एक भेद) के साथ सेवन करने से परिणाम शूल, सूर्यावर्त, श्वास, खांसी, कफरोग आदिका नाशक है। कफ की अरुचिमें त्रिकुटाके साथ सेवन करना चाहिए। यह अग्निकुमार रस सर्व रोगनाशक है।

[२५०] अग्निकुमाररसः (१८)

(भै. र. र. रा. सुं. ग्रहणी)

रसं गन्धं विषं व्योषं टङ्कनं लौहभस्मकम्।
अजमोदाहिफेनं च सर्वतुल्यं मृताभ्रकम् ॥
चित्रकस्य कषायेण मर्दयेद्याममात्रकम्।
मरिचाभां वटीं खादेदजीर्णे ग्रहणीं तथा ॥
नाशयेन्नात्र सन्देहो गुह्यमेतच्चिकित्सितम् ॥
रसश्चाग्निकुमारोऽयं दीपयत्याशु पावकम् ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध विष, त्रिकुटा, सुहागा, लोहभस्म, अजमोद और अफीम, सब समान भाग, अभ्रक भस्म सबके बराबर। प्रथम पारद गन्धककी कज्जली बनाकर पश्चात् सबको १ पहर तक चित्रकके रसमें घोटकर निःसन्देह काली मिर्च बराबर गोलियां बनावे। यह रस अजीर्ण, ग्रहणी, और मन्दाग्निका नाश करता है।

[२५१] अग्निकुमारोरसः (१९)

(र. र. स. स्थौ अ. १–८)

गन्धकेन द्विकर्षेण शुद्धसूतेन तावता।
विधाय कज्जलीं सूक्ष्मामेकवासरमर्दनात् ॥
कर्षमात्रं विषं दत्वा मर्दयित्वा दृढं पुनः।
हंसपादीरसैस्तैर्वा स्तोकं स्तोकं मुहुर्मुहुः ॥
कुडवार्धमितैः पश्चाद्गोलं कृत्वा विशोष्य च।
काचकुप्यां विनिक्षिप्य शुल्वनाडीं पिधाय च ॥
देवीशास्त्रे पुनः प्रोक्तं विषं कर्षं विचूर्णितम्।
ऊर्ध्वाधो गोलकानां हि काचकूप्यां विनिक्षिपेत्
निक्षिपत्कज्जलीं मध्ये यतश्चाग्र्यं प्रजायते।
ततश्च द्व्यङ्गुलोत्सेधं मृदा कूपीं विलिप्य च ॥
विशोष्य बालुकायन्त्रे यंत्रवर्गप्रकाशिते।
अधोमुखीं घटीं क्षिप्त्वा क्षिपेदुपरि बालुकाम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निरुध्य भाण्डवक्त्रं च चुल्यामारोप्य यत्नतः।
वह्निं प्रज्वालयेत्सार्धं दिनं क्रमविवर्धितम् ॥
स्वांगशीतलमाकृष्य सह ताम्रेण मर्दयेत्।
पलार्धं मरिचं सूक्ष्मं कर्षार्धं वत्सनाभजम् ॥
विनिक्षिप्य विमर्द्याथ क्षिपेद् रम्यकरण्डके।
नन्दिना तु समुद्दिष्टं रसतुल्यं मरीचकम् ॥
वत्सनाभं तु कर्षांशं मिश्रयेत विचूर्ण्य तत्।
निर्दिष्टोऽग्निकुमारको रसवरो देव्यातथा नन्दिना॥
सेव्यो वैद्य यशःप्रभूतफलदश्चानाहविध्वंसनः॥
सद्यःपाचनदीपनो रुचिकरःशीघ्रं तथाष्ठिलिकाम्
सामां च ग्रहणीं हरेत् कफरुजःकण्ठामयध्वंसनः॥
बल्यो भोजनतोयभक्ष्यसुखदःश्रेष्ठो रसानां प्रभु-
र्मन्दाग्निं कफवातजं क्षयगदं निःशेषशूलामयान्
श्वासं कासगदं तथाकफरुजं स्थौल्यंच पाण्डुंतथा
शोफं वातगदं तथा खलु रतींकुर्याच्च पर्णान्वितः
कणया सितयाज्येन दातव्योऽसौ महारसः।
प्रत्यष्ठीलादिरोगेषु जलकूर्मगदेषु च ॥
नन्दिना तु पुनः प्रोक्तस्तत्तद्रोगहरौषधैः।
निहन्ति सकलान्रोगान् दुष्पत्नीव मनोरथान्॥
रसजनितविदाहे शीततोयाभिषेको,
मलयजघनसारैर्लेपनं मन्दवातः।
तरुणदधिसिताक्तं नारिकेलीफलाम्भो,
मधुरशिशिरपानं शीतमन्यच्च शस्तम् ॥
सौभाग्यं मेघनादाङ्घ्रिसितामधुकचंदनम्।
तुषोदकेन दातव्यं सर्वस्मिन् रसवैकृते ॥
छर्द्यां तृष्णासु दातव्यं कपित्थं वा सितान्वितम्
कुमारीक्षीरलेपश्च सर्वाङ्गीणः प्रशस्यते ॥
क्षीरं मधुसितोपेतं क्वाथो वाऽमृतबन्धुकः।
उपचारा अमी सर्वे प्रशस्ता रसतापिनाम् ॥
रसस्याग्निकुमारस्य प्रभावं वेत्ति तत्त्वतः।
गिरिजा नन्दिकेशो वा यद्वो नारायणः स्वयम् ॥

२॥ तोले शुद्ध गन्धक और २॥ तोले शुद्ध पारदको १ दिन खरल करके सूक्ष्म कज्जली बना लें। फिर उसमें १। तोला शुद्ध बच्छनागका चूर्ण मिलाकर अच्छी तरह मर्दन करें और हंसपादीका रस थोड़ा थोड़ा डालकर इतना घोटें कि १०तोले रस सूख जाए। तदनन्तर उसकी गोलियां बना कर सुखा लें।

अब कपरमिट्टी की हुई आतशी शीशीमें ७॥ माशे शुद्ध बच्छनागका चूर्ण डालकर उसके ऊपर उपरोक्त गोलियां रख दें और ऊपरसे पुनः ७॥ माशे बछनागका चूर्ण डालकर उसे (२॥ तोले) शुद्ध ताम्रकी नली (कटोरी या गिलास)से ढक दें। तत्पश्चात् उस शीशी पर २ अंगुल ऊंचा मिट्टीका लेप करके सुखालें।

इसके पश्चात् इस शीशीको बालुका यन्त्रकी हांडीमें रखकर उसके उपर मिट्टीकी एक ऐसी कुप्पी उल्टी करके ढक दें जो शीशीको अच्छी तरह ढक ले और जिसका मुख बालुका यन्त्रवाली हाण्डीके भीतर तलीमें अच्छी तरह जमकर बैठ जाए।

अब बालुका यन्त्रवाली हाण्डीमें इतना रेत भरें कि उल्टी ढकी हुई कूपीके ऊपर तक आ जाए। (इस रसको बनानेके लिए आतशी शीशी चौड़े मुंहकी लेनी चाहिए जो बहुत ऊंची न हो। दवाके ऊपर ढकनेको ताम्रकी कटोरी ऐसी बनवानी चाहिए जो अधिक चौड़ी न हो पर दवा को भली-भांति ढक ले। आतशी शीशीको ढकनेके लिए मिट्टीका बना हुआ मज़बूत गिलास लेना चाहिए और उस पर कपरमिट्टी कर लेनी चाहिए। यह गिलास शीशीसे कुछ उंचा होना चाहिए।)

तदनन्तर बालुका यन्त्रकी हाण्डीके मुख पर शराव ढक कर सन्धिको भली भांति बन्द करके सुखा लें और इस यन्त्रको चूल्हे पर रखकर १॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिन तक पकावें। प्रारम्भमें बहुत मृदु अग्नि दें और फिर धीरे धीरे अग्नि तीव्र करते रहें। इसके बाद यन्त्रके स्वांग शीतल होने पर उसमेंसे औषध को निकाल कर ताम्रकी नली समेत पीस लें। (यदि ताम्रकी भली प्रकार भस्म न हुई हो तो उसे समान भाग पारद गंधककी कज्जलीके साथ घोटकर शराव सम्पुटमें बन्द करके गजपुटमें फूंक दें और आवश्यकता हो तो इसी प्रकार कई पुट देकर निरुत्थ भस्म कर लें) अब इसमें २॥ तोले काली मिर्च और ७॥ माशे शुद्ध बच्छनागका चूर्ण मिलाकर खरल करें और शीशीमें भरकर सुरक्षित रक्खें। श्री नन्दी महाराजका मत है कि इसमें कालीमिर्चका चूर्ण सम्पूर्ण रसके बराबर और बच्छनागका चूर्ण १। तोला मिलाना चाहिए।

इस रसश्रेष्ठ अग्निकुमारका आविष्कार देवी भगवती और श्रीनन्दी महाराजने किया है। यह वैद्योंको अत्यन्त यश दिलानेवाली फलप्रद औषध है।

और इसके सेवनसे आनाह नष्ट होता है। यह पाचन, दीपन और रोचक है। अष्ठीलिका तथा साम ग्रहणीको शीघ्र नष्ट करता है। कफके रोग, कण्ठरोग, अग्निमांद्य, कफवातज क्षय, समस्त प्रकारके शूल रोग, श्वास, कास, स्थूलता, पाण्डु, शोथ, वातज रोग, प्रत्यष्ठीला और जलकूर्म रोग (जलोदर तथा अत्यन्त प्रवृद्ध और कठोर यकृत् प्लीहा) आदि रोग इसके सेवनसे नष्ट हो जाते हैं।

यह बलकारक और भोज्य भक्ष्य तथा पेय पदार्थों में आनन्द दायक है (इसकी सहायतासे उत्तमोत्तम पदार्थ खाकर शीघ्र पचाए जा सकते हैं।) इसे पानके साथ खानेसे रति-शक्ति बढ़ती हैं।

अनुपान पीपलका चूर्ण, मिश्री और घृत।

नन्दी महाराजका कथन है कि रोगोचित अनुपानके साथ देनेसे यह समस्त रोगोंको इस प्रकार नष्ट कर देता है जिस प्रकार दुष्ट पत्नी मनोरथों को।

यदि इसके खानेसे दाह हो तो शीत जलका अवसेचन और कपूर युक्त चन्दनका आलेपन करना चाहिए। मन्द मन्द पवनके सेवन करने, ताजी दहीमें मिश्री मिलाकर खाने और नारियलका जल पीनेसे भी रस जनित दाह शान्त हो जाती है। इसके अतिरिक्त दाहशान्तिके लिए मधुर और शीतल (शरबत आदि) पेय पिलाने और अन्य शीतल उपचार करने चाहिएं।

सुहागेकी खील, चौलाईकी जड़, मिश्री, मुलैठी और चन्दन समान भाग लेकर चूर्ण बनावें। इसे कांजीके साथ पीनेसे (दाह आदि) समस्त रसविकार नष्ट होते हैं।

यदि छर्दि होने लगे या तृषा बढ़ जाए तो कपित्थ फलके गूदेमें मिश्री मिलाकर खिलाना चाहिए।

रसजनित दाहमें समस्त शरीरमें घृतकुमारीके रसका या गोदुग्धका लेप करना, दूधमें मधु और मिश्री मिलाकर पीना तथा बाराहीकन्द और बन्धूक (गुलदोपहरी)का क्वाथ पीना भी लाभदायक है।

इस अग्निकुमार रसके प्रभावको भगवती गिरिजा या भगवान नन्दीकेश अथवा नारायण ही पूर्णतः जानते हैं।

[२५२] अग्निकुमारो रसः २० (र. सु.)

कर्पूरं च लवङ्गं च चव्यकं चित्रकं तथा।
दाडिमाम्लं विशेषेण शृङ्गवेरं च रेणुकाम् ॥
एतानि समभागानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत्।
यवक्षारं तथा स्वर्जी टङ्कणं लवणानि च।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रिकटु त्रिफला लोहं सर्वमेव द्विभागिकम् ।
यवानी निम्बुनीरेण दिवसत्रय भावितम् ॥
तथाऽमृतारसेनैव मर्दितं चाम्लवेतसैः ।
चणकाकारमात्रेण दीयते रस उत्तमः ॥
अरोचकं वह्निविशेषमांद्यं,
गुल्मं प्रमेहं विनिहन्त्यवश्यम् ।
चुक्रेणयुक्तं खलु पक्तिशूलं,
सूर्योदयादूर्ध्वमतीव जातम् ॥
त्रिकटुकेन दत्तश्चेच्छ्वासकासामयापहः ।
रसो ह्यग्निकुमारोऽयं सर्वरोगप्रणाशनः ॥

कपूर, लौंग, चव्य, चीता, अनारदाना, सोंठ और रेणुका, १-१ भाग तथा जवाखार, सज्जीखार, सुहागेकी खील, पांचो नमक, त्रिकुटा, त्रिफला, लोह भस्म, २-२ भाग । सबके चूर्णको एकत्र मिलाकर अजवायन के काथ, नींबूके रस, गिलोयके रस और अम्लवेत के रस या क्वाथ में पृथक् पृथक् ३-३ दिन घोट कर चने के बराबर गोलियां बनावे । इसके सेवन से अरुचि, अग्निमांद्य, गुल्म और प्रमेह का अवश्य नाश होता है । चुक्र (काञ्जीका एक भेद) के साथ सेवन करने से पक्तिशूल और सूर्यावर्तका, और त्रिकुटेके चूर्ण के साथ सेवन करनेसे खांसी और श्वास का नाश होता है ।

[२५३] अग्निकुमारो रसः (२१)
(र. यो. सा.)

कर्षौ सूतबलीपृथक्समरसीभूतौ मरालाङ्घ्रिका-
नीरेणालुलितौ विषं बलिदलं
विन्यस्य कूप्यांच तत् ।
रुद्ध्वा द्वादशयाममेव सिकतायन्त्रे पचेद्वह्निना-
दीपारम्भवताऽवतार्य शिशिरं भित्वा रसंचूर्णितम्
कर्षार्द्धं विषमूषणं विषसमं दत्त्वा विमर्द्याखिलं-
गुञ्जास्याऽग्निकुमारकस्य जठरप्लीहव्रणापस्मृतीः
शूलं दुस्तरसन्निपातमनिलं मन्दाग्निपाण्डु क्षया-
तीसारग्रहणीज्वरान्द्रुततरं स्वीयानुपानैर्जयेत् ॥

शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक १।-१। तोला लेकर कज्जली करके हंसपादी (हंसराज) के रस की भावना दे फिर ७।। माशे शुद्ध मीठा तेलिया मिलाकर आतशी शीशी में भरकर १२ पहर तक वालुका-यन्त्र में क्रमसे मंद, मध्य और तीव्र अग्नि पर पकावे। फिर उतार कर शीतल होने पर उसे निकाल कर पीसे और उसमें ७।। माशे शुद्ध मीठा तेलिया और ७।। माशे काली मिर्चका चूर्ण मिलाकर खरल करके रक्खे । मात्रा:-१ रत्ती । इसे सेवन करनेसे उदर रोग, तिल्ली, व्रण, अपस्मार, शूल, कष्टसाध्य सन्निपात, मंदाग्नि, वातजरोग, पाण्डु, क्षय, अतिसार, संग्रहणी और ज्वर आदि का शीघ्र ही नाश होता है ।

[२५४] अग्निकुमारो रसः (२२) (र. मं.)

सूतगन्धकनागानां चूर्णं हंसाङ्घ्रिवारिणा ।
दिनमेकं विमर्द्याथ गोलकं तस्य योजयेत् ॥
काचकूप्यां च संवेष्ट्य तां त्रिभिर्मृत्पटैर्दृढम् ।
मुखं संरुध्य संशोष्य स्थापयेत्सिकताह्वये ॥
सार्द्धं दिनं क्रमेणाग्निं ज्वालयेत्तदधस्ततः ।
स्वाङ्गशीतं समुद्धृत्य षडंशेनामृतं क्षिपेत् ॥
मरिचान्यर्द्धभागेन समस्तस्याथ मर्दयेत् ।
अयमग्निकुमाराख्यो रसो मात्राऽस्य रक्तिका ॥
ताम्बूलीरस संयुक्तो हन्ति रोगानमूनयम् ।
वातरोगान् क्षयं श्वासं कासं पाण्डुं कफोल्बणम् ॥
अग्निमांद्यं सन्निपातं पथ्यं शाल्यादिकं लघु ।
जलयोगप्रयोगोऽपि शस्तस्तापप्रशान्तये ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और शुद्ध सीसा (भस्म), समान भाग लेकर कज्जली करके एक दिन हंसपादी के रस में घोटे, फिर उसका गोला बना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छे। इसे सुखाकर ३ कपरमिट्टी की हुई आतशी शीशी में भर दे फिर उसका मुंह बन्द करके १।। दिन तक बालुका यन्त्र में पकावे और क्रमशः अग्नि बढ़ाता रहे। फिर उतार कर स्वांग शीतल होने पर उसके अन्दर से औषध को निकाल और घोटकर उसमें समस्त औषध का छठा भाग शुद्ध मीठा तेलिया और आधा भाग काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर मर्दन करे। इसे १ रत्ती की मात्रा में पान के रसके साथ सेवन करने से वातव्याधि, क्षय, श्वास, खांसी, कफज पाण्डु, मन्दाग्नि और सन्निपात का नाश होता है। पथ्य-शालीचावलों का भात आदि। यदि इसके सेवन से दाह हो तो शिर पर जल अवसेचन आदि शीतल क्रियाएं करनी चाहिए।

[२५५] अग्निकुमारोरसः (२३)

(र. चं. ग्र.)

रसं विषं चाभ्रगन्धौ तालकं हिङ्गुलं विषम्।
शुल्वभस्मसमं तुल्यं मर्दितं भृङ्गवारिणा।।
काच कूप्यां विनिःक्षिप्य विलेप्या वस्त्रमृत्तिका।
बालुकायन्त्रके पाच्यं दिनैकं मन्दवह्निना।।
स्वाङ्गशीतं समुद्धृत्य दातव्यं चणमात्रकम्।
अनुपानविशेषेण चातुर्थिकज्वरं हरेत्।।
सन्निपातं निहन्त्याशु सर्वरोगहरं परम्।
महानग्निकुमारोऽयं सर्वव्याधिनिवारणः।।

शुद्ध पारा, शुद्ध बच्छनाग, अभ्रकभस्म, शुद्ध गन्धक, शुद्ध हरताल, शुद्ध सिंगरफ, शुद्ध विष (इस प्रयोग में विष शब्द दो वार आता है अतः या तो वह २ भाग लेना चाहिए या एक स्थान पर विष का अर्थ संखिया कर सकते हैं) और ताम्र भस्म समान भाग लेकर प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियां मिलाकर भांगरे के रस की भावना देकर कपरमिट्टी की हुई आतशी शोशी में भर दे और विधिवत् १ दिन बालुका यन्त्रमें मन्दाग्नि पर पकावे और स्वांग शीतल होने पर निकाल कर खरल करके रक्खे। इसे यथोचित अनुपान के साथ चनेके बराबर मात्रा में सेवन करने से चौथिया ज्वर, और सन्निपात तथा अन्य अनेक रोगों का नाश होता है।

[२५६] अग्निकुमारो रसः (२४)

(र. चं. ग्रहणी)

शुद्धसूतं समं गन्धं त्रिकटुं पटुपञ्चकम्।
दशकं तुल्यतुल्यं च विजया सर्वसम्मिता।।
भावयेच्चित्रभृङ्गोत्थैस्त्रिधा च विजयाद्रवैः।
दीप्ताग्निना तु यामैकं बालुका यन्त्रगे पचेत्।।
संचूर्ण्य चार्द्रकद्रावैर्भावयित्वा च भक्षयेत्।
मधुना शाणमानं तु रसो ह्यग्निकुमारकः।।
दीप्ताग्निकारकः सामग्रहणीदोषनाशनः।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, त्रिकुटा, पांचों नमक। ये दशों चीजें बराबर और भांग सबके बराबर लेकर प्रथम पारे गन्धक की कज्जली करके और फिर उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर सब को चीतामूलके क्वाथ भांगरे के रस और भांग के रसकी ३-३ भावना देकर (सुखाकर) आतशीशी में भर कर १ पहर तक बालुकायन्त्र में तीव्राग्नि पर पकावे। फिर स्वांग शीतल होने पर रसको निकालकर चूर्ण करके अद्रक के रसकी भावना दे। इसे ४ माशे की मात्रा में शहद के साथ सेवन करने से आम सहित संग्रहणी का नाश होता है और अग्नि प्रदीप्त होती है। (व्यवहारिक मात्रा— आधे से १ माशा पर्यन्त)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[२५७] अग्निकुमारो रसः (२५)

(यो. र., र. रा. सु., अजी.)

पारदं च विषं गन्धं टङ्कणं समभागतः ।
मरीचादष्टभागाःस्युर्द्वौ शङ्खवराटयोः ॥
पक्वजम्बीरजैर्गाढं रसैः सप्त विभावयेत् ।
गुञ्जाद्वयमितो देयो रसो ह्यग्निकुमारकः ॥
समीरणसमुद्भूतमजीर्णं च विषूचिकाम् ।
क्षणेन क्षपयत्येष कफरोगानिकृन्तनः ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध मीठा तेलिया, सुहागे की खील, १-१ भाग। काली मिर्च का चूर्ण ८ भाग, शंख भस्म २ भाग और कौड़ी भस्म २ भाग। प्रथम पारेगन्धक की कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर सबको खरल करके पक्के जम्बीरी नींबू के रसकी ७ भावना दे। इसे २ रत्ती मात्रा में सेवन करने से वातज अजीर्ण और हैजा तथा कफज रोगोंका शीघ्र ही नाश होता है।

[२५८] अग्निकुमारो रसः (२६)

(र. यो. सा.)

रसगन्धकरसकामृतकल्कःसव्योषभृङ्गरसमिलितः
अग्निकुमारनामा जयति रसो रोगिणामिष्टः ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, खपरिया और शुद्ध वच्छनाग इन सबको बराबर लेकर त्रिकुटे के क्वाथ और भांगरे के रससे क्रमसे भावना देना। यह अग्निकुमार रस सबसे उत्तम है और रोगियों के वास्ते हितकर है।

[२५९] अग्निकुमारो रसः (२७)

(र. यो. सा.)

व्योषं जातीफले द्वे च लवङ्गं च वराङ्गकम् ।
पत्रं शृङ्गी कणा टङ्कं यमानी जीरकद्वयम् ॥
सैन्धवं च विडं हिङ्गु रसं गन्धं च रौप्यकम् ।
लोहमभ्रं समं सर्वं जम्बीररसमर्दितम् ॥
अजीर्णशान्तये खादेच्चतुर्गुञ्जां वटीं नरः ।
अत्यग्निकारकश्चायं रसश्चाग्निकुमारकः ॥
सङ्ग्रहग्रहणीश्चैव वातपित्तकफोद्भवाम् ।
नाशयेदामदोषं च त्रिदोषजनितं च यत् ॥
शूलदोषं विसूचीं च भास्कररितमिरं यथा ।

त्रिकुटा, जायफल, जावित्री, लौंग, दालचीनी, तेजपात, काकड़ासिंगी, पीपल, शुद्ध सुहागा, अजवायन, दोनों जीरे, सेंधानमक, बिड नमक, भुनी हुई हींग, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, चांदी भस्म, लोह भस्म और अभ्रक भस्म। सब समान भाग लेकर पारद गन्धक की कज्जली बनावे फिर उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर जम्बीरी नींबूके रसकी भावना देकर ४–४ रत्ती की गोलियां बनावे। इसके सेवन करने से अजीर्ण का नाश होता है और अग्नि प्रदीप्त होती है। यह वातज, पित्तज और कफज, संग्रहणी, आम दोष, त्रिदोषज शूल और विसूचिका आदि इन सबको इस तरह नष्ट करता है जैसेकि सूर्य अन्ध कारको।

[२६०] अग्निकुमारो रसः (२८)

(र. रा. सु.। अजीर्ण)

समानौ गन्धकरसौ तदर्द्धं वत्सनाभकम् ।
रसस्य ताम्रभस्मोपि समं चूर्णं विमर्दयेत् ॥
हंसपादीरसेनाथ काचकूप्यां विनिक्षिपेत् ।
बालुकायन्त्रविधिना त्रियामं पाचयेद्भिषक् ॥
रसार्द्धममृतं क्षिप्त्वा पुनः सञ्चूर्ण्य मर्दयेत् ।
वह्नित्रिकटुसिन्धूत्थयुक्तेनार्द्रकवारिणा ॥
गुञ्जामात्रो हि दातव्यो मन्दाग्नौ सान्निपातिके ।
धनुर्वातेऽप्यजीर्णो च शूले च क्षयकासयोः ॥
अयमग्निकुमाराख्यो रसः स्यात् प्लीहगुल्मनुत् ॥

शुद्ध परा, ओर शुद्ध गन्धक २–२ भाग,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुद्ध मीठा तेलिया १ भाग और ताम्र भस्म २ भाग लेकर कज्जली करके हंसपादीके रसकी भावना देकर कपरमिट्टी की हुई आतशी शीशी में भरकर यथाविधि वालुका यन्त्र में ३ पहर तक पकावे। फिर स्वांग शीतल होने पर रसको निकालकर उससे आधा शुद्ध मीठा तेलियेका चूर्ण मिलाकर खूब घोटे और चीता, त्रिकुटा, सेंधानमक का चूर्ण मिलाकर अद्रकके रसकी भावना दे।

इसे १ रत्ती प्रमाण में सेवन करनेसे मन्दाग्नि, सन्निपात, धनुर्वात, अजीर्ण, शूल, क्षय, खांसी, तिल्ली और गुल्मका नाश होता है।

[२६१] अग्निकुमारो रसः (बृहदाद्यः) (२९) (र. चं। अजीर्ण)

शुद्धसूतं द्विधा गन्धं गंधतुल्यं च टङ्कणम्।
फलत्रयं यवक्षारं व्योषं पञ्चपटूनि च।
द्वादशैतानि सर्वाणि रसतुल्यानि दापयेत्।
संमर्द्य सप्तधा सर्वं भावयेदार्द्रकजैर्द्रवैः॥
संशोष्य चूर्णयित्वा तु भक्षयेदाद्रकाम्बुना।
माष मात्रं वयो वीक्ष्य नानाऽजीर्णप्रशान्तये॥
रसश्चाग्निकुमारोऽयं महेशेन प्रकाशितः।
महाग्निकारकश्चैष प्रतापे कालभास्करः।
अग्निमांद्यभवान् रोगान्
शोथं पाण्ड्वामयं जयेत्।
दुर्नामग्रहणीसामरोगान् हन्ति न संशयः॥
यथेष्टाहारचेष्टस्य नास्त्यत्र नियम क्वचित्॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, सुहागे की खील २ भाग, त्रिफला, यवक्षार, त्रिकुटा, पांचों नमक, ये बारह चीजें १-१ भाग लेकर प्रथम पारे गन्धक की कज्जली बनावें और फिर अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर खरल करके अद्रकके रसकी ७ भावना दे। फिर सुखाकर चूर्ण करके रक्खे। इसे आयुके अनुसार ४ माशे तक की मात्रा में अद्रकके रसके साथ सेवन करने से अनेक प्रकार का अजीर्ण रोग नष्ट होता है। यह महेश द्वारा प्रकट किया हुवा अग्निकुमार रस अत्यन्त अग्निवर्धक है। रोगों का नाश करने के लिए यह रस प्रलय कालके सूर्य के समान प्रतापवान है यह अग्निमान्द्य जनित रोग, शोथ, पाण्डु, बवासीर, संग्रहणी, और आमविकारों को अवश्य नष्ट कर देता है और अग्नि प्रदीप्त करता है। इसके सेवन कालमें आहारादि का कोई विशेष नियम नहीं है।

[२६२] अग्निकुमारो रसः (३०) (यो. र., वृ. नि. र., र. च., ग्रहण्य)

भागो दग्धकपर्दकस्य च तथा शङ्खस्य भागद्वयं;
भागो गन्धकसूतयोर्मिलितयोः
पिष्ट्वा मरीचादपि।
भागस्य त्रितयं नियोज्य सकलं
निम्बूरसैर्मर्दितम्,
नाम्ना वह्निसुतो रसोऽयमचिरान्माद्यं जयेद्दारुणम्
घृतेन खण्डैः सह भक्षितोऽसौ
क्षीणाक्षरान् हस्तिसमान् करोति।
समागधीचूर्णघृतेन लीढ्वा
नरः प्रमुश्चेद्ग्रहणीविकारात्॥
शोषज्वरारोचकशूलगुल्मान्
पाण्डूदरार्शोग्रहणीविकारान्।
तक्रानुपानी जयति प्रमेहान्
युक्त्या प्रयुक्तोऽग्निसुतो रसेन्द्रः॥

कौड़ी भस्म १ भाग, शंख भस्म २ भाग, समान भाग मिलित पारद गन्धककी कज्जली १

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाग, काली मिर्चका चूर्ण ३ भाग। सबको खरल करके नींबूके रसमें घोटे। इसके सेवनसे दारुण अग्निमांद्यका शीघ्र ही नाश हो जाता है। इसे घी और खांडके साथ सेवन करनेसे क्षीण व्यक्ति हाथी के समान पुष्ट हो जाता है। और घी पीपल से ग्रहणी विकारों का नाश होता है। इसे तक्रके साथ सेवन किया जाए तो प्रमेह रोग नष्ट होता है। इसके अतिरिक्त उचित अनुपान के साथ देनेसे यह शोथ, ज्वर, अरुचि, गुल्म, शूल, पाण्डुरोग, उदर-रोग और अर्शको भी नष्ट करता है। मात्रा—४ रत्ती। और छाछके साथ सेवन करनेसे शोष-ज्वर, अरुचि, शूल, गुल्म, पाण्डु, उदररोग, बवासीर, संग्रहणी, तथा प्रमेहका नाश होता हैं।

[२६३] अग्निकुमारो रसः (३१)

(र. यो. सा.)

विमर्दितो सूत बली समांशौ
ताम्रस्य पत्रेण विमर्द्य पाच्यौ।
विमर्दयेद्वह्निवरारसाभ्यां
पुटं च दद्याद्दशधा पुनस्तत्॥
गुडूचिकाभृङ्गरसद्रवेण च
निर्गुण्डिकासूरणवृद्धदारुकैः।
विमर्दयेत्सप्तदिनं पृथक् पृथक्
सिद्धोभवेदग्निकुमार नामकः॥
अर्शोघ्नचूर्णेन गुडान्वितेन
भल्लातपथ्यामधुनाऽपि युक्तः।
अर्शोविकारञ्जयति द्विवल्लो
मान्द्योदरश्वाससमीरणांश्च॥

शुद्ध पारा, गन्धक और ताम्र पत्र समान भाग लेकर पारदमें ताम्रपत्र डालकर खरल करें जब दोनोंकी पिट्ठी हो जाए तो उसमें गन्धक मिलाकर कज्जली बनावें। तदनन्तर उसे (आतशीशी में भरकर बालुका यन्त्र में रस सिन्दूर बनाने की विधिसे क्रमवर्द्धित अग्नि पर) पकावें। (यदि १० तोले गन्धक हो तो ३० घण्टे पकाना पर्याप्त है) इसके बाद जब शीशी स्वांग शीतल हो जाय तो उसमें से रसको निकालकर ताम्र सहित पीस लें और उसे चित्रक तथा त्रिफलाके क्वाथमें पृथक् पृथक् खरल करके (शराव सम्पुटमें बन्द करके) पुट लगादें। इसी प्रकार चित्रक और त्रिफलाके क्वाथ में घोटकर दस पुट दें। तत्पश्चात् गिलोय, भंगरा, संभालु, सूरण (जिमीकन्द) और विधारे के स्वरस या क्वाथमें पृथक् पृथक् ७-७ दिन खरल करें।

इसे सूरण के चूर्ण और गुड़के साथ या शुद्ध भिलावा, हरड और मधुके साथ सेवन करनेसे अर्श, अग्निमांद्य, उदररोग, श्वास और वातव्याधि का नाश होता है। मात्रा—६ रत्ती (व्यवहारिक मात्रा—१-२ रत्ती)

[२६४] अग्निकुमारलोहम्

(र. चि. । अ. ९)

तुत्थरामठटङ्कानि सैन्धवं धान्य जीरकम्।
यमानी मरिचं शुण्ठी लवङ्गैलाविडङ्गकम्॥
प्रत्येकं तोलकं चूर्णं लौहचूर्णं तु तत्समम्।
रसस्य गन्धकस्यापि पलैकं कज्जली कृतम्॥
घृतेन मधुना खाद्यं लौहमग्नि कुमारकम्।
यकृत्प्लीहोदरहरं गुल्मं चापि हलीमकम्॥
बलवर्णाग्नि जननं कान्तिपुष्टि विवर्द्धनम्।
श्रीमद्गहननाथेन निर्मितं विश्व सम्पदे॥

तूतियाकी भस्म, भुनी हुई हींग, सुहागे की खील, सेंधा नमक, धनियां, जीरा, अजवायन, काली मिर्च, सोंठ, लौंग, छोटी इलायची और बायबिडङ्ग, इनका १।-१। तोला चूर्ण ले। लोहभस्म सबके बराबर। तथा पारद और गंधककी कज्जली ५ तोला। इसे घी और शहदके साथ मिलाकर सेवन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करनेसे प्लीहा, यकृत्, उदर रोग, गुल्म(गोला) और हलीमकका नाश होता है तथा बल, वर्ण, अग्नि, कान्ति और पुष्टि बढ़ती है।

[२६५] अग्नितुण्डोरसः (र.र.स.। अ.र.)

उदराध्माननुत्यर्थं रसो ह्येष निगद्यते।
अग्नितुण्ड इति विख्यातः सर्वोदरगदापहः॥
रसगन्धाजमोदानां कृमिघ्नब्रह्मबीजयोः।
एकद्वित्रिचतुःपञ्चभागान्षड्विषतिन्दुकात्॥
सञ्चूर्ण्य मधुना सर्वं गुटिकां कृमिनाशिनीम्।
खादयित्वानुतोयं च मुस्तानां कृमिशान्तये॥
आखुपर्णीकषायं च शर्करां पिब सर्वथा।
कृमिज्वरोपशान्त्यर्थं खण्डामलकमत्ति वा॥
स जग्ध्वैवं पर्पटी च स्नुहीरसं पिबेदनु।
स्नुहीरसं विना कश्चिच्छेत्तुं जन्तुन्न शक्नुयात्॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, अजमोद ३ भाग, बायबिड़ंग ४ भाग, ढाकके बीज (पलास पापड़ा) ५ भाग और शुद्ध कुचला ६ भाग। प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावें और उसमें अन्य औषधियोंका चूर्ण मिलाकर खूब खरल करके शहदके साथ (३-३ रत्तीकी) गोलियां बनावे। इन्हें कृमि रोगके लिये मोथेके क्वाथके साथ या चूहाकन्नी के कषाय और चीनीके साथ सेवन करना चाहिये। कृमि ज्वरके लिये इसे खानेके पश्चात् आमला और खांड मिलाकर खाना चाहिए, कृमि रोगकी शान्तिके लिए उक्त विधिसे रस अथवा पर्पटी (रसपर्पटी) खाकर थूहरके पत्तोंका रस अवश्य पीना चाहिए क्योंकि थूहरके पत्तोंके रसके बिना प्रायः कृमियोंका नाश नहीं होता।

[२६६] अग्निदीपनरसः (र.प्र.सु.। अ. ८)

पारदामृतलवङ्गगन्धकं,
भागयुग्ममरिचेन मिश्रितम्।
अत्रजातीफलमर्धभागिकं,
तिन्तिडीकरसकेन मर्दितम्॥
माषमात्रमनुपानमार्द्रकं,
सद्य एव जठराग्निदीपनः॥

शुद्ध पारा, शुद्ध बच्छनाग, शुद्ध गन्धक, और लौंग १-१ भाग, कालीमिर्च २ भाग तथा जायफल आधा भाग। प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियोंका चूर्ण मिलाकर तिन्तिडीकके रसकी भावना देकर रक्खे। इसे १ माशेकी मात्रामें अद्रकके रसके साथ सेवन करनेसे शीघ्र ही अग्नि प्रदीप्त होती है। व्यवहारिक मात्रा-३ रत्ती

[२६७] अग्निप्रदोरसः (र.प्र.सु.। अ. ८)

कर्षौ द्वौ रसगन्धयोस्तु समयोः संमर्द्य व्यालस्यवै।
कर्षैकेन विषेण कज्जलनिभं काचस्य कूप्यां क्षिपेत्॥
लिप्त्वाकर्पटमृत्स्नया सुविधिना सम्पाच्ययामाष्टकं।
ज्ञात्वा शीतलमत्र विधिना मर्द्य द्विकर्षोषणैः॥
भक्षेद्रक्तिकमिक्षुशर्करयुतं नाम्ना रसोऽग्निप्रदो।
मन्दाग्निक्षयसन्निपातमरुतां नाशाय चायं वरः॥

शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक १।-१। तोला लेकर कज्जली बनावें और फिर उसमें सीसा(भस्म) तथा शुद्ध बच्छनाग १।-१। तोला, लाल चीता, मीठा तेलिया १।-१। तोला। सबको घोटकर कपर मिट्टीकी हुइ आतशी शीशीमें भरकर (मुख बन्द करके) विधिवत् ८ पहर तक (बालुका यन्त्रमें) पकावे इसके बाद स्वाङ्ग शीतल होनेपर निकालकर उसमें २॥ तोला काली मिर्चका चूर्ण मिलाकर मर्दन करे।

इसे ईखके रस या चीनी के साथ १ रत्तीकी मात्रा में सेवन करने से मन्दाग्नि, क्षय, वायु और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्निपातका नाश होता है। इन रोगोंके लिए यह एक उत्तम रस है।

[२६८] अग्निमुखताम्रम्

(र. र. । अ. पि.)

गन्धकेनाक्षमात्रेण सूततुल्येन निर्म्मिता।
कज्जली या तया लेप्यं ताम्रपत्रन्तुतत्समम्॥
अर्जुनत्वग्रसैः सार्द्धं पक्वोदुम्बरपल्लवे।
आच्छाद्य पञ्चलवणैश्चूर्णैश्चापि च मृण्मये॥
अन्धमूषागतं ध्मात तत्सिद्धं भक्षयेन्नरः।
शाणकं रक्तिकावृद्ध्या मासमात्रं प्रयोगतः॥
अम्लपित्तं क्षयं शूलं जरत्पित्तं सुदारुणम्।
सप्तरात्रप्रयोगेण शरीरःनिर्म्मलं भवेत्॥

१।-१। तोला शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक की कज्जली बनाकर उसे अर्जुनकी छालके क्वाथसे खरल करे इस कज्जलीसे २॥ तोले शुद्ध तांबे के पत्रों पर लेप करदें। तदनन्तर उन्हें गूलरके पत्तोंमें लपेट कर और पत्थरके चूनेके चूर्णके बीचमें रखकर मट्टीके अन्धमूषामें पकावे। इसे १ रत्तीकी मात्रासे आरंभ करके धीरेधीरे मात्रा बढाते हुवे १ मास तक सेवन करें। इसकी अधिकसे अधिक मात्रा १ शाण (४ माशा) की है। (वर्तमान कालमें पूर्ण मात्रा ४ रत्ती समझनी चाहिए) इसको एक २ रत्ती रोज़ बढ़ाता हुआ १ शाण तक खावे, इससे अम्लपित्त, क्षय, शूल, और दारुण पक्ति-शूल सात रोजमें दूर होजाते हैं, और शरीर दोष रहित होजाता है।

[२६९] अग्निमुख-मण्डूरम्

(भै. र. । शोथे)

पलद्वादशमण्डूरं गोमूत्रेऽष्टगुणे पचेत्।
पञ्चकोलं देवदारु मुस्तं व्योषं फलत्रयम्॥
विडङ्गं पलमात्रन्तु तक्रेण चूर्णितं क्षिपेत्।
पाययेदक्षमात्रन्तु तक्रेण सह बुद्धिमान्॥
असाध्यं श्वयथुं हन्ति पाण्डुरोगं चिरोद्भवम्।
ख्यपमग्निमुखं नाम सर्पिः क्षौद्रेण मर्दयेत्॥

६० तोले मण्डूर (भस्म)को ८ गुने गोमूत्रमें पकावे और पाकके अन्तमें उसमें पीपल,पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ, देवदारू, नागरमोथा, त्रिकुटा, त्रिफला और वायबिड़ंग; इनमें से प्रत्येकका चूर्ण ५-५ तोले मिलावे। इसे प्रतिदिन १। तोलेकी मात्रामें तक्रके साथ सेवन करनेसे असाध्य शोथ (सूजन) और पुराने पाण्डुका नाश होता है। इसे घी और शहदमें मिलाकर खाना चाहिये। व्यवहारिक मात्रा-३ माषा।

[२७०] अग्निमुखो रसः (१)

(र.सा.सं., शूले. । र.का.धे.,वृ. यो. त. । त. ८४)

रसबलिगगनार्कं वेतसाम्लं विषं स्यात्
सवरमिह पृथक्स्याद्भावयेद्रसमेतैः।
कनकभुजगवल्लीकण्टकारीजयाद्भिः
कमलसलिलवासामुष्टिरास्नाम्बुनीरैः॥
अरुणसदृशशाकैर्मातुलुङ्गोऽथ योज्यः
पटुगण रस तुल्यो भावयेदार्द्रकाद्भिः।
दहनवदनसंस्थो वल्लमात्रो निहन्ति
प्रबलपवनशूलं तद्विकाराश्चसर्वान्॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, ताम्र-भस्म, अमलवेत, शुद्ध वच्छनाग और त्रिफला यह सब औषधियां समान भाग लेकर प्रथम पारा गन्धककी कज्जली करके उसमें अन्य औषधियोंका चूर्ण मिलाकर धतूरेके पत्ते, नागरवेलके पान,कटेली, जैत, कमलका फूल, अडूसा, कुचला, रास्ना सुगंधबाला लाल शाक, और बिजोरा नींबू, इनमेंसे प्रत्येक रस या क्वाथकी १-१ भावना देकर उसमें सबके बराबर पांचो नमक मिलाकर पुनः अदरक के रसमें घोटें। दो दो रत्ती की गोलियां बना लेवे। इन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गोलियोंको सेवन करने से प्रबल वातज शूलरोग और शूलजनित अन्यान्य विकार नष्ट होते हैं।

[२७१] अग्निमुखोरसः (२)

(यो.र.,अजी. । र.का.धे., वृ.यो.त. ७१)

सूतं गन्धं विषं तुल्यं मर्दयेदार्द्रकद्रवैः ।
अश्वत्थचिञ्चापामार्गक्षारःक्षारौ च टङ्कणम् ॥
जातीफलं लवङ्गं च त्रिकटु त्रिफलासमम् ।
शङ्खक्षारं पञ्चलवणं हिङ्गुजीरं द्विभागिकम् ॥
मर्दयेदम्लयोगेन गुञ्जामात्रावटी शुभा ।
पाचनी दीपनी सद्योऽजीर्णशूलविषूचिकाम् ॥
हिक्कां गुल्मं च मोहं च नाशयेन्नात्र संशयः ।
रसेन्द्रसंहितायां च नाम्ना वह्निमुखो रसः ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक और शुद्ध बच्छनाग, १-१ भाग लेकर कज्जली बनावें अदरकके रसमें खरल करे, फिर पीपल, इमली और ओंगा इनका खार, जवाखार, सज्जीखार, सुहागेकी खील, जायफल, लौंग, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, हैड़, बहेड़ा और आंवला १-१ भाग लेवे तथा शंख भस्म, पांचों नमक, हींग और जीरा दो दो भाग लेवे, इन का चूर्ण बनाकर सबको नींबूके रसमें खरल करके १-१ रत्तीकी गोलियां बनावें। यह रस पाचन करता है, जठराग्निको दीपन करता है और अजीर्ण, शूल, विषूचिका, हिचकी, गुल्म (गोला) और मोह शीघ्र नष्ट करता है इसमें संदेह नहीं है। रसेन्द्र-संहिता में इसका नाम वन्हिमुख रस है।

[२७२] अग्निमुखो रसः

(र. र. स. । अ. १८)

पारदं माक्षिकं ताम्रं कृष्णाभ्रं गन्धकं त्रयम् ।
मणिमन्थं विषं हिङ्गु त्वङ्निशाकन्दकांचनान् ।
रक्तमारीषनिर्गुण्डीमहाराष्ट्र्याठरूषकैः ।
जयाजयन्तीनिर्यासैस्तथा च विषतिन्दुकैः ॥
मर्दितं कुक्कुटपुटे पचेदग्निमुखाह्वयः ।
अष्टगुञ्जामितः सोयं प्रयोज्यः साज्यनागरैः ।
हिङ्गुसौवर्चलोष्णाम्बुयुतो वा गुल्मशूलनुत् ॥

शुद्ध पारा, सोनामक्खी भस्म, ताम्र भस्म, कृष्णाभ्रक भस्म, तीन प्रकारका गन्धक, (श्वेत, पीला, काला) सेंधा नमक, शुद्ध बछनाग, भुनी हींग, दालचीनी, हल्दी, जिमीकन्द और स्वर्ण भस्म समान भाग लेकर प्रथम पारा गन्धककी कज्जली बनाकर और उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर लाल चौलाई, निर्गुंडी, महाराष्ट्री अडूसा, अरणी, जैत और कुवलेके रस या क्वाथकी एक एक भावना देकर कुक्कुटपुटमें पकावे। इसे आठ रत्ती की मात्रा में घी और सोंठ अथवा हींग और सौंचल में मिश्र कर गरम पानीके साथ देनेसे गुल्म और शूलका नाश होता है। व्यवहारिक मात्रा-२ रत्ती।

[२७३] अग्निमुख लोहम्

(भै. र. । अर्श.)

त्रिवृच्चित्रकनिर्गुण्डी स्नुहीमुण्डिरिका जटाः ।
प्रत्येकशोऽष्टपलिकान् जलद्रोणे विपाचयेत् ॥
पलत्रयं विडङ्गाच्च व्योषं कर्षत्रयं पृथक् ।
त्रिफलायाः पलान् पञ्च शिलाजतु पलं न्यसेत् ।
दिव्यौषधिहतस्यापि वैक्रान्तहतस्य वा ।
पलद्वादशकं देयं रुक्मलौहस्य चूर्णितम् ॥
पलैश्चतुर्विंशत्याज्यान्मधुशर्करयोरपि ।
घनीभूते सुशीते च दापयेदवतारिते ॥
एतदग्निमुखं नाम दुर्नामान्तकरं परम् ।
मन्दाग्निं करोत्याशु कालाग्निसमतेजसम् ॥
पर्वताश्चापि जीर्यन्ति प्राशनादस्य देहिनाम् ।
दुर्नामपाण्डुश्वयथुकुष्ठप्लीहोदरापहम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकालपलितं हन्यादामवातं गुदामयम् ।
न स रोगोऽस्ति यं चापि न निहन्ति क्षणादिदम् ॥
करीरकाञ्जिकादीनि ककारादीनि वर्जयेत् ॥

निसोत, चीता, निर्गुण्डी, थूहर, मुण्डी की जड प्रत्येक ४०-४० तोला लेकर सबको कूटकर ३२ सेर जलमें पकावे । जब ८ सेर पानी रह जाय तो उसे छान कर पुनः पकावे और गाढा हो जाने पर उतार कर ठंडा करके उसमें बायबिड़ंग १५ तोले, त्रिकुटा ३॥। तोला, त्रिफला २५ तोले शिलाजीत ५ तोला, मन्सिल या वैकङ्कत (सुवावृक्ष) से भस्म किया हुवा तीक्ष्ण लोह ६० तोला, घी, शहद, और चीनी प्रत्येक १२० तोला मिलावे । यह अग्निमुख लोह अत्युत्तम अर्शनाशक औषध है । इसके सेवनसे मन्दाग्नि शीघ्र ही कालाग्निके समान (अत्यन्त तीव्र) होजाती है । इसे सेवन करनेवाला रोगी पत्थर भी पचा डालता है । यह रस पाण्डु, शोथ, कुष्ट, तिल्ली, उदररोग, अकालमें बालोंका पकना, आमवात और गुद रोगोंका नाश करता है । ऐसा कोई रोग नहीं जिसे यह नष्ट न कर दें । इसके सेवन कालमें करीर, कांजी आदि [१]ककारादि पदार्थोंका सेवन न करना चाहिए ।

[२७४] अग्निरसः (१) (र. र. स. । अ. १३)

रसगन्धकपिप्पल्यो हरीतक्यक्षवासकम् ।
षडुत्तरगुणं चूर्णं बब्बूलक्वाथभावितम् ॥
एकविंशतिवाराणि शोषयित्वा विचूर्णयेत् ।
भक्षयेन्मधुना हन्ति कासमग्निरसो ह्ययम् ॥

शुद्ध पारद, १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, पीपल ३ भाग, हरीतकी (हर्रे) ४ भाग, बहेड़ा ५ भाग, अडूसा ६ भाग लेकर प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर बबूलकी छालके क्वाथकी २१ भावना देकर रक्खे । इसे शहदके साथ देनेसे खांसीका नाश होता है । मात्रा—३ माशे ।

[२७५] अग्निरसः (२) (र. प्र. सु. । अ. ८)

सूतं द्विधा गन्धकभागयुग्मं
कुर्याच्च खल्वेन तु कज्जलीं हि ।
तस्याःसमं तीक्ष्णकचूर्णमेव
सम्मर्दयेत्खलु रसेन च कन्यकायाः ॥
आच्छाद्य पत्रेण रुबूद्भवेन
यामार्धकेनाप्यथ उष्णता भवेत् ।
धान्यस्य राशौ विनिवेश्य सप्त
दिनानि सम्मर्द्य ततो दृढं हि ॥
वस्त्रेण संगाल्य ततो हि यत्ना-
च्चूर्णकं वारितरं हि सत्यम् ।
व्योषं चतुर्जातवरालवङ्गं
जातीफलैलं च समांशकानि ॥
सञ्चूर्ण्य सर्वं समभागतीक्ष्णं
क्षौद्रेण लीढं खलु निष्कमात्रकम् ।
रसोऽग्निनामा क्षयकासजूर्ती-
र्विनाशयत्येव न संशयोऽस्ति ॥

शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग लेकर कज्जली बनावे और फिर उसमें ३ भाग लोहभस्म मिलाकर घीकुमारी के रसमें घोटे । और सबका एक गोला बनाकर अरण्ड के पत्तों में लपेट कर आधा पहर तक (अग्नि पर) गरम करके अनाज के ढेरमें दबा दे । सातदिन पश्चात् उसे निकाल कर खूब घोट कर कपड़ेमें छानले यह लोहकी वारितर भस्म है । त्रिकुटा, तेजपात, दाल-

१ कालशाक, कुष्माण्ड, कर्कटी, कर्कन्धु, कर्कोटक, कुलिंग, करमर्द, करीर, कतक, कशेरु और काञ्जी ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चीनी, इलायची, नागकेशर, त्रिफला, लौंग, जाय फल और इलायची। यह सब चीजें समान भाग लेकर इनका चूर्ण तथा उपरोक्त लोह भस्म सबके बराबर लेकर सबको एकत्र खरल करे। इसे ४ माशेकी मात्रामें मधुके साथ सेवन करने से क्षय, और खांसीका नाश होता है। व्यवहारिक मात्रा— २ रत्ती।

[२७६] अग्निसन्दीपनो रसः

(र. रा. सु, भै. र। अजी.)

षड्षणं पञ्चपटु त्रिक्षारं जीरकद्वयम्।
ब्रह्मदभोग्रगन्धा च मधुरी हिङ्गुचित्रकम्॥
जातीफलं तथा कुष्ठं जातीकोषं त्रिजातकम्।
चिञ्चाशेखरिकक्षारममृतं रसगन्धकौ॥
लोहमभ्रं च वङ्गं च लवङ्गं च हरीतकी।
समभागानि सर्वाणि भागौ द्वावम्लवेतसात्॥
शङ्खस्यभागाश्चत्वारःसर्वमेकत्र भावयेत्।
क्वाथेनपञ्चकोलस्य चित्रापामार्गयोस्तथा॥
अम्ललोणीरसेनैव प्रत्येकं भावयेत् त्रिधा।
त्रिसप्तकृत्वो लिम्पाकरसैःपश्चाद्विभावयेत्॥
बदराभावटी कार्या योक्तव्या सन्ध्ययोर्द्वयोः।
अनुपानं प्रदातव्यं बुध्या दोषानुसारतः॥
अग्निसन्दीपनो नाम रसोऽयं भुविदुर्लभः।
दीपयत्याशु मन्दाग्निजीर्णं च विनाशयेत्।
अम्लपित्तं तथा शूलं गुल्ममाशु व्यपोहति॥

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, काली मिर्च, पांचोंनमक, जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, सफेद जीरा, काला जीरा, अजवायन, बच, सौंफ, भुनी हुई हींग, चीतेकी छाल, जायफल, कूठ, जावित्री, दालचीनी, तेजपात, इलायची, इमली का क्षार, चिरचिटेका क्षार, शुद्ध बच्छनाग, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, वंगभस्म, लौंग और हरड़का चूर्ण १–१ भाग। अम्लवेत २ भाग और शंख भस्म ४ भाग लेकर प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर सबको कूट पीसकर पंचकोल, चिता, ओंगाके काढे और खट्टे लोनिया क रसकी ३–३ भावना और नीबूके रसकी २१ भावना देकर छोटे बेरके समान गोलियां बनाकर रक्खे। प्रातः काल और सायंकाल दोनों वक्त एक दो गोलियां दोषके अनुसार अनुपान के साथ सेवन करने से अग्नि शीघ्र ही दीप्त हो जाती है। यह संसार दुर्लभ अग्नि सन्दीपन रस मंदाग्नि, अजीर्ण, अम्लपित्त, शूल और गोला आदि का शीघ्र नाश करता है।

[२७७] अचिन्त्य शक्तिरसः

(र. रा.। ज्वरे सुं, भै. र।)

रसगन्धकयोर्ग्राह्यं प्रत्येकं माषकद्वयम्।
भृङ्गकेशाख्यनिर्गुण्डी मण्डूकी पत्रसुन्दरः॥
श्वेतापराजितामूलं शालिञ्चकालमारिषम्।
सूर्यावर्त्तःसितश्चैषां चतुर्माषकसम्मितैः॥
प्रत्येक स्वरसैःश्लक्ष्णं शिलायामवधानतः।
स्वर्णमाक्षिकमाषञ्च दत्वा मरिचमाषकम्॥
नेपालताम्रदण्डेन घृष्ट्वा तत्कज्जलद्युतिम्।
वटीमुद्रोपमाकार्य्या छायाशुष्का तु रक्षिता॥
प्रथमे वटिकास्तिस्रः कृत्वा नवशरावके।
ततःसमर्पणं सूर्य्ये पूजयित्वा प्रणम्य च।
वारिणा गालयित्वा तु पातुं देयञ्च रोगिणे॥
स्वेदोपवासविहिते क्लान्ते चाल्पबले तथा।
द्वितीयेह्निवटीयुग्मं वटीमेकां तृतीयके॥
यावत्यो वटिका देयास्तावज्जलशरावकम्।
तुलायदधिसंयुक्तं भक्तं भोज्यं यथेप्सितम्॥
पथ्यमग्निबलं वीक्ष्य वारिभक्तरसं तथा।
शिरश्चलनशूलादौ तैलं नारायणादि च॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्निपातं निहन्त्याशु ज्वरांश्च विविधांस्तथा ।

शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक दो–दो माशे लेकर दोनोंकी कजली करके भांगरा, सुगन्धवाला, निर्गुण्डी, ब्राह्मी, गूर्मा, सफेद कोयलकी जड़, शालिश्च–शाक, कालमारिष (बड़े पत्तेकी चौलाई) और सफेद सूर्यावर्तके चार-चार माशे स्वरसकी भावना देकर पीछे सोना मक्खी भस्म १ माशा, काली मिर्च १ माशा मिलाकर सबको नेपाली तांबेके मूसले से घोटकर कज्जलीके समान करे । फिर मूंगके समान गोलियां बनावे । उनको छायामें सुखाकर अच्छी तरह रख छोड़े । जिसने पसीना और उपवास किया हो तथा क्लेशित शरीर और अतिनिर्बल पुरुषको प्रथम दिन ३ वटी मिट्टीके कोरे शरावमें रखकर भगवान भास्करकी पूजा करके उन्हें प्रणाम करें और फिर गोलियोंको पानीमें घोलकर रोगीको पिलादें । इसी प्रकार दूसरे दिन २ गोली, तीसरे दिन १ गोली देवे, जितनी गोली देवे उतनी ही सरैया जलकी देनी चाहिएं, और अग्निका बलाबल देखकर पथ्य देना चाहिये । यदि इसके सेवन करनेसे शिरका घूमना, तथा मस्तक शूल हो तो नारायण तैल आदिका मर्दन करना चाहिये । इसके सेवनसे सन्निपात और अन्य विविध प्रकारके ज्वर शीघ्रही नष्ट हो जाते हैं ।

[२७८] अजीर्णकंटकोरसः (भा.प्र.। अजी.)

टङ्कणकणामृतानां सहिङ्गुलानां समं भागाः ।
मरिचस्य भागयुगलं निम्बूनीरैर्वटी कार्या ॥
वटिकां कलायसदृशीमेकां द्वे वा समश्नीयात् ।
सत्यमजीर्णे शान्त्यै वह्नेर्वृद्ध्यैः कफध्वस्त्यै ॥

सुहागेकी खील, पीपल, शुद्ध बच्छनाग और हिंगुल १–१ भाग, काली मिर्चे २ भाग लेकर नींबूके स्वरससे खरल करके मटरके समान गोलियां बनावे । इनमें से एक अथवा दो गोलीयां खानेसे अजीर्ण शांत हो जाता है, अग्निकी वृद्धी होती है और कफका नाश होता है ।

[२७९] अजीर्णकण्टकोरसः

(भै. र., रसें. चि. म., अ. ९; यो. र. अजी.)

शुद्धसूतविषगन्धकं समं तुल्यभागमरिचंच चूर्णितं
मर्दयेत्तु बृहतीफलद्रवैरेकविंशतिविभावितं पुनः॥
गुञ्जिकात्रयमिदं सुभक्षितंसद्य एव जठराग्निवर्धनं ।
एषकंटकरसोविषूचिकाजीर्णमारुतगदान्निहन्तिच

शुद्ध पारा, शुद्ध बच्छनाग और शुद्ध गन्धक १–१ भाग तथा काली मिर्चे ३ भाग । प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनाकर और फिर अन्य सबका चूर्ण मिलाकरके कटेलीके फलके रसकी २१ भावना देवे, फिर तीन २ रत्तीकी गोलियां बनावे । एक २ गोली नित्य खानेसे अग्निकी वृद्धि तथा विसूचिका अजीर्ण और बातरोगोंका नाश होता है ।

[२८०] अजीर्णबल-कालामलो रसः

(र. रा. सुं.। अजी.)

द्विपलं शुद्धसूतं च गन्धकं च समं मतम् ।
लोहं ताम्रं हरितालं विषं तुत्थं सवङ्गकम् ॥
पलप्रमाणं च प्रथग् लवङ्गं टङ्कणं तथा ।
दन्ती मूलं त्रिवृच्चूर्णमेकैकं पलसम्मितम् ॥
अजमोदो यवानी च द्विक्षारौ लवणानि च ।
पृथगर्द्धपलं ग्राह्यमेकीकृत्य च भावयेत् ।
आर्द्रकस्वरसेनैकविंशतिं पञ्च कोलजैः ।
दशधा भावयेत्तोयैर्गुडूचीनां रसैर्दश ॥
सर्वार्द्धं मरिचं दत्वा काचकूप्यां च धारयेत् ।
चणमात्रां वटीं कृत्वा छायायां परिशोषयेत् ॥
रसोऽजीर्णबलकालानल एष प्रकीर्तितः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनेककालनष्टाग्नेर्दीपनः परमः स्मृतः ॥
आमवातकुलध्वन्सी प्लीहपाण्डुगदापहः ।
प्रमेहानाहविष्टम्भसूतिकाग्रहणीहरः ॥
श्वासकासप्रतिश्यायतयक्ष्मक्षयविनाशनः ।
अम्लपित्तं च शूलं च भगन्दरगुदोद्भवौ ॥
अष्टोदराणि प्लीहानं यकृतं हन्ति दारुणम् ।
आकण्ठ भोजयित्वा तु खादयेच्च रसोत्तमम् ॥
अर्धयामेन तत्सर्वं भस्मीभवति निश्चितम् ।
चतुर्विधरसोपेतं महाभोजनमिच्छतः ॥
भोजस्य नृपतेः कांक्षा भोजने कृपया कृता ।
गहनानन्दनाथेन सर्वलोकहितैषिणा ॥

शुद्ध पारा और गन्धक १०-१० तोले, लोह भस्म, ताम्रभस्म, हरताल, शुद्ध वच्छनाग, नीला थोथा (भस्म), बंग भस्म, लौंग, सुहागेकी खील, दन्तीमूल और निसोत, ५–५ तोले। अजमोद, अजवायन, सज्जीखार, यवक्षार, पांचों लवण, २॥–२॥ तोले लेवे। प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावें और अन्य सबका चूर्ण करके अभ्रक के रसकी २१, पंचकोल के क्वाथकी १०, गिलोयके रसकी १० भावना देकर फिर सबके वजन से आधा काली मिर्चका चूर्ण मिलाकर चनेके बराबर गोलियां बनाकर छायामें सुखा लेवे। इसका नाम "अजीर्णबल–कालानल" रस है। बहुत समयसे नष्ट हुई अग्नि प्रदीप्त करनेके लिये यह अत्युत्तम औषध है। यह रस आमवात रोगके कुलको विध्वस्त कर देता है। इसके अतिरिक्त यह तिल्ली, पाण्डु, प्रमेह, अफारा, कब्ज, सूतिका रोग, ग्रहणी विकार, श्वास, खांसी, प्रतिश्याय, राजयक्ष्मा, क्षय, अम्लपित्त, शूल, भगन्दर, अर्श, आठ प्रकारके उदर रोग और दारुण यकृत्प्लीहा रोगको भी नष्ट करता है, कण्ठ पर्यन्त भोजन करनेके पश्चात् यह रस खा लेनेसे आधे पहरमें वह सब अवश्य पच जाता है। महाराज भोजकी चार प्रकारके (मधुर, अम्ल, लवण, कटु) रसोंसे युक्त बहुत अधिक भोजन करनेकी इच्छा होने पर सर्वहितैषी गहनानन्दनाथने कृपा करके यह रस उन्हें बतलाया था।

[२८१] अजीर्णारि रसः (वृ. नि.र.। अजी.)

शुद्धं सूतं गन्धकं च पलमानं पृथक् पृथक् ।
हरीतकी च द्विपला नागरस्त्रिपलःस्मृतः ॥
कृष्णा च मरिचं तद्वत्सिन्धूत्थं त्रिपलं पृथक्।
चतुष्पला च विजया मर्दयेन्निम्बुकद्रवैः ॥
पुटानि सप्तदेयानि घर्ममध्ये पुनः पुनः ।
अजीर्णारिरयं प्रोक्तः सद्योदीपनपाचनः ॥
भक्षयेद् द्विगुणं भक्ष्यं पाचयेद् रेचयेदपि ॥

शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक ५–५ तोले, हैड़ १० तोले, सोंठ, पीपल, काली मिर्च, सेंधानमक १५–१५ तोले, भांग २० तोले। प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावें और फिर अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर नींबूके रसमें घोट कर धूपमें सुखावें। इसी प्रकार ७ भावना दें। इसके सेवन से मन्दाग्नि, अजीर्ण और कब्ज दूर होता है। इससे क्षुधा दो गुनी हो जाती है। यह आहारको पचाता भी है और मलका रेचन भी करता है। (मात्रा–२ माशे.)

अञ्जनभैरवरसः–प्रयोग. सं.८९०३ देखिए।
अञ्जनरसः–प्रयोग. सं. ८९०४ तथा ८९१७ देखिए।

[२८२] अतिसारेभसिंहो रसः

(र. रा. सु. अति.)

पारदं गन्धकं शुद्धमहिफेनं च तत्समम् ।
मर्दयेद्विजया द्रावैर्धत्तूरस्य रसैः पुनः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जातीफलं चतुर्थांशं माषमात्रन्तु भक्षयेत्।
अतिसारेभसिंहोऽयं विख्यातो रस सागरे ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और अफीम ४-४ तोले और १ तोला जायफल लेकर प्रथम पारे और गन्धककी कज्जली बना कर सबको भांग और धतूरे के रसमें घोटे। इसे १ माशे की मात्रा में सेवन करनेसे अतिसार का नाश होता है। रससागर ग्रन्थमें वर्णित यह रस अतिसार रूपी हाथीके लिये सिंहके समान है। (व्यवहारिक मात्रा—४ रत्ती)

[२८३] * अतिसारवारणरसः

(र. सा. सं.। अति.)

दरदं कृतकर्पूरं मुस्तेन्द्रयवसंयुतम्।
सर्वातीसारशमनं खाखसीक्षीरभावितम् ॥

शुद्ध हिंगुल, पक्वकपूर, नागरमोथा और इन्द्र जौं ये सब औषधियां समान भाग लेकर पोस्तके दूध (पोस्तके डोडेसे जो दूध जैसा द्रव निकलता है) की सात भावना देवे। इसको यथायोग्य अनुपान और उचित मात्रानुसार सेवन करनेसे सब प्रकार का अतिसार नष्ट होता है। इसको अतिसारवारण रस कहते हैं।

[२८४] अतिसारहरो रसः

(र. प्र. सु. अ. ८)

रालमोचरसनागफेनकं
वत्सकातिविषमेव नागरम्।
चूर्णितं च मधुनावलेहितं
वल्लमात्रमतिसारकं जयेत् ॥

राल, मोचरस, अफीम, कुडेकी छाल, अतीस और सोंठ समान भाग लेकर चूर्ण बनावें। इसे शहदके साथ सेवन करनेसे अतिसारका नाश होता है। मात्रा २ या ३ रत्ती।

* रसराजसुन्दरस्यातिसारवलनोरसः

[२८५] अतिसारान्तकोरसः

(रसा. सा. अति.)

सुवर्णसिन्दूररसेन मर्दिता,
कर्पूरकृष्टेन रसेन निर्मिता।
सूतार्द्ध कार्त्त स्वरभस्मपर्पटी,
रुणद्ध्यतीसारप्रवाहमन्तकम् ॥

स्वर्ण सिन्दूर (षड गुण बलिजारित) १ भाग, रस कर्पूरसे निकले हुवे पारे और पारेसे आधे स्वर्ण से बनी हुई स्वर्ण पर्पटी १ भाग। दोनोंको मिलाकर घोटकर रक्खे। इसके सेवन से अतिप्रबल अतिसार का नाश होता है।

[२८६] अनिलरसः (रसे. चि. म. अ. ९)

ताम्रभस्म रसभस्म गन्धकं
वत्सनाभमपि तुल्यभागिकम्।
वह्नितोपरिमर्दितं पचेत्
यामपादमथ मन्दवह्निना ॥
रक्तिकायुगलमानतोऽनिलः
शोथपाण्डुघनपंचकशोषकः ॥

ताम्रभस्म, पारद भस्म, शुद्ध गन्धक, और शुद्ध वत्सनाभ; इन सबको बराबर लेकर चूर्ण करके चीतेके क्वाथमें घोट कर मन्दी आंचसे चौथाई प्रहर तक पकावे। इसका नाम अनिल रस है इसे दो रत्ती की मात्रा में सेवन करने से सूजन, पाण्डु आदि का नाश होता है।

[२८७] अनिलारिरसः

(र. रा. सु., वा. व्या.)

रसेन गन्धं द्विगुणं विमर्द्य
वातारिनिर्गुण्डिरसैर्दिनैकम्।
निवेशयेत्ताम्रमये पुटे तत्
सर्वं मुद्रावेष्ट्य च वालुकाख्ये ॥
यंत्रे पुटेद्गोमयचूर्णवन्हौ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वभावशीतं तु समुद्धरेत्तत् ।
निर्गुण्डिकावातहराग्नितोयैः
संचूर्ण्य यत्नेन विभावयेत्तत् ॥
रसोनिलारिःकथितोऽस्यवल्ल-
मेरण्डतैलेनससैन्धवेन ।
मरीचचूर्णेन ससर्पिषा वा
निर्गुण्डिचित्रैश्च कटुत्रिकैर्वा ॥

शुद्ध पारा १ तोला, और शुद्ध गन्धक २ तोला लेकर कज्जली करके अरंड और निर्गुंडी के रसमें १-१ दिन खरल करे, फिर उसको तांबेके संपुटमें रखकर कपर मिट्टी करके वालुका यन्त्रमें आरने-उपलोंकी अग्नि देवे, जब स्वांग शीतल हो जावे तब निकालकर निर्गुंडी, अरंड, चीता इनके रसोंकी पृथक् पृथक् भावना देवे। इस अनिलारिरस को दो वा तीन रत्ती अरंडीके तेल वा सेंधानमकके साथ अथवा काली मिर्च और घीके साथ अथवा निर्गुंडी, चीता और त्रिकुटा के साथ सेवन करने से सब प्रकारके वात रोग नष्ट होते हैं।

[२८८] अनङ्गनिगडोरसः

(वृ. यो. त., त. १४७)

मिहिरकुलिशमुक्तातालवैक्रान्तभास्व-
न्मणिकुजमणिभस्मान्येकभागानि कृत्वा।
कनकरजतताप्यव्योमसत्वानि चत्वा
यखिलसमरसेन्द्रं गन्धकं सर्वतुल्यम् ॥
मृदुविदलितमेतच्छोणकार्पासपुष्पा-
म्बुभिरमलतरैस्त्रिर्भावयित्वा विशोष्य ।
क्रमदहनविपक्वं वालुकाकाचकुम्भे
त्रिदिनमथ कलांशेनाच्छहालाहलेन ॥
युतमथमरिचेन्दुत्वक्पयोजातिकोशा-
मरकुसुममृगाण्डैर्भावयेज्जायतेऽसौ ।
मदननिगडनामा माषमात्रो दिनादौ
निशि च भुजगवल्लीपर्णखण्डेन भुक्तः ॥
तदनु सुरभि दुग्धं पेयमल्पं सिताढ्यं
पुनरपि ससिताम्रं चारुताम्बूलमद्यात् ।
इह समुदितमन्नं पथ्यमाह द्विजन्मा
मुनिरखिलगदानामन्तके ख्यातवीर्ये ॥
एनं संसेव्य मर्त्यो
रमयति रमणी वृन्दमानन्दतुन्द
मामन्दं तस्य शुक्रं
क च न च भवति प्रत्यहं वर्द्धते च ।
षण्ढः षाण्ढ्यं जहाति
प्रबलतरमपि प्रौढमाप्नोति गाढं
शेफःपातित्ययुक्तं
गतनवतिसमस्यापि मर्त्यस्य चारु ॥
किं बहुना कथितेन गृहेऽसौ
यस्य नरस्य वसत्यसमस्य ।
पञ्चशरस्य शरस्य शरव्यं
भवतीह सदा महिलाहृदयस्थः
मेहान्विंशतिमेष हन्ति सहसा यक्ष्माणमुग्रं जये-
दानाहग्रहणीग्रहान्नलपचति प्रौढं विधत्ते बलम् ।
पाण्डुं खण्डयति प्रसह्य रचयत्यर्शोविनाशं भृशं
पित्तास्रं दलयत्यवश्यमुदरव्याधिं विलुम्पत्यपि॥
ओजःकान्ति बलप्रमोदधिषणा दृग्दन्तनासाश्रुति
प्रौढिं देहदृढत्वमग्निपटुतां पुंसः प्रकुर्यादयम् ।
रोगो नास्ति स योनशान्तिमुपयात्येतेन भूमितले
भूमीपव्रजपूजितेन रमणी प्रेमास्पदेनाशिनम् ॥

ताम्र भस्म, हीरा भस्म, मोती भस्म, हरताल भस्म, वैक्रान्त भस्म, सूर्यकान्तमणि भस्म, पद्ममणि (माणिक्य) भस्म, स्वर्ण भस्म, रौप्य भस्म, स्वर्ण-माक्षिक भस्म और अभ्रक सत्वकी भस्म १-१ भाग, शुद्ध पारद सबके बराबर (११ भाग) और शुद्ध गन्धक २२ भाग लेकर प्रथम पारदमें भस्में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिलाकर भली भांति खरल करें और फिर लाल कपासके फूलोंके रसकी तीन भावना देकर सुखाकर कपर मिट्टी की हुई आतशी शीशी में भरें तथा बालुकायन्त्र में क्रमवर्द्धित अग्नि पर तीन दिन पाक करें। (चन्द्रोदय बनाने की विधिसे पकाना चाहिए)। तदनन्तर रसको निकालकर उसमें उसका सोलहवां भाग शुद्ध हलाहल (मूल-विष विशेष) मिलाकर कालीमिर्च, कपूर, त्वक्क्षीरी (बंसलोचन), जावत्री, लौंग और कस्तूरी की भावना[1] देकर सुरक्षित रक्खें।

मात्रा—१ माशा।

इसे प्रातः और सायंकाल पानमें खाकर थोड़ी मिश्री मिला हुवा गोदुग्ध पियें और फिर उत्तम नागरवेलके पानमें (आधी रत्ती) कपूर रखकर खावें।

यह सम्पूर्ण रोगों को नष्ट करने के लिए प्रख्यात रस है। इसके सेवन कालमें यथेष्ट पथ्याहार करना चाहिए।

इसे सेवन करने से मनुष्य अनेकों युवतियों के साथ रमण करे तब भी उसका शुक्र क्षय न होकर बढ़ता ही है।

इसके प्रभावसे नपुंसक पुरुषकी नपुंसकता दूर हो जाती है और ६० वर्षसे अधिक आयुके वृद्ध का शिथिल शिश्न भी दृढ़ हो जाता है। अधिक कहने से क्या लाभ, जिस के पास यह रस होगा उसे कामदेव अपने बाणका निशाना अवश्य बनाएगा और वह कामिनियों का सदा प्रिय रहेगा।

इसके अतिरिक्त यह रस २० प्रकारके प्रमेह को नष्ट करता है, उग्र राजयक्ष्मा पर सहसा विजय प्राप्त कर लेता है तथा आनाह, ग्रहणी, गृहबाधा, पाण्डु, अर्श, रक्तपित्त, और उदर व्याधिको अवश्य नष्ट कर देता है।

इसके सेवनसे ओज, कान्ति, बल, हर्ष बुद्धि और जठराग्निकी अत्यन्त वृद्धि होती है, दृष्टि, दन्त, नासा और श्रवण शक्ति बढ़ती है तथा देह दृढ़ हो जाती है। भूमितल पर कोई ऐसा रोग नहीं जिसे यह राजाओं द्वारा सम्मानित और रमणियों का प्रेमपात्र रस नष्ट न कर दे।

(२८९) अनङ्गसुन्दरोरसः (१)

(र. रा. सु., रसा.)

शुद्धसूतं समं गन्धं त्र्यहं कल्हारजैर्द्रवैः।
मर्दितं बालुकायंत्रे यामं संपुटके पचेत् ॥
रक्तागस्त्याद्रवैर्भावं दिनमेकं सिताम्बुजैः।
यथेष्टं भक्षयेत्स्वादु कामयेत् कामिनी शतम् ॥

शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक ४-४ तोले लेकर दोनों की कज्जली करके कल्हार (कुछ सफेद और कुछ लाल ऐसे कमल)के रसमें ३ दिन खरल करे, फिर संपुट में रख बालुका यंत्र में एक प्रहर पकावे फिर एक दिन लाल अगथिया और सफेद कमलके रसमें घोट कर सुखाकर रक्खे इसे बलाबलके अनुसार सेवन करने से सौ स्त्रियोंसे रमण करनेकी शक्ति प्राप्त हो जाती है।

[२९०] अनङ्गसुन्दरोरसः (२) (र. मं.)

पलद्वयं द्वयं शुद्धं पारदं गन्धकं तथा।
मृतहेम्नस्तु कर्षैकं पलैकं मृतताम्रकम् ॥
मृततारं चतुर्निष्कं मर्द्यं पञ्चामृतैर्दिनम्।
रुद्ध्वा तु वै पुटे पश्चाद्दिनैकं तु समुद्धरेत् ॥
पिष्ट्वा पञ्चामृतैः कुर्याद्वटिकां बदराकृतिम्।

---

[1] ऐसा प्रतीत होता है कि यहां काली मिर्च आदि पदार्थों का चूर्ण रसके समान भाग मिलाना प्रयोग कर्ताको अभीष्ट है। यदि ऐसा नहीं किया जाय तो बंसलोचन की भावना व्यवहार विरुद्ध है तथा १ माशा मात्रा में आधी रत्ती हलाहल विष आता है जो अधिक है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनङ्गसुन्दरो नाम परं पुष्टि प्रदायकः ॥

शुद्ध पारा १० तोले, शुद्ध गन्धक १० तोले, सोनेकी भस्म १। तोला, ताम्रभस्म ४ तोला और चांदी भस्म २० माशे लेकर सब को एकत्र करके एक दिन तक पञ्चामृत (समान भाग मिलित घृत, दुग्ध, मधु, शर्करा, दधि), में घोटकर सम्पुट में बन्द करके एक पुट दे, फिर पञ्चामृत के रस में घोटकर छोटे बेरके समान गोलियां बनावे। यह अनङ्ग सुन्दर रस अत्यन्त पौष्टिक है। (व्यवहारिक मात्रा—२ रत्ती)

[२९१] अपूर्वमालिनी वसन्तः

(यो. र., वि. ज्व.)

वैक्रांतमभ्रं रविताप्यरौप्यं
वंङ्गं प्रवालं रस भस्म लोहम् ।
सुटङ्कणं कम्बुकभस्म सर्वं
समांशकं पाच्य वरीहरिद्रा ।
द्रव्यैर्विभाव्यं मुनि संख्यया च
मृगाङ्कजाशीतकरेण पश्चात् ।
वल्लप्रमाणो मधुपिप्पलीभि-
र्जीर्णज्वरे धातुगते नियोज्यः ।
गुडूचिकासत्वसितायुतश्च
सर्वप्रमेहेषु नियोजनीयः ।
कृच्छ्राश्मरीं निहन्त्याशु मातुलुङ्गाघ्रिजैर्द्रवैः ।
रसोवसंतनामाऽयमपूर्वो मालिनीपदः ॥

वैक्रान्तमणि, अभ्रक, ताम्र, सुवर्णमाक्षिक, रूपा, वंग, मूंग, पारा, लोह इनकी भस्म और शुद्ध सुहागा तथा शंख भस्म, सब समान भाग लेकर शतावरी और हल्दी की सात सात भावना देकर चांदनी में रख दे फिर टिकिया बनाकर रख छोड़े। इसमें से २ रत्ती रस शहद और पीपल के साथ देनेसे जीर्णज्वर, धातुगत ज्वर, और गिलोय के सत्व और मिश्री के साथ देनेसे सर्व प्रकार के प्रमेह दूर होते हैं। तथा बिजोरे की जड़के रसमें देने से पथरी नष्ट होती है।

[२९२] अभयनृसिंहो रसः

(भै. र. अति.)

दरदश्च विषं व्योषं जीरकं टङ्कणं समम् ।
गन्धकश्चाभ्रकश्चैव भागैकं शुद्धसूतकम् ॥
मण्डूरं सर्वतुल्यं स्यान्मर्दयेन् निम्बुकद्रवैः ।
एकैकं भक्षयेच्चानु जीरकं मधुना सह ॥
त्रिदोषोत्थमतीसारं सज्वरं वाथ विज्वरम् ।
सर्वरूपमतीसारं सङ्ग्रहग्रहणीं जयेत् ॥
रसोऽभयनृसिंहोऽयमतीसारे सुपूजितः ॥

शुद्ध शिंगरफ, शुद्ध मीठातेलिया, त्रिकुटा, जीरा, सुहागा की खील, शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा और अभ्रकभस्म, १—१ भाग, मण्डूर भस्म सबके बराबर प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनाकर फिर सबको नींबूके रसमें घोटकर गोलियां बनावे। इसे जीरेके चूर्ण और शहदके साथ सेवन करने से ज्वरयुक्त अथवा ज्वरसे रहित त्रिदोषज अतिसार, संग्रहणी, और अन्य सब प्रकार के अतिसारों का नाश होता है।

[२९३] अभ्रक शोधन (धान्याभ्रक)

(र. सा. सं. वृ. यो. त; त. ४१ भा. प्र. पू. ख. । आ. वे. प्रा, यो. र.)

पादांशं शालिसंयुक्तमभ्रकं कम्बलोदरे ।
त्रिरात्रं स्थापयेन्नीरे विक्लिन्नं मर्दयेद् दृढम् ॥
कम्बलाद्गलितं श्लक्ष्णं वालुकारहितश्च यत् ।
तद्धान्याभ्रमिति प्रोक्तमभ्रमारणसिद्धये ॥

स्वच्छ बज्राभ्रक १ पाव, शालीधान्य १ सेर,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इन दोनों को कम्बल के टुकड़े में बांध कर जल (कांजी) में भिगो देवे तीसरे दिन निकाल कर किसी बड़ी परातमें उस कंबलकी पोटली को मसले जिस से सब अभ्रक बारीक होकर छनकर कंबल से बाहर निकल आवे। उस स्वच्छ बारीक अभ्रक को ले लेवे। इसमें से कोई कंकड़ी आदि अन्य वस्तु पहिले ही निकाल देनी चाहिये। इसे धान्याभ्रक कहते हैं यही मारण आदि सब कर्मो में लेना चाहिये।

[२९४] दूसरा प्रकार

(र. सा. सं, यो. र; रा रा. सु. आ. वे. प्र, अ. ४।)

त्रिफलाक्वाथगोमूत्रक्षीरकाञ्जिकसेचितम्।
महाग्नौ सप्तधा व्योम तप्तं तप्तं विशुध्यति॥

वज्राभ्रक को कोयलों की तीक्ष्णाग्नि में धोकनी से धमाकर लाल करके त्रिफले के क्वाथ में बुझावे ऐसे ही सात २ बार गरम करके त्रिफले के क्वाथ, गोमूत्र, दूध और कांजी में बुझावे तो अभ्रक शुद्ध हो जाता है।

[२९५] तीसरा प्रकार

(र. सा. सं, वृ. यो. त. । र. म. ४१, र. रा. सु; आ. वे. प्र., अ. ४।

अथवा बदरीक्वाथे ध्मातमभ्रं विनिःक्षिपेत्।
मर्दितं पाणिना शुष्कं धान्याभ्रादतिरिच्यते॥

अथवा अभ्रक को तीक्ष्णाग्नि में तपा २ कर बेरी के क्वाथ में बुझावे, फिर सुखाकर हाथों से मल कर बारीक कर ले, यह अभ्रक शुद्ध होता है और धान्याभ्रक से भी अच्छा होता है।

[२९६] अभ्रकद्रावणम

(र. सा. सं., र. म., रा रा. सु., रसे. चि. म. । अ. ४)

अगस्त्यपुष्पतोयेन पिष्टं शूरणकन्दगम्।
गोष्ठभूमिगतं मासं जायते रससन्निभम्॥

अभ्रक को अगस्त्यपुष्पों (वकपुष्पों) के रस में रगड़कर जिमीकन्द के बीच में भर कर ज़िमीकन्द के टुकड़े से बन्द कर गौओं के रहने के स्थान में पृथ्वी में गाढ़ देवे। फिर एक महीने के बाद निकाले यह अभ्रक शुद्ध और रस के समान हो जाता है।

[२९७] अभ्रकभस्मविधि (र. सा. सं.)

वज्राभ्रकं समादाय निक्षिप्य स्थालिकोदरे।
रम्भादिक्षारतोयेन पचेद्गोमयवह्निना॥
यावत्सिन्दूरसंकाशं न भवेत्स्थालिकाबहिः।
सेचनीयं ततः क्षीरैस्ततः सूक्ष्मं विचूर्णयेत्॥

शुद्ध वज्राभ्रक को आगे कहे हुये केले आदि के खार (खार के पानी) में खूब घोटकर एक मिट्टी के पात्र में डाले। इस पात्र को गोवरी (उपलों) की आग में रख कर तब तक तीक्ष्ण आंच देता रहे जब तक उस पात्र का वर्ण अग्नि के तापसे सिन्दूर के समान लाल न हो जाय, फिर अग्नि से निकालकर दूध में बुझाकर चूर्ण करे (निश्चंद्र होने पर्यन्त ऐसा ही करे) तो अभ्रक की भस्म हो जाती है।

[२९८] दुसरी विधि (र. रा. सं., र. रा. सु., र. मं., रसे. चि. म. । अ. ४ । आ. वे. प्र. । अ. ४ । वृ. यो. त, त. ४१ । यो. र.) *

धान्याभ्रकं समादाय मुस्त क्वाथैः पुटत्रयम्।
तद्वत्पुनर्नवानीरैः कासमर्दरसैस्तथा॥
नागवल्लीरसैः सूर्यक्षीरैर्देयं पृथक् पृथक्।
दिनं दिनं मर्दयित्वा क्वाथैर्वटजटोद्भवैः॥

* यो. र. में सूर्यक्षार की जगह गोदुग्ध है तथा लोधके पुटका अभाव है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दत्त्वा पुटत्रयं पश्चात् त्रिःपुटेन्मुसलीजलैः।
त्रिर्गोक्षुरकषायेण त्रिःपुटेद्वानरीरसैः॥
मोचकन्दरसैः पाद्यं त्रिवारं कोकिलाक्षजैः।
रसैः पुटं लोध्रकैस्तु क्षीरादेकपुटं पुनः॥
दध्ना घृतेन मधुना स्वच्छया सितया तथा।
एकमेकं पुटं दद्यादभ्रस्यैवं मृतिर्भवेत्॥
सर्वरोगहरं व्योम जायते योगवाहिकम्।
कामिनीमददर्पघ्नं शस्तं पुंस्त्वोपघातिनाम्।
वृष्यमायुष्करं शुक्रवृद्धिसन्तानकारकम्॥

धान्याभ्रक को लेकर नागरमोथे के क्वाथमें खरल कर टिकिया बनावे फिर संपुट कर गजपुट में फूंकदे, स्वांगशीतल होने पर नागर मोथे के क्वाथ में खरल करके गजपुट दे। ऐसे तीन पुटें देवे। फिर इसी प्रकार पुनर्नवाका रस, कसौंदीका रस, नागरवेलके पानका रस, आकका दूध, बटकी जटाका क्वाथ, काली मुसलीका क्वाथ, गोखरूका क्वाथ, कौंच का रस, मोचाकन्द का रस, तालमखानेका रस और पठानीलोध का क्वाथ इनमें से प्रत्येककी अलग २ तीन तीन पुटें दे। फिर गाय के दूधकी एक पुट दे (कहीं "क्षीरादष्टपुटेन्मुहुः" ऐसा पाठ है, अर्थात् गो दूधकी आठ पुटें दे) फिर दही, घी, शहद और मिश्रीकी अलग २ एक एक पुट देवे तो अभ्रककी उत्तम भस्म हो जायगी। यह भस्म सम्पूर्ण रोगोंको हरने वाली और योगवाही हो जाती है। तथा स्त्रियों के मद को हरण करे, नपुंसकताको दूर करे, शरीरको पुष्ट करे और आयु को बढ़ावे एवं वीर्यवर्द्धक और संतानकारक है।

[२९९] तीसरी विधि (र. रा. सं, रसे. चि. म.।अ. ४)

तण्डुलीयक-बृहती-नागवल्ली-पिंडतगरपुनर्नवा
हिलमोचिला-मण्डूकपर्णी।
तिक्ताखुपर्णिकामदेनार्कात्रपिलक्षसुतमातृकाभि

चौलाई, कटैली, नागरवेल (पान), पिण्ड, तगर, पुनर्नवा, हुलहुल, मण्डूकपर्णी, (ब्राह्मी)कुटकी, मूषकपर्णी, मैनफल, आक और शतावर ये १२ द्रव्य अभ्रक को मारने वाले हैं (शुद्ध अभ्रक को अलग इनके रसमें रगड़ कर गजपुटमें फूंक देनेसे भस्म हो जाती हैं)॥

[३००] चौथी विधि (र. रा. सं.)

रम्भादिनाभ्रं लवणेन पिष्ट्वा
चक्रीकृतं तद्दलमध्यवर्त्ति।
दग्धेन्धनेषु व्यजनानिलेन
स्नुह्यर्कमूलाम्बुपुटेन सिद्धम्॥

रम्भादि गण के रस में (अथवा केलाखार, सज्जीखार, चनाखार, और नमक इनके जलों में) शुद्ध अभ्रक को खूब घोट कर टिकिया बना ले फिर इन टिकियों को केलेके पत्रों में रख पंखे की पवनसे चैतन्य की हुई कोयलों की अग्निमें फूंके। फिर निकाल कर थोहरके दूधमें घोटकर टिकिया बना संपुट करे और गजपुट में फूंक दे। ऐसे ही आकके दूधमें घोटकर टिकिया बना संपुट करे और गजपुटमें ही फूंके तो अभ्रक की भस्म हो जाती है।

[३०१] पांचवीं विधि (अभ्रक सत्व विधि) (र.सा.सु., रसे.चि.मं.।अ.४। र.र., र.मं., बृ.यो.त., त. ४१। यो. र., आ.वे.प्र., शा. सं,अ. ४)

धान्याभ्रकस्य भागैकं भागौ द्वौ टंकणस्य च।
पिष्ट्वा तदन्धमूषायां रुद्ध्वा तीव्राग्निना पचेत्।
स्वभावशीतलं चूर्णं सर्वयोगेषु योजयेत्॥

१ मदनार्काभ्रक पलाशसुत मातृकादीभिर्मर्दन पुटनैरपि मारणीयम्। रसे. चि. म.

२ र सा. सु. में टंकण आधा भाग है। अनेक ग्रन्थोमें इसे भस्म लिखा है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धान्याभ्रक एक भाग, सुहागा दो भाग इन दोनों को इकट्ठा ही घोटकर अंधमूषामें बन्ध कर कोयलों की तीव्र अग्नि में फूंक दे। (अथवा गजपुट में फूंक दे) जब स्वांगशीतल हो जाय तो निकाल कर पीस ले। (निश्चन्द्र भस्म न हो तो फिर इसी प्रकार फूंके) (निश्चन्द्र होने पर) इस भस्म को सब रोगों में प्रयोग करना चाहिये।

[३०२] छठी विधि (१० पुटी भस्म)

(र.सा.सं.. यो.चि.म., अ. ७। आ.वे.प्र., अ.४। वृ.यो त; त.४९। रसे. चि.म., अ.४।भा.प्र.,प्र.खं.)

धान्याभ्रकं दृढं मर्द्यमर्कक्षीरैर्दिनावधि।
वेष्टयेदर्कपत्रेण चक्राकारन्तु कारयेत्॥
कुञ्जराख्ये पुटे दग्ध्वा सप्तवारान्पुनःपुनः।
ततो वटजटाक्वाथैस्तद्वद्देयं पुटत्रयम्॥
म्रियते नात्र सन्देहः सर्वरोगेषु योजयेत्॥

धान्याभ्रक को २४ घण्टे आक के दूध में खूब रगड़े फिर गोल गोल टिकियें बना कर आक के पत्रों में लपेट संपुट करे और गजपुट में फूंक दे शीतल होने पर निकाल कर फिर आकके दूधमें उसी प्रकार रगड़ कर टिकिया बना गजपुट में फूंके। ऐसेही सात सात पुट आक के दूध की देवे तदनन्तर तीन बड़ की जटा के क्वाथ की देवे तो अवश्य अभ्रक की उत्तम भस्म हो जायगी, इसको संपूर्ण योगोंमें प्रयोग करना चाहिये।

[३०३] अभ्रक भस्म के गुण

निश्चन्द्रमारितं व्योमरूपं वीर्यं दृढं तनुम्।
कुरुते नाशयेन्मृत्युं जरारोगकदंबकम्॥

निश्चन्द्र अभ्रक भस्म (शुद्ध देह मनुष्य सेवन करे तो) आयु की वृद्धि हो, रूप और वीर्य बढ़े, शरीर दृढ़ हो जाय, निश्चन्द्र अभ्रक भस्म जरा और अकाल मृत्यु तथा रोगोंके समूहको नष्ट करती है।

१ आ. वे. प्र. में अर्क दुग्ध और अर्कमूल रससे मर्दन लिखा है।

[३०४] अभ्रकनिश्चन्द्रीकरणम्

(रसा. सा.) ×

सुवर्चिकामानमितं गुडं च
तयोः समानं गगनं प्रगृह्य।
संमेल्य हण्ड्यां च निधाय सर्वं
सर्वार्थकर्यां प्रददीत वन्हिम्॥
तीव्राग्नितापेन सशब्दवह्नि-
निर्याति चेदभ्रकहण्डिकातः।
भीतिर्विधेया न तदा कदापि
सुवर्चिका निःसरतीति मत्वा॥
पुटैकमात्रेण समुज्झ्य चान्द्रीं
निश्चन्द्रभावं भजतेऽभ्रमेवम्।
सुवर्चिकाऽपायनिबन्धचान्द्री-
निर्भाति चेदन्यपुटं प्रदेयम्॥
ततोऽभ्रकं यामयुगं सताक्ष्र्ये
जले निधायाथ करेण मर्दते।
स्थितं जलं चाप्यनपातनीयं
शनैर्यथाऽभ्रं न परिश्रुतं स्यात्॥
स्राव्याणि तावद्धि पयांसि यावत्
स्वादोऽत्र भासेत सुवर्चिकायाः॥

वैद्य लोग अभ्रक में सौ सौ पुट देते हैं तो भी अभ्रक की चन्द्रिका (चमक) नहीं मिटती, और अभ्रकमें चमक रह जाने से रोगी की आंते कट जाती हैं जैसे काच की भस्म में चमक रह जाने से। इसकी चमकके एक ही पुटमें दूर करने

× इस ग्रन्थमें रसायनसारके जितने प्रयोग दिये गये हैं उन सबकी टीका मूल ग्रन्थकार (रसायनकर्ता)की ही लिखी हुई है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का उपाय लिखता हूं—पावभर कलमी सोरेका चूर्ण और पावभर गुड, दोनों में थोड़ा पानी डाल कर मर्दन करलें, इसमें आधासेर शुद्ध अभ्रक मिलाकर एक हांड़ी में भरदें और हांडीकी मुद्रा करके सर्वार्थकरी भट्टी की लोहजाली पर अथवा कषायकरी भट्टी की लोहजाली पर पांचसेर पत्थर के कोयले रखकर हांडी को रख दे, और नीचे लकड़ी की आंच जलाकर कोयलों को सुलगाले। तेज अग्नि के कारण जो हांडी से आवाज़ करती हुई अग्नि निकले तो कुछ भयकी बात नहीं है क्योंकि तेज अग्नि लगने से सोरा उड़कर जा रहा है। कभी २ हांडी अग्नि को सह जाती है तो सोरा नहीं भी उड़ता है। इस रीति से एक ही बारमें बहुत आसानी और कम खर्चके साथ अभ्रक निश्चन्द्र हो जाती है। कदाचित् सोराके उड़ जाने से हांडी के उपर के भाग की अभ्रक में कुछ २ चमक दीख पड़े तो उतने भाग को निकाल कर पूर्व की तरह गुड़, सोरा में रखकर एक पुट और दे, छुट्टी। इस निश्चन्द्र अभ्रक में सोरा मिला हुआ है इस लिये इसको कूटकर दोपहर तक जलमें भिगो दे फिर हाथ से खूब मल डाले। जब पानी स्थिर हो जाय और अभ्रक पात्रके पेंदें में जमजाय तब धीरे २ होशियारी के साथ पानी को गिरावे जिससे अभ्रक भी न बह जाय। फिर पानी भरके छोड़ दे। इसी तरह बराबर पानी गिराता जाय जब तक कि वह जिह्वापर खारी लगे।

[३०५] अभ्रकस्य नित्योपयोगि भस्म

(रसा. सा.)

पूर्वोक्तरीत्योज्झितचन्द्रिकाभ्रं
मन्दारपत्रोद्भववारिणापि।
पुटत्रयेणापि पिपर्ति योगान्
बिभर्ति कायं खलु केवलञ्च॥

प्रथम कही हुई रीति से अभ्रक को निश्चन्द्र करके मंदार के पत्तों के स्वरस में घोटकर टिकिया बना ले। जब टिकिया खूब सूख जाय तब गजपुट में अथवा सर्वार्थकरी भट्टी के तल भाग में सम्पुट को रखकर फूंक दे। ऐसी तीन पुट देने से लाल वर्ण की अभ्रक भस्म बनेगी। इस भस्म को जिस रोग के योग में डालेंगे उसका गुण पूर्ण होगा। और केवल इस अभ्रक भस्म को मधु के साथ या पान में रख कर खाने से श्वास कास ज्वरादि अनेक रोग दूर हो जांयगे और यदि अच्छा आदमी खायेगा तो ताकत बढेगी और अनेक रोगों से बचा रहेगा।

[३०६] मृतोत्थापनाभ्रकभस्म

(रसा. सा.)

कृष्णेन मल्लेन च हिङ्गुलेन
समानमानेन चतुर्थभागम्।
निश्चन्द्रमभ्रं परिमर्दयेत-
द्दत्त्वाऽसवें संपुटके च रुद्ध्वा॥
वनोपलक्षारघृतं पचेत
तथा यथोद्गच्छति नेह मल्लः।
पुनर्विमर्द्यापि पुनः पचेत
दत्त्वा च दत्त्वापुनरासवं तम्॥
एवञ्च कुर्यादुपविंशवारा-
नुत्थापयेच्चानु विशुद्धयुग्मम्॥
पुनर्यथापूर्वमिदं विमर्द्य
पचेत यावच्छतवारपाकाः॥
कन्याद्रवेणानु विमर्द्य सम्यक्
विधाय चक्रीश्च पुटेद्गजाख्ये॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मृतं समुत्थापयतीदमभ्रं
मध्वादिलीढं बलकल्प्यमात्रम् ॥

पाव भर निश्चंद्र अभ्रक (उक्त प्रकार से निश्चंद्र किया हुआ) आधी छटांक काली संखिया, (काली संखिया के न होने पर लाल पीली भी ले सकते हैं) आधी छटांक हिंगुल, इन तीनों चीजों को कुमार्यासव आदिके साथ दोपहर घोटकर लुगदी को संपुट में रखकर मुद्रा बन्द कर दे। फिर कुक्कुट पुट में दो सेर बन के उपले सुलगा दे जब निर्धूम अंगार हो जाय तब उनके ऊपर सम्पुट को रख दे, परन्तु यह स्मरण रहे कि संपुट को अंगारों के बीच में न रक्खे नहीं तो संखिया और हिंगुल उड़ जायेंगे। स्वांग शीतल होने पर पूर्व की तरह फिर उतना ही हिंगुल और संखिया डालकर आसव के साथ मर्दन करे। जब इस प्रकार लगभग बीस पुट के हो जाय तब उस लुगदी को डमरू यन्त्र में रख कर चार पहर की अग्नि देकर संखिया हिंगुल को उड़ा ले। स्वांगशीतल होने पर डमरू यन्त्र को खोल डाले, ऊपर की हांडी में लगे हुये हीरे के समान चमकते हुए हिंगुल संखिया के सार को खुर्च कर निकाल ले, और नीचे की हांडी में जो अभ्रक भस्म मिले उसको फिर पूर्व की तरह आधी आधी छटांक हिंगुल संखिया डालकर आसव के साथ मर्दन करे। फिर लगभग २० पुट के हो जाने पर डमरू यन्त्र द्वारा संखिया हिंगुल के सार को पूर्व की तरह निकाल ले। यदि कोई वैद्य संखिया हिंगुल ज्यादा खर्च करना नहीं चाहे तो डमरूयन्त्र से निकले हुए हिंगुल संखिया के सार को ही आधी २ छटांक डालकर पूर्वोक्त क्रिया करे। इस प्रकार अभ्रक में सौ पुट दे। सौ पुट के बाद उस लुगदी को डमरू मन्त्र में रखकर चार पहर तक लकड़ियों की खूब तीव्र आंच दे। स्वांगशीतल होने पर ऊपर की हांडी में लगे हुए हिंगुल संखिया के सार को जुदा निकाल ले और अभ्रक भस्मको घृत कुमारी के रस में घोट कर टिकिया बना ले। जब टिकिया सूख जाएं तब उन को संपुट में फूंक दे। इसका नाम मृतोत्थापन अभ्रक भस्म है अर्थात् सन्निपात, हैजा (विसूचिका) सर्पदंशन आदि किसी कारण से मनुष्य के प्राण जाते हों तो उस आसन्नमृत्यु रोगी को आधी रत्ती से दो रत्ती तक बलाबल देखकर मधु आदि किसी अनुपान के साथ देने से रोगी अवश्य बच जायगा। यदि इसके देने पर भी रोगी के आसार कच्चे दीखें तो "इयं शतघ्नी यदि कुण्ठिता स्यान्नितान्तमन्तं कुरुते कृतान्तः" इस वक्ष्यमाण वचन का यहां भी अनुसन्धान कर ले। और जो डमरू यन्त्र की ऊपर की हांडी में हिंगुल संखिया का सार भाग निकलता है उसका भी मृतोत्थापन लोह विधि में कहे हुए मल्लसिन्दूर के विधान से मल्लसिंदूर बना ले जिस से यह भी मृतोत्थापन और पौष्टिक बने।

[३०७] सत्त्वप्रधानमभ्रकभस्म

(रसा. सा.)

सेटोन्मितं व्योम तदर्धमानं
सुटङ्कणं तद्वद्‌यमावपेत।
हण्डयांतलच्छिद्रयुजिप्रगाढं
मल्लं पिधायात्रविधायमुद्राम् ॥
कषायकर्यामथकोष्ठिकायां
दृष्ट्वाभ्रहण्डोमिवसंहसन्त्याम्।
निधायहण्डीमथकोष्ठयधस्तात्
काचाभसत्त्वंपततीत्थमभ्रात् ॥
नामापिनास्मिन्ननुचन्द्रिकानां
सत्त्वप्रधानंबहसत्त्वयोगात्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्दारदुग्धेनदिनद्वयञ्चेदुविमर्द्य
सम्यक्चविधायचक्रीः ॥
घर्मेण शुष्काः मपुटेत् गजाख्ये
वारेण चैकेन भवेत्सुभस्म ।

एक सेर शुद्ध अभ्रक और आधसेर चौकिया सुहागा दोनों को मिलाकर जिसके तलभाग में सत्व गिरने के लिये छिद्र किया है ऐसी हांडी में खूब भरदे और उसके मुख पर शराव रखकर मुद्रा करदे। परन्तु यह स्मरण रहे कि हाण्डी पर तीन कपरमिट्टी करके सुखाले। बाद कषायकरी भट्टी में पत्थर के कोयले भरकर नीचेसे लकड़ी की आंच दे जब कोयले खूब दहकने लगें तब लोहे के छड़से कुछ कोयलों को हटाकर बीचमें उस हांडी को रखकर दहकते हुए कोयलों को उस हांडी के ऊपर से भी ढांक दे, भट्टी के नीचे से सब आंच को निकाल कर हांडी के ठीक नीचे भाग में एक लोहे का तसला रख दे। एक घण्टे के बाद हांडी के अभ्रक का सम्पूर्ण सत्व बह २ कर तसले में गिर जायगा। इसका वर्ण कांच के समान काला होगा जिसको देख कर कोई नहीं पहचान सकता कि यह अभ्रक है। इसमें अभ्रक का भी अंश मिला हुआ है इसलिये यह खाली सत्व नहीं है। इसमें चन्द्रिकाओं का नाम निशान भी नहीं है। हमने इस सत्व को निकालकर बहुत वैद्यों को दिखाया है जिसने देखा उसीने प्रसंशा की है। जैसे गुड़ और सोरे के योग से एक बारमें ही अभ्रक निश्चन्द्र हो जाती है इसी प्रकार इस विधिसे केवल सुहागेके योगसे भी अभ्रक निश्चन्द्र हो जाती है और अभ्रक का सत्वांश रह जाता है इसी लिये इसका नाम सत्वप्रधान अभ्रक भस्म रक्खा है। इस सत्व की भस्म करने की यह विधि है कि इस अभ्रकसत्व को दो दिन तक मंदार के दूध में खूब घोटे बाद को टिकिया बनाकर धूप में सुखाले और गजपुट में फूंक दे, छुट्टी। परन्तु पहले इस सत्व को कूटकर कपरछन करले फिर मदार के दूधमें घोटे।

(३०८) अथाभ्रआनुपानानि

अभ्रकं च निशायुक्तं पिप्पली मधुना सह ।
विंशतिं च प्रमेहनां नाशयेन्नात्र संशयः ॥
अभ्रकं हेमसंयुक्तं क्षयरोगविनाशनम् ।
रौप्यहेमाभ्रकं चैव धातुवृद्धिकरं परम् ॥
अभ्रकं च हरीतक्या गुडेन सह योजितम् ।
एलाशर्करया युक्तं रक्तपित्तविनाशनम् ॥
त्रिकटु त्रिफलां चैव चातुर्जातं सशर्करम् ।
मधुना लेहयेत्प्रातः क्षयार्शः पाण्डुनाशनम् ॥
गुडूचिसत्वखण्डाभ्यां मिश्रितं मेहनाशनम् ॥
एलागोक्षुरभूधात्रीसितागव्येन मिश्रितम् ॥
प्रातः संसेवनान्नित्यं मेहकृच्छ्रनिवारणम् ।
पिप्पलीमधुसंयुक्तं भ्रमजीर्णज्वरापहम् ॥
मधु त्रिफलया युक्तं दृष्टिपुष्टिकरं मतम् ।
मूर्वासत्वयुतं व्योम व्रणानां च विनाशनम् ॥
गोक्षीरक्षीरकन्दाभ्यां बलवृद्धिकरं परम् ।
भल्लातकयुतं व्योम त्वर्शोदोषनिवारणम् ॥
नागरं पौष्करं भार्गी गगनं मधुना सह ।
अश्वगन्धायुतं खादेद्वातव्याधिनिवारणम् ॥
चातुर्जातं सिता चाभ्रं पित्तरोगनिवारणम् ।
कट्फलं पिप्पली क्षौद्रं श्लेष्मरोगनिवारणम् ॥
सर्वक्षारयुतं चाभ्रमग्निवृद्धिकरं परम् ।
मूत्राघातं मूत्रकृच्छ्रमश्मरीमपि नाशयेत् ॥
विजयारससंयुक्तं शुक्रस्तम्भकरं परम् ।
लवङ्गमधुसंयुक्तं धातुवृद्धिकरं परम् ॥
गोक्षीर शर्करायुक्तं पित्तरोगविनाशनम् ।
अभ्रकं विधिसंयुक्तं पथ्ययोगेन योजितम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेल्लव्योषसमन्वितं घृतयुतं वल्लोन्मितं सेवितं।
दिव्याभ्रं क्षयपाण्डुसंग्रहणिकाशूलं च कुष्ठामयम्॥
सर्वश्वासगदं प्रमेहमरुचिं कासामयं दुर्धरं।
मन्दाग्निं जठरव्यथां परिहरेच्छेषामयान्निश्चितम्
वलीपलितनाशः स्याज्जीवेच्च शरदां शतम्।
नातः परतरं किंचिज्जरामृत्युविनाशनम्॥

अभ्रक भस्म को हल्दी, पीपल का चूर्ण और शहद के साथ सेवन करने से बीस प्रकार के प्रमेहों का नाश होता है। सोनेके साथ अभ्रक भस्म सेवन करने से क्षयका नाश होता है तथा अभ्रक भस्म को चांदीकी भस्म और स्वर्ण भस्म के साथ सेवन करने से अत्यन्त धातु वृद्धि होती है।

अभ्रक भस्म, गुड़ और हैड़ का चूर्ण मिलाकर देने से अथवा इलायची का चूर्ण और चीनी मिला कर देने से रक्तपित्त का नाश होता है। शहद और त्रिकुटा, त्रिफला, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर और चीनीके साथ प्रातः काल सेवन करने से क्षय, बवासीर और पाण्डु का नाश होता है। गिलोयके सत और चीनीके साथ खानेसे प्रमेहका नाश होता है। इलायची, गोखरू, भूमि आमला, मिश्री और दूध के साथ प्रातः काल सेवन करनेसे मूत्रकृच्छ्र का नाश होता है और पीपल के चूर्ण तथा शहद से साथ सेवन करनेसे भ्रम और जीर्णज्वर का नाश होता है। शहद और त्रिफले के चूर्ण के साथ सेवन करने से दृष्टि पुष्ट होती है। मूर्वा के सत के साथ सेवन करने से व्रण मिटते हैं। गाय के दूध और बिदारीकन्द के साथ सेवन करने से अत्यन्त बल वृद्धि होती है। अभ्रक भस्म भिलावे के साथ सेवन करने से बवासीर का नाश होता है। सोंठ, पोखरमूल, भारंगी, असगन्ध, इनके चूर्ण और शहद के साथ अभ्रक भस्म सेवन करने से वातव्याधिका नाश होता है। दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर और चीनी के साथ अभ्रक भस्म सेवन करने से पित्त रोग शान्त होते हैं। कायफल, पीपल का चूर्ण और शहद के साथ सेवन करने से कफ रोग शान्त होते हैं। जवाखार, सुहागा, सज्जीखार आदि खारों के साथ सेवन करने से अभ्रक भस्म अत्यन्त अग्नि प्रदीप्त करती है तथा मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात और पथरी का नाश करती है। भांग के रस के साथ सेवन करने से वीर्य स्तम्भ करती है। लौंग और शहद के साथ सेवन करने से अत्यन्त धातु वृद्धि होती है। गाय के दूध और चीनी के साथ खाने से पित्त रोगों का नाश होता है। अभ्रक भस्म को बायविड़ंग, त्रिकुटा और घी के साथ एक बल्ल (३-४ रत्ती) प्रमाण में सेवन करने और पथ्य पालन करने से क्षय, पाण्डु, संग्रहणी, शूल, कुष्ठ, सब तरह का श्वास, प्रमेह, अरुचि, प्रबल खांसी, मंदाग्नि, उदर व्याधि आदि रोगोंका नाश होता है। अभ्रक सेवन से वलीपलित बुढापा और अकालमृत्यु का नाश हो कर मनुष्य १०० वर्ष तक जीवित रह सकता है।

(३०९) अभ्रककल्प (आ. वे. प्र. । अ. ४)

निश्चन्द्रमभ्रकं भस्म धात्रीव्योषविडङ्गकम्॥
भृङ्गाम्बुना जलैर्वाऽपि खल्वे मर्द्यं द्वियामकम्॥
गुटिकां कारयेत्सर्वां छायाशुष्कां सुरक्षयेत्।
एकैकां भक्षयेत्प्राज्ञो वर्षमेकं निरन्तरम्॥
द्वितीये तु पुनर्वर्षे भक्षयेद्गुटिकाद्वयम्।
एवं संवत्सरेणैव गुटिकैकां विवर्धयेत्॥
त्रिवर्षस्य प्रयोगोऽयमभ्रकस्य प्रकीर्तितः।
अनेन क्रमयोगेन व्योम्नः शतपलं नरः॥
अद्याद्भवेन्न संदेहो वज्रकायो महाबलः।
मासत्रयेण रक्ताख्यं क्षयं श्वासं सुदारुणम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पञ्चकासांश्च हृच्छूलं ग्रहण्यर्शोगदांस्तथा।
आमवातं तथा शोषं पाण्डुरोगं सुदारुणम्।
मृत्युकल्पं महाव्याधिं वातपित्तकफोद्भवम्।
हन्त्यष्टादशकुष्ठानि नृणां पथ्याशिनां ध्रुवम्॥

निश्चंद्र अभ्रक भस्म, आंवला, त्रिकुटा और वायविडंग, सब समान भाग लेकर भांगरे के रस अथवा पानी में २ पहर घोट कर गोलियां बनाकर छाया में सुखावे। १-१ गोली वर्ष भर तक सेवन करे फिर दूसरे वर्ष २-२ गोली खावे और तीसरे वर्ष प्रति दिन ३-३ गोली सेवन करे। इस प्रकार १०० पल अभ्रक सेवन करने से मनुष्य वज्रकाय हो जाता है। ३ मास में क्षय, श्वास, पांच प्रकार की खांसी, हृदय का शूल, ग्रहणी, बवासीर, आमवात, शोष, पाण्डु तथा अठारह प्रकार के कुष्ठोंका नाश होता है, परन्तु पथ्य सेवन करना आवश्यक है। इस कल्प को पूरे तीन वर्ष तक सेवन करने से शरीर अत्यन्त दृढ़ हो जाता है।

[३१०] अभ्रकरसायनम् (रसा. सा.)

सूतगन्धाभ्रकव्योषभृष्टटङ्कणकाःसमाः।
सूतगन्धककज्जल्यां जातायां पटगालितान्॥
सञ्चीय मर्दयेत्सर्वान् भावयेदेभिरौषधैः।
भृङ्गराजाग्निनिर्गुण्डीविजयाग्रीष्मजाजया॥
ब्राह्मी श्वेता समस्तानां मरिचं समचूर्णकम्।
श्लक्ष्णमर्दितकल्कस्य वटिका रेणुकोन्मिता॥
समीक्ष्याग्निं बलं व्याधिं योजयेदनुपानतः।
श्वासकासक्षयश्लेष्मवातिकव्याधिसम्भवम्॥
निहन्याज्जनयेच्चाशु शुक्रं वह्निं बलं प्रभाम्।
अतीसारे ज्वरे सूतौ पूज्यं चाऽभ्ररसायनम्॥
आचारे भोजने पाने यन्त्रणा नापि विद्यते।
दधि संसेव्यते चात्र मैथुनं च विवर्जयेत्॥

पांच तोला शुद्ध पारद, पांच तोला शुद्ध गंधक, पांच तोला निश्चन्द्र, शतपुटी अभ्रक, पांच तोला सोंठ, पांच तोला काली मिर्च, पांचे तोला चौकिया सुहागे की खील। इन चीजों में से पहिले गन्धक पारे की कज्जली कर ले फिर अभ्रक को भी उस कज्जली में डाल कर खूब घोट ले फिर सोंठ आदि सब चीजों को कूट कर कपरछन कर ले। फिर सब चीजों को मिलाकर मर्दन करे, और इन चीजों के स्वरस की भावना दे--भांगरा, चित्रक, सम्भालु, भांग, मोगरा, अरणि, ब्राह्मी, श्वेतापराजिता (सफेद कोयल) इनमें से जो चीज सूखी मिलें उनका क्वाथ करले और हरी पत्ती मिलें तो उनका स्वरस निकाल लें। जब सब चीजों की पृथक् पृथक् भावना समाप्त हो जाय तब उस चूर्ण के बराबर काली मिर्च का चूर्ण लेकर डाल दें। फिर उक्त स्वरसों की एक एक भावना और देकर मटर के समान गोलियां बना ले। इनको छाया में सुखाकर रख छोडे। इसको अभ्रक रसायन कहते हैं। मनुष्य की जठराग्नि और ताक़त तथा व्याधि को देखकर योग्य अनुपान के साथ देनेसे श्वास, कास, क्षय, कफजन्य व्याधि, वात व्याधियों को यह अभ्रक रसायन दूर करे और शुक्र, जठराग्नि, ताकत और कान्ति को बढ़ाती है एवं अतिसार, ज्वर, सूतिका रोग में अच्छा काम करती है। इस रसायनके सेवन करनेमें भोजनपान आचार कुछ पालन करना नहीं पड़ता केवल मैथुनको त्याग देना चाहिये और रोज़ दही सेवन करना चाहिये।

[३११] अभ्रकविकारशान्तिः (रसा. सा.)

दुष्टाभ्रसेवाजनितास्तु रोगा
नपानुनुत्सुर्यदि सेवते ना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उमाफलं वारिणि संविमर्द्य
दिनत्रयं तेन लभेत शर्म ॥

चमकदार अभ्रक सेवन करने से शरीर में उत्पन्न हुए रोगोंको दूर करने के लिये उमाफल (तीसी) को जलमें घोट घोटकर तीनदिन तक पीवे।

[३१२] अभ्रकहरीतकी (र. रा. सु., अर्श.)

मृताभ्रकपलं विंशन्मृतलोहस्य पंचकम् ।
गन्धकस्य पलं पंच त्रिभिर्द्विगुणमाक्षिकम् ॥
पथ्याशतपलं योज्यं धात्रीपलशतद्वयम् ।
सर्वमेकत्र तच्चूर्णं जम्बीरैर्भावयेद्दिनम् ॥
भृंगीपुनर्नवाद्रावैःपातालगरुडाकुलैः ।
भल्लातवह्निकोराटैर्हस्तिशुण्डी तु लाङ्गली ॥
क्षीरिणीजलकुम्भी च प्रत्येकं प्रत्यहं द्रवैः ।
भावयेन्मर्दयेदित्थं मध्वाज्याभ्यां विलोलयेत् ।
स्निग्धभाण्डे स्थितं खादेन्नित्यं निष्कद्वयं द्वयम्
सिद्धसावरयोगोत्थं त्रिदोषार्शांसि नाशयेत् ॥

अभ्रक भस्म १०० तोले, लोहभस्म २५ तोले, शुद्ध गंधक २५ तोले, सोनामक्खी की भस्म ३०० तोले, हरड ५०० तोले, आमले १००० तोले, इन सब पदार्थोंको एकत्र चूर्ण करके १ दिन जंबीरी नींबूके रसकी भावना दे। फिर भांगरा, सांठी, पातालगरुडी, भिलावा, चीता, कुरंटक, हाथी शुंडी, कलहारी, दुद्धी और जलकुम्भी इनमें से प्रत्येक के रसमें एक एक दिन खरल करे, तदनन्तर मधु और घी में मिलाकर रख छोड़े। इसमें से ८ माशे नित्य खाने से त्रिदोषजन्य बवासीर दूर होती है!

[३१३] अमरसुन्दरो रसः
(र. प्र. सु. । अ. ८)

सूतभस्म दरदं विशोधितं
तालसत्वमिति चैकभागिकम् ।
गन्धकं च सममत्र मर्दितं
भृङ्गराजरसकेन संयुतम् ॥
काकमाचिजरसैश्च मर्दितं
कुक्कुटाख्यपुटपञ्चकेन हि ।
पाचितं हि सितया समं सदा
सेवितं सकलरोगघातकम् ॥

रससिन्दूर, शुद्ध हिङ्गुल, हरतालसत्व १–१ भाग और शुद्ध गन्धक सब के बराबर लेकर भांगरे और मकोय के रस में घोट २ कर कुक्कुट पुट में ५ पुट दे। इसे समान भाग मिश्री के साथ सेवन करने से सब रोगों का नाश होता है।

[३१४] अमृतकलानिधि
(वृ. नि. र. । ज्वरे)

अमृतवराटिकमरीचैर्द्विपंचनवमांशकैः कुर्यात् ॥
मुद्गप्रमाणा वटिका ज्वरपित्त-
कफाग्निमान्द्यहारी स्यात् ॥

शुद्ध वच्छनागविष दो भाग, कौडीकी भस्म ५ भाग, काली मिर्च ९ भाग लेकर खरल करके मूंगके बराबर गोलियां बनावे। यह ज्वर, पित्त और कफज अग्निमांद्य का नाश करता है।

[३१५] अमृतसुन्दरो रसः
(र. प्र. सु. अ. ८)

मनःशिलामाक्षिकतालगन्धं
सूतं तथा खर्परमेव तुल्यम् ।
संमर्दितं चार्द्ररसेन सम्यग्
वासारसैश्चेक्षुरसारसेन ।
आपूरितं ताम्रजपात्रमध्ये
तत्संपुटं वै त्रिदिनं प्रपाचयेत् ।
तं स्वाङ्गशीतं हि समुद्धरेद्वै
वल्लोन्मितं तं परिभक्षयेच्च ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वातोद्भवान् हन्ति समस्तरोगान्
तथा च श्लेष्मोद्भवरोगसंघान् ।

मनसिल, सोनामक्खी, हरताल, गंधक, पारा, खपरिया । सबको समान भाग लेकर अद्रक, बांसा और तुलसी के रसमें खरल करके तांबे के पात्र में भर कर सम्पुट करके ३ दिन तक पकावे फिर ठण्डा होने पर निकाल कर रक्खे । इसे ३ रत्ती की मात्रा में सेवन करने से वातज और कफज रोगों का नाश होता है ।

[३१६] अमृतगर्भ रसः

(र. चि. ७ स्तबक)

प्रत्येकं दशगद्याणाः शुद्धगन्धकसूतयोः ।
विंशत्यर्कजदुग्धेन द्वयोः पिष्ट्वा दिनत्रयम् ॥
त्र्यहं सेहुण्डदुग्धेन शरावस्थं च तं पुटेत् ।
भूधराख्ये च यन्त्रे वै क्रमादेवं पुटाष्टकम् ॥
ततः खल्वेन संपिष्य सूक्ष्मं चूर्णं विधीयते ।
श्रीखण्डेन च पथ्यानां देयास्तत्रैव भावनाः ॥
मरिचानां जलेनाऽथ दद्याच सप्त भावनाः ।
आकाशवल्ल्याश्च रसैर्भावनास्तावतीस्ततः ॥
खल्वे पिष्ट्वा ततः शुष्कं कूप्यां चूर्णं क्षिपेत्सुधीः।
नाम्ना ह्यमृतगर्भोयं कीर्तितो रसवेदिभिः ॥
द्विगुञ्जामात्रकश्चायं गद्याणैका च शर्करा ।
सर्वरोगेषु दातव्यः समं शीतेन वारिणा ॥
वातशूले तथा पार्श्व शूलेऽथ परिणामजे ।
वातज्वरे च मन्दाग्नौ ह्यजीर्णे श्लेष्मरोगिणि ॥
पीनसे चामवातेषु वातश्लेष्मादिरोगिषु ।
रोगाः सर्वे विलीयन्ते प्रोक्तैकेन क्रमेण हि ॥

शुद्ध गन्धक और शुद्ध पारद दश दश गद्याण लेकर दोनों को तीन दिन तक २० गद्याण आकके दूधमें घोटे फिर तीन दिन सेहुंड के दूध में घोटकर शरावसंपुट में रख कर भूधरयन्त्र में पुट देवे । इसी प्रकार आठ पुट देने के बाद पीसकर बारीक चूर्ण करके चन्दन, हरड़, मिरचों के क्वाथ और और अम्बरवेल के रस की सात सात भावना दे । इसे दो रत्ती, एक गद्याण खांड के सहित ठण्डे पानी से सब रोगों में देवे । यह वातशूल, पसली का दर्द, परिणामशूल, वातज्वर, मन्दाग्नि, अजीर्ण, कफ के रोगोमें पीनस आमवात और वात कफ के रोगों का नाश करता है ।

प्रस्थमेकन्त्वेति पाठान्तरम् ।
+ को० २ "विंशति" शब्द से पारा और गन्धक के २० गद्याण लेते हैं ।

[३१७] अमृतमञ्जरी रसः

(र. सा. सं. कासे)

हिंगुलञ्च विषञ्चैव कणा मरिच टङ्कणम् ।
जातीकोषं समं सर्वं जम्बीररसमर्दितम् ॥
रक्तिमानां वटीं कुर्य्यादार्द्रकरससंयुताम् ।
वटीद्वयं त्रयं खादेत्सन्निपाते सुदारुणम् ॥
अग्निमान्द्यमजीर्णञ्च सामवातं सुदारुणम् ।
उष्णतोयानुपानेन सर्वं व्याधिं नियच्छति ॥
कासं पञ्चविधं श्वासं सर्वाङ्गग्रहमेव च ।
जीर्णज्वरं क्षयं कासं हन्यादमृतमञ्जरी ॥

शुद्ध हिंगुल, शुद्ध वच्छनाग, पीपल, काली मिर्च, सुहागे की खील और जावित्री इन सब को समान भाग लेकर जम्बीरी नींबू के रस में खरल करके एक एक रत्ती की गोलियां बनाकर अदरख के रस के साथ दो अथवा तीन गोली सेवन करने से दारुण सन्निपात, मन्दाग्नि, अजीर्ण और आमवात रोग नष्ट होते हैं । गर्म जल के साथ सेवन करने से सब प्रकार के रोग शमन होते हैं । इस से पांच प्रकारकी खांसी, स्वास, सर्वाङ्ग पीडा, जीर्णज्वर और क्षय की खांसी दूर होती है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[३१८] अमृतमण्डूरम् (र. र. शूले)

मण्डूरस्य पलान्यष्टौ शतावर्या रसन्तथा।
क्षीराज्यदधिप्रत्येकं पिष्ट्वा चतुष्पलं पचेत्॥
यावत्पिण्डं तदुत्तार्य निष्कैकं भोजयेत्सदा।
प्रातः सन्ध्यां सदाखादेत् पक्तिशूलप्रशान्तये॥
वातजं पितजं मिश्रममृताख्यो हि मृत्युजित्।

मण्डूर भस्म ४० तोला, शतावर का रस ४० तोला दूध, घी, और दही २०-२० तोला लेकर एकत्र पीसकर पकाकर गाढा करें इसको प्रातः काल और सन्ध्या समय ४-४ माशाभर खाने से वातज पित्तज सन्निपातज और परिणाम शूलका नाश होता है।

[३१९] अमृत रसः। (र. चि.। ११ स्तबक)

कर्षद्वयं गन्धकस्य तदर्धं पारदस्य च॥
त्रिकटु त्रिफला मुस्ता विडङ्गं चित्रकं तथा॥
एषां सञ्चूर्णितानां च प्रत्येकं तु पलं भवेत्॥
बिडालपदमात्रं तु लिह्यात्तन्मधुसर्पिषा॥
शीतोदकं चानुपिवेत्क्रमाद्गव्यं पयस्तथा॥
अम्लपित्तमग्निमांद्यं परिणामरुजं तथा॥
कामलां पाण्डुरोगं च हन्यादमृतको रसः॥

शुद्ध गंधक २॥ तोला, शुद्ध पारद १। तोला, त्रिकटु, त्रिफला, नागरमोथा, बायबिडंग और चित्रक का चूर्ण ५-५ तोला, सबको मिलाकर रक्खे। इस में से १।-१। तोला शहद और घृत में मिलाकर चाटे और ऊपर ठण्डा पानी तथा गो दुग्ध यथाक्रम पान करे तो अम्लपित्त, मन्दाग्नि, परिणामशूल, कामला और पाण्डु रोग का नाश होता है।

[३२०] अमृताख्यलोहरसायनम्

(बं. से. रक्तपित्त)

अमृता तिवृता दन्ती श्रावणी खदिरो वृषः।
चित्रको भृङ्गराजश्च कोकिलाक्षः स पुष्करः।
पुनर्नवाबलाकाशाः शिग्रु मोरटदारकाः।
स्नुही रविरसो दर्भः कुशास्थि सहदेवरी॥
गवाक्षी वरुणः कन्दश्चविका तालमूलिका।
नागबला कणामूलं कुष्ठं ब्राह्मणयष्टिका॥
पलोन्मितानि सर्वाणि जलद्रोणे विपाचयेत्।
अष्टभागावशिष्टन्तु कषायमुपकल्पयेत्॥
त्रिफलायास्तथा प्रस्थं जलाष्टगुणप्राचितम्।
तस्मादष्टावशेषस्तु कषायस्तु परिस्रुतैः॥
माक्षिकेन हतश्चापि पुटितश्च यथाविधिः।
आयसं चूर्णितं पूतं पलं षोडशसम्मितम्॥
पलान्यभ्रस्य चत्वारि तावन्ति गन्धकस्य च।
द्वे द्वे पले रसस्यापि खल्लितस्य यथा विधिः।
गुडस्य च पलान्यष्टौ सितायाश्चाथ पैत्तिके।
रक्तपित्तेऽथ खण्डस्य मत्स्यण्डया वाथ कासके॥
गुग्गुलोर्द्विपलं दत्त्वा * प्रस्थार्धं सर्पिषस्तथा।
एवं पाकविधिज्ञस्तु पचेल्लोहं समाहितः॥
शीतेऽवतार्य मधुनः क्षिपेदष्टपलं भिषक्।
माक्षिकस्य विशुद्धस्य द्विपलं रजसः क्षिपेत्॥
शिलाजतोस्तथा चूर्णं पलार्धं सम्मितं भिषक्।
अथैषां प्रक्षिपेच्चूर्णं पलमात्रं पृथक् पृथक्॥
त्रिकटु त्रिफला दन्ति त्रिवृता जीरकद्वयम्।
गायत्रिसारं तालीसं धान्यकं मधुयष्टिका॥
शुभा रसाञ्जनं भृङ्गी चित्रकं चव्यमुस्तकं।
चातुर्जातक कक्कोलं लवङ्गं जातिकं फलम्॥
द्राक्षा खर्जूरकं चूर्णं पलार्धसम्मितं भिषक्।
एषः लोहवरः श्रीमान् सर्व व्याधि विनाशनः॥
यत्र यत्र प्रयुञ्जीत तत्तदाशु विनाशयेत्।
रक्तपित्तेऽम्लपित्ते च क्षये कुष्ठे ज्वरेऽरुचौ॥
दुर्नाम्नि चोदरे शूले ग्रहण्याश्चामवातके।
वातरक्ते मूत्रकृच्छ्रे प्रमेहे शर्करागदे॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अस्योपयोगान्मनुजस्तारुण्यमधिगच्छति।
ब्राह्मचर्येण कुर्वीत प्लुतं माक्षिक सर्पिषा॥
माषकं रक्तिका वृद्धया यावदष्टौ च माषका।
वर्जयेद् द्विदलं सूपं मांसं चानूपसम्भवम्॥
ककारपूर्वकं सर्वं प्रयत्नेन विवर्जयेत्।
अमृताख्यो वरो लोहः सर्वत्रैवोपयुज्यते।
अनेन जन्तवः स्वस्था नीरुजः सन्ति नान्यथा॥

गिलोय, निसोत, दन्ती, मुण्डी, खदिर, बांसा चीता, भांगरा, ताल मखाना, पोखर मूल, पुनर्नवा खरैंटी, कांसा, सोजना, ईख की जड़, विधारा, थोहर का दूध, आक का दूध, दाब, कुश की जड़, हडसंकरी, शतावर, इन्द्रायण, वरुणा, कमल कन्द, चव्य, मूगली, गंगेरन, पीपला मूल, कूट और भारंगी। सब ५-५ तोला लेकर १६ सेर जलमें पकावे, आठवां भाग शेष रहने पर उतार कर छान ले। फिर एक सेर त्रिफले को आंठ गुने जल में पकाकर आठवां भाग रहने पर छान लें। फिर सोना मक्खी के द्वारा भस्म किया हुआ लोह १ सेर, २० तोले अभ्रक भस्म, २० तोले शुद्ध गंधक, रस सिन्दुर २० तोला, गुड ४० तोला, (यदि पैत्तिक रोग हो तो गुड़ की जगह बूरा, और रक्त पित्त में मिसरी और खांसी में चीनी ले] शुद्ध गूगल १० तोला, घृत ४० तोला। यथा विधि पाक सिद्ध करके उतार कर ठण्डा होने पर ४० तोला शहद मिलावे और सोना मक्खी भस्म १० तोला, शुद्ध शिला जीत २॥ तोला, त्रिकुटा, त्रिफला, दन्ती, निसोत, कालाजीरा, सफेद जीरा, खैरसार, तालीस-पत्र, धनिया, मुल्हैठी, वंशलोचन, रसौत, काकड़ा सिंगी, चीता, चव्य, नागरमोथा, तेजपात, दाल-चीनी, इलायची, नागकेसर, कंकोल, लौंग, और जायफल ५-५ तोला दाख और खजूर २॥-२॥ तोला मिलावे। यह श्रीमान् सर्व लोहो में उत्तम सर्व प्रकारके रोगोंको हरनेवाला है इसको जिस रोगमें दिया जावे उसीको यह नष्ट कर देता है। यह लोह रक्तपित्त, अम्लापित्त, क्षय, कुष्ठ, ज्वर, अरुचि, बवासीर, उदररोग, शूल, ग्रहणी, आमवात, वातरक्त, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह और शर्करा रोगका नाश करता है। इसके प्रयोग से मनुष्य जवान हो जाता है। इसको सेवन करनेवाला मनुष्य ब्रह्मचारी रहे। इसे शहद और घी में मिलाकर १ मासे की मात्रा से शुरू करके रत्ती रत्ती बढ़ाकर ८ माशे की मात्रा तक पहुंच जाना चाहिये।

अपथ्य--दाल, अनूप देश के जीवोंका मांस, ककार वाली चीजें।

[३२१] अमृताङ्कुरलोहम्

(भै. र., र. र.। कुष्ठा रसें. चि. अ. ९.)

हुताशमुखसंशुद्धं पलमेकं रसस्य वै।
पलं लोहस्य ताम्रस्य पलं भल्लातकस्य च॥
गन्धकस्य पलञ्चैकमभ्रकस्य च गुग्गुलोः।
हरीतकी विभीतक्योश्चूर्णं कर्षद्वयं द्वयोः॥
अष्टभागाधिकं तत्र धात्र्याःपाणितलानि षट्।
घृतं द्वयष्टगुणं लौहात् द्वात्रिंशत् त्रिफलाजलम्
एवं कृत्वा पचेत् पात्रे लौहे च विधि पूर्वकम्।
पाकमेतस्य जानीयात् कुशलौ लौहपाकवत्॥
विबुद्धः प्रातरुत्थाय गुरुदेव द्विजार्चकः।
रक्तिकादिक्रमेणैव घृतभ्रामरमर्दितम्॥
लौहे लौहस्य दण्डेन कुर्यादेतद् रसायनम्।
अनुपानञ्च कुर्वीत नारिकेलोदकं पयः।
सर्वकुष्ठहरं श्रेष्ठं वलीपलित नाशनम्॥
पाण्डु मेहामवातघ्नं वातरक्तरुजापहम्॥
कृमि शोथाश्मरी शूल दुर्नामवातरोगनुत्।
क्षयं हन्ति महाश्वासमत्यर्थं शुक्रवर्द्धनम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आग्निसन्दीपनं हृद्यं कान्त्यायुर्बलबुद्धिकृत् ।
विवर्ज्य शाकाम्लमपि स्त्रियश्च
सेव्यो रसो जाङ्गललावकानाम् ।
शाल्योदनं षष्टिकमाज्य मुद्ग
क्षौद्रं गुड क्षीरमिह क्रियायाम् ॥

रस सिन्दूर * ५ तोला, लोह भस्म ५ तोला, ताम्र भस्म ५ तोला, भिलावा, गन्धक, अभ्रक भस्म, और शुद्ध गूगल ५-५ तोला, हैड़, बहेड़ा २॥-२॥ तोला, आमला ८ तोला २ माशे, घृत १ सेर। त्रिफले का काथ २ सेर, सबको विधि पूर्वक लोहे के बर्तन में पाक करें। इसके पाककी विधि लौह के पाक के समान है। इसे लोहे के पात्र में लोहे के डंडे से शहद और घृत के साथ मर्दन करके प्रतिदिन प्रातः काल १–१ रत्ती सेवन करें और ऊपर से नारियल का पानी पिये। इससे सब प्रकार के कुष्ट, बलि पलित, पाण्डु, प्रमेह, आमवात, वातरक्त, कृमि, शोथ, पथरी, शूल, मस्सा, वात व्याधि, क्षय, श्वास आदि रोगों नाश होता है तथा यह शुक्र वृद्धि, अग्नि संदीपन, बल, बुद्धि और कान्ति की वृद्धि करता है।

अपथ्य--अम्लरस युक्त शाक और स्त्री प्रसंग।

पथ्य–शाली चावल, साठी चावल, घी, मूंग, शहद, गुड़ और दूध।

[३२२] अमृतार्णवः (रसें. चि. अ. ८)

सूतभस्म चतुर्भागं लोहभस्म तथाष्टकम् ।
मेघभस्म च षड्भागं शुद्ध गन्धस्य पञ्चकम् ॥
भावयेत् त्रिफला क्काथे तत्सर्वं भृङ्गजद्रवैः ।
शिग्रुवह्निकटुकाथैः सप्तधा भावयेत्पृथक् ॥
सर्वतुल्या कणा योज्या गुडैर्मिश्र पुरातनैः ।
निष्कमात्रं सदा खादेत् जरां मृत्युं निहन्त्ययम्
ब्राह्मायुः स्याच्चतुर्मासैं रसोऽयममृतार्णवः ॥
तिलकौरुण्टपत्राणि गुडेन भक्षयेदनु ॥

चार भाग रससिन्दुर, आठ भाग लोह भस्म, छः भाग अभ्रक भस्म और पांच भाग शुद्ध गन्धक। इन सबको त्रिफले के काथ, भांगरा, सहजना, चीता और कुटकी, इन सब के रस में अलग २ सात सात भावना दे। फिर सब वस्तुओं के बराबर पिप्पली चूर्ण मिलावे। यह औषधि ४ माशा लेकर पुराने गुड के साथ सेवन करने से जरा और अकाल मृत्यु हार जाती हैं। चार मास तक इस अमृतार्णव के सेवन करने से ब्रह्मा के समान परमायु होती है (?) इस औषधि को सेवन करके तिल, गुड और कुरण्ट के पत्तों का रस एकत्र करके पीना चाहिए।

[३२३] अमृतार्णवोरसः

(र. रा. सुं., भै. र. र., सा. सं. ज्वराति. अति.)

हिंगुलोत्थं रसं गन्धकं टङ्कणं शटी ।
धान्यकं बालकं मुस्तं पाठा जीरघुणप्रिया ॥
प्रत्येकं तोलकं चूर्णं छागीक्षीरेण पेषयेत् ।
माषाभा वटिका कार्या रसोयममृतार्णवः ॥
वटिकां भक्षयेत्प्रातर्गहनानन्दभाषितम् ।
धान्यजीरकयूषेण विजयाशणबीजतः ॥
मधुना छागदुग्धेन मंडेन शीतवारिणा ।
कदलीमोचकरसैः कञ्चटद्रवकेण च ॥
अतिसारं जयेदुग्रमेकजं द्वंदजं तथा ।
दोषत्रयसमुद्भूतमुपसर्गसमन्वितम् ॥
शूलघ्नो वह्निजननो ग्रहण्यर्शो विकारनुत् ।
अम्लपित्तप्रशमनः कासघ्नो गुल्मनाशनः ॥

हिंगुल से निकाला हुवा पारा, लोहभस्म, शुद्ध गन्धक, सुहागे की खील कचूर, धनिया, सुगंध-

*कोई कोई हिंगुल का पारद लेते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाला, नागरमोथा, पाठा, जीरा और अतीस, एक एक तोला लेवे प्रथम पारा गन्धककी कज्जली बनावें और उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर बकरी के दूध से पीस कर १—१ माशे की गोलियां बनावे। इसे धनियां और जीरके साथ मूंग का यूप, जीरा, भांग, सनके बीज, शहद, बकरी का दूध, भात का मांड, शीतल जल, केले के फूल का रस, और जलपीपल का रस, इनमें से किसी एक के साथ खाने से घोर अतिसार का नाश होता है। यह एक दोषज, द्विदोषज, त्रिदोषज, उपद्रव-युक्त सब अतिसार, शूल संग्रहणी, बवासीर, अम्ल-पित्त, खांसी और अग्नि को प्रज्वलित करता है।

[३२४] अमृतार्णवोरसः

(र. रा. सु. श्वा.)

पारदं गन्धकं शुद्धं मृतलोहञ्च टङ्कणम्।
रास्ना विडङ्ग त्रिफला देवदारू कटुत्रयम्॥
अमृता पद्मकं क्षौद्रं विषतुल्यं सुचूर्णितम्।
द्विगुंजं श्वासकासार्त्तः सेवयेदमृतार्णवम्॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, लोहभस्म, सुहागेकी खील, रास्ना, बायबिडंग, त्रिफला, देवदारु, त्रिकुटा, गिलोय, पद्माख, शहद और शुद्ध विष। सब को समान भाग लेकर प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनाकर उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर खरल करें। यह, दो रत्ती की मात्रा में सेवन करने से श्वास और खांसी को दूर करता है।

[३२५] अमृतार्णवलोहः (र. र. कुष्ठ)

त्रिकटु त्रिफला लौहं समभागं विचूर्णितम्।
सर्वेषामपि चूर्णानामर्द्धभागं शिलाजतु॥
गुडूचीस्वरसैर्देया भावना रविरश्मिभिः।
वारत्रयं ततः शुष्कं घृतेन सह मर्दयेत्॥
माष मात्रं च मधुना मर्दितं भक्षयेन्नरः।
हन्त्यष्टादश कुष्ठानि वातरक्तं सुदुस्तरम्॥
जयेदर्शांसि सर्वाणि प्रमेहमुदराणि च॥

सोंठ, काली मिर्च, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला और लोहभस्म एक एक भाग और सब से आधी शुद्ध शिलाजीत एकत्र मिला कर चूर्ण करे, इस चूर्ण को गिलोय के रस की तीन भावना देकर सुखा देवे, फिर इसमें घी मिलाकर खरल करके एक माशा, शहद में मिलाकर खावे। यह अठारह प्रकार के कोढ़, दुस्तरवातरक्त, सर्व प्रकार की बवासीर, प्रमेह और उदर रोगों का नाश करता है।

[३२६] अमृतेश्वरोरसः।

(रसे. चि. अ. ९)

रसभस्मामृतासत्वं लौहं मधु घृतान्वितम्।
अमृतेश्वरनामायं षड्गुञ्जो राजयक्ष्मनुत्॥

रस सिन्दूर, सत गिलोय और लौहभस्म इन इन सब को इकट्ठा करके शहद और घी में मिलावे। इसका नाम अमृतेश्वर रस है। इसे ६ रत्ती की मात्रा में प्रयोग करने से राजयक्ष्मा का नाश होता है।

[३२७] अम्लपित्तान्तको रसः

(र. रा. सुं., अम्ल., रसे. चि. म. अ. ९)

मृतसूताभ्रलोहानां तुल्यां पथ्यां विमर्दयेत्।
माषमात्रं लिहेत् क्षौद्रैरम्लपित्तप्रशान्तये॥

रससिंदूर, अभ्रक की भस्म और लोह भस्म, समान भाग लेकर सबके बराबर हरड मिलाकर चूर्ण करे। इसे एक माशे की मात्रा में शहद के साथ चाटने से अम्लपित्त का नाश होता है।

[३२८] अर्कलोकेश्वरो रसः

(र. सं. क. ४ उल्ला.)

शुद्धं सूतं पलं चार्कक्षीरैर्मर्द्यं पुनः पुनः।
द्विपलं शुद्धगन्धस्य महाकम्बु पलाष्टकम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उभे वह्निरसैर्भाव्ये शोष्ये पेष्ये दिनत्रयम् ।
मेलयेत्पूर्वसूतेन तदर्धं टङ्कणं क्षिपेत् ॥
अर्कक्षीरैः पुनः सर्वं यामैकं मर्दयेद् दृढम् ।
तच्छुष्कं चूर्णं लिप्तेऽथ भाण्डेरुद्ध्वा पुटेपचेत् ॥
चतुर्गुञ्जामितं खादेन्मरिचाज्येन संयुतम् ।
देयं दध्योदनं पथ्यं विजयासगुडानिशि ॥
ग्रहणीदोषनाशार्थं नास्त्यनेन समम्भुवि ।
ग्रहणीं नाशयेत्सर्वामर्कलोकेश्वरो रसः ॥

५ तोला शुद्ध पारद को बार २ आक के दूध में खरल करके उसने शुद्ध गन्धक १० तोला और बड़े शंखकी भस्म ४० तोला (दोनों को चीते के रसमें तीन दिन खरल करके) और सुहागे की खील २॥ तोला मिलाकर प्रथम पारा गन्धककी कज्जली करके उसमें अन्य औषधियां मिलाकर एक प्रहर आक के दूध में खरल करे, फिर उसको सुखा कर शराबों के भीतर संपुट कर के फूंक दे, जब शीतल हो जाय तब निकाल कर रक्खे इसमें से ४ रत्ती रस काली मिर्च और घी के साथ खावे, इसपर दही भाथ का पथ्य और रात्रि में गुड मिली हुई भांग देनी चाहिये, संग्रहणी दोष के दूर करने को इससे बढकर दूसरी औषधि पृथ्वी पर नहीं है, सब प्रकार की संग्रहणी को यह अर्क लोकेश्वररस दूर करता है ।

[३२९] अर्केश्वरो रसः (र. रा. सुं. सन्नि.)

मृतसूतं मृतं ताम्रं मृततीक्ष्णं च टङ्कणम् ।
खर्परं त्रिकटुं तालं अर्कक्षीरेण मर्दयेत् ॥
दिनैकेन भवेत्सिद्धं नाम्ना ह्यर्केश्वरो रसः ।
अर्कक्षीरेण वै नस्यं सन्निपातहरं परं ॥

रससिंदूर, ताम्रभस्म, लोहभस्म, सुहागे की खील, शुद्ध खपरिया, त्रिकुटा और शुद्ध हरताल । इन सबकोआकके दूध से १ दिन खरल करे । आकके दूध में इसकी नस्य देने से सन्निपात का नाश होता है ।

[३३०] अर्केश्वरः

(र. रा. सुं., र. सा. सं. रक्तपि.)

मृतार्कं मृतं वङ्गंश्च मृताभ्रं च समाक्षिकम् ।
अमृताम्बुरसैर्भाव्यं त्रिसप्तक पुटे पचेत् ॥
वासा क्षौद्रविदारीभ्यां चतुर्गुञ्जा प्रमाणतः ।
भक्षणाद्विनिहन्त्याशु रक्तपित्तं सुदारुणम् ॥

ताम्रभस्म, बंगभस्म, अभ्रकभस्म और सोना-मक्खी भस्म समान भाग लेकर सबको गिलोय और सुगन्ध बाला के रसकी २१ पुट देकर शराव संपुट में रखकर फूंक दे फिर अडूसा, शहद और विदारीकन्द के रसमें घोटकर चार रत्ती की गोलियां बनावे,इसके सेवन से रक्तपित्त तत्काल नष्ट होता है।

[३३१] अर्केश्वरो रसः

(र. र. स. । अ. २१)

रसेन गन्धं द्विगुणं प्रमर्द्य
ताम्रस्य चक्रेण सुतापितेन ।
आच्छाद्य भूत्या तु ततः प्रयत्ना-
च्चक्रीं विलग्नं च रसं प्रगृह्य ॥
विचूर्ण्य तद् द्वादशधार्कदुग्धैः
पुटेत वह्नित्रिफलाजलैश्च ।
सम्भावितोऽर्केश्वर एष सूतो
गुञ्जाद्वयं चास्य फलत्रयेण ॥
ददीत मासत्रितयेन सुप्त-
वाताद्विमुक्तो हि भवेद्धिताशी ।
क्षारं सुतीक्ष्णं दधिमांसमापं
वृन्ताकमध्वादिविवर्जनीयम् ॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक *दो भाग । दोनों को खूब खरल करके (किसी मिट्टी के बर-

* कहीं कहीं गन्धक ३ भाग लिखा है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तन में रखकर) उसके ऊपर एक गरम की हुई तांबे की कटोरी ढक दे। और फिर उस बरतन को राख से भर कर (अग्नि पर चढ़ावे)। पश्चात् हांडी को चूल्हे से उतारकर ठण्डा होने पर कटोरी और उसके भीतर लगे हुए रस को छुड़ा कर चूर्ण करके आक के दूध, चीता और त्रिफले के काथ की १२-१२ भावना देकर फूंके। इसे दो रत्ती की मात्रा से त्रिफले के चूर्ण के साथ ३ मास तक सेवन करने और पथ्य पालन करने से सुप्तवात (अंगों का सोजाना-बेहोस हो जाना)का नाश होता है।

अपथ्य—तीक्ष्णक्षार, दही, मांस, उर्द, बैंगन और शहद (तथा लवण) आदि न खाने चाहियें।

[३३२] अर्द्धनारीनाटेश्वरो रसः (१)

(र. रा. सुं. ज्वरे)

पलैकं भावयेत्तालं कूष्माण्डकफलद्रवैः।
त्रिःसप्तकृत्वश्चुर्णाद्भिस्तथाकर्कटिकारसैः ॥
चतुःशाणा हि निर्मोकयुक्त कूप्यां निरोधयेत्।
विपचेद्वालुकायन्त्रे द्वादशप्रहरं ततः ॥
स्वांङ्गशीतं समुद्धृत्य द्विशाणं तुत्थकं क्षिपेत्।
अञ्जनात्स ज्वरं हन्ति सद्यो गुंजा मितो रसः।
अर्द्धनारीश्वरो ह्येष कृपया शङ्करोदितः ॥

५ तोला हरतालको पेठेके रस चूना और बांझककोड़े के रस की २१-२१ भावना दे, फिर इसमें १। तोला सांप की कांचली मिलाकर शीशीमें भर कर १२ प्रहर बालुका यंत्र में पकावे। स्वांग शीतल हो जाय तब निकाल कर ७॥ माशा शुद्ध नीला थोथा मिलावे, इसके एक रत्ती अंजन करने से शीघ्र ही ज्वर दूर हो जाता है।

[३३३] अर्द्धनारीनाटेश्वरो रसः (२)

(र. रा. सुं. सन्नि.)

जयपालत्वगंकोलपत्रराजफलानि च।
तिलपर्ण्याश्वबीजानि समभागानि चूर्णयेत्।
तुत्थार्द्धं भागसंयुक्तं नस्यं संज्ञाप्रबोधनम् ॥
सन्निपातं जयेच्चातिनिद्रातद्राशिरोरुजाम् ॥
श्वासकासप्रलापानि कफमुग्रं च तत्क्षणात्।
तृतीयो रसराजःस्यादर्द्ध नारीश्वरोरसः ॥

जमाल गोटे की छाल, अंकोल, तेज पत्र, परवल, अजमोद, मेथी सब समान भाग लेकर चूर्ण करके इस में आधा भाग नीलाथोथा मिलावे। इसका नस्य देने से बेहोशी, सन्निपात, अत्यन्त निद्रा, तन्द्रा, मस्तकपीड़ा, श्वांस, खांसी, प्रलाप और उग्रकफ का नाश होता है।

[३३४] अर्द्धाङ्गवातारि रसः

(र. र. र. चं. वा. व्या)

सूतस्य च पलात्पञ्च पलैकं [1]मृतताम्रकम्।
जम्बीराणां द्रवैःपिष्टं सूत तुल्यश्च गन्धकम् ॥
नागवल्लीदलैःपिष्टं स्थित्वा मूषां विलेपयेत्।
रुद्ध्वा लघुपुटे पाच्यं त्र्यूषणेन समन्वितम् ॥
अर्द्धाङ्गकम्पवातार्तो भक्षयेच्च द्विगुञ्जकम् ॥

शुद्ध पारा २५ तोला, शुद्ध गन्धक २५ तोला, ताम्र भस्म ५ तोला, इन सबको नागरबेल पानों के रस और जम्भीरी नीबू के रसमें घोटकर मूषामें रख मुंह बन्द करके लघुपुटमें फूंक दे। फिर निकाल कर इस रसमें त्रिकुटे का चूर्ण मिला कर इस को दो रत्ती की मात्रा में सेवन करने से अर्द्धांग कम्पवात का नाश होता है।

[३३५] अर्बुदहरो रसः

(र. र. स. २४ अ.)

तण्डुलीयकत्वर्षाभूनागकन्यावलारसे।
गोमूत्रं च रसः पिष्टः पुटपक्कोऽर्बुदादिजित् ॥

१ अभ्रक चूर्ण-र. चं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पारे (रससिन्दूर) को चौलाई, विसखपरा, पान, घीकुमार, खरैंटी, और गोमूत्र की भावना देकर (पानमें लपेटकर उसके ऊपर मिट्टी का दो अंगुल मोटा लेप करके सुखाकर) एक (लघु) पुट दे। इसके सेवन से अर्बुद का नाश होता है।

[३३६] अथाऽर्शःकुठारो रसः

(रसा. सा. अर्शे)

पारदाद् द्विगुणो गन्धस्ततुल्यौ व्योमतीक्ष्णकौ।
बिल्वमज्जाशिवाऽग्नित्रिकटुदन्त्यो रसोन्मिताः॥
टङ्कणं सैंधवं यावक्षारा भागाश्च पञ्चशः।
द्वात्रिंशद्भाग गोमूत्रं तावद्भागा स्नुही भवेत्॥
पक्त्वा मन्दाग्निना सर्वं द्विमाषप्रमिता वटी।
प्रत्येहं सेवनीया स्यादर्शो वनकुठारिका॥

एक छटांक शुद्ध पारद, आधपाव गन्धक, आधपाव अभ्रक भस्म और फौलादलोह भस्म, बेलगिरि, बड़ी हरड, चित्रक, सोंठ, मिरच, पीपल, शुद्ध जमाल गोटा, एक एक छटांक, सुहागे की खील (लावा), सेंधा नोन, जवाखार पांच पांच छटांक। बत्तीस छटांक गोमूत्र, बत्तीस छटांक थूहर का दूध, इन औषधियों में से कूटने योग्य औषधियों को कूटकर कपरछन करले, फिर सब चीजों को लोह की कड़ाही में मन्दी मन्दी आंच से पकावे। जब गाढ़ा होजाय तब सब को खरल में घोटकर दो दो माशे की गोलियां बनाले। एक गोली को प्रातः काल गरम जल के साथ सेवन किया करे तो बवासीर के मस्से नष्ट हो जायँ।

[३३७] अर्शःकुठारो रसः (१)

(र. र. स., यो. त. का. धे.)

शुद्धसूतं पलैकन्तु द्विपलं शुद्धगन्धकम्।
मृतं ताम्रं मृतं लोहं प्रत्येकन्तु पलत्रयम्॥
त्र्यूषणं लाङ्गली दन्ती पीलुकं चित्रकं तथा।
प्रत्येकं द्विपलं योज्यं यवक्षारं च टङ्कणम्॥
उभौ पञ्च पलौ योज्यौ सैन्धवं पलपञ्चकम्।
द्वात्रिंशत्पलगोमूत्रं स्नुही क्षीरं च तत्समम्॥
मृद्वग्निना पचेत्स्थाल्यां सर्वं यावत्सुपिण्डितम्॥
माष द्वयं सदा खादेद्रसोऽयमर्शः कुठारकः।
तक्रेण दाडिमाम्भोभि पक्वकन्देन वाऽथ वत्॥

शुद्ध पारा ५ तोला, गन्धक १० तोला, ताम्र भस्म और लोह भस्म १५–१५ तोला। त्रिकुटा, कलिहारी, दन्ती, पीलू, चीता, १०–१० तोला, जवाखार और सुहागे की खील प्रत्येक २५–२५ तोला सेंधानोंन २५ तोला, गोमूत्र २ सेर, थूहर का दूध २ सेर, प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावे फिर उसमें अन्य औषधियोंका चूर्ण मिलाकर पात्र में भर मन्दाग्नि पर पकावे। जब गाढा होजाय तब दो दो माशे की गोलियां बनावे। एक एक गोली नित्य छाछ अनार के रस या जिमीकन्द के रसके साथ खाने से बवासीर का नाश होता है।

[३३८] अर्शःकुठारो रसः (२)

(र. रा. सु. अर्शे)

श्रेष्ठा दन्त्यग्नियुग्मत्रिकटु
कहलिनीपीलुकुम्भं विपक्वम्।
प्रस्थे मूत्रस्य सस्नुक्पयसि
रसपलं द्वेपले गन्धकस्य॥
लोहस्य त्रीणि ताम्रात्कुडवमथ
रजः क्षारयोश्चापि पञ्च।
क्षिप्त्वा स्थाल्यां पचेत्तु
ज्वलतिदहनतश्चूर्णमर्शः कुठार॥

त्रिफला, दन्ती और भिलावा, चीता, त्रिकुटा, कलियारी, पीलू और जमालगोटा १–१ भाग। १ शेर गोमूत्र और १ सेर थूहर का दूध, शुद्ध पारा

१ पाठान्तर–अभ्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५ तोला, शुद्ध गन्धक १० तोला (कज्जली करके), लोह भस्म १५ तोला, ताम्र भस्म २० तोला, सुहागेकी खील और जवाखार दोनों १०-१० तोला सबको एकत्र घोटकर मिट्टी के पात्रमें भरकर पकावे। यह रस अर्श (बवासीर) का नाश करता है।

[३३९] अर्शोरिमण्डूरम् (वृ. नि. र. अर्शे)

अतिरक्तं यदात्वर्शो निपातयति पीडितम् ॥
दृश्यते तच्छरीरस्यलोहकिट्टं तदानयेत् ।
गवां मूत्रेण तत्पक्वं बहुशश्चूर्णवत्कृतम् ।
अतिसूक्ष्ममिदं तस्य त्रिकटुत्रिफलायुतम् ।
किट्टस्यार्द्धेन संमिश्रय चूर्णं शर्करया युतम् ॥
दीयते त्रिदिनादूर्द्धं रक्तं तिष्ठति नान्यथा ।
दुग्धात् शालिमसूरादि दीयते पथ्य भोजनम् ॥
अर्शांसि प्रशमं यान्ति कार्श्यं वै याति दूरतः ॥
अत्यन्तबलमाप्नोति निरातंको यथेच्छया ।
महोत्साहयुतो भूत्वा यावज्जीवेन्निरामयः ॥
उष्णाम्लं वर्जयेन्नित्यं स्त्रीणां सेवां विशेषतः॥

यदि बवासीर से अत्यन्त खून बहता हो और अत्यन्त पीड़ा होती हो तो पुरानी मण्डूर को लेकर गोमूत्र में पकावे कि जिससे चूर्णसा हो जाय फिर इस में त्रिकुटा, त्रिफला और आधी मिश्री मिलाकर तीन दिन तक धरा रहने दे पश्चात् रोगी को देवे तो यह गुदा से बहते हुए रुधिर को बन्द कर देता है इसके सेवन करने वाले को दूध के साथ शाली चावल और मसूर का पथ्य देवे, इस से बवासीर और कृशता नष्ट होती है, अत्यन्त बलकी प्राप्ति होती है तथा मनुष्य जब तक जीता है तब तक निरातंक यथेच्छा चारी महोत्साही रोग रहित रहता है। इसका खानेवाला गरम पदार्थ और खटाई न खाय तथा स्त्रीगमन करना भी निषेध है।

[३४०] अल्पज्वरांकुशो रसः (भै.र. ज्वरे)

शुद्धं सूतं विष गन्धं धूर्तबीजं त्रिभिः समम् ।
चतुर्णां द्विगुणां व्योषं चूर्णं गुञ्जाद्वयं हितम् ॥
जम्बीरस्य च मज्जाभिरार्द्रकस्य रसैर्युतम् ।
ज्वरांकुशो रसो नाम्ना ज्वरान् सर्वान् प्रणाशयेत्

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध मीठा तेलिया १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग, धतूरे के बीज ३ भाग, त्रिकुटा १२ भाग। प्रथम पारेगन्धक की कज्जली बनावे और अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर खरल करे। इसे जम्बीरी नीबू की मज्जा (गूदे) या अदरक के रस के साथ सेवन करने से सब प्रकार के ज्वरों का नाश होता है।

[३४१] अथाश्मरीकण्डनो रसः

पलाशरम्भातिलकारवल्ली
यवाम्लिकाशिखरिकक्षपाणाम् ।
क्षारं समादाय कलांशमस्य
रसं च गन्धं वरलोहभस्म ॥
द्वयोः समं सर्वमिदं विचूर्ण्य
संस्थापयेदश्मरिकण्डनाख्यम् ।
चूर्णं तदक्षप्रमितं प्रलिह्य
दध्नाऽनुपेयं वरुत्वगम्भः ॥
मुच्येत मर्त्योऽश्मरिशर्करातो
निःसंशयं मृत्युमुखागतोऽपि ॥

ढाक, केला, तिल, करेला, जौं, इमली, चिरचिटा और हल्दी इनमें से प्रत्येक का क्षार १६ १६ भाग, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक १-१ भाग, लोह भस्म २ भाग। प्रथम पारेगन्धक की कज्जली बनावें और फिर अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर खरल करें।

इसे १। तोला की मात्रा में दही या बरने की छाल के काथ के साथ सेवन करने से पथरी और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शर्करा का नाश होता है। व्यवहारिक मात्रा १ माशा।

[३४२] अश्मरीभिद्रसः(र. प्र. सु. अ. ८)

रसं सिन्दूरनामानं गन्धतैलेन मर्दितम्।
भक्षयेद्वल्लमात्रं हि अश्मरीरोगघातकम्।
लोहाकमूलस्वरसं शर्करासंयुतं पिबेत्॥

रस सिन्दुर को गन्धक के तेल में घोटकर ३ रत्ती प्रमाणमें खाने से पथरी रोगका नाश होता है।

[३४३] अश्मरीभेदको रसः (र. प्र. सु.अ.८)

श्वेताम्बरी तथा श्वेता चाश्वगन्धा पुनर्नवा।
तासां रसेन संमर्द्य पारदं दोषवर्जितम्॥
गन्धकेन द्विभागेन कारयेद्गोलमुत्तमम्।
स्वेदयेद्यामम‌र्धं तु भक्षितं चाश्मरीप्रणुत॥

सिखाल, श्वेत अपराजिता, असगन्ध, और पुनर्नवा। इनके स्वरस से पारद को भावना देकर शुद्ध करे फिर यह शुद्ध पारद एक भाग और शुद्ध गन्धक दो भाग लेकर कज्जली करके गोला बनाकर उसे आधा पहर तक स्वेदन करके रक्खे। यह पथरी रोग का नाश करता है।

[३४४] अश्व कंचुकी रसः(र. रा. सुं. श्वासे)

पारदं टङ्कणं गन्धं विषं व्योषं फलत्रयम्।
तालकञ्च समं सर्वं जैपालं चापि तत्समम्॥
मर्दयेत् भृंगनीरेण भावना तु त्रिसप्तधा।
गुञ्जामात्रां वटीं कृत्वा छायायां शोषयेत् बुधः॥

शुद्ध पारा, सुहागे की खील, शुद्ध गन्धक, शुद्ध विष, त्रिकुटा, त्रिफला, हरताल, और शुद्ध जमाल गोटा। सब समान भाग लेकर प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावें और अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर भांगरे के रस की २१ भावना देकर १–१ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखावें। (इन्हें ठण्डे पानी के साथ सेवन करने से विरेचन होता है।)

[३४५] अश्वचोली रसानुपानम्

(र. रा. सुं. श्वासे)

शृङ्गवेररसैः सार्धं वटीमेकां प्रयोजयेत्।
उष्णेन वारिणा शूले कासे श्वासे च यक्ष्मणि॥
घोडाचोलीति विख्याता नाम्ना नागार्जुनोदिता
मधुना वलितं पलितं जयेत्।
शोभाञ्जनरसगोघृताभ्यां जठरशूलं जयेत्।
दध्नाऽजीर्णं शतपत्ररसेन शीतज्वरम्।
पुनर्नवारसेन पाण्डुं तिलपर्णीरसेन।
नेत्राञ्जनेन नेत्ररोगान्, तण्डुलोदकेन विषम्।
जीरशर्करया ज्वरं बहुदिनसेवनेन सुभगो भवेत्॥
वचादेवदारुकुष्ठैरस्थिगतवातं। मस्तककेशान्दूरीकृत्य छित्वा निम्बु नीरेण मर्दयेत्। दन्तनिर्मुक्तत्वं भवति गोमूत्रेण पूगलग्नध्यर्था हरेत्। आर्द्रकरसेन विरेचनं भवेत्। जातीफलेनार्शसां नाशः। पुत्रञ्जीवरसेन वन्ध्यायाः पुत्रो भवेत्। शिरीष रसेन सर्पविषनाशः। वचायवानीरसेन कटीवातम्। आटरूषकरसेन श्वासकासौ॥

अद्रक के रस और गरम पानी के साथ १ गोली खाने से शूल, खांसी, श्वास और यक्ष्मा का नाश होता है। मधु के साथ सेवन करने से वलीपलित रोगका नाश होता है। सौंजने के रस और गोघृत के साथ जठर शूल मिटता है और दधि के साथ सेवन करने से अजीर्ण नष्ट होता है। कमल के पत्तों के रस के साथ देने से शीतज्वर और पुनर्नवा के रस के साथ सेवन करने से पाण्डु का नाश होता है, तिलपर्णी के रस के साथ आंखों में अंजन करने से नेत्र रोगों का और चावलों के पानी के साथ देने से विष का नाश

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होता है। जीरे और चीनी के साथ सेवन करने से ज्वर का नाश होता है। बच, देवदारु और कूठ के चूर्ण के साथ सेवन करने से अस्थिगत वायु का नाश होता है। सिर को मुंडा कर इसे नींबू के रस में घिसकर मालिश करने से बन्द जवाड़ी खुल जाती है। अद्रक के रस के साथ खाने से विरेचन होता है। जायफल के चूर्ण के साथ खाने से बवासीर का और पुत्रञ्जीवक (जिया पोता) के रस के साथ सेवन करने से वंध्यत्व दूर होता है। सिरस के रस से सर्प विष, बच और अजवायन के काढ़े से कमर की वायु तथा वांसा के रसके साथ सेवन करने से श्वास और खांशी का नाश होता है।

[३४६] अइबचोलीरसानुपानम्

(अनुपा. त.)

घटीमेकां नरः खादेद् द्वे वा कञ्जविलोचने!।
पथ्ययुक्तो गदं हन्याद्यथा रोगानुपानतः॥
वातशूलं क्षयं कासं श्वासं मूलकनीरतः।
हन्ति वा शृङ्गवेराम्बु पिप्पलीमधुतः प्रिये!॥
वलीपलितरोगघ्नो वाजिवर्मा समाक्षिकः।
शिग्रु मूलाम्बुगोसर्पिर्युतः शूलं ज्वरं जयेत्॥
मस्तुनाऽजीर्णकं शीतज्वरमम्बुजनीरकैः।
पुनर्नवायुतः पाण्डुं तण्डुलाम्बुयुतो विषम्॥
तिलपर्णीरसैरक्ष्णो रंजितो तद्वदापहः।
शर्कराजाजिसंयुक्ता ज्वरं पित्तभवं जयेत्॥
क्वाथेनास्तिगतं वातं देवकाष्ठवचारुजाम्।
जातीफलान्वितोऽर्शांसि वातशूलं कटुत्रिकैः॥
गोमूत्रेण नरः खादन् पुरुषत्वमवाप्नुयात्।
पुत्रञ्जीवरसैर्बाले! वन्ध्यासादेव गर्भिणी॥
लिप्तः सर्पविषं दंशे हन्ति निम्बुरसैस्तु वा।
शिरीषस्वरसैर्वाज्ये मेघनादरसैर्हि वा॥

वचया दीप्ययुतो हन्ति कटिपीडां मरूद्भवाम्।
कसनं श्वसनं हन्ति मधुवासारसान्वितः॥
ज्वरं हन्ति विशालाक्षि! सुरसास्वरसाञ्जितः।
तथा नित्यज्वरं हन्ति भक्षितः कन्यकाम्बुना॥
नारीदुग्धेन नक्तान्ध्यमूर्ध्वश्वासं वरायुतः।
हन्ति दाहयुतं पित्तज्वरमामलकान्वितः॥
सेवितोघृतसंयुक्तः सर्वशूलानि संजयेत्।
शिग्रु मूलाम्बुगोसर्पिर्माक्षिकैर्वा विचक्षणे॥
कर्णरोगशिरोव्याधिपीनसार्धावभेदकान्।
जयेज्जातीफलेनायं वाजिवर्मा रसोत्तमः॥
कन्यकातुलसीतोयेमाक्षिकैः क्षतिका गदम्॥।
दध्ना वा तु गवांमूत्रैरतीसारं जयत्ययम्॥
तक्रतोयेन वा जातीफलेनाम्बुरुहेक्षणे!।
अथवा महिषीमूत्रे जयेत् संग्रहणीगदम्॥
कासमर्दरसैर्वापि टङ्कणेनाग्निमांद्यजित्।
तथा ब्राह्मिरसेनायं बुद्धिदो बुद्धिमत्ययम्॥
ताम्बूलवीटिकेनायं कान्तिसंस्कारको मतः।
सुधाक्षीरयुतो गुल्मं निर्गुण्डीस्वरसेन वा॥
यवानिकायुतोहन्ति सन्निपातं सुदारुणम्।
वातामयमजाक्षीरैरथवा गोघृतेन च॥
सर्ववातामयान्वायं मार्कवस्वरसैर्जयेत्।
धाजमोदाजयायुक्तो वरायुक्तोऽथवा प्रिये!॥
वाऽश्वगन्धारजः क्षौद्रसंयुक्तो सर्ववातजित्।
विष्णु क्रांताजटायुक्तो धनुर्वातामयं जयेत्॥
कुष्माण्डस्वरसैर्मेहं गोदध्ना वा विनिर्जयेद्।
गोक्षुरकरजो युक्तो धातुदोषं निवारयेत्॥
वर्द्धयेत् सर्पिषा शुक्रं कृच्छ्रं पूगरसैर्जयेत्।
रेचायेरण्डतैलेन विद्रधिं गुडयुक् तथा॥
आर्द्रकस्वरसैर्लिप्तो वृश्चिकस्य विषं जयेत्।
स्वेदं भृङ्गरसैः सार्द्धं चंपानीरैर्विगन्धताम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुक्रमेहमजाक्षीरैः पित्तं शिवमितान्वितः ।
अंजितो निम्ब तोयेन भूतावेशनिवारण : ॥
त्रिफलारुबुतैलेन संजयेदुदरामयान् ।
काकमाचीरसैर्वापि नात्र कार्या विचारणा ॥
मार्कवस्वरसैः शोफं वा पलाण्डुरसैर्जयेत् ।
करञ्जत्वग्रसैरेवं क्रुमिरोगं न संशयः ॥
शक्तिकृन्नवकंजाक्षि ! नागवल्लीदलाम्बुना ।
अजाजीक्षौद्रसंयुक्त ऊष्णवातविघातकः ॥
वीटकेन युतः स्वर्यः स्वरजिह्वरकोकिले ! ।
आमशूलं मुरायुक्तः पामां गोमूत्रलेपितः ॥
लेपितो भक्षितो लूताविषं भृङ्गरसान्वितः ।
तथा पल्लीविषं हन्ति लेपितो भक्षितोऽम्बुना ॥
उन्मत्तश्वविषं हन्ति मेघनादरसैरयम् ।
गोमूत्रेण गुडूच्या वा कुष्ठं कष्टतरं तथा ॥
न मे रोगो भवेदेवम् यस्येच्छास्ति वराङ्गने ! ।
गुटिमेकां तथार्धां वा प्रत्यहं सेव.द्धि सः ॥

अश्वचोली रस यथोचित अनुपान के साथ सेवन करने से और पथ्य पालन करने से अनेक रोगों का नाश करता है । मूली के रस के साथ या अद्रक के रस और पीपल तथा शहद के साथ सेवन करने से वातज शूल, क्षय, खांसी और श्वास का नाश होता है । शहद के साथ सेवन करनेसे बलीपलित रोग का नाश होता है । सौंजने के मूल की जड़ के रस और गाय के घी के साथ शूल और ज्वर का तथा मस्तु के साथ अजीर्ण का और कमल के रस के साथ सेवन करने से शीत ज्वर का नाश होता है । पुनर्नवा के रस के साथ सेवन करने से पाण्डु का नाश होता है, तिलपर्णी के रस में घिसकर आंख में आंजने से नेत्र रोगों का नाश होता है । चीनी और जीरे के साथ सेवन करने से पित्तज्वर का नाश होता है । देवदारु बच और कूट के काढ़े से अस्थिगत वायु रोग, जायफल के साथ बवासीर और त्रिकुटे के साथ सेवन करने से वातज शूल का नाश होता है । गो मूत्र के साथ सेवन करने से पुरुषत्व उत्पन्न होता है । तथा पुत्रंजीव [जिया पोता) के रस के साथ सेवन करने से वंध्यत्व (बांझपना) दूर होता है । सांप के काटे पर नींबू के रस में पीसकर लेप करने से अथवा सिरस के स्वरस में या घी अथवा नागरमोथे के रस में पीसकर लेप करने से सर्प-विष का नाश होता है । अजवायन और बच के चूर्ण के साथ खाने से कमर की वातज पीड़ा का नाश होता है । इस रसको श्वास कास में शहद और बांसे के रस के साथ, ज्वर में तुलसी के रस के साथ, दैनिक ज्वर में घीकुमार के रस के साथ देना चाहिये । रतौंधे में स्त्री दुग्ध में घिस कर आंख में आंजना चाहिए । त्रिफले के साथ देने से ऊर्ध्वश्वास का नाश होता है । दाहयुक्त पित्त-ज्वर में आमले के साथ, शूल में घी, सोजनेकी जड़ के रस और गोघृत तथा शहद के साथ देना चाहिए । कर्ण रोग, शिरोव्यथा, पीनस और आधा शीशी का जायफल के चूर्ण से, सूतिका रोग का घृतकुमारी के रस और तुलसी के रस तथा शहद के साथ देने से नाश होता है, अश्वचोली रस अतिसार में दही या गोमूत्र के साथ और ग्रहणी में तक्र अथवा जायफल के चूर्ण और भैंस के मूत्र के साथ देना चाहिए । कसौंदी के रस और सुहागे के साथ सेवन करने से अग्निमांद्य का नाश होता है । ब्राह्मी के रस के साथ सेवन करने से बुद्धि बढ़ती है । नागरवेल के पान में रखकर खाने से कान्ति बढ़ती है । थोहर के दूध या निर्गुण्डी के रस के साथ सेवन करने से गुल्म का नाश होता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है। अजवायन के साथ खाने से दारुण सन्निपात और बकरी के दूध के तथा गोघृत के साथ खाने से वायु के रोगों का नाश होता है। अथवा वात-व्याधि के लिए भांगरे की जड़ के स्वरस या अजमोद और भांग के साथ अथवा त्रिफला या असगन्ध के चूर्ण और शहद के साथ खाना चाहिए। विष्णु क्रान्ता की जड़ के साथ खाने से धनुर्वात का नाश होता है। पेठे के रस के साथ खाने से प्रमेह मिटता है। अथवा प्रमेह में गाय के दही के साथ देना चाहिए। गोखरू के चूर्ण के साथ खाने से धातु दोष दूर हो जाते हैं। घी के साथ खाने से शुक्र वृद्धि होती है। सुपारीके रस के साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है। एरण्ड तेल के साथ देने से विरेचन होता है। गुड के साथ देने से विद्रधि मिटती है। अद्रक के रस में पीसकर लगाने से विच्छू काटे को आराम होता है। भांगरे के रस में स्वेद और चंपा के रस में शरीर की दुर्गन्ध दूर होती है। बकरी के दूध के साथ सेवन करने से प्रमेह, आमला और मिश्री के साथ खाने से पित्त का नाश होता है। नींबू के रस में घिस कर आंजने से भूतावेश मिटता है। त्रिफला और एरण्ड के तेलके साथ खाने से उदर रोगों का विनाश होता है, अथवा मकोय के रसके साथ सेवन करने से भी उदरामय मिटते हैं। भांगरेकी जड़ के रस या प्याज (पलाण्डु) के रसके साथ सेवन करने से सूजन, करञ्जवे की जड़ की छालके रसके साथ खाने से कृमि रोगों का नाश होता है। नागरवेल के पानके रसके साथ खाने से शक्ति बढ़ती है। जीरा और शहद के साथ खाने से ऊष्ण वात का नाश होता है। नागरवेल के पानमें खाने से स्वर सुन्दर होता है। मुरामांसी के साथ खाने से आमशूल और गोमूत्र में मिलाकर लेप करने से पामा का नाश होता है। भांगरे के रसके साथ खाने और लेप करने से मकड़ी का विष नष्ट होता है। पानी से पीस कर लेप करने और खाने से पल्ली विष का नाश होता है। नागरमोथे के रसके साथ सेवन करने से उन्मत्त कुत्ते के काटे का विष नाश होता है। गोमूत्र या गिलोय के रसके साथ खानेसे कुष्ठका नाश होता है। जिसकी इच्छा सदैव स्वस्थ रहने की हो उसे प्रतिदिन १ या आधी गोली उचित अनुपान के साथ खानी चाहिये।

[३४७] अश्वत्थवल्कलादि लौहम्

(वृ. नि. र. । क्षये)

अश्वत्थवल्कलं चैव त्रिकटुर्लोहकिट्टकम् ।
गुडेन सह दातव्यं क्षयरोगविनाशनम् ॥

पीपलकी छाल, सोंठ, काली मिर्च, पीपल और मंडूरभस्म। इनके चूर्ण को एकत्र करके गुड के साथ सेवन करने से क्षय रोग का नाश होता है।

[३४८] अश्विनीकुमारो रसः (अनु.त.)

त्र्यूषणं फलत्रिकञ्च नागफेनकं विषम् ।
मागधीजटालवङ्गं दन्तिबीजतालकं ॥
टङ्कणं च गन्धकं रसं पृथक् पिचुं प्रिये ।
क्षीरमर्द्धप्रस्थकं गवां विशोषयेदातपे ॥
मूत्रकं गवां विशोष्य भृङ्गराजनीरकम् ।
शोषयेद्विघर्षयन्निरन्तरं विबन्धयेत् ॥
धाजीमन्थसन्निभां वटीमतीवसुन्दराम् ।
अश्विनीकुमार इत्ययं रसो वराङ्गने ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, अफ़ीम, शुद्ध मीठातेलिया, पीपलामूल, लौंग, जमालगोटा, शुद्ध हरताल, सुहागे की खील, शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा। सब चीजें १।-१। तोला लेकर प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावे फिर अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यथाक्रम आधे आधे सेर गाय के दूध, गोमूत्र और भांगरे के रस में घोटकर सुखा कर गोलियां बनावे। (यह अनुपान भेदसे अनेकों रोगोंका नाश करता है)

[३४९] अष्टधातुनिरूपणम्

(र. सा. १ पट.)

सुवर्णं रजतं ताम्रं लोहं च त्रपु शीसकम्।
रीतिकां कांस्यकं चैव अष्टधातून् क्रमेण तु॥

सोना, चांदी, तांबा, लोहा, रांग, सीसा, पीतल और कांसी इन आठ चीजों का नाम अष्टधातु है।

[३५०] अष्टमहारसाः (रा. नि. व. २२)

दरदः पारदः शङ्खः वैकान्तं कान्तमभ्रकम्।
माक्षिकं विमलश्चेति स्युरेतेऽष्टौ महारसाः॥

१ हिंगुल (शिंगरफ), २ पारा, ३ शंख, ४ वैक्रान्त, ५ कान्तलोह, ६ अभ्रक, ७ सोनामक्खी, और ८ रूपामक्खी, इन आठ चीजों का नाम "महारसाष्टक" है।

(३५१] अष्टमूर्तिरस (वृ. नि. र. ज्वरे)

हेमरूप्यं ताम्रनागं मृतं गन्धकमाक्षिकं॥
विमला च शिला शुद्धा सर्वांशं शुद्धसूतकं॥
अम्लेन मर्दयेद्यामं पुटे कुम्भधरे पचेत्॥
अष्टमूर्तिरसो नाम गुंजैकं भूतिके ज्वरे॥
देयश्चातुर्थिकं त्र्याहं द्वयाहिकं च विनाशयेत्॥

सुवर्ण, चांदी, तांबा, और सीसा इनकी भस्म शुद्ध गन्धक, सोनामक्खी भस्म, शुद्ध मनसिल समान भाग, इन सबके बराबर शुद्ध पारा लेकर प्रथम पारेगन्धककी कज्जली बनाकर सबको एकत्र कर नींबूके रसमें एक प्रहर घोटकर कुम्भपुट देवे, यह (अष्टमूर्ति रस) १ रत्ती की मात्रा में ज्वरवाले को देनेसे भूतज्वर, चातुर्थिक, त्र्याहिक, द्वयाहिक, आदि का नाश होता है।

[३५२] अष्टाङ्ग रस (र. सा.सं., र. चं. अर्शे)

गन्धं रसेन्द्रं मृतलौहकिट्टं
फलत्रयं त्र्यूषणवह्निभृङ्गम्॥
कृत्वा समं शाल्मलिकागुडूची
रसेन यामत्रितयं विमर्द्य॥
निष्कप्रमाणं गदितानुपानैः
सर्वाणि चार्शांसि हरेद्रसोऽयम्॥

शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा, लोहभस्म, मण्डूर भस्म, हरड, वहेडा, आमला, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, चीते की जड़ और भांगरा इन सब औषधियों को समान भाग लेकर प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावे फिर उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर सेमल और गिलोय के रस में तीन प्रहर खरल कर के रक्खे। इसे चार माशे की मात्रा में यथोचित अनुपान के साथ सेवन करने से सब प्रकार की बवासीर दूर होती है। इसको अष्टांग रस कहते हैं।

[३५३] अष्टादशरससंस्काराः

(र. प्र. सु. १ अ.)

स्वेदनं मर्दनं चैव मूर्च्छनं स्यात्तदुत्थितम्।
पातनं रोधनं सम्यक् नियमं च सुदीपनम्॥
तथाभ्रकग्रासमानं चारणं च क्रमेण हि।
गर्भद्रुतिर्बाह्यद्रुतिः प्रोक्तं जारणकं तथा।
रञ्जनं सारणं प्रोक्तं क्रामणं वेध कर्म च
सेवनं पारदस्याथ कर्माण्यष्टादशैव हि॥
उद्देशतो मयाऽत्रैव नामानि कथितानि वै।

पारद के निम्न अठारह संस्कार होते हैं:—

(१) स्वेदन (२) मर्दन (३) मूर्च्छन (४) उत्थापन (५) पातन (६) रोधन (अन्य ग्रन्थों में 'रोधनं' के स्थान में 'बोधनं' भी लिखा है) (७) नियमन् (८) दीपन (९) अभ्रक ग्रासमान (१०) चारण (११)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गर्भद्रुतिः (१२) बाह्यद्रुतिः (१३) जारण (१४) रञ्जन (१५) सारण (१६) क्रामण (१७) वेधकर्म (१८) सेवन ।

[३५४] अष्टादशाङ्ग लोह (भा. प्र. पांडु)

किराततिक्ता सुरदारु दार्वी
मुस्ता गुडूची कटुका पटोलम् ।
दुरालभा पर्पटकं सनिम्बं
कटुत्रिकं वह्नि फलत्रिकञ्च ॥
फलं विडङ्गस्य समांशिकानि
सर्वैः समं चूर्णमथायसञ्च ।
सर्पिर्मधुभ्यां वटिका विधेया
तक्रानुपानाद्भिषजा प्रयोज्या ॥
निहन्ति पाण्डुञ्च हलीमकञ्च
शोथं प्रमेहं ग्रहणी रुजञ्च ।
श्वासञ्च कासञ्च सरक्तपित्त-
मर्शांस्यथो वाग्ग्रहमामवातम् ।
व्रणांश्च गुल्मान् कफविद्रधिञ्च
चित्रञ्चकुष्ठञ्च ततः प्रयोगात् ॥

चिरायता, देवदारु, दारुहल्दी, नागरमोथा, गिलोय, कुटकी, परवल, धमासा, पित्तपापड़ा, नीम, त्रिकुटा, (सोंठ, मिर्च, पीपल) चीता, हरड़, बहेड़ा, आमला, और वायविडंग, ये सब औषधियां सम भाग लेकर चूर्ण करे और सबकी बराबर लोहभस्म मिलाकर घी और शहद के साथ गोलियां बनाकर मट्ठेके साथ सेवन करनेसे पाण्डु, हलीमक, सूजन, प्रमेह, संग्रहणी, स्वास, खांसी, रक्तपित्त, अर्श, जीभका रुक जाना, आमवात, व्रण, वायुगोला, कफरोग, विद्रधि, और स्वेत कुष्ट आदि का नाश होता है।

[३५५] अष्टावक्ररसः (भै. र. रसा.)

रसराजस्य भागैकं द्विभागं गन्धकस्य च ।
भागमेकं सुवर्णस्य भागार्द्धं रजतस्य च ॥
नागं ताम्रं खर्परञ्च वङ्गं चैव समांशकम् ।
प्रत्येकं रजतार्द्धञ्च सर्वमेकत्र मर्दयेत् ॥
वटाङ्कुररसैर्यामं यामं कन्यारसैः सह ।
कूप्यभ्यन्तरे संस्थाप्य त्रिदिनं पाचयेत्सुधीः ॥
दाडिमीकुसुमप्रख्यं जायते चाविकल्पतः ।
वलीपलितविध्वंसि बलपुष्टिकरं महत् ॥
आरोग्यजननं मेधाकान्तिकृच्छुक्रवर्द्धनम् ।
महौषधवरञ्चैतदष्टावक्रेण निर्मितम् ॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक दो भाग, सोना भस्म एक भाग, चांदी भस्म आधा भाग, सीसा भस्म, ताम्रभस्म, खपरिया और बंगभस्म प्रत्येक चौथाई भाग, प्रथम पारे और गन्धककी कज्जली बनावे और फिर अन्य औषधियां मिलाकर बरगदके रस और घीकुमार के रसमें मर्दन करके आतशी शीशी में भरकर बालुकायन्त्र में तीन दिन तक पकावे । तैयार होने पर इसका रङ्ग अनारके फूलके समान हो जाता है। यह बलीपलित नाशक, बलवर्द्धक, पौष्टिक, आरोग्यरक्षक और बुद्धि कान्ति तथा वीर्य वर्द्धक है।

[३५६] अष्टावुपरसाः (र. प्र. सु.अ. ५)

तालकं तुवरी गन्धं कङ्कुष्टं कुनटी तथा ।
सौवीरं गैरिकं चैव अष्टमं खेचराह्वयम् ॥

१ हरताल, २ सौराष्ट्र मृत्तिका, ३ गन्धक, ४ कंकुष्ट ५ मनसिल, ६ सौवीराञ्जन (सुरमा), ७ गेरू, ८ कसीस। यह आठ चीजें "उपरसाष्टक" कहलाती हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आ

अथाकारादि क्वाथ प्रकरणम्

[३५७] आकल्लकादि क्काथः

(वृ. नि. र. अश्म.)

आकल्लगोक्षुरजटातुलसीशिलाभि-
रेरंडमूलमगधामधुकैः प्रयुक्तः।
तक्राह्वमूलसुरसासुरपुष्पशुंठी-
क्काथो निहंति बहुलाप्रतिवापतोयम्॥
सप्ताहमेव पिबतां नियमेन पुंसां
घोराश्मरीमतिरुजं सहशर्करां च।
आवीपयो मधुविमिश्रितमाशु तद्वत्।
चूर्णं त्रिवृत्कुटजबीजभवं वदन्ति॥

अकरकरा, गोखरू, जटामांसी, तुलसी, शिलाजित, अरण्डमूल, पीपल, मुलैठी, × तक्रा (एक प्रकार का पौदा) की जड़, निर्गुण्डी (संभालू) लौंग और सोंठ। इनके क्काथ में इलायची के चूर्णका *प्रक्षेप डालकर नियमपूर्वक सात दिन तक पीनेसे अत्यन्त पीड़ा युक्त अश्मरी और शर्करा (पथरी और रेग) का नाश होता है। भेड़के दूध में मिलाकर पीने या निसोत और इन्द्रयव का चूर्ण सेवन करने से भी पथरी और रेग का नाश होता है।

[३५८] आटरूषादि कषायः (१)

(वृ. नि. र. क्षय)

आटरूषो शिरीषाश्वगन्धाश्चेति पुनर्नवा।
एतै + क्काथ्यं पयः पीतं क्षयरोगविनाशनम्॥

वासा, सिरस की छाल, असगन्ध और पुनर्नवा (विसखपरा)। इससे दूध पका कर पीने से राजयक्ष्मा का नाश होता है।

[३५९] आटरूषादि कषायः (२)

(यो. र. । र. पि.)

वृषपत्राणि निष्पीडय रसं समधुशर्करम्।
अनेन प्रशमं याति रक्तपितं सुदारुणम्॥
मध्वाटरूषकरसौ यदि तुल्यभागौ।
कृत्वा नरः पिबति पुण्यतरः प्रभाते।
तद्रक्तपित्तमतिदारुणमप्यवश्य-
माशु प्रशाम्यति जलैरिव वह्निपुञ्जः॥
आटरूषक निर्यूहः प्रियङ्गुमृत्तिकाञ्जने।
विनीय लोध्र सक्षौद्रं रक्तपित्तहरं पिबेत्॥
पिष्टानां वृषपत्राणां पुटपाको रसो हिमः।
मधुयुक्तो जयेद्रक्तपित्तकासज्वरक्षयान्॥

बांसे के पत्तों के स्वरस में शहद और खांड मिलाकर सेवन करने से या केवल शहद और बांसे के पत्तों का स्वरस बराबर बराबर (१--१ तोला) मिलाकर प्रातः काल सेवन करने से अथवा बांसे के पत्तों के कषाय में फूल प्रियंगु, सौराष्ट्रीमृत्तिका (गोपीचन्दन) रसौत तथा लोध का चूर्ण और शहद डालकर पीने से रक्तपित्त का नाश होता है।

बांस के पत्तोंको पीसकर * पुटपाक विधि से रस निकालकर उसमें शहद मिलाकर पीनेसे रक्तपित्त, खांसी, ज्वर और क्षय का नाश होता है।

× तक्राका अर्थ कोई कोई कैथ भी करते हैं।
* प्रक्षेप-विधि पृष्ठ २ में देखिये।
\+ पक्कमिति समुचित पाठः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[३६०] आटरूषादि कषायः (३)

(वृ. नि. र. सन्नि.)

सिंहास्यपर्पटारिष्टयष्टीधान्याब्दनागरम् ॥
दारूग्रगन्धेन्द्रयवश्वदंष्ट्रा ग्रन्थिकं तथा ॥
एषां कषायमाहृत्य सन्निपातज्वरी पिबेत् ॥
श्वासातिसारकासघ्नं शूलारुचिहरं परं ॥

अडूसा, पित्तपापडा, नीमकी छाल, मुलैहटी, धनिया, नागरमोथा, सोंठ, देवदारु, बच, इन्द्रजौ, गोखरू और पीपलामूल। इनका काढा सन्निपात-ज्वर, स्वास, अतिसार, खांसी, शूल और अरुचि का नाश करता है।

[३६१] आमलक योगः।

(वृ. नि. र. स्त्री. रो.)

जलेनामलकीबीजकल्कं समधुशर्करम् ।
पिबेत्रिदिनत्रयेणैव श्वेतप्रदरनाशनम् ॥

आमले की गुठलीको जलमें पीसकर उसमें शहद और मिश्री मिलाकर तीनदिन तक पीनेसे श्वेत प्रदर का नाश होता है।

---

* **पुटपाकविधि—**

द्रव्यमापोथितं जम्बुवटपत्रादिसंपुटे ।
वेष्टयित्वा ततो बद्ध्वा दृढं रज्वादिना तथा ॥
मृल्लेपं द्व्यङ्गुलं कुर्यादथवांगुलिमात्रकम् ।
दहेत्पुटान्तराद्ग्नौ यावल्लेपस्य रक्तता ॥

(प्र० प्र० २ खं०)

द्रव्य को कुचलकर जामन, वढ़ आदि के पत्तो में लपेटकर उसे डोरे से खूब कसकर बाँध दे फिर उसके ऊपर १ या २ अंगुल मोटा मिट्टी का लेप करके अग्नि में दबा दे। जब ऊपर वाले लेप का रंग लाल हो जाय तो औषधि को निकाल कर उसका रस निचोड़ले। मात्रा-पलमात्रो रसोग्राह्य कर्षमात्रं मधुक्षिपेत्। अर्थात ५ तोला रस लेना चाहिये और उसमें १। तोला शहद डालना चाहिये।

[३६२] आमलक्यादि कषायः

(वृ. नि. र. ज्वरे)

आमलकीघननागरसिंहि
छिन्नलताविहितश्च कषायः ।
माक्षिकमागधिकापरिमिश्रो
हन्त्यनिशं संततज्वरमाशु ॥

आमला, नागरमोथा, सोंठ, कटेरी और गिलोय के काढ़ेमें शहद और पीपल का चूर्ण डालकर पीने से संततज्वर का नाश होता है।

[३८३] आमलक्यादिक्वाथः

(वृ, नि र. मू. कृ.)

गुडेनामलकीक्वाथं श्रमघ्नं तर्पणं परम् ।
पित्तासृग्दाहशूलघ्नं मूत्रकृच्छ्रनिवारणम् ॥

आमलों के काढ़ेमें गुड मिलाकर पीनेसे रक्त-पित्त, दाह, शूल, मूत्रकृच्छ्र और थकावट का नाश होता है।

[३६४] आमलक्यादि गणः

(सु. सं. सू. अ. ३८)

आमलकीहरीतकीपिप्पल्यश्चित्रकश्चेति ।
आमलक्यादिरित्येष गणःसर्वज्वरापहः ॥
चक्षुष्यो दीपनो वृष्यः कफारोचकनाशनः ॥

आमला, हैड, पीपल और चीता। यह आमल-क्यादि गण सर्व ज्वर नाशक, नेत्रोंके लिये हितकारी, दीपन, वृष्य और कफ तथा अरुचि नाशक है।

[३६५] आमलक्यादियोगः

(वृ. नि. र. वा. व्या.)

आमलक्याश्च कल्केन बस्तिभागं प्रलेपयेत् ।
तेन प्रशाम्यति क्षिप्रं नियमान्मूत्रनिग्रहः ॥

बस्ति पर आमले के कल्क का गाढ़ा २ लेप करने से मूत्राघात (पेशाब की रुकावट) को अवश्य आराम होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[३६६] आमलेकी आलवाल

(भा. प्र. म. खं अति.)

कृत्वालवालं सुदृढं पिष्टैरामलकैर्भिषक् ।
आर्द्रकस्य रसेनाशु पूरयेन्नाभिमण्डलम् ॥
नदीवेगोपमं घोरं प्रवृद्धं दुर्द्धरं नृणाम् ।
सद्योऽतिसारमजयं नाशयत्येष योगराट् ॥

आमलों को जलमें पीसकर उससे रोगीकी नाभि के चारों ओर थामला सा बनादे फिर उसमें अदरक का रस भर दे तो शीघ्र ही अत्यन्त भयंकर, नदीके वेगके समान दुर्जय अतिसार भी नष्ट हो जाता है।

[३६७] आम्रत्वचाका स्वरस

(वृ. नि. र. उपदंशे)

आम्रत्वचं विनिष्पीडय निगृह्य स्वरसं पलम् ॥
चतुःपलं त्वजाक्षीरं संयुक्तं प्रपिबेत्प्रगे ।
एवं मुनिदिनं कुर्यादुपदंशव्रणे हितम् ॥

आमकी छालका ५ तोला स्वरस लेकर उसमें २० तोला बकरी का दूध मिलाकर प्रातःकाल सात दीन तक पीने से उपदंशव्रण (उपदंश का घाव) नष्ट होता है।

[३६८] आम्रादिकषायः (वृ.नि. र. तृष्णा)

आम्रजंबूकषायं वा पिबेन्माक्षिकसंयुतम् ।
छर्दिं सर्वां प्रणुदति तृष्णां चैवापकर्षति ॥

आम और जामुन की छाल का काढा शहद मिलाकर पीनेसे सब प्रकार की वमन और तृषा शान्त हो जाती है।

[३६९] आम्रादि फांट (हिम)

(शा. ध. म. खं., वृ. नि. र. ज्वर.)

आम्रजंबूकिसलयैर्वटशृंगप्ररोहकैः ॥
उशीरेण कृतः फांटः सक्षौद्रो ज्वरनाशनः ॥
पिपासाच्छर्द्यतीसारान् मूर्च्छां जयति दुस्तराम् ॥

आम और जामनकी कोंपल, कमल और बडके अंकुर और खस। इनके फांट (अथवा शीत कषाय) में शहद डालकर पीनेसे ज्वर, पिपासा, वमन, अतिसार और दुस्साध्य मूर्च्छा का नाश होता है।

[३७०] आम्रादियोगः (वृ. नि. र. संग्र.)

आम्रास्थिविश्वगोशृंगवत्सश्चाम्ररसेन तु ॥
मर्दयेत् त्रिदिनं सम्यक् सितया सह योजयेत् ॥
तस्यपित्तोद्भवां हन्ति ग्रहणीं रोगकारिणीं ॥
ज्वरातिसारं तीव्रं च रक्तस्रावं सशूलनुत् ॥

आमकी गुठली, सोंठ, बबूल की छाल और कुडेकी छाल को आमके रसमें तीन दिन तक खरल करके इसमें मिश्री मिलाकर सेवन करने से पित्तज संग्रहणी, ज्वरातिसार, रक्तस्राव और शूल का नाश होता है।

[३७१] आम्रादि यवागूम्

(वृ. नि. र. संग्र, शा. ध. म. खं. अ. २)

आम्रमाम्रातकं जंबूत्वक्कषाये पचेद्भिषक् ॥
यवागूं शालिभिर्युक्तां भुक्त्वा तां ग्रहणीं जयेत् ॥

आम, अंबाडा और जामुन की छालका काढा करके उसमें शाली चावलोंकी यवागू सिद्ध करके सेवन करने से पित्तज संग्रहणी का नाश होता है।

[३७२] आम्रादिहिम (रक्तपित्तपर)

(शा. ध. २ खं. ३ अ.)

आम्रं जम्बू च ककुभं चूर्णीकृत्य जले क्षिपेत् ।
हिमं तस्य पिबेत्प्रातः सक्षौद्रं रक्तपितजित् ॥

आम, जामन और अर्जुनकी छाल के चूर्ण का शीत कषाय (हिम) बनाकर उसमें शहद मिलाकर प्रातःकाल पीनेसे रक्तपित्त का नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[३७३] आम्रास्थ्यादि कषायः

(वृ. नि. र. अति.)

आम्रास्थिमध्य मालूरफलक्वाथःसमाक्षिकः।
शर्करासहितो हन्याच्छर्द्यतीसारमुल्वणम् ॥

आमकी गिरीकी गुठली और बेलगिरी का काढा शहद और मिश्री मिला कर पीने से वमन और अतिसार का नाश होता है।

[३७४] आरग्वधादि कषायः (१)

(रसा. सा. ज्वरे)

विष्टम्भनिःशेषविधौ तु रोगी
सेवेतयोगं शतशोऽनुभूतम्।
आरग्वधोरोहणिकाऽर्धचन्द्रा–
द्राक्षातथाहेमदलावयःस्था ॥
पुष्पश्च शुष्कं शतपत्रिकायाः
समानि सर्वाणि तदर्धभूताः ॥
सम्मूर्च्छिता शर्करयासुवृता
पलार्द्धकल्पाःक्वथिता प्रपेयाः ॥

ज्वर के दूर होजाने पर यदि विष्टम्भ (कब्ज़ियत) रहे तो इस आगे लिखेहुए काढ़े को पीवे, जो मेरा सैकडों बारका अनुभूत है। अमलतास का गूदा दो तोला, कुटकी दो तोला, निसोत दो तोला, मुनक्का (बीज निकाली हुई) पांच नग, सनाय की पत्ती दो तोला, बड़ी हरड की छाल दो तोला, सुखे हुवे गुलाबके फूल दो तोला) (यदि गीले हों तो चार तोला) सब औषधियों से आधा गुलकन्द । इन आठोंमें से अमलतास का गूदा, दाख और गुलकन्द, इन तीन चीजों को छोड़कर बाकी पांचों चीजोंको कूटकर चूर्ण करले, पीछे इन तीनों चीजोंको भी मिलाकर कल्क करले। इस कल्कमें से दो ढाई तोले के अन्दाज पावभर पानीमें डालकर अधौट क्वाथ कर पीवे तो एक दो दस्त खुलकर हो जाते हैं, उदरका दोष निःशेष हो जाता है और भूख खूब लगती है।

[३७५] आरग्वधादि कषायः (२)

(वृ. नि. र. ज्वरे)

आरग्वधफलं मुस्तं यष्टीमधुकमेव च।
उशीरमभया चैव हरिद्रादारुसाह्वया ॥
पटोलं पिचुमन्दं च ह्यमृता कटुरोहिणी।
एषां पीतः कषायः स्याद्वातपित्तभवे ज्वरे ॥

अमलतासका गूदा, नागरमोथा, मुलैठी, खस, हैड़, हल्दी, दारुहल्दी, पटोलपत्र, नीम की छाल, गिलोय और कुटकी। इनका क्वाथ वातपित्तज ज्वर के लिये हितकारी है।

[३७६] आरग्वधादि कषायः (३)

(च. द., वै. र., हा. सं; शा. ध. म. खं; बृ. यो. त. त. ५८ ज्वरे)

आरग्वधग्रन्थिकमुस्ततिक्ता-
हरीतकीभिःक्वथितःकषायः।
सामे सशूले कफवातयुक्ते
ज्वरे हितो दीपनपाचनश्च ॥

अमलतास, पीपलामूल, नागरमोथा, कुटकी और हरड। इनका क्वाथ आम और शूल युक्त कफवातज्वर नाशक एवं दीपन पाचन है।

[३७७] आरग्वधादि कषायः (४)

(वृ. नि. र. बाल.)

आरग्वधः सातिविषः समुस्त-
स्तिक्ताकषायो ज्वरमाशु हन्यात्।
सामं सशूलं सवमिं सदाहं
सकामलं हन्ति सरक्तपित्तम् ॥

अमलतास का गूदा, अतीस, नागरमोथा और कुटकी। इनका कषाय, शूल, वमन, दाह, कामला और रक्तपित्त युक्त ज्वर का नाश करता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[३७८] आरग्वधादिगणः
(सु. सं. सू. अ. ३८)

आरग्वधमदनगोपघोंटाकुटजपाठाकरण्टकी पटलामूर्वेन्द्रयवसप्तपर्णनिम्बकुरुण्टकदासी कुरुण्टकगुडूचीचित्रकशार्ङ्गेष्टाकरञ्जद्वय पटोलकिराततिक्तकानि सुषवी चेति आरग्वधादिरित्येष गणः श्लेष्मविषापहः ॥ मेहकुष्ठज्वरवमीकण्डूघ्नो व्रणशोधनः ॥

अमलतास, मैनफल, *गोपघोंटा, कुडा, पाठा, कटैली, पाढल, मूर्वा, इन्द्रयव, सतौना, नीम, कुरण्ट (पियाबांसा), दासी कुरण्ट (नीले फूल का पियाबांसा) गिलोय, चीता, × शार्ङ्गेष्ठा, नाटा करंजवा, परवल, चिरायता और करेला। यह (आरग्वधादि गण) कफ, विष, प्रमेह, कोढ, ज्वर, वमन और कण्डु नाशक तथा व्रण शोधक है।

[३७९] आरोग्यपञ्चकम् (१) (वं. से.)

पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्य चित्रक नागरैः। दीपनीयः स्मृतोवर्गः कफानिलगदापहः ॥

पीपल, पीपलामूल, चव, चीता और सोंठ। इनका क्वाथ दीपन पाचन और कफज तथा वातज रोग नाशक है।

[३८०] आरोग्यपञ्चकम् (२)
(वै. श. सिं.)

पथ्यारग्वधतिक्ताभिवृदामलकैषु। एतत्सिद्धं पाचनं सामे जीर्णज्वरे हितम् ॥

हर्र, अमलतास, कुटकी, निसोत और आमला। इनका पाचन आमज्वर तथा जीर्ण ज्वरके लिये हितकर है।

---

* गोपघोंटा–विलायती कुम्हेड़ा, सुपारी भेद।
× शार्ङ्गेष्ठा–काक जंघा, मकोय, चौंटली।

[३८१] आरोग्याम्बु (भा. प्र. म. खं)

पादशेषं तु यत्तोयमारोग्यांबु तदुच्यते। आरोग्याम्बु सदा पथ्यं कासश्वासकफापहम्॥ सद्यो ज्वरहरं ग्राहि दीपनं पाचनं लघु। आनाहपांडुशूलार्शो गुल्मशोथोदरापहम् ॥

जो जल औटाते औटाते चार भाग का एक भाग अर्थात् सेरभर का पावभर शेष रहा हो उसको "आरोग्याम्बु" कहते हैं। आरोग्याम्बु–सदैव पथ्य, खांसी, श्वास और कफ नाशक, विशेषतः ज्वरको तत्काल हरनेवाला, मलरोधक, अग्निदीपक, पाचन और हलका है एवं आनाह (अफारा) पांडुरोग, शूल, बवासीर, गुल्म, सूजन और उदर रोगोंको नष्ट करता है।

[३८२] आर्द्रक स्वरसः (वृ. नि. र. शोथे)

आर्द्रकस्वरसः पीतः पुराणगुडमिश्रितः। अजाक्षीराशिनां शीघ्रं सर्वशोथहरो भवेत् ॥

अदरक के रस और पुराने गुड़ को मिलाकर सेवन करने तथा बकरी का दूध पीनेसे शीघ्र ही सब प्रकार की सूजनें नष्ट हो जाती हैं।

[३८३] आर्द्रकादि कल्कः
(भा. प्र. म. खं. ज्वरे)

सहार्द्रकयवक्षारौ पीत्वा कोष्णेन वारिणा। नानादेशसमुद्भूतं वारिदोषमपोहति ॥

अदरक और जवाखार का कल्क बनाकर किञ्चित गरम जलके साथ पीनेसे अनेक देशों के जलके पीने (पानी लगनेसे)से उत्पन्न हुए रोग दूर हो जाते हैं।

[३८४] आर्द्रकादि कवलग्रह
(च. द. ज्वरे)

आर्द्रकस्वरसोपेतं सैन्धवं कटुकत्रयं। आकण्ठाद्धारयेदास्ये निष्ठीवेच्च पुनः पुनः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेनास्यहृदयक्लोममन्यापार्श्वशिरोगलान् ।
लीनोऽप्याकृष्यते श्लेष्मा लाघवं चास्यजायते ॥
पर्वभेदो ज्वरो मूर्छा निद्रा श्वासगलामयाः ।
मुखाक्षिगौरवं जाड्यमुत्क्लेशश्चोपशाम्यति ॥
सकृद् द्वित्रिचतुःकुर्याद्दृष्ट्वा रोगबलाबलम् ।
एतद्धि परमं प्राहुर्भेषजं सन्निपातिनाम् ॥

अद्रक के स्वरस में सेंधा नमक और त्रिकुटा मिला कर *कवलग्रहण करे और बारम्बार थूकता रहे । इससे हृदय, मुख, क्लोम, मन्यापार्श्व और गले आदिमें लिप्त कफ निकल कर लघुता आ जाती है । एवं पर्व भेद, ज्वर, मूर्छा, निद्रा, श्वास, गले, मुख और आंखों के रोग, गुरुता (भारीपन), जडता और अरुचि आदि का नाश होता है । इस प्रयोग को बलाबल विचार कर २--४ बार करना चाहिये । सन्निपातके लिये यह अत्युत्तम प्रयोग है ।

[३८५] आर्द्रकादि स्वरसः

(वृ. नि. र. शोथा)

रसस्तथैवार्द्रकनागरस्य
पेयोथजीर्णे पयसाथचाद्यत् ।
शिलाह्वयं वा त्रिफलारसेन
हन्यात् त्रिदोषं श्वयथुं प्रसह्य ॥

त्रिदोषज शोथ रोगकी शान्ति के लिये अद्रकका स्वरस और सोंठका क्वाथ अथवा त्रिफले के रसमें शिलाजीत मिलाकर सेवन करना चाहिये, और औषध पचजानेपर दुग्धयुक्त भोजन करना चाहिये ।

[३८६] आस्थापनोपगमहाकषायः

(च. सं. सू. अ. ४)

त्रिवृद्बिल्वपिप्पलीकुष्ठसर्षपवचावत्सक-
फलशतपुष्पामधुकमदनफलानीति दशे-
मान्यास्थापनोपगानि भवन्ति ।

निसोत, बेल, पीपल, कूठ, सरसों, बच, इन्द्रजौ, सौंफ, मुलहैटी और मैनफल यह आस्थापनोपग महा कषाय है ।

---

* पृष्ठ१२ में गण्डूष की व्याख्या लिखी जा चुकी है । कवल और गण्डूष दोनों एक ही प्रकार के कर्म हैं परन्तु इतना भेद है कि गण्डूषमें द्रव पदार्थ इतना लिया जाता है कि वह मुखके भीतर चलायमान न हो सके और कवलमें इतना लिया जाता है कि जिससे सुखपूर्वक चलाया जा सके ।

कवल के लिये द्रव पदार्थ में चूर्ण १। तोला मिलाना चाहिये । कवल और गण्डूष ५ वर्ष की अवस्था से धारण कराए जा सकते हैं ।

कवल और गण्डूष धारण करने के लिये एकाग्रचित्त हो कर सीधे बैठना चाहिये और उस समय तक धारण करे रहना चाहिये जब तक कि मुंह दोषों (कफादि) से न भर जाय और नाक, आंख आदि से पानी न निकलने लगे । ऐसी दशा होनेपर पहिले कवलको निकाल कर दूसरी बार पुनः धारण करना चाहिये । इसी प्रकार ३ से ८ बार तक धारण करना उचित है ।

कवल और गण्डूष के ४ भेद हैं:-

१–स्नेही–जो वातज रोगों में स्निग्ध और ऊष्ण औषधियों से धारण किया जाता है ।

२–प्रसादी–जो पैत्तिक रोगों में मधुर और शीतल द्रव्यों से धारण किया जाता है ।

३–शोधी–जो कफज रोगों में कटु, अम्ल और लवण रस युक्त तथा रूक्ष और ऊष्ण द्रव्यों से धारण किया जाता है ।

४–रोपणी–इसका प्रयोग व्रण (घावों) के लिये किया जाता है एवं इसके कषाय, तिक्त और मधुर रस युक्त एवं ऊष्ण औषधियां व्यवहृत होती हैं ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ आकारादि चूर्णप्रकरणम्

[३८७] आनन्दयोगः (भै र. अश्म.)

तिलापामार्गकदलीपलाशामलकाण्डकान् ।
दग्ध्वा तद्भस्मतोयन्तु वस्त्र पूतश्च कारयेत् ॥
तत्पचेत्तोयशेषान्तं ततश्चूर्ण द्विगुंजकम् ।
पाययेदविमूत्रेण शर्कराश्मरिजिद्भवेत् ॥

तिल, चिरचिटा, केला और ढाक की स्वच्छ * छालों को जलाकर, पानी में घोलकर उसे (२१ बार) छानकर (चुवाकर) पकावें। जब पकते पकते सब पानी जलकर चूर्ण सा हो जाय तो उतार कर रख छोड़ें।

इसे दो रती की मात्रा से भेड़ के मूत्र के साथ सेवन करने से शर्करा और पथरी का नाश होता है।

[३८८] आभादिचूर्णम् (वृ. नि. र. भग्न.)

आभाचूर्ण मधुयुतमस्थिभंगे त्र्यहं पिबेत् ॥
पीत्वा चास्थि भवेत्सम्यग् वज्रसारनिभं दृढम् ॥

बबूल का चूर्ण तीन दिन तक शहद में मिलाकर पीने से टूटी हुइ हड्डी जुड़कर बज्र के समान मज़बुत हो जाती है।

[३८९] आभादिचूर्णम् (यो. र. वा व्या.)

आभा रास्ना गुडूची च शतावर्यो महौषधम् ।
शतपुष्पाऽश्वगन्धा च हपुषा वृद्धदारकः ॥
यवानी चाजमोदा च समभागानि कारयेत् ।
सूक्ष्मचूर्णमिदं कृत्वा बिडालपदकं पिबेत् ॥
मद्यै·······यूषैस्तक्रै रुष्णोदकेन वा ।
सर्पिषा वाऽपि लेह्यं तु दधिमण्डेन वा पुनः ॥
अस्थिसन्धिगतं वायुं स्नायुमज्जाश्रितं च यम् ।
कटिग्रहं गृध्रसीं च मन्यास्तम्भं हनुग्रहम् ॥
ये च कोष्ठगता रोगास्तांश्च सर्वान्प्रणाशयेत् ।
आभाद्यो नाम चूर्णोऽयं सर्वव्याधिनिवर्हणः ॥

कीकर, रास्ना, गिलोय, शतावरी, सोंठ, सोया, असगन्ध, हाउबेर, विधारा, अजवायन और अजमोद। इन सब चीजों को समान भाग लेकर चूर्ण करके १। तोला की मात्रा से मद्य, यूष, तक्र, गरम पानी, घी या दधिमण्ड के साथ सेवन करने से अस्थि सन्धिगत, तथा स्नायु और मज्जागत वायु, कटिग्रह, गृध्रसी, मन्यास्तम्भ, हनुग्रह और समस्त उदर विकारों का नाश होता है।

[३९०] आमलक्यादि चूर्णम्

(यो. र. ज्वरा.)

आमलं चित्रकं पथ्या पिप्पली सैंधवं तथा ।
चूर्णितोऽयं गणो ज्ञेयः सर्वज्वरविनाशनः ॥
भेदी रुचिकरः श्लेष्मजेता दीपनपाचनः ॥

आमला, चीता, हैड़, पीपल और सेंधानमक। इनका चूर्ण सब प्रकार के ज्वरों को नाश करता है एवं रोचक, श्लेष्म नाशक और दीपन पाचन है।

[३९१] आम्रादि चूर्णम्

(वृ. नि. र. हिक्का)

आम्रादिलाजसिंधूत्थं सक्षौद्रं छर्दिनुद्भवेत् ॥

आम्रादि चूर्ण, खील और सैंधानमक को शहदमें मिलाकर चाटने से वमन का नाश होता है।

* यहां पर 'आमल' शब्द ग्रहण करके आमला भी लिया जा सकता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ आकारादि गुटिका प्रकरणम्

[३९२] आदित्य गुटिका (वै. जी.)

बचाविश्वाजीरोषणगरलवाह्लीकदहन-
त्वचां कार्या वटयश्चणकतुलिता मार्कवरसैः।
यथा भानोर्भासस्तिमिरनिकरं यामिनिभवं
हरन्त्येताः शूलान्यनिलमनलग्लानिमपि च ॥

बच, सोंठ, जीरा, कालीमिर्च, शुद्ध मीठा-तेलिया, हींग और चीते की छाल। इन सब को समान भाग लेकर महीन चूर्ण करके भांगरे के रस में घोटकर चने के बराबर गोलियां बनावें। यह गुटिका सर्व प्रकार का शूल और अग्निमांद्य को इस प्रकार नष्ट करती है जैसे रात्री के अंधकार को सूर्यकी किरणें।

[३९३] आनन्द भैरवी वटी

(र. चि. म. । अ. ९)

तिलापामार्गयोः कांडं कारवेल्या यवस्य च।
पलाशकाष्ठसंयुक्तं तुल्यं सर्वं दहेत्पुटे ॥
तं निष्कैकमजामूत्रैर्वटीं चानन्दभैरवीम्।
पाययेदश्मरीं हन्ति सप्तरात्रान्न संशयः ॥

तिलशठ, चिरचिटे के डंठल, करेला, जव के डंठल और ढाकका काठ इन सबको बराबर २ लेकर पुटमें भस्म करे। फिर इस भस्म को (बकरी के मूत्र में घोटकर) ४–४ माशे की गोलियां बनावे। इसका नाम आनन्द भैरवी वटी है। इसको सात दिनतक बकरी के मूत्र के साथ सेवन करने से पथरीका नाश होता है।

[३९४] आमनाशिनी वटिका

(र. चि. स्तबक. ४)

सुरदालीपुष्पचूर्णं गुडेन गुटिकाकृताः।
गुदमध्ये प्रदेयैका पातयत्यामसागरम् ॥
अधश्चेत्सा समायांति मुहूरूर्ध्वं च धारयेत् ॥
अनेन क्रमयोगेन मलं सामं विरेचयेत् ॥
जायते सकलो देहः शुद्धश्च पेतो निरामयः ॥

देवदाली के फूलोंको पीस कर गुड़में मिलाकर गोली (बत्ती) बनावे। इस बत्ती को गुदा में रखने से उदरस्थ समस्त आम (कच्चामल) निकल जाता है और शरीर शुद्ध एवं स्वस्थ होजाता है।

यदि बत्ती नीचे गिर पड़े तो उसे फिर ऊपर चढ़ा देना चाहिये।

[३९५] आमवातगजसिंहोमोदकः

(र. सा. सं. आ. वा.)

शुण्ठीचूर्णस्य प्रस्थैकं यमान्यश्च पलाष्टकम्।
जीरकस्य पले द्वे च धन्याकश्च पलद्वयम् ॥
पलैकं शतपुष्पाया लवङ्गस्य पलन्तथा ॥
टङ्कणस्य पलं भृष्टं मरीचस्य पलानि च।
त्रिवृतात्रिफलाक्षारपिप्पलीनां पलन्तथा ॥
शटयैला तेजपत्रश्च चविकानां पलन्तथा ॥
अभ्रं लौहं तथा वङ्गं प्रत्येकश्च पलं पलम्।
एतेषां सर्वचूर्णानां खण्डं दद्याद्द्विगुणत्रयम् ॥
घृतेन मधुना मिश्रं कर्षमात्रन्तु मोदकम्।
एकैकं भक्षयेत्प्रातर्घृतश्चानुपिबेत्पयः ॥
शूलघ्नो रक्तपित्ताघ्नश्चाम्लपित्तविनाशनः।
आमवातकुलध्वंसी केशरी विधिनिर्मितः ॥

सोंठ का चूर्ण १ सेर, अजवायन का चूर्ण आधा सेर, जीरे का चूर्ण १० तोला, धनिये का

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोंठका चूर्ण १ सेर, अजवायनका चूर्ण आधा सेर, जीरेका चूर्ण १० तोला, सोया, लौंग, सुहागे की खील, काली मिर्च, निसोत, त्रिफला, जवाखार, पीपल, कचूर, इलायची, तेजपात, चव, अभ्रक भस्म, लोह भस्म और बंगभस्म। इनमें से प्रत्येक का चूर्ण ५–५ तोला। खांड सब औषधियोंसे ३ गुनी। सब को शहद और घी में मिलाकर १।–१। तोला के मोदक बनावें। इसमें से प्रतिदिन प्रातःकाल एक २ मोदक खाकर ऊपर से घृत युक्त दूध पिया जाय तो शूल, रक्त पित्त, अम्लपित्त और आमवात (गठिया) का नाश होता है। इन आमवात गज सिंह मोदकोंको ब्रह्माने कहा है।

[३९६] आमलक्यादि गुटिका

(वृ. नि. र., शा. ध. म. ख. अ. ७,
भा. प्र. म. खं. तृष्णा.)

आमलं कमलं कुष्ठं लाजाश्च वटरोहकम्।
एतच्चूर्णस्य मधुना गुटिकां धारयेन्मुखे॥
तृष्णां प्रवृद्धां हंत्येषा मुखशोषं च दारुणम्॥

आंमले, कमल, कूट, खील और वड़की कोंपल इन पांच औषधियों का चूर्ण करके शहद में मिला कर गोली बनावे। इसको मुख में रखने से प्रबल तृष्णा और मुख शोष का नाश होता है।

[३९७] आमवातारिः (र. चि. म. ९. अ.)

एरण्डमूलत्रिफलागोमूत्रं चित्रकं विषम्।
गुंजैका घृतसंपन्ना सर्वान् वातान् विनाशयेत्॥

अंडकी जड़, त्रिफला, गोमूत्र, चीता और शुद्ध मीठातेलिया इन सब द्रव्यों को पीस कर एक रत्ती की मात्रा से घी के साथ सेवन करने से सब प्रकारके वातरोग नष्ट होते हैं।

[३९८] आमवातारि वटिका (र. सा. सं.)

रसगन्धकलौहाभ्रं तुत्थं टङ्कणसैन्धवम्।
समभागं विचूर्ण्याथ चूर्णाद्द्विगुणगुग्गुलुः॥
गुग्गुलोः पादिकं देयं त्रिवृतामूलवल्कलम्।
तत्समं चित्रकं देयं घृतेन परिमर्दयेत्॥
खादेन्माषद्वयश्चास्य त्रिफलाचूर्णयोगतः।
आमवातारिवटीका पाचिका भेदिका मता॥
आमवातं निहन्त्याशु गुल्मशूलोदराणि च।
यकृत्प्लीहोदराष्ठीलाकामलापाण्डवरोचकान्॥
ग्रन्थिशूलं शिरःशूलं वातरोगश्च गृध्रसीम्।
गलगण्डं गण्डमालां क्रिमिकुष्ठभगन्दरान्॥
विद्रधिमन्त्रवृद्धिश्च अर्शांसि गुदजानि च।
आमवातारिवटिका पुरेशानेन चोदिता॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, लोहभस्म, तूतिया, सुहागे की खील और सेंधा नमक यह प्रत्येक औषधि एक २ भाग लेवे। शुद्ध गूगल २ भाग, निसोत की जड़ की छाल आधा भाग, चीते की जड़ की छाल आधा भाग। प्रथम पारा गन्धककी कजली बनाकर उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर इन सब औषधियों को एकत्र खरल करके घी में घोटकर दो माशे (१॥ माशा) परिमाण औषधि त्रिफले के चूर्ण के साथ सेवन करें। यह औषधि पाचक, भेदक तथा आमवात, गुल्म, शूल, उदररोग, यकृत, प्लीहोदर, अष्ठीला, कामला, पांडु, अरुचि, ग्रंथिशूल, शिरःशूल, वातरोग, गृध्रसी, गलगण्ड, गण्डमाला, क्रिमि, कुष्ट, भगन्दर, विद्रधि, अन्त्रवृद्धि, बवासीर और गुदा के समस्त रोगों का नाश करनेवाली है।

[३९९] अपर आमवातारि वटिका

(र. सा. सं.)

रसगन्धौ वरा वह्निर्गुग्गुलुः क्रमवर्द्धितः।
एतदेरण्डतैलेन मर्दयेदतिचिक्कणम्॥
कर्षोऽस्यैरण्डतैलेन हन्त्युष्णजलपायिनः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आमवातमतीवोग्रं दुग्धं मौद्गादि वर्जयेत् ॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, त्रिफला तीन भाग, चीते की जड़ ४ भाग और शुद्ध गूगल ५ भाग लेवे । प्रथम पारा गन्धककी कज्जली बनावे फिर उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर अण्डीके तेलमें खूब खरल करे । इसमें से एक तोला औषधि अण्डी के तेल के साथ सेवन करे और ऊपर से गरम जल का अनुपान करे तो अत्यन्त उग्र आमवात रोग नष्ट होता है । इस औषधि पर दूध और मूंग आदि न खाना चाहिये ।

[४००] आरग्वधादि वर्ती

(वृ. नि. र., सु. सं चि. अ. र; भा. प्र. म. खं. नाडीव्रण)

आरग्वधनिशाकोलचूर्णाज्यक्षौद्रसंयुता ।
सूत्रवर्त्तिर्व्रणेयोज्या शोधनी गतिनाशिनी ॥

अमलतास, हल्दी और बेर इनका चूर्ण करके उसमें शहद और घी मिलाकर इसमें सूतकी बत्ती को भिगोकर नासूर में रक्खे । यह व्रणको शोधन करनेवाली तथा व्रण की गति को नाश करनेवाली है

अथ आकारादि गुग्गुलु प्रकरणम्

[४०१] आदित्यपाक गुग्गुलुः (बं. से.)

पृथक् पलांशं त्रिफला पिप्पली चेति चूर्णितम् ।
दशमूलाम्बुना भाव्यं त्वगेलार्द्धपलान्वितम् ॥
दत्वा पलानि पञ्चैव गुग्गुलोर्वटकीकृतः ।
हन्तिसन्ध्यस्थिमज्जस्थान्वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥
लेहवद्द्विगुणेनीयमालोड्यालोड्य चातपे ॥
दशमूलाम्बुना शोष्यः सप्तवारान् सुगुग्गुलुः ॥

त्रिफले का चूर्ण ५ तोला, पीपल का चूर्ण ५ तोला, इलायची और दारचीनी का चूर्ण ६॥-२॥ तोला, शुद्ध गूगल २५ तोला । सबको एकत्र करके उसमें सबसे दो गुना दशमूल का क्वाथ मिलाकर खूब मन्थन करके धूप में सुखाले । इसी प्रकार दशमूल के क्वाथ की सात भावना देकर गोलियां बनावें । इसके सेवनसे अस्थिगत, मज्जागत और सन्धिगत वायुका नाश होता है ।

[४०२] आभागुग्गुलुः (च. द. भग्न.)

आभाफलत्रिकैर्व्योषैः सर्वैरेभिः समीकृतैः ।
तुल्यो गुग्गुलुरायोज्यो भग्नसन्धिप्रसाधकः ॥

कीकर, त्रिफला और त्रिकुटा । सब समान भाग, शुद्ध गूगल सब के समान । (सब को मिलाकर कूट कर रक्खे) इसके सेवन से सन्धिभंग (जोड़ के खुल जाने) को आराम होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथाकाराद्यवलेह प्रकरणम्

[४०३] आमलकाद्यवलेहः (१)
(र. र.,ग. नि. ज्वरा)

स्विन्नमामलकं पिष्ट्वा द्राक्षाशुंठीसमन्वितम् ।
मधुना लेहयेन्मूर्च्छाकासश्वासोपशान्तये ॥

स्विन्न (उसीजे हुवे) आमले, दाख, और सोंठ समान भाग लेकर पीस कर शहद में मिलाकर चाटने से मूर्च्छा, खांसी और श्वासका नाश होता है।

[४०४] आमलक्यवलेहः (२)(यो. र. पांडु.)

रसमामलकानां तु संशुद्धं यन्त्रपीडितम् ।
द्रोणं पचेच्च मृद्वग्नौ तत्रेमानि प्रदापयेत् ॥
चूर्णितं पिप्पलीप्रस्थं मधुकं द्विपलं तथा ।
प्रस्थं गोस्तनिकायाश्च द्राक्षायाः किल पेषितम्
शृङ्गवेरपले द्वे तु तुगाक्षीर्याः पलद्वयम् ।
तुलार्धं शर्करायाश्च घनीभूतं समुद्धरेत् ॥
मधुप्रस्थसमायुक्तं लेहयेत्पलसंमितम् ।
हलीमकं कामलां च पांडुत्वं चापकर्षति ॥

यन्त्र द्वारा निकाला हुआ आमले का स्वच्छ रस ३२ सेर लेकर उसमें पीपल का चूर्ण १ सेर १० तोला, मुलैठी, मुनक्का (निर्बीज) और किशमिश का कल्क (पिसी हुई) १ सेर अदरक और वंस-लोचन १०-१० तोला और खांड २५० तोला मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावे। जब गाढ़ा हो जाय तो उतार कर ठण्डा होने पर उसमें २ सेर शहद मिलावे।

इसे ५ तोला मात्रा में सेवन करने से हलीमक, कामला और पांडु का नाश होता है।

[४०५] आम्रपाकः (भा. प्र. उ. खं. ३)

पक्वाम्रस्य रसद्रोणे सिताभाढकसम्मिताम् ।
घृतं प्रस्थमितं दद्यान्नागरस्य पलाष्टकम् ॥
मरिचं कुडवोन्मानं पिप्पली द्विपलोन्मिता ।
सलिलस्याढकं दत्वा सर्वमेकत्र कारयेत् ॥
विपचेन्मृण्मये पात्रे दारुदर्व्या प्रचालयेत् ।
चूर्णान्येषां क्षिपेत्तत्र घनीभूतेऽवतारिते ॥
धान्यकं जीरकं पथ्यां चित्रकं मुस्तकत्वचम्
बृहज्जीरकमप्यत्र ग्रन्थिकं नागकेशरम् ॥
एलाबीजं लवङ्गश्च पृथग्जातीं पलम्पलम् ।
सिद्धे शीते प्रदद्याच्च मधुनः कुडवद्वयम् ॥
भक्षयेद्भोजनादर्वाक्पलमात्रमिदं नरः ।
अथवा नियतं नात्र मात्रां खादेद्यथानलम् ॥
मानवः सेवनादस्य वाजीव सुरते भवेत् ।
समर्थो बलवान्पुष्टो नित्यं स स्यान्निरामयः॥
ग्रहणीं नाशयेदेव क्षयं श्वासमरोचकम् ॥
अम्लपित्तं महाश्वासं रक्तपित्तञ्च पांडुताम् ॥

पक्के आमों का रस ३२ सेर, चीनी ४ सेर, घी २ सेर, सोंठ आधा सेर, कालीमिर्च २० तोला, पीपल १० तोला और जल ८ सेर लेकर चूर्ण योग्य औषधियों का चूर्ण करके सब को एकत्र मिलाकर मिट्टी के बर्तन में पकावे और लकड़ी की करछली से चलाता रहे। जब गाढ़ा हो जाय तो उतार कर उस में इन चीजों का चूर्ण मिलावे।

धनिया, जीरा, हर्र, नागरमोथा, चीता, दार-चीनी, बड़ा जीरा, पीपलामूल, नागकेसर, इलायचीके बीज, लवंग और जावित्री ५-५ तोला। इन चीजों को मिलाने के बाद ठण्डा होने पर उसमें १ सेर शहद मिलावे। इसे भोजन से पहिले ५ तोला या अग्नि बलानुसार उचित मात्रा से सेवन करना चाहिये। यह अत्यन्त बाजीकर, पौष्टिक, बलदायक,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रहणी, क्षय, श्वास और अरुचि, अम्लपित्त, रक्तपित्त और पांडु नाशक तथा स्वास्थ्य संरक्षक है।

[४०६] आर्द्रकखण्डम्

(वृ. यो. त. १२१ त. भै. र. शीतपीत्त.)

आर्द्रकं प्रस्थमेकं स्याद्गोघृतं कुडवद्वयम् ।
गोदुग्धं प्रस्थयुगलं तदर्धा शर्करा मता ।
पिप्पलीपिप्पलीमूलमरिचं विश्वभेषजम् ।
चित्रकं च विडङ्गं च मुस्तकं नागकेसरं ॥
त्वगेलापत्रकर्चूरं प्रत्येकं पलमात्रकं ।
विधाय पाकं विधिवत्खादेदेतत्पलोन्मितम् ॥
इदमार्द्रकखण्डाख्यं मातर्भुक्तं व्यपोहति ।
शीतपित्तमुदर्दं च शीतमुत्कोठएव च ॥
यक्ष्माणं रक्तपित्तं च कासश्वासमरोचकम् ।
वातगुल्ममुदावर्तं शोथकण्डूकृमीनपि ॥
दीपयेदुदरे वह्निं बलवीर्यं विवर्धयेत् ।
वपुः पुष्टं प्रकुरुते तस्मात्सेव्यमिदं सदा ॥

अद्रक २ सेर, गाय का घी १ सेर, गाय का दूध ४ सेर, चीनी १ सेर।

प्रक्षेप-द्रव्य—पीपल, पीपलामूल, कालीमिर्च, सोंठ, चीता, बायबिड़ंग, नागरमोथा, नागकेसर, दारचीनी, इलायची, तेजपत्र और कचूर का चूर्ण ५-५ तोला। यथा विधि पाक सिद्ध करके प्रातः काल ५ तोला मात्रा से सेवन करे। यह शीत पित्त, उदर्द, शीत, उत्कोठ, राजयक्ष्मा, रक्तपित्त, खांसी, श्वास, अरुचि, बायगोला, उदावर्त, सूजन, कृमि, कंडू आदि रोगों का नाश करता और जठराग्नि तथा बल वीर्य आदि की वृद्धि और शरीर को पुष्ट करता है।

[४०७] आर्द्रकपाकः (यो. चि. पाका.)

आर्द्रकं खंडशः कृत्वा प्रक्षिपेत्सुरभीघृते ॥
लोहे विशाले सुदृढे मृन्मये वा विचक्षणः
यावन्मात्रार्द्रकाःखण्डास्तावऽमात्रोगुडः स्मृतः॥
दर्व्याचालनयोगेन पाचयेन्मृदुवह्निना ॥
सम्यक्पक्वं ततो ज्ञात्वा द्रव्याणीमानि दापयेत् ॥
विश्वाजाज्यूषणं नागकेसरं जातिपत्रिका ॥
एलात्वक्पत्रमगधाधान्यकं कृष्णजीरकम् ॥
ग्रंथिकं च विडङ्गं च तस्मिन्शीते प्रदापयेत् ॥
पलार्द्धमपिभुञ्जीत शीतकाले विशेषतः ॥
श्वासं कासं स्मृतिभ्रंशं स्वरभंगमरोचकम् ॥
हृद्रोगं ग्रहणीगुल्मशूलशोफान्निवारयेत् ॥

अद्रक को (छील कर) बारीक बारीक टुकड़े करके लोहे या मिट्टी के दृढ़ पात्र में गाय के घी में भूने फिर उसमें अद्रक के बराबर गुड़ मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावे और करछली से चलाता रहे। जब पाक सिद्ध हो जाय तो ठण्डा करके उसमें इन चीजों का चूर्ण मिलावे। सोंठ, जीरा, काली मिर्च, नागकेसर, जावित्री, इलायची, दारचीनी तेजपत्र, पीपल, धनिया, काला जीरा, पीपलामूल और बायबिड़ंग।

इसे प्रतिदिन २॥ तोले की मात्रा में सेवन करने से श्वास, खांसी, स्मरणशक्ति की कमी, स्वर-भंग, अरुचि, हृद्रोग, ग्रहणी, गुल्म, सूजन और शूल का नाश होता है।

यह पाक शीतकाल में विशेष रूपसे सेवन करना चाहिये।

[४०८] आर्द्रकमातुलुङ्गावलेहः

(वृ. नि. र. अरुचौ)

आर्द्रकस्वरसं प्रस्थं तदर्धांशं गुडं क्षिपेत् ।
कुडवं बीजपूराम्लं गालयित्वा विचक्षणः ॥
सर्वं मंदाग्निना पक्त्वा तत्रेमानि विनिक्षिपेत् ।
त्रिजातकं त्रिकटुकं त्रिफलायासमेव च ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चित्रकं ग्रंथिकं धान्यं जीरकद्वयमेव च।
कर्षांशं श्लक्ष्णचूर्णं तु मेलयित्वा तु भक्षयेत् ॥
अरोचकक्षयहरमग्निदीप्तिकरं परम्।
कामलापांडुशोफघ्नं कासश्वासहरं परम् ॥
आध्मानोदरगुल्मांश्च प्लीहं शूलं च नाशयेत् ॥

अद्रक का रस २ सेर, गुड़ ४० तोला, बिजौरे नीबू का छना हुवा रस ४० तोला। सबको एकत्र करके मंदाग्नि पर पकावे और पाक सिद्ध होने पर उसमें यह चीजें मिलावे—दालचीनी, तेजपात, इलायची, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, हैड़, बहेडा, आमला, धमासा, चीता, पीपलामूल, धनिया और दोनोंजीरे प्रत्येक द्रव्यका चूर्ण १।—१। तोला। यह अरुचि, क्षय, कामला, पाण्डु, सूजन, खांसी, श्वास, अफारा, उदररोग, गुल्म, तिल्ली और शूल नाशक तथा अग्नि वर्द्धक है।

[४०९] आर्द्रकावलेहः (वै. जी. ३ वि.)

आर्द्रादर्धतुला गुडादपि
तथा द्वयाम्रं च कस्तुम्बरी
दीप्यायोजरणत्रिजातजलदादेतत्पचेद्यु क्तितः।
लेहो रत्नकले! तवैव कथितः प्राणप्रियाया मया
कासार्शोज्वरपीनसश्वयथुरुग्गुल्मक्षयध्वंसनः ॥

अदरक ६। सेर, गुड़ २५० तोला, कुस्तुम्बरी, (कच्चा धनिया) अजवायन, लोह भस्म, जीरा, दालचीनी, तेजपात, इलायची और नागरमोथा इनमें से प्रत्येक का चूर्ण १०—१० तोला यथा विधि पाक सिद्ध करे। इसके सेवन से खांसी, अर्श, ज्वर, पीनस, सूजन, गुल्म और क्षय का नाश होता है।

[४१०] आर्द्रकुटजावलेहः

(वृ. नि. र. अति.)

कुटजत्वक्तुलामार्द्रां द्रोणनीरे विपाचयेत्।
पादशेषं भृतं नीत्वा चूर्णान्येतानि दापयेत् ॥
लज्जालु धातकी बिल्वं पाठा मोचरसस्तथा।
मुस्तं प्रतिविषा चैव प्रत्येकं स्यात्पलं पलम् ॥
ततस्तु विपचेद्भूयो यावद्दर्वीप्रलेपनं।
जलेन छागदुग्धेन पीतो मण्डेन वा जयेत् ॥
सर्वातिसारान् घोरांस्तु नानावर्णान् सवेदनान्।
असृग्दरं समस्तं च सर्वार्शांसि प्रवाहिकाम् ॥

६। सेर कुड़ेकी गीली छालको ३२ सेर पानी में पकावे, जब चौथा भाग शेष रह जाय तो छानकर उसमें—लज्जालु, धायके फूल, बेलगिरी, पाठा, मोचरस, नागरमोथा और अतीस, इनमें से प्रत्येक का ५—५ तोला चूर्ण मिलाकर पुनः पकावे। जब गाढ़ा होकर करछी को लगने लगे तो उतार ले। इसे पानी, बकरीके दूध या चावलों के * मांड के साथ सेवन करने से रक्त विरङ्गे, वेदनायुक्त और अन्य सब प्रकार के प्रबल अतिसार, रक्तप्रदर बवासीर और प्रवाहिकाका नाश होता है।

+ मांड—चावलोंको १४ गुने पानी में पकाकर तय्यार किया जाता है। इसमें कण बिलकुल नहीं रहता।
मण्डश्चतुर्दशगुणे यवागूः षड्गुणेऽम्भसि।
सिक्थकैरहितो मण्डः सिक्थसमन्विता ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ आकारादि रसायनानि

ज्ञातव्य

जिस औषधि से जरा, व्याधि का नाश हो कर आयु, बल, ओज, मेधा आदि की वृद्धि होती है एवं युवावस्था तथा आयु स्थिर रहती है उसे रसायन कहते हैं। चरक सुश्रुतादि प्राचीन ग्रन्थों में कितने ही दिव्य रसायन प्रयोगों की इतनी प्रशंसा मिलती है कि जिसे देखकर आश्चर्य होता है एवं बहुत सम्भव है कि कितने ही सज्जन उसे गप्प से अधिक महत्व देने के लिये तैयार न हों परन्तु गहरी दृष्टि से देखा जाय तो तनिक भी असम्भव प्रतीत नहीं होगा।

प्रथम तो प्राचीन काल में मनुष्यों के शरीर स्वभावतः ही अत्यधिक बलवीर्यवान और पुष्ट होते थे आयु दीर्घ होती थी, दूसरे उनके आचार व्यवहार शुद्ध और पवित्र होते थे एवं वह लोग योग तपादि के अभ्यासी होते थे, धैर्य पूर्वक बहुत समय तक कठिन से कठिन नियमों का पालन कर सकते थे, इसके सिवाय उस समय औषधियां भी अधिक प्रभावशाली होती थी अतएव उस समय इन रसायन प्रयोगों से यथोक्त गुण प्राप्त होना कुछ आश्चर्य की बात नहीं थी परन्तु आज कल जब कि औषधियां प्रभाव हीन हो गई हैं (स्वयं महर्षि चरकने भी इस बात को स्वीकार किया है), शरीर निर्बल हो गए हैं, जप, तप, योगादि का नाम नहीं, ब्रह्मचर्याश्रम का निशान नहीं, आचार, व्यवहार और नियमादि पालन हो नहीं सकते ऐसी अवस्था में वह गुण प्राप्त होना अवश्य असम्भव है। हां, यदि नियमों का पालन करते हुए विधि पूर्वक रसायन औषधियों का प्रयोग किया जाय तो परिस्थिति के अनुसार न्यूनाधिक लाभ अवश्य हो सकता है।

रसायन प्रयोग दो प्रकार के होते हैं (१) कुटिप्रावेशिक। (२) वातातपिक। विस्तार भयके कारण यहां इनका वर्णन नहीं किया गया अतएव जो सज्जन रसायन प्रयोगों से अधिक लाभ उठाना चाहें उन्हें चरकादि ग्रन्थों मे वर्णित पूरा २ वर्णन देखकर यथाशक्ति नियमों का पालन करते हुए प्रयोग करने चाहिये।

[४११] आमलकी रसायनम् (१)

(च. सं. चि. अ. १)

आमलकसहस्रं पिप्पलीसहस्रसंप्रयुक्तं पलाशतरुक्षारोदकोत्तरं तिष्ठे त्तदनुगतक्षारमनातपशुष्कमनस्थिचूर्णीकृतश्चतुर्गुणाभ्यां मधुसर्पिर्भ्यां संनीय शर्करा चूर्णचतुर्भागसम्प्रयुक्तं घृतभाजनस्थं षण्मासान् स्थापयेदन्तर्भूमेस्तस्योत्तरकालमग्निबलसमां मात्रां पौर्वाह्णिकः प्रयोगः। सात्म्यापेक्षश्चाहारविधिना पराह्णिकस्तस्य प्रयोगाद्वर्षशतमजरं वयस्तिष्ठतीति समानं पूर्वेण॥

१ हज़ार नग आमले और १ हज़ार पिप्पलियों को ढाकके * क्षारजल (क्षारके पानी) में

*क्षारा त् षड्गुणं जलं दत्वा वस्त्रेण दोलायन्त्रं विधाय तदधः पात्रं पातयित्वा क्षारोदकं ग्राह्यम्। एवं एकविंशतिवारं पुनः पुनः स्रावयित्वा ग्राह्यम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भिगोदें पानी इतना होना चाहिये कि उस में उपरोक्त दोनों चीजें अच्छी तरह डूब जायं। जब सब क्षारजल सूख जाय तो उन्हें छाया में सुखाकर आमलों की गुठली दूर करके दोनों का चूर्ण कर लें। फिर उसमें चार गुना शहद और घी एवं चौथाई भाग चीनी मिलाकर किसी चिकने बरतन में भर जमीन में दबादें इसके बाद उसे छः मास पश्चात् निकाल कर अग्नि बलानुसार उचित मात्रा से प्रतिदिन प्रातः काल सेवन करें। और सायंकाल को पथ्य भोजन करें। इसके सेवन से मनुष्य १०० वर्ष की अजर (वार्द्धक्य रहित) आयु प्राप्त कर सकता है।

[४१२] आमलकी रसायनम् (२)

(च. सं. चि. अ. १)

आमलकचूर्णाढकमेकविंशतिरात्रमामलकसहस्रस्वरसपरीपीतं मधुघृताढकाभ्यां द्वाभ्यामेकीकृतमष्टभागपिप्पलीकं शर्करा चूर्णचतुर्भागसम्प्रयुक्तं घृतभाजनस्थं प्रावृषि भस्मराशौ निदध्यात्तद्वर्षान्ते सात्म्यापेक्षीप्रयोजयेदस्य प्रयोगाद्वर्षशतमजरमायुस्तिष्ठतीति समानं पूर्वेण।

४ सेर आमले के चूर्ण को २१ दिन तक १ हजार आमलों के रसमें भिगोयें फिर उसमें ४-४ सेर शहद और घी तथा सबके वज़न से आठवां भाग पीपल का चूर्ण और चौथा भाग खांड मिलाकर (मिट्टी के) चिकने बर्तन में भरकर वर्षा ऋतुमें राखके ढेरमें दबादें। और बरसात भर वहीं दबा रहने दें। फिर बरसात बाद निकाल कर यथाविधि सेवन करें और पथ्य पालन करें। इसके सेवन से १०० वर्ष की अजर (वार्द्धक्य रहित) आयु प्राप्त हो सकती है।

अर्थात-क्षार (ढाक आदि की भस्म) से ६गुना पानी मिलाकर उसे दोलायन्त्र विधि से (रैनी चढा कर) २१ बार चुवाले तो इस जलका नाम क्षारोदक होगा।

[४१३] आमलकी रसायनम् (३)

(च. सं. चि. अ. १)

यथोक्तगुणानामामलकानां सहस्रमार्द्र पलाशद्रोण्यां सपिधानायां बाष्पमनुद्वमन्त्यामारण्यगोमयाग्निभिरुपस्वेदयेत्। तानि सुस्विन्नशीतानि उद्धृत कुलकान्यापोथ्याढकेन पिप्पलीचूर्णानामाढकेन च विडङ्गतण्डुलचूर्णानामध्यर्धेन चाढकेन शर्कराचूर्णानां द्वाभ्यां द्वाभ्यामाढकाभ्यां तैलस्य मधुनःसर्पिषश्च संयोज्य दृढे घृतभाविते कुम्भे स्थापयेदेकविंशतिरात्रमतऊर्द्धं प्रयोगःअस्य प्रयोगाद्वर्षशतमजरमायुस्तिष्ठतीतिसमानंपूर्वेण॥

यथोक्त गुणान्वित १००० आमलों को ढाककी गीली लकड़ी की ढकनदार हांडी में भरकर उसके मुखको अच्छी तरह बन्द करदें कि जिससे भाप न निकल सके। अब इस हांडी को अरने उपलों की (मृदु) अग्नि पर रखकर आमलों को स्वेदित करें। जब आमले उसीज जायं तो ठण्डा होने पर उनकी गुठली निकाल कर गूदे को अच्छी तरह मथलें। अब ४ सेर यह मथा हुआ गूदा लें और ४ सेर पीपल का चूर्ण, ६ सेर बायबिडङ्ग का चूर्ण, खांड ४ सेर, शहद, घी और तेल ८—८ सेर लेकर सबको मिलाकर घृतके चिकने घड़े में भरकर २१ दिन तक रक्खा रहने दें। इसके पश्चात् यथोचित पथ्य पालन करते हुवे विधि पूर्वक सेवन करें। इसके सेवन से १०० वर्ष की अजर आयु प्राप्त हो सकती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[४१४] आमलकरसायनम् (४)

(च. सं. चि. अ. १)

संवत्सरं पयोवृत्तिर्गवां मध्ये वसेत्सदा ।
सावित्रीं मनसाध्यायन् ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ॥
संवत्सरान्ते पौषीं वा माघीं वा फाल्गुनीं तथा ।
त्र्यहोपवासी शुद्धश्च प्रविश्यामलकीवनम् ॥
बृहत्फलाढ्यमारुह्य द्रुमं शाखगतं फलम् ।
गृहीत्वा पाणिना तिष्ठ जपन्ब्रह्मामृतागमात् ।
तदा ह्यवश्यममृतं वसत्यामलके क्षणम् ॥
शर्करामधुकल्पानि स्नेहवन्ति मृदूनि च ।
भवन्त्यमृतसंयोगात्तानि यावन्ति भक्षयेत् ॥
जीवेद्वर्षसहस्राणि तावन्त्यागतयौवनः ।
सौहित्यमेषां गत्वा तु भवत्यमरसन्निभः ।
स्वयं चास्योपतिष्ठन्ति श्रीर्वेदा वाक्यरूपिणी

प्रथम एक वर्ष पर्यन्त जितेन्द्रिय होकर ब्रह्मचर्य पूर्वक सावित्री का ध्यान करते हुवे केवल दुग्धाहार पर रहें । इसके पश्चात् पौष, माघ या फाल्गुन के महीने में १ दिन निराहार व्रत धारण करके पूर्णमासी के दिन आमलों के वनमें प्रवेश करें । वहां पहुंचकर वृहत्फलों से परिपूर्ण आमले के किसी वृक्षपर चढ़ जाएं और किसी शाखा के एक आमले को हाथमें लेकर उस समय तक ब्रह्मामृत मन्त्र का जाप करें जब तक कि वह आमला अमृतमय होकर शर्करा और मधुके समान मधुर एवं स्निग्ध और कोमल न हो जाय । इस प्रकार आमले में सुधा सञ्चार होने पर उसे भक्षण करें । इस समय जितने अमृतमय आमले खाए जाएंगे उतने ही हज़ार वर्षों की युवावस्था प्राप्त होगी । यदि इस समय पेट भरकर ऐसे आमले खाए जाएं तो मनुष्य देव तुल्य हो जाता है एवं लक्ष्मी तथा सरस्वती स्वयं उसके समीप में रहती है ।

[४१५] आमलक रसायनम् (५)

(च. सं. चि, अ. १)

अथामलकहरीतकीनामामलकाविभीतकानामामलकहरीतकीविभीतकानां वा पलाशत्वगवनद्धानां मृदावलिप्तानां कुकूलेस्विन्नानामकुलकानां पलसहस्रमुदूखले संपोथ्य दधिघृतमधुपललतैलशर्करासंप्रयुक्तं भक्षयेदनन्नभुग्यथोक्तेन विधिना तस्यान्ते यवाग्वादिभिःप्रकृत्यवस्थापनमभ्यङ्गोत्सादनं सर्पिषा यवचूर्णैः अयञ्च रसायनप्रयोगप्रकर्षो द्विस्तावदग्निबलमभिसमीक्ष्यप्रतिभोजनं यूषेण पयसा वा षष्टिकः ससर्पिष्कोऽतः परं यथासुखविहारःकामभक्ष्यःस्यादनेन प्रयोगेण ऋषयःपुनर्युवत्वमवापुः । बभूवुश्चानेकवर्षशतजीविनो निर्विकारा परं शरीरबुद्धीन्द्रियबलसमुदिताश्चे
रुश्चात्यन्तनिष्ठन्तपः ।

हैड़ और आमले या बहेड़ा और आमले अथवा हैड़, बहेड़ा और आमलों को ढाक की छाल में बन्द करके ऊपर से मिट्टी का लेप करके अरने उपलों की अग्नि में स्वेदन करें । फिर निकालकर गुठली दूर करदें और उसमें से ६२॥ सेर लेकर ओखलीमें कूट लें । फिर इसमें दहीं, घी, शहद और चीनी तथा चूर्ण तथा तिलका तेल मिलाकर विधिपूर्वक विना भोजन किये इसका सेवन करें । इसके पश्चात् यथोचित काल में प्रकृत्यनुकूल यवागु आदिका आहार करें । एवं जौके चूर्ण को घी में मिलाकर देहपर मर्दन करें ।

जिस समय तक इस रसायन का प्रयोग जारी रहे उस समय तक प्रत्येक भोजन में अग्निबलानुसार मूंग के यूष या दूध के साथ साठी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चावलों का घृत युक्त भात खाएं और उस के पश्चात् यथेच्छ सुखकारक आहार विहार करें।

इस के सेवन से प्राचीनकाल में ऋषियों ने पुनः यौवनावस्था एवं सैकड़ों वर्ष की निर्विकार आयु प्राप्त की थी। तथा इस के प्रभाव से अत्यन्त शारीरिक बल, इन्द्रियबल एवं बुद्धि प्राप्त कर के निष्ठा के साथ तप करते रहेथे।

[४१६] आमलकायसरसायनम्

(च. सं. चि. अ. १)

करप्रचितानां यथोक्तगुणानामामलकानां मुद्धृतास्थ्नां शुष्कचूर्णितानां पुनः माघे फाल्गुने वा मासे त्रिःसप्तकृत्वःस्वरसपरिपीतानां पुनः शुष्कचूर्णीकृतानामाढकमेकं ग्राहयेत् अथजीवनीयानां बृंहणीयानां स्तन्यजननानां शुक्रवर्द्धनानां वयःस्थापनानां षड्विरेचनशताश्रितीयोक्तानामौषधानां चन्दनागुरुधवतिनिशखदिरशिंशपासन साराणाञ्चाणुशाश्छन्नानां क्षिप्तानामभयाबिभीतकपिप्पलीवचाचव्यचित्रकविडङ्गानाञ्च समस्तानामाढमेकं दशगुणनाम्भसा साधयेत्। तस्मिन्नाढकावशेषे रसे सुपूते तान्यामलकचूर्णानि दत्वा गोमयाग्निभिर्वंशविदलशरतेजनाग्निभिर्वा साधयेत् यावदुपनयाद्रसस्य तमनुपदग्धमुपहृत्यायसीषुपात्री ष्वास्तीर्य शोषयेत्। सुशुष्कं कृष्णाजिनस्योपरि दृषदि श्लक्ष्णपिष्टमयः स्थाल्यान्निधापयेत्। तच्चूर्णमयश्चूर्णाष्टभागसम्प्रयुक्तं मधुसर्पिर्भ्यामग्निबलमभिसमीक्ष्य प्रयोजयेदिति ॥

आमलकायस रसायनके गुण।

एतद्रसायनं पूर्वं वसिष्ठः कश्यपोऽङ्गिराः।
जमदग्निर्भरद्वाजो भृगुरन्ये च तद्विधाः॥
प्रयुज्य प्रयतामुक्ताः श्रमव्याधिजराभयात्।
यावदिच्छन्तपस्तेपुः तत् प्रभावान् महाबलाः॥
तपसाब्रह्मचर्येण ध्यानेन प्रशमेन च।
रसायनविधानेन कालयुक्तेन चायुषा॥
स्थिता महर्षयः पूर्वं, नहि किञ्चिद्रसायनम्।
ग्राम्यणामन्यकार्याणां सिद्धिश्चप्रयतात्मनाम्॥
इदं रसायनश्चक्रे ब्रह्मावर्षसहस्रिकम्।
जराव्याधिप्रशमनं बुद्धीन्द्रियबलप्रदम्॥

प्रथम माघ या फागुन मास में हाथ से तोड़े हुवे यथोक्त गुण सम्पन्न आमले लेकर उनकी गुठलियां निकाल कर सुखा कर आमलों का चूर्ण करें। फिर इसको आमले के रसकी २१ भावना देकर सुखा कर महीन करले। इसके बाद षड् विरेचन शताश्रितीयाध्यायोक्त जीवनीय, बृंहणीय, स्तन्यजनक, शुक्रवर्द्धक और वयःस्थापक गण एवं चन्दन, अगर, धव, तुन, खदिर, सीसम और पीतशाल इन वृक्षों के सार (राछ—बीचका सारवान भाग) हैड़, बहेड़ा, पीपल, वच, चव्य, चीता और बायबिडङ्ग। सब चीज़ें मिलाकर ४ सेर ग्रहण करें। अब इनमें से चन्दनादि के सारों को कूटकर बारीक २ टुकड़े करलें और फिर सब चीजों को ८० सेर जलमें पकावें जब ८ सेर जल शेष रह जाय तो नीचे उतार कर छानकर उसमें आमलों का पूर्वोक्त ४ सेर चूर्ण मिलाएं और फिर उसे उपलों या बांस अथवा सरकंडे की अग्नि में पकावें। जब पानी जल जाय (परन्तु औषधि न जलने पावे) तो नीचे उतार कर किसी लोहेके पात्र में फैला कर सुखावें। इसके पश्चात् काले हरीन की चर्म पर एक पत्थर की शिला बिछाकर उसे उसपर पीसें। इसे आठवां भाग लोह चूर्ण और घृत तथा शहद मिला कर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अग्निबलानुसार मात्रा में सेवन करना चाहिये।

इस रसायन को पूर्वकाल में वशिष्ठ, कश्यप, अङ्गिरा आदि ऋषियोंने सेवन किया था और उसके प्रभाव से श्रम, व्याधि, जरा आदि रहित अत्यन्त बलवान होकर यथेच्छ समय तक तपस्या करते रहे थे। इसके प्रभावसे ही उन्होंने तप, ब्रह्मचर्य, ध्यान और शान्तियुक्त आयु प्राप्त की थी। यथोक्त नियमों को पालन करने से ग्राम्य जनों को भी इससे सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

[४१७] आयुर्वर्द्धकप्रयोगः

(सु. सं. चि. अ. २६)

तत्रविडङ्गतण्डुलचूर्णमाहृत्य यष्टीमधुयुक्तं यथाबलं शीततोयेनोपयुञ्जीत शीततोयं चानुपिबेदेवमहरहर्मासं तदेव मधुयुक्तं भल्लातक क्काथेन वा मधुद्राक्षाक्काथयुक्तं वा मध्वामलकरसाभ्यां वा गुडुचीक्काथेन वा। एवमेते पञ्च प्रयोगा भवन्ति। जीर्णेमुद्गामलकयूषेणालवणेनाल्पस्नेहेन घृतवन्तमोदनमश्नीयात्। एतेखल्वर्शांसि क्षपयन्ति कृमीनुपघ्नन्ति ग्रहणधारणशक्ति जनयन्ति। मासे मासे प्रयोगे वर्षशतमायुषोऽभिवृद्धिर्भवति॥

वायविड़ंग और मुलैठी का चूर्ण समान भाग मिलाकर अग्निबलानुसार मात्रा से ठंडे पानी के साथ खाकर ऊपर से ठंडा पानी पियें। इसी प्रकार प्रतिदिन १ मास तक इसे सेवन करें। अथवा उपरोक्त चूर्ण में शहद मिलाकर भिलावे के क्वाथ या मुनक्का के क्वाथ अथवा आमले के रस के साथ वा गिलोय के रसके साथ १ मास तक सेवन करें। इस प्रकार यह पांच प्रयोग हुवे। इनमें से चाहे जो सेवन किया जा सकता है। इसके सेवन से बवासीर और कृमि रोग का नाश होता है एवं धारणशक्ति बढ़ती है। यह प्रयोग जितने मास तक सेवन किया जाता है उतने ही सौ वर्ष की आयु प्राप्त होती है। पथ्य--औषधि पच जाने पर मूंग और आमले के लवण रहित किञ्चित घृत युक्त यूषके साथ घृत युक्त भात खाना चाहिये।

[४१८] अन्यच्च

विडङ्गतण्डुलानां द्रोणं पिष्टपचनेपिष्टवदुत्स्वेद्यविगतकषायं स्विन्नमवतार्य्य दृषदि पिष्टमायसे दृढे कुम्भे मधुदकोत्तरं प्रावृषि भस्मराशवन्तर्गृहे चतुरो मासान्निदध्यात्। वर्षाभिगमे चेदुधृत्योपसंस्कृतशरीरः सहस्रसम्पाताभिहुतं कृत्वा प्रातः प्रातर्यथाबलमुपयुञ्जीत॥ जीर्णे मुद्गामलकयूषेणालवणेनाल्पस्नेहेन घृतवन्तमोदनमश्नीयात्। पांशुशय्यायां शयीत्। तस्य मासादूर्द्धंसर्वाङ्गेभ्यः कृमयो निष्क्रामन्ति तानणुतैलेनाभ्यक्तस्य वंशविदलेनापहरेत्॥ द्वितीयेपिपीलिकास्तृतीये यूकास्तथैवापहरेत् चतुर्थे दन्तनखरोमाण्यवशीर्यन्ते पञ्चमे प्रशस्तगुण लक्षणानि जायन्ते। अमानुषं चादित्यप्रकाशवपुरधिगच्छति॥ दूराच्छ्रवणानि दर्शनानि चास्य भवन्ति। रजस्तमसीचापोह्य सत्वमधितिष्ठति॥ श्रुतिनिगाद्यपूर्वोत्पादी गजबलोऽश्वयवः पुनर्युवाष्टौ वर्षशतान्यायुरवाप्नोति। तस्याणुतैलमभ्यंगार्थे अजकर्णकषायमुत्सादनार्थे सोशीरं कूपोदकं स्नानार्थे चन्दनमुपलेपनार्थे भल्लातकविधानवदाहारः परिहारश्च॥

१६ सेर वायबिड़ंग लेकर उसे पीसलें और फिर उसे वायबिड़ंग के कषाय में स्वेदन करें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जब बायबिड़ंग उसीज जाय (स्विन्न हो जाय) और सब पानी जल जाय तो उसे नीचे उतार कर शिलापर पीसें और फिर उसमें शहद और पानी (बायबिड़ंगका कषाय) मिलाकर लोहेके मज़बूत घड़ेमें भरकर बन्द करके राख के ढेरमें दबा दें और बरसात भर वहीं दबा रहने दें। फिर उसे बरसात के ४ महीने बीत जाने पर निकाल कर विरेचनादि के द्वारा शरीर शुद्धि करने के बाद सहस्र आहुतियों से हवन करके यथा बल प्रातः काल सेवन करें और औषधि पच जाने पर मूंग तथा आमले के अलूने (लवण–रहित) किञ्चित घृतयुक्त यूषके साथ घृतयुक्त भात खाएं। एवं रेतीमें सोया करें। इस प्रयोग से १ मास पश्चात् शरीर से कृमि निकलेंगे उस समय शरीर पर "अणु तैल" की मालिश करके उन कृमियों को बांसकी चिमटी से अलहदा कर दें। दूसरे मास में शरीर से चींवटियां और तीसरे मास में जुवें निकलेंगी उन्हें भी उपरोक्त विधि से दूर कर देना चाहिये। चौथे मास में दांत, नख और केशादि गिरने लगेंगे। फिर पांचवें महीने में शुभ लक्षण प्रकट होंगे। इसके पश्चात् शरीर सूर्य के समान अपूर्व तेजोमय हो जायगा। श्रवण शक्ति तथा नेत्र ज्योति अत्यन्त तीव्र हो जायगी। वह मनुष्य तमो गुण और रजोगुण दूर हो जाने के कारण केवल सतोगुणी हो जायगा। इस प्रयोगका प्रयोगी अपूर्व वेदवक्ता, हाथी के समान बलवान, घोड़े के समान शीघ्रगामी एवं यौवन संपन्न होकर ८०० वर्ष पर्यन्त जीवित रह सकता है। उस मनुष्य को अणुतैल की मालिश, अजकर्ण (पलाश भेद) के कषाय–कल्क से उद्वर्तन एवं उशीर–खस–युक्त कुंवेके जलमें स्नान और चन्दन का उपलेपन करना चाहिये तथा अन्य समस्त आहार विहार, मिलावा सेवन की विधि के अनुसार करना चाहिये।

अथ आकारादि घृतप्रकरणम्

[४१९] आनन्दभैरवघृतम्

(र. र. स. अ. २१)

एरण्डतैलं त्रिफला गोमूत्रं चित्रकं विषम्।
सर्पिषा सहितं पक्त्वा सर्वाङ्गं तेन मर्दयेत्॥
त्वग्वातघ्नं महाश्रेष्ठं घृतमानन्दभैरवम्।
लशुनं सैन्धवं तैलमनुपानं प्रकल्पयेत्॥

त्रिफला, चीता और शुद्ध मीठे तेलिये के कल्क और गोमूत्र के साथ अरण्डी का तेल और घृत बराबर मिलाकर यथा विधि पाक सिद्ध करें। इसकी मालिश से त्वग्गत वायु का नाश होता है। यदि इसे खाने के लिये देना हो तो ल्हसन, सेंधानमक और तैल का अनुपान देना चाहिये।

[४२०] आमलकघृतम्

(च. सं. चि. अ. १)

आमलकानां सुभूमिजानां कालजानामनुपहतगन्धवर्णरसानामापूर्णरसप्रमाणवीर्याणां स्वरसेन पुनर्नवाकल्कपादसंयुक्तेन सर्पिषः साधयेदाढकम्। अतः परं विदारीस्वरसेनजीवन्तीकल्कसंप्रयुक्तेन अतः परं चतुर्गुणेन पयसा वा बलातिबलाकषायेण शतावरीकल्क संयुक्तेन अनेन क्रमेणैकैकं शतपाकं सौवर्णे राजने मार्तिके वा शुचौ दृढे घृतभाविते कुम्भे स्थापयेत्। तद्यथोक्तेन विधिना यथाग्नि प्रातः प्रयोजयेत्। जीर्णे च

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षीरसर्पिर्भ्यां शालिषष्टिकमश्नीयात् अस्य त्रिवर्षमयोगाद्वर्षशतं वयोऽजरं तिष्ठति । श्रुतमवतिष्ठते सर्वामयाः प्रशाम्यन्ति अप्रतिहतगतिः स्त्रीष्वपत्यवान् भवतीति ॥

उत्तम भूमि में यथोचित कालमें उत्पन्न हुवे गन्ध, वर्ण और रससे परिपूर्ण वीर्यवान् आमलों के स्वरस और चौथाई भाग पुनर्नवा के कल्क के साथ ४ सेर घृत सिद्ध करें । फिर उसे बिदारीकन्द के स्वरस और जीवन्ती के कल्क के साथ, इसके बाद चार गुने दूध और बला, अतिबला के कषाय और शतावर के कल्क के साथ सिद्ध करें । उपरोक्त प्रयोगोंमें से एक के साथ १००-१०० अथवा हजार हजार बार घृत सिद्ध करके चौथा भाग खांड और शहद मिलाकर सोने चांदी या मिट्टीके मज़बूत, स्वच्छ और घृतसे चिकने घड़ेमें भरकर रक्खें । इसे यथोक्त विधि के अनुसार अग्निबलानुकुल मात्रा से प्रातः काल सेवन करें और इसके पच जाने पर दूध और घी के साथ साली या साठी चावल का भोजन करें । इसे ३ वर्ष तक सेवन करने से १०० वर्ष तक यौवनावस्था स्थिर रहती है । समस्त रोग शान्त हो जाते हैं एवं वह सन्तानोत्पत्ति में समर्थ होजाता है ।

[४२१] आमलक्यादि घृतम्

(वृ. नि. र. गुल्म)

रसेनामलकेक्षूणां घृतपादं विपाचयेत् ।
पथ्यायाश्च पिबेत्सर्पिस्तत्सिद्धं पित्तगुल्मनुत् ॥

आमले का रस, ईखका रस और हरीतकी का क्वाथ । इन में से प्रत्येक वस्तु समान भाग लेकर उनके साथ सबके वजन से चौथाई घृत का पाक सिद्ध करें । इसके सेवन से पित्तगुल्म का नाश होता है ।

[४२२] आवर्तकीघृतम् (ग. नि.)

आवर्तकीमूलशतं सुसिद्धम्
क्वाथीकृतं कल्कपलाष्टयुक्तम् ।
प्रस्थं पुराणाद्धविषः सुगव्यात्
पक्वं शनैः साधु तदावतार्य ॥
मात्रां पिबेद्व्याधिबलानुरूपां
भुञ्जीत चाम्लं सह काञ्जिकेन ।
द्रवोत्तरं कोद्रवजं सुजीर्णे
कामं पुरस्तादपरेऽह्नि शुद्धात् ॥
त्रिसप्तरात्रं विधिनैवमाशु
पीतं निहन्यादचिरेणकुष्ठम् ।
स्रवद्व्रणं भग्ननखाङ्गदेहं
मण्डानुपूर्व्या विधिनाथ चैतत् ॥

६। सेर दन्तीमूल के क्वाथ और उसीके ४० तोला कल्क से २ सेर पुराना गोघृत मन्दाग्नि पर सिद्ध करें ।

इसे रोगानुसार उचित मात्रा में सेवन करना चाहिये और विरेचन होने के पश्चात् शामको काञ्जी युक्त आहार एवं उसके पच जाने पर कोदों का क्वाथ सेवन करना चाहिये । इस प्रकार इसे विधिवत् २१ दिन सेवन करने से स्रावयुक्त व्रण एवं गलित कुष्ठ जिसमें नख और शरीरावयव गल गए हों नष्ट होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ आकारादि तैल प्रकरणम्

[४२३] आगारधूमतैलम्

(वृ, नि., भा. प्र. उपदंश)

आगारधूमो रजनी सुराकिण्वं च तैस्त्रिभिः ।
भागोत्तरैः पचेत्तैलं कण्डु शोथरुजापहम् ।
शोधनं रोपणं चैव सवर्णकरणं तथा ॥

घरका धुवां १ भाग, हल्दी २ भाग, सुराकिण्व ३ भाग । इन पदार्थों से सिद्ध तैल खुजली, सूजन और पीड़ा नाशक तथा शोधन, रोपण (घाव को शुद्ध करने और भरने वाला) एवं नवीन त्वचाके रंगको ठीक करने वाला है ।

[४२४] आरग्वधादितैलम्

(र. र. यो. व्या)

आरग्वधमूलपलं कर्षद्वितीयन्तु शङ्खचूर्णस्य ।
हरितालस्य च खरस्य मूत्रप्रस्थे कटुतैलम् ॥
पक्कं तैलन्तु दत्वा सशंखहरितालचूर्णितं लेपात्
निर्मूलयति हि रोमाण्यन्येषां सम्भवो नैव ॥
खरोगर्दभःशंखहरितालयोर्मिलित्वा पादिकत्वम्

अमलतास की जड़ ५ तोला । शंख चूर्ण २॥ तोला । हरताल २॥ तोला । इनके कल्क और २ सेर गधे के मूत्र के साथ कड़वा तेल सिद्ध करें इस तेलमें चौथा भाग शंख और हरताल का चूर्ण मिलाकर लेप करने से बाल उड़ जाते हैं और फिर उत्पन्न नहीं होते ।

[४२५) आरग्वधाद्य तैलम्

(भा. प्र. म. खं, भै. र. कुष्ठ)

आरग्वधं धवं कुष्ठं हरितालं मनःशिला ।
रजनीद्वयसंयुक्तं पचेत्तैलं विधानवित् ॥
एतेनाभ्यञ्जनादेव क्षिप्रं श्वित्रं विनश्यति ॥

अमलतास, धव, कूट, हरताल, मनसिल, हल्दी और दारुहल्दी । इनके कल्क से सिद्ध तैल स्वेत कुष्ठ का अत्यन्त शीघ्र नाश करता है ।

[४२६] आदित्यपाक तैलम्

(वृ. नि. र., वा. र.)

मञ्जिष्ठात्रिफलालाक्षालाङ्गलीरात्रिगन्धकैः ।
चूर्णितैस्तैलमादित्यपाकं पामाहरं परम् ॥

मजीठ, त्रिफला, लाख, कल्हारी, हल्दी और गन्धक । इनके कल्क से सिद्ध तैल पामा (खुजली) नाशक है ।

[४२७] आरनालतैलम् (वृ. नि. र., वा.र.)

आरनालाढके तैलं पादसर्जरसं भृतम् ।
प्रस्थस्थे निर्जिते तोये ज्वरदाहार्तिनुत्परम् ॥

आरनाल ८ सेर और सर्ज रस का क्वाथ १ सेर इनसे २ सेर तैल सिद्ध करें । यह तैल ज्वर एवं दाह का नाश करता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ आकाराद्यासवप्रकरणम्

[४२८] अवर्तक्याद्यासवः (ग.नि.)

नेत्रभेषजशिफापलाष्टकं
सार्धमैलपलमभ्रमस्तकीम् ।
हेमजार्धपलमेकतः कृतं
द्रोणवारिमिलितं दिनत्रयात् ॥
यः पिबेद्द्विपलिकं दिनोदये
नीरमस्तसमये समाहितः ।
तस्य नश्यति कटि समुद्भवं
दद्रु मासयुगलेन निश्चितम् ॥

सनाय की जड़ ४० तोला, एलवा ७॥ तोला, रूमीमस्तकी २॥ तोला, रेवन्द चीनी २॥ तोला । सबको ३२ सेर पानी में मिलाकर सन्धान करके ३ दिन तक रक्खा रहने दें । पश्चात् छानकर रखें । इसे प्रातः और सायंकाल १० तोलेकी मात्रा में २ मास तक सेवन करने से कमर का दाद मिट जाता है ।

अथ आकारादि लेपप्रकरणम्

[४२९] आमवातहरो (अहिंस्रादि)लेपः (यो.र.)

अहिंस्राकेम्बुकामूलं शिग्रु वल्मीकमृच्च यैः ।
मूत्रपिष्टं श्च कर्तव्य उपनाहोऽनिलामजित् ॥

कटेली, सुपारी की जड़, सौंजना और दीमक की मिट्टी । इन्हें गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे आमवात (गठिया) का नाश होता है ।

[४३०] आम्रबिजादिलेपः (वृ.नि.र.क्षुद्र.)

आम्रबीजस्य चूर्णं तु शिवाचूर्णं समं द्वयम् ।
दुग्धपिष्टःप्रलेपोऽयं दारुणं हन्ति दारुणम् ॥

आमकी गिरी और हैड़ दोनों समान भाग लेकर चूर्ण करके दूधमें पीसकर लेप करनेसे भयंकर दारूणका नाश होता है ।

[४३१] आरग्वधादिलेपः (वृ.नि.र.त्वग्दोषे)

आरग्वधदलैःपिष्टैर्लेपःकांजिकयुक्कृतः ।
करित्वकदद्रुकुष्ठानि हन्ति पामां विचर्चिकाम् ॥

अमलतास के पत्तों को कांजी में पीसकर लेप करने से करित्वक, दाद, कुष्ट, पामा और विचर्चिका का नाश होता है ।

अथ आकारादि नस्यप्रकरणम्

[४३२] आरग्वधादि नस्य और लेप
(वृ. नि. र, वृ. मा. ग्रन्थ्या)

आरग्वधशिफां पिष्ट्वा सम्यक्तन्दुलवारिणा ।
तेन नस्यप्रलेपाभ्यां गंडमालां समुद्धरेत् ॥

अमलतासकी जड़को चावलोंके पानीमें पीसकर नास लेने और लेप करनेसे गण्डमाला का नाश होता है ।

[४३३] आर्द्रकादिनस्यम् (१)
(वृ. नि. र. सन्नि.)

आर्द्रकस्वरसोपेतं सिन्धूत्थं सकटुत्रिकम् ।
प्रबोधाय मुखे दद्यान्नस्यं वा मरिचेन च ॥

अद्रकके स्वरसमें संधानामक और त्रिकुटे का चूर्ण मिलाकर रोगी के मुखमें लगाने (जीभ आदि में मलने) से अथवा काली मिरचों की नसवार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देनेसे मूर्छा (बेहोशी) दूर होती है।

[४३४] आर्द्रकादिनस्यम् (२)

(वृ. नि. र. रक्तपि.)

शृंगगैरिकयोः कल्कं धातक्या मधुकस्य च।
घ्राणस्रुते सृजि प्रोक्तं योषित्क्षीरेण नावनम्॥

अदरक (सोंठ) और गेरूको अथवा धायके फूल और मुलैठीके चूर्ण को स्त्री के दूध में मिलाकर नास लेनेसे नकसीर बन्द होती है।

[४३५] आम्रादिनस्यम् (वृ.नि.र. रक्तपि.)

आम्रास्थि च पलाण्डुर्वा नासिकाच्युतरक्तजित्।

आमकी गिरी या प्याज़ के रसकी नसवार लेने से नकसीर बन्द होती हैं।

अथ आकारादि रसप्रकरणम्

[४३६] आदित्यरसः (वृ.नि.र. अजी.)

दरदं च विषं गन्धं त्रिकटु त्रिफला समम्।
जातीफलं लवङ्गं च लवणानि च पञ्च वै॥
सर्वमेकीकृतं चूर्णमम्लयोगेन सप्तधा।
भावयित्वा वटीं कुर्याद् गुञ्जार्धप्रमितां बुधः॥
रसोऽयमादित्यसंज्ञोयमजीर्णक्षयकारकः।
भुक्तमात्रं पाचयति जठरानलदीपनः॥

शुद्ध शिंगरफ, शुद्ध मीठा तेलिया, शुद्ध गन्धक, त्रिकुटा, त्रिफला, जायफल, लौंग और पांचों नमक। सब चीजों का चूर्ण समान भाग लेकर सबको एकत्र करके + अम्ल वर्ग अथवा कांजीकी सात भावना देकर आधी रत्ती की गोलियां बनावें। यह रस अजीर्ण नाशक, अग्निदीपक और पाचक है

[४३७] आनन्दभैरवो रसः (१)

(र. चि. म. अ.९)

वंगभस्म मृतं स्वर्णं रसं क्षौद्रैर्विमर्दयेत्।
द्विगुञ्जं भक्षयेन्नित्यं हन्ति मेहं चिरोद्भवम्॥
गुञ्जामूलं तथा क्षौद्रैरनुपानं प्रशस्यते॥

वंग भस्म, स्वर्ण भस्म और सिन्दूर। इन्हें समान भाग लेकर शहद में घोटकर दो दो रत्ती की गोलियां बनावे। इसे चोटली की जड़ के चूर्ण और शहद के साथ सेवन करने से पुराना प्रमेह नष्ट होता है।

[४३८] आनन्दभैरवो रसः (२)

(भै.र.;वृ.नि.र.; अति.)

दरदं मरिचं टङ्कममृतं मागधीसमम्।
श्लक्ष्णपिष्टन्तु गुञ्जैकं रसमानन्दभैरवम्॥
लेहयेन्मधुना चानु कुटजस्य फलत्वचोः।
चूर्णितं कर्षमात्रन्तु त्रिदोषोत्थातिसारजित्॥
दध्यन्नं दापयेत् पथ्यं दध्याज्यं तक्रमेव वा।
पिपासायां जलं देयं विजया च हिता निशि॥

शुद्ध शिंगरफ, काली मिर्च, सुहागेकी खील, शुद्ध मीठा तेलिया और पीपल सब चीजें समान भाग लेकर महीन चूर्ण करके रक्खें। इसे १ रत्ती की मात्रा में शहद तथा इन्द्रयव और कुड़े की छाल के १। तोला चूर्ण के साथ सेवन करने से त्रिदोषज अतिसार का नाश होता है। पथ्य-दही भात, बकरी का दही तथा तक्र (छाछ) और जब प्यास

+ अम्लवर्ग—

अम्लवेतसजम्बीरलुङ्गाम्लचणकाम्लकाः।
नारंगं तिन्तिडी च चिञ्चापत्रञ्च निम्बुकम्॥
चाङ्गेरी दाडिमञ्चैव करमर्द तथैव च।
एष चाम्लगणः प्रोक्तो वेतसाम्लसमायुतः॥

अम्लवेत, जम्बीरी नींबू, बिजौरा नींबू, चनेका खार, नारंगी, तिन्तिडी, इमली के पत्ते, नींबू, चांगेरी, दाडिम और कमरख। इन चीजों का नाम अम्लवर्ग है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लगे तब शीतल जल देवे तथा रात्रीमें थोडी भांग शुद्धकर घोट छानके पीवे तो यह अतिसार वालेको हीतकारक होती है।

[४३९] आनन्दभैरवो रसः (३)
(भै. र, अति.)

हिङ्गुलश्च विषं व्योषं टङ्कनं गन्धकं समम् ।
जम्बीररससंयुक्तं मर्दयेद्याममात्रकम् ॥
कासश्वासातिसारेषु ग्रहण्यां सान्निपातिके ।
अपस्मारेऽनिले मेहेऽप्यजीर्णे वह्निमान्द्यके ॥
गुञ्जामात्रः प्रदातव्यो रसो ह्यानन्दभैरवः ॥

शुद्ध सिंगरफ, शुद्ध मीठा तेलिया, त्रिकुटा, सुहागेकी खील और शुद्ध गन्धक सब चीजें समान भाग लेकर महीन चूर्ण करके एक पहर तक जम्बीरी नींबू के रस में घोटें। इसे १ रत्तीकी मात्रा में सेवन करने से खांसी, श्वास, अतिसार, संग्रहणी, सन्निपात, अपस्मार, वातव्याधि, प्रमेह, अजीर्ण और मन्दाग्नि का नाश होता है।

[४४०] आनन्दभैरवो रसः (४)
(र. रा. सुं. श्वासे.)

पारदं गन्धकं चैव भृङ्गराजेन मर्दयेत् ।
हिङ्गुलं च विषं व्योषं टङ्कणं मगधा समम् ॥
मातुलुङ्गरसैर्मर्द्यं रसमानन्दभैरवम् ।
कासे श्वासे क्षये गुल्मे ग्रहण्यां सान्निपातिके ॥
अपस्मारे महाघोरे शस्तमानंदभैरवम् ॥

शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक समान भाग लेकर कज्जली करके भांगरे के रस में घोटें फिर इसमें शुद्ध शिगरफ, शुद्ध मीठा तेलिया, त्रिकुटा, सुहागेकी खील और पीपल। इनमें से प्रत्येक का चूर्ण पारेकी बराबर मिलाकर बिजौरे नींबू के रस में खरल करें। यह खांसी, श्वास, राजयक्ष्मा, गुल्म, संग्रहणी, सन्निपात और घोर अपस्मार का नाश करता है।

[४४१] आनंदरसः (वृ. नि. र. अति.)

जातीफलं सैन्धवहिङ्गुलश्च
वराटशुण्ठीविषहेमबीजम् ।
सपिप्पलीकं वटिकां च
कुर्याद्गुंजाप्रमाणां जठरामयघ्नीं ॥
निहन्ति वातं कफशूलमात्र-
मामातिसारं ग्रहणीविकारम् ।
निहन्ति शुष्कं सितया
समेतं रसोयमानंद इति प्रदिष्टः ॥

जायफल, सेंधा लवण, शुद्ध शिंगरफ, कौड़ी भस्म, सोंठका चूर्ण, शुद्ध मीठा तेलिया, धतूरे के बीज और पीपल। सब चीजें समान भाग लेकर घोट कर एक एक रत्ती की गोलियां बनावें। इनको खांडके साथ सेवन करने से उदररोग, वात, कफशूल, आमातिसार, संग्रहणी और सूखिया मसान का नाश होता है।

[४४२] आनन्दोदय रसः (भै. र. पाण्डु)

पारदं गन्धकं लोहमभ्रकं विषमेव च ।
समांशं मरिचं चाष्टौ टङ्कणश्च चतुर्गुणम् ॥
भृङ्गराज रसैः सप्त भावना श्चाम्लदाडिमैः ।
गुञ्जाद्वयं पर्णखण्डे खादेत सायं निहन्ति च॥
वातश्लेष्मभवान् रोगान् मन्दाग्निं ग्रहणी ज्वरान्
अरुचिं पाण्डुताश्चैव जयेदचिरसेवनात् ॥
नष्टमग्निं करोत्येष कालभास्करतेजसम् ।
पर्वतोऽपि हि जिर्य्येत प्राशनादस्य देहिनः ॥
गुर्वन्नमम्लमाषश्च भक्षणादेव जीर्य्यति ।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोहभस्म, अभ्रक-भस्म और शुद्ध मीठातेलिया १–१ भाग, काली मिर्च ८ भाग, सुहागेकी खील ४ भाग। प्रथम पारागन्धककी कज्जली बनावें फिर उसमें अन्य

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्रव्य मिलाकर भांगरे के रस और खट्टे अनार के रसकी ७-७ भावना दें। इसे २ रत्ती की मात्रा में सायंकाल के समय पानमें रखकर सेवन करने से वातश्लेष्मज रोग (वायु और कफके रोग), मन्दाग्नि, संग्रहणी, ज्वर, अरुचि और पाण्डु का नाश होता है। इसके सेवनसे गुरु अन्न, अम्ल तथा उड़द आदि जीर्ण हो जाते है।

[४४३] आमलक्यादि लोहः

(र. सा. सं., रक्तपि.)

आमलापिप्पलीचूर्णं तुल्यया सितया सह ।
रक्तपित्तहरं लौहं योगराजमिदं स्मृतम् ॥
वृष्याग्निदीपनं बल्यमम्लपित्तविनाशनम् ।
पित्तोत्थानपि वातोत्थान्निहन्ति विविधान् गदान्

आमला १ भाग, पीपल १ भाग, चीनी २ भाग, लोह भस्म ४ भाग। सबको महीन करके रक्खें। यह रस वृष्य, अग्नि दीपक, बलकारक, अम्लपित्त नाशक तथा पित्तज और वातज अनेक रोगों का नाश करने वाला है।

[४४४] आमवातविध्वंसनो रसः

(वृ. नि. र., आ. वा.)

प्रक्षिप्य गन्धं रसपादभागं
कलाप्रमाणं च विषं समस्तात् ।
कृशानुतोयेन च भावयित्वा
वल्लं ददीतास्य मरुत्प्रशांत्यै ॥
अपस्मारे तथोन्मादे सर्वाङ्गव्यथनेपि च ।
एकाङ्गवाते सामे वा दंष्ट्राबन्धे हिमे तथा ॥
देयोयं वल्लमात्रं तु सर्ववातनिवृत्तये ॥

शुद्ध पारद ४ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग× दोनों की कज्जली करके उसमें सबका सोलहवां भाग शुद्ध मीठे तेलिये का चूर्ण मिलाकर चीतेके रसमें घोटकर २-२ या ३-३ रत्तीकी गोलियां बनाएं। इसके सेवन से वातव्याधि, अपस्मार, उन्माद, सर्वांग पीड़ा, आमवात, हनुस्तंभ और शैत्य आदि का नाश होता है।

[४४५] आमवातारिरसः (भै. र., आ. वा.)

रसो गन्धो वरा वह्निर्गुग्गुलुः क्रमवर्द्धितः ।
एतदेरण्डपत्रेण श्लक्ष्णचूर्णं विमर्दयेत् ॥
कर्षांशैरण्डतैलेन हन्त्युष्णजलपायिनः ।
आमवातवते देयं दुग्धमुद्गादि वर्जयेत् ॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, त्रिफला ३ भाग, चीता ४ भाग, शुद्ध गूगल ५ भाग। प्रथम पारा गन्धककी कजली बनावें फिर उसमें द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर अरण्ड के पत्तों के रसमें घोटकर रक्खें। इसे १। तोला अरण्ड के तेल के साथ दें और ऊपर से गरम पानी पिलाएं तो आमवात का नाश होता है। पथ्य-मूंग इत्यादि।

[४४६] आमवातेश्वरो रसः

(भै. र., आ. वा.)

शुद्धगन्धपलार्धश्च मृततास्रं च तत्समम् ।
ताम्रार्द्धं पारदं देयं रसतुल्यं मृतायसम् ॥
सर्वं पञ्चाङ्गुलदले ढालयेन्निपुणःकृती ।
सञ्चूर्ण्य पञ्चकोलस्य सर्वं क्वाथे विमर्दयेत् ॥
रौद्रे विंशतिवारांश्च गुडुचीनां रसैर्दश ।
भृष्टटङ्कणचूर्णेन तुल्येन सह मेलयेत् ॥
टङ्कणार्धं बिडं देयं मरिचं विडतुल्यकम् ।
तिन्तिडीबीजचूर्णं तु सूतुल्यं च दन्तिका ॥
त्रिकटु त्रिफला चैव लवङ्गश्चार्धभागिकम् ।
आमवातेश्वरो नाम विष्णुना परीकीर्त्तितः ॥
महाग्निकारको ह्येष चामवातकुलान्तकः ।
स्थूलानां कुरुते कार्श्यं कृशानां स्थौल्यकारकम्

× यहां पारा १ भाग और गन्धक ४ भाग यह अर्थ निकलता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुपानवशेनैव सर्वरोगकुलान्तकः ।
साध्यासाध्यं निहन्त्याशु चामवातं सुदारुणम् ॥
भोजयेत्कण्ठपर्यंतं चतुर्गुञ्जामितं रसम् ।
कट्वम्लतिक्तरहितं पिबेत्तदनुपानकम् ॥
शीघ्रं जीर्य्यति तत्सर्वं जायते दीपनः परः ।
अनेन सदृशो नास्ति वह्नि संदीपनो रसः ॥
गुल्मार्शो ग्रहणीरोगशोथपांडूदरापहः ॥

शुद्ध गंधक २॥ तोला, ताम्रभस्म २॥ तोला, शुद्ध पारा १। तोला, लोहभस्म १। तोला। सबकी कज्जली करके यथाविधि अरण्ड पत्रपर ढालकर पर्पटी बनाएं फिर उसे पीसकर पंचकोल के क्वाथ में घोटें और धूपमें सुखा दे। इसी प्रकार २० भावना पञ्चकोल के क्वाथकी और १० भावना गिलोय के रसकी देकर उसमें सुहागेकी खील सबके बराबर, विड लवण सुहागे से आधा, काली मिर्च का चूर्ण बिड लवण के बराबर, तिन्तडीक के बीज १। तोला, दन्ती १। तोला, त्रिकुटा, त्रिफला और लौंग प्रत्येक ७॥ माशा सबको मिलाकर खरल करे।

यह रस अत्यन्त अग्निवर्द्धक और आमवात के लिये अत्यन्त उपयोगी है। इसके सेवनसे अनुपयोगी स्थूलता तथा कृशता नष्ट होकर शरीर सुडौल हो जाता है। यह अनुपान भेद से सब रोगों का नाश करता है। अत्यधिक भोजन करने के बाद यदि इसमें से ४ रत्ती दवा खा ली जाय तो वह सब पच जाता है। इसके समान अग्नि-संदीपक, गुल्म, बवासीर, ग्रहणी, शोथ, पाण्डु और उदररोग नाशक अन्य औषधि नहीं है। अनुपान —मधुर, कषाय और लवण रसयुक्त पदार्थ।

[४४७] आरोग्यराग्नि रसः

(वृ. नि. र., ज्वरे)

रसोगन्धकणामूलं वंशजं जयपालकम् ।
व्योषं च बाणलवणं विडं चंद्रलवं क्षिपेत् ॥
ताम्बूलरसतोमर्द्यं दिनं ताम्बूलपत्रयुक् ।
दत्तो नवज्वरं हन्ति तापे शीतक्रियोचिता ॥
सर्वज्वरे सन्निपातं ददेत्तं तु द्विगुंजकम् ।
आरोग्यराग्निनामायं रसः परमदुर्लभः ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, पीपलामूल, वंसलोचन, शुद्ध जमालगोटा, त्रिकुटा, पांचों लवण, बिड नमक और कपूर सब समान भाग लेकर प्रथम पारा गन्धककी कज्जली बनावें फिर उसमें अन्य द्रव्योंका चूर्ण मिलाकर एक दिन पान के रसमें घोटें। इसे २ रत्ती की मात्रा में पानमें रखकर सेवन करने से नवीन ज्वर और सन्निपातादि सब प्रकार के ज्वरों का नाश होता है। यदि सन्ताप अधिक हो तो शीत-क्रिया करनी चाहिये।

[४४८] आरोग्यवर्द्धनी गुटीका [रस]

(र. र. स., अ २०)

रसगंधकलोहाभ्रशुल्वभस्म समांशकम् ।
त्रिफला द्विगुणा योज्या त्रिगुणं तु शिलाजतु॥
चतुर्गुणं पुरं शुद्धं चित्रमूलं च तत्समम् ।
तिक्ता सर्वसमा ज्ञेया सर्वं संचूर्ण्य यत्नतः ॥
निंबवृक्षदलांभोभिर्मर्दयेत् द्विदिनावधि ।
ततश्च वटिकाःकार्या राजकोलफलोपमाः ॥
मण्डलं सेविता सैषा हन्ति कुष्ठान्यशेषतः ।
वातपित्तकफोद्भूताञ्ज्वरान्नानाप्रकारजान् ॥
देया पञ्चदिने जाते ज्वरे रोगे वटी शुभा ।
पाचनी दीपनी पथ्या हृद्या मेदोविनाशिनी॥
मलशुध्दिकरी नित्यं दुर्धर्ष क्षुत्प्रवर्तिनी ।
बहुनात्र किमुक्तेन सर्वरोगेषु शस्यते ॥
आरोग्यवर्धनी नाम्ना गुटिकेयं प्रकीर्तिता ।
सर्वरोगप्रशमनी श्रीनागार्जुनयोगिना ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, लोहभस्म, अभ्रकभस्म और ताम्रभस्म १–१ भाग, त्रिफला २ भाग, शुद्ध शिलाजीत ३ भाग, शुद्ध गूगल ४ भाग, चीतामूल ४ भाग और कुटकी सबके बराबर। प्रथम पारा गन्धककी कज्जली बनावे, फिर उसमें अन्य द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर सबको दो दिन तक नीम के पत्तों के स्वरसमें घोटकर बड़े बेरके बराबर गोलियां बनावें। इनके सेवन से मंडलकुष्ट, अन्य सब प्रकारके कुष्ठ, वातज, पित्तज और कफज ज्वर आदिका नाश होता है। इन्हें ज्वर आनेके पांचवें दिन से सेवन कराना चाहिये। यह गोलियां पाचनी, दीपनी, पथ्या, हृद्या (हृदय के लिये हितकारी) मेद नाशक, मलशोधक, अत्यन्त क्षुधावर्द्धक तथा अन्य सर्व रोग नाशक हैं।

[४४९] आरोग्यसागरो रसः

(र. र. स. अ. १९)

एकैकपलगन्धाश्मरससंभवकज्जलीम्।
तस्य मध्येद्विपलिकं ताम्बं तालं पलोन्मितम्॥
पलमात्रां मनोह्वां च पलमभ्रकभस्मकम्।
सुखस्पर्शस्य कर्षं च निक्षिप्य परिमर्द्य च॥
मूषामध्ये विनिक्षिप्य पिनद्धांतमुर्वीं ततः।
पत्रेण शुद्ध ताम्रस्य निर्मलेन त्रिकर्षिणा॥
मूर्षां मृद्भिः सवस्त्राभिः परिरुध्य यथा दृढम्।
परिशोष्य गिरिंडैश्च पुटेद् गजपुटेन हि॥
स्वाङ्गशीतं समुद्धृत्य खोटीभूतं विचूर्णयेत्।
गन्धतालशिलाचूर्णैः सहितं खल्वचूर्णकम्॥
पुटेत् क्रोडपुटे चैव दशवारं ततः परम्।
क्षिपेद्विंशतिभागेन वैक्रान्तं भस्मतां गतम्॥
विमर्द्य गालितं कृत्वा क्षिपेद्रौप्यकरंडके।
आरोग्यसागरो नाम रसोऽतिगुणवत्तरः॥
हन्यात्पाण्डुरोचकं गुदगदं वातं च पित्तं कफं
गुल्माध्मानकशोफरोगमथ च श्वासं शिरोर्तिं वमिम्।
अत्यर्थानलमंदतां गुरुमुदावर्तं विचित्रज्वरान्।
रोगानप्यपरान्रक्तिद्वयमितः क्षुतो मरीचाज्यवान्॥

शुद्ध पारा ५ तोला, शुद्ध गंधक ५ तोला दोनों की कज्जली करे। उसमें सोनामक्खी भस्म १० तोला, शुद्ध हरताल ५तोला, शुद्ध मनसिल ५ तोला, अभ्रकभस्म ५ तोला, सुखस्पर्शमणि (स्फाटिकमणि) की भस्म १। तोला मिलाकर खरल करके मूषामें भरकर उसका मुख ३।। तोला वजनी तांबेके शुद्ध पत्रसे बन्द कर दें एवं उसके उपर मजबूत कपर मिट्टी करके सुखालें और अरने उपलों की अग्निमें गजपुट लगादें। जब स्वांगशीत हो जाय तो निकाल कर खरल करें और उसमें शुद्ध गंधक,शुद्ध हरताल तथा शुद्ध मनसिलका चूर्ण पारे के बराबर मिलाकर वराह पुटमें फूंके। इसी प्रकार १० पुट दें।

हर पुटमें गन्धक, हरताल और मनसिल मिलाते रहें। इसके बाद उसमें सबके वजन से बीसवां भाग वैक्रान्त भस्म मिलाकर घोटकर कपरछन करके चांदीकी शीशी (करंड) में भरकर रक्खें।

इसके सेवनसे पाण्डु, अरुचि, गुदरोग, वातव्याधि, पित्तज और कफजरोग, गुल्म, अफारा, सूजन, श्वास, मस्तक पीडा, वमन, अत्यन्त अग्निमांद्य, भयंकर उदावर्त, नाना प्रकार के ज्वर और अन्य अनेक रोगोंका नाश होता है। अनुपान— काली मिर्चका चूर्ण और घी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ इकारादि कषायप्रकरणम्

(४५०) इन्द्रवारुणिमूलयोगः

(वृ. नि. र. अण्डवृद्धि)

इन्द्रवारुणिकामूलं तैलं पुष्करजं तथा ।
संमर्द्य च सगोदुग्धं पिबेज्जंतुः कुरण्डके ॥

इन्द्रायणकी जड ओर पोखरमूलको तैलमें पीसकर गोदुग्धके साथ सेवन करने से अण्ड वृद्धिका नाश होता है ।

(४५१) इन्द्राणी मूलयोगः

(वृ. नि. र. अण्डवृद्धि)

वातारितैलमृदितं सुरवारुणीजं
मूलं नरः पिबति यो मसृणं विचूर्ण्य ।
गव्ये निधाय पयसि त्रिदिनावसाने
तस्य प्रणश्यति कुरण्डकृतो विकारः ॥

इन्द्रायणकी जडको अरण्डी के तेलमें महीन पीसकर गायके दूधके साथ ३ दिन तक सेवन करने से अण्ड वृद्धिका नाश होता है ।

(४५२) इन्द्रवारुण्यादिफाण्ट

(च. सं. चि. अ. २०)

विशाला १ कटुकामुस्तकुष्ठदारुकलिङ्गकान् ।
कार्षिकानर्द्धकर्षांशान् कुर्य्यादतिविषां तथा ॥
कर्षौ मधुरसाया द्वौ १ सर्वं चूर्णं सुखाम्बुना ।
मृदितं तं रसं पूतं पीत्वा लिह्याच्च मध्वनु ॥
कासं श्वासं ज्वरं दाहं पाण्डुरोगमरोचकम् ।
गुल्मनाहामवातांश्च रक्तपित्तञ्च नाशयेत् ॥

इन्द्रायनकी जड, कुटकी, नागर मोथा, कुठ, देवदारु और इन्द्रजौ १।-१। तोला, अतीस ७॥ माशा, मुलैठी २॥ तोला, सबको कूटकर गरम पानीमें डालें और मल छानकर पिये फिर ऊपर से थोडासा शहद चाटलें । इसके सेवन से खांसी, श्वास, ज्वर, दाह, पाण्डु, अरुचि, गुल्म, अफारा, आमवात और रक्तपित्तका नाश होता है ।

[४५३] इक्ष्वादिकषायः

(वृ. नि. र; ग. नि., भा. प्र. म. खं., र. पि.)

इक्षूणां मध्यकाण्डानि सकन्दं नीलमुत्पलम् ।
केसरं पुण्डरीकस्य मोचं मधुकपद्मके ॥
वटप्ररोहशुङ्गाश्च द्राक्षा खर्जूरमेव च ।
एतानि समभागानि कषायमुपकल्पयेत् ॥
व्युषितं मधुसंयुक्तं कषायं शर्करान्वितम् ।
सप्रमेहं रक्तपित्तं क्षिप्रमेतन्नियच्छति ॥

ईखका मध्यभाग (गन्ना) कन्द सहित निलोफर, केसर, केलेका फूल (अथवा मोचरस) मुल्हैठी, पद्माक, बडकी जटा और अंकुर, दाख और खजूर। इनका शीत कषाय बना कर उसमें शहद और खांड मिलाकर सेवन करने से प्रमेह और रक्तपित्त का नाश होता है ।

१त्रिफला मुस्तोति पाठान्तरम् - सर्वमेत-दिति पाठान्तरम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ इकारादि चूर्णप्रकरणम्

[४५४] इन्द्रवारुणिचूर्णम्

(वृ. नि. र., वा. व्या.)

इन्द्रवारुणिकामूलं मागधीगुडसंयुतम् ।
भक्षयेत्कर्षमात्रं तत्सन्धिवातं व्यपोहति ॥

इन्द्रायणकी जड़ और पीपलके चूर्णको गुड़ में मिलाकर १। तोला की मात्रा से सेवन करने से सन्धिगत वायु का नाश होता है ।

[४५५] इन्द्रवारुण्यादिचूर्णम्

(वृ. नि. र., शूले)

इन्द्रवारुणिकामूलं कटुत्रयसमन्वितम् ।
नभोम्बुना हरेत् पीतं शूलमत्यंतदुःसहम् ॥

इन्द्रायणकी जड़ और त्रिकुटे का चूर्ण पानीके साथ पीने से अत्यन्त दुस्सह शूल का नाश होता है ।

[४५६] इक्ष्वाकुकल्पः

(च. सं. क. ३ अ.)

अपुष्पस्य प्रवालानां मुष्टिं प्रादेशसंमिताम् ।
क्षीरप्रस्थं शृतं दद्यात् पित्तोद्रिक्ते कफज्वरे ॥
पुष्पादिषु च चत्वारःक्षीरे जीमूतके यथा ।
योगा हरितपाण्डूनां सुरामण्डेन पञ्चमः ॥
फलस्वरसभागञ्च त्रिगुणक्षीरसाधितम् ।
यवःस्थिते कफे दद्यात् स्वरभेदे सपीनसे ॥
जीर्णे मध्योद्धृते क्षीरं प्रक्षिपेत्तद्यदा दधि ।
जातं स्यात् कफजे कासे श्वासे वम्याञ्च तत्पिबेत्
अजाक्षीरेण बीजानि भावयेत् पाययेत च ।
विषगुल्मोदरग्रन्थिगण्डेषु श्लीपदेषु च ॥
*दधिमण्डैःफलान्मध्यं पाण्डुकुष्ठज्वरार्दितः ।
तेनतक्रं विपक्वं वा सक्षौद्रलवणं पिबेत् ॥
तुम्ब्याःफलरसैःशुष्कैःसपुष्पैरवचूर्णितम् ।
छर्दयेन्माल्यमाघ्राय गन्धसम्पत्सुखोचितः ।
भक्षयेद् फलमध्यं वा गुडेन पललेन च ।
इक्ष्वाकुफलतैलं वा सिद्धं वा पूर्ववद् घृतम् ॥
पञ्चाशद्दशवृद्धानि फलादीनां यथोत्तरम् ।
पिबेद्विमृद्य बीजानि कषायेष्वासुतं पृथक् ॥
यष्ट्याह्वकोविदाराद्यैर्मुष्टिमन्तर्नखं पिबेत् ।
कषायैःकोविदाराद्यैर्मात्राश्चफलवत् स्मृताः ॥
बिल्वमूलकषायेण तुम्बीबीजाञ्जलिं पचेत् ।
पूतस्यास्य त्रयोभागाःचतुर्थःफाणितस्य तु ॥
सघृतं बीजभागश्च पिष्टमर्धांशिकांस्तथा ।
महाजालिनीजीमूतकृतवेधनवत्सकान् ॥
लेहयेत्साधयेद्दर्व्या घट्टयन् मृदुनाग्निना ।
यावत् स्यात्तनुमत्तोये पतितं च न शीर्यते ॥
तं लिह्यान्मात्रया लेहं मन्थं चापि पिबेदनु ।
कल्प एषोऽग्रिमन्थादौ चतुष्के पृथगुच्यते ॥
शक्तु भिर्वा पिबेन्मन्थं तुम्बीस्वरसभावितैः ॥

कड़वी तोरी की १ मुष्टि प्रमाण (१२ अंगुल लम्बी) पुष्प रहित (जिसमें अभी पुष्प न उगे हों) नवीन कोमल शाखा लेकर उससे १ सेर दूध सिद्ध करें । यह दूध पित्तोल्वण कफज्वर में वमनार्थ देना चाहिये ।

जिस प्रकार जीमूतके, फल पुष्पादि–सिद्ध-दुग्ध सम्बन्धी चार प्रयोगों की कल्पना की गई है उसी प्रकार इक्ष्वाकु (कड़वी तोरी) के पुष्पादि से सिद्ध दुग्ध के भी ४ योग होते हैं ।

जीमूतके समान ही इक्ष्वाकुके हरे पीले फलों से भी सुरामण्ड द्वारा एक प्रयोग की कल्पना करनी चाहिये ।

* मस्तुनावेति पाठान्तरम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उरःस्थित कफ, स्वरभेद और पीनस में १ भाग कड़वी तोरीके फलोंके स्वरससे ३ भाग दूध सिद्ध करके देना चाहिये।

एक पुरानी कड़वी तोरी के बीचका गूदा निकालकर उसमें दूध भरदें। जब दही जम जाय तो उसे कफज खांसी, श्वास और वमन में प्रयोग करें।

कड़वी तोरी के बीजों को बकरी के दूध की भावना देकर चूर्ण करके उसे विषदोष, गुल्म, उदर-ग्रन्थि, गण्डमाला और श्लीपद रोगमें सेवन करना चाहिये।

कड़वी तोरी के गूदे को मस्तु (दही के पानी) के साथ सेवन करने से या उस गूदे के साथ तक्र पकाकर उसमें शहद और सेंधा नमक मिलाकर सेवन करने से पाण्डु, कुष्ठ और ज्वर का नाश होता है।

कड़वी तोरी के फूलों को उसके फलों के स्वरस के साथ सुखाकर चूर्ण करके उसे किसी सुगन्धित मालामें छिड़ककर सुंघाने से वमन हो जाती है।

वमन के लिये इक्ष्वाकु के फलके गूदेको गुड़ और तिलों के कल्क के साथ सेवन करना चाहिये अथवा उसके कल्क से सिद्ध तैल या जीमूतकल्प में वर्णित विधि से इक्ष्वाकुघृत बनाकर सेवन करना चाहिये।

कड़वी तोरीके बीज १० नग लेकर उन्हें मदनफलादि वमन कारक द्रव्यों में पीसकर आसुत करके पिलाएं इसी प्रकार बीजों की संख्या में यथा क्रम १०-१० की वृद्धि करते हुवे ५० तक पहुंचाना चाहिये। इस प्रकार १०-२० ३०-४० और ५० बीजों के यह पांच योग होते हैं।×

कड़वी तोरी के अन्तर्नखमुष्टि (अंगुठे का नख अन्दर करके भरी हुई मुट्ठी) बीज ले कर मुलैठी और कोविदारादि द्रव्यों के क्वाथ में पीस कर वमनार्थ पिलाना चाहिये।

इक्ष्वाकु को मदन फलके समान मात्रा में ग्रहण करके कोविदारिक आठ द्रव्यों के क्वाथ के साथ पृथक् २ सेवन करे। यह आठ प्रयोग होते हैं।

बेल की जड़ की छालके कषायमें २० तोले कड़वी तोरीके बीजोंका चूर्ण मिलाकर पकाकर छानले यह क्वाथ ३ भाग, राब (फाणित) १ भाग, कड़वी तोरीके बीज १ भाग, घी १ भाग, महाजालिनी, जीमूत, कृतवेधन और इन्द्रजौ, प्रत्येक का चूर्ण आधा आधा भाग। सबको मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावे और करछी से चलाते रहें जब तार छूटने लगे और पानीमें डालने से फैल न जाय तो उतार लें। इसे मात्रानुसार खाकर ऊपरसे मन्थ पीना चाहिये।

इसी प्रकार सोना पाठा, खम्भारी, पाढल और अरणी के क्वाथ से भी पृथक् २ चार लेह बनाए जाते हैं।

तुम्बीके रससे सत्तुको भावना देकर उसका मंथ बनाकर वमनार्थ देना चाहिये।

× कोई २ प्रथम योग ५० का मानकर उससे आगे १०-१० बढ़ाते हुवे १०० तक पहुंचते हैं इससे यह ६ योग हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त कोई २ आसुत (सन्धान) का प्रथक प्रयोग मानते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ इकारादि गुटिकाप्रकरणम्

[४५७] इन्दुकला वटिका (भै. र. परिशि.)

शिलाजत्वयसीहेमं संमर्द्यार्जकवारिणा ।
गुञ्जामात्रावटीःकृत्वा कुर्य्याच्छायाविशोषिताः
मसूरिकायां विस्फोटे ज्वरे लोहितसंज्ञके ।
एकैकां दापयेदासां सर्वव्रणगदेषु च ॥

शुद्ध शिलाजीत, लोह भस्म, स्वर्ण भस्म । सब समान भाग लेकर अर्जक (तुलसी भेद) के रसमें घोटकर १–१ रत्ती की गोलियां बनाकर छांया में सुखावे । यह गोलियां मसूरिका, विस्फोटक, लोहित ज्वर और व्रण आदि के लिये उपयोगी हैं। मात्रा एक गोली ।

[४५८] इन्दुवटी (भै. र. कर्ण)

शिलाजत्वभ्रलौहानि समानि हेमपादिकम् ।
काकमाचीवरीधात्रीपद्मानाम्भसा पृथक् ॥
भावयित्वा वटीःकुर्याद् द्विगुञ्जाफलमानतः ।
धात्रीतोयेन संमर्द्य प्रातःप्रातःप्रयोजयेत् ॥
कणनादादयःसर्वे गदा वातोद्भवाश्रये ।
प्रमेहा विंशतिश्चापि नश्यन्त्येतन्निषेवणात् ॥
सुधाविस्रावनादिन्दुर्जगतां तापहृद्यथा ।
तथैवेन्दुवटीनाम्ना रोगतापनिसूदनी ॥

शुद्ध शिलाजीत, अभ्रक और लोह भस्म, प्रत्येक ४–४ भाग, स्वर्ण भस्म १ भाग । सब को एकत्र करके मकोय, शतावर, आमला और कमल के रस में पृथक् पृथक् भावना देकर २-२ रत्ती की गोलियां बनावे । इन्हे आमले के रस में घोटकर प्रातःकाल सेवन करने से कर्णनादादि वातज रोग और २० प्रकार के प्रमेहों का नाश होता है ।

[४५९] इन्द्रब्रह्मवटी (र. सा. सं. अपस्मारे)

मृतसूताभ्रकं तीक्ष्णं तारं ताप्यं विषं समम् ।
पद्मकेशरसंयुक्तं दिनैकं मर्दयेद् द्रवैः ॥
स्नुह्यग्निविजयैरण्डवचानिष्पावशूरणैः ।
निर्गुण्डयाश्च द्रवैर्मर्द्य तद्गोलं पाचयेत्पुनः ॥
कंगुनीसर्षपोत्थेन तैलेन गन्धसंयुतम् ।
ततः पक्त्वा समुद्धृत्य चणमात्रा वटी कृता ॥
इन्द्रब्रह्मवटीनाम भक्षयेदार्द्रकद्रवैः ।
दशमूलकषायश्च कणायुक्तं पिबेदनु ॥
अपस्मार जयत्याशु यथा सूर्योदये तमः ॥

रससिन्दूर, अभ्रक भस्म, तीक्ष्ण लोह भस्म, चांदी भस्म, सोनामक्खी भस्म, शुद्ध मीठा तेलिया, कमल केसर, शुद्ध गन्धक । सब चीजे समान भाग लेकर थूहर के दूध, चीते की जड़के रस, भांग, एरण्ड, बच, सेम, जमीकन्द, और संभालु के रसमें १–१ दिन घोटकर गोला बनालें ।

इस गोलेको कंगनी और सरसों के तैल में पकावें और फिर चनेके बराबर गोलियां बनाकर रक्खें । इन्हें अदक के रसके साथ खिलाकर ऊपर से पीपल का चूर्ण मिलाकर दशमूल का क्वाथ पिलाया जाय तो अपस्मार का अत्यन्त शीघ्र नाश होता है ।

[४६०] इन्द्रवटी ।

(र. सा. सं, र. का. धे, प्रमेह)

मृतं सूतं मृतं वज्रमर्ज्जुनस्य त्वचान्वितम् ।
तुल्यांशं मर्दयेत्खल्वे शाल्मल्यामूलजैर्द्रवैः ॥
दिनान्ते वटिका कार्य्या माषमात्रा प्रमेहहा ।
एषा इन्द्रवटीनाम्ना मधुमेहप्रशान्तकृत् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रससिन्दूर, वंगभस्म और अर्जुन की छाल। सब समान भाग लेकर १ दिन सेंभल की जड के रसमें घोटकर १-१ माशे की गोलियां बनावें। इनके सेवन से प्रमेह और मधुमेह का नाश होता है।

[४६१] इक्ष्वादिमोदकं (वृ. नि. र., क्षय.)

उबटेक्षुरसः क्षौद्रं तुगाक्षीर्याश्च बुद्धिमान् ।
प्रस्थं प्रस्थं गृहीत्वा तु शर्कराधंतुलां तथा ॥
आत्मगुप्ताफलानां च कुडवं मरिचस्य च ।
त्रिसुगन्धं कृतावापं मंथानेन विमंथयेत् ॥
पलिकान् मोदकान्कृत्वा स्थापयेद्भाजने शुभे।
एतत् द्विकालमेकं वा खादेदग्निबलं प्रति ॥
वटिकां नियताहारो ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ।
ग्रहण्यां यक्ष्मिणे सद्यश्चैकादशविधे तथा ॥
स्वरवर्णबलौदार्यतुष्टिपुष्टिविवर्द्धनम् ।
आयुष्यं पुष्टिकं चाथ भूतोपहतचेतसाम् ॥
व्याकुलकृतदेहानां वृद्धानां क्षीणरेतसाम् ।
वाजीकरणमप्येवं वंध्यानां पुत्रदं परम् ॥
धनुस्त्रीमद्यभारैश्च खिन्नानां बलवर्द्धनम् ।
हृत्प्लीहग्रहणीदोषमूत्रकृच्छ्रापतंत्रकम् ॥
अपस्मारविषोन्मादनाशनं तद्रसायनम् ॥

भुंई आमले का रस, ईख का रस, बंसलोचन, प्रत्येक १-१ सेर, चीनी २५० तोला। कोंच के बीज, काली मिर्च, तेजपात, दालचीनी तथा इलायची २०–२० तोला लें।

इनमें से चूर्ण करने योग्य औषधियों का चूर्ण करके सबको एकत्र मिलाकर मथनी (रई) से खूब मथें और फिर ५–५ तोले के मोदक बनाकर रक्खें।

इन्हें दोनों समय अथवा एक समय अग्नि बलानुसार सेवन करावें और ब्रह्मचर्य व्रत और पथ्यादि पालन करावें इसके सेवन से संग्रहणी, ११ प्रकारके यक्ष्मा और भूतावेश का नाश होता है एवं स्वर, कान्ति, तुष्टि, पुष्टि, आयु आदि की वृद्धि होती है। क्षीण वीर्य एवं व्याकुलताग्रस्त वृद्धों के लिये हितकर, वाजीकरण, वंध्यत्व नाशक, धनुष, मद्य और स्त्रीसमागम से उत्पन्न खिन्नता, हृद्रोग, तिल्ली, मूत्रकृच्छ्र, अपतन्त्रक, अपस्मार, विषदोष और उन्माद नाशक तथा रसायन है।

अथ इकाराद्यवलेहप्रकरणम्

[४६२] इक्ष्वाद्यावलेहः (वृ. नि. र. कासे)

इक्ष्विक्षुबालिकापद्ममृणालोत्पलचंदनैः ।
मधुकं पिप्पली द्राक्षा लाक्षा शृंगी शतावरी ॥
द्विगुणा च तुगाक्षीरी मिता सर्वैश्चतुर्गुणा ।
लिह्यात्तं मधुसर्पिभ्यां क्षतकासनिवृत्तये ॥

ईख, तालमखाना, कमल का डंठल, नीलोफर, सफेद चन्दन, मुलहैठी, पीपल, दाख, लाख, काकड़ासिंगी और शतावर, १–१ भाग, वंसलोचन २ भाग, मिश्री सब से चारगुनी। सबका चूर्ण करके शहद और घी में मिलाकर चाटने से क्षतज कास (खांसी) का नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ इकारादि रसप्रकरणम्।

[४६३] इच्छाभेदीरसः (१) (रसा. सा.)

**सूतशुण्ठयग्निकोलानां समानामर्द्धगन्धकः।
निशोथस्तत्समस्तुल्या जैपालाः स्नेहवर्जिताः॥
भावयित्वाऽम्बुना वह्नेः श्रणकप्रमिता वटीः॥
कुर्यात्सर्वस्य चूर्णास्य क्रूरकोष्ठोऽपि रिच्यते॥**

हिंगुलकापारद, सोंठ, चित्रक, कालीमिर्च, १-१ तोला और २ तोला शुद्ध गंधक लेकर पारद गंधक की कज्जली करले, बाद सोंठ, मिरच, चित्रक के चूर्ण को और भी मिलादे। इस चूर्ण में ६ तोले निसोथ के चूर्ण को और १२ तोले शुद्ध जमालगोटे के चूर्ण को डालकर घोंटे। इस चूर्ण में चित्रक के काढे की भावना देकर चने के समान गोलियां बनावे। बलाबल देख कर एक गोली से चार गोली तक ताजा पानी के साथ या धारोष्ण (ताजा) दूध के साथ देने से मनुष्य कैसा ही क्रूर-कोष्ठी क्यों न हो जुलाब अवश्य होता है॥

[४६४] ईच्छाभेदीरसः (२) (रसा. सा.)

**टङ्कणं पिप्पली शुण्ठी हिङ्गुलुर्निम्बुशोधितः।
हेमपत्रा त्रिवृद्दन्ती तिस्रो द्विद्विगुणाः क्षिपेत्॥
चूर्णं धारोष्णदुग्धेन गिलेद् गुञ्जात्रयोन्मितम्।
इच्छया भेदकं नैतत् पच्यते रेचनं विना॥
गुल्मं विष्टम्भकं हन्यादुदावर्त्तमरोचकम्।
अर्शोभगन्दरादीनां योगैस्सेवेत कालवित्॥**

अग्नि पर फुलाया हुआ सुहागा, पीपल, सोंठ, नीबू के रस में शोधा हुआ सिंगरफ, ये चारों चीज़ १-१ तोले, सनायकी पत्ती २ तोले, निसोथ ४ तोले, शुद्ध जमालगोटे का चूर्ण ८ तोले ले। इस चूर्ण की मात्रा कम से कम ३ रत्ती लेकर ताजे दूध के साथ पीवे। यह यथेष्ट दस्त कराता है इस लिये इस को इच्छाभेदी रस कहते हैं। यह रस बिना दस्त कराये पच नहीं सकता। इस के सेवन करने से विष्टम्भ रोग, गुल्मरोग, उदावर्त्तरोग, अरुचि, नष्ट होजाते हैं और शास्त्र-लिखित बवासीर, भगन्दर आदि रोगों के प्रयोगों के साथ इसके सेवन करने से सुखी होजाता है॥

[४६५] इच्छाभेदीरसः (३)

(रसे. चि. म. ९. अ; र. का. धे. उदर)

**सूतं गन्धं च मरिचं टङ्कणं नागरामये।
जैपालबीजसंयुक्तं क्रमोत्तरगुणं भवेत्॥
सर्वगुल्मोदरे देय इच्छाभेदी स्वयं रसः।
द्वित्रिगुञ्जां वटीं भुक्त्वा तप्ततोयं पिबेदनु॥**

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, काली मिर्च ३ भाग, सुहागा की खील ४ भाग, सोंठ ५ भाग, हेड़ ६ भाग और शुद्ध जमाल गोटा ७ भाग। प्रथम पारा गन्धककी कज्जली बनावें फिर उसमें अन्य द्रव्योंका चूर्ण मिलाकर खरल करें।

इसे २ रत्ती मात्रा में गरम पानी के साथ सेवन करने से (विरेचन होकर) गुल्म और सब प्रकार के उदर रोगोंका नाश होता है।

[४६६] इच्छाभेदीरसः (४)

(र. सा. सं. रेचनाध्याये)

तुल्यं टङ्कणपारदं समरिचं तुल्यांशकं गन्धकं विश्वा च द्विगुणां ततो नवगुणं जैपालचूर्णं क्षिपेत्। गुञ्जैकप्रमितो रसो हिमजलैः संसेवितो रेचयेद्यावत्कोष्णजलं पिबेदपि वरं पथ्यञ्च दध्योदनम्॥

सुहागे की खील, शुद्ध पारा, काली मिर्च

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और शुद्ध गन्धक १-१ भाग, सोंठ २ भाग और जमालगोटे का चूर्ण ९ भाग। प्रथम पारा गन्धक की कज्जली बनावें फिर उसमें अन्य द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर सबको मर्दन करके रक्खें।

इसे ठंडे पानी के साथ १ रत्ती भर खाने से जब तक गरम पानी न पिया जाय तब तक दस्त आते रहते हैं। इससे विरेचन होने के बाद दही भात का आहार करना चाहिये।

(४६७] इच्छाभेदी रसः (५)

(र. सा. सं. रेचनाध्याये)

जैपालाष्टौ द्विको गन्धस्त्रिशुण्ठी मरिचं द्विकम्।
एकः सूतः सोहगैका गुञ्जामात्रा वटीकृता॥
शूलव्याधिप्रभृतयः कुष्ठैकादशपित्तजाः।
भगन्दरादिहृद्रोगाः सर्वे नश्यन्ति भक्षणात्॥

शुद्ध जमालगोटा ८ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, सोंठ ३ भाग, स्याह मिर्च २ भाग, शुद्ध पारा १ भाग और सुहागे की खील १ भाग। प्रथम पारा गन्धक की कज्जली बनावें फिर उसमें अन्य द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर खरल करके १-१ रत्ती की गोलियां बनावें।

इसे सेवन करने से (विरेचन होकर) शूल, कुष्ठ, ग्यारह प्रकार के पित्तज रोग, भगन्दर और हृद्रोगादि का नाश होता है।

[४६८] इच्छाभेदीगुटिका (६)

(र. सा. सं., रेचनाध्याये, बृ. यो. त., यो. त. त. ७)

पारदं गन्धकं कुर्यात्सौभाग्यं पिप्पलीसमम्।
समानि जयपालानि क्रियन्ते रेचनाय च।
शीतेन रेचयेत्सम्यगुष्णेनैव प्रशाम्यति॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, सहागेकी खील और पीपल, प्रत्येक १ भाग, शुद्ध जमाल गोटा सबके बराबर। प्रथम पारा गन्धक की कज्जली बनावें फिर उसमें अन्य द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर खरल करें। इसे ठंडे पानीके साथ देने से भले प्रकार विरेचन होजाता है और गरम पानी से दस्त बन्द हो जाते हैं। (मात्रा १ रत्ती)

सोंठ, मरिच, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और सुहागे की खील १-१ भाग। शुद्ध जमाल गोटा ३ भाग। प्रथम पारा गन्धक की कज्जली बनावें फिर सबको महीन करके एकत्र खरल करके रक्खें।

इसमें से २ रत्ती भर औषध खांडमें मिलाकर (ठंडे पानी के साथ) सेवन करावे। इस पर जितने चुल्लु पानी पिया जाय उतने ही दस्त आते हैं।

पथ्य—विरेचन होने के बाद भात का आहार देना चाहिये।

[४६९] इच्छाभेदीरसः (७)

(र. सा. सं., रेचनाध्याये)

शुण्ठीमरीचसंयुक्तं रसगन्धकटङ्कणम्।
जैपालास्त्रिगुणाः प्रोक्ताः सर्वमेकत्र चूर्णयेत्।
इच्छाभेदी द्विगुञ्जः स्यात्सितया सह दापयेत्।
यावन्तश्चिल्लुकाः पीतास्तावद्वारान्विरेचयेत्।
तक्रौदनं खादितव्यमिच्छाभेदी यथेच्छया॥

सोंठ, मरिच, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और सुहागे की खील १-१ भाग। शुद्ध जमाल गोटा ३ भाग। प्रथम पारा गन्धक की कजली बनावें फिर सबको महीन करके एकत्र खरल करके रक्खें।

इसमें से २ रत्ती भर औषध खांडमें मिलाकर (ठंडे पानी के साथ) सेवन करावें। इस पर जितने चुल्लु पानी पिया जाय उतने ही दस्त आते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पथ्य—विरेचन होने के बाद भात का आहार देना चाहिये।

[४७०] इच्छाभेदीरसः (८)

(भै. र. उदरे)

शुद्धसूतस्य माषैकं गन्धकान्माषकत्रयम्।
विभीतकस्य माषैकं धात्र्याश्चैव तु माषकम्॥
माषद्वयञ्च पिप्पल्याः शुण्ठीनां माषकत्रयम्।
जैपालबीजमज्जाया गुडकं विंशतिं तथा।
अम्ललोणीरसैःपिष्ट्वा वटिकां कारयेद्बुधः।
कलायपरिमाणान्तु भक्षयेद्रेचनार्थकम्॥
अम्ललोणीरसैःसार्द्धं तोयमुष्णं पिबेदनु।
तावद्विरिच्यते वेगाद्यावच्छीतं न सेवते।

शुद्ध पारा २ माशा, शुद्ध गन्धक ३ माशे, बहेड़ा १ माशा और आमला १ माशा, पीपल २ माशे, सोंठ ३ माशे, शुद्ध जमालगोटेकी मज्जा (गिरी) २० नग, प्रथम पारा गन्धककी कज्जली बनावें, फिर उसमें अन्य द्रव्योंका चूर्ण मिलाकर अम्ललोणी (चूके) के रसमें खरल करके मटर के समान गोलियां बनावें।

इन्हें चूकेके रसके साथ खाकर उपरसे गरम पानी पिया जाय तो उस समय तक दस्त आते रहते हैं जब तक ठंडा पानी न पिया जाय।

[४७१] इन्दुशेखरो रसः

(भै. र., स्त्री. रो.)

शिलाजत्वभ्रसिन्दूरप्रवालायोरजांसि च।
माक्षिकञ्च तथा तालं समभागानि मर्दयेत्॥
भृङ्गराजस्य पार्थस्य निर्गुण्डया वासकस्य च।
स्थलपद्मस्य पद्मस्य कुटजस्य च वारिणा॥
भावयित्वा वटीः कृत्वा कलायपरिमाणतः।
यथा दोषानुपानेन गर्भिणीषु प्रयोजयेत्॥
गर्भिणीनां ज्वरं घोरं श्वासं कासं शिरोरुजम्।
रक्तातिसारं ग्रहणीं वान्ति वह्नेश्च मन्दताम्॥
आलस्यमपि दौर्बल्यं हन्यादेव न संशयः।
कलेशादौ ससर्जेमं भगवानिन्दुशेखरः॥

शुद्ध शिलाजीत, अभ्रक भस्म, रससिंदूर, मूंगाभस्म, लोहभस्म, सोना मक्खी भस्म और शुद्ध हरताल सब चीज़े समान भाग लेकर सबको एकत्र खरल करके भांगरा, अर्जुन, संभालु, बासा, स्थूलपद्म, कमल और कुडेकी छाल, इनके यथासाध्य क्वाथ या रसकी भावना देकर मटर के समान गोलियां बनावें।

इन्हें यथोचित अनुपानके साथ सेवन करनेसे गर्भिणी स्त्रीका घोर ज्वर, श्वास, खांसी, शिर पीड़ा, रक्तातिसार, संग्रहणी, वमन, अग्निमांद्य, आलस्य, दुर्बलता आदि रोगों का नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उ

अथ उकारादि कषायप्रकरणम्

[४७२] उग्रगंधादियोगः

(वृ. नि. र; छर्दि)

उग्रगंधारनालेन पीता छर्दि निवारयेत् ॥

बच को कांजी में पीसकर पीने से वमनका नाश होता है।

[४७३] उग्रादिक्वाथः

(वृ. नि. र; सन्नि.)

उग्रासिंहीयासरास्नामृताह्वा
शुण्ठीतिक्ताशृंगिकापौष्कराणाम् ।
ब्राह्मीभार्गीतिक्तवासाशठीनां
क्राथो हन्याज्जिह्वकं सन्निपातम् ॥

बच, कटैली, धमासा, रास्ना, गिलोय, सोंठ, कुटकी, काकड़ा सींगी, पोखर मूल, ब्राह्मी, भारंगी, चिरायता, बासा और कचूर । इनका क्वाथ जिह्वक सन्निपात का नाश करता है।

[४७४] उत्पलषट्क क्वाथः

(भा. प्र. ज्वराति.)

पृश्निपर्णीबलाबिल्वधनिकानागरोत्पलैः ।
ज्वरातिसारयोर्वापि पिबेत्साम्लं भृतं नरः ॥

पिठवन, खरैंटी, बेलगिरी, धनिया, सोंठ और नीलोफर इनके क्वाथ में दाड़िम का रस मिलाकर पीने से ज्वरातिसार का नाश होता है।

[४७५] उत्पलादि क्वाथः

(वृ. नि. र., स्त्री. रो.)

नीलोत्पलं मृणालं च कोला क्षीरं तथैव च ।
केसरं पद्मकं चैव तोयेनालोड्य तत्पिबेत् ॥
एवं न पतते गर्भः स च शूलः प्रशाम्यति ॥

नीलोफर, कमल नाल, बेर, दूध (?) नागकेसर और पद्माक । इन्हें पानी में घोटकर पीने से गर्भपात नहीं होता और गर्भावस्था के शूल का नाश होता है।

[४७६] उत्पलादि गणः

(सु. सं. सू. अ. ३८)

उत्पलरक्तोत्पलकुमुदसौगन्धिककुवल-
यपुण्डरीकाणि मधुकश्चेति ॥
उत्पलादिरयं दाहपित्तरक्तविनाशनः ।
पिपासाविषहृद्रोगच्छर्दिमूर्च्छाहरो गणः॥

नीलोफर, लालकमल, कुमुद, सौगन्धिक कमल, कुवलय (धौला कमल) पुण्डरीक (अत्यन्त सफेद कमल) और मुल्हैठी । इन चीजों के योग का नाम उत्पलादि गण है ।

यह दाह और रक्तपित्त का नाश करता है और पिपासा, विष, हृद्रोग, वमन और मूर्छा इनका हरण करनेवाला है।

[४७७] उदर्दप्रशमनमहाकषायः

(च. सं. सू. ४)

तिन्दुकपियालबदरखदिरसप्तपर्णा-
श्वकर्णार्ज्जुनासनारिमेदा इति दशेमान्यु-
दर्दप्रशमनानि भवन्ति ।

तिन्दुक (तेंदु) पियाल (चिरोंजी वृक्ष) बेर, खैर, सफेद खैर, सतौना, साल, अर्जुन, असना (पीत शाल) और दुर्गन्ध खदिर । यह दश चीजें उदर्द नाशक है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[४७८] उदीच्यादिः (यो. र., छर्दि.)

सोदीच्यं गैरिकं देयं सेव्यं वा तण्डुलाम्बुना।
धात्री रसेन वा पीता सिता लाजाश्च हन्ति ताम्॥

सुगन्धबाला और गेरू को चावलों के पानी में पीसकर अथवा आमले के रस के साथ धान की खील और मिश्री सेवन करने से वमन का नाश होता है।

[४७९] उदुम्बरादियोगः

(वृ. नि. र., ग. नि., रक्तपि.)

उदुम्बराणि पक्वानि गुडेन मधुनोऽपि वा।
उपयुक्तानि निघ्नन्ति नासारक्तं नृणां ध्रुवम्॥

पक्के गूलर, गुड़ या शहद के साथ सेवन करनेसे नकसीर का नाश होता है।

[४८०] उदुम्बरादिहिमः

(वृ. नि. र., ज्वरे)

उदुम्बरशिफाछिन्नातजलं सितयान्वितम्।
पीतं पित्तज्वरं हन्ति पटोल्या वा शिफाजलम्॥

गूलर की जड़ और गिलोय के कषायमें अथवा पटोल की जडके क्वाथमें मिश्री मिलाकर सेवन करने से पित्तज्वर का नाश होता है।

[४८१] उशीरादि कषायः (१)

(च. सं. चि. अ. ६)

उशीरलोध्राञ्जनचन्दनाना-
मुशीरमुस्तामलकाभयानाम्।
पटोलनिम्बामलकामृतानां
मुस्ताभयापद्मकवृक्षकाणाम्॥
लोध्राम्बुकालीयकधातकीनां-
निम्बार्जुनाम्रान्तिनिशोत्पलानाम्।
शिरीषसर्जार्जुनकेशराणां
प्रियंगुपद्मोत्पलकिंशुकानाम्॥
अश्वत्थपाठासनवेतसानां
कटङ्कटेर्य्युत्पलमुस्तकानाम्।
पैत्तेषु मेहेषु दशैव दृष्टाः
पादैःकषाया मधुसम्प्रयुक्ताः॥

(१) खस, लोध, रसौत और चन्दन। (२) खस, नागरमोथा, आमला और हैड़। (३) पटोल पत्र, नीमकी छाल, आमला और गिलोय। (४) नागरमोथा, हैड़, पद्माक और कुड़ा। (५) लोध, सुगन्ध बाला, कालीयक और धाय। (६) नीम, अर्जुन, आम, तिनिश और नीलोफर। (७) सिरस, राल, अर्जुन और नागकेशर। (८) फूलप्रियंगु, कमल, नीलोफर और ढाकके फूल। (९) पीपल (अश्वत्थ वृक्ष) पाठा, असना (पीतसाल) और बेत। (१०) दारुहल्दी, नीलोफर और नागर मोथा। इन दश कषायों में शहद मिलाकर पीनेसे पित्तज प्रमेह का नाश होता है।

[४८२] उशीरादिः (२)

(भै. र., ग. नि., ज्वरा.)

उशीरं बालकं मुस्तं धान्यकं विश्वभेषजम्।
समङ्गा धातकीलोध्रं बिल्वं दीपनपाचनम्॥
हन्त्यरोचकपिच्छामविबद्धं सातिवेदनम्।
सशोणितमतीसारं सज्वरं वाथ विज्वरम्॥

खस, सुगन्धबाला, नागरमोथा, धनिया, सोंठ, धायके फूल, लोध्र और बेल। यह कषाय दीपन, पाचन है और अरुचि, आम, विबन्ध और वेदना युक्त, ज्वर रहित अथवा ज्वर सहित एवं रक्तातिसारका नाश करता है।

[४८३] उशीरादिक्वाथः (३)

(वृ. नि. र., वि. ज्व.)

उशीरं चन्दनं पाठा द्राक्षा मधुकपिप्पली।
सक्षौद्रं पाययेत् क्वाथं रक्तपित्तहरं ध्रुवम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खस, चन्दन (लाल) पाठा, दारु, मुल्हैठी और पीपल। इनके क्वाथमें शहद डालकर पीनेसे रक्तपित्तका अवश्य नाश होता है।

[४८४] उशीरादी कषायः (४)

(वृ. नि. र., वि. ज्व.)

उशीरं चन्दनं मुस्तं गुडूची धान्यनागरम्।
अंभसा क्वथितं पेयं शर्करा मधुयोजितम्।
ज्वरे तृतीयके पुंसां तृष्णादाहसमन्विते ॥

खस, लाल चन्दन, नागरमोथा, गिलोय, धनया और सोंठ, इन के क्वाथ में खांड और शहद मिला कर पीने से तृष्णा और दाहयुक्त तिजारी ज्वरका नाश होता है।

[४८५] उशीरादीकषायः (५)

(वै. जी. प्र. वि)

उशीरकलशीमहौषधकिरातकांभोधरस्थिरा-बृहतिका द्वयामृतलतात्रिकंटैःकृतम्। कषाय-कममुं पिबेत्पवनजज्वरव्याकुलःपुमानृदशश-तच्छदच्छदमदप्रसङ्गोचने ॥

खस, पृश्निपर्णी, सोंठ, चिरायता, नागरमोथा, शालपर्णी, दोनों कटेली (कटेली, कटेला) गिलोय और गोखरू। इनका क्वाथ वात ज्वर का नाश करता है।

[४८६] उशीरादि क्वाथः (६)

(वृ. नि. र., स्त्री. रो.)

उशीरगोक्षुरघनः समंगानागकेशरम्।
सपद्मकं समधुरं पाययेद्व विचक्षणः ॥

खस, गोखरू, नागरमोथा, मजीठ, नागकेसर, पद्माक और सौंफ का कषाय * सेवन करने से गर्भ की रक्षा होती है।

[४८७] उशीरादीषडंगकषायः (७)

(वृ. नि. र. ज्व.)

उशीरचन्दनोदीच्यद्राक्षामलकपर्पटैः।
मृतं शीतं जलं दद्यादाहतृड्ज्वरशांतये ॥

खस, लाल चन्दन, सुगन्धबाला, दाख, आमला और पित्तपापड़ा, इनसे पकाकर ठंडा किया हुआ जल दाह, तृषा और ज्वर का नाश करता है।

* यहां मधु भी लिया जाता है।

अथ उकारादि चूर्णप्रकरणम्।

[४८८] उत्पलादि चूर्णम्

(भा. प्र., ज्वरातिसारे)

उत्पलं दाडिमत्वक्च पद्मकेशरमेव च।
पीतं तण्डुलतोयेन ज्वरातिसारनाशनम् ॥

नीलोफर, अनार का छाल और कमलकेसरके चूर्ण को चावलों के पानी के साथ पीने से ज्वरातिसार का नाश होता है।

[४८९] उशीरादि चूर्णम् (१)

(भै. र; र पि.)

उशीरं तगरं शुण्ठी कङ्कोलं चन्दनद्वयम्।
लवङ्गं पिप्पलीमूलं कृष्णैला नागकेशरम् ॥
मुस्तामधुककर्पूरं तुगाक्षीरी च पत्रकम्।
कृष्णा गुरुसमं चूर्णं सिता चाष्टगुणा तथा।
रक्तवान्तिश्च तापश्च नाशयेन्नात्र संशयः ॥

खस, तगर, सोंठ, कंकोल, लाल चन्दन, सफेद चन्दन, लौंग, पीपलामूल, कालीमिर्च, इलायची, नागकेसर, नागरमोथा, मुल्हैठी, कपूर,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वंसलोचन, तेजपात और काला अगर। सब का चूर्ण समान भाग। मिश्री सब से अठगुनी

इस चूर्ण को सेवन करने से रक्त वमन और सन्ताप का नाश होता है।

[४९०] उशीरादि चूर्णम् (२)

(वृ. नि. र., रक्तपि.)

उशीरकालीयकलोध्रपद्मकम्
प्रियंगुकाकट्फलशङ्खगैरिकम्।
पृथक्पृथक्चन्दनतुल्यभागिकं
सशर्करं तंदुलधावनप्लुतम्॥
सरक्तपित्तं तमकं पिपासां
दाहं च पीतं शमयेद्धि सद्यः॥

खस, दारुहल्दी, लोध, पद्माक, फूलप्रियंगु, कायफल, शंख, गेरू और चन्दन, सब समान भाग।

इनके चूर्ण में खांड मिलाकर चावलों के साथ सेवन करने से रक्तपित्त, तमक श्वास, पिपासा और दाह का नाश होता है।

[४९१] उशीरादि चूर्णम् (३)

(वृ. नि. र., शूले)

उशीरं पिप्पलीमूलं चूर्णं कृत्वा समांशतः।
गोघृतेन समं पीतं हन्ती हृच्छूलमुल्बणम्॥

खस और पीपलामूल बराबर लेकर चूर्ण करके गोघृत के साथ पीने से हृदय शूल का नाश होता है।

[४९२] उशीरादी चूर्णम्(वृ. नि. र; शूले)

उशीरं सैन्धवं हिङ्गु मूलमेरण्डजं समम्।
वातशूलं निहन्त्येव भुक्तं तप्तेन वारिणा॥

खस, सेंधानमक, हींग और अरण्डमूल सब समान भाग लेकर चूर्ण करके गर्म पानीके साथ सेवन करनेसे वातज शूलका नाश होता है।

अथ उकारादि गुटिकाप्रकरणम्।

[४९३] उन्मादभञ्जनी गुटीका

(र. सा. सं; उन्माद)

शुद्धं मनःशिलाचूर्णं सैन्धवं कटुरोहिणी।
वचा शिरीषबीजञ्च हिङ्गु च श्वेतसर्षपम्॥
करञ्जबीजं त्रिकटुं मलं पारावतस्य च।
एतानि समभागानि गौमूत्रैर्वटिकां कुरु॥
गिरिमल्लीबीजसमां छायाशुष्काश्च कारयेत्।
प्रातःसन्ध्यानिशाकाले चक्षुषोरंजनं हितम्॥
मधुरादि रसे चांज्यं रात्रावपिजलेन च
वटिकेका समाख्याता नाम्ना चोन्मादभञ्जिनी।
चातुर्थकमपस्मारमुन्मादं च विनाशयेत्॥

शुद्ध मनसिल, सेंधा नमक, कुटकी, बच, सिरस के बीज, हींग, सफेद सरसों, करंजवे की गिरी, त्रिकुटा और कबूतर की बींट, सब चीजोंका चूर्ण समान भाग लेकर गोमूत्र में पीसकर इन्द्र जौ के बराबर गोलियां बनाकर छाया में सुखाकर रक्खें। इनमें से १-१ गोली सुबह शाम और रातको मधुरादि गण के रस या जल में घिस कर अञ्जन करने से चौथिया बुखार, अपस्मार (मिरगी) और उन्माद का नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ उकारादि लेहप्रकरणम् ।

[४९४] **उदुम्बरादिलेहः** (वृ. नि. र; र. पि.)

पक्कोदुम्बरकाश्मर्यपथ्याखर्जूरगोस्तनीः ।
मधुना घ्नन्ति संलीढा रक्तपित्तं पृथक् पृथक् ॥

गूलर और खम्भारी के पक्के फल, हैड़, खजूर और मुनक्का इन्हें पृथक् २ शहद में मिलाकर चाटने से रक्तपित्त का नाश होता है ।

अथ उकारादि घृतप्रकरणम्

[४९५] **उन्मादनाशक घृतम्**

(च. सं. चि. अ. १४)

हिङ्गुसौवर्चलाव्योषैर्द्विपलांशैर्घृताढकम् ।
चतुर्गुणे गवांमूत्रे सिद्धमुन्मादनाशनम् ॥

हींग, सोंचल नमक और त्रिकुटा १०-१० तोला, घी ८ सेर गोमूत्र ३२ सेर लेकर यथा विधि सिद्ध करें ।

इसके सेवन से उन्माद का नाश होता है ।

अथ उकारादि तैलप्रकरणम् ।

[४९६] **उदुम्बरादि तैलम् (१)**

(च. सं. चि. अ. ३०)

उदुम्बरशलाटूनां द्रोणमब्द्रोणसंयुतम् ।
सपञ्चवल्ककुलकनिम्बमालतिपल्लवम् ॥
निशिस्थाप्यं जले तस्मिंस्तैलप्रस्थं विपाचयेत् ।
लाक्षाधवपलाशत्वङ्निर्यासैःशाल्मलेन च ॥
पिष्टैसिद्धश्च तत्तैलं पिचुर्योनौ निधापयेत् ।
सशर्करैः कषायैश्च शीतैः कुर्वीत सेवनम् ॥
पिच्छिलाविवृताकालदुष्टयोन्यश्च दारुणम् ।
सप्ताहात् शुद्धति क्षिप्रं अपत्यञ्चापि विन्दति ।

सूखे हुवे कच्चे गूलर के टुकड़े १६ सेर और पंच वल्कल (बड़ पीपल, पिलखन, गूलर और बेत की छाल) पटोलपत्र, नीमके पत्ते, चमेली के पत्ते । सब समान मात्रा में मिले हुवे १६ सेर लेकर रातको ३२ सेर पानी में भिगो दें और सुबहको छान लें । इस जल और लाख, धव, पलाश (ढाक) की छाल और सेमलका गोंद, इनके कल्क से २ सेर तैलका पाक सिद्ध करें ।

इस तैल का फाया योनि में रक्खें और उपरोक्त उदुम्बरादि औषधियों के शीत कषाय में मिश्री मिला कर उससे अवसेचन करें (धोवें) । इस उपाय से ७ दिन में पिच्छिला, विवृता, काल दुष्टा (दीर्घकाल से विकृता) योनि शुद्ध हो जाती है एवं सन्तानोत्पत्ति की शक्ति प्राप्त होती है ।

[४९७] **उदुम्बरादि तैलम् (२)**

(च. सं. चि. अ. ३०)

उदुम्बरस्य दुग्धेन षट्कृत्वो भावितांस्तिलान् ।
तैलं क्वाथे च तस्यैव सिद्धं धार्यश्च पूर्ववत् ॥

तिलों को गूलरके दूधकी छः भावना देकर उनका तेल निकलावें और उस तैलको नं० ४९६ के समान उदुम्बरादि के कषाय में सिद्ध करके उसका उसी प्रकार उपयोग करें, तो पूर्वोक्त (नं० ४९६ के समान) गुण प्राप्त होते हैं ।

[४९८] **उन्मत्ततैलम्** (भै. र. । कुष्ठ)

उन्मत्तकस्य बीजेन माणकक्षारवारिणा ।
कटुतैलं विपक्तव्यं शीघ्रं हन्ति विपादिकाम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धतूरे के बीजों के कल्क और मानकन्द के क्षारोदक (क्षार के पानी के साथ) कड़वे तेल को सिद्ध करें। यह तैल विपादिका (पैरों की बिवाई) का अत्यन्त शीघ्र नाश करता है।

[४९९] उपोदिकादि तैलम्

(यो. र., भै. र., वृं. मा; क्षु. रो.)

उपोदिकासर्षपनिम्बमोच-
कर्कारुभस्मतोयः।
तैलं विपक्वं लवणेन युक्तं
तत्पाददारीं विनिहन्ति सद्यः॥

पोदीना, सरसों, नीम, केलेका फूल और सैन्धव इनके कल्क तथा लघु कुम्हेड़ेके क्षारोदकके साथ सिद्ध किया हुवा तैल पाददारी (बिवाई)का नाश करता है।

[५००] उशीराद्यं तैलम् (भै. र.। मूत्रा.)

उशीरं तगरं कुष्ठं यष्टीमधुकचन्दनम्।
विभीतक्यभयाभीरुः पद्ममुत्पलशारिवे॥
बलातुरंगगन्धा च दशमूलं शतावरी।
विदारीचैव काकोली गुडूच्यतिबला तथा॥
श्वदंष्ट्राशतपुष्पा च वाट्यालकमधूरिके।
एतैःकर्षमितैर्भागैस्तैलप्रस्थं विपाचयेत्॥
सपत्रफलमूलस्य गोक्षुरस्य पलं शतम्।
जलद्रोणे विपक्तव्यं पादांशेनावतारयेत्॥
तक्रं तैलसमं देयं वीरणक्वाथकाढकम्।
मूत्राघातं मूत्रकृच्छ्रमश्मरीं हन्ति दारुणम्॥
बलवर्णकरं वृष्यं वातपित्तनिषूदनम्।
उशीराद्यमिदं तैलं काशिराजेन निर्मितम्॥

कल्कद्रव्य-खस, तगर, कूठ, मुल्हैठी, चन्दन, बहेड़ा, हैड़, कटेली (या शतावर) कमल, नीलोफर, शारिवा, खरैंटी, असगन्ध, दशमूल, शतावर, विदारी कन्द, काकोली, गिलोय, गंगेरन, गोखरू, सोया, पीले फूलवाला बला (खरैंटी) सौंफ १।-१। तोला। प्रथम पत्र फल मूल सहित गोखरू ६। सेर लेकर ३२ सेर पानीमें पकावें जब चौथा भाग शेष रह जाय तो उतारकर छानलें। उपरोक्त कल्क, इस क्वाथ और ८ सेर खसके क्वाथ तथा २ सेर तक्र के साथ २ सेर तैल सिद्ध करें। यह तैल मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, दुस्साध्य पथरी और वातपित्त नाशक तथा बलवर्द्धक, कान्तिकारक और वृष्य है।

अथ उकाराद्यासवप्रकरणम्

[५०१] उशीरासवः (भै. र.। र. पि)

उशीरं बालकं पद्मं काश्मीरं नीलमुत्पलं।
प्रियङ्गु पद्मकं लोध्रं मञ्जिष्ठा धन्वायसकम्॥
पाठां किराततिक्तश्च न्यग्रोधोदुम्बरं शटीम्।
पर्पटं पुण्डरीकञ्च पटोलं काञ्चनारकम्॥
जम्बूशाल्मलिनिर्य्यासं प्रत्येकं पलसंमितम्।
सर्वं सुचूर्णितं कृत्वा द्राक्षायाः पलविंशतिम्॥
धातकीं षोडशपलां जलद्रोणद्वये क्षिपेत्।
शर्करायास्तुलां दत्त्वा क्षौद्रस्यार्द्धं तुलां तथा॥
मासं संस्थापयेद्भाण्ड मांसीमरिचधूपिते।
उशीरासव इत्येष रक्तपित्तविनाशनः॥
पांडुकुष्ठप्रमेहार्शः कृमिशोथहरस्तथा॥

खस, सुगन्धबाला, कमल, खम्भारी, नीलोफर, फूलप्रियंगु, पद्माक, लोध, मजीठ, धमासा, पाठा, चिरायता, बड़, गूलर, कचूर, पित्तपापड़ा, श्वेत कमल, पटोलपत्र, कचनार, जामन की छाल,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेम्भल का गोंद (मोचरस) प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोला, दाख १०० तोला, धाय के फूल १ सेर और पानी ६४ सेर, खांड ६। सेर, शहद ६। सेर। सबको एकत्र करके जटामांसी और मरिचसे धूपित मिट्टीके पात्र में यथा विधि सन्धान करें। फिर १ मास पश्चात् निकाल कर छानकर रक्खें। यह रक्तपित्त, पाण्डु, कुष्ठ, प्रमेह, बवासीर, कृमि और शोथ नाशक है।

अथ उकारादि लेपप्रकरणम्

[५०२] उपदंशलिंगलेपः (यो. र. । उप.)

रसकर्पूरगद्याणं मर्दयेत्खदिराम्बुना ।
प्रक्षालयेद्वारिणा च शुष्के लेपस्तु वारिणा ॥
लिंगलेपो व्रणं हन्ति त्रिदिनान्नात्र संशयः ॥

६ माशे रसकपूर को खैरके रसमें घोटकर पानीसे धोयें फिर सूख जानेपर पानीमें मिलाकर लिंगपर लेप करें। इससे ३ दिन में उपदंशके घावोंका नाश होजाता है।

[५०३] उपदंशस्फोटेऽवलेपः(यो. र. । उप.)

जातीफलविडङ्गानि रसकं देवपुष्पकम् ।
समभागानि सर्वाणि नवनीतेन मर्दयेत् ।
स्फोटानामुपदंशानां व्रणशोधनरोपणः ॥

जायफल, वायविडंग, रसकपूर और लौंग। सबको समान भाग लेकर पीसकर नवनीत (नौनी घी) में मिलाकर लेपकरने से उपदंशके घाव शुद्ध होकर भर जाते हैं।

[५०४] उपदंशहरो लेपः (रसा. सा.)

देवधूपमधूच्छिष्टश्रीवासान् समभागकान् ।
डमरूयन्त्रे निधायाऽनुसन्धि तारैरयोमयैः ॥
बद्ध्वा गाढं च कुर्वीत मृत्पटान् सप्त तद्वरेत् ।
चुल्यां तिर्य्यग्ददीताऽग्निं मन्दं हण्डीं स्पृशेत्पराम् ।
ज्ञात्वा स्पर्शासहं यन्त्रं शीतयेदवतार्य्य तत् ।
आज्यं तत्कर्दमोन्मानं तदर्द्धं वन्हिगालितम् ॥
उपदंशव्रणे लेप्यं क्षालयेत् त्रिफलाजलैः ।
त्रिफलामेव सेवेत ताम्रभस्मयुतां व्रणी ॥
तद्वा तत्तैलमाकर्षेन्नलीयन्त्रेण बुद्धिमान् ।
तुल्यसैन्धवपङ्केन वालुकापादपूरणात् ॥
तत्तैललेपनाद्वाऽपि व्रणा गच्छन्त्यशेषताम् ।
शुष्कप्रायेषु जातेषु वराचूर्णमवचूर्णयेत् ॥
इच्छेद्भूयोऽपुनर्भावमुपदंशं यदि व्रणी ।
वराक्वाथं भजेन्मासं गन्धकं वा समाक्षिकम् ॥
प्रत्यहं चित्रकक्वाथः पटुत्यागस्वतन्त्रतः ।
लेप्यं वा तालजं तैलं गान्धं वा सर्व्वमिश्रितम् ।

राल, मोंम, गन्धाबिरोजा, इन तीनोंको आध आध पाव लेकर डमरूयन्त्रकी नीचेकी हांडीमें रखदे। दोनों हांडियों के मुखों को मिलाकर लोहेके बारीक तारोंसे खूब मजबूत बांधदे जिसमें कहीं से खसकने नहीं पावे। फिर उन तारोंके बन्धनके ऊपर सात कपर-मट्टी करके सुखाले। इस डमरू-यन्त्रको लिटाकर ऐसी युक्तिसे चूल्हेपर रखे कि जिसमें नीचेकी हांडीमें ही आंच लगे और ऊपरकी रीती हांडी चूल्हेसे दूर रहे। तब मन्दी २ आंच लगाना शुरू करे, एक घण्टे के बाद चूल्हेसे बाहर निकली हुई रीती (खाली) हांडीके तलभागको स्पर्श करके परीक्षा करे कि राल, मोम और गन्धाविरो-जेका सारभाग दूसरी हांडीमें उड़कर आया कि नहीं। जब हांड़ी ऐसी गरम होजाय कि उसमें हाथ नहीं लगा सके तब समझले कि उन तीनों

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चीज़ोंका सारभाग इस हांडीमें आचुका है तब यन्त्रको धीरेसे उतारकर पृथ्वीमें रखदे जिससे वह घण्टे आध घण्टेमें ठंडा हो जाय फिर डमरूयन्त्रकी मुद्रा को खोलकर दूसरी हांड़ीमें जमेहुए उन तीनों चीजोंके कीचके समान घनभागको निकाल ले। उसमेंसे एक छटांक लेकर एक छटांक घीके साथ कटोरीमें रखकर अग्निपर पिघलाले जब घी और कीच एक जीव होजाय तब कटोरीको अग्निसे उतारकर रखले। यह गरमी (आतशक) के घावोंकी उत्तम मलहम बनकर तैयार होगई। इस मलहमको लिङ्गके ऊपर घावोंपर दिनमें दो दफे लगावे परन्तु प्रथम त्रिफलाके काढ़ेसे घावोंको धो लिया करे और छटांक भर त्रिफलाके काढ़ेको प्रातःकाल और रात्रिको पिया भी करे। त्रिफला पीनेके बाद या पहिले ही एक रती ताम्रभस्म मधुके साथ चाट लिया करे ताम्रभस्म नहीं हो तो खाली त्रिफला से भी काम चल सकता है। त्रिफलाके क्वाथकी पीनेकी इच्छा नहीं हो तो एक तोला कपरछन किया हुआ त्रिफलाका चूर्ण शहदके साथ दोनों समय चाटा करे। अथवा उन तीनों चीज़ों के सारका तेल ही निकाल ले। उसकी विधि यह है कि नलीयन्त्र (भवका) के चतुर्थांश भागमें बालु (रेता)भरदे फिर उस सारके समान सेंधानोन मिलाकर (कोई कोई वैद्य चतुर्थांश चतुर्थांश हरिताल और गन्धक भी मिला दिया करते हैं) उसे बालूपर रखदे और उस यन्त्रको ढकनसे ढककर तेल गिरने वाली नलीके तरफ किंचित् झुकाकर भवका यन्त्रको चूल्हे पर रखे जिसमें बाहर टपकने वाले तेलको नलीतक दूर नहीं जाना पड़े। जब नलीके द्वारा तेल टपकना शुरू हो तब उसके नीचे एक प्याला रखदे, परन्तु यह स्मरण रहे कि भवकाके ढकनमें बारबार पानी भरता रहे और गरम होनेपर निकालता रहे। इस तेलको उपदंशके घावोंपर लगाने से सब घाव अच्छे होजाते हैं और इनके अलावा सर्व प्रकारके घाव नष्ट होजाते हैं। जब घाव सूखा सा हो जाय तब उसके ऊपर गाढ़े कपड़ेमें छाना हुआ त्रिफलाका चूर्ण बुरक देना चाहिये। कोई कोई वैद्य त्रिफलाकी भस्मको भी बुरकते हैं। यदि ऐसी इच्छा हो कि फिर गरमी उत्पन्न ही न होने पावे जड़से ही निकल जावे तो वह रोगी छटांक भर त्रिफलाके क्वाथको या शहदके साथ एकतोले गन्धक को रोज़ रोज़ एक महीने तक सेवन करे। परन्तु गन्धक चाटने के बाद दो तोले चित्रकका क्वाथ भी पीना चाहिये। यदि गन्धक खानेके समय नोन न खाय तो अच्छी बात है यदि नोन बिना नहीं रहा जाय तो जहांतक हो सके थोड़ा खाया करे। नोनके खानेसे कुछ विशेष शंकाकी बातनहीं है किन्तु गन्धकका अल्प गुण हो जाता है। जिस प्रकार राल, मोम, गन्धाविरोजेका तेल गरमीके घावोंको अकसीर है उसी प्रकार हरितालका या गन्धकका तेल भी बहुत उत्तम है।

[५०५] उपोदिकाद्यभ्यंगः

[वृ. नि. र., बं. से; अर्बु.)

उपोदिकारसाभ्यक्तास्तत्पत्रपरिवेष्टिताः।
प्रणश्यंत्यचिरान्नृणां पिडिकार्बुदजातयः॥

पौदीने के पत्तोंका रस लगाकर उसपर पौदीने के ही पत्ते बांध देने से अर्बुदादिका अत्यन्त शीघ्र नाश होता है।

[५०६] उबटना (१) (वृ. नि. र. । मेद.)

हरीतकीलोध्रमरिष्टपत्रपूतत्वचो
दाडिमवल्कलं च।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एषोंगरागः कथितोंगनानां
जंघाकषायश्चनराधिपानाम् ॥

हैड, लोध्र, नीमके पत्ते, करंजवे की छाल, और अनारके छिलके, सबका चूर्ण करके रक्खें। यह उबटना स्त्रियोंके रंगको निखारता और घोड़े पर चढ़ने से जंघामें जो चिन्ह हो जाता है उसे दूर करता है।

[५०७] उबटना (२) (वृ. नि. र.। मेद.)

शिरीषलामज्जकहेमलोध्रैस्त्व-
ग्दोषसंस्वेदहरः प्रघर्षः।

सिरस, लामज्जक(खस भेद) नागकेसर और लोधकी मालिश करने से त्वग्दोष तथा स्वेद (पसीने) का नाश होता है।

[५०८] उबटना (३) (वृ. नि. र.। मेद.)

प्रियंगुलोध्राभयचन्दनानि
शरीरदौर्गन्ध्यहरं प्रदिष्टम्।

फूल प्रियंगु, लोध, खस और चन्दन का लेप करने से शरीरकी दुर्गन्ध नष्ट होती है।

अथ उकारादि धूप-प्रकरणम्

[५०९] उपदंशहरो (लिङ्गव्याधिहरो) धूपः (र. र. स., अ. २५)

लवङ्गजायां नवकं कर्पूरं चणसंमितम्।
दरदं तोलमानं च सर्वं खल्वे विमर्दयेत् ॥
भल्लातकं कोकिलाक्षैः सर्वं यत्नेन मर्दयेत्।
यावत्कज्जलसंकाशं श्यामतां च तथैव हि ॥
चतुर्दशसमा कार्या पुटिका बन्धयेद्भिषक्।
रविवारे समादेया ह्यंगारे छगणोद्भवे ॥
तां निक्षिप्याऽथ संगोप्य नासिकां विवृता नयेत्
मुखमाच्छाद्य श्वासेन यातायातेन ग्राहयेत् ॥
वीटिकापूर्णवदनो द्विवारं कारयेत्सदा।
एवं सप्तदिनं कृत्वा पश्चात्स्नानादिकं चरेत् ॥
पथ्यं निर्लवणं देयं जलं शीतं निषेवयेत्।
अनेन योगराजेन लिंगव्याधिः प्रशाम्यति ॥

लौंग ९ नग, कपूर चनेके बराबर, शिंगरफ, पलाश और तालमखाने के बीज १–१ तोला लेकर सबको खूब घोटें यहां तक कि कज्जल के समान हो जाय। फिर इसकी चौदह पुड़िया बनावें।

रविवार के दिन अरने उपलों की अंगारी पर एक पुड़िया डाल कर और उससे जो धुवां निकले उसे श्वासोच्छ्वास के द्वारा अन्दर खींचें। धुवां खींचते समय मुंहमें पान रखना और मुंहको कपड़े से ढांप लेना चाहिये।

इसी प्रकार ७ दिन तक प्रतिदिन २ बार धूनी लें और आठवें दिन स्नानादि करें। इस प्रयोग से लिंग-व्याधि (उपदंश) का नाश होता है।

पथ्य—लवण रहित आहार और शीतल जल।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ उकारादि रसप्रकरणम्

[५१०] उड्डामरो रसः (र. र., गुल्म.)

शुद्धसूतं समं गन्धं सूतांशं मृतताम्रकम् ।
पंचांगैः शाकवृक्षस्य द्रवैर्मर्द्यं दिनद्वयम् ॥
सर्पाक्ष्यु द्रवैरह्नि रुद्ध्वा लघुपुटे* पचेत् ।
पंचधा भूधरे वाथ चूर्णं जैपालतुल्यकम् ॥
द्विगुञ्जं भक्षयेत्बाज्यैःपित्तगुल्मप्रशान्तये ।
द्राक्षाहरीतकीक्काथमनुपानं प्रकल्पयेत् ॥
उड्डामरो शुद्ध रसो नाम पित्तगुल्मं नियच्छति॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक प्रत्येक १-१ भाग ताम्रभस्म चौथाई भाग। सबको २ दिन तक सागोनके पंचागके रसमें और १ दिन सर्पाक्षी के रसमें खरल कर संपुट करके ५ लघु पुट दें अथवा भूधर-यन्त्रमें पकावें। फिर पीसकर उसमें समान भाग जमालगोटे का चूर्ण मिलावें।

इसे मुनक्का और हैड़ के क्काथ के साथ २ रत्ती की मात्रा से घीमें मिलाकर सेवन करने से पित्तज गुल्मका नाश करता है।

[५११] उदयभास्करो रसः (१)

(यो. चि., ७ अ.)

पारदं गन्धकं दिव्यं व्योषं त्रिलवणानि च।
सितकन्दा च वृद्धैला रसकर्पूरमेव च ॥
समानि सर्वतुल्यं च शुद्धजैपालकं क्षिपेत् ।
बीजपूररसैर्भाव्यो रसो ह्युदयभास्करः ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोंग, (अथवा लोह-भस्म) त्रिकुटा, त्रिलवण (सेंधा, सोंचल और बिड-लवण) सितकन्दा, बड़ी इलायची और रसकपूर सब समान भाग। शुद्ध जमालगोटा सबके बराबर। प्रथम पारा गन्धक की कज्जली बनावें फिर अन्य द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर जम्बीरी नींबु के रसकी भावना दें। (गुण नं. ५१२) के समान)

[५१२] उदयभास्करो रसः (२)

(यो. चि., ७ अ.)

पारदं गन्धकं व्योषं द्वौ क्षारौ लवणानि च।
टङ्कणं चेति तुल्यानि जैपालं सकलैःसमं ॥
भावना बीजपूरस्य सूक्ष्मं चूर्णं विचूर्णयेत् ।
संग्राह्य रक्तिकायुग्मं वातं सामं विनाशयेत् ।
गोदुग्धं केवलं पथ्यं देयमुष्ट्रिपयोथवा ।
अन्नं च वर्जयेत्तावदामशोफ निवारयेत् ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, त्रिकुटा, सज्जीखार, पांचो नमक और शुद्ध सुहागा। सब चीजें समान भाग, शुद्ध जमालगोटा सबके बराबर प्रथम पारा गन्धक की कज्जली बनावें फिर अन्य द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर जम्बीरी नींबूके रसकी भावना देकर रक्खें। इसे २ रत्ती की मात्रा में सेवन करने से आमवात और सूजन का नाश होता है।

इसके सेवन काल में अन्न का त्याग करके केवल गाय या ऊँटनी का दूध पीना चाहिये।

[५१३] उदयभास्करो रसः (३)

(वृ. नि. र., शूले)

भस्मसूतं मृतं चाभ्रं शिलागन्धकतालकम् ।
हिङ्गुकं कुष्ठमुस्तं च तुल्यं चूर्णं विभावयेत् ॥
शुद्धार्कमत्तनिर्गुण्डीमहाराष्ट्राद्रवैः पृथक् ।
प्रतिदिनं द्रवैर्भाव्यं शुष्कं तद्गोलकृतम् ॥
वस्त्रे बद्ध्वा मृदा लेप्यं शुष्कं कृत्वा पुटे पचेत्
चतुर्था वस्तमूत्रेण समादाय विचूर्णयेत् ॥
द्वौ गुञ्जौ घृतशुण्ठीभ्यां लेह्यो ह्युदयभास्करः।
वातशूलप्रशांत्यर्थं तिलक्षारं सकुष्ठकम् ॥

* 'गज पुटे' इति पाठान्तरम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मधुना लेहयेद्वानु शूलं वा काकतुण्डकम् ॥

रससिन्दूर, अभ्रक भस्म, शुद्ध मनसिल, शुद्ध गन्धक, शुद्ध हरताल, हींग, कूट और नागरमोथा। सबका समान भाग महीन चूर्ण लेकर उसे इन्द्रयव, आक, धतूरा, निर्गुण्डी और महा रास्ना के रसमें १-१ दिन घोट कर गोला बनाकर सुखाकर उसे एक कपड़ेमें बांधे और ऊपर से मिट्टी का लेप करके सुखाकर पुटमें पकावे। फिर उसे बकरे के मूत्र की चार भावना देकर चूर्ण करके रक्खे।

इसे २ रत्ती की मात्रा से घृत और सोंठ के चूर्ण के साथ अथवा तिलके खार, कूठके चूर्ण और शहद के साथ या काकतुण्डी के साथ सेवन करने से वातज शूल का नाश होता है।

[५१४] उदयभास्करो रसः [४]

(र. र. स., १७ अ.)

पारदं भागमेकं तु गन्धकं टङ्कणं तथा।
अभ्रकं लोहमेवं तु भागमेकं पृथक् पृथक् ॥
शिलाधातुस्तथा भागमम्लवेतसभागकम्।
कट्फलं भागमेकं तु वङ्गेन सह मेलयेत् ॥
रसकं पञ्चमूत्रेण दिनानि त्रीणि मर्दयेत्।
सर्वमेकत्र संयोज्य जम्बीररससंयुतम् ॥
मर्दयेद्दिनचत्वारि खल्वके बुद्धिमान्भिषक्।
मूषिकालेपनं कुर्यान्मांसीगोक्षुरसंयुतम् ॥
मर्दयेच्च यथायोग्यं दिनानामेकविंशतिः।
पुटमध्ये परिस्थाप्य कुक्कुटीमात्रके दहेत् ॥
शीतलं तं समादाय भावयेच्च यथाक्रमम्।
कुमारी चित्रकं व्योषं जातीफलहियावली ॥
विषमुष्टिं नखं चाम्लवेतसं परिमर्दयेत्।
शोषं कृत्वा यथायोग्यं दिनमेकं पृथक् पृथक्॥
तं सिद्धं बलमात्रं तु दापयेद् बुद्धिमान् भिषक्।
प्रमेहे मधुना युक्तं प्रयोज्यं भिषजां वरैः ॥
शर्करार्द्रकसंयुक्तं रक्तपित्ते प्रयोजयेत्।
त्रिंशद्दिनानि दातव्यं शूले च त्रिफलाजलैः ॥
मधुना चातिसारस्य सितया श्वासकासयोः।
क्षीरेण चाग्निमांद्यस्य तैलकाञ्जिकसंयुतम् ॥
सिद्धनाथेन संप्रोक्तो नाम्ना ह्युदयभास्करः ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, सुहागे की खील, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, सोनागेरु, अम्लवेत, कायफल, वंगभस्म और शुद्ध खपरया। सब चीजे समान भाग लेकर प्रथम पारागन्धककी कज्जली बनावें फिर उसमें अन्य द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर तीन दिन तक पञ्चमूत्रमें और चार दिन तक जटामांसी और गोखरू के क्वाथमें घोटकर उसे एक मूषाके अन्दर लेप करके कुक्कुट पुटमें फूंक दे और स्वांग शीतल होने पर निकालकर घीकुमार, चीता, त्रिकुटा, जायफल, हडजोड़ी, कुचला, नखी और अम्लवेतके क्वाथमें १-१ दिन खरल करके सुखावें।

इसे २-३ रत्तीकी मात्रासे प्रमेहमें शहदके साथ, रक्तपित्तमें खांड और अद्रकके रसके साथ और शूलमें त्रिफलाके क्वाथ के साथ ३० दिन तक सेवन करना चाहिये। इसे शहदके साथ देनेसे अतिसारका, मिश्रीयुक्त दूधके साथ देनेसे श्वास खांसीका और तैल तथा कांजीके साथ देने से अग्निमांद्य का नाश होता हैं।

[५१५] उदयभास्करो रसः (५)

(र. चि. म. ८ स्त.)

शुद्ध ताम्रस्य पत्राणि द्वयं गुलैकांगुलानि च।
कंटवेध्यानि भृशमच्छानि कारयेत् ॥
ताम्राच्चतुर्गुणेनैव गन्धकेन पुटद्वयम्।
ताम्रपत्रेषु दातव्यं यन्त्रे च भूधराभिधे ॥
सूक्ष्मं विचूर्ण्य तत्खल्वे वाससा गालयेत्ततः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मरिचत्रिफलावत्सनागभेषजपञ्चकम् ॥
प्रत्यौषधं ताम्रतुल्यं तुल्यं संचूर्णयेन्मुहुः ।
ताम्रं निक्षिप्य संमर्द्य वाससा गालयेत्ततः ॥
निष्पन्नो विधिनाऽनेन रसो ह्यु दयभास्करः ।
रोगिभिः प्रातरुत्थाय ग्राह्यो बलचतुष्टयम् ॥
शिरःकंपे सन्धिशोफे समस्ताऽनिलरोगिषु ।
प्लीहोदरविकारेषु देयः सर्वज्वरेषु च ॥
मन्दाग्नौ बद्धकोष्ठेषु श्लेष्मरोगेषु निश्चयम् ।
रोगाणां नाशने शूरो रसो ह्यु दयभास्करः ॥

शुद्ध तांबे के कंटकवेधी उज्वल एक एक, या दो दो, अंगुल लम्बे पत्र लेकर चार गुणी गन्धक मिलाकर तांबेके संपुटमें बन्द करके भूधर यन्त्रमें दो पुटें दें। फिर उसका महीन चूर्ण करके कपड़े में छानकर उसमें कालीमिर्च, हैड़, बहेड़ा, आमला और शुद्ध मीठा तेलिया इसमें से प्रत्येकका चूर्ण तांवे के बराबर मिलाकर खूब घोटें और कपड़ेमें छानकर रक्खें।

इसे प्रातःकाल ४ बल्ल (८-१२ रत्ती) प्रमाण देनेसे सिरका कांपना, सन्धियोंकी सूजन, समस्त वातज रोग, तिल्ली, उदरविकार, सब प्रकारके ज्वर, मन्दाग्नि, कोष्ठ बद्धता और श्लेष्मज रोगोंका नाश होता है। (व्यवहारिक मात्रा १ रत्ती।)

[५१६] उदयभास्करः (६)

(रसे. चि. म. ९ अ., रसे. सा. सं; र. रा. सु; र. चं., र. का. धे; धन्व; र. मं.)

गन्धकेन मृतं ताम्रं दशभागं समुद्धरेत् ।
ऊषणं पञ्चभागं स्यादमृतं च द्विभागिकम् ॥
श्लक्ष्णचूर्णीकृतं सर्वं रक्तिकैकप्रमाणतः ।
दातव्यं कुष्ठिने सम्यगनुपानस्य योगतः ॥
गलिते स्फुटिते चैव विपूच्यां मण्डले तथा ॥
विचर्चिकादद्रुपामाकुष्ठरोगप्रशान्तये ॥

गन्धकसे मारा हुवा ताम्र १० भाग, काली मिर्च ५ भाग, शुद्ध मीठा तेलिया २ भाग सबका महीन चूर्ण करें।

इसे १ रत्तीकी मात्रासे यथोचित अनुपान के साथ सेवन करानेसे गलित और स्फुटित कुष्ठ, मण्डल कुष्ठ, विसूचिका, विचर्चिका, दाद, पामा और अन्य सब प्रकारके कुष्ठों का नाश होता है।

[५१७] उदयभास्करः (७)

(वृ. नि. र., पाण्डु)

भागैकं रसगन्धकं द्विगुणितं शुल्वं च भागाष्टकं
शैलेयास्त्रयस्तालकद्वयमिदं शुद्धं च खल्वे कृतं ।
अर्धे व्योषजवेदभागसहितं भागद्वयं चामृतं ।
निर्गुण्ड्यार्द्रकभृङ्गराजसहितं भाव्यं जयन्तीरसैः॥
प्रत्येकं दिनसप्तकं तु सुदृढं शोष्यं च सूर्यातपे
योज्य गुञ्जमितं रसार्द्रसहितं व्योषेण संमिश्रितं
पाण्डुकामलरोगशोफदहनं सन्ने त्रिदोषे ज्वरे ।
मेहप्लीहजलोदरं ग्रहणिका कुष्ठं धनुर्वातजं ॥
पथ्यं षष्टिकतन्दुलं नवनितं तक्रं च शाल्योदनं
देयश्चोदयभास्करः क्षिततिले
संवन्धिकारान् जयेत् ॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, ताम्रभस्म ८ भाग, शुद्ध शिलाजीत ३ भाग, शुद्ध हरताल २ भाग, त्रिकुटा ४ भाग, शुद्ध मीठा तेलिया २ भाग। प्रथम पारा गन्धककी कज्जली बनावें फिर अन्य द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर निर्गुण्डी (संभालु) अद्रक, भांगरा और जयंती के रसमें सात सात दिन खूब खरल करके धूपमें सुखावें।

इसे अद्रकके रस और त्रिकुटे के चूर्णके साथ १ रत्ती मात्रा में सेवन करने से पाण्डु, कामला, सूजन, मन्दाग्नि, सन्निपात ज्वर, प्रमेह, तिल्ली, जलोदर, ग्रहणी, कुष्ठ और धनुर्वातका नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पथ्य—साठी चावल, नवनीत, तक्र और भात।

[५१८] उदयभास्करः (८)

(र. र. स. १८ अ)

तोलतुल्यं रसं शुद्धं गन्धकं तच्चतुर्गुणम्।
विधाय कज्जलीं श्लक्ष्णां ततो निम्बुकवारिणा
तस्य कल्कं प्रकुर्वीत खल्वे यामचतुष्टयम्।
द्वितोलकस्य ताम्रस्य तनुपत्राणि सर्वशः॥
कल्केन तेन निंबूकरसेनाप्लाव्य खल्वके।
स्थापयेदातपे तीव्रे पिण्डीकृत्य ततः परम्॥
मूषामध्ये निरुध्याथ कुक्कुटाख्यस्त्रिभिःपुटैः।
पचेच्चुल्यां विनिक्षिप्य चुल्लीपरिमितोपलैः॥
तत आकृष्य संमर्द्य करण्डे तं विनिक्षिपेत्।
रसोऽयं सर्वरोगघ्नो नृणामुदयभास्करः॥
हन्ति शूलानि सर्वाणि तमांसीव दिवाकरः।
पर्णखण्डीकया सार्द्धं देयश्चेत्यपरे जगुः॥
पथ्यं रोगोचितं देयं रसस्यानुचितं त्यजेत्॥

शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गन्धक ४ तोले। दोनोंको खूब घोटकर कज्जली बनावें फिर ४ पहर तक नींबूके रसमें घोटें। और उसे तांबेके २ तोले महीन पत्रोंपर लेपकरके खरल में रखकर उसपर नींबूका इतना रस डालें कि वह पत्र रसमें डूब-जायं। अब इसे तेज धूपमें सुखावें और गोला बनाकर मूषामें बन्द करके कुक्कुट पुटमें ३ पुट दें। कुक्कुट पुट साधारण चूल्हेमें ही लगा देनी चाहिये।

पुट देनेके बाद निकाल कर महीन चूर्ण करके शीशीमें भर कर रक्खें।

इसे यथोचित्त अनुपानके साथ सेवन करने और पथ्य पालन करनेसे सब प्रकारके शूल और अन्य समस्त रोगोंका नाश होता है।

[५१९] उदयमार्तण्डरसः

(र. र. स., ११ अ.)

पलोन्मितस्य शुल्वस्य सूक्ष्मपत्राणि कारयेत्।
तत्समं गन्धकं दत्वा खल्वं सर्वं विनिक्षिपेत्॥
जम्बीररससंयुक्तं दिनं घर्मे निधापयेत्।
ततः शुल्वे द्रवीभूते रसकर्षं नियोजयेत्॥
तत्सिद्धमुदरे योज्यं शोफे चैव भगन्दरे।
नाम्ना तूदरमार्तण्डरस एष प्रकीर्तितः॥

तांबेके सूक्ष्म (कंटक वेधी) पत्र ५ तोला और शुद्ध गन्धक ५ तोले लेकर खरलमें डालें और उसमें जम्बीरी नींबूका रस भर कर धूपमें रखदें। जब तांबा द्रवीभूत हो जाय तो उसमें १। तोले शुद्ध पारा मिलाकर घोटें। (पुटपाक करें)

यह रस उदररोग, सूजन और भगन्दर नाशक है।

[५२०] उदयादित्योरसः

(र. र. स., २०. अ.)

शुद्धसूतं द्विधा गन्धं मर्द्यं कन्याद्रवैर्दिनम्।
तद्गोलं हण्डिकामध्ये ताम्रपात्रेण रोधयेत्॥
सूतकात्त्रिगुणेनैव शुद्धेनाधोमुखेन वै।
पार्श्वे भस्म निधायाऽथ पात्रोर्द्ध्वं गोमयं जलम्॥
किञ्चित्किञ्चित्प्रदातव्यं चुल्ल्यां यामद्वयं पचेत्
चण्डाग्निनोद्धृत्य ततः स्वाङ्गशीतं विचूर्णयेत्॥
काकोदुम्बरिकावह्नित्रिफलाराजवृक्षकम्।
विडंगं बाकुचीबीजं क्वाथयेत्तेन भावयेत्॥
दिनैकमुदयादित्यो रसो भक्ष्यो द्विगुञ्जकः।
खदिरस्य कषायेण बाकुचीबीजचूर्णकम्॥
तुल्यं मृद्वग्निना पिण्डं जातं यावत्पचेल्लघु।
त्रिनिष्कं तद्रविक्षीरैः क्वाथैर्वा त्रिफलैरनु॥
त्रिदिनान्ते भवेत्स्फोटः सप्ताहे वा न संशयः॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नीलीं गुञ्जा च कासीसं धत्तूरं हंसपादिकाम् ॥
सूर्यावर्तं चाम्लपर्णो तुल्यं पिष्ट्वाथ लेपयेत् ।
स्फोटस्थाने प्रशान्त्यर्थं सप्तरात्रं पुनः पुनः ॥
श्वेतकुष्ठं निहन्त्याशु साध्यासाध्यं न संशयः ॥

शुद्ध पारा ५ तोले, शुद्ध गन्धक १० तोले, दोनोंकी कज्जली करके एक दिन घीकुमारके रसमें घोटकर उसका गोलासा बनाकर उसे एक हांडीमें रक्खें और उसके ऊपर पारेसे तीन गुने वजनी शुद्ध ताम्बे का बरतन (कटोरी आदि) उल्टा करके ढक दें और (कटोरी की सन्धिको चिकनी मिट्टी आदि से बन्द करके) उसके चारों ओर राख भरकर उसे चूल्हेपर चढ़ावें । अब इसके नीचे २ पहर तक तेज आग जलावें और उस तांबेके बरतनके ऊपर जराजरा करके गोबर का पानी डालते रहे । इसके बाद हांडीके स्वांग शीतल होजानेपर तांबेके पात्र सहित औषधिको निकाल कर पीसलें और फिर काकोदुम्बरिका (गूलर भेद), चीता, त्रिफला, अमलतास, बायविड़ंग और बाबचीके क्वाथमें १-१ दिन घोटे ।

सेवन विधि—खैरके क्वाथमें समान भाग बाबचीका चूर्ण मिला कर मंदाग्निपर पकावें, जब लुगदीसी होजावे तो ३ निष्क (६-९ रत्ती) इस लुगदीके साथ २ रत्ती दवा खाकर उपरसे आकका दूध या त्रिफले का क्वाथ पियें ।

इससे तीसरे या सातवें दिन सफ़ेद कोढ़के स्थान पर छाला पड़ जायगा, उसके उपर नीली, चोटली, कसीस, धतूरा, हंसपादी, सूरजमूखी और चांगेरी समान भाग लेकर सबको पीसकर ७ दिन तक लेप करें । इससे निसंदेह साध्य असाध्य श्वेत कुष्ठका अत्यन्त शीघ्र नाश होता है ।

[५२१] उदरभरसः (र. र. स. १६ अ.)

जीमूतलोहरसगन्धशिलालताम्र
व्योषाग्निकुष्ठमुशलीविषदीप्यचूर्णम् ।
निम्बूकनीरलुलितं गुटिकी कृतं
तद्भूक्तं निशासु मधुना सकलोदरघ्नम् ॥

अभ्रकभस्म, लोहभस्म, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध मनसिल, शुद्ध हरताल, ताम्रभस्म, त्रिकुटा, चीता, कूठ, मूसली, शुद्ध मीठा तेलिया और अजवायन । प्रथम पारा गन्धक की कज्जली बनावें फिर उसमें अन्य द्रव्योंका चूर्ण मिलाकर गोलियां बनावें ।

इन्हें रातको शहदके साथ सेवन करने से सब प्रकारके उदररोगोंका नाश होता है ।

[५२२] उदरध्वान्तसूर्यः
(र. स. क. ४ उल्ला)

शुल्वश्यामास्नुहीदन्तीपथ्यानेपालकाः क्रमात् ।
भूद्वये कैकाग्नियुग्वल्लानेतानुष्णाम्बुना पिबेत् ॥
अष्टोदराणि हन्त्येष विशेषेण जलोदरम् ।
आध्मानगुल्मशूलघ्न उदरध्वान्तभास्करः ॥

ताम्रभस्म १ वल्ल (२-३ रत्ती) निसोत २ वल्ल, स्नुही (सेहुंड-थोहर) १ वल्ल, दन्ती १ वल्ल, हैड़ ३ वल्ल, शुद्ध जमालगोटा २ वल्ल । सबका महीन चूर्ण करें । इसे गर्म पानीके साथ सेवन करनेसे आठ प्रकारके उदर रोग, अफारा, गुल्म, शूल और विशेषतः जलोदरका नाश होता है ।

[५२३] उदरामयकुम्भकेसरी रसः
(र. सा. सं; प्ली.)

रसगन्धकभस्मताम्रकं
कटुकक्षारयुगं सटङ्कणम् ।
कणमूलकचव्यचित्रकं
लवणानि यमानी रामठम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समभागमिदं विभावये-
स्खरातपे त्वथ जम्बुवारीणा।
उदरामयकुम्भकेसरीरस
एष प्रथितोस्य माषकः ॥
सुरदार्व्यनुदापयेद्भिषक्
प्रसभं हन्ति व्रणजं गदम्।
यकृतं क्रिमिमग्रमांसकं
कमठं प्लीहजलोदराह्वयम् ॥
जठरानलसाद्धगुल्मकं
परमसाममथाम्लपित्तकम् ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, ताम्रभस्म, त्रिकुटा, सोहागेकी खील, सज्जीखार, जवाखार, पीपला मूल, चव, चीता, पांचोंनमक, अजवायन और हींग। सब चीजें समान भाग लेकर पहिले पारे और गन्धककी कज्जली करें फिर अन्य पदार्थोंका चूर्ण मिलाकर तेज धूपमें नींबूके रसकी सात भावना देकर १--१ माशेकी गोलियां बनावें।

इन्हें देवदारु के क्वाथ के साथ सेवन करने से व्रणजन्य रोग, जिगर, क्रिमि, अग्रमांस, कमठ, तिल्ली, जलोदर, अग्निमांद्य, गुल्म, आमरोग और अम्लपित्त का नाश होता है।

[५२४] उदरारिरसः (१)

(र. सा. सं., उदर.)

पारदं शुक्तितुत्थञ्च जैपालं पिप्पलीसमम्।
आरग्वधफलान्मज्जा वज्रीक्षीरेण मर्दयेत् ॥
माषमात्रां वटीं खादेत्स्त्रीणां जलोदरं जयेत्।
चिञ्चाफलरसञ्चानु पथ्यं दध्योदनं हितम्।
दकोदरहरश्चैव तीव्रेण रेचनेन च ॥

शुद्ध पारा, सीप, शुद्ध नीला थोथा, शुद्ध जमाल गोटा, पीपल और अमलतास का गूदा। यह सब चीजे समान भाग लेकर थोहर के दूध में खरल करके १--१ माशे की गोलियां बनावे। मात्रा १ गोली। इन्हें इमली के फल के रस के साथ सेवन करने से तीव्र विरेचन होकर स्त्रियोंका जलोदर रोग नष्ट होता है। पथ्य--दही, भात।

[५२५] उदरारिरसः (२) (र. र., उदर.)

रसेन ताम्रायसभस्मगन्धं
शिला हरिद्रा जयपालतुल्यम्।
शिलाजतुं टंकणकञ्च सर्वं
विमर्द्य सम्यक्परिभावयेच्च ॥
निर्गुण्डिकात्र्यूषणभृङ्गचित्रार्क-
तोयेन दिनप्रमाणम्।
क्काथेन निम्बस्य दिनप्रमाणं
सिद्धो रसः स्यादुदरारिसंज्ञः ॥
यथाशनिर्भूधरपक्षपाते तथा
रसोऽयं ह्यु दरं निहन्ति ॥

रस सिन्दूर, ताम्र भस्म, लोह भस्म, शुद्ध गन्धक, शुद्ध मनसिल, हल्दी, शुद्ध जमाल गोटा, शुद्ध शिलाजीत और सुहागेकी खील। सब चीजें समान भाग लेकर चूर्ण करके संभालू, त्रिकुटा, भांगरा, चीता, आक और नीम के रस में १--१ दिन घोटें।

यह रस उदर रोगों के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

[५२६] उद्दामाख्यो रसः

(वृ. नि. र., गुल्म.)

सूतः कर्षः शांखवृक्षस्य ? नीरैः
सर्पाक्ष्याद्भिः पेषयेद्धस्रमेकम्।
भूमेः कुक्षौ पंचघैवं पुटित्वा
गुञ्ज्यं तुल्यं चारुजेपालगर्भात् ॥
उद्दामाख्यः स्याद्रसः सर्पिसा
यो गुंजायुग्मं पित्तगुल्मं निहंति।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्राक्षापथ्याक्काथ एवानुपानं
वर्ज्यं सर्वं पित्तलं दाहकारि ॥

१। तोला पारद को शंख पुष्पी और सर्पाक्षी के रस में १-१ दिन घोटकर ५ पुट दें। फिर उस में समान भाग जमाल गोटे की गिरी मिलावें*

इसे प्रति दिन रत्ती की मात्रा में घी के साथ सेवन करने से पित्तगुल्म का नाश होता है।

अनुपान—दाख और हैड़ का क्वाथ।

पथ्य—दाह और पित्त कारक वस्तुएं न खानी चाहियें।

[५२७] उद्धूलनरसः (र. सं. क. ४ उल्ला)

आकल्लकं विषं कृष्णं हेमद्रुफलभस्मकम्।
उद्धूलनं स्वेदहरमेकद्वित्र्यष्टभागकैः ॥

आकरकरा, शुद्ध मीठा तेलिया, काली मिरच और धतूरे के फल की भस्म यथाक्रम १, २, ३ और ८ भाग लेकर चूर्ण करें

इसकी मालिश से स्वेदाधिक्य (अधिक पसीना आना) दूर होता है।

[५२८] उन्मत्तभैरवरसः (यो. र., कासे)

पारदं दरदं शुद्धं गन्धकं कज्जलाकृति।
गजकणावत्सनाभं शुण्ठी चोन्मत्तबीजकम् ॥
जातीफलं जातिपत्रं लवङ्गं मरिचं तथा।
अकल्लकं समानं स्यान्मर्दयेच्च दिनत्रयम् ॥
आर्द्रकस्य रसेनैव गुटिकां वल्लसंनिभाम्।
मधुना चपलयैव क्षयश्वासनिबर्हणः ॥
कफरोगविनाशाय रस उन्मत्तभैरवः।
अनुपानविशेषेण धातुपुष्टिकरः स्मृतः ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध शिंगरफ और शुद्ध गन्धक समान भाग लेकर कज्जली करके उस में गज पीपल, शुद्ध मीठा तेलिया, सोंठ, धतूरे के बीज, जायफल, जावित्री, लौंग, काली मिर्च और आकरकरे का चूर्ण समान भाग मिलाकर ३ दिन तक अदरक के रस में घोटकर ३-३ रत्ती की गोलियां बनावें।

इन्हें पीपल और शहद के साथ सेवन करने से क्षय, श्वास और कफ रोगों का नाश होता है। अनुपान विशेष से धातु पुष्टि करती है।

[५२९] उन्मत्ताख्यो रसः

(र. सं. क. ४ उ.)

रसं गन्धं समं व्योषं मर्घमुन्मत्तकैर्दिनम्।
उन्मत्ताख्यो रसो नाम नस्ये स्यात्सन्निपातजित्

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और त्रिकुटा समान भाग लेकर प्रथम पारा गन्धककी कज्जली बना त्रिकुटा चूर्ण मिलाकर १ दिन तक धतूरे के रस में खरल करके रक्खें।

इसकी नस्य लेने से सन्निपात का नाश होता है।

[५३०] उन्मादगजकेसरीरसः (१)

(र. सं. क. ४ उल्ला.)

शुद्धं सूतं वचाक्काथैस्त्रिदिनं मर्दयेत्ततः।
शङ्खपुष्पीरसैस्तद्वद्गन्धकं मर्दितं क्षिपेत् ॥
गोमूत्रमर्दितं गोलं कृत्वा मूष्यां निरोधयेत्।
सप्तधाऽऽलेप्य मृद्वस्त्रैः पुटितं स्वाङ्गशीतलम्।
चूर्णीकृतं चतुर्वल्लं समसर्षपचूर्णकम्।
जीर्णाघृतानुपानं च नस्ये लेहं तु सार्षपम् ॥

* केवल पारद को पुट देने से रस सिद्धि सम्भव प्रतीत नहीं होती। वृ० नि० रत्नाकर-कार चौबे जी जमाल गोटे की लुगदी में रखकर पुट देने की आज्ञा देते हैं। एवं सर्पाक्षी का अर्थ सरफोंका करते हैं? शङ्ख वृक्ष का अर्थ शङ्खपुष्पी आप ही का किया हुआ है शायद मथुरा धाम में शङ्खपुष्पी का वृक्ष भी होता हो आज तक तो पौदा ही देखा और सुना गया है (अनु०)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कारयेत्तेन चाभ्यङ्गं दिनानामेकविंशतिम् ।
उन्मादापस्मृतिं हन्ति ह्युन्मादगजकेसरी ॥

शुद्ध पारे को तीन दिन तक बच के काथ में घोटें फिर उसमे शङ्ख पुष्पी के रस में ३ दिन तक घोटा हुआ गन्धक पारे को बराबर मिलाकर गोमूत्र में घोट कर गोला बनावें। इसे मूषा में बन्द करके ऊपर ७ कपर मिट्टी कर दें और पुट लगा दें। जब स्वांग शीतल हो जाय तो निकाल कर चूर्ण करके रक्खें।

इसमें से ४ बल्ल (८-१२ रत्ती) दवा समान भाग सरसों के चूर्ण में मिलाकर खाएं और ऊपर से पुराना घी पिवें। २१ दिन तक सरसों के तेल की नस्य और अभ्यंग करते रहें।

इसके सेवन से उन्माद और अपस्मार का नाश होता है।

(४ बल्ल मात्रा अधिक प्रतीत होती है)

[५३१] उन्मादगजकेसरी रसः (२)

(र. रा. सुं. उन्मा.)

सूतं गंधं शिलातुल्यं स्वर्णबीजं विचूर्णयेत् ।
भावयेदुग्रगंधायाःक्काथेन मुनिसःपृथक् ॥
ब्राह्मीरसेन सप्तैव भावयित्वा विचूर्णयेत् ।
रसःसंजायते नूनमुन्मादगजकेसरी ॥
अस्य माषःससर्पिष्को लीढो हन्ति हठाद्गदम् ।
उन्मादाख्यमपस्मारभूतोन्मादमपि ज्वरम् ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध मनसिल और धतूरे के बीज समान भाग लेकर चूर्ण करके बच के काथ और ब्राह्मी के रस की ७-७ भावना देकर रक्खें।

इसे घी के साथ १ माशे की मात्रानुसार चाटने से उन्माद, अपस्मार, भूतोन्माद और ज्वर का नाश होता है।

[५३२] उन्मादगजाङ्कुशः (भै. र. उन्मा.)

त्रिदिनं कनकद्रावैर्महाराष्ट्रीरसैः पुनः ।
विषमुष्टिद्रवैः सूतं समुत्थाप्यार्कचक्रिकाम् ॥
कृत्वा तप्तां सगंधान्तां युक्तया बन्धनमाचरेत् ।
तत्समं कानकं बीजमभ्रकं गन्धकं विषम् ॥
मर्दयेत्त्रिदिनं सर्वं बल्ल मात्रं प्रयोजयेत् ।
दोषोन्मादं द्रुतं हन्ति भूतोन्मादं विशेषतः ॥

पारे को तीन तीन दिन तक धतूरा, जल पीपल और कुचले के रस में तिर्यक्पातन करें।

फिर उसमें समान भाग गन्धक मिलाकर उसकी टिकिया बनाकर धूप में सुखा लें पश्चात् उसे अग्नि में तप्त करें और फिर उसमें समान भाग धतूरे के बीज, अभ्रक भस्म, शुद्ध गन्धक और शुद्ध मीठा तेलिया मिलाकर तीन दिन तक खरल करके रक्खें।

इसके सेवन से दोषोन्माद और विशेषतः भूतोन्माद का अत्यन्त शीघ्र नाश होता है। मात्रा २-३ रत्ती।

[५३३] उन्मादभञ्जनोरसः

(र. सा. सं. उन्मा.)

त्रिकटु त्रिफला चैव गजपिप्पलिका तथा ।
विडङ्गश्च देवदारु किरातं कटुकी तथा ॥
कण्टकारी च यष्टीन्द्रयवं चित्रकमेव च ।
बला च पिप्पलीमूलं मूलञ्च वीरणस्य च ॥
शोभाञ्जनस्य बीजानि त्रिवृता चैन्द्रवारुणी ।
वंगं रूप्यमभ्रकञ्च प्रवालं समभागिकम् ॥
सर्वचूर्णसमं लौहं सलिलेन विमर्दयेत् ।
उन्मादमपि भूतोत्थमुन्मादं वातजन्तथा ॥
अपस्मारन्तथा कार्श्यं रक्तपित्तं सुदारुणम् ।
नाशयेदविकल्पेन रसश्चोन्मादभञ्जनः ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, गजपीपल, बायबिडंग,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देवदारु, चिरायता, कुटकी, कटेली, मुल्हैठी, इन्द्र जौ, चिता, खरैंटी, पीपला मूल, खस, सौंजने के बीज, निसोत, इन्द्रायण, बंग भस्म, चांदी भस्म, अभ्रक भस्म और मूंगा भस्म। सब चीजें समान भाग। लोह भस्म सब के बराबर। सबका चूर्ण करके पानी में घोटें।

इसे सेवन करने से उन्माद, भूतोन्माद, अपस्मार, कृशता और दारुण रक्तपित्त का नाश होता है।

[५३४] उन्मादहरा योगाः (रसा. सा.)

नैपालं शोधितं शुल्वं शिलागन्धकमारितम्।
द्विगुणं स्वर्णसिन्दूरात् ताम्रतुल्या मनःशिला॥
कृष्णाधत्तूरबीजानामर्द्धं द्वेधा विषं वचा।
मर्दिता भाविताः क्वाथे वचाजे वटिकीकृताः॥
द्वित्रिगुञ्जोन्मिता देया उच्यतेऽत्रानुपानकम्॥
येनाऽनुपानयोगेन न च्यवन्ते स्वकात्फलात्।
अन्तर्धूमहताऽऽकाश–वल्लीकर्षेण मिश्रितः।
उग्राद्वादशवर्षस्थ–गुडजातः कषायकः॥
चत्वारिंशतमब्दांश्च स्थापितेन घृतेन युक्।
नस्याऽर्हेणाऽपि पीतोऽत्रोन्मादाऽपस्मृतिनाशकः
नागकेसरधत्तूर—वचाद्योवह्निसाधितः।
सार्पस्नेह उन्मादेऽपस्मृतौ नस्यतो हितः॥

शुद्ध मनशिल और गन्धक के योग से बनाई हुई शोधित नैपाली तांबे की भस्म एक तोला, स्वर्ण सिन्दूर छः मासे, शुद्ध मैनशिल एक तोला, काले धतूरे के बीज सवा तोला, (काले धतूरे के बीज नहीं हों तो किसी भी धतूरे के बीज ले सकते हैं) सवा तोला शुद्ध वच्छनाभ विष, सबा तोला बच। इन सब के चूर्ण को बछ के काथ में भावना देकर दो रत्ती प्रमाण गोलियां बना ले। इसका नाम उन्मादहर रस है। अब इस रस का अनुपान लिखता हूं जिस के साथ सेवन करने से तत्काल फल मिले। आकाश बेल को हांडी में भरकर हांड़ी के ऊपर शराव रखकर मुद्रा कर दे। बाद प्रथम मन्दी मन्दी आंच देकर तेज अग्नि करता रहे। इस प्रकार दो प्रहर आंच लगाने से आकाश बेल की भस्म हो जायगी। काशी प्रान्त में "बावर" ब्रज मण्डल की तरफ़ अमर बेल कहते हैं। यह पीले वर्ण की सूत सी सूतसी वृक्षों पर चढ़ी रहती है। इसमें फल फूल कुछ नहीं लगता। इसकी जड़ भी नहीं होती है, इसीलिए इसको निर्मूली भी कहते हैं इसी के विषय में यह भी कहावत है कि–

"अमर बेल के जड़ नही कौन करे प्रतिपाल,
तुलसी रघुवर छोड़ के और बताऊं काय ?"

यह सभी देशों में प्रायः सुलभ है। इस की भस्म में से एक तोला ले। और दो तोले बच, तीन तोले बारह वर्ष का गुड़, (बारह वर्ष का पुराना गुड़ न मीले तो तीन वर्ष से अगाड़ी का जहां तक मिले उसीसे काम चलावे) इन दोनों चीज़ों का काथ करके एक तोला भस्म भी काथ में मिला दे। और इसी काथ में चालीस वर्षका पुराना घी भी अन्दाज़ छः माशे के डाल दे (यदि चालीस वर्ष का घी न मिले तो कम से कम दस वर्ष का हो। (पुराने दुकानदारों के यहां १०० वर्ष तक का घी संग्रहीत रहता है) केवल इस घी की नस्य (सूंघनी) देने से भी उन्माद और मिरगी नष्ट होजाती है। इस काथ के साथ उन्मादरोगहर की मात्रा के सेवन करने से उन्माद और मिरगी दोनो रोग अवश्य नष्ट हो जाते हैं और एक छटांक नागकेसर, एक छटांक काले धतूरे के बीज, एक छटांक बच, इन तीनों को दो सेर गरम पानी में डाल कर रात भर भिगो दे, प्रातःकाल इसका काथ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करे आधा सेर जल रह जाय तब कपड़े में छानकर इस क्वाथ में अमरबेल के एक शेर रस को मिला कर आध सेर सरसों का तेल डाल कर पकावे। परन्तु यह स्मरण रहे कि प्रथम तेल को पूडी उतारने लायक पका कर क्वाथ में डाले, नहीं तो तेल उफन जायगा। जब सम्पूर्ण क्वाथ और रस जलजाय और तेल में बबूला (बुद्‌बुद) उठने बन्द हो जायँ और कुछ क्वाथ की तराई रहे, तब तेल को पका समझ कर चूल्हे से कढ़ाई को उतार कर ठंडी कर दे और तेल को कपड़े में छानकर शीशी में रख छोड़े। इस तेल की मात्रा तीन मासे से छः मासे तक रोगीको सीधा लिटा कर नाक में डाले तो इस तेल की नस्य भी उन्माद और मिरगी के लिये बहुत उत्तम चीज़ है।

[५३५] उपदंशकुठारः (वृ. नि. र. उपदं.)

कंकुष्ठं कुष्ठकं चैव तोलैकं तु पृथक्पृथक् ।
तोलार्द्धं तुत्थकं ग्राह्यं शृङ्गवेररसेनतु ॥
मर्दयित्वा वटीकार्या बदरास्थिमिता भिषक् ।
शृङ्गवेररसेनैव सायं प्रातश्च भक्षयेत् ॥
मधुराम्लं मत्स्यदुग्धं कूष्मांडं च विवर्जयेत् ।
उपदंशकुठारोयं रसःसर्वत्र पूजितः ॥

मुरदा सिंग १ तोला, कूठ १ तोला, नीला-थोथा ६ माशे। अदरक के रस में खरल कर के बेरकी गुठली के बराबर * गोलियां बनावें।

इन्हें अदरक के रस के साथ सुबह शाम खाने से उपदंश का नाश होता है।

परहेज—मधुर और अम्ल रस, तथा मछली और दूध एवं पेठा न खाना चाहिये।

* इसकी मात्रा अधिक प्रतीत होती है क्योंकि मुरदासिंग और नीलाथोथा विषैले पदार्थ हैं। (अनु०)

[५३६] उपदंशेभसिंहो रसः

(वृ. यो. त. ११७ त.)

लवङ्गं पारदं शुद्धं मरिचं करहाटकम् ।
जन्तुघ्नं मस्तकी चैव प्रत्येकं कर्षसंमितम् ॥
चतुष्कर्षीं जवानीं च गुडं तद्वद्विनिक्षिपेत् ।
भल्लातकानां च शुभां विंशतिं द्विगुणां बुधः ।
चूर्णयित्वा तु तत्सर्वं गुटिकां कारयेद्भिषक् ।
कर्षमात्रां ततः खादेदेकां प्रातर्हि मानवः ॥
ताम्बूलं भक्षयेत्पश्चात्पथ्यं दुग्धौदनं हितम् ।
सप्ताहान्मुच्यते जन्तुः फिरंगाख्योपदंशतः ॥
संधिशोफास्थिशोफास्थिशूलसंधिरुजोऽपि च ।
उपदंशेभसिंहाख्यो रसोऽसौ शंभुनेरितः ॥

लौंग, शुद्ध पारद, काली मिर्च, आकरकरा, बायबिड़ंग और रूमीमस्तगी। प्रत्येक १।-१। तोला। अजवायन और गुड़ ५-५ तोला। उत्तम भिलावे ४० नग।

सबका चूर्ण करके विधिवत् १।-१। तोला की गोलियां बनावें।

इन में से प्रति दिन प्रातःकाल १ गोली खाने के पश्चात् पान खाना चाहिये। इस प्रकार ७ दिन तक सेवन करने से फिरंग (आतशक) का नाश होता है। यह रस अस्थि और सन्धिगत सूजन तथा पीड़ा का नाश करता है।

पथ्य—दूध, चावल *।

[५३७] उमाप्रसादनो रसः

(र. र. स. १२ अ.)

मेदः [illegible]गन्धाश्मविषव्योषपटूनि च ।
जीरकद्वयमेतानि समभागानि कारयेत् ॥

* वृहद्योग तरंगिण्योक्त "उपदंशेभकेसरी" रस का भी यही प्रयोग है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिंदुवाररसेनापि लशुनस्य रसेन च।
अपामार्गरसेनापि सप्तरात्रं विमर्दयेत्॥
तत्पक्वं वालुकायंत्रे गुञ्जामात्रं प्रयोजयेत्।
सनागवल्लीमरिचं ततः शीताम्बु पाययेत्॥
उमाप्रसादनो नाम रसः शीतज्वरापहः।
चातुर्थिकं त्रिरात्रं वा नाशयेत्किमुताऽपरान्॥

अभ्रक भस्म, शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, शुद्ध मीठा तेलिया, त्रिकुटा, पांचों लवण, दोनों जीरे। सब चीजें समान भाग लेकर संभालु, ल्हसन और अपामार्ग के रस में ७-७ दिन घोट कर बालुका यन्त्र में पकावें।

इसे १ रत्ती की मात्रानुसार काली मिर्च के चूर्ण और पान के साथ खाकर ऊपर से शीतल जल पीने से शीतज्वर, चौथिया और तिजारी का नाश होता है।

[५३८] उमाशंभुरसः (र. र. स. १७ अ.)

रसाभ्रकौ तुल्यसमानभागौ
जंबीरनीरैस्त्रिदिनं विमर्द्य।
कुर्वीत मूषाकुहरे निवेश्य
वह्नौ ततस्तस्य पुटानि सप्त॥
बीजाह्वमुस्ताक्षयुगैश्चतस्रः
स्युर्भावनाद्वे ककुभात्त्रिवारम्।
यष्टीसिताकेतकजीररंभा
खर्जूरिकाजातिदलैः प्रतिस्वम्॥
एवं हि सिद्धस्य रसस्य वल्लो
मधुप्रयुक्तःसहसा शिशूनाम्।
संतापशोषौ बलहीनतां च
तृषां च वाससलिलैः प्रमेहान्॥
निवर्तयेद्वासरसप्तकेन
दुग्धौदनं स्यादिह भोजनाय।
नीरेण बब्बूलनवप्रवालान्निषेव्य
तैःशर्करयाःसमन्वितैः॥
सर्वप्रमेहान्विनिहंति दत्तो
दिनत्रय विंशतिवत्सरस्य।
अन्नं ससर्पिःससितं प्रयोज्य
दिनानि सप्त त्रिगुणानि चात्र॥
वरामधुभ्यां सहितस्य यस्य
पंचाधिका वत्सरविंशतिःस्यात्।
हैयंगवीनेन गवां च पथ्यं
त्रिसप्तसंख्यानि दिनानी कार्यम्।
प्रस्विन्नगोधूमरसेन हंति
सत्रिंशदब्दस्य दिनत्रयेण॥
अन्नं ससर्पिः सगुडं हि देयं
मध्विक्षुखंडैस्त्रिदिनं विधातुम्।
अंगानि सम्यग्विनिदाघ-
संघगतानि खानि स्फुटनं ददीतं॥
चिंचागुडाभ्यां युतमन्नमस्मिन्द्रा
क्षादिनीरेण विमिश्रितः सन्।
दिनत्रयं लंघनजं विशोषं
विनाशयेद्रोस्तनिकासिताभ्याम्॥
पथ्यं देयमुमाशंभौ
वासुदेवेन निर्मिते।
पातुं जगति कृपया
मेहध्वांतविवस्वति॥

शुद्ध पारा और अभ्रक भस्म १-१ भाग, नीलाथोथा २ भाग। सब को जंबीरी नीबू के रस में ३ दिन तक घोट कर मूषा में बन्द करके पुट दें। इसी प्रकार जंबीरी के रस की सात पुट दें। फिर बिजौरा, नागर मोथा, बहेड़ा और ऋद्धि की ४-४ भावना, अर्जुन के क्वाथ की २ और मुल्हैठी,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिसरी, केतकी, जीरा, केला, खजूर और चमेली के पत्ते इनकी ३ भावना दें।

इसे ३ रत्ती की मात्रा में सेवन करना चाहिये। मधु के साथ देने से बालकों के शोष, सन्ताप, निर्बलता और तृषा का नाश होता हैं। वासे के रस के साथ सेवन करने से ७ दिन में प्रमेह का नाश हो जाता है। इस प्रयोग में दूध भात खाना चाहिये। बबूल की नवीन कोंपलों के रस में चीनी मिला कर उस के साथ सेवन करने से २० वर्ष का प्रमेह ३ दिन मे ही नष्ट हो जाता है। इसे सेवन करने पर २१ दिन तक घी और मिश्री युक्त आहार करना चाहिये। त्रिफला और शहद के साथ सेवन करने से २५ वर्ष का पुराना प्रमेह नष्ट होता है। इसके ऊपर २१ दिन तक गाय के नौनी घी (नवनीत) के साथ पथ्य भोजन करना चाहिये। गेहूं के काथ के साथ ३ दिन तक सेवन करने से ३० साल का प्रमेह नष्ट होता है। इस प्रयोग में घृत और गुड़ युक्त आहार देना चाहिये। इस औषधि को ३ दिन तक शहद और ईख का रस तथा खांड के साथ सेवन करने से देह का संताप और स्रोतों का स्फुटन नष्ट होता है। इस के ऊपर इमली का रस और गुड़ युक्त अन्न खिलाना चाहिये। इसे ३ दिन तक मुनक्का और मिश्रीके साथ सेवन करने से लंघन जनित शोष नष्ट होता है।

ऊ

अथ ऊकारादि कषाय-प्रकरणम्

[५३९] ऊषकादिगणः (सु. सं. सू.अ.३८)

ऊषकसैन्धवशिलाजतुकासीस-
द्वयहिङ्गूनि तुत्थकं चेति।
उषकादिः कफं हन्ति गणो मेदो विशोषणः।
अश्मरीशर्करामूत्रकृच्छ्रशूलकगुल्मनुत्॥

ऊषर मिट्टी (रेह) सेंधानमक, शिलाजीत, दो प्रकार का कसीस, हींग और नीलाथोथा।

यह ऊषकादि गण कफ नाशक, मेद शोषक, (चरबी को सुखाने वाला) पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, शूल एवं गुल्म नाशक है।

अथ ऊकारादि चूर्ण-प्रकरणम्

[५४०] ऊषणादि चूर्णम् (भै. र. परिशि.)

ऊषणं पिप्पलीमूलं कुष्ठं वारणपिप्पलीम्।
मुस्तकं मधुकं मूर्वा भार्गी मोचरसं शुभाम्॥
यवश्चातिविषा वासा गोक्षुरं बृहतीद्वयम्।
संचूर्ण्य समभागानि माषमानेन योजयेत्॥
ऊषणाद्यमिदं चूर्णं विस्फोटं लोहितज्वरम्।
रोमान्तिकां ज्वरं जीर्णं हन्याच्चापि मसूरिकाम्॥

काली मिर्च, पीपलामूल, कूठ, गजपीपल, नागरमोथा, मुल्हैठी, मूर्वा, भारंगी, मोचरस, सोया (या बंसलोचन), इन्द्र जौ, अतीस, वांसा, गोखरू, दोनों कटेली।

सब चीजें समान भाग लेकर कूट कर चूर्ण करें।

इसे १ माषे की मात्रा से सेवन करने से विस्फोटकज्वर, लाल बुखार, रोमान्तिका, जीर्ण ज्वर और मसूरिका का नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऋ

[५४१] **ऋतुहरीतकी** (च. पा.)

ग्रीष्मे तुल्यगुडां सुसैन्धवयुतां मेघावनद्धेऽम्बरे
सार्द्धं शर्करया शरद्यमलया शुण्ठया तुषारागमे ॥
पिप्पल्या शिशिरे वसंतसमये क्षौद्रेण संयोजिताम्
इत्थंप्राश्य हरीतकीमिव रुजो नश्यन्तु ते शत्रवः

हैड़ को ग्रीष्मऋतु (जेठ अषाढ़) में समान भाग गुड़ के साथ, वर्षाऋतु (सावन भादों) में सैंधानमक के साथ शरदऋतु (आसौज, कातिक) में खांड के साथ, हेमन्तऋतु (अधन, पौष) में सोंठ के साथ, शिशिरऋतु (माघ फाल्गुन) में पीपल के साथ और वसन्त ऋतु (चैत, वैसाख) में शहद के साथ सेवन करना चाहिये ।

इस प्रकार हरीतकी को सेवन करने से समस्त रोग नष्ट होते हैं ।

ए

अथ एकारादि कषाय-प्रकरणम्

[५४२] **एरण्डद्वादशकम्**

(वृ. यो. त. ९४ त.)

एरण्डफलमूलानि बृहतीद्वयगोक्षुरम् ।
पर्णिन्यः सहदेवी च सिंहपुच्छीक्षुबालिकाः ॥
तुल्यैरेतैः भृतं तोयं यवक्षारयुतं पिबेत् ।
पृथग्दोषभवं शूलं हन्ति चातित्रिदोषजम् ॥

अरण्ड के बीज, अरण्डमूल, दोनों कटेली, गोखरू, मुद्गपर्णी, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, सहदेवी, सिंहपुच्छी और छोटी ईख (या तालमखाना) ।

यह सब चीज़ें समान भाग लेकर क्वाथ बना कर उस में जवाखार का प्रक्षेप डाल कर पीने से पृथक् पृथक् दोषों से उत्पन्न हुआ तथा त्रिदोषज शूल नष्ट होता हैं ।

[५४३] **एरण्डमूलादि क्वाथः**

(वृ. नि. र. शू.)

एरण्डमूलं द्विपलं जलेऽष्टगुणिते पचेत् ।
तत्क्काथो यावशूकाढ्यः पार्श्वहृत्कफशूलहा ॥

१० तोले एरण्डमूल को १ सेर पानी में पकाकर चौथाई भाग शेष रहने पर छान कर उस में यवक्षार डाल के पीने से पसली का दर्द, हृच्छूल और कफज शूल का नाश होता है ।

[५४४] **एरण्डस्वरसः** (वृ. नि.र. । काम.)

वातरेश्च जटाद्रावं कर्षार्द्धं दुग्धमिश्रीतं ।
पाययेत्त प्रतिदिनमेवमेव दिनत्रये ॥
धृतं दुग्धोदनं पथ्यं कुर्याद्वै लवणं विना ॥
कामलां नाशयत्याशु वायुनाभ्रं हरेद्यथा ॥

एरण्डमूल का स्वरस ७॥ माषा, दूध में मिला कर तीन दिन तक पीने और घृत तथा दूध भात का लवण रहित आहार करने से कामला का अत्यन्त शीघ्र नाश होता है ।

[५४५] **एरण्डादिः** (१) (यो. र. वा. व्या.)

एरण्डबिल्वं बृहतीद्वयं च
सौवर्चलं व्योषसुराह्वठं च ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समातुलुङ्गीलवणोत्तमं च
क्वाथो धनुर्वातहरः प्रशस्तः ॥

एरण्डमूल, बेल की छाल, दोनों प्रकार की कटेली, सौंचल (काला नमक), त्रिकुटा, हींग, शरबती नीबू और सेंधा नमक। इन का क्वाथ धनुर्वात का नाश करता है।

[५४६] एरण्डादिः (२) (भा. प्र.। वा. र.)

गन्धर्वहस्तवृषगोक्षुरकामृतानां
मूलं बलेक्षुरकयोश्च पचेत्तु धीमान्।
वातासृगाशु विनिहन्ति चिरप्ररूढ-
माजानुगं स्फुटितमूर्द्धगतन्तु धीमान् ॥

एरण्ड, बासा, गोखरू, गिलोय, खरैटी और ईख इन सब की जड़ लेकर क्वाथ करके पीने से, पुराना जानुओं तक फैला हुआ, स्फुटित (फटा हुआ) एवं ऊपर को चलने वाला वातरक्त नष्ट होता है।

[५४७] एर्वारुबीजादिः (भा. प्र.। मू. कृ.)

एर्वारुबीजं मधुकञ्च दार्वी
पैत्ते पिबेत्तण्डुलधावनेन।

खीरे के बीज, मुलैठी और दारुहल्दी को पीस कर चावलों के पानी के साथ पीने से पैत्तिक मूत्रकृच्छ्र का नाश होता है।

[५४८] एलादिक्वाथः (१)

(वृ. नि. र.। शू.)

एलाहिंगुयवक्षारसैंधवप्रतिवासितः।
पीत एरंडतैलेन कटिहृद्ग्रहमुद्गतम् ॥
जाठरं नाभिशूलं च पृष्ठकुक्षिगत तथा।
शिरःकर्णाक्षिशूलं च नाशयत्यतिवेगतः ॥

इलायची, हींग, यवक्षार और सेंधानमक के शीत कषाय में अरण्डी का तेल डाल कर पीने से कमर, हृदय, जठर, नाभि, पीठ, कोख, शिर, कान और आंख की पीड़ा शान्त होती है।

[५४९] एलादि क्वाथः (२)

(यो. र. अश्म; शा. ध. म. खं. अ. २.)

एलोपकुल्यामधुकाश्मभेद-
कौंतीश्वदंष्ट्रावृषको रुबूकैः
शृतं पिबेदश्मजतुप्रगाढं
सशर्करे साश्मरिमूत्रकृच्छ्रे ॥

इलायची, पीपल, मुलैठी, पाषाण भेद, रेणुका, गोखरू, बांसा और अरण्डमूल। इन के क्वाथ में शिलाजीत पीने से शर्करा, पथरी तथा मूत्रकृच्छ्र का नाश होता है।

[५५०] एलादिगणः (सु. सू. अ. ३८)

एलातगरकुष्ठमांसीध्यामकत्वक्पत्रनाग-
पुष्पप्रियङ्गुहरेणुकाव्याघ्रनखशुक्तिचण्डा-
स्थौणेयक श्रीवेष्टक चोचचोरकवालक
गुग्गुलसर्ज्जरसतुरुष्क कुन्दुरुकाऽगुरुस्पृक्को
शीरभद्रदारुकुङ्कुमानि पुन्नागकेशरश्चेति ॥
एलादिको वातकफौ निहन्याद्विषमेव च।
वर्णप्रसादनः कण्डूपिडकाकोठ नाशनः ॥

छोटी इलायची, तगर, कूठ, जटामांसी, रोहिषतृण (गन्ध तृण), दालचीनी, तेजपात, नागकेसर, फूलप्रियंगु, रेणुका, व्याघ्र नख (बृहन्नखी) शुक्ति (अल्प नख), चंडा (चोर पुष्पी), थुनेर (ग्रन्थि पर्णी), श्रीवेष्ट, चोच (दालचीनीभेद), चोरक (ग्रन्थीपर्णी भेद) सुगन्धवाला, गूगल, राल, तुरुष्क (शिला रस), कुन्दरु, अगर, स्पृक्का, खस, देवदारु, केसर और कमलकेसर (या नागकेसर)।

यह एलादि गण वात, कफ, विष, खुजली, पिडिका (फुंसियां) और कोठ नाशक तथा वर्ण प्रसादक (शरीर का रंग स्वच्छ करने वाला) है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ एकारादि चूर्णप्रकरणम्

[५५१] एरण्डभस्मयोगः (वृ. नि. र. उदर.)

समूलपत्रमैरण्डं रुद्ध्वा भांडे पुटे पचेत् ।
तत्कर्षं पलगोमूत्रं पीतं प्लीहविनाशनम् ॥

एरंड को पत्र और मूल सहित लेकर बरतन बन्द कर के पुट में भस्म करें।

इसे १। तोला की मात्रा से ५ तोला गोमूत्र के साथ पीने से तिल्ली रोग का नाश होता है।

[५५२] एरण्डमूलादि चूर्णम्

(वृ. नि. र. शूले.)

एरण्डमूलं तुम्बुरुबिडलवणसुवर्चलाभया ।
हिंगुरेतैरम्बुना पीतैश्च याति शूलं च गुरुगुल्मम् ॥

अरण्डमूल, तुम्बुरु, विडलवण, हुलहुल, हैड़ और हींग। इनके चूर्ण को पानी के साथ पीने से शूल और गुल्म नष्ट होता है।

[५५३] एरण्डादिभस्मयोगः

(यो. र., वृ. मा; ग. नि. २३)

एरण्डवह्निशम्बूकवर्षाभूगोक्षुरं समम् ।
अन्तर्दग्ध्वा पिबेदद्भिरुष्णाभिः शूलशान्तये ॥

अरण्ड मूल, चीता, शम्बूक (कोकले,क्षुद्रशंख) पुनर्नवा (साठी) और गोखरू। समान भाग लेकर हाण्डी में बन्द करके भस्म करें। इसे गरम पानीके साथ पीनेसे शूल नष्ट होता है।

[५५४] एलादिचूर्णम् (१)

(वृ. नि. र. काम.)

एलाजीरकभूधात्री सिता गव्येन भावयेत् ।
प्रातर्हि सेवनं कुर्यात् कामलानाशनं परम् ॥

इलायची, ज़ीरा, भुईं आमला और मिश्री। इनके चूर्णको गोदुग्धकी भावना देकर प्रातः प्रातः सेवन करनेसे कामला का नाश होता है।

[५५५] एलादिचूर्णम् (२) (यो. र., क्षय.)

एलापत्रं नागपुष्पं लवङ्गं
भागस्त्वेषां द्वौ च खर्जूरकस्य ।
द्राक्षायष्टीशर्करापिप्पलीनां
चत्वारस्तत्क्षौद्रयुक्तं क्षये स्यात् ॥

इलायची, तेजपात, नागकेसर और लौंग प्रत्येक १ भाग खजूर २ भाग। दाख, मुलैठी, शर्करा (खांड) और पीपल प्रत्येक ४ भाग। इनके चूर्णको शहद के साथ सेवन करनेसे क्षय रोगका नाश होता है।

[५५६] एलादिचूर्णम् (३)

(यो. र., शा. ध. म. खं. अ. ६., ग. नि. अ. १४। छर्दि.)

एलालवङ्गगजकेशरकोलमज्जा-
लाजप्रियङ्गुघनचन्दनपिप्पलीनाम् ।
चूर्णं सितामधुयुतं मनुजो विलिह्य-
च्छर्दिं निहन्ति कफमारुतपित्तजाम् ॥

इलायची, लौंग, नागकेसर, बेरकी गुठली की गिरी, धान की खील, फूल प्रियंगु, नागरमोथा, चन्दन और पीपल। इनके चूर्णको मिश्री और शहदके साथ चाटने से कफज, वातज और पित्तज छर्दिका नाश होता है।

[५५७] एलादिचूर्णम् (४)

(च. पा.; ग. नि. अ. २७; मू. कृ.)

मूत्रेण सुरया वाऽपि कदली स्वरसेन वा ।
कफकृच्छ्रविनाशाय श्लक्ष्णां [illegible] पिबेत् ॥

छोटी इलायचीके महीन चूर्णको [illegible]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केलेके रसके साथ सेवन करनेसे कफज मूत्रकृच्छ्रका नाश होता है।

[५५८] एलादिचूर्णम् (५)

(वृ. नि. र. २० । मू. कृ.)

एलाश्ममेदकशिलाजतुगोक्षुराणा-
मेर्वारुबीजलवणोत्तमकुंकुमानाम् ।
चूर्णानि तंदुलजले लुलीतानि पीत्वा
प्रत्यक्षमृत्युरपि जीवति मूत्रकृच्छी ॥

इलायची, पत्थरचटा, शीलाजीत, गोखरू, खीरेके बीज, सेंधानमक और केसर। इनके चूर्णको चावलों के पानी के साथ पीनेसे अत्यन्त दुःसाध्य मूत्रकृच्छ्रका भी नाश होता है।

[५५९] एलादिचूर्णम् (६) (यो. चि. चूर्ण.)

सूक्ष्मैलाकेशरं भृंगं पत्रं तालीसकं तुगा ।
मृद्वीका दाडिमं धान्यं जीरके द्वे द्विकर्षिका ।
पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरम् ।
मरिचं दीप्यकं चैव वृक्षाम्लं चाम्लवेतसम् ॥
आजमोदाश्वगन्धा च कपिकच्छेति कर्षिका ।
अत्यंतसुविशुद्धायाः शर्करायाश्चतुः पलम् ॥
चूर्णं युवाप्रदं पुंसां परमं रुचिवर्द्धनम् ।
प्लीहकोशामयार्शांसि श्वासं शूलं च सज्वरम् ।
निहन्ति दीपयत्यग्निं बलवर्णकरं परम् ।
वातघ्नं रोचनं हृद्यं कण्ठजिह्वाविशोधनम् ॥

छोटी इलायची, नागकेसर, दालचीनी, तेजपात, तालीसपत्र, वंसलोचन, मुनक्का, अनारदाना, धनिया, दोनों जीरे प्रत्येक २॥-२॥ तोला। पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ, कालीमिर्च, अजवायन, वृक्षाम्ल, अमलबेत, अजमोद, आसगन्ध और कौंच। प्रत्येक २॥-२॥ तोला। अत्यन्त स्वच्छ चीनी २० तोला लेकर यथा विधि चूर्ण बनावें।

यह यौवन दाता, रुचि वर्द्धक, तिल्ली, बवासीर, श्वास, शूल और ज्वर नाशक तथा अग्नि वर्द्धक, बल और वर्ण कारक, वात नाशक, नेत्रोंके लिये हितकारी, हृद्य एवं कंठ और जिह्वा शोधक है।

[५६०] एलादियोगः (७)

(यो. र. अश्म; धन्व; मू. कृ.)

एलाश्ममेदकशिलाजतुपिप्पलीनां
चूर्णानि तण्डुलजलैर्लुलितानि पीत्वा ।
यद्वा गुडेन सहितन्यवलेह्य धीमा
नासन्नमृत्युरपि जीवती मूत्रकृच्छ्री ॥

इलायची, पत्थरचटा, शिलाजीत और पीपल इनके चूर्णको चावलों के पानी के साथ पीने या गुड़के साथ मिलाकर खानेसे मृत्युके निकट पहुंचे हुवे मूत्रकृच्छ्रीको भी आराम हो जाता है।

[५६१] एलादिचूर्णम् (८)

(वृ. नि. र. । बा, रो.)

एलानां जलमुस्तानां चूर्णं पीतं समाक्षिकम् ।
तृष्णां छर्दिमतीसारं शिशूनां सत्वरं हरेत् ॥

इलायची और जल मोथे (अथवा सुगन्धवाला और नागरमोथा) के चूर्ण को शहदके साथ पिलानेसे बच्चों की वमन और तृषाका अत्यन्त शीघ्र नाश होता है।

[५६२] एलादिचूर्णम् (९)

(यो. चि. चूर्णा.)

एलाकुंकुमचोचजातिदलयुक् श्रीपुष्पजातीफलम्
मस्तकया करहाटनागरयुतं फेनाहिकृष्णान्वितम्
एतेषां समभागशीतकरजः स्यादर्धकस्तूरिका
दद्यात् क्षौद्रयुतं दिनान्तसमये यामद्वयं स्तंभकृत्

इलायची, केसर, चोच (दालचीनी) जावित्री, तेजपात, लौंग, जायफल, रुमि मस्तगी, अकरकरा,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोंठ, अफीम और पीपल। सब समान भाग। कपूर सबके बराबर और कस्तूरी आधा भाग। इस चूर्ण को उचित मात्रानुसार शामके वक्त शहद के साथ खानेसे २ पहर तक वीर्य स्तम्भन होता है।

[५६३] एलादिचूर्णम् (१०)(र. र. यक्ष्मा.)

एलात्वङ्मरिचं शुंठी पिप्पलीनागकेशरम्।
यथोत्तरं भागवृद्धया चूर्णन्तु सितया समम्॥
यक्ष्मार्शो ग्रहणीगुल्मरक्तपित्तक्षयापहम्।
कण्ठरोगारुचिहरं प्लीहरोगहरं परम्॥

इलायची १ भाग, दारचीनी २ भाग, काली मिर्च ३ भाग, सोंठ ४ भाग, पीपल ५ भाग, नागकेसर ६ भाग और मिश्री सबके बराबर, मिलाकर चूर्ण बनावें। यह चूर्ण यक्ष्मा, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, रक्तपित्त, क्षय, कंठरोग, अरुचि और तिल्ली नाशक है।

[५६४] एलादिचूर्णम् (११)

(यो. र; वृ. यो. त. त. १२२)

एलातुगाचोचशिवाभयानां
सग्रन्थिपाटीरदलामलकानाम्।
चूर्णं सितातुल्यमपाकरोति
प्रौढाम्लपित्तं दिवसास्यभुक्तम्॥

इलायची, बंसलोचन, चोच (दालचीनी) हैड़, आमला, पीपलामूल, चन्दन, तेजपात और धनिया। सब चीजें समान भाग। मिश्री सबके बराबर। इस चूर्ण को प्रातःकाल खाने से प्रबल अम्लपित्तका नाश होता है।

अथ एकारादि गुटिकाप्रकरणम्।

[५६५] एरण्डादि गुटी

(वृ. नि. र., वृ. यो. त. ९३ त., आ. वा.)

एरंडबीजमज्जा समविश्वशर्करासहिता।
गुटीकृता प्रभाते भुक्ता सामानिलं जयति॥

एरण्ड के बीजों की गिरी, सोंठ और मिश्री समान भाग लेकर यथा विधि गोलियां बनावें। इन्हें सेवन करने से आमवात का नाश होता है।

[५६६] एलादिगुटीका (च. द., र. पि.)

एलापत्रत्वचीऽर्धाक्षाः पिप्पल्यर्द्धपलन्तथा।
सितामधुकखर्जूरमृद्वीकाश्च पलोन्मिताः॥
संचूर्ण्य मधुना युक्ता गुडिकाः कारयेद्भिषक्।
अक्षमात्रां ततश्चैकां भक्षयेन्ना दिने दिने॥
कासं श्वासं ज्वरं हिक्का छर्दिं मूर्छां मदं भ्रमम्।
रक्तनिष्ठीवनं तृष्णां पार्श्वशूलमरोचकम्॥
शोषप्लीहाढ्यवातांश्च स्वरभेदं क्षतक्षयम्।
गुटिका तर्पणी वृष्या रक्तपित्तं च नाशयेत्॥

इलायची, तेजपात और दारचीनी प्रत्येक ७॥ माषा, पीपल २॥ तोला। मिश्री, मुल्हैठी, खजूर और मुनक्का ५–५ तोले इन सबों का चूर्ण कर शहद मिलाय गोलियां बनावें। १।–१। तोलाकी गोली प्रतिदिन मनुष्य खावें। खांसी, श्वास, ज्वर, हिचकी, छर्दि, मूर्च्छा, मद, भ्रम, रक्त का थूकना, पसली का शूल, अरुचि, शोथ, तिल्ली-रोग, आढ्यवात, स्वरभेद, क्षत और क्षयका नाश होता है। यह गुटिका तर्पणी, वृष्या और रक्त-पित्त नाशिनी है।

[५६७] एलाद्योमोदकः (भै. र. मदा.)

एलां मधुकमश्रिश्च रजन्यौ द्वे फलत्रयम्।
रक्तशालिं कणां द्राक्षां खर्जूरञ्च तिलं यवम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विदारीं गोक्षुरं बीजं त्रिवृताश्च शतावरीम् ।
संचूर्ण्य मोदकं कुर्यात्सितया द्विप्रमाणया ॥
धारोष्णेनापि पयसा मुद्गयूषेण वा समम् ।
पिबेदक्षप्रमाणान्तु प्रातर्नत्वाम्बिकां गदी ॥
मद्यपानसमुत्थाना विकारा निखिला अपि ।
सेवनादस्ये नश्यन्ति व्याधयोऽन्ये च दारुणाः॥

छोटी इलायची, मुलैठी, चीता, हल्दी, दारु हल्दी, हैड़, बहेड़ा, आमला, लाल चावल (साठी चावल) पीपल, दाख, खजूर, काले तिल, जौ, विदारीकन्द, गोखरू, निशोत, शतावर प्रत्येक सम भाग, सम्पूर्णसे दुगनी मिश्री चूर्ण करके मोदक बनावें। इन्हें धारोष्ण दूध या मूंगके यूषके साथ प्रतिदिन प्रातःकाल १। तोला सेवन करनेसे मद्य-पानजनित समस्त विकार (शराब की खराबियां) एवं अन्य कितने ही दुस्साध्य रोग नष्ट होते हैं।

अथ एकारादि गुग्गुलुप्रकरणम्।

[५६८] एकविंशतिको गुग्गुलुः

(वृ. नि. र. स्वग्दो.)

चित्रकस्त्रिफलाव्योषमजाजीकारवीवचाः ।
सैंधवातिविषाकुष्ठं चव्यैलायावशूकजम् ।
विडंगान्यजमोदा च मुस्तान्यमरदारु च ।
यावंत्येतानि सर्वाणि तावन्मात्रं तु गुग्गुलुः ॥
संकुट्य सर्पिषा सार्द्धं गुटिकां कारयेद्भिषक् ।
प्रातर्भोजनकाले वा भक्षयेत्तु यथा बलम् ॥
हंत्यष्टादशकुष्ठानि कृमिदद्रु व्रणानपि ।
ग्रहण्यर्शो विकारांश्च मुखामयगलग्रहान् ॥
गृध्रसीमथ भग्नं च गुल्मं चापि नियच्छति ।
व्याधीन्कोष्ठगतांश्चान्याञ्जयेद्विष्णु रिवासुरान्

चीता, त्रिफला, त्रिकुटा, जीरा, कलौंजी, बच, सेंधानमक, अतीस, कूठ, चव्य, इलायची, जवाखार, बायविडंग, अजमोद, नागरमोथा और देवदारु। सब समान भाग। गूगल सब के बराबर। सब चीजों का चूर्ण करके घी के साथ कूटकर गोलियां बनावें। इन्हें प्रातःकाल या भोजन के समय बलानुसार सेवन करने से अठारह प्रकार के कुष्ठ, कृमि, दाद, घाव, संग्रहणी, बवासीर, मुखरोग, गलग्रह, गृध्रसी, भग्न और गुल्म तथा कोष्ठगत व्याधियों का शीघ्र नाश होता है।

अथ एकारादि पाकप्रकरणम्

[५६९] एरण्ड (वातारि-शुक्र)पाक

(वृ. नि. र. वा. व्या.)

निस्तुषं बीजमेरंडं पयस्यष्टगुणे पचेत् ।
तस्मिन् पयसि संशोष्य तद्बीजं परिपेषयेत् ॥
पश्चाद्घृतेन संयुक्तं संपचेन्मृदुवह्निना।
कटुत्रिकं लवंगं च एलात्वक् पत्रकेसरम् ॥
अश्वगन्धा शिफा रास्ना षड्ग्रन्धा रेणुका वरी।
लोहं पुनर्नवा श्यामा उशीरं जातिपत्रकम् ॥
जातीफलमभ्रकं च सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ।
शीतीभूतेऽवलेहोयं तस्मिन् खंडसमोदयम् ॥
वातारिपाकनामायं प्रातरुत्थाय भक्षयेत् ।
अशीतिवातरोगांश्च चत्वारिंशच्च पैत्तिकान् ॥
उदराणि तथा चाष्टौ स्वयं रोगान्निहंति च ।
विंशति मेहजान् रोगान् षष्ठिनाडीव्रणानि च।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हंत्यष्टादश कुष्ठानि क्षयरोगांश्च सप्त च ।
पंचैव पांडुरोगांश्च पंच श्वासान् प्रणाशयेत् ॥
चतुरो ग्रहणीरोगान् दृष्टिरोगं गलग्रहम् ।
अनेकवातरोगांश्च तान् सर्वाश्च विनाशयेत् ॥
शुक्लपाकमिदं ख्यातं सर्वरोगनिवारकम् ॥

अण्डीके बीजोंकी गिरीको आठ गुने दूधमें पकावें जब सब दूध खुश्क होजाय तो उन्हें पीसकर घी मिलाकर मन्दाग्निपर पकावें और पाकके अन्तमें उसमें त्रिकुटा, लौंग, इलायची, दारचीनी, तेजपात, नागकेसर, असगन्ध, सोया, रास्ना, पीपला मूल, रेणुका, शतावर, लोह भस्म, साठी (विसखपरा) काली निसोत, खस, जावित्री, जायफल और अभ्रक भस्मका महीन चूर्ण और सबके वजन के बराबर खांडकी चाशनी करके मिलावें।

इसे प्रातःकाल सेवन करनेसे ८० प्रकारके वातरोग, ४० प्रकारके पित्तरोग, ८ प्रकारके उदररोग, २० प्रकारके प्रमेह, ६० प्रकारके नाडी व्रण, १८ प्रकारके कुष्ठ, ७ प्रकार के क्षय, ५ प्रकारके पांडु, ५ प्रकारके श्वास, ४ प्रकारके ग्रहणी रोग, दृष्टि रोग, गलग्रह और अनेक प्रकारके वातज रोगोंका नाश होता है।

[५७०] **एरण्डपाकः** (यो. र. वा. व्या.)

वातारिबीजं प्रस्थं तु सुपक्कं निस्तुषीकृतम् ।
क्षीरद्रोणार्द्धसंयुक्तं भिषग्मंदाग्निना पचेत् ॥
घृतप्रस्थार्द्धयुक्तं पक्कं खंडप्रस्थद्वयं क्षिपेत् ।
त्र्यूषणं सचतुर्जातं ग्रंथिकं वह्निचव्यकम् ॥
छत्रा मिशी शठी बिल्वदीप्यौ जीरे निशायुगम् ।
अश्वगन्धा बला पाठा हवुषा वेल्लपुष्करम् ॥
श्वदंष्ट्रा रुग्वरा दारुवेल्लर्यावालुकावरी ।
एतानि पिचुमात्राणि चूर्णितानि विनिक्षिपेत् ॥
वातव्याधिं च शूलं च शोफं वृद्धिं तथोदरम् ।
आनाहं बस्तिरुग्गुल्ममामवातं कटिग्रहम् ॥
ऊरुग्रहं हनुस्तंभं नाशयेदपि योगतः ॥

अण्डी के पक्के बीजों की मींगी (गिरी) १ सेर लेकर उसे ८ सेर दूध में मन्दाग्नि पर पकावें और खोया हो जाने पर उसे ४० तोला घी में भून लें और फिर २ सेर खाण्ड की चाशनी में मिला लें और उसमें त्रिकुटा, तेजपात, दालचीनी नागकेसर, इलायची, पीपलामूल, चीता, चव्य, सोया, सौंफ, कचूर, वेल, अजवायन, दोनों जीरे, हल्दी, दारु हल्दी, असगन्ध, खरैंटी, पाठा, हाऊबेर, वायबिड़ंग, पोखरमूल, गोखरु, कूठ, त्रिफला, देवदारु, काला विधारा, जलालु (अवालुका—एक तरह का कन्द शाक) और शतावर। प्रत्येक का चूर्ण १।-१। तोला मिलाकर रक्खें। इस पाकको यथोचित अनुपान के साथ सेवन करने से वातव्याधि, शूल, सूजन, वृद्धि रोग, उदर रोग, अफारा, बस्ति, शूल, गुल्म, आमवात, कटिशूल, उरुग्रह और हनुस्तम्भका नाश होता है।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ एकारादि लेहप्रकरणम् ।

[५७१] एलादिलेहः

(र. र., वं. से; अम्लपि.)

एलापटोलघनचन्दनधान्यधात्री
वांशीवराङ्गदलनागकणाभयाभिः ।
लेहः सिताज्यमधुभिः सितयाथ पित्तं
हंत्यम्लपित्तमरुचिज्वरदाहशोषान् ॥

छोटी इलायची, पटोलपत्र, नागरमोथा, चन्दन, धनिया, आमला, बंसलोचन, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, पीपल और हैड़, सब समान भाग लेकर चूर्ण करके मिश्री, घी और शहद के साथ मिलाकर अवलेह बनावें। इसे मिश्री के साथ सेवन करने से पित्त, अम्लपित्त, अरुचि, ज्वर, दाह और शोष का नाश होता है ।

[५७२] एलादिमंथः

(च. द., वं. से; राजय., सु. चि. अ. ४१)

एलाजमोदामलकाभयाक्ष-
गायत्रिनिम्बाशनशालसारान् ।
विडङ्गभल्लातकचित्रकांश्च
कटुत्रिकाम्भोदसुराष्ट्रिकांश्च ॥
पक्त्वा जले तेन पचेत्तु सर्पि-
स्तस्मिन्सुसिद्धे त्ववतारिते च ।
त्रिंशत्पलान्यत्र सितोपलाया
दद्यात्तुगाक्षीरिपलानि षट् च ॥
प्रस्थे घृतस्य द्विगुणं च दद्यात्
क्षौद्रं ततो मन्थहतं निदध्यात् ।
पलं पलं प्रातरतो लिहेच्च
पश्चात्पिबेत्क्षीरमतन्द्रितश्च ॥
एतद्धि मेध्यं परमं पवित्रं
चक्षुष्यमायुष्यतमं तथैव ।
यक्ष्माणमाशु व्यपहन्ति शूलं
पाण्ड्वामयं चापि भगन्दरं च ॥
न चात्र किञ्चित्परिवर्जनीयं
रसायनं चैतदुपास्यमानम् ॥

छोटी इलायची, अजमोद, आमला, हैड़, बहेड़ा, खैरसार, नीम, असना (साल भेद) और साल, (इनके सार) बायबिड़ंग, भिलावा, चीता, त्रिकुटा, नागरमोथा और गोपी चन्दन, (या फिटकड़ी), इनके क्वाथ से यथा विधि १ सेर घृत सिद्ध करके ठंडा होने पर-मिश्री १५० तोले, बंसलोचन ३० तोले और शहद २ सेर मिलाकर मथनी से मथें। इसे प्रतिदिन प्रातःकाल ५-५ तोले खाकर ऊपर से सावधानी पूर्वक (उचित मात्रानुसार) दूध पीना चाहिये। यह मन्थ अत्यन्त मेधावर्द्धक, आंखों के लिये हितकारी, आयुवर्द्धक, यक्ष्मा नाशक एवं शूल, पांडु और भगंदर नाशक है। यह रसायन सेवन करने योग्य है एवं इसमें किसी प्रकार के परहेज की भी आवश्यकता नहीं है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ एकारादि तैलप्रकरणम् ।

[५७३] एरण्डतैलयोगः (१)

(वृ. नि. र., ब. से., वा. व्या.)

**तैलमेरंण्डजं प्रातर्गोमूत्रेण पिबेन्नरः ।
मासमेकं प्रयोगोऽयं गृध्रस्यूरुग्रहापहः ॥**

एक मास तक गोमूत्र में अरण्ड का तेल डाल कर प्रातःकाल पीने से गृध्रसी और ऊरुग्रह का नाश होता है ।

[५७४] एरण्डतैलयोगः (२)

(वृ. नि. र. वा. व्या.)

**वाजिगन्धा बला विश्वा दशमूलं विसाधितम् ।
गृध्रस्यां तैलमैरंडं बस्तौ पाने च शस्यते ॥**

गृध्रसी के लिये एरण्ड के तैल को असगंध, खरैंटी, सोंठ और दशमूल के क्वाथ तथा कल्क से सिद्ध करके पीना चाहिये एवं इसी की बस्ती भी लेनी चाहिये ।

[५७५] एरण्डतैलयोगः (३)

(वृ. नि. र. वा. व्या.)

**एरण्डतैलेन गुडूचिकायाः
क्वाथोऽथ वा वर्द्धितपिप्पली वा ।
गुडेन पथ्याखिलवातरक्तं
विनाशयेत्पथ्ययुतस्य पुंसः ॥**

अण्डी के तेल के साथ गिलोय का क्वाथ या वर्द्धमान पिप्पली अथवा गुड़युक्त हैड़ सेवन करने और पथ्य पालन करने से सब प्रकार का वातरक्त नष्ट होता है ।

[५७६] एरण्डतैलयोगः (४)

(वृ. नि. र. अण्डवृ.)

**तैलमैरण्डजं पीत्वा बलासिद्धपयोन्वितम् ।
आध्मानशूलोपचितामन्त्रवृद्धिं जयेन्नरः ॥**

खरैंटीसे यथाविधि दूध पकाकर उसके साथ अण्डीका तैल पान करनेसे अफारा और शूलयुक्त अन्त्र वृद्धिका नाश होता है ।

[५७७] एरण्डतैलहरीतकी (१)

(भा. प्र., ब. से; आ. वा)

**एरण्डतैलयुक्तां हरीतकीं भक्षयेन्नरो विधिवत् ।
आमानिलार्तियुक्तो गृध्रसीवृद्ध्यर्दितो नियतम् ॥**

एरण्ड तैलके साथ यथा विधि हैड़ सेवन करनेसे आमवात, गृध्रसी और वृद्धि रोगका नाश होता है ।

[५७८] एरण्डतैल हरीतकी (२)

(वृ. नि र. श्ली.)

**गंधर्वतैलभृष्टां हरीतकीं गोजलेन यः पिबति ।
श्लीपदबंधनमुक्तो भवत्यसौ सप्तरात्रेण ॥**

अरण्ड तैलमें भूनी हुई हरड़ोंको ७ दिन तक गोमूत्रके साथ पीनेसे श्लीपद (हाथी पग) का नाश होता है ।

[५७९] एरण्डतैलादियोगः (१)

(यो. र. गुल्म.)

**पिबेदेरण्डतैलं वा वारुणीमण्डमिश्रितम् ।
तदेव तैलं पयसा वातगुल्मी पिबेन्नरः ॥**

वारुणी नामक मद्य या दूधके साथ अरण्डका तैल पीनेसे वातज गुल्मका नाश होता है ।

[५८०] एरण्डतैलादियोगः (२)

(यो. र. । कुरं. चि., ग, नि. । वृद्धय.)

**एरण्डतैलसंमिश्रं कासीसं सैन्धवं पिबेत् ।
वस्त्रेण वृषणं बद्ध्वा कुरण्डज्वरनाशनम् ॥**

अण्ड वृद्धिसे उत्पन्न हुवे ज्वरकी शान्तिके लिये अरण्डके तेलमें कसीस और सेंधा नमक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिलाकर पीना चाहिये एवं अण्ड कोशोंको कपड़ेसे बांध रखना चाहिए।

[५८१] **एरण्डादितैलम्** (वृ. नि. र. । विस.)

एरण्डतुंबीकटुनिंबचक्रमर्दोत्थ-
बीजानि च सोमराजी।
अङ्कोल्लबीजानि समानिकृत्वा
पातालयन्त्रेण सुतैलमेतत् ॥
प्रगृह्य तेनाथ विमर्थयेच
विसर्पकादीन्विहन्ति सद्यः ॥

अरण्डके बीज, कड़वी तोरीके बीज, निबौली, पवांड़के बीज, बावची और अंकोल। सब चीजें समान भाग लेकर पाताल यन्त्र द्वारा तैल निकालें।

इस तेलकी मालिशसे विसर्प आदि अत्यंत शीघ्र नष्ट होते हैं।

[५८२] **एलादितैलयोगम्**(यो. र.। वा. व्या.)

एलामुरासरलशैलजदारुकौन्ती
चण्डाशटीनलदचम्पकहेमपुष्पम्।
स्थौणेयगन्धरसपूतिदलामृणाल
श्रीवासकुन्दुरुनखाम्बुलवङ्गकुष्ठम् ॥
कालीयकं जलदकर्कटचन्दनश्री-
जात्याः फलं सविकस सह कुङ्कुमेन।
स्पृक्कातुरुष्कलघुलम्भतया विनीय
तैलं बलाक्कथनदुग्धदधिप्रपक्वम् ॥
मन्दानलेन हितमेतदुदाहरन्ति
वातामयेषु बलवर्णहुताशकारी ॥

इलायची, मुरामांसी, चीड़, भूरिछरीला, देवदारु, रेणुका, चोरपुष्पी, कपूर कचरी, जटामांसी, चम्पा, नागकेसर, ग्रन्थिपर्णी, गन्ध रस (खून खराबा--दम्मुलअखवायन) खट्टासी (जुन्दबेदस्तर), तेजपात, भिस, चन्दन, कुन्दरु, नख, सुगन्धबाला, लौंग, कूठ, काला अगर, नागरमोथा, ककोड़ा, स्वेत चन्दन, ऋद्धि, जायफल, मजीठ, केसर, स्पृक्का (लजालु), शिलारस और पीली खस। इनके कल्क तथा खरैंटीके क्वाथ, दूध और दहीके साथ मन्दाग्निपर तिल तैल सिद्ध करें।*

यह तैल वात व्याधि नाशक, एवं बल वर्ण और अग्निकारक है।

* तैल पाक विधि पृष्ठ ६३ में देखिये।

अथ एकाराद्यरिष्टचूर्णप्रकरणम्

[५८३] **एलाद्यरिष्टः** (भै. र.। परि.)

पञ्चाशत्पलमेलाया वसायाः पलविंशतिम्।
मञ्जिष्ठां कुटजं दन्तीं गुडूचीं रजनीद्वयम् ॥
रास्नामुशीरं मधुकं शिरीषं खदिरार्जुनौ।
भूनिम्बनिम्बचव्यांश्च कुष्ठं मधुरिकां तथा ॥
गृहीत्वा दिक्पलोन्मित्या जलद्रोणाष्टके पचेत्।
द्रोणशेषे कषाये च पूते शीते विनिक्षिपेत् ॥
धातक्याः षोडशपलं माक्षिकस्य तुलात्रयम्।
चातुर्जातं त्रिकटुकं चन्दनं रक्तचन्दनम् ॥
मांसीं मुरां मुस्तकं च शैलेयं शारिवाद्वयम्।
पलप्रमाणतश्चात्र क्षिप्त्वा मासं निधापयेत् ॥
एलाद्यरिष्टो हन्त्येष विसर्पांश्च मसूरिकाम्।
रोमान्तिकां शीतपित्तं विस्फोटं विषमज्वरम् ॥
नाडीव्रणं व्रणं दुष्टं कासं श्वासं च दारुणम्।
भगन्दरोपदंशौ च प्रमेहपिडिकास्तथा ॥

इलायची २५० तोले, बांसा १०० तोले,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मजीठ, इन्द्रयव, दन्ती, गिलोय, हल्दी, दारुहल्दी, रास्ना, खस, मुल्हैठी, सिरस, खैर, अर्जुन, चिरायता, नीम, चीता, कूट और सौंफ। प्रत्येक वस्तु ५०–५० तोले लेकर सबको २५६ सेर जल में पकावें। जब ३२ सेर पानी शेष रह जाय तो छानकर उसमें नीचे लिखी चीजें मिलाकर यथा विधि सन्धान करके एक मास तक रक्खा रहने दें।

धायके फूल १ सेर, शहद ३७॥ सेर, दालचीनी, तेजपात, नागकेसर, इलायची, त्रिकुटा, चन्दन, लाल चन्दन, मुरामांसी, जटामांसी, नागर मोथा, भूरिछरीला, दोनों प्रकारके शारिवे। प्रत्येक वस्तु ५–५ तोला।

एक मास पश्चात् निकालकर छानकर सुरक्षित रक्खें।

उसको सेवन करनेसे विसर्प, मसूरिका, रोमान्तिका, शीतपित्त, विस्फोटक (फोड़े), विषमज्वर, नाड़ी व्रण (नासूर) दुष्टव्रण, दारुण खांसी और श्वास, भगन्दर, उपदंश एवं प्रमेह पिडिका का नाश होता है।

अथ एकारादि लेपप्रकरणम्

[५८४] एलादिलेपः (च. सं। चि. ७ अ.)

एला कुष्ठन्दार्वी शतपुष्पा चित्रकं विडङ्गञ्च।
कुष्ठे लेपनमिष्टञ्च रसाञ्जनञ्चाभया चैव॥

इलायची, कुष्ठ, दारुहल्दी, सोया, चीता, वायविडंग, रसौत और हैड़। इनका लेप करनेसे कुष्ठका नाश होता है।

अथ एकारादि रसप्रकरणम्।

[५८५] एकांगवीररसः

(बृ. नि. र. वा. व्या.)

शुद्धगन्धं मृतं सूतं कांतं वंगं च नागकम्।
ताम्रं चाभ्रं मृतं तीक्ष्णं नागरं मरिचं कणा॥
सर्वमेकत्र संचूर्ण्य भावयेच पृथक् त्र्यहम्।
वराव्योषकनिर्गुण्डीवह्निशुद्धार्द्रकस्य रसैस्तथा॥
रसश्चैकांगवीरोऽसौ सुसिद्धो रसराड् भवेत्।
पक्षघातं चार्दितं च धनुर्वातं तथैव च॥
अर्द्धांगं गृध्रसीं वापि विश्वाचीमपबाहुकम्।
सर्वान्वातामयान्हन्ति सत्यं सत्यं न संशयः॥

शुद्ध गन्धक, रस सिन्दूर, कान्त लोह भस्म, बंग भस्म, सीसा भस्म, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, तीक्ष्ण लोह भस्म, सोंठ, मरिच, पीपल। सब समान भाग लेकर चूर्ण करके उसे त्रिफला, त्रिकुटा, संभालु, चीता, अद्रक, सैंजना, कूट, आमला, कुचला, आक, धतूरा और अद्रक के रसमें, यथा क्रम ३–३ भावना दें।

इसके सेवनसे पक्षाघात, अर्दित, धनुर्वात, अर्द्धांग, गृध्रसी, विश्वाची, अपबाहुक आदि समस्त वातज रोगोंका नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐ

अथ ऐकारादि रसायनप्रकरणम्

[५८६] ऐन्द्रीरसायनम्

(च. सं. चि. १ अ.)

ऐन्द्रीमत्स्याक्षिको ब्राह्मी वचा ब्रह्मसुवर्चला ।
पिप्पल्यो लवणं हेम शंखपुष्पी विषं घृतम् ॥
एषान्त्रियवकान् भागान् हेमसर्पिर्विषैर्विना ।
द्वौ यवौ तत्र हेम्नस्तु तिलन्दद्याद्विषस्य च ॥
सर्पिषश्च पलन्दद्यात्तदैकद्वयं प्रयोजयेत् ।
घृतप्रभूतं सक्षौद्रञ्जीर्णे चान्नं प्रशस्यते ॥
जराव्याधिप्रशमनं स्मृतिमेधाकरम्परम् ।
आयुष्यं पौष्टिकं बल्यं स्वरवर्णप्रसादनम् ॥
परमोजस्करं चैतत् सिद्धमेतत् रसायनम् ।
नैनं प्रसहते कृत्या नालक्ष्मीर्न विषन्नरुक् ॥
श्वित्रं सकुष्ठं जठराणि गुल्माः
प्लीहा पुराणो विषमज्वरश्च ।
मेधास्मृतिज्ञानहराश्च रोगाः
शाम्यन्त्यनेनातिबलाश्च वाताः ॥

इन्द्रायण, मछेछी, ब्राह्मी, बच, ब्रह्मसुवर्चला (हुल हुल भेद) पीपल, सेंधालवण और शंख पुष्पी प्रत्येक ३/४-३/४ रत्ती, सोना १/२ रत्ती, मीठा तेलिया १ तिलभर, घी ५ तोला । चूर्ण योग्य चीजोंका चूर्ण करके सबको भले प्रकार मिलालें ।

इसे यथोचित मात्रामें सेवन करें और औषधिके पच जाने पर बहुतसा घृत डालकर शहद युक्त भोजन करें ।

यह जराव्याधि नाशक, अत्यन्त स्मृति और मेधाकारक, आयुष्यदाता, पौष्टिक, बल्य, स्वर और वर्ण संस्कारक एवं अत्यन्त ओजकारक सिद्ध रसायन है । इसके अभ्यासीको अलक्ष्मी, विष और रोगोंका भय नहीं रहता । इसके सेवनसे श्वित्र, कुष्ठ, उदररोग, गुल्म, तिल्ली, पुराना बुखार, विषमज्वर तथा मेधा स्मृति और ज्ञानका नाश करने वाले रोग नष्ट हो जाते हैं । यह अत्यन्त बलवान वायु का भी नाश कर देती है ।

अथ ऐकारादि घृतप्रकरणम्

[५८७] ऐलेय सर्पिः (र. र. स. २१ अ.)

ऐलेयकस्य स्वरसे घृतं क्षीरं समं पचेत् ।
चंदनं मधुकं द्राक्षा मधूकं च तुगा सिता ॥
ऐलेयकमिदं सर्पिः सर्वपित्तविकारजित् ।
वातपित्तविकारघ्नं शिरोभ्रमणकम्पनम् ॥

एलवेका स्वरस× और उसके बराबर दूध तथा चन्दन, मुलैठी, दाख, महुवा, बंसलोचन और मिश्रीके कल्कसे घृत सिद्ध करें ।

यह घृत सब प्रकारके पित्तविकार, वातपित्त रोग, शिरोभ्रम और कम्पनका नाश करता है ।

× पलवालुकके नामसे बंगाल देशमें काले रंगका एक प्रकारका सुगन्धित काष्ठ मिलता है । इधर ऐलेयक (पलवालु) के नामसे 'पलवा' ग्रहण करते हैं परन्तु पलवेका स्वरस नहीं हो सकता । हां उसे पानीमें घोलकर रस तैयार कर सकते हैं ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ ऐकारादि तैल प्रकरणम्

[५८८] ऐलेयक तैलम् (र. र. स.-२१अ.)

ऐलेयकस्य स्वरसमाढकं तु भिषग्वरः।
कुमार्याः स्वरसं शुद्धं चतुष्प्रस्थं तु कारयेत्॥
आमलक्याः शतावर्या रसं प्रस्थद्वयं प्रथक्।
तैलाढकसमायुक्तं क्षीरद्रोणविमिश्रितम्॥
चोचं मलयजं वारि सरलं कुमुदोत्पलम्।
द्वे मेदे मधुकं द्राक्षा तुगाक्षीरी मधूलिका॥
काकोली क्षीरकाकोली जीवकर्षभकावुभौ।
मृगनाभ्यजगंधा च शशांकश्च पृथक् पृथक्॥
एतेषां चार्द्धपलिकं श्लक्ष्णं चूर्णं विनिक्षिपेत्।
एतत्सर्वं समालोड्य मंदं मंदाग्निना पचेत्॥
सुमुहूर्ते सुनक्षत्रे नववस्त्रेण पीडयेत्।
शिरोनेत्रविकारेषु नस्यं स्यात्कर्णयोजितम्॥
अभ्यंगोद्वर्तनालेपैः शिरोभ्रमणकम्पनुत्।
अङ्गदाहं शिरोदाहं नेत्रदाहं च दारुणम्॥
विसर्पकविकारांश्च मूर्ध्नि जातान्बहून्व्रणान्।
आस्यशोषं भ्रमं चैव नाशयेन्नात्र संशयः॥
ऐलेयकमिदं तैलं प्रशस्तं पित्तरोगिणाम्॥

ऐलेयक का स्वरस ८ सेर, घीकुमार का स्वच्छ रस ८ सेर, आमले का रस ४ सेर, शतावरी का रस ४ सेर, दूध ३२ सेर और तेल८सेर

कल्कद्रव्य—दालचीनी, सफेद चन्दन, सुगंधवाला, धूपसरल, कुमुद, नीलोफर, मेदा, मुल्हैठी, मुनक्का, बंसलोचन, सौंफ, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, कस्तूरी, बनतुलसी और कपूर। हर एक का महीन चूर्ण २॥-२॥ तोला सबको मिलाकर मंदाग्नि पर तेलपाक सिद्ध करें। इसे शिरोरोग और नेत्ररोगों में नस्य, अभ्यंग, उद्वर्तन, आलेपन आदि द्वारा व्यवहार करना चाहिये। एवं कानमें डालना चाहिये। इस तैलके व्यवहार से शिरोभ्रमण (चक्कर आना) कांपना, शरीर की दाह, शिरकी दाह और अत्यन्त नेत्रदाह, विसर्प, सिर के घाव (फोड़े फुंसी), मुख शोष, भ्रम और पित्त रोगों का नाश होता है।

ओ

अथ ओकारादि लेपप्रकरणम्

[५८९] ओष्ठश्वित्रनाशनो लेपः
(रसे. चि. म. ९ अ.)

मुखे श्वेते च सञ्जाते कुर्यादिमां प्रतिक्रियाम्।
गंधकं चित्रकासीसं हरितालं फलत्रयम्॥
मुखे लिम्पेद्दिनैकेन वर्णनाशो भविष्यति॥

गंधक, चीता, कसीस, हरताल और त्रिफला। इनका लेप करनेसे मुख का श्वेतकुष्ठ एक ही दिनमें नष्ट हो जाता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

औ

अथ औकारादि कषायप्रकरणम्

[५९०] औदुम्बरादियोगः

(वृ. नि. र. ज्व.)

औदुम्बरस्य निर्यासः सितया दाह नाशनः।
छिन्नासारः सिताशुक्तः पित्तज्वरनिषूदनः॥

गूलरका क्वाथ मिश्री मिलाकर पीनेसे दाह शान्त होती है। एवं गिलोय का सत मिश्री मिलाकर सेवन करने से पित्तज्वर नष्ट होता है।

अं

अथ अंकारादि कषायप्रकरणम्

[५९१] अंगमर्दप्रशमनमहाकषायः

(च. सं. सू. ४ अ.)

विदारीगन्धापृश्निपर्णीबृहतीकण्टकारिकैरण्ड-
काकोलीचन्दनोशीरैलामधुकानीति
दशेमान्यङ्गमर्दप्रशमनानि भवन्ति॥

विदारीकन्द, पृश्निपर्णी, बड़ी कटेली, छोटी कटेली, अरण्ड, काकोली, चन्दन, खस, इलायची और मुल्हैठी। इन दश चीजों का कषाय अङ्गमर्द (बदन टूटना) का नाश करता है।

[५९२] अंजनादि गणः

(सु. सं. सू. ३८ अ.)

अंजनरसांजननागपुष्पप्रियंगुनीलोत्पलनलद-
नलिनकेशराणि मधुकं चेति।
अञ्जनादिर्गणो ह्येष रक्तपित्तनिबर्हणः।
विषोपशमनो दाहं निहन्त्याभ्यन्तरं भृशम्॥

सुरमा, रसौत, नागकेसर, फूलप्रियंगु, नीलोफर, खस, केसर और मुल्हैठी। यह अंजनादि गण रक्तपित्त, विष और आभ्यन्तरिक दाह नाशक है।

अथ अंकारादि तैल प्रकरणम्

[५९३] अंगारकं तैलम् (च. द. ज्वरे)

मूर्वा लाक्षा हरिद्रे द्वे मंजिष्ठा सेंद्रवारुणी।
बृहती सैंधवं कुष्ठं रास्ना मांसी शतावरी॥
आरनालाढकेनैव तैल प्रस्थं विपाचयेत्।
तैलमंगारकं नाम सर्वज्वरविमोक्षणम्॥

मूर्वा, लाख, हल्दी, दारुहल्दी, मजीठ, इन्द्रायन, बड़ी कटेली, सेंधा लवण, कूट, रास्ना, जटामांसी और शतावर। इनके कल्क और ८ सेर आरनाल के साथ २ सेर तैल सिद्ध करें। यह तैल सब तरह के ज्वरों का नाश करता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ अंकारादि लेप प्रकरणम्

[५९४] **अंगरागलेपः** (सु.सं. चि.अ.२५)
हरीतकीचूर्णमरिष्टपत्रं
चूतत्वचं दाडिमपुष्पवृन्तम् ।
पत्रञ्च दद्यान्मदयन्तिकाया
लेपाङ्गरागो नरदेवयोग्यः ॥

हैड़का चूर्ण, नीम के पत्ते, आम की छाल, अनार के फूलों के डंठल और मल्लिका के पत्ते।

यह अत्युत्तम राजाओं के योग्य अंगराग (लेप) है।

अथ अंकारादि अञ्जन प्रकरणम्

[५९५] **अंजनवटीः** (र. रा. सुं. ज्व.)
पारदं टङ्कमेकन्तु द्विटङ्कं गन्धकं तथा ।
मरिचं नवटङ्कं स्यात् सर्वं वै कज्जलीकृतं ॥
कारवेल्लिरसैर्मर्द्यमेकविंशतिसंख्यकम् ।
गुञ्जामात्रां वटीं कुर्यात्तया ह्यंजनमाचरेत् ॥
सर्वान् ज्वरान् निहन्त्याशु सत्यं शङ्करभाषितं॥

पारद ४ माशा, गंधक ८ माशा और काली मिर्च १ तोला, सब की कज्जली करके करेलेके रस की २१ भावना देकर १–१ रत्ती की गोलियां बनावें।

इसका अंजन करनेसे सब प्रकारके ज्वरोंका नाश होता है।

[५९६] **अंजनभैरवः** (रसे. चि. म.अ. ९)
सूततीक्ष्णकणागन्धमेकांशं जयपालकम्।
सर्वैस्त्रिगुणितं जम्भवारिपिष्टं दिनाष्टकम् ॥
नेत्राञ्जनेन हन्त्याशु सर्वोपद्रवमुल्वणम् ॥

पारा, तीक्ष्ण लोहभस्म, पीपल और गंधक प्रत्येक १–१ भाग। जमाल गोटा सब से तिगुना। सब का महीन चूर्ण करके आठ दिन तक जंबीरी नीबू के रस में घोटें।

इसका अंजन करने से सब उपद्रवों से युक्त (सन्निपात) का भी अत्यन्त शीघ्र नाश हो जाता है।

क

अथ ककारादि कषाय प्रकरणम्

[५९७] **कटुकादिक्वाथः** (च. पा. मुख.)
कटुकाति विषापाठादारु मुस्तकलिंगकाः ।
गोमूत्र क्वथिताःपीताः कंठरोग विनाशनाः ॥

कुटकी, अतीस, देवदारु, पाठा, नागरमोथा और इन्द्रयव। इनको गोमूत्र में पका कर पीने से कण्ठ रोगों का नाश होता है।

[५९८] **कटुक्यादिक्वाथः (१)**
(वृ. नि. र. ज्वरे)
कटुकी चित्रकं निम्बं हरिद्रातिविषं वचा ।
सप्तपर्ण्यमृतानिम्बस्नुह्यर्कैःसाधितं जलं ॥
पेयं माक्षिकसंयुक्तं बलासज्वरशांतये ॥

कुटकी, चीता, नीम की छाल, हल्दी, अतीस,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बच, सतौना, गिलोय, चिरायता, थोहर और आक के क्वाथ में शहद डाल कर पीने से कफज ज्वर का नाश होता है ।

[५९९] कटुक्यादिक्वाथः (२)

(वृ. नि. र. । ज्वरे)

कटुकारोहिणी मुस्ता पिप्पलीमूलमेव च ।
हरीतकी ततो तोयमामाशयगते ज्वरे ॥

कुटकी, नागरमोथा, पीपलामूल, और हैड़ का क्वाथ सेवन करने से आमाशयगत ज्वर का नाश होता है ।

[६००) कट्फलादिक्वाथः (१)

(वृ. नि. र. । ज्वरे.)

कटफलाब्दवचापाठपुष्कराजाजिपर्पटैः ।
देवदार्वभयाशृंगीकणाभूनिंबनागरैः ॥
भार्गीकलिंगकटुकाशठीकतृणधान्यकैः ।
समांशैः साधितः क्वाथो हिंग्वार्द्रकरसैर्युतः॥
कर्णमूलोद्भवं शोथं हंति मन्यागलाश्रयम् ।
कफवातज्वरं श्वासं कासं हिक्कां हनुग्रहम् ॥
गलगण्डं गण्डमालां स्वरभेदं कफात्मकम् ।
शिरो गुरुत्वं बाधिर्यं वृद्धिं च कफमेदसोः ॥
दशमूलज्वरान् (?) श्लेषः सन्निपातज्वरान् जयेत्
अभिन्यासमसंज्ञां च कट्फलादिर्निहंति च ॥

कायफल, नागरमोथा, बच, पाढल, पोखरमूल, जीरा, पित्तपापडा, देवदारु, हैड, काकड़ासिंगी, पीपल, चिरायता, सोंठ, भारंगी, इन्द्रजौ, कुटकी, कपूरकचरी, रोहिषतृण और धनिया । सब चीजें समान भाग लेकर यथा विधि क्वाथ बना कर उस में हींग और अद्रक का रस डालकर पीने से कर्णमूल, मन्या नाड़ी और गले की सूजन, कफ-वात ज्वर, श्वास, खांसी, हिचकी, हनुग्रह, गलगण्ड, गण्डमाला, कफज स्वर भेद, सिर का भारीपन, बधिरता, कफमेद की वृद्धि, सन्निपात, अभिन्यास और मूर्छा का नाश होता है ।

(?) दशमूल्या ज्वरानिति साधीयान् ।

[६०१] कट्फलादिकषायः (२)

(च. चि. अ. २६)

मूत्रेशृताः कटफलशृंगवेर
पीतद्रुपथ्यातिविषाः प्रदेयाः ॥

कायफल, अद्रक, दारु हल्दी, हैड और अतीस को गोमूत्र में पका कर सेवन करने से (कफज हृद्रोग का नाश होता है)

[६०२] कट्फलादिः (३)

(र. र.; बं. से. कासा; यो. चि. म. अ. ४)

कट्फलं च तथा भार्गी मुस्तं धान्यं वचाभया ।
शृंगी पर्पटकं शुण्ठी सुराह्वञ्च जले शृतम् ॥
मधुहिंगुयुतं पेयं कासे वातकफात्मके ।
कण्ठरोगे मुखे शूले श्वासहिक्काज्वरेषु च ॥

कायफल, भारंगी, नागरमोथा, धनिया, बच, हैड़, काकड़ासिंगी, पित्तपापड़ा, सोंठ और देवदारु, इनका क्वाथ बना कर उस में शहद और हींग मिलाकर पीने से वातकफज खांसी, कण्ठ रोग, मुख रोग, शूल, श्वास, हिचकी और ज्वर का नाश होता है ।

[६०३] कट्फलादिक्वाथः (४)

(वृ. नि. र. । अति.)

कटफलातिविषांभोदवत्सकं नागरान्वितम् ।
शृतं पित्तातिसारघ्नं दातव्यं मधुसंयुतम् ॥

कायफल, अतीस, नागरमोथा, कुड़े की छाल और सोंठ ।

इन के क्वाथ में शहद मिला कर पीने से पित्तातिसार का नाश होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[६०४] कट्फलादि पानीयजलम् (५)

(भा. प्र. ज्वरे)

कट्फलं त्रिफला दारु चन्दनं सपरूपकम् ।
कटुका पद्मकोशीरं विपचेत्कर्षकं जले ॥
त्रिदोषदाहतृष्णाघ्नं पानमात्रे प्रपूजितम् ।
दीर्घकालज्वरार्तानामेतत्स्यादमृतोपमम् ॥
कर्षं कट्फलाद्यु शीरान्तानां समुदितानां
जले प्रस्थमिते विपचेदर्द्धशेषं पिबेत् ।
कट्फलादिपानं तृष्णाया दाहे च ।

कायफल, त्रिफला, देवदारु, चन्दन, फालसा, कुटकी, पद्माक और खस । सब चीजें मिलाकर १। तोला लेकर १ सेर पानी में पकावें जब आधा भाग शेष रह जाय तो उतार कर छान कर रक्खें।

यह जल थोड़ा २ पीने से त्रिदोषज दाह और तृष्णा का नाश होता है। यह जल पुराने ज्वर में अमृत के समान गुणकारी है।

[६०५] कट्फलादिः [६]

(वृ. यो. त. ५९ त.)

कट्फलेन्द्रयवारिष्ट तिक्तामुस्तैः सृतं जलम् ।
पाचनं दशमेऽहि स्यात्तीव्र पित्तज्वरे नृणाम् ॥

तीव्र पित्तज्वर में दसवें रोज, कायफल, इन्द्रजौ, नीम, कुटकी और नागरमोथे का पाचन बना कर पिलाने से ज्वर शान्त होता है।

[६०६] कणादिक्वाथः (१)

(वृ. नि. र. ज्वराति; भा. प्र. म. खं. २; ज्वराति.)

कणाकरेणुजलदक्काथो मधुसितायुतः ।
पीतो ज्वरातिसारस्य तृष्णावम्योश्च नाशनः ॥

पीपल, गजपीपल, और नागरमोथे के क्वाथ में शहद और मिश्री मिला कर पीने से ज्वरातिसार, तृष्णा और वमन का नाश होता है।

१ भा. प्र. में नागरमोथा के स्थान पर खील है।

[६०७] कणादिक्वाथः (२)

(वृ. नि. र. ज्वरे)

कणामधुकमृद्वीकाबलाचन्दनसारिवाः ।
निःक्वाथ्य पयसा पीताःक्षीणज्वरविनाशनाः॥

पीपल, मुलहैठी, मुनक्का, खरैटी, चन्दन और सारिवा। इन्हें दूध में पका कर पीने से मन्द ज्वर (अथवा क्षीण पुरुष का ज्वर) नष्ट होता है।

[६०८] कणादिक्वाथः (३)

(वृ. नि. र. ज्वरे)

कणारसोनामृतवह्निविश्वानि-
दिग्धिकासिंदुकभूमिनिंबैः ।
समुस्तकैराचरितः कषायो
हिताशिनां हंति गदानिमांस्तु ॥
ज्वरं मरुत्कोपसमुद्भवं तथा
बलासजं चानलमंदतां च ।
कंठावरोधं हृदयावरोधं स्वेदं
च हिक्कां च हिमत्वमोहान् ॥

पीपल, ल्हसन, गिलोय, सोंठ, कटेली, संभालु, चिरायता और नागरमोथा। इनका क्वाथ सेवन करने और पथ्य पालन करने से वातज ज्वर, कफ ज्वर, अग्निमांद्य, कंठावरोध, हृदयावरोध, स्वेद, हिचकी, शैत्य और मोह का नाश होता है।

[६०९] कणादिक्वाथः (४)

(वृ. नि. र. ज्वरे)

कणाविश्वामृतादारुकिरातैरंडमूलकः ।
निंब एषांकृतःक्वाथःपित्तश्लेष्मज्वरापहः ॥

पीपल, सोंठ, गिलोय, देवदारु, चिरायता, अरण्डमूल और नीमकी छाल। यह क्वाथ, पित्त-श्लेष्म ज्वरका नाश करता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[६१०] **कण्टकपंचमूलम्**

(सु. सं. सू. ३८ अ.)

करमर्दत्रिकण्टकसैरीयकशतावरी ।
गृध्रनख्य इति कण्टकसंज्ञः ॥

करौंदा, गोखरु, पियाबांसा, शतावर और नखी । इन पांच द्रव्यों का नाम कण्टक पंचमूल है।

[६११] **कण्टकार्य्यादिक्वाथः** (१)

(वृ. नि. र. कासे)

कण्टकारीयुगं द्राक्षावासाकर्चूरबालकैः ।
नागरेण च पिप्पल्यां क्वथितं सलिलं पिबेत् ॥
शर्करामधुसंयुक्तं पित्तकासहरं परम् ॥

दोनों कटेली, मुनक्का, बासा, कचूर, सुगन्धबाला, सोंठ और पीपल । इन के क्वाथ में शहद और मिश्री मिला कर पीने से पित्तज खांसी में अत्यधिक लाभ पहुंचता है।

[६१२] **कण्टकार्य्यादिक्वाथः** (२)

(भा. प्र. ज्वरे)

कण्टकार्यमृता भार्गी विश्वेन्द्रयववासकम् ।
भूनिम्बचन्दनं मुस्तं पटोलं कटुरोहिणी ॥
विपाच्य पाययेत्क्वाथं पीत्तश्लेष्मज्वरापहम् ।
दाहतृष्णारुचिच्छर्दिकासशूलनिवारणम् ॥

कटेली, गिलोय, भारंगी, सोंठ, इन्द्रजौ, बासा, चिरायता, चन्दन, नागरमोथा, पटोलपत्र और कुटकी । इन का क्वाथ बना कर पीने से पित्तश्लेष्म ज्वर, दाह, तृष्णा, अरुचि, छर्दि, खांसी और शूल का नाश होता है ।

[६१३] **कण्टकार्यादिक्वाथः** (३)

(वृ. नि. र. ज्वरे)

कण्टकार्यमृतादारुवृषविश्वासमाश्रितः ।
क्वाथः कणारजोयुक्तः सद्यःश्लेष्मज्वरापहः ॥

कटेली, गिलोय, देवदारु, बांसा और सोंठ के क्वाथ में पीपल का चूर्ण डाल कर पीने से कफज्वर का नाश होता है ।

[६१४] **कण्टकार्यादिक्वाथः** (४)

(वृ. नि. र. ज्वरे)

बृहती पौष्करं भार्गी शठी शृङ्गी दुरालभा ।
पक्त्वा पानं प्रशंसन्ति श्लेष्मा तेनोपशाम्यति ॥

कटेली, पोखरमूल, भारंगी, कपुर कचरी, काकड़ासिंगी और धमासा । यह क्वाथ कफ का नाश करने के लिये अत्युत्तम है ।

[६१५] **कण्टकार्यादि क्वाथः** (५)

(वृ. नि. र. अम्ल.)

कण्टकार्यमृतावासाकषायं मधुसंयुतम् ।
अम्लपित्तं जयेत्पीत्वा श्वासं कासं वमिं ज्वरम् ॥

कटेली, गिलोय और बांसे का क्वाथ शहद डालकर पीने से अम्लपित्त, श्वास, खांसी, वमन और ज्वर का नाश होता है ।

[६१६] **कण्टकार्यादिपाचनम्** (६)

(वृ. नि. र. ज्वरे.)

कण्टकारिद्वयं शुंठी धान्यकं सुरदारु च ।
एभिःशृतं पाचनं स्यात् सर्वज्वरनिवारणम् ॥

दोनों कटेली, सोंठ, धनिया और देवदारु । यह पाचन समस्त ज्वरों के लिये हितकारक है ।

[६१७] **कण्ठ्य महाकषायः** (च. सू. अ. ४)

सारिवे क्षुमूलमधुकपिप्पलीद्राक्षाविदारी
कैटर्यहंसपदीबृहतीकण्टकारिका इति
दशेमानि कण्ठयानि भवन्ति ॥

सारिवा, ईख की जड़, मुल्हैठी, पीपल, दाख, विदारीकन्द, कायफल, हंसपादी, बड़ी कटेली और छोटी कटेली इन दश चीजों का नाम "कण्ठय महा कषाय" है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[६१८] कण्डुघ्न महाकषायः

(च. सू. अ. ४)

चन्दननलदकृतमालनक्तमालनिम्बकुट-जसर्षपमधुकदारुहरिद्रामुस्तानीति दशेमानि कण्डुघ्नानि भवन्ति ।।

चन्दन, जटामांसी, अमलतास, करञ्जवा, नीम, कुड़ा, सरसों, मुल्हैठी, दारु हल्दी और नागरमोथा। इन दस चीज़ोंके योग का नाम " कंडुघ्न महा कषाय " है।

[६१९] कदलीयोगः

(वृ. नि. र. । बं. से. स्त्री. रो; यो. र. सोम.)

कदलीनां फलं पक्वं धात्रीफलरसं मधु।
शर्करासहितं खादेत्सोमधारणमुत्तमम् ।।

केले के पक्के फलों में आमले का रस, शहद और खांड मिला कर सेवन करने से सोम रोग नष्ट होता है।

[६२०] कपिकच्छ्वादिक्वाथः

(वृ. नि. र. । वा. व्या.)

कपिकच्छुबलैरंडमाषनागरसाधितम् ।
ससैंधवं पिबेत्क्वाथं नासारंध्रेण मानवः ।।
पक्षाघातं निहंत्याशु शिरोरोगं हनुग्रहम् ।
अर्दितं संधिवातं च मन्यास्तम्भं सुदारुणम् ।।

कौंच के बीज, खरैंटी, एरंड, उड़द और सोंठ के क्वाथ में सेंधा नमक मिलाकर नासिका द्वारा पीने से पक्षाघात, शिररोग, हनुग्रह, अर्दित, सन्धिवात और दुस्साध्य मन्यास्तम्भ का शीघ्र नाश होता है।

[६२१] करंजबीजादि योगः

(वृ. नि. र. । छर्दि.)

ईषत् भृष्टं करंजस्य बीजं खण्डीकृतं पुनः ।
मुहुर्मुहुर्नरो भुक्त्वा छर्दिं जयति दुस्तराम् ।।

करंजवे की गिरी को जरा भून कर (भुल भुला कर) टुकड़े टुकड़े करके बार२ खानेसे दुस्साध्य वमन का नाश होता है।

[६२२] करंजादिकषायः (च. द. अग्नि)

करंज निंबशिखरीगुडूच्यर्जकवत्सकैः ।
पीतः कषायो वमनाद् घोरां हन्याद्विषूचिकाम् ।।

करंजवा,, नीम, चिरचिटा, गिलोय, तुलसी और कुड़ेका क्वाथ पीने से वमन होकर दुस्साध्य विसूचिका (हैज़े) का नाश होता है।

[६२३] कर्णप्रक्षालनम्(वृ. नि. र. । कर्ण रो.)

कर्णप्रक्षालने शस्तं कवोष्णं सुरभीजलम् ।
पथ्यामलकमंजिष्ठालोध्रतिंदुकवास्तु वा ।।

कान धोने के लिये मन्दोष्ण गोमूत्र एवं हैड़, आमला, मजीठ, लोध, कुचला और बथुवा, इन के क्वाथ हित कर हैं।

[६२४] कलिङ्गयवषट्कम्

(वृ. नि. र; ग. नि; अति. यो. त. । त. २१)

सहरीतकी प्रतिविषां रुचकं
सवचं सहिंगु सकलिङ्गयुतम् ।
इति तत्कलिंगयवषट्कमिदं
रुधिरातिसारगदशूलहरम् ।।

हैड, अतीस, कालानमक, वचा, हींग और इन्द्रजव इन छः चीजों का क्वाथ रक्तातिसार और शूल का नाश करता है।

[६२५] कलिङ्गादि क्वाथः (१)

(वृ. नि. र. । अति.)

कलिङ्गातिविषा हिंगुपथ्या सौवर्चलं वचा ।
शूलस्तंभ विबंधघ्नं पेयं दीपनपाचनम् ।।

इन्द्रयव, अतीस, हींग, हैड़, कालानमक और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वचका क्वाथ शूल, स्तम्भ, मलावरोध नाशक और दीपन पाचन है।

[६२६] कलिङ्गादि कषायः (२)

(वृ. नि. र. ज्वराति.)

कलिङ्गातिविषाशुंठी किराताम्बुयवासकम्।
ज्वरातिसारसन्तापं नाशयेदविकल्पतः॥

इन्द्रयव, अतीस, सोंठ, चिरायता, सुगन्धवाला और जवासा। इनका क्वाथ पीने से ज्वरातिसार नष्ट होता है।

[६२७] कलिङ्गादिकषायः (३)

(वृ. नि. र.। ज्वरे)

कलिङ्गकटुकीमुस्ताभूनिम्बो ग्रन्थिनागरम्।
राजकन्यादेवदारुः पिबेत्क्वाथं सकृष्णकम्॥
जीर्णज्वरगदे नित्यं सामे चैव निरामये।
ज्वरांश्च विषमांश्चैव शीतं चातुर्थिकं जयेत्॥

इन्द्रजौ, कुटकी, नागरमोथा, चिरायता, पीपला मूल, सोंठ, केविका (पुष्प विशेष), देवदारु और पीपल। इनका क्वाथ जीर्णज्वर, सामज्वर, निरामज्वर, नित्य (दैनिक) ज्वर, विषमज्वर, शीत और चातुर्थिक (चौथिया) ज्वरका नाश करता है।

[६२८] कलिङ्गादि क्वाथः (४)

(वृ. नि. र. ज्वरे)

कलिङ्ग कट्फलं लोध्रं पाठा कटुकरोहिणी।
पक्वं सशर्करं पीतं पाचन पैत्तिके ज्वरे॥

इन्द्रजौ, कायफल, लोध, पाठा और कुटकी, इनका चीनी युक्त क्वाथ पित्तज्वर-पाचक है।

[६२९] कसेरुकादिक्वाथः

(वृ. नि. र.। हृ. रो.)

कसेरुकाशैवलशृङ्गवेरप्रपौंडरीकं मधुकं बिसं च।
ग्रन्थिश्च सर्पिः पयसा पचेत्तैः क्षौद्रान्वितं पित्तहृदामयघ्नम्॥

कसेरू, सिरवाली (शैवाल), अदरक, पुंडरीक, मुलैठी, कमलनाल, ग्रन्थिपर्णी (या पीपलामूल) और घृत। इन चीज़ों को दूधमें पकाकर शहद डालकर पीने से पित्तज हृद्रोग का नाश होता है।

[६३०] कसेर्वादि क्वाथः

(वृ. नि. र; यो. र; तृष्णा.)

कसेरुशृंगाटकपद्मबीजबीसेक्षुसिद्धं ससितं च वारि।
तृष्णां क्षतोत्थामपि पित्तजातां निहंति पीतं शिशिरी कृतं च॥

कसेरु, सिंघाड़ा, कमलगट्टा, कमलनाल और ईख। इनके क्वाथको ठंडा करके मिश्री मिलाकर पीनेसे क्षतज और पित्तज तृषा शान्त होती है।

[६३१] काकोदुम्बरिकास्वरसः

(वृ. नि. र; यो. र; वृ. मा.। स्त्री. रो.)

क्षौद्रयुक्तं फलरसं काकोदुम्बरजं पिबेत्।
असृग्दरविनाशाय सशर्करपयोऽत्र भुक्॥

कठूमर (गुलर भेद) के फलोंके रसको मिश्री युक्त दूध के साथ पीने से रक्तप्रदरका नाश होता है।

[६३२] काकोलीक्वाथः (१)

(वृ. नि. र.। बा. रो.)

काकोलीगजकृष्णा च लोध्रमेषां समांशतः।
क्वाथो मध्वन्वितःपीतो बालातीसारहृन्मतः।

काकोली, गजपीपल और लोध समान भाग लेकर क्वाथ करके उसमें शहद डालकर पिलानेसे बालकोंका अतिसार नष्ट होता है।

[६३३] काकोल्यादिकषायः (२)

(वृ. नि. र. ज्वरे)

काकोलीबृहतीमुस्ताकुष्ठं दारुवृषामृता।
शुंठी क्वाथः सितायुक्तो हन्ति वातज्वरं परम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काकोली, बड़ी कटेली, नागरमोथा, कूठ, देवदारु (अथवा दारु हल्दी) बांसा, गिलोय और सोंठके क्वाथमें मिश्री डालकर पीनेसे वातज्वरका नाश होता है।

[६३४] काकोल्यादि कषायः (३)

(वृ. नि. र., वा. र.)

***काकोल्याख्यामृताक्वाथं**
पिबेत्कोष्णं यथाबलम्।
पथ्यभोजी त्रिसप्ताहा-
न्मुच्यते वातशोणितात् ॥

काकोली और गिलोयके किञ्चितोष्ण क्वाथको बलानुसार २१ दिन पीने और पथ्य पालन करनेसे वातरक्तका नाश होता है।

[६३५] काकोल्यादि गणः

(प.सं. सू. ३८ अ.)

काकोलीक्षीरकाकोलीजीवकर्षभकमुद्गपर्णीमाषपर्णीमेदामहामेदाच्छिन्नरुहाकर्कटशृङ्गीतुगाक्षीरीपद्मकप्रपौण्डरीकर्द्धिवृद्धिमृद्वीकाजीवन्त्यो मधुकञ्च।

काकोल्यादिरयं पित्तशोणितानिलनाशनः।
जीवनो बृंहणो वृष्य स्तन्य श्लेष्मकरस्तथा ॥

काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, मेदा, महामेदा, गिलोय, काकड़ासींगी, वंसलोचन, पद्माक, पुण्डरीक, ऋद्धि, वृद्धि, मुनक्का, जीवन्ती और मुलैठी। इन औषधियोंके योगका नाम "काकोल्यादि गण" है।

काकोल्यादि गण रक्तपित्त और वायुनाशक तथा जीवनीय, बृंहणीय, वृष्य, स्तन्यजनक एवं कफकारक है।

*कोकिलाक्षेति पाठान्तरम्।

[६३६] काञ्चनारादिक्वाथः (१)

(यो. र., र. र; भै. र.। मसू.)

काञ्चनारत्वचाक्काथस्ताप्यचूर्णावचूर्णितः।
निर्गत्यान्तः प्रविष्टां तु मसूरीं बाह्यतो नयेत् ॥

कांचनार (कचनार) की छालके क्वाथमें सोनामक्खी का चूर्ण (भस्म) डालकर पिलानेसे छुपी हुई मसूरिका (चेचक) बाहर निकल आती है।

[६३७] काञ्चनारक्वाथः (२)

(वृ. नि. र., यो. र.। मुख.)

कांचनारत्वचः क्काथः प्रातरास्ये धृत मुखः।
कुर्यात्सखदिरो जिव्हादरणोन्मूलनं मुहुः ॥

यदि जिह्वा फट गयी हो तो कचनार और खैरकी छालका क्वाथ प्रातःकाल मुखमें धारण करनेसे आराम होता है।

[६३८] काञ्चनारादिक्वाथः (३)

(शा. ध. म. खं, अ. २; यो. र; गण्डमाला.)

कांचनारत्वचः क्काथः शुंठीचूर्णेन नाशयेत्।
गण्डमालां तथा क्काथः क्षौद्रेण वरुणत्वचः ॥

कचनारकी छालके क्वाथमें सोंठका चूर्ण मिलाकर अथवा बरनेकी छालके क्वाथमें शहद डालकर पीनेसे गण्डमालाका नाश होता है।

[६३९] काश्मर्यादिः (१) (यो. र. ज्वरे)

काश्मरीसारिवाद्राक्षात्रायमाणामृतोद्भवः।
कषायः सगुडः पीतो वातज्वरविनाशनः ॥

खम्भारी, सारिवा, मुनक्का, त्रायमाणा (बनफशा) और गिलोयके क्वाथमें गुड़ मिलाकर पीनेसे वातज्वर नष्ट होता है।

[६४०] काश्मर्यादिः (२) (यो. र., तृ. चि.)

काश्मर्यशर्करायुक्तं चन्दनोशीरपद्मकम्।
द्राक्षामधुकसंयुक्तं पित्ततर्षे जलं पिबेत् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पित्तज तृषाकी शांतिके लिये खम्भारी, चन्दन, खस, पद्माक, दाख और मुल्हैठीसे पानी पकाकर उसमें खांड डालकर पीना चाहिये।

[६४१] काश्मर्यादिक्वाथः (३)

(वृ. यो. त. ९१ त.)

सेवनं चात्र कर्तव्यमपि क्षीरैः क्षणे क्षणे।
पित्तोत्तरे तु काश्मर्यद्राक्षारग्वधचन्दनैः॥

पित्त प्रधान वातरक्तकी शांतिके लिये थोड़ी थोड़ी देरमें खम्भारी, दाख, अमलतास और चन्दनसे पका हुआ दूध पीना चाहिये।

[६४२] कासहरमहाकषायः (च.सं.सू.अ.४)

द्राक्षाभयामलकपिप्पलीदुरालभाशृङ्गीकण्टकारिकावृश्चीरपुनर्नवातामलक्य इति दशेमानी कासहराणि भवन्ति।

मुनक्का, हैड़, आमला, पीपल, धमासा, काकड़ासींगी, कटेली, वृश्चीर (पुनर्नवा भेद) पुनर्नवा, (साटी–विसखपरा) और भूई आमला। इन दस औषधियों का नाम "कासहर–महाकषाय" है।

[६४३] किरमालादिक्वाथः (वृ.नि.र.ज्वरे)

किरमालो वचा हिंगु बालकं धान्यकं निशा।
मुस्तायष्टिस्तथा भार्गी पर्पटः समभागतः॥
अष्टावशेषित क्वाथो मधुना प्रतिपाकतः।
श्लेष्म पित्तज्वरं हंति रोगिणः पथ्यभोजिनः॥

अमलतासका गूदा, बच, हींग, सुगन्धवाला, धनिया, हल्दी, नागरमोथा, मुल्हैठी, भारंगी और पित्तपापडा। सब चीजें समान भाग लेकर क्वाथ बनावें। आठवां भाग शेष रहने पर छानकर उसमें शहद डालकर पीने और पथ्य पालन करनेसे कफ-पित्तज ज्वरका नाश होता है।

[६४४] किराततिक्तादिक्वाथः (१)

(च. सं. चि. ज्वरा.)

किराततिक्तकं तिक्ता मुस्ता पर्पटकोऽमृता।
घ्नन्ति पीतानि चाभ्यासात्पुनरावर्तकं ज्वरम्॥

चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, पित्तपापड़ा और गिलोय। इनका क्वाथ बना कर सेवन करनेसे पुनरावर्तक (लोट २ कर आने वाला) ज्वर नष्ट होता है।

[६४५] किरातादिक्वाथः (२) (भा. प्र. ज्वरे)

किरातविश्वामृतवल्लिसिंहिका
व्याघ्री कणामूलरसोनसिन्दुकैः।
कृतःकषायो विनिहन्ति सत्वरं
ज्वरं समीरात्सकफात्समुत्थितम्॥

चिरायता, सोंठ, गिलोय, बड़ी कटेली [या बांसा], कटेली, पीपलामूल, लहसन और संभालु। इनका क्वाथ वातकफज्वरका अत्यन्त शीघ्र नाश करता है।

[६४६] किरातादि सप्तकः (३)

(भा. प्र., ग. नि; वृं.मा, ज्वरे)

किराततिक्तकं मुस्तं गुडूची विश्वभेषजम्।
पाठोदीच्यं मृणालश्च शृतं पित्ताधिके पिबेत्॥

चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ, पाठा, सुगन्धबाला और कमलनाल। इनका कषाय पित्त-प्रधान सन्निपातका नाश करता हैं।

[६४७] किरातादिक्वाथः (४)

(भा. प्र. ज्वरे)

किरातकटुकाकणाकुटजकण्टकारीशठी-
कलिद्रुकिलिमाभयाकटुकफलाम्भोधरैः।
विषामलकपुष्करानलकुलीरशृङ्गी वृषे-
र्महौषधसखैरयं जयति कण्ठकुब्जं गणः॥

चिरायता, कुटकी, पीपल, इन्द्रजौ, कटेली, शठी [कपूर कचरी], बहेड़ा, देवदारु, हैड, काली-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिर्च, कायफल, नागरमोथा, अतीस, आमला, पोखरमूल, चीता, काकडासिंगी और बासा इनका क्वाथ पीनेसे कंठकुब्ज सन्निपातका नाश होता है।

[६४८] किरातादिक्वाथः (५) (च.द.ज्वरे)

चिरज्वरे वातकफोल्वणे वा -
त्रिदोषजे वा दशमूलमिश्रः ।
किराततिक्तादिगणःप्रयोज्यः
शुद्धयर्थिनेवात्रिवृताविमिश्रः ॥

पुराने बुखार, वातकफज्वर और सन्निपात ज्वर की शान्तिके लिये दशमूलयुक्त "किराततिक्तादि गण"* का क्वाथ सेवन करना चाहिये। यदि शोधनकी इच्छा हो तो उसीमें निसोत मिला लेनी चाहिये।

[६४९] किरातादिक्वाथः (६)

(वृ. नि. र. ज्वरे)

किराताब्दामृताविश्व चंदनोशीरवत्सकैः ।
शोथातिसारशमनं विशेषाज्ज्वरनाशनम् ॥

चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ, चन्दन, खस और इंद्रजौ। इनका क्वाथ शोथ और अतिसार नाशक विशेषतः ज्वर नाशक है।

[६५०] किरातादि कषायः (७)

(वृ. नि. र. ज्वरे)

किरातामृतधन्याक चन्दनोशीरपर्पटैः ।
सपद्मकैः कृतः काथो हन्ति पित्तभवं ज्वरम् ॥
दाहतृष्णाभ्रमरुचिमुत्क्लेशं वमथुं क्लमम् ॥

चिरायता, गिलोय, धनिया, चन्दन, खस, पित्तपापड़ा और पद्माक। इनका क्वाथ पैत्तिक ज्वर, दाह, तृष्णा, भ्रान्ति, अरुचि, उबकाई और वमनका नाश करता है।

[६५१] किरातादिक्वाथः (८)

(भा. प्र., भै र; वृ. मा; ज्वरे)

किराततिक्तममृता द्राक्षाचामलकं शठी ।
निष्काथ्य सगुडं क्वाथं वातपित्तज्वरे पिबेत् ॥

चिरायता, गिलोय, मुनक्का, आमला और कपूरकचरी, इनका क्वाथ बना कर गुड़ मिलाकर पीने से वातपित्तज्वर शान्त होता है।

[६५२] कुटजदाडिमक्वाथः

(भा. प्र. अति.)

वत्सत्वग्दाडिमतरुशलाटुफलसम्भवात्वक् च ।
त्वग्युगलं पलमानं विपचेदष्टांशसम्मितं तोये ॥
अष्टमभागशेषं क्वाथं मधुना पिबेत्पुरुषः ।
रक्तातिसारमुल्वणमतिशयितंनाशयेन्नियतम् ॥

कुड़े की छाल और अनार के कच्चे फलो का छिलका, दोनों चीजें २॥-२॥ तोले ले कर आधा सेर पानी में पकावें, जब ५ तोले पानी शेष रह जाय तो उतार कर छान कर ठंडा कर के उस में शहद मिला कर पिलावें। इस से भयंकर रक्तातिसार भी नष्ट हो जाता है।

[६५३] कुटजयोगः (वृ. नि. र.,यो.र; ।मू. कृ.)

पिष्ट्वा गोपयसा श्लक्ष्णं कुटजस्य त्वचं पिबेत् ।
तेनोपशाम्यति क्षिप्रं मूत्रकृच्छ्रं सुदारुणम् ॥

कुड़े की छाल को गाय के दूध में पीस कर पीने से दारुण मूत्रकृच्छ्र का भी नाश हो जाता है।

[६५४] कुटजक्षीरम् (भा. प्र. रक्ताति.)

निःक्वाथ्यमूलममलं गिरिमल्लिकायाः
सम्यक्पलं द्वितयमम्बु चतुःशरावे ।

---

* **किराततिक्तादि गण ।**

किराततिक्तको मुस्तं गुडूची विश्व भेषजम् ।
किरातादिर्गणो होष चातुर्भद्रकमित्यपि ॥

चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ। इसका नाम किरातादि गण है। "चातुर्भद्रक" भी इसीको कहते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्पादशेषसलिलं खलु शोषणीयं
क्षीरे पलद्वयमिते कुशलैरजायाः ॥
प्रक्षिप्य माषकानष्टौ मधुनस्तत्र शीतले ।
रक्तातिसारी तत्पीत्वा नैरुज्यं क्षिप्रमवाप्नुयात् ॥

कुड़े की १० तोला स्वच्छ छाल को २० सेर पानीमें पकावें, जब चौथा भाग रह जाय तो उसे छान कर उसके साथ १० तोला बकरी का दूध पकावें। जब केवल दूध बाकी रह जाय तो उसे ठंडा कर के उस में ७॥ माशे (आधा कर्ष) शहद डाल कर पियें। इस के सेवन करने से रक्तातिसार अत्यन्त शीघ्र नष्ट होता है।

[६५५] कुटजादि स्वेदः

(वृ. नि. र., ग. नि. ३३ शोथे)

कुटजार्कशिरीषाणां विदलै(१) रण्डनिम्बजैः।
पत्रैर्युक्तं जलं तप्तं तत्स्वेदो दुष्टशोफहृत् ॥

कुड़े की छाल, आक, सिरस की छाल, अरण्ड और नीम के पत्ते। इन्हें पानी में पका कर भपारा लेने से सूजन का नाश होता है।

[६५६] कुटजाष्टक क्वाथः

(शा. ध. म. खं. अ २)

कुटजातिविषापाठा धातकीलोध्रमुस्तकैः।
ह्रीबेर दाडिमयुतैः कृतः क्वाथः समाक्षिकः॥
पेयो मोचरसेनैव कुटजाष्टकसंज्ञकः।
अतिसारान् जयेद्वातरक्तशूलामदुस्तरान् ॥

कुड़ा, अतीस, पाठा, धाय के फूल, लोध, नागरमोथा, सुगन्धवाला और अनार की बकली। इन के क्वाथ में मोचरस का चूर्ण और शहद डाल कर पीने से वातातिसार, रक्तातिसार तथा शूल और आमयुक्त अतिसार का नाश होता है।

[६५७] कुमारीमूलादिवमनम्

(वृ. नि. र. ज्वरे.)

कुमारिमूलं कर्षैकं पीत्वा कोष्णजलैर्वमेत् ॥
विषमं तु ज्वरं हंति वमनेन चिरंतनम् ॥

१। तोला घीकुमारी की जड़ को किंचित् गर्म पानी के साथ पी कर वमन करने से पुराने विषमज्वर का नाश होता है।

[६५८] कुलकादिक्वाथः (वै. जि. प्र. वि.)

किमु भ्रमयसि प्रिये कुवलयकराभ्यामिदं
मदीय वचनं सुधारससमं समाकर्णय ॥
पुराणविषमज्वरे कुलकनिंबसिंहींद्रजा-
मृताघनकषायको मधुयुतो वरीवर्तते ॥

पटोल पत्र, नीम की छाल, कटेली, इन्द्रजौ, गिलोय और नागरमोथे के क्वाथ में शहद मिला कर पीने से पुराने विषमज्वर का नाश होता है।

[६५९] कुलत्थक्वाथः (१)

(वृ. नि. र. अश्म.)

पलद्वयमिते कोष्णे कुलत्थस्य शृते त्वपः(१)।
लवणं शरपुंखेन सार्धं माषद्वयोन्मितम् ॥
क्षिप्त्वा पिबेत्पतेत्तस्य मूत्रेण सममश्मरी।
शर्करा सिकता चापि दृष्टमेतदनेकधा ॥

कुलथी के १० तोले किंचितोष्ण (कुछ गरम) क्वाथ में सरफोंके और सेंधा नमक का २ माशे (१६ रत्ती) चूर्ण मिलाकर पीने से पथरी और शर्करा (रग) आदि मूत्र के साथ निकल जाती हैं।

[६६०] कुलत्थादिक्वाथः (२)

(वृ. नि. र; हिक्का.)

कुलत्थनागरव्याघ्रीवासाभिः क्वथितं जलम्।
पीतं पुष्करसंयुक्तं हिक्काश्वासनिवारणम् ॥

कुलथी, सोंठ, कटेली और बांसेके क्वाथ में पोखरमूल का चूर्ण मिलाकर पीनेसे हिचकी और श्वास नष्ट होते हैं।

(१) "जले इति समुचितपाठ"

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[६६१] कुलत्थादिक्वाथः (३)
(वृ. नि. र. कासे)

कुलत्थं कण्टकारी च तथा ब्राह्मयष्टिका ।
शुण्ठीसुरभिसंयुक्तः कासश्वासज्वरापहः ॥

कुलथी, कटेली, भारंगी, सोंठ और तुलसी । इनका क्वाथ खांसी, श्वास और ज्वर का नाश करता है ।

[६६२] कुलत्थादिक्वाथः (४)
(वृ. नि. र; यो. र; हिक्का)

कुलत्थयवकोलाम्बुदशमूलबलाजलम् ।
पानार्थं कल्पयेत्कासहिक्काश्वासप्रशांतये ॥

खांसी, श्वास और हिंचकीकी शांतिके लिये कुलथी, जौ, बेर, सुगन्धबाला, दशमूल और खरैंटी का क्वाथ पिलाना चाहिये ।

[६६३] कुष्ठघ्नमहाकषायः
(च. सं. सू. अ. ४)

खदिराभयामलकहरिद्रारुष्करसप्तपर्णारग्वध-करवीरविडंगजातिप्रवाला इति दशेमानि कुष्ठघ्नानि भवन्ति ।

खैर, हैड़, आमला, हल्दी, भिलावा, सतौना, अमलतास, करवीर (कनैर), बायबिड़ंग और चमेली के पत्ते । यह चीजें कुष्ठ नाशक हैं ।

[६६४] कुष्ठादिक्वाथः(वृ. नि. र. ज्वरे)

कुष्ठमिन्द्रयवं मूर्वा पटोलेनापि साधितम् ।
पीबेन्मरीचसंयुक्तं सक्षौद्रं कफजे ज्वरे ॥

कूठ, इन्द्रजौ, मूर्वा और पटोलपत्र । इनके क्वाथ में शहद और काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर पिलानेसे कफज ज्वर का नाश होता है ।

[६६५] कूष्माण्डकादियोगः
(वृ. नि. र; यो. र; व. से; अपस्मा.)

कूष्मांडकपीडोत्थेन रसेन परिपेषितम् ।
अपस्मारविनाशाय यष्टयाह्वं स पिबेत्त्र्यहम् ॥

कुम्हेड़े (पेट) के रसमें मुल्हैठीको पीसकर तीन दिन तक पीने से अपस्मार का नाश होता है ।

[६६६] कृमिघ्नमहाकषायः
(च. सं. सू. अ. ४)

अक्षीवमरिचगण्डीरकेवूकविडङ्गनिर्गुंडीकिणिही श्वदंष्ट्रावृषपर्णिका खुपर्णिका ।
इति दशेमानिकृमिघ्नानि भवन्ति ॥

सौंजना, कालीमिर्च, गण्डीर (मजीठ), केवूक बायबिड़ंग, संभालू, चिरचिटा, गोखरू, वृषपर्णी और मूषापर्णी । यह दश चीजें कृमिघ्न हैं ।

[६६७] कृमिशत्र्वादिक्वाथः
(वृ. नि. र. अति.)

कृमिशत्रु वचाबिल्वपेशीधान्याककट्फलम् ।
एषां क्वाथं भिषग् दद्यादतीसारे बलासजे ॥

बायबिड़ंग, बच, बेलगिरी, धनिया और कायफल । इनका क्वाथ कफज अतिसारका नाश करता है ।

[६६८] केतकीमूलयोगः (र. र. । मेहे)

त्रिनिष्कं केतकी मूलं घृष्ट्वा जलेन पाययेत् ।
जयन्त्या वा जयायुक्तं मेहं हन्ति समुत्कटम् ॥

१ तोला केतकीकी जड़को जयन्ती या जया (अरणी) के साथ पानीमें पीसकर सेवन करनेसे भयंकर प्रमेहका नाश होता है ।

[६६९] कोकिलाक्षादिः (यो. र. । वा. र.)

कोकिलाक्षामृताक्वाथं पिबेत्कोष्णं यथा बलम् ।
पथ्यभोजी त्रिसप्ताहान्मुच्यते वातशोणितात् ॥

बलानुसार तीन सप्ताह तक तालमखाना और गिलोयका किंचितोष्ण क्वाथ पीने और पथ्य पालन करनेसे वातरक्तका नाश होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ ककारादि चूर्ण प्रकरणम्

[६७०] ककुभचूर्णम् (यो. र. कासे)

काकुभ पिष्टं कृत्वा वासारसभावितं बहून् वारान्॥
मधुघृतसितोपलाभिलेंह्यं क्षयकासरक्तपित्तहरम्।

अर्जुनकी छालका चूर्ण करके बासाके रसकी अनेक भावना देकर शहद, घी और चीनी के साथ मिलाकर चाटने से क्षय, खांसी, और रक्तपित्त का नाश होता है।

[६७१] ककुभादिचूर्णम् (भै. र. हृद्रोगे)

ककुभत्वग्वचा रास्ना बला नागबलाभया।
शटीपुष्करमूलञ्च पिप्पली विश्वभेषजम्॥
सर्वाण्येतानि संचूर्ण्य सर्पिषा शाणमात्रया।
भक्षयेत्प्रातरुत्थाय सर्वहृद्रोगशान्तये॥

अर्जुनकी छाल, बच, रास्ना, खरैटी, नागबला (गंगेरन) हैड़, कपूरकचरी, पोखरमूल, पीपल और सोंठ। सब चीजें समान भाग लेकर चूर्ण करें।

इसे प्रातः काल ४ माशे की मात्रानुसार सेवन करनेसे सब प्रकारके हृद्रोग नष्ट होता है।

[६७२] ककुभाद्यं चूर्णम् (१)

(वृ. नि. र. क्षय.)

ककुभत्वङ्नागबलाधात्रीवातारिबीजानाम्।
चूर्णं मधुघृतयुक्तं सशिवं यक्ष्मादिकासहरम्॥

अर्जुन की छाल, नागबला (गंगेरन), आमला, अरण्ड के बीज और सुहागेकी खील। सब समान भाग लेकर चूर्ण कर के रक्खें।

इसे शहद और घी के साथ सेवन करने से यक्ष्मा और खांसी आदिका नाश होता है।

[६७३] ककुभाद्यं चूर्णम् (२)

(यो. र. हृद्रोगे)

घृतेन दुग्धे गुडाम्भसावा
पिबेत् सचूर्णं ककुभत्वचोत्थम्।
हृद्रोगजीर्णज्वररक्तपित्तं
जित्वा भवेयुश्चिरजीविनस्ते॥

घृतके साथ, दूधके साथ अथवा गुड़के पानी के साथ अर्जुन की छाल का चूर्ण पीने से हृद्रोग, जीर्णज्वर और रक्तपित्तका नाश होता है एवं दीर्घायु प्राप्त होती है।

[६७४] कटुकादिः (यो. र. हृद्रोगे)

पिष्ट्वा वा कटुका पेया सयष्टीका सुखाम्बुना।
जीर्णज्वरं रक्तपित्तं हृद्रोगं च व्यपोहति

कुटकी और मुलहैठीको पीसकर किंचितोष्ण पानीके साथ पीनेसे जीर्णज्वर, रक्तपित्त और हृद्रोगका नाश होता है।

[६७५] कटुकी चूर्णम् (१)

(वृ. नि. र. ज्वरे। यो. चि. म. अ. ७)

सशर्करामक्षमात्रां कटुकीं चोष्णवारिणा।
पीत्वा ज्वरं जयेज्जन्तुः पित्तश्लेष्मसमुद्भवम्॥

१। तोला प्रमाण कुटकीका चूर्ण खांड और गरम पानीके साथ सेवन करनेसे पितकफज्वर नष्ट होता है।

[६७६] कटुकी चूर्णम् (२)

(वृ. नि. र। बालरोग.)

चूर्णंकटुकरोहिण्या मधुना सहयोजयेत्।
हिक्कां प्रशमयेत्क्षिप्रं छर्दिश्चापि चिरोत्थिताम्॥

कुटकी का चूर्ण शहद के साथ चाटने से पुरानी हिक्का (हिचकी) और छर्दि (वमन) का नाश होता है।

[६७७] कटुत्रिकादि (वृ. नि. र. कासे)

कटुत्रिकं च चूर्णितं गुडेन सर्पिषा युतम्।
निहन्ति कासजं दरं निषेवणं निरंतरम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रिकुटे (सोंठ, मिर्च पीपल) का चूर्ण, गुड़ घीमें मिलाकर निरन्तर सेवन करनेसे खांसी नष्ट होती है।

[६७८] कटुत्रयादिचूर्णम् (वृ. नि.र. कासे)

कटुत्रयं पावकदेवदारुरास्ना
विडंगत्रिफलाऽमृतानाम्।
चूर्णं समांशं सितया समेतं
कासंजयेद्विष्णुगदेव दैत्यान्॥

त्रिकुटा, चीता, देवदारु, रास्ना, बायविडंग, त्रिफला और गिलोय। सब चीजें समान भाग लेकर चूर्ण करें।

इसे मिश्रीमें मिलाकर सेवन करनेसे खांसीका नाश होता है।

[६७९] कट्फलादिचूर्णम् (१)
(शा. ध. म. खं अ. ६)

कट्फलं मुस्तकं तिक्ता शुंठी * शृंगी च पौष्करम्
चूर्णमेषां च मधुना शृंगबेररसेन वा॥
लिहेज्ज्वरहरं कंठयं कासश्वासारुचीर्जयेत्।
वायुं छर्दि तथा शूलं क्षयं चैव व्यपोहति

कायफल, नागरमोथा, कुटकी, सोंठ, काकड़ासींगी और पोखरमूल। इनके चूर्ण को शहद या अदरकके रसमें मिलाकर सेवन करनेसे ज्वर, खांसी, स्वास, अरुचि, वायु, वमन, शूल और क्षयका नाश होता है। यह चूर्ण कण्ठके लिये भी हितकारी है।

[६८०] कट्फलादिचूर्णम् (२)
(शा. ध. म. खं अ. ६)

कट्फलं पौष्करं शृङ्गी मुस्ता त्रिकटुक शठी।
समस्तान्येकशो वापि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत्॥
आर्द्रकस्वरसक्षौद्रैर्लिह्यात् कफविनाशनम्।
शूलानिलारुचिच्छर्दिकासश्वासक्षयापहम्॥

कायफल, पोखरमूल, काकडासींगी, नागरमोथा, त्रिकुटा और कपूरकचरी। इन सब का अथवा एक एक औषधिका महीन चूर्ण करके अदरकके रस और शहदमें मिला कर चाटनेसे कफ, शूल, वायु, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास और क्षय का नाश होता है।

[६८२] कट्फलादिः (३) (भा. प्र. । अति.)

कट्फलं मधुकं लोध्रं त्वग्दाडिमफलस्य च।
सतण्डुलजलं चूर्णं वातश्लेष्मातिसारनुत्॥

कायफल, मुलैठी, लोध और अनारके फल के छिलके (नासपाल) इनका चूर्ण चावलों के पानी के साथ सेवन करनेसे वातकफज अतिसार नष्ट होता है।

[६८३] कणाद्यं चूर्णम् (१)
(वृ. नि. र. अजी.)

कणासिंधुशिवावह्निचूर्णमुष्णेन वारिणा।
पीतं प्रातः क्षुधां कुर्यात् पावकस्यापि दीपनम

पीपल, सेंधानमक, हैड़ और चीता। इनका चूर्ण गरम पानीके साथ सेवन करनेसे क्षुधा वृद्धि और अग्निदीप्ति होती है।

[६८४] कणाद्यं चूर्णम् (२)
(यो. र. । दन्तरो.)

कणासिंधूत्थजरणचूर्णं तूर्णं व्यपोहति।
घर्षणाद्दन्तचाश्चल्यव्यथाशोथास्रसंस्रवान्॥

पीपल, सेंधानमक और जीरा। इनका चूर्ण बना कर मंजन करनेसे दांतोंका हिलना, दर्द, मसूड़ोंकी सूजन और उनसे रक्त जाना आदि रोग नष्ट होते हैं।

* शठीति पाठान्तरम्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[६८५] कतकबीजयोगः (वृ. नि. र.)

कर्षप्रमाणं कतकस्य बीजं
तक्रेण पिष्ट्वासहमाक्षिकेन।
प्रमेहजालं विनिहंति सद्यो
रामो यथा रावणमाजघान॥

निर्मलीके बीज १। तोला लेकर छाछ (तक्र) में पीसकर शहदके साथ सेवन करनेसे समस्त प्रकारके प्रमेह अत्यन्त शीघ्र नष्ट होते हैं।

[६८६] कपित्थादिकल्कम्

(वृ. नि. र.। स्त्रीरो.)

कपित्थवेणुपत्रं च सममेकत्रपेषयेत्।
मधुना सह पातव्यं तीव्रप्रदरनाशनम्॥

कैथ और बांसके पत्ते एक साथ पीस कर शहदमें मिलाकर पीनेसे दुस्साध्य प्रदर भी नष्ट हो जाता है।

[६८७] कपित्थादि चूर्णम्

(च. सं चि. अ. १०)

कपित्थमध्यं लीढ्वा तु सव्योषक्षौद्रशर्करम्।
कट्फलं मधुयुक्तं वा मुच्यते जठरामयात्॥

कैथकी गिरी और त्रिकुटे के चूर्णको शहद और खांडमें मिलाकर चाटनेसे अथवा कायफलके चूर्णको शहदमें मिलाकर सेवन करनेसे उदर रोग शांत होते हैं।

[६८८] कपित्थादिपेयाः (च. सं. सू. अ.२)

कपित्थबिल्वचांगेरी तक्रदाडिमसाधिता।
पाचनी ग्राहिणी पेया सवाते पाञ्चमूलिकी॥

कैथ, वेल, चांगेरी, दाड़िम और तक्र (छाछ) से बनायी हुई पेया ग्राहिणी और पाचन होती है। वातदोष की प्रबलता हो तो पञ्चमूल से सिद्ध पेया देनी चाहिये।

[६८९] कपित्थाष्टकं चूर्णम् (च. द। ग्रह.)

यवानी पिप्पलीमूलचातुर्जातकनागरैः।
मरिचाग्निजलाजाजीधान्यसौवर्चलैः समैः॥
वृक्षाम्लधातकीकृष्णाबिल्वदाडिमतिन्दुकैः।
त्रिगुणैः षड्गुणसितैः कपित्थाष्टगुणैः कृतः॥
चूर्णोऽतिसारग्रहणीक्षयगुल्मगलामयान्।
कासं श्वासारुचिं हिक्कां कपित्थाष्टमिदं जयेत्॥

अजवायन, पीपलामूल, चातुर्जातक (दालचीनी, तेजपात, नागकेसर, इलायची), सोंठ, काली मिर्च, चीता, सुगन्धबाला, जीरा, धनिया, सौंचल नमक प्रत्येक १-१ भाग। अमलवेत, धाय के फूल, पीपल, वेल की गिरी, दाड़िम और तेंदु। प्रत्येक ३ भाग। खांड ६ भाग और कैथ ८ भाग।

यह (कपित्थाष्टक) चूर्ण अतिसार, ग्रहणी, क्षय, गुल्म, गलेके रोग, खांसी, श्वास, अरुचि और हिक्का (हिचकी) नाशक है।

[६९०] कम्पिल्लादि चूर्णम्

(च. सं. चि. अ. १० ग. नि. ३० प्रमेह, वृ. म.)

कम्पिल्लसप्तच्छदशालजानि
वैभीतरौहीतककौटजानि।
कपित्थपुष्पाणि च चूर्णितानि
क्षौद्रेण लिह्यात्कफपित्तमेही॥

कमीला, सतौना, साल, बहेड़ा, रुहेडा, कुड़ा और कैथ के फूल। सब चीजें समान भाग लेकर चूर्ण करें। इसे शहदके साथ सेवन करनेसे कफ-पित्तज प्रमेह नष्ट होते हैं।

[६९१] करञ्जादिचूर्णम्

[वृ. नि. र. अर्श। भा. प्र. म. खं. २]

चिरबिल्वाग्निसिंधूत्थनागरेन्द्रयवारलून्।
तक्रेण पिबतोऽर्शांसि निपतंत्यसृजासह॥

करंजवा, चीता, सेंधानमक, सोंठ, इन्द्रजौ और अरलू। इनका चूर्ण करके तक्र (छाछ) के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साथ पीनेसे खूनी बवासीरके मस्से गिर जाते हैं।

[६९२] **करञ्जबीजादिः** (यो. र. छर्दि.)

ईषद्भृष्टं करञ्जस्य बीजं खण्डीकृतं पुनः।
मुहुर्मुहुर्नरो भुक्त्वा छर्दि जयति दुस्तराम् ॥

करंजवे की गिरी को कुछ भून कर टुकड़े टुकड़े करके बार बार खाने से दुस्साध्य छर्दि भी नष्ट हो जाती है।

[६९३] **करञ्जादिपुटपाकः**

(वृ. नि. र. गुल्मे.)

करञ्जवटपत्राणि चव्यं वह्निः कटुत्रयम्।
इन्द्रवारुणिकामूलं पुटे पाच्यं ससैन्धवम् ॥
तद्पक्कं वारिणा पीतं पलार्द्धं मधुनापि वा।
हंति गुल्मोदरं पाण्डुं द्वन्दजं श्वयथुं तथा ॥

करंजवेके पत्ते, बड़के पत्ते, चव, चीता, त्रिकुटा, इन्द्रायन की जड़ और सेंधा नमक, इन्हें पुट पाक करके चूर्ण बनावें।

इस चूर्णको २॥ तोलेकी मात्रानुसार जल के साथ अथवा शहद के साथ पीने से गुल्म, उदर रोग, पांडु और द्वंदज शोथ का नाश होता है।

[६९४] **करञ्जादि शीर्षरेचनम्**

(वृ. नि. र. । शिरो.)

करञ्जशिग्रु बीजानि पत्रकं सर्षपत्वचः।
सर्वेषां शीर्षरोगणामेतच्छीर्षविरेचनम् ॥

करंजवे के बीज, सौंजने के बीज, तेजपात, सरसों और दालचीनी, सब चीज़ें समान भाग लेकर चूर्ण करें।

इसकी नसवार लेने (सूंघने) से शिरोविरेचन होकर समस्त शिरोरोग नष्ट होते हैं।

[६९५] **कर्कटीबीजादि चूर्णम्**

(वृ. नि. र. । मूत्रा.)

कर्कटीबीजसिंधूत्थत्रिफलासमभागिकम्।
पीतमुष्णांभसा चूर्णं मूत्ररोधं निवारयेत् ॥

ककड़ी के बीज, सेंधा नमक और त्रिफला। सब चीज़ें समान भाग लेकर चूर्ण करके गरम पानी के साथ पीने से मूत्रावरोध (पेशाब बन्द होना) नष्ट होता है।

[६९६] **कर्कोटकाद्युद्वर्तनम्**

(वृ. नि. र. सन्नि.)

कर्कोटिकाकंदरजःकुलित्था-
कृष्णावचाकट्फलकृष्णजीरैः।
किराततिक्ताग्निकटवलाबु
पथ्याभिरुद्वर्तनमत्र शस्तम् ॥

(शीतांग सन्निपात में) ककोड़े की जड़, कुलथी, पीपल, वच, कायफल, काला जीरा, चिरायता, चीता, कड़वी तोरी और हैड़। इनका चूर्ण करके शरीर पर मालिश करना चाहिये।

[६९७] **कर्पूराद्यं चूर्णम्**

(यो. र. । कासे; व. से । राजय.)

कर्पूरचोचककोलजातीफलदलाः समाः।
लवङ्गमांसीमरिचकृष्णाशुण्ठीविवर्द्धिताः ॥
चूर्णं सितासमं ग्राह्यं रोचनं क्षयकासजित्।
वैस्वर्यश्वासगुल्मार्शच्छर्दिकण्ठामयापहम् ॥
प्रयुक्तं चान्नपानेषु भिषजा रोगिणां हितम् ॥

कपूर, चोच, (दाल चीनी भेद) कंकोल, जायफल, पतरज प्रत्येक १–१ भाग। लौंग १ भाग, जटामांसी २ भाग, काली मिर्च ३ भाग, पीपल ४ भाग, सोंठ ५ भाग और खांड सब के बराबर। यथा विधि चूर्ण तैयार करें।

इसे सेवन करने और पथ्य पालन करने से अरुचि, क्षय, खांसी, स्वरभंग, श्वास, गुल्म, बवासीर, वमन और कंठरोग नष्ट होते हैं।

[६९८] **कलिंगादि चूर्णम्**(वृ. नि. र. । ज्वरे)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कलिंगरोहिणीनिशाकटुत्रिकेभकेसरम् ।
विचूर्णितं कफज्वरं निहंति कोष्णवारिणा ॥

इन्द्रजौ, कुटकी, हल्दी, त्रिकुटा और नागकेसर । इन का चूर्ण बनाकर किञ्चितोष्ण (गुनगुने) पानी के साथ सेवन करने से कफज ज्वर का नाश होता है ।

[६९९] कल्याणकं चूर्णम् (यो. र. । अपस्मा.)

पञ्चकोलं समरिचं त्रिफला बिड्सैन्धवम् ।
कृष्णाबिडङ्गपूतीकयवानीधान्यजीरकम् ॥
पीतमुष्णाम्बुना चूर्णं वातश्लेष्मामयापहम् ।
अपस्मारे तथोन्मादे दुर्नामग्रहणीगदे ॥
एतत्कल्याणकं चूर्णं नष्टस्याग्नेश्च दीपनम् ॥

पंचकोल (पीपल, पीपलामूल, चव, चीता और सोंठ) कालि मिर्च, त्रिफला, बिड्लवण, सेंधा नमक, पीपल, बायबिडंग, नाटाकरंजवा, अजवायन, धनिया और ज़ीरा । सब चीजें समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

इसे गरम पानीके साथ पीनेसे वातज और कफज रोग, मिरगी, उन्माद, बवासीर, संग्रहणी और अग्निमांधका नाश होता है ।

[७००] कल्याणलवणम् (वृ. नि. र. संग्रह)

भल्लातकानि त्रिफलादन्तीचित्रकमेव च ।
समभागानि सर्वाणि सैंधवं द्विगुणं भवेत् ॥
कपालपुटसंपक्कं मृदुना गोमयाग्निना ।
कल्याण नामलवण श्रेष्ठमर्शोविकारिणाम् ॥

भिलावे, त्रिफला, दन्ती, चीता प्रत्येक १-१ भाग और सेंधा नमक २ भाग लेकर सब को एकत्र कर शरावसंपुट करके कण्डों [उपलों] की मन्दाग्निमें भस्म करें ।

यह (कल्याण लवण) बवासीर के लिये उत्तम गुणकारी है ।

[७०१] काकजङ्घादिः (वृ. नि. र. । स्त्री. रो.)

काकजानुकमूलं वा मूलं कार्पासमेव च ।
पांडुप्रदरशांत्यर्थं पिबेत्तंदुलवारिणा ॥

काकजंघा अथवा कपास की जड़ को पीस कर चावलों के पानी के साथ पीने से पांडु और प्रदर का नाश होता है ।

[७०२] कामदेवचूर्णम् [नपुंसकामृत]

पलं गोक्षुरबीजस्य द्विपलं कपिकच्छुरा ।
पलं नागबलाबीजं पलमेकं शतावरी ॥
विदारकंदचूर्णस्य पलद्वयमथापि वा ।
पलं त्रपुषबीजञ्च वाजिगन्धा पलत्रयम् ॥
वासा च तालमूली च गुडूची रक्तचन्दनम् ।
त्रिसुगन्धी कणाधात्री लवंगं नागकेसरम् ॥
एतानि कर्षमात्राणि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ।
बलाशाल्मलिमूलञ्च भवेदेकैका विंशतिः ॥
कुशकाशशिफासप्त शर्करा सप्तयोजितम् ।
दुष्टशुक्रं वीर्यहानिं मूत्रकृच्छ्राणी यानि च ॥
मूत्राघातं मूत्रदोषाञ्जयेच्छुक्रविवर्द्धनम् ।
दशकं गच्छति स्त्रीणां हयतुल्यपराक्रमः ॥
कामदेवाभिधं चूर्णं धन्वन्तरिनिरूपितम् ॥

गोखरू ५ तोला, कौंचके बीज १० तोला, नागबला (गंगेरन)के बीज और शतावर ५-५ तोला, विदारीकन्द का चूर्ण १० तोला, खीरे के बीज ५ तोला, आसगन्ध १५ तोला । वासा, तालमूली (मूसली) गिलोय, लाल चन्दन, त्रिसुगन्धी (दालचीनी, इलायची, तेजपात) पीपल, आमला, लौंग, नागकेशर, प्रत्येक १।–१। तोला खरैंटी और सेंभल की मूसली १।–१। सेर, कुश और कांसकी जड़ तथा खांड ३५–३५ तोला लेकर चूर्ण बनावें ।

इसके सेवन से वीर्य के दोष, वीर्यपात,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूत्रकृच्छ्र (पेशाव तकलीफ से आना, पेशाब बन्द होना) और मूत्र विकारादि नष्ट होते तथा वीर्य वृद्धि होती है। यह अत्यन्त वाजीकर और बलवर्धक है।

[७०३] कारव्यादिचूर्णम्

(ग. नि. अरोचका. च. चि. अ. २६)

कारवी मरिचाजाजी द्राक्षा वृक्षाम्लदाडिमम्।
सौवर्चलं गुडं क्षौद्रं सर्वारोचकनाशनम् ॥

काली जीरी, काली मिर्च, जीरा, दाख, तिंतड़ीक, अनारदाना, सौंचल [काला नमक) गुड और शहद। सब चीजें समान भाग लेकर चूर्ण करके एकत्र मिलाकर सेवन करने से सब प्रकार की अरुचि नष्ट होती है।

[७०४] कालकचूर्णम्

(च. सं. चि. अ. २६)

गृहधूमो यवक्षारः पाठाव्योषरसाञ्जनम्।
तेजोह्वा त्रिफला लोध्रं +चित्रकं चेति चूर्णिताम्॥
सक्षौद्रं धारयेदेतद् गलरोगविनाशनम्।
कालकन्नाम तच्चूर्णं दन्तास्यगलरोगनुत् ॥

घर का धुआं, जवाखार, पाठा, त्रिकुटा, रसौत, वच, त्रिफला, लोध्र और चीता। सब चीजें समान भाग लेकर चूर्ण करें।

इसे शहद में मिलाकर मुह में रखने से गले और दांतों के रोग नष्ट होते हैं।

[७०५] कासीसादिचूर्णम् (१)

(च. सं. चि. अ. ३०)

कासीसं त्रिफलाकाक्षी साम्रजम्ब्वास्थिधातकी।
पैच्छिल्ये क्षौद्रसंयुक्तश्चूर्णो वैशद्यकारकः ॥

कसीस, त्रिफला, गोपी चन्दन, आम और जामन की गुठली तथा धाय के फूल। इनके चूर्ण को शहद में मिलाकर योनि में रखनेसे पिच्छिला योनि शुद्ध होती है।

+ लोहमिति पाठान्तरम्।

[७०६] कासीसादिचूर्णम् (२)

(वृ. नि. र. मुख.)

कासीसलोध्रकृष्णा मनःशिला सप्रियंगु तेजोह्वा।
एषां चूर्णं मधुयुक् शीतादे पूतिमांसहरम्।
तैलं घृतं वा वातघ्नं शीतादे संप्रशस्यते ॥

कसीस, लोध्र, पीपल, मनसिल, फूलप्रियंगु और बच इनके चूर्ण को शहदमें मिलाकर मसूढ़ों पर लेप करने से शीताद नामक दन्त रोग से सड़ा हुआ मांस दूर होता है। शीताद× में वायु नाशक तैल अथवा धृत इस्तेमाल करना चाहिये।

[७०७] किराततिक्ताद्यंचूर्णम्

(च. सं. चि. अ. १९)

किराततिक्तं षड्ग्रन्था त्रायमाणा कटुत्रिकम्।
चन्दनं पद्मकोशीरं दार्वीत्वक्कटुरोहिणी ॥
कुटजत्वक् फलं मुस्तं यवानी देवदारु च।
पटोलनिम्बपत्रैलासौराष्ट्रातिविषात्वचः ॥
मधुशिग्रोश्च बीजानि मूर्वापर्पटकांस्तथा।
तच्चूर्णं मधुना लेह्यं पेयं मद्यैर्जलेन वा ॥
हृत्पाण्डुग्रहणीरोगगुल्मशूलारुचिज्वरान्।
कामलां सन्निपातं च मुखरोगांश्च नाशयेत् ॥

चिरायता, बच, त्रायमाणा [बनफ़शा] त्रिकुटा, चन्दन, पद्माक, खस, दारु हल्दी की छाल, कुटकी, कुड़ेकी की छाल, इन्द्रजौ, नागरमोथा, अजवायन, देवदारु, पटोल पत्र, नीम के पत्ते, इलायची, सौराष्ट्री मृत्तिका, अतीस, दालचीनी, मुल्हैठी, सौजने

× शीताद—मसूढ़ों का रोग विशेष, जिसमें यकायक कभी २ मसूढ़ों से खून जाने लगता है मसूढ़े दुर्गन्धित, काले, चिपचिपे और मुलायम हो जाते हैं। एवं मसूढ़ों का मांस सड़कर गिरने लगता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के बीज, मूर्वा और पित्त पापड़ा। सब समान भाग लेकर चूर्ण करें।

इसे शहद में मिलाकर चाटने या मद्य अथवा पानी के साथ सेवन करने से हृद्रोग, पांडु, ग्रहणी, गुल्म, अरुचि, ज्वर, कामला, सन्निपात और मूत्र-रोगों का नाश होता है।

[७०८] किरातादिचूर्णम् (भा. प्र. ज्वरे)

किराततिक्तास्त्रिवृदम्बुपिप्पली
विडंगविश्वाकटुरोहिणीरजः।
निहन्ति लीढं मधुनाऽतिसत्वरम्
सुदुस्तरं दुर्जलदोषजं ज्वरम्॥

चिरायता, निसोत, सुगन्धबाला, पीपल, बाय-बिडंग, सोंठ और कुटकी, इनके चूर्णको शहदमें मिलाकर चाटनेसे दूषित जलसे उत्पन्न हुवा दुस्साध्य ज्वर अत्यन्त शीघ्र नष्ट होता है।

[७०९] कुटजचूर्णम्

(वृ. नि. र. अति; वै. जी. वि. २)

इंद्रजमेघमदाकुसुमं श्रीलोध्र-
महौषधमोचरसानाम्।
चूर्णमिदं गुडतक्रनिपीतं
हंत्यचिरादतिसारमुदारम्॥

इन्द्रजौ, नागरमोथा, धायके फूल, बेल, लोध्र, सोंठ और मोचरस। इनके चूर्ण को गुड़में मिलाकर तक्रके साथ पीनेसे अत्यन्त प्रबल अतिसार नष्ट होता है।

[७१०] कुटजादिचूर्णम् (वृ. नि. र.अति.)

कुटजातिविषाचूर्णं मधुना सहलेहितम्।
चिरोत्थितमतिसारं पक्वं पित्तास्रजं जयेत्॥

कुड़ेकी छाल और अतीसके चूर्णको शहदके साथ चाटनेसे पुराना पक्वातिसार और रक्तपित्त नष्ट होता है।

[७११] कुष्ठनाशकाः प्रयोगाः

(र. चि. म. ३स्तबकः)

कुंकुमेंदीवरं मुस्ता चातुर्जातं फलत्रिकम्।
समं चूर्णं विरिच्याऽथ सर्वकुष्ठानि नाशयेत्॥
एकस्मात्सप्तकादूर्ध्वं गलत्कुष्ठं विशोषयेत्।
क्रिमिनलं घोररूपं दुर्निरीक्ष्यं च यद्भवेत्॥
व्रणेषु देयमेतद्धि चूर्णं संपिष्य वारिणा।
वेगतः सिद्धिमायाति दुःसाध्यमपि सत्वरम्॥
कुष्ठव्रणेषु वै देयं तच्चूर्णं जलपेशितम्।
शीघ्रमारोहमायाति म्रियंते क्रिमयस्तथा॥
न शक्यते प्रभावोऽस्य कल्पकोटिगतेन च।
वक्तुं ब्रह्मादिदेवैश्च प्रयत्नादपि निश्चितम्॥

केसर, कमल, नागरमोथा, चातुर्जातक [दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेसर] और त्रिफला। सब चीज़ें समान भाग लेकर चूर्ण बनावें। इसे पानी के साथ सेवन करने से सब प्रकारके कुष्ठ नष्ट होते हैं। एक सप्ताह पश्चात् गलित क्रिमियुक्त दुस्साध्य और घृणित कुष्ठ भी सूखने लगता है। कुष्ठ और घावोंके लिये यह चूर्ण अत्यन्त उपयोगी है। इससे घाव अत्यन्त शीघ्र भरते और क्रिमि नष्ट होते हैं।

[७१२] कुष्ठादिचूर्णम् (१) (भा.प्र.उदर.)

कुष्ठं दन्ती यवक्षारो व्योषं त्रिलवणं वचा।
अजाजी दीप्यकं हिंगु स्वर्जिका चव्यचित्रकम्।
शुण्ठी चोष्णाम्भसा पीता वातोदररुजापहा॥

कूठ, दन्ती, जवाखार, त्रिकुटा, सेंधानमक, कालानमक, विड् लवण, वच, ज़ीरा, अजवायन, हींग, सज्जीखार, चव्य, चीता और सोंठ। इनके चूर्ण को गरम पानीके साथ सेवन करनेसे वातज उदर रोग नष्ट होते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[७१३] कुष्ठादिचूर्णम् (२)

(यो. र. मुख., वृ. मा; व. से; यो. चि. म. अ. र)

कुष्ठं दार्वी लोध्रमब्दं समङ्गा
पाठातिक्ता तेजनी पीतिका च।
चूर्णं शस्तं घर्षणे तद्‌द्विजानां
रक्तस्रावं हन्ति कण्डूरुजश्च॥

कूठ, दारुहल्दी, लोध्र, नागरमोथा, मजीठ, पाठा, कुटकी, मालकंगनी और हल्दी। इनका चूर्ण बनाकर मंजन करनेसे मसूढ़ोंसे खून आना और उनमें खाज आना या पीड़ा होना आदि रोगोंका नाश होता है।

[७१४] कुष्ठादिचूर्णम् (३) (वृ.नि.र.तृष्णा)

कुष्ठं काशोद्भवं मूलं मधुकं पिष्टमम्भसा।
भक्षितं तं द्रुतं हन्ति पिपासां चिरकालजाम्।

कूठ, कासकी जड और मुलैठीका चूर्ण करके पानीके साथ सेवन करनेसे पुराने तृषा रोगका अत्यन्त शीघ्र नाश होता है।

[७१५] कुष्ठादिचूर्णम् (४)

(वृ. नि. र। वा. व्या.)

कुष्ठकेंद्रयवा पाठा पावकोऽतिविषा निशा।
एतेषां चूर्णमुष्णांबुपीतं हंत्यनिलान्बहून्॥

कूठ, इन्द्रजौ, पाठा, चीता, अतीस और हल्दी। इनके चूर्ण को गरम पानीके साथ पीनेसे अनेक प्रकारके वायुरोग नष्ट होते हैं।

[७१६] कुष्ठादिचूर्णम् (५)

(यो. र. उदर; वृ. यो. त. २०५ त)

कुष्ठं वचा शृंगवेरं चित्रकं कौटजं फलम्।
पाठा चैवाजमोदा च पिप्पल्यः समचूर्णिताः॥
ततो बिडालपदकं पिबेदुष्णेन वारिणा।
प्लीहोदरमुदावर्तं सर्वमेतेन शाम्यति॥

कूठ, बच, अदरक, चीता, इन्द्रजौ, पाठा, अजमोद और पीपल। सब समान भाग लेकर चूर्ण करें। इसे गरम पानीके साथ १। तोले की मात्रानुसार पीनेसे तिल्ली, उदररोग और उदावर्तका नाश होता है।

[७१७] कुंकुमादिचूर्णम् (यो.चि. चूर्णा०)

कुंकुमं मदनी मुस्ता चातुर्जातं फलत्रिकम्।
अभ्रमाकल्लकं धान्यं दाडिमं मरिचं कणा॥
यवानी तिंतडीकं च हिंगुजं घनसारकम्।
तुंबुरु तगरं तोयं लवङ्गं जातिपत्रिका॥
समंगा पुष्करं श्यामा पद्मबीजं तुगा शठी।
तालीसं चित्रकं मांसी जातीफलमुशीरकं॥
बला नागबला माक्षी कुष्ठग्रंथिक माक्षिकाः।
यावंत्येतानि सर्वाणि तावन्मोचरसं ददेत्॥
सर्वतुल्या सितायोज्या कर्षमात्रं तु भक्षयेत्।
प्रभाते च निशादौ च भोजनांते विशेषतः॥
सन्ध्याकाले तथा भोज्यं वाजीकरणमुत्तमम्।
अजीर्णं जरयत्याशु नष्टाग्नेश्चाग्निदीपनम्॥
अशीतिवातजान् रोगान् चतुर्विंशतिपैत्तिकान्।
विंशतिश्लेष्मजांश्चैव हृल्लासच्छर्दिरोचकम्॥
पञ्चैव ग्रहणीदोषानतिसारं विशेषतः।
क्षयमेकादशं श्वासं कासं पञ्चविधं तथा॥
उदरव्याधिनाशं च मूत्रकृच्छ्रं गलग्रहम्।
पुत्रं जनयते वन्ध्या सेव्यमाने तथौषधे॥
सन्निपातातुरं चैव विस्फोटकभगन्दरम्।
नेत्ररोगं शिरोरोगं कर्णरोगं हनुग्रहम्॥
हृद्रोगं कंठरोगं च जानुजंघागतं तथा।
सर्वरोगविनाशाय चरकेण प्रभाषितम्॥

केसर, कस्तूरी, नागरमोथा, चातुर्जातक [तेजपात, दालचीनी, इलायची और नागकेसर] त्रिफला, आकरकरा, अभ्रक भस्म, धनिया, अनारदाना, कालीमिर्च, पीपल, अजवायन, तिंतिड़ीक,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हींग, कपूर, कुस्तुम्बरु, तगर, सुगन्धवाला, लौङ्ग, जावित्री, मजीठ, पोखरमूल, विधारा, कमलगट्टा, बंसलोचन, कपूरकचरी, तालीसपत्र, चीता, जटामांसी, जायफल, खस, बला [खरैटी] नागबला, सोनामक्खी भस्म, कूठ, पीपलामूल और रूपामक्खी भस्म। सब चीज़ें समान भाग, मोचरस सबके समान। मिश्री मोचरससे २ गुनी। यथा विधि चूर्ण बनावें।

इसे १। तोलाकी मात्रानुसार प्रातः और सायंकाल और विशेषतः भोजनके अन्तमें सेवन करनेसे अजीर्ण, अग्निमांद्य, ८० प्रकारके वातज रोग, २४ प्रकारके पित्तरोग, २० प्रकारके कफजरोग, उबकाई, वमन, अरुचि, ५ प्रकारके ग्रहणीविकार, अतिसार, ११ प्रकारका क्षय, स्वास, ५ प्रकारकी खांसी, उदररोग, मूत्रकृच्छ्र, गलग्रह, वंध्यत्व, सन्निपात, विस्फोटक, भगन्दर, नेत्र रोग, शिरोरोग, कर्णरोग, हनुग्रह, हृद्रोग, कंठरोग, जानु और जंघागत व्याधियां आदि अनेक रोग नष्ट होते हैं। यह अत्यन्त वाजीकरण है।

[७१८] कुष्माण्डबीजयोगः
(वृ. नि. र। वा. व्या.)

कुष्माण्डस्य तु बीजानि बीजानि त्रपुसस्य च।
बस्तौ संधारयेत्तेन प्रशाम्येन्मूत्रनिग्रहः ॥

पेठे और खीरेके बीजोंको पीसकर बस्तीके ऊपर लेप करनेसे मूत्रावरोध [मूत्र बन्द होना] नष्ट होता है।

[७१९] कुष्मांडशिफाचूर्णम्
(वृ. नि. र. स्वा. का; ब. से., यो. र. श्वा; वृ. यो. त. त. ८०)

कुष्मांडकशिफाचूर्णं पीतं कोष्णेन वारिणा।
शीघ्रं शमयति श्वासं कासं चापि सुदारुणम् ॥

पेठेकी जड़के चूर्णको किञ्चितोष्ण [कुछगरम] पानीके साथ पीनेसे दारुण श्वास और खांसीका नाश होता है।

[७२०] कुष्मांडक्षारम् (भा. प्र. । शूले)

कुष्मांडं तनु कृत्वा तु क्षिप्त्वा घर्मे विशोषयेत्।
स्थाल्यां निःक्षिप्य तत्सर्वं पिधानेन पिधाय च ॥
चुल्ल्यां निवेश्य वह्निश्च ज्वालयेत्कुशलो जनः।
यथातन्न भवेद्भस्म किन्त्वङ्गारो दृढो भवेत् ॥
तदानिर्वापयेच्छीतं सर्वथा चूर्णितन्तु तत्।
माषद्वयमितं तात्तच्छुण्ठीचूर्णेन मिश्रितम् ॥
जलेन भक्षयेन्नित्यं महाशूलाकुलो नरः।
असाध्यमपियच्छूलं तदप्येतेन शाम्यति ॥

पेठेके बारीक बारीक टुकड़े करके धूपमें सुखालें और उन्हें एक हाण्डीमें भरकर उसके ऊपर ढकना ढकदें। अब इसको चूल्हेपर चढ़ाकर उसके नीचे अग्नि जलावें। जब पेठेके टुकड़े जलकर अंगारके समान हो जाय [किन्तु बिल्कुल भस्म न हो जाय बल्कि कठिन रहें] तब उन्हें ठण्डा करके चूर्ण करें।

इसमेंसे २ माशे चूर्ण सोंठके चूर्णमें मिलाकर जलके साथ सेवन करनेसे भयंकर और असाध्य शूल भी नष्ट हो जाता है।

[७२१] कृमिघ्नचूर्णम् (रसा. सा.)

पालाशबीजं कुटजत्वचा च
समे विडङ्गस्युभयोः समानम्।
चूर्णं कृमिघ्नं पलपादमात्रं
कदुष्णतोयेन निषेवणीयम् ॥
जन्तुघ्नं केवलं यद्वा प्रातः सेवेत बुद्धिमान्।
तत्कोष्णेन तोयेन जन्तुरोगापनुत्तये ॥

ढाकके बीज १ छटांक, कुड़ाकी छाल १ छटांक, बायविडंग आधपाव, इन तीनों को कूट-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छानकर रख छोड़े। इसकी मात्रा १ तोले की है,[?] शौच क्रिया के बाद गरम जल के साथ सेवन करने से ४-५ दिन में ही उदर के सर्व कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

[७२२] कृष्णादिचर्वणम्

(वृ. नि. र.। मुख; भा. प्र. म. खं. २; यो. र.)

कृष्णजीरककुष्ठेन्द्रयवचर्वणतस्त्र्यहात्।
मुखपाकव्रणक्लेदं दौर्गन्ध्यमुपशाम्यति॥

पीपल, ज़ीरा, कूठ और इन्द्रयवको ३ दिन तक चबानेसे मुखपाक, व्रण, क्लेद [रतूबत] और मुखकी दुर्गंधि नष्ट होती है।

[७२३] कृष्णाचूर्णम् (१)

(वृ. नि. र. हिक्का. सु. सं. उ. तं. अ. ५०)

कृष्णामलकशुंठीनां चूर्णं मधुसितायुतम्॥
मुहुर्मुहुः प्रयोक्तव्यं हिक्काश्वासनिवारणम्॥

पीपल, आमला और सोंठके चूर्णको शहद और मिश्री में मिलाकर बार बार चाटनेसे हिचकी और श्वासका नाश होता है।

[७२४] कृष्णादिचूर्णम् (२)

(शा. ध. म. खं. अ. ६)

कृष्णारुणामुस्तकशृङ्गिकाणां
तुल्येन चूर्णेन समाक्षिकेण।
ज्वरातिसारः प्रशमं प्रयाति
सश्वासकासः सवमिः शिशूनाम्॥

पीपल, अतीस, नागरमोथा और काकडासींगी समान भाग लेकर चूर्ण करें। इसे शहदके साथ चटानेसे बच्चोंके ज्वरातिसार, श्वास, खांसी और वमन का नाश होता है।

[७२५] कृष्णादिचूर्णम् (३)

(वृ. नि. र. शोथे.)

कृष्णाग्निविश्वघनजीरककण्टकारी-
पाठानिशाकरिकणामगधाजटानाम्।
चूर्णंकवोष्णसलिलैरवलोड्यपीतं
नातः परं श्वयथुरोगहरं नराणाम्॥

पीपल, चीता, सोंठ, नागरमोथा, ज़ीरा, कटेली, पाठा, हल्दी, गजपीपल और पीपलामूल। इनके चूर्णको कुछ गर्म पानीमें मिलाकर पीनेसे शोथका अत्यन्त शीघ्र नाश होता है।

[७२६] कृष्णादिचूर्णम् (४)

(वृ. नि. र; वं. से. बा. रो.)

कृष्णा दुरालभा द्राक्षा कर्कटाख्या गजाह्वया।
चूर्णिता मधुसर्पिर्भ्यां लीढा हंति शिशोर्गदान्।
कासं श्वासं च तमकं ज्वरं वापि विनश्यति॥

पीपल, धमासा, दाख, काकडा सींगी और गजपीपल इनके चूर्णको शहद और घी में मिलाकर चाटनेसे बालकोंके तमक श्वास, खांसी और ज्वरका नाश होता है।

[७२७] कृष्णादिचूर्णम् (५)

(वृ. नि. र. बा. रो.)

कृष्णा महौषधं बिल्वं नागरा सयवानिकः।
मधुसर्पियुतं लीढं बालानां ग्रहणीं हरेत्॥

पीपल, सोंठ, बेलगिरी, नागरमोथा और अजवायन। इनके चूर्णको शहद और घी में मिलाकर चटानेसे बालकोंकी संग्रहणीको आराम होता है।

[७२८] केतकीक्षारयोगः (यो. र. गुल्मे.)

स्वर्जिकाकुष्ठसहितः क्षारः केतकीसंभवः।
पीतस्तैलेन शमयेद्वातगुल्मं सुदारुणम्॥

सज्जीखार, कूठ और केतकीका खार। इनके चूर्णको (एरण्ड) तेलके साथ पीनेसे भयानक वातगुल्म (वायगोले)का नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[७२९] केशरञ्जकः (भै. र. । क्षुद्र.)

त्रिफलानीलिनीपत्रं लौहभृङ्गरजः समम् ।
अविमूत्रेण संयुक्तं कृष्णीकरणमुत्तमम् ॥

त्रिफला, नीलके पत्ते, लोहेका बुरादा और भांगरा । सब समान भाग लेकर चूर्ण करें । इसे मेड़के मूत्रमें मिलाकर लेप करनेसे बाल काले हो जाते हैं । यह उत्तम खिजाब है ।[1]

[७३०] केशरयोगः (वृ. नि. र. । अश्म.)

पुराणाज्येन संपिष्टं पीतं सम्यग्दिनत्रयम् ।
कुंकुमं नाशयत्याशु देहिनां मेदूशर्कराः ॥

केशरको पुराने घीमें पीसकर ३ दिन तक पीनेसे मेढ्रशर्करा (पेशाबकी रेग) नष्ट हो जाती है।

[७३१] कोकम्बादिचूर्णम् (वृ.नि. र । संग्र.)

समूलपत्रकोकम्बं पलद्वयमितं शुभम् ।
मल्लातफलमज्जाया मरिचस्य पलं पलम् ॥
एतच्चूर्णीकृतं सूक्ष्मं भक्षयेत्कर्षसंमितम् ।
अर्शांकुरान्निहंत्याशु सबाह्याभ्यंतरानपि ॥

मूल और पत्र सहित कोकंब १० तोला, भिलावेकी गिरी और काली मिर्च ५-५ तोला । सबको महीन चूर्ण करके १। तोला प्रमाण मात्रानुसार सेवन करनेसे बवासीरके बाहरी और अन्दरुनी मस्से नष्ट होते है ।

---

१ लेप करने के बाद केले या अरण्डका पत्ता बांध देना चाहिये और उसे १२ घंटे बाद खोल कर बालोंको तेल लगा कर धो डालना चाहिये ।

[७३२] कोलास्थियोगः (वृ. नि. र. । अजी.)

कोलास्थिमज्जकल्कस्तु पीतो वाप्युदकेन वै ।
अचिराद्विनिहन्त्येनं प्रयोगो भस्मकं नृणाम् ॥

बेरकी गुठलीकी मींगी (गिरी) को पानीमें पीसकर पीनेसे भस्मक रोगका अत्यन्त शीघ्र नाश होता हैं ।

[७३३] कंचटादिचूर्णम् (च. पा. । अति.)

कंचटजम्बुभृङ्गाटकपत्रबिल्वबर्हिष्टम् ।
जलधरनागरसहितं गङ्गाम-
पिवेगवाहिनीं रुन्ध्यात् ॥

गजपीपल, जामनकी गुठली, सिघाड़ेके पत्ते, बेलगिरी, सुगन्धबाला, नागरमोथा और सोंठ । इनका चूर्ण प्रबल, वेगवान अतिसारको भी नष्ट कर देता है ।

[७३४] कंटकार्यादिचूर्णम् (१)

(च. पा.। बा. रो.)

पीतं पीतं वमेद्यस्तु स्तन्यं तं मधुसर्पिषा ।
द्विवार्ताकी फलरसं पञ्चकोलं च लेहयेत् ॥

यदि बचा बार बार दूध पीकर उल्टी कर देता हो तो उसे कटेली के फल के रस में पंचकोल (पीपल, पीपलामूल, चव, चित्ता और सोंठ)का चूर्ण एवं घी और शहद मिला कर चटाना चाहिये ।

[७३५] कंटकार्यादिचूर्णम् (२)

(वृ. नि. र. । कास.)

कंटकार्याः कणायाश्च चूर्णं समधु कासहृत् ॥

कटेली और पीपल के चूर्ण को शहद के साथ चाटने से खांसी का नाश होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ ककारादि गुटिकाप्रकरणम्

[७३६] कणादिवटी (१)

(रसे. चि. म. अ. ९)

कणावचादारुपुनर्नवानां चूर्णं
सबिल्वं समवृद्धदारकम् ।
संमर्द्य चैतस्य निहन्ति बल्लः
सकांजिकः श्लीपदमुग्रवेगम् ॥

पीपल, वच, देवदारु, पुनर्नवा, बेल, प्रत्येक १--१ भाग बिधारा सबके बराबर लेकर चूर्ण करके १--१ बल्ल (२--३ रत्ती) की गोलियां बनावें। इन्हें कांजी के साथ सेवन करने से श्लीपद का नाश होता है।

[७३७] कणादिवटी (२)

(वृ. नि. र. । वा. व्या.)

कणामूलं कणा दारु बिडंगं वह्निसैन्धवम् ।
सपुष्पा ह्यजमोदा च मरिचं समचूर्णकम् ॥
गुडाचितस्य तस्याथ गुटिका एकविंशतिः ।
भक्षितास्त्रिसप्ताहं मारुतं घ्नन्ति सर्वतः॥

पीपलामूल, पीपल, देवदारु, बायबिडंग, चीता, सेंधानमक, सोया, अजमोद और कालीमिर्च, सब चीजोंका चूर्ण समान भाग लेकर गुड़ में मिला कर २१ गोलियां बनावें। इन्हें २१ दिन तक सेवन करने से समस्त प्रकार के वात विकार नष्ट होते हैं।

[७३८] कनकावती वटी (र. र. । अर्श.)

शुद्धसूतं समं गन्धं तालसिन्धूत्थलाङ्गली ।
पलं तुम्बीफलैकैकं लशुनश्च चतुष्पलम् ॥
कारवेल्या द्रवैर्मर्द्यं दिनैकं वटकीकृतम् ।
गुंजामात्रं सदा खादेत्पायुजश्चापि नाशयेत् ॥
रक्तवातकफोत्थानि ह्यर्शांसि नाशयेद्ध्रुवम् ।
वटीकनकवतीनाम अनुपानं च कथ्यते ॥
भल्लातत्रिफलादन्तीवह्निचूर्णसमं समम् ।
सैन्धवं सर्वतुल्यं स्याद्भर्जयेत्खर्परे चिरम् ॥
मृद्वग्निना भवेत्सिद्धं कर्षं तक्रं पिबेन्नरः ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध हरताल, सेंधानमक, कलिहारी और तुम्बी का फल, प्रत्येक ५--५ तोला एवं लसहन २० तोला लेकर चूर्ण करके एक दिन तक करेले के रस में घोट कर १--१ रत्ती की गोलियां बनावें।

इनको सेवन करनेसे बवासीर, वातरक्त, विशेषतः कफज बवासीर का नाश होता है।

अनुपान---भिलावा, त्रिफला, दन्ती, चीता, प्रत्येक का चूर्ण समान भाग और सेंधानमक का चूर्ण सब के बराबर लेकर मिट्टी के ठीकरे में मन्दाग्नि पर बहुत समय तक भूनें। उपरोक्त (कनकावतीवटी) खाने के बाद १। तोला यह चूर्ण खाकर ऊपर से तक्र (छाछ) पियें।

[७३९] कफघ्नीवटी (वृ. नि. र. । कास.)

कर्पूरमर्धकर्षं मृगमदमपि देवकुसुमयुगम् ।
मरिचं कणाक्षकुलिंजनमेकैकं शुक्तिपरिमाणम् ॥
दाडिमफलवल्कलपलमखिलसमं
खदिरसारमवचूर्ण्य ।
वटिका मुद्गसमाना कृता धृतास्ये कफघ्नी स्यात् ॥

कपूर ७॥ माषा, कस्तूरी ७॥ माषा, लौंग २॥ तोला, काली मिर्च, पीपल, बहेड़ा और कुलिंजन प्रत्येक २॥--२॥ तोला, अनार के फलकी बकली (नासपाल) ५ तोला, खैरसार सब चीजों के समान लेकर मूंगके बराबर गोलियां बनावें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इन्हें मुंह में रखने से कफका नाश होता है।

[७४०] करञ्जबीजवर्ती

(वृ. नि. र; ग. नि; बृ. यो. त. ७१; वृ. मा.)

पलाशपुष्पस्वरसैर्बहुशःपरिभाविता।
करञ्जबीजं तद्वर्ति र्दृष्टेः पुष्पं विनाशयेत् ॥

करंजवेके बीजोंको ढाकके फूलोंके रसकी अनेक भावना देकर वर्ति बनावें। इसे नेत्रों में आंजने से नेत्रपुष्प (फूला) नष्ट होता है।

[७४१] कर्पूरवर्तिः (वृ. नि. र.। मूत्राघा.)

कर्पूररजसा युक्ता वस्त्रवर्तिः शनैः शनैः।
मेढ्मागान्तरे न्यस्ता मूत्राघातं व्यपोहति ॥

कपूरके चूर्णके साथ कपड़ेकी× बत्ती बनाकर उसे धीरे २ मूत्रमार्ग में पहुंचानेसे मूत्राघात (पेशाब बन्द होना) नष्ट होता है।

[७४२] कर्पूरसुन्दरी वटिका

(र. प्र. सु. अ. ८)

कर्पूरजातीफलजातिपत्रिका
धत्तूरबीजं जलराशिशोषणम्।
आकल्लकं व्योषमिदं समांशं
द्वीपान्तरोत्था च कुबेराक्षम् ॥
सर्वौषधार्धा विजया प्रदिष्टा
जीर्णाहिफेनं च तथा समानम्।
तदर्धभागं खलु वत्सनाभं
स्यादेकतश्चात्र विधाय चूर्णम् ॥
तद्भावितं भृङ्गरसेन सम्यक्
कोलास्थिमात्रा गुटिका विधेया।
सा शीतवाते ग्रहणीगदे च
अर्शोविकारे प्रबलातिसारे ॥
मन्दे च वह्नौ स्मरपुष्टिकर्त्री
साऽऽफेनसेवाकुलमुक्तिदात्री ॥

कपूर, जायफल, जावित्री, धतूरेके बीज, समन्दरसोख, अकरकरा, त्रिकुटा, वच और कर्रजवा। सब चीजें समान भाग। शुद्ध भांग सबके वजनसे आधी, पुरानी अफीम भांगके बराबर और भांगसे आधा शुद्ध मीठातेलिया मिलाकर चूर्ण करके भांगरेके रसमें घोटकर बेरकी गुठलीके बराबर गोलियां बनावें।

इनके सेवनसे शीतवात, संग्रहणी, बवासीर, प्रबल अतिसार, अग्निमांद्य और अफीमकी आदत दूर होती है एवं काम शक्ति बढ़ती है।

[७४३] कलिंगाद्यगुटिका (धन्व.। ज्व.)

कलिंगबिल्वजम्बाम्रकपित्थं सरसाञ्जनम्।
लाक्षा हरिद्रे ह्रीबेरं कट्फलं शुकनासिकाम् ॥
लोध्रं मोचरसं शंखं धातकीं वटशुङ्गकम्।
पिष्ट्वा तण्डुलतोयेन वटकानक्षसम्मितान् ॥
छायाशुष्कान् पिबेच्छीघ्रं ज्वरातिसारशान्तये।
रक्तप्रसादनाश्चैते शूलातिसारनाशनाः ॥

इन्द्रजौ, बेलगिरी, जामनकी गुठली, आमकी गुठली, कैथ, रसौत, लाख, हल्दी, दारु हल्दी, सुगन्धबाला, कायफल, काकतुण्डी, लोध, मोचरस, शंखकी भस्म, धायके फूल और बड़के अंकुर।

सब चीजें समान भाग लेकर चावलोंके पानीमें पीसकर १।–१। तोला वटक बनाकर छायामें सुखावें। इन्हें सेवन करनेसे ज्वरातिसार और शूलयुक्त अतिसारका शीघ्र नाश होता है। एवं रक्त शुद्ध होता है।

[७४४] कल्पलतावटी (भै. र.। ग्रह.)

अमृतं हिंगुलं धूर्तबीजं द्वादशरक्तिकम्।
प्रत्येकमहिफेनञ्च षट्त्रिंशद्रक्तिकं नयेत् ॥

× कपड़ेकी बत्तीके बजाय दूर्वाघासके साफ डंठलसे काम लेना उचित प्रतीत होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

**पिष्ट्वा दुग्धेन गुञ्जैकां वटीं दुग्धेन पाययेत्।
दुग्धं पाने भोजने च देयं न लवणं जलम् ॥
ग्रहणीं चिरकालीनां हन्ति शोथं सुदुर्जयम्।
चिरज्वरं पांडुरोगं नाम्ना कल्पलता वटी ॥**

शुद्ध मीठा तेलिया, शुद्ध शंगरफ, धतूरेके बीज, प्रत्येक १२–१२ रत्ती। अफीम ३६ रत्ती। सबको दूधमें पीसकर १–१ रत्तीकी गोलियां बनावें।

इन्हें दूधके साथ सेवन करने और आहार पान आदिमें केवल दूध ही देनेसे और लवण तथा जल वर्जित करनेसे पुरानी संग्रहणी, दुस्साध्य शोथ, पुराना ज्वर और पाण्डु नष्ट होता है।

[७४५] कल्याणगुटिका(च. सं. क. अ. ७)

**विडङ्गपिप्पलीमूलत्रिफलाधान्यचित्रकम्।
मरिचेन्द्रयवाजाजीपिप्पलीहस्तिपिप्पली ॥
लवणान्यजमोदा च चूर्णितं कार्षिकं पृथक्।
तिलतैलत्रिवृच्चूर्णभागौ चाष्टपलोन्मितौ ॥
धात्रीफलरसप्रस्थीस्त्रीन् गुडार्द्ध तुलां तथा।
पक्त्वा मृद्वग्निना खादेद्बदरोदुम्बरोपमान् ॥
गुडान् कृत्वा न चास्य स्याद्विहाराहारयन्त्रणा।
कुष्ठार्शः कामलामेहगुल्मोदरभगन्दरम् ॥
ग्रहणीपांडुरोगांश्च हन्युः पुंसवनाश्च ते।
कल्याणका इतिख्याताः सर्वेष्वृतुषु यौगिकाः ॥**

बायविडंग, पीपलामूल, त्रिफला, धनिया, चीता, काली मिर्च, इन्द्रजौ, जीरा, पीपल, गजपीपल, पांचों नमक और अजमोद। प्रत्येकका चूर्ण १।–१। तोला। तिलका तेल ४० तोला, निसोतका चूर्ण ४० तोला, आमलेका रस ३ सेर और गुड़ २५० तोला लेकर आमलेके रसमें गुड़की चाशनी बनाकर उसमें अन्य औषधियोंका चूर्ण मिलाकर बेर या गुलरके समान गोलियां बनावें।

यह प्रत्येक ऋतुमें बिना किसी प्रकारके परहेजके सेवन की जा सकती हैं। इनके सेवनसे कुष्ठ, बवासीर, कामला, प्रमेह, गुल्म, उदररोग, भगन्दर, संग्रहणी और पाण्डुका नाश होता तथा पुंसत्व शक्ति बढ़ती है।

[७४६] कस्तुरिगुटिका (नपुंसकामृत)

**स्वर्णश्च मृगनाभिश्च रौप्यकाश्मीरिकौ तथा।
लघ्वीमेलां जातिफलं तुगाक्षीरीं तथैव च ॥
जातिपत्रीं च संचूर्ण्य भागवृद्धया प्रयोजयेत्।
अजादुग्धे च संपिश्य नागवल्लीरसे तथा ॥
दिनत्रयं विमर्द्याथ युग्मगुञ्जा समा वटी।
सन्तानिकायुतं भुक्तं रेतः क्षयनिवारणम् ॥
मधुना मेहनाशाय शैथिल्ये पर्ण संयुतम्।
गुटिकां भक्षयेद्धीमान् धातुसञ्जीवनीं शुभाम् ॥**

सोना भस्म १ भाग, कस्तूरी २ भाग, चांदी भस्म ३ भाग, केसर ४ भाग, छोटी इलायची ५ भाग, जायफल ६ भाग, बंसलोचन ७ भाग, जावित्री ८ भाग, लेकर ३–३ दिन तक बकरीके दूध और पानके रसमें घोटकर २–२ रत्तीकी गोलियां बनावें।

इन्हें मलाईके साथ सेवन करनेसे शुक्रक्षय, शहदके साथ सेवन करनेसे प्रमेह और पानमें रख-कर खानेसे शैथिल्य (सुस्ती) नष्ट होती है।

[७४७] काकणघ्नवटी (र. र. । कुष्ठे)

**लोहभस्मविषं वह्निकटुक त्रिकटुत्रयम्।
तुल्यांशं चूर्णितं भाव्यं क्वाथेनानेन तद्दिनम् ॥
पथ्यानिंबविडंगानि खदिरं वासकामृता।
जलैरष्टावशेषन्तु कषायं भावने हितम् ॥
माषमात्रं लिहेत्क्षौद्रैः काकणं हन्ति तद्वटी।
इन्द्रवारुणिकामूलं वागुचीत्रिफलाग्निकान् ॥
निम्बश्च वह्निं शुण्ठीश्च मरिचं चूर्णयेत्समम्।
गौमूत्रैः पाययेत्कर्षमनुपानेन भक्षयेत् ॥**

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोह भस्म, शुद्ध मीठातेलिया, चीता, कुटकी, त्रिफला, त्रिमद (चीता, नागर मोथा और बायबिडंग) और त्रिकुटे का चूर्ण समान भाग लेकर, हैड़, नीम, बायबिड़ंग, खैर, बांसा और गिलोय के अष्टावशेष (इन सबको एकत्र करके आठगुने पानीमें पकाकर आठवां भाग बचे हुवे) कषायमें १ दिन तक घोटकर १–१ माशेकी गोलियां बनावें।

इन्हें शहदके साथ सेवन करनेसे काकण (कुष्ट भेद) का नाश होता है।

इस औषधिको खानेके बाद इन्दरायनकी जड़, बाबची, त्रिफला, चीता, नीम, भिलावा, सोंठ और काली मिर्च का चूर्ण १। तोला खाकर ऊपरसे गोमूत्र पीना चाहीये।

[७४८] काकजंघादिवटी

(वृ. नि. र. । स्व. भे.)

काकजंघा वचाकुष्ठं पिप्पली मधुसंयुतम्।
सप्तरात्रं मुखे धार्यं किन्नरैः सह गीयते॥

काकजंघा, बच, कूठ और पीपलके चूर्णको शहदमें मिलाकर गोलियां बनावें। इन्हें मुंहमें रखनेसे स्वर मधुर होता है।

[७४९] काङ्कायनगुटिका (१)

(यो. र.। अर्श; ग. नि. गु. ४। यो. चि. म. अ. ३। च. द., वं. से.)

पथ्यादलस्य पलपञ्चकमेकमेव-
मेकं पलं तु मरिचादपि जीरकस्य।
कृष्णातदुद्भवजटा चविकाग्निशुंठ्यः
कृष्णादिपञ्चकमिदं पलतः प्रवृद्धम्॥
पलाष्टभल्लातकसंप्रयुक्तं
कन्दस्त्वरुष्करफलाद्द्विगुणः प्रकल्प्यः।
क्षारायवशूककृडवार्धमतः समस्तै-
र्योज्यो गुडो द्विगुणितो वटकीकृतश्च॥
काङ्कायनेन मुनिना वटकः क्रियाय
मुक्तः प्रजाहिततमेन गुदामयघ्नः।
क्षाराग्निशस्त्रपतनेरपि ये न सिद्धाः
सिध्यन्त्यनेन वटकेन गुदामयास्ते॥

हैड़की बकली २५ तोला, काली मिर्च और जीरा ५–५ तोला, पीपल ५ तोला, पीपलामूल १० तोला, चव १५ तोला, चीता २० तोला, सोंठ २५ तोला, शुद्ध भिलावे ४० तोला, जमीकन्द १ सेर, यवक्षार १० तोला और गुड़ सबके वजनसे २ गुना लेकर यथा विधि वटक बनावें।

इन्हें सेवन करनेसे क्षार, शस्त्र, अग्नि आदिसे भी आराम न हो सकने वाली अत्यन्त दुस्साध्य बवासीर भी नष्ट हो जाती है।

[७५०] काङ्कायनगुटिका (२)

(शा. ध. म. खं. अ. ७)

यवानी जीरकं धान्यं मरीचं गिरीकर्णिका।
अजमोदोपकुंची च चतुःशाणा पृथक्पृथक्॥
हिंगु षट्शाणिकं कार्यं क्षारौ लवणपञ्चकम्।
त्रिवृच्चाष्टमितैः शाणैः प्रत्येकं कल्पयेत् सुधीः॥
दंती शठी पौष्करं च विडङ्गं दाडिमं शिवा।
चित्राम्लवेतसः शुंठी शाणैः षोडशभिः पृथक्॥
बीजपूररसेनैषां गुटिकाः कारयेद्बुधः।
घृतेन पयसा मद्यैरम्लैरुष्णोदकेन वा॥
पिबेत्कांकायनप्रोक्तां गुटिकां गुल्मनाशिनीम्।
मद्येन वातिकं गुल्मं गोक्षीरेण च पैत्तिकम्॥
[illegible]ण कफगुल्मं च दशमूलैस्त्रिदोषजम्।
उष्ट्रीदुग्धेन नारीणां रक्तगुल्मं निवारयेत्॥
हृद्रोगं ग्रहणीं शूलं कृमीनर्शांसि नाशयेत्।

अजवायन, जीरा, धनिया, कालीमिर्च, श्वेत अपराजिता (कोयल) अजमोद और कलौंजी प्रत्येक १६–१६ माषा, हींग २ तोला, यवक्षार, सुहागे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की खील, पांचोलवण और निसोत प्रत्येक ३२-३२ माषा। दन्ती, कपूर कचरी, पोखरमूल, बायविडंग, अनारदाना, हैड़, चीता, अमलबेत और सोंठ प्रत्येक ६४-६४ माषा। सब चीज़ोंका चूर्ण करके बिजौरे नीबूके रसमें घोटकर गोलियां बनावें।

इन्हें घृत, दूध, मद्य, कांजी या गरम पानीके साथ सेवन करनेसे गुल्मका नाश होता है। मद्यके सेवन करने से वातज गुल्म, गो-दुग्धके साथ पित्तज, गोमूत्रके साथ कफज, दशमूलके क्वाथके साथ त्रिदोषज और ऊँटनीके दूधके साथ सेवन करनेसे स्त्रियोंका रक्तगुल्म नष्ट होता है। यह गोलियां हृद्रोग, ग्रहणी, शूल, क्रिमि और बवासीर का भी नाश करती हैं।

[७५१] काङ्कायन गुटिका (३)

(च. द. गुल्मे)

शठीं पुष्करमूलं च दन्तीं चित्रकमाढकीम्।
शृङ्गवेरं वचां चैव पलिकानि समाहरेत्।
त्रिवृतायाः पलं चैव कुर्यात् त्रीणि च हिंगुनः।
यवक्षारपले द्वे च द्वे पले चाम्लवेतसात् ॥
यमान्यजाजी मरिचं धान्यकं चेति कार्षिकम्।
उपकुञ्च्यजमोदाभ्यां तथा चाष्टमिकामपि ॥
मातुलुङ्गरसेनैव गुटिकाः कारयेद्भिषक्।
तासामेकां पिबेद् द्वे च तिस्रो वापि सुखाम्बुना ॥
अम्लैश्च मद्यैर्यूषैश्च घृतेन पयसाथवा।
एषा कांकायनेनोक्ता गुडिका गुल्मनाशिनी ॥
अर्शोहृद्रोगशमनो क्रिमिणां च विनाशिनी।
गोमूत्रयुक्ता शमयेत्कफगुल्मं चिरोत्थितम्।
क्षीरेण पित्तगुल्मं च मद्यैरम्लैश्च वातिकम्।
त्रिफलारसमूत्रैश्च नियच्छेत्सांन्निपातिकम्॥
रक्तगुल्मे च नारीणामुष्ट्रीक्षीरेणपाययेत्।

कपूरकचरी, पोखरमूल, दन्ती, चीता, अरहर, अदरक, बच और निसोत प्रत्येक ५-५ तोला, हींग १५ तोला, जवाखार १० तोला, अम्लवेत १० तोला, अजवायन, जीरा, कालीमिर्च और धनिया प्रत्येक १।-१। तोला। कलौंजी और अजमोद २।।-२।। तोला। सबका चूर्ण करके बिजौरे नीबूके रसमें घोटकर गोलियां बनावें।

इनमेंसे १-२ या ३ गोली प्रतिदिन अल्प गरम पानी, कांजी, मद्य, यूष, घृत या दूधके साथ सेवन करनेसे गुल्म, बवासीर, हृद्रोग और क्रिमि नष्ट होते हैं।

गोमूत्रके साथ सेवन करनेसे पुराना कफज गुल्म, दूधसे पित्तज गुल्म और मद्य तथा कांजीके साथ सेवन करनेसे वातज गुल्म नष्ट होता है। त्रिफलाके क्वाथ या गोमूत्रके साथ सेवन करनेसे सन्निपात गुल्म और ऊँटनी के दूध के साथ सेवन करने से स्त्रियोंका रक्त गुल्म नष्ट होता है।

[७५२] कामदेववटी

(वृ. यो. त. १४७ त.)

कुष्ठं कट्फलं सैन्धव त्रिकटुकं मेथीयवानीद्वयम्
वासामोचरसं विदारिमुसलीजातीफलं चित्रकम्॥
जीरं चापरजीरकं गजकणाद्राक्षाभयावानरी।
तालीसं त्रिसुगन्धिकं त्रिलवणं वैभीतकंमृङ्गिका॥
रम्भाकन्दशतावरीद्वयशटीयष्टीप्रियालामृता।
जातिपत्रलवङ्गकेसरजलं गोक्षुरकं शाल्मली ॥
धात्रीमाषपुनर्नवाश्च कनकं शृङ्गाटकं मस्तकी॥
मांसी चापी बलात्रयं च नलदं
मार्गीभकर्णस्तिलाः।
कङ्कोलं करहाटकं च विजयः श्रीरुग्रगन्धा कुहू-
मज्जा पद्मकबीजमेतदखिलं चूर्णीकृतं स्निग्धकम्
एतत्कर्षमितं पृथक्पृथगथो तुर्यांशतुल्यां जयाम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस्या अर्धमितं मृताभ्रकमहो वङ्गं तदर्धं क्षिपेत्॥
लोहं मारितमेतदर्धममलं सूतं तदर्धं मृतं ।
सर्वेभ्योद्विगुणासिताऽथ-
मधुनाचाऽऽज्येनसंमिश्रयेत् ।
कार्यास्तस्य पलार्धमानवटिकाः खादेद्यथाग्निप्रगे
नक्तं चापि जराविपत्तिशमनीमेकां
च दुग्धं पिबेत् ॥
एषा सौगतिसिंहनामभिषजा
लोके प्रकाशीकृता ।
हम्मीराय महीभुजे शतवधू-
संभोगभाजे भृशम् ॥
एषा वीर्यकरी महाभयहरी
क्षुद्बोधतेजस्करी ।
कान्तिस्थौल्यमतिप्रकाशजननी
चित्तामयध्वंसिनी ॥
तारुण्योद्धतकामिनी जनमहा-
दर्पद्विषानां महासिंही
सर्वमनोविनोदनवती श्रीकामदेवाभिधा ॥

कूठ, कायफल, सेंधा, त्रिकुटा, मेथी, अजवायन, अजमोद, वांसा, मोचरस, विदारीकन्द, मूसली, जायफल, चीता, ज़ीरा, कालाज़ीरा, गजपीपल, दारव, हैड़, कौंच, तालीसपत्र, दालचीनी, इलायची, तेजपात, सेंधानमक, काला नमक, बिडलवण, बहेड़ा, काकड़ासींगी, केलेकी मूसली, शतावर, असगन्ध, कपूरकचरी, मुल्हैठी, पियाल, गिलोय, जावित्री, लौंग, केसर, सुगन्धवाला, गोखरू, सेंभल, आमला, उड़द, विसखपरा (पुनर्नवा) धतूरे के बीज, सिंघाड़ा, मस्तगी, जटामासी, बला, अतिबला, नागबला, नलद, भारङ्गी, हस्तिकर्ण, तिल, कङ्कोल, आकरकरा, भांग, बेल, वच, काहू, कमलगट्टे । प्रत्येक का महीन चूर्ण १।-१। तोला, शुद्ध भांग सब के वज़न से चौथाई । अभ्रक भस्म भांग से आधी, अभ्रक भस्मसे आधी बंग भस्म, बंगसे आधी लोहभस्म और लोहसे आधा रस सिंदूर एवं सब के वजन से २ गुनी खांड । सब को शहद और घीमें मिलाकर २॥-२॥ तोलेकी गोलियां(गोले) बनावें।

इन्हें यथाग्नि बलानुसार सुबह और रात को दूध के साथ सेवन करें, यह जरा नाशक, अत्यन्त वाजीकर, वीर्य, क्षुधा, तेज, कान्ति और स्थूलता वर्द्धक तथा (चित्त विभ्रम आदि) मानसिक रोग नाशक, मदमत्त तरुण कामिनियों का मदभंजन करनेवाली एवं मनोविनोदकारी है। यह औषधि महाराज 'हम्मीर' के लिये बनवाइ गई थी।

[७५३] कामसुन्दरो मोदकः

(वृ. यो. त. १४७ त.)

मेथी गूडूची मुषली शटी च
विदारिकन्दस्त्रिसुगन्धिसिन्धुः ।
धात्रीलवङ्गेक्षुरगोक्षुराश्च
शतावरी मोचरसश्च पर्ण्यः ॥
कृष्णाश्वगन्धाकदलीजकन्द
नागाह्वजातीफलजातिपत्रम् ।
शृङ्गीधनीयाह्वयकट्फलं च
चूर्णान्मृताभ्रं द्विगुणं नियोज्यम्
सर्वेतुर्याशविजया सर्वद्विगुणशर्करा ।
पिण्डि च मधुसर्पिभ्यां
माषौ टण्कोऽथ वा मितिः ॥

मेथी, गिलोय, मूसली, कपूरकचरी, विदारीकन्द, तेजपात, दालचीनी, इलायची, सेंधा, आमला, लौंग, तालमखाना, गोखरू, शतावर, मोचरस, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, पीपल, आसगन्ध, केलेकी मूसली, नागकेसर, जायफल, जावित्री, काकड़ासींगी, धनिया और कायफल ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सब चीज़ोंका चूर्ण समान भाग। अभ्रक भस्म सबसे २ गुनी। शुद्ध भांग सबसे चौथाई और इन सबसे २ गुनी खांड मिलाकर शहद और घीके साथ मोदक बनावें। मात्रा २ माशेसे ४ माशे तक।

[७५४] कामाग्निसंदीपनो मोदकः

(यो. र. वाज़ी.)

कर्षो रसो गन्धकमभ्रमं च
द्विक्षारचित्रं लवणानि पञ्च।
शटीयवानीद्वयकीटहारि
तालीशपत्राणि परं विषं च॥
जीरं चतुर्जातलवङ्गजाती-
फलं च कर्षत्रयमेवमन्यत्।
सुवृद्धदारं कटुकत्रयं च
तथा चतुष्कर्षमिदं निबोध॥
धान्याकयष्टीमधुकंकसेरु-
फलं पृथक्पञ्चपलं *विदारी
दन्ती कणा चातिबलात्मगुप्ता
बीजं तथा गोक्षुरकस्य बीजम्॥
सबीजपूरेन्द्ररजः समानं
समा सिता क्षौद्रयुतं च ×तुल्यम्।
कर्षैकमिन्दोरथमोदकं च
कामाग्निसंदीपनमेनमाहुः॥
वृष्यं तथा परतरं सततं सदीप्य-
मेनं निषेव्य मनुजः प्रमदासहस्रम्।
गच्छेन्न लिंगं शिथिलत्वमेव
नागाधिपं विजयते बलतः प्रमत्तः॥
वातानशीतिमथ पित्तभवांश्च रोगान्
श्लेष्मोत्थविंशतिरुजः परमाग्निमान्द्यम्।
दुर्वारिकामलभगंदरपाण्डुरोगान्
मेहातिसारकृमिहृद्ग्रहणीविकारान्॥
कासज्वरश्वसनयक्ष्मकफप्रतिश्याय
शूलामवातसहिताश्च रुजः समस्ताः।
हत्वा गदान्बहुविधांस्तदपत्यकारी
सर्वत्रपथ्यमथ सर्वसुखप्रदायी॥
बल्यं वलीपलितहारी रसायनं
स्यान्मूलं तदेव कथितं परमं पवित्रम्॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, अभ्रकभस्म, जवाखार, सज्जीखार, चीता, पांचों नमक, कपूरकचरी, अजवायन, अजमोद, बायबिड़ंग, तालीसपत्र, शुद्ध मीठा तेलिया, ज़ीरा, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर, लौंग और जायफल प्रत्येक १।-१। तोला। विधारा और त्रिकुटा ३॥-३॥ तोला, धनिया, मुल्हैठी और कसेरू प्रत्येक ५-५ तोला, विदारीकन्द, दन्ती, पीपल, गंगेरन, कौंचके बीज और गोखरू प्रत्येक २५-२५ तोला, बिजौरा और इन्द्रजौ का चूर्ण सबके बराबर। खांड और शहद प्रत्येक सब चूर्णके बराबर। कपूरका चूर्ण १। तोला लेकर यथाविधि मोदक बनावें।

यह मोदक अत्यन्त कामवर्द्धक और वृष्य हैं इसे अजवायनके चूर्णके साथ सेवन करनेसे अत्यन्त संभोगशक्ति प्राप्त होती है।

यह ८० प्रकारके वातज रोग, पित्तजरोग, २० प्रकारके कफज रोग, अत्यन्त अग्निमांद्य, दुस्साध्य कामला, भगंदर, पांडु, प्रमेह, अतिसार, कृमि, हृद्रोग, ग्रहणी विकार, खांसी, ज्वर, श्वास, राजयक्ष्मा, कफज प्रतिश्याय (ज़ुकाम) शूल और आमवात आदि अनेक रोगनाशक, सन्तानोत्पादक, सर्वत्र पथ्य, सुखदायी, बल्य, बली पलित नाशक एवं रसायन है।

* वरी विदारी। बलेभकर्णभबलात्मगुप्ताफलं तथेति पाठान्तरम्।
× घृतञ्चेति वा पाठः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[७५५] **कामेश्वरो मोदकः (१)** (भै.र.। ग्रह.)

स सम्यङ्मारितमभ्रकं कट्फलं
कुष्ठाश्वगन्धामृता ।
मेथीमोचरसो विदारिमुषली
गोक्षुरकश्चेक्षुरः ॥
रम्भाकन्दशतावरीत्वजमोदा
मांसीतिलाधान्यकम् ।
शटीनागबलाकर्चूरमदनं
जातीफलं सैन्धवम् ॥
भार्गी कर्कटशृङ्गिकं त्रिकटुकं
जीरद्वयं चित्रकम् ।
चातुर्जातपुनर्नवागजकणा
द्राक्षाशटी बालकम् ॥
शाल्मल्यंघ्रिफलत्रिकं कपिभवं
बीजं समं चूर्णयेत् ।
चूर्णांशाविजयासिताद्विगुणिता
मध्वाज्ययोः पिण्डितम् ॥
कर्षांशागुडिकार्धकर्षमथवा
सेव्या तदा कामिभिः ।
सेव्यं क्षीरसितं सुवीर्यकरणं
स्तम्भेऽप्ययं कामिनाम् ॥
वामावश्यकरः सुखातिसुखदो बह्वङ्गनाद्रावणः ।
क्षीणेपुष्टिकरः क्षतक्षयहरो
हन्याच्चसर्वामयान् ॥
कासश्वासमहातिसारशमनः कामाग्निसंदीपनो।
दुर्नामग्रहणी प्रमेहनिवहश्लेष्मातिरेकप्रणुत् ॥
नित्यानन्दकरो विशेष कविता
वाचां विलासोद्भवाम् ।
धत्ते सर्वगुणं महास्थिर-
मतिर्बालो नितान्तोत्सवः ॥
अभ्यासेन निहन्ति मृत्युपलितं
कामेश्वरो वत्सरात् ।
सर्वेषां हितकारणानि गदितः
श्री नित्यनाथेन सः ॥
वृद्धानां मदनोदयोदयकरः
प्रौढांगनासंगमे ।
सिद्धोऽयं समदृष्टिप्रत्ययकरो
भूपैःसदासेव्यताम् ॥

(तत्रान्तरेऽस्य महाकामेश्वर संज्ञा)

अभ्रककी उत्तम भस्म, कायफल, कूठ, असगन्ध, गिलोय, मेथी, मोचरस, विदारीकन्द, मूसली, गोखरू, तालमखाना, केलेकी मूसली, शतावर, अजमोद, जटामांसी, तिल, धनिया, कपूरकचरी, गंगेरन, कचूर मैनफल, जायफल, सेंधा, भारंगी, काकड़ा सींगी, त्रिकुटा, जीरा, कालाजीरा, चीता, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर, पुनर्नवा (साठी) गजपीपल, दाख, कपूरकचरी, सुगन्धवाला, सेंभल की मूसली, त्रिफला और कौंच के बीज। सब चीजें समान भाग। शुद्ध भांग*सबके बराबर और खांड सबसे दुगुनी। खांडकी चाशनी करके उसमें सब चीजोंका चूर्ण मिलावें और फिर ठंडा होनेपर शहद और घी मिलाकर १।--१। तोले या ७॥--७॥ माषेके मोदक बनावें।

यह कामी पुरुषों के सेवन करने योग्य, स्तम्भक, वशीकरण, अत्यन्त सुखदायक, कामिनी विद्रावक, पौष्टिक, क्षत और क्षयनाशक, खांसी, श्वास, घोर अतिसार नाशक, कामाग्नि सन्दीपक, बवासीर, संग्रहणी, प्रमेह और कफनाशक तथा वाग्वर्द्धक हैं। एवं इनके सेवनसे अकाल मृत्यु और पलित आदि रोग नष्ट होते हैं। यह सब के लिये

* **भांगको भले प्रकार धो लेना चाहिये।**

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हितकारी वृद्धों के लिये कामोत्तेजक और राजाओं के सेवन करने योग्य हैं। अन्य ग्रन्थों में इसीका नाम महाकामेश्वर लिखा है।

अनुपान—दूध, मिश्री।

[७५६] कामेश्वरो मोदकः (२) (भै.र.। मह.)

धात्रीसैन्धवकुष्ठकट्फलकणा शुंठीयमानाद्वयम्
यष्टीजीरकयुग्मधान्यकशटी शृङ्गीवचाकेशरम्।
तालीशं त्रिसुगन्धिकं
समरिचं पथ्याक्षमेभिःसमम्॥
चूर्णीकृत्यमनाक् स्वबीजसहितं
भृष्ट्वा तु शक्राशनम्।
सर्वेषां द्विगुणां सितां
सुविमलां यत्नाद्भिषङ्निःक्षिपेत्।
क्षौद्रञ्चापिघृतं प्रशस्तदिवसे
कुर्याच्छुभान्मोदकान्।
कर्पूरैरवचूर्णितानपिहितान्
दत्त्वातिलान् भर्जितान्॥
गोप्योऽय क्षितिमण्डले
मितधियां पाषण्डिनामग्रतः॥
आधिव्याधिहरस्तयाक्षयहरः
कुष्ठापहो बृंहणः।
स्त्रीणां तोषकरोमुखद्युतिकरः शुक्राग्निवृद्धिप्रदः॥
कासश्वासबलासरोगनिचयप्रध्वंसनः प्राणिनाम्।
प्रोक्तो ब्रह्मसुतेन सर्वसुखदः कामेश्वरो मोदकः॥
ग्रहगणपरिहीनः सर्वशास्त्रप्रवीणः
कलितविमलकीर्तिः प्राप्तकन्दर्पमूर्तिः।
विगतसकलभीतिर्गीतवाद्याङ्गनीति-
र्भवति भुवि स देवो येन भक्तः प्रयत्नात्॥
रहसियुवतिखेलासम्पुटाकर्षहर्षाद्
गमयति युवतीनां केलिकौतूहलेन।
यदिकथमपिभुक्तो भोजनादावथान्ते
सुरतरभसमुख्यैर्नष्टकामं प्रकामम्॥
यस्माकव्यबृहस्पतिस्तनुधिया
यस्मात् सदावीर्यवान्।
यस्मादुन्मददाक्षिणात्ययुवती-
सम्भोग कौतूहली॥
यस्मात्काव्यकुतुहलं सुकविता
संजायते लीलया।
श्रीमद्भिः प्रतिवारं क्षितितले
संसेव्यतां मोदकः॥

आमला, सेंधा, कूठ, कायफल, पीपल, सोंठ, अजवायन, अजमोद, मुल्हैठी, जीरा, काला जीरा, धनिया, कपूरकचरी, काकड़ा सींगी, बच, नागकेसर, तालीसपत्र, दालचीनी, इलायची, तेजपात, काली मिर्च, हैड़ और बहेड़ा। प्रत्येकका चूर्ण समान भाग। बीज सहित भुनी हुई भांगका चूर्ण सबके समान, चीनी सबसे दोगुनी। खांडकी चासनी करके उसमें सब चीजोंका चूर्ण और घी तथा शहद मिलाकर यथाविधि मोदक बनावें एवं उसके ऊपर कपूर तथा भुने हुवे तिलोंका चूर्ण लगावें।

यह पाखण्डियों और अल्पबुद्धि वाले मनुष्यों से छिपाने योग्य, आधि व्याधि हर, क्षय नाशक, कुष्ठ नाशक, बृंहण, स्त्रियोंको सन्तुष्ट करने वाला, सौन्दर्य वर्द्धक, कामाग्नि दीपक, खांसी, श्वास और कफरोग नाशक है।

इसके सेवनसे ग्रहदोष नष्ट होते हैं। एवं मनुष्य सर्व शास्त्रों में प्रवीण, कीर्तिवान, काम देव तुल्य सुन्दर, निडर, गीतवाद्यादिमें निपुण हो जाता है। सारांश यह कि यह मोदक अनेक रोगनाशक और अतीव काम वर्द्धक हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[७५७] कारव्यादि गुटिका (यो. र. । अरु.)

कारव्यजाजिमरिचं द्राक्षावृक्षाम्लदाडिमम् ।
सौवर्चलं गुणः क्षौद्रमेषां कार्या वटी शुभा ॥
बदरास्थिमिता साऽऽस्ये धार्याऽरोचकनाशिनी ॥

कलौंजी, जीरा, काली मिर्च, दाख, इमली, अनारदाना, सैंचल (काला नमक) गुड़ और शहद इनमेंसे चूर्ण योग्य औषधियोंका चूर्ण करके फिर सबको एकत्र मिला कर बेरकी गुठलीके बराबर गोलियां बनावें।

इन्हें मुंहमें रखनेसे अरुचि दूर होती है।

[७५८] कार्पासमज्जागुटी

(वृ. नि. र. । संग्रह., वै. र. अर्शो.)

कार्पासमज्जा लशुनं खर्जिकाक्षारहिंगुकम् ।
घृतेन कोलमात्रा हि गुटिकार्शो विनाशिनी ॥

बिनौलेकी गिरी, ल्हसन, सज्जीखार और हींग। सब समान भाग लेकर पीसकर घीके साथ बेरके बराबर गोलियां बनावें। इनके सेवनसे बवासीरका नाश होता है।

[७५९] कासकर्तरीगुटिका

(वृ. यो. त. । ७८ त.)

रंगं कृष्णाभयाक्षारं रूषमार्गी क्रमोत्तरा ।
तत्समं खादिरं सारं बब्बूलक्काथभावितम् ॥
एकविंशतिवारांश्च मधुनाऽक्षमितागुटी ।
कासं श्वासं क्षयं हिक्कां हन्त्यत्येषा कासकर्तरी ॥

बंगभस्म १ भाग, पीपल २ भाग, हैड़ ३ भाग, यवक्षार ४ भाग, बांसा ५ भाग, भारंगी ६ भाग और खैर सार २१ भाग। सबको बबूलके काथकी २१ भावना देकर शहदके साथ १।-१। तोलाकी गोलियां बनावें।

इनके सेवनसे खांसी, श्वास, यक्ष्मा और हिचकीका नाश होता है।

[७६०] कासहरीवटी (व्या. यो. सं.)

पिप्पली पिप्पलीमूलं वासा द्राक्षा हरीतकी ।
मधुना वटिका चैषा पञ्चकासनिवर्हिणी ॥

पीपल, पीपलामूल, बासा, दाख और हैड़। सबका समान भाग चूर्ण लेकर शहदके साथ गोलियां बनावें।

इनके सेवनसे पांच प्रकारकी खांसी नष्ट होती है।

[७६१] कासादिहरीवटी (व्या. यो. सं.)

भारंगी शुण्ठयतिविषा पथ्यानां मधुना वटी ।
खादेत् सायं प्रभाते च कासश्वासविनुत्तये ॥

भारंगी, सोंठ, अतीस और हैड़। प्रत्येकका चूर्ण बराबर लेकर शहदमें मिलाकर गोलियां बनावें। इन्हें सुबह और शाम खानेसे खांसी और श्वासका नाश होता है।

[७६२] कासीसादिगुटी (वृ. नि. र. । मुख.)

कासीसं हिंगु सौराष्ट्री देवदारु समं जलैः ।
गुटिकां धारयेद्दंतकृमिशूलहरां पराम् ॥

कसीस, हींग, फिटकरी और देवदारु बराबर बराबर लेकर पानीसे गोलियां बनावें।

इन्हें दांतोंमें रखनेसे दांतोंके कृमि और शूल आदिका नाश होता है।

[७६३] कुबेराक्षवटी (वृ. नि. र. । शूल.)

कर्षैकं च कुबेराक्षं कर्षैकं च महौषधम् ।
सौवर्चलं च कर्षार्द्धं कर्षार्धं भृष्टहिंगुकम् ॥
शिग्रु मूलरसेनैव रसोनस्य रसेन वा ।
पिष्ट्वा सर्वं प्रयत्नेन खर्छागारे विपाचयेत् ॥
भुक्त्वा विनाशयेच्चैव शूलमष्टविधं तथा ॥

लताकरञ्ज और सोंठ १।-१। तोला, काला नमक ७॥ माषा, और भुनी हुई हींग ७॥ माषा।

सबको सहजने या ल्हसनके रसमें घोटकर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वच्छ अङ्गारों पर पकाकर गोलियां बनावें। इनको सेवन करनेसे आठ प्रकारके शूल नष्ट होते हैं।

[७६४] कुमारिकावर्त्तिः

(भै. र. नेत्र., बं. से., वृ. मा; च. द.)

अशीतिस्तिलपुष्पाणि षष्टिःपिप्पलितण्डुलाः।
जातीपुष्पाणि पञ्चाशन्मरिचानि च षोडशः॥
एषा कुमारिका वर्तिर्गतं चक्षुर्निवर्तयेत्॥

तिलके फूल ८० नग, पीपलके चावल ६० नग, चमेलीके फूल ५० नग, कालीमिर्च १६ नग इनको पीसकर बत्ती बनाकर नेत्रोंमें आंजनेसे नेत्र रोग दूर होते हैं।

[७६५] कुमारीवटी (भै. र.। परिशि.)

कुमार्यद्भिर्हेमरौप्यं हरितालं च माक्षिकम्।
शतशो भावयित्वाथो गुञ्जामात्रां वटीं चरेत्॥
धात्र्यम्भसा वटीसेयं कुमारी योजिता हरेत्।
निखिलान् स्नायुजान् रोगान्
कुर्याच्चीक्ष्णं धनञ्जयम्॥

सोनेकी भस्म, चांदीकी भस्म, शुद्ध हरताल और सोना मक्खी भस्म, बराबर बराबर लेकर घीकुमार के रसकी सैंकड़ों भावना देकर १-१ रत्ती की गोलियां बनावें।

इन्हें आमलेके रसके साथ सेवन करनेसे स्नायुरोग और अग्निमांध नष्ट होता है।

[७६६] कुलवटी (र. रा. सु.। सन्नि.)

शुद्धं सूतं मृतं ताम्रं मृतनागं मनःशिला।
तुत्थं च तुल्यतुल्यांशं दिनमेकं विमर्दयेत्॥
द्रवैश्चोत्तरवारुण्या चणकाभां वटीं कुरु।
सन्निपातं निहंत्याशु नस्यमात्रे सुदारुणम्॥
एषा कुलवटीनाम जले पिष्ट्वा प्रयोजयेत्॥

शुद्ध पारा, ताम्र भस्म, शीशा भस्म, मनसिल और नीलाथोथा, समान भाग लेकर १ दिन तक इन्द्रायनके रसमें घोटकर चनेके बराबर गोलियां बनावें।

जलमें पीसकर इसकी नस्य देनेसे घोर सन्निपात नष्ट होता है।

[७६७] कुलिकादिवटिका (भै. र.। विष.)

कुलिकं सप्तपर्णं च कुष्ठं तोलकसम्मितम्।
माषम नं तथा दारु मर्दयेदर्कवारिणा॥
सर्षपामां वटीं कृत्वा योजयेत्पयसा सह।
अपि तक्षक दष्टश्च मृतकल्पं हतस्वरम्॥
पुनः संजीवयेदाशु सर्वक्ष्वेडविनाशिनी।
कुलिकादिवटी हन्ति ज्वरांश्च विषमांस्तथा॥

कुलिक (कण्टकपाली), सतौना और कूठ १-१ तोला, देवदारु १ माषा, सब को आक के रसमें घोट कर सरसों के बराबर गोलियां बनावें।

इन्हें दूध के साथ देने से सांप के काटने से आसन्नमृत्यु और हतस्वर (जिसका स्वर नष्ट हो गया हो) हुवा मनुष्य भी स्वस्थ हो जाता है। यह वटी सब प्रकार के विष और विषमज्वरों का नाश करती है।

[७६८] कुष्ठादिवर्तिः (च. स. चि. अ. ३०)

कर्णिन्यां वर्तिका कुष्ठपिप्पल्यार्काग्रसैंधवैः।
बस्तमूत्रकृता धार्या सर्वं च श्लेष्मनुद्धितम्॥

कर्णिनी योनिमें कूठ, पीपल, आककी कोंपल और सैंधव का बकरे के मूत्रमें पीस कर बत्ती बना कर रखने से योनि शुद्ध होती है।

इसी प्रकार अन्य कफ नाशक औषधियां और पथ्य प्रयोग करना चाहिये।

[७६९] कृमिघातिनी गुटिका

(र. ग. सु.। क्रिमि.)

रसगंधाजमोदानां कृमिघ्नं ब्रह्मबीजयोः।
एकद्वित्रिचतुः तंच तिन्दोर्बीजस्य षट् क्रमात्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संचूर्ण्य मधुना सर्वं गुटिकां क्रमिघातिनीम् ।
खादन् पिपासुस्तोयं च मुस्तानां क्रमिशान्तये॥
आखुपर्णीकषायं वा प्रपिबेत् शर्करान्वितम् ॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, अजमोद ३ भाग, वायविड़ंग ४ भाग और पलास पापड़ा (ढाकके बीज) ५ भाग तथा शुद्ध कुचला ६ भाग लेकर चूर्ण करके शहदसे गोलियां बनावें।

इन्हें सेवन करने और प्यास लगने पर नागर मोथेका पानी या चूहाकनी का पानी चीनी डाल कर पीनेसे क्रिमियोंका नाश होता है।

[७७०] कृष्णाद्यो मोदकः (भै. र. । श्ली.)

कृष्णाचित्रकदन्तीनां कर्षमर्द्धपलं पलम् ।
विंशतिश्च हरीतक्या गुडस्य तु पलद्वयम् ॥
मधुना मोदकं खादञ्छलीपदं हन्ति दुस्तरम् ॥

पीपल १। तोला, चीता २॥ तोला, दन्ती ५ तोला, हैड़ १। सेर, गुड १० तोला।

यथा विधि मधुसे मोदक बनावें। इनके सेवन से श्लीपद (हाथी पग) का नाश होता है।

अथ ककारादि गुग्गुलुप्रकरणम् ।

[७७१] काञ्चन गुटिका गुग्गुलुः
(भै. र. गलगण्ड.)

त्रिफलायास्त्रयोभागा व्योषाच्च द्विगुणोमतः ।
तस्माच्चद्विगुणं ज्ञेयं कांचनारस्य वल्कलम् ॥
एकीकृते तु चूर्णेऽस्मिन् समो देयोऽथगुग्गुलुः।
क्षौद्रं दशगुणं दद्यात् त्रिफलाचूर्णतो भिषक् ॥
सर्वासु गण्डमालासु गलगण्डे तथैव च ।
नाडीव्रणेषु गण्डेषु गुटिकेयं प्रशस्यते ॥

त्रिफला ३ भाग, त्रिकूटा ६ भाग, कचनारकी छाल १२ भाग, गूगल २१ भाग। शहद ३० भाग। चूर्ण योग्य चीज़ोंका चूर्ण करके मिला कर कूटें। इसके सेवनसे गण्डमाला, गलगण्ड और घावोंका नाश होता है।

[७७२] काञ्चनार गुग्गुलुः (वृ.नि.र.गण्डमा.)

काञ्चनारत्वचो ग्राह्यं पलानां दशकं बुधैः ।
त्रिफलाषट्पला कार्या त्रिकटुस्यात्पलत्रयम् ॥
पलैकं वरुणं कुर्यादेलात्वक्पत्रकं तथा ।
एकैकं कर्षमात्रं स्यात् सर्वाण्येकत्र चूर्णयेत् ॥
यावच्चूर्णमिदं सर्वं तावन्मात्रस्तु गुग्गुलुः ।
संकुट्य सर्वमेकत्र पिंडं कृत्वा च धारयेत् ॥
गुटिकाः शाणिकाः कार्याः
प्रातर्ग्राह्या यथोचिताः ।
गंडमालां जयत्युग्रामपचीमर्बुदानि च ॥
ग्रन्थीन्व्रणांश्च गुल्मांश्च कुष्ठानि च भगन्दरम् ।
प्रदेयश्चानुपानार्थं क्काथो मुंडितिकाभवः ॥
क्काथः खदिरसारस्य पथ्याक्काथोष्णकं जलम् ॥

कचनारकी छाल ५० तोला, त्रिफला ३० तोला, त्रिकुटा १५ तोला, बरनेकी छाल ५ तोला, इलायची, दालचीनी, तेजपात प्रत्येक १।-१। तोला। सबको एकत्र करके चूर्ण करें और सब चूर्णके बराबर गूगल मिलाकर कूटें और ४-४ मापेकी गोलियां बनावें।

इन्हें मुंडी, खैरसार या हैड़के काथ या गरम जलके साथ प्रातः काल सेवन करनेसे भयंकर गंडमाला, अपचि, अर्बुद, ग्रन्थि, घाव, गुल्म, कुष्ठ और भगन्दरका नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[७७३] कैशोरगुग्गुलुः

(भै. र. । वा. र; बृ. यो. त. त. ९१)

वरमहिषलोचनोदरसन्निभ-
वर्णस्य गुग्गुलोः प्रस्थम् ।
प्रक्षिप्य तोयराशौ त्रिफलाञ्च
यथोक्तपरिमाणाम् ॥
द्वात्रिंशच्छिन्नरुहा पलानि देयानि यत्नेन ।
विपचेदप्रमत्तो दर्व्या सङ्घट्टयन् मुहुर्यावत् ॥
अर्द्धक्षयितं तोयं जातं ज्वलनस्य सम्पर्कात् ।
अवतार्य्य वस्त्रपूतं पुनरपि संसाधयेदयः पात्रे ॥
सान्द्री भूते तस्मिन्नवतार्य्य हिमोपलप्रख्ये ।
त्रिफलाचूर्णार्द्धपलं त्रिकटोश्चूर्णंषडक्षपरिमाणम् ।
कृमिरिपुचूर्णार्द्धपलं कर्षं कर्षं त्रिवृद्दन्त्योः ।
अमृतायाःपलमेकं सर्पिषश्च
पलाष्टकं क्षिपेदमलम् ॥
उपयुज्य चानुपानं यूषं क्षीरं सुगन्धिसलिलञ्च ।
इच्छाहारविहारी भेषजमुपयुज्य सर्वकालमिदम् ।
तनुरोधिवातशोणितमेकजमथद्वन्दजं चिरोत्थंच ।
जयति स्रुतं परिशुष्कं स्फुटितञ्चाजानुजञ्चापि ॥
व्रणकासकुष्ठगुल्मश्वयथूदरपांडुमेहांश्च ।
मन्दाग्निञ्च विबन्धं प्रमेहपिडि-
काश्च नाशयत्याशु ॥
सततं निषेव्यमाणः कालवशाद्धन्ति सर्वगदान् ।
अभिभूय जरादोषं करोति कैशोरकं रूपम् ॥
प्रत्येकं त्रिफला प्रस्थो जलमत्र षडाढकम् ।
पाकायत्तं फलं पाके क्वाथे पाकप्रधानता ॥
तस्मात्क्वाथविधौ निश्चयंयतितव्यं चिकित्सकैः ॥

(पोटलीमें बंधा हुआ) भैंसिया गूगल १ सेर, हैड़, बहेड़ा, आमला १-१ सेर और गिलोय २ सेर लेकर २४ सेर पानीमें पकावें। आधा पानी जल जाने पर उतारकर छान लें और फिर दुबारा लोहेके पात्रमें पकावें एवं पकते समय करछी से चलाते रहें। जब पकते पकते गाढा हो जाय तो बिलकुल ठंडा होने पर उसमें त्रिफलेका चूर्ण २॥ तोला, त्रिकुटे का चूर्ण ७॥ तोला, वायबिड़ंगका चूर्ण २॥ तोला, निसोत और दन्तीका चूर्ण १।-१। तोला, गिलोयका चूर्ण ४ तोला और घी ४० तोला मिलावें।

इसे यूष, दूध या सुगन्धित जलके साथ सेवन करनेसे एक दोषज, द्विदोषज और पुराना, शुष्क अथवा स्रावयुक्त, स्फुटित और जानुओं तक फैला हुआ वातरक्त, घाव, खांसी, कोढ़, गुल्म, शोथ, उदररोग, पांडु, प्रमेह, अग्निमांद्य, विबन्ध, प्रमेह-पिड़िका आदिका नाश होता है। इसके निरन्तर अभ्याससे जरा और समस्त रोग नष्ट होकर किशोरावस्था प्राप्त होती है। यह हर समय सेवन किया जा सकता है एवं इसके सेवनमें किसी प्रकार के परहेज़की आवश्यकता नहीं है।

अथ ककारादि लेहप्रकरणम्

[७७४] कंस हरीतकी (च. सं. चि.अ. १२)

द्विपञ्चमूलस्य पचेत् कषाये
कंसेऽभयानाञ्च शतं गुडस्य ।
लेहे सुसिद्धे च विनीय चूर्णं
व्योषं त्रिसौगन्ध्यमुपां स्थिते च ॥
प्रस्थार्द्धमात्रं मधुनः सुशीते
किञ्चिच्च चूर्णादपि यावशूकात् ।
एकाभयां प्राश्य ततश्च लेहा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च्छर्दिं निहन्ति श्वयथुं प्रवृद्धम् ॥
श्वासज्वरारोचकमेहहिक्का
प्लीहत्रिदोषोदरपांडुरोगान् ।
कार्श्यामवातानसृगम्लपित्तं
वैवर्ण्य मूत्रानिलशुक्रदोषान् ॥

दशमूलके ८ सेर क्काथमें ६। सेर गुड़ और १०० नग हैड़ डालकर पकावें। जब लेह तैयार हो जाय तो उसमें त्रिकुटे और त्रिसुगन्ध (दालचीनी, तेजपात और इलायची) के चूर्णका प्रक्षेप डालकर रात भर रक्खा रहने दें। फिर सुबहको उसमें १ सेर शहद और १। तोला जवाखार मिलावें।

इसमेंसे प्रति दिन १ हैड़ और २॥ तोला अवलेह खानेसे प्रवृद्ध शोथ (सूजन) श्वास, ज्वर, अरुचि, प्रमेह, हिचकी, तिल्ली, त्रिदोषज उदर रोग, पांडु, कृशता, आमवात, अम्लपित्त, विवर्णता, वायुविकार, मूत्रविकार और शुक्रदोषोंका नाश होता है।

[७७५] ककुभलेहः (वृ. नि. र. । कासे.)

चूर्णं ककुभत्वचिष्टं वासकरस-
भावितं सुबहुवारान् ।
मधुघृतसितोपलाभिर्लिह्यं,
क्षयकासपित्तहरम् ॥

अर्जुनकी छालके चूर्ण को वासाके रसकी अनेक भावना देकर शहद, घी और चीनीके साथ मिलाकर चाटनेसे क्षय, खांसी और पित्तका नाश होता है।

[७७६] कञ्चटावलेहः (भै. र., धन्व. । ग्रह.)

प्रस्थे पचेत् कञ्चटतालमूल्योः
सिताद्धं प्रस्थं शृतपादशेषे ।
ततोऽक्षमात्राणि समानि दद्या-
च्चूर्णानि धीरो विधिवत्तदेषाम् ॥
समङ्गा धातकी पाठा बिल्वं मुस्ताथ पिप्पली ।
शक्राह्वातिविषाक्षारसौवर्चलरसाञ्जनम् ॥
शाल्मलीवेष्टकश्चैव सर्वं सिद्धं निधापयेत् ।
शीते च मधुनश्चात्र कुडवार्द्धं विनिक्षिपेत् ॥
अस्य मात्रां प्रयुञ्जीत यथाकालं प्रमाणतः ।
सर्व्वातिसारं शमयेत्संग्रहग्रहणीं तथा ॥
अम्लपित्तकृतं दोषमुदरं सर्वरूपिणम् ।
विकारान् कोष्ठजान् हन्ति हन्याच्छूलमरोचकम् ॥

कंचट (गजपीपल) और ताल मूली (काली मूसली) प्रत्येक १-१ सेर लेकर चतुर्थांशावशेष (चौथा भाग शेष रहा हुआ) क्काथ तैयार करें। फिर आधा सेर मिश्री मिलाकर पकावें और पाकके अन्तमें मजीठ, धायके फूल, पाठा, बेलगिरी, नागरमोथा, पीपल, इन्द्रयव, अतीस, जवाखार, सौंचल रसौत और सेंभलकी जटाका चूर्ण १।-१। तोला मिलावें। जब शीतल होजाय तो उसमें २० तोला शहद मिलावें।

इसे यथोचित काल और मात्रानुसार सेवन करनेसे समस्त अतिसार, संग्रहणी और सब प्रकार के उदर रोगोंका नाश होता है।

[७७७] कटुकरोहिण्यावलेहः

(भा. प्र. । बा. रो.)

चूर्णं कटुकरोहिण्या मधुना सह योजयेत् ।
हिक्कां प्रशमयेत् क्षिप्रं छर्दिं
चापि चिरोत्थिताम् ॥

कुटकीके चूर्ण को शहदके साथ चटानेसे पुरानी वमन और हिचकीका शीघ्र नाश होता है।

[७७८] कटुत्रिकलेहः (वृ. नि. र. । हिक्का.)

कटुत्रिकयवासकट्फलसकारवीपौष्करैः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शृङ्गिभिरतिद्रुतं मधुयुतोऽवलेहो जयेत् ॥
सहिंग्मकसनं कफश्वसनमम्भसा सिन्धुजम् ।
प्रदत्तमपि नावनं झटितिसर्वहिक्काहरम् ॥

त्रिकुटा, जवासा, कायफल, कालीज़ीरी, पोखरमूल और काकड़ा सींगीके चूर्ण को शहदमें मिलाकर चटानेसे खांसी, कफ और श्वासका अत्यन्त शीघ्र नाश होता है।

सेंधा नमकके पानीकी नसवार लेनेसे भी सब प्रकारकी हिचकियोंका अत्यन्त शीघ्र नाश होता है।

[७७९] कट्फलादिलेहः

(च. द. ज्वरे; शा. ध. म. खं; वृ. मा, वै. र.)

कट्फलं पौष्करं शृङ्गी कृष्णा च मधुना सह ।
कासश्वासज्वरहरः श्रेष्ठो लेहः कफान्तकृत् ॥

कायफल, पोखरमूल, काकड़ासींगी और पीपलके चूर्ण को शहदमें मिलाकर चटानेसे खांसी, श्वास और कफका नाश होता है।

[७८०] कणाद्यलेहः (१) (वृ. नि. र. । ज्व.)

कासे कणा कणामूलं कलिद्रुमफलं रजः ।
सविश्वभेषजं लिह्यान्मधुना वा वृषारसम् ॥

पीपल, पीपलामूल, बहेड़ा और सोंठका चूर्ण या बांसे का रस शहदके साथ चटानेसे खांसी नष्ट होती है।

[७८१] कणाद्यलेहः (२) (रसे. चि. । अ. ९)

कणानागरपाठाभिस्त्रिवर्गद्वितयेन च ।
बिल्वचन्दनह्रीबेरैः सर्वातीसारनुन्मतः ॥
सर्वोपद्रवसंयुक्तामपि हन्ति प्रवाहीकाम् ।
नानेन सदृशो लेहो विद्यते ग्रहणीहरः ॥

पीपल, सोंठ, पाठा, हैड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा, चीता, वायविड़ंग, बेल, चन्दन और सुगन्धवाला। इनके चूर्ण को शहदमें मिला कर चटाने से सब प्रकारके अतिसार और सब उपद्रव युक्त प्रवाहिका (पेचिश) का नाश होता है। इस अवलेहके समान संग्रहणी नाशक अन्य औषधि नहीं।

[७८२] कण्टकार्यवलेहः (१)

(बं. से. । कासे. ग.× नि. लेहा.)

कण्टकार्यास्तुलां सम्यक् जलद्रोणे विपाचयेत् ।
पादावशेषिते तस्मिन् कल्कानेतान् प्रदापयेत् ॥
दुरालभा छिन्नरुहाभार्गी कर्कटकाह्वया ।
रास्ना मुस्तं शटी चव्यं चित्रकं त्र्यूषणं तथा ॥
पलांशानि पलान्यत्र शर्करायास्तु विंशतिः ।
घृततैलपलान्यस्मिन्नष्टावष्टौ प्रदापयेत् ॥
कल्की कृत्य धृते शीते मधुनोऽष्टपलं क्षिपेत् ।
चतुःपलंपिप्पलीनां तुगाक्षीर्याश्चतुःपलम् ।
एष लेहः शमयति पञ्च कासांश्चिरोत्थितान् ॥

६। सेर कटेलीको ३२ सेर पानीमें पकाकर चौथा भाग शेष रहने पर छान लें और फिर उसमें धमासा, गिलोय, भार्गी, काकड़ासींगी, रास्ना, नागरमोथा, कपूरकचरी, चव्य, चीता, सोंठ, काली मिर्च और पीपल प्रत्येकका ५—५ तोला कल्क तथा १। सेर खांड और १—१ सेर घी तथा तेल डालकर पकावें एवं पाकके अन्तमें उसमें पीपल और बंसलोचनका २०—२० तोला चूर्ण और ठंडा होने पर १ सेर शहद मिलावें।

यह अवलेह पांचों प्रकारकी पुरानी खांसीका नाश करता है।

× ग. नि. में भारंगी, मुस्ता, शटी, चव्य के स्थानमें पीपलामूल है। तेलका अभाव है। मधु २० तोला है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[७८३] **कण्टकार्यवलेहः** (२)

(यो. र; व. से. वामि)

चित्रकं पिप्पलीमूलं व्योषं मुस्तं दुरालभा।
शटी पुष्करमूलं च श्रेयसी सुरसा वचा॥
भार्गी छिन्नरुहा रास्ना कर्कटाख्या च कार्षिकान्।
कल्कान्निदिग्धिद्वितुला कषाये पलविंशतिः॥
मत्स्यण्डिकाया दत्वा तु सर्पिषः कुडवं पचेत्।
सिद्धशीतेपृथक्क्षौद्रपिप्पलीकुडवान्वितम्॥
चतुष्पलं तुगाक्षीर्याश्चूर्णं तत्र प्रदापयेत्।
लेहयेत्कासहृद्रोगश्वासगुल्मनिवारणम्॥

कटेलीके २५ सेर कषायमें चित्ता, पीपलामूल त्रिकुटा, नागरमोथा, धमासा, कपूरकचरी, पोखरमूल, गजपीपल, तुलसी, बच, भार्गी, गिलोय, रास्ना और काकड़ासींगीका १।-१। तोला कल्क एवं १। सेर मिश्री और ४० तोला घृत डालकर पकावें और पकनेके बाद ठंडा होने पर उसमें ४० तोला शहद तथा पीपल और बंसलोचनका चूर्ण २०-२० तोला मिलावें।

इसको सेवन करनेसे खांसी, हृद्रोग, श्वास और गुल्मका नाश होता हैं।

[७८४] **कण्टकार्यवलेहः** (३) (भा.प्र;वं.से.)

व्याघ्री सुमनसंजातकेशरैरवलेहिका।
मधुना चिरसंजातां ञ्छिशोः कासान् व्यपोहति

कटेलीके फूलको ज़ीरा शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंकी पुरानी खांसीको आराम होता है।

[७८५] **करंजाद्यवलेह** (वृ. नि. र. छर्दि.)

कोमलकरंजपत्रं सलवणमम्लेन संयुक्तम्।
यः खादति दीनवदनश्छर्दिकफौ तस्य कुत्रेह॥

करञ्जवेके कोमल पत्तों (कोंपलों) को सेंधा नमकके साथ पीसकर अनारका रस (या कांजी) मिला कर खाने से वमन और कफ का नाश होता है।

[७८६] **कल्याणकावलेहः** (यो. र. । ग्रह.)

पाठाधान्ययवान्यजाजिहृ
पुषाचव्यग्निसिन्धूद्भवैः।
सश्रेयस्यजमोदकीटरिपुभिः कृष्णाजटासंयुतैः॥
सव्योषैः सफलत्रिकैः
सत्रुटिभिस्त्वक्पत्रकैरौषधै।
रित्यक्षप्रमितैः सतैलकुडवैः सार्धं त्रिवृन्मुष्टिभिः
एतैरामलकीरसस्य तुलया सार्द्धं तुलार्द्धं गुडात्।
पक्वव्यं भिषजावलेहवदयं प्राग्भोजनाद्भक्षितः॥
ये केचिद्ग्रहणीगदाः सगुदजाः
कासाः सशोषामयाः।
सश्वासाः श्वयथुस्वरोदररुजः
कल्याणकस्तां जयेत्॥

आमलेका रस १२॥ सेर, गुड़ २५० तोला, तेल ४० तोला; और पाठा, धनिया, अजवायन, ज़ीरा, हाऊबेर, चव, चीता, सेंधानमक, गजपीपल, अजमोद, बायबिड़ंग, पीपलामूल, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, हैड़, बहेड़ा, आमला, छोटी इलायची, दालचीनी और तेजपात प्रत्येक १।-१। तोला तथा निसोत ५ तोला, इन चीज़ोंके कल्कके साथ लेह पाक सिद्ध करें।

इसे भोजनके पहिले सेवन करनेसे संग्रहणी, बवासीर, खांसी, श्वास, सूजन, स्वरभंग और उदर रोगोंका नाश होता है।

[७८७] **कल्याणगुड़ः**

(वं. से. पाण्डु; ग. नि. गुटिका; वृ. यो. त. त.६७)

---

१. ग. नि. में चव्य, सोंठ, हाउबेर, गजपीपल, अजवायन, पाठा, तेजपात और इलायचीका अभाव है।

२. वृ. यो. त. में सेंधेके स्थान पर पंचलवण है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रस्थत्रयेणामलकीरसस्य
शुद्धस्यदत्वार्द्धतुलां गुडस्य।
चूर्णीकृतैर्ग्रन्थिकजीरकस्य
व्योषेभकृष्णाहपुषाजमोदैः॥
विडङ्गसिन्धुत्रिफलायमानी-
पाठाग्निधान्यैश्च पलप्रमाणैः।
दत्वात्रिवृच्चूर्णपलानि चाष्टावष्टौ
च तैलस्यपचेद्यथावत्॥
तं भक्षयेदक्षफलप्रमाणं
यथेष्टचेष्टं त्रिसुगन्धियुक्तम्।
अनेन सर्वे ग्रहणीविकाराः
सश्वासकासस्वरभेदशोथाः॥
शाम्यन्ति चायं चिरमन्थराग्ने-
र्हतस्य पुंस्त्वस्य च वृद्धिहेतुः।
स्त्रीणां च वन्ध्यामयनाशनोऽयं
कल्याणको नाम गुडः प्रदिष्टः॥
तैले मनाग्भर्जयन्ति त्रिवृदत्र चिकित्सकाः।
अत्रोक्तमानसाधर्म्यात् त्रिसुगन्धं पलं पृथक्॥

आमलेका रस ६ सेर, शुद्ध गुड़ २५० तोला, तेल १ सेर और पीपलामूल, ज़ीरा, चव्य, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, गजपीपल, हाऊबेर, अज-मोद, बायविडंग, सेंधानमक, हैड़, बहेड़ा, आमला, अजवायन, पाठा, चीता और धनिया प्रत्येकका चूर्ण ५–५ तोला तथा तेलमें भुना हुआ निसोत का चूर्ण ४० तोला मिलाकर पकावें। और फिर दालचीनी, तेजपात तथा इलायचीका चूर्ण ५-५ तोला मिलावें। इसे १। तोलाकी मात्रानुसार सेवन करनेसे संग्रहणी, श्वास, खांसी, स्वरभेद, शोथ (सूजन) नपुंसकता और बंध्यत्व (बांझपन) का नाश होता है।

[७८८] कल्याणावलेहः (र. र.)

सहरिद्रा वचा कुष्ठं पिप्पली विश्वभेषजम्।
अजाजी चाजमोदा च यष्टीमधुकसैंधवम्॥
एतानि समभागानि श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत्।
तच्चूर्णं सर्पिषा लोड्य प्रत्यहं भक्षयेन्नरः॥
एकविंशति रात्रेण भवेच्छ्रुतिधरोनरः।
मेघदुंदुभिनिर्घोषो मत्तकोकिलनिस्वनः॥
जडगद्गदमूकत्वं लेहः कल्याणको जयेत्॥

हल्दी, बच, कूठ, पीपल, सोंठ, ज़ीरा, अज-मोद, मुल्हैठी और सेंधा नमक। सब चीज़ें बराबर बराबर लेकर महीन चूर्ण करके घीमें मिला कर २१ दिन तक सेवन करनेसे मनुष्य श्रुतिधर (किसी बातको एक बार सुननेसे ही याद कर लेने वाला) मेघके समान गर्जन और कोकिलके समान स्वर वाला हो जाता है। एवं इससे जड़ता, गद्गदपना (हकलाना) और मूकत्व (गूङ्गापन) नष्ट होता है।

[७८९] कासकण्डनोऽवलेहः
(वृ. यो. त. ७८ त.)

अजामूत्रं शतपलं मन्दाग्नौ गुडपाकवत्।
पक्त्वा वैभीतकं चूर्णं पलद्वयमितं क्षिपेत्॥
पलं पिप्पलिचूर्णं च पलमात्रं मृतायसम्।
कण्टकारीफलरजो दद्यादत्र पलद्वयम्॥
ततो माषद्वयं खादेद्वद्धं कर्षमथापि वा।
क्षौद्रेणोष्णाम्बुना वाऽपि सर्वकासात्प्रमुच्यते॥
असाध्याभिषजात्यक्ताश्चिरजाः पथ्यवर्जिताः।
ये कासास्तेऽप्यनेनाऽऽशुप्रणश्यन्ति न संशयः॥
कासकण्डननामाऽयं योग आत्रेयभाषितः।

बकरीके १२॥ सेर मूत्रको मंदाग्निपर पका-कर गुड़ पाकके समान गाढ़ा करके उसमें बहेड़े का चूर्ण १० तोला, पीपलका चूर्ण ५ तोला,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोह भस्म ५ तोला और कटेलीके फलोंका चूर्ण १० तोला मिलावें।

इसे २ माशे, ४ माशे या १। तोलेकी मात्रानुसार शहद या गरम पानीके साथ सेवन करनेसे असाध्य, वैद्योंसे त्यक्त, पुरानी तथा पथ्य वर्जित (जिसमें बदपरहेज़ी की गई हो) खांसी भी शीघ्र नष्ट हो जाती है।

[७९०] कुटजपुटपाकः (भै. र.। ग्रह.)

स्निग्धं घनं कुटजवल्कमजन्तुजग्ध-
मादायतत्क्षणमतीव च पोथयित्वा।
जम्बुपलाशपुटे तण्डुलतोयसिक्तं
बद्धं कुशेन च बहिर्घनपङ्कलिप्तम्॥
सुस्विन्नमेतदवपीड्य रसं गृहीत्वा
क्षौद्रेण युक्तमतिसारवतेप्रदद्यात्।
कृष्णात्रिपुत्रमतपूजित एष योगः।
सर्वातिसारहरणे स्वयमेव राजा॥
स्वरस्य गुरुत्वेन पुटपाके पलं पिबेत्।
पुटपाकस्य पाकोऽयं बहिरारुणवर्णता॥

कुड़े की स्निग्ध (चिकनी) मोटी और जन्तु (कीड़े मकोड़ोंसे) रहित गीली छालको लेकर खूब कूटें और फिर उसमें चावलोंका पानी मिलाकर (गोलासा बनाकर) जामन या ढाकके पत्तोंमें लपेट कर उसे कुशासे बांध दें और उसके ऊपर मिट्टीका गाढ़ा २ लेप करके अग्निमें दबा दें। जब वह गोला बाहरसे लाल हो जाय तो निकालकर अन्दरकी लुगदीको निचोड़कर रस निकालें।

यह रस ५ तोलेकी मात्रानुसार शहदमें मिलाकर सेवन करनेसे सब प्रकारके अतिसार नष्ट होते हैं।

[७९१] कुटजलेहः (१) (भै. र.। ग्रह.)

शतं कुटजमूलस्य क्षुण्णं तोयार्म्मणे पचेत्।
क्वाथे पादावशेषेऽस्मिँल्लेहपूते पुनः पचेत्॥
सौवर्चलयवक्षारविडसैन्धवपिप्पली।
धातकीन्द्रयवाजाजी चूर्णं दत्त्वा पलद्वयम्॥
लिह्याद्बदरमात्रन्तु शीतं क्षौद्रेण संयुतम्।
पक्वापक्वमतीसारं नानावर्णं सवेदनम्॥
दुर्वारं ग्रहणीरोगं जयेच्चैव पवाहिकाम्॥
चूर्णं मिलित्वा पलद्वयं ग्राह्यं घनीभूते प्रक्षेपः
बदरमात्रमष्टमाषकमानं मधुना
खाद्यमितिगोपालदासभानुदासप्रभृतयः॥

कुड़े की ६। सेर छालको कूटकर ३२ सेर पानीमें पकावे। जब चौथा भाग बाकी रह जाय तो छानकर पुनः पकावें। एवं पाकके अन्तमें उसमें सौंचल (काला नमक) जवाखार, बिडनमक, सेंधा-नमक, पीपल, धायके फूल, इन्द्रजौ और जीरा। इन सब का १० तोला चूर्ण मिलावें।

इसे ८ माशेकी मात्रामें शहदमें मिलाकर सेवन करनेसे कच्चे पक्के, रंग बिरंगे और वेदना-युक्त सब प्रकारके अतिसार, दुस्साध्य संग्रहणी और प्रवाहिका (पेचिश)का नाश होता है।

[७९२] कुटजावलेहः (२) (वृ. नि. र.। अति)

क्वाथो वत्सकजो नितांतविमलः
पादावशेषः स्थितः।
मुस्ताक्षीरविडंगबीजरुचकं सिंभूद्भवं धातकी॥
कृष्णा चेति विचूर्णितं सममिदं
संपाचयेत् पावके।
यावत्तद्घनतां प्रयात्यतितरां शीते मधुक्षेपणम्॥
कृत्वा वत्सकलेह एष शमयेत् कृच्छ्रातिसारं रुजं
दुर्नामग्रहणीभगंदरगदान् श्वासप्रमेहानपि॥

कुड़े की छालका पादावशेष (पकाते पकाते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चौथा भाग शेष रहा हुवा) अत्यन्त स्वच्छ कषाय लेकर उसमें नागरमोथा, दूध, बायबिड़ंग, काला नमक, सेंधा नमक, धायके फूल और पीपलका चूर्ण डालकर पकावें। जब गाढ़ा हो जाय तो उतार कर ठंडा करके उसमें शहद मिलालें। इसे सेवन करनेसे कष्टसाध्य अतिसार, बवासीर, संग्रहणी, भगन्दर, श्वास और खांसीका नाश होता है।

[७९३] कुटजावलेहः (३) (वृ.नि.र. संग्रह)

कुटजस्य तुलां दत्वा चतुर्द्रोणांभसा पचेत् ।
द्रोणशेषे रसे तस्मिन्पूते गुडतुलार्द्धकम् ॥
घृतं च टङ्कवत्तत्प्रक्षिप्त्वा मृद्वग्निनापचेत् ।
समंगा बिल्वकशिलाबिल्वार्धं च पुनर्नवा ॥
मुस्ताभल्लातकं चापि धातकी गजपिप्पली ।
अंबष्ठावालकं चैव द्वेबृहत्यौ सचित्रकम् ॥
सद्भार्गीपिप्पलीमूलं विडंगानि हरीतकी ।
नागकेशरयष्टीकारलुकापत्रकं तथा ॥
विश्वाचेंद्रयवाः पाठसूक्ष्मैलाजीरकद्वयम् ।
जातिपत्रिजातिफलं लवङ्गं तगरं तथा ॥
ततो द्विपलिकैर्भागैर्लेहोयं साधयेत्ततः ।
तक्रेणवसुतक्रं वा पथ्यं देयं विचक्षणैः ॥
अनेन ग्रहणीरोगानतिसारान्सुदारुणान् ।
रोगानीकविघाताय कुटजो लेह उच्यते ॥

६¼ सेर कुड़े की छालको १२८ सेर पानीमें पकावें जब ३२ सेर पानी शेष रह जाय तो उतार कर छान लें और उसमें २५० तोला गुड़ तथा ४ माशा घी; और मँजीठ, बेल, शिलाजीत प्रत्येक २॥-२॥ तोला तथा पुनर्नवा (बिसखपरा) नागरमोथा, भिलावा, धायके फूल, गजपीपल, पाठा, सुगन्धवाला, छोटी कटेली, चीता, भारंगी, पीपलामूल, बायबिड़ंग, हैड, नागकेशर, मुल्हैठी, अरलू, तेजपात, सोंठ, इन्द्रजौ, पाठा, छोटी इलायची, दोनों जीरे, जायफल, जावित्री, लौंग और तगर, प्रत्येकका चूर्ण १०-१० तोला मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें।

इसे छाछ (तक्र) के साथ सेवन कराने और पथ्यमें भी तक्र ही देनेसे कष्टसाध्य संग्रहणी और अतिसार नष्ट होते हैं।

[७९४] कुटजाद्यवलेहः (४)(यो.र.। अतिसा)

वत्सकस्यामृतायाश्च द्वे पले प्रस्थमम्भसः ॥
श्रपयित्वा रसे तस्मिन्पादशेषावतारिते ॥
अष्टौ पलानि शक्रस्य यवाश्चूर्णीकृताश्च ते ।
युक्त्या पाकं विदित्वा तु यथावह्नि च खादयेत्॥
जयेत्सर्वातिसारांश्च सर्वांश्च ग्रहणीगदान् ।
नाशयेद्दीपयेच्चाग्निं कृष्णात्रेयस्य शासनात् ॥

कुड़ेकी छाल और गिलोय १०-१० तोला लेकर २ सेर पानी में पकावें और चौथा भाग शेष रहने पर छानकर उसमें ४० तोला इन्द्रजौका चूर्ण मिलाकर अवलेह तैयार करें।

इसे अग्निबलानुसार सेवन करनेसे सब प्रकार के अतिसार और समस्त ग्रहणी रोग नष्ट होते तथा अग्नि प्रदीप्त होती है।

[७९५] कुटजावलेहः (५) (च. द.। अति.)

कुटजत्वक्कृतः क्वाथो घनीभूतः सुशीतलः ।
लेहितोऽतिविषायुक्तः सर्वातीसारनुद्भवेत् ॥
वदन्त्यत्राष्टमांशेन क्वाथादतिविषारजः ।
प्रक्षेप्यत्वात्पादिकं तु लेहादिति च नो मतिः ॥

कुड़ेकी छालके क्वाथको दुबारा पकाकर गाढ़ा करके उसमें आठवां या चौथा भाग अतीसका चूर्ण मिलाकर सेवन करनेसे त्रिदोषज अतिसार का नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[७९६] कुटजावलेहः (६)

(शा. ध. म. खं. ८; व. से. अतिसा; व. से. अर्शो; वृ. मा. अर्शो; ग. नि. लेहा. ५; वृ. यो. त. त. ६४; भै.र; धन्व. अर्श.)

कुटजत्वक्तुलां द्रोणे जलस्य विपचेत्सुधीः ।
कषायं पादशेषं च गृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ॥
त्रिंशत्पलं गुडस्यात्र दत्त्वा च विपचेत्पुनः ।
सांद्रत्वमागतं ज्ञात्वा चूर्णानीमानि दापयेत् ॥
रसांजनं मोचरसं त्रिकटु त्रिफलां तथा ।
लज्जालुं चित्रकं पाठां बिल्वमिन्द्रयवं वचाम् ॥
भल्लातकं प्रतिविषां विडंगानि च बालकम् ।
प्रत्येकं पलसमानं घृतस्य कुडवं तथा ॥
सिद्धशीते ततो दद्यान्मधुनः कुडवं तथा ।
जयेदेषोऽवलेहस्तु सर्वाण्यर्शांसि वेगतः ॥
दुर्नामप्रभवान्रोगानतीसारमरोचकम् ।
ग्रहणीं पांडुरोगं च रक्तपित्तं च कामलाम् ॥
अम्लपित्तं तथा शोषं कार्श्यं चैव प्रवाहिकाम् ।
अनुपाने प्रयोक्तव्यमाजं तक्रं पयो दधि ॥
घृतं जलं वाजीर्णे च पथ्यभोजी भवेन्नरः ॥

कुड़ेकी ६। सेर छालको ३२ सेर पानीमें पकावें जब चौथा भाग रह जाय तो कपड़ेमें छान कर उसमें १ सेर १४ छटांक गुड मिलाकर दुबारा पकावें और गाढ़ा होनेपर रसौत, मोचरस, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, हैड़, बहेड़ा, आमला, लज्जावंती, चीता, पाठा, बेलगिरी, इन्द्रजौ, बच, भिलावा, अतीस, बायबिड़ंग और सुगन्धबाला प्रत्येकका ५-५ तोला चूर्ण और १ सेर घी मिलावें। जब ठंडा हो जाय तो उसमें १ सेर शहद मिलाकर रक्खें।

इसको सेवन करने और औषधियों के पच जाने पर पथ्य भोजन करनेसे बवासीर, अतिसार, अरुचि, संग्रहणी, पांडु, रक्तपित्त, शोष, कृशता और प्रवाहिका (पेचिश) का नाश होता है।

अनुपान—बकरीकी छाछ, दूध, दहीं या घी अथवा पानी।

१. वृ. मा; ग. नि. भै. र; में मोचरस, लज्जालु और बालकका अभाव है।

२. व. से. अर्शोधिकारोक्त में लज्जालु, पाठा, बालककी जगह मुस्ता, लोध, कैथ और धाय है।

[७९७] कुटजावलेहः (७)

(शा. ध. म. खं. ८)

कुटजत्वक्तुलामार्द्रां द्रोणनीरे विपाचयेत् ।
पादशेषं शृतं नीत्वा चूर्णान्येतानि दापयेत् ॥
लज्जालुधातकी बिल्वं पाठा मोचरसस्तथा ।
मुस्तं प्रतिविषा चैव प्रत्येकं स्यात्पलं पलम् ॥
ततस्तु विपचेद्भूयो यावद्दर्वीप्रलेपनम् ।
जलेन च्छागदुग्धेन पीतो मंडेन वा जयेत् ।
सर्वातिसारान्घोरांस्तु नानावर्णान्सवेदनान् ॥
असृग्दरं समस्तं च सर्वांर्शांसि प्रवाहिकाम् ॥

कुड़ेकी गीली छाल ६। सेर लेकर ३२ सेर पानीमें पकावें। जब चौथा भाग शेष रह जाय तो छानकर उसमें लज्जावन्ती, धायके फूल, बेलगिरी, पाठा, मोचरस, नागरमोथा और अतीसका ५-५ तोला चूर्ण मिलाकर उस समय तक पकावें जब तक कि करछीको न लगने लगे।

इसको पानी, बकरीके दूध या मांडके साथ सेवन करनेसे कष्टसाध्य, वेदना युक्त और रंग बिरंगे अतिसार, रक्तप्रदर, बवासीर और प्रवाहिका (पेचिश) का नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[७९८] कुटजरसक्रिया:

(च. सं. चि. अ. ९; भै. र; ब. से, अर्शो; ग. नि. लेहा. ५)

कुटजशकलस्य साध्यं पलश-
तमार्द्रस्य मेघसलिलेन ।
यावत् स्यात् गतरसं तद्द्रव्यं
पूतो रसस्ततो ग्राह्यः ॥
मोचरसः समङ्गाफलिनी च समांशिकैस्त्रिभिस्तैश्च
वत्सकबीजं तुल्यं चूर्णितमत्र प्रदातव्यम् ॥
पूतः क्वथितः स रसो दर्वीलेपस्ततः समवताय्यं
मात्राकालोपहिता रसक्रियैषा जयति रक्तम् ॥
छागलिपयसा पीता पेया
मण्डेन वा यथाग्निबलम् ।
जीर्णौषधश्च शालीन् पयसा छागेन भुञ्जीत ॥
रक्तार्शांस्यतिसारं रक्तं सासृग्रुजो निहन्याच्च ।
बलवच्च रक्तपित्तं रसक्रियैषा जयत्युभयमागम् ॥

कुड़ेकी गीली छालके ६। सेर टुकड़ोंको ३२ सेर आकाश जल (बारिसका वह पानी जो भूमि पर गिरने से पूर्व ही एकत्रित कर लिया गया हो) में पकावें जब उसका रस निकल आवे (चौथा भाग शेष रह जावे) तब उसको छानकर रसको फिर पकावें और गाढ़ा होने पर उसमें मोचरस, बाराहक्रान्ता (या मजीठ) और फूलप्रियंगुका चूर्ण बराबर तथा इन तीनोंके बराबर इन्द्रजौका चूर्ण मिलावें ।

इसे काल और अग्नि बलानुसार उचित मात्रा में बकरी के दूध या पेया अथवा मांडके साथ सेवन करनेसे रक्तार्श (खूनी बवासीर) रक्तातिसार, रक्तप्रदर और ऊर्ध्व गत तथा अधोगत रक्तपित्त का नाश होता है ।

१. पलांश. ग. नि.

औषधि के पच जाने पर बकरी के दूधके साथ शाली चावलों का भात खाना चाहिये ।

[७९९] कुटजाष्टक:

(च. द. अति; हा. सं. ३ स्था. ३ अ; ग. नि. लेहा. ५; वृ. यो. त.त ६४; भै. र. अति; ब. से; वृ. मा; यो. र. अति.)

तुलामथार्द्रां गिरिमल्लिकायाः
संक्षुद्य पक्त्वा रसमाददीत ।
तस्मिन्सुपूते पलसम्मितानि
श्लक्ष्णानि पिष्ट्वा सह शाल्मलेन ॥
पाठां समङ्गातिविषां समुस्तां
बिल्वं च पुष्पाणि च धातकीनाम् ॥
प्रक्षिप्य भूयो विपचेत्तु ताव-
द्दर्वीप्रलेपः स्वरसस्तु यावत् ॥
पीतस्त्वसौ कालविदा जलेन
मण्डेन वाजापयसाऽथवाऽपि ॥
निहन्ति सर्वं त्वतिसारमुग्रम्
कृष्णं सितं लोहितपीतकं वा ॥
दोषं ग्रहण्या विविधं च रक्तम्
शूलं तथार्शांसि सशोणितानि ।
असृग्दरं चैवमसाध्यरूपं
निहंत्यवश्यं कुटजाष्टकोऽयम् ॥

कुड़ेकी ६। सेर गीली छालको कूट कर ३२ सेर जलमें पकावें । जब चौथा भाग शेष रह जाय तो उसे उतार कर छानकर उसमें मोचरस, पाठा, बराहक्रान्ता (या मजीठ) अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी और धाय के फूल, इनमें से प्रत्येकका ५–५ तोला बारीक चूर्ण मिलाकर इतना पकावें कि गाढ़ा होकर करछलीसे लगने लगे ।

इसे बलानुसार यथोचित मात्रा से जल, मण्ड

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

या बकरीके दूधके साथ सेवन करने से सब प्रकारके प्रबल अतिसार, काले सफेद, पीले और लाल आदि रंग बिरंगे दस्त, अनेक प्रकारके ग्रहणी रोग, रक्तस्राव, शूल, खूनी बवासीर और कष्टसाध्य रक्तप्रदर का नाश होता है।

[८००] कुनट्यादिलेहः

(बं. से । कासे, र. का. धे. श्वासा)

कुनटीसैन्धवव्योषविडङ्गामलहिङ्गुभिः ॥
लेहस्साज्यमधुःकासश्वास हिक्कानिवारणः ॥

शुद्ध मनसिल, सेंधानमक, त्रिकुटा, बायबिड़ङ्ग, बांसा (या आमला) और हींगके चूर्णको घी और शहदमें मिलाकर चाटने से खांसी, श्वास और हिचकी का नाश होता है।

[८०१] कुरण्टकादिनामा लेहः (यो. र. ज्व)

कुरण्टकं समूलं च कुठारच्छेदक्षुण्णकम् ।
पानीयमष्टप्रस्थं वा क्वाथमष्टावशेषकम् ॥
शेषक्वाथं भाण्डमध्ये पुनः क्वाथ्याग्निना पचेत् ।
क्वाथे त्रिभागपचिते चूर्णद्रव्याणि निक्षिपेत् ॥
एला लवङ्गं त्रिफला चव्यं पत्रककेसरम् ।
द्विभार्गी ग्रन्थिकं पाठा मागधी चित्रकुष्ठकम् ॥
कोलाञ्जनं चाजमोदा वज्रवल्ली विडङ्गकम् ।
जीरद्वयं चेन्द्रयवं मुस्तादीप्यकसैन्धवम् ॥
कटुकाऽतिविषा मूर्वा करञ्जस्त्वरलुग्रकम् ।
एतद्द्रव्यं सूक्ष्मचूर्णं पूर्वक्वाथेन संयुतम् ॥
लेहपाकं च विधिवद्धात्रीफलसमानकम् ।
उष्णोदकानुपानेन सेवयेद्दिनविंशतिम् ॥
द्वंद्वज्वरं पुराणं च त्वग्निमान्द्यमरोचकम् ।
त्वग्गतास्थितगतौ रक्तगतं मांसगतं ज्वरम् ॥
संधिज्वरं च ह्यत्युग्रं रात्रिज्वरमथो हरेत् ।
त्रिदोषजं ज्वरं हन्ति श्वासकासज्वरापहः ॥
गलरोगोपशमनो विषमज्वरनाशनः ।
कुरण्टकादिनामाऽयं लेहो रोगाहितः सदा ॥

कुरण्ट (पिया बांसा) को मूल सहित लेकर कुल्हाड़ेसे टुकड़े करके कूटकर १६ सेर पानीमें पकावें। जब आठवां भाग शेष रह जाय तो छानकर फिर पकायें जब तीन भाग पानी जल जाय तो उसमें इलायची, लौंग, त्रिफला, चव, तेजपात, केसर (या नागकेसर) दोनों प्रकारकी (श्वेत और नीले पुष्पकी) भारंगी, पीपलामूल, पाठा, पीपल, चीता, कूठ, बेर, सुरमा, अजमोद, हड़जोड़ी, बायबिड़ंग, दोनों जीरे, इन्द्रजौ, नागरमोथा, अजवायन, सेंधा नमक, कुटकी, अतीस, मूर्वा, करञ्जवा, अरलू और शुद्ध मीठा तेलिया। इन सबका महीन चूर्ण मिलाकर यथाविधि अवलेह पाक सिद्ध करें।

इसे आमलेके बराबर मात्रामें गरम पानीके साथ २० दिन तक सेवन करनेसे पुराना बुखार, द्वन्द्वज ज्वर, अग्निमांद्य, अरुचि, त्वचा-गत, अस्थि गत, रक्तगत और मांसगत ज्वर, सन्धि ज्वर, प्रबल रात्रि ज्वर, सन्निपात ज्वर, श्वास, खांसी, गलरोग और विषमज्वरका नाश होता है।

[८०२] कुलत्थगुडः

(र. र. हिक्का. ब. से; कासा)

कुलत्थो दशमूलश्च तथैव द्विजयष्टिका ।
शतं शतश्च संगृह्य फलद्रोणे विपाचयेत् ॥
पादावशेषे तस्मिंश्च गुडस्यार्द्धतुलां क्षिपेत् ।
शीतीभूते च पक्वे च मधुनोऽष्टौ पलानि च ॥
षट्पलश्च तुगाक्षीर्याः पिप्पल्याश्च पलद्वयम् ।
त्रिसुगन्धिसुगंधं[1] तत्खादेदग्निबलं प्रति ॥
श्वासं कासं ज्वरं हिक्कां नाशयेत्तमकन्तथा ॥

कुलथी, दशमूल और भारंगी ६।-६। सेर

१ ब. से. में त्रिसुगन्धका अभाव है।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेकर प्रत्येकको ३२-३२ सेर पानीमें पृथक् पृथक् पकाकर चौथा भाग शेष रहने पर छान लें और फिर सबको एकत्र करके ३ सेर आध पाव गुड़ मिलाकर पुनः पकाकर गाढ़ा करें। फिर ठण्डा करके उसमें १ सेर शहद, ३० तोला बंसलोचन पीपल, दालचीनी, तेजपात और इलायची प्रत्येकका चूर्ण १०-१० तोला मिलाकर रक्खें।

इसे अग्नि बलानुसार सेवन करनेसे श्वास, खांसी, ज्वर, हिचकी और तमक श्वासका नाश होता है।

[८०३] **कुशावलेहः** (भै. र. प्रमे.)

कुशःकासो वीरणश्च कृष्णेक्षुःखग्गडस्तथा।
एषां दशपलान् भागाञ्जलद्रोणे विपाचयेत् ॥
अष्टभागावशेषन्तु कषायमवतारयेत्।
खण्डप्रस्थं समादाय लेहवत्साधुसाधयेत् ॥
अवतार्य्य ततःपश्चाच्चूर्णानीमानि दापयेत्।
मधुकं कर्कटीबीजं कर्कारुत्रपुषं तथा ॥
शुभामलकपत्राणि त्वगेलानागकेशरम्।
वरुणोमृताप्रियंगुश्च प्रत्येकमक्षसम्मितम् ॥
प्रमेहान् विंशतिं हन्ति मूत्राघातांस्तथाऽश्मरीः।
वातिकान् पैत्तिकांश्चापि,
श्लैष्मिकान् सान्निपातिकान् ॥
हन्त्यरोचकमत्युग्रं बलपुष्टिकरं परम् ॥

कुशा, कांस, खस, काली ईखकी जड़ और खग्गड (ईख विशेष) की जड। सब चीजें बराबर बराबर मिलाकर ४० तोला लेकर ३२ सेर पानी में पकावें और आठवां भाग शेष रहने पर छानलें, इसके पश्चात् उसमें १ सेर खांड मिलाकर पुनः पकावें और जब लेहके समान हो जाय तो अग्नि से नीचे उतार कर उनमें मुलैठी, ककडीके बीज, पेठके बीज, खीरेके बीज, बंसलोचन, आमला, पतरज, दालचीनी, इलायची, नागकेशर, बरना, गिलोय और फूल प्रियंगु; इनमेंसे प्रत्येकका १।-१। तोला चूर्ण मिलावें।

इसे सेवन करनेसे २० प्रकारके वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज प्रमेह, मूत्राघात, पथरी और प्रबल अरुचिका नाश होता है तथा बल और पुष्टिकी वृद्धि होती है।

[८०४] **कूष्माण्डकावलेहः** (१)
(वृ. नि. र. रक्तपि.)

पुराणं पीनमानीय कूष्मांडस्य फलं दृढम्।
तद्बीजाधारबीजत्वक्शिराशून्यं च कारयेत् ॥
ततोतिसूक्ष्मखंडानि कृत्वा तस्य तुलां पचेत्।
गोदुग्धस्य तुलायुग्मे मंदाग्नौ चालयेच्छनैः ॥
शर्करायास्तुलार्द्धं च गोघृतं प्रस्थमात्रकम्।
प्रस्थार्धमाक्षिकं चापि कुडवं नारिकेरतः ॥
प्रियालफलमज्जानां द्विपलं त्रिसुरीपलम्।
क्षिपेदेकत्र विपचेल्लेहयेत्साधुसाधयेत् ॥
भिषग्भिपक्वमालोक्य ज्वलनादवतारयेत्।
काष्ठौषध्यः क्षिपेदेषां चूर्णं तानि वदाम्यहम् ॥
एकोक्षः शतपुष्पाया अथ जीरो यवानिका।
गोक्षुरः क्षुरकः पथ्या कपिकच्छुफलानि च ॥
सप्तमी त्वक्च मर्त्येपामेषामक्षयुगं पृथक्।
धान्यकं पिप्पलींमुस्तमश्वगंधा शतावरी ॥
तालमूली नागबला वालकं पत्रकं शटी।
जातीफलं लवंगं च सूक्ष्मैलाबृहदेलिकान् ॥
शृङ्गाटकं पर्पटकं सर्वं पलमितं पृथक्।
चंदनं नागरं धात्रीफलं चापि कसेरुकम् ॥
प्रत्येकं पंचकर्षाणि चोत्तार्यैतानि निःक्षिपेत्।
पलद्वयमुशीरस्य पलान्यष्टोपणानि (?) च ॥

१ मरिचानि चेति साधीयान्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कूष्मांडस्यावलेहोयं भक्षितः पलमात्रकः।
किंवा यथावह्निबलं भुंजन् रोगान् विनाशयेत्॥
रक्तपित्तं शीतपित्तमम्लपित्तमरोचकम्।
वह्निमांद्यं सदाहं च तृष्णां प्रदरमेव च॥
रक्तार्शो पित्तजिच्छर्दिं पांडुरोगं च कामलाम्।
उपदंशं विसर्पं च जीर्णं च विषमज्वरम्॥
लेहोयं परमो वृष्यो बृंहणो बलवर्धनः।
स्थापनीयो विशेषेण भाजने मृन्मये नवे॥

मोटे दलवाले पुराने पेठेके छिले हुवे और बीजादिसे रहित बारीक बारीक टुकडे ६। सेर लेकर उन्हें २४ सेर गोदूधमें मन्दाग्नि पर पकावें और धीरे धीरे करछलीसे चलाते रहें; एवं (पेठेके उसीज जाने पर) उसमें खांड ३ सेर आधपाव, गोघृत २ सेर, शहद* १ सेर, नारियलकी गिरी २० तोला, पियालकी गिरी १० तोला और गोखरूका चूर्ण ४ तोला मिलाकर लेह सिद्ध करें। फिर अग्नि से उतार कर उस में निम्न लिखित चीज़ोंका चूर्ण मिलावें।

सोयॉ १ तोला, जीरा, अजवायन, गोखरू, तालमखाना, हरीतकी (हैड) कौंच और दालचीनी प्रत्येक २॥–२॥ तोला, धनिया, पीपल, नागरमोथा, असगन्ध, शतावर, तालमूली (मूसली), नागवला (गंगेरन), सुगन्धवाला, तेजपात, कपूरकचरी, जायफल, लौंग, छोटी इलायची, बडी इलायची, सिंघाडा और पित्तपापडा प्रत्येक ५–५ तोला। चन्दन, सोंठ, आमला और कसेरु प्रत्येक ६।-६। तोला। खस १० तोला, काली मिर्च ०॥ सेर।

इसे ५ तोला अथवा अग्नि बलानुसार न्यूनाधिक मात्रामें सेवन करनेसे रक्तपित्त, शीतपित्त, अम्लपित्त, अरुचि, मन्दाग्नि, दाह, तृष्णा, प्रदर, खूनी बवासीर, पित्तज छर्दि, पांडु, कामला, उपदंश, विसर्प, जीर्णज्वर और विषमज्वरका नाश होता है। यह अवलेह वृष्य, बृंहण एवं बलकारक है।

इसे मिट्टीके बरतनमें रखना अधिक उत्तम है।

* इस प्रकार अवलेहों में मधुका पाक करना शास्त्र विरुद्ध है।

[८०५] कूष्माण्डकावलेहः (२)

(शा. ध. म. खं. अ. ८)

निष्कुलीकुष्माण्डखंडान्पलशतं पचेत्।
निक्षिप्य द्वितुलं नीरमर्धशिष्टं च गृह्यते॥
तानि कूष्मांडखंडानि पीडयेद्दृढवाससा।
आतपे शोषयेत्किञ्चिच्छूलाग्रैर्बहुशो व्यधेत्॥
क्षिप्त्वा ताम्रकटाहे च दद्यादष्टपलं घृतम्।
किञ्चिच्च भर्जयित्वा तु पूर्वोक्तं च जलं क्षिपेत्॥
खण्डं पलशतं दत्त्वा सर्वमेकत्र पाचयेत्।
सुपक्व पिप्पलीशुण्ठीजीराणां द्विपलं पृथक्॥
पृथक् पलार्द्धं धन्याकं पत्रैला मरिचं त्वचम्।
चूर्णीकृत्य क्षिपेत्तत्र घृतार्द्धं क्षौद्रमावपेत्॥
खादेदग्निबलं दृष्ट्वा रक्तपित्ती क्षयी ज्वरी।
शोषतृष्णातमश्छर्दिकासश्वासक्षतातुरः॥
कूष्मांडकावलेहोऽयं बालवृद्धेषु युज्यते।
उरःसंधानकृद् वृष्यो बृंहणो बलकृन्मतः॥

छिलके और बीजों आदि से रहित पेठे के टुकड़े ६। सेर लेकर २५ सेर पानी में पकावें, जब आधा पानी जल जाय तो उसे अग्नि से उतार कर पेठे के टुकड़ों को कपड़े में बांधकर अच्छी तरह निचोड़ें और उन्हे तकुवे या सुवे आदि से अच्छी तरह छेद कर थोड़ी देर धूप में सुखावें; इसके बाद उन्हें तांबे की कड़ाही में डाल कर १ सेर घी में भूनें। जब पेठा कुछ २ भुन जाए तो उस में पूर्वोक्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जिसमें पेठा पकाया था वह) जल और ६। सेर खांड डाल कर पकावें। जब लेहके समान गाढ़ा हो जाय तो उसमें पीपल, शहद और ज़ीरे का चूर्ण १०-१० तोला, धनिया, तेजपात, इलायची, काली मिर्च और दाल चीनी प्रत्येक का चूर्ण २॥-२॥ तोला मिलावें एवं ठंडा होने पर ०॥ सेर शहद मिलाकर रक्खें।

इसे अग्नि बलानुसार यथोचित मात्रा में सेवन करने से रक्तपित्त, क्षय, ज्वर, शोथ, तृष्णा, आंखों के आगे अंधेरा आना, वमन, खांसी, श्वास और क्षत का नाश होता है।

यह अवलेह बालक और वृद्धोंके वास्ते हितकारी, उरसन्धान कारक, वृष्य, बृंहण और बलकारक है।

[८०६] कूष्मांडखंडलेहः (३)

(शा. ध. म. खं. अ. ७)

युक्तया कूष्मांडं खंडं च स्वरणं विपचेत्सुधीः।
अर्शसां मूढवातानां मंदाग्नीनां च युज्यते ॥

पेठे और ज़िमिकन्द के टुकडों को यथा विधि पकाकर सेवन करनेसे बवासीर, मूढ़वात और मन्दाग्नि का नाश होता है।

[८०७] कूष्माण्डखण्डः (४)

(भै. र; र. रा. सुं; रसे. सा. सं; वै. र; । र. पि; वा. भ.चि. अ. र; भा. प्र; र. र; धन्व; व. से; च. द; वृ. मा;)

कूष्माण्डकात्पलशतं सुस्विन्नं निष्कुलीकृतम्।
पचेत्पात्रे घृतप्रस्थ शनैस्ताम्रमये दृढे ॥
यदा मधुनिभःपाकस्तदा खण्डशतं न्यसेत्।
पिप्पलीशृङ्गवेराभ्यां द्वेपले जीरकस्य च ॥
न्यसेच्चूर्णीकृतं तत्र दर्व्या संघट्टयेत्पुनः।
तत्पक्वं स्थापयेद्भाण्डे दत्वा क्षौद्रं घृतार्द्धकम् ॥
त्वगेलापत्रमरिचधान्यकानां पलार्धकम्।
तद्यथाग्निबलं खादेद्रक्तपित्ती क्षतक्षयी ॥
कासश्वासतमच्छर्दितृष्णाज्वरनिपीडितः।
वृष्यं पुनर्नवकरं बलवर्णप्रसादनम् ॥
उरःसन्धानकरणं बृंहणं स्वरबोधनम्।
अश्विभ्यां निर्मितं श्रेष्ठं कूष्माण्डकरसायनम् ॥
खण्डामलकमानानुसारात्कूष्माण्डकद्रवात्।
पात्रं पाकायदातव्यं यावान्वात्र रसो भवेत् ॥*

पेठे के छिले हुवे साफ़ और उबले हुवे ६। सेर टुकड़ोंको तांबे के पात्र में २ सेर घी में भूने। जब पकते २ शहद के समान हो जांय तो उन में ६। सेर खांड तथा पीपल, सोंठ और जीरे का चूर्ण १०-१० तोला तथा दालचीनी, इलायची, तेजपात, काली मिर्च और धनिये का २॥-२॥ तोले चूर्ण मिला कर पकावे और करछी से चलाते रहें। जब गाढ़ा हो जाय तो उतार कर ठंडा होने पर उसमें १ सेर शहद डाल कर रक्खें।

इसे अग्नि बलानुसार यथोचित मात्रा में सेवन करने से रक्तपित्त, क्षत, क्षय, खांसी, श्वास, तम, छर्दि, तृष्णा और ज्वर का नाश होता है।

यह अवलेह वृष्य, नवजीवन-दाता, बल वर्द्धक, वर्ण शोधक, उरः सन्धान कारक, बृंहण, स्वर को तीव्र करने वाला अत्युत्तम रसायन है।

[८०८] कूष्मांडगुडः

(वृ. नि. र.। संग्र; भै. र। ग्रह.)

कूष्मांडानां सुपक्वानां स्विन्नानां निष्कुलत्वचाम्।
सर्पिः प्रस्थे पलशतं ताम्रपात्रे शनैः पचेत् ॥
पिप्पली पिप्पलीमूलं चित्रकं गजपिप्पली।

*** नोटः-इस पाक में पेठे को पकानेसे जो रस निकलेगा वह सब अथवा उसमेंसे ४ सेर रस पाकमें डालना चाहिए।**

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धान्यकानि विडंगानि नागरं मरिचानि च ॥
त्रिफला चाजमोदा च कलिंगं जातिसैंधवे।
एकैकस्य पलं चैकं त्रिवृतोष्टौ पलानि च ॥
तैलस्य च पलान्यष्टौ गुडात्पंचदशैव तु।
आमलक्या रसं चात्र प्रस्थत्रयमुदीरितम् ॥
तावत्पाकं प्रकुर्वीत मृदुना वह्निना भिषक्।
यावद्दर्वीप्रलेपःस्यात्तदैनमवतारयेत् ॥
औदुंबरं चामलकं बदरं वा यथाबलं।
तावन्मात्रमिदं खादेद्भक्षयेद्वा यथाबलम् ॥
अनेनैव विधानेन भत्युक्तस्य दिने दिने।
निहंति ग्रहणीरोगान् कुष्ठमर्शो भगंदरम् ॥
ज्वरमानाहहृद्रोगगुल्मोदरविषूचिकाः।
कामलापांडुरोगं च प्रमेहांश्चैकविंशतिम् ॥
वातशोणितवीसर्पदद्रुयक्ष्महलीमकान्।
वातपित्तकफान्सर्वान्कुष्ठान्समाहरेत् ॥
व्याधिक्षीणा वयःक्षीणाःस्त्रीषु क्षीणाश्च ये नराः।
तेभ्यो हितो गुडोऽयं स्याद्वंध्यानामपि पुत्रदः ॥
वृष्यो बल्यो बृंहणश्च वयःसंस्थापनःपरः ॥

पके हुवे पेठ के बीज और छिल्कों आदि से रहित उबाले हुवे ६। सेर टुकड़ों को तांबे के बर्तन में २ सेर घी में धीरे धीरे भूनें फिर उसमें पीपल, पीपलामूल, चिता, गजपीपल, धनिया, बायबिड़ंग, सोंठ, काली मिर्च, त्रिफला, अजमोद, इन्दयव, जावित्री और सेंधा नमक का चूर्ण ५-५ तोला, निसोत ०॥ सेर, तेल १ सेर, गुड़ १५ छटांक और आमले का रस ६ सेर मिला कर मन्दाग्नि पर इतना पकावें कि गाढ़ा होकर करछी से लगने लगे।

इसे प्रतिदिन गूलर, आमले या बेरके बराबर अथवा अग्नि बलानुसार न्यूनाधिक मात्रा में सेवन करने से संग्रहणी, कुष्ठ, बवासीर, भगन्दर, ज्वर, अफारा, हृद्रोग, गुल्म, उदर रोग, हैज़ा, कामला पांडु, २१ प्रकार के प्रमेह, वात रक्त, विसर्प, दाद, यक्ष्मा, हलीमक, वात, पित्त, कफ और सब प्रकार के कुष्ठ नष्ट होते हैं।

यह अवलेह रोगों से अथवा स्त्रीप्रसंग आदि से उत्पन्न हुई क्षीणता को नष्ट करता एवं वंध्या (बांझ) स्त्री को पुत्रोत्पादन की शक्ति प्रदान करता है। यह बलकारक, वृष्य, बृंहण और वयः संस्थापक (आयु को स्थिर रखने वाला) है।

१ भै. र. में सोंठ की जगह अजवायन और गुड़ ३ सेर आधपाव है।

[८०९] केशरलेहः (वृ. नि. र. । रक्तपि.)

अतिनिःसृतरक्तो वा क्षौद्रेण रुधिरं पिबेत्।

रक्तका अत्यधिक स्राव होने की दशा में शहद में केसर मिलाकर पीना चाहिए।

[८१०] कोलमज्जा योगः

(वृ. नि. र; यो. चि. म. अ. र; । छर्दि,)

कोलमज्जाकणाबर्हिपक्षभस्मसशर्करम्।
मधुना लेहयेच्छर्दिहिक्काकोपस्य शांतये ॥

बेर की गुठली की गिरी, पीपल, मोर के पंख की भस्म और चीनी को शहद में मिलाकर चाटने से छर्दि (वमन) और हिक्का (हिचकी) का नाश होता है।

[८११] कोलमज्जावलेहः

(च. द; वृ. यो. त. त. १९ । हि. श्वा.)

कोलमज्जांजनं लाजास्तिक्ता कांचनगैरिकम्।
कृष्णा धात्री सिता शुंठी कासीसं दधिनाम च
पाटल्याः सफलं पुष्पं कृष्णाखर्जूरमुस्तकम्।
षडेते पादिका लेह्या हिक्काघ्ना मधुसंयुताः ॥

बेर की गुठली की गिरी, सुरमा और धान

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की खील (२) कुटकी, नागरमोथा और गेरु। (३) पीपल, आमला, मिश्री और सोंठ। (४) शुद्ध कसीस और कैथ। (५) पाढल के फूल और फल। (६) पीपल, खजूर और नागरमोथा।

इन छः प्रयोगों को मधु के साथ सेवन करने से हिचकी का नाश होता है।

[८१२] कोलाद्यवलेहः

(वृ. नि. र; वृ. मा; व. से; यो. चि. म. अ. २। छर्दि.)

कोलामलकमज्जानौ मक्षिकाविट् सिता मधु।
सकृष्णातंदुलो लेहश्छर्दिमाशु व्यपोहति॥

बेर और आमले की गुठली की गिरी; मक्खी की विष्टा, मिश्री, शहद और पीपल को पीस कर चावल के पानी के साथ लेह बनाकर चाटने से छर्दि का नाश होता है।

[८१३] कपिकच्छूपाकः(यो. र. । उ. खं.)

निस्तुषं वानरीबीजं कृत्वा त्रिंशत्पलानि च।
त्रिंशत्पलां सितां दत्त्वा घृतं दत्त्वा पलाष्टकम्॥
दुग्धाढकसमायुक्तं मृदुना वन्हिना पचेत्।
यावद्दर्वीप्रलेपः स्यात्तन्मध्ये चूर्णितं क्षिपेत्॥
जातीफलं त्रिकटुकं त्रिगन्धं देवपुष्पकम्।
अकल्करं जातिपत्री कोकिला बीजकेसरम्॥
पुनर्नवापले द्वे च मुसली साहिफेनकम्।
पारदं लोहचूर्णं च त्वभ्रकं च पलार्धकम्॥
चन्दनागरुकस्तूरीकर्पूरं शाणमात्रकम्।
पलार्धं भक्षयेत्तत्तु क्रमाद्वीर्यबलप्रदम्॥

कौंचके छिले हुवे बीज १। सेर, खांड १ सेर १४ छटांक, घी १ सेर और दूध ८ सेर लेकर सब को एकत्र करके मन्दाग्नि पर इतना पकावें कि गाढा होकर करछी को लगने लगे। फिर उसमें जायफल, त्रिकुटा, त्रिगन्ध (दालचीनी, तेजपात, इलायची), लौंग, अकरकरा, जावित्री, काकोली, नागकेसर और पुनर्नवा प्रत्येक १०-१० तोला, मूसली, अफीम, पारद (रस सिन्दूर) लोहभस्म और अभ्रक भस्म प्रत्येक २॥-२॥ तोला, चन्दन, अगर, कस्तूरी और कपूर प्रत्येक ४-४ माशा लेकर सब चीजों का चूर्ण करके मिलावें।

इस अवलेह को २ तोला की मात्रानुसार सेवन करने से उत्तरोत्तर बलवीर्य की वृद्धि होती है।

[८१४] कुबेरपाकः (वृ. नि. र. । वा. व्या.)

कुबेरं प्रस्थनीरे च क्षिप्त्वा रात्रौ चतुर्गुणम्।
क्षीरे प्रातः पचेत्सम्यग्घृतेन मृदुवन्हिना॥
शीतं कृत्वा सुनिष्पन्नं मध्ये मधूनि योजयेत्।
चातुर्जातं त्रिकटुकं जातिपत्रफलं तथा॥
देवपुष्पं विडंगं च मिशी जीरं घनं बला।
निशाद्वयं तथा लोहं शुल्वं वंगं पलार्धकम्।
प्रत्येकं चूर्णितं क्षिप्त्वा भक्षयेच्च पलं बुधः।
सर्वान्वातमयान्हंति चाग्निमांद्यं बलक्षयम्॥
प्रमेहं मूत्रकृच्छ्रं च चाश्मरीगुल्मपांडुनुत्।
पीनसं ग्रहणीदोषमतीसारमरोचकम्॥
मधुपक्वः कुबेरोयं भक्षयेन्नितरां बुधः।
कामवृद्धिकरस्तस्य धातुवृद्धिश्च जायते॥
कांतिपुष्टिकरो बल्यः कुबेराख्यो रसोत्तमः॥

लता करंजवों को रात्रि के समय २ सेर पानी में भिगोदें और प्रातः काल (उनकी गिरी निकालकर उसे) ४ गुने दूध तथा घी के साथ मंदाग्नि पर पकावें और पाक सिद्ध हो जाने पर ठंडा करके उसमें शहद तथा चातुर्जात (दालचीनी, तेजपात, नागकेसर, इलायची) त्रिकुटा, जायफल,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जावित्री, लौंग, बा विडंग, सौंफ, जीरा, नागरमोथा, खरैटी, दारुहल्दी, लोह भस्म, ताम्र भस्म और बंग भस्म, प्रत्येक का २॥-२॥ तोला चूर्ण मिलावें।

इसे ५ तोला की मात्रानुसार सेवन करने से सब प्रकार की वातव्याधियां, अग्निमांद्य, बलक्षय, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, गुल्म, पाण्डु, पीनस, ग्रहणीविकार, अतिसार और अरुचिका नाश होता है

यह कामशक्ति और धातुवर्द्धक तथा कांति, पुष्टि और बलकारक है।

[८१५] कुबेराक्षपाकः (वृ. नि. र. । शूले)

धान्याम्ले त्रिदिनं विलाप्य
विपचत्यग्नौ कूबेराक्षकम् ।
पादांशं पटु संविधाय च पचेद्भित्वा च संपूरयेत्
सिन्धूत्थं त्रिकटूद्भवेन रजसा संसिच्य निम्बुद्रवैः
शुष्कास्ते रुचिरा भवन्ति च
तथा निघ्नन्ति शूलान् बहून् ॥

करंजवों को ३ दिन तक कांजी में भिगोये रक्खें और फिर उनमें चौथाई भाग नमक मिलाकर पकावें इसके बाद अन्दर की गिरी निकालकर उसमें सेंधा नमक और त्रिकुटेका चूर्ण भरकर निम्बू के रसमें भिगोदें। जब रस सूख जाए तो काम में लावें।

यह रुचिवर्द्धक और अनेक प्रकार के शूल नाशक हैं।

[८१६] कुमारीपाकः (वृ. नि. र. । क्षय.)

कुमारीकंदमादाय पलं विंशतिसंख्यया ।
चतुर्गुणं च गोदुग्धं पाचयेन्मंदवह्निना ॥
यावच्च जीर्यते दुग्धं तावत्पाचनकं कुरु ।
छायाशुष्कं च कुर्वीत चूर्णयेद्बुद्धिमान् भिषक्
पिप्पली मरिचं शुंठी प्रत्येकं च पलत्रयम् ।
जातीफलं जातिपत्री लवंगं पलमेव च ॥
गोक्षुरं कर्कटीबीजं प्रत्येकं च पलं पलम् ।
चातुर्जातपलञ्चैव चित्रकश्च पलं तथा ॥
सर्वेषां सूक्ष्म चूर्णञ्च कारयेद्बुद्धिमान् भिषक् ।
सिता पलं च विंशत्या गोघृतं च पलं(?)दश॥
तत्समं महिषीदुग्धं तत्समं मधुमिश्रितम् ।
लोहपात्रे विनिक्षिप्य पाचयेन्मृदुवन्हिना ॥
चूर्णं निक्षिप्य यत्नेन दर्व्या सम्यक् विचालयेत्
यावद्घृतं प्रदृश्येत तावत्पाचनकं कुरु ॥
कर्षमेकं लोहभस्म सुवर्णं तत्समं ततः ।
सिंदूरं कर्षमेकं तु दापयेद्भिषगुत्तमः ॥
कोलप्रमाणवटकान् भक्षयेद्बुद्धिमान्नरः ।
जीर्णज्वरं क्षयं कासं श्वाससंतापशूलनुद् ॥
अजीर्णमामवातघ्नं प्रदरं पञ्चनाशनम् ।
स्त्रीणां वंध्यत्वहरणं पुत्रं चैव प्रसूयते ॥
अंडवृद्धिहरं चैव स्त्रीणां रमयते शतम् ।
इदं गोप्यमिदं गोप्यमश्विनिदेवनिर्मितम् ॥

घी कुमार की १। सेर जड़ को ४ गुने गाय के दूध में मंदाग्नि पर पकावें। जब दूध खुश्क हो जाय तो उसे सुखाकर चूर्ण करें और इसके साथ पीपल, काली मिर्च और सोंठ का चूर्ण ३-३ छटांक, जायफल, जावित्री, लौंग, गोखरू, ककड़ी के बीज, चातुर्जात (दालचीनी, तेजपात, नागकेसर, इलायची) और चित्ता प्रत्येकका चूर्ण ५-५ तोला तथा मिश्री १। सेर, गाय का घी १। सेर, भैंस का दूध १। सेर और शहद १। मिलाकर लोहे के बरतन में मंदाग्नि पर पकावें और करछी से चलाते रहें जब वह घृत छोड़ दें (घी अवलेह से पृथक होने लगे) तो उसमें लोह भस्म सुवर्ण भस्म, और रस सिन्दूर १।-१। तोला मिलावें।

इसे ८ माशे की मात्रानुसार सेवन करने से जीर्णज्वर, क्षय, खांसी, श्वास, संताप, शूल, अजीर्ण,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आमवात, प्रदर, बंध्यत्व (वांझपना) और अण्डवृद्धि का नाश होता है। *

[८१७] **केशरपाकः** (यो. र.। उ. खं.)

व्योषं चतुर्जातफलत्रिकं च
लवङ्गकृष्णागुरु चन्दनं च ।
इक्षूरबीजं करहाटकं च
जातीफलं मर्कटिकाफलं च ॥
शाल्मलिनिर्यासबलाश्वगन्धा
गोक्षूरबीजं मुसली क्रमिघ्नम् ।
समुद्रशोषं विषपञ्जरं च
पुष्पं सुजात्युद्भवकङ्कबीजम् ॥
सर्वैः समं योज्यं सुकुङ्कुमं च
सुचूर्णितं त्रिंशति भागयुक्तम् ।
कस्तूरिका षोडशभागचूर्णम्
खण्डं चतुर्भागयुतं विपक्वम् ॥
वङ्गं रसेन्द्रं गगनं सुलोहं
कान्तं हि ताम्रं रविभागयुक्तम् ।
दलानि हेम्नो द्विशतानि दत्वा
तथैव देयानि च राजतानि ॥
एकत्र सर्वं विनिधाय वैद्यो
जयाष्टभागं विदधीत लेहम् ।
जातिफलप्रमाणेन भक्षयेत्प्रातरुत्थितः ॥
वीर्यवृद्धिं करोत्येष सर्वव्याधिविनाशनः ।
शतश्च रमते स्त्रीणां कामतुल्यो भवेन्नरः ॥
सर्वान्वातामयान्हन्ति प्रवृद्धं वातशोणितम् ।
अस्थिरोगं शिरोरोगं सन्धिरोगं च नाशयेत् ॥
अस्य सेवनमात्रेण वृद्धोऽपि तरुणायते ।
धन्यं यशस्करं सम्यगायुरारोग्यवर्द्धनम् ॥
काश्मीरकावलेहोऽयं बलकान्ति विवर्द्धनः ॥

* इसकी पाक विधि शास्त्रोक्त पाक विधि विरुद्ध है। (अनु०)

त्रिकुटा, चातुर्जात (दालचीनी, तेजपात, नागकेसर, इलायची) त्रिफला, लौंग, पीपल, अगर, चन्दन, तालमखाना, आकरकरा, जायफल, कौंचके बीज, मोचरस, खरैंटी, आसगंध, गोखरू, मूसली, बायबिडंग, समन्दर सोख, विषपञ्जर, चमेलीके फूल और कंकु बीज प्रत्येक १ भाग, केसर २० भाग, कस्तूरी १६ वां भाग, खांड ४ भाग। यथा विधि पाक बनाकर उसमें रांग भस्म, अभ्रक भस्म, पारद (रससिन्दूर) कान्त लोह भस्म और ताम्रभस्म १२-१२ भाग तथा २०० नग सोनेके वर्क और २०० चांदीके वर्क तथा ८ भाग शुद्ध भांग मिलावें।

इसमें से प्रति दिन प्रातःकाल जायफल के बराबर सेवन करनेसे वीर्य वृद्धि और समस्त व्याधियों का नाश होता है। एवं अत्यन्त कामशक्ति बढ़ती है। यह समस्त वातव्याधि, प्रबल वातरक्त, अस्थिरोग, शिरोरोग और संधिरोग नाशक है। इसके सेवन से वृद्ध भी तरुण के समान हो जाता है। एवं आयु, आरोग्य, बल और कान्तिकी वृद्धि होती है।

[८१८] **कौंचपाकः** (यो. चि. म. अ. १)

पचेद्द्विप्रस्थं कपिकच्छुबीजं
उष्णोदके(?)यामचतुष्टयञ्च ।
तान्घर्षयेद्वस्त्रदृढे सुगाढं
यावद्भवेन्निर्मलनिस्तुषं च ॥
छायाविशुष्कं च तदेव चूर्णं
क्षीरं क्षिप द्रोणसपादशेषम् ।
दद्यात् घृतप्रस्थयुगञ्च तस्मिन्
विपाचयेन्मन्दहुताशने च ॥
आकल्लकं नागरदेवपुष्पं
गोक्षीरकं कुंकुमहंसपाकम् ।
सारं कुबेरं घन तुर्यजातं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चीणीकबाबाबलबीजयुक्तम् ॥
वंशोद्भवं वंगमृताभ्रकञ्च
द्राक्षासिता सर्वसमा प्रदेया ।
पलार्द्धमानं तु सदैव भक्ष्य-
मम्लं तदन्तः परिवर्जनीयम् ॥
ये क्षीणशुक्राः प्रबलप्रमेहा-
स्तेषामिदं वीर्यविवर्द्धनञ्च ।
पुष्टिं बलं बुद्धिबलञ्च वृष्यं
निहंति सर्वानपि वातरोगान् ॥

२ सेर कौंचके बीजोंको चार पहर तक गरम पानीमें पकावें फ़िर उन्हें किसी मजबूत कपड़े में बांधकर खूब मसलें जिससे उनके छिलके अलग हो जाय। अब इन्हें सुखाकर चूर्ण करके ३२ सेर दूधमें पकावें और चौथा भाग शेष रहने पर उसमें ४ सेर घी डालकर पुनः मन्दाग्नि पर पकावें और पाकके अन्तमें अकरकरा, सोंठ, लौंग, गोखरू, केसर, शुद्ध शंगरफ़, तुनका सार, धनया, कबाब-चीनी, बला--बीज, बंसलोचन, बंगभस्म, अभ्रक भस्म, दाख और मिश्री मिलावें।

इसे २॥ तोलेकी मात्रानुसार सेवन करने और खट्टी चीज़ोंसे परहेज़ रखनेसे वीर्यकी कमी और प्रबल-प्रमेह दूर होकर वीर्य वृद्धि होती है। यह पौष्टिक, बलकारक, बुद्धिवर्द्धक, वृष्य और वातरोग नाशक है।

अथ ककारादि घृतप्रकरणम्।

[८१९] कटुकाद्यं घृतम् (च.सं.चि.अ.२०)

कटुकारोहिणीमुस्तं हरिद्रे वत्सकात् फलम् ।
पटोलं चन्दनं दूर्वा त्रायमाणा दुरालभा ॥
कृष्णा पर्पटको निम्बो भूनिम्बो देवदारु च ।
तैः कार्षिकैर्घृतप्रस्थः सिद्धःक्षीरचतुर्गुणः ॥
रक्तपित्तं ज्वरं दाहं श्वयथुं सभगन्दरम् ।
अर्शांस्यसृग्दरञ्चैव हन्ति विस्फोटकांस्तथा ॥

कुटकी, नागरमोथा, हल्दी, दारुहल्दी, इन्द्रजौ, पटोलपत्र, चन्दन, दूर्वा (दूबड़ा), घास, त्रायमाणा (बनफ़शा) धमासा, पीपल, पित्तपापड़ा, नीम, चिरायता और देवदारु प्रत्येक १।-१। तोला लेकर इनके कल्क और २ सेर दूधके साथ २ सेर घीका पाक सिद्ध करें।

यह घृत रक्तपित्त, ज्वर, दाह, सूजन, भगन्दर, बवासीर, प्रदर और विस्फोटक नाशक है।

[८२०] कणाद्यं घृतम् (वृ. नि. र. क्षय.)

कणापलं पञ्च गुडांभसश्च
सज्यं (?)घृतं वै विपचेत्समांशम् (?) ।
पानेथवा भोजनके प्रशस्तं
क्षये च राजक्षयनाशहेतु ॥

पीपल २५ तोला, गुड़का पानी २५ तोला और घी २५ तोला लेकर घृत पाक सिद्ध करें। इसे पीने अथवा भोजनके साथ सेवन करनेसे क्षय और राजयक्ष्माका नाश होता है।

[८२१] कण्टकारी घृतम् (१)

(च. सं. चि. अ. २२; यो. र. कासे.)

समूलफलपत्रायाः कण्टकार्या रसाढके ॥
घृतप्रस्थं बला व्योषविडंगशटीचित्रकैः ॥
सौवर्चलयवक्षारपिप्पलीमूलपौष्करैः[१] ।

१ पिप्पलीमूलकी जगह विश्वामलक पाठ है-यो. र.।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वृश्चीकबृहतीपथ्यायवानीदाडिमर्द्धिभिः ॥
द्राक्षापुनर्नवाचव्यदुरालभाम्लवेतसैः ।
शृङ्गीतामलकीभार्गीरास्नागोक्षुरकैः पचेत् ॥
कल्कैःतत्पूर्वकासेषु हिकाश्वासेषु शस्यते ।
कण्टकारीघृतं ह्येतत्कफव्याधिनिषूदनम् ॥

मूल, फल और पत्र युक्त कटेलीके ४ सेर रस और बला, त्रिकुटा, वायबिडंग, कपूरकचरी, चीता, सौंचल नमक, जवाखार, पीपलामूल, पोखरमूल सफेद पुनर्नवा, बड़ी कटेली, हैड़, अजवायन, दाड़िम, ऋद्धि, दाख, पुनर्नवा (विसखपरा), चव्य, जवासा, अमलबेत, काकड़ासिंगी, भुई आमला, भारंगी, रास्ना और गोखरूके कल्क से २ सेर घी पकावें।

इसके सेवनसे खांसी, हिचकी, श्वास और कफजरोगोंका नाश होता है।

[८२२] कण्टकारीघृतम् (२)

(च. सं. चि. अ. २२; वृ. मा; कासा.)

कण्टकारीगुडूचीभ्यां पृथक्त्रिंशत्पलाद्रसे ।
प्रस्थः सिद्धोघृताद्वातकासनुद्वह्निदीपनः ॥

कटेली और गिलोय प्रत्येकके १ सेर १४ छटांक काथमें २ सेर घी पकावें।

यह घृत वातज खांसी नाशक और जठराग्नि वर्द्धक है।

[८२३] कण्टकारीघृतम् (३)(भै. र. बा. रो.)

कण्टकार्या बृहत्याश्च भार्गीवासकयोरपि ।
स्वरसेन तथा छागक्षीरेण विपचेद् घृतम् ॥
कल्कैःकरिकणाकृष्णा मरिचैर्मधुकेन च ।
वचाग्रन्थिकमांसीभिश्चव्य चित्रकचन्दनैः ॥
मुस्तामृतामलयजैर्यमान्या जीरकेण च ।
बलाविश्वौषधाभ्याञ्च द्राक्षादाडिमदारुभिः ॥
सिद्धमेतद् घृतं सद्यः शिशूनां श्वासकासहृत् ।
ज्वरारोचकशूलघ्नं कफनुद्बलवह्निकृत् ॥

कटेली, बडी कटेली, भारङ्गी और बासेके स्वरस, बकरीके दूध और गजपीपल, पीपल, काली मिर्च, मुलैठी, बच, पीपलामूल, जटा मांसी, चव्य, चीता, लाल चन्दन, नागरमोथा, गिलोय, मलियागिरी चन्दन, अजवायन, जीरा, बला, सोंठ, मुनक्का, दाड़िम और देवदारुके कल्कसे यथाविधि घृतपाक सिद्ध करें।

यह घृत बालकोंके श्वास, खांसी, ज्वर, अरुचि, शूल और कफका नाश तथा बल और अग्निकी वृद्धि करता है।

[८२४] कदल्याद्यं घृतम्

(भै. र. यो. रै. सोम. रो.)

कदलीकन्दनिर्य्यासे तत्प्रसूनतुलां पचेत् ।
चतुर्भागावशेषेऽस्मिन् घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥
चन्दनं सरलं मांसी कदलीमूलकं तथा ।
एलालवङ्गत्रिफला कपित्थफलमेव च ॥
औदकानि च कन्दानि न्यग्रोधादिगणस्तथा ।
कल्केनानेन संसिद्धं सोमरोगनिवारणम् ॥
मूत्ररोगानशेषांश्च प्रभूताञ्छुक्रपिच्छिलान् ।
प्रमेहान् विंशतिश्चैव मूत्राघातांस्त्रयोदश ॥
बहुमूत्रं विशेषेण मूत्रकृच्छ्रं तथाश्मरीम् ।
पीतं घृतं निहन्त्याशु विष्णुचक्रमिवासुरान् ॥
कदल्यादिघृतं नाम विष्णुना परिकीर्तितम् ॥

केलेकी जडके ३२ सेर रसमें केलेके ६। सेर फूल पकावें। जब चौथा भाग शेष रह जाय तो उतार कर छान लें। इस क्वाथ और निम्नलिखित कल्कके साथ २ सेर घी पकावें।

कल्क द्रव्य—चन्दन, सरल काष्ठ (चीड),

१ यो. र. में सरल त्रिफला और पीपल का अभाव है।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जटामांसी, केलेकी जड, इलायची, लौंग, त्रिफला, कैथका फल, जलमें उत्पन्न होनेवाले कन्द (यथा–सिंघाडा, कमलकन्द, कसेरू आदि) और न्यग्रोधादि गण। *

यह घृत सोमरोग, सब प्रकारके मूत्ररोग, शुक्रविकार, २० प्रकारके प्रमेह, १३ प्रकारके मूत्राघात और विशेष कर बहुमूत्र, मूत्रकृच्छ्र और पथरीको नष्ट करता है।

इस कदल्यादि घृतका निर्माण विष्णुजीने कहा है यह उक्त रोगोंको, जैसे विष्णुका चक्र असुरोंको नष्ट करता है वैसे ही नाशकारक है।

[८२५] करंजाद्य घृतम्

(वृ. नि. र; भा. प्र. म. खं. । उपदं.)

करञ्जबीजार्जुनशालजंबूवटा-
दिभिःकल्ककषायसिद्धम् ।
सर्पिर्निहन्यादुपदंशदोषं
सदाहपाकं श्रुतिरागयुक्तम् ॥

करंजवेकी गिरी, अर्जुनकीछाल, साल, जामन और पंचक्षीरी वृक्षों (बड, पीपल, पिलखन, गूलर और महुआ) के कषाय तथा कल्कसे सिद्ध घृत, दाह, पाक और स्रावयुक्त उपदंशका नाश करता है।

[८२६] कल्याणक घृतम् (च.चि. अ.१४)

विशालात्रिफलाकौन्तीदेवदार्वेलवालुकम् ।
स्थिरानन्तारजन्यौ द्वे शारिवे द्वे प्रियंगुकम् ॥
नीलोत्पलैलामञ्जिष्ठादन्तिदाडिमकेसरम् ।
तालीसपत्रं बृहतीमालत्याःकुसुमं नवम् ॥
विडंगं पृश्निपर्णी च कुष्ठं चन्दनपद्मकम् ।
कल्कैःकर्षसमैरेतैर्विंशत्याद्यभिरेव च ॥
चतुर्गुणे जले पक्त्वा घृतप्रस्थं प्रयोजयेत् ।
अपस्मारे ज्वरे कासे श्वासे मन्देऽनलक्षये ॥
वातरोगे प्रतिश्याये तृतीयकचतुर्थके ।
छर्द्यर्शोमूत्रकृच्छ्रे च विसर्पोपहतेषु च ॥
कण्डूपाण्ड्वामयोन्मादविषमेहगरेषु च ।
भूतोपहतचित्तानां गद्गदानामरेतसाम् ॥
शस्तं स्त्रीणाञ्च वंध्यानां धन्यमायुर्बलप्रदम् ।
अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नं सर्वग्रहविनाशनम् ॥
कल्याणकमिदं सर्पिः श्रेष्ठं पुंसवनेषु च ॥

इन्द्रायन, त्रिफला, रेणुका, देवदारु, एलवा, शालपर्णी, अनन्तमूल, हल्दी, दारुहल्दी, दोप्रकार की शारिवा, फूलप्रियंगु, नीलोफर, इलायची, मजीठ, दन्ती, अनार, नागकेसर, तालीसपत्र, बड़ी कटेली, चमेलीके ताजे फूल, बायविडंग, पृश्नपर्णी(पिठवन) कूठ, चन्दन, कमल। प्रत्येकका कल्क १।-१। तोला और चार गुने पानीके साथ २ सेर घीका पाक सिद्ध करें।

यह घी अपस्मार, ज्वर, खांसी, श्वास, मंदाग्नि, क्षय, वातव्याधि, जुकाम, तिजारी बुखार, चौथिया, वमन, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, विसर्प, खुजली, पाण्डु, उन्माद, विष, प्रमेह, भूतबाधा, गद्गद स्वर

* न्यग्रोधादि गणः (सु० सं० सू० अ० ३८)
न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षमधुककपीतन ककुभाम्रकोशाम्रचोरकपत्रजम्बुद्वयपियाल मधुकरोहिणीवञ्जुलकदम्बबदरीतिन्दुकीसल्लकीरोध्रसावररोध्रभल्लातकपलाशनन्दीवृक्षश्चेति ।

बड़, गूलर, पीपल, पिलखन, महुआ, अम्बाडा, आम, अर्जुन, कोशाम्र, चोरकपत्र (लाक्षावृक्ष) बडीजामन, छोटीजामन (जमोवा) पियाल (चिरोंजी वृक्ष) कटुकी, बेत, कदम्ब, बेरी, तेंदु, सल्लकी, लोध, पठानीलोध, भिलावा, ढाक और नन्दीवृक्ष।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(हकलाना), वीर्य की कमी और बंध्यत्व (बांझपने) का नाश करता है एवं आयु बल वर्द्धक, अलक्ष्मी, पाप, राक्षस और ग्रह-नाशक है। यह कल्याणक घृत श्रेष्ठ वीर्य उत्पादक है।

[८२७] कसेरुकादि सर्पिः (यो.र.;व.से; ह.रो.)

कसेरुकाशैवलमृङ्गबेरप्रपौण्डरीकं मधुकं बिसं च।
ग्रन्थिश्च सर्पिःपयसा पचेत्तैः
क्षौद्रान्वितं पित्तहृदामयघ्नम् ॥

कशेरु, शैवाल (सिरवाल), अदरक, प्रपौण्डरीक (पुंडरिया कमल) मुलैठी, कमलनाल और पीपलामूल के कल्क से दूध के साथ घृतपाक सिद्ध करें।

इसमें शहद मिलाकर सेवन करने से पित्तज हृद्रोग नष्ट होता है।

[८२८] कामदेव घृतम् (बं. से; र. पि.)

अश्वगन्धा पलशतं तदर्द्धं गोक्षुरस्य च।
शतावरी विदारी च शालपर्णी बलामृता ॥
अश्वत्थस्य च शुङ्गानि पद्मबीजं पुनर्नवा।
काश्मर्याश्च फलञ्चैव माषबीजं तथैव च ॥
पृथग्दशपलान्भागांश्चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत्।
द्रोणशेषे रसे तस्मिन् पूते शीते प्रदापयेत् ॥
मृद्वीका पद्मकं कुष्ठं पिप्पली रक्तचन्दनम्।
पत्रकं नागपुष्पञ्च आत्मगुप्ताफलं तथा ॥
नीलोत्पलं शारिवे द्वे जीवनीयानशेषतः।
पृथक्कर्षसमा भागाः शर्करायाः पलद्वयम् ॥
रसः स्यात्पौण्ड्रकेक्षूणामाढकाढकमाहरेत्।
चतुर्गुणेन पयसा घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥
रक्तपित्तं क्षतक्षीणं कामलां वातशोणितम्।
हलीमकं पाण्डुरोगं वर्णभेदं स्वरक्षयम् ॥
मूत्रकृच्छ्रमुरोदाहं पार्श्वशूलञ्च नाशयेत्।
एतद्राज्ञां प्रदातव्यं बह्वन्तःपुरचारिणाम् ॥
स्त्रीणाञ्चैवाप्रजातानां दुर्बलानाञ्च देहिनाम्।
क्लीवानामल्पशुक्राणां जीर्णानामल्परेतसाम् ॥
श्रेष्ठं बलकरं धन्यं हृद्यं वृष्यं रसायनम्।
ओजस्तेजस्करं स्वर्यमायुष्यं प्राणवर्द्धनम् ॥
संबृंहयति शुष्कांश्च पुरुषान्दुर्बलेन्द्रियान्।
सर्वरोगविनिर्मुक्तस्तोयसिक्तो यथा द्रुमः ॥
कामदेव इति ख्यातं सर्पिरुक्तं महा गुणम् ॥

क्वाथ्यद्रव्य—असगंध ६। सेर, गोखरु ३ सेर आधपाव, शतावर, विदारीकंद, शालपर्णी, बला, गिलोय, पीपल की कोंपल, कमलगट्टा, पुनर्नवा (विसखपरा) खम्भारी के फल और उड़द। प्रत्येक चीज़ ४०-४० तोला।

सबको १२८ सेर पानी में पकाकर चौथा भाग शेष रहने पर छान लें।

कल्क द्रव्य—मुनक्का, पद्माक, कूठ, पीपल, लाल चन्दन, तेजपात, नागकेसर, कौंचके बीज, नीलोफर, दो प्रकारकी शारिवा, जीवनीय * गण प्रत्येक १।-१। तोला।

खांड १० तोला, पौण्डे का रस ८ सेर, ईखका रस ८ सेर, दूध ८ सेर। उपरोक्त सब चीज़ोंसे यथाविधि २ सेर घृत सिद्ध करें।

यह घृत रक्तपित्त, क्षत, क्षीणता, कामला, वातरक्त, हलीमक, पाण्डु, विवर्णता, स्वर क्षय (गला बैठ जाना), मूत्रकृच्छ, हृदयकी दाह और पसली शूलको नष्ट करता है।

यह बहु स्त्रीगामी राजाओं को सेवन करना चाहिये।

* जीवनीयगणः—मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि, वृद्धि, मुलैठी, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, जीवन्ती। च. सू. अ. ४।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह बंध्या (बांझ) स्त्रियों और दुर्बल, नपुंसक, अल्पवीर्य और वृद्ध पुरुषोंके लिये हितकारी, बलकारक, हृद्य, वृष्य, रसायन, ओज और तेजकारक, स्वर, आयु और प्राणवर्द्धक है। इसके सेवन से समस्त रोग नष्ट होकर सूखे हुए दुर्बलेन्द्रिय पुरुष भी मोटे ताज़े हो जाते हैं।

[८२९] काशाद्यंघृतम् (च. सं. चि. अ. १५)

तद्वत्काशविदारीक्षुकुशक्काथ भृतं घृतम् ॥

कास, विदारीकन्द, ईख और कुश के क्वाथ से सिद्ध घृत (अपस्मारका नाश करता है।)

[८३०] काश्मर्यादि घृतम्

(च. सं. चि. अ. ३०)

काश्मर्यत्रिफलाद्राक्षाकासमर्दपरूषकैः ।
पुनर्नवाहरिद्राभ्यां काकनासासहाचरैः ॥
शतावर्यागुडूच्याश्च प्रस्थमक्षसमैर्घृतात् ।
साधितं योनिवातघ्नं गर्भदं परमं पिबेत् ॥

खम्भारी, त्रिफला, मुनक्का, कसौंदी, फालसा, पुनर्नवा (बिसखपरा), हल्दी, दारुहल्दी, कव्वाडोढ़ी (काकनासा), पिया बांसा, शतावर और गिलोयके १।-१। तोला कल्क के साथ २ सेर घृतका पाक सिद्ध करें।

इस घृतके सेवनसे योनीगत वात नष्ट होती है और गर्भ धारण करनेकी शक्ति प्राप्त होती है।

[८३१] कासमर्दादि घृतम्

(च. सं. चि. अ. २२; वा. भ. चि. अ. १३)

कासमर्दाभयामुस्तपाठाकट्फलनागरैः ।
पिप्पल्याकटुरोहिण्याकाश्मर्यैः सुरसेन च ॥
अक्षमात्रैर्घृतप्रस्थं क्षीरद्राक्षारसाढके ।
पचेत् शोषज्वरप्लीहसर्वकासहरं शिवम् ॥

कसौंदी, हैड़, नागरमोथा, कायफल, सोंठ, पीपल, कुटकी, खम्भारी और तुलसी प्रत्येक १।-१। तोला। इनके कल्क और ४ सेर दूध तथा ४ सेर दाखके रसके साथ २ सेर घी पकावें।

यह घृत शोष, ज्वर, तिल्ली और सब प्रकार के कासरोग (खांसी)का नाश करता है।

[८३२] कासीसाद्यं घृतम्

(शा. ध. म. खं. अ. ९)

काशीसं द्वे निशे मुस्तं हरितालं मनःशिलाम् ।
कपिल्लकं गंधकं च विडंगं गुग्गुलुं तथा ॥
सिक्थकं मरिचं कुष्ठं तुत्थकं गौरसर्षपान् ।
रसांजनं च सिंदूरं श्रीवासं रक्तचन्दनम् ॥
अरिमेदं निंबपत्रं करंजं सारिवां वचाम् ।
मंजिष्ठां मधुकं मांसीं शिरीषं लोध्रपद्मकम् ॥
हरीतकीं प्रपुन्नाटं चूर्णयेत्कार्षिकान् पृथक् ।
ततश्च चूर्णमालोड्य त्रिंशत्पलमिते घृते ।
स्थापयेत्ताम्रपात्रे च घर्मे सप्त दिनानि च ।
अस्याभ्यंगेन कुष्ठानि दद्रूपामाविचर्चिकाः ॥
शूकदोषा विसर्पाश्च विस्फोटा वातरक्तजाः ।
शिरःस्फोटोपदंशाश्च नाडीदुष्टव्रणानि च ॥
शोथो भगंदरश्चैव लूताः शाम्यंति देहिनाम् ।
शोधनं रोपणं चैव सवर्णकरणं घृतम् ॥

कसीस, हल्दी, दारुहल्दी, नागरमोथा, हरताल, मनसिल, कमीला, गन्धक, बायबिडंग, गूगल, मोम, काली मिर्च, कूठ, तूतिया, सफेद सरसों, रसौत (अथवा सुरमा), सिन्दूर, श्रीवास (राल या तारपीन), लाल चन्दन, गन्ध खदिर (खैर), नीमके पत्ते, करंजवा, सारिवा, बच, मजीठ, मुलैठी, जटामांसी, सिरस, लोध, पद्माक, हैड़ और पंवाड। प्रत्येकका १।-१। तोला चूर्ण लेकर उसे १॥। सेर घीमें मिलाकर तांबेके बर्त्तनमें भरकर ७ दिन तक धूपमें रक्खा रहने दें।

इसकी मालिशसे कोढ़, दाद, खुजली, विच-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिका, शूकदोष, विसर्प, वातरक्त के विस्फोटक, शिरके फोड़े, उपदंश, दुष्टघाव, नाड़ीव्रण (नासूर), सूजन, भगन्दर और मकड़ी के ज़हर का नाश होता है।

यह घी शोधक, रोपण (घावको भरने वाला) और त्वचाके रंगको ठीक करनेवाला है।

[८३३] कुटजाद्यं घृतम् (च.सं.चि. अ.१४)

कुटजफलवल्ककेशरनीलो-
त्पललोध्रधातकीकल्कैः।
सिद्धं घृतं विधेयं शूले,
रक्तार्शसां भिषजा॥

कुड़ेकी छाल, इन्द्रजौ, नागकेसर, नीलोफर, लोध और धायके कल्कसे यथा विधि घृत बनाकर सेवन करानेसे खूनी बवासीरकी पीड़ा नष्ट होती है।

[८३४] कुमारकल्याण घृतम्
(भै. र; व. से; च. द.)

द्राक्षा सशर्करा शुण्ठी जीवन्ती जीरकं बला।
शठी दुरालभा बिल्वं दाडिमं सुरसास्थिरा॥
मुस्तं पुष्करमूलञ्च सूक्ष्मैला गजपिप्पली।
एषां कर्षं समैर्भागैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत्॥
कषाये कण्टकार्याश्च क्षीरे तस्मिश्चतुर्गुणे।
एतत् कुमारकल्याणं घृतरत्नं सुखप्रदम्॥
बलवर्णकरं धन्यं पुष्ट्यग्निरतिवर्द्धनम्।
छायासर्वग्रहालक्ष्मीकृमिदन्तगदापहम्॥
सर्वबालामयं हन्ति दन्तोद्भेदं विशेषतः॥

दाख, खांड, सोंठ, जीवन्ती, जीरा, खरैंटी, कपूरकचरी, धमासा, बेल, अनार, तुलसी, शालपर्णी, नागरमोथा, पोखरमूल, छोटी इलायची और गजपीपलके १।-१। तोला कल्क तथा कटेली के क्वाथ और चार गुने दूधके साथ यथाविधि २ सेर घृतका पाक सिद्ध करें।

यह घृत सुखदायक, बल, वर्ण, पुष्टि और अग्निकारक है तथा ग्रहदोष, अलक्ष्मी (शोभा हीनता) कृमि, दन्तरोग और बालकोंके समस्त रोग विशेषतः दांत निकलने के समय की पीडा को नष्ट करता है।

[८३५] कुमुदाद्यं घृतम् (वृ. नि. र.।स्त्री.रो.)

कुमुदं पद्मकोशीरं गोधूमा रक्तशालयः।
माषपर्णी पयस्या च शालिपर्णी सजीरकैः॥
पलं त्रपुषबीजानि प्रत्येकं कदलीफलम्।
एकं तद्वीनभागो हि गव्यं क्षीरं चतुर्गुणम्॥
पानीयं द्विगुणं दत्वा घृतप्रस्थं विपाचयेत्।
प्रदरं रक्तदोषं च पाण्डुरोगं हलीमकम्॥
बहुरूपं च यत्पित्तं कामलां वातशोणितम्।
अरोचकं ज्वरं जीर्णं स्त्रीणां रोगं मदं भ्रमम्॥
तरुणी चाल्पपुष्पा च या च गर्भं न विंदति।
सा चापि विंदते गर्भं विंदते नात्रसंशयः॥

कमल, पद्माक, खस, गेहूं, चावल, माषपर्णी, ऋद्धि (अथवा जीवन्ती), शालपर्णी, ज़ीरा, खीरेके बीज और केलेकी फली प्रत्येक ५-५ तोला, गायका दूध ८ सेर, पानी ४ सेर, घृत २ सेर।

यथाविधि घृतपाक सिद्ध करें। इसके सेवनसे प्रदर, रक्तविकार, पाण्डु, हलीमक, अनेक प्रकारके पित्तविकार, कामला, वातरक्त, अरुचि, जीर्णज्वर, स्त्रीरोग (प्रदरादि), मद, भ्रम, मासिकका न आना और बन्ध्यत्व (बांझपने)का नाश होता है।

[८३६] कुशाद्यं घृतम्
(भा. प्र.। अश्म. चि; सु. चि. अ. ६. अर्शो.)

कुशः काशः शरो गुन्द्र उत्कटो मोरटाश्मभित्
दर्भो विदारी वाराही शालिमूलं त्रिकण्टकः॥
भल्लूकः पाटला पाठा पत्तूरोऽथ कुरुण्टकः।

१ षरी-सुश्रु.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुनर्नवा शिरीषश्च कथितास्तेषु साधितम् ॥
घृतं शिलाह्वमधुकैर्बीजैरिन्दीवरस्य च ।
त्रपुषैर्वारुकादीनां बीजैश्चावापितं शुभम् ॥
भिनत्ति पित्तसम्भूतामश्मरीं क्षिप्रमेव च ॥
(बीजं बीजसारः सरोजबीजं वा ॥)

कुश, कांस, सरकंडा (शर), सरपता, उत्कट (सफेद चौंटली), ईखकी जड़, पत्थर चटा, दाब, विदारीकन्द, बाराहीकन्द, धानकी जड़, गोखरू, भिलावे, पाढल, पाठा, पतङ्ग, कटसरैया, पुनर्नवा और सिरस।

इनके क्वाथ के साथ घृत पकाकर उसमें शिलाजीत, मुलैठी, कमलगट्टे और खीरे ककड़ी आदिके बीजोंका चूर्ण प्रक्षेप रूपसे मिलाकर सेवन करनेसे पित्तज अश्मरीका शीघ्र नाश होता है।

[८३७] कुशादिघृततैले

(वृ. यो. त. ८० त. धन्वं; वृ. मा;ग.नि:दाह)

कुशादिशालिपर्णीभिर्जीवकर्षभकैसाधितम्¹ ।
तैलं घृतं वा दाहघ्नं वातपित्तविनाशनम् ॥

तृणपञ्चमूल (कुश, कांस सरकंडा, दाभ, ईख) शालपर्णी, जीवक और ऋषभक से सिद्ध किया हुआ तैल या घृत दाह और वातपित्तका नाश करता है।

[८३८] कुंकुमघृतम् (वृ. नि. र. । शि. रो.)

कुंकुमं घृतसंयुक्तं नस्यं चार्द्धशिरोव्यथाम् ।
नाशयेत्तत्क्षणादेव हितमेतच्छिरोरुजि ॥

केसरको घीमें मिलाकर नस्य लेनेसे आधाशीशी और अन्य प्रकारकी शिर पीड़ाएं तत्काल नष्ट होती हैं।

[८३९] कुंकुमाद्यं घृतम् (च. द.। शि. रो.)

सशर्करं कुंकुममाज्यभृष्टं
नस्यं विधेयं पवनासृगुत्थे ।
भ्रूशङ्खकर्णाक्षिशिरोऽर्द्धशूले
दिनाभिवृद्धिप्रभवे च रोगे ॥

केशर और शर्करा (खांड)को घीमें मिलाकर गरम करके नस्य लेनेसे वातज और रक्तज भ्रू, शंख, कान, आंख और आधे शिरका दर्द तथा सूर्यावर्त (सूर्यके बढ़नेके साथ बढ़ने वाला शिरशूल) नष्ट होता है। (यहां केसर और खांड ४-४ माषा तथा घी ४ तोला लेना चाहिये।)

[८४०] कुलत्थाद्यं घृतम् (१) (भै. र. अश्म.)

कुलत्थसिन्धूत्थविडंगसारं
सशर्करं शीतलियावशूकम् ।
बीजानि कूष्माण्डगोक्षुराभ्यां
घृतं पचेत्तद्वरुणस्य तोये ॥
दुःसाध्यसर्वाश्मरिमूत्रकृच्छ्रं
मूत्राभिघातं च समूत्रबद्धम् ।
एतानि सर्वाणि निहन्ति शीघ्रं
प्ररूढवृक्षानिव वज्रपातः ॥
शीतलियावशूकमिति यवक्षारः
स च स्फटिकसैन्धवसङ्काशः ।
अन्ये तुशीतली स्वना-
माख्या च इति भानुः ॥

कुलथी, सेंधानमक, बायबिड़ंग, शर्करा(खांड) यवक्षार, शीतल चीनी, पेंठके बीज और गोखरू। इनके कल्क और बरनेके क्वाथके साथ घृत पकावें।

इसके सेवनसे सब प्रकारकी दुस्साध्य पथरी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातका नाश होता है।

[८४१] कुलत्थाद्यं घृतम् (२)

(बं. से. । ज्व. चि.)

कुलत्थकोलत्रिफलादशमूलयवान् पचेत् ।

१ जीवकाद्यैश्च-(ग. नि.)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्विपलान् सलिलद्रोणे घृते पिष्ट्वाऽक्षकान्क्षिपेत्॥
पञ्चकोलससाह्वा च वयस्थाहिंगुतुम्बुरु।
शटी पुष्करमूलार्कमूलं प्रतिविषा वचा॥
किराततिक्तं मुस्तं च कर्कटाख्यां दुरालभाम्।
नक्तमालमुभे पाटे कटुका शिग्रु तेजनी॥
सोमवल्कं द्विरजनी कटुकी कण्टकारिका।
पटोलनिम्बगोजिह्वा कम्बुका मदनो जटा॥
लवणानि पलांशानि क्षारानर्द्धपलोन्मितान्।
प्रस्थं चाज्यस्य तत्सिद्धं दीपनं कफवातजित्॥
हृत्प्लीहग्रहणीगुल्मश्वासकासार्शसां हितम्।
दीर्घज्वराभिभूतानां ज्वरिणाममृतोपमम्॥

कुलथी, बेर, त्रिफला, दशमूल और जौ १०-१० तोला लेकर ३२ सेर पानीमें पकावें।

इस क्वाथ और नीचे लिखे कल्कके साथ २ सेर घी पकावें।

कल्क द्रव्य- पंचकोल (पीपल, पीपलामूल, चव, चीता, सोंठ) सतौना, ऋद्धि, हींग, तुंबुरू, कपूरकचरी, पोखरमूल, आककी जड़, अतीस, बच, चिरायता, नागरमोथा, काकड़ासींगी, धमासा, करंजवा, दो प्रकारके पाठे, कुटकी, सींजना, माल कंगनी, बाबची, हल्दी, दारुहल्दी, कुटकी, कटेली, पटोलपत्र, नीम, बनगोभी, शंख, मैनफल और जटामांसी। प्रत्येक १।-१। तोला, पांचो लवण ५-५ तोला। यवक्षार, सर्जीखार और सुहागाकी खील २॥-२॥ तोला।

यह घृत दीपन, कफवात नाशक, हृद्रोग, तिल्ली, ग्रहणी, श्वास, खांसी और बवासीर नाशक है एवं पुराने बुखारमें अमृतके समान है।

[८४२] कुलत्थाद्यं घृतम्

(च. सं. चि. अ. १८; ब. से; श्वासा)

कुलत्थरसयुक्तं वा पञ्चकोलशृतं घृतम्।
पाययेत्कफजे कासे हिक्काश्वासे शस्यते॥

कुलथीके क्वाथ और पंचकोल (पीपल, पीपलामूल, चव, चीता, सोंठ) के कल्कसे सिद्ध घृत कफज खांसी और श्वासका नाश करता है।

[८४३] कूष्माण्डादि घृतम् (यो. र. अप.)

कूष्माण्डकरसे सर्पिरष्टादशगुणे पचेत्।
यष्ट्याह्वकल्के तत्सिद्धमपस्मारहरं परम्॥

मुल्हैठीके कल्क और कुम्हेडे (पेठे) के दस गुने रससे पका हुवा घृत सेवन करनेसे अपस्मार का नाश होता है।

[८४४] कोलाद्यं घृतम् (१) (यो. र.)

कोललाक्षारसे तद्वत्क्षीराष्टगुणसाधितम्।
कल्कैः षडङ्गदार्वीत्वग्द्राक्षाक्षोटफलान्वितम्॥
घृतं खर्जूरमृद्वीकामधुकैः सपरूषकैः।
सपिप्पलीकं वैस्वर्यकासश्वासज्वरापहम्॥

बेर और लाखके क्वाथ तथा आठ गुने दूध और गोखरू, दारुहल्दी, दालचीनी, दाख और अखरोट, खजूर, मुनक्का, मुल्हैठी, फालसा और पीपलके कल्कसे सिद्ध घृत स्वरभंग, खांसी, श्वास और ज्वरका नाश करता है।

[८४५] कोलाद्यं घृतम् (२)

(वृ. नि. र.। ज्व.)

कोलाग्निमंथत्रिफलाक्वाथो दध्ना घृतैः पिबेत्।
तिल्वकावापमेतद्धि विषमज्वरनाशनम्॥

बेर, अरनी और त्रिफलाके क्वाथ, दही और लोधके कल्कसे सिद्ध घृत विषम ज्वर का नाश करता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ ककारादि तैलप्रकरणम्।

[८४६] **कच्छूराक्षसतैलम्** (भा.प्र.। कु.चि.)

मनःशिलालं कासीसं गन्धाश्म सिंधुजन्म च।
स्वर्णक्षीरी शिलाभेदी शुंठी कुष्ठं च मागधी॥
लांगली करवीरश्च दद्रुघ्नः क्रिमिहानलः।
दन्तीनिंबदलं चैभिः पृथक्कर्षमितैर्भिषक्॥
कल्कीकृत्य पचेत्तैलं कटुप्रस्थद्वयोन्मितम्।
अर्कसेहुण्डदुग्धेन पृथक्पलमितेन च॥
गोमूत्रस्याढकेनापि शनैर्मृद्वग्निना पचेत्।
अभ्यङ्गेन हरेदेतत्कच्छूदुःसाध्यतामपि॥
पामानश्च तथा कण्डूं त्वग्व्याधिरुधिरामयान्।
कच्छूराक्षसनामेदं तैलं हारितभाषितम्॥

कल्क द्रव्य—मनसिल, हरताल, कसीस, गन्धक, सेंधा नमक, चोक (सत्यानासी) पत्थरचटा, सोंठ, कूठ, पीपल, कलिहारी, कनेर, पवांड, वायबिडंग, चीता, दन्ती, नीमके पत्ते। प्रत्येक १।-१। तोला, आक और सेहुण्डका दूध १०-१० तोला।

गोमूत्र ८ सेर। कडवा तेल ४ सेर। यथा विधि मंदाग्नि पर तैल सिद्ध करें।

इसकी मालिशसे दुस्साध्य कच्छू, पामा, कंडू, त्वग्दोष और खूनकी खराबी आदि रोग नष्ट होते हैं।

[८४७] **कटभीतैलम्** (यो. र. अप.)

कटभीनिम्बकट्वङ्गमधुशि त्वचां रसे।
सिद्धं मूत्रयुतं तैलं लेपाद्धन्यादपस्मृतिम्॥

कटभी (बकायन) नीम, सोना पाठा और मीठे सैंजनेकी छालके क्वाथ और गोमूत्रसे सिद्ध तैल मर्दन करनेसे अपस्मार नष्ट होता है।

[८४८] **कटुतुम्बीतैलम्** (वृ. नि.र.। गलगं.)

विडंगक्षारसिंधूग्रारास्नाग्निव्योषदारुभिः।
कटुतुम्बीफलरसेकटुतैलं विपाचितम्॥
चिरोत्थमपिनस्येन गलगण्डं विनाशयेत्॥

बायबिडंग, जवाखार, सेंधा नमक, बच, रास्ना, चीता, त्रिकुटा और देवदारुके कल्क तथा कडवी तोरीके रसमें कड़वे तेलका पाक सिद्ध करें।

इसकी नस्य लेनेसे पुराना गलगण्ड भी नष्ट हो जाता है।

[८४९] **कटुतुम्ब्यादि तैलम्** (वृ.नि.र.गलगं.)

तुम्बीरसेन कटुकेन चतुर्गुणेन
कल्कीकृतैर्मगधजादिगणौषधैश्च।
तैलं भृतं हरति देहिषु गंडमाला-
मत्युल्वणामपि गले गलगण्डरोगान्॥

कड़वी तोरीके ४ गुने रस और पिप्पल्यादि गण*के कल्कसे सिद्ध तैलसे गण्डमाला और गलगंडका नाश होता है।

[८५०] **कणादि तैलम्** (र. र.। प्रमे.)

कणामधुककुष्ठैलारेणुकारजनीद्वयैः।
समंगाशारिवालोध्रधातकीभिर्विपाचितम्॥

* पिप्पल्यादिगणः—
पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकशृङ्गवेरमरिचहस्तिपिप्पलीहरेणुकैलाजमोदेन्द्रयव पाठाजीरकसर्षपमहानिम्बमदनफलहिंगु भार्गीमूर्वातिविषावचाविडङ्गानि कटुरोहिणी चेति। (सु. सं. सू. अ. ३८)

पीपल, पीपलामूल, चव, चीता, सोंठ, कालीमिर्च, गजपीपल, रेणुका, इलायची, अजमोद, इन्द्रजौ, पाठा, जीरा, सरसों, बकायन, मैनफल, हींग, भारंगी, मूर्वा, अतीस, बच, बायबिडंग और कुटकी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शोधनं रोपणं तैलं पिडकायां प्रशस्यते ॥

पीपल, मुलैठी, कूठ, इलायची, रेणुका, हल्दी, दारुहल्दी, मजीठ, शारिवा, लोध और धायके फूल। इनके कल्क तथा चार गुने पानीसे सिद्ध तैल फोड़े फुंसियोंको शुद्ध करता और घाव को भरता है।

[८५१] कनकतैलम् (१) (भै. र.। शि. रो.)

कनकार्कबला दूर्वा वासको वैजयन्तिका।
निर्गुण्डी पूतिका भार्गी निकोठकपुनर्नवा॥
बदरीविजयापत्रं श्रीफलं बृहती तथा।
चित्रकश्च स्नुहीमूलमग्निमन्थो विडङ्गकम्॥
त्रिवृद्धृण्डी गोमठी च पत्रमारग्वधस्य च।
प्रत्येकं द्विपलं चैषां गृह्णीयात्तत्क्षणादपि॥
जलद्रोणे विपक्तव्यं यावत्पादावशेषितम्।
प्रस्थश्च कटुतैलस्य पाचयेत्तीव्रवह्निना॥
द्रव्याण्येतानि सर्वाणि कल्कितानि प्रदापयेत्।
चक्षुःशूलं शिरःशूलं श्लीपदं मांसरक्तजम्॥
आमवातश्च हृच्छूलं वृद्धिं च गलगण्डकम्।
शोथं बाधिर्य्यमुदरं कासं हन्ति न संशयः॥
दूर्वायां पतिते बिन्दौ शुष्कतां याति तत्क्षणात्।
कनकाख्यमिदं तैलं कफरोगकुलान्तकम्॥

धतूरा, आक, बला (खरैंटी), दूर्वा (दूबड़ा घास), बासा, अरनी, संभालू, करञ्जवा, भारङ्गी, ढेरा बृक्ष, पुनर्नवा (साठी), बेर, भांगके पत्ते, बेलगिरी, बडी कटेली, चीता, सेहुंड की जड, अरनी, बायबिडङ्ग, निसोत, मजीठ (या सिरस), गोमठी और अमलतासके पत्ते प्रत्येक १०-१० तोला। सबको ३२ सेर पानीमें पकावें जब चौथा भाग शेष रह जाय तो उतार कर छान लें। इस क्वाथ और इन्ही चीज़ोंके कल्कके साथ २ सेर तैल तीव्राग्नि पर पकावें।

यह तेल नेत्रपीडा, शिरशूल, मांस रक्तज श्लीपद, आमवात, हृदयकी पीडा, अंडवृद्धि, गलगंड, सूजन, बधिरता, उदररोग, खांसी और कफ रोगोंका नाश करता है। परीक्षा-यदि इस तेलकी बूंद दूर्वा घास पर डालते ही वह तत्काल सूख जाय तो तेल उत्तम समझना चाहिये।

[८५२] कनकतैलम् (२) (भै. र. क्षुद्र.)

मधुकस्य कषायेण तैलस्य कुडवं पचेत्।
कल्कैःप्रियंगुमञ्जिष्ठा चन्दनोत्पलकेशरैः॥
कनकं नाम तत्तैलं मुखकान्तिकरं परम्।
आभीरुनीलिकाव्यङ्गशोधनं परमर्चितम्॥

मुलैठी के कषाय और फूल प्रियंगु, मजीठ, चन्दन, नीलोफर और केसरके कल्कसे सिद्ध तैल मुखकी कान्ति वर्द्धक तथा नीलिका और व्यंग (झांई) आदि नाशक है।

[८५३] कनकक्षीर तैलम्

(च. सं. चि. अ. ७)

कनकक्षीरीशैलाभार्गीदन्तीफलानि मूलश्च।
जातीफलानि प्रवालसर्षपलशुनविडङ्गकरञ्जत्वक्
सप्तच्छदार्कपल्लवमूलत्वङ्निम्बचित्रस्फोताः।
गुञ्जैरण्डबृहतीमूलकसुरसार्जकफलानि॥
कुष्ठं पाठा मुस्तं तुम्बुरु मूर्वा वचा सषड्ग्रन्था।
एडगजकुटजशिग्रुत्र्यूषणभल्लातकक्षवकाः॥
हरितालमवाक्पुष्पी तुत्थं कम्पिल्लकोऽमृतासंज्ञः
सौराष्ट्री कासीसं दार्वीत्वक्सर्जिकालवणम्॥
कल्कैरेतैस्तैलं करवीरकमूलकपल्लवकषाये।
सार्षपमथवा तैलं गोमूत्रचतुर्गुणं साध्यम्॥
स्थाप्यं कटुकालाबुनि तत्सिद्धं
तेनास्यमण्डलान्याशु।
भिन्द्याद्भिषगभ्यंगात् क्रिमींश्च
कण्डूं विनिहन्यात् कुष्ठम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कल्क द्रव्य—स्वर्ण क्षीरी (सत्यानाशी), मनसिल, भारंगी, दन्तीकी जड और फल, जायफल, चमेली, सरसों, लहसन, बायविडंग, करंजवे की छाल, नीम, चीता, आस्फोता (हाफरमालीति वंगे) गुञ्जा, अरण्ड मूल, बडी कटेली, मूली, तुलसी, अर्जक (तुलसी भेद) के फल, कूठ, पाठा, नागरमोथा, तुम्बुरु, मूर्वा, बच, पीपलामूल, पवांड, इन्द्रजौ, सैंजना, त्रिकुटा, भिलावा, नकछीकनी, हरताल, चिरचिटा, तूतिया, कमीला, गिलोय, सौराष्ट्री (फिटकरी या गोपीचन्दन), कसीस, दारुहल्दीकी छाल, सज्जी और सेंधालवण।

इन चीज़ोंके कल्क और कनेरकी जड तथा पत्तोंके क्वाथ एवं चार गुने गोमूत्रके साथ सरसों का तेल पकाकर कडवी तूम्बीमें भरकर रख दें। इसकी मालिशसे मुखका मंडल कुष्ठ, क्रिमि, कंडु (खुजली) और कुष्ठ शीघ्र नष्ट होता है।

[८५४] कन्दर्पसारतैलम् (भै. र. कुष्ठे)

सप्तपर्णस्तथा काली गुडूची पिचुमर्दकम्।
शिरीषश्च महातिक्ता जया तुम्बी मृगादनी॥
निशादशपलान् भागान् जलद्रोणे विपाचयेत्।
तैलप्रस्थं समादाय गोमूत्रञ्च चतुर्गुणम्॥
आरग्वधो भृङ्गराजो जया धुस्तूरात्रयः।
ऐन्द्राशनाग्निखर्जूरं गोमयार्कस्नुहीच्छदम्॥
तैलतुल्यं प्रदातव्यं स्वरसञ्च पृथक् पृथक्।
महाकालत्वचाब्राह्मीतुम्ब्यग्निगृहपुत्रिकाः॥
कुचेलाकुलकारात्रिर्मेघनामा च ग्रन्थिका।
शम्पाकमर्कक्षीरञ्च कासुन्देश्वरमूलकम्॥
आचुजिह्वीमहातिक्ता विशालाच्छविपत्रकम्।
पूतिकास्फोतमूर्वा च सप्तपर्णशिरीषकम्॥
कुटजं पिचुमर्दश्च महानिम्बं तथैव च।
गुडूची चन्द्ररेखा च सोमराट् चक्रमर्दकम्॥
तुम्बुरु भृङ्गयष्ट्याह्व कन्दुकं कटुरोहिणी।
शटी दार्वी त्रिवृत्पद्मग्रन्थिकागुरुपुष्करम्॥
कर्पूर कट्फलं मांसी मुरैलाटरुषाभया।
एतेषां कार्षिकैःकल्कैर्नाम्ना कन्दर्प उच्यते॥
अष्टादशविधं कुष्ठं ग्रन्थिमज्जगतं तथा।
हस्तपादांगुलीसन्धिगलितं सर्वसन्धिषु॥
अधिकानि च मांसानि यस्य गात्रे भविष्यति।
नासाकर्णास्य वैकल्यं भेकाकारवपुस्त्वचम्॥
श्वेतं रक्तं तथा कुष्ठं नानावर्णं विपादिकम्।
पामादिस्फोटकानीलीकृमिवृद्धिं तथैव च॥
कीटदद्रु मसूरीं च किटिभं रक्तमण्डलम्।
कुष्ठमौदुम्बरं पद्मं महापद्मं तथैव च।
गलगण्डार्बुदं हन्याद्गण्डमालां भगन्दरम्।
वातजं पित्तजञ्चैव श्लेष्मजं सान्निपातिकम्॥
एकोल्वणं द्वय ल्वणञ्च कुष्ठं हन्यान्न संशयः।

सतौना, काला निसोत, गिलोय, नीम, सिरस, महातिक्ता (बकायन वा यवतिक्ता), अरनी, कड़वी तोरी, इन्द्रायण और हल्दी। प्रत्येक वस्तु ५०–५० तोला ३२ सेर जल में क्वाथ बनावें। इस क्वाथ, ८ सेर गो मूत्र और अमलतास, भांगरा, अरनी, धतुरा, हल्दी, भंग, चीता, खजूर, गोबर, आक और सेहुण्ड (सेंड) के पत्तोंके २–२ सेर स्वरस एवं निम्न लिखित कल्कके साथ यथा विधि २ सेर तैल पकावें।

कल्क द्रव्य—इन्द्रायन, बच, ब्राह्मी, कड़वी तुम्बी, चीता, घीकुमार, कुचला, मनसिल, हल्दी, नागरमोथा, पीपलामूल, अमलतास, आकका दूध, कसौंदी, ईश्वरमूल (शिवलिंगी), आचु, मजीठ, महानीम, इन्द्रायन, विछवा (विछातीतिवंगे) करंजवा, आस्फोतक, मूर्वा, सतौना, सिरस, इन्द्रजौ, नीम,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गिलोय, बावची, सोमराट् (बावचीभेद्) पवांड़, कुस्तुम्बरु, भांगरा, मुल्हैठी, सुपारी, कुटकी, कपूर-कचरी, दारुहल्दी, निसोत, पद्माक, पीपलामूल, अगर, पोखरमूल, कपूर, कायफल, जटामांसी, मुरामांसी, इलायची, बांसा और हैड़। प्रत्येक १।-१। तोला।

यह तेल १८ प्रकारके कुष्ठ, ग्रन्थि और मज्जागत कुष्ठ और जोड़ोंका गल जाना, मांसका बढ़ जाना, नाक, कान और मुखका विकृत हो जाना, त्वचाका मेंढककी त्वचाके समान हो जाना, सफेद कोढ़, लाल कोढ़, विपादिका, पामा, विस्फोटक, नीली, कृमि, वृद्धि, दाद, मसूरी, किटिभ, लाल चकते और औदुम्बर, पद्मकुष्ठ, महापद्मकुष्ठ, गलगण्ड, अर्बुद, गण्डमाला, भगन्दर और वातज, पित्तज, कफज, तथा द्वंदज और सन्निपातज आदि सब प्रकारके कुष्ठों का नाश करता है।

[८५५] करञ्जादि तैलम् (१)

(शा. ध. । म. खं अ. ९)

करंजश्चित्रको जातीं करवीरश्च पाचितम्।
तैलमेभिर्द्रुतं हन्यादभ्यंगादिंद्रलुप्तकम्॥

करंजवा, चीता, कनेर और चमेली। इनसे पकाया हुआ तैल लगानेसे इन्द्र लुप्त (गञ्ज-बालों का गिर जाना) नष्ट होता है।

[८५६] करञ्जादि तैलम् (२)

(यो. र. । विस.)

करञ्जसप्तच्छदलाङ्गलीका-
स्नुह्यर्कदुग्धानलभृङ्गराजैः।
तैलं निशामूत्रविषैर्विपक्वं
विसर्पविस्फोटविचर्चिकाघ्नम्॥

करंजवा, सतौना, कलहारी, सेहुंड और आक का दूध, चीता, भांगरा, हल्दी, मीठा तेलिया और गोमूत्रसे पका हुआ तैल विसर्प, विस्फोटक और विचर्चिका का नाश करता है।

[८५७] करवीरतैलम् (१)

(च. सं. चि. अ. ७)

श्वेतकरवीरपल्लवमूलत्वग्वत्सकाविडंगाश्च।
कुष्ठार्कमूलसर्षपशिग्रुत्वग्रोहिणी कटुका॥
एतैस्तैलं साध्यं कल्कैः पादांशिकैर्गवां मूत्रम्।
दत्वा तैलचतुर्गुणमभ्यंगः कुष्ठकण्डूघ्नः॥

सफ़ेद कनेर के पत्ते और उसकी जड़की छाल, इन्द्रजौ, बायबिड़ंग, कूठ, आककी जड, सरसों, सहजनेकी छाल और कुटकी। इन सब चीजों को समान मात्रा में मिलाकर तेलसे चौथाई चौथाई लें। इस कल्क और चार गुने गो-मूत्रके साथ पकाया हुआ तैल कोढ़ और खुजली का नाश करता है।

[८५८] करवीरतैलम् (२)

(च. सं. चि. अ. ७; यो. र.)

श्वेत करवीररसो गोमूत्रं चित्रको विडंगश्च।
कुष्ठेषु तैलयोगाः सिद्धोऽयं सम्मतो भिषजाम्॥

सफ़ेद कनेरका रस, गोमूत्र, चीता और बाय-बिडंगसे यथा विधि तैल पकावें।

यह तैल कुष्ठमें अत्युपयोगी है।

[८५९] करवीरतैलम् (३) (भै. र. कुष्ठे)

श्वेतकरवीरमूलं विषांशकं साधितं गोमूत्रे।
चर्मदलसिध्मपामाविस्फोटकृमिकिटिभजित्तैलम्॥

सफ़ेद कनेरकी जड और मीठा तेलिया दोनों बराबर २ मिलाकर तेल से चौथाई भाग लें। इस कल्क और गोमूत्र के साथ पकाया हुआ तैल चर्मदल, सिध्म, पामा, विस्फोटक, कृमि और किटिभका नाश करता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[८६०] करवीराद्यं तैलम् (१)

(भै. र. । नासा.)

रक्तकरवीरपुष्पं जात्यास्तथाशनमल्लिकाश्च ।
एतैः समस्तैस्तैलं नासार्शो नाशनं पक्वम् ॥

लाल कनेर के फूल, चमेली के फूल, असना और मल्लिकासे पकाया हुआ तैल नासार्श (नाकके मस्सों) का नाश करता है ।

[८६१] करवीराद्यं तैलम् (२)

(यो. र. । भग.)

करवीरनिशादन्तीलाङ्गलीलवणाग्निभिः ।
मातुलुंगार्कपयमा पचेत्तैलं भगन्दरे ॥

कनेर, हल्दी, दन्ती, कलिहारी, सेंधानमक, बिजौरा नीबू और आकके दूध से पकाया हुआ तैल, भगन्दरका नाश करता है ।

[८६२] कर्चूरतैलम्

(भा. प्र. । नाडी व्र.)

कर्चूरकरसे तैलं पुरसिन्दूरकल्कितम् ।
पामां दुष्टव्रणं नाडीं हन्यात्सर्वव्रणान्तकृत् ॥

कपूरकचरीके कषाय (या स्वरस) और गूगल तथा सिन्दुर के कल्क से पकाया हुआ तैल, पामा, दुष्ट व्रण, नाडी व्रण (नासूर) और अन्य सब प्रकारके घावोंका नाश करता है ।

[८६३] कर्णामयघ्नं तैलम्

(र. र. स. अ. २४)

कुष्ठशुण्ठीवचाहिंगुशताह्वाशिग्रु सैन्धवैः ।
बस्तमूत्रैः भृतं तैलं सर्वकर्णामयापहम् ॥

कूठ, सोंठ, बच, हींग, सोया, सहजना, सेंधा और बकरे के मूत्रसे पकाया हुआ तैल सब प्रकारके कर्ण रोगोंका नाश करता है ।

[८६४] कर्पूरादि तैलम्

(र. र. । यो. व्या; व. से. स्त्री. रो. वृ. यो. त. त. १३३)

कर्पूरभल्लातकशंखचूर्णं क्षारो
यवानां च मनः शिला च ।
तैलं विपक्वं हरितालमिश्रं
रोमाणि निर्मूलयति क्षणेन ॥

कपूर, भिलावा, शंखका चूर्ण, जवाखार और मनसिल से पका हुआ तैल हरताल मिलाकर लगाने से बाल गिर जाते हैं ।

[८६५] कलिंगाद्य तैलम्

(र. र. । नासा. रो; ग. नि. नासा. ४)

कलिंगहिंगुमरिचलाक्षासुरसकट्फलैः ।
कुष्ठोग्राशिग्रुजन्तुघ्नैरवपीडः प्रशस्यते ॥
तैरेवमूत्रसंयुक्तैःकटुतैलं विपाचयेत् ।
अपीनसे पूतिनस्ये शमनं कीर्तितं परम् ।

इन्द्रजौ, हींग, कालीमिर्च, लाख, तुलसी, कायफल, कूठ, बच, सहजना और बायबिडंग के कल्क तथा गोमूत्रसे कड़वा तेल पकाकर उसकी नसवार लेनेसे पीनस और पूति नस्य (नाकसे बदबू आना) नष्ट होता है ।

[८६६] काकमाचीतैलम् (र. र. क्षु. रो.)

काकमाचीरसे सिद्धं कटुतैलं चतुः पलम् ।
मनःशिलासोमराजीबीजसिन्दूरगंधकैः ॥
शाणमात्रैस्तदभ्यंगाद्धं न्त्यवश्यमरुंषिकाम् ।
पामां विचर्चिकाश्चैव तथान्याञ्छिरसो व्रणान् ॥

कल्क द्रव्य—मनसिल, बावची, सिंदूर और गन्धक । प्रत्येक ३०—३० रत्ती ।

इस कल्क और मकोय के रसके साथ आधा सेर कड़वा तेल पकावें । इसकी मालिश करने से अरुंषिका, पामा, विचर्चिका और शिरके घावों का अवश्य नाश होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[८६७] काश्मर्यादि तैलम्

(वृ. नि. र.। क्षु. रो; व. से.)

काश्मर्या मूलमादौ सहचर-
कुसुमं केतकस्यापि मूलं
लौहं चूर्णं सभृंगं त्रिफलजलयुतं
तैलमेभिः पचेद्यः।
कृत्वा लोहस्य भांडे क्षितितलनिहितं
स्थापयेन्मासमेकंकेशाः काशप्रकाशा
अपिमधुपनिभा अस्य योगाद्भवंति॥

खम्भारी की जड़, पियाबांसे के फूल, केतकी की जड़, लोहे का बुरादा, भांगरा और त्रिफले का काथ। इनसे तेल पकाकर लोहे के बरतन में भरकर जमीन में दबा दें और एक मास तक वहीं दबा रहने दें।

इस तेलसे कांसके समान सफेद बाल भी भौंरेके समान काले हो जाते हैं।

[८६८] कासीसादि तैलम् (शा.ध.म.ख.९)

कासीसं लांगली कुष्ठं शुण्ठी कृष्णा च सैन्धवम्।
मनःशिलाश्वमारश्च विडंगं चित्रको वृषः॥
दन्ती कोशातकीबीजं हेमाह्व हरितालकम्।
कल्कैः कर्षमितैरेतैस्तैलप्रस्थं विपाचयेत्॥
स्नुग्अर्कपयसी दद्यात्पृथक् द्विपल संमिते।
चतुर्गुणं गवां मूत्रं दत्वा सम्यक् प्रसाधयेत्॥
कथितं खरनादेन तैलमर्शोविनाशनम्।
क्षारवत्पातयत्येतदर्शांस्यभ्यंगतो भृशम्॥

कसीस, कलिहारी, कूठ, सोंठ, पीपल, सेंधानमक, मनसिल, कनेर, बायबिड़ंग, चीता, बांसा, दन्ती, कड़वी तोरीके बीज, धतूरा और हरताल प्रत्येक १।-१। तोला। सेहुंड (सेंड) और आक का दूध २०-२० तोला। इनके कल्क तथा ८ सेर गोमूत्रके साथ २ सेर तेल पकावें।

इस तेलके लगानेसे बवासीरके मस्से इस प्रकार गिर जाते हैं मानो क्षारसे गिराए गए हैं।

[८६९] किरातादि तैलम्

(धन्व०। ज्व. चि.)

मूर्वा लाक्षा हरिद्रे द्वे मंजिष्ठा सेन्द्रवारुणी।
ह्रीबेरं पुष्करं रास्ना कपिवल्ली कटुत्रयम्॥
पाठा चेन्द्रयवश्चैव लवणत्रयसंयुतम्।
वासकार्कश्यामा दारु महाकालफलं तथा॥
दधिमन्थारनालेन किरातेन च संपचेत्।
प्रस्थं प्रस्थं समादाय तैलप्रस्थं विपाचयेत्॥
पित्तयुक्तज्वरं चैव सन्ततं सततं तथा।
धातुस्थमस्थिमज्जास्थं ज्वरं सर्वं व्यपोहति॥
कामलां ग्रहणीं चैव अतिसारं हलीमकम्।
प्लीहपाण्डुश्वयथूंश्च नाशयेन्नात्र संशयः॥
नास्ति तैलं वरं चास्मात् ज्वरदर्पकुलान्तकृत्

मूर्वा, लाख, हल्दी, दारुहल्दी, मजीठ, इन्द्रायन, सुगन्धवाला, पोखरमूल, रास्ना, गजपीपल, त्रिकुटा, पाठा, इन्द्रजौ, सेंधानमक, काला नमक, बिडनमक, बासा, आक, काली निसोत, देवदारु और इन्द्रायनका फल। इनके कल्क तथा दधिमंथ (दहीका तोड़), आरनाल (कांजी) और चिरायतेके २-२ सेर काथके साथ २ सेर तेल पकावें।

यह तैल पित्तयुक्त ज्वर, संतत ज्वर, सतत ज्वर तथा धातुगत और अस्थिगत ज्वर आदि सब प्रकारके ज्वरों और कामला, संग्रहणी, अतिसार, हलीमक, तिल्ली, पांडु और सूजनका नाश करता है। ज्वरोंका नाश करनेके लिये इससे उत्तम कोई और तैल नहीं है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[८७०] कुङ्कुमाद्यं तैलम् (१)

(यो. र. । क्षु. रो.)

कुंकुमं चन्दनं लोध्रं पतङ्गं रक्तचन्दनम् ।
कालीयकमुशीरं च मञ्जिष्ठा मधुयष्टिका ॥
पत्रकं पद्मकं पद्मं कुष्ठं गोरोचनं निशा ।
लाक्षा दारुहरिद्रा च गैरिकं नागकेशरम् ॥
पालाशकुसुमं चापि प्रियंगुश्च वटांकुराः ।
मालती च मधुच्छिष्टं सर्षपाः सुरभिर्वचा ॥
चतुर्गुणपयःपिष्टैरेतैरक्षमितैः पृथक् ।
पचेन्मन्दाग्निना वैद्यस्तैलं प्रस्थद्वयोन्मितम् ॥
वदनाभ्यञ्जनादेतद् व्यङ्गं नीलिकया सह ।
तिलकं माषकं न्यच्छं नाशयेन्मुखदूषिकाम् ॥
पद्मिनीकण्टकं वाऽपि हरेज्जतुमणिं तथा ।
विदध्याद्वदनं पूर्णचन्द्रमण्डलसुन्दरम् ॥

केसर, चन्दन, लोध, पतंग, लाल चन्दन, अगर, खस, मजीठ, मुल्हैठी, तेजपात, पद्माक, कमल, कूठ, गोरोचन, हल्दी, लाख, दारुहल्दी, गेरू, नागकेसर, ढाकके फूल, फूलप्रियंगु, बड़की कोंपल, चमेलीके फूल, मोम, सरसों, तुलसी और बच । प्रत्येक १।-१। तोला । इनको ४ गुने दूध के साथ पीसकर उससे मन्दाग्नि पर ४ सेर तेल पकावें । ×

इसे मुखपर मलने से व्यंग (झांइ), नीलिका, तिल, माष (मस्सा), मुहासे, पद्मिनि कंटक और जतुमणि आदिका नाश होकर मुख चन्द्रमाके समान उज्ज्वल हो जाता है ।

× किन्हीं किन्हीं का मत है कि इसमें तैलसे ४ गुना दूध और उतना ही पानी डालना चाहिए ।

[८७१] कुङ्कुमादि तैलम् (२)

(च. द; भै. र. । क्षुद्र.)

कुङ्कुमं चन्दनं लाक्षा मञ्जिष्ठा मधुयष्टिका ।
कालीयकमुशीरं च पद्मकं नीलमुत्पलम् ॥
न्यग्रोधपादाः प्लक्षस्य शुङ्गाः पद्मकेशरम् ।
द्विपञ्चमूलसहितैः कषायैः पलिकैः पृथक् ॥
जलाढिकं विपक्तव्यं पादशेषमथोद्धरेत् ।
मञ्जिष्ठा मधुकं लाक्षा पतङ्गं मधुयष्टिका ॥
कर्षप्रमाणैरेतैस्तु तैलस्य कुडवं तथा ।
अजाक्षीरं तद्द्विगुणं शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥
सम्यक्पक्वं परं ह्येतन्मुखवर्णप्रसादनम् ॥
नीलिकापिडकाव्यङ्गानभ्यङ्गादेव नाशयेत् ॥
सप्तरात्रप्रयोगेण भवेत्काञ्चनसन्निभम् ।
कुङ्कुमाद्यमिदं तैलमश्विभ्यां निर्मितं पुरा ॥

केसर, चन्दन, लाख, मजीठ, मुल्हैठी, कालीयक (अगर) खस, पद्माक, नीलोफर, बड़की दाढ़ी, पिलखनकी कोंपल, कमलकेसर और दशमूल प्रत्येक चीज़ १०-१० तोला लेकर ८सेर पानीमें पकावें जब चौथा भाग शेष रहे तो उतारकर छान लें। इस क्वाथ और १ सेर बकरीके दूध तथा नीचे लिखे कल्कके साथ मन्दाग्निपर ०॥ सेर तेल पकावें ।

कल्क द्रव्य—मजीठ, महुवा, लाख, पतंग और मुल्हैठी प्रत्येक १।-१। तोला ।

इसे लगानेसे चेहरेकी नीलिका, फुंसियां और झांई आदि नष्ट होकर चेहरा खूबसूरत हो जाता है।

इसे सात दिन तक लगानेसे मुख कांचनके समान दीप्तिमान् हो जाता है ।

[८७२] कुङ्कुमाद्यं तैलम् (३)

(च. द; भै. र. । क्षु०रो.)

कुङ्कुमं किंशुकं लाक्षा मञ्जिष्ठा रक्तचन्दनम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कालीयकं पद्मकं च मातुलुङ्गस्यकेशरम् ॥
कुसुम्भं मधुयष्टिकं फलिनी मदयन्तिका ।
निशे द्वे रोचना पद्ममुत्पलं च मनःशिलाः ॥
काकोल्यादिसमायुक्तैरेतैरक्षसमैर्भिषक् ।
लाक्षारसपयोभ्यां च तैलप्रस्थं विपाचयेत् ॥
कुंकुमाद्यमिदं तैलं चाभ्यङ्गात्काञ्चनोपमम् ।
करोति वदनं सद्यः पुष्टिलावण्यकान्तिदम् ॥
सौभाग्यलक्ष्मीजननं वशीकरणमुत्तमम् ।

कल्क द्रव्य—केसर, केसू (ढाकके फूल), लाख, मजीठ, लाल चन्दन, अगर, पद्माक, बिजौरे की केसर, कुसुम्भा, मुल्हैठी, मालकंगनी, मोगरेके फूल, हल्दी, दारुहल्दी, गोरोचन, कमल, नीलोफर, मनसिल और काकोल्यादिगण*। प्रत्येक १।-१। तोला।

लाखका रस ४ सेर, दूध ४ सेर, तेल २ सेर यथाविधि तेल पाक करें।

इस तेलके व्यवहारसे चेहरा अत्यन्त शीघ्र कांचनके समान दीप्तिमान् और सुन्दर हो जाता है।

[८७३] कुब्जप्रसारिणी तैलम्
(भै. र.। वा. व्या.)

प्रसारिणीशतं क्षुण्णं पचेत्तोयार्म्मणे शुभे ।
पादशेषे समं तैलं दधिदद्यात्सकाञ्जिकम् ॥
द्विगुणञ्च पयो दत्त्वा कल्कान् द्विपलिकांस्तथा।
चित्रकं पिप्पलीमूलं मधुकं सैंधवं बलाम् ॥
शतपुष्पां देवदारु रास्नां वारणपिप्पलीम् ।
प्रसारण्याश्च मूलानि मांसी भल्लातकानि च ॥
पचेन्मृद्वग्निना तैलं वातश्लेष्मामयाञ्जयेत् ।
अशीतिं नरनारीस्थान् वातरोगान् व्यपोहति ॥
कुब्जस्तिमिरपङ्गुत्वं गृध्रसीखुडकार्दितम् ।
हनुपृष्ठशिरोग्रीवास्तम्भं चाशु नियच्छति ॥

* काकोल्यादिगण देखो पृष्ठ २०८

६। सेर गन्ध प्रसारणी (खीप) को कुचलकर ३२ सेर पानीमें पकावें और चौथा भाग शेष रहने पर छान लें। फिर इस क्वाथ और दही १२॥ सेर, कांजी १२॥ सेर, दूध २५ सेर तथा निम्नलिखित कल्कके साथ मन्दाग्नि पर १२॥ सेर तेल पकावें।

कल्क द्रव्य—चीता, पीपलामूल, मुल्हैठी, सेंधा-नमक, खरैंटी, सोया, देवदारु, रास्ना, गजपीपल, गन्धप्रसारणीकी जड़, जटामांसी और भिलावा। प्रत्येक १०-१० तोला।

यह तेल वातज और कफजरोग नाशक है एवं ८० प्रकारके वायुरोग, कुबडापन, तिमिर, लूलापन, गृध्रसी, खुडक, अर्दित, हनुपृष्ठ शिर और ग्रीवास्तम्भ (जकड़ जाना) आदि रोगों का नाश करता है।

[८७४] कुमारीतैलम् (भा. प्र.। शि. रो.)

कुमार्याः स्वरसप्रस्थे धत्तूरस्य रसे तथा ।
भृङ्गराजस्य च रसे प्रस्थद्वयसमायुते ॥
चतुः प्रस्थमिते क्षीरे तैलप्रस्थं विपाचयेत् ।
कल्कैर्मधुकह्रीवेरमंजिष्ठाभद्रमुस्तकैः ॥
नखकर्पूरभृङ्गैलाजीवन्तीपद्मकुष्ठकैः ।
मार्कवासकतालीससर्जनिर्यासपत्रकैः ॥
विडङ्गशतपुष्पाश्वगन्धागंधर्वहस्तकैः ।
शोकहृन्नालिकेलाभ्यां कर्षमानैर्विपाचिते ॥
उत्तार्य वस्त्रपूतं तु शुभे भांडे सुधूपिते ।
त्रिरात्रमथ गुप्तञ्च धारयेद्विधिवद्भिषक् ॥
ततस्तु तैलमभ्यंगे मूर्ध्नि क्षेपे नियोजयेत् ।
शमयेदर्दितं गाढमन्यास्तम्भशिरोगदान् ॥
तालुनासाक्षिपातन्तु शोषमूर्च्छादलीमकम् ।
हनुग्रहगदार्तिं वा बाधिर्यं कर्णवेदनम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घीकुमारी का स्वरस २ सेर, धतूरे का स्वरस २ सेर, भांगरे का स्वरस ४ सेर, दूध ८ सेर, तेल २ सेर।

कल्क द्रव्य—मुलहैठी, सुगन्धबाला, मजीठ, नागरमोथा, नखी, कपूर, भांगरा, इलायची, जीवन्ती, पद्माक, कूठ, काला भांगरा, बासा, तालीस पत्र, राल, तेजपात, बायबिड़ंग, सोया, असगन्ध, अरण्ड, अशोककी छाल और नारयल प्रत्येक १।–१। तोला।

यथाविधि तेल पका कर छानकर उत्तम धूपित बर्तन में भरकर सुरक्षित रक्खें फिर तीन दिन पश्चात् निकाल कर सेवन करावें।

इस तेल की मालिश करने और शिरमें डालने से अर्दित, मन्यास्तम्भ, शिरोरोग, तालु, नासा और अक्षिपात, शोष, मूर्च्छा, हलीमक, हनुग्रह, बधिरता और कानों की वेदना नष्ट होती है।

[८७५] कुशाद्यं तैलम् (भा. प्र. । अश्म.)

कुशाग्निमन्थशैरेयनलदर्भेक्षुगोक्षुराः।
कपोतवङ्कावसुकवशीरेन्दीवरीशराः
धातक्यरलुवन्दाकाः कर्णपूराश्मभेदकाः।
एषां कल्ककषायाभ्यां सिद्धं तैलं प्रयोजयेत्॥
पानाभ्यञ्जनयोगेन बस्तिनोत्तरबस्तिना।
शर्कराश्मरीरोगेषु मूत्रकृच्छ्रे च दारुणे॥
प्रदरे योनिशूले च शुक्रदोषे तथैव च।
वंध्यागर्भप्रदं प्रोक्तं तैलमेतत्कुशादिकम्॥

कुश, अरनी, पियाबांसा, नल, दाब, ईख, गोखरू, ब्राह्मी, लाल आक, हुलहुल, शतावर, शर, धायके फूल, अरलु, बन्दा, कदम्ब (या अशोक) और पत्थरचटा।

इनके कषाय और कल्क से सिद्ध तैल पान, अभ्यंग (मर्दन) बस्ति और उत्तरबस्ति द्वारा प्रयोग करने से शर्करा, पथरी, भयंकर मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, योनिशूल, शुक्रदोष, और बन्ध्यत्व (बांझपने) का नाश होता है।

[८७६] कुष्ठकालानलतैलम् (भै. र. कुष्ठे)

सूतं गन्धं शिलातालं काञ्जिकैर्मर्दयेद्दिनम्।
तल्लिप्तवस्त्रवर्तिं तां तैलाक्तां ज्वालयेदधः॥
स्थिते पात्रे पतेत्तैलं गृहीत्वा लेपयेत्ततः।
कुष्ठस्थानं विशेषेण सर्वकुष्ठं हरत्यलम्॥
इदं कालानलं तैलं वातकुष्ठे महौषधम्॥
एषां समं काञ्जिकं, सर्वेषां द्विगुणं तिलतैलम्, कल्कं वस्त्रे संलिप्य संशोष्य वर्तिं कुर्य्यात्, तां तैलाक्तां संदंशिकायां ज्वालयित्वा उपरि तैलं दत्वा पतितं तैलमधः पात्रे गृह्णीयात्। कुष्ठस्थाने दद्यात्सिद्धफलः प्रयोगः

पारा, गन्धक, मनसिल और हरताल को १ दिन कांजी में घोटकर कपड़े पर लपेट कर बत्ती बनावें फिर उस बत्ती को तेलमें भिगोकर (उलटा लटका कर) जलावें और उसके नीचेबरतन रख दें। इस प्रकार बत्ती के जलने से बरतन में जो तेल गिरे उसे शीशी में भरकर रक्खें।

इसकी मालिश से कुष्ठ का नाश होता है। यह वातज कुष्ठ के लिये महौषध है।

इस प्रयोग में कांजी सब चीजों के बराबर लेनी चाहिये। बत्ती को सुखाकर दो गुने तिलके तैल में भिगोना चाहिए। बत्ती भीगने के बाद जो तेल बचा रहे उसे जलती हुई बत्ती के ऊपर डालते रहना चाहिए।

[८७७] कुष्ठतैलम् (भा. प्र. । कर्णरो; वृ. मा.)

कुष्ठहिंगुवचादारुशताह्वाविश्वसैंधवैः।
पूतिकर्णापहं तैलं बस्त मूत्रेण साधितम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कूठ, हींग, बच, देवदारु, सोया, सोंठ और सेंधानमकके कल्क तथा बकरे के मूत्रमें पकाया हुआ तैल पूतिकर्णका नाश करता है।

[८७८] कुष्ठराक्षस तैलम् (भै. र. कुष्ठे)

सूतकं गन्धकं कुष्ठं सप्तपर्णश्च चित्रकम्।
सिंदूरश्च रसोनश्च हरितालमवल्गुजम्॥
आरग्वधस्य बीजानि जीर्णताम्रं मनःशिला।
प्रत्येकं कर्षमेतेषां कटुतैलं पलाष्टकम्॥
साधयेत्सूर्यतापेन सर्वकुष्ठविनाशनम्।
श्वित्रमौदुंबरं कच्छूं मांसवृद्धिं भगन्दरम्॥
विचर्चिकाश्च पामानं वातरक्तं सुदारुणम्।
गम्भीरश्च तथोत्तानं नाशयेद्यस्यम्रक्षणात्॥
कुष्ठराक्षसनामेदं सावर्ण्यकरणं परम्।
अश्विभ्यां निर्मितं ह्येतल्लोकानुग्रहहेतवे॥

पारा, गन्धक, कूठ, सतौना, चीता, सिंदूर, ल्हसन, हरताल, बावची, अमलतासके बीज, पुराना ताम्बा और मनसिल। प्रत्येक १।–१। तोला।

इनके कल्कसे सूर्य ताप द्वारा १ सेर कड़वा तैल सिद्ध करें। (तेलमें चार गुना पानी और यह सब चीज़ें मिलाकर धूपमें रख दें जब पानी खुश्क हो जाय तो तेलको सिद्ध समझें)।

यह तेल सफ़ेद कोढ़, औदुम्बर, कच्छू, मांस-वृद्धि, भगन्दर, विचर्चिका, पामा और गम्भीर तथा उत्तान भयंकर वातरक्त का नाश करता है तथा त्वचाके रंगको स्वभाविक कर देता है।

[८७९] कुष्ठविद्रावणतैलम् (र.र.स.अ.२०)

द्वात्रिंशत्पलवाकुचीमृतजलद्रोणांघ्रिशेषे चतु-
र्विंशत्या दनुजस्य कांतरसयो-
र्निष्कैःपृथक्पंचभिः।
तांबूलीरसमर्दितैस्तिलभवप्रस्थं मृतं चिक्कणे
पाके सत्यवतार्य कल्कसहितं
धान्ये द्विपक्षं क्षिपेत्॥
तत्क्षीरान्नाशिना पीतं लिप्तं कुष्ठकुलान्तकम्।
सुप्तं दाहजमश्वेतं रूपमूलश्च लुम्पति॥

२ सेर बावचीको ३२ सेर पानीमें पकावें जब चौथा भाग बाकी रहे तो उतार कर उसमें १० तोला गन्धक और २५–२५ माशा पारद तथा कान्तिसार लोहकी पानके रसमें घोटी हुई कज्जली और २ सेर तिलका तैल मिलाकर पकावें। जब पानी जल जाय तो तेलको उपरोक्त कल्क के साथ ही किसी बरतन में भरकर अनाज के ढेर में दबा दें और १ मास बाद निकालकर काममें लावें।

इसे पीने और मालिश करने से काला सुप्त (सुन्न बहरी) कोढ़ और दाह से उत्पन्न हुवा कोढ़ नष्ट होता है।

पथ्य—दूध भात।

[८८०] कुष्ठादितैलम् (१)

(वृ. यो.त. । ९३त.)

कुष्ठं श्रीवेष्टकोदीच्यं सरलं दारुकेशरम्।
अश्वगन्धाजगन्धे च तैलं तैः सार्षपं पचेत्॥
सक्षौद्रं मात्रया तस्मादूरुस्तम्भार्दितः पिबेत्॥

कूठ, श्रीवेष्ठक (धूप सरल) सुगन्ध बाला, सरल काष्ठ, देवदारु, केसर, असगन्ध और बन-तुलसी के साथ सरसों का तेल पकावें।

इसे यथोचित मात्रानुसार शहद मिलाकर पीने से उरुस्तम्भ का नाश होता है।

[८८१] कुष्ठादि तैलम् (२)

(वृ. नि. र. । वा. रो)

तैलमभ्यंजने कार्यं कुष्ठे सर्जरसे तथा।
पलं कषायं नलदे तथा गौरकदंबके॥

मालिशके लिए, कूठ, राल, जटामांसी और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सफेद कदम्ब के कल्क से सिद्ध तैल काम में लाना चाहिए।

यह प्रयोग रेवती-ग्रह-ग्रस्त बालकों के लिए है।

[८८२] कुष्ठादितैलम् (३)

(वृ. नि. र. । गुल्मरो.)

श्वेतकुष्ठं तथा हिंगु प्रतिनिष्कद्वयं द्वयम् ।
क्षारं तत्त्रिफला चूर्णं दशभागं सुचूर्णितम् ॥
कल्कं गोक्षीरतः पिष्ट्वा पूर्वं तैलं स्नुहिप्लुतम् ।
पचेत्तैलावशेषं तु पिबेन्निष्कद्वयं द्वयम् ॥
विरेकांते तु तक्रेण शाल्यन्नं भोजयेल्लघु ।
चतुर्दिनांते दातव्यमिदं तैलं न नित्यशः ॥
गुल्मं जलोदरं प्लीहां शुलश्च श्वयथुप्रणुत् ॥

सफेद कूठ और हींग १०-१० माशे जवाखार और त्रिफले का चूर्ण ५०-५० माशे लेकर पहिले गो दुग्ध में पीसें और फिर उसमें सेहुंड (सेंड) का दूध मिलावें। इस कल्क से तेल सिद्ध करके रक्खें।

इसे ४-४ दिन के अन्तर से १०-१० माशे की मात्रानुसार सेवन करने से गुल्म, जलोदर, तिल्ली, शूल और सूजन नष्ट होती है।

इसके सेवन से विरेचन होने के बाद तक्र (छाछ) के साथ भात खाना चाहिए।

[८८३] कुष्ठादितैलम् (४)

(च. सं. । चि. अ. ७)

कुष्ठार्कतुत्थकट्फलमूलकबीजानि रोहिणीकटुका
कुटजफलोत्पलमुस्तं बृहतीकरवीरकाशीशम् ॥
एडगजनिम्बपाठादुरालभाचित्रको विडंगश्च ।
तिक्तेक्ष्वाकुबीजं कम्पिल्यकर्कसर्षपवचादार्वी ॥
एतैस्तैलं सिद्धं कुष्ठघ्नं योग एष वा लेपः ।
तन्मर्दनं घर्षणमवचूर्णनमेष एवेष्टः ।

कूठ, आक, तूतियां, कायफल, मूलीके बीज, कुटकी, इन्द्र जौ, नीलोफर, नागरमोथा, बडी कटेली, कनेर, कसीस, पंवाड़, नीम, पाठा, धमासा, बायबिड़ंग, कड़वी तोरीके बीज, कमीला, आक, सरसों, बच और दारु हल्दी।

इनसे सिद्ध तैल कोढ़ का नाश करता है। कुष्ठमें इन्हीं औषधियों का लेप, मर्दन, घर्षण और अवचूर्णन करना चाहिए।

[८८४] कुसुम्भतैलम् (यो. र.)

कुसुम्भतैलं विष्टम्भि पाके च कटुकं गुरु ।
विदाहि च विशेषेण सर्वदोषप्रकोपणम् ॥

कुसुम्भ (कैड़) का तेल विष्टम्भि, पाकमें कटु, गुरु, विदाही और सर्व दोषकोपकारक है।

[८८५] कृमिकर्णारितैलम्

(र. र. स. । अ. २४)

अब्धिफेनो वचा शुण्ठी सैंधवं च समं समम् ।
समतैलार्द्रकद्रावैः पक्वे तस्मिन्पलद्वये ॥
पूर्वोक्तचूर्णं कर्षांशं क्षिप्त्वोत्तार्य सुशीतलम् ।
तत्तैलं प्रक्षिपेत्कर्णे ध्रुवं गोमक्षिका व्रजेत् ॥

समन्दर झाग, बच, सोंठ और सेंधा नमक समान मात्रा में मिले हुवे १। तोला। अदरकका रस १। सेर, तेल १। सेर। यथा विधि तेल पाक करें।

इसे ठंडा करके कानमें डालने से मक्खी आदि कीट पतंग कानसे बाहर निकल आते हैं।

[८८६] कृष्णाद्यं तैलम् (यो. र. । नेत्र.)

कृष्णाविडङ्गमधुयष्टिकसिन्धुजन्म
विश्वौषधैः पयसि सिद्धमिदं छगल्याः ।
तैलं व्रणं तिमिरशुक्रशिरोक्षिवर्त्म
पाकात्ययाञ्जयति नस्यविधौ प्रयुक्तम् ॥

पीपल, बायबिड़ंग, मुल्हैठी, सेंधा नमक और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोंठ के कल्क तथा बकरी के दूधसे सिद्ध तैलकी नस्य लेनेसे आंखके घाव, तिमिर, शुक्र (फूला) शिर और पलकों का पकना आदि रोग नष्ट होते हैं।

[८८७] केतकादि तैलम्

(वृ. नि. र; ग. नि; वृ.मा; वा. व्या.)

केतकनागबलातिबलानां[1]

यद्बहुलेन रसेन विपक्कम् ।

तैलमतल्पतुषोदकसिद्धं

मारुतमस्थिगतं विनिहंति ॥

केतकी, नागबला और अतिबलाके बहुतसे क्वाथ और बहुतसी कांजी से सिद्ध किया हुआ तेल अस्थिगत वायुका नाश करता है।

अथ ककाराद्यासवारिष्ट प्रकरणम्

[८८८] कनकारिष्टः (१)

(च. सं. । चि. अ. १४)

नवस्यामलकस्यैकां कुर्याज्जर्जरितां तुलाम् ।
कुडवार्धं विडङ्गानि पिप्पली मरिचानि च ॥
पाठां मूलञ्च पिप्पल्याः क्रमुकं चव्यचित्रकौ ।
मञ्जिष्ठैलवालुकं रोध्रं पलिकान्युपकल्पयेत् ॥
कुष्ठं दारुहरिद्रां च सुराह्वं सारिवाद्वयम् ।
इन्द्राह्वं भद्रमुस्तञ्च कुर्यादर्धपलोन्मितान् ॥
चत्वारि नागपुष्पस्य पलान्यभिनवस्य च ।
द्रोणाभ्यामम्भसो द्वाभ्यां साधयित्वाऽवतारयेत्
पादावशेषे पूते च शीते तस्मिन्समावपेत् ॥
मृद्वीकाद्व्याढकरसं शीतं निर्यूहसंमितम् ॥
शर्करायाश्च शुद्धाया दद्याद्द्विगुणितां तुलाम् ।
कुसुमस्वरस्यैकमर्धप्रस्थं नवस्य च ॥
त्वगेलापत्रपत्राम्बुसेव्यक्रमुककेसरान् ।
चूर्णयित्वा तु मतिमान्कार्षिकानत्र दापयेत् ॥
तत्सर्वं स्थापयेत्पक्षं शुचौ च घृतभाजने ।
प्रलिप्ते सर्पिषा किंचिच्छर्करागुरुधूपिते ॥
पक्षादूर्ध्वमरिष्टोऽयं कनको नाम विश्रुतः ।
पेयः स्वादुरसो हृद्यः प्रयोगाद्भक्तरोचनः ॥
अर्शांसि ग्रहणीदोषमानाहमुदरं ज्वरम् ।
हृत्पाण्डुरोगश्वयथुगुल्मवर्चोनिलग्रहान् ॥
कासान्कफामयांश्चोग्रान्सर्वानेवापकर्षति ।
वलीपलितखालित्यं दोषजं तु व्यपोहति ॥

कुटे हुवे नवीन आमले ६। सेर, बायविडंग, पीपल और कालीमिर्च २०-२० तोले, पाठा, पिप्पलीमूल, सुपारी, चव, चीता, मजीठ, एलवालु (एलवा) और लोध प्रत्येक ५-५ तोला। कूठ, दारु हल्दी, देवदारु, दो प्रकारकी सारिवा, इन्द्रयव और नागरमोथा प्रत्येक २॥-२॥ तोला और नवीन नागकेसर २० तोला लेकर सबको ६४ सेर पानीमें पकावें। जब चौथा भाग शेष रह जाय तो छान कर ठंडा होने पर उसमें मुनका का क्वाथ १६ सेर, उत्तम खांड १२॥ सेर, नवीन शहद १ सेर, दालचीनी, इलायची, नागरमोथा, पतरज (तेजपात) सुगन्धबाला, खस, सुपारी और नागकेसर। प्रत्येकका १।-१। तोला चूर्ण मिलाकर पवित्र, घृतसे चिकने और खांड तथा अगरसे धूपित बरतनमें संधान करके १५ दिन तक रक्खा रहने दें।

इसके पश्चात् निकालकर छान लें और सुरक्षित रक्खें।

[1] केतकिमूलं बलातिबलानां-(ग. नि.)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह (कनकारिष्ट) रसमें मधुर, प्रयोग करनेसे हृद्य, रुचिकर बवासीर, ग्रहणीदोष, अफारा, उदर रोग, ज्वर, हृद्रोग, पांडु, सूजन, गुल्म, मल और वायुका रुकना, खांसी, उग्र कफजरोग और वली पलित तथा खालित्य (गंज) नाशक है।

[८८९] कनकारिष्ट (२) (ग. नि. अ. ६)

खदिरकषायद्रोणं कुम्भे घृतभाविते समावाप्य।
पलिकां मात्रां क्षेप्यां कृत्वा तामेव सूक्ष्मचूर्णन्तु॥
त्रिफलात्रिकटुकरजनीकत्वग्बाकुचीगुडूच्याश्च।
सविडङ्गमत्र मधुपलशतद्वयं प्रक्षिपेत्सर्वम्॥
धातकीपलान्यष्टौ क्वाथे चास्मिन्प्रदेयानि।
प्रातः प्रातस्तु पिबेन्नाशयति चिरोत्थितं कुष्ठम्॥
मासेन सर्वरोगान्निहन्ति च शोफमेहांश्च।
निर्जितकासश्वासो गुदकीलभगन्दरैर्विनिर्मुक्तः।
कनकारिष्टं प्रपिबन्भवति पुमान्कनककान्तिश्च॥

खैरका क्वाथ ३२ सेर, त्रिफला, त्रिकुटा, हल्दी, निर्मली, दालचीनी, बाबची, गिलोय और बायविडंग का चूर्ण ५-५ तोला तथा शहद २५ सेर और धायके फूलोंका चूर्ण ०॥ सेर लेकर सबको घृतसे चिकने किये हुवे मिट्टीके घड़े में भरकर संधान करके रक्खें।

इस अरिष्टको प्रातः काल सेवन करनेसे पुराना कुष्ठ नष्ट होता है। इसे १ मास तक सेवन करने से सूजन, प्रमेह, खांसी, श्वास, मस्से और भगन्दर आदि समस्त रोग नष्ट होकर शरीर कुन्दन के समान हो जाता है।

[८९०] कनकासवः (भै. र. । हिक्का.)

संक्षुद्य कनकं शाखामूलपत्रफलैः सह।
ततश्चतुष्पलं ग्राह्यं वृषमूलत्वचस्तथा॥
मधुकं मागधी व्याघ्री केशरं विश्वभेषजम्।
भार्गीतालीशपत्रञ्च संचूर्ण्यैषां पलद्वयम्॥
संगृह्य धातकी प्रस्थं द्राक्षायाः पलविंशतिम्।
जलं द्रोणद्वयं दत्वा शर्करायास्तुलां तथा॥
क्षौद्रस्यार्धतुलां चापि सर्वं संमिश्रय यत्नतः।
भाण्डे निक्षिप्य चावृत्य निदध्यान्मासमात्रकम्
निहन्ति निखलाञ्छ्वासान् कासं यक्ष्माणमेव च
क्षतक्षीणं ज्वरं जीर्णं रक्तपित्तमुरःक्षतम्॥

शाखा, मूल, पत्र और फल सहित कुटा हुआ धतूरा और बांसेकी जड़की छाल २०-२० तोला, मुलैठी, पीपल, कटेली, नागकेसर, सोंठ, भारंगी और तालीसपत्र। प्रत्येक का चूर्ण १०-१० तोला। धायके फूल १ सेर, मुनक्का १। सेर, पानी ६४ सेर, चीनी (खांड) ६। सेर और शहद ३)= सेर लेकर सबको एकत्र करके यथा विधि सन्धान करके एक मास तक रक्खा रहने दें।

इसके सेवनसे सब प्रकारके श्वास, खांसी, यक्ष्मा, क्षत, क्षीणता, जीर्णज्वर, रक्तपित्त और उरःक्षतका नाश होता है।

[८९१] कर्पुरासवः (भै. र. परिशि.)

तुलां प्रसन्नां परिगृह्य शुद्धां
पलाष्टकं चोडुपतेः क्षिपेच्च।
एला च सूक्ष्मा घनशृङ्गवेरे
यमानिका वेल्लजमत्र सर्वम्॥
पलप्रमाणं पिहिते च भांडे
मासं निदध्याद् भिषगत्रयत्नात्।
विशूचिकायाःपरमौषधं त-
न्निहन्ति चान्यान् विविधान् विकारान्॥

प्रसन्ना सुरा १२॥ सेर, कपूर ०॥ सेर, छोटी इलायची, नागरमोथा, सोंठ, अजवायन और बायबिडंग ५-५ तोला लेकर चूर्ण करके सबको मिट्टी के बरतनमें सन्धान करके एक मास तक रक्खा रहने दें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह विसूचिकाकी परमौषध है एवं इसके सेवनसे कितने ही अन्य रोग भी नष्ट होते हैं।

[८९२] कुटजारिष्टः (भै. र. । अति.)

तुला कुटजमूलस्य मृद्वीकार्धतुला तथा।
मधूकपुष्पकाश्मर्योर्भागान् दशपलोन्मितान्॥
चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा द्रोणं चैवावशेषितम्।
धातक्या विंशतिपलं गुडस्य च तुलां क्षिपेत्॥
मासमात्रं स्थितो भांडे कुटजारिष्टसंज्ञितः।
ज्वरान् प्रशमयेत् सर्वान् कुर्यात्तीक्ष्णं धनञ्जयम्
दुर्वारां ग्रहणीं हन्ति रक्तातीसारमुल्बणम्॥

कुड़ेकी जड़की छाल ६। सेर, मुनक्का ३ सेर २ छटांक, महुवे के फूल और खम्भारी ५०–५० तोला सेर लेकर सबको १२८ सेर जलमें पकावें। जब ३२ पानी बाकी रहे तो उतारकर छानलें और उस क्वाथ में धाय के फूल १। सेर और गुड़ ६। सेर मिलाकर यथाविधि मिट्टी के बरतन में सन्धान करके १ मास तक रक्खा रहने दें।

इसके सेवनसे सब प्रकार के ज्वर, रक्तातिसार और दुस्साध्य संग्रहणी का नाश होता है तथा अग्नि प्रदीप्त होती है।

[८९३] कुब्जासवः (ग. नि. अ. ६)

शतं कुब्जकमूलस्य मृद्वीकायार्द्धं शतं तथा।
मधूकपुष्प काश्मर्य भागान् दशपलोन्मितान्॥
चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा शीते पादावशेषिते।
धातक्या विंशतिपलं गुडस्य च शतत्रयम्॥
कनकस्य तु चत्वारि व्योषं कंकोलमेव च।
एलात्वक्पत्रजातीनां लवङ्गस्य तथैव च॥
भागाः पलप्रमाणाश्च सूक्ष्मचूर्णन्तु कारयेत्।
कौब्जमूलासवो ह्येष मासमात्रं विधारितः॥
शमयेत्सन्निपातोत्थान् ज्वरान् सर्वान् न संशयः॥

कुब्जक (श्वेत गुलाब) की जड़ ६। सेर, मुनक्का ३ सेर २ छटांक, महुवे के फूल और खम्भारी ५०–५० तोले लेकर सबको १२८ सेर जलमें पकावें जब ३२ सेर पानी बाकी रह जाय तो उसे छानकर ठंडा होने पर उसमें धाय के फुल १। सेर, गुड़ १८।।।, धतूरा ०।। सेर, त्रिकुटा, कंकोल, इलायची, दालचीनी, पतरज, जाविश्री और लौंगका चूर्ण ५-५ तोला मिलाकर यथा विधि सन्धान करके १ मास तक रक्खा रहने दें।

इसके सेवन से सब प्रकार के सन्निपातज्वर नष्ट होते हैं।

[८९४] कुमार्यासवः (१) (ग. नि. अ. ६)

द्रोणमानं कुमार्यास्तु रसं माण्डे निधापयेत्।
तुलार्धं दशमूलं तु तदर्धं पौष्करी जटा॥
तत्समं धन्वयासं च चित्रार्धं च परिक्षिपेत्।
प्रस्थार्धममृता ज्ञेया तदर्धमभया तथा।
लोध्रकामलकं पथ्यं मञ्जिष्ठा च कलिद्रुमः।
चव्यं च कुष्ठमधुकं कपित्थं सुरदारुकम्॥
कृमिशत्रुर्मागधिका भार्गी स्यादष्टवर्गकम्।
जीरकं क्रमुको रास्ना शठी रेणुकमेव च॥
भृङ्गी निशाप्रियङ्गुश्च मांसी मुस्ता च सारिवा।
वासा वरी शक्रबीजं नागकेसरमेव च॥
पुनर्नवा समांशानि षड्भिर्द्रोणैर्जलस्य तु।
क्वाथयेदनया रीत्या चतुर्थांशं जलं नयेत्॥
त्रिंशत्पला च मृद्वीका दन्तसंख्यापलं मधु।
गुडस्तुला चतुष्कं च तदर्धा धातकी भवेत्।
पलद्वयं लवंगानि कङ्कोलं मलयोद्भवम्।
चातुर्जातं तथा कृष्णा मरिचं जातिपत्रकम्॥
आकल्लकं जातिफलं कपिकच्छुश्च दीप्यकम्।
वचा खदिरसारश्च दहनं जीरकं तथा॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यवानी वालकं विश्वा मुस्ता धान्यं हरीतकी।
हपुषा तिंतिडीकं च चूर्णमेषां प्रयोजयेत् ॥
भाण्डे पुराणे सुस्निग्धे धूपिते गन्धभेषजैः
कोष्ठसारे तथा तप्ते भूमौ मासं विनि क्षिपेत् ॥
यो रोगी प्रातरुत्थाय पलमेकं तु भक्षयेत्।
धातुक्षयं जयेत्कासं श्वासं पञ्चविधं तथा ॥
अर्शांसि वातरोगांश्च ग्रहणीपाण्डुकामलाः।
हलीमकमुदावर्तं गुल्मं पञ्चविधं जयेत् ॥
आध्मानं कुक्षिशूलं च प्रत्याध्मानं गुदग्रहम्।
अष्ठीलिकां च हृद्रोगानेतान् व्याधिन्विनिर्जयेत्
कुमार्यासव इत्येष कथितः शूलपाणिना ॥

दशमूल ३ सेर २ छटांक, पोखरमूल १ सेर ९ छटांक, चीता ६२॥ तोला, गिलोय ०॥ सेर, हैड़ ०। सेर, लोध, आमला, चौलाई की जड़, मजीठ, बहेड़ा, चव्य, कूठ, मुल्हैठी, कैथ, देवदारु, वायविड़ंग, पीपल, भार्गी, अष्ट वर्ग (जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली) जीरा, सुपारी, रास्ना, कपूरकचरी, रेणुका, काकड़ासिंगी, हल्दी, फूल प्रियंगु, जटामांसी, नागरमोथा, सारिवा, बासा, शतावरी, इन्द्रजौ, नागकेसर और पुनर्नवा प्रत्येक ४-४ सेर लेकर सबको १९२ सेर जलमें पकावें जब चौथा भाग शेष रह जाय तो छानकर उसमें घीकुमार का रस ३२ सेर, मुनक्का १ सेर १४ छटांक, शहद ४ सेर, गुड़ २५ सेर, धाय के फुल १२॥ सेर, लौंग, कंकोल, श्वेतचन्दन, चातुर्जात (दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेसर) पीपल, कालीमिर्च, जावित्री, तेजपात, आकरकरा, जायफल, कौंच, अजमोद, बच, खैरसार, चीता, जीरा, सुगन्धबाला, सोंठ, नागरमोथा, धनिया, हैड़, हाऊबेर और तिन्तड़ीक, प्रत्येक का १०-१० तोला चूर्ण मिलाकर सब को चिकने पुराने और गन्ध औषधियों से धूपित पात्रमें यथा विधि संधान करके भूमि में गाढ़ दें और १ मास पश्चात् निकाल कर छान लें।

इसे ५ तोलेकी मात्रानुसार प्रातःकाल सेवन करने से धातुक्षय, खांसी, पांच प्रकार के श्वास, बवासीर, वातव्याधि, संग्रहणी, पांडु, कामला, हलीमक, उदावर्त, पांच प्रकार के गुल्म, अफारा, कुक्षिशूल, प्रत्याध्मान, गुदग्रह, अष्ठीला और हृद्रोग का नाश होता है।

[८९५] कुमार्यासवः (२) (ग. नि. अ. ६)

रसस्तुलार्धं कौमारस्तदर्धगुडमिश्रितः।
चातुर्जातलवंगानां सैंधवस्य निशाद्वयोः ॥
कुबेरकृष्णा मरिचधातकीनां पलं पलम्।
पथ्याचूर्णं पलयुगं पलं चाकल्लकस्य तु ॥
उग्रगंधाजातिपत्रीविडंगानां पलं पलम्।
एकीकृत शुचौ भांडे पक्षमेकं निधापयेत् ॥
पलार्द्धं भक्षयेन्नित्यं गुल्मोदावर्तनाशनः।
आध्मानं पार्श्वशूलञ्च जठरार्ति कफं हरेत् ॥
मन्दाग्निं शमयेच्छ्वासं कासं हिक्कां क्षयं तथा।
यकृत्प्लीहं तथा शोफं नाशयत्येष सेवितः ॥

घीकुमार का रस ६। सेर, गुड़ ३ सेर ९ छटांक, तेजपात, दालचीनी, इलायची, नागकेसर, लौंग, सेंधानमक, हल्दी, दारुहल्दी, करंजवा, पीपल, कालीमिर्च, धायके फूल, अकरकरा, बच, जावित्री और वायबिड़ंग प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोला और हैड़ १० तोला लेकर यथा विधि सन्धान करके १५ दिन तक रक्खा रहने दें।

इसे प्रतिदिन २॥ तोलेकी मात्रानुसार सेवन करने से गुल्म, उदावर्त, अफारा, पसली का शूल, उदरव्याधि, कफ, मंदाग्नि, खांसी, श्वास, हिक्का, क्षय, जिगर, तिल्ली और सूजन का नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[८९६] कुमार्यासवः (३) (यो. र. गुल्म.)

कुमार्याश्च रसद्रोणे गुडं पलशतं तथा।
तुलार्धसंख्यां विजयां क्वाथयेत्तज्जलार्मणे ॥
चतुर्थांशावशेषे तु पूते तस्मिन्निधापयेत्।
मधुनश्चाऽऽढकं दत्त्वा धातक्या द्विपलाष्टकम् ॥
स्निग्धभाण्डे विनिक्षिप्य कल्कं चैव प्रदापयेत्।
जातीफलं लवङ्गं च कङ्कोलं च कबाबकम् ॥
जटिलाचव्यचित्रं च जातीपत्रो मकर्कटम्।
अक्षं पुष्करमूलञ्च प्रत्येकं च पलं पलम् ॥
मृतं शुल्वं तथा लोहं शुक्तिमात्रं प्रदापयेत्।
भूम्यां वा धान्यराशौ वा स्थापयेद्दिनविंशतिम् ॥
तमुद्धृत्य पिबेन्मात्रां यथा चाग्निबलाबलम्।
पञ्चकासं तथा श्वासं क्षयरोगं च दारुणम् ॥
उदराणि तथाऽष्टौ च षडर्शांसि च नाशयेत्।
वातव्याधिमपस्मारमन्यान्रोगान्सुदारुणान् ॥
जाठरं कुरुते दीप्तं कोष्ठशूलं च नाशयेत्।
गुल्माष्टकं नष्टपुष्पं नाशयेदेकपक्षतः ॥
कुमारिकासवोह्येष बृहस्पतिविनिर्मितः ॥

१ सेर ९ छटांक भांगको ३२ सेर जल में पकावें जब चौथा भाग शेष रहे तो उतार कर छान लें। फिर घीकुमार का रस ३२ सेर, गुड़ ६। सेर, शहद ८ सेर, धाय के फूल १ सेर, जायफल, लौंग, कंकोल, कबाबचीनी, जटामांसी, चव, चीता, जावित्री, काकड़ासींगी, बहेड़ा, पोखरमूल प्रत्येक ५-५ तोला। लोह भस्म और तांबा भस्म प्रत्येक २॥-२॥ तोला लेकर यथा विधि सन्धान करके भूमिमें अथवा अनाज के ढेरमें दबा दें। फिर २० दिन पश्चात् निकाल कर छान कर अग्निबलानुसार सेवन करावें।

इसके सेवन से ५ प्रकार की खांसी, श्वास, क्षय, आठ प्रकार के उदररोग, छः प्रकार की बवासीर, वातव्याधि और अपस्मार आदि अनेक दारुण रोगों का नाश होता है।

इसे १५ दिन तक सेवन करने से मन्दाग्नि, उदरशूल, आठ प्रकारके गुल्म और नष्टपुष्प (स्त्रियों को मासिक स्राव न होना) नष्ट होते हैं।

[८९७] कूष्माण्डासवः (ग. नि. अ. ६)

कूष्माण्डं जर्जरीकृत्य रसमादाय यत्नतः।
द्रोणं गुडार्धं दातव्यं चूर्णमेषां विनिक्षिपेत् ॥
कटुत्रिकं लवङ्गं च चातुर्जातं तथैव च।
कङ्कोलकं जातीफलं जातीपत्री प्रियङ्गुकम् ॥
कपित्थं वत्सकं चैव बीजं गोक्षुरकस्य च।
सत्वं गुडूच्या भार्गी च बलाबीजं तथैव च ॥
हपुषा क्रमुकं चैव देवदारु मदावहम्।
गायत्रीसारजलदं चित्रकं च फलत्रिकम् ॥
रास्ना यष्ट्याह्वकं चापि तुम्बरु नागकेशरम्।
ग्रन्थिकं चाजमोदा च कारवी दीप्यकस्तथा ॥
कट्फलं च तुगाक्षीरी आकल्लकर्मुटिंगणम् ॥
कलिङ्गकाश्च काकोली शठीमोचरसं घनम्।
कोकिलाक्षस्य बीजानि कसेरुः सहदेविका ॥
भूनिंबं चविका स्पृका पद्मकं च निशाद्वयम्।
धान्यकं सुरदाली च क्षीरकन्दं तथैव च ॥
एतानि चाक्षमात्राणि लोहचूर्णं पलाष्टकम्।
धातक्याः षोडशपलं घृतभाण्डे निधापयेत् ॥
मासार्धं च तथा भूमौ निक्षिपेदतियत्नतः।
अनेन विधिना सिद्ध आसव परिकीर्तितः ॥
पीत्वास्य पलमेकं तु प्रातरुत्थाय नित्यशः।
धातुक्षयं च मन्दाग्निं प्रमेहं पाण्डुमेव च ॥
अर्शांसि ग्रहणीदोषान् प्लीहोदरभगन्दरान्।
आमवातं रक्तपित्तं श्लेष्मरक्तं तथैव च ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निहन्ति वातजान् रोगान् मेदःस्थौल्यापहासवः॥

पेठेको कूटकर उसका रस निकालें। यह रस ३२ सेर, गुड़ ८ सेर, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, लौंग, दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेसर, कंकोल, जायफल, जावित्री, फूलप्रियंगु, कैथ, इन्द्रजौ, गोखरू, गिलोयका सत, भारंगी, खरैंटीके बीज, हाऊबेर, सुपारी, देवदारु, कस्तूरी, खैरसार, नागरमोथा, चीता, त्रिफला, रास्ना, मुलैठी, तुम्बरु नागकेसर, पीपलामूल, अजमोद, कलौंजी, अजवायन, कायफल, बंसलोचन, अकरकरा, उटङ्गन के बीज, कैथका छिलका, सोया, गजपीपल, हिंसोड़ा (सपिस्तां) इन्द्रजौ, काकोली, कपूरकचरी, मोचरस, नागरमोथा, तालमा, नागकसेरु, सहदेवी, चिरायता, चव, स्पृक्का, पद्माक, हल्दी, दारुहल्दी, धनिया, देवदारु और विदारीकन्द। प्रत्येक १।–१। तोला। लोहका बुरादा ०॥ सेर। धायके फूल १ सेर।

सबको यथाविधि चिकने बरतन में सन्धान करके १५ दिन तक भूमिमें गढ़ा रहने दें। फिर छान कर सुरक्षित रक्खें।

इसे प्रतिदिन प्रातःकाल ५ तोलेकी मात्रानुसार सेवन करनेसे धातुक्षय, मन्दाग्नि, प्रमेह, पांडु बवासीर, ग्रहणीदोष, तिल्ली, उदररोग, भगन्दर, आमवात, रक्तपित्त, श्लेष्मरक्त, वातव्याधि और मेदवृद्धिका नाश होता है।

अथ ककारादि लेप प्रकरणम्

[८९८] कटुतुम्ब्यादिलेपः

(वृ. नि. र; अर्श; र. र. स. अ १५; ग. नि.)

आरनालेन संपिष्टा सबीजकटुतुम्बिका।
सगुडा हन्ति लेपेन अर्शांसि मूलतो ध्रुवम्॥

कड़वी तोरीको बीजों सहित कांजीमें पीसकर गुड़ में मिलाकर लेप करनेसे बवासीरका समूल नाश होता है।

[८९९] कण्टकार्यादिलेपः

(वृ. नि. र.। क्षु. रो.)

इन्द्रलुप्तापहो लेपो मधुना बृहतीरसः।
गुञ्जामूलं फलं वापि भल्लातकरसोपि वा॥

कटेलीके रसको शहदमें मिलाकर लेप करनेसे या गुञ्जा (चौंटली) की जड़ या फल का अथवा भिलावेके रसका लेप करनेसे गंज (बालोंका नष्ट हो जाना) नष्ट होता है।

[९००] कनकादिलेपः (वृ. नि. र; विस.)

कनकभुजगवल्लीमालतीपत्रमूर्वा
रसगदकुनटीभिर्मर्दितस्तैलयोगात्।
अपहरति रसेन्द्रःकुष्ठकण्डूविसर्प
स्फुटितचरणरंध्रं श्यामलत्वं त्वचायाः॥

धतूरा, पान, चमेली के पत्ते, मूर्वा, रसौत, कूठ, मनसिल और पारदको खूब घोट कर तेलमें मिलाकर लेप करनेसे कोढ़, खुजली, विसर्प, बिवाई और त्वचाकी श्यामता नष्ट होती है।

[९०१] कमलादिलेपः (वृ. नि. र; शि. रो.)

कमलं सुरसामूलं लिप्तं हंति शिरोरुजम्॥

कमल और तुलसीकी जड़को पीस कर लेप करनेसे शिरकी पीड़ा शान्त होती है।

[९०२] करवीरादिलेपः

(वृ. नि. र.। त्वगूदो; वा.भ.चि. अ.१६; कुष्ठा.)

श्वेतकरवीरमूलं कुटजकरंजत्वचादाव्यः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुमनप्रवालयुक्तो लेपः कुष्ठापहः सिद्धः ॥

सफेद कनेरकी जड़, कुड़ा, करञ्जवेकी छाल, दारुहल्दी और चमेलीके पत्तोंको पीसकर लेप करने से कुष्ठका नाश होता है।

[९०३] करंजादिलेपः

(वृ. नि. र.। क्षु. रो; व. से.)

करञ्जबीजं रजनी कासीसं पद्मकं मधु।
रोचना हरितालं च लेपोयमलसे हितः ॥

करंजवेकी गिरी, हल्दी, कसीस, पद्माक, शहद, गोरोचन और हरताल का लेप करनेसे अलस (खाखों)का नाश होता है।

[९०४] कसेर्वादिलेपः (वृ. नि.र.। विस.)

कशेरुशृङ्गाटकपद्मगुञ्जा
सशैवलाःसोत्पलपद्मकश्च।
वस्त्रान्तराःपित्तकृते विसर्पे
लेपो विधेयः सघृतः सुशीतः ॥

कसेरु, सिंघाड़ा, कमल, गुञ्जा (चौंटली), शैवाल, नीलोफर और पद्माकको पीसकर घीमें मिला कर लेप करें, परन्तु लेप के नीचे कपड़ा लगा लेना चाहिये। इससे पित्त विसर्प नष्ट होता है। एवं ठंडक पडती है। *

[९०५] कार्पासादिलेपः

(वृ. नि. र.। त्वग्दो. ग., नि. कुष्ठा.)

कार्पासिकापत्रविमिश्रकाक-
जंघाकृतो मूलकबीजयुक्तः।
तक्रेण लेपः क्षितिपुत्रवारे,
सिध्मानि सद्यो नयति प्रणाशम् ॥

कपासके पत्ते, काकजंघा और मूलीके बीजों को तक्रमें घिसकर मंगलके रोज़ लेप करनेसे सिध्म (सीप)का नाश होता है।

[९०६] कांचनीलेपः

(वृ. नि. र.। अर्श.)

कांचनी कुसुमं चुर्णं शंखचूर्णं मनःशिला।
गजपिप्पलिसंतोयैर्लेपो ह्यर्शो कुठारकः ॥

हल्दी, लौंग, शङ्खका चूर्ण, नसिल और गज-पीपलको पानीमें पीसकर लेप करनेसे बवासीरके मस्से नष्ट होते हैं।

[९०७] कासमर्दादिलेपः

(वृ. नि. र., वृ. मा.। त्वग्दो.)

कासमर्दकबीजानि मूलकानां तथैव च।
गंधपाषाणमिश्राणि सिध्मानां परमौषधम् ॥

कसौन्दीके बीज, मूलीके बीज और गंधकका लेप सिध्मके लिए अत्यन्त उपयोगी है।

[९०८] कासीसादिलेपः (वृ.नि.र.। क्षु.रो.)

कासीसरोचनातुत्थहरितालरसांजनैः।
अम्लपिष्टैःप्रलेपोयं मुष्ककण्ड्वाहिपूतनैः ॥

कसीस, गोरोचन, तूतिया, हरताल और रसौतको कांजीमें पीसकर लेप करनेसे अण्डकोषों की खाज और अहिपूतनाका नाश होता है।

[९०९] कुमार्यादिलेपः

(शा. ध. उ. खं. अ. १३)

कुमारिकाग्निपत्रैर्वा दाडिमीपल्लवैरपि।
वचाहरिद्राविश्वैर्वा तथा नागरगैरिकैः ॥

घीकुमार और चीतेके पत्तोंको अथवा अनार के पत्तों या बच, हल्दी और सोंठको किंवा सोंठ और गेरूको पानीमें पीसकर लेप करनेसे आंखोंके समस्त रोग नष्ट होते हैं। +

* श्री चौबे दत्तरामजीके मतानुसार लेप करके उसके ऊपर कपड़ा बांध देना चाहिये।

+ आंखों की सुर्खी और खटक आदिके लिए यह लेप उत्तम प्रतीत होता है। (अनु०)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[९१०] कुष्ठादिलेपः (१) (वृ.नि.र.शिरो.रो.)

कुष्ठमेरण्डमूलं च नागरं तक्रपेषितम् ।
कवोष्णं च शिरःपीडां मात्रालेपनतो हरेत् ॥

कूठ, अरण्डमूल और सोंठको तक्र (छाछ) में पीसकर किञ्चित गरम करके लेप करनेसे शिरपीड़ा शान्त होती है ।

[९११] कुष्ठादिलेपः (२) (वृ.नि.र.। शि. रो.)

कुष्ठमेरण्डमूलं च लेपःकांजिकपेषितः ।
शिरोर्तिं वातजां हन्यात्पुष्पं वा मुचकुंदजम् ॥

कूठ और अरण्डमूलको अथवा मुचकुन्दके फूलोंको कांजीमें पीसकर लेप करनेसे वातज शिरपीड़ा शान्त होती है ।

[९१२] कुष्ठादिलेपः (३)

(वृ. नि. र. । शिरो. रो.)

कुष्ठमेरण्डमूलं वा चक्रमर्दकमूलकम् ।
आरनालेन पिष्टं तल्लेपो हन्ति शिरोरुजम् ॥

कूठ, अरण्डमूल और पवांड़की जड़को कांजी में पीस कर लेप करने से शिरः शूल शान्त होता है।

[९१३] कुष्ठादिलेपः (४)

(च. द.। अग्निमां;ग. नि. अजीर्ण; यो. र. विसूचि.)

कुष्ठसैंधवयोः कल्कं चुक्रतैलसमन्वितम् ।
विषूच्यां मर्दनं कोष्णं खल्लीशूलनिवारणम् ॥*

कूठ और सेंधानमक को पानी में पीसकर चूके (चौपतिया) के तेल में मिलाकर कुछ गरम करके मालिश करने से खल्ली, शूल (हाथ पैरों का ऐंठना) नष्ट होता है ।

* दृष्टफलोऽयं योगः ।

[९१४] कुष्ठादिलेपः (५)

(वृ. नि. र. । भगन्द. नि.)

कुष्ठं त्रिवृत्तिलादन्ती मागधी सैंधवं मधु ।
रजनी त्रिफलातुत्थं हितं स्याद्व्रणलेपनम् ॥

कूठ, निसोत, तिल, दन्ती, पीपल, सेंधानमक, शहद, हल्दी, त्रिफला और तूतिया का लेप घावों के लिए लाभदायक है ।

[९१५] कृष्णादिलेपः (१)

(वृ. नि. र; ग. नि. । व्रणशो.)

कृष्णापुराणपिण्याकशिग्रु त्वक्सिकताशिवा ।
मूत्रपिष्टःसुखोष्णोयं लेपश्च श्लेष्मशोथजित् ॥

पीपल, पुरानी खल, सोहजने की छाल, रेत और हैड़ को गोमूत्र में पीसकर किञ्चित गरम करके लेप करने से कफज सूजन का नाश होता है।

[९१६] कृष्णादिलेपः (२)

(वृ. नि. र; ग. नि. । शि. रो.)

कृष्णाम्बुशुंठीमधुकं शताह्वोत्पलवालकैः ।
जलपिष्टैः शिरोलेपः सद्यः शूलनिवारणः ॥

पीपल, सुगन्धबाला, सोंठ, मुल्हैठी, सोया, नीलोफर और खस को पानी में पीसकर लेप करने से शिरपीड़ा अत्यन्त शीघ्र शान्त होती है ।

[९१७] केसरषष्ठयोगः

(वृ. यो. त. । १२० त; यो. र. शि. रो; च. द. ।)

कुष्ठं मूलकबीजं प्रियंगवः सर्षपा दुरालम्भा ।
एतत्केसरषष्ठं निहन्ति चिरकालजं सिध्मम् ॥

कूठ, मूली के बीज, फूलप्रियंगु, सरसों, धमासा और केसर का लेप करने से पुराना सिध्म नष्ट होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ ककारादि धूपप्रकरणम्

[९१८] **कर्पूरधूपः** (वृ. नि. र. । अर्श.)

रक्तौघशांतये देयं गुदे कर्पूरधूपनम् ।

यदि बवासीर से अधिक रक्त निकलता हो तो गुदा में कपूर की धूनी देनी चाहिए।

[९१९] **कुलत्थादि धूपः** (वृ. नि. र.। बाल.)

कुलत्थाः शङ्खचूर्णं च प्रदेयः पूर्वगन्धिकः ।
गृध्रोलूकपुरीषाणि यवानिमिश्रितं घृते ॥
संध्योरुभयोः कार्यमेतद्धूपनं शिशोः ॥

निर्मली के फलों को प्रातः और सायंकाल कुलथी, शंख का चूरा, गन्धक, गीध और उल्लू की विष्ठा और अजवायन को घीमें मिला कर धूनी देना हितकारक है।

अथ ककारादि अंजनप्रकरणम्

[९२०] **कणाद्यंजनम्** (१)
(वृ. नि. र. । नेत्र.)

कणाछागशकृन्मध्ये पक्त्वा तद्रसपेषिता ।
अचिराद्धंति नक्तांध्यं तद्रसक्षौद्रमूषणम् ॥

पीपल को बकरी की मींगनियों के बीच में रखकर पकावें और फिर उन्हें बकरी की मींगनियों के रसमें ही खरल करें। इस चूर्ण का अंजन करने से रतौंधे का नाश होता है।

कालीमिर्च को शहद में मिला कर अंजन करने से भी रतौंधा नष्ट होता है।

[९२१] **कणाद्यंजनम्** (२) (वृ. नि.र. सन्नि.)

कणोषणोग्रालवणोत्तमानि
करञ्जबीजक्षणदामलानि ।
पथ्याक्षसिद्धार्थकहिंगुशुंठि
युतानि बस्ताम्बुविमिश्रितानि ॥
पिष्ट्वा गुटीयं नयने विधेया
प्रचेतनेति प्रथितान्विताथा ।
चित्तभ्रमापस्मृतिभूतदोष-
शिरोक्षिरोगभ्रमनाशहेतुः ॥

पीपल, कालीमिर्च, बच, सेंधानमक, करंजवे की गिरी, हल्दी, आमला, हैड़, बहेड़ा, सरसों, हींग और सोंठ को बकरे के मूत्र में पीसकर गोलियां बनावें।

इन्हें आंखों में आंजने से बेहोशी, चित्तभ्रम, अपस्मार, भूतदोष, शिर और आंखोंके रोग तथा भ्रम का नाश होता है।

[९२२] **कतकफलादिः** (१) (यो. र. । नेत्र.)

कतकस्य फलं घृष्ट्वा मधुना नेत्रमञ्जयेत् ।
ईषत्कर्पूरसहितं तत्स्यान्नेत्रप्रसादनम् ॥

निर्मली के फलों को घिसकर उसमें ज़रासा कपूर मिला कर शहद के साथ आंखोमें आंजने से नेत्र स्वच्छ होते हैं।

[९२३] **कतकफलादिः** (२)
(यो. र. । नेत्र.)

कतकस्य फलं शङ्खं सैन्धवं त्र्यूषणं सिता ।
फेनो रसाञ्जनं क्षौद्रं विडंगानि मनःशिला ॥
सर्वमेतत्समं कृत्वा नारीक्षीरेण पेषयेत् ।
तिमिरं पटलं काचमर्मशुक्रं व्यपोहति ॥

निर्मली के फल, शंख, सेंधानमक, त्रिकुटा, मिश्री, समुद्रफेन, रसौत, शहद, बायबिडंग और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनसिल। सब चीजे समान भाग लेकर स्त्री के दूध में पीसें।

इसका अंजन करने से तिमिर, पटल, काच (मोतियाबिन्द), अर्म, शुक्र (फूला), खुजली, क्लेद (रतूबत) और अर्बुदादि नेत्र रोगों का नाश होता है।

[९२४] करंजाद्यंजनम्

(वृ. नि. र. नेत्र; वा. भ.)

करंजपद्मकिञ्जलकचन्दनोत्पलगैरिकैः।
गोशकृद्रससंपिष्टैर्नक्तान्ध्ये हितमंजनम् ॥

करंजवा, कमल, कमलकेसर (या कूठ) चन्दन, नीलोफर और गेरू को गोबर के रसमें पीसकर अंजन करने से रतौंध का नाश होता है।

[९२५] कस्तूरीकाद्यंजनम्

(वृ. नि. र.। सन्नि; यो. र. ज्वरा.)

कस्तूरीमरिचं वाजिलाला च मधुनांजनम्।
तंद्रां निवारयत्याशु व्योषं क्षिप्तं यथा नसि ॥

कस्तूरी और कालीमिर्च को घोड़े की लार में पीसकर शहद में मिलाकर अंजन करने या त्रिकुटे के चूर्ण की नस्य लेने से तन्द्रा का अत्यन्त शीघ्र नाश होता है।

[९२६] काश्मर्याद्यञ्जनम्

(वृ. नि. र.। नेत्र; यो. र.)

काश्मरीपुष्पमधुकदार्वीलोध्ररसांजनैः।
सक्षौद्रमंजनं कुर्यात्पित्तव्याधिप्रशांतये ॥

खम्भारी के फूल, मुलैहठी, दारुहल्दी, लोध्र और रसौत को पीसकर शहद में मिलाकर अंजन करने से पित्तज नेत्र रोगों का नाश होता है।

[९२७] कृष्णांजनम् (भा. प्र.। उन्मादे)

कृष्णामरिचसिन्धूत्थमधुगोरोचनाकृतम्।
अंजनं सर्वदेवादिकृतोन्मादहरं परम् ॥

पीपल, कालीमिर्च, सेंधानमक और गोरोचन को पीस कर शहद में मिलाकर अंजन करने से देवादिकों के कोप से उत्पन्न हुवा उन्माद नष्ट होता है।

[९२८] कृष्णांद्यजनम् (वृ. नि. र.। सन्नि.)

कृष्णामनःशिलातालमंजनमेव तंद्रिके त्विष्टम्।

पीपल, मनसिल और हरताल को पीसकर अंजन करनेसे तन्द्रिक सन्निपात का नाश होता है।

अथ ककारादि नस्यप्रकरणम्

[९२९] कणादि नस्यम् (वृ. नि. र. ज्व.)

कृष्णामलकसरामठदार्वीवचाराजसर्षपरसोनैः।
छागमूत्रसुपिष्टैर्नस्यैश्चैकादिहरम् ॥

पीपल, आमला, हींग, दारु हल्दी, बच, सफ़ेद सरसों और ल्हसन को बकरी के मूत्र में पीसकर नस्य लेने से दैनिक आदि ज्वर नष्ट होतेहैं।

[९३०] करञ्जादि नस्यम्

(वृ. नि. र.। र. का. घे.अप; यो. त. त.३९;यो. र.)

करंजदारुसिद्धार्थकटभी रामठं वचा।
समंगा त्रिफला व्योषःप्रियंगुश्च समांशकः ॥
बस्तमूत्रेण संपिष्ट्वा नस्यपानांजनादिषु।
योज्यो योगोयमुन्मादेऽपस्मारे भूतरोगिषु ॥

करंजवा, देवदारु, सरसों, मालकंगनी, हींग, बच, मजीठ, त्रिफला, त्रिकुटा और फूलप्रियंगु, बराबर २ लेकर, बकरे के मूत्र में पीसकर नस्य, पान और अंजन आदि द्वारा प्रयोग करने से उन्माद, अपस्मार और भूतव्याधि का नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[९३१] कर्कोटक्यादि नस्यम्

(वृ. नि. र. । विष.)

वंध्याकर्कोटकीमूलं छागमूत्रेण भावितम् ।
नस्यं कांजिकसंपिष्टं विषोपहतचेतसः ॥

बांझककोड़े की जड़ को बकरी के मूत्र की भावना देकर रक्खें । इसे कांजी में पीसकर नस्य देने से विषका प्रभाव नष्ट होता है ।

[९३२] कुमारीकंदनस्यम् (वृ.नि.र. । काम.)

किंवा तोयेन सा पिष्टः कुमारीकंदनस्यतः ।
जायते[?]कामलोपेता पित्तनेत्रांतकामला(?) ॥

घीकुमार की जड़ को पानी में पीसकर नस्य देने से कामला और कामला से उत्पन्न हुआ नेत्रों का पीलापन नष्ट होता है ।

[९३३] कुष्ठादिनस्यम् (वृ. नि. र. । सन्नि.)

कुष्ठगवाक्षीनागरनिशाद्वयमरीचकणावचायुक्तम् ।
बस्तसलिलेन पिष्टं तंद्रिकहिसं भवेन्नस्यम् ॥

कूठ, इन्द्रायन, सौंठ, हल्दी, दारुहल्दी, कालीमिर्च, पीपल और बच को बकरे के मूत्र में पीसकर नस्य देने से तन्द्रिक सन्निपात का नाश होता है ।

[९३४] कृष्णादिनस्यम् (वृ. नि. र. सन्नि.)

अपनयति कंठकुब्जं कृष्णापामार्गयुङ्नस्यम् ।
अथ हंति सलिलसहितं
त्रिकटुककटुतुंबिनीनस्यम् ॥

पीपल और चिरचिटे के चूर्ण की अथवा पानी में पिसे हुवे त्रिकुटे और कड़वी तोरी के बीजों की नस्य देनेसे कंठकुब्ज सन्निपात का नाश होता है ।

[९३५] कलिंगादि अवपीडनम्

(वृ. नि. र. । नासा.)

कलिंगहिंगुमरिचं लाक्षास्वरसकट्फलैः ।
कुष्ठोग्राशिग्रु जंतुघ्नैरवपीडः प्रशस्यते ॥

इन्द्रजौ, हींग, कालीमिर्च, लाख का स्वरस, कायफल, कूठ, बच, सहंजना और बायबिडंग से अवपीड़न[१] करने से नासा रोगों का नाश होता है ।

अथ ककारादि रसप्रकरणम्

[९३६] कज्जली (१) (र. रा. सुं. । ज्व.)

शुद्धसूतं तथा गन्धं खल्वे तावद्विमर्दयेत् ।
सूतं न दृश्यते यावत्किन्तु कज्जलवद्भवेत् ॥
एषा कज्जलिकाख्याता बृंहणी वीर्यवर्द्धनी ।
नानानुपानयोगेन सर्वव्याधिविनाशिनी ॥
एतत्कज्जलिका विधानं रसप्रदीपे प्रोक्तम् ॥

शुद्ध पारद और शुद्ध आमलासार गन्धक को खरल में डालकर इतना घोटें कि पारद अदृश्य हो जाय और दोनों चीज़ें मिलकर कज्जल के समान हो जाय । इसका नाम "कज्जली" है ।

यह (कज्जली) बृंहणी, वीर्य वर्द्धनी और अनुपान भेदसे समस्त रोगों का नाश करनेवाली है।

[९३७] कज्जल्याः प्रकारान्तरम् (२)

(र. रा. सुं. । ज्व.)

कंटकारी सिन्धुवारस्तथा पूतिकरञ्जकम् ।
एतेषां रसमादाय कृत्वा खर्परखण्डके ॥
प्रक्षेप्यं गन्धकं तत्र तां च मृद्वग्निना दहेत् ।
गन्धके स्नेहतापन्ने तत्समं पारदं क्षिपेत् ॥
मिश्रीकृत्य ततो द्वाभ्यां द्रुतं तमवतारयेत् ।
आमर्दयेत्तथा तत्तु यथा स्यात्कज्जलप्रभम् ॥

१ औषधियोंका कल्क बनाकर उसका रस नाक में निचोड़नेका नाम "अवपीडन" है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततस्तु रक्तिकामस्य माषकं जीरकस्य च।
माषैकं लवणस्यापि पर्णे कृत्वा निधापयेत्॥
ज्वरे त्रिदोषजे घोरे जलमुष्णं पिबेदनु।
छर्द्यां शर्करया दद्यात्सामे दद्यात्तथा गुडम्॥
क्षये छागभवं क्षीरं प्रदद्यादनुपानकम्।
रक्तातिसारे कुटजमूलवल्कलजं रसम्॥
रक्तवान्तौ तथा दद्यादुदुम्बरभवं जलं।
सर्वव्याधिहरश्चायं गन्धकः कज्जलीकृतः॥
आयुर्वृद्धिकरश्चैव मृतं चापि प्रबोधयेत्॥

कटेली, संभालू और नाटाकरंजवे के रसको एक ठीकरे में डालकर उसमें गन्धक का चूर्ण डालकर मंदाग्नि पर रक्खें। जब गन्धक पिगल जाय तो उसमें समान भाग पारद डाल कर उसे जल्दीसे मिलाकर नीचे उतार लें और (खरलमें डालकर) खूब घोटें; यहां तक कि घुटते २ कज्जल के समान स्याह हो जाय।

सेवन विधि—सन्निपात ज्वर में—१ रत्ती यह कज्जली और १ माशा जीरे का चूर्ण तथा १ माशा सेंधानमक मिलाकर पान में रखकर खिलावें और ऊपर से गरम पानी पिलावें। वमन में—चीनी (खांड) के साथ, आमदोष में गुड़ के साथ, क्षय में बकरी के दूध के साथ, रक्तातिसार में कुड़े की जड़ की छाल के रसके साथ और खून की उल्टी में गूलर के रस के साथ देना चाहिये।

यह कज्जली सर्व व्याधिनाशक, आयुवर्द्धक और आसन्नमृत्यु मनुष्य को भी जीवनदान देने वाली है।

[९३८] कज्जली (३)(वृ. नि. र.। अण्डवृद्धि)

गोमूत्रैरण्डतैलाभ्यां रसगंधककज्जली।
पीत्वा निहंति सहसा वृद्धिं वृषणसंभवाम्॥

शुद्ध पारे और शुद्ध गन्धक की कज्जली को गोमूत्र और अरण्ड के तेल के साथ पीनेसे अण्डवृद्धि का अत्यन्त शीघ्र नाश होता है।

[९३९] कटुकाद्यं लौहम् (र. र.। शोथ.)

कटुका त्र्यूषणं दन्ती विडंगं त्रिफला तथा।
चित्रको देवदारुश्च त्रिवृद्दारुणपिप्पली॥
चूर्णान्येतानि तुल्यानि द्विगुणं स्यादयोरजः।
क्षीरेण तुल्यमेतच्च श्रेष्ठं श्वयथुनाशनम्॥

कुटकी, त्रिकुटा, दन्ती, बायबिड़ंग, त्रिफला, चीता, देवदारु, निसोत और गजपीपल। प्रत्येक का चूर्ण १-१ भाग और लोह चूर्ण सबसे दोगुना लेकर एकत्र मिलाकर दूध के साथ सेवन करने से शोथ (सूजन) रोग नष्ट होता है।

[९४०] कनककन्दर्प रसः (र. र.। वाजी.)

पूर्वसिद्धे रसे क्षिप्त्वा रसपादेन काञ्चनम्।
विमर्द्यापि विधानेन सुपिष्टञ्च विनिक्षिपेत्॥
कान्तवैक्रान्तयोरेवं क्षिप्ते तत्र विधानतः।
मधुरत्रयसंयुक्तं माषमात्रं दिने दिने॥
लीढ्वानुपानं पातव्यं मन्दतप्तं गवां पयः।
त्रिसप्तदिवसैःक्षीणो भवेदक्षीणधातुकः॥
उर्द्धलिंगःसदातिष्ठेद्द्रावयेद्वनिताशतम्॥

पूर्वोक्त (हेमांग सुंदर) रसमें यदि पारे का

---

१ शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, सोनेका भस्म और लोहभस्म बराबर २ लेकर तांबेके खरलमें कज्जली बनावें फिर उसे सरसों और काले धतूरे के स्वरसमें ३-३ दिन तक खरल करें। इसके पश्चात् ३ दिन तक सरसों के तेल में घोटकर धूपमें सुखावें फिर उसे यथा विधि बालुका यन्त्र में उस समय तक पकावें जब तक कि बालु गरम न हो जाय। इसके पश्चात् उसे स्वांगशीतल हो जाने पर निकाल कर रोग और रोगी की शारीरिक अवस्थानुसार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चौथा भाग स्वर्ण भस्म तथा कान्त लोह और वैक्रान्त भस्म मिलाली जाय तो उसका नाम "कनक कन्दर्प रस" हो जाता है।

इसे १ माशे की मात्रानुसार मिश्री, शहद और घीमें मिलाकर अल्प गरम गोदुग्ध के साथ २१ दिन तक सेवन करने से धातुक्षीणता दूर होकर अत्यन्त काम वृद्धि होती है। व्यवहारिक मात्रा १ रत्ती।

[९४१] कनकसंकोचरसः (र. र.। कुष्ठे)

मृतस्वर्णाभ्रकं शुण्ठीं शुद्धसूतं त्रिभिःसमम्।
अम्लैर्मर्दयन्तु तद्गोलं पिष्ट्वा तुल्यं च गन्धकम्॥
कटुतैलयुतं पाच्यं लौहे च मृदुनाग्निना।
द्रवैजीर्णे विचूर्ण्याथ वह्निमूलकटुत्रिकैः॥
त्वग्विडङ्गविषैस्तुल्यैः त्रिगुणं त्रिफलाविषात्।
अजामूत्रे दिनं पिष्ट्वा गुञ्जकां भक्षयेद्वटीम्॥
निष्कैकं बाकुचीतैलं पिबेद्विस्फोटकुष्ठजित्।
रसःकनकसंकोचोद्विगुंजं योजयेत्क्रमात्॥

सोनेकी भस्म, अभ्रकभस्म और सोंठ प्रत्येक १–१ भाग, शुद्ध पारा ३ भाग एवं शुद्ध गन्धक ६ भाग लेकर कांजीमें घोटकर गोला बनावें और फिर उसे कड़वे तेलमें लोहेके पात्रमें मन्दाग्नि पर पकावें। जब जलांश बिलकुल सूख जाय तो उस का चूर्ण करके उसमें चीतेकी जड़, त्रिकुटा, दालचीनी, बायविड़ंग और शुद्ध मीठा तेलिया १–१ भाग और त्रिफला ३ भाग, इनका चूर्ण मिलाकर १ दिन तक बकरीके मूत्रमें घोटकर १-१ रत्तीकी गोलियां बनावें।

इसे १ रत्तीकी मात्रानुसार १ निष्क (२–३ रत्ती) बावचीके तेलके साथ सेवन करनेसे विस्फोटक और कुष्ठका नाश होता है।

इसकी मात्रा क्रमशः बढ़ा कर २ रत्ती तक की जा सकती है।

[९४२] कनकसिंदूररसः

(वृ. नि. र.। क्षय.)

रसः कनकमाक्षिकः (१) कनकमाक्षिकस्तालकः
शिलारसकगंधका रससमाः सतुत्था इमे।
विमर्द्य पयसा रवेः सकलमेतदस्योपरि
द्रवैः प्रतिदिनं पृथक् तदिति भावयेद् बुद्धिमान्
जयामुनिकलिप्रियादहनभृङ्गवासोद्भवै-
र्विभाव्य च रसस्ततः सुदृढगोलकं स्वेदयेत्।
मृगांकवदथार्द्रकद्रवभरेण तं सप्तधा
विमर्द्य च कटुत्रयांबुभिरयं क्षयस्यांतकृत्॥
रसः कनकसिंदूरो भवतिसन्निपातेप्ययं
सदार्द्रकरसैस्तथा पवनगुल्मशूलादिहृत्।
सविश्वघृतयोजितः सकलमत्र पथ्यं हितं
मृगांकवदथापरं किमपि नैव योज्यं क्वचित्॥

शुद्ध पारा, स्वर्ण भस्म, सोनामक्खी भस्म, शुद्ध हरताल, शुद्ध मनसिल, खपरिया भस्म, गन्धक और शुद्ध नीला थोथा; बराबर २ लेकर कज्जली करके आकके दूध, अरनी, अगस्ति, बहेड़ा, चीता, भांगरा और बांसेके रसकी एक एक भावना दें। फिर उसका गोला बनाकर "मृगांक रस"की विधिसे पकावें फिर अदरक और सोंठ, कालीमिर्च और पीपलके रसकी ७–७ भावना दें। यह रस क्षयका नाश करता है। इसे अद्रकके रसके साथ देनेसे सन्निपात सोंठके चूर्ण तथा घृतके साथ देनेसे वातज गुल्म और शूलादि नष्ट होते हैं। इसके सेवनमें

---

१ रत्ती, आधा माशा या १ माशे की मात्रा में सेवन करावें। इसका नाम "हेमांग सुंदर रस" है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समस्त आहार विहारादि "मृगांक रस" में कथित आहार विहारके समान करने चाहियें।

[९४३] कनकसुन्दरो रसः (१)

(रसे. सा. सं. । ज्वराति.)

हिंगुलं मरिचं गन्धं टङ्कणं पिप्पली विषम् ।
कनकस्य च बीजानि समांशं विजयाद्रवैः ॥
मर्दयेद्याममात्रन्तु चणमात्रा वटी कृता ।
भक्षणाद्ग्रहणीं हन्ति रसः कनकसुन्दरः ॥
अग्निमान्द्यं ज्वरं तीव्रमतिसारश्च नाशयेत् ॥

शुद्ध शिंगरफ, काली मिर्च, शुद्ध गन्धक, सुहागेकी खील, पीपल, शुद्ध मीठा तेलिया और धतूरेके बीज, बराबर २ लेकर चूर्ण करके १ पहर तक भांगके रसमें घोटकर चने के बराबर गोलियां बनावें।

इसको सेवन करनेसे संग्रहणी, अग्निमांद्य,ज्वर और प्रबल अतिसारका नाश होता है।

[९४४] कनकसुन्दरो रसः (२)

(वृ. नि. र. । ज्वरे)

कनकस्याष्टशाणाःस्युःसूतो द्वादशभिर्मतः ।
गन्धोपि द्वादशप्रोक्तस्ताम्रशाणद्वयोन्मितम् ॥
अभ्रकस्य चतुःशाण माक्षिकं च द्विशाणकम् ।
वङ्गो द्विशाणःसौवीरं त्रिशाणं लोहमष्टकम् ॥
विषं त्रिशाणिकं कुर्याल्लांगलीपलसंमिता ।
मर्दयेद्दिनमेकं च रसैम्लफलोद्भवैः ॥
दद्यान्मृदुपुटे वह्नौ ततःसूक्ष्मं विचूर्णयेत् ।
माषमात्रो रसो देयःसन्निपाते सुदारुणे ॥
आर्द्रकस्वरसेनैव रसोनस्य रसेन वा ।
किलासं सर्वकुष्ठानि विसर्पं च भगंदरम् ॥
ज्वरं गरमजीर्णं च जयेद्रोगहरो रसः ।

धतूरेके बीज २॥ तोला, शुद्ध पारा ३॥ तोला, शुद्ध गन्धक ३॥ तोला, ताम्र भस्म ६० रत्ती, अभ्रक भस्म १। तोला, सोनामक्खी भस्म ६० रत्ती, बंग भस्म ६० रत्ती, सुरमा ९० रत्ती, लोह भस्म २॥ तोला, शुद्ध मीठातेलिया ९० रत्ती और कलिहारी ५ तोला।

सबको १ दिन नींबूके रसमें घोटकर लघुपुट देकर चूर्ण करें।

इसे १ मासेकी मात्रानुसार अद्रक या ल्हसन के रस के साथ सेवन कराने से घोर सन्निपात, किलास, सब प्रकारके कुष्ठ, विसर्प, भगन्दर,ज्वर, विषदोष और अजीर्ण आदि रोगोंका नाश होता है व्यवहारिक मात्रा-२ रत्ती।

[९४५] कनकसुन्दरो रसः (३)

(रसे. सा. सं. । यक्ष्मा.)

रसस्य तुर्यभागेन हेमभस्म प्रयोजयेत् ।
मनःशिला गन्धकश्च तुत्थं माक्षिकतालकम् ॥
विषं टङ्कणकं सर्वं रसतुल्यं प्रदापयेत् ।
मर्दयेत्सर्वमेकत्र खल्लपात्रे च निर्म्मले ॥
जयन्तीभृंगराजोत्थैः पाठाया वासकस्य च ।
अगस्तिलांगलाग्नीनां स्वरसैश्च पृथक् पृथक् ॥
भावयित्वा विशोष्याथ पुनश्चार्द्रकवारिणा ।
सप्तधा भावयित्वा च रसः कनकसुन्दरः ॥
गुञ्जाद्वयं त्रयं वास्य राजयक्ष्मप्रशान्तये ।
मधुना पिप्पलीभिर्वा मरिचैर्वा घृतान्वितम् ॥
सन्निपाते प्रदातव्यमार्द्रकस्य रसेन वै ।
जयपालरजोभिर्वा गुल्मिने शूलरोगिणे ॥
अम्लवर्ज्यं चरेत्पथ्यं बल्यं हृद्यं रसायनम् ।
वर्ज्जयेल्लवणं हिंगु तक्रं दधि विदाहि यत् ॥

सोना भस्म १ भाग, शुद्ध पारा, शुद्ध मनसिल, शुद्ध गन्धक, तूतिया, सोनामक्खी भस्म,शुद्ध

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरताल, शुद्ध मीठा तेलिया और सुहागेकी खील ४-४ भाग लेकर चूर्ण करके स्वच्छ खरल में जयन्ती, भांगरा, पाठा, बांसा, अगस्ति, कलिहारी और चीतेके रसकी १-१ भावना दें। फिर सुखाकर अद्रकके रसकी ७ भावना देकर रक्खें।

इसे २-३ रत्तीकी मात्रानुसार शहद और पीपल या कालीमिर्च तथा घीके साथ सेवन कराने से राजयक्ष्माका नाश होता है।

सन्निपातमें अद्रकके रसके साथ और गुल्म अथवा शूल रोगमें जमाल गोटे के चूर्णके साथ सेवन करना चाहिये।

पथ्य—बल्य, हृद्य और रसायन पदार्थ।

परहेज़—खटाई, नमक, हींग, छाछ और विदाही पदार्थ।

[९४६] कनकसुन्दरो रसः (४)

(र. र. स.। अ. १५; र. प्र. सु; अ. ८)

स्याद्रसं धौतमाक्षीकं कांताभ्रं नागहाटकम्।
पृथ्वीभटेन संतुल्यं सर्वतुल्यं च गंधकम् ॥
दत्वा विद्याधरे यंत्रे पुटेदारण्यकोत्पलैः।
स्वाङ्गशीतलमुद्धृत्य त्र्यूषणेन विमिश्रयेत् ॥
अर्शोव्याधौ कटीशूले चक्षुःशूले च दारुणे।
सन्निपाते क्षये कासे श्वासे मंदानले ज्वरे ॥
कर्णशूले शिरःशूले दंतशूले प्रयोजयेत्।
पीनसे प्लीह्नि हृच्छूले ग्रंथिवाते च दारुणे ॥
एकांगे वा धनुर्वाते कंपवाते च मूर्छिते।
ज्वरांश्च विषमान्सर्वान्हंति रोगाननेकधा ॥
सेवितः पथ्ययोगेन रसः कनकसुंदरः।
गुञ्जामात्रं ददीतास्य यथा युक्तानुपानतः ॥
घृतेन संयुतो वाते मधुना पैत्तिके ज्वरे।
पिप्पल्या श्लैष्मिके देयं पित्तोद्भूते च चंदनम् ॥
तक्रेण श्लेष्मवातोत्थे वातपित्त घृतान्वितम्।
श्लेष्मपित्ते चार्द्रकेण निर्गुण्ड्या सान्निपातिके ॥
फलत्रयेण शूलेषु विषमेषु ज्वरेष्वपि।
आर्द्रकेणाथ वा दद्याद्वह्निमांद्ये विशेषतः ॥
अभिष्यंदे शिरःशूले गायत्री बोल संयुतम्।
एकांगे च धनुर्वाते क्षीरयुक्तं च पीनसे ॥
पांडुरोगे क्षये कासे मरिचाज्येश्च कामले।
अजमोदाविडंगैश्च नाभिशूलेऽग्निमांद्यके ॥
रूक्षज्वरेऽरुचौ देयःकदलीफल संयुतः।
बोलेनाऽर्धकटीशूले भाषितं नागबोधिना ॥×

शुद्ध पारा, रूपामक्खी भस्म, कांतिसारलोह भस्म, अभ्रकभस्म, सीसाभस्म, स्वर्णभस्म और पृथ्वीभट प्रत्येक वस्तु समान भाग तथा शुद्ध गन्धक सबके बराबर। सबको घोटकर विद्याधर यन्त्र द्वारा अरने उपलों में पुट दें, फिर स्वांग शीतल होने पर निकाल कर उसमें समान भाग त्रिकुटेका चूर्ण मिलावें।

यह बवासीर, कमर की पीड़ा, नेत्र पीड़ा, सन्निपात, क्षय, खांसी, श्वास, मन्दाग्नि, ज्वर, कर्णशूल, शिरशूल, दन्तपीड़ा, पीनस, तिल्ली, हृदय की पीड़ा, ग्रन्थिवात, एकांगवात (अधरंग) धनुर्वात, कंपवात, मूर्च्छा, सब प्रकारके विषम ज्वर तथा अन्य अनेक रोगों का नाश करता है।

इसे १ रत्ती की मात्रानुसार यथोचित अनुपान के साथ सेवन कराना चाहिए एवं पथ्य पालन कराना चाहिये।

× स्वर्णभस्म ८ माशा, सूत १२ निष्क, लोहभस्म ८ निष्क, नागभस्म २ तोला, विष तथा गन्धकका अभाव है-र. प्र. सु.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस रस को वातज्वर में घृत के साथ, पित्तज्वर में शहद या चन्दन के साथ, कफ ज्वर में पीपल के चूर्णके साथ, कफवात ज्वर में छाछ के साथ, वातपित ज्वर में घृत के साथ, कफ पित्त ज्वर में अदरक के रसके साथ, सन्निपात में संभालु के रस के साथ, शूल और विषमज्वर में त्रिफला के साथ, मन्दाग्नि में अदरक के रस के साथ, अभिष्यन्द (आंखों का दुखने आना) और शिर शूल में खैरसार और बोल (मुरमुकी) के साथ, एकांग, (पक्षाघात) धनुर्वात और पीनस में दूध के साथ, पांडु, क्षय, खांसी और कामला में कालीमिर्च के चूर्ण और घी के साथ, नाभिशूल और अग्निमांध में अजमोद तथा बायबिडंग के चूर्ण के साथ, रूक्ष ज्वर और अरुचि में केले की फली के साथ तथा कमर के आधे भाग में शूल हो तो बोल के साथ सेवन कराना चाहिए।

[९४७] कनकसुंदरो रसः (९)

(र. र. स. । अ. र.)

समतुलकनकोत्थव्योमसत्वोत्थपिष्टीं ।
द्विगुणबलिसमेतां गोलमध्ये विपाच्य ॥
त्रिकटुदहनवेल्लैर्वत्सनाभभागार्धभागैः ।
रससमनवशृंगीदारुयुक्तः समस्तैः ॥
अजसलिलविपिष्टैर्गुंजया तुल्यगोलः ।
कुपितकफसमुत्थं हंति कुष्ठं गरिष्ठम् ॥
तदपरमथ वातश्लेष्मजत्वग्विकारम् ।
गुदगदमपि सर्वं वह्निमांद्यं सुनिग्रम् ॥
तुष्टेन शंभुना दिष्टः रसोऽयं कनकसुंदरः ।
त्वग्विकारविनाशाय कुबेराय महात्मने ॥

सोने की भस्म और अभ्रक सत्व १–१ भाग तथा शुद्ध गन्धक ४ भाग लेकर खरल करके गोला बनाकर पुटपाक करे। फिर उसमें त्रिकुटा, चीता, बायविड़ंग और शुद्ध मीठे तेलिये का चूर्ण आधा आधा भाग और नवीन काकड़ा सींगी तथा देवदारु उपरोक्त रस के बराबर मिलाकर बकरी के मूत्र में घोटकर १–१ रत्ती की गोलियां बनावें।

इनके सेवन से कफ के कोप से उत्पन्न हुआ भयंकर कुष्ठ, वातज तथा कफज त्वग्विकार, गुदरोग (बवासीर आदि) और अग्निमांद्य का नाश होता है।

[९४८] कन्दर्परसः (भै. र, । औष. मे.)

रसं गन्धं प्रवालञ्च काञ्चनं गिरिमृत्तिका ।
वैक्रान्तं रजतं शङ्खं मौक्तिकञ्च समं समम् ॥
न्यग्रोधस्य कषायेण भावयित्वा च सप्तधा ।
वल्लोन्मानां वटीं कृत्वा त्रिफलाक्वाथवारिणा ॥
सुरप्रियस्यार्जुनस्य क्वाथेनाम्भसापि वा ।
औपसर्गिकमेहस्य शान्त्यर्थं विनियोजयेत् ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, मूंगाभस्म, सोनाभस्म, गेरू, वैक्रान्तभस्म, चांदी भस्म, शंख भस्म और मोती भस्म बराबर बराबर लेकर बड़ (बरगद) के क्वाथ की सात भावना देकर १–१ बल्ल (२–३ रत्ती) की गोलियां बनावें।

इन्हे औपसर्गिकमेह (सूजाक) की शांति के लिए त्रिफला, देवदारु, अर्जुन या कीकर के क्वाथ के साथ सेवन कराना चाहिए।

[९४९] कन्दर्पसुंदरो रसः

(र. रा. सु. ।रसा. र. प्र. सु.)

सूतं वज्रमहिमुक्ता तारं हेमसिताभ्रकम् ।
रसैःकार्पासकानेतान् मर्दयेदरिमेदजैः ॥
प्रवालं चूर्णगन्धस्य द्वि द्वि कर्षो विमिश्रयेत् ।
प्रवालं चूर्णगन्धस्य विमर्द्य मृगशृंगके ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षिप्त्वा मृदुपुटे पक्त्वा भावयेद्धातकीरसैः।
काकोलीमधूकं मांसी बलात्रयविपंगुदम् ॥
द्राक्षा पिप्पलि वंदाकं वरी पर्णीचतुष्टयम्।
परूषकं कसेरुश्च मधुकं वानरी तथा ॥
भावयित्वा रसैरेषां शोषयित्वा विचूर्णयेत्।
एलात्वक् पत्रकं मांसी लवंगागरु केशरम् ॥
मुस्तं मृगमदं कृष्णा जलं चन्द्रश्च मिश्रयेत्।
एतच्चूर्णैःशाणमितैःरसं कन्दर्पसुन्दरम् ॥
खादेच्छाणमितं रात्रौ सिताधात्रीविदारिका।
एतेषां कर्षचूर्णेन सर्पिष्कर्षेण सम्मितम् ॥
तस्यानु द्विपलं क्षीरं पिबेत्सुखितमानसः।
रमणीरमयेद्वह्वीर्न हानिं क्वापि गच्छति ॥

शुद्ध पारा, हीरेकी भस्म, सीसेकी भस्म, मोती भस्म, चांदी भस्म, सोने की भस्म, मिश्री और अभ्रक भस्म। सब समान भाग लेकर कपास और बिट् खदिर (खैर भेद) के रस में घोटे। फिर इसमें मूंगा और शुद्ध गन्धक का चूर्ण २॥–२॥ तोला मिलाकर खरल करके हरिन के सींग में भर कर उसका मुंह बन्द करके लघु पुट में फूंकें, फिर उसे निकाल कर धायके फूल, काकोली, महुआ, जटामांसी, खरैटी, कंधी, गंगेरन, शुद्ध मीठातेलिया, इंगुदी (हिंगोट), दाख, पीपल, बन्दा, शतावर, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, फालसा, कसेरू, मुलैठी और कौंच के बीजों के रस या क्वाथ की भावना देकर सुखाकर चूर्ण करें। इसके पश्चाद इसमें निम्न लिखित औषधियों का चूर्ण मिलावें।

इलायची, दालचीनी, तेजपात, जटामांसी, लौंग, अगर, केसर, नागरमोथा, कस्तूरी, पीपल, सुगन्धबाला और कपूर प्रत्येक का चूर्ण ४-४ माशे।

इसे ४ माशे की मात्रानुसार रात्री के समय मिश्री, आमला और विदारीकन्द के १। तोला चूर्ण तथा १। तोला घी में मिलाकर खाकर ऊपर से १० तोला दूध पिया जाय तो अत्यधिक कामवृद्धि होती है एवं अत्यन्त सम्भोग से भी कुछ हानि नहीं होती।

[९५०] कपर्दको रसः (र. र. । र. पि.)

मृतं वा मूर्छितं सूतं कार्पासपुष्पजैर्द्रवैः।
मर्दयेद्दिनमेकन्तु तेन पूर्य्या वराटिका ॥
निरुध्य चान्धमूषायां भाण्डे रुद्ध्वा पुटे पचेत्।
उद्धृत्य चूर्णयेच्छलक्ष्णं मरिचैर्द्विगुणैः सह ॥
गुञ्जैकैकं घृतैर्लेह्यं रक्तपित्तं नियच्छति।
कपर्दकरसोनामासाध्यं च साधयत्यलम् ॥
उदुम्बरफलं पक्वं घृतैःपाच्यं सितायुतम्।
भक्षयेन्मरिचैर्युक्तमनुस्याद्रक्तपित्तनुत ॥

रस सिंदूर को १ दिन पर्यंत कपास के फूलों के रस में घोटकर कौड़ियों के अन्दर भर दें और अन्धमूषा में बन्द करके उस मूषा को किसी बरतन के अन्दर बन्द करके पुट लगादें। फिर स्वांग शीतल होने पर निकाल कर दो गुनी काली मिर्चों के साथ मिलाकर खूब महीन खरल करें।

इसमें से १ रत्ती दवा घी के साथ खाकर उसके ऊपर गूलर के पक्के फलों को काली मिर्च और मिश्री के साथ घी में पकाकर खाने से दुस्साध्य रक्तपित्त का नाश होता है।

[९५१] कफकुंजरो रसः

(यो. चि. म. । अ. ३)

नागं पारदसंयुतं समरिचं सवत्सनागं शुभम्।
देवालीरसभावना मुनिमिता कच्छूरिकाकल्कयोः॥
देयं वल्लमितं महौषधरसैः सनागवल्लीदलैः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्लेष्मवातविकारजाठर परेस्यारसन्निपाते ज्वरे॥

सीसे की भस्म, शुद्ध पारा, कालीमिर्च और शुद्ध मीठा तेलिया समान भाग लेकर खरल करके, देवदाली, कौंच और अकरकरेके रस की ७-७ भावना दें।

इसे १ बल्ल (२-३ रत्ती) की मात्रानुसार अदरक के रस और पानके रसके साथ सेवन कराने से, कफज और वात रोग, उदर विकार तथा सन्निपातका नाश होता है।

[९५२] कफकुठाररसः

(र. रा. सुं। ज्व.)

पारदं गन्धकं व्योषं मृतताम्रं मृतायसम्।
कंटकारीफलद्रावैर्भाव्यं तद्यामयुग्मकम्॥
रोहिण्यास्तु रसेनैव धत्तूरस्वरसेन च।
गुंजाद्वयं पर्णखण्डैर्देयं श्लेष्मज्वरापहम्॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, त्रिकुटा, ताम्र भस्म और लोह भस्म, बराबर २ लेकर कटेली के फल के रस, कुटकी के रस तथा धतूरे के स्वरस में २-३ पहर तक घोटें।

इसे २ रत्ती की मात्रानुसार पान के साथ खिलाने से कफज ज्वर का नाश होता है।

[९५३] कफकुष्ठहरो रसः

(र. र. स.। अ. २०)

कनकाभ्रकसंकोचस्तैलगंधकपाचितः।
विषव्योषाब्दवेल्लत्वक्तुल्यस्त्रिगुणचित्रकः॥
गुंजामानोजमूत्रेण पिण्डितः श्लेष्मकुष्ठनुत्॥

सोना भस्म, अभ्रक भस्म, केसर (या फिटकरी), शुद्ध गन्धक, शुद्ध मीठातेलिया, त्रिकुटा, नागरमोथा, बायबिड़ंग और दारचीनी प्रत्येक १ भाग, चीता ३ भाग। सब का चूर्ण करके तेल में पकावें। इसे १ रत्ती की मात्रानुसार बकरी के मूत्र के साथ सेवन कराने से कफज कुष्ठ का नाश होता है।+

[९५४] कफकेतुः (भै. र.। ज्व.)

दग्धशङ्खं त्रिकटुकं टङ्कनं समभागिकम्।
विषञ्च पञ्चभिस्तुल्यमार्द्रतोयेन मर्दयेत्॥
वारत्रयं रक्तिकाञ्च वटीं कुर्य्याद्विचक्षणः।
प्रातःसायञ्च वटिकाद्वयमार्द्रकवारिणा॥
कफकेतुःकण्ठरोगं शिरोरोगञ्च नाशयेत्।
पीनसं कफसङ्घातं सन्निपातं सुदारुणम्॥

शंखकी भस्म, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल और सुहागेकी खील १-१ भाग और शुद्ध मीठा तेलिया ५ भाग लेकर खरल करके अदरक के रस की भावना देकर १-१ रत्ती की गोलियां बनावें।

प्रातः और सायंकाल २-२ गोली अदरक के रस के साथ सेवन करने से कंठरोग, शिरोरोग, पीनस, कफ और सन्निपातका नाश होता है।

+ एक गुजराती विद्वान निम्न प्रकार अर्थ करते हैं:-सोना भस्म १ तोला, अभ्रक भस्म १ तोला, पारद १ तोला लेकर तीनों को खूब घोटें जब पारद मिल जाए तो एक कढाही में तेल चुपडकर उसमें ६ तोला गन्धक डालें और अग्नि पर चढादें। जब गन्धक पिघल जाए तो उसमें उपरोक्त चीजों का चूर्ण और जरासा तेल डालकर थोड़ी देर पकावें फिर यथाविधि पर्पटी बनाकर बारीक चूर्ण करें और उसमें बछनाग, त्रिकुटा, नागरमोथा, बायबिडंग और दालचीनी सब बराबर २ लेकर चूर्ण करके पर्पटी के बराबर मिलावें तथा चीतामूल का चूर्ण २७ तोला मिलाकर बकरी के मूत्र में घोटकर १-१ रत्ती की गोलियां बनावें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[९५५] **कफकेतुरसः** (१)

(र. रा. सुं। कास.)

आकल्लकं च सविषं समुद्रफलसंयुतम्।
प्रत्येकं समभागं च द्विगुणं मरिचं ततः॥
आर्द्रकस्य रसेनैव मर्दयित्वा प्रयत्नतः।
गुञ्जामात्रामिमां चैव वटीं कुर्य्याद्विचक्षणः॥
भुक्तेयं नाशयत्याशु कफरोगं न संशयः॥

अकरकरा, शुद्ध मीठा तेलिया और समन्द-रफल १-१ भाग और कालीमिर्च २ भाग लेकर अदरकके रसमें घोटकर १-१ रत्ती की गोलियां बनावें। इन्हें सेवन करनेसे कफरोगोंका नाश होता है।

[९५६] **कफकेतुरसः** (२)

(र. रा. सुं। कासे)

भर्जितं टंकणं क्षारं पिप्पलीमरिचं तथा।
आकल्लकं विषं शुद्धं वराटीभस्म एव च॥
सर्वाणि समभागानि सूक्ष्मचूर्णं विधाय च।
द्विगुञ्जमात्रकं दद्यात् कफकेतुरयं रसः॥
कासश्वासौ शीतवातं नाशयेन्नात्र संशयः॥

सुहागे की खील, पीपल, कालीमिर्च, अकरकरा, शुद्ध मीठा तेलिया और कौड़ी की भस्म, बराबर २ लेकर महीन चूर्ण करें।

इसे २ रत्ती मात्रानुसार देने से खांसी, श्वास और शीतवायु का नाश होता है।

[९५७] **कफकेतुरसः** (३)

(र. रा. सुं. । कासे; र. का. छर्दि.)

रसबलिरवितालान् पौष्करं हिंगुसिन्धूद्भवम्।
कटुकीरजस्तत् सर्वमेकत्र पिष्टम्॥
घनरवसुरदालीतिक्तकोशातकीभिः।
तदनु च ननु भाव्या (?) कृष्णनिर्गुण्डिनीरैः॥
कफगदकुलकेतुः स्याद्रसो माषमात्रः।
समधुरिति निहन्ति प्रोत्कटं श्लेष्मरोगं॥
अनुभवति कषायौनिम्बजः पेयमस्मिन् (?)
पवनशमनमात्रं (?) पथ्यमुष्णाम्बुसेव्यम्॥

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, ताम्रभस्म, शुद्ध हरताल, पोखरमूल, हींग, सेंधानमक और कुटकी के चूर्ण को एकत्र करके चौलाई, देवदाली, कड़वी तोरी और नीले फूलवाले संभालू के रसकी भावना देकर उड़द के बराबर गोलियां बनावें।

इसे शहद के साथ खाकर ऊपर से नीमका क्वाथ पीनेसे प्रबल कफ का नाश होता है।

पथ्य—वायु न करने वाले पदार्थ और उष्ण जल।

[९५८] **कफकेतुरसः** (४)

(र. रा. सुं। कर्ण.)

व्योषमिञ्जलबीजं च शंखभस्मविषान्वितम्।
मरिचसदृशं खादेत् कफकेतुमहारसम्॥

त्रिकुटा, समुद्रफल, शंख भस्म और शुद्ध मीठा तेलिया, बराबर २ लेकर काली मिर्च के समान गोलियां बनावें।

इसके सेवन से कफज रोगों का नाश होता है।

[९५९] **कफकेतु रसः** (५)

(रसे. सा. सं. । कफरो.)

टंकणं मागधी शङ्खं वत्सनाभं समं समम्।
आर्द्रकस्य रसेनापि भावयेद्दिवसत्रयम्।
गुञ्जामात्रं प्रदातव्यमार्द्रकस्य रसेन वै।
पीनसं श्वासकासश्च गलरोगं गलग्रहम्॥
दन्तरोगं कर्णरोगं नेत्ररोगं सुदारुणम्।
सन्निपातं निहन्त्याशु कफकेतुरसोत्तमः॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुहागे की खील, पीपल, शंख भस्म और शुद्ध मीठा तेलिया बराबर २ लेकर ३ दिन तक अदरक के रसमें घोटें।

इसे १ रत्ती की मात्रानुसार अदरक के रस के साथ देनेसे पीनस, श्वास, खांसी, गलरोग, गलग्रह, दन्तरोग, कर्णरोग, नेत्ररोग और सन्निपात का नाश होता है।

[९६०] कफचिन्तामणि रसः

(रसे. सा. सं. । कफरो.)

हिंगुलेन्द्रयवं टंकं त्रैलोक्यबीजमेव च।
मरिचञ्च समं सर्वं त्रिभागं रससिन्दुरम्॥
आर्द्रकस्य रसेनैव मर्दयेद्यामामात्रकम्।
चणकाभा वटी कार्या सर्ववातप्रशान्तये॥
कफरोगं निहन्त्याशु भास्करस्तिमिरं यथा॥

शुद्ध शिंगरफ, इन्द्रजौ, सुहागेकी खील, भांग के बीज और कालीमिर्च, १-१ भाग, तथा रस-सिन्दूर ३ भाग लेकर १ पहर तक अदरक के रसमें घोटकर चनेके बराबर गोलियां बनावें।

इनके सेवन से समस्त वात रोग और कफ रोगों का नाश होता है।

[९६१] कमलाविलास रसः

(र. र. स. । अ. २६)

लोहाभ्रौ बलिसूतहाटकपविस्तुल्यं कुमारीरसे।
पक्वैरण्डदलैर्निबध्य सुदृढं सद्धान्यराशौ त्र्यहम्॥
क्षिप्त्वोद्धृत्यविचूर्णितंमधुवरोयुक्तंयथासात्म्यतः
कृष्णात्रेयविनिर्मितं गदजराविध्वंसि सौख्यप्रदम्
आज्ञासिद्धमिदं रसायनवरं सर्वप्रमेहप्रणुत्।
कासं पञ्चविधं तथैव तनुगं पाण्डु च हिक्काव्रणम्
श्लेष्माणं पवनं हलीमकगदं हन्याच्च मन्दानलम्
कण्डूकुष्ठविसर्पविद्रधिमुखापस्मारकाद्याञ्जयेत्॥
गोप्याद्गोप्यतरः सुखेन सुलभः
सर्वत्र सिद्धोऽस्त्ययम्।
वैद्यानां कमलाविलासकरसोऽत्यंतं यशस्कारकः॥

लोह भस्म, अभ्रक भस्म, शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारद, सोने की भस्म और हीरे की भस्म समान भाग लेकर घीकुमार के रसमें घोटकर गोला बनावें, फिर उसके ऊपर अरण्ड का पका पत्ता लपेट कर डोरे से मजबूत बांध दें और अनाज के ढेरमें दबा दें। फिर तीन दिन पश्चात् निकाल कर महीन चूर्ण करलें।

इसे यथोचित मात्रानुसार शहद और त्रिफले के क्वाथ के साथ सेवन करनेसे जरा (बुढ़ापा) और व्याधि का नाश होकर सुख प्राप्त होता है।

यह सब प्रकार के प्रमेह, पांच प्रकार की खांसी, पांडु, हिचकी, घाव, कफ, वायु, हलीमक, अग्निमांद्य, खुजली, कोढ़, विसर्प, विद्रधि, मुखरोग, अपस्मार (मिरगी) आदि अनेक रोगों का नाश करता है।

यह वैद्यों के लिए अत्यन्त यशकर और हर स्थान में आसानी से तैयार हो सकने वाला अत्यन्त गोपनीय रस है।

[९६२] कम्पवातारि रसः

(र. रा. सुं. । वा. व्या.)

मृतंसूतं मृतं ताम्रं मर्दयेत्कटुकीद्रवैः।
एकविंशतिवारं तच्छोष्यं पेष्यं पुनः पुनः॥
चणमात्रां वटीं खादेत्सर्वांगकंपवातहृत्॥

रस सिन्दूर और ताम्र भस्म, बराबर २ लेकर उन्हें कुटकी के रसकी २१ भावना देकर चने के बराबर गोलियां बनावें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इनके सेवन से सर्वांगगत कंपवायु (शरीर का कांपना) नष्ट होता है।

[९६३] कम्पवातहरो रसः

(र. रा. सुं; । वा. व्या.)

सूतकस्य पलान् पंच पलैकं ताम्रचूर्णकम् ।
जंबीराणां द्रवैःपिष्टं सूततुल्यं च गंधकम् ॥
नागवल्लीद्रवैःपिष्टं ताम्रपिष्टं प्रलेपयेत् ।
रुद्ध्वागजपुटे पाच्यंभूधरे यामपंचकम् ॥
आदाय चूर्णयेत्तुल्यैस्त्र्यूषणैःसममिश्रितम् ।
अर्द्धांगकंपवातार्त्तो भक्षयेत्तत् द्विगुंजकम् ॥

शुद्ध पारा २५ तोला, तांबे की भस्म ५ तोला और शुद्ध गन्धक २५ तोला लेकर कज्जली करके जंबीरी नीबू और पान के रसमें घोट कर उसे तांबे के पत्रों पर लेप करदें फिर शरावसंपुट करके गजपुट में भस्म करें। इसके पश्चात् उसे पांच पहर तक भूधरयन्त्र में पकावें फिर चूर्ण करके उसके बराबर त्रिकुटे का चूर्ण मिलावें।

इसे २ रत्ती की मात्रानुसार सेवन करने से अर्द्धांग वात (अधरंग) और कम्पवात का नाश होता है,

[९६४] कर्णरोगहरो रसः

(र. र. स. । अ. २३)

वज्रवैक्रांतविमलतुत्थनागविषान्वितैः ।
तुल्यपारदगंधाश्ममाक्षिकैः कज्जलीकृतः ॥
लशुनार्द्रकशिग्रूणामरण्या मूलकस्य च ।
पृथग्रसैः कदल्याश्च सप्तधा परिभावयेत् ॥
एवं सुपिष्ट्वा वल्लेन सेवितः कर्णरोगनुत् ॥

हीरे की भस्म, वैक्रान्त भस्म, विमल (रूपा मक्खी) भस्म, शुद्ध नीलाथोथा, सीसा भस्म, शुद्ध मीठातेलिया, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक और सोना-मक्खी भस्म बराबर २ लेकर प्रथम पारे और गंधक की कज्जली करें फिर अन्य सब चीज़ें मिला कर ल्हसन, अदरक, सहंजना, अरनी की जड़ और केलेके रसकी पृथक् ७-७ भावना देकर खूब घोटें।

इसे १ वल्ल (२-३) रत्ती) की मात्रानुसार सेवन करने से कर्णरोगों का नाश होता है।

[९६५] कर्पूर रसः (भै. र. । अति.)

हिंगुलमहिफेनश्च मुस्तकेन्द्रयवं तथा ।
जातिफलश्च कर्पूरं सर्वं संमर्द्य यत्नतः ॥
जलेन वटिका कार्या द्विगुञ्जा परिमाणतः ।
ज्वरातिसारिणे चैव तथातिसाररोगिणे ॥
ग्रहणीषट्प्रकारे च रक्तातिसार उल्बणे ।
अत्र केचिट्टंकणप्येकभागमिच्छति ॥

शुद्ध शिंगरफ, अफीम, नागरमोथा, इन्द्रजौ, जायफल और कपूर समान भाग लेकर खरल करके पानी के द्वारा २-२ रत्ती की गोलियां बनावें।

इनके सेवन से ज्वरातिसार, अतिसार, छः प्रकार की संग्रहणी और रक्तातिसारका नाश होता है।

नोट—इसमें कोई कोई १ भाग सुहागा भी डालते हैं।

[९६६] कर्पूराद्यो रसः

(र. रा. सुं. । प्रमे.)

कर्पूरभृंगीउन्मत्तबीजं जातीफलं तथा ।
मृताभ्रं मृतलोहश्च त्रपुनागरसं तथा ॥
एलापुन्नागधान्याकं विषं व्योषलवंगकम् ।
तालीसपत्रं पत्रं च जयाबीजं त्वचं तथा ॥
अकर्करं नागबला तुल्यांशेन समन्वितम् ।
चूर्णं कृत्वा सितातुल्यं दत्वा सेवेद्यथा बलम् ॥
श्वासं प्रमेहं च सरक्तपित्त-
प्रस्वेदवातंबहुसन्निपातम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वरक्षयश्चाशु जयेद्विचित्रम् ।
कर्पूरसंज्ञः कथितो रसोऽयम् ॥
(उन्मत्तबीजसंभूतं तैलं चात्रापि पूजितः)

कपूर, अतीस, धतूरे के बीज, जायफल, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, रांगभस्म, सीसा भस्म,* इलायची, नागकेसर, धनिया, शुद्ध मीठा तेलिया, त्रिकुटा, लौंग, तालीस पत्र, तेजपात, भांग के बीज, दालचीनी, अकरकरा और नागबला (गंगेरन) सब चीज़ें समान भाग लेकर चूर्ण बनावें । फिर इसमें इसके बराबर मिश्री मिलाकर रक्खें ।

इसे बलानुसार यथोचित मात्रा में सेवन करने से श्वास, प्रमेह, रक्तपित्त, पसीना, वायु, सन्निपात और स्वरक्षय का नाश होता है ।

नोट—इस प्रयोग में धतूरे के बीजों का तैल भी डाला जा सकता है ।

[९६७] कल्पतरु रसः

(भा. प्र. । ज्व; र. रा. सुं.)

शुद्धं शङ्करशुक्रमक्षतुलितं मारारिनारीरज-
स्तद्वत्तावदुमापतिस्फुटगलालङ्कारवस्तु स्मृतम् ।
तावत्येव मनःशिला च विमला तावत्तथा टङ्कणं
शुण्ठी द्व्यक्षमिता कणा च
मरिचं दिक्पालसंख्याक्षकम्
विषादिवस्तूनि शिलोपरिष्टा
द्विचूर्णये द्वासमि शोधयेच्च ।
ततस्तु खल्वे रसगन्धकौ च
चूर्णश्च तद्यामयुगं विमर्द्यम् ॥
कल्पतरुनामधेयो यथार्थनामा रसः श्रेष्ठः ।
समीरणश्लेष्मगदान्हरते मात्रास्य स्मृता गुञ्जैका ॥

आर्द्रकेण सममेष भक्षितो
हन्ति वातकफसम्भवं ज्वरम् ।
श्वासकासमुखप्रसेकशीतता-
वह्निमान्द्यविषुचींश्च नाशयेत् ॥
नस्येन स्वेन हरति शिरोर्ति कफवातजाम् ।
मोहं महान्तमपि च प्रलापं क्षवथुग्रहम् ॥

शुद्ध पारद १। तोला, शुद्ध गन्धक १। तोला, शुद्ध मीठातेलिया १। तोला, मनसिल १। तोला, विमल (रूपा मक्खी) भस्म १। तोला, सुहागे की खील १। तोला, सोंठ २॥ तोला, पीपल २॥ तोला, कालीमिर्च १२॥ तोला ।

प्रथम पारद और गन्धक के सिवाय सब चीज़ों को सिलपर पीसकर कपड़े से छान लें फिर खरल में यह चूर्ण और पारद तथा गन्धक डालकर २ पहर तक घोटें ।

यह वात और कफ के रोगों का नाश करता है इसे अदरक के रसके साथ सेवन करने से वात-कफज्वर, श्वास, खांसी, मुंहसे रतूबत आना, शीत, अग्निमांद्य और हैज़े का नाश होता है ।

इसकी नस्य से कफवातज, शिरपीड़ा, अत्यन्त मोह, प्रलाप और छींक बन्द होना दूर होता है ।

[९६८] कल्पतरु रसः (२)

(र. रा. । सु. कासे)

निष्कमात्रं विषं दद्यान्मरिचं चाष्टनिष्ककम् ।
पलार्द्धं करहाचूर्णं निष्कषट्कं कुलिञ्जनम् ॥
जातीफलं पलार्द्धञ्च जातीकेशरकं तथा ।
शोषणं कर्षमात्रन्तु चूर्णयेत्सर्वयत्नतः ॥
क्षौद्रेण च भक्तं स्यादिमं गुंजाचतुष्टयम् ।
कासं श्वासं क्षयं कुष्ठं ग्रहणीवह्निमान्द्यनुत् ॥
पुष्टिवीर्यबलोत्साहं भजते कामिनीशतम् ।
वातश्लेष्मभवान् रोगान् प्रमेहाश्चैक विंशतिः ॥

* रस शब्द से कोई नागरस" (सीसा) और कोई रससिन्दूर लेते हैं ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुपानविशेषेण निहन्ति विविधान् गदान् ।
रसःकल्पतरुर्नामा शंकरेण विनिर्मितः ॥

शुद्ध मीठा तेलिया ३ माशा, कालीमिर्च २ तोला, आकरकरा २॥ तोला, कुलिंजन १॥ तोला, जायफल २॥ तोला, जावित्री २॥ तोला और पीपल १। तोला लेकर विधिवत खरल करें।

इसे शहद के साथ ४ रत्ती की मात्रानुसार सेवन करने से खांसी, श्वास, क्षय, कुष्ठ, संग्रहणी, अग्निमांद्य, वातकफज रोग और बीस प्रकार के प्रमेहों का नाश होता है तथा पुष्टि, बल, वीर्य, उत्साह और कामशक्ति की वृद्धि होती है। यह अनुपान भेदसे अनेक रोगों का नाश करता है।

[९६९] कल्याणसुन्दराभ्रम्

(भै. र. । रा. य.)

वज्राभ्रमेकपलिकं पुटनैःसुजीर्णं
धात्रीपयोदबृहतीशतमूलकेक्षु ।
बिल्वाग्निमन्थजलवासककण्टकारी–
श्योनाकपाटलिबलाचरसैरमीषाम् ।
सम्मर्दितं पलमितैः पृथगेकशश्च
गुञ्जासमं सुबलितं वटिकाकृतञ्च ।
यक्ष्मक्षयौ सकलशोषबलासपित्तं
श्वासं समीरमरुचिं सकलाङ्गसादम् ॥
शोथं स्वरक्षयमजीर्णमुदर्दशूलं
मेहं ज्वरं विषमुरोग्रहपाण्डुहिक्काः ।
कार्श्यं कृमिं बलविनाशनमम्लपित्तं
प्लीहामयं सहहलीमकमस्रगुल्मम् ॥
तृष्णामवातनिचयं ग्रहणीं प्रदुष्टां
विस्फोटकुष्ठनयनास्यशिरोगदांश्च ।
मूर्च्छां वमिं विरसतां विनिहन्ति सद्यः
कल्याणसुन्दरमिदं सुवृष्यम् ॥
मेध्यं रसायनवरं सकलामयानां
नाशाय यक्ष्मनिवहे कथितं हरेण ॥

वज्राभ्रक की उत्तम भस्म ५ तोले लेकर उसे आमला, नागरमोथा, बड़ी कटेली, शतावर, ईख, बेल, अरनी, सुगन्धबाला, बासा, कटेली, सोनापाठा, पाढल और बला (खरैंटी) के ५–५ तोला रस में पृथक् २ घोटकर १–१ रत्ती की गोलियां बनावें।

इसके सेवन से यक्ष्मा, क्षय, सब प्रकार के शोष रोग, कफ, पित्त, अरुचि, बदन टूटना, शोथ, स्वरक्षय, अजीर्ण, उदर्द, शूल, प्रमेह, ज्वर, विष-विकार, उरोग्रह, पांडु, हिचकी, कृशता (दुबलापन), कृमि, अम्लपित्त, तिल्ली, हलीमक, रक्तगुल्म, तृष्णा, आमवात, दुष्ट संग्रहणी, विस्फोटक, कुष्ठ, आंखो के रोग, मुख रोग और शिरोरोग, मूर्छा, वमि और विरसता (ज़ायका खराब होना) आदि रोगों का नाश होता है। यह रस बलकारक, मेधावर्द्धक, वीर्यवर्द्धक और अत्युत्तम रसायन है।

[९७०] कल्याणसुन्दरो रसः

(भै. र. हृद्रोगे.)

सिन्दूरमभ्रं तारञ्च ताम्रं हेमं च हिङ्गुलम् ।
सर्वं खल्लतले क्षिप्त्वा मर्दयेद् वन्हिवारिणा ॥
हस्तिशुण्डयम्भसा पश्चाद्भावयित्वा च सप्तधा।
गुञ्जामात्रां वटीं कृत्वा कोष्णतोयेन दापयेत् ।
उरस्तोयञ्च हृद्रोगं वक्षोवातमुरोऽस्रकम् ।
फौफ्फुसान् हन्तिरोगांश्च रसःकल्याणसुन्दरः॥

रस सिन्दूर, अभ्रक भस्म, चांदी भस्म, ताम्र भस्म, सोना भस्म और शुद्ध सिंगरफ। सब चीज़ें समान भाग लेकर चीते के क्वाथ में घोटें फिर हाथीसुंडीके रस की सात भावना देकर १–१ रत्ती की गोलियां बनावें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इन्हें गरम पानी के साथ सेवन करनेसे उदरस्तोय (प्लुरिसी-फुफ्फुसावरणमें पानी भर जाना) हृद्रोग, छातीके वातज रोग, छाती से खून आना और फुस्फुस (फेफड़े) के रोगों का नाश होता है।

[९७१] कस्तूरीभैरवो रसः

(र. सा. सं. । ज्व.)

हिंगुलश्च विषं टंकं जातीकोषफलन्तथा ।
मरिचं पिप्पली चैव कस्तूरी च समं समम् ॥
रक्तिद्वयं ततः खादेत्सन्निपाते सुदारुणे ॥

शुद्ध शिंगरफ, शुद्ध मीठातेलिया, सुहागे की खील, जावित्री, जायफल, कालीमिर्च, पीपल और कस्तूरी बराबर २ लेकर २–२ रत्ती की गोलियां बनावें।

इनको सेवन करनेसे दारुण सन्निपात का नाश होता है।

[९७२] काञ्चनाभ्ररसः (र. र. । राजय.)

काञ्चनं रससिन्दूरं मौक्तिकं लौहमभ्रकम् ।
विद्रुममभयातारं कस्तूरी च मनःशिला ॥
प्रत्येकं बिन्दुमात्रं च सर्वं मर्द्यं प्रयत्नतः ।
वारिणा वटिका कार्या द्विगुंजाफलमानतः ॥
अनुपानं प्रयोक्तव्यं यथादोषानुसारतः ।
नानारोगप्रशमनं सर्वोपद्रवसंयुतम् ॥
क्षयं हंति तथा कासं श्लेष्मपित्तहरं तथा ।
प्रमेहान्विंशतिं चैव दोषत्रयसमुत्थितान् ॥
अशीति वातजान्रोगान्नाशयेत्सद्य एव हि ।
बलवृद्धिं वीर्य्यवृद्धिं लिंगजाड्यं करोति च ॥
रसोऽयं सुश्रुतप्रोक्तो वाजीकरणमुत्तमम् ।
काञ्चनस्य समा कान्तिर्मदनस्य समं वपुः ॥
भक्षयेत्प्रातरुत्थाय रसोऽयं कांचनाभ्रकम् ॥

सोनेकी भस्म, रससिन्दूर, मोती भस्म, लोह-भस्म, अभ्रक भस्म, मूंगा भस्म, हरीतकी, चांदी भस्म, कस्तूरी और शुद्ध मनसिल १।–१। तोला लेकर खरल करके पानी से २-२ रत्ती की गोलियां बनावें।

इन्हें दोषानुसार यथोचित अनुपान के साथ सेवन करने से अनेक उपद्रवयुक्त क्षय, खांसी, कफ, पित्त, बीस प्रकार के प्रमेह और अस्सी प्रकार के वातज रोगों का अत्यन्त शीघ्र नाश होता है, तथा बलवीर्य की वृद्धि होती और मेढ़ दृढ़ होता है। इसके सेवन से कांचन के समान कान्ति और कामदेव के समान कमनीय शरीर होता है। यह अत्यन्त वाजीकरण है। इसे प्रातः काल सेवन करना चाहिए।

[९७३] काञ्चायनरसः

(र. र. । र. खं. । २ उप.)

मृतसूतसमं गन्धं काकमाच्या द्रवैर्दिनम् ।
मर्दितं चान्धितं पच्यात्करीषाग्नौ दिवानिशम् ॥
दिव्यौषधदलद्रावर्दिनं मर्द्यं तमन्धयेत् ।
ध्मातं तस्मात्समुद्धृत्य तत्तुल्यं हाटकं मृतम् ॥
एकीकृत्य घृतैर्लेह्यं माषैकं वत्सरावधि ।
जरां मृत्युं निहन्त्याशु सत्यं काञ्चायनो रसः ॥
काकमाचीद्रवैर्भाव्यं चूर्णं धात्रीफलोद्भवम् ।
मधुना भक्षयेत्कर्षमनुस्यात्कामकं परम् ॥

रससिन्दूर और शुद्ध गन्धक बराबर बराबर लेकर १ दिन मकोय के रस में घोटकर अन्ध-मूषा में बन्द करके १ दिनरात जंगली उपलों की अग्नि में पकावें फिर उसे निकाल कर १ दिन दिव्यौषधि (सोमलता) के पत्तों के रसमें घोटकर सुखाकर अन्धमूषा में बन्द करके पुनः पकावे। इसके पश्चात् उसमें समान भाग सोनेकी भस्म मिलाकर खरल करें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसे १ माशे की मात्रानुसार घीके साथ १ वर्ष पर्यन्त सेवन करने से जरा (बुढ़ापा) और (अकाल) मृत्यु का नाश होता है।

(व्यवहारिक मात्रा १-२ रत्ती)

दवा खाने के पश्चात् मकोय के रसमें घोटा हुवा १ तोला आमले का चूर्ण शहद में मिलाकर चाटना चाहिये।

[९७४] कान्तरसायनम्

(र. र. स. । अ. २६)

कातं तुल्याभ्रसत्त्वं चरणपरिमितं हेम तत्तुल्यमर्कं
वैक्रांतं ताप्यरूपं कृमिहरकटुकैस्तुल्यभागैःसमेतम्।
लीढं देवद्रुतैलैर्विरचयति नृणां देहसिद्धिं समृद्धां
पथ्यं कल्पोक्तमुक्तं हरति च
सकलान् रोगपुंजाञ्जवेन ॥
तदेतत्सर्वरोगघ्नं रम्यं कांतरसायनम्।
सेव्यं वृष्यं सुपुत्रीयं मांगल्यं दीपनं परम् ॥

कान्तिसार लोह भस्म १ भाग, अभ्रक सत्व १ भाग, सोना भस्म, ताम्र भस्म, वैक्रान्त भस्म और सोनामक्खी भस्म प्रत्येक चौथाई भाग बायविडंग और कुटकी प्रत्येक १ भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे देवदारु के तेलके साथ देनेसे देहसिद्धि और समृद्धि प्राप्त होती है एवं अनेक रोगों का अत्यन्त शीघ्र नाश हो जाता है।

यह "कान्त रसायन" सर्वरोग नाशक अत्युत्तम, सेवन करने योग्य, वृष्य, पुत्रोत्पादन की शक्ति देने वाली, मंगलकारक और अग्निदीपक है।

[९७५] कान्तलोहरसायनम्

(र. चि. म. । ८ स्तबकः)

गोमूत्रभृतकुम्भेन पेषयेत् त्रिफलामणम्।
एकसप्ताहपर्यन्तं मर्दयेत्सुन्दरं शनैः ॥
रेतितं कान्तचूर्णस्य मणैकं सूक्ष्मचूर्णितम्।
त्रिफलामूत्रसंक्षुण्णं शरावेषु परिक्षिपेत् ॥
गर्ता हस्तप्रमाणस्य वनजैश्छाणकैर्भृता।
तत्र गर्भपुटं दत्त्वा ह्यग्निं प्रज्वालयेत्ततः ॥
स्वांगशीतलतां प्राप्तं चूर्णं संपेषयेत्पुनः।
क्षुण्णं तेनैव मूत्रेण शरावे च क्षिपेत्पुटेत् ॥
एकविंशतिवारांश्च देयो युक्त्यानया पुटः।
सूक्ष्मं चूर्णं मुहुः कार्यं मूत्रे क्षुण्णं पुटे पुटे।
वस्त्रमृत्तिकयोपेतं गर्तागर्भे क्षिपेन्मुहुः।
चूर्णं कान्तायसं जातं सिन्दूराभं पयस्तरम् ॥
गद्याणैकोऽस्य चूर्णस्य देयः सर्वेषु रोगिषु।
उचितं यच्च रोगाणामनुपानं च दीयते ॥
अष्टवल्लात्मकं सत्त्वं गुडूच्यास्तावती सिता।
शीतोदकेन वै देयो गद्याणः पाण्डुरोगिषु ॥
बलक्षीणेषु मेहेषु रक्तदोषे ज्वरेषु च।
नाशयत्येव रोगांश्च कान्तलोहरसायनम् ॥

१ मन त्रिफला को १ घड़ा गोमूत्र में धीरे धीरे सात दिन तक घोटें फिर उसमें १ मन कान्तिसार लोहे का बारीक बुरादा मिलाकर शराव संपुट करें। अब १ हाथ गहरे गढ़े में जंगली उपले भरकर मध्यमें शराव संपुट रखकर अग्नि लगा दें। फिर स्वांग शीतल होने पर निकाल कर उसी प्रकार गोमूत्र में घोटे हुवे त्रिफला के चूर्ण के साथ पुट दें। इसी प्रकार २१ पुट दें। हर बार शराव संपुट पर कपड़ मिट्टी कर लेनी चाहिए।

इस प्रकार २१ पुट देनेसे लोह चूर्ण सिन्दूर के समान लाल और दूध पर तैरने योग्य हो जायगा।

इसे १ गद्याण (६ माशे) की मात्रानुसार यथोचित अनुपान के साथ समस्त रोगों में देना चाहिए। पाण्डु में ३ माशा गिलोय के सत और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ माशा मिश्री के साथ मिलाकर ठंडे पानी के साथ देना चाहिए।

यह रसायन कमज़ोरी, प्रमेह, रक्तविकार और ज्वरादि का नाश करता है। (व्यवहारिक मात्रा १-२ रत्ती)

[९७६] कान्ताभ्रकम् (१)

(र. र. स. । अ. २६)

कान्ताभ्रकशिलाधातुविषसूतकमाक्षिकम् ।
लीलितं मधुसर्पिर्भ्यां व्याधिवार्द्धक्यमृत्युजित् ॥

कांतिसार लोह भस्म, अभ्रक भस्म, शिलाजीत, शुद्ध मीठा तेलिया, शुद्ध पारा और सोनामक्खी भस्म बराबर २ लेकर चूर्ण करके शहद और घीके साथ सेवन करने से व्याधि, बुढ़ापा और (अकाल) मृत्यु का नाश होता है।

[९७७] कान्ताभ्रकम् (२)

(र. र. स. । अ. २६)

सिद्धमभ्रं समं कान्तं मर्दयेदार्द्रवारिणा ।
कलांशं हेमचूर्णस्य बीजपूररसे पुनः ॥
मर्दयेत्खल्वमध्यस्थं यावत्सप्तदिनावधि ।
आटरूषरसेनैव तथा मुण्डीरसेन वा ॥
तालमूलीरसेनैव दशमूलीरसेन वा ।
तत्तद्रोगहरैः क्वाथैर्भावयेत्सप्तधा भिषक् ॥
त्रिफलाव्योषचूर्णं च मध्वाज्याभ्यां प्रयोजयेत् ।
पञ्चकर्मविशुद्धेन सेव्यमेतद्रसायनम् ॥
पाण्डुशोफोदरानाहग्रहणीशोषकासजित् ।
सततं सततं चैव पुराणां विषमं ज्वरम् ॥
निहन्यात्सर्वकुष्ठानि प्रमेहान्विंशतिं जयेत् ।
कान्ताभ्रकमिदं प्रोक्तं रसायनमनुत्तमम् ॥

अभ्रक भस्म और कान्त लोह भस्म १-१ भाग लेकर अदरक के रसमें घोटें फिर उसमें १६-वां भाग सोना मिलाकर बिजौरे नींबू के रसमें सात दिन तक घोटे, फिर बांसे के रस या मुण्डी के रस, तालमूली के या दशमूल के रस में एवं जिन रोगों में प्रयोग करना हो उन रोग को नाश करने वाली औषधियों के रसमें सात सात दिन तक घोटे।

प्रथम पञ्च कर्म के द्वारा देह की शुद्धि करके यह रसायन त्रिफला के चूर्ण तथा शहद और घीके साथ सेवन करने से पांडु, सूजन, उदररोग, अफारा, संग्रहणी, शोष, खांसी, संततज्वर, पुराना बुखार, विषमज्वर, सब प्रकारके कुष्ठ और बीस प्रकार के प्रमेहों का नाश होता है।

[९७८] कामदीपकरसः

(र. र. । वाजी.)

गंधकस्य तु तोलैकं कृत्वा वै तण्डुलाकृतिम् ।
दत्वा भृंगद्रवं रौद्रे भावयेद्दिनसप्तकम् ॥
तच्चूर्णे प्रक्षिपेत्तत्र प्रत्येकं माषकद्वयम् ।
जातीफलस्य कोषस्य तथा चंद्रलवंगयोः ॥
ततःसगुडकं कृत्वा तस्य गुंजाचतुष्टयम् ।
अभ्यर्च्य भास्करं प्रातर्भक्षयेत्प्रत्यहं ततः ॥
आर्द्रकं सैन्धवोपेतं मरिचस्य च सप्तकम् ।
तस्यानुचर्वणं कृत्वा पिबेत्क्षीरपलद्वयम् ॥
अनेनैव प्रयोगेण स्थविरोऽपि युवायते ॥

१ तोला गन्धक के बारीक २ चावल जैसे टुकड़े करके उन्हें सात दिन तक धूपमें भांगरे के रसकी भावना दे।

फिर उसमें जायफल, जावित्री, कपूर और लौंग का २-२ माशे चूर्ण मिलाकर गुड़में मिला कर ४-४ रत्ती की गोलियां बनावें।

प्रतिदिन प्रातः काल सूर्य की वन्दना के पश्चात् १ गोली खाकर थोड़ासा अदरक और सेंधानमक तथा ७ काली मिर्च चबाकर १० तोला दूध पियें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस प्रयोग से वृद्ध भी युवा के समान हो जाता है।

[९७९] कामवृतरसः

(र. र. । वाजी. । धन्व.)

सूतं गंधं कान्तभस्मापि तुल्यं
यामं नीरैःशाल्मलीसम्भवोत्थैः।
गोलं कृत्वा वेष्टयित्वान्धमूषे-
रादध्यंपक्त्वा काचकूप्यां निधाय॥
तोयं भूकूष्मांडं नागवल्ली च
पिष्ट्वा दद्याद्रात्रिमेकान्तयत्नात्।
सिद्धःसूतःकामदेवस्य वल्लं-
मध्वाज्याभ्यां योजयेत्तत्त्रिसप्तम्॥
खण्डं दुग्धं चानुपाने च दद्या-
द्रात्रौ दुग्धं शक्यमाने च देयम्।
पेयं तिक्तं रूक्षं वर्जयित्वाति
चाम्लनित्यं शाल्मली क्षीरयुक्तम्॥
खण्ड धात्रीवानरीमूलदुग्धं-
पुष्टिं वीर्यं जायते तत्प्रभूतम्।
कुर्यान्नित्यं रम्यकान्ताविनोदं-
कृत्वा दिव्यं कामदेवं रसेन्द्रम्॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और कान्तिसार लोह की भस्म बराबर२ लेकर (कज्जली करके) १ पहर तक सेंभल के रसमें घोटें। फिर उसका गोला बनाकर उसे अन्धमूषा में बन्द करके पुट लगावें। फिर उसे निकाल कर कांचकी शीशी में भरकर उसमें विदारीकन्द और पान का रस डालकर एक रात रहने दें।

इसे ३ रत्ती की मात्रानुसार शहद और घीमें मिलाकर २१ दिन तक सेवन करें और दवा खाने के बाद खांड युक्त दूध पियें तथा रात्री को भी यथाशक्ति दूध पिएं एवं तिक्त, रूक्ष और अधिक खट्टे पदार्थों से परहेज करें और रोज़ दूध के साथ सेंमलकी मूसली तथा खांड, आमला और कौंच के बीजों का सेवन करें।

इसके सेवन से वीर्य, बुद्धि और पुष्टि तथा कामशक्ति प्राप्त होती है।

[२८०] कामदेवरसः (१)

(र. चि. म. । ७ स्तवकः)

कामदेवमथो वक्ष्ये कामिनां कामदं परम्।
यस्य प्रभावतो रम्या रमन्ते रमणीः स्त्रियः॥
पारदं पलमेकं स्याद् द्विपलं शुद्धगंधकम्।
वटुफल्याश्च तोयेन विमर्द्य काचकूप्यके॥
निक्षिप्य टङ्कणं दत्त्वा मुखं तस्य निरुध्यते।
वालुकायन्त्रमध्ये तं कूपकं कुरुते दृढम्॥
वेदयामावधिं वह्निं शनैः कुर्यान्न चाधिकम्।
शीतमादाय तत्रस्थं रसं समुद्धरेत्ततः॥
दरदेन समं रक्तं सोज्ज्वलं भस्म जायते।
भव्यं तच्च नयेच्छ्रीमद्घृतेन मधुना समम्॥
पश्चात् दुग्धं शुभं भुक्तं कृष्णेक्षुश्चापि शर्करा।
द्राक्षाखर्जूरमधुकं प्रातः प्रातश्च भक्षयेत्॥
मनोभिरामरामाभी रमतेऽक्षीणसद्बलः।
निर्गुंडिकारसेनायं वातोत्थामतिवेदनाम्॥
वेगेन शमयत्येव नूतनं च वपुर्भवेत्।
अर्द्धशेषेण दुग्धेन भक्षितोऽयं महारसः॥
वंध्यानामपि जायंते पुत्रकाश्चिरजीविनः।
उद्यानचारी च भवेचन्द्रं चन्द्रमुखीं भजेत्॥
दिव्यकायो भवेदेव मानवश्चास्य सेवनात्॥

शुद्ध पारद ५ तोला, शुद्ध गन्धक १० तोला लेकर कज्जली करके सोना पाठा (या नागर मोथा) के रसमें घोट फिर उसे आतशीशीशीमें भर कर ऊपरसे सुहागा भर कर उसका मुंह बन्द कर दें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फिर उसे बालुकायन्त्र मे ४ पहर तक मंदाग्नि पर पकावें (अग्नितेज न होने पावे) जब स्वांग शीतल हो जाय तो शीशी में से औषधि को निकाल कर सुरक्षित रक्खे। इस का रंग शिंगरफ के समान लाल होगा।

इसे घी और शहद में मिलाकर दूध के साथ सेवन करना चाहिये एवं प्रातःकाल काली ईख, खांड, दाख, खजूर और मुल्हैठी खानी चाहिये।

इस के सेवन से अत्यन्त काम-वृद्धि होती है। संभालु के रस के साथ सेवन करने से वातज पीड़ा अत्यन्त शीघ्र शान्त होती है एवं शरीर नवीन हो जाता है। इसे अर्द्धशेष (पकाते पकाते आधा शेष रहा हुवा) दूध के साथ सेवन करने से वंध्या स्त्री को भी चिरञ्जीव पुत्रोत्पादन की शक्ति प्राप्त होती है।

इस के सेवन काल में उपवन, चन्द्रमा की चांदनी और कामनियों का उपभोग करना चाहिए।

[९८१] कामदेवः (२)

(र. रा. सुं.। वाजी. क.)

सूतो माषमितःस्वदोषरहितस्तत्तूर्यभागो बलि-
स्तन्मानन्तु भुजङ्गफेनमुदितं क्षुद्राफलस्याम्बुना।
एतद्गोलकमाकलय्य विपचेत्क्षुद्राफले हेमगे।
लावैरष्टमितैर्भवेदिति रसः श्रीकामदेवाभिधः॥
मात्रासूर्योदये चैका गुञ्जा यामचतुष्टये।
गुञ्जाचतुष्टयं देयं नागवल्लीदलान्वितम्॥
दुग्धौदनमलवणां रात्रौ क्षीरं यथेच्छया॥

शुद्ध पारद १ माषा, शुद्ध गन्धक चौथाई माषा और अफीम चौथाई माषा लेकर (कज्जली करके) कटेलीके फलोके रसमें घोटकर गोली बनाकर कटेली के फल में तथा धतूरे के फल में रखकर ८ कुक्कुट पुट दें।

इसे सूर्योदय के समय से प्रारम्भ करके १-१ पहरके अन्तर से १-१ रत्ती के हिसाब से दिन में ४ मात्रा पान के साथ सेवन करें।

पथ्य—दिन को लवण रहित दूध भात खावें और रात को इच्छानुसार दूध पियें।

[९८२] कामदेवरसः (३)

(र. र. स.। अ. २७)

हेमपादयुतः सूतो मर्दितः शाल्मलीरसैः।
कदलीकंदनिर्यासे क्षीरेक्षुरसगोघृते॥
माक्षिके चासकृत्स्विन्नः शाल्मलीक्षीरगोक्षुरैः।
शर्करामलकद्राक्षामुशलीमाषमाक्षिकैः॥
युक्तो रंभाफलं दत्त्वा कामदेव इति स्मृतः।
सेवनादूर्ध्वलिङ्गः स्याद् द्रावयेद्वनिताशतम्॥

सोनेकी भस्म (या वर्क) १ भाग, पारद (रससिंदुर) ४ भाग। दोनों को सेंभल के रस में घोटकर (गोला बना कर दोलायन्त्र विधि से) निम्न लिखित रसों में पृथक् पृथक् स्वेदन करें:-

(१) केली की जड़ का रस, (२) दूध, ईख का रस और गाय का घी तीनों समान मात्रामें मिले हुवे (३) शहद (४) सेंमल का रस, दूध और गोखरू का क्वाथ तीनों समान मात्रा में मिले हुवे।

उपरोक्त द्रव्यों में स्वेदन करने के पश्चात् पीस कर सुरक्षित रक्खें।

इसे खांड, आमला, दाख, मूसली और उड़द के चूर्ण तथा शहद के साथ खाकर ऊपर से केले की फली खाने से अत्यन्त कामशक्ति प्राप्त होती है।

[९८३] कामधेनुरसः (१)

(भै. र.। शुक्र, मे.)

सिन्दुरमभ्रं नागश्च कर्पूरहेममाक्षिकम्।
खर्परं रजतश्चापि मर्दयेत्कमलाम्भसा॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ततो गुञ्जामिताः कृत्वा वटयश्छायाप्रशोषिताः।
एकैकां दापयेदासां कसेरुस्वरसेन च ॥
प्रमेहान विंशतिं हन्ति शुक्रमेहं विशेषतः।
ज्वरं जीर्णञ्च यक्ष्माणं कामधेन्वभिधो रसः॥

रस सिंदूर, अभ्रक भस्म, सीसा भस्म, कपूर, सोनामक्खी भस्म, खपरिया भस्म और चांदी भस्म बराबर २ लेकर कमल के रस में खरल करके १-१ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखावें।

इसमेंसे प्रति दिन १-१ गोली कसेरु के स्वरस के साथ सेवन करने से बीस प्रकार के प्रमेह और विशेषतः शुक्रमेह, जीर्णज्वर और राजयक्ष्मा का नाश होता है।

[९८४] कामधेनुरसः (२)

(र. रा. सुं.। कुष्ठे)

शुद्धं सूतं द्विधा गन्धं लोहपात्रे क्षणं पचेत्।
शीतलं चूर्णयेत्खल्वे बद्ध्वा वस्त्रे चतुर्गुणे॥
आरनाले घटांतस्थं दोलायन्त्रे चतुर्गुणे।
पाचयेच्छोषयेत्पश्चाद्दशांशं वत्सनागकम्॥
क्षिप्त्वा सर्वं त्र्यहं भाव्यं तैले वाकुचिसंभवे।
कामधेनुरिति ख्यातो रसोयं मण्डलापहः॥
गुग्गुलुस्त्रिफला गन्धं सममेरण्डतैलकम्।
द्विनिष्कमनुपानं स्याद्रक्तमण्डलकुष्ठजित्॥

प्रथम शुद्ध गन्धक में उससे आधा शुद्ध पारद मिलाकर लोहे के पात्रमें गरम करें जब गन्धक पिघल जाय तो उसे ज़रा देर पकावें फिर ठंडा होने पर खरल में घोटकर कज्जली करें एवं उसे चार तह किए हुवे कपड़े में बांध कर चार गुनी कांजी में दोला यन्त्र की विधि से पकावें। फिर सुखाकर उसमें दसवां भाग शुद्ध मीठे तेलिये का चूर्ण मिलाकर ३ दिन तक बावची के तेलमें घोटें।

इसके सेवनसे रक्तविकार और मण्डल कुष्ठका नाश होता है।

अनुपान—गूगल, त्रिफला और गन्धकका चूर्ण तथा इन सबके बराबर अरण्डका तेल लेकर सब को मिलाकर ८ माशे लें।

[९८५] कामकलाख्यो रसः

(र. र.। वाजी; र. र; रसा.)

मृतसूताभ्रकं स्वर्णं वाजिगन्धामृतारसैः।
मुशलीकदलीकन्दद्रवैस्तं मर्दयेद्दिनम्॥
रुद्ध्वा लघ्वग्निना पाच्यंमद्यं पूर्वोक्तकैर्द्रवैः।
पुटन्देयं पुनर्मर्द्यमेवमष्टपुटैः पचेत्॥
शाल्मलीजातनिर्यासैश्चतुर्माषञ्च भक्षयेत्।
गोक्षी मर्कटीबीजं पलार्द्धं पाययेदनु॥
रसःकामकलाख्योऽयं रमते स्त्रीसहस्रधा।
सर्वाङ्गोद्वर्त्तनं कुर्यात्सयवैःशाल्मलीरसैः॥

रससिंदूर, अभ्रक भस्म और सोने की भस्म, समान भाग लेकर असगन्ध, गिलोय, मूसली और केलेकी जड़ के रसमें १-१ दिन घोटकर लघुपुटमें पकावें। फिर निकाल कर उपरोक्त चीज़ोंके रसमें घोटकर उसी प्रकार पुट दें। इस तरह ८ पुट दें।

इसे ४ माशे मोचरसमें मिला कर कौंच के बीजों के चूर्ण और २॥ तोला गायके दूधके साथ सेवन करनेसे अत्यन्त कामशक्ति बढ़ती है।

इस प्रयोग के साथ सेंभल के रस में जौ का चूर्ण मिलाकर समस्त शरीर पर उसकी मालिश करनी चाहिये।

[९८६] कामाग्निसन्दीपनः

(भै. र.। ध्व. भं.)

पलपरिमितशुद्धं सूतकं गन्धतुल्यं
दरदकुनटितुल्यं भावितं भृङ्गबेरैः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तदनुकनकबीजैर्भावितं सप्तवारं
तदनुसितजयन्त्या भृङ्गराजैश्च सर्वम् ॥
पुटितमुपरिशुष्कं काचकूप्यान्तु क्षिप्तं
षडहमुपरिपाच्यं बालुकायन्त्रकैश्च ॥
एला जातीचन्द्रैर्मृगमदससितैः
सोषणैः साश्वगन्धै–
स्तुल्यैर्वल्लप्रमाणं प्रतिदिन-
मशितं प्रातरुत्थाय शुद्धैः ।
ओजः पुष्टिविवर्द्धनो
ऽतिबलकृत्सर्वेन्द्रियानन्दनः
सर्वातङ्कहरो रसायनवरः
कामाग्निसन्दीपनः ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध शिंगरफ और शुद्ध मनसिल ५–५ तोला लेकर अदरक, धतूरेके बीज, सफेद जयन्ती और भांगरे के रस की सात सात भावना दें। फिर सुखाकर कांचकी शीशीमें भरकर छः दिनतक बालुका यन्त्रमें पकावें। इसके पश्चात् उसमें निम्नलिखित चीजोंका समान भाग चूर्ण मिलावें।

इलायची, जावित्री, कपूर, कस्तूरी, मिश्री, कालीमिर्च और असगन्ध।

इसे प्रतिदिन प्रातःकाल ३-३ रत्ती की मात्रा में सेवन करने से ओज, पुष्टि, बल और कामकी वृद्धि होती है। यह अत्युत्तम रसायन और समस्त इन्द्रियों को आनन्द देनेवाला है।

[९८७] कामिनीदर्पघ्नरसः

(र. रा. सुं. । रसा.)

शाल्मल्यास्त्वचमादाय श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत्
शुद्धगंधकचूर्णानि तद्रसेनैव भावयेत् ॥
माषमात्रप्रयोगेण शृणु वक्ष्यामि ये गुणाः।
मकरध्वजरूपोऽपि स्त्रीशतानन्दवर्द्धनः ॥
गतायुश्च भवेद्देवि ! वलीपलितनाशनः ।
तेजस्वीबलसम्पन्नो वेगेन तुरगोपमः ॥
सततं भक्षयेद्यस्तु तस्य मृत्युर्नजायते ॥

सेंभलकी छालका महीन चूर्ण और शुद्ध गन्धक बराबर २ लेकर सेंभलके रसमें घोटें।

इसे १ माशेकी मात्रानुसार सेवन करनेसे मनुष्य कामदेव तुल्य स्वरूपवान्, वली–पलित–रहित, तेजस्वी, बलवान और घोड़ेके समान वेग-वाला हो जाता है एवं इसके सेवन से कामकी अत्यन्त वृद्धि होती है।

[९८८] कामिनीमदभञ्जनो रसः

(र. रा. सुं. । रसा.)

शुद्धं सूतं समं गन्धं त्र्यहं कल्हारकद्रवैः ।
मर्दितं बालुकायन्त्रे यामं संपुटके पचेत् ॥
रक्तांगस्य द्रवैर्भाव्यं दिनैकन्तु सितायुतम् ।
यथेष्टं भक्षयेन्नानु कामयेत्कामिनीशतम् ॥

शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक बराबर २ लेकर ३ दिन तक कमलके रसमें घोटें फिर सम्पुट में बन्द करके १ पहर तक बालुका यन्त्र में पकावें। इसके पश्चात् १ दिन लाल चन्दन के क्वाथमें घोटे।

इसे मिश्रीके साथ सेवन करके यथेच्छ आहार विहार करें। इसके सेवन से अत्यन्त काम वृद्धि होती है।

[९८९] कामिनीमदविधूननो रसः

(भै. र. । ध्व. भं.)

कज्जलीकृतसुगन्धकशम्भो-
स्तुल्यमेव कनकस्य हि बीजम् ।
मर्दयेत्कनकतैलयुतं स्यात्
कामिनीमदविधूनन एषः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अस्य वल्लकमथो सितयाक्तं
सेवितं हरति मेहगदौघान् ।
वीर्यदाढ्यकरणे कमनीयं
द्रावणं निधुवने वनितानाम् ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और धतूरेके बीज समान भाग लेकर कज्जली करके धतूरेके तेलमें घोटें।

इसे ३ रत्ती की मात्रानुसार मिश्रीके साथ मिलाकर सेवन करनेसे प्रमेह नष्ट और वीर्य पुष्ट होता है। यह कमनीय और कामिनी-विद्रावक है।

[९९०] कामिनीविद्रावणो रसः

(भै. र. । वीर्यस्त.)

आकारकरभः शुण्ठी लवङ्गं कुंकुमं कणा ।
जातीफलश्च तत्कोषं चन्दनं कार्षिकं पृथक् ॥
हिङ्गुलं गन्धकं शाणं फणिफेनं पलोन्मितम् ।
गुञ्जात्रयमितां कुर्यात्संमर्द्य वटिकां भिषक् ॥
पयसा परिपीतोऽयं शुक्रस्तम्भकरो रसः ।
विद्रावणःकामिनीनां वशीकरण एव च ॥

अकरकरा, सोंठ, लौंग, केसर, पीपल, जायफल, जावित्री और चन्दन प्रत्येक १।-१। तोला। शुद्ध शिंगरफ और शुद्ध गन्धक ३-३ माशा और अफीम ५ तोला लेकर खरल करके ३-३ रत्तीकी गोलियां बनावें।

इन्हे दूधके साथ सेवन करनेसे शुक्रस्तम्भ होता है। यह कामिनीविद्रावक और वशीकरण है।

[९९१] कामेश्वरो रसः (वृ. नि. र.। पाण्डु)

पलं सूतं पलं गन्धं वह्निः पथ्या त्रयं त्रयम् ।
मुस्तैलापत्रकानां च मितं चार्धपलं पलम् ॥
त्र्यूषणं पिप्पलीमूलं विषं चैव पलं पलम् ।
नागकेसरकर्षैकं रेणुकार्धपलं तथा ॥
पुरातनगुडेनैव तुलार्धेन प्रपाचयेत् ।
मर्दयेचार्द्रकद्रावैर्यामैकं तद् घृतेन च ॥
गुटिका बदराकारा कारयेद्भक्षयेत्सदा ।
शोफपांडुहरः सोयं रसः कामेश्वरो ह्ययम् ॥

शुद्ध पारा ५ तोला, शुद्ध गन्धक ५ तोला, चीता १५ तोला, हैड़ १५ तोला, नागरमोथा, इलायची और तेजपात २॥-२॥ तोला, त्रिकुटा, पीपलामूल और शुद्ध मीठा तेलिया ५-५ तोला, नागकेसर १। तोला और रेणुका २॥ तोला लेकर चूर्ण करके २५० तोला पुराने गुड़में मिलाकर पकावें (या गुड़की चाशनी में इन सब का चूर्ण मिलावें) फिर इसे अदरकके रस और घीमें १-१ पहर घोटकर वेरके बराबर गोलियां बनावें।

इसके सेवन से सूजन और पांडु का नाश होता है।

[९९२] कारुण्यसागरो रसः

(रसे. सा. सं.। ज्वराति.)

भस्मसूताद् द्विधा गन्धं तथा द्विस्वं मृताभ्रकम्
दिनं सार्षपतैलेन पिष्ट्वा यामं विपाचयेत् ॥
रसैर्मार्कवमूलोत्थैः पिष्ट्वा यामं विपाचयेत् ।
त्रिक्षारपञ्चलवणविषव्योषाग्निजीरकैः ॥
सविडङ्गैस्तुल्यभागैरयं कारुण्यसागरः ।
माषमात्रं ददीतास्य भिषक् सर्वातिसारके ॥
सज्वरे विज्वरे वापि सशूले शोणितोद्भवे ।
निरामे शोथयुक्ते वा ग्रहण्यां सान्निपातिके ॥
अनुपानं विनाप्येष कार्यसिद्धिं करिष्यति ॥

रस सिन्दूर १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग और अभ्रक भस्म ४ भाग, लेकर १ दिन पर्यन्त सरसों के तेलमें घोटकर सरसों के तेल में १ पहर पकावें। फिर इसी प्रकार १ दिन भांगरे की जड़के रस में खरल करके १ पहर तक पकावें। इसके पश्चात् उसमें १-१ भाग सजीखार, सुहागे की खील,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जवाखार, पांचों लवण, शुद्ध मीठा तेलिया, त्रिकुटा, चीता, ज़ीरा और बायबिडंग का चूर्ण मिलावें।

इसे १ माशे की मात्रानुसार ज्वर सहित, ज्वर रहित, शूल, रक्त और शोथ युक्त अतिसार, निरामातिसार, संग्रहणी और सन्निपातातिसार आदि समस्त अतिसारों में प्रयोग करना चाहिए। इससे अनुपानके बिना भी सफलता प्राप्त हो सकती है।

[९९३] कार्श्यहरलोहम्

(र. रा. सुं., रसे. सा. सं. । रसा.)

श्वेता पुनर्नवा दन्ती वाजीगन्धा त्रिकत्रयैः।
शतमूलीबलायुक्तैरेभिर्लोहं प्रसाधितम् ॥
निहन्ति नियतं कार्श्यमपि भृंगरसैःसह ।
नास्त्यनेन समं लोहं सर्वरोगान्तकं मतम् ॥
दीपनं बलवर्णाग्नि वृष्यदं चोत्तमोत्तमम् ॥

श्वेत पुनर्नवा, दन्ती, असगन्ध, त्रिफला, त्रिकुटा, त्रिमद (बायबिड़ंग, चीता और नागरमोथा) शतावर और खरैंटी के साथ लोह भस्म सिद्ध करें। (लोह भस्म में इनका समान भाग चूर्ण मिलावें।)

इसे भांगरेके रसके साथ सेवन करने से कृशता अवश्य नष्ट होती है। इसके समान समस्त रोगों का नाश करने वाला दूसरा लोह नहीं है। यह दीपन, बल, वर्ण और अग्नि वर्द्धक तथा अत्युत्तम वृष्य है।

[९९४] कालकंटको रसः

(वृ. नि. र. । वा. व्या.)

वज्रसूताभ्रहेमार्कतीक्ष्णमुंडं क्रमोत्तरम् ।
मारितं मर्दयेदम्लवर्गेण दिवसत्रयम् ॥
त्रिक्षारं पञ्चलवणं मर्दितस्य समं समम् ।
दत्त्वा निर्गुण्डिकाद्रावैर्मर्दयेद्दिवसत्रयम् ॥
शुष्कमेतद्विचूर्ण्याथ विषं चास्याष्टमांशतः ।
टङ्कणं विषतुल्यांशं दत्त्वा जम्बीरजैर्द्रवैः ॥
भावयेद्दिनमेकन्तु रसोयं कालकण्टकः ।
दातव्यः सर्वरोगेषु सन्निपाते विशेषतः ॥
द्विगुञ्जामार्द्रकद्रावैर्घृतैर्वा वातरोगिणाम् ।
निर्गुण्डीमूलचूर्णं तु माहिषाख्यं च गुग्गुलम् ।
समांशं मर्दयेदाज्ये तद्वटी कर्षसंमिता ।
अनुयोज्या घृतैर्नित्यं स्निग्धमुष्णं च भोजनम् ॥
मंडलाश्चाशयेत्सर्वान्वातरोगाश्च संशयः ।
सन्निपाते पिबेच्चानु रविमूलकषायकम् ॥

हीरे की भस्म १ भाग, रससिन्दूर २ भाग, अभ्रक भस्म ३ भाग, सोने की भस्म ४ भाग, तांबे की भस्म ५ भाग, तीक्ष्ण लोह भस्म ६ भाग और मुंड लोह भस्म ७ भाग, लेकर सब को ३ दिन तक अम्लवर्ग* के रसों में घोटें। फिर उसमें सज्जीखार, सुहागे की खील और जवाखार तथा पांचोंनमकोंका चूर्ण १-१ भाग मिलाकर ३ दिन संभालू के रस में घोटें। इसके पश्चात् सुखाकर उसमें इस समस्त चूर्ण का आठवां भाग शुद्ध मीठा तेलिया और इतनी ही सुहागे की खील मिलाकर १ दिन जम्बीरी नींबू के रस में घोटें।

यह रस साधारणतः समस्त रोगों में और विशेषतः सन्निपात में अद्रक के रसके साथ प्रयोग करना चाहिए। वातज रोगोंमें २-२ रत्ती की मात्रानुसार घी के साथ सेवन कराना चाहिए। एवं दवा खानेके पश्चात् संभालू की जड़का चूर्ण और भैंसिया गूगल बराबर लेकर घीमें घोटकर १। तोले की वटी बनाकर उसे घी के साथ खिलावें। इसे सन्निपात में आककी जड़ के कषाय के साथ देना चाहिए।

यह रस मंडल कुष्ठ और समस्त वातज रोगों का अवश्य नाश करता है।

* देखो पृ. १५१ टिप्पणि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पथ्य—स्निग्ध (चिकने) और गरम पदार्थ।

[९९५] कालवज्रायनी रसः

(बृ. नि. र. । विष.)

पारदं गन्धाह्वं तुत्थं टङ्कणं रजनी समम्।
देवदाल्या द्रवैर्मर्द्यं दिनं शुष्कं तु भक्षयेत्॥
कालवज्राशनिर्नाम रसः सर्वविषापहः।
नरमूत्रं पिबेच्चानु कालदष्टोऽपि जीवति॥

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध तूनिया, सुहागे की खील और हल्दी बराबर बराबर लेकर १ दिन तक देवदाली के रसमें घोट कर सुखा कर रक्खे। यह रस समस्त प्रकारके विषों का नाश करता है। इसे आदमी के मूत्र के साथ खिलाने से काले सर्प के काटे हुवे को भी आराम हो जाता है।

[९९६] कालवञ्चको रसः

(र. रा. सुं. । यक्ष्मा.)

मृत सूतं मृतं नागं गन्धकं तुत्थटङ्कणम्।
प्रत्येकमर्द्धं निष्कं स्यान्मृतशुल्वे द्विनिष्ककम्॥
शङ्खं निष्कद्वयं चूर्णं नवनिष्कवराटकम्।
पूरयेत्पूर्ववच्चूर्णं पुटयेल्लोकनाथवत्॥
ततस्त्वकदलद्रावैर्मर्द्यं रुध्वा पुटे पचेत्।
आदाय चूर्णयेत् श्लक्ष्णं तुल्यांशमरिचैर्युतम्॥
चूर्णाच्चतुर्गुणं गन्धमेकीकृत्य विचूर्णयेत्।
पञ्चमाषैर्घृतैर्लेह्यमसाध्यं राजयक्ष्मकम्।
त्रिसप्ताहान्न सन्देहो रसोयं कालवञ्चकः॥

रस सिन्दूर, सीसा भस्म, शुद्ध गन्धक शुद्ध तूनिया और सुहाग की खील २-२ माशे तथा तांबे और शंखकी भस्म ८–८ माशा लेकर चूर्ण करके उसे ३६ माशा कौड़ियों में भर कर उनका मुख सुहागे से बन्द कर के शरावसम्पुट करके पुट लगा दें। फिर स्वांग शीतल होने पर निकालकर आक के पत्तों के रस में घोटकर शरावसम्पुट कर के पुट लगावे। इसके पश्चात् चूर्ण करके उसमें समान भाग काली मिर्च का चूर्ण और उस सबसे चौगुना शुद्ध गन्धक मिलाकर खरल करें।

इसे ५ माशे की मात्रानुसार २१ दिन तक घी के साथ सेवन करने से असाध्य (कष्ट साध्य) राजयक्ष्माका भी अवश्य नाश हो जाता है। (व्यवहारिक मात्रा २–४ रत्ती)

[९९७] कालविध्वंसनो रसः

(र. र. स. । अ. १९)

शुद्धसूतं हेमतारं ताम्रं तुल्यं च मर्दयेत्।
जंबीरनीरसंयुक्तमातपे मर्दयेद्दिनम्।
सर्वतुल्यं पुनः सूतं क्षिप्त्वा पिष्टं प्रकल्पयेत्।
धत्तूरफलमध्ये तु दोलायन्त्रे त्र्यहं पचेत्॥
धत्तूरोत्थद्रवैरेव यन्त्रं पूर्यं पुनः पुनः।
आदाय बंधयेसद्वस्त्रे इष्टिकायन्त्रगं पचेत्॥
जंबीरैर्गंधकं पिष्ट्वा अधश्चोर्ध्वं च दापयेत्।
तुल्यं पुनः पुनर्देयं रुध्वा लघुपुटे पचेत्॥
षड्गुणे गन्धके जीर्णे तत्तुल्यं मृतलोहकम्।
दत्वा मर्द्यं दिनैकं च कण्टकार्या द्रवैर्दृढम्।
रुध्वाथ करिषाग्निस्थकपोताख्यपुटे पचेत्।
पुनर्मर्द्यं पुनर्भाव्यं त्रिवारं पूर्वजैर्द्रवैः॥
बृहत्युत्थद्रवैस्तद्वत् त्रिधा मर्द्यं पुटेत्त्रिधा।
वह्नथकेनक्तमालानां पृथग्द्रावैर्द्विधा द्विधा।
मर्द्यं रुध्वा पुटे तद्वद्दशांशं वत्सनाभकम्।
दत्वा तस्मिन्विचूर्ण्याथ गुञ्जामात्रं प्रयोजयेत्
कालविध्वंसनो नाम रसः पाण्ड्वामयापहः।
अभयाऽथ गवां मूत्रैः पिष्ट्वा चानु प्रदापयेत्॥

शुद्ध पारद, सोना भस्म, चांदी भस्म और तांबा भस्म, बराबर बराबर लेकर १ दिन पर्यन्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जम्बीरी नींबू के रस में धूपमें घोटें। फिर सबके बराबर शुद्ध पारा मिलाकर खरल करें और उसे धतूरे के फलमें भरकर दोलायन्त्र विधि से धतूरे के रसमें ३ दिन पकावें। ज्यों २ रस सूखाय त्यों२ और डालते रहना चाहिए।

इसके पश्चात् धतूरे के फल समेत समस्त औषधि को कपड़े में बांधकर "इष्टिका" यन्त्र में पुट दें।

इसके पश्चात् जम्बीरी नींबूके रसमें घुटा हुवा शुद्ध गन्धक समान भाग लेकर उपरोक्त औषधि के ऊपर नीचे रखकर शराव सम्पुट करें और लघु पुट में फूंक दें। इसी प्रकार समान भाग गन्धक के साथ छः पुट लगावें। फिर समान भाग लोह भस्म मिलाकर १ दिन कटेली के रस में अच्छी तरह खरल करें और सम्पुट करके अरने उपलों की अग्नि में कपोत पुट लगावें। इसी प्रकार ३ पुट कटेली के रस में ३ बृहती (कटेले) के रस में और दो दो पुट चीता, आक तथा करंजवे के रस में घोट कर लगावें तदन्तर दशवां भाग शुद्ध मीठे तेलिये का चूर्ण मिलाकर खरल करें।

इसे १ रत्ती की मात्रानुसार खिलाकर ऊपरसे गोमूत्र में पिसी हुई हैड़ गोमूत्र के साथ खिलाने से पांडु का नाश होता है।

[९९८] कालाग्निभैरवो रसः

(भै. र. । ज्व.)

शुद्धसूतं द्विधा गन्धं मर्दयेद् गोक्षुरद्रवैः।
भावितश्च विशोष्याथ चूर्णयेदतिचिक्कणम् ॥
चूर्णतुल्यं मृतं ताम्रं ताम्रादष्टांशिकं विषम्।
हिङ्गुलं रसभागश्च द्वौभागौ कनकस्य च ॥
बाणभागोऽत्र गोदन्तः बाणभागा मनःशिला।
टङ्कनं नेत्रभागश्च ऋतुभागश्च खर्परम् ॥
ब्रह्मभागश्च जैपालं नेत्रभागं हलाहलम्।
माक्षिकं चाग्निभागश्च लोहवङ्गश्च भागकम् ॥
सर्वानूखल्लोदरे क्षिप्त्वा क्षीरेणार्कस्य मर्दयेत्।
दशमूलकषायेण मर्दयेद् याममात्रकम् ॥
पञ्चमूलकषायेण तथैव च विमर्दयेत्।
चणमात्रां वटीं कृत्वा बलं ज्ञात्वा प्रयोजयेत् ॥
सर्वं त्रिदोषजं हन्ति सन्निपातं सुदारुणम्।
पूर्ववद्दापयेत्पथ्यं जलयोगश्च कारयेत् ॥
पथ्यं शाल्योदनं ज्ञेयं दधिभक्तसमन्वितम्।
कालाग्निभैरवो नाम रसोऽयं भूमिपूजितः ॥

१ भाग शुद्ध पारद और २ भाग शुद्ध गन्धक की कज्जली करके गोखरू के रसकी भावना दें फिर सुखाकर अत्यन्त महीन चूर्ण करें और उसमें ताम्र भस्म सब चूर्ण के बराबर तथा शुद्ध मीठा तेलिया आठवां भाग, शुद्ध शिंगरफ १ भाग, (या ६ भाग) धतूरा दो भाग, गोदन्ती हरतालकी भस्म ५ भाग, शुद्ध मनसिल ५ भाग, सुहागे की खील २ भाग, शुद्ध खपरिया ६ भाग, शुद्ध जमालगोटा १ भाग, हलाहल विष २ भाग, सोना मक्खी भस्म ३ भाग और लोह भस्म तथा बङ्ग भस्म १–१ भाग लेकर १-१ पहर तक आक के दूध, दशमूल के कषाय तथा पञ्चमूल के कषाय में घोटकर चने के बराबर गोलियां बनावें।

इसे बलानुसार सेवन करने से घोर सन्निपात का नाश होता है।

पथ्य—शाली चावलों का भात और दही।

[९९९] कालाग्नि रसः

(र. र. । भगं.)

शुद्ध सूतं समं गन्धं मृतनागं सतुत्थकम्।
जीरकं सैन्धवं तुल्यं तिक्ता कोषातकीद्रवैः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिष्टं तल्लेपनाद्धन्ति भक्षणाच्च भगन्दरम् ।
रसःकालाग्निनामोऽयं द्विगुञ्जं मृत्युजिद्भवेत् ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, सीसा भस्म, तूतिया भस्म, ज़ीरा और सेंधा नमक बराबर २ लेकर कड़वी तोरी के रस में घोटें ।

इसे खाने और लेप करने से भगन्दरका नाश होता है । मात्रा २ रत्ती ।

[१०००] कालाग्निरुद्रो रसः (१)

(रसे. चि. म. । अ. ६)

सूताभ्रकान्तलौहानां भस्मगन्धकमाक्षिकम् ।
वन्यकर्कोटिकाद्रावैस्तुल्यं मर्द्य दिनावधि ॥
वन्यकर्कोटिकाकन्दे क्षिप्त्वा लिप्त्वा मृदा बहिः
भूधराख्ये पुटे पश्चाद्दिनैकं तद्विपाचयेत् ॥
रसः कालाग्निरुद्रोऽयं दशाहेन विसर्पनुत् ।
पिप्पलीमधुसंयुक्तमनुपानं प्रकल्पयेत् ॥

रस सिन्दूर, अभ्रक भस्म, कान्त लोह भस्म, शुद्ध गन्धक और सोनामक्खी भस्म बराबर २ लेकर १ दिन पर्यन्त बनककोड़े के रसमें घोटें और उसे उसी की (बन ककोड़े की) जड़ के भीतर भर कर ऊपर से मिट्टी का लेप करके १ दिन "भूधरयन्त्र" में पकावें ।

इस रस को दश दिन तक सेवन करने से विसर्प का नाश होता है ।

अनुपान—पीपल का चूर्ण और शहद ।

[१००१] कालाग्निरुद्रो रसः (२)

(र. रा. सुं. । श्वा.)

वज्रसूतार्कस्वर्णायस्तारतीक्ष्णमयं क्रमात् ।
भागवृद्ध्या मृतं सर्वं महसा चित्रकद्रवैः ॥
मर्दयेन्मातुलुङ्गाम्लैर्जंबीरस्य दिनत्रयम् ।
शिग्रुजलैःक्वाथैः कन्याक्वाथैर्दिनत्रयम् ॥
आर्द्रकस्य दिनैःसप्त दिवसे भावितं ततः ॥
शोषितं सूक्ष्मचुर्णन्तु पादांशं टङ्कणं तथा ।
टङ्कणं सवत्सनागं चूर्णं कृत्वा विमिश्रतम् ।
त्रिकटुत्रिफलावन्हिचातुर्जातकसैन्धवम् ॥
सौवर्चलं धूमसारं चूर्णमेतत् समं समम् ।
कृत्वा समं सुभागैकं तत्सर्वं चार्द्रकद्रवैः ॥
शिग्रुजैर्मातुलुङ्गोत्थैर्लोलयित्वा वटीकृतम् ।
रसः कालाग्निरुद्रोयं त्रिगुञ्जं खादयेत्सदा ॥
अग्निदीप्तिकरं हिक्काश्वासं सर्वकृतान्तकः ।
स्थूलानां कुरुते कार्श्यं कृशानां स्थौल्यकारकम् ॥
अनुपानविशेषैस्तु ततोरोगेषु योजयेत् ।
साध्यासाध्यं जयत्याशु मण्डलान्नात्रसंशयः ॥

हीरे की भस्म १ भाग, रस सिन्दूर २ भाग, तांबे की भस्म ३ भाग, सोने की भस्म ४ भाग, लोह भस्म ५ भाग, चांदी भस्म ६ भाग और तीक्ष्ण लोह भस्म ७ भाग लेकर चीता, बिजौरा नींबू, जम्बीरी नींबू, सहंजने की जड़ और घीकुमार के रस में ३–३ दिन घोटें । फिर सात दिन तक अदरक के रसमें घोटें और सुखाकर महीन चूर्ण करें । इसके बाद उसमें सुहागे की खील और शुद्ध मीठे तेलिये का चूर्ण प्रत्येक उससे चौथाई भाग और समान मात्रा में मिला हुवा त्रिकुटा, त्रिफला, चीता, चातुर्जात (दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेसर) सेंधा नमक, सौंचल नमक और घरका धुवां १–१ भाग मिलाकर अदरक, सहंजना और बिजौरे नीबू के रस में घोटकर ३–३ रत्ती की गोलियां बनावें ।

यह अग्नि प्रदीप्त करने वाला हिचकी और श्वास नाशक स्थूल और कृश शरीर को समावस्था पर लाने वाला और अनुपान भेद से रोगों का नाश करने वाला है ।

इसके सेवनसे मण्डल (कुष्ठ भेद)का अवश्य नाश होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[१००२] कालान्तको रसः (१)
(र. र. । कासे)

हिङ्गुलं मरिचं व्योषं टङ्कणं गन्धकं समम् ।
जम्बीररससंयुक्तं मर्दयेद्याममात्रकम् ॥
कासं श्वासमतीसारं ग्रहणीसान्निपातिकम् ।
अपस्मारामयं मेहमजीर्णं चाग्निमान्द्यताम् ॥
गुञ्जामात्रप्रदानेन सर्वं नाशयति क्षणात् ॥

शुद्ध शिंगरफ, कालीमिर्च, त्रिकुटा, सुहागेकी खील और शुद्ध गन्धक बराबर २ लेकर १ पहर तक जम्बीरी नीबू के रसमें घोटें।

इसे १ रत्ती की मात्रानुसार सेवन करने से खांसी, श्वास, अतिसार, संग्रहणी, त्रिदोषज अपस्मार, प्रमेह, अजीर्ण और अग्निमांद्य का नाश होता है ।

[१००३] कालान्तको रसः (२)
(वृ. नि. र. । क्षय.)

कुर्याल्लोहमयीं मूषामुन्नतां द्वादशाङ्गुलाम् ।
मर्दितं स्वर्णवाराहिगृहकन्यारसैः रसम् ॥
लशुनैर्याममात्रं च पिण्डीकृत्वा निवेशयेत् ।
कृत्वा पूर्वोक्तमूषायां सूतपादं च गन्धकम् ॥
निर्गुण्डीरससंपिष्टं तन्मूषायां विनिक्षिपेत् ।
आच्छाद्य लोहचक्रेण रुद्रयन्त्रेण जारयेत् ॥
एवमष्टगुणे जीर्णे समुद्धृत्य विचूर्णयेत् ।
पञ्चगुञ्जामितं खादेदनुपानं मृगाङ्कवत् ॥
अयं कालान्तको नाम रसोयं राजयक्ष्मजित् ॥

पारे को धतूरे, वाराहीकन्द, घीकुमार और ल्हसन के रस में १-१ पहर तक घोटकर गोला बनावें । फिर उसके नीचे ऊपर संभालू के रस में घुटा हुवा पारे से चौथाई भाग गन्धक भरकर १२ अङ्गुल ऊंची (गहरी) लोहे की मूषा में रखकर उसके मूंह को लोहे के ढकने से ढक दें । और रुद्रयन्त्र में पकावें । इसी प्रकार जब आठगुनी गन्धक जीर्ण हो जाय तो ३२ पुट देने के बाद) चूर्ण करके रक्खें ।

इसे मृगाङ्क रसोक्त अनुपान के साथ ५ रत्ती की मात्रानुसार सेवन करने से राजयक्ष्मा का नाश होता है । (व्यवहारिक मात्रा १-२ रत्ती ।)

[१००४] कालारि रसः
(यो. चि. म. । मिश्राधि.)

त्रिशाणं पारदं चैव गन्धकं शाणपञ्चकम् ।
त्रिशाणं वत्सनाभञ्च पिप्पली दशशाणिका ॥
लवङ्गं च चतुः शाणं त्रिशाणं कनकाह्वयम् ।
टङ्कणं वन्हिशाणं च पञ्च जातीफलं क्षिपेत् ॥
मरिचं पञ्च शाणं स्यादकलं च त्रिशाणकम् ।
करीरार्द्रकनिम्बुकैर्मर्दयेच दिनत्रयम् ॥
कालारिरसनामाऽयं वातव्याधिनाशनः ।
मर्दने भक्षणे नस्ये द्विगुञ्जं सन्निपातजित् ॥

शुद्ध पारद ९ माशा, शुद्ध गन्धक १। तोला, शुद्ध मीठा तेलिया ९ माशा, पीपल २॥। तोला, लौंग १ तोला, धतूरा ९ माशा, सुहागेकी खील ९ माशा, जायफल, कालीमिर्च १। तोला और अकरकरा ९ माशा लेकर ३-३ दिन करीर, अद्रक और नीबूके रस में घोटें ।

इसे मर्दन, भक्षण और नस्य द्वारा प्रयोग करने से वातव्याधि और सन्निपात का नाश होता है । मात्रा २ रत्ती ।

[१००५] कालेश्वरो रसः
(र. रा. । सुं. । श्वा.)

वङ्गं लोहं तथा ताम्रमभ्रकं पारदं मतम् ।
गन्धकं ताप्यदरदौ दिव्यं जातीफलं तथा ॥
सूक्ष्मैला दालचिनी च केशरं विषकं स्मृतम् ।
धूर्त्तबीजं च जैपालं टङ्कणं च समम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्वेभ्यस्त्रिगुणं श्यामं क्षिप्त्वा चूर्णीकृतं भिषक्।
वृषापामार्गनिर्गुण्डीभङ्गाभृङ्गरसेन च।।
मर्दयेद्दिनमेकैकं रसः कालेश्वरो भवेत्।
एकगुञ्जं द्विगुञ्जं वा बलं ज्ञात्वा प्रयोजयेत्।।
कासं श्वासं निहन्त्याशु कफरोगं च दारुणम्।।

वङ्ग भस्म, लोह भस्म, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, पारद, गन्धक, सोनामक्खी भस्म, शंगरफ, कान्त लोह भस्म, जायफल, छोटी इलायची, दाल चीनी, केसर, मीठा तेलिया, धतूरे के बीज, जमालगोटा और सुहागा समान भाग तथा सब के वजन से ३ गुना मिर्च का चूर्ण लेकर १-१ दिन बांसा, चिरचिटा, संभालू, भांग और भांगरे के रस में घोटें।

इसे रोगी के बलानुसार १-२ रत्ती की मात्रानुसार सेवन कराने से खांसी, श्वास और दारुण कफ रोगों का नाश होता है।

(१००६) कासकर्त्तरी रसः
(र० रा० सु। कास०)

रसगन्धकपिप्पल्यो हरीतक्यक्षवासकम्।
यथोत्तरं गुणं चूर्णं बब्बूलक्वाथभावितम्।।
एकविंशतिवारेण शोषयित्वा विचूर्णयेत्।
भक्षयेन्मधुना हन्ति कासं वै कासकर्त्तरी।।

पारा १ भाग, गन्धक २ भाग, पीपल ३ भाग, हैड़ ४ भाग, बहेड़ा ५ भाग और बासा ६ भाग लेकर चूर्ण करके उसे कीकर के रस की २१ भावना दें।

इसे शहद से साथ सेवन करने से खांसी का नाश होता है।

(१००७) कासकुठारः
(र० रा० सु। कासे)

हिङ्गुलं मरिचं गन्धं सव्योषं टङ्कणं तथा।
द्विगुञ्जमार्द्रकद्रावैः सन्निपातं सुदारुणम्।।
कासं नानाविधं हन्ति शिरोरोगं विनाशयेत्।।

शंगरफ, मरिच, गन्धक, त्रिकुटा और सुहागा बराबर बराबर लेकर चूर्ण करें।

इसे २ रत्ती की मात्रानुसार अदरक के रस के साथ सेवन कराने से दारुण सन्निपात, अनेक प्रकार की खांसी और शिर के रोगों का नाश होता है।

(१००८) कासकेसरी
(वृ० नि० र०। कासे)

दरदं मरिचं मुस्तं टङ्कणं च विषं समम्।
जम्बीराद्भिश्च संमर्द्य कुर्यान्मुद्गनिभां वटीम्।।
आर्द्रकस्वरसेनैव कासं श्वासं व्यपोहति।।

शंगरफ, मरिच, मोथा, सुहागा और मीठा तेलिया समान भाग लेकर जम्बीरी नीबू के रस में घोटकर मूंग के बराबर गोलियां बनावें।

इन्हे अदरक के रस के साथ सेवन कराने से खांसी और श्वास का नाश होता है।

(१००९) कासनाशनो रसः
(र० र० स०। अ० १३)

सार्कतीक्ष्णाभ्रकोऽगस्त्यकासमर्दवरारसैः।
मर्दितो वेतसाम्लेन पिण्डितः कासनाशनः।।

ताम्र भस्म, तीक्ष्णलोह भस्म और अभ्रक भस्म को अगस्ति, कसौंदी, त्रिफला और अम्लबेत के रस की भावना देकर गोलियां बनावें।

इनके सेवन से खांसी का नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१०१०) कासश्वासविधूननो रसः
(वृ० नि० र०। कास०)

रसभागो भवेदेको गन्धकाद्वौ तथैव च।
यवक्षारस्त्रिभागः स्याद्रुचकं च चतुर्गुणम्।।
मरीचं पञ्चभागं स्याच्छुद्धं रसविमर्दितम्।
कासं पञ्चविधं हन्याच्छ्वासं पञ्चविधं तथा।।

शुद्ध पारद १ भाग, गन्धक २ भाग, जवाखार ३ भाग, सौंचल (काला) नमक ४ भाग और मरिच ५ भाग लेकर चूर्ण करें।

यह पांच प्रकार की खांसी और पांच प्रकार के श्वासों का नाश करता है।

(१०११) काससंहारभैरवः
(र० सा० सं०। कास०)

रसगन्धकताम्राभ्रशङ्खटङ्कणलौहकम्।
मरिचं कुष्ठतालीशजातीफललवङ्गकम्।।
कार्षिकं चूर्णमादाय वण्डेनामदृर्ध भावयेत्।
भेकपर्णी केशराजनिर्गुण्डी काकमाचिका।।
द्रोणपुष्पी शालपर्णी ग्रीष्मसुन्दरकं तथा।
भाङ्र्गी हरीतकी वासा कार्षिकैः पत्रजै रसैः।।
वटिकां कारयेद्वैद्यः पञ्चगुञ्जाप्रमाणतः।
वातजं पैत्तिकं कासं श्लैष्मिकं चिरजन्तथा।।
श्रीमद्गहननाथेन काससंहारभैरवः।
रसोयं निर्मितो यत्नाल्लोकरक्षणहेतवे।।
वासा शुण्ठी कण्टकारी क्वाथेन पाययेद्बुधः।
कासं नानाविधं हन्ति श्वासमुग्रमरोचकम्।।
बलवर्णकरः श्रीदः पुष्टिदः कान्तिवर्द्धनः।।

पारा, गन्धक, ताम्र भस्म, शङ्ख भस्म, सुहागा, लोह भस्म, मरिच, कूठ, तालीशपत्र, जायफल और लौंग प्रत्येक का १-१ कर्ष चूर्ण लेकर खरल करके उसे मण्डूकपर्णी (ब्राह्मी भेद) भांगरा, संभालु, मकोय, गूमा, शालपर्णी, ग्रीष्मसुन्दर (गीमा) भारंगी, हरड़ और बांसे के पत्तों के १-१ कर्ष रस में घोटकर ५-५ रत्ती की गोलियां बनावें।

इसे बांसा, सोंठ और कटेली के रस के साथ सेवन कराने से वातज, पित्तज, कफज और पुरानी खांसी, प्रबल श्वास और अरुचि का नाश होता तथा बल, वर्ण, सौन्दर्य, पुष्टि और कान्ति की वृद्धि होती है।

(१०१२) कासहरो रसः
(र० र० स०। अ० १३)

तारे पिष्टशिलां क्षिप्त्वा हरितालाच्चतुर्गुणाम्।
वासागोक्षुरसाराभ्यां मर्दितः प्रहरद्वयम्।।

प्रस्विन्नो बालुकायन्त्रे गुञ्जाद्वितयसंमितः।
कासं त्रिकटुनिर्गुण्डीमूलचूर्णयुतो हरेत्।।

चांदी भस्म १ भाग, मनसिल ४ भाग और हरताल १ भाग लेकर २-२ पहर बांसे और गोखरू के स्वरस में खरल करें फिर (शराव संपुट करके) बालुका यन्त्र में स्वेदन करके २-२ रत्ती की गोलियां बनावें।

इन्हें त्रिकुटे और संभालू की जड़ के चूर्ण के साथ सेवन करने से खांसी का नाश होता है।

(१०१३) कासान्तको रसः
(र० रा० सुं०। कासे)

सूतं गन्धं विषं चैव शालपर्णी च धान्यकम्।
यावन्त्येतानि चूर्णानि तावन्मात्रं मरीचकम्।।
गुञ्जा चतुष्टयं खादेन्मधुना कास शान्तये।।

पारा, गन्धक, मीठा तेलिया, शालपर्णी और धनिया १-१ भाग, तथा इन सब के बराबर मरिच का चूर्ण लेकर खरल करें।

इसे खांसी की शान्ति के लिए ४ रत्ती की

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मात्रानुसार शहद में मिलाकर सेवन करना चाहिए।

(१०१४) कासारि रसः
(र० रा० सुं०। कासे)

अभ्रकं शम्भुबीजञ्च तीक्ष्णं शुल्बसमन्वितम्।
कासमर्दवरागस्तिवेतसाम्लैर्विमर्दयेत्।।
चतुर्गुञ्जावटी हन्ति कासं पञ्चविधं तथा।।

अभ्रक भस्म, रस सिन्दूर, तीक्ष्ण लोह भस्म और ताम्र भस्म बराबर बराबर लेकर कसौंदी, त्रिफला, अगस्ति और अम्लवेत के रस में घोटकर ४-४ रत्ती की गोलियां बनावें।

इन के सेवन से पांचों प्रकार की खांसी नष्ट होती है। व्यवहारिक मात्रा १-२ रत्ती।

(१०१५) कासीसबद्धो रसः
(र० र० स०। अ० २०)

पलं रसं हि कासीसैर्युतं पञ्च गुणैः सह।
मर्दयेद्यामपर्यन्तमर्जुनस्य त्वचो रसैः।।
शरावसंपुटे रुध्वा पुटेत्क्रोडपुटेन हि।
रसः कासीसबद्धोऽयं मधुना वल्लतुल्यकः।।
शाणबाकुचिकायुक्तः सेवितो हन्ति निश्चितम्।
त्रिभिर्मासैः किलासं हि दद्रूण्यपि विशेषतः।।

१ पल पारद और ५ पल कसीसको १ पहर तक अर्जुन की छाल के रस में घोटकर शराव-संपुट में बन्द करके बराह पुट में फूंकें।

इसे १ वल्ल (२-३ रत्ती) की मात्रानुसार १ शाण बाबची के चूर्ण के साथ शहद में मिलाकर ३ मास तक सेवन करने से किलास कुष्ठ और विशेषतः दाद का नाश होता है।

(१०१६) किरातादिमण्डूरम्
(वृ० नि० र०। पाण्डु)

किराततिक्तं सुरदारुदार्वी मुस्तागुडूची कटुकापटोलम्।
दुरालमापर्पटकं सनिम्बं कटुत्रिकं वह्निफलत्रिकं च।।
फलं विडङ्गस्यसमांशकानि सर्वैः समं चूर्णमथायसं च।
सर्पिर्मधुभ्यां वटिकाविधेया तत्रानुपानाद्भिषजा प्रयोज्या।।
निहन्ति पाण्डुं च हलीमकं च शोथं प्रमेहं ग्रहणीरुजं च।
श्वासं च कासं च सरक्तपित्तमर्शांस्यथोर्वोर्ग्रहमामवातम्।।
व्रणांश्च गुल्मान् कफविद्रधींश्च श्वित्रं च कुष्ठं सततप्रयोगात्।।

चिरायता, देवदारु, दारुहल्दी, मोथा, गिलोय, कुटकी, पटोलपत्र, धमासा, पित्तपापड़ा, नीम की छाल, त्रिकुटा, चीता, त्रिफला और बायबिडंग का चूर्ण १-१ भाग तथा लोह चूर्ण सबके बराबर मिलाकर घी और शहद के साथ गोलियां बनावें।

इन्हें यथोचित अनुपान के साथ निरन्तर सेवन करने से पाण्डु, हलीमक, सूजन, प्रमेह, ग्रहणी, श्वास, खांसी, रक्तपित्त, बवासीर, उरुग्रह, आमवात, घाव, गुल्म, कफजविद्रधि और सफेद कोढ़ का नाश होता है।

(१०१७) किलासनाशनो रसः
(र० र० स०। अ० २०)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रसद्विगुणगन्धकं त्रिगुणताम्रलिप्तं पचेद्
गृहीतमनुकज्जलीं खदिरबाकुचीनिम्बजैः।
रसैः पुटविपाचितं समलयाकषायं पिबे-
त्किलासमरुणं सितं जयति शुद्धतक्राशिनः।।

१ भाग पारद और २ भाग गन्धक की कज्जली करके (नींबू के रस में घोटकर) उसे ३ भाग तांबे के बारीक पत्रों पर लेप करके शरावसंपुट करके पुट दें फिर उसे खैर, बाबची और नीम के रस में घोट कर (जब तक ताम्र भस्म न हो जाय तब तक) पुट देते रहें।

इसे बाबची के क्वाथ के साथ पीने और आहार में केवल शुद्ध छाछ पीने से लाल और सुफेद कोढ़ का नाश हो जाता है।

(१०१८) कीटमर्दो रसः
(र० र० स०। अ० २०)

शुद्धसूतं शुद्धगन्धमजमोदा विडङ्गकम्।
विषमुष्टिर्ब्रह्मबीजं यथाक्रमगुणोत्तरम्।।
चूर्णयेन्मधुना लेह्यं निष्कैकं कृमिजिद्भवेत्।
कीटमर्दो रसो नाम मुस्तातोयं पिबेदनु।।

पारा १ भाग, गन्धक २ भाग, अजमोद ३ भाग, बायबिडंग ४ भाग, कुचला ५ भाग और पलास पापड़ा, (ढाक के बीज) ६ भाग लेकर चूर्ण करें।

इसे एक निष्क (चार माशे) की मात्रानुसार शहद में मिला कर मोथे के क्वाथ के साथ सेवन करने से कृमि नष्ट होते हैं।

(१०१९) कुब्जविनोदरसः
(र० रा० सुं०। वा० व्या०)

रसगन्धौ समौ शुद्धौ चाभयातालकं तथा।
विषं कटुकिव्योषञ्च बोलजैपालकौ समौ।।
भृङ्गराजरसे मर्द्य स्नुहयर्कस्वरसैस्तथा।
गुञ्जाद्वयं भक्षयेच्च हृच्छूलं पार्श्वशूलकम्।।
आमवाताढ्यवातादीन् कटीशूलञ्च नाशयेत्।
अग्निञ्च कुरुते दीप्तं स्थौल्यं चाप्यपकर्षति।।
रसःकुब्जविनोदोऽयं गहनानन्दभाषितः।।

पारा, गन्धक, हैड़, हरताल, मीठा तेलिया, कुटकी, त्रिकुटा, बोल (मुरमकी) और जमालगोटा बराबर बराबर लेकर चूर्ण करके भांगरे थोहर (सेंड) और आक के स्वरस में घोटें।

इसे २ रत्ती की मात्रानुसार सेवन करने से हृदय की पीड़ा, पसली का दर्द, आमवात, आढ्यवात, कमर का दर्द और स्थौल्य (चरबी बढ़ जाना) नष्ट होता तथा अग्नि प्रदीप्त होती है।

(१०२०) कुमारकल्याणो रसः
(भै० र०। बा० रो०)

सिन्दूरं मौक्तिकं हेम व्योमायो हेममाक्षिकम्।
कन्यातोयेन संमर्द्य कुर्यान्मुद्गमिता वटीः।।
वटिकां वटिकार्द्धं वा वयोऽवस्थां विविच्य च।
क्षीरेण सितया सार्द्धं बालेषु विनियोजयेत्।।
कुमाराणां ज्वरं श्वासं वमनं पारिगर्भिकम्।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रहदोषांश्च निखिलान् स्तन्यस्याग्रहणं तथा।।
कामलामतिसारञ्च कृशतां वह्निवैकृतम्।
रसःकुमारकल्याणो नाशयेन्नात्र संशयः।।

रस सिन्दूर, मोती भस्म, स्वर्ण भस्म, अभ्रक भस्म, लोह भस्म और सोनामक्खी भस्म बराबर बराबर लेकर घीकुमार के रस में घोट कर मूंग के समान गोलियां बनावें।

इन्हें बालक की अवस्थानुसार १ या आधी गोली की मात्रा में मिश्री युक्त दूध के साथ सेवन कराने से ज्वर, श्वास, वमन, पारिगर्भिक, ग्रह दोष, स्तन्य ग्रहण न करना (दूध न पीना), कामला, अतिसार, दुबलापन और पाचन विकार आदि रोग नष्ट होते हैं।

(१०२१) कुमुदेश्वरो रसः
(र० सा० सं०। तृष्णा०)

मृतताम्रस्य भागौ द्वौ भागैकं वङ्गभस्मकम।
यष्टिमधुरसैर्भाव्यं शुष्कं माषार्द्धकं शुभम्।।
सेव्यञ्चैवानुपानेन वक्ष्यमाणेन बुद्धिमान्।
चन्दनं शारिवा मुस्तं क्षुद्रैलानागकेशरम्।।
सर्वतुल्या तथा लाजा पचेत्षोडशिकैर्जलैः।
अर्द्धशेषं हरेत्क्वाथं सिताक्षौद्रयुतन्तु तत्।।
छर्दिं तृष्णां निहन्त्याशु रसोऽयं कुमुदेश्वरः।।

ताम्र भस्म २ भाग और वंग भस्म १ भाग लेकर मुलैठी के रस की भावना देकर सुखावें।

इसे आधे माशे की मात्रानुसार नीचे लिखे अनुपान के साथ सेवन करने से छर्दि और तृष्णा का अत्यन्त शीघ्र नाश होता है।

अनुपान–चन्दन, शारिवा (उश्बा) मोथा, छोटी इलायची, और नागकेसर समान भाग तथा सबके बराबर धान की खील लेकर १६ गुने पानी में पकावें। जब आधा पानी शेष रह जाए तो उतार कर छान लें और ठंडा होने पर उसमें मिश्री और शहद मिलावें।

(१०२२) कुमुदेश्वरो रसः
(यो० र०। रा० य०)

पारदं शोधितं गन्धमभ्रकं च समं समम्।
तदर्धं दरदं विद्यात्तदर्धं च मनः शिलाम्।।
सर्वार्धं मृतलोहं च खल्वमध्ये विनिक्षिपेत्।
द्विःसप्तभावना देयाः शतावर्या रसेन च।।
ततः सिद्धो भवत्येष कुमुदेश्वरसंज्ञकः।
सितया मरिचेनाथ गुञ्जाद्वित्रिप्रमाणतः।।
भक्षयेत्प्रातरुत्थाय पूजयित्वेष्टदेवताम्।
यक्ष्माणमुग्रं हन्त्येव वातपित्तकफामयान्।।
ज्वरादीनखिलान्रोगान्यथा दैत्याञ्जनार्दनः।
सतताभ्यासयोगेन वलीपलितनाशनः।।

पारा, गन्धक और अभ्रक भस्म १-१ भाग, शंगरफ इन सब से आधा, मनसिल शंगरफ से आधी और इन सब से आधी लोह भस्म लेकर सब को एकत्र करके शतावरी के रस की १४ भावना दें।

इसे प्रातः काल इष्टदेव की पूजा करके मिश्री और मरिच के चूर्ण के साथ २ – ३ रत्ती की मात्रानुसार सेवन करने से यक्ष्मा और ज्वरादि वातज, पित्तज, तथा कफज रोग, नष्ट होते हैं। एवं इन के निरन्तर अभ्यास से वली पलित का नाश होता है।

(१०२३) कुमुदेश्वरो रसः
(र० रा० सु०। क्षय०)

हेमभस्मरसभस्मगन्धकं मौक्तिकन्तु रसटङ्कणं तथा
तारकं गरुडसर्वतुल्यकं काञ्जिकेन परिमर्द्य गोलकम्।।
मृत्स्नया च परिवेष्ट्य शोषितं भाण्डके लवणगेऽथ पाचयेत्।

यहां शंगरफ आधा भाग और मनसिल पूर्वोक्त सबसे पहले भी ले सकते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एकरात्र मृदुसंपुटेन वा सिद्धिमेति कुमुदेश्वरो रसः।।
वल्लमस्य मरिचैर्घृतान्वितै राजयक्ष्म-परिशान्तये पिबेत्।

(१०२३ अ) कुलवधू
(र० सा० सं०। सन्नि०)

शुद्धसूतं मृतं ताम्रं मृतं नागं मनः शिला।
तुत्थकं तस्य तुल्यांशं दिनमेकं विमर्दयेत्।।
द्रवैश्चोत्तरवारुण्या चणमात्रा वटीकृता।
सन्निपातं निहन्त्याशु नस्यमात्रेण दारुणम्।।
एषा कुलवधूर्नाम जले घृष्ट्वा प्रयोजयेत्।।

सोना भस्म, रस सिन्दूर, गन्धक, मोती भस्म, पारा, सुहागा, चांदी भस्म और सोना मक्खी भस्म बराबर बराबर ले कर खरल करके कांजी में घोट कर गोला बनावें और उस पर कपर मिट्टी करके सुखाकर लवणयन्त्र में एक रात पकावें अथवा लघु पुट लगादें।

इसे २-३ रत्ती की मात्रानुसार मरिच के चूर्ण और घृत के साथ सेवन करने से राजयक्ष्मा का नाश होता है।

(१०२४) कुष्ठकालानलो रसः
(रसें० चि० म०। अ० ९)

गन्धं रस टङ्कणताम्रलौहं भस्मीकृतं मागधिकासमेतम्।
पञ्चाङ्गनिम्बेन फलत्रिकेन विभावितं राजतरोस्तथैव।।
नियोजयेद्वल्लयुग्ममानकं कुष्ठेषु सर्वेषु च रोगसंघे।।

गन्धक, पारा, सुहागा, ताम्र भस्म और लोह भस्म तथा मरिच का चूर्ण बराबर बराबर लेकर नीम के पंचाङ्ग, त्रिफला और अमलतास के रसकी भावना दें।

इसे सब प्रकार के कुष्ठों में २ वल्ल (४-६ रत्ती) की मात्रानुसार सेवन कराना चाहिये।

(१०२५) कुष्ठकुठारो रसः
(र० र० स०। अ० २०)

सूतभस्मसमं गन्धं मृतायस्ताम्रगुग्गुलु:।
त्रिफला विषमुष्टी च चित्रकश्च शिलाजतु।।
इत्येषं चूर्णितं कुर्यात्प्रत्येकं निष्कषोडशम्।
चतुःषष्टि करंजस्य बीजचूर्णं प्रकल्पयेत्।।
चतुःषष्टि मृतं ताम्रं मध्वाज्याभ्यां विलोडयेत्।
स्निग्धभाण्डगतं खादेद्द्विनिष्कं सर्वकुष्ठजित्।।
रसः कुष्ठकुठारोऽयं गलत्कुष्ठनिकृन्तनः।
पथ्यं त्रिमधुरं §देयं तदभावे गुडौदनम्।।
पातालगरुडीमूलं मधुपुष्पी च धान्यकम्।
सितया भक्षयेत्कर्षमतितापप्रशान्तये।।
लिह्यान्नागबलामूलं मध्वाज्यैर्वातितापनुत्।।

रस सिन्दूर, गन्धक, लोह भस्म, ताम्र भस्म, गूगल, त्रिफला, कुचला, चीता और शिलाजीत, इनमें से प्रत्येक वस्तु का चूर्ण १-१ पल, करंजवेकी गिरी का चूर्ण ४ पल और ताम्र भस्म ४ पल लेकर सबको शहद और घी में मिलाकर चिकने बर्तन में भरकर रखदें।

इसे २ निष्क* (८ माशे) की मात्रानुसार सेवन करने से गलत्कुष्ठ और अन्य सब प्रकार के कुष्ठों का नाश होता है।

पथ्य-घी, शहद और मिश्री एवं इसके अभाव में गुड़युक्त भात।

यदि इसके सेवन से अत्यधिक ताप हो तो पाताल गरुड़ी (कड़वी तोरी का भेद) की जड़, चोर होली और धनिये का चूर्ण १ कर्ष परिमाण लेकर मिश्री मिलाकर खिलावें। अथवा अत्यन्त ताप की शान्ति के लिये नागबला की जड़ का चूर्ण शहद और घी में मिलाकर चटावें।

---

§तु मधुरमिति पाठान्तरम्
*मात्रा अधिक प्रतीत होती है। (अनु०)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१०२६) कुष्ठकुठारो रसः
(र० र० स०। अ० २०)

रसस्य कर्षं कर्षौ द्वौ गंधकात्कज्जलं तयोः।
तिलपर्ण्यलिमुण्डीनां स्वरसैः कृतभावनम्।।
कर्षं कर्षं वचाधात्रीकणातीक्ष्णकृमिच्छिदाम्।
शाणं विषस्य कर्षार्धं जीरकस्य सितस्य च।।
पलार्धं मृततास्रस्य तथा शुण्ठ्याश्च मर्दितम्।
भृङ्गाम्भसि घटे स्निग्धे पचेच्चणक-
संमिताः।।

वटिकाः कुष्ठविश्वाग्नित्रिफलासैंध-
वान्विताः।

कुर्यात्कुष्ठकुठाराख्यो रसोऽयं सर्वकुष्ठजित्।।

एक कर्ष पारद और २ कर्ष गन्धक की कज्जली करके तिलपर्णी (लाल चन्दन) और मुण्डी के स्वरस की भावना देकर उसमें बच, आमला, पीपल, तीक्ष्ण लोह भस्म, और बायबिडंग का चूर्ण १-१ कर्ष, मीठातेलिया ४ माशे, सफेद ज़ीरा आधा कर्ष और ताम्र भस्म तथा सोंठका चूर्ण आधा आधा पल मिलाकर घोटें। फिर उसे चिकने घड़े में भांगरे के रस में पकावें। जब पकाते पकाते गोली बनाने योग्य हो जाय तो उसमें कूठ, सोंठ, चीता, त्रिफला, और सेंधा नमक का प्रक्षेप* डाल कर चने के बराबर गोलियां बनावें। इस के सेवन से सब प्रकार के कुष्ठ नष्ट होते हैं। व्यवहारिक मात्रा १ से ४ गोली तक।

(१०२६ अ) कुष्ठजितरसः
(र० र० स०। अ० २०)
देखो "कृष्णमाणिक्य रस"

(१०२७) कुष्ठनाशनो रसः
(र० र० स०। अ० २०)

रसगन्धकताप्यार्कशिला-
जत्वम्लवेतसम्।
अष्टमांशगुडं साज्यमाक्षिकं
स्याच्छतारुषि।।

पारा, गन्धक, सोना मक्खी भस्म, ताम्र भस्म, शिलाजीत और अमलवेत १-१ भाग तथा गुड़ सबका आठवां भाग लेकर सबको एकत्र मिलावें।

इसको घी और शहद में मिलाकर सेवन करने से शतारुषि (कुष्ठ भेद) का नाश होता है।

(१०२८) कुष्ठनिकृन्तनो रसः
(र० र०। कुष्ठ०)

शुद्धसूतं विषं गन्धं तुल्यं ताप्यं शिलाजतु।
शुद्धतीक्ष्णं मृतं लौहं सर्वं मर्द्यं दिनत्रयम्।।
काकमाचीदेवदाल्योः कर्कोटैश्च द्रवैर्दृढम्।
मर्दयेद्भूधरे पाच्यं त्रिदिनन्तु तुषाग्निना।।
निष्कार्द्धं लेहयेत्क्षौद्रैः रसः कुष्ठनिकृन्तनः।
भल्लातवाकुची पथ्या विडङ्गं चित्रकं तथा।।
जीरकं बदरीमूलं कटुतैलेङ्गुदेन तु।
भक्षयेदनुपानोऽयं हन्ति कुष्ठं विचर्चिकाम्।।

पारा, मीठातेलिया, गंधक, सोनामक्खी भस्म, शिलाजीत और तीक्ष्ण लोह भस्म, समान भाग लेकर ३ दिन तक मकोय, देवदाली और ककोड़े के रस में घोटें। फिर ३ दिन तक भूधरयन्त्र द्वारा तुषाग्नि में पकावें।

इसे शहद में मिलाकर आधा निष्क की मात्रानुसार निम्नलिखित अनुपान के साथ सेवन करने से कुष्ठ और विचर्चिका का नाश होता है।

अनुपान—भिलावा, बाबची, हैड़, बायबिडंग, चीता, जीरा, बेरीकी जड़की छाल, कड़वातेल और हिंगोटकातेल। चूर्ण योग्य चीजों का चूर्ण करके तेल में मिलावें।

(१०२९) कुष्ठरुद्रेश्वरो रसः
(र० चि० म०। ३ स्वबकः)

पारदं गन्धकं घृष्ट्वा पलद्वयमितं पृथक्।

*किन्हीं किन्हीं के मत में कूठ, सोंठ, चीता, त्रिफला और सेंधा प्रक्षेप नहीं प्रत्युत अनुपान है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुद्धं नागं तथा वङ्गं ग्रहणीयं च शुल्बकम्।।
शुद्धं पित्तलमप्येवं शुद्धं कान्तं पलं पलम्।
चूर्णितं शुद्धलोहं च तारं ताप्यं पलं पलम्।।
एकीकृत्य च तत्सर्वं खल्वे मृष्ट्वाऽथ भाव्यते।
विषस्यापि पलं देयं भाव्यते त्रिफलाम्भसा।।
पुनश्च भृङ्गराजस्य राजवृक्षस्य भावना।
बीजकस्य रसैः पश्चात्खदिरक्वाथमर्दनम्।।
महानिम्बस्य निम्बस्य क्वाथैरेतद्विभाव्यते।
अर्कसेहुण्डदुग्धस्य भावना पञ्च पञ्च च।।
दातव्याः शोषयेन्मूषे क्षिप्त्वाऽप्यन्धे पुटो महान्।

देयः पश्चाद्ग्रहीतव्यं तच्च रूपेण सुप्रभम्।।
दीयन्ते माषमेकं तन्न्यूनं वापि विचार्य च।
पुनर्माषद्वयं दद्यादनुपानेन संयुतम्।।
खदिरासनरोहीतक्वाथं कुर्यात्सुपाचितम्।
छागमूत्रेण संपक्वमनुपानं शुभावहम्।।
मण्डलानां प्रणाशाय पूर्वोक्तं लिप्यते तथा।
मरिचाद्यं दिनं घर्मे स्थातव्यं तैलसेवनम्।।
तथ्ये पथ्येपि वर्तेत शिवभक्तिपरायणः।
उत्पथं गतपथ्यस्य भवेदुच्चाटनं ध्रुवम्।।
श्वयथुः सर्वदेहस्य शीघ्रमेव विनश्यति।
सप्तधातुगतं वापि साध्यासाध्यं तथैव च।।
वैद्यवृन्दैः परित्यक्तं त्यक्तं शास्त्रपरैरपि।
तत्कुष्ठं पूर्वकर्मोत्थं शीघ्रमेतद्विनाशयेत्।।
परं पथ्यविधिं कुर्याद्यथाप्रोक्तं तथा सदा।
योगिनां सततं पूजां कुर्यात्तेषां च तर्पणम्।।
गुरूणां महतां पूजां कुर्याच्च कामिताशनम्।
कुष्ठरुद्रेश्वरो नाम रसोऽयं भुवि दुर्लभः।।

प्रथम २-२ पल पारा और गन्धक लेकर कज्जली करें फिर उसमें सीसा, भस्म, बंग भस्म, तांबा भस्म, पीतल भस्म, कान्त लोह भस्म, लोह भस्म, चांदी भस्म, सोनामक्खी भस्म और मीठा तेलिया १-१ पल मिलाकर घोटें फिर उसे त्रिफला भांगरा, अमलतास, बिजौरा, खैर, महानीम और नीम के रस तथा आक और सेंड के दूध की पृथक् पृथक् ५-५ भावना देकर सुखाकर अन्ध मूषा में बन्द करके महापुट दें।

इसे १ माशे से २ माशे तक या न्यूनाधिक मात्रानुसार नीचे लिखे अनुपान के साथ सेवन करावें। एवं पथ्य पालन करावें।

अनुपान—खैर, असन और रोहितक (रुहेड़ा) की छाल को बकरी के मूत्र में पकाकर क्वाथ तैयार करें। इस के साथ उपरोक्त रस सेवन करावें और धूप में बैठाकर मरिचाद्य तैल की मालिश करावें।

इसके सेवन से इधर उधर जाने वाले पीप, समस्त शरीर की सूजन, साध्य, असाध्य, शास्त्रज्ञ वैद्यों से त्यक्त और पूर्व कर्मों के दोष से उत्पन्न कुष्ठ भी शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

इसके सेवन मे पथ्य पालन करना चाहिए और सदैव योगियों और गुरुजनों की पूजा तथा तर्पण करना चाहिये।

(१०३०) कुष्ठशैलेन्द्रो रसः
(लोहः) (र० र०। कुष्ठ०)

तालकं मरिचं कुष्ठं काचटङ्कनिशा वचा।
निर्गुण्डीं निम्बकरलाबीजं वा दलमेव वा।।
प्रत्येकं तोलकं चूर्णं चूर्णतुल्यन्तु गुग्गुलुः।
बाकुच्याःपलिकं ग्राह्यं पलं सूतं च गन्धकम्।।
लोहस्य द्विपलं चात्र त्रिफलाजलशोधितम्।
षण्मासा वटिका कार्या गोमूत्रेण निषेविता।।
कुष्ठशैलेन्द्रवज्राख्यो लोहोऽयममृतोपमः।
अष्टादशानि कुष्ठानि कण्डूदद्रुसकुष्ठकम्।।
विद्रधिं गण्डमालाञ्च गर्दभामुपगर्दभाम्।
प्लीहगुल्मोदरान्हन्ति कासं श्वासं हलीमकम्।।

कामलापाण्डुरोगांश्च श्वयथुंश्चामवातजम्।
चन्द्रनाथमुखाच्छ्रुत्वा गहनानन्दभाषितः।।
एष लोहरसो दिव्यो मेधायुर्बलदायकः।
कालदेशवयोवह्नीन्दृष्ट्वा वा त्रुटिवर्द्धनम्।।
अनुपानं प्रकर्त्तव्यं वातिके विश्वकण्डली।
पटोलमुद्गैःपित्ते च पर्पटेनापि वारिणा।।
अङ्कोठदलनीरेण चक्रमर्द्दरसैःकफे।
केवले वातिके पैत्ते गोमूत्रं परिवर्ज्जयेत्।।
मूत्रस्थाने प्रकर्त्तव्यं छागीदुग्धं न संशयः।।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुद्ध हरताल, कालीमिर्च, कूठ, कांच (या कांच लवण), सुहागेकी खील, हल्दी, वच, सम्भालु, नीम और करेले के बीज या पत्ते प्रत्येक १–१ तोला। गूगल १० तोले, बाबची ५ तोला, शुद्ध पारा ५ तोला शुद्ध गन्धक ५ तोला और त्रिफले के जल में शुद्ध किया हुवा लोह चूर्ण १० तोला लेकर प्रथम पारे और गन्धक की कज्जली करें फिर अन्य सब चीजों का चूर्ण मिलाकर ६–६ माशे की गोलियां बनावें।

इन्हें गोमूत्र के साथ सेवन करने से १८ प्रकार के कुष्ठ, खुजली, दाद, विद्रधि, गण्डमाला, गर्दभिका, तिल्ली, गुल्म, उदररोग, खांसी, श्वास, हलीमक, कामला, पाण्डु और आमवातज शोथ का नाश होता है एवं मेधा, आयु और बल की वृद्धि होती है।

काल, देश, आयु और अग्नि बल का विचार करके इसकी मात्रा घटाई बढ़ाई भी जा सकती है।

वायुकी प्रधानता में सोंठ और गिलोय के तथा पित्त की प्रधानता में पटोलपत्र और मूंग के यूष अथवा पित्त पापड़े के क्वाथ के साथ देना चाहिए, और कफ की प्रधानतामें अंकोट के पत्तों के रस और पंवाड़ के रस के साथ देना चाहिए। केवल वातिक या पैत्तिक रोगों में गोमूत्र न देकर बकरी का दूध देना चाहिए।

[१०३१] कुष्ठहरितालेश्वरो रसः

(र० सा० सं०। कुष्ठ०)

हरितालं भवेद्भागा द्वादशात्र विशुद्धितम्॥
गन्धकोपि तथा ग्राह्यो रसः सप्तोत्र दीयते।
कृष्णाभ्रकमपि श्लक्ष्णं खल्ले कृत्वा विमर्दयेत्।
अङ्कोठमूलनीरेण सेहुण्डीपयसाथवा॥
अर्कदुग्धेन संपिष्य करवीरजलेन च।
काठोदुम्बरनीरेण पेषणीयो रसो भृशम्॥
शुद्धताम्रकोटरे च क्षेपणीयो रसेश्वरः।
पञ्चगुञ्जाप्रमाणेन काठोदुम्बरवारिणा॥
कुष्ठाष्टादशसंख्येषु देय एष भिषग्वरैः।
अचिरेणैव कालेन विनाशं यान्ति निश्चयः।
पथ्यसेवा विधातव्या प्रणतिः सूर्यपादयोः।
साधकेन तथा सेव्यो रसो रोगौघनाशनः॥
पिप्पलीभिः समं दद्यात्कुष्ठरोगे रसेश्वरम्॥

शुद्ध हरताल १२ भाग, शुद्ध गन्धक १२ भाग और शुद्ध पारा ७ भाग लेकर कज्जली करके अङ्कोट की जड़ के रस, आक और सेहुंड के दूध और कनेरके तथा कटुमर (गूलरभेद) के रस की भावना देकर खूब घोटें। फिर उसे शुद्ध तांबे के मूषामें बन्द करके पुटपाक विधि से ६ पहर पकावें। इसे ५ रत्ती की मात्रानुसार कटूमर के रस और पीपल के चूर्ण के साथ सेवन करने से १८ प्रकार के कुष्ठों का अत्यन्त शीघ्र नाश होता है। औषधि सेवन काल में पथ्य अवश्य पालन करना चाहिए तथा सूर्य की वन्दना करनी चाहिए।

[१०३२] कुष्ठान्तको रसः (र. र.। कुष्ठ)

शुद्धसूतं द्विधा गन्धं निर्गुण्डीबाकुचीरसैः।
दिनैकं मर्दयेत्पाच्यं यामं लवणयन्त्रके॥
उद्धृत्य चूर्णयेत्तुल्यैस्त्रिफलाबाकुचीफलैः।
तुल्यांशं भृङ्गचूर्णञ्च सर्वमेकत्रपाचयेत्॥
पलाशखदिरक्वाथं गोमूत्रैर्लोहभाजने।
दिनकान्ते वटीं कुर्यान्निष्कैकं भक्षयेत्सदा॥
कुष्ठं विस्फोटकं हन्ति नाम्ना कुष्ठान्तको रसः।
मर्दनं भानुतैलेन आतपे कारयेत्सदा॥

शुद्ध पारा १ भाग और शुद्ध गन्धक २ भाग लेकर १–१ दिन संभालू और बाबची के रस में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घोटें फिर यथा विधि १ पहर तक लवणयन्त्र में पकावें । इसके पश्चात् स्वांग शीतल होने पर निकालकर चूर्ण करें और समान भाग त्रिफला, बावची तथा भांगरे का चूर्ण मिलाकर घोटें फिर १ दिन तक ढाक और खैरके क्वाथ तथा गोमूत्र में लोहे के बर्तन में पकाकर गोलियां बनावें ।

इसे २-३ रत्ती की मात्रानुसार सेवन करने से कुष्ठ और विस्फोटक का नाश होता है ।

कुष्ठी को धूप में बैठकर भानु तैल की मालिश करनी चाहिए ।

[१०३३] कुष्ठान्तकपर्पटी रसः

(र. र. स. । अ. २०)

पलैकं शुद्धसूतस्य कर्षैकं शुद्धगन्धकम् ।
गन्धतुल्यं मृतं ताम्रं सूतांशं मर्दयेद्विषम् ॥
सर्वतुल्यं पुनर्गन्धं दत्वा किञ्चिद्विघट्टयेत् ।
घृताभ्यक्ते लोहपात्रे पचेद्यावद्द्रवीभवेत् ॥
रम्भापत्रे पटे वाथ पातयेत्पर्पटीं तदा ।
माषैकं चूर्णितं खादेद्गजचर्म नियच्छति ॥
निष्कैकं बाकुचीचूर्णं लेहयेदनुपानकम् ॥

शुद्ध पारा ५ तोला, शुद्ध गन्धक १।। तोला, ताम्र भस्म १। तोला और शुद्ध मीठातेलिया ५ तोला लेकर मर्दन करें फिर उसमें सबके बराबर शुद्ध गन्धक मिलाकर घी चुपड़ी हुई लोहे की कड़ाही में डालकर (मन्दाग्नि पर) पकावें । जब वह पिघल जाय तो उसे केले के पत्ते या कपड़े पर ढालकर पर्पटी बनावें ।

इसे १ माशे की मात्रानुसार सेवन करने से गज चर्म का नाश होता है ।

अनुपान—दवा खाने के बाद ५ माशा बावची का चूर्ण चाटें ।

[१०३४] कुष्ठेभकेसरी रसः (रसा. सा.)

अविमूत्रेण संस्वेद्य निरालम्बं च तालकम् ।
अतिचूर्णं प्रकर्तव्यं मृदुलं च भवेद्यथा ॥
पश्चान्महति खल्वे तत्क्षिप्त्वा मद्यं सुवर्णजे ।
रसेकूष्माण्डजेनापि गोजिह्वारसमर्दितम् ॥
दिनद्वयं द्वयं सार्द्धं प्रत्येकेन विमर्दयेत् ।
अर्कदुग्धेन तत्तालं वज्रीदुग्धेन मर्द्यते ॥
बाकुच्यागुञ्जिकायाश्च भल्लातानां तथैव च ।
एषां तैलेन कर्तव्यं मर्दनं तालके भृशम् ॥
दिनपञ्चावधिर्यावत्तैस्तैलैरेव मर्दयेत् ।
आरोप्य काचकुम्भेऽमुं वह्निः स्यात्पञ्चयामकम् ॥
उत्तार्य च पुनः सार्कं तेन तैलेन मर्द्यते ।
वज्रस्य खोटिकाकारं तले तस्य भविष्यति ॥
कूप्याश्च दृश्यते रूपं रूप्यस्येव न संशयः ।
अधस्तात्तालजं सत्त्वं रसभस्मसमं च यत् ॥
ग्राह्यं देयं द्विगुञ्जाभं गलत्कुष्ठनिवृत्तये ।
काकोदुम्बरिकामूलवारि श्वित्रेऽनुपाययेत् ॥
"केवलं तालजं सत्त्वं ताम्रे चाष्टादशांशिके ।
भागमेकमिदं दद्यात्ताम्रं तारं भविष्यति" ॥
वनस्य विटपाकारे दृश्यते वनदण्डिकम् ।
वनदण्डिसमैः पत्रैः किञ्चिद्दीर्घं च तद्भवेत् ॥
ग्राह्यं तन्मूलकं चूर्णं वटिकाः कोलसंमिताः ।
प्रत्यहं दीयते चैका क्षणं स्थित्वा विरिच्यते ॥
अतीव रेचयत्येषा कुष्ठनाशे महौषधम् ।
एकस्मात्सप्तकादूर्ध्वं गलत्कुष्ठं विशोषयेत् ॥
क्रमिलं घोररूपं च दुर्निरीक्ष्यं च यद्भवेत् ।
अष्टादशसु कुष्ठेषु यदसाध्यं भिषग्वरैः ॥
योगोऽयं नाशयत्येव रसः कुष्ठेभकेसरीः ।

हरताल को दोलायन्त्र द्वारा भेड के मूत्रमें स्वेदन करके अत्यन्त महीन चूर्ण करें फिर उसे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बड़े खरल में डालकर धतूरे, पेठे और गोभी के रस तथा आक और सेंडके दूधमें २-२ दिन खूब घोटें। फिर उसे बाबची, गुन्जा (चौंटली) और भिलावे के तेल में ५-५ दिन तक घोटे। इसके पश्चात् उसे शीशी में भरकर (बालुका यन्त्र द्वारा) पांच पहर की अग्नि दें। फिर निकालकर उपरोक्त तेलों में घोटें। (और उसी प्रकार पकावें) जब शीशी के तल भाग में वङ्ग की खोटिका के समान सफ़ेद वर्ण दीखने लगे तो (स्वांग शीतल होने पर) शीशी के नीचे लगे हुवे पारे की भस्म के समान हरताल के सत्व को निकाल लें।

इसे २ रत्ती की मात्रानुसार सेवन कराने से गलकुष्ठ का नाश होता है।

"इसे श्वेत कुष्ठ में कठूमरकी जड़ के रस के साथ देना चाहिए। १ भाग हरताल सत्वके योग से १८ भाग तांबा चांदी होजाता है"।

बन में "वनदण्डि" नामक एक वृक्ष होता है, उसके पत्ते सोना पाठा के समान उससे कुछ बड़े होते हैं। उसकी जड़ का चूर्ण करके ७॥-७॥ माशे की गोलियां बनावें। इनमें से प्रति दिन एक गोली खिलावें। इससे अत्यन्त विरेचन होकर १ सप्ताह के बाद गलकुष्ठ सूखने लगता है और कृमियुक्त घोररूप, घृणित तथा वैद्यों से असाध्य अठारह प्रकार के कुष्ठ नष्ट हो जाते हैं।

[१०३५] कृमिकालकूटो रसः

(र. चि. म. । ३ स्तबकः; रसा. सा.)

सूतेन्द्रगन्धाऽभ्रकलोहभस्म
वर्धिष्णुमात्रं प्रथमाद्द्वितीयं
विषं रसेन्द्रेण समं विडङ्गं
समस्ततुल्यं कूटजत्वगर्धा।
संमर्दितोऽयं क्रिमिकालकूटः
कर्षाऽर्द्धमात्रः क्रिमिपीडिताय॥

हिंगुलोत्थपारद एक तोला, शोधित आमलासार गन्धक दो तोले, अभ्रक भस्म तीन तोले, लोह भस्म चार तोले शुद्ध किया हुआ बच्छनागविष एक तोला, बायबिडंग पांच तोले, कुड़े की छाल ढाई तोले। इन चीज़ों में से प्रथम पारद गन्धक की कज्जली करने के बाद अभ्रक भस्म और लोह भस्म को भी डाल कर खूब घोटे। बादमें सब चीज़ों को कूट कपरछन करके इसे कज्जली में डाल कर मर्दन करे। जब सब चीज़ें मिल जांय तब शीशी में भर कर रख छोड़े, यह क्रिमि रोग के नाश करने के लिये कालकूटके समान है। इसकी मात्रा छः माशे तक की है शहद के साथ या गरम पानी के साथ दे सकते हैं।

[१०३६] कृमिकालानलो रसः

(र. रा. सुं. । कृमि.)

विडङ्गं द्विपलञ्चैव विषचूर्णं तदर्धकम्।
लोह चूर्णं तदर्धञ्च तदर्धं शुद्धपारदम्॥
रस तुल्यं शुद्धगन्धं छागीदुग्धेन पेषयेत्।
छायाशुष्कां वटीं कृत्वा खादेत् षोडशरक्तिकाम्॥
धान्यजीरानुपानेन नाम्ना कालानलो रसः।
उदरस्थं कृमीन् हन्याद् ग्रहण्यर्शः समन्वितम्॥
अग्निदः शोथशमनो गुल्मप्लीहोदरान् जयेत्।
गहनानन्दनाथेन भाषितो विश्वसंपदे॥

वायबिडंग १० तोला, शुद्ध मीठा तेलिया ५ तोला, लोह भस्म २॥ तोला, शुद्ध पारा १। तोला और शुद्ध गन्धक १। तोला लेकर बकरी के दूध में घोट कर गोलियां बनाकर छाया में सुखावें।

इन्हें धनिये और ज़ीर के चूर्ण के अनुपान

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के साथ १६ रत्ती की मात्रानुसार सेवन करने से उदरस्थ कृमि, संग्रहणी, बवासीर, शोथ, गुल्म, तिल्ली और उदर रोगों का नाश होता तथा अग्नि प्रदीप्त होती है।

[१०३७ कृमिकाष्ठानलो रसः।

(र. सा. सं. । कृमि.)

विशुद्धं पारदं गन्धं वङ्गं तालं वराटकम्।
मनःशिला कृष्णकाचं सोमराजी विडङ्गकम्॥
दन्तीबीजञ्च जैपालं शिला टङ्कण चित्रकम्।
कर्षमात्रन्तु प्रत्येकं वज्रीक्षीरेण मर्दयेत्॥
कलायसदृशीं कृत्वा वटिकां भक्षयेत्ततः।
कृमिकाष्ठानलो नाम रसोयं परिनिर्मितः।
श्लैष्मिके श्लेष्मपित्ते च श्लेष्मवाते च शस्यते॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, वङ्ग भस्म, हरताल भस्म, कौड़ी भस्म, शुद्ध मनसिल, काले रंग का कांच (भस्म), बावची, बायबिडंग दन्ती के बीज, जमालगोटा, शुद्ध शिलाजीत, सुहागे की खील और चीता १।-१। तोला लेकर थोहर के दूध में घोट कर मटरके समान गोलियां बनावें।

इसके सेवन से कफज, कफपित्तज और कफवातज क्रिमियों का नाश होता है।

[१०३८] कृमिकुठारो रसः (१)

(र. रा. सुं. । कृमि.)

कर्पूरं चाष्टभागं च कुटजश्चैक भागकः।
तत्समानं त्रायमाणमजमोदाविडङ्गकम्॥
हिङ्गुलं विषभागं च तत्समानं च केशरम्।
सर्वं दृढं च संमर्द्य भृङ्गराजरसैर्दिनम्॥
पालशबीजसंमिश्रमुन्दरीरसभावितम्।
ब्राह्मीरसं ततो दत्वा सिद्धत् कृमिकुठारकः॥
वल्लमात्रां वटीं कृत्वा दद्याद्धुमसमन्विताम्।
कुर्यात्कृमिविनाशं च एवं सप्तविधं दृढम्॥

कपूर ८ भाग, इन्द्रजौ, त्रायमाणा, अजमोद, बायबिड़ंग, शुद्ध शिंगरफ़, शुद्ध मीठातेलिया और केशर १-१ भाग लेकर चूर्ण करके १ दिन भांगरे के रस में अच्छी तरह घोटें फिर ढाकके बीज (१ भाग) मिलाकर मूसाकन्नी और ब्राह्मी के रस में घोटकर ३-३ रत्ती की गोलियां बनावें।

इन्हें धतूरे के साथ सेवन कराने से ७ प्रकार के कृमि नष्ट होते हैं।

[१०३९] कृमिकुठारः (२) (यो. र. कृमि.)

विश्वं रामठसैन्धवाग्निमरिचं पथ्यावचागुग्गुलु-
बोलं रात्रिविडङ्गकुष्ठलशुनं गन्धः कुबेराक्षकः।
इन्द्रोद्भूतपलाशबीजखदिराजाजीकणादीप्यकं
सौवर्चं मधुना गुटी कृमिकुठाराह्वा रुजाजन्तुनुत्

सोंठ, हींग, सेंधा, चीता, कालीमिर्च, हैड़, बच, गूगल, बीजाबोल (मुरमुकी) हल्दी, बायबिड़ंग, कूठ, ल्हसन, शुद्ध गन्धक, करंजवा, इन्द्रजौ, ढाकके बीज, खैर, ज़ीरा, पीपल, अजवायन और सौंचल (काला) नमक बराबर २ लेकर चूर्ण करके शहद के साथ गोलियां बनावें।

इनके सेवन से कृमि नष्ट होते हैं।

[१०४०] कृमिघ्न रसः

(र. र. स. । अ. २०)

रसस्य निष्कमादाय गन्धकं तत्समं कुरु।
ताम्रं देहि तदर्धं च पश्चाङ्गशाकवारिणा॥
मर्द्यादेकदिनं रात्रौ क्षिपेत्तत्रैव यत्नतः।
क्षीरिणीक्वाथमादाय तथा कुरु दिनान्तरे॥
दत्वा लघुपुटं पश्च जयपालान्विमर्दयेत्।
देहि गुंजाद्वयं चास्य साज्यं शूलच्छिदे तथा॥

शुद्ध पारा ५ माशा, शुद्ध गन्धक ५ माशा और ताम्र भस्म २॥ माशा लेकर १ दिन शाक-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वृक्ष (शागोन) के पंचांग के रस में घोटकर रात भर उसीमें भीगा रहने दें। फिर दूसरे दिन सत्यानासी (रुस) के रसमें घोटकर रातभर उसीमें भीगा रहने दें। इसके पश्चात् यथा विधि लघुपुट दें, फिर उसमें पांच दाने शुद्ध जमालगोटे के मिलाकर घोटें।

इसे दो रत्ती प्रमाण घी के साथ देने से कृमि रोग और शूल नष्ट होता है।

[१०४१] कृमिदावानलो रसः

(र. रा. सुं। कृमि.)

हिङ्गुलः कर्षमानं स्याद्दन्ती बीजं तदर्धकम्।
अर्कक्षीरेण संमर्द्य दापयेद्भावना दश॥
माषमात्रं प्रदातव्यमर्कमूलरसं पुनः।
प्रपिबेद्धिङ्गुसंयुक्तं कृमिजालनिपातनम्॥
कृमिदावानलो नाम नाशयेत्कृमि सत्वरम्॥

शुद्ध शिंगरफ़ १। तोला और दन्ती के बीज ७॥ माशा लेकर आक के दूध की १० भावना दें।

इसे एक माशे * की मात्रानुसार सेवन कराने से कृमि अत्यन्त शीघ्र नष्ट होजाते हैं। अनुपान— दवा खाने के बाद आककी जड़ के रस मे हींग का चूर्ण डाल कर पिये।

[१०४२] कृमिधूलिजलप्लवो रसः

(र. रा. सुं.। कृमि.)

पारदं गन्धकं शुद्धं वङ्गं शङ्खं समं समम्।
चतुर्णां योजयेत्तुल्यं पथ्याचूर्णं भिषग्वरः॥
दण्डयन्त्रेण निर्मथ्य पटोलस्वरसं क्षिपेत्।
कार्पासबीजसदृशीं वटिकां कुरुयत्नतः॥
त्रिवटीं भक्षयेत्प्रातः शीततोयं पिबेदनु।
केवलं पैत्तिके योज्यःकदाचिद्वातपैत्तिके॥
श्रीमद्गहननाथोक्तःकृमिधूलिजलप्लवः॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, वङ्ग भस्म और शंख भस्म १-१ भाग तथा हैड़का चूर्ण ४ भाग लेकर दण्डयन्त्र से कूटकर पटोलपत्र के स्वरसकी भावना देकर कपास के बीज (बिनौले) के बराबर गोलियां बनावें।

इन्हें केवल पैत्तिक कृमिरोग में और कभी २ वातपित्तज कृमि रोग में ठंडे पानी के साथ ३ गोली की मात्रा से प्रयोग करना चाहिये।

* मात्रा अधिक प्रतीत होती है। अनु०

[१०४३] कृमिमुद्गरो रसः

(र. रा. सुं.। कृमि)

क्रमेण वृद्धं रसगन्धकाज-
मोदाविडङ्गं विषमुष्टिका च।
पलाशबीजञ्च विचूर्णमस्य
निष्कप्रमाणं मधुनावलीढम्॥
पिबेत्कषायं घनजं तदूर्ध्वं
रसोऽयमुक्तः कृमिमुद्गराख्यः।
कृमीन्निहन्ति कृमिजांश्च रोगान्
संदीपयत्याग्निमयंत्रिरात्रात्॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, अजमोद ३ भाग, बायबिडंग ४ भाग, शुद्ध कुचला ५ भाग, और ढाकके बीज ६ भाग, लेकर चूर्ण करे।

इसे २ रत्ती की मात्रानुसार शहद में मिला कर चाटें और ऊपर से नागरमोथे का क्वाथ पियें। इसे ३ दिन तक सेवन करने से कृमि और उनसे उत्पन्न होने वाले रोग नष्ट होते तथा अग्नि प्रदीप्त होती है।

[१०४४] कृमिरोगारि रसः

(र. रा. सुं.। कृमि, रसे. सा. सं, धन्व.)

सूतं गन्धं मृतं लोहं मरिचं विषमेव च।
धातकी त्रिफला शुण्ठी मस्तकी सरसाञ्जनम्॥
त्रिकटुं मुस्तकं पाठा बालकं बिल्वमेव च।
भावयेत्सर्वमेकत्र स्वरसैर्भृङ्गजैस्ततः।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वराटिका प्रमाणेन भक्षणीयो विशेषतः ।
कृमिरोगविनाशाय रसोऽयं कृमिनाशनः ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोह भस्म, कालीमिर्च, शुद्ध मीठातेलिया, धायके फूल, त्रिफला, सोंठ, मस्तगी, रसौत, त्रिकुटा, नागरमोथा, पाठा, सुगन्धबाला और बेल सब चीज़ें समान भाग लेकर भांगरे के रसमें घोटें ।

इसे ३ रत्ती प्रमाणमें सेवन करने से कृमि रोग नष्ट होता है ।

[१०४५] कृमिविनाशनो रसः

(र. रा. सुं. । कृमि.)

कृमिघ्न किंशुकारिष्टबीजं सरसभस्मकम् ।
वल्लद्वयं चाखुपर्णीरसैः कृमिविनाशनः ॥

बायविड़ङ्ग, ढाक के बीज, नीम के बीज (निबौली) और रससिन्दूर बराबर बराबर मिलाकर ६ रत्ती की मात्रानुसार मूसाकर्णी (चूहाकन्नी) के रसके साथ सेवन करने से कृमि रोग नष्ट होता है।

[१०४६] कृमिहरो रसः ।

(र० सा० सं० । कृमि०)

शुद्धसूतमिन्द्रयवमजमोदा मनःशिला ।
पलाशबीजं गन्धश्च देवदाल्या द्रवैर्दिनम् ॥
संमर्द्य भक्षयेन्नित्यं शालपर्णीरसैः सह ।
सितायुक्तं पिबेच्चानु क्रिमिपातो भवन्त्यलम् ॥

शुद्ध पारा, इन्द्रजौ, अजमोद, शुद्ध मनसिल, ढाक के बीज ओर शुद्ध गन्धक, बराबर बराबर लेकर १ दिन देवदाली के रस में घोटें ।

इसे मिश्रीयुक्त शालपर्णी के रस के साथ सेवन करने से कृमि रोग नष्ट होता है।

[१०४७] कृष्णमाणिक्यरसः

(र. र. स. अ. २०; र. रा. सुं; र. का. धे.)

हेममाक्षिकगन्धाश्मतीक्ष्णकान्ताभ्रकं समम् ।
द्विगुणं हरवीर्यं च दशमांशं च सक्तुकम् ॥
मंजिष्ठादिकषायेण बालुकायन्त्रपाचितम् ।
कृष्णमाणिक्यसंकाशमिदं भस्मैव कुष्ठजित् ॥

सोना मक्खी भस्म, शुद्ध गन्धक, तीक्ष्णलोह भस्म, कांतलोह भस्म, और अभ्रक भस्म, १-१ भाग शुद्ध पारा २ भाग तथा सक्तुक (विषभेद) दशवां भाग लेकर यथाविधि बालुकायन्त्र में पकावें ।

इसें मञ्जिष्ठादि क्वाथ के साथ सेवन करने से कुष्ठ का नाश होता है।

[१०४८] कृष्णाद्यं लौहम्

(र. र; यो. र. शूले)

कृष्णाभयालोहचूर्णं लेहयेन्मधुसर्पिषा ।
परिणामोद्भवं शूलं सद्यो हन्ति त्रिदोषजम् ॥

पीपल, हैड़, और लोहे के चूर्ण को शहद और घी में मिलाकर चटाने से त्रिदोषज परिणामशूल अत्यन्त शीघ्र नष्ट होता है ।

[१०४९] कोलादिमण्डूरम्

(भै. र; वृ. मा; ग. नि. च. द; व. से; शू०)

कोलाग्रन्थिकशृङ्गवेरचपलाक्षारैः समं चूर्णितम्
मण्डूरं सुरभीजलेऽष्टगुणिते पक्त्वाथ सान्द्रीकृतम् ॥
तत्खादेदशनादिमध्यविरतौप्रायेण दुग्धान्नभुग्
जेतुं वातकफामयान्परिणतौशूलञ्च शूलानिच॥

चव्य, पीपलामूल, सोंठ, पीपल और जवाखार १-१ भाग तथा मण्डूर का चूर्ण सबके बराबर लेकर आठगुने गोमूत्र में पकाकर गाढ़ा करके रक्खें।

इसे भोजन के आदि मध्य और अन्तमें सेवन करने तथा प्रायः दुग्धान्न का आहार करने से वातकफज रोग, परिणाम शूल और अन्य प्रकार के शूलों का नाश होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[१०५०) कांस्यपिष्टिका रसः
(र. रा. सुं. पाण्डु.)

कांस्येन पिष्टिकां कृत्वा देवदालीरसप्लुताम् ।
तीक्ष्णगन्धरजोयुक्ता युक्त्या हन्यात् हलीमकम्॥

कांसी भस्म को देवदाली के रस में पीस कर उस में तीक्ष्णलोह की भस्म और शुद्ध गन्धक बराबर बराबर मिलाकर पीसकर यथोचित विधि से सेवन किया जाए तो हलीमक रोग नष्ट होता है।

[१०५१] कांस्यभस्म
(आ. वे. प्र. । अ. १२)

शोधनम्—

पत्तलीकृत पत्राणि कांस्यरीत्योः प्रतापयेत् ।
निपिञ्चेत्तप्ततप्तानि तैले तक्रे च काञ्जिके ॥
गोमूत्रे च कुलत्थानां कषाये च त्रिधा त्रिधा।
एवं कांस्यस्य रीतेश्च विशुद्धिः संप्रजायते ॥

विशेष शोधनम्—

गोमूत्रेण पचेद्यामं कांस्यपत्राणि बुद्धिमान् ।
दृढाग्निना विशुध्यन्ति पक्कान्यम्लद्रवेऽपि वा ॥

मारणम्———

अर्कक्षीरेण संपिष्टो गन्धकस्तेन लेपयेत् ।
समेन कांस्यपत्राणि शुद्धान्यम्लद्रवैर्मुहुः ॥
ततो मूषा पुटे धृत्वा पुटेद्गजपुटेन च ।
एवं पुटद्वयाद् कांस्यं रीतिश्च म्रियते ध्रुवम् ॥

साधारण शुद्धि—कांसी और पीतलके बारीक पत्रोंको अग्निमें तपा तपा कर तेल, तक्र, काञ्जी गोमूत्र और कुलथी के क्वाथ में ३-३ बार बुझानेसे कांसी और पीतल शुद्ध होजाती है।

विशेष शुद्धिः—कांसी के पत्रों को गोमूत्र और काञ्जी में तेज आग पर १-१ पहर तक पकाने से वह शुद्ध होजाते हैं।

भस्मविधि—कांसी के पत्रों पर आक के दूध और काञ्जी (या नींबू के रस) में घुटे हुवे समान भाग गन्धक का लेप करके मूसा में बन्द करके गजपुट देने से २ पुट में कांसी की भस्म होजाती है। पीतलकी भस्म बनानेकी भी यही विधि है।

[१०५२] क्रव्याद रसः
(र. रा. सुं; र. र. स. अ. १९, यो. र. अजी. र. च.; रसे. चि. म. ९ स्तब्कः)

पलं रसस्य द्विपलं बलेःस्या-
च्छुल्वायसी चार्द्धपलप्रमाणे ।
संचूर्ण्य सर्वं द्रुतमग्नियोगा-
देरण्डपत्रेऽथ निवेशनीयम् ॥
कृत्वाथ तां पर्पटिकां विदध्या-
ल्लोहस्य पात्रे त्ववपूतमस्मिन् ।
जम्बीरजं पक्करसं पलानां
शतं नियोज्याग्निमथाल्पमल्पम् ॥
जीर्णे रसे भावितमेतदेतैः
सुपञ्चकोलोद्भववारिपूरैः ।
सवेतसाम्लैः शतमत्र योज्यं
समं रजष्टङ्कणजं सुभृष्टम् ॥
विडं तदर्द्धं मरिचं समञ्च
ततस्सवारं चणकाम्लकेन ।
क्रव्यादनामा भवति प्रसिद्धो
रसस्तु मन्थानकभैरवोक्तः ॥
माषद्वयं सैन्धवतक्रपीत-
मेतत्सुधन्यं खलु भोजनान्ते ।
मात्रातिरिक्तान्यपि सेवितानि
यामद्वयाज्जारयति प्रसिद्धः ॥
कार्श्यस्थौल्यनिबर्हणोगरहरः सामार्तिनिर्णाशनो
गुल्मप्लीहनिषूदनो ग्रहणिकाविध्वंसमः सैसमः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वातश्लेष्मनिबर्हणः श्रमहरः शूलार्त्तिशूलापहो।
वातग्रन्थिमहोदरापहरणः क्रव्यादनामा रसः॥

शुद्ध पारा ५ तोला, शुद्ध गन्धक १० तोला एवं तांबा और लोह भस्म २॥–२॥ तोला लेकर पीसकर कज्जली करें फिर अग्नि पर पिघला कर अरण्ड के पत्रपर ढाल कर यथा विधि पर्पटी बनावें। फिर इसे लोहे के बरतन में पक्के जम्बीरी नींबू के ६। सेर रस में मन्दाग्नि पर पकावें।

जब रस सूख जाय तो उसे पंचकोल, बिजौरा और अमलवेतके ६। सेर रसकी भावना देकर उस में सुहागे की खील सब के बराबर, बिडलवण सुहागे से आधा और काली मिर्च सुहागे के (या सब के) बराबर मिलाकर चणकाम्ल की सात भावना दें।

इसे २ माशे की मात्रानुसार सेंधानमक युक्त तक्र के साथ भोजन के बाद सेवन करना चाहिये।

इसके सेवन से मात्रा से अधिक किया हुवा भोजन भी २ पहर में पच जाता है।

यह कृशता, स्थूलता, विषदोष, आम, गुल्म, तिल्ली, संग्रहणी, वायु, कफ, थकान, शूल, वातग्रन्थि और उदर रोग नाशक तथा स्रंसन (मलको पकाकर नीचे की ओर प्रवृत्त करने वाला) है।

ख

अथ खकारादि कषायप्रकरणम्

[१०५३] खदिरविधानम्

(सु. सं. । चि. अ. १०)

अतःखदिरविधानमुपदेक्ष्यामः। प्रशस्तदेशजातमनुपहतं मध्यमवयसं खदिरं परितःखानयित्वा मध्यममूलं छित्त्वाऽयोमयं कुम्भं तस्मिन्नन्तरे निदध्याद्यथा रसग्रहणसमर्थो भवति, ततस्तं गोमयमृदावलिप्तमवकीर्य्येन्धनैर्गोमयमिश्रैरादीपयेत्, यथास्य दह्यमानस्य रसः स्रवत्यधस्ताद्यदा जानीयात् पूर्णं भाजनमित्यथैवमुद्धृत्य परिस्राव्य रसमन्यस्मिन् पात्रे निधायानुगुप्तं निदध्यात्ततोयथायोगं मात्रामामलकरसमधुसर्पिर्भिःसंसृज्योपयुञ्जीत, जीर्णेभल्लातक विधानवदाहारः परिहारश्च, प्रस्थे चोपयुक्ते शतं वर्षाणामायुषोऽभिवृद्धिर्भवति। खदिरसारतुलामुदकद्रोणे विपाच्य षोडशांशावशिष्टमवतार्य्यानुगुप्तं निदध्यात्, तमामलकरसमधुसर्पिर्भिःसंसृज्योपयुञ्जीत। एष एव सर्ववृक्षसारेषु कल्पः। खदिरसारचूर्णतुलां खदिरसारक्वाथमात्रां वा प्रातः प्रातरुपसेवेत खदिरसारक्वाथसिद्धमाविकं वा सर्पिः।

जो उत्तम देश में उत्पन्न हुवा हो, कीड़े मकौड़ों आदि की कृपा से सुरक्षित हो, न वृद्ध हो और न बालक ऐसे मध्यम वयस्क (जवान) खैर के वृक्षके चारों ओर की मिट्टी हटाकर उसकी जड़के भीतर एक गढ़ा करके उसमें लोहे का घड़ा रख दें कि जिससे वृक्ष का रस (कटे हुवे स्थान से) टपक टपक कर घड़े में जमा होता रहे। फिर उस वृक्ष के उपर (जड़ के चारों ओर) गोबर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिली हुई मिट्टी का लेप करें और उसके चारों ओर गोबर युक्त ईंधन डालकर अग्नि लगा दें। इस क्रिया से वृक्ष का रस निकल कर घड़े में जमा होगा। जब घड़ा भर जाय तो उस रस को छान कर किसी दूसरे बरतन में भर कर गुप्त (सुरक्षित) रक्खें।

इसे यथोचित मात्रानुसार आमले का रस, शहद और घी मिलाकर सेवन करना चाहिये और औषधि पच जाने पर भल्लातकविधान के समान आहार परिहार (परहेज़) आदि करना चाहिए।

यह रस १ सेर सेवन किया जाए तो १०० वर्षकी आयु प्राप्त होती है।

उपरोक्त विधान के अभाव में ६। सेर खैर-सार को ३२ सेर पानी में पकावें। जब सोलहवां भाग शेष रह जाय तो उतार कर छानकर गुप्त रक्खें और आमले का रस तथा शहद और घी मिलाकर सेवन करें। समस्त वृक्षसारों के कल्प की यही विधि है। ६। सेर पर्यन्त खैरसार का चूर्ण या खैर का क्वाथ यथोचित मात्रानुसार प्रातः काल सेवन करना चाहिये अथवा खैर सार के क्वाथ से मेड़ का घी सिद्ध करके सेवन करना चाहिए। इससे समस्त कुष्ठ नष्ट होते हैं।

[१०५४] खदिररादिकषायः

(ग. नि. । प्रमेह)

खदिर कदरपूगक्काथं क्षौद्राह्वये पिबेत् ।

क्षौद्र प्रमेह (मधुमेह) में खैर, सफेद खैर (या कीकर) और सुपारी का क्वाथ पीना चाहिए।

[१०५५] खदिरादिक्वाथः

(वृ. नि. र. ग. णि; । क्रमि.)

खदिरः कुटजः पिचुमन्दवचा-
त्रिकटुत्रिफलात्रिवृतासहितम् ।
पशुमूत्रयुतं पिब सप्त दिनं
कृमिकोटिशतान्यपि हन्त्यचिरात् ॥

खैर, इन्द्र जौ, नीम, बच, त्रिकटा, त्रिकुटा, त्रिफला और निसोत को गोमूत्र में पकाकर सात दिन तक पीने से अत्यन्त प्रवृद्ध क्रिमि भी शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

[१०५६] खदिराष्टकम्

(वृ. यो. त. । १२६ त; ग. नि. विसर्प;
यो. चि. म. अ. ४)

खदिरत्रिफलारिष्टपटोलामृतवासकैः ॥
क्वाथोऽष्टकाङ्गो जयति रोमान्तिकमसूरिकाः ।
कुष्ठविस्फोटवीसर्पकण्ड्वादीनपि पानतः ॥

खैर, त्रिफला, नीम, पटोलपत्र, गिलोय और वांसे का क्वाथ रोमान्तिका, मसूरिका, कुष्ठ, विस्फोटक, वीसर्प, खुजली आदिका नाश करता है।

[१०५७] खदिरोदकम्

(यो. र. । कुष्ठे. वृ. यो. त. १२० त.)

प्रलेपोद्वर्तनस्नानपानभोजनकर्मसु ।
शीलितं खादिरं वारि सर्वत्वग्दोषनाशनम् ॥

खैरके पानी (क्वाथ) का प्रयोग करनेसे समस्त प्रकारके त्वग्दोष (चमड़ी के रोग) नष्ट हो जाते हैं।

[१०५८] खर्जूरादिकषायः(ग. नि. । प्रमे.)

.... **सक्षौद्रो रक्तप्रमेहजित् ।**
क्वाथः खर्जूरकाश्मर्यतिन्दुकास्थ्यमृताकृताः ॥

खजूर, खम्भारी और तेंद के बीजों का क्वाथ शहद डालकर पीने से रक्तप्रमेह का नाश होता है।

[१०५९] खर्जूरादिक्वाथः(ग. नि. । ज्व.)

खर्जूरोशीरमृद्वीकापद्मकं पद्मकेसरम् ।
धात्री परूषकं व्याघ्री बला मधुकचन्दनम् ॥
मधूकपुष्पं काश्मर्यं शीतपाकी घनं तथा ।
पक्त्वा पर्युषितं रात्रौ स्थितं मृद्भाजने नवे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाजाचूर्णप्रतीवापं शर्करामधुसंयुतम् ।
जातीपुष्पाधिवासं तु पिबेत्तृट्छर्दिमूर्छितः ॥
दाहभ्रममदाविष्टो वातपित्तज्वरातुरः ।
पीत्वा निर्वृत्तिमाप्नोति दीप्तं गृहमिवाम्बुभिः॥

खजूर, खस, मुनक्का, पद्माक, कमलकेसर, आमला, फालसा, कटेली, खरैंटी, मुल्हैठी, चन्दन, महुवेके फूल, खम्भारी, काकोली और नागरमोथे का क्वाथ बनाकर रात को मिट्टी के नवीन बरतन में भरकर रख दें फिर प्रातः काल उसे चमेली के फूलों से सुगन्धित करके उसमें खीलों के चूर्ण तथा खांड और शहद का प्रक्षेप डालकर पीनेसे पिपासा, छर्दि, मूर्छा, दाह, भ्रम, मद और वातपित्त ज्वर नष्ट होता है।

[१०६०] खर्जूरादिमन्थः

(शा. ध. । म. खं. अ. ३; यो. र; पाना.)

खर्जूरदाडिमं द्राक्षा तिन्तिडीकाम्लिकामलैः॥
सपरूषैः कृतो मन्थः सर्वमद्यविकारनुत् ॥

खजूर, अनार, दाख, तिंतिड़ीक, इमली, आमला और फालसे का मन्थ बनाकर पीने से समस्त मद्यविकार नष्ट होते है ।

अथ खकारादि चूर्णप्रकरणम्

[१०६१] खण्डसमं चूर्णम् (ग.नि.। चूर्णा.)

त्रिफलाव्योषबिल्वाब्दपिप्पलीमूलचित्रकैः ।
त्वगेलापत्रचविकातिन्तिडीकाम्लवेतसैः ॥
समांशं धातुमाक्षीकं सर्वैस्तुल्या सिता भवेत्।
भक्षयित्वा यथा सम्यगनुपानं प्रयोजयेत् ।
चूर्णितं मधुना लेह्यं वटकान् वा समाक्षिकान्।
नाशयेत्कुष्ठमालस्यं प्रमेहोदरकामलाम् ॥
पाण्डुत्वं ग्रहणीदोषं हलीमकशिरोरुजम् ।
प्रसेकमरुचिं मूर्छां हृल्लासं मन्दवह्निताम् ॥
रक्तपित्तं परीसर्पं श्वयथुं चाङ्गतापताम् ।
जनयेत्प्राणमुत्साहं बलवर्णस्थिराङ्गताम् ॥
चूर्णं खण्डसमं नाम समस्तान्नाशयेद् गदान् ॥

त्रिफला, त्रिकुटा, बेल, नागरमोथा, पीपलामूल, चीता, दारचीनी, इलायची, तेजपात, चव्य, तिंतिड़ीक और अम्लवेत १–१ भाग, सोनामक्खी भस्म सब के बराबर और इस सब के बराबर खांड लेकर चूर्ण करें ।

इसे यथोचित अनुपान के साथ शहद मिला कर चाटें या शहद में वटक बनाकर सेवन करें।

इसके सेवन से कुष्ठ, आलस्य, प्रमेह, उदर-रोग, कामला, पाण्डु, ग्रहणीविकार, हलीमक, शिर-पीड़ा, प्रसेक (मुंह से पानी आना) अरुचि, मूर्च्छा, जी मचलाना, अग्निमांध, रक्तपित्त, विसर्प, सूजन और संताप का नाश होता तथा उत्साह, बल, वर्ण और स्थिराङ्गता (अङ्गो की दृढ़ता) प्राप्त होती है +

[१०६२] खदिरादिपुष्पयोगः

(ग. नि. । र. पि.)

खदिरस्य प्रियङ्गूनां कोविदारस्य शाल्मलेः ।
पुष्पचूर्णानि मधुना लिह्याद्वा रक्तपित्तनुत् ॥

खैर, फूलप्रियंगु, कचनार और सेंभल के

+ यदि इसमें सोनामक्खी तक सब चीजों के बराबर लोह भस्म और फिर उस सब के बराबर मिश्री मिलाई जाए तो गदनिग्रह के 'पाण्डवाधिकार' में कथित 'खण्ड समकम्" चूर्ण होजायगा। उसके गुण भी इसी के समान हैं ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फूलों का चूर्ण शहद में मिलाकर चाटने से रक्तपित्त का नाश होता है।

[१०६३] खदिरादियोगः

(ग. नि. । र. प्रमे.)

खदिरं शर्करा दारुहरिद्रा मुस्तमेव च ।
पाठा च गुडमिश्रोऽयं हरेद्रोगं प्रमेहजम् ॥

खैर, खांड, दारुहल्दी, नागरमोथा और पाठा समान भाग लेकर चूर्ण करके गुड़ में मिलाकर सेवन करने से प्रमेह विकार नष्ट होते हैं।

[१०६४] खर्जूरादिचूर्णम् (यो. र. । दाह.)

खर्जूरामलबीजानि पिप्पली च शिलाजतु ।
एलामधुकपाषाणचन्दनैर्वारुबीजकम् ॥
धान्याकं शर्करायुक्तं पातव्यं ज्येष्ठवारिणा ।
अङ्गदाहं लिङ्गदाहं गुदवङ्क्षणशुक्रजम् ॥
शर्कराश्मरिशूलघ्नं वृष्यं बलकरं परम् ॥
नाशयेन्मूत्ररोगांश्च तथा शुक्रभवानपि ॥

खजूर, आमले की गिरी, पीपल, शुद्ध शिलाजीत, इलायची, मुलैठी, पाषाणभेदी (पत्थर चटा) चन्दन, खीरे के बीज और धनिये के चूर्ण में खांड मिलाकर ज्येष्ठाम्बु (चावलों के पानी) के साथ सेवन करने से अङ्गदाह, लिङ्गदाह, गुद और वंक्षण की दाह, शर्करा (रग) अश्मरी (पथरी) मूत्ररोग और वीर्य सम्बन्धी रोगों का नाश होता तथा बल और वीर्य की वृद्धि होती है।

[१०६५] खाडवं चूर्णम्

(वृ. यो. त. । ८२ त.)

तुल्यं तालीसचव्योषणलवण-
गजद्विःकणाग्रन्थ्यजाजी-
वृक्षाम्लाग्नित्वचं त्रिघनबदरध-
नैलाजमोदाम्लविश्वम् ।
सार्धश्वेताग्निसारोऽतिसृति
कृमिवमौ खाडवोऽरुच्यजीर्णे ।
गुल्माध्मानाल्पानलाख्योदर-
गलगहृद्ग्रहश्वासकासे ॥

तालीसपत्र, चव्य, कालीमिर्च, सेंधानमक, नागकेसर, गजपीपल, पीपल, पीपलामूल, जीरा, तिंतिड़ीक, चीता, दारचीनी, तीन प्रकार का मोथा, बेर, धनिया, इलायची, अजमोद, अम्लवेत, सोंठ, बंसलोचन (अथवा खांड या श्वेत अपराजिता–कोयल) और रसौत का चूर्ण बनाकर सेवन करने से अतिसार, कृमि, वमन, अरुचि, अजीर्ण, गुल्म, अफारा, अग्निमांद्य, उदररोग, गले के रोग, हृद्रोग, हृद्ग्रह, स्वास और खांसी का नाश होता है।

अथ खकारादि गुटिकाप्रकरणम्

[१०६६] खदिरादि गुटिका (१)

(यो. र. । मु. रो.)

...यं खदिरसारस्य त्वेषां चूर्णं विनिक्षिपेत् ।
जातीकक्कोलकर्पूरक्रमुकानां (णां) विचक्षणः ॥
गुटिकास्तु प्रकर्तव्या मुखे स्थाप्याः सदैव हि ॥

जायफल, कंकोल, कपूर और सुपारी का चूर्ण १–१ भाग तथा खैरसार (कत्था) इन सबके बराबर मिलाकर गोलियां बनावें।

इन्हें हर समय मुंह में रखने से मुख रोग नष्ट होते हैं।

[१०६७] खदिरादि गुटिका (२)

(यो. र. । कास)

खादिरं पौष्करं भृङ्गी कट्फलं द्विजयष्टिका ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरीतकी लवङ्गं च व्योषं चातिविषं तथा ॥
कारवी यासममृता बृहतीद्वयमक्षकम् ।
पृथकर्षद्वयं ग्राह्यं सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥
सर्वैः समं खादिरं च मेकयित्वा विभावयेत् ।
दाडिमत्वक्तथा क्षुद्राखदिराम्भोभिरार्द्रकैः ॥
बब्बूलत्वग्दलक्वाथैराटरूषजलैस्तथा ।
सप्तधा भावयेद्बद्ध्वा गुटिका खादिरी मता ॥
कासश्वासौ निहन्त्याशु दुस्तरौ चिरजावपि ॥

खैरसार, पोखरमूल, काकड़ासिंगी, कायफल, भारंगी, हरड़, लौंग, त्रिकुटा, अतीस, कलौंजी, धमासा, गिलोय, कटेली, कटेला, और बहेड़ा प्रत्येक वस्तु २॥-२॥ तोला लेकर महीन चूर्ण करें फिर उसमें इस सब चूर्ण के बराबर कत्था मिलाकर उसे अनार की छाल, कटेली, खैर, अदरक, कीकर की छाल, कीकर के पत्ते और अडूसे के क्वाथ की सात भावना देकर गोलियां बनावें ।

इनके सेवन से पुरानी कष्टसाध्य खांसी और श्वास का अत्यन्त शीघ्र नाश होता है ।

[१०६८] खदिरादिगुटिका (३)

(वृ. यो. त. । १२८ त; ग. नि.)

खदिरस्य तुलां तोयद्रोणे पक्त्वाऽष्टशेषिते ।
जातीकोशेन्दुपूगा च चातुर्जातमृगाण्डजैः ॥
पृथकर्षमितैः पिष्टैर्मेलयित्वा चणोपमाम् ।
गुटीं कृत्वा मुखे धृत्वा तां निहन्त्यखिलान्गदान्
जिह्वोष्ठदन्तवदनगलतालुसमुद्भवान् ॥

६। सेर खैरसार को ३२ सेर पानी में पकावें जब आठवां भाग शेष रह जाय तो उसे छान कर फिर पकावें और गाढ़ा होने पर उसमें जावीत्री, कपूर, सुपारी, चातुर्जात (तेजपात, दालचीनी, नागकेसर, इलायची) और कस्तूरीका चूर्ण १।--१। तोला मिलाकर चनेके बराबर गोलियां बनावें ।

इन्हें मुह में रखने से जिव्हा, होठ, दांत, मुंह, गले और तालुके समस्त रोग नष्ट होते हैं ।

[१०६९] खदिरादिगुटिका (४)

(ग. नि. । गुटि.)

पद्माह्वकागुरुकुङ्कुमैश्च
तुल्यांशकैः श्लक्ष्णशिलाविपिष्टैः ।
सर्वैः समः स्यात्खदिरस्य सारः
सारङ्गदर्पस्फटिकाधिवासिताः ॥
वल्लप्रमाणा गुटिका विधेया-
स्ताः सेविता घ्नन्ति कफप्रमेहम् ।
हिक्काग्निसादारुचिपीनसांश्च
रोगानशेषान् खलु चास्य जातान् ॥
सूताभ्रहेमसहितां पूर्वोक्तां भक्षयेत्प्रातः
नाम्ना खादिरवटिका कथितेयं सिंहगुप्तेन॥

पद्माक, ककड़ासिंगी, अगर और केसर (या नागकेसर) बराबर बराबर लेकर सिलपर महीन पीसें और उसमें सबके बराबर खैरसार और १-१ भाग रससिन्दुर, अभ्रकभस्म और सोना भस्म मिलाकर कस्तूरी और कपूर से सुगन्धित करके ३ रत्ती की गोलियां बनावें ।

इनके सेवन से कफप्रमेह, हिचकी, अग्निमांद्य, अरुचि और पीनस तथा इनसे उत्पन्न हुवे अन्य रोगोंका नाश होता है ।

[१०७०] खदिरादिगुटिका (५)

(ग. नि. । गुटि.)

जातीफलैलादलकुङ्कुमानि
लवङ्गकङ्कोलकपुष्कराणि ।
वराङ्गकर्चूरयुतान्यमूनि
समानि भागानि निशाकरस्य ॥
भागद्वयं स्यान्मृगनाभिजायाः
सप्तिकायाः खलु तुर्यभागः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

षष्टिर्विभागाः खदिरस्य सारात्
भागत्रयं तत्र वरस्य दद्यात् ॥
एकीकृतं घृष्टसुचन्दनेन
सुकामिनीहस्ततलैः प्रमर्द्य ।
सुवासितं पुष्पचयैः सुगन्धै-
र्वटी कृता स्यान्मुखरोगहन्त्री ॥
स्त्रीणां प्रमोदं विपुलं ददाति
मुखं सुगन्धविशदं करोति ।
युवातिरेताः सुभगो जनानां
प्राणप्रियः स्यादतिकामिनीनाम् ॥
कण्ठं विपञ्चीनिनादेन तुल्यं
करोत्यसौ खादिरसंज्ञका वटी ॥

जायफल, इलायची, तेजपात, केसर, लौंग, कंकोल, पोखरमूल, दालचीनी और कचूर १-१ भाग, २ भाग कस्तूरी और खट्टाशी चौथाभाग, खैरसार ६० भाग और दालचीनी ३ भाग लेकर सब को एकत्र करके चन्दन के डंडे से घोटें फिर उसे कामिनी से हाथों से मर्दन करावें और सुगन्धित पुष्पों के योग से सुगन्धित करके गोलियां बनावें।

इनके सेवन से समस्त मुख रोगों का नाश होकर मुख सुगन्धित और स्वच्छ हो जाता है। एवं स्त्री प्रसंग में अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है। यह गोलियां मनुष्य को अत्यन्त वीर्यवान, सुंदर और कामनियोंका प्रिय बनाती और स्वरको सुधारती हैं।

[१०७१] खदिरादिगुटिका (६)

(ग. नि. । गुटि.)

खदिराद्वीजकान्निम्बात्कुटजाच्छालसारतः ।
पञ्चाशत्पलिकान् भागान् गोमूत्रस्याढकद्वयम् ॥
जलद्रोणद्वये चापि सुगुप्तं दिवसान् दश ।
क्षाराग्रस्थितं तत्तु कषायमनुसाधयेत् ॥
अध्यर्धाढकशेषं तु पुनरग्नावधिश्रयेत् ।
चूर्णीकृतान्यथेमानि भेषजान्यत्र दापयेत् ॥
भल्लातकानि त्रिफलां विडङ्गानि वचां तथा ।
चित्रकावल्गुजौ चैव भागान् दशपलांशकान् ॥
दद्याद्रायसिमूलाच्च पलानां पञ्चविंशतिः ।
घनीभूतं तु तं ज्ञात्वा गुटिकां कारयेद्भिषक् ॥
तां भक्षयेत्तु कुष्ठार्तः पथ्यभोजी जितेन्द्रियः ।
कुष्ठानि नाशयत्येषा छिन्नाभ्राणिव मारुतः ॥

खैर, बिजयसार, नीम, कुड़ा और साल वृक्ष का सार प्रत्येक ३ सेर आदपाव लेकर उन्हें ८ सेर गोमूत्र और ३२ सेर पानीमें डालकर दसे दिन तक बन्द करके रक्खें। इसके पश्चात् उसे पकाकर ६ शेर जल शेष रक्खें अब इसे छानकर इसमें भिलावा, त्रिफला, बायबिडंग, वच, चीता और बाबचीका चूर्ण ५०-५० तोला तथा मकोय की जड़ का चूर्ण १ सेर ९ छटांक मिलाकर दुबारा पकावें। जब गाढ़ा हो जाय तो गोलियां बनाकर रक्खें।

इन्हें सेवन करने और पथ्य पालन करने तथा संयम से रहने से कुष्ठों का अत्यन्त शीघ्र नाश होता है।

[१०७२] खदिरादिगुटिका (७)

(च. सं. । चि. अ. २६; वा. भ.)

तुलां खदिरसारस्य द्विगुणां त्वरिमेदतः ।
प्रक्षाल्य जर्जरीकृत्य चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् ॥
द्रोणशेषं कषायं तु पूत्वा भूयः पचेच्छनैः ।
ततस्तस्मिन्घनीभूते चूर्णं कृत्वाऽक्षभागिकम् ॥
चन्दनं पद्मकोशीरं मञ्जिष्ठाधातकीघनम् ।
प्रपौण्डरीकयष्ट्याह्वत्वगेलापत्रकेसरम् ॥
लाक्षां रसाञ्जनं मांसीत्रिफलारोध्रवालुकम् ।
रजन्यौ फलिनीमेलां समङ्गां कट्फलं वचाम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यवासागरुपतङ्गगैरिकाञ्जनमावपेत् ।
लवङ्गजातीकङ्कोलजातीकोशान् पलोन्मितान् ॥
कर्पूरकुडवं चापि पुनः शीतेऽवतारयेत् ।
ततस्तु गुटिकाः कार्याः
शुष्कास्त्वास्ये निधापयेत् ॥
तैलमेतेन कल्केन कषायेण समावपेत् ।
शूलप्रबलविभ्रंशशौषिर्यकृमिदन्तनुत् ॥
जाड्यदौर्गन्ध्यतिक्तत्वमुखप्रक्लेदपाकजित् ।
गलशोषपरीदाहसादसंदोहलेपहृत् ॥
दन्तास्यगलपाकेषु सर्वेष्वेतत्परायणम् ॥

६। सेर खैरसार और १२॥ सेर अरिमेद (दुर्गन्धित खैर) का सार लेकर उसे पानीसे धोकर कूटकर ६४ सेर पानी में पकावें, जब १६ सेर पानी बाकी रह जाय तो उसे छानकर पुनः पकावें और गाढ़ा होने पर उसमें चन्दन, पद्माक, खस, मजीठ, धाय के फूल, नागर मोथा, पुंडरिया, (प्रपौण्डरीक) मुल्हैठी, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर, लाख, रसौत, जटामांसी, त्रिफला, लोध, सुगन्धबाला, हल्दी, दारुहल्दी, फूलप्रियंगु, इलायची, मजीठ (या लज्जालु) कायफल, बच, जवासा, अगर, पतङ्ग, गेरु और सुरमा; इनमें से प्रत्येक का चूर्ण १।-१। चूर्ण तथा लौंग, जावित्री, कंकोल और जायफल का चूर्ण १-१ छटांक मिलावें और ठंडा होने पर १। सेर कपूर का चूर्ण मिलाकर गोलियां बनाकर सुखाकर रक्खें ।

इन्हें मुंह में रखने से या इन्ही वस्तुओं के कल्क और कषाय से तेल सिद्ध करके उसका प्रयोग करने से दांतों का प्रबल शूल, विभ्रंश, शौषिर्य, कृमि, जड़ता दुर्गन्धि, मुखका कड़वापन, रतूवत आना, पकना, गलशोष, दाह, गला पड़ जाना और दांत, मुंह तथा गले का पकना आदि रोगों का नाश होता है ।

[१०७३] खदिरादिगुटिका (८)

(ग. नि. । गुटि.)

कुङ्कुमलवङ्गपत्रत्वक्त्रुटिशङ्खाम्बुजानि तुल्यानि ।
कङ्कोलजातिमृगमदभागैस्त्रिगुणीकृतैः सम्यक् ॥
पञ्चाशत्खदिरस्य भागाः सप्तैव शशधरस्यापि ।
सहकारतैलयुक्ताः खदिरगुटिकाश्च रोगघ्न्यः ॥

केसर, लौंग, तेजपात, दालचीनी, छोटी इलायची, शंख भस्म और कमल १-१ भाग तथा कंकोल, जायफल और कस्तूरी ३-३ भाग, खैरसार ५० भाग और कपूर ७ भाग लेकर चूर्ण करके आम के तेल में घोटकर गोलियां बनावें ।

इनके सेवन से मुखरोग नष्ट होते हैं ।

[१०७४] खर्जूरादि गुटिका

(वृ. नि. र. । तृष्णा.)

खर्जूरमृद्वीकमधुसखण्डं
पृथक् पलं मागधिकात्रिगन्धे ।
तथार्धबिल्वे मधुना गुटीयं
तृण्मोहपित्तास्रजयेति शस्ता ॥

खजूर, मुनक्का, मुल्हैठी और खांड, ५-५ तोला तथा पीपल और त्रिसुगन्ध (दालचीनी, इलायची, तेजपात) २॥-२॥ तोला लेकर चूर्ण करके शहद के साथ गोलियां बनावें ।

इनके सेवनसे पिपासा, मोह और रक्तपित्तका नाश होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ खकारादि लेह प्रकरणम्

[१०७५] खण्डकूष्माण्डः (१)

(वृ. यो. त. । ७५ त.)

खण्डकामलकाद् ग्राह्यो रसः प्रस्थद्वयोन्मितः।
खण्डकूष्माण्डके कंसः स्विन्नकूष्माण्डकद्रवात्॥
अन्यत्र खण्डकूष्माण्डे संमतः सकलो रसः।
पञ्चाशच्च पलं स्विन्नं कूष्माण्डात्प्रस्थमाज्यतः॥
पक्वं पलशतं खण्डं वासाक्वाथाढके पचेत्।
शिवा धात्री धनं भार्गी त्रिसुगन्धैश्च कार्षिकैः॥
तालीसविश्वधान्याकमरिचैश्च पलांशकैः।
पिप्पलीकुडवं चैव मधुमानीं प्रदापयेत्॥
कासंश्वासं ज्वरं हिक्कां रक्तपित्तं हलीमकम्।
हृद्रोगमम्लपित्तं च पीनसं च व्यपोहति॥

उसीजे हुवे पेठे के ३ सेर आध पाव टुकडों को २ सेर घी में भूनें फिर ४ सेर आमलेका स्वरस और पेठे को उसेने (पकाने) के बाद उससे जो रस निकला हो वह सब या उसमे से ४ सेर रस, ६। सेर खाण्ड और ४ सेर बांसे का क्वाथ एकत्र मिलाकर पकावें और गाढ़ा हो जानेपर उसमें हैड़, आमला, कालीमिर्च, भारंगी और त्रिसुगन्ध (तेजपात, दालचीनी इलायची) का चूर्ण १।-१। तोला, तालीस पत्र, सोंठ, धनिया और कालीमिर्च ५-५ तोला, तथा पीपल पाव सेर और शहद १ सेर मिलाकर रक्खें।

इसके सेवन से खांसी, श्वास, ज्वर, हिचकी, रक्तपित्त, हलीमक, हृद्रोग, अम्लपित्त और पीनसका नाश होता है।

[१०७६] खण्डकूष्माण्डकावलेहः (२)

(वृ. यो. त. । १२२ त.)

कूष्माण्डस्य रसो ग्राह्यः पलानां शतमात्रकम्।
रसतुल्यं गवां क्षीरं धात्रीचूर्णं पलाष्टकम्॥
धात्रीतुल्या सिता योज्या गव्यमाज्यं पलद्वयम्
मन्दाग्निना पचेत्सर्वं यावद्भवति पिण्डितम्॥
पलार्धं पलमेकं वा प्रत्यहं भक्षयेदिदम्।
खण्डकूष्माण्डकं ख्यातमम्लपित्तापहं परम्॥

पेठेका रस १२॥ सेर, गायका दूध १२॥ सेर आमलेका चूर्ण ०॥ सेर, मिश्री ०॥ सेर और गाय का घी ०॥ सेर लेकर यथा विधि मंदाग्नि पर पाक सिद्ध करें।

इसमें से ५ तोला या २॥ तोला प्रति दिन खाने से अम्लपित्त का नाश होता है।

[१०७७] खण्डकूष्माण्डकावलेहः (३)

(ग. नि. । ५ लेहाधि.)

प्रस्थेनाज्यस्य भृष्टं पलशतम-
लघुच्छिन्नकूष्माण्डकस्य
पक्त्यं खण्डतुल्यं मधु शिशि-
रतरे तत्र दद्याद् घृतार्धम्।
व्योषं धान्यं सजीरं प्रसृति-
मितमथ स्याच्चातुर्जातकं च
प्रक्षेप्यं रक्तपित्तं हरति बलकरः
खण्डकूष्माण्डकोऽयम्॥

पेठेके बारीक बारीक ६। सेर टुकडोंको २ सेर घीमें भूनें फिर उसमें ६। सेर खांड मिलाकर विधिवत् अवलेह बनावें और पाक सिद्ध होनेपर उसमें त्रिकुटा, धनिया, जीरा और चातुर्जात का चूर्ण १०-१० तोला तथा (बिल्कुल ठंडा होजाने पर) १ सेर शहद मिलावें। यह अवलेह रक्तपित्तनाशक और बलकारक है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[१०७८] खण्डखाद्यं रसायनम्

(र. र. स. । अ. २८)

वासाभार्ग्यं मृताभीरुवचाखदिरपुष्करैः ।
मुसलीभिक्षुकोरण्टैः सूर्पे चापा च मुष्टिकैः ॥
पक्वेऽष्टशिष्टे ताम्रस्थे प्रस्थांशे खण्डसर्पिषी ।
ताप्येन रुक्मलोहस्य हतस्याप्यञ्जलित्रयम् ॥
पक्वेऽस्मिल्लेहतां याते कुस्तुंबुरु शिलाजतु ।
शृङ्गीविडंगत्रिफलाजातीफलकटुत्रिकम् ॥
चातुर्जातं च शुक्त्यंशं प्रस्थार्धं च मधुक्षिपेत् ।
खण्डखाद्यमिदं लीढं कर्षमात्रं रसायनम् ॥
क्षीरानुपस्य क्षपयेत्क्षयकासारुचिक्लमान् ।
शीतपिताम्लपित्तास्रवातपितास्रकामलाः ॥
कुष्ठमेहप्लिहानाहकाश्यं शूलं च पक्तिजम् ॥

बासा, भारंगी, गिलोय, शतावर, वच, खैर पोखरमूल, मूसली, मुण्डी (या गोखरू) और पिया बांसा ५-५ तोला लेकर ६४ सेर पानी में पकावें। जब आठवां भाग शेष रह जाय तो उतार कर छानलें और उसमें १ सेर खांड और २ सेर घी एवं सोनामक्खी के योग से भस्म किया हुवा रुक्म लोह ०।। सेर डालकर तांबेकी कढ़ाई में पकावें। जब अवलेह तैयार हो जाय तो उसमें कुस्तुम्बुरु, शिलाजीत, काकड़ासिंगी, बायबिड़ंग, त्रिफला, जायफल, त्रिकुटा और चातुर्जात का चूर्ण २।।-२।। तोला तथा शहद १ सेर मिलावें।

इसे १। तोला को दूधके साथ सेवन करने से क्षय, खांसी, अरुचि, क्लान्ति, शीतपित्त, अम्लपित्त, वातरक्त, रक्तपित्त, कामला, कोढ, प्रमेह, तिल्ली, अफारा, कृशता और पक्तिशूलका नाश होता है।

[१०७९] खण्डखाद्यो लेहः

(वृ. यो. त. । ७५ त.)

शतावरी छिन्नरुहा सिंहास्यो मुण्डिका बला ।
तालमूली च गायत्री त्रिफलायास्त्वचस्तथा ॥
भार्गी पुष्करमूलं च पृथक्पञ्च पलानि च ।
जलद्रोणे विपक्तव्यमष्टभागावशेषितम् ॥
वस्त्रपूतं च तं क्वाथं गृहीत्वा तत्र निक्षिपेत् ।
दिव्यौषधिहतस्यापि माक्षिकेण हतस्य वा ॥
पलद्वादशकं देयं रुक्मलोहस्य चूर्णितम् ।
खण्डतुल्यं घृतं देयं पलषोडशकं बुधैः ॥
पचेत्ताम्रमये पात्रे गुडपाको मतो यथा ।
प्रस्थार्धं मधुनो देयं शुभाश्मजतुकं त्वचम् ॥
शृङ्गी विडङ्गं कृष्णा च शुण्ठ्यजाजी पलं पलम्
त्रिफला धान्यकं पत्रं द्वयक्षं मरिचकेसरम् ॥
चूर्णं दत्त्वा सुमथितं स्निग्धे भाण्डे निधापयेत् ।
यथाकालं प्रयुञ्जीत विडालपदकं ततः ॥
रक्तपित्तं क्षयं कासं पक्तिशूलं विशेषतः ।
वातरक्तं प्रमेहं च शीतपित्तं वमिं क्लमम् ॥
श्वयथुं पाण्डुरोगं च कुष्ठं प्लीहोदरं तथा ।
आनाहं रक्तसंस्रावमम्लपित्तं नियच्छति ॥
चक्षुष्यं बृंहणं वृष्यं माङ्गल्यं प्रीतिवर्धनम् ।
आरोग्यपुत्रदं श्रेष्ठं कायाग्निबलवर्धनम् ॥
श्रीकरं लाघवकरं खण्डखाद्यं प्रकीर्तितम् ।
नारिकेलपयःपानं सुनिषण्णकवास्तुकम् ॥
शुष्कमूलकजीवाख्यं पटोलं बृहतीफलम् ।
फलं वार्ताकपक्वाम्रं खर्जुरं स्वादुदाडिमम् ॥
ककारपूर्वकं यच्च मांसं चानूपसंभवम् ।
वर्जनीयं विशेषेण खण्डखाद्यं प्रकुर्वता ॥

शतावर, गिलोय, बांसा, मुण्डी, खरैंटी, तालमूली (काली मूसली), खैर, त्रिफला, भारङ्गी और पोखरमूल, प्रत्येक २५-२५ तोला ३२ सेर पानीमें पकावें जब आठवां भाग बाकी रहे तो कपड़े से

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छानकर उसमें मनसिल या सोना मक्खीके योगसे की हुई रुक्म लोह की भस्म ०।।। सेर, खांड १ सेर और घी २ सेर डालकर तांबेकी कढ़ाईमें पकाकर गुड़पाक के समान गाढ़ा करें। फिर उसमें शहद १ सेर, बंशलोचन, शिलाजीत, दालचीनी, काकड़ासींगी, बायबिड़ंग, पीपल, सोंठ और ज़ीरा ५—५ तोला, त्रिफला, धनिया, तेजपात, कालीमिर्च और केसर (या नागकेसर)का चूर्ण १।—१। तोला मिलाकर चिकने बरतनमें भरकर रक्खें।

इसे यथोचित कालमें १। तोला की मात्रानुसार सेवन करनेसे रक्तपित्त, क्षय, खांसी और विशेषतः पक्तिशूल तथा वातरक्त, प्रमेह, शीतपित्त वमन, क्लान्ति, सूजन, पाण्डु, कोढ़, तिल्ली, उदररोग, अफारा, रक्तस्राव और अम्लपित्त का नाश होता है।

यह अवलेह नेत्रोंके लिए हितकारी, बृंहण, बृष्य, मंगलकारक, प्रीतिवर्द्धक, आरोग्यदाता, पुत्रदाता, श्रेष्ठ, शारीरिक शक्ति और जठराग्नि वर्द्धक, सौन्दर्यवर्द्धक तथा शरीरको हल्का करनेवाला है।

पथ्य—नारियलका पानी, सुनिषण्णक (चौपतिया—चूका भेद) शाक, बथुआ, सूखीमूली, जीवाख्य (शाक विशेष) पटोल, कटेलीके फल, बैंगन, पकान्न, खजूर और मीठा अनार।

अपथ्य (परहेज़) जिन के नाम के आदि में ककार हो ऐसे जीवोंका मांस और आनूपदेशीय जीवोंका मांस।

[१०८०] खण्डपिप्पली (१)

(र. र.। अम्ल. पि.)

कणाचूर्णस्य कुडवं षट्पलं हविषस्तथा।
वरीरसात्पलान्यष्टौ क्षीरप्रस्थद्वयन्तथा॥
खण्डप्रस्थं पचेत्तत्र सिद्धे संचूर्ण्य धान्यकम्।
शुण्ठीद्विजीरपथ्याब्दमांसीधात्रीत्रिजातकम्॥
पृथक् द्वादशमाषं हि षण्माषं नागकेसरम्।
खदिरं मरिचं शीते क्षिपेत्क्षौद्रपलत्रयम्॥
शूलाम्लपित्तवान्त्यग्निमान्द्यजित्खण्डपिप्पली॥

पीपलका चूर्ण ०। सेर, घी ०।।। सेर, शतावरीकास्वरस १ सेर, दूध ४ सेर और खांड १ सेर लेकर यथाविधि पाक बनावें, फिर उसमें धनिया, सोंठ, दोनों जीरे, नागरमोथा, जटामांसी, आमला और त्रिजातकका चूर्ण १—१ तोला तथा नागकेसर, खैरसार और कालीमिर्चका चूर्ण ६—६ माशे मिलावें एवं ठंडा हो जाने पर ३० तोला शहद मिलाकर रक्खें।

यह अवलेह शूल, अम्लपित्त, वमन और अग्निमांद्य नाशक है।

[१०८१] खण्डपिप्पल्यवलेहः (२)

(बृ. यो. त.। १२२ त.)

पिप्पल्याः कुडवं चूर्णं घृतस्य कुडवद्वयम्।
पलषोडशकं खण्डाच्छतावर्याः पलाष्टकम्॥
शिवायाः स्वरसस्यापि पलषोडशकं मतम्।
क्षीरप्रस्थद्वये साध्ये लेहीभूतेऽत्र निक्षिपेत्॥
त्रिजातकाभयाजाजीधान्यमुस्तशिवातुगाः।
एतेषां कार्षिकं चूर्णं कर्षार्धं कृष्णजीरकम्॥
नागरं नागकं जातीफलं समरिचं हिमम्।
दत्त्वा पलत्रयं क्षौद्रं स्निग्धभाण्डे निक्षिपेत्॥
प्रातर्यथाबलं लिह्यादम्लपित्तप्रशान्तये।
हृल्लासारोचकच्छर्दिपिपासादाहनाशनम्॥
शूलहृद्रोगशमनं हृद्यं चेदं रसायनम्॥

पीपलका चूर्ण ०। सेर, घी १ सेर, खांड १ सेर, शतावरीका स्वरस १ सेर, आमलेका स्वरस २ सेर और ४ सेर दूध लेकर यथाविधि अवलेह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बनावें फिर उसमें त्रिजातक, हैड़, जीरा, धनिया, नागरमोथा, आमला और वंशलोचनका चूर्ण १।–१। तोला तथा कालाजीरा, सोंठ, नागकेसर, जायफल, कालीमिर्च और पद्माक का चूर्ण ७।।–७।। माशा एवं ३० तोला शहद मिलाकर चिकने बरतनमें भरकर रक्खें।

इसे प्रातःकाल बलानुसार उचित मात्रा में सेवन करनेसे अम्लपित्त, हृल्लास (जी मिचलाना), अरुचि, छर्दि (वमन), पिपासा, दाह, शूल और हृद्रोगोंका नाश होता है। यह अवलेह रसायन और हृद्य (हृदयके लिए हितकारी) है।

[१०८२] खण्डपिप्पल्यवलेहः (३)
(यो. र.। क्षय.)

कृष्णाप्रस्थं पचेच्चाऽऽढकपयसि
घृतस्याञ्जलिं खण्डपात्रं
दत्त्वा लेहोऽयमस्मिन्सुर-
कुसुमचतुर्जातविश्वोषणादीन्।
ग्रन्थिश्रीखण्डयष्टीमधुम-
स्तृणजलं जातिकोशं च कर्षं
प्रत्येकं चूर्णयित्वा मधुकुड-
वयुतः स्याच्च कृष्णावलेहः॥
आदौ मन्दाग्निकार्श्यं हरति
स च शिशुस्त्रीजरन्मानुषेषु
प्रायो वृष्यः क्षयादौ विपुल-
बलकरो दीपनः पाचनश्च।
कासश्वासांश्च मेहक्षयरुगति-
तृषाकामलापाण्डुकण्डू-
प्लीहाजीर्णज्वरांश्चानिल-
कफविकृतिं रक्तपित्तं च हन्यात्॥

१ सेर पीपलको ८ सेर दूधमें पकावें। फिर उसमें ०। सेर घी और ४ सेर खांड मिलाकर लेह बनावें। पाकके अन्तमें उसमें लौंग, चातुर्जात, सोंठ, मरिचादि औषधियां, पीपलामूल, सफेद चन्दन, मुलैठी, अलसी, सुगन्धबाला और जायफलका चूर्ण १।–१। तोला तथा ठंडा होने पर ०।। सेर शहद मिलावें। इसके सेवनसे मन्दाग्नि और कृशता का नाश होता है। यह बच्चों, स्त्रियों और बूढ़ों के लिये वृष्य अत्यन्त बलकारक, दीपन, पाचन, खांसी श्वास, प्रमेह, अत्यन्त प्रवृद्ध तृषा, कामला, पाण्डु, खाज, तिल्ली, अजीर्ण, ज्वर, वायु कफके विकार और रक्तपित्त नाशक है।

[१०८३] खण्डशुण्ठी (र. र.। अम्लपि.)

शुण्ठीचूर्णस्य कुडवं खण्डप्रस्थं समावपेत्।
दत्वा द्विकुडवं सर्पिःक्षीरप्रस्थत्रये पचेत्॥
पाकसिद्धे क्षिपेच्चूर्णं कणाधात्रीत्रिजातकम्।
वांशीद्विजीरकं पथ्याऽब्दधान्यं त्रिशाणिकम्॥
पृथक् षण्माषमरिचं नागं शीते तु त्रिपलं मधु।
शूलाम्लपित्तहृद्रोगवांत्यामानिलनाशनम्॥
बलवर्णदमायुष्यं खण्डशुण्ठीरसायनम्॥

०। सेर सोंठ का चूर्ण, १ सेर खांड, १ सेर घी और ६ सेर दूध लेकर यथा विधि अवलेह बनावें। फिर उसमें पीपल, आमला, त्रिजातक, बंसलोचन, दोनों ज़ीरे, हैड़, नागरमोथा और धनिया; इनमें से प्रत्येक का चूर्ण १–१ तोला और मरिच तथा नागकेसर का चूर्ण ६–६ माशे मिलावें एवं ठंडा होने पर ३० तोला शहद मिलाकर रक्खें।

यह शूल, अम्लपित्त, हृद्रोग, वमन और आमवात नाशक तथा बल, वर्ण और आयुवर्द्धक रसायन है।

[१०८४] खण्डसूरणावलेहः
(ग. नि.। ५. लेहाधि.)

कूष्माण्डक विधानेन शस्यते सूरणं सदा।
अर्शसां मूढवातानां मन्दाग्नीनां विशेषतः॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बवासीर, मूढवात और विशेषतः अग्निमांद्य की शांति के लिये पेठ के समान ज़िमीकन्द का अवलेह बनाकर सेवन करना लाभदायक है।

[१०८५] खण्डामलकीयं रसायनम्

(ग. नि. । शूल.)

स्विन्नपीडितकूष्माण्डतुलार्धं भृष्टमाज्यके।
प्रस्थार्धे खण्डतुल्यं तु पचेदामलकीरसात् ॥
प्रस्थे तु स्विन्नकूष्माण्डरसप्रस्थे च घट्टयन्।
दर्वीलेपं गते तस्मिन् चूर्णीकृत्य विनिक्षिपेत् ॥
द्वे द्वे पले कणाजाज्योः शुण्ठीनां मरिचस्य च।
पलं तालीसधान्याकचातुर्जातकमुस्तकम् ॥
कर्षप्रमाणं प्रत्येकं प्रस्थार्धं माक्षिकस्य च।
पक्तिशूलं निहन्त्येतद्दोषत्रयकृतं च यत् ॥
छर्द्यम्लपित्तमूर्च्छाश्च श्वासकासावरोचकम्।
हृच्छूलं रक्तपित्तं च पृष्ठशूलं प्रणाशयेत् ॥
रसायनमिदं श्रेष्ठं खण्डामलकसंज्ञकम् ॥

प्रथम उसीजे और निचोड़े हुवे पेठे के ३ सेर आधपाव टुकड़ों को १ सेर घी में भूनें फिर उसमें ३ सेर आधपाव खांड २ सेर आमले का रस और २ सेर उसीजे हुवे पेठे का रस * मिलाकर पकावें। जब गाढ़ा होकर करछी को लगने लगे तो उसमें पीपल, ज़ीरा और सोंठका चूर्ण १०-१० तोला मरिच का चूर्ण ५ तोला तथा तालीसपत्र, धनिया चातुर्जात और नागरमोथेका चूर्ण १।-१। तोला मिलावें, एवं ठंडा होनेपर १ सेर शहद मिलाकर रक्खें।

इसके सेवन से त्रिदोषज पक्तिशूल, वमन, अम्लपित्त, मूर्छा, श्वास, खांसी, अरुचि, हृच्छूल, रक्तपित्त और कमर का दर्द नष्ट होता है।

* इसमें २५ सेर पानी भी डालना चाहिए। अनु०

[१०८६] खण्डामलकं च खण्डहरीतकी

(वृ. यो. त; ७६ त.)

(आमले और हैड़ का मुरब्बा)

कार्पासीदलसंस्तरे ससलिले भाण्डे शिवां वाऽभयाः संस्वेद्याथ परत्र वारिणि पुनस्तोयान्तरे ताः प्लुताः।
विद्ध्वा वंशशलाकयाऽथ विजलाः खण्डस्य पाके शनैः पक्त्वा मिष्टशिवानि दधतेऽसृक्पित्तरोगे नृणाम् ॥

आमलों अथवा हैड़ों को कपास के पत्तों के ऊपर रखकर + पानी में पकावें। जब यह उसीज जायें तो उन्हें दूसरे पानी में भिगोकर बांस की सींक में छेद कर धोकर ज़रा सुखालें, जब पानी सुख जाए तो खांड की चाशनी में डालकर मन्दाग्नि पर पकावें।

इनके सेवन से रक्तपित्त का नाश होता है।

[१०८७] खण्डार्द्रकावलेहः

(ग. नि. । ५ अवलेहा.)

सुस्विन्नाच्छृङ्गवेरात्पलशतमनवं निस्तुषं संविधाय, प्रस्थे चाज्यस्य पक्त्वा पलशतसहितं शुद्धमत्स्यण्डिकायाः।
कौरङ्गी देवपुष्पं मधुदलकणानागकिञ्जल्कभृङ्गं शुक्लाजाजी सघनमरिचतुगा सार्धकर्षद्वयाः स्युः ॥
तस्मिन्नीरं विदित्वा ज्वलनमुखगतं पात्रमुत्तार्य यत्नात्, कृत्वा चेषन्मदशशिसुरभितं चूर्णितेनावचूर्ण्य।
प्रातः शीतेऽतिमात्रं मधुकुडवयुगं सार्धमावाप्य

+ बांसकी खपचों या सीखों आदिकी टट्टीसी बनाकर उस पर कपासके पत्तों बिछा कर उनपर हैड़ या आमले रक्खें। अनु०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सान्द्रं, तल्लीढं हन्ति जीर्णज्वरमथ कसनं राज-यक्ष्माणमेव ॥

प्रथम पुराने अदरक के उबले और छिले हुवे ६। सेर टुकड़ों को २ सेर घी में पकावें फिर उसमें ६। सेर खांड और कस्तूरी, लौंग, मुलैठी, तेजपात, पीपल, नागकेसर, दालचीनी, सफेद जीरा, मोथा, मरिच और बंसलोचन का चूर्ण २॥-२॥ कर्ष मिलाकर पकावें। + जब पाक सिद्ध हो जाय तो उतार कर उसमें थोडीसी कस्तूरी और कपूर का चूर्ण मिलावें। फिर दूसरे दिन प्रातः काल जब वह बिल्कुल ठंडा होजाय तो उसमें १। सेर शहद मिलावें।

इसके सेवनसे जीर्ण ज्वर खांसी और यक्ष्मा का नाश होता है।

[१०८८] खर्जूरादिलेहः (१)

(ग. नि. । ११ हि. श्वा.)

खर्जूरं पिप्पली द्राक्षा शर्करा चेति तत्समम्।
मधुसर्पियुतो लेहो हिक्काश्वासनिवारणः ॥

खजूर, पीपल, मुनक्का और खांड बराबर २ लेकर पीसकर शहद और घी में मिलाकर चाटने से हिचकी और श्वास का नाश होता है।

[१०८९] खर्जूरादि लेहः [२]

(च. सं. । चि. अ. २२)

खर्जूरं पिप्पलीद्राक्षाश्वदंष्ट्राचेति पश्चते।
घृतक्षौद्रयुता लेहाः श्लोकार्द्धः पित्तकासिनाम् ॥

खजूर, पीपल, मुनक्का और गोखरू को पीस कर घी और शहद में मिलाकर सेवन करने से पित्तज खांसी नष्ट होती है।

[१०९०] खर्जूरादिलेहः (३)

(ग. नि. । कासा.)

खर्जूरपिप्पलीद्राक्षासितालाजाः समांशकाः।
मधुसर्पियुतो लेहः पित्तकासहरः परः ॥

खजूर, पीपल, मुनक्का, मिश्री और धान की खील बराबर २ लेकर पीसकर शहद और घी में मिलाकर चाटने से पित्तज खांसी नष्ट होती है।

+ इसके पाकमें ३२ सेर पानी (जिसमें अद्रक उबाला गया था वह भी डालना चाहिए।)

अथ खकारादि घृतप्रकरणम्

[१०९१] खदिरादिपञ्चतिक्तकं घृतम्

(र. र. । कु. चि.)

खदिरारग्वधव्योषत्रिवृचित्रकदन्तिका।
पटोलत्रिफलारिष्टहरिद्राबाकुचीफलम् ॥
कटुकातिविषापाठात्रायन्तिधन्वयासकम्।
कुष्ठं करञ्जबीजानि शारिवे द्वे सवत्सकैः ॥
भल्लातकं विडङ्गानि गुग्गुलुश्चेति कल्कितैः।
पञ्चतिक्तकषायेण सर्पिः सिद्धं पिबेन्नरः ॥
हन्त्यष्टकुष्ठानि ग्रन्थि गलगण्डं तथैव च।
विषविस्फोटवीसर्पकण्डूदुष्टव्रणानपि ॥
रोगानन्यांश्च विविधान्वृक्षमिद्राशनिर्यथा ॥

खैर, अमलतास, त्रिकुटा, निसोत, चीता, दन्ती, पटोलपत्र, त्रिफला, नीम, हल्दी, बावची, कुटकी, अतीस, पाठा, त्रायमाणा (बनफ़सा) धमासा, कूठ, करंजवे की गिरी, दो प्रकार की शारिवा, इन्द्रजौ, भिलावा, बायबिडंग और गूगल के कल्क तथा पंचतिक्त (नीम की जड़ की छाल, पटोलपत्र, कटेली, वासे की छाल और गिलोय) के कषाय के साथ यथा विधि घी पकावें।

इसके सेवन से ८ प्रकार के कुष्ठ, ग्रन्थि,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गलगण्ड, विषविकार, विस्फोट, विसर्प, खुजली, दुष्ट व्रण (घाव) और अन्य कितने ही रोगों का नाश होता है।

[१०९२] खदिराद्यं घृतम्।

(वं. से. । बा. रो.)

खदिरार्जुनतालीस कुष्ठस्यन्दनजे रसे।
सक्षीरं साधितं सर्पिः श्वयथुञ्च नियच्छति ॥

खैर, अर्जुन, तालीसपत्र, कूठ और तेंद के कषाय तथा दूध के साथ सिद्ध किया हुवा घृत सूजन का नाश करता है।

[१०९३] खर्जूरादिघृतम्

(ग. नि. । राजय.)

घृतं खर्जूरमृद्वीकामधूकैः सपरूषकैः।
सपिप्पलीकं वैस्वर्यकासश्वासज्वरापहम् ॥

खजूर, मुनक्का, मुल्हैठी और फालसे के कल्क तथा पीपल के प्रक्षेप से सिद्ध किया हुवा घी वैस्वर्य (गला बैठ जाना) खांसी, श्वास और ज्वर का नाश करता है।

[१०९४] खर्जूरादियोगः

(ग. नि. । शिरो. रो.)

खर्जूरयष्टीमधुकाकजङ्घा-
द्राक्षान्वितं खण्डमुशीरकं च।
पिबेत्सुपक्कं नवनीतमेभि-
र्मध्वन्वितं प्रान्तशिरोव्यथावान् ॥

खजूर, मुल्हैठी, काकजंघा, मुनक्का, खांड और खस से नवनीत (नवनी घी) को पकाकर शहद डालकर पीने से कनपटियों (शिर के प्रान्त भागों) का दर्द नष्ट होता है।

अथ खकारादि तैलप्रकरणम्

[१०९५] खुड्डाकपद्मकतैलम्

(च. सं. चि. अ. २९)

पद्मकोशीरयष्ट्याह्वरजनीक्वाथसाधितम्।
स्यात्पिष्टैःसर्जमञ्जिष्ठावीराकाकोलिचन्दनैः ॥
खुड्डाकपद्मकमिदं तैलं रुग्दाहनाशनम् ॥

पद्माक, खस, मुल्हैठी और हल्दीके क्वाथ तथा राल, मजीठ, काकोली, क्षीरकाकोली और चन्दन के कल्क से सिद्ध किया हुवा तेल रुग्दाह-सन्निपात को शान्त करता है।

अथ खकारादि आसवारिष्टप्रकरणम्

[१०९६] खदिरारिष्टः

(ग. नि. । आसव.)

खदिरस्य तुलार्धं तु तत्तुल्यं देवदार्वपि।
वरायाः* विंशतिर्दार्व्याः पलानां पञ्चविंशतिः॥
वाकुच्या द्वादशपलान्यष्टद्रोणेऽम्भसः पचेत्।
द्रोणशेषे कषाये तु पूते शीते विनिक्षिपेत् ॥

* "बचायाः" इति पाठान्तरम्।

धातक्या विंशतिपलं माक्षिकस्य शतद्वयम्।
शर्करायास्तुलामेकां चूर्णानीमानि दापयेत् ॥
कङ्कोलकं लवङ्गं च एला जातीफलं त्वचम्।
केसरं मरिचं पत्रं पलिकान्युपकल्पयेत् ॥
पिप्पलीनां तु कुडवं स्थापयेद् घृतभाजने।
मासादूर्ध्वं पिबेन्मात्रामपेक्ष्याग्निबलाबलम् ॥
सर्वकुष्ठहरो ह्येष पांडुहृद्रोगकासनुत्।
कृमिग्रन्थ्यर्बुदग्रन्थिगुल्मप्लीहोदरान्तकृत ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एष वै खदिरारिष्टः कृष्णात्रेयेण पूजितः ॥

खैरसार ३ सेर आधपाव, देवदारु ३ सेर आधपाव, त्रिफला १। सेर, दारुहल्दी १ सेर ९ छटांक और बाबची ३ सेर लेकर सबको २५६ सेर पानी में पकावें। जब ३२ सेर पानी बाकी रहे तो छान कर ठंडा हो जाने पर उसमें धाय के फूलों का चूर्ण १। सेर, शहद २५ सेर, खांड ६। सेर तथा कंकोल, लौंग, इलायची, जायफल, दालचीनी, केसर, कालीमिर्च और तेजपात का चूर्ण ५–५ तोला एवं पीपल का चूर्ण १। सेर मिलाकर घृत से चिकने बरतन में सन्धान करके रक्खें। फिर एक मास पश्चात् निकाल कर छान लें।

इसे अग्नि बलानुसार यथोचित मात्रा से सेवन करने से सब प्रकार के कुष्ठ, पाण्डु, हृद्रोग, खांसी, कृमि, ग्रन्थि, अर्बुद, गुल्म, तिल्ली और उदरविकारों का नाश होता है।

[१०९७] खदिरासवः

(ग. नि.। ६ आसवा.)

खदिरस्य तुलाम्भसिविपचेच्चतुर्द्रोणसंमिते शेषम्
पादं विगृह्य शीते दद्यान्मधुनस्तुलां सार्धाम् ॥
वस्त्रविपूते चूर्णं व्योषत्रिफलापिण्डखर्जूरी।
स्वर्णत्वग्बाकुचिकामृताविडङ्गपलाशानाम् ॥
धातकिपलषोडशकं दत्त्वा प्रविलोडितं नित्यम्
यावत्षोडशदिवसाः षोडशके मधुतुलां दद्यात् ॥
मासात्परतः पेया दत्त्वा मृगनाभिमाषकं पटे बद्धम्।
कर्पूरमाषद्वयमेष खदिरासवो महाकुष्ठे ॥

६। सेर खैरसार को १२८ सेर पानी में पकावें जब ३२ सेर पानी बाकी रहे तो उतार कर छान लें और ठंडा होने पर उस में १८।।। सेर शहद और त्रिकुटा, त्रिफला, पिण्डखजूर, नागकेसर, दालचीनी, बाबची, गिलोय, बायबिडंग, पलाश और धाय के फूलों का कपड़छन चूर्ण १ सेर मिलाकर रक्खें और १६ दिन तक रोज़ अच्छी तरह मिला दिया करें फिर १६ वें दिन उसमें १२।। सेर शहद डालकर सन्धान करके १ मास तक रक्खा रहने दें। इसके पश्चात् निकाल कर उसमें १ माशा कस्तूरी और २ माशे कपूर कपड़े में बांधकर डाल दें।

इसके सेवन से महाकुष्ठ का नाश होता है।

[१०९८] खर्जूरासवः (१)(यो. र.। क्षय.)

पञ्चप्रस्थं समादाय खर्जूरस्य विचक्षणः।
द्रोणाम्भसि पचेत्सम्यगुत्तार्य गालयेत्ततः ॥
कुम्भीं सुधूपितां कृत्वा प्रक्षिपेत् रसं शुभम्।
हपुषां ताम्रपुष्पीं च कषायं तत्र निक्षिपेत् ॥
द्वारं निरुध्य सुदृढं निक्षिपेद्वसुधातले।
सप्तकद्वययोगेन सिद्धोऽयं त्वासवोरसः ॥
रोगराजं तथा शोफं प्रमेहं पाण्डुकामलाम्।
ग्रहणीं पञ्च गुल्मार्शो नाशयत्यतिवेगतः ॥

५ सेर खजूर को ३२ सेर पानी में पकाकर छानकर उसमें हाऊबेर और धाय के फूलों का चूर्ण मिलाकर उत्तम धूपित घड़े में भर कर उसका मुख अच्छी तरह बन्द करके उसे जमीन में दबा दें। दो सप्ताह पश्चात् आसव तैयार हो जायगा। इसके सेवन से राजयक्ष्मा, सूजन, प्रमेह, पाण्डु, कामला, ग्रहणी, पांच प्रकार के गुल्म और बवासीर का अत्यन्त शीघ्र नाश होता है।

[१०९९] खर्जूरासवः (२)

(ग. नि.। ६ आसवा.)

खर्जूरमुस्तामलकीनिकुम्भा
द्राक्षाभयापूगफलानि पाठा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भार्ङ्गीशठीकुष्ठजलाजमोद
पलङ्कषापिप्पलीमूलकानि ॥
पुनर्नवा कायफलं प्रियङ्गुः
कर्चूरकं कृष्णअजाजिविस्रे ।
त्रिवृच्छिवाच्छलिधमासकं च
लज्जालुरोहीतकलिङ्गमूलम् ॥
अमूनि सर्वाणि महौषधानि
चत्वारि चत्वारि पलोन्मितानि ।
मांसीचतुर्जातकणालवङ्गं
जातिफलं चन्दनलोहचूर्णम् ॥
प्रमाणतो द्विद्विपलान्यमूनि
सुधातकीपुष्पमणानि सप्त ।
गुडस्य सप्त त्रिगुणानि दद्यान्-
मणानि संचूर्ण्य ततः समस्तम् ॥
घृतस्य भाण्डे विपुले निवेश्य
दशोत्तरं शेरशतं जलस्य ।
क्षिप्त्वा क्षिपेत्पञ्च दिनानी भूमौ
निष्पक्वकलकं हृदये विचार्य ॥
षष्ठे दिने तत्र नियोजनीयं
ताम्रस्य यन्त्रद्वयमध्यभागे ।
शतत्रयं नागलतादलानां
सहस्रयुग्मं शतपत्रकानाम् ॥
प्रक्षाल्य देयं विधिनाथ सन्धि
विमुन्ध चुल्ल्यां विनिवेश्य यन्त्रम् ।
निष्काशयेदर्कमतो यथावद्
दत्त्वा जलं चोपरि यन्त्रकस्य ॥
बलाबलं रोगनिपीडितानां
विमृश्य देयः पलिकाप्रमाणः ।
खार्जूरसंज्ञः खलु आसवोऽयं
विषूचिकायक्ष्मभयं निहन्ति ॥
हृद्रोगकासविषमज्वरशोफतर्ष
श्वासप्रमेहबलसंक्षयपाण्डुरोगान् ।
हिध्माश्च शीर्षगतरोगवियोगकारी
रुच्यग्निवर्धनबलप्रदवृष्य एषः ॥

खजूर, नागरमोथा, आमला, कायफल, मुनक्का, हैड़, सुपारी के फूल, पाठा, भारंगी, कपूर कचरी, कूठ, सुगन्धबाला, अजमोद, गूगल, पीपलामूल, पुनर्नवा (बिसखपरा) कायफल, फूलप्रियंगु, कचूर, कालीमिर्च, जीरा, चणकमूली (मूलीभेद) निसोत, हैड़की बकली, धमासा, लज्जालु, रुहेडे की छाल, कुड़े की जड़ और सोंठ १।-१। सेर । जटामांसी, चातुर्जात (दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेसर) पीपल, लौंग, जायफल, चन्दन और लोहेका बुरादा १०-१० तोला तथा धायके फूल ७ मन और गुड़ २१ मन लें । सबका चूर्ण करके ११० सेर पानीमें मिलाकर अच्छे बडे चिकने बरतनमें संधान करके भूमि में गाढ़ दें, फिर छठे दिन उसमें ३०० नग पान और २००० नग कमल डालकर तांबे के भबकेसे अर्क खींचे ।

इसे ५ तोला या रोगी के बलाबल के अनुसार न्यूनाधिक मात्रा में सेवन कराने से विषूचिका (हैज़ा) राजयक्ष्मा, हृद्रोग, खांसी, विषमज्वर, सूजन, तृषा, श्वास, प्रमेह, कमज़ोरी, पाण्डु, हिक्का तथा शिरके रोगों का नाश होता है, एवं अग्नि, बल, वीर्य और रुचि की वृद्धि होती है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ खकारादि लेपप्रकरणम्

[११००] खदिरादि लेपः (१)

(वृ. नि. र. । क्षु. रो.)

खदिरारिष्टजम्बूनां त्वग्भिर्वा मूत्रसंयुतैः ।
कुटजत्वक् सैन्धवं वा लेपाद्धन्यादरुंषिकाम् ॥

खैर, नीम और जामन की छाल या कुड़े की छाल और सेंधा नमक को गोमूत्र में पीसकर लेप करने से अरुंषिका का नाश होता है ।

[११०१] खदिरादि लेपः (२)

(वृ. नि. र. । मसू.)

खदिरारिष्टपत्रैश्च शिरीषोदुम्बरत्वचाम् ।
कुर्याल्लेपःकफोत्थायां मसूर्यां भिषगुत्तमः ॥

खैर, नीम के पत्ते, सिरस की छाल और गूलर की छाल का लेप कफज मसूरिका के लिए हितकारी है ।

[११०२] खरमञ्जर्यादि लेपः

(वै. म. । १३ पट.)

पिष्ट्वा लिप्ते योनौ मूले खरमञ्जरीपुनर्नवयोः।
नवसूतायाः शूलं योनिगतं सकलमपनयतः ॥

चिरचिटे और पुनर्नवा (साटी) की जड़ को पीसकर योनि में लेप करने से नवप्रसूता (जच्चा) का योनिशूल नष्ट होता है ।

[११०३] खर्जूराद्यो लेपः

(ग. नि. । २१ । आ. वा.)

फलं खर्जूरिसंभूतं तथा वल्मीकमृत्तिका ।
उरुस्तम्भे प्रलेपोऽयं मधुना सर्षपान्वितः ॥

खजूर के फल, बांबी की मिट्टी और सरसों को पीसकर शहद में मिलाकर लेप करने से उरुस्तम्भ का नाश होता है ।

अथ खकारादि रसप्रकरणम्

[११०४] खर्परमारणम् (रसे. सा. सं.)

शोधनम्—

(रसे. चि. म. अ. ७; आ. वे. प्र. अ. १)

पुष्पाणां रक्तपीतानांरसैः पिष्ट्वा च भावयेत
नरमूत्रैश्च गोमूत्रैर्यवाम्लैश्च ससैन्धवैः ।
सप्ताहं त्रिदिनं वापि पश्चाच्छुध्यति खर्परः ॥
खर्परः परिसन्तप्तः सप्तवाराभिमज्जितः ।
जम्बीरज रसस्यान्तर्निर्म्मलत्वमवाप्नुयात् ॥

मारणम्—

(र. चं; आ. वे. प्र. अ. ९]

खर्परं पारदेनैव वालुकायन्त्रगं पचेत् ।
चूर्णयित्वा दिनं यावच्छोभनं भस्म जायते ॥

खपरियाको लाल और पीले फूलों के रस में घोटकर मनुष्य के मूत्र, गोमूत्र और जौ की कांजी में सेंधा नमक के साथ सात दिन या ३ दिन तक भावना देने से वह शुद्ध हो जाता है ।

खपरिया को खूब तपा तपा कर सात बार बिजौरे नीबू के रस में बुझाने से वह शुद्ध हो जाता है ।

खपरिया और पारदको एकत्र १ दिन तक खरल करके यथा विधि बालुका यन्त्र में पकाने से खपरिया की भस्म हो जाती है ।

[११०५] खर्परसायनम्

(र. र. स. । अ. २)

तद् भस्म मृतकान्तेन समेन सह योजयेत् ।
गुञ्जामितं चूर्णं त्रिफलाक्वाथसंयुतम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कान्तपात्रस्थितं रात्रौ तिलजप्रतिवापकम् ।
निषेवितं निहन्त्याशु मधुमेहमपि ध्रुवम् ॥
पित्तं क्षयं च पाण्डुं च श्वयथुं गुल्मेव च ।
रक्तगुल्मं च नारीणां प्रदरं सोमरोगकम् ॥
योनिरोगानशेषांश्च विषमाख्याञ्ज्वरानपि ।
रजःशूलं च नारीणां कासं श्वासञ्च हिध्मिकाम्॥

खपरिया भस्म और कान्तिसार लोह भस्म बराबर बराबर लेकर चूर्ण करें ।

यह चूर्ण ८ गुंजा प्रमाण लेकर रात को लोहे के बरतन में त्रिफले के क्वाथ में भिगोदें फिर प्रातः काल उसमें तिल तेल का प्रक्षेप देकर पियें।

इसके सेवन से मधुमेह, पित्त, क्षय, पाण्डु, सूजन, गुल्म, रक्तगुल्म, प्रदर, सोमरोग, सब प्रकार के योनिरोग, विषमज्वर, स्त्रियों का रजःशूल (मासिक स्राव के समय शूल होना) खांसी, श्वास और हिचकी का नाश होता है ।

[११०६] खर्परसत्वम्

(र. चि. म. । ५ स्तबकः)

खर्परं स्विद्यते पूर्वं कौलत्थेन जलेन च ।
वटारोहजलेनाऽपि पर्णचूर्णेन संयुतम् ॥
गुडटंकणसंमिश्रं त्रिफलाक्काथमर्दितम् ।
मृन्मये कूपके धृत्वा धाम्यमानं भृशं च तत् ॥
श्वेतधूमोद्गमे जाते तत्पश्चाद्बहिरानयेत् ॥
कूप्यकं च तथा भूमौ नामयेच्च पुनः पुनः ।
सत्त्वं खर्परकस्यापि नागरूपं पतत्यधः ॥

पहिले खपरिया को कुलथी और वटांकुरों के क्वाथ में पृथक् पृथक् (दोला यन्त्र विधि से) स्वेदन करें; इसके बाद उसमें पान (अथवा ढाक के पत्ते) गुड़ और सुहागे का चूर्ण मिलाकर त्रिफला के क्वाथ में घोटें । इसके पश्चात् उसे मिट्टी के मूषा में भरकर अग्नि में रखकर अच्छी तरह तपावें जब सफेद धुवां निकलने लगे तो मूषा को अग्नि से बाहर निकाल कर बार बार जमीन पर उल्टा करें तो उसमें से शीशे के समान खपरिया का सत्व निकल आयेगा ।

[११०७] खोटाभिधरसः

(र. चि. म. । ४ स्तबकः)

खर्परे पारदं कृत्वा चुल्लिकोपरिखर्परम् ।
घृष्टं दृढतरं कुर्याद्वह्निं प्रज्वालयेदधः ॥
गन्धकं चूर्णितं सूक्ष्मं स्वल्पं स्वल्पं च निक्षिपेत् ।
द्विगुणे जारिते गन्धे रसः खोटो भविष्यति ॥
कृष्णोज्वलप्रभः सम्यग्घटिकाद्वयमानतः ।
खोटः कार्येषु योक्तव्यः सर्वरोगेष्वसंशयम् ॥

एक ठीकरे में पारद और खपरिया को डाल कर उसे चूल्हे के ऊपर रखकर नीचे अग्नि जलावें और उसमें थोड़ा थोड़ा गन्धक का महीन चूर्ण डालकर घोटते रहें । जब दो गुनी गन्धक जल जाय तो उतार लें । (दो गुना गन्धक २ घड़ी में जल जायगा) इसका रंग स्याह और चमकदार होगा । यह समस्त रोगों में प्रयोग किया जा सकता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—: प्रथमावृत्ति का उपसंहार :—

यस्यालौकिकपाणिकौशलकलामालोक्य लोकोऽतुलां
शास्त्रे चाद्भुतवैदुषीं कलयते मुग्धः परां तर्कणाम् ।
जातो भारतमेतदामयमयं विज्ञाय भूयोऽप्ययं
श्रीधन्वन्तरिरित्यसौ विजयते **योगीन्द्रसेनो** भिषक् ॥ १ ॥
शिष्यस्तस्य नितान्तशान्तहृदयः कान्तो गुणैरद्भुतै-
र्ध्वान्तं शिष्यचयस्य यः शमयते द्रागातुरान्संस्पृशन् ।
सद्यो नीरुजमातनोति च सुधापाणित्वमुद्भावयन्
श्रीमान् सर्वनुतो **निवारणयुतश्चन्द्रश्चकास्ति** क्षितौ ॥ २ ॥
तत्पादाब्जपरागसेवनसलज्ज्ञानः सतामाश्रवो
गोपीनाथ इतीरितो विवृतवांल्लोकोपकृत्यै भिषक् ।
सद्वैद्येन **नगीनदासमहता** संगृह्य नीतं मुदा
प्राकाश्यं खलु भारतादि सहितं **भैषज्यरत्नाकरम्** ॥ ३ ॥
श्रीमन्तः सदया मुहुः सहृदयाः ! याचेऽत्रबद्धाञ्जलिः
ये दोषा विलसन्ति शोधयत तान् कृत्वानुकम्पां पराम् ।
यो वा कोऽपि गुणाऽऽलवोऽपि भविता नो तत्कृते प्रार्थये
यत्सन्तः स्वयमेव हंसचरिताः ख्याता जगन्मण्डले ॥ ४ ॥
वाणाब्धिवस्विन्दुमिते शकाब्दे शस्ये तपस्ये बहुले दलेऽसौ ।
चन्द्रे मनोभवतिथौ चरमत्वमाप्ता व्याख्या गुरोः करुणया, सुधियांमुदेस्तात् ॥५॥*

—— ० ——

इति श्रीगुर्जरप्रान्तान्तर्गत–ऊंझानिवासिना
श्री नगीनदास–छगनलाल–शाह–रसवैद्येन संगृहीते
श्रीकाशीनागरीप्रचारिणी–सभाप्रभृतितो लब्धपदकेन
स्वास्थ्य–पुस्तक–माला–सम्पादक बिजनौरमण्डलान्तर्गत हल्दौर वास्तव्येन
श्रीगोपीनाथगुप्तभिषग्रत्नेन
कृतया भावप्रकाशिकाख्यव्याख्यया समलंकृते
भारत-भैषज्य-रत्नाकरे प्रथमो भाग

* १८७१ शकाब्द । फाल्गुन कृष्ण १३ सोमवार (शिवरात्री)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री धन्वन्तरये नमः

परिशिष्टम्

अथायुर्वेदीयपरिभाषा

प्रथमप्रकरणम्

मान–परिभाषा

औषध-निर्माणके लिए मान (तोल) का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि प्रयोगमें औषधियोंका परिमाण ठीक न होनेसे पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं हो सकता।

प्राचीन कालमें अनेक प्रकारके मान प्रचलित थे परन्तु सम्प्रति शास्त्रमें दो ही प्रकारके मानोंका अधिक व्यवहार पाया जाता है. १ मागध मान (चरकोक्त मान) और २ कालिङ्ग (सुश्रुतोक्त)।

यों तो औषध-निर्माणमें चाहे जिस मानका व्यवहार क्यों न किया जाय औषधके गुणोंमें कोई अन्तर नहीं आ सकता परन्तु चरकके प्रयोगोंमें चरकीय मान का और सुश्रुत के प्रयोगोंमें सुश्रुतके मानका व्यवहार करना अधिक उत्तम है। अन्य ग्रन्थोंके प्रयोगोंमें चरकीय मानका व्यवहार विशेष सुविधा जनक प्रतीत होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चरकसंहितायां दृढबलेनोक्तम्

(क. स्था. अ. १२)

"जालान्तर्गते भानुकरे वंशी विलोक्यते।
षड्वंश्यस्तु मरीचिः स्यात् षण्मरीच्यस्तु सर्षपः।
अष्टौ ते सर्षपा रक्तास्तण्डुलश्चापि तद्द्वयम्।
धान्यमाषो भवेदेको धान्यमाषद्वयं यवः॥
अण्डिकास्ते तु चत्वारस्ताश्चतस्रस्तु माषकः।
हेमश्च धानकश्चोक्तो भवेच्छाणस्तु ते त्रयः॥
शाणौ द्वौ द्रंक्षणं विद्यात् कोलं बदरमेव च।
विद्याद् द्वौ द्रंक्षणौ कर्षं सुवर्णश्चाक्षमेव च॥
बिडालपदकञ्चैव पिचुं पाणितलं तथा।
स एव तिन्दुको ज्ञेयः स एव कवडग्रहः॥
द्वौ सुवर्णौ पलार्द्धं स्याच्छुक्तिरष्टमिका तथा।
द्वे पलार्द्धे पलं मुष्टिः प्रकुञ्चोऽथ चतुर्थिका॥
बिल्वं षोडशिकञ्चाम्रं द्वे पले प्रसृतं विदुः।
अष्टमानञ्च विज्ञेयं कुडवौ द्वौ च मानिका॥
पलं चतुर्गुणं विद्यादञ्जलिं कुडवन्तथा।
चत्वारः कुडवाः प्रस्थश्चतुः प्रस्थं तदाढकम्॥
घटश्चोक्तः स एव स्यात् कीर्तितोऽष्टशरावकः।
पात्री पात्रं तथा कंसश्चत्वारो द्रोण आढकाः॥
स एव कलसः ख्याता घट उन्मानमर्मणम्।
द्रोणस्तु द्विगुणः सूर्पो विज्ञेयः कुम्भ एव च।,
गोर्णीं सूर्पद्वयं विद्यात् खारीं भारं तथैव च।
द्वात्रिंशच्चैव जानीयाद्वाहं सूर्पाणि बुद्धिमान्॥
तुलां शतपलं विद्यात् परिमाण विशारदः।
शुष्कद्रव्येष्विदं मानमेवमादि प्रकीर्तितम्॥
द्विगुणं तद्द्रवेष्विष्टं सद्यश्चैवोद्धृतेषु च।
यत्र मानं तुला प्रोक्ता पलं वा, तत्प्रयोजयेत्॥
त्रिंशत्पलानि तु प्रस्थो विज्ञेयो द्विपलाधिकः।
वमने च विरेके च तथा शोणितमोक्षणे॥
अर्द्धत्रयोदशपलं प्रस्थमाहुर्मनीषिणः॥" इति.

चरकोक्त मान

जालीके भीतर सूर्यकी किरणोंमें 'वंशी' (सूक्ष्म रजकण) दिखलाई देती हैं; वही—

६	वंशी	=	१ मरीचि
६	मरीचि	=	१ सर्षप
८	लाल सर्षप	=	१ तण्डुल
२	तण्डुल	=	१ धान्यमाष
२	धान्यमाष	=	१ यव
४	यव	=	१ अण्डिका
४	अण्डिका	=	१ माषक, हेम, धानक।
३	माषक	=	१ शाण
२	शाण	=	१ द्रंक्षण, कोल, बदर।
२	द्रंक्षण	=	१ कर्ष सुवर्ण, अक्ष, बिडालपदक, पिचु, पाणितल।
२	कर्ष	=	१ पलार्द्ध, शुक्ति, अष्टमिका।
२	पलार्द्ध	=	१ पल, मुष्टि, प्रकुञ्च, चतुर्थिका, बिल्व, षोडशिका, आम्र।
२	पल	=	१ प्रसृत, अष्टमान
४	पल	=	१ कुडव, अञ्जलि
२	कुडव	=	१ मानिका
४	,,	=	१ प्रस्थ
४	प्रस्थ	=	१ आढक, घट, अष्टशराव, पात्री, पात्र, कंस
४	आढक	=	१ द्रोण, कलस, घट, उन्मान, अर्मण
२	द्रोण	=	१ सूर्प, कुम्भ
२	सूर्प	=	१ गोणी, खारी, भार।
३२	,,	=	१ वाह
१००	पल	=	१ तुला

उपरोक्त मान शुष्क द्रव्योंके लिये बतलाया गया है। द्रव (तरल–पतले) और आर्द्र (तुरन्तके उखाड़े हुवे गीले) पदार्थोंका मान इससे दो गुना होता है।

जिस स्थानमें "तुला" अथवा "पल" शब्द लिखा हो वहां आर्द्र और द्रव पदार्थोंका मान भी द्विगुण नहीं होता।

साधारणतः ३२ पलका प्रस्थ+ होता है

+ यह द्रव पदार्थके प्रस्थके सम्बन्धमें कहा गया है क्योंकि शुष्क द्रव्योंके मानमें १ प्रस्थ = ४ कुडव = १६ पलका होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परन्तु वमन विरेचन और शोणित मोक्षण (फस्त) में १३॥ पलका प्रस्थ माना जाता है।

सुश्रुते चोक्तम् (चि. स्था. अ. ३१)

"पल कुडवादीनामतो मानन्तु व्याख्यास्यामः। तत्र द्वादश धान्यमाषा मध्यमाः सुवर्णमाषकः ते षोडश सुवर्णः। अथ मध्यम निष्पावा वा, एकोनविंशतिर्धरणम्. तान्यर्द्धतृतीयानि× कर्षः; ततश्चोर्द्ध्वं चतुर्गुणमभिवर्द्धयन्तः पल-कुडव-प्रस्थाढक-द्रोणा इत्यभिनिष्पद्यन्ते। तुला पल-शतं ता विंशतिर्भारः। शुष्काणामिदं मानमार्द्र-द्रवाणाञ्च द्विगुणमिति।"

सुश्रुतोक्त मान

अब पल कुडवादि नामसे मानकी व्याख्या करते हैं:—

१२ मध्यम धान्यमाष	=	१ सुवर्ण माषक
१६ सुवर्ण माषक	=	१ सुवर्ण
		अथवा
१२ मध्यम निष्पावा (लोबिया)	=	१ सुवर्ण माषक
१९ सुवर्णमाषक	=	१ धरण
५/६ धरण (१६ माषक)	=*	१ कर्ष
४ कर्ष	=	१ पल
४ पल	=	१ कुडव
४ कुडव	=	१ प्रस्थ
४ प्रस्थ	=	१ आढक
४ आढक	=	१ द्रोण
१०० पल	=	१ तुला
२० तुला	=	१ भार

+ तानि धरणानि अर्द्धतृतीयानि अर्द्धांशं तृतीयांशश्चेति अतः एकोनविंशतिर्माषकस्यार्द्धमर्द्धोनदश तृतीयांशश्च त्रितृतीयांशोन सप्त मिलित्वा षडांशोन षोडशेति। - १ धरण अर्थात १० माषकका अर्द्धतृतीय (आधा और तीसरा भाग) ९½+६⅓=१५⅚ होता है अर्थात १६ माषक में कुछ कम होता है इसे पूरे १६ माषक मान लेने में कोई विशेष अन्तर नहीं आ सकता।

यह मान शुष्क द्रव्योंके लिए है। आर्द्र और द्रव पदार्थोंके लिए इससे द्विगुण मान समझना चाहिए।

चरक और सुश्रुतके मानकी परस्पर तुलना

चरकोक्त मान में २ द्रंक्षण= ४ शाण=१२ माषक या (१२×३२=) ३८४ धान्यमाषकका कर्ष माना गया है और सुश्रुतोक्त कर्ष में १६ सुवर्ण माषक=(१६×१२=) १९२ धान्य माषक होते हैं. इससे सिद्ध होता है कि चरकोक्त मान सुश्रुतोक्त मानसे दो गुना है।

मानसारम्

शाणः कोलश्च कर्षश्च शुक्तिश्च पलमेव च।
प्रसृतं कुडवश्चापि शरावः प्रस्थ एव च॥
अर्द्धाढकश्चाढकोऽर्द्धद्रोणश्च द्रोण एव च।
सूर्पो गोणी च खारी च द्विगुणश्चोत्तरोत्तरम्॥

शाण, कोल, कर्ष, शुक्ति, पल, प्रसृत, कुडव, शराव, प्रस्थ अर्द्धाढक, आढक, अर्द्ध-द्रोण, द्रोण, सूर्प, गोणी और खारीका मान उत्तरोत्तर द्विगुण होता है यथा, शाणसे कोल दो गुना, कोलसे कर्ष दो गुना और कर्षसे शुक्ति दो गुनी इत्यादि।

माषशाणकर्षपलकुडवप्रस्थाढकाः।
द्रोणो गोणी भवन्त्येते पूर्वपूर्वाच्चतुर्गुणाः॥

माष, शाण, कर्ष, पल, कुडव, प्रस्थ, आढक, द्रोण और गोणी का मान उत्तरोत्तर चार गुना होता है।

शुष्कार्द्रद्रव्यभेदेन मानम्

शुष्कद्रव्ये तु या मात्रा चार्द्रस्य द्विगुणा हि सा।
शुष्कस्य गुरुतीक्ष्णत्वात्तस्मादर्द्धं प्रकीर्तितम्॥

क्यों कि शुष्क द्रव्य, गीले द्रव्योंकी अपेक्षा अधिक गुरु एवं तीक्ष्ण होते हैं अत एव आर्द्र (गीले) द्रव्योंका मान शुष्ककी अपेक्षा द्विगुण ग्रहण करना चाहिए अर्थात् शुष्क द्रव्योंके स्थानमें गीले द्रव्य काममें लाए जायं तो लिखित परिमाणसे दो गुने लेने चाहिएं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कितने ही विद्वानोंका मत है कि यदि ओषधिका परिमाण कुडवसे कम हो तो गीले द्रव्य द्विगुणमात्रामें नहीं लेने चाहिये परन्तु विद्वद्वर्य श्री कविराज गङ्गाधरजी कविरत्नके मतानुसार यह मत अनार्ष एवं युक्तिविरुद्ध तथा अमान्य है।

वर्तमान तोल तथा प्राचीन तोलकी परस्पर तुलना.

(अ)

चरकीय मान.	वर्तमान मान.
(३ रत्ती = १ वल्ल)...	३ रत्ती
+१० रत्ती = १ माषा...	१। माषा = १० रत्ती
३ माषक = १ शाण...	३॥। „ = ३० रत्ती=पांच आनेभर
(४ माषा = १ निष्क)	५ माषा
२ शाण = १ द्रंक्षण...	७॥ „ = दस आनेभर
२ द्रंक्षण = १ कर्ष	१५ „ = १। तोला
४ कर्ष = १ पल	५ तोले = १ छटांक
४ पल = १ कुडव...	४ छटांक = १ पावसेर
४ कुडव = १ प्रस्थ	१ सेर = (८० तोले)
४ प्रस्थ = १ आढक	४ „
४ आढक = १ द्रोण	१६ „
२ द्रोण = १ सूर्प	३२ सेर
२ सूर्प = १ भार	६४ „
३२ „ = १ वाह	१०२४ „ = (२५ मन २४ सेर)
१०० पल = १ तुला	६। सेर

(ब)

शार्ङ्गधरोक्त मागधमान	वर्तमान मान.
८ सरसों = १ यव... ...	
४ यव = १ रत्ती ...	१ रत्ती
६ रत्ती = १ माषक ...	६ रत्ती
४ माषा = १ शाण ...	३ माषा
२ शाण = १ कोल ...	६ माषे (½तो.)
२ कोल = १ कर्ष ...	१ तोला
२ कर्ष = १ शुक्ति ...	२ तोला
२ शुक्ति = १ पल... ...	४ तोला
२ पल = १ प्रसृत ...	८ „
२ प्रसृत = १ कुडव ...	१६ „

शार्ङ्गधरोक्त मान	वर्तमान मान.
२ कुडव = १ शराव	३२ तोला
२ शराव = १ प्रस्थ	६४ „
४ प्रस्थ = १ आढक	३सेर १६ तोला
४ आढक = १ द्रोण	१२सेर६४तोला*
२ द्रोण = १ सूर्प	२५ सेर ४८ „
२ सूर्प = १ द्रोणी	५१ सेर १६ „
४ द्रोणी = १ खारी	२०४सेर ६४ „
२००० पल = १ भार.	१०० सेर
१०० „ = १ तुला	५ सेर

* १ सेर = ८० तोला.

+ यद्यपि चरक और सुश्रुत में रत्तीका जिक्र नहीं है परन्तु सभी विद्वान इस विषयमें सहमत हैं कि चरकोक्त माषा १० रत्ती का माषा है एवं विद्वद्वर्य चक्रपाणीने लिखा है कि तोलमे पर चरकोक्त माषा १० रत्ती के बराबर सिद्ध होता है.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्तमान आपेक्षिक मान

१ धान = १ चावल =(a grain of paddy)	१६ छटांक = १ सेर=८० तोला 32 oz(approx.)
४ धान = १ रत्ती = ($1\frac{7}{8}$ grains)	१ कांच = $\frac{1}{4}$ छटांक=4 FL.drams ,,
६ रति = १ आना = $11\frac{1}{4}$ grains	१ छटांक = $\frac{1}{16}$ सेर = 2 FL. ozs ,,
८ रति = १ माषा = 15 grains=1gram	१ पाव = $\frac{1}{4}$ सेर = 8 FL. ozs ,,
१६ आना = १ तोला = 180 grains	१ सेर = २ पौंड =32 FL. ozs ,,
१ रुपया = १ तोला	१ मन = 82 पौंड 2 ozs
५ तोला = १ छटांक =2 ounces (approx.)	१ टन = २७ मन

द्वितीय प्रकरणम्.

अथ द्रव्य ग्रहणविधिः

निर्देशः श्रूयते तन्त्रे द्रव्याणां यत्र यादृशः।
तादृशः संविधातव्यः शास्त्राभावे प्रसिद्धितः॥

शास्त्रमें किसी द्रव्यके ग्रहण करनेमें जैसी आज्ञा हो उसीके अनुसार ग्रहण करना चाहिए और जहां शास्त्रने मौन धारण किया हो वहां परिभाषा अनुसार कार्य करना चाहिए।

साधारण विधिः

धन्वसाधारणे देशे मृदावुत्तरतः शुचौ।
अवैकृतं अनाक्रान्तं सवीर्यं ग्राह्यमौषधम्॥

साधारणतः धन्व (मरु भूमि और जाङ्गल देशके लक्षणोंसे युक्त) देशमें उत्पन्न हुई विकार रहित, कीटादि रहित, वीर्ययुक्त औषधि उत्तर दिशा एवं पवित्र स्थानसे ग्रहण करनी चाहिए।

निषिद्धौषधिः

देवतालयवल्मीककूपरथ्याश्मशानजाः।
अकालतरुमूलोत्था न्यूनाधिकचिरन्तनाः॥
जलाग्निकृमिसंक्षुण्णा ओषध्यस्तु न सिद्धिदाः॥

देवतालय, वमी, कुएं के पास, रास्ते और श्मशान में उत्पन्न हुई तथा असमय (बेमौसम) और तरुमूलमें उत्पन्न हुई, उचित परिमाणसे ह्रस्व अथवा अधिक दीर्घ और पुरानी तथा जल, अग्नि और कीड़ोंसे विकृत औषधि फलदायक नहीं होती।

स्थानभेदेन गुणभेदः

आग्नेया विन्ध्यशैलाद्या सौम्या हिमगिरिर्मतः।
ततस्तान्यौषधानि स्यु प्रशस्तानि क्रियाविधौ॥

विन्ध्याचल आदि पर्वत आग्नेय गुण वाले और हिमालयादि सौम्य गुणवाले हैं अतएव इन में उत्पन्न होनेवाली ओषधियां भी यथा क्रम आग्नेय और सौम्य गुणवाली होती हैं। चिकित्सा के समय यह बात अवश्य ध्यान में रखना चाहिए।

कालभेदे द्रव्यग्रहणम्

शरद्यखिलकर्मार्थं ग्राह्यं सरसमौषधम्।
विरेकवमनार्थञ्च वसन्तान्ते समाहरेत्॥

समस्त कार्यों के लिये रसयुक्त ओषधियां शरद् में ग्रहण करनी चाहिएं परन्तु वमन और विरेचनकी ओषधियां वसन्त ऋतुके अन्तमें ग्रहण करनी चाहिएं।

मूलानि शिशिरे ग्रीष्मे पत्रं वर्षावसन्तयोः।
त्वक्कन्दौ शरदि क्षीरं यथर्तु कुसुमं फलम्॥
हेमन्ते सारमोषध्या गृह्णीयात् कुशलो भिषक्॥

चतुरवैद्य का कर्तव्य है कि ओषधियों के मूल शिशिर ऋतुमें, पत्र ग्रीष्म ऋतुमें, छाल वर्षामें, कन्द वसन्तमें दूध शरद् ऋतुमें, सार हेमन्त ऋतुमें और फल एवं फूल जिस ऋतुमें उत्पन्न हों उसीमें ग्रहण करें।

आर्द्राण्येव प्रशस्तानि

वासानिम्बपटोलकेतकिबलाकुष्माण्डकेन्दीवरी-
वर्षाभूकुटजाश्वगन्धसहितास्ताः पूतिगन्धामृताः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मांसं नागबलासहाचरपुरो हिङ्ग्वार्द्रके नित्यशः
ग्राह्यास्तल्लक्षणमेव न द्विगुणिता ये चेक्षुजाताघनाः॥

निम्न लिखित द्रव्य सदैव आर्द्रावस्थामें (गीले-ताज़े) ही लेने चाहियें एवं इनका परिमाण द्विगुण न करना चाहिए:—

वासा, नीम, पटोल, केतकि, खरैटी, पेठा, शतावर, पुनर्नवा, कुड़ेकी छाल, असगन्ध, पूतिगन्धा (गन्धप्रसारिणी) नागबला, पियाबांसा, गूगल, हींग, अद्रक और ईखसे बने हुए कठिन पदार्थ (राब, मिश्री इत्यादि)।

पुरातनान्येव प्रशस्तानि

द्रव्याण्यभिनवान्येव प्रशस्तानि क्रियाविधौ।
ऋते घृतगुडक्षौद्रधान्यकृष्णाविडङ्गतः॥

चिकित्सा कार्यमें घी, गुड़, शहद, धान्य, पीपल और बायविडङ्गके अतिरिक्त समस्त द्रव्य नवीन ही ग्रहण करने चाहियें।

द्रव्याङ्गग्रहणम्

सारः स्यात् खदिरादीनां निम्बादीनाञ्च वल्कलम्।
फलन्तु दाड़िमादीनां पटोलादेश्छदस्तथा॥

खदिरादिवृक्षोंका सार, निम्बादिकी छाल, दाड़िम आदिके फल और पटोल आदि के पत्र काममें लाने चाहियें।

न्यग्रोधादेस्त्वचो ग्राह्याः सारः स्याद्बीजकादितः।
तालीशादेश्च पत्राणि फलं स्यात् त्रिफलादितः॥
अतिस्थूलजटायाश्च तासां ग्राह्यास्त्वचो ध्रुवम्।
गृह्णीयात् सूक्ष्ममूलानि सकलान्यपि बुद्धिमान्॥

बड़ आदि वृक्षोंकी त्वचा, विजयसार आदिका सार, तालीशादिके पत्र और त्रिफलादि के फल ग्रहण करने चाहियें।

जिन वृक्षोंकी जड़ अधिक मोटी हो उनकी छाल और जिनकी जड़ बारीक हो उनके समस्त अङ्ग काममें लाने चाहियें

पुनरुक्तौ द्रव्यग्रहणम्

एकमप्यौषधं योगे यस्मिन्यत्पुनरुच्यते।
मानतो द्विगुणं प्रोक्तं तद् द्रव्यं तत्त्वदर्शिभिः॥

यदि किसी योगमें एकही औषधि दो बार लिखी हो तो उसे द्विगुण परिमाणमें लेनी चाहिए।

व्याधेरयुक्तं यद्द्रव्यं गणोक्तमपि तत् त्यजेत्।
अनुक्तमपि युक्तं यद्योजयेत्तत्र तद्बुधैः॥

यदि किसी प्रयोगमें कोई औषधि रोगी के लिए हानिकारक हो तो उसे निकाल डालना चाहिए। इसि प्रकार यदि कोई औषधि रोगीके लिये हितकारी हो तो वह योगमें न होनेपर भी डाली जा सकती है।

तृतीय प्रकरणम्

अथ सामान्योक्तौ द्रव्यग्रहणम्

पात्रोक्तौ चापि मृत्पात्रमुत्पले नीलमुत्पलम्।
शकृद्रसे गोमयरसश्चन्दने रक्तचन्दनम्॥
सिद्धार्थः सर्षपे ग्राह्यो लवणे सैन्धवं मतम्।
मूत्रे गोमूत्रमादेयं विशेषो यत्र नेरितः॥
पयः सर्पिः प्रयोगेषु गव्यमेव प्रशस्यते।
क्षीरमूत्रपुरीषाणि जीर्णाहारे तु संहरेत्॥

यदि स्पष्ट वर्णन न हो तो पात्रका अर्थ मिट्टीका पात्र, उत्पलका नीलोत्पल और शकृद्रसका अर्थ गायके गोबरका रस समझना चाहिए। एवं चन्दनसे लाल चन्दन, सर्षपसे सफेद सरसों, लवणसे सेंधानमक और मूत्र, दूध तथा घीसे गोमूत्र, गोदुग्ध और गोघृत समझना चाहिए।

दूध मूत्र और पुरीष (गोबर) पशुका आहार पचजाने पर ग्रहण करना चाहिए।

चूर्णस्नेहाऽऽसवालेहाः प्रायशश्चन्दनान्विताः।
कषायलेपयोः प्रायो युज्यते रक्तचन्दनम्॥

चूर्ण, स्नेह, आसव और अवलेहमें प्रायः सफेद चन्दन, और कषाय तथा लेपमें प्रायः लाल चन्दनका व्यवहार किया जाता है॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्तप्रकाशिकाः परिभाषाः

कालेऽनुक्ते प्रभातं स्यादङ्गेऽनुक्ते जटा भवेत्
भागेऽनुक्ते तु साम्यं स्यात् पात्रेऽनुक्ते तु मृन्मयम् ॥
द्रवेऽनुक्ते जलं ग्राह्यं तैलेऽनुक्ते तिलोद्भवम् ॥

यदि समय न बतलाया गया हो तो प्रातः काल, औषधिका अङ्ग न कहा हो तो मूल, भाग न बतलाया हो तो समान भाग, पात्र न कहा गया हो तो मिट्टीका पात्र और द्रव पदार्थ का नाम न बतलाया गया हो तो जल तथा तैलका नाम न कहा हो तो तिलका तैल ग्रहण करना चाहिए।

चतुर्थ प्रकरणम्

अथाभावे द्रव्यग्रहणम्।

कदाचिद् द्रव्यमेकं वा योगे यत्र न लभ्यते।
तत्तद्गुणयुतं द्रव्यं परिवर्तेन गृह्यते ॥

यदि किसी योगमें कोई औषधि प्राप्त न हो सके तो उसके समान गुणोंवाली अन्य औषधि डालनी चाहिए।

मधु यत्र न विद्येत तत्र जीर्णो गुडो मतः।
पुरातनगुडाभावे रौद्रे यामचतुष्टयम् ॥
संशुष्य नूतनं ग्राह्यं पुरातनगुडैषिणा।
क्षीराभावे भवेन्मौद्गो रसो मासूर एव वा ॥
सिताभावे च खण्डः स्यात् शाल्यभावे च षष्ठिकः।
असम्भवे च द्राक्षाया गाम्भारीफलमिष्यते ॥
न भवेद् दाडिमो यत्र वृक्षाम्लं तत्र दापयेत्।
सौराष्ट्रमृदभावे च ग्राह्या पङ्कस्य पर्पटी ॥
नतं तगरमूलं स्यादभावे शीहलीजटा।
प्रयोगे यत्र लोहः स्यादभावे तन्मलः विदुः ॥
सर्षपः शुक्लवर्णो यः स हि सिद्धार्थ उच्यते।
तत्र सिद्धार्थकाभावे सामान्यः सर्षपो मतः ॥
चविकागजपिप्पल्योः पिप्पलीमूलमेव च।
अभावे पिप्पलीमूलं हस्तिपिप्पलीचव्ययोः ॥
अभावे पृश्निपर्ण्याश्च सिंहपुच्छी विधीयते।
नित्यं मुञ्जातिकाभावे तालमस्तकमिष्यते ॥
कुङ्कुमस्याप्यभावेऽपि निशा ग्राह्या भिषग्वरैः।
मुक्ताभावे शुक्तिचूर्णं वज्राभावे वराटिका ॥
कर्कटशृङ्गिकाभावे मायाम्बु चेष्यते बुधैः ॥
धान्यकाभावतो दद्यात् शतपुष्पां भिषग्वरः ॥
वाराहीकन्दकाभावे चर्मकारालुको मतः।
मूर्वाभावे त्वचोग्राह्या जिङ्गिन्या ब्रुवते सदा ॥
सुवर्णमथवा रौप्यं योगे यत्र न लभ्यते।
तत्र लौहेन कर्माणि भिषक्कुर्याद्विचक्षणः ॥
अभावात् पौष्करे मूले कुष्ठं सर्वत्र गृह्यते।
सामुद्रं सैन्धवाभावे विडं वा गृह्यते बुधैः।
कुस्तुम्बुरु न विद्येत यत्र तत्र च धान्यकम्।
पुष्पाभावे फलश्चाम विडभेदे बिल्वतः फलम् ॥
भल्लातकासहत्वेऽपि रक्तचन्दनमिष्यते।
मद्याभावे च शिण्डाकी शुक्ताभावे च काञ्जिकम् ॥
यष्ट्याह्वाभावतो विद्याच्चव्यं तस्याप्यभावतः।
मूलं मौषलिकं देयमभावे कुटजस्य च ॥
रास्नाभावे च वन्दाकं जीराभावे च धान्यकम्।
तुम्बरुणामभावेऽपि शालिधान्यं प्रकीर्तितम् ॥
रसाञ्जनस्य चाप्राप्तौ दार्वीक्वाथं प्रयोजयेत्।
कर्पूरस्याप्यभावेऽपि सुगन्धं मुस्तमिष्यते ॥
कस्तूरीणामभावे तु ग्राह्या गन्धशठी बुधैः।
अभावे कोकिलाक्षस्य गोक्षुरबीजमिष्यते ॥

अप्राप्त द्रव्य	प्रतिनिधि
मधु	पुरानागुड़
पुराना गुड़	नए गुड़को चार पहर धूपमें सुखाकर लें
दूध	मूंग या मसूरका यूष
खांड	मिश्री
शालि चावल	साठी चावल
दाख	खम्भारीके फल
दाडिम	वृक्षाम्ल
सौराष्ट्र मृत्तिका	पङ्कपर्पटी
तगर	शीहलीजटा

For Private And Personal Use Only

अप्राप्त द्रव्य	प्रतिनिधि
लोह	मण्डूर
सिद्धार्थ (सफेद सरसों)	साधारण सरसों
चव्य	पिप्पलीमूल
गजपीपल	पीपलामूल
पृश्निपर्णी	शालपर्णी
मुञ्जातिका	तालमस्तक
केसर	हल्दी
मोती	सीप
हीरा	कौड़ी
काकड़ासिंगी	मायाम्बु
धनिया	सोया
वाराहीकन्द	चर्मकारालु
मूर्वा	जिङ्गिनीकी छाल
सोना	लोह
चांदी	,,
पोखरमूल	कूठ
सेंधानमक	सामुद्र या विड लवण
कुस्तुम्बुरु	धनिया
पुष्प	कच्चेफल
भिलावाअसह्य होतो	लाल चन्दन
मद्य	शिण्डाकी
शुक्त	काञ्जी
मुलैठी	चव्य
चव्य	तालमूली
कुडा	,,
रास्ना	वन्दाक
जीरा	धनिया
तुम्बुरु	शालि धान्य
रसौत	दारुहल्दीका क्वाथ

अप्राप्त द्रव्य	प्रतिनिधि
कर्पूर	सुगन्धित मोथा
कस्तूरी	गन्धशठी
कोकिलाक्ष	गोखरूके बीज
चीता	दन्ती या चिरचिटेका खार
धमासा	जवासा
तगर	कूठ
मौलसिरी	लाल या नीला कमल
अहिंस्रा	मानकन्द
लक्ष्मणा	मोरशिखा
नीलकमल	कुमुदनी
बावची	पवांरके बीज
अतीस	नागरमोथा
मेदा, महामेदा	शतावर
जीवक	विदारीकन्द
ऋद्धि	वाराहीकन्द
काकोली	असगन्ध
सोना	सोनामक्खी
अदरक	सोंठ
अनन्तमूल	उश्वा
स्त्रीका दूध	गधीका दूध
हीरा	पोखराज

यत्र यद् द्रव्यमप्राप्तं भेषजे परपूर्वतः ।
ग्राह्यं तम् गुणसाम्यात् तु न तत्र कापि दूषणम् ॥

यदि किसी योगमें कोई ओषधि प्राप्त न हो तो उसी योग में कही हुई ओषधियोंमें से अप्राप्त ओषधिसे पहिले या पीछे कही हुई उसीके समान गुणवाली ओषधि ग्रहण करनी चाहिए ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पञ्चम प्रकरणम्

विविधपरिभाषाः

पुटपाकविधिः

पुटे पक्कस्य द्रव्यस्य स्वरसो गृह्यते यतः ।
अतोऽयं पुटपाकः स्याद्विधानं तस्य कथ्यते ॥

कभी कभी पुटपाक विधिद्वारा द्रव्योंका स्वरस निकाला जाता है अतएव यहां पुटपाककी विधि लिखी जाती है ।

द्रव्यमापोथितं जम्बूवटपत्रादिसम्पुटे ।
वेष्टयित्वा ततो बद्ध्वा दृढं रज्वादिना तथा ॥
मृल्लेपं द्व्यङ्गुले कुर्यादथवाङ्गुलिमात्रकम् ।
दहेत्पुटान्तरादग्नौ यावल्लेपस्य रक्तता ॥

ओषधिको कूटकर जामन या बड़के पत्तों में लपेटकर उसे रस्सी आदिसे कसकर मज़बूत बांध और उसके ऊपर दो अङ्गुल या एक अङ्गुल मोटा मिट्टीका लेप करके (सुखाकर) अग्निमें पकावें। जब ऊपर वाली मिट्टी का रंग लाल हो जाय तो पुटपाक सिद्ध समझें।

षडङ्गपरिभाषा

यदप्सु शृतशीतासु षडङ्गादि प्रयुज्यते ।
कर्षमात्रं ततो द्रव्यं साधयेत्प्रास्थिकेऽम्भसि ॥
अर्द्धशृतं प्रयोक्तव्यं पाने पेयादिसंविधौ ॥

शृतशीतादि पेय जल बनानेके लिए षडङ्ग परिभाषाका प्रयोग किया जाता है। वह इस प्रकार है कि-१। तोला ओषधियोंको १ सेर पानीमें पकाकर आधा शेष रक्खें। यह जल प्रायः पीने और पेयादि बनानेके लिए व्यवहृत होता है।

क्षीरपाकविधिः

द्रव्यादष्टगुणं क्षीरं क्षीरात्तोयं चतुर्गुणम् ।
क्षीरावशेषः कर्तव्यः क्षीरपाके त्वयं विधिः ॥

ओषधिसे ८ गुना दूध और दूधसे चार गुना पानी मिलाकर इतना पकाना चाहिए कि दूध बाकी रहजाय।

कल्कक्वाथावनिर्देशे

कल्कक्वाथावनिर्देशे गणात्तस्मात्प्रयोजयेत् ।

यदि शास्त्रमें कल्क या क्वाथ न बतलाया हो अर्थात् केवल यह लिखा हो कि अमुक ओषधियोंसे घृत या तेल आदि सिद्ध कर लिया जाय और यह न लिखा हो कि इन ओषधियोंका कल्क डाला जाय या क्वाथ, तो वहां इन ओषधियोंका कल्क और क्वाथ दोनों लेने चाहियें ।

आसवारिष्ट विधानम्

अनुक्तमानारिष्टेषु द्रवद्रोणे तुला गुडम् ।
क्षौद्रं क्षिपेद् गुडादर्द्धं प्रक्षेपं दशमांशकम् ॥

यदि अरिष्ट के पदार्थोंका परिमाण न बतलाया गया हो तो ३२ सेर द्रव (जलादि) पदार्थमें ६। सेर गुड़, गुड़से आधा शहद और गुड़का दसवां भाग प्रक्षेप द्रव्योंका चूर्ण डालना चाहिए ।

तण्डुलोदक (ज्येष्ठाम्बु)

तण्डुलं कणशः कृत्वा पलं ग्राह्यं हि तण्डुलात् ।
चतुर्गुणं जलं देयं तण्डुलोदककर्मणि ॥

कूटकर बारीक किए हुवे चावल ५ तोला लेकर चारगुने पानीमें भिगोदें (जब चावल नरम हो जाय तो पानी नितार लें) यह पानी तण्डुलोदक कहलाता है ।

उष्णोदक (सुखोदक)

अष्टमेनांशशेषेण चतुर्थेनार्द्धकेन वा ।
अथवा क्वथनेनैव सिद्धमुष्णोदकं वदेत् ॥

पानीको पकाकर आठवां, चौथा अथवा आधा भाग शेष रक्खें या केवल उबाल लें तो उसका नाम 'उष्णोदक' होगा ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाक्षारस

षड्गुणेनाम्भसा लाक्षा दोलायन्त्रे ह्युपस्थिता ।
त्रिसप्तधा परिस्राव्य लाक्षारसमिदं विदुः ॥

लाखको कपड़ेमें बांधकर दोलायन्त्रकी विधिसे छः गुने पानी में पकाकर २१ बार छान लिया जाय तो उस पानीका नाम "लाक्षारस" होगा ।

क्षारोदक

गुल्म आदि रोगोंमें जो पीनेके लिए क्षारजल बनाया जाता है उसकी विधि यह है कि क्षारको छःगुने (किन्हीं किन्हीं के मतानुसार चार गुने) पानीमें घोलकर उसे २१ बार चुवाले ।

कट्वर

दध्नः ससारकस्यात्र तक्र कट्वरमिष्यते ।

दहीके सार (घृत) युक्त तक्रका नाम 'कट्वर' है ।

शुक्त

कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च ।
यत्र द्रव्येऽभिषूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते ॥

कन्द, मूल, फलादि तथा तेल और नमकको द्रव पदार्थ (काञ्जी आदि) में डालकर आसवकी तरह सन्धान करके रक्खें । इस क्रियासे जो पदार्थ तैयार होता है उसको 'शुक्त' कहतेहैं ।

मस्तु

उक्तं दधि द्विगुणवारियुतन्तु मस्तु ।

दही में दोगुना पानी डालकर बनाए हुवे तक्रका नाम मस्तु है ।

तुषाम्बु

भृष्टान् माषतुषान् सिद्धान् यवचूर्ण समन्वितान् ।
आसुतानम्भसा तद्वज्जातं तच्च तुषोदकम् ॥

उड़दके छिलकोंको भूनकर उनमें जौकाचूर्ण मिलाकर यथोचित परिमाण पानी में भिगोकर आसवकी तरह सन्धान करके रक्खें । जब पानी खट्टा हो जाय तो निकाल लें । इसका नाम "तुषोदक" है ।

काञ्जी

आशुधान्यं क्षोदितश्च बालमूलन्तु खण्डशः ।
कृतं प्रस्थमितं पात्रे जलं तत्राढकं क्षिपेत् ॥
तावद् सन्धीय संरक्षेद् यावदम्लत्वमागतम् ।
काञ्जिकं तत्तु विज्ञेयमेतत् सर्वत्र पूजितम् ॥

कुटे हुवे धान और मूलीके टुकड़े आधा आधा सेर ले कर सबको ४ सेर पानी में आसवकी तरह सन्धान करके रक्खें । जब खट्टा हो जाय तो निकाल लें । इसका नाम "काञ्जी" है ।

चुक्रम्

यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सगुडक्षौद्रकाञ्जिकम् ।
यथर्तु धान्यराशिस्थं सुक्तं चुक्रं तदुच्यते ॥

मस्तु, गुड़, शहद और काञ्जीको उत्तम स्वच्छ बर्तनमें भरकर सन्धान करके ऋतु अनुसार समय तक (ग्रीष्म और शरद् ऋतु में ३ दिन तक, वर्षामें ४ दिन, वसन्तमें ६ दिन और शीतकाल में ८ दिन तक) अनाज के ढेरमें दबाकर रक्खें ।

इस प्रकार जो अम्ल द्रव तैयार होता है उसका नाम "चुक्र" है ।

चुक्रमें-गुड़ १ भाग, शहद २ भाग, काञ्जी ४ भाग और मस्तु ८ भाग होना चाहिए ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आरनाल

आरनालस्तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः ।
पक्वैर्वा सन्धितैस्तत् तु सौवीरसदृशं गुणैः॥

कच्चे या पके तुष रहित गेहुंओं को स-न्धान करनेसे जो पदार्थ तैयार होता है उसका नाम "आरनाल" है। इसके गुण "सौवीर" नामक सुरा के समान हैं।

पाचनानां द्रव्यपरिमाणम्

दशरक्तिकमानेन गृहीत्वा तोलकद्वये ।
दत्त्वाम्भः षोडशगुणं ग्राह्यं पादावशेषितुम् ॥
इमां मात्रां प्रकुर्वन्ति भिषजः पाचनेषु च ॥

पाचन तैयार करने के लिए १० रत्ती वाले माषे के हिसाबसे २ तोला (२॥ तोला) औष-धिको १६ गुने (आधासेर) पानी में पकाकर चौथाई (१० तोला) बाकी रखना चाहिए।

अन्नादि साधनम्

क्वाथ्यद्रव्याञ्जलिं क्षुण्णं श्रपयित्वा जलाढके।
पादावशेषे तेनाथ यवाग्वाद्युपकल्पयेत् ॥

जिन औषधियोंके क्वाथसे यवागु आदि बनानी हो उन सबको १ अञ्जली (२० तोले) लेकर कूटकर ४ सेर पानी में पकावें, जब एक सेर पानी बाकी रहे तो उतारकर छान लें, इस पानीसे यवागु आदि बनानी चाहिए। बनाने की विधि नीचे लिखी जाती है।

अन्नं पञ्चगुणे साध्यं विलेपी च चतुर्गुणे ।
मण्डश्चतुर्दशगुणे यवागूः षड्गुणेऽम्भसि ॥

अन्न पांच गुने पानी (दवाओंके क्वाथ में), विलेपी चार गुने में और मण्ड १४ गुने में तथा यवागु छः गुने पानीमें पकानी चाहिए,

सिक्थकै रहितो मण्डः पेया सिक्थ समन्विता।
यवागूर्बहु सिक्था स्याद्विलेपी विरलद्रवा ॥

मण्डमें कण बिलकुल नहीं रहता, पेयामें कुछ कण रहता है, यवागूमें कण बहुत अधिक होता है और विलेपीमें पानी बहुत कम होता है।

भावना विधि

भाव्य द्रव्य समं क्वाथ्यं क्वाथ्यादष्टगुणं जलम् ।
अष्टांशशेषितः क्वाथो भाव्यानां तेन भावना ।
द्रवेण यावताद्रव्यमेकी भूयार्द्रतां व्रजेत् ।
तावत् प्रमाणं कर्तव्यं भिषग्भिर्भावनाविधौ ॥

भाव्य द्रव्य (जिस द्रव्यको भावना देनी हो उस) के बराबर क्वाथ्य द्रव्य (जिस चीजोंकी भावना देनी हो वह चीजें) लेकर आठगुने पानी में पकावें जब आठवां भाग बाकी रहे तो उतारकर छान लें।

जिस चीजमें भावना देनी हो उसमें यह क्वाथ इतना डालना चाहिए कि दोनों चीजें मिलकर पतली हो जायं।

मन्थः

शक्तवः सर्पिषा युक्ता शीतवारिपरिप्लुताः।
नात्यच्छा नाति सान्द्राश्च मन्थ इत्यभिधीयते ॥

सत्तूमें घी और ठंडा पानी डालकर मथें। पानी इतना होना चाहिए कि सत्तू न बहुत पतला हो जाय और न बहुत गाढ़ा रहे।

तर्पणः

ज्वरापहैः फलरसैर्युक्तं समधुशर्करम् ।
द्रवेणालोडितास्ते स्युस्तर्पणं लाजशक्तवः॥

धानकी खीलोंके सत्तूमें ज्वरनाशक फलों के रस, शहद और खांड मिलाकर उसे द्रव पदार्थ में मिलावें। इसका नाम "तर्पण" है।

दधि कूर्चिका

दध्नासह पयः पक्वं सा भवेद्दधिकूर्चिका।

दही के साथ पकाए हुवे दूधका नाम "दधि कूर्चिका" है।

तक्र कूर्चिका

तक्रेण पक्वं यतक्षीरं सा भवेत् तक्रकूर्चिका।

तक्र के साथ पकाए हुवे दूधका नाम "तक्र कूर्चिका" है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुरादीना लक्षणानि

सुरामण्डः प्रसन्ना स्यात्ततः कादम्बरी घना ।
तदधो जगलो ज्ञेयो मेदको जगलाद् घनः ॥
बक्कसो हृतसारः स्यात्सुराबीजञ्च किण्वकम् ।
यत्तालखर्जूररसैराबृता सैव वारुणी ॥

सुराके सबसे ऊपर वाले स्वच्छ भागका नाम 'प्रसन्ना' है। उससे नीचे के कुछ गाढ़े भागका "कादम्बरी" कहते हैं।

कादम्बरीसे गाढ़े भागको 'जगल' और उससे गाढ़े भाग को 'मेदक' कहते हैं।

सुराके सारहीन भाग (फोक) का नाम "बक्कस" और सुराबीजका नाम 'किण्व' है।

ताल और खजूरके रससे बनी हुई सुराको "वारुणी" कहते हैं।

तक्रम्

तक्रं ह्युदश्विन्मथितं पादाम्ब्वर्धाम्बुनिर्जलम् ।

यदि दही में चौथाई भाग पानी डालकर मथा जाय तो "तक्र" आधा पानी डालकर मथा जाय तो 'उदश्वित्' और बिना पानी डालेही दहीको मथ लिया जाय तो 'मथित' तैयार होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भारत भैषज्य रत्नाकर

प्रथम भागकी

चिकित्सा-पथ-प्रदर्शिनी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिकित्सा—पथ—प्रदर्शिनी

अग्निमांद्याजीर्णाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
६२२	करञ्जादि	घोर विषूचिका
	चूर्ण	
४४	अग्निकर	अग्निदीपक, अतिसारहर
४५	अग्निमुख	गुल्म, अरुचि, अग्निमांद्य, शूल
४६	,,	तिल्ली, उदररोग, वायु, अजीर्ण, उदावर्त, विष आदि
४७	अग्निमुख लवण	तिल्ली, जिगर, उदररोग, अग्नि०
५६	अतिविषादिचूर्ण	अग्निवर्द्धक, कोष्ट-वायु-नाशक
७२	अम्लकादि	खांसी, श्वास, अरुचि,
६८३	कणादि	अजीर्ण-नाशक और अग्निवर्द्धक
६८७	कपित्थादि	उदर व्याधि
७०३	कारव्यादि	सब प्रकार की अरुचि
७३२	कोलास्थियोग	भस्मक रोग
	गुटिका	
९७	अग्निजननी वटी	अग्नि वर्द्धक
९८	अग्नितुण्डी वटी	अग्नि वर्द्धक
९९	,, दीपनी ,,	,,
१०५	अजीर्णहरी ,,	अग्निमांद्य, शूलादि अनेक रोग
११८	अमृतकल्प ,,	शूल, मन्दाग्नि, अजीर्ण
११९	अमृतप्रभा ,,	अजीर्ण, अग्निवर्द्धक
१२०	अमृत वटी	अजीर्ण, कफ, वायु, दीपन, रोचक
१२१	,, ,,	कफ, पित्त, अग्निमांद्य
७५७	कारव्यादि गुटिका	अरुचि नाशक
	लेह	
१४८	अमृत हरीतकी	अजीर्ण, मन्दाग्नि, उदररोग, शूल, ग्रहणी, अर्श, आमवात
	घृत	
१५६	अग्निघृत (१)	अग्निमांद्य, अर्श, गुल्म, भगन्दर, ग्रहणी, शोथ आदि
१५७	,, ,, (२)	अग्निमांद्य, अर्श, प्लीहा, जलोदर, कुष्ट, प्रमेह, सूजन आदि अनेक रोग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतिसाराधिकार

कषाय-प्रकरण

संख्या	प्रयोग नाम	प्रधान गुण
३६६	आमलेकीआलबाल	प्रबल अतिसार
३७०	आम्रादि योग	पित्तज संग्रहणी, ज्वरातिसार, शूल, रक्तस्राव
३७३	आम्रास्थ्यादि	अतिसार, वमन
६०३	कट्फलादि	पित्तज अतिसार
६२४	कलिङ्गपवषट्कम्	रक्तातिसार, शूल
६२५	कलिङ्गादि	शूल, विबन्ध, दीपन, पाचन
६४९	किरातादि	शोथ, अतिसार, ज्वर
६५२	कुटजदाडिम	रक्तातिसार
६५४	कुटजक्षीर	"
६५६	कुटजाष्टक	रक्तातिसार,शूल,आम,वाताति०
६६७	कृमिशत्र्वादि	कफज अतिसार

चूर्ण-प्रकरण

संख्या	प्रयोग नाम	प्रधान गुण
४९	अजमोदादि	प्रबलातिसार
६२	अभयादि	कफज अतिसार
६५	अभयाविरेचन	प्रवाहिका(पेचिश)में अनुभूत
९३	अहिफेनयोग	पक्वातिसार-नाशक
६८२	कट्फलादि	वातश्लेष्मातिसार
७०७	किराततिक्तादि	ग्रहणी, पाण्डु, हृद्रोग, कामला, सन्निपात
७०९	कुटज चूर्ण	अतिसार
७१०	कुटजादि	पक्वातिसार, रक्तपित्त
७३३	कञ्चटादि	प्रबलातिसार
१०६५	खाण्डव चूर्ण	अतिसार, कृमि,वमन,उदर-रोग, हृद्रोग, श्वास, खांसी

गुटिका-प्रकरण

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
९४	अङ्कोटवटक	सर्व अतिसार
१०९	अभयादिचतुस्समवटी	आमातिसार,अफारा, विषूचिका, कामला
३९४	आमनाशनीवटिका	आमनाशक वर्ति(शाफ़ा)
७५५	कामेश्वर मोदक (१)	ग्रहणी आदि अनेक रोगनाशक, वाजीकरण, रसायन
७५६	" " (२) "	" "

लेह-प्रकरण

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
४१०	आर्द्रककुटजावलेह	सर्वातिसार, रक्तप्रदर,बवा.
७९०	कुटज पुटपाक	सर्वातिसार
७९५	कुटजावलेह (५)	"
७९७	" (७)	वेदनायुक्त अतिसार,रक्तप्रदर, बवासीर, पेचिश
७९९	कुटजाष्टक	रङ्ग बिरङ्गे दस्त, ग्रहणी, शूल,

अरिष्टासव

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
२००	अहिफेनासव	प्रबल अतिसार, हैज़ा
८९२	कुटजारिष्ट	रक्तातिसार, संग्रहणी, ज्वर

रस

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
२८२	अतिसारेभसिंह	अतिसार
२८३	अतिसारवारण	सर्व अतिसार
२८४	अतिसार-हर	अतिसार
२८५	अतिसारान्तक	अतिसार, प्रवाहिका
२९२	अभयनृसिंह रस	सब प्रकार के अतिसार, संग्रहणी, ज्वर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपस्माराधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
६६५	कुष्माण्डकादि योग	मिरगी
	चूर्ण	
६९९	कल्याणक चूर्ण	अपस्मार, उन्माद, वायु, कफ, बवासीर
	गुटिका	
४५९	इन्द्रब्रह्म वटी	अपस्मार
	घृत	
१६१	अमृत घृत	विष, अपस्मार, क्षय, उन्माद, पांडु, कृमि, गुल्म आदि
८२९	काशादि घृत	अपस्मार
८४३	कूष्माण्डादि ,,	,,
	तैल	
८४७	कटभी तैल	अपस्मार
	नस्य	
२२७	अपस्मार हर (१)	अपस्मार
२२८	,, (२)	,,
९३०	करञ्जादि	अपस्मार, उन्माद, भूतरोग

अर्बुदाधिकार

	लेप	
५०५	उपोदिकाद्यभ्यंग	अर्बुद
	रस	
१३५	अर्बुदहर	अर्बुद

५ अम्लपित्ताधिकार

	कषाय	
६१५	कण्टकार्यादि	अम्लपित्त, श्वास, खांसी, वमन, ज्वर
	चूर्ण	
८३	अविपत्तिकर	अम्लपित्त, शूल, अर्श, प्रमेह, मूत्ररोग
५६४	एलादि	अम्लपित्त
	गुटिका	
१२६	अम्लपित्तान्तक मोदक	अम्लपित्त, वमन, मूर्छा, दाह आदि अनेक रोग
	लेह	
१४२	अभयादि लेह	अम्लपित्त, कण्ठ, हृदयकी दाह, मूर्छा
१५१	अम्लपित्तहर पाक	अम्लपित्त, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, अरुचि आदि
५७१	एलादिलेह	अम्लपित्त, अरुचि, ज्वर, दाह, शोथ
१०७६	खण्डकुष्माण्ड	,,
१०८०	खण्ड पिप्पली (१)	,, शूल, वमन, अग्निमांद्य

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
१०८१	खण्डपिप्पली (२) ,, ,,	,, दाह, अरुचि
१०८३	खण्ड शुण्ठी ,, ,,	हृद्रोग, आम-वात, रसायन

रस

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
२६८	अग्निमुख ताम्र	अम्लपित्त, क्षय, शूल
३१९	अमृत रस	अम्लपित्त, अग्निमांद्य, परिणामशूल, पांडु
३२७	अम्लपित्तान्तक	अम्लपित्त

६ अरोचकाधिकार

कषाय

२३ **अम्लिका पानक** अरुचि, पित्त

चूर्ण

७२ **अम्लकादि चूर्ण** अरुचि, अजीर्ण, श्वास

५५९ **एलादि ,,** ,, तिल्ली, उदररोग, श्वास, शूल, ज्वर, अर्श

७०३ **कारव्यादि** अरुचि

गुटिका

११९ **अमृतप्रभा वटी** अरुचि, अजीर्ण, मंदाग्नि

७५७ **कारव्यादि गुटिका** अरुचि

लेह

४०८ **आर्द्रकमातुलुङ्गावलेह** अरुचि, क्षय, कामला, पांडु, खांसी, श्वास, उदरविकार

रस

२४९ **अग्निकुमार** (१७) अरुचि, परिणामशूल, कफ, श्वास, खांसी, सूर्यावर्त

७ अर्शोधिकार

कषाय

३१ **अर्शोघ्न महाकषाय** बवासीर नाशक

३५ **अर्श में तक्र** बवासीर में अकसीर

३६ **अर्शनाशक योग** बवासीर नाशक

चूर्ण

६० **अपामार्ग बीजादि** बवासीर नाशक

६१ **अपामार्गादि कल्क** खूनी बवासीर

७८ **अर्कक्षार** वातज अर्श

६९१ **कङ्कादि** खूनी बवासीर

७०० **कल्याण लवण** बवासीर

७३१ **कोकम्बादि** बवासीर के मस्से

गुटिका

१०० **अगस्ति मोदक** बवासीर, सूजन, ग्रहणी, उदावर्त, खांसी

१०४ **अजाज्यादि** सब प्रकार की बवासीर

११४ **अभ्रक हरीतकी** त्रिदोषज बवासीर

१२९ **अर्शोघ्न वटक** बवासीर नाशक, दीपक

७३८ **कनकावती वटी** सब प्रकार की बवासीर

७४९ **काङ्कायन गुटिका** (१) बवासीर में प्रसिद्ध

७५८ **कार्पास-मज्जा गुटी** ,, नाशक

लेह

७८७ **कल्याण गुड** ग्रहणी, श्वास, खांसी, शोथ, मन्दाग्नि, वंध्यत्व

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
७९६	कुटजावलेह (६)	अर्श, अतिसार, संग्रहणी, रक्तपित्त, प्रवाहिका आदि
७९८	कुटज-रस-क्रिया	रक्तार्श, रक्तातिसार, रक्तप्रदर,
८०६	कुष्माण्ड खण्ड	रक्तार्श, मूढवात, मन्दाग्नि
१०८४	खण्डशूरणावलेह	अर्श, मूढवात
	घृत	
१७०	अवाक्पुष्प्यादि	अर्श, अतिसार, रक्तस्राव, गुदभ्रंश, शोथादि
८३३	कुटजादि	रक्तार्श शूल
	तैल	
८६८	कासीसादि	मस्से नष्ट होते हैं
	आसवारिष्ट	
१९२	अभयारिष्ट (२)	अर्श, उदररोग, मन्दाग्नि, मलावरोध
१९३	„ (३)	ग्रहणी, अर्श, तिल्ली, पांडु, ज्वर, खांसी
१९४	अभयारिष्ट(४)	अर्श, कुष्ठ, प्रमेह, तिल्ली,
८८८	कनकारिष्ट	रोचक, अर्श, ग्रहणी, श्वास ज्वर, शोथ, गुल्म
८९४	कुमार्यासव	अर्श, कास, श्वास, पांडु, गुल्म, उदररोग
	लेप	
२०७	अर्कादि	मस्से

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
२०९	अर्शोहर	मस्से
८९८	कटुतुम्ब्यादि	अर्श
९०६	काञ्चनीलेप	„
	धूप	
२१२	अश्वगन्धादि	बवासीर
९१८	कर्पूरधूप	„
	रस	
२६३	अग्निकुमार (२१)	अर्श, अग्निमांद्य, श्वासादि
२७३	अग्निमुखलोह	मन्दाग्नि, पांडु, कुष्ठ, उदररोगादि
३१२	अभ्रक हरीतकी	त्रिदोषज बवासीर
३२१	अमृताङ्कुर लोह	बवासीर, कुष्ठ, पांडु, वायु, प्रमेह
३३६	अथाऽर्शकुठार रस	बवासीर
३३७	अर्शकुठार रस (१)	„
३३८	„ (२)	„
३३९	अर्शोरि मंडूर „	कृशता, बलकारक, उत्साहवर्धक
३५२	अष्टांग रस	सब प्रकारको बवासीर
९४६	कनकसुंदर (४)	अर्श, कटिशूल, क्षय, श्वास, ज्वरादि रोग पुञ्ज

८ अश्मर्यधिकार

कषाय

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
५४९	एलादि	पथरी, मूत्रकृच्छ्र
३५७	आकल्लकादि	पथरी, रेग, अत्यन्त पीडा
५५९	कुलत्थादि	मूत्र के साथ पथरी निकल जाती है

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	चूर्ण	
७७	अर्कपुष्पी कल्क	दाह युक्त पथरी
३८७	आनन्द योग	पथरी, शर्करा
५६०	एलादि योग	दुस्साध्य पथरी
७३०	केशर योग	शर्करा (रेग)
	गुटिका	
३९३	आनन्दभैरवी वटी	पथरी
	घृत	
८३६	कुशाद्य	पित्तज पथरी
८४०	कुलत्थादि	दुस्साध्य पथरी, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात
	तैल	
५००	उशीराद्य	मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी,
८७५	कुशादि	शर्करा, पथरी मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, योनिशूल
	रस	
३४१	अश्मरीकण्डन	दारुण अश्मरी, शर्करा
३४२	अश्मरीभिद्रस	पथरी
३४३	अश्मरीभेदक	„

९ आमवाताधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	चूर्ण	
५२	अजमोदादि चूर्ण	सूजन, आमवात (गठिया) वातव्याधि
६९	अमृतादि	आमवात
८०	अलम्बुषादि (१),,	आमवात, गांठोंकी सूजन
८१	„ (२) „	सूजनयुक्त गठिया, वातरक्त त्रिक जानु उरु सन्धिगत वायु, ज्वर, अरुचि
८२	अलम्बुषादि चूर्ण (३)	प्रवृद्ध आमवात
५७८	एरण्ड-तैल-हरीतकी	आमवात
	गुटिका	
१०२	अजमोदादि वटक	आमवात
१०८	अभयादि गुटी	„
३९५	आमवात गजसिंह-मोदक	„ शूल, रक्त-अम्लपित्त,
३९७	आमवातारि वटिका	आमवात वातव्याधि
३९८	„ „	गुल्म, शूल, उदररोग, आमवात, भेदक, पावक, तिल्ली
३९९	आमवातारि वटिका	आमवात
५६५	एरण्डादि गुटी „	„
	लेप	
४२९	आमवातहर	आमवात
११०३	खर्जूरादि	उरुस्तम्भ
	रस	
४४४	आमवात-विध्वंसन	आमवात, वातव्याधि हनुस्तम्भ, अपस्मार, उन्माद, सर्वांग पीडा
४४५	आमवातारि	आमवात
४४६	आमवातेश्वर	आमवात, गुल्म, शोथ, ग्रहणी, अर्श, उदररोग, पांडु
५११	उदय भास्कर (१)	आमवात
५१२	„ „ (२)	„
५१५	„ „ (२)	आमवात, कम्पवात, संधिवात, उदररोगादि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१० उदररोगाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	चूर्ण	
४७	**अग्निमुख लवण**	उदररोग, तिल्ली, जिगर, गुल्म, शूल, आदि अनेक रोग
५५१	**एरण्डभस्म योग**	तिल्ली नाशक
६८७	**कपित्थादि**	उदर रोग
७१२	**कुष्ठादि**	वातोदर
७१६	„	तिल्ली, उदावर्त
	तैल	
१७६	**अग्निमन्थादि क्षार**	उदररोग वातजहृदयग्रह
	रस	
४४९	**आरोग्य सागर**	पाण्डु, अरुचि, उदावर्त ज्वर, मन्दाग्नि आदि
५१९	**उदय मार्तण्ड**	उदर शोथ, भगन्दर
	गुटिका	
९६	**अग्निगर्भा वटी**	तिल्ली, जिगर, गुल्म शूल, आदि अनेक रोग
११०	**अभयादि मोदक**	तिल्ली, बवासीर, गुल्म, पाण्डु आदि
११३	**अभया वटी**	उदररोग, तिल्ली, जिगर, रक्तपित्त
५२१	**उदरघ्न रस**	समस्त उदर रोग
५२२	**उदरध्वान्त सूर्य**	अष्टोदर विशेषतः जलोदर, गुल्म, शूल, अफारा
५२३	**उदरामयकुंभकेसरी**	यकृत, कृमि, प्लीहा, जलोदरादि
५२४	**उदरारि रस** (१)	स्त्रियोंका जलोदर, दकोदर
५२५	„ „ (२)	सर्व उदर

११ उदर्दाधिकार

कषाय

४७७ **उदर्द प्रशमन महा** उदर्दनाशक

१२ उन्मादाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	गुटिका	
४९३	**उन्मादभञ्जनी**	उन्माद, अपस्मार हर अंजन
	घृत	
४९५	**उन्माद–नाशक**	उन्माद
८२६	**कल्याणक घृत**	अपस्मार, उन्माद, ज्वर, कास, वातरोग, क्षय आदि
	अरिष्ट	
१९८	**अश्वगन्धारिष्ट**	उन्माद, मिरगी, मूर्छा, वातव्याधि, अर्श
	अञ्जन	
२१८	**अञ्जन नं. ४**	उन्माद

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या प्रयोग-नाम प्रधानगुण

९२७ **कृष्णाञ्जन** उन्माद

रस

५३० **उन्मादगजकेसरी** (१) उन्माद, अपस्मार

५३१ „ (२) उन्माद, अपस्मार, भूतोन्माद ज्वर

संख्या प्रयोग-नाम प्रधानगुण

५३२ **उन्मादगजाङ्कुश** विशेषतः भूतोन्माद, दोषोन्माद

५३३ **उन्मादभञ्जन** उन्माद, अपस्मार, कृशता, रक्तपित्त,

५३४ **उन्माद हर योग** उन्माद, अपस्मार

१३ उपदंशाधिकार

कषाय

३७ **अश्वत्थादिप्रक्षालन** आतशक के घाव और सूजन

३६७ **आम्रत्वचाका स्वरस** आतशक के घाव

घृत

८२५ **करञ्जाद्य घृत** उपदंश के घाव, दाह, पाक घाव से स्राव होना, लाली

तैल

१७६ **आगार धूमादि** उपदंश, खुजली, सूजन, व्रणशोधन, रोपण

लेप

५०२ **उपदंशलिंग लेप** घाव

५०३ **उपदंशस्फोटेऽग्रलेप** व्रणशोधक, रोपक

५०४ **उपदंशहर लेप** उपदंश के घाव

धूप

५०९ **उपदंशहर धूप** आतशक (उपदंश)

रस

५३५ **उपदंशकुठार** उपदंश

५३६ **उपदंशेभसिंह** उपदंश, सन्धि और अस्थिशोथ

१४ कर्णरोगाधिकार

कषाय

२९ **अर्काङ्कुरादि स्वरस** कान का दर्द

३० **अर्कपत्र** „ „

६२३ **कर्ण प्रक्षालन** कर्णरोग

वटिका

४५८ **इन्दु वटी** कर्णनादादि वातजरोग, प्रमेह

तैल

१८१ **अपामार्ग क्षार** कर्णनाद, बधिरता

८६३ **कर्णामयघ्न तैल** समस्त कर्ण रोग

८७७ **कुष्ठ तैल** पूतिकर्ण

८८५ **कृमिकर्णारि** कान से कीट पतंगादि बाहर निकलता है

लेप

२०६ **अर्कलेप** कर्णमूल

रस

९६४ **कर्णरोग हर** कर्णरोग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१५ कासाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
११	अमृतादि क्वाथ	खांसी, श्वास
६०२	कट्फलादि ,,	वातकफज खांसी, ज्वर, हिचकी, श्वास
६११	कण्टकार्यादि	पित्तज–खांसी
६४२	कासहर महाकषाय	खांसी
६६१	कुलत्थादि क्वाथ	खांसी, श्वास, ज्वर
	चूर्ण	
६७०	ककुभ चूर्ण	क्षय, खांसी, रक्तपित्त
६७७	कटुत्रिकादि ,,	खांसी
६७८	कटुत्रयादि ,,	खांसी
६७९	कट्फलादि ,,	खांसी, श्वास, ज्वर, अरुचि, वमन, क्षय
६८०	कट्फलादि ,,	कफ, खांसी, श्वास, शूल, छर्दि, क्षय, अरुचि
६९७	कर्पूरादि चूर्ण	क्षय, खांसी, स्वरभेद, छर्दि,
७१९	कुष्माण्ड शिफा	दारुण श्वास, खांसी
७३५	कण्टकार्यादि	खांसी
	गुटिका	
७३९	कफघ्नीवटी	कफ नाशक
७५९	कासकर्तरी गुटिका	खांसी, श्वास, क्षय, हिक्का
७६०	कासहरी वटी	पांच प्रकार की खांसी
७६१	कासादिहरी वटी	खांसी, श्वास
१०६७	खदिरादि गुटिका	पुरानी और दुस्साध्य खांसी, श्वास
	लेह	
१४१	अपराजित लेह	वातज खांसी
४०७	आर्द्रक पाक	श्वास, खांसी, स्वरभंग, विस्मृति
४०९	आर्द्रकावलेह	खांसी, अर्श, ज्वर, पीनस, शोथ, गुल्म, क्षय
४६२	इक्ष्वादि लेह	क्षतजकास
७८०	कणादिलेह	खांसी
७८२	कण्टकारी	सब तरह की खांसी
७८३	कण्टकारी लेह	खांसी, श्वास, हृद्रोग, गुल्म
७८९	कासकण्डन लेह	कष्टसाध्य सर्व खांसी
८००	कुलत्थावलेह	खांसी, श्वास, हिचकी
१०७५	खण्डकुष्माण्ड	खांसी, श्वास, ज्वर, हिचकी, रक्तपित्त, अम्लपित्त
१०८९	खर्जूरादि	पित्तज खांसी
१०९०	,,	,, ,,
	घृत	
८२१	कण्टकारी घृत	कास, श्वास, हिक्का, कफरोग
८२२	,, ,,	वातकास हर, अग्निदीपक
८३१	कासमर्दादि,,	शोष, ज्वरप्लीहा, सर्वकास
८४२	कुलत्थादि ,,	कफज खांसी, श्वास
४४४	कोलादि ,,	कास, श्वास, ज्वर, स्वरभंग
	धूम्र	
२१४	अर्कमूलादि	५ प्रकारकी खांसी
	रस	
२३०	अगन्धखर्पर पर्पटी	खांसी, योगवाही
२७४	अग्नि रस	खांसी
२७५	,,	,, क्षय
३१७	अमृतमञ्जरी रस	सन्निपात, अग्निमांद्य, कास श्वास, जीर्णज्वर, क्षय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
५२८	उन्मत्तभैरव	क्षय, श्वास, कफरोग, पौष्टिक
९५५	कफकेतु रस	कफरोग
९५६	,,	खांसी, श्वास, शीत, वायु
९५७	,,	कफरोग
९५८	,,	,,
९५९	,,	पीनस, श्वास, कास, सन्निपातादि
९६०	कफ चिन्तामणिरस	कफरोग, वातरोग
९६८	कल्पतरु	खांसी, श्वास, कफरोग, ग्रहणी, कुष्ठ
१००२	कालान्तक	कास, श्वास, अतिसार, ग्रहणी
१००६	कासकर्तरी	खांसी
१००७	कास कुठार	सर्वकास, सन्निपात, शिरोरोग
१००८	कासकेसरी	खांसी, श्वास
१००९	कासनाशन	खांसी
१०१०	कासश्वाशविधूनन	कास, श्वास
१०११	कास संहार भैरव	सर्वकास, श्वास, अरुचि
१०१२	कासहरी	खांसी
१०१३	कासान्तक	,,
१०१४	कासारि	सर्वकास

१६ कुष्ठाधिकार

कषाय

९६३ कुष्ठघ्न महाकषाय — कुष्ठ

१०५६ खदिराष्टक — ,, विस्फोटक, विसर्प, खुजली, मसूरिका

चूर्ण

७११ कुष्ठनाशक प्रयोग — अनेक प्रकार के कुष्ठ

गुटिका

७४५ कल्याण गुटिका — कुष्ठ, भगन्दर, पाण्डु, अर्श, कामला, ग्रहणी, प्रमेह

७४७ काकणघ्न वटी — काकण कुष्ठ

४४८ आरोग्य वर्द्धनी — सर्वकुष्ठ, ज्वर, मेद, मन्दाग्नि, शोधक

१०७१ खदिरादि — सर्वकुष्ठ

गुग्गुलु

१३४ अमृतादि — सर्वकुष्ठ, वातरक्त, कामला आमवात, भगन्दर, प्रतिश्याय पीनस,

१३५ अमृतादि — कुष्ठ, वातरक्त, अर्श, व्रण, मन्दाग्नि, प्रमेह, शोथ, आमवात

१३६ ,, — कुष्ठ, वातरक्त, अर्श, व्रण, मन्दाग्नि, प्रमेह, भगन्दर, आमवात

५६८ एकविंशतिको — कुष्ठ, कृमि, दाह भग्न आदि अनेक रोग

लेह

१४५ अमृत भल्लातकी — सर्वकुष्ठ, अनेक रोग

घृत

४२२ आवर्तकी घृत — गलत्कुष्ठ, स्रावयुक्त व्रण

८३२ कासीसादि — कुष्ठ, दाद, पामा, त्वग्दोष, व्रण,

१०९१ खदिरादिपंच-तिक्त घृत — ८ प्रकार के कुष्ठ, ग्रन्थि, गलगण्ड, व्रण, विसर्प

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	तैल	
४२५	आरग्वधादि	श्वेतकुष्ठ
४९८	उन्मत्त तैल	विपादिका
८५३	कनकक्षीर	कुष्ठ, खुजली, सफ़ेद कोढ़, कृमि
८५४	कन्दर्पसार	सर्वकुष्ठ, त्वग्दोष, रक्तदोष, गण्डमाला, भगन्दरादि
८५७	करवीर तैल	कुष्ठ, खुजली
८५८	,,	,,
८५९	,,	सिध्म, पामा, विस्फोटक, चर्मदल, कृमि
८७६	कुष्ठकालानल	विशेषतः वातकुष्ठ
८७८	कुष्ठराक्षस	श्वित्र, कच्छु, मांसवृद्धि, पामा वातरक्त
८७९	कुष्ठविद्रावण	सुप्तिकुष्ठ, कृष्णकुष्ठ
८८३	कुष्ठादि तैल	कुष्ठ
	आसव	
४२८	आवर्तक्यासव	कमरका दाद
८८९	कनकारिष्ट	पुराना कुष्ठ, शोथ, प्रमेह, श्वास
१०९६	खदिरासव	सर्वकुष्ठ, पाण्डु, खांसी, हृद्रोग कृमि, अर्बुद, गुल्म
१०९७	,,	महाकुष्ठ

१७ कृमिरोगाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
६६६	कृमिघ्न महाकषाय	कृमिरोग
१०५५	खदिरादि क्वाथ	,,
	चूर्ण	
५८	अतिविषादि	कृमिरोग
७२१	कृमिघ्न	,,
	गुटिका	
७६९	कृमिघातिनी गुटिका	कृमिरोग
	रस	
२६५	अग्नितुण्ड रस	कृमिरोग
१०१८	कीटमर्द ,,	,,
१०३५	कृमिकालकूट	,,
१०३६	कृमिकालानल रस	उदरस्थ कृमि, ग्रहणी, अर्श, शोथ, उदररोग
१०३७	,, काष्ठानल	कफवातज और कफपित्तज कृमि
१०३८	,, ,, कुठार	सात प्रकार के कृमि
१०३९	,, ,,	कृमिरोग
१०४०	कृमिघ्न	,, शूल
१०४१	कृमिदावानल	कृमिरोग
१०४२	,, धूलिजलप्लुव	पित्तज कृमि
१०४३	,, मुद्गर	कृमिरोग, अग्निमांद्य
१०४४	कृमि रोगारि	कृमिरोग
१०४५	,, विनाशन	,,
१०४६	,, हर	,,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१८ गण्डमालाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	क्वाथ	
६३८	काञ्चनारादि	गण्डमाला
	तैल	
१७७	अजमोदादि	गण्डमाला
१८३	अमृतादि तैल	गलगण्ड
१८४	,, ,,	,,
८४८	कटुतुम्बी ,,	पुराना गलगण्ड
८४९	कटुतुम्बी तैल	गण्डमाला, गलगण्ड
	गुग्गुलु	
७७१	काञ्चन गुटिका	गलगण्ड, गण्डमाला नासूर
७७२	काञ्चनारगुग्गुलु	गण्डमाला, अपची, अर्बुद, कुष्ठ, भगन्दर, ग्रन्थि
	नस्य	
४३२	आरग्वधादिनस्य	गण्डमाला

१९ गुल्मरोगाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	चूर्ण	
६३	अभयादि योग	त्रिदोषज गुल्म
७६	अर्कपत्रादि	गुल्म, तिल्ली, उदररोग
६९३	करञ्जादि पुटपाक	गुल्म, पांडु, उदररोग, सूजन
७२८	केतकीक्षारयोग	वातज गुल्म
	गुटिका	
७५०	काङ्कायन गुटिका	गुल्म, ग्रहणी, शूल बवासीर
७५१	,,	,, ,, ,, ,, ,,
	घृत	
४२१	आमलक्यादि घृत	पित्तगुल्म
	तैल	
५७९	एरण्ड तैल योग	वात गुल्म
८८२	कुष्ठादितैल	गुल्म, जलोदर, प्लीहा, शूल, शोथ
	आसव	
८९५	कुमार्यासव	गुल्म, उदावर्त, अफारा, स्वास, कास, उदररोगादि
८९६	,,	कास, स्वास, गुल्म, क्षय, उदररोग, अर्श, स्त्रीरोगादि
	रस	
२४४	अग्निकुमार	वात गुल्म
२७२	अग्निमुख	गुल्म, शूल
५१०	उड्डामर	पित्त गुल्म
५२६	उड्डामाख्य	,, ,,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२० छर्द्यधिकार

संख्या	प्रयोग नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
४१	अश्वत्थवल्कलादि	वमनमें अत्यन्त उपयोगी
४७२	उग्रगन्धादि योग	वमन नाशक
४७८	उदीच्यादि	,, ,,
६२१	करञ्जबीजादि	,, ,,
	चूर्ण	
३९१	आम्रादि चूर्ण	वमन नाशक
५५६	एलादि	वमन, कफ, वातपित्त
६९२	करञ्जबीजादि	वमन-नाशक
	लेह	
७८५	करञ्जादि	वमन नाशक
८१०	कोलमज्जा योग	,, हिचकी
८१२	कोलाद्यवलेह	,, ,,

२१ जलोदराधिकार

संख्या	प्रयोग नाम	प्रधान गुण
	रस	
२३१	अगस्ति रस	जलोदर
५२४	उदरारि रस	स्त्रियों का जलोदर
५२३	उदरामय कुंभकेसरी रस	जलोदर, मन्दाग्नि, गुल्म, जिगर, कृमि, आमरोग अम्लपित्त, व्रण, अग्रमांस

२२ ज्वराधिकार

संख्या	प्रयोग नाम	प्रधान गुण
	कषाय-प्रकरण	
६	अभयादि क्वाथ	सन्निपात, तृषा, दाह, स्वास खांसी, प्रलाप, तन्द्रा आदि
८	,, ,,	कफज्वर, दीपन, पाचन, भेदक
१५	अमृतादि ,,	वातज्वर
१६	,, हिम	पित्तज्वर, खांसी, रक्तपित्त
१८	,, क्वाथ	पित्तज्वर
२०	अमृताष्ट	पित्तकफज्वर, अरुचि, वमन, दाह, तृषा
३६२	आमलक्यादि	सन्तत ज्वर
३६४	आमलक्यादि गण	सर्व ज्वर, कफ, अरुचि, दीपन
३६९	आम्रादि हिम	ज्वर, तृष्णा, वमन अतिसार, मूर्छा
३७४	आरग्वधादि क्वाथ	विष्टम्भ, कब्ज
३७५	,, ,,	वातपित्त-ज्वर
३७१	,, ,,	कफ, वातज्वर, आम, शूल, दीपन, पाचन
३७७	,, ,,	बालकों का ज्वर आम, शूल, दाह, वमन
३७८	आरग्वधादि गण	कफ, विष, वमन, कोढ़, खाज, ज्वर
३७९	आरोग्य पञ्चक	कफ, वायु, दीपन, पाचन
३८०	,, ,,	आमज्वर, जीर्णज्वर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
३८१	आरोग्याम्बु	ज्वर, कफ, खांसी श्वास, पाचन
३८३	आर्द्रकादि कल्क	नाना देशों के पानी से उत्पन्न हुवा ज्वर
३८४	,, कवल	कफ, बदन टूटना, मूर्छा, नींद, मतली
४८०	उदुम्बरादि क्वाथ	पित्त-ज्वर
४८४	उशीरादि ,,	तिजारी ज्वर, तृष्णा, दाह
४८५	,, ,,	वात-ज्वर
४८७	उशीरादि षडङ्ग	दाह, तृष्णा, ज्वर
५९०	औदुम्बरादि	दाह, ज्वर
५९८	कटुकयादि	कफ-ज्वर
५९९	,,	आमाशयगत ज्वर
६००	कट्फलादि	कण्ठमूल-शोथ, कफवात-ज्वर
६०४	,,	दाह, तृषा, पुराना ज्वर सन्निपात
६०५	,,	पित्त-ज्वर, पाचक
६०७	कणादि	क्षीणज्वर, (मन्दज्वर)
६०८	,,	वात-कफ-ज्वर शीत, पसीना मोह, हिचकी
६०९	,,	पित्त-कफ-ज्वर
६१२	कण्टकार्यादि	पित्त-कफ-ज्वर, दाह, शूल, खांसी
६१३	कण्टकार्यादि क्वाथ	कफ ज्वर
६१४	,,	,,
६१६	,,	सर्व ज्वर
६२७	कलिङ्गादि	जीर्णज्वर, चौथिया, सर्वज्वर
६२८	कलिङ्गादि	पित्त-ज्वर, पाचन
६३३	काकोल्यादि	वात-ज्वर
६३९	काश्मर्यादि	,,
६४३	किरमालादि	कफ-पित्त-ज्वर
६४५	किरातादि	वात-कफ-ज्वर
६४८	,, ,,	जीर्णज्वर सन्निपात, वात-कफ ज्वर
६५०	,, ,,	पित्तज्वर, दाह, वमन, अरुचि
६५१	,, ,,	वात-पित्त-ज्वर
६५७	कुमारिमूलादि वमन	विषम-ज्वर
६५८	कुलकादि क्वाथ	पुराना विषम-ज्वर
६६४	कुष्ठादि ,,	कफ ज्वर
१०५९	खर्जूरादि ,,	वात-पित्त-ज्वर

चूर्ण-प्रकरण

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
५९	अनन्तादि	सर्वज्वर, अग्निदीपक
७१	अमृताष्टक	पित्त-कफ-ज्वर, वमन, प्यास दाह, उबकाइ, अरुचि,
७९	अरिष्टादि	रोज़ाना, तिजारी, चौथिया बुखार
३९०	आमलक्यादि	सर्वज्वर, कफ, दीपन, पाचन, भेदक, रोचक
५४०	ऊषणादि	लालबुखार, रोमान्तिका, मसूरिका, जीर्णज्वर, विस्फोटक
६७५	कटुकी चूर्ण	पित्त-कफ-ज्वर
६७९	कट्फलादि	कंठरोग, खांसी, श्वास, शूल, वमन, वायु, क्षय
६८८	कपित्थादि पेया	पाचन, ग्राही, वायु
६९८	कलिङ्गादि चूर्ण	कफ-ज्वर
७०८	किरातादि ,,	बुरे पानीसे उत्पन्न हुवा ज्वर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेह-प्रकरण

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
१५४	अष्टाङ्गावलेह	दुर्जय सन्निपात, श्वास, खांसी, तन्द्रा, हिचकी
४०३	आमलकाद्यवलेह	ज्वर, मूर्छा, खांसी, श्वास,
७७९	कट्फलादि	खांसी, श्वास, ज्वर, कफ
७८०	कणादि	ज्वर, खांसी
८०१	कुरण्टकादि	जीर्णज्वर, अग्निमाद्य, श्वास, कास, धातुगत अनेक ज्वर

घृत-प्रकरण

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
१६२	अमृतषट्पल	रोज़ाना, तिजारी आदि ज्वर, बवासीर, श्वास, कृशता
१६४	अमृतादि	विषम ज्वर, क्षय, अरुचि, कामला,
८४१	कुलत्थादि	कफ, वायु, हृद्रोग, तिल्ली, जीर्णज्वर, ग्रहणी, गुल्म, श्वास, कास
८४५	कोलादि	विषम ज्वर

तैल-प्रकरण

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
१८९	अश्वगन्धादि	सर्वज्वर, क्षय, धातुवर्द्धक
५९३	कङ्गारक	सर्वज्वरों में प्रसिद्ध
४२७	आरनाल तैल	ज्वर, दाह
८६९	किरातादि	पित्तज्वर, विषमज्वर, धातुगतज्वर, पांडु, शोथ

आसवारिष्ट-प्रकरण

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
१९५	अमृतारिष्ट	सर्वज्वर नाशक प्रसिद्ध
५८३	एलाद्यरिष्ट	मसूरिका, विसर्प, विषमज्व, खांसी, भगन्दर

धूप-प्रकरण

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
२११	अगुर्वादि	रुग्दाह सन्निपात

अञ्जन-प्रकरण

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
२१७	चातुर्थिकारि	चौथिया, ज्वर, मिरगी, उन्माद
३३२	अर्द्धनारीनटेश्वर	ज्वर नाशक
५९५	अञ्जन वटी	सर्व ज्वर

नस्य-प्रकरण

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
२२६	अगस्तिपत्र	चौथिया ज्वर
९२९	कणादि	रोज़ाना, तिजारी आदि

रस-प्रकरण

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
२७७	अचिन्त्यशक्ति	सर्व ज्वर
२९१	अपूर्वमालिनीवसंत	जीर्ण-ज्वर, विषम ज्वर, प्रमेह
३१४	अमृतकलानिधि	पित्त-कफ-ज्वर, अग्निमांद्य
३३२	अर्द्धनारीनटेश्वर	ज्वर-नाशक प्रसिद्ध अंजन
३४०	अल्प ज्वरांकुश	सर्व ज्वर
३५१	अष्ट मूर्ति	भौतिकज्वर, तिजारी, चौथिया आदि
४४७	आरोग्यराशी	नवीन ज्वर, सन्निपात
५३७	उमाप्रसादन	शीत, ज्वर, चौथिया, तिजारी
९३६	कज्जली	वृष्य, बृंहण, योगवाही
९३७	,,	सन्निपात, रक्तातिसार, खूनी कै, योगवाही
९४४	कनकसुन्दर	सन्निपात, विष, रक्तविकार, भगन्दर
९५२	कफकुठार	कफ-ज्वर
९५४	कफकेतु	सन्निपात, कफ, पीनस, शिरोरोग, कंठरोठ
९६७	कल्पतरु	वात-कफ-ज्वर, श्वास, मोह, शीत, हैज़ा, छींक आना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२३ ज्वरातिसाराधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय-प्रकरण	
३२	अरल्वादि	सर्व ज्वर, सब अतिसार
४७४	उत्पलषट्क	दस्त, बुखार
४८२	उशीरादि	अनेक प्रकारके अतिसार, शूल,
६०६	कणादि	ज्वरातिसार, तृष्णा, वमन
६२६	कलिङ्गादि	ज्वरातिसार
६४४	किराततिक्तादि	लौट लौट कर आनेवाला ज्वर
	चूर्ण-प्रकरण	
४८८	उत्पलादि	ज्वरातिसार
	गुटिका-प्रकरण	
७४३	कलिङ्गादि गुटिका	ज्वरातिसार, शूल, रक्तदोष
	रस-प्रकरण	
९४३	कनक सुन्दर	ज्वर, अतिसार, ग्रहणी, मंदाग्नि
९९२	कारुण्यसागर	सर्वातिसार, ज्वर, शोथ

२४ तृष्णाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
५	अभयादि क्काथ	कृमिरोग
३६८	आम्रादि कषाय	तृष्णा
६३०	कसेर्वादि क्काथ	,,
६४०	काश्मर्यादि	,,
	चूर्ण	
७१४	कुष्ठादि चूर्ण	तृषा
	गुटिका	
३९६	आमलक्यादि	तृषा
१०७४	खर्जूरादि	,, मोह, रक्तपित्त
	रस	
१०२१	कुमुदेश्वर	तृषा

२५ त्वग्रोगाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
६१८	कण्डूघ्न महाकषाय	खुजली
१०५७	खदिरोदक	त्वचाके समस्त रोग
	चूर्ण	
५०७	उबटना	त्वग्दोष
५०८	,,	शरीर की दुर्गन्धि
५९४	अङ्गराग लेप	सौन्दर्य वर्द्धक
	तैल	
४२६	आदित्य पाक	खुजली
१८६	अर्कपत्र रस	पामा, कच्छु
	लेप	
२०४	अघोरजादि	त्वग्रोग
२१०	अवल्गुजादि	खुजली

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२६ दाहाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
४७६	उत्पलादि गण	दाह, रक्तपित्त, तृषा, छर्दि, मूर्च्छा
५९२	अञ्जनादि गण	रक्तपित्त, विष, भीतरी दाह
	चूर्ण	
१०६४	खर्जूरादि चूर्ण	दाह
	घृत-तैल	
८३७	कुशादि घृत–तैल	दाह, वातपित्त
	लेप	
५९४	अङ्गराग लेप	दाह
	धूप	
२११	गुर्वादि धूप	दाह

२७ नासारोगाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	चूर्ण	
६८१	कट्फलादि	पीनस, स्वरभेद, श्वास, कफ, सन्निपात
	नस्य	
९३५	कलिंगादि अवपीडन	नासारोग
	तैल	
८६०	करवीराद्यं	नासार्श
८६५	कलिंगादि	पीनस, पूतिनस्य

२८ नेत्र रोगाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	गुटिका	
७४०	करञ्जबीज वर्ति	नेत्र फूला
७६४	कुमारिका ,,	नेत्र रोग
	घृत	
१६८	अमृतादि गुग्गुलु-घृत	अर्बुद, काच, फूला, रोहे, खुजली
	तैल	
१७८	अजित तैल	तिमिर, नेत्र स्वच्छ करता है
८८६	कृष्णाद्य	व्रण, शुक्र, तिमिर, पलकों आदि का पकना
	लेप	
९०९	कुमार्यादि	नेत्र दुखना आदि
	अञ्जन	
२१९	नेत्रशुक्र नाशक	आंख का फूला
२२०	अञ्जनशलाका	नेत्ररोग
२२२	अमृताञ्जन	तिमिर
९२०	कणादि	रतौंधा
९२२	कतफलादि	नेत्र प्रसादक
९२३	,,	तिमिर, काच, शुक्र
९२४	करंजादि	रतौंधा
९२६	काश्मर्यादि	पित्तज नेत्ररोग
	नस्य	
२२९	अश्वगन्धादि	नेत्ररोग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२९ पाण्डु कामला हलीमकाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
४५२	**इन्द्रवारुण्यादि**	पांडु, ज्वर, श्वास दाह, गुल्म
५४४	**एरण्ड स्वरस**	कामला
	चूर्ण	
७३	**अयोरजादि चूर्ण**	कामला
७४	,, **योग**	,,
५५४	**एलादि चूर्ण**	,,
१०६१	**खण्डसम चूर्ण**	कामला, पांडु, हलीमक, कुष्ठ, रक्तपित्त, मूर्च्छा, सन्ताप, शोथ, ग्रहणी
	गुटिका	
११२	**अभया मोदक**	पांडु रोग
१३१	**अष्टादशाङ्ग गुटिका**	पांडु, शोथ, प्रमेह, ग्रहणी, खांसी आदि
	तैल	
१८७	**अर्कादि**	खल्लीशूल, विषूचिका, पक्षाघात
	आसव	
८९१	**कर्पूरासव**	विषूचिका
	अञ्जन	
२९३	**अपमार्गाद्यञ्जन**	हैज़ा
	लेप	
९१३	**कुष्ठादि लेप**	हैजा, खल्लीशूल
	रस	
२३१	**अगस्ति रस**	जलोदर, उदररोगादि
२३४	**अग्निकुमार रस**	ज्वर, पीनस, अग्निमांद्य खांसी आदि अनेक रोग
२३७	,, ,,	विसूचिका, शूल, मंदाग्नि, वायु
२३८	,, ,,	अजीर्ण विसूचिका
२३९	,, ,,	अग्निदीपक
२४०	,, ,,	अग्निमांद्य
२४१	,, ,,	अग्निमांद्य
२४२	,, ,,	,,
२४३	,, ,,	,,
२४५	,, ,,	दीपन, ग्रहणी, ज्वर, क्षय अदि
२४६	,, ,,	अग्निमांद्य, क्षय, वायु, कफ, शूल आदि अनेकरोग
२४८	,, ,,	अजीर्ण, संग्रहणी, शूल, हैजा
२५०	**अग्निकुमार**	अजीर्ण, ग्रहणी, मन्दाग्नि
२५२	,, ,,	अरुचि, मंदाग्नि, शूल, श्वासादि
२५४	,, ,,	अग्निमांद्य, सन्निपात, पाण्डु, वातरोग, श्वास
२५६	,, ,,	मंदाग्नि, आम, ग्रहणी
२५७	,, ,,	वातज, अजीर्ण, हैजा, कफरोग
२५८	,, ,,	अनेक रोग
२५९	,, ,,	मंदाग्नि, संग्रहणी, शूल, हैजा
२६०	,, ,,	,, शूल, प्लीहा, आम
२६१	,, ,,	,, शोथ, पाण्डु, अर्श, संग्रहणी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
२६२	,, ,,	,, ग्रहणी, कृशता, ज्वर, शूल
२६६	अग्निदीपन रस	अग्निदीपक
२६७	अग्निप्रद ,,	मंदाग्नि, आम, सन्निपात, वायु
२७१	अग्निमुख ,,	अजीर्ण, शूल, विषूचिका, गुल्म, हिचकी, उदरोग
२७६	अग्निसन्दीपन रस	अजीर्ण, मंदाग्नि, गुल्म, शूल,
२७८	अजीर्ण कण्टक	अग्निमांद्य, कफ
२७९	,,	अजीर्ण, हैजा, वायु
२८०	अजीर्णबलकालानल	पुराना अग्निमांद्य, प्रसूति-रोग, गुल्म, शूलादि रोगपुञ्ज
२८१	अजीर्णारि	दीपन, पाचन, रेचन,
४३६	आदित्य रस	अजीर्ण, दीपन
१०५२	क्रव्याद रस	अत्यन्तअग्निवर्द्धक,गुल्म तिल्ली,ग्रहणी,शूल, उदररोग

३० प्रमेहाधिकार

कषाय

४८१	उशीरादि	पित्तज प्रमेह
६६८	केतकीमूलयोग	प्रमेह
१०५४	खदिरादि	मधुमेह
१०५८	खर्जूरादि	रक्तमेह

चूर्ण

९२	असनादि योग	प्रमेह, दुस्साध्य मधुमेह
६८५	कतक बीज योग	सर्व प्रमेह
६९०	कम्पिल्लादि	कफ पित्त प्रमेह
१०६३	खदिरादि योग	प्रमेह

गुटिका

४६०	इन्द्रवटी	मधुमेह
१०६९	खदिर गुटिका	कफ, प्रमेह,हिचकी,पीनस मुखरोग

लेह

१५२	अश्वगन्धा पाक	प्रमेह,जीर्णज्वर,गुल्म,वा०
८०३	कुशावलेह	प्रमेह, मूत्राघात,अश्मरी, अरुचि, पौष्टिक

घृत

८२४	कदल्यादि	सोमरोग, बहुमूत्र, प्रमेह, शुक्रदोष, पथरी, मूत्राघात

तैल

८५०	कणादि तैल	प्रमेह, पिडिका, शोधक, रोपण

रस

४३७	आनन्दभैरव	पुराना प्रमेह
५१४	उदयभास्कर(४)	प्रमेह, र०, पि०, शूल, अतिसार, खांसी,अग्निमांद्य
५३८	उमाशंभु रस	बालकों के रोग, प्रमेह, नवयौवन–दाता
९४८	कन्दर्प रस	औपसर्गिक मेह
९६१	कमला विलास	प्रमेह, खांसी,पांडु,हिक्का, कुष्ठ, मन्दाग्नि
९६६	कर्पूरादि रस	प्रमेह, श्वास, रक्तपित्त, स्वेद, सन्निपात
९८३	कामधेनु रस	शुक्रमेह, ज्वर, क्षय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३१ वस्ति प्रकरण

संख्या	प्रयोग नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
४	**अनुवासनोपग**	अनुवासन वस्तिमें उपयोगी
३८६	**आस्थापनोपग**	आस्थपन वस्ति में उप०

३२ बालरोगाधिकार

संख्या	प्रयोग नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
३७७	**आरग्वधादि**	आमशूल, वमन और दाहयुक्त ज्वर, रक्तपित्त
६३२	**काकोली काथ**	अतिसार
	चूर्ण	
५७	**अतिविषादि**	खांसी, ज्वर, वमन
५५६	**एलादि**	तृष्णा, वमन, अतिसार
६७६	**कटुकी**	हिक्का, पुरानी छर्दि
७२४	**कृष्णादि** (२)	ज्वरातिसार, श्वास, खांसी, वमन
७२६	,, (४)	खासी, श्वास, ज्वर
७२७	,, (५)	संग्रहणी
७३४	**कण्टकार्यादि**	दूध डालना
	लेह	
७७७	**कटुकरोहिण्यावलेह**	हिक्का, छर्दि
७८४	**कण्टकार्यवलेह**	बच्चों की खांसी
	घृत	
१७३	**अश्वगन्धा घृत**	पौष्टिक, बलवर्द्धक
१७४	**अष्टमङ्गल**	मेधा, स्मृति, बुद्धिवर्द्धक, रक्षक
८२३	**कण्टकारी**	कास, श्वास, ज्वर, अरुचि, शूलादि
८३४	**कुमारकल्याण**	बल, वर्ण, पुष्टि, अग्नि वर्द्धक, विशेषतः दन्तोद्भेद में हितावह
	तैल	
८८१	**कुष्ठादि**	रेवतीग्रह
	आसव	
१९६	**अरविन्दासव**	बालकों के सब रोग, पौष्टिक
	धूप	
९१९	**कुलत्थादि**	बाल रक्षक
	रस	
१०२०	**कुमारकल्याणरस**	ज्वर, श्वास, वमन, दूध न पीना, अतिसार, कृशतादि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३३ भगन्दराधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	लेप	
८६१	करवीरादि	भगन्दर
९१४	कुष्ठादि	भगन्दरका घाव
	रस	
९९९	कालाग्नि रस	भगन्दर

३४ भग्नाधिकार

चूर्ण

३८८ आभादि चूर्ण टूटी अस्थि जोड़ता है।

गुग्गुलु

४०२ आभागुग्गुलु टूटी हड्डी जोड़ता है।

३५ मदात्ययाधिकार

चूर्ण

९१ अष्टाङ्ग लवण कफज मदात्यय, अग्निदीपक

३६ मसूरिकाधिकार

गुटिका

५६७ एलाद्यो मोदकः मद्यविकार

लेह

१०६० खर्जूरादि मन्थ मद्यविकार

कषाय

१० अमृतादि (२) मसूरिका, विसर्प, कुष्ठ, खुजली, शीतपित्त

४३ अरडूसीका स्वरस कफज और कठिन मसूरिका

६२६ काञ्चनादि छुपी हुई मसूरिका को बाहर निकालता है

१०५६ खदिराष्टक मसूरिका, रोमान्तिका, कुष्ठ, खुजली

गुटिका

४५७ इन्दुकला वटिका मसूरिका, लालबुखार, विस्फोटक, व्रण

लेप

११०१ खदिरादि (२) कफज मसूरिका

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३७ मिश्राधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	(क) योगवाही प्रयोग	
२३०	अगन्धखर्परपर्पटी	अनुपान भेद से अनेकरोग
२३४	अग्निकुमार रस(२) ,,	,, ,,
२५८	,, ,,(२६) ,,	,, ,,
३१३	अमरसुन्दर ,,	,, ,, ,
३४४	अश्वकंचुकी ,,	,, ,, ,,
३४५	,, ,, रसानुपान	
३४६	,, ,, ,,	
३४८	अश्विनीकुमाररस	अनुपान भेद से अनेकरोग
४४६	आरोग्यसागर रस	,, ,, ,,
५१८	उदय भास्कर ,,	,, ,, ,,
५३८	उमाशम्भु रस	,, ,, ,,
७१७	कुंकुमादि चूर्ण	,, ,, ,,
९७४	कान्तरसायन	,, ,, ,,
९७५	कान्तलोह ,,	,, ,, ,,
११०७	खोटाभिध रस	,, ,, ,,
	(ख) कल्प	
६७	अमलतास के कल्प	
४५६	इक्ष्वाकुके ,,	
३०६	अभ्रक कल्प	
	(ग) स्वेद रोधक	
५२७	उद्धूलन रस	अधिक पसीना आना बन्द करता है
	(घ) वायु शोधक	
२१२	अश्वगन्ध धूप	

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	(ङ) धातु, उपधातु, रसोपरस	
२९३	अभ्रकशोधन	
२६७	,, भस्म	
३०३	,, ,, के गुण	
३०४	,, निश्चन्द्रीकरण	
३०५	,, की नित्योपयोगी भस्म	
३०६	मृतोत्थापनाभ्रक भस्म	
३०७	सत्व प्रधान अभ्रक भस्म	
३०८	अभ्रक के अनुपान	
३११	अभ्रक विकार शान्ति	
३४९	अष्टधातु निरूपण	
३५०	अष्ट महारस	
३५३	अष्टादश रस संस्कार	
३५६	अष्टावुपरस	
१०५१	कांस्य भस्म	
११०४	खर्पर मारण	
११०६	,, सत्व	
	(च) विविध	
६६	अमलतासरखने की विधि	
५४१	ऋतुहरीतकी	प्रत्येक ऋतुमें हरीतकी सेवनविधि
५९१	अङ्गमर्द प्रशमन महाकषाय	बदन टूटना
६१०	कण्टक पञ्चमूल	
८८४	कुसुम्भ तैल	सर्वदोष प्रकोपकारक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३८ मुखरोगाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
५६७	कटुकादि	कण्ठ रोग नाशक
६१७	कण्ठ्य महाकषाय	„
६३७	काञ्चनार क्काथ	जीभ फटना
	चूर्ण	
६८४	कणाद्य	दांतो का हिलना, पीड़ा, सूजन, खूनजाना
७०४	कालक	दांत, गले और मुख के रोग
७०६	कासीसादि	शीताद (दन्तरोग विशेष)
७१३	कुष्ठादि	दांतोंका शूल, खुजली, रक्तस्राव
७२२	कृष्णादि चर्वणम्	मुंहका पकना, घाव, दुर्गन्धि
	गुटिका	
७६२	कासीसादि गुटी	दांतों के कृमि
१०६६	खदिरादि „	मुखरोग
१०६८	„ „	जिह्वा, दांत, गला, मुख, होंठ और तालु के रोग
१०७०	खदिर „	मुख को सुगन्धित और स्वर को उत्तम करती है मुखरोग नाशक,वाजीकरण
१०७२	„ „	दन्तशूल, शौषिर्य, दन्तकृमि दुर्गन्धि, मुख-पाक, दाह, मुंह का कड़ुवापन
१०७३	„ „	मुखरोग

३९ मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघाताधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
१३	अमृतादि क्वाथ(५)	मूत्र कृच्छ्र, वायु, शूल
३६३	आमलक्यादि „	दाह, रक्तपित्त,शूल,
३६५	„ योग	पेशाब बन्द होना
५४७	एर्वारुबीजादि	पैत्तिक मूत्रकृच्छ्र
६५३	कुटजयोग	मूत्रकृच्छ्र
	चूर्ण	
५५७	एलादि (४)	कफज मूत्रकृच्छ्र
५५८	„ (५)	दुस्साध्य „
५६०	„ (७)	„ „
६९५	कर्कटीबीजादि	पेशाव बन्द होना
७१८	कुष्माण्डबीज योग	„ „ „
	तैल	
५००	उशीरादि	मूत्राधात, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वातपित्त
८७५	कुशादि	शर्करा, पथरी, मूत्रकृच्छ्र प्रदर, योनीशूल
	गुटिका	
७४१	कर्पूरवर्ति	पेशाव बन्द होना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४० मूर्च्छाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	अञ्जन	
२१५	मूर्च्छान्तक (१)	बेहोशी
२१६	मूर्च्छान्तक (२)	बेहोशी
२२५	बोधक अञ्जन	बेहोशी

४१ मेदोरोगाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
२६	अर्कादि गण	कफ, मेद, विष, व्रण, कुष्ठ, कृमि
	चूर्ण	
५३६	अश्मकादि गण	मेद, कफ, पथरी, शूल, मूत्रकृच्छ्र
५०६	उबटना (१)	मेद, जंघाकषाय
५०७	,, (२)	,, त्वग्दोष, स्वेद
५०८	,, (३)	,, शरीरकी दुर्गन्धि
	गुग्गुलु	
१३२	अमृतादि गुग्गुलु	मेद, भगन्दर, पीडिका

४२ यकृत् प्लीहाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	चूर्ण	
६४	अभया लवण	तिल्ली, जिगर, गुल्म, अफारा आदि में प्रसिद्ध
७६	अर्कपत्रादि योग	तिल्ली
	गुटिका	
६६	अग्निगर्भा गुटिका	तिल्ली, जिगर, गुल्म, शूल, पाण्डु
१११	अभया मोदक (१)	तिल्ली, अर्श, गुल्म, पाण्डु, मन्दाग्नि
	रस	
२५३	अग्निकुमाररस (२१)	तिल्ली, पाण्डु, अपस्मार शूलादि
२६४	,, लौह	तिल्ली, जिगर, गुल्म, हलीमक

४३ रक्तपित्ताधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
५६२	अञ्जनादि गण	रक्तपित्त, भीतरीदाह, विष
३	अतस्यादि क्वाथ	,,
१६	अमृतादि ,,	,,
३५६	आटरूषादि क्वाथ	रक्तपित्त, खांसी, क्षय, ज्वर
३७२	आम्रादि हिम	रक्तपित्त
४५३	इक्ष्वादि क्वाथ	,,
४७६	उदुम्बरादि ,,	नकसीर
४८३	उशीरादि ,,	रक्तपित्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
६३५	काकोल्यादि गण	,, वायु, स्तन्य, गुल्म, जीवनीय, कफकारक

चूर्ण

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
४८९	उशीरादि चूर्ण	रक्तकी वमन, सन्ताप
४९०	,,	,, रक्तपित्त, तमक श्वास, तृष्णा
१०६२	खदिरादि पुष्पयोग	रक्तपित्त

गुटिका

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
५६३	एलादि गुटिका	खांसी, श्वास, ज्वर, क्षय, छर्दि, रक्तपित्तादि

लेह

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
४९४	उदुम्बरादि लेह	रक्तपित्त
८०४	कुष्माण्डकावलेह(१)	,, शीतपित्त, अम्लपित्तादि
८०५	,, ,,(२)	रक्तपित्त, क्षय, ज्वर, शोष, खांसी, छर्दि, पौष्टिक
८०७	कुष्माण्डखण्ड	,, ,, ,, ,,
८०९	केशर लेह	अत्यन्त रक्तस्राव

घृत

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
१०७७	खण्डकुष्माण्ड	रक्तपित्त, निर्बलता
१०७९	खण्डखाद्य लेह	,, क्षय, खांसी, प्रमेह, पाण्डु, तिल्ली आदि
१०८६	हैड़ आमलेका मुरब्बा	पाण्डु, तिल्ली
८२८	कामदेवघृत	रक्तपित्त, क्षत, क्षय, कामला, वातरक्त, पांडु, मूत्ररोग, वाजीकरण

आसव

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
५०१	उशीरासव	रक्तपित्त, पांडु, प्रमेह, कुष्ठ, अर्श

नस्य

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
४३४	आर्द्रकादि नस्य	नकसीर
४३५	आम्रादि	,, ,,

रस

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
३३०	अर्केश्वर रस	भयङ्कर रक्तपित्त
४४३	आमलक्यादि लोह	रक्तपित्त, अम्लपित्त, बल्य, वृष्य, दीपक
९५०	कपर्दक रस	दुस्साध्य रक्तपित्त

४४ रसायन—वाजीकरणाधिकार

कषाय

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
१०५३	खदिर विधान	आयुर्वर्द्धक

चूर्ण

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
८४	अश्वगन्धादि (१)	वाजीकरण, रसायन
८५	अश्वगन्धादि चूर्ण(२)	रसायन, सन्धिवातनाशक
८८	अश्वगंधादि चूर्ण (५)	,, अत्यन्त वाजीकरण
५५९	एलादि	रसायन, रोचक, तिल्ली, अर्श श्वास, शूल, ज्वर, आदि
५६२	,,	स्तम्भक
५८६	ऐंद्री रसायन	अनेक रोग नाशक, समस्त धातुवर्द्धक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
७०२	कामदेव चूर्ण	वीर्यविकार,मूत्रदोष, रसायन
७१७	कुङ्कुमादि	अनेकरोग

गुटिका

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
१०६	अनङ्गमेखला गुटिका	स्तम्भक, कामवर्द्धक
१०७	,, ,, मोदक	,, ,, और अनेक रोग नाशक
११६	अभ्रवटिका	खांसी, क्षय, श्वास, वात, कफ आदि अनेक रोग, वाजीकरण, रसायन
१२२	अमृत वर्तिका	रोगसमूह नाशक
१२३	अमृतसागर गुटिका	,, ,,
१२७	अर्जकादि वटिका	स्तम्भक, वृष्य
७४६	कस्तूरी गुटिका	प्रमेह, शिथिलता, वीर्यविकार
७५२	कामदेव वटी	महाराज हम्मीर के लिए बनाई गई थी,वाजीकर,रसायन
७५३	कामसुन्दर मोदक	वाजीकर, रसायन
७५४	कामाग्निसन्दीपन मो०	अनेक रोग

अवलेह

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
१४३	अभयामलकी रसायन	ग्रहणी आदि रोग नाशक, आयु, तेज, बल,पुष्टि, मेधा, स्मृति आदि वर्द्धक
१५२	अश्वगन्धा पाक	ज्वर, शोष, गुल्म, पित्त, वायु, रसायन
१५३	,, ,,	खांसी, श्वास, वातरक्त ग्रहणी
१५५	अहिफेन ,,	अत्यन्त वाजीकरण
४०५	आम्रपाक	वाजीकरण, पौष्टिक,ग्रहणी, क्षय, अम्लपित्त नाशक
४११	आमलकी रसायन	आयुवर्द्धक, जरा, व्याधि नाशक
४१२	,, ,,	आयुवर्द्धक, जरा,व्याधिनाशक
४१३	,, ,,	आयुवर्द्धक,जरा,व्याधिनाशक
४१४	आमलकी ,,	,, यौवनदाता स्मृतिवर्द्धक
४१५	आमलक रसायन	आयु, बुद्धि, बलादि वर्द्धक, रसायन
४१६	आमलकायस ,,	आयु, बुद्धि, बलादि वर्द्धक, रसायन
४१७	आयुर्वर्द्धक प्रयोग	अर्श, धृति,स्मृति,मेधा आयुवर्द्धक
४१८	,,	आयुवर्द्धक, आश्चर्यकारक
८१३	कपिकच्छू पाक	बलवीर्य-वर्द्धक
८१७	केसर पाक	बलवीर्य कामवर्द्धक। वात-व्याधि, वातरक्तादि नाशक
८१८	कौंच ,,	बल, वीर्य, पुष्टि, बुद्धि वर्द्धक, वातव्याधि, प्रमेह आदि नाशक
१०७८	खण्डखाद्य रसायन	क्षय, खांसी, अरुचि शीतपित्त, अम्लपित्त,वात-रक्त,रक्तपित्त,कुष्ठादिनाशक

घृत

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
१७२	अश्वगन्धादि	शुक्रदोष, गर्भदोष, वातव्याधि नाशक, रसायन, वाजीकरण
४२०	आमलक घृत	वन्ध्यत्व, जरा नाशक, आयुवर्द्धक

रस

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
२८८	अनङ्गनिगड रस	अत्यन्त वाजीकरण, रसायन, रोगपुंज नाशक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
२८९	अनङ्गसुन्दर ,,	अत्यन्त वाजीकरण रसायन
२९०	,, सुन्दर	पौष्टिक
३१०	अभ्रक रसायन	श्वास, खांसी क्षय, ज्वर, अतिसार आदि नाशक
३१३	अमर सुन्दर	सर्वरोग
३२०	अमृताख्य लोह	रक्तपित्त, अम्लपित्त,क्षय, ज्वर, कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र,प्रमेह, रसायन
३२२	अमृतार्णव	जरा मृत्यु नाशक
३५५	अष्टावक्र रस	वलि पलितहर,पौष्टिक,मेधा, कांति, शुक्र वर्द्धक
९४०	कनककन्दर्प	धातु वर्द्धक, वाजीकरण
९४९	कन्दर्प सुन्दर	अत्यन्त वाजीकरण
९७४	कान्त रसायन	वृष्य, रसायन, सर्वरोगघ्न, पुत्रदाता
९७५	,, लोह ,,	निर्बलता, मेह,रक्तदोष, ज्वर पांडु, प्रमेह, कुष्ठ, रसायन
९७६	कान्ताभ्रक(१)	व्याधि, बुढ़ापा
९७७	कान्ताभ्रक(२)	पांडु, शोथ, उदर, ग्रहणी, शोष, कास, ज्वर, प्रमेह, कुष्ठ, रसायन
९७८	कामदीपक रस	यौवन प्रदाता
९७९	कामदूत रस	वीर्य, पुष्टि, कामवर्द्धक
९८०	कामदेव रस	वाजीकरण, रसायन,वातरोग नाशक पुत्रदाता
९८१	कामदेव	रसायन, वाजीकरण
९८२	कामदेव रस	अत्यन्त ,,
९८५	कामकलाख्य	,, ,,
९८६	कामाग्निसंदीपन	रसायन, ,, ओज,पुष्टि, बलवर्द्धक
९८७	कामिनिदर्पघ्न	,, ,,
९८८	,, मद भंजन	,,
९८९	,, मद विधूनन	प्रमेह, वनिताद्रावक, वीर्यदार्ढ्यकारक
९९०	,, विद्रावण	स्तम्भक, विद्रावक,वशीकरण
९९३	कार्श्यहर लोह	कृशता, दीपन, बलवर्णवर्द्धक
९७३	काश्वायन रस	जरा, मृत्यु नाशक
११०५	खर्परसायन	मधुमेह, पित्त, क्षय, पांडु, रक्तगुल्म, प्रदर, सोमरोग, शोथ, स्त्रीरोग

४६ राजयक्ष्माधिकार

कषाय

३५८ आटरूषपादिक्काथ क्षयरोग

चूर्ण

८६ अश्वगन्धादि चूर्ण (३)क्षय, प्रमेह मेद, उदररोग

८७ ,, ,,(४) ,,

५५५ एलादि ,, ,,

५६३ ,, ,, ,, अर्श,संग्रहणी, गुल्म

६७२ ककुभादि ,, ,, यक्ष्मा, खांसी इत्यादि

गुटिका

४६१ इक्ष्वादि मोदक क्षय, ग्रहणी, वाजीकरण वन्ध्यत्व, अपस्मार,क्षीणता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	लेह	
१३९	**अगस्त्यहरीतकीलेह**	क्षय, खांसी, ज्वर श्वास, हिचकी, ग्रहणी आदि नाशक, रसायन
१४४	**अमृतप्राश्यावलेह**	रक्तपित्त,क्षय, तृष्णा, छर्दी, ज्वर, मूत्रकृच्छ्, श्वास, आदि नाशक
५७२	**एलादि मंथ**	यक्ष्मा, शूल, पांडु,भगन्दर
७७५	**ककुभ लेह**	क्षय, खांसी,
८१६	**कुमारी पाक**	जीर्णज्वर, क्षय, ताप, श्वास, खांसी, प्रदरादि
१०८२	**खण्डपिप्पली**	क्षय, कास, तृष्णा, पाण्डु, रक्तपित्त, कफ
	घृत	
१५९	**अजापञ्चक घृत**	क्षय, श्वास, खांसी
८२०	**कणादि घृत**	राजयक्ष्मा
१०९३	**खर्जूरादि घृत**	स्वर भंग, खांसी, श्वास, ज्वर
	आसव	
८९७	**कुष्माण्डासव**	धातुक्षय, मंदाग्नि, प्रमेह, पांडु
१०९८	**खर्जूरासव**	राजयक्ष्मा, शोथ, ग्रहणी, अर्श
१०९९	,,	हैजा, हृद्रोग, खांसी, तृषा, हिचकी, प्रमेह, विषमज्वर, पाण्डु
	रस	
२७५	**अग्नि रस**	क्षय, खांसी
३२६	**अमृतेश्वर**	राजयक्ष्मा
३४७	**अश्वत्थवल्कलादिलोह**	,,
९४२	**कनकसिन्दूर रस**	क्षय, सन्निपात, वातगुल्म, शूल
९४५	**कनकसुन्दर रस**	राजयक्ष्मा, शूल, गुल्म, सन्निपात
९६९	**कल्याणसुन्दराभ्र**	यक्ष्मा, क्षय,शोथ,श्वास, शोथ, कृशता आदि
९७२	**काञ्चनाभ्र**	क्षय, खांसी, कफपित्त, प्रमेह
९९६	**कालपञ्चक**	राज यक्ष्मा
१००३	**कालान्तक रस**	,,
१०२२	**कुमुदेश्वर**	यक्ष्मा, ज्वरादि
१०२३	,,	राजयक्ष्मा

४६ वातव्याध्याधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
१२	**अमृतादि क्वाथ**	समस्त वात-रोग
३८	**अश्वगन्धादि गण**	वायु नाशक
५४५	**एरण्डादि क्वाथ**	धनुर्वात
६९०	**कपिकच्छ्वादि**	पक्षाघात, शिरोरोग,अर्दित
	चूर्ण	
५३	**अजमोदादि**	हृदय, कोख, कण्ठ और उदरस्थवायु
६८	**अमृत प्राश**	कम्प, शिर घूमना, दाह, रक्तपित्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
३८९	आमादि चूर्ण	गृध्रसी, हनुग्रह, सर्व वातरोग
४५४	इन्द्रवारुणी ,,	सन्धिवात
७१५	कुष्ठादि ,,	अनेक प्रकारके वातरोग

गुटिका

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
१०३	अजमोदादि	समस्त वात रोग
११७	अमरसुन्दरी वटी ,,	वातरोग विशेषतः अपस्मार
१२५	अमृतानाम गुटि	वात-व्याधि, कुष्ठ, प्रमेह, अपस्मार क्षय, श्वास, शोथ, पांडु
७३६	कणादि वटी	समस्त शरीरस्थ वायु

लेह

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
५६९	एरण्ड पाक	वात रोग, कुष्ठ, पित्तरोग, उदररोग, प्रमेह, नासूर
५७०	,, ,,	वातव्याधि, शोथ, शूल, उरुग्रह, कटिशूल, आम वात, वृद्धि
७८८	कल्याणावलेह	जडता, गद्गद्पना, गूंगापन, स्मरण-शक्ति-वर्द्धक
८१४	कुबेर पाक	सर्व वातरोग, मन्दाग्नि, निर्बलता, मूत्रदोष

गुग्गुलु

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
१३७	अमृतादि	क्रोष्टु शीर्ष
४०१	आदित्य पाक	सन्धि अस्थि मज्जागतवायु

घृत

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
४१९	आनन्द भैरव	त्वगात वायु
५८७	ऐलेय सर्पि	वात, पित्त, कफ, शिर घूमना

तैल

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
१७९	अणु तैल	वातव्याधि
१८२	अमृतादि तैल	वातव्याधि, अपस्मार, उन्माद, अरति, क्षीणता
१८८	अश्वगन्धा तैल	रक्तपित्त, प्रदर, नपुंसकता, वीर्यदोष, योनिदोष
१९०	अष्टकट्वर तैल	गृध्रसी, उरुग्रह
५७३	एरण्ड तैल योग ,,	,,
५७४	,, ,, ,,	,,
५८२	एलादि तैल योग	वातव्याधिहर, बल वर्ण अग्निकारक
८७३	कुब्जप्रसारिणी	सर्व वातव्याधि, कुब्ज, वात कफ-रोग
८८०	कुष्ठादि तैल	उरुस्तम्भ
८८७	केतकादि तैल	अस्थिगत वायु

रस

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
२८७	अनिलारि रस	वातव्याधि
३१५	अमृतसुन्दर रस	वात-कफज समस्तरोग
३३१	अर्केश्वर रस	सुप्तिवात
३३४	अर्द्धाङ्ग वातारि	अधराङ्ग, कम्पवात
५८५	एकाङ्गवीर रस	पक्षाघात, अर्दित, अर्द्धाङ्ग
९६२	कम्पवातारि	सर्वाङ्गवायु, कम्पवात
९६३	कम्पवातहर	अर्धाङ्ग, कम्पवात
९९४	कालकण्टक	वातव्याधि, सन्निपात, कुष्ठ
१००४	कालारि	,, ,,
१०१९	कुब्जविनोद	हृदयपीड़ा, पसलीशूल, आमवात, मेद, आढ्यवात

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४७ वातरक्ताधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
५४६	एरण्डादि क्वाथ	ऊर्ध्वगत वातरक्त
६३४	काकोल्यादि ,,	,,
६४१	काश्मर्यादि ,,	पित्तज वातरक्त
६६९	कोकिलाक्षादि ,,	वातरक्त
	चूर्ण	
७०	अमृतादि	कफज वातरक्त
	गुग्गुलु	
१३५	अमृतादि गुग्गुलु	वातरक्त, कुष्ठ, व्रण, गुद रोग, आमवात, शोथ, प्रमेह
१३६	,, ,,	आमवात, अम्लपित्त
७७३	कैशोर ,,	सर्ववातरक्त, घाव, कोढ़, गुल्म, पांडु, शोथादि
	अवलेह	
१४६	अमृत भल्लातक	वातरक्त, कुष्ठ, अर्श, विसर्प, खुजली
१४७	अमृतभल्लातक	वातरक्त, कुष्ठ, अनेक रोग
१५०	अमृताद्यवलेह	कफ युक्त वातरक्त
	घृत	
१६३	अमृतादि (१)	वातरक्त, क्रोष्टुशीर्ष, ज्वर, उदावर्त
१६५	,, (३)	वातरक्त, आमवात, कुष्ठ, अर्श आदि
१६६	,, (४)	वातरक्त, कुष्ठ, पांडु,
	(५)	ज्वर, कास
१६७	,,	वातरक्त, कुष्ठादि
	तैल	
१८५	अमृताख्य	वातरक्त, क्षत, क्षीण, योनिदोष, उन्माद, वातव्याधि
५७५	एरण्ड तैल योग	वातरक्त

४८ विरेचनाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	गुटिका	
११०	अभयादि मोदक	विषम ज्वर, पांडु, मंदाग्नि गुल्मादि बहुत रोग
११२	,, वटी	ज्वर, पांडु, प्लीहा, अष्ठीला, अम्लपित्त, अजीर्ण
	रस	
४६३	इच्छाभेदी रस	क्रूरकोष्ठ के लिए जुलाब
४६४	इच्छाभेदी रस	गुल्म, उदावर्त, अर्श, भगन्दर आदि
४६५	,, ,,	गुल्म
४६६	,, ,,	रेचक
४६७	,, ,,	शूल, पित्तज कुष्ठ, भगन्दर
४६८	,, गुटिका	रेचक
४६९	,, रस	इच्छानुसार दस्त लाता है
४७०	,, रस	उदररोग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४९ विषाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	चूर्ण	
५५	अजित अगद	स्थावर विष, जङ्गम विष
	वटी	
७६७	कुलिकादि वटी	सर्पदंश, विष, विषमज्वर
	घृत	
१६०	अजेय घृत	सब प्रकारके विष
	नस्य	
९३१	कर्कोठक्यादि	विषकी मूर्छा
	रस	
९९५	काल वज्राशनी	सर्पदंश

५० विसर्पाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	तैल	
५८१	एरण्डादि तैल	विसर्प
८५६	करञ्जादि तैल	,, विस्फोटक, विचर्चिका
	लेप	
९००	कनकादि लेप	कुष्ठ, विसर्प, खाज, बिवाई, त्वचाकी श्यामता
९०४	कसेवादि लेप	पित्तज विसर्प
	रस	
१०००	कालाग्निरुद्र	विसर्प

५१ वृद्धयाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
४५०	इन्द्रवारुणीमूलयोग	अण्डवृद्धि
४५१	इन्द्राणी	,, ,,
	तैल	
५७६	एरण्डतेल योग	आध्मान, शूल, अन्त्र वृद्धि
५८०	एरण्डतैलादि योग	अण्डवृद्धि, ज्वर
	रस	
९३८	कज्जली	अण्डवृद्धि

५२ व्रणाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
२६	अर्कादिक्वाथ	व्रण, कुष्ठ, कृमि, कफ, विष
५५०	एलादि गण	घाव, फुंसी, खुजली, कुष्ठ, विष, वायु, कम्प
	गुटिका	
४००	आरग्वधादि वर्ति	व्रणशोधक, नासूर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग नाम	प्रधान गुण
	गुग्गुलु	
११८	**अमृतादि वटिका**	घाव, वातरक्त, शोथ, गुल्म, पांडु
	लेप	
९१५	**कृष्णादि लेप**	घावका कफज शोथ
	तैल	
८६२	**कर्पूर तैल**	नासूर, सर्वव्रण

५३ शिरोरोगाधिकार

संख्या	प्रयोग नाम	प्रधान गुण
	चूर्ण	
६९४	**कायफलादिशीर्षरेचन**	शिर के समस्त रोगों में नस्य
	गुटिका	
१२८	**अर्द्ध नारीश्वर**	कफज शिरोरोग में नस्य
	घृत	
८३८	**कुङ्कुम**	आधा शीशी
८३९	,,	वातरक्तजशिरशूल, आधाशीशी, सूर्यावर्त, कान, आंखकी पीड़ा
१०९४	**खर्जूरादि**	कनपटियों का शूल
	तैल	
१८०	**अणु तैल**	शिरोरोग, मन्यास्तम्भ, शिरशूल, अर्दित, पीनस, आधाशीशी, शिरकांपना।
८८७	**ऐलेयक तैल**	शिरोभ्रम, कम्प, वातपित्त रोग
८५१	**कनक तैल**	आंख और शिरकाशूल, श्लीपद, गलगण्ड, वृद्धि, आमवात, शोथ
८७४	**कुमारी** ,,	अर्दित, मन्यास्तम्भ, शिर के रोग, वातरोग
	लेप	
९०१	**कमलादि**	शिरपीड़ा
९१०	**कुष्ठादि**	,,
९११	,,	वातज शिर पीड़ा
९१२	,,	,,
९१६	**कृष्णादि**	,,

५४ शीतपित्ताधिकार

संख्या	प्रयोग नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
१४	**अमृतादि**	शीतपित्त
	लेह	
४०६	**आर्द्रक खण्ड**	शीतपित्त, उदर्द, यक्ष्मा, मन्दाग्नि आदि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५५ शूलाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
१	अजमोदादि	अनेक प्रकार के शूल
३९	अश्वीपुरीष रस	उदर शूल
५४२	एरण्ड द्वादशक	सन्निपातज और एकदोषज शूल
५४३	एरण्ड मूलादि	पसली, हृदय और कफज शूल
५४८	एलादि क्वाथ	उदरशूल, कमरशूलादि अनेक शूल
	चूर्ण	
५०	अजमोदादि	सब प्रकारके शूल
५१	,,	शूल, अजीर्ण
४५५	इन्द्र वारुणि	दुस्सह शूल
४९१	उशीरादि	हृच्छूल
४९२	,,	वातज शूल
५५२	एरण्ड मूलादि	शूल, गुल्म
५५३	एरण्डादि भस्म	शूल
७२०	कुष्माण्डक्षार	कष्ट साध्य शूल
	गुटिका	
१०१	अगस्ति वटी	शूल, गुल्म, कृमि, तिल्ली, आमवात
३९२	आदित्य गुटिका	शूल, वायु, अग्निमांद्य
७६३	कुबेराक्ष वटी	८ प्रकारके शूल
	लेह	
८१९	कुबेराक्ष पाक	अनेक प्रकार के शूल
२८५	खण्डामलकी रसायन	त्रिदोषज पक्तिशूल, छर्दि, अम्लपित्त, मूर्छा, श्वास, खांसी
	रस	
२३६	अग्निकुमार (३)	त्रिदोषज शूल
२३७	अग्निकुमार (४)	शूल, हैज़ा अजीर्ण,
२५३	,,	,, मन्दाग्नि उदररोग, सन्निपात, अपस्मार, संग्रहणी, पांडु, तिल्ली, जिगर, क्षय, वातव्याधि
२७०	अग्निमुख रस	प्रबल शूल
३१६	अमृत गर्भ	वातशूल, पसलीशूल, परिणाम शूल, वात कफरोग, ज्वर
३१८	अमृत मण्डूर	वातजपित्तज, सन्निपातज और पक्तिशूल
५१३	उदय भास्कर (३)	वातशूल
५१८	,, (८)	सर्व शूल
१०४८	कृष्णादि लौह	परिणामशूल, त्रिदोषज शूल
१०४९	कोलादि मण्डूर	वातकफजरोग, परिणाम शूल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५६ शोथाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण	संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	क्वाथ			**अरिष्ट**	
२७	अर्कादि क्वाथ	सूजन	१९९	अष्टशतोऽरिष्टः	कफवातज शोथ, विबन्ध, मन्दाग्नि
३८२	आर्द्रकस्वरस	सर्व शोथ		**लेप**	
३८५	आर्द्रक स्वरस	त्रिदोषज शोथ	२०१	अजगन्धादि	कफज शोथ
६५५	कुटजादि स्वेद	सूजन	९१५	कृष्णादि	कफज सूजन
	चूर्ण			**रस**	
७२५	कृष्णादि	सूजन	२६९	अग्निमुख मण्डूर	कष्टसाध्य शोथ, पुराना पाण्डु
	मोदक		२८६	अनिल रस	सूजन, पाण्डु
१००	अगस्ति मोदक	शोथ	९३९	कटुकाद्य लौह	सूजन
	घृत				
१०९२	खदिरादि	सूजन			

५७ श्लीपदाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण	संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	गुटिका		७६०	कृष्णाद्य मोदक	श्लीपद
७३६	कणादि वटी	श्लीपद (हाथीपग)	५७८	एरण्डतैल हरीतकी	,,

५८ सन्निपाताधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण	संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषायप्रकरण		३३	अष्टादशाङ्ग	सन्निपात, खांसी, हिचकी श्वास, पसलीशूल, वमन, हृद्रोग
७	अभयादि	रुग्दाह-सन्निपात	३४	,,	तन्द्रा, प्रलाप, खांसी, दाह, श्वास
६	अमृतादि	तन्द्रिक सन्निपात	३६०	आटरूषादि	सन्निपात, श्वास, खांसी, अतिसार, शूल
१७	,,	,,	४७३	उग्रादि	सन्निपात
२२	अर्कादि	सन्निपात, प्रसूतरोग, श्वास, धनुर्वात, वातव्याधि			
२५	,,	सन्निपात, तन्द्रा, सूतिकारोग, अपस्मार			

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
६४६	किरातादि	पित्तप्रधान सन्निपात
६४७	,,	कण्ठकुब्ज ,,

चूर्णप्रकरण

६९६	कर्कोटक्याद्युद्वर्तन	शीतांग सन्निपात

गुटिकाप्रकरण

७६६	कुलवटी	सन्निपात

आसवप्रकरण

८९३	कुब्जासव	सन्निपात

अञ्जनप्रकरण

२२४	असुरादि	सन्निपात, तन्द्रा
२२५	अञ्जन नं. १०	,, बेहोशी
५९६	अञ्जनभैरव	,,
३३३	अर्द्ध नारीनटेश्वर	,, तन्द्रा, निद्रा, प्रलाप, खांसी, श्वास
९२१	कणादि	भूतदोष, अपस्मार
९२५	कस्तूरिकादि	सन्निपात, तन्द्रा
९२८	कृष्णादि अञ्जन	तन्द्रिक-सन्निपात

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण

नस्यप्रकरण

४३३	आर्द्रकादि	सन्निपात
९३३	कुष्ठादि	तन्द्रिक सन्निपात
९३४	कृष्णादि	कण्ठकुब्ज सन्निपात

रसप्रकरण

२३५	अग्नि कुमार (३)	सन्निपात, तन्द्रा, मन्दाग्नि, संग्रहणी, गुल्म, खांसी
२५५	,, ,,	सन्निपात, सर्वरोग
३२९	अर्केश्वर	,,
५२९	उन्मत्ताख्य	,,
९५१	कफकुञ्जर	कफ, वात, सन्निपात, उदररोग
९७१	कस्तूरी भैरव	दारुण-सन्निपात
१००४	कालारि	सन्निपात, वात-व्याधि
१०२३ (अ)	कुलवधु	क्षय, सन्निपात

५९ संग्रहणी-रोगाधिकार

कषाय

२	अतिविषादि	ग्रहणी, ज्वर, अरुचि, मन्दाग्नि
३७१	आम्रादि यवागु	पित्तज, संग्रहणी
६८८	कपित्थादि पेया	वातज ,,

चूर्ण

५४	अजाज्यादि	अनेक प्रकारकी संग्रहणी, ज्वरातिसार, हैज़ा
६८९	कपित्थाष्टक	संग्रहणी, अतिसार, क्षय, गुल्म, हिचकी, अरुचि, खांसी

गुटिका

९५	अग्निकुमार मोदक	संग्रहणी, अग्निमांद्य, ज्वर, खांसी, श्वास, उदररोग
११५	अभ्रकादि वटी	सर्व प्रकारकी संग्रहणी
७४२	कर्पूरसुन्दरी वटिका	ग्रहणी, शीतवात, अफीम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
		की आवृत, प्रबलातिसार, अर्श
७४४	कल्पलतावटी	पुरानी ग्रहणी, शोथ, जीर्णज्वर, पांडु

लेह

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
१४०	अपराजितलेह	संग्रहणी, अतिसार
७७६	कञ्चटावलेह	,, ,,अम्लपित्त, उदररोग
७८१	कणाद्यवलेह	संग्रहणी, अम्लपित्त, प्रवाहिका
७८६	कल्याणकावलेह	सर्व प्रकारकी संग्रहणी, अर्श, खांसी, स्वास, शोथ, स्वरभंग
७८७	कल्याण गुड़	संग्रहणी, स्वास, खांसी, शोथ, वन्ध्यत्व
७९१	कुटजलेह	प्रबल संग्रहणी,प्रवाहिका रक्तातिसार
७९२	कुटजावलेह	कष्टसाध्य संग्रहणी, अतिसार
७९३	,,	कष्टसाध्य संग्रहणी,भग०
७९४	कुटजाद्यवलेह	संग्रहणी, अतिसार, मन्दाग्नि
८०८	कुष्माण्ड गुड	संग्रहणी, कुष्ठ, अर्श, ज्वर, अफारा, पांडु,क्षय

अरिष्ट

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
१९१	अभयारिष्ट	ग्रहणी, पांडु, अर्श,कुष्ठ, ज्वर

घृत

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
१५८	अग्नि घृत	ग्रहणी, गुल्म, पांडु,कृमि, विष

रस

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
२३२	अगस्तिसूतराज	संग्रहणी
२४७	अग्निकुमार (१५)	,,
२५०	,, (१८)	,, मन्दाग्नि, अजीर्ण
२५६	,, (२४)	,, ,, आमाति०
३८	अर्क लोकेश्वर	सर्व प्रकार की संग्रहणी

६० स्त्री-रोगाधिकार

कषाय

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
२८	अर्कपुष्पयोग	मासिक धर्म न होना
४२	अशोक क्वाथ	रक्तप्रदर
३६१	आमलक योग	स्वेतप्रदर
४७५	उत्पलादि	गर्भरक्षक
४८६	उशीरादि	,,
६१९	कदली योग	सोम रोग
६३१	काकोदुम्बरिकास्वरस	रक्तप्रदर

चूर्ण

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
८९	अश्वगन्धा योग	गर्भ धारक
६८६	कपित्थादि कल्क	प्रबल प्रदर
७०१	काक जंघादि	प्रदर, पांडु
७०५	कासीसादि	योनि पैच्छिल्य

गुटिका

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधानगुण
७६८	कुष्ठादिवर्ति	कर्णिनि योनि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	घृत	
१७१	**अशोक घृत**	सब प्रकारका प्रदर, योनिशूलादि
८३०	**काश्मर्यादि**	वातजयोनिरोग, गर्भधारणकी शक्ति
८३५	**कुमुदादि**	प्रदर, रक्तदोष, पांडु, वातरक्त, ज्वर, गर्भ न ठहरना
	तैल	
४९६	**उदुम्बरादि तैल**	पिच्छिला, विवृतादि योनिदोष
४९७	,, ,,	,, ,,
८६४	**कर्पूरादि**	लोभ नाशक
	अरिष्ट	
१९७	**अशोकारिष्ट**	रक्तप्रदर, ज्वर, अर्श, शोथादि
	लेप	
११०२	**खरमञ्जर्यादि**	प्रसूता का योनि शूल
	रस	
४७१	**इन्दु शेखर**	गर्भिणी का ज्वर, खांसी, श्वास, अतिसार

६१ स्वरभेदाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	चूर्ण	
४८	**अजमोदादि चूर्ण**	त्रिदोषज स्वरभंग (गलाबैठना)
	गुटिका	
७४८	**काकजंघावटी**	स्वर सुधारती है
	घृत	
८४४	**कोलादि घृत**	स्वर भंग

६२ हिक्काश्वासाधिकार

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
	कषाय	
६६०	**कुलत्थादि क्वाथ**	हिचकी, श्वास
६६२	,, ,,	,, खांसी
	चूर्ण	
७२३	**कृष्णादि चूर्ण**	हिचकी, श्वास
	अवलेह	
७७८	**कटुत्रिकलेह**	हिक्का, श्वास, खांसी, कफ
७८५	**करंजाद्यवलेह**	छर्दि, कफ
८०२	**कुलत्थगुड**	श्वास, खांसी, ज्वर, हिचकी
८११	**कोलमज्जावलेह**	हिचकी
१०८८	**खर्जूरादि**	,, ,,
	आसव	
८९०	**कनकासव**	श्वास, कास, यक्ष्मा, ज्वर रक्तपित्त, उरःक्षत
	रस	
३२४	**अमृतार्णव**	श्वास, खांसी
३४४	**अश्वकञ्चुकी**	अनेक रोग
४४०	**आनन्द भैरव**	खांसी, श्वास, क्षय, गुल्म

For Private And Personal Use Only

संख्या	प्रयोग-नाम	प्रधान गुण
		ग्रहणी, सन्निपात
१००१	कालाग्निरुद्र	हिक्का, श्वास, स्थूलता,
		कृशता, मण्डल
१००५	कालेश्वर	कास, श्वास, कफरोग

६३ हृद्रोगाधिकार

कषाय

७९	अर्जुनादि क्षीर	पित्तज हृद्रोग
६०१	कट्फलादि	हृद्रोगनाशक
६२९	कसेरुकादि	पित्तज हृद्रोग

चूर्ण

६७१	ककुभादि	सर्व हृद्रोग
६७३	ककुभादि	हृद्रोग, जीर्णज्वर, रक्तपित्त
६७४	कटुकादि	,, ,, ,, ,,

घृत

१६९	अर्जुनघृत	सर्व हृद्रोग
८२७	कसेरुकादिसर्पि	पित्तज हृद्रोग

अरिष्ट

८८८	कनकारिष्ट	हृद्रोग, अरुचि, ग्रहणी, अर्श खांसी, कफरोग, ज्वर, उदर रोग, अफारा,

रस

७९०	कल्याण सुन्दर	हृद्रोग, प्लुरसी, फुस्फुसरोग

६४ क्षुद्ररोगाधिकार

चूर्ण

७२९	केशरञ्जक	खिजाब

गुटिका

१२४	अमृताङ्कुर वटी	जीर्णज्वर, प्रमेह, खांसी, क्षुद्ररोग

तैल

१८६	अर्क पत्र रस तैल	पामा, कच्छु, विचर्चिका
४२६	आदित्यपाक	पामा
४२४	आरग्वधादि	बालनाशक
४९९	उपोदिका	पाददारी
८५२	कनक	नीलिका, व्यंग, झांई, कांति
८५५	करञ्जादि तैल	इन्द्रलुप्त
८६४	कर्पूरादि	लोम नाशक
८६६	काकमाची	अरुंषिका, पामा, विचर्चिका
८६७	काश्मर्यादि	खिजाब
८७०	कुङ्कुमादि	व्यंग, नीलिका, झांई, आदि
८७१	,,	,, ,, ,, सुन्दरता
८७२	,,	मुखसौन्दर्य, कांति, पुष्टिवर्द्धक

लेप

२०२	अजाज्यादि	ब्रध्न (वद)
२०३	अयादि लेप	पलित (बालपकना)
२०८	अर्जुन त्वगादि	व्यंग, झांई
४३०	आम्रबीजादि	दारुण
८९९	कण्टकार्यादि	इन्द्रलुप्त
९०३	करञ्जादि	खारवे
९०८	कासीसादि	अण्डकोष की खाज
११००	खदिरादि	अरुंषिका

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भारत-भैषज्य-रत्नाकरः

परिशिष्ट

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अ

अथाकारादिकषायप्रकरणम्

(८७७८) अग्निमन्थकषायः

(ग. नि. । प्रमेहा. ३०)

अग्निमन्थकषायं तु वसामेहे प्रयोजयेत् ॥

अरनीका क्वाथ बसामेहको नष्ट करता है।

(८७७९) अङ्कोटमूलयोगः (१)

(व. से. । विषा.)

अङ्कोटोत्तरमूलोत्थं कषायस्य पलद्वयम् ।
सर्पिषश्च पलं पीतमलर्कविषनाशनम् ॥

अंकोटकी जड़की छालके १० तोले क्वाथमें ५ तोले घी मिलाकर पीनेसे पागल कुत्तेका विष नष्ट होता है।

(८७८०) अङ्कोटमूलयोगः (२)

(व. से. । विषा.)

अङ्कोटमूलं निःक्वाथ्य सफाणितघृतं लिहेत् ।
तैलाक्तः स्विन्नसर्वाङ्गो गरदोषविषापहम् ॥

शरीर पर तेलकी मालिश करके स्वेदित करनेके पश्चात् अंकोटकी जड़के क्वाथमें फाणित (राब) और घी मिलाकर चाटनेसे गर विष नष्ट हो जाता है।

क्वाथको पुनः पकाकर चाटने योग्य गाढ़ा कर लेना चाहिये।

(८७८१) अङ्कोटादिक्काथः

(व. से. । ग्रहण्य. बालरो.)

अङ्कोटमूलं धातक्यो बिल्वपेशी महौषधम् ।
क्वथितं शीतलं पेयं कुक्षिरोगहरं परम् ॥

अंकोटकी जड़, धायके फूल, बेलगिरी और सोंठ समान भाग लेकर क्वाथ बनाकर ठंडा करके पीनेसे पेटके विकार (अतिसार, ग्रहणी आदि) नष्ट होते हैं।

(८७८२) अजगन्धादियोगः

(यो. चि. म. । अ. ७)

पलार्द्धमजगन्धाया अष्टयामोषितं जले ।
वर्त्तयित्वा पिबेत्मातर्हन्ति दाहं सवातकम् ॥

२॥ तोले अजमोदको पानीमें भिगोदें और आठ पहर (२४ घंटे) बाद छानकर पीलें। यह पानी दाह और वायुको नष्ट करता है।

(८७८३-८४) अतिबलादिक्काथः

(व. से. । मूत्रकृच्छ्रा.)

कषायोऽतिबलामूलसाधितोऽशेषकृच्छ्रजित् ।
पीतश्च त्रपुसीबीजं सतिलाज्यं पयोन्वितम् ॥

अतिबला (खरैटी) की जड़का क्वाथ हर तरहके मूत्रकृच्छ्रको नष्ट करता है।

खीरेके बीज और तिलोंको पीसकर उसमें घी और दूध मिलाकर पीनेसे भी मूत्रकृच्छ्र नष्ट होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८७८५) अपामार्गरसयोगः

(व. से.; धन्व. । व्रणा.; रा. मा. । व्रणा. २५)

अपामार्गस्य संसिक्तं पत्रोत्थेन रसेन वा ।
सद्योव्रणेषु रक्तन्तु प्रवृत्तं परितिष्ठति ॥

अपामार्ग (चिरचिटे)के पत्तोंका रस भरनेसे सद्योव्रण (शस्त्राघातादि) का रक्त बन्द हो जाता है ।

(८७८६) अपामार्गादिक्काथः

(वै. म. र. । पटल १३)

मृताया: पृष्ठकट्यादौ शोफः स्याद्यदि पाययेत् ।
मयूरमूलपथ्याभ्यां सिद्धमम्बु दिनत्रयम् ॥

यदि प्रसूता स्त्रीकी पीठ और कमर आदिमें शोथ हो तो उसे चिरचिटेकी जड़ और हर्रका क्वाथ ३ दिन तक पिलाना चाहिये ।

(८७८७) अभयादिक्काथः

(व. से. । अम्लपित्ता.)

अभयापिप्पलीद्राक्षासिताधन्वयवासकम् ।
मधुना कण्ठदाहघ्नमम्लपित्तहरं परम् ॥

हर्र, पीपल, मुनक्का और धमासा समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।

इसमें मिसरी और शहद मिलाकर पीनेसे कण्ठकी दाह और अम्लपित्तका नाश होता है ।

(८७८८) अमृतादिकषायः

(ग. नि. । अजीर्णा.)

पिबेद्विपक्वं त्वमृताकषायं
कदम्बनिम्बार्जुनवृक्षकाणाम् ।
क्वाथं सुखोष्णं लवणप्रगाढं
विषूचिकाजीर्णविषापमर्दम् ॥

गिलोय, कदम्ब वृक्षकी छाल, नीमकी छाल और अर्जुन वृक्षकी छाल समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।

इसमें सेंधा नमक मिलाकर मन्दोष्ण करके पीनेसे विषूचिका, अजीर्ण और विषका नाश होता है ।

(८७८९) अमृतादिक्काथः (१)

(यो. त. । त. ७५; यो. र. । सूतिका.; ग. नि. । सूतिका.; वृ. यो. त. । त. १४२)

अमृतानागरसहचरभद्रोत्कटपञ्चमूलजलद-जलम् ।
मृतशीतं मधुसहितं हरति परं सूतिकाशूलम् ॥

गिलोय, सोंठ, पियाबांसा, गंधप्रसारिणी, पंचमूल (वृहत्), नागरमोथा और सुगन्धबाला समान भाग लेकर क्वाथ बनावें । इसे ठंडा करके शहद मिलाकर पीनेसे सूतिका रोग नष्ट होता है ।

(८७९०) अमृतादिक्काथः (२)

(भा. प्र. । म. खं. २; वृ. मा. । वातरक्ता.; व. से. । वातरक्ता.)

अमृतानागरधान्यककर्षत्रितयेन पाचनं सिद्धम् ।
जयति सरक्तं वातं सामं कुष्ठान्यशेषाणि ॥

गिलोय, सोंठ और धनिया १-१ कर्ष लेकर क्वाथ बनावें ।

यह क्वाथ वातरक्त, आम और कुष्ठको नष्ट करता है ।

(८७९१) अमृतादिक्काथः (३)

(व. से. । अम्लपित्ता.)

अमृतानागरमुस्तकिरातसमभागसाधितं तोयम् ।
दारुणं तदम्लपित्तं जयत्यवश्यं नृणां सद्यः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गिलोय, सोंठ, नागरमोथा और चिरायता समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

यह क्वाथ प्रबल अम्लपित्तको भी शीघ्रही नष्ट कर देता है।

(८७९२) अमृतादिक्वाथः (४)

(वै. र.। ज्वरा.)

अमृतारिष्टकुचन्दनपद्मकधान्योद्भवः क्वाथः।
ज्वरहल्लासच्छर्दितृष्णादाहारुचीर्हन्यात् ॥

गिलोय, नीमकी छाल, लाल चन्दन, पद्माक और धनिया समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

यह क्वाथ ज्वर, हल्लास, छर्दि, तृषा, दाह और अरुचिको नष्ट करता है।

(८७९३) अमृतादिक्वाथः (५)

(शा. सं.। खं. २ अ. २)

अमृतैरण्डवासानां क्वाथ एरण्डतैलयुक्।
पीतः सर्वाङ्गसञ्चारि वातरक्तं जयेद् ध्रुवम् ॥

गिलोय, अरण्डमूल और बासा (अडूसा)के क्वाथमें अरण्डीका तेल मिलाकर पीनेसे सर्व शरीर गत वातरक्त अवश्य नष्ट हो जाता है।

(८७९४) अरलुत्वक्पुटपाकः

(ग. नि.। अति. २)

श्रीपर्णिपर्णावृतदीर्घवृन्तज-
त्वक्पिण्डकात्तन्दुलवारिकल्किताद्।
मृद्वेष्टितादग्निविपाचिताद्रसं
पिबेदतीसारहरं समाक्षिकम् ॥

अरलुकी छालको चावलोंके धोवनमें पीसकर गोला बनावें और उस पर शालपर्णी (या गम्भारी) के पत्ते लपेटकर उसके ऊपर मिट्टीका १ अंगुल मोटा लेप करदें एवं उसे कन्डोंकी अग्निमें दबा दें। जब मिट्टीका रंग लाल हो जाय तो गोलेको बाहर निकाल कर मिट्टी आदि दूर करके उसका रस निकालें।

इसमें शहद मिलाकर पीनेसे अतिसारका नाश होता है।

(मात्रा-१ से २ तोला।)

(८७९५) अरलुपुटपाकः

(शा. सं.। खं. २ अ. १)

अरलुत्वक्कृतश्चैव पुटपाकोऽग्निदीपनः।
मधुमोचरसाभ्यां च युक्तः सर्वातिसारजित् ॥

अरलुकी छालको पुटपाक विधिसे पकाकर रस निकालें। इसमें शहद और मोचरसका चूर्ण मिलाकर सेवन करनेसे समस्त प्रकारके अतिसार नष्ट होते हैं।

अर्कादिगणः

(सु. सं.। सू. अ. ३८)

प्र. सं. २६ अर्कादि क्वाथ देखिये।

(८७९६) अलम्बुषास्वरसः

(शा. सं.। खं. २ अ. १; वृ. मा.। गलगण्डा. ग. नि.। ग्रन्थ्य.)

अलम्बुषायाः स्वरसः पीतो द्विपलमात्रया।
अपचीगण्डमालानां कामलायाश्च नाशनः ॥

गोरखमुंडीका २ पल (१० तोले) स्वरस नित्य पीनेसे अपची, गण्डमाला और कामलाका नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(यह प्रयोग सं. १११३ के समान है परन्तु वहां इसका अर्थ अशुद्ध छप गया है अतएव यहां पुनः दिया गया है।)

(८७९७) अश्वत्थादिक्काथः

(वृ. मा. । प्रमेहा.)

अश्वत्थचतुरङ्गुलन्यग्रोधादिफलत्रयम् ।
सरक्तसारमञ्जिष्ठा क्वाथाः पञ्च समाक्षिकाः ॥
नीलहारिद्रशुक्ताख्यक्षारगण्डीरिकाह्वयान् ।
मेहान्हन्युः क्रमादेते सक्षौद्रो रक्तमेहजित् ॥
क्वाथः खर्जुरकाश्मर्यतिन्दुकास्थ्यमृताकृतः ॥

(१) पीपल वृक्ष (अश्वत्थ) की छाल (२) अमलतासकी छाल (३) बड़की छाल (४) त्रिफला (५) लाल चंदन और मजीठ; ये पांच क्वाथ क्रमशः नील मेह, हारिद्र मेह, शुक्र मेह, क्षार मेह और माञ्जिष्ठ मेहको नष्ट करते हैं। इनमें शहद मिलाकर पीना चाहिये।

खजूर, खम्भारी छाल, तेन्दूके फलकी गुठली, और गिलोय; इनके क्वाथमें शहद मिलाकर पीनेसे रक्तप्रमेह नष्ट होता है।

(८७९८) अश्वत्थादियोगः

(यो. र. । रक्तपित्ता.)

अश्वत्थपत्राग्ररसात्षडंशो
बोलोऽथ तस्माद्द्विगुणं मधु स्यात् ।
रक्तप्रवाहं हृदयस्थितं वा
वातो यथाऽभ्रं हरते तथैव ॥

पीपल वृक्ष (अश्वत्थ) की कोंपलोंका रस ६ भाग (३ माशे) लेकर उसमें ६ भाग बोल (बीजा बोल) का चूर्ण और १२ भाग शहद मिलाकर पीनेसे रक्त प्रवाह बन्द हो जाता है।

(८७९९) अष्टादशाङ्गक्काथः

(वृ. मा.; भा. प्र. म. खं. २ । ज्वरा.)

द्राक्षाऽमृता शठी शृङ्गी मुस्तकं रक्तचन्दनम् ।
नागरं कटुकं पाठा भूनिम्बं सदुरालभम् ॥
उशीरं पद्मकं धान्यं बालकं कण्टकारिका ।
पुष्करं पिचुमन्दं चाष्टादशाङ्गमिदं शुभम् ॥
जीर्णज्वरारुचिश्वासकासश्वयथुनाशनम् ॥

द्राक्षा (मुनक्का) गिलोय, कचूर, काकड़ासिंगी, नागरमोथा, लाल चन्दन, सोंठ, कुटकी, पाठा, चिरायता, धमासा, खस, पद्माक, धनिया, सुगन्ध बाला, कटेली, पोखरमूल और नीमकी छाल; ये अठारह औषधियां समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

यह क्वाथ जीर्ण ज्वर, अरुचि, श्वास, कास और शोथको नष्ट करता है।

इत्यकारादिकषाय-प्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथाकारादिचूर्णप्रकरणम्

(८८००) अग्निचूर्णम्

(ग. नि. । परि. चूर्णा. ३)

सौवर्चलं सैन्धवं च विडं क्षारः समांशकम् ।
द्विगुणा च कणा शुण्ठी जीरकं षड्गुणं तथा ॥
अग्निचूर्णकमेतञ्च वातमन्दाग्निवारणम् ॥

सञ्चल (काला नमक,), सेंधा नमक, बिड-नमक और जवाखार १-१ भाग तथा पीपल और सोंठ २-२ भाग एवं जीरा ६ भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

यह चूर्ण वातज अग्निमांद्यको नष्ट करता है ।

(**मात्रा**-१॥-२ माषा । **अनुपान**-उष्ण जल ।)

(८८०१) अग्निमुखचूर्णम्

(ग. नि. । चूर्णा. ३)

त्रिकटुत्रिफलाभागाः पञ्च षट् च पृथक् चव्य-चित्रकयोः ।
बिडसैन्धव सौवर्चलमेकद्वित्रीणि कर्षाणि ॥
इति चूर्णं ग्रहणीगदगुदजोदरगुल्मशूलघ्नम् ।
जनयति च जातवेदसमल्पभुजामेतदग्निमुखम् ॥

त्रिकुटा और त्रिफला ५-५ कर्ष, चव्य और चित्रकमूल ६-६ कर्ष, बिड नमक १ कर्ष (१। तोला) सेंधानमक २ कर्ष और संचल (काला नमक) ३ कर्ष (३।। तोले) लेकर चूर्ण बनावें ।

यह चूर्ण ग्रहणी विकार, गुदरोग (अर्श), उदररोग, गुल्म और शूलको नष्ट तथा अग्निकी वृद्धि करता है ।

(**मात्रा**-१॥-२ माशा । अनुपान उष्ण जल ।)

(८८०२) अङ्कोटमूलकल्कः

(अङ्कोलमूलकल्कः)

(वृ. यो. त. । त. ६४; शा. सं. । ख. २ अ. ५; ग. नि. । अतिसारा. २ ; व. से. । अतिसारा. ; यो. र. ; भा. प्र. म. ख. २ । अतिसारा.)

अङ्कोटमूलकल्कः सक्षौद्रस्तण्डुलाम्बुना पीतः ।
सेतुरिव सरिद्वेगं झटिति निरुन्ध्यादतीसारम् ॥

अंकोटकी जड़के कल्कको शहदमें मिलाकर चावलोंके धोवनके साथ पीनेसे अत्यन्त वेगवान अतिसार भी बन्द हो जाता है ।

(८८०३) अङ्कोटमूलयोगः

(व. से. । अतिसारा.)

अङ्कोटमूलं तक्रेण ह्यतिसारहरं परम् ।
माहिषेण तु तक्रेण पाठापत्रं तथैव च ॥

अंकोटकी जड़का चूर्ण तक्रके साथ सेवन करनेसे या पाठाके पत्तोंका चूर्ण भैंसके तक्रके साथ पीनेसे अतिसार रोग नष्ट हो जाता है ।

(८८०४) अजमोदादिचूर्णम् (१)

(हा. सं. । स्था. ३ अ. २९)

अजमोदा सठी दन्ती विडङ्गं कुष्ठतुम्बुरु ।
त्रिफला चित्रकं चैव शुण्ठी कर्कटशृङ्गिका ॥
त्रिवृता च सुराह्वा च पुष्करं वृद्धदारुकम् ।
तथाम्लवेतसं चैव तिन्तिडीकरसस्तथा ॥
समं तु मातुलुङ्गेन विभाव्यमेकतः कृतम् ।
त्रिभागहिङ्गुसंयुक्तं घृतेन च परिप्लुतम् ॥
निहन्ति वातगुल्मं च सशूलमुदरं तथा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अजमोद, कचूर, दन्तीमूल, बायविडंग, कूठ, तुम्बरु, हर्र, बहेड़ा, आमला, चीतामूल, सोंठ, काकड़ासिंगी, निसोत देवदारु, पोखरमूल, विधारामूल और अम्लवेत १–१ भाग एवं घीमें भुनी हुई हींग ३ भाग लेकर चूर्ण बनावें और उसे इमलीके फलोंके रस तथा जम्बीरी नीबूके रसमें १–१ दिन खरल करके सुरक्षित रक्खें।

इसे घीमें मिलाकर सेवन करनेसे वातज गुल्म और शूलयुक्त उदररोग नष्ट होता है। (मात्रा—१॥ माशा।)

(८८०५) **अजमोदादिचूर्णम्** (२)

(यो. र. । स्त्री.)

अजमोदा नागरं च पिप्पली जीरकं समम् ।
तच्चूर्णं सगुडक्षौद्रं गर्भिण्या वह्निदीपनम् ॥

अजमोद, सोंठ, पीपल और जीरा समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे गुड़ और शहदमें मिलाकर सेवन करनेसे गर्भिणीकी अग्नि दीप्त होती है।

(**मात्रा**—१॥–२ माशे।)

(८८०६) **अजमोदादिभस्मचूर्णम्**

(ग. नि. । चूर्णा. ३)

अजमोदा पलद्वन्द्वं हरिद्रा च बिडं तथा ।
सारस्तु खादिरस्यापि औद्भिदं लवणं तथा ॥
अभया पौष्करं भार्गी एला टङ्कणकट्फलम् ।
वृषापामार्गयोर्मूलं क्षारयुग्मं तथैव च ॥
प्रत्येकं पलमानि रविपुष्पचतुष्पलम् ।
चूर्णीकृत्य ततो दद्यात्कुमारीरसभावनाम् ॥
सान्तर्धूमं घटे दग्ध्वा चूर्णितं वस्त्रगालितम् ।
मधुना लीढमेतद्धि पञ्चकासनिवारणम् ॥

अजमोद १० तोले तथा हल्दी, बिड नमक, कत्था, उद्भिद् लवण, हर्र, पोखरमूल, भरंगी, इलायची, सुहागा, कायफल, बासा (अडूसा)की जड़, अपामार्ग (चिरचिटे)की जड़, जवाखार और सज्जीखार ५–५ तोले एवं आकके फूल २० तोले लेकर चूर्ण बनावें और उसे घृतकुमारीके रसमें खरल करके हाण्डीमें बन्द करके इस प्रकार भस्म करें कि धूम्र बाहर न निकले। तदनन्तर पीसकर कपड़छन करके रक्खें।

इसे शहदके साथ चाटनेसे ५ प्रकारकी खांसी नष्ट होती है।

(**मात्रा**—४ रत्तीसे १ माशा तक।)

(८८०७) **अजमोदाद्यं चूर्णम्**

(ग. नि. । परि. चूर्णा. ३)

साजमोदलवणा हरीतकी
शृङ्गवेरसहिता च पिप्पली ।
मद्येन तक्रेण तथोष्णवारिणा
चूर्णपानमुदराग्निदीपनम् ॥

अजमोद, सेंधा नमक, हर्र, सोंठ और पीपल समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे मद्य, तक्र या उष्ण जलके साथ सेवन करनेसे जठराग्नि दीप्त होती है।

(**मात्रा**—२–३ माशे।)

(८८०८) **अजाज्यादियोगः**

(ग. नि. । श्वयथु. ३३; वृ. मा. । शोथा.)

अजाजिपाठाघनपञ्चकोल-
व्याघ्रीरजन्यः सुखतोयपीताः ।
शोफं त्रिदोषं चिरजं प्रवृद्धं
निघ्नन्ति भूनिम्बमहौषधैर्वा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीरा, पाठा, नागरमोथा, पीपल, पीपलामूल, चव, चीतामूल, सोंठ, कटेली और हल्दी समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे उष्ण जलके साथ सेवन करनेसे प्रवृद्ध पुराना त्रिदोषज शोथ, नष्ट होता है।

(मात्रा—३-४ माशे।)

अथवा चिरायते और सोंठका चूर्ण या क्वाथ सेवन करनेसे भी शोथ नष्ट हो जाता है।

(८८०९) अतिविषादिचूर्णम्

(यो. र. । रक्तातिसारा.)

सक्षौद्रातिविषां पिष्ट्वा वत्सकस्य फलं त्वचम्।
तण्डुलोदकसंयुक्तं पेयं पित्तातिसारनुत्॥

अतीस, इन्द्रजौ और कुड़ेकी छाल समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे शहदमें मिलाकर चावलोंके धोवनके साथ सेवन करनेसे पित्तातिसार नष्ट होता है।

(मात्रा—१-१॥ माशा।)

(८८१०) अभयादिकल्कः

(वृ. मा. । हिक्काश्वासा.)

अभयानागरकल्कं पुष्करयावशूकमरिचकल्कं वा।
तोयेनोष्णेन पिबेद्धिक्की श्वासी च तच्छान्त्यै।

हर्र और सोंठ समान भाग लेकर पानीके साथ पीसकर कल्क बनावें अथवा इसी प्रकार पोखरमूल, जवाखार और काली मिर्चका कल्क बनावें।

ये प्रयोग हिचकी और श्वासको नष्ट करते हैं।

(मात्रा—३-४ माशे।)

अनुपान—उष्ण जल।

(८८११) अभयादिचूर्णम्

(ग. नि. । ग्रहण्य. ३)

अभयाऽतिविषा शुण्ठी वचा मुस्तं कणाशिफा।
बिडादिलवणं वह्निः कुष्ठं दारु समांशतः॥
सुश्लक्ष्णचूर्णमेतेषां भक्षितं तप्तवारिणा।
श्लेष्मजां ग्रहणीं हन्ति पक्वामामां सदाऽचिरात्॥

हर्र, अतीस, सोंठ, बच, नागरमोथा, पीपलामूल, बिडलवण, सामुद्र लवण, उद्भिद लवण, चीता, कूठ और देवदारु समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे उष्ण जलके साथ सेवन करनेसे पक्व और साम कफज ग्रहणी रोगका शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(मात्रा—२-३ माशे।)

(८८१२) अभयायोगः (१)

(यो. र. । रक्तपित्ता; वृ. मा. । रक्तपित्ता.)

अभयामधुसंयुक्ता पाचनी दीपनी मता।
श्लेष्माणं रक्तपित्तं च हन्ति शूलातिसारजित्॥

शहदके साथ मिश्रित हर्रका चूर्ण पाचन, दीपन, कफ और रक्तपित्त नाशक एवं शूल और अतिसारको नष्ट करनेवाला होता है।

(८८१३) अभयायोगः (२)

(ग. नि. । अजीर्णा. ५)

विदह्यते यस्य तु भुक्तमात्रं
दह्येत हृत्कोष्ठगलं च यस्य।
द्राक्षासितामाक्षिकसम्प्रयुक्तां
लीढ्वाऽभयां वै स सुखं लभेत॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यदि आहार विदग्ध हो जाता हो (विदग्धाजीर्ण हो) तथा भोजनके पश्चात् हृदय, कोष्ठ और गलेमें दाह होती हो तो हर्र मुनक्का और मिश्रीको एकत्र पीसकर शहदमें मिलाकर चाटना चाहिये।

(८८१४) अमृतादिकल्कः

(भा. प्र. । म. खं. २)

अमृताकटुकायष्टीकल्कसमाक्षिकम् ।
गोमूत्रपीतं जयति सकफं वातशोणितम् ॥
धात्रीहरिद्रामुस्तानां कषायं वा समाक्षिकम् ॥

गिलोय, कुटकी, मुलैठी और सोंठ समान भाग मिलित (३ माशे) लेकर पानीके साथ बारीक पीसलें। इसे शहदमें मिलाकर गोमूत्रके साथ सेवन करनेसे कफयुक्त वातरक्तका नाश होता है।

आमला, हलदी और नागरमोथा; इनका क्वाथ शहद डालकर पीनेसेभी वातरक्तका नाश होता है।

(८८१५) अमृतादिचूर्णम्

(वै. म. र. । पटल ३)

अमृताविडङ्गरास्ना दारुवराव्योष चूर्णसमतुलितम्
सहसा सर्वान् कासान् सितारजः परिहरेत्समधु॥

गिलोय, बायबिड़ंग, रास्ना, देवदारु, हर्र, बहेड़ा, आमला, सोंठ, काली मिर्च, पीपल और खांड समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे शहदमें मिलाकर चाटनेसे समस्त प्रकारके कास शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

(मात्रा—३ माशा।)

(८८१६) अर्कपत्रादिलवणम्

(ग. नि. । अर्शो. ४)

लवणं ह्यर्कपत्राणि करीरतरुजान्यपि ।
मद्यैरम्लैश्च युक्तानि युक्त्या क्षारं दहेत्पुटे ॥
सुखोदकेन मद्यैर्वा रसैरम्लैश्च पाययेत् ।
पीतः क्षारो क्षयं हन्याद्वातार्शांस्यचिरेण तु ॥

सेंधा नमक, आकके पत्ते और करीरके फल (टैंट) समान भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर हाण्डीमें भरें और इसमें मद्य तथा कांजी डालकर उसका मुख बन्द करदें। तत्पश्चात् उसे चूल्हे पर चढ़ाकर इतना पकावें कि सब चीजोंकी भस्म हो जाय। तदनन्तर उसके स्वांगशीतल होने पर हाण्डीसे औषधको निकालकर पीस लें।

इसे उष्ण जल, मद्य, मांस रस अथवा कांजीके साथ पीनेसे वातार्शका शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(मात्रा—१-१॥ माशा।)

(८८१७) अर्कमूलादियोगः

(रा. मा. । विष. २८)

अर्कमूलत्वचाचूर्णं पीतं शीतेन वारिणा ।
धत्तूरकाश्वमाराभ्यां गोनाशविषनाशनम् ॥

आककी जड़के चूर्णको शीतल जलके साथ पीनेसे धतूरे, कनेर और गोनास (सर्प विशेष)का विष नष्ट हो जाता है।

(८८१८) अलम्बुषादिचूर्णम्

(व. से. । उदरा.)

अलम्बुषाभवं चूर्णं पीतं काञ्जिकसंयुतम् ।
दौर्गन्ध्यनाशयत्याशु दुष्टं मेदोभवं नृणाम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गोरखमुंडीके चूर्णको कांजीमें मिलाकर पीनेसे मेद बढ़ जानेसे आनेवाली शरीरकी दुर्गन्ध शीघ्र ही नष्ट हो जाती है।

(मात्रा—३ से ६ माशे तक।)

(८८१९) अलम्बुषाद्यं चूर्णम्

(ग. नि. । चूर्णा. ३)

अलम्बुषाऽमृता शुण्ठी चित्रकं त्रिफला कणा ।
यावन्त्येतानि चूर्णानि वृद्धदारु च तत्समम् ॥
सूक्ष्मचूर्णीकृतान् सर्वान् स्वेच्छाहारविहारिणः ।
पिबतस्तक्रमदिरा काञ्जिकोष्णोदकैर्जयेत् ॥
आमवातं यकृत्प्लीहं पाण्डुरोगं विषूचिकाम् ।
काङ्कायनेनोक्तमिदं चूर्णमग्निकरं परम् ॥

गोरखमुंडी, गिलोय, सोंठ, चीतामूल, हर्र, बहेड़ा, आमला और पीपल १—१ भाग तथा विधारामूल ८ भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे तक्र, मदिरा, कांजी या उष्ण जलके साथ पीनेसे आमवात, यकृत्‌वृद्धि, प्लीहा, पाण्डु और विषूचिकाका नाश होता तथा अग्नि दीप्त होती है।

यह चूर्ण श्री कांकायन नामक वैद्य द्वारा आविष्कृत है।

(मात्रा—२-३ माशा)

(८८२०) अवल्गुजादिचूर्णम्

(व. से । कुष्ठ.)

अवल्गुजाद्बीजकर्षं पिबेदुष्णेन वारिणा ।
भोजनं क्षीरसर्पिर्भ्यां सर्वकुष्ठहरं परम् ॥

बावचीका १ तोला चूर्ण नित्य उष्ण जलके साथ सेवन करने तथा दूध और घृतयुक्त आहार खानेसे समस्त प्रकारके कुष्ठ नष्ट होते हैं।

(८८२१) अश्वगन्धायोगः (१)

(वै. म. र. । पट. ४)

अश्वगन्धारजो लिह्याद्गुडेन हविषाऽथवा ।
पयसा वा पिबेच्छस्त्रक्षतक्षीणो रसायनम् ॥

शस्त्राघातसे क्षीण हुवे मनुष्यको असगंधका चूर्ण गुड़ या घीमें मिलाकर खिलाना अथवा दूधके साथ पिलाना चाहिये।

(मात्रा—३ से ६ माशा।)

(८८२२) अश्वगन्धायोगः (२)

(ग. नि.; वृ. मा. । रसायना.; यो. त. । त. ७९)

पीताऽश्वगन्धा पयसाऽर्धमासं
घृतेन तैलेन सुखाम्बुना वा ।
कृशस्य पुष्टिं वपुषो विधत्ते
बालस्य सस्यस्य यथा सुवृष्टिः ॥

असगंधके चूर्णको १५ दिन तक दूध, घी या तेल अथवा उष्ण जलके साथ पीनेसे कृश मनुष्यका शरीर इस प्रकार पुष्ट हो जाता है जिस प्रकार वृष्टि होनेसे अनाजके पौदे बढ़ जाते हैं।

(८८२३) अश्वगन्धायोगः (३)

(यो. त. । त. ७९; रा. मा. । रसायना. ३२)

शिशिरे योऽश्वगन्धायाः कन्दचूर्णं पलोन्मितम् ।
मासमत्ति समध्वाज्यं स वृद्धोऽपि युवा भवेत् ॥

शिशिर ऋतु (माघ, फाल्गुन) में असगंधकी जड़का चूर्ण शहद और घीके साथ सेवन करनेसे १ मासमें वृद्ध पुरुष भी युवाके समान हो जाता है।

मात्रा—५ तोला।

(व्यवहारिक मात्रा—१ तोला)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८८२४) अश्वगन्धाद्यमुद्वर्तनम्

(ग. नि. । राजय. ९)

अश्वगन्धा ह्यपामार्गो नाकुली गौरसर्षपाः ।
तिला बिल्वं च कल्कः स्यात्क्षये तूद्वर्तनं परम् ॥

असगन्ध, अपामार्ग (चिरचिटा), नाकुली कन्द, सफेद सरसों, तिल और बेल छाल समान भाग लेकर चूर्ण बनावें और उसे पानीके साथ पीसलें ।

क्षय रोगीके शरीर पर इसकी मालिश करना हितकारक है ।

(८८२५) अश्वत्थफलादियोगः

(व. से. । वाजीकरणा.)

अश्वत्थ फलशुङ्गाग्रमूलं त्वग्भिः शृतं पयः ।
पीत्वा सशर्करश्चैव वृद्धोऽपि तरुणायते ॥

अश्वत्थ (पीपल वृक्ष)के फल, अंकुर और छालसे सिद्ध दूधमें खांड मिलाकर सेवन करनेसे वृद्ध पुरुष भी तरुणके समान हो जाता है ।

(८८२६) अश्वत्थबीजादियोगः

(वृ. यो. त. । त. १०३ ; वै. म. र. । पटल ७)

अश्वत्थबीजं हरिणस्य शृङ्गं
तक्रेण पीतं मधुना सहैव ।
प्रमेहजालं सहसैव हन्याद-
शाननं दाशरथी यथैव ॥

अश्वत्थ (पीपल)के बीजोंका चूर्ण और हरिण शृंगकी भस्मको शहदमें मिलाकर तक्रके साथ पीनेसे समस्त प्रमेह नष्ट हो जाते हैं ।

(बीजोंका चूर्ण ६ मासे । शृंग भस्म.२ रत्ती)

(८८२७) असीतकचूर्णम्

(भा. प्र. । म. खं. २ आमवाता.)

असीतकं मागधिका गुडूची
श्यामा वराही गजकर्णशुण्ठी ।
समधृताः कृत्स्नमिदन्तु चूर्णं
पिबेत्तदुष्णोदकमण्डयूषैः ॥
तक्रै रसैर्मद्यमस्तुभिर्वा
यथेष्टचेष्टस्य च भोजनस्य ।
अपबाहुकं गृध्रसि खञ्जवातं
विश्वाचितूनीप्रतितूनिरोगान् ॥
जङ्घामवातार्दितवातरक्तं
कटिग्रहं गुल्मगुदामयञ्च ।
प्रकोष्ठकं पाण्डुगरोग्रशोफं
हन्यादुरुस्तम्भमुदीर्णवेगम् ॥

कोयल (अपराजिता), पीपल, गिलोय, काली निसोत, बाराहीकन्द, गजकर्ण पलाशकी छाल और सोंठ समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

इसे उष्ण जल, मण्ड, यूष, तक्र, मांसरस, मद्य, या मस्तुके साथ पीनेसे अपबाहुक, गृध्रसि, खञ्जवात, विश्वाची, तूनी, प्रतितूनी, जंघा गत आमवात, अर्दित, वातरक्त, कटिग्रह, गुल्म, गुद-रोग, पाण्डु, गरविष, उग्र शोथ और प्रबल उरुस्त-म्भका नाश होता है ।

इत्यकारादिचूर्णप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथाकारादिगुटिकाप्रकरणम्

(८८२८) अग्निमुखवटी

(ग. नि. । गुटिका. ४)

हिङ्गुभागो भवेदेको वचा च द्विगुणा भवेत् ।
त्रयो भागा विडङ्गानां सैन्धवं च चतुर्गुणम् ॥
अजाज्याः पञ्चभागाश्च षड्भागाश्चैव नागरात् ।
मरिचस्य सप्त भागाः पिप्पली चाष्टभागिका ॥
कुष्ठं नवगुणं प्रोक्तं दशभागा हरीतकी ।
एकादश तथा वह्नेर्भागा द्वादश दीप्यकात् ॥
गुडेन द्विगुणेनैव गुटिकां कारयेद्बुधः ।
ततो वातरुजार्तानां नित्यमेव प्रयोजयेत् ॥

हींग १ भाग, बच २ भाग, बायबिडंग ३ भाग, सेंधा नमक, ४ भाग, जीरा ५ भाग, सोंठ ६ भाग, काली मिर्च ७ भाग, पीपल ८ भाग, कूठ ९ भाग, हर्र १० भाग, चीतामूल ११ भाग और अजवायन १२ भाग लेकर चूर्ण बनावें तथा उसे सबसे दो गुने गुड़में मिलाकर (६-६ माशेकी) गोलियां बनालें।

इनके सेवनसे वातव्याधिका नाश होता है।

(८८२९) अङ्कोटवटकः (१)

(च. द. ; व. से. । अतिसारा.)

सदार्व्यङ्कोटपाठानां मूलं त्वक्कुटजस्य च ।
शाल्मलीशालनिर्यासं धातकीलोध्रदाडिमम् ॥
पिष्ट्वाक्षसम्मितान्कृत्वा वटकांस्तण्डुलाम्बुना ।
तेनैवमधुसंयुक्तानेकैकान्प्रातरुत्थितः ॥
पिबेदत्ययमापन्नो विड्विसर्गेण मानवः ।
अङ्कोटवटको नाम्ना सर्वातीसारनाशनः ॥

दारुहल्दीकी जड़, अंकोलकी जड़, पाठाकी जड़, कुड़ेकी छाल, सेंमलका गोंद, शाल वृक्षका गोंद, धायके फूल, लोध और अनारकी छाल; इनका समान भाग चूर्ण लेकर सबको चावलोंके धोवनके साथ खरल करके १।-१। तोलेके वटक बना लें।

इनमें से १-१ वटक प्रातः काल शहदमें मिलाकर चावलोंके धोवनके साथ पीनेसे समस्त प्रकारके भयंकर अतिसार नष्ट होते हैं।

(व्य. मा.—३-४ माशे।)

(८८३०) अङ्कोटवटकः (२)

(भा. प्र. म. खं. २ ; व. से. । अतिसा)

पलमङ्कोटमूलस्य पाठां दार्वीञ्च तत्समाम् ।
पिष्ट्वा तण्डुलतोयेन वटकानक्षसम्मितान् ॥
छायाशुष्कांश्च तान्कुर्यात्तेष्वेकं तण्डुलाम्बुना ।
पेषयित्वा प्रदद्यात्तं पानाय गदिने भिषक् ॥
वातपित्तकफोद्भूतान्द्वन्द्वजान्सान्निपातिकान् ।
हन्यात्सर्वानतीसारान्वटकोऽयं प्रयोजितः ॥

अंकोलकी जड़, पाठा और दारुहल्दी; इनके ५-५ तोले चूर्णको एकत्र मिलाकर चावलोंके धोवनमें खरल करके १।-१। तोलेके वटक बनाकर छायामें सुखा लें।

इनमें से १-१ वटक चावलोंके धोवनमें मिलाकर नित्य सेवन करनेसे वातज, पित्तज, कफज, द्वन्द्वज, और सान्निपातिक अतिसारका नाश होता है।

(व्यव. मा. ३-४ माशे।)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अङ्कोटवटिका

(व. से. । अतिसारा.)

(अंकोट वटक सं. ८८३० देखिये । केवल इतना अन्तर है कि इसमें चावलोंके धोवनके स्थानमें मुलैठीका क्वाथ प्रयुक्त होता है ।)

(८८३१) अजमोदाद्यो मोदकः

(ग. नि. । शोथा. ३३)

अजमोदा कणा विश्वा मरिचं दारु चित्रकः ।
विडङ्गं पिप्पलीमूलं शतपुष्पा च सैन्धवम् ॥
एकैकांशमितं सर्वं पञ्चभागा हरीतकी ।
वृद्धिर्दशांशका जीर्णो गुडः स्याज्जिनभागतः ॥
मोदकः क्रियतेऽमीभिर्भुक्त्वा योऽनु जलं पिबेत् ।
उष्णं तस्य विनश्यन्ति सशोथाश्चाममारुताः ॥

अजमोद, पीपल, सोंठ, काली मिर्च, देवदारु, चीतामूल, बायबिडंग, पीपलामूल, सोया और सेंधा नमक १-१ भाग, हर्र ५ भाग, वृद्धि १० भाग और पुराना गुड़ २४ भाग लेकर यथाविधि (६-६ माशेके) मोदक बना लें ।

इन्हें उष्ण जलके साथ सेवन करनेसे शोथ और आमवातका नाश होता है ।

(८८३२) अतिविषादिगुटी

(आर्य औषध)

अतीस १ तो. करञ्जकी भूनी हुई गिरी १ तो. तथा गिलोयका सत आधा तो. लेकर सबको एकत्र खरल करके कुड़ेकी छालके घन (गाढ़ा किये हुवे क्वाथ) में मिलाकर ६-६ रत्तीकी गोलियां बनालें ।

यह गोली बालकोंके ज्वर, अतिसारादिमें उपयोगी हैं । जब बार बार उल्टी होती हो और पेटमें कोई चीज न रुकती हो तो यह गुटिका विशेष लाभ पहुंचाती है । सुबह शाम १-१ गोली दूधके साथ दें ।

(८८३३) अभयाद्या गुटिका

(ग. नि. । गु. ४)

हरीतकीनां कुडवं त्र्यूषणाच्च पलत्रयम् ।
द्वे पले पिप्पलीमूलात्तथा चैवाम्लवेतसात् ॥
चविकां चित्रकं धान्यमजाजीं हपुषामपि ।
यवानीं चाजमोदं च तिन्तडीकं च दाडिमम् ॥
सौवर्चलं कारवीं च पलिकानि प्रदापयेत् ।
त्वगेलापत्रकनकं कर्षांशं चात्रदापयेत् ॥
गुडस्य च पलान्यत्र दापयेद्द्विगुणानि च ।
अभया गुटिका ह्येषा मन्दस्याग्नेस्तु दीपिनी ॥
वातशोणितमानाहं गुल्मं पञ्चविधं तथा ।
चतुरो ग्रहणीदोषानर्शांसि षड्विधानि च ॥
कासं क्षयविबन्धं च शूलं हृज्जराश्रयम् ।
भक्षिता नाशयत्येषा भोज्या निर्यन्त्रणा स्मृता ॥

हर्र २० तोले, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल) १५ तोले, पीपलामूल १० तोले, अम्लवेत १० तोले तथा चव, चित्रक मूल, धनिया, जीरा, हपुषा, अजवायन, अजमोद, तिन्तड़ीक, अनारदाना, संचल (कालानमक), और काला जीरा ५-५ तोले; दालचीनी, इलायची, तेजपात और धतूरा १।-१। तोला एवं गुड़ सबसे दो गुना लेकर गुड़में समस्त ओषधियोंका चूर्ण मिलाकर (९-९ माशे की) गोलियां बना लें ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसके सेवनसे अग्नि दीप्त होती तथा वातरक्त, अफारा, ५ प्रकारका गुल्म, ४ प्रकारकी ग्रहणी, ६ प्रकारकी अर्श, कास, क्षय, विबंध, हृदयशूल और उदरशूल; इनका नाश होता है।

इस पर किसी विशेष परहेजकी आवश्यकता नहीं है।

(८८३४) अभयाद्या वटकाः (१)

(ग. नि. । गुटि. ४)

अभयागुडपिप्पल्यः समांशा वटकीकृताः ।
भक्षिता हन्त्यतीसारमर्शःपाण्ड्वामयज्वरान् ॥

हर्र और पीपलका चूर्ण तथा गुड़ समान भाग लेकर (४-४ माशे के) मोदक बना लें।

ये मोदक अतिसार, अर्श, पाण्डु और ज्वरको नष्ट करते हैं।

(८८३५) अभयाद्या वटकाः (२)

(ग. नि. । गुटिका. ४)

हरीतकीनां द्विपलं ग्रन्थिकं वेतसं तथा ।
पलार्धं चार्धकर्षांशा व्योषवृक्षाम्लबाष्पिकाः ॥
यवानी चाजमोदा च कारवीशठिपौष्करम् ।
चव्यसौवर्चलबिडं हपुषाजाजिधान्यकम् ॥
कोलाम्लं दाडिमं चेति चातुर्जातं च कार्षिकम् ।
चूर्णं गुडद्विगुणितं कृत्वा तु वटकान्भजेत् ॥
गुल्मानाहोदरप्लीहपाण्ड्वर्शोग्रहणीगदान् ।
कासातीसारपार्श्वार्तिश्वासरोगं च कामलाम् ॥
मदात्ययवमीमेहहिक्कापीनसपित्तजान् ।
शूलं ज्वरं च शमयेदग्निदीप्तिकराः परम् ॥
कृष्णात्रिरमृतियुक्तस्तु नित्यं जीवेत्समाः शतम् ॥

हर्र १० तोले, पीपलामूल २॥ तोले, अमलवेत २॥ तोले तथा सोंठ, मिर्च, पीपल, तिंतड़ीक, बाष्पिका (कलौंजी), अजवायन, अजमोद, काला जीरा, कचूर, पोखरमूल, चव, संचल (काला नमक), बिड नमक, हपुषा, जीरा, धनिया, खट्टे बेर और अनारदाना आधा आधा कर्ष (प्रत्येक ७॥ माशे) एवं दालचीनी, इलायची, तेजपात और नागकेसर १।-१। तोला लेकर चूर्ण बनावें तथा उसे सबसे दो गुने गुड़में मिलाकर (९-९ माशे के) मोदक बना लें।

इनके सेवनसे गुल्म, आनाह, उदररोग, प्लीहा, पाण्डु, अर्श, ग्रहणी रोग, कास, अतिसार, पार्श्व पीड़ा, श्वासरोग, कामला, मदात्यय, वमन, प्रमेह, हिचकी, पीनस, पित्त विकार, शूल और ज्वरका नाश होता तथा अग्नि दीप्त होती है।

(८८३६) अमृतप्रभागुटिका

(यो. चि. म. । अ. ३)

आकल्लकं सैन्धववह्निशुण्ठि
धात्र्यूषणं दिव्यसमा सपथ्या ।
रसेन भाव्यं फलपूरकेण
मन्दानिलत्वे ह्यमृतप्रभेयम् ॥
कासे गलामये श्वासे प्रतिश्याये च पीनसे ।
अपस्मारे तथोन्मादे सन्निपाते तथा हिता ॥

अकरकरा, सेंधा नमक, चीतामूल, सोंठ, आमला, काली मिर्च, लौंग और हर्र; इनके समान भाग चूर्णको एकत्र मिलाकर बिजौरेके रसकी भावना देकर (४-४ रत्ती की) गोलियां बनावें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इनके सेवनसे कास, गलरोग, श्वास, प्रतिश्याय, पीनस, अपस्मार, उन्माद और सन्निपातका नाश होता है।

(८८३७) अमृतवटकः

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ८)

धात्रीफलानां रसप्रस्थमेकं
प्रस्थं तथा चेक्षुरसं विदध्यात् ।
प्रस्थं तु कूष्माण्डरसप्रदिष्ट-
मार्कं रसं प्रस्थविमिश्रमेकम् ॥
पक्कीकृतं मन्दहुताशनेन
पाच्यं भवेत्पादमशेषमेति ।
विमिश्रयेदौषधसङ्घमेतत्
पलैकमात्रं विपचेच्च पश्चात् ॥
भृङ्गी सुराह्वं शतपुष्पधान्यं
सुगन्धशुण्ठीमधुकं विशाला ।
सपिप्पलीकं सकटुत्रयं च
विडङ्गमुस्ता हपुषा फलानि ॥
मूर्वा हरिद्रा कटुरोहिणीनां
दुरालभापौष्करवत्सकानाम् ।
कुष्ठाजमोदा सुरसादलानि
चूर्णं त्वमीषां विनियोजनीयम् ॥
गुडं पुराणं द्विगुणं तु मध्ये
घृतेन चोक्तं वटिकां विबन्धयेत् ।
भक्षणाज्जयन्ति कामलार्शसं
पाण्डुरोगमतिदारुणज्वरान् ॥
शोफशोषग्रहणीं विजघ्नति
विद्रधीन् हरति कुष्ठमेहकान् ॥

आमलेका रस २ सेर, ईखका रस २ सेर, कुम्हड़े (पेठे) का रस २ सेर और आकका रस २ सेर लेकर सबको एकत्र मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब २ सेर शेष रह जाय तो उसमें अतीस, देवदारु, सोया, धनिया, गंधतृण, सोंठ, मुलैठी, इन्द्रायणकी जड़, पीपल, सोंठ, मिर्च, पीपल, बायबिडंग, नागरमोथा, हपुषाकेफल, मूर्वा, हल्दी, कुटकी, धमासा, पोखरमूल, इन्द्रजौ, कूठ, अजमोद और तुलसी--पत्र; इनका चूर्ण ५--५ तोले एवं पुराना गुड़ सबसे दो गुना मिलाकर पुनः पकावें और गाढ़ा हो जाने पर अग्निसे नीचे उतार कर घीके हाथसे गोलियां बना लें।

(**मात्रा**—६ माशे)

इसके सेवनसे कामला, अर्श, पाण्डु, ज्वर, शोथ, शोष, ग्रहणीरोग, विद्रधि और कुष्ठका नाश होता है।

(**अनुपान**—उष्ण जल।)

(८८३८) अशनादियोगः

(व. से. । बालरोगा.)

अशनस्य तु पुष्पाणि श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् ।
गुटिकां कारयेद्वैद्यस्तां च भक्तस्य वारिणा ।
एतां पश्चात्तके दद्याद्बालेषु मतिमान्भिषक्

असना वृक्षके फूलोंको बारीक पीसकर चावलोंके धोवनसे खरल करके गोलियां बना लें।

इनके सेवन से बालकोंका **'पश्चात् रुज'**[1] नामक रोग नष्ट हो जाता है।

[1]--बालकोंकी गुदामें एक विशेष प्रकारका व्रण होता है जिसका आकार जोक (जलौका) के पेटके समान और रंग लाल होता है तथा उसमें दाह होती है और बालकको ज्वर आ जाता है, उसे **'पश्चात् रुज'** कहते हैं।

इत्यकारादिगुटिकाप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथाकारादिगुग्गुलुप्रकरणम्

अयोगुग्गुलुः

(व. से. । शूला.)

प्रयोग संख्या २४२२ " त्रिफला गुग्गुलुः " देखिये ।

इत्यकारादिगुग्गुलुप्रकरणम्

अथाकाराद्यवलेहप्रकरणम्

अगस्त्य हरीतक्यवलेहः

(च. द. कासा. ११; वृ. मा. । राजयक्ष्मा. ; र. र. । कासा. ; हा. सं. । स्था. ३ अ. ९; वृ. यो. त. । त. ६७)

प्र. सं. ३०१८ " दशमूल हरीतकी " नं. १ देखिये ।

वृ. यो. त. में क्वाथ्य द्रव्योंमें जवासा, गिलोय, पाठा और रास्ना अधिक हैं ।

(८८३९) अमृतप्राशावलेहः

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ९)

शतमूलीरसः प्रस्थं गुडूचीकल्कमस्थकम् ।
हरीतकी शतं चान्यत् कुटजस्य त्वचस्तुलाम् ॥
निःक्वाथ्यं च पृथक्त्वेन पूतांश्चैकत्र मिश्रयेत् ।
दार्वीप्रलेपनं दृष्ट्वा कृष्णानां शतपञ्चकम् ॥
शतं चामलकीचूर्णं त्वगेला चित्रकं सठी ।
द्राक्षा कुष्ठं शिलाजिच्च शिलाभेदस्तु तालकम् ।
योज्यं तत्राक्षमानेन भक्षयेत् सितसर्पिषा ॥
तस्योपरि पिबेत् क्षीरं भोजनं च ततः परम् ।
राजयक्ष्मी लभेत् सौख्यं पाण्डुकामलकान् जयेत् ॥
अतीसारो विनश्येत्तु बले नागबलो भवेत् ॥

१ सेर गिलोयको पत्थरपर पीसकर ८ सेर पानीमें पकावें और २ सेर रहने पर छान लें । फिर १०० हर्रोको आठ गुने पानीमें पकावें और चौथा भाग रहने पर छान लें । इसी प्रकार ६। सेर कुड़ेकी छालको ३२ सेर पानीमें पकावें और ८ सेर रहने पर छान लें । तत्पश्चात् ये तीनों क्वाथ और २ सेर शतावरका रस एकत्र मिलाकर पुनः पकावें । जब करछीको लगने लगे तो उसमें ५०० नग पीपल का चूर्ण, १०० आमलोंका चूर्ण, एवं दालचीनी, इलायची, चीतामूल, कचूर, द्राक्ष (मुनक्का), कूठ, शिलाजीत, शिलाभेद (पाषाणभेद) और तालमूली (मूसली); इनका चूर्ण १। १। तोला मिलाकर ठंडा करके सुरक्षित रक्खें ।

इसे यथोचित मात्रानुसार घी और खांड के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साथ खाकर ऊपरसे दूध पीना और फिर (समय- पर) भोजन करना चाहिये।

इसके सेवनसे राजयक्ष्मा, पाण्डु, कामला, और अतिसारका नाश होता तथा बलवृद्धि होती है।

(मात्रा—१ से २ तोले तक।)

अमृतभल्लातकावलेहः

(भा. प्र. । म. खं. २)

प्र. सं. १८६ देखिये। उसमें तीसरे श्लोक (वक्ष्यमाणानि निक्षिपेत्) के पश्चात्—

"शरावमात्रकं सर्पिर्दुग्धं स्यादाढकं तथा।
सितां प्रस्थमितां दद्यात्प्रस्थार्द्धं माक्षिकं क्षिपेत्॥"

यह पाठ छूट गया है।

अर्थात् उसमें आधासेर घी, ४ सेर दूध, १ सेर खांड और आधासेर शहद भी डालना चाहिये।

(८८४०) अमृतरसोनपिण्डः

(वृ. मा. । आमा.)

क्षुण्णं रसोनपलशत-
मसिततिलानां पलानि पञ्चाशत्।
घृतलिप्तभाजनस्थे
तक्रेण समेन तत्कुर्यात्॥
विंशतिपलानि चुक्रा-
म्लगुडार्द्रकमातुलुङ्गमेतावत्।
तिलतैलानि च ताव-
त्तावन्त्येवात्र सर्पिषो दद्यात्॥
शतपुष्पा गजपिप्पलि-
दाडिमवृक्षाम्लधातकीमुस्तम्।
त्र्यूषणकुष्ठयमानि द्राक्षा सैला सजीरकद्वितया॥
सुरदारुसिन्धुसविडं सौवर्चलरोमकं च सामुद्रम्।
पलसम्मितानि कृत्वा श्लक्ष्णवदापयेन्मतिमान्॥
आलोड्य धान्यराशौ
सप्ताहांस्त्रीन्न्यसेच्च कृतरक्षः।
उद्धृत्य तदनुसिद्धं सुतिथिमुहूर्ते तथा सुनक्षत्रे॥
त्वक्पत्रैलाकेसरकर्पूरलवङ्गजातिचूर्णेन।
सुरभीकृतं च नरः खादेद्विपलोन्मितं पिण्डम्॥
अत्यर्थोष्णविवर्जी तृषितश्च पिबेत्सुरां यथेष्टम्।
अमृतादमृताख्योऽयं रसोनपिण्डः पराशरेणोक्तः॥
हतपतितच्युतभग्नसन्धि-
विमुक्तास्थिभग्नदेहानाम्।
अस्मात्परं नराणां न ह्यस्ति भेषजं वाऽन्यत्॥
बलवर्णवह्निजननं स्मृतिमेधाबुद्धिवर्धनं धन्यम्।
शमयति सर्वविकाराञ्छतशोऽन्यैर्भेषजैरजितान्॥

छिला और कूटा हुवा लहसन ६। सेर, छिले और कुटे हुवे काले तिल ३ सेर १० तोले, तक्र ९ सेर ३० तोले (१८ सेर ६० तोले), चुक्र (शुक्त) १। सेर (२॥ सेर), गुड़ १। सेर, अदरक (पिसा हुआ) १। सेर, बिजौरे नीबूका रस १। सेर (२॥ सेर), तिल तेल २॥ सेर, घी २॥ सेर तथा सोया, गजपीपल, अनारदाना, वृक्षाम्ल (तिंतड़ीक), धायके फूल, नागरमोथा, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, कूठ, अजवायन, मुनक्का, इलायची, जीरा, काला जीरा, देवदारु, सेंधानमक, बिड नमक, संचल (काला नमक) रोमक लवण, और सामुद्र लवण; इनका चूर्ण ५-५ तोले लेकर सबको एकत्र मिलाकर अच्छी तरह आलोडित करके घृतसे चिकने किये हुवे मटके में भरकर उसका मुख बन्द करके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनाजके ढेरमें दबा दें। एवं ३ सप्ताह पश्चात् निकालकर उसे दालचीनी, तेजपात, इलायची, केसर, कपूर, लौंग और जावित्रीके चूर्णसे सुगन्धित करके १० तोलेकी मात्रानुसार सेवन करें।

(व्यवहारिक मात्रा १–१॥ तोला।)

इसके सेवन कालमें अधिक गरम पदार्थोंसे परहेज करें और प्यास लगने पर मद्य पियें।

हड्डी पर चोट लगी हो, हड्डी अपने स्थान से उतर गई हो या टूट गई हो तो उसके लिये इससे बढ़कर अन्य कोई उपाय नहीं है।

यह बल, वर्ण, अग्नि, बुद्धि, मेधा और स्मृति को बढ़ाता है तथा अन्य सैकड़ों औषधोंसे आराम न होने वाले बहुतसे रोगोंको नष्ट कर देता है।

(८८४१) अश्वगन्धाद्यवलेहः

(ग. नि. । परि. अवलेहा. ५)

अश्वगन्धा गोक्षुरश्च शतवीर्या विदारिका।
बलाबीजानि यष्ट्याह्वं बीजानीक्षुरकस्य च ॥
कपिकच्छोश्च बीजानि शाल्मलीमूलकं तथा।
वृद्धदारुकबीजानि लवङ्गं जातिपत्रिका ॥
जातीफलं केशरं च त्वक् पत्रं वंशरोचना।
एलाद्वयं कुङ्कुमं च गुडूचीसत्त्वमेव च ॥
एतेषां कर्षमादाय मधुनः कुडवत्रयम्।
कृत्वा लेहं ततो मात्रां यथायोग्यां प्रदापयेत् ॥
धातुक्षयं तथा वातं ध्वजभङ्गं नियच्छति।
अनेनाशीतिवर्षोऽपि युवेव च वृषायते ॥

असगंध, गोखरु, शतावर, विदारीकन्द, बीजबन्द, मुलैठी, तालमखाना, कौंचके बीज, सेंभलकी मूसली, विधारेके बीज, लौंग, जावित्री, जायफल, नागकेसर, दालचीनी, तेजपात, बंसलोचन, छोटी और बड़ी इलायची, केसर और गिलोयका सत १।–१। तोला लेकर सबके बारीक चूर्ण को ६० तोला (१२० तोला) शहदमें मिला लें।

इसे यथोचित मात्रानुसार सेवन करने से धातुक्षय, वातरोग, और ध्वज भंगका नाश होता है। इसके सेवनसे वृद्ध भी युवाके समान हो जाता है।

(मात्रा—१ से २ तोले तक।)

अश्वगन्धापाकः

रस प्रकरणमें देखिये।

इत्यकाराद्यवलेह-प्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथाकारादिघृतप्रकरणम्

(८८४२) अगस्तिपुष्पघृतम्

(भा. प्र. म. खं. २ । वातरक्ता.)

अगस्तिपुष्पचूर्णेन माहिषं जनयेद्दधि ।
तदुत्थनवनीतेन देहजं स्फुटनं जयेत् ॥

अगस्ति (अगथियाके) फूलोंका चूर्ण भैंसके दूधमें डालकर उसका दही जमावें और मक्खन निकाल लें।

यह घृत स्फुटित वातरक्तको नष्ट करता है।

(इसे खाना तथा लगाना चाहिये)

(८८४३) अगस्त्यघृतम्

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ६)

पिप्पली चित्रकं चैव चव्यं पिप्पलिमूलकम् ।
अजमोदा गजकणा क्षारौ द्वौ लवणानि च ॥
एतान्यर्धपली मात्रा प्रस्थं चापि तुषोदकम् ।
प्रस्थमत्र घृतं देयं प्रस्थं चैवार्द्रकं रसम ॥
भृङ्गराजरसप्रस्थं प्रस्थं तु मातुलिङ्गकम ।
दधिप्रस्थद्वयं क्षिप्त्वा द्वौ प्रस्थौ नवनीतकम् ॥
पचेन्मृद्वग्निना तावद्घृतं यावत्प्रदृश्यते ।
अवतार्य प्रयोक्तव्यं पाने भोजनकेपि वा ॥
मन्दाग्नीनां च गुल्मानामजीर्णानां विनाशनम् ।
ग्रन्थ्यर्बुदापचीकासशूलश्वासनिवारणम ॥
ग्रहणीश्वयथूनां च कृमीणां गुदकीलकम् ।
अर्शसां बस्तिशूलानां हृद्रोगाणां विशेषतः ॥
नाशयेच्चाशु योगाच्च भास्करास्तिमिरं यथा ।
मन्दाग्नीन नाशयत्येव कृतं चेति ह्यगस्तिना ॥

कल्क—पीपल, चीतामूल, चव, पीपलामूल, अजमोद, गजपीपल, जवाखार, सज्जीखार, पांचों नमक; प्रत्येक औषधि २॥-२॥ तोले लेकर सबको एकत्र मिलाकर पानीके साथ पीस लें।

द्रवपदार्थ—कांजी २ सेर, अदरकका रस २ सेर, भंगरेका रस २ सेर, बिजौरे नीबूका रस २ सेर और दही ४ सेर।

४ सेर नवनीत (मक्खन) और २ सेर घी तथा उपरोक्त कल्क और द्रव पदार्थोंको एकत्र मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब पानी जल जाय तो घीको छान लें।

इसे पिलाने या भोजनके साथ खिलानेसे अग्निमांद्य, गुल्म, अजीर्ण, ग्रन्थि, अपची, अर्बुद, कास, शूल, श्वास, ग्रहणी रोग, शोथ, कृमि, अर्श, बस्ति शूल और विशेषतः हृद्रोगका नाश होता है। यह घृत अग्निमांद्यको अवश्य ही नष्ट कर देता है।

(मात्रा—१ से २ तोले तक)

(८८४४) अनन्ताद्यं घृतम्

(व. से. । रक्तपित्ता.)

अनन्ताशारिवापद्मं सलोध्रं नीलमुत्पलम ।
कल्कैरेतैः पचेत्सर्पिः सक्षीरं नावनं परम् ॥
रक्तपित्तं प्रशमयेन्नारीणां प्रदरं तथा ।
हस्तपादाङ्गदाहेषु ज्वरे रक्ते तथोर्ध्वगे ॥
वासाघृतं शतावर्या सिद्धं वा परमं हितम् ॥

कल्क—अनन्तमूल, सारिवा, कमल, लोध

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और नीलोत्पल, इनका चूर्ण (४-४ तोले) लेकर सबको पानीके साथ पीस लें।

(२ सेर) घीमें यह कल्क और (८ सेर) दूध मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब पानी (दूध) जल जाय तो घीको छान लें।

इसकी नस्य देनेसे रक्तपित्तका नाश होता है।

यह घृत स्त्रियोंके प्रदर और हाथ पैरों तथा शरीरकी दाह एवं ज्वरमें भी उपयोगी है।

ऊर्ध्वगत रक्तपित्तमें वासास्वरस या शतावरके स्वरससे बनाया हुआ घृत भी विशेष उपयोगी है।

(८८४५) अभयादिघृतम् (१)

(ग. नि. । हृद्रोगा. २७)

पञ्चाशदभयाकल्कं सौवर्चलपलद्वयम् ।
घृतप्रस्थं जले सिद्धं हृद्रोगश्वासगुल्मनुत् ॥

२ सेर घीमें पचास हर्रोंका चूर्ण (कल्क), १० तोले संचल (काला नमक) और ८ सेर पानी मिलाकर पानी जलने तक पकावें और फिर छान लें।

इसे पीनेसे हृद्रोग, श्वास और गुल्मका नाश होता है।

(**मात्रा**--१ से २ तोले तक।)

(८८४६) अभयादिघृतम् (२)

(ग. नि. । हिक्काश्वासा.)

कासे श्वासे च हिक्कायां हृद्रोगे चापि पूजितम्।
घृतं पुराणं संसिद्धमभयाविडरामठैः ॥

कल्क—हर्र, बिडनमक और हींग (५-५ तोले) लेकर पानीके साथ पीस लें।

(१२० तोले) पुराने घीमें यह कल्क और (६ सेर) पानी मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब पानी जल जाए तो घीको छान लें।

यह घृत कास, श्वास, हिचकी और हृद्रोगको नष्ट करता है।

(**मात्रा**—१ तोला।)

(८८४७) अमृतं घृतम्

(ग. नि. । गरविषा. ८ ; व. से. । विषा. ; धन्व. । विषा.)

अपामार्गस्य बीजानि शिरीषस्य तथैव च ।
द्वे मेदे काकमाची[1] च गवां मूत्रेण पेषयेत् ॥
सर्पिरेतेषु संसिद्धं विषसंशमनं परम् ।
अमृतं नाम विख्यातमपि सञ्जीवयेन्मृतम् ॥

अपामार्ग (चिरचिटे) के बीज, सिरसके बीज, मेदा, महामेदा और मकोय (४-४ तोले) लेकर सबको गोमूत्रके साथ पीस लें।

(२ सेर) घीमें उपरोक्त कल्क (और ८ सेर पानी) मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब पानी जल जाए तो घीको छान लें।

यह घृत अत्यन्त विषनाशक है। इससे मृत प्रायः रोगी भी बच जाता है।

(८८४८) अमृतलतादिघृतम्

(भा. प्र. । म. खं. २ पाण्डु. ; व. से. । पाण्डु. ; वृ. यो. त. । त. ७४)

अमृतारसकल्कं प्रसाधितं तुरगद्विषः सर्पिः ।
क्षीरचतुर्गुणमेतद्धितरेव हलीमकार्तेभ्यः ॥

गिलोयके कल्क और स्वरस तथा दूधसे सिद्ध भैंसका घृत पीनेसे हलीमक रोग नष्ट होता है।

(गिलोयका कल्क १० तोला; गिलोयका स्वरस १ सेर, घी १ सेर, दूध ४ सेर।)

---

१ श्वेते द्वे काकमाची चेति पाठान्तरम्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८८४९) अमृताद्यं घृतम्

(व. से. । राजयक्ष्मा.)

गुडूची शारिवा ह्रस्वा पञ्चमूली बला वृषम् ।
समूलपत्रशाखन्तु पृथग्दशपलानि च ॥
जलद्रोणे विपक्तव्यं यावत्पादावशेषितम् ।
पिप्पली चन्दनं लोध्रं ह्रीबेरोशीरपर्पटम् ॥
पाठाभूनिम्बयष्ट्याह्व त्रायन्ती नीलमुत्पलम् ।
मुस्तकेन्द्रयवाः शुण्ठी कटुकं सदुरालभम् ॥
त्वक्पत्रं दशमूलञ्च कल्कैरर्धपलैर्भिषक् ।
अजाक्षीरेण तत्तुल्यं घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥
हन्ति यक्ष्माणमत्युग्रं रक्तपित्तं त्रिदोषजम् ।
श्वासकासक्षतक्षीणदाहशोथरुजापहम् ॥

क्वाथ—गिलोय, सारिवा, लघु पंचमूल (शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, कटेली, बड़ी कटेली, गोखरु), बला (खरैटी)का पंचांग और बासा (अडूसा) का पंचांग ५०–५० तोले लेकर सबको कूटकर ३२ सेर पानीमें पकावें और ८ सेर रहने पर छान लें।

कल्क—पीपल, सफेद चन्दन, लोध, सुगन्ध वाला, खस, पित्तपापड़ा, पाठा, चिरायता, मुलैठी, त्रायमाणा, नीलोत्पल, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सोंठ, कुटकी, धमासा, दालचीनी, तेजपात और दशमूल; प्रत्येकका चूर्ण २॥–२॥ तोले लेकर सबको पानी के साथ पीस लें।

२ सेर घीमें उपरोक्त क्वाथ, कल्क और २ सेर बकरीका दूध मिलाकर मंदाग्नि पर पकावें। जब पानी जल जाए तो घीको छान लें।

इसके सेवनसे अत्युग्र राजयक्ष्मा, त्रिदोषज रक्तपित्त, श्वास, खांसी, क्षतक्षीणता, दाह और शोथका नाश होता है।

(मात्रा—१ से २ तोले तक।)

(८८५०) अशोकघृतम्

(वा. भ. । चि. अ. । ३ कासा.)

अशोकबीजक्षवकजन्तुघ्नाञ्जनपद्मकैः ।
सविडैश्च घृतं सिद्धं तच्चूर्णं वा घृतप्लुतम् ॥
लिह्यात्पयश्चानु पिबेदाजं कासादिपीडितः ॥

अशोकके बीज, काली सरसों, बायबिडंग, सुरमा, पद्माक और बिड नमक; इनके कल्कसे सिद्ध घृत पीने या इनके चूर्णको घीके साथ चाटकर ऊपरसे बकरीका दूध पीनेसे कासका नाश होता है।

(कल्क १० तोले, घी १ सेर, पानी ४ सेर।)

(मात्रा—१ से २ तोले तक।)

(८८५१) अश्वगन्धाघृतम् (१)

(ग. नि. । वन्ध्या. ५)

अश्वगन्धाकषायेण सृद्विपरिसाधितम् ।
ऋतुकाले पिबेद्वन्ध्या गर्भसन्धानकं घृतम् ॥

२ सेर असगन्धको कूटकर १६ सेर पानीमें पकावें जब ४ सेर पानी शेष रहे तो छानकर उसमें १ सेर घी मिलाकर पकावें।

ऋतु कालमें इसे सेवन करनेसे वन्ध्या स्त्री गर्भ धारण करलेती है।

(मात्रा—२ से ४ तोले तक।)

(८८५२) अश्वगन्धाघृतम् (२)

(ग. नि. । वातव्या. १९; च. द.; भै. र.; वृ. मा.; व. से. । वातव्या.; यो. चि. म. । अ. ५)

अश्वगन्धाकषायेण कल्कैः क्षीरचतुर्गुणम् ।
घृतं पक्वं तु वातघ्नं वृष्यं मांसविवर्धनम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असगन्धके क्वाथ और कल्क तथा चार गुने दूधके साथ सिद्ध घृत वातव्याधिको नष्ट करता है तथा इसके सेवनसे वीर्य और मांसकी वृद्धि होती है।

(असगन्धका क्वाथ ८ सेर, असगन्धका कल्क २० तोले, दूध ८ सेर, घी २ सेर।)

(मात्रा—२ से ४ तोले तक।)

(८८५३) अष्टाङ्गमङ्गलघृतम्

(अष्टाङ्गघृतम्)

(व. से. ; धन्व. ; र. र. । वाजीकरणा.)

मण्डूकीं सवचां सशङ्ख-
कुसुमां सब्रह्मसौवर्चलाम् ।
गुञ्जां श्वेतवतीं शतावरि-
युतां ब्राह्मीं गुडूचीं तथा ॥
पिष्टांशैः पलिकैरिमानि-
विधिवद्द्रव्याणि मस्रावणम् ।
सर्पिःप्रस्थमथाढकेन
पयसां युक्तिं पचेत्पाचनम् ॥
नाम्नाष्टाङ्गमिदं विदेहरचितं
ख्यातं पिबेद्यो घृतम् ।
स श्लोकस्य सहस्रमेक
दिवसेनैवाखिलं धारयेत् ॥
अक्षीणाप्रतिहीनवाणि
मधुरस्पष्टाभिदायी सदा ।
लोके शुक्रबृहस्पतीसम
नृणां पूज्यश्च नित्यं सदा ॥

कल्क—मण्डूकपर्णी, बच, शंखपुष्पी, ब्रह्मसुवर्चला (हुलहुल), चौंटली, श्वेतवती (सफेद कोयल), शतावर, ब्राह्मी, और गिलोय ५—५ तोले लेकर पानी के साथ पीस लें।

२ सेर घीमें यह कल्क और ८ सेर दूध मिलाकर मंदाग्नि पर पकावें। जब दूध जल जाय तो घीको छान लें।

इसे सेवन करनेसे स्मरणशक्ति इतनी तीव्र हो जाती है कि १ दिनमें हजार श्लोक याद हो जाते हैं एवं वाणी मधुर और स्पष्ट होती है।

इत्यकारादिघृतप्रकरणम्

अथाकारादि-तैलप्रकरणम्

(८८५४) अगुर्वादितैलम्

(च. सं. । चि. अ. ३ ज्वरा.)

अगुरुकुष्ठतगरपत्रनलदशैलेयकध्यामकहरेणुकास्थौणेयकक्षेमिकैलावराङ्गदलपुरतमालपत्रभूनीकरोहिषसरलसल्लकीदेवदार्वग्निमन्थबिल्वस्योनाककाश्मर्यपाटलापुनर्नवावृश्चीरकण्टकारिकाबृहतीशालिपर्णीपृश्निपर्णीमाषपर्णीमुद्गपर्णीगोक्षुरकैरण्डशोभाञ्जनकवरुणार्कचिरिबिल्वतिल्वकशटीपुष्करमूलगण्डीरोरुबूकपत्तूराक्षीवाश्मन्तकशिग्रुमातुलुङ्गमूषकपर्णीपीलुपर्णीतिलपर्णीमेषशृङ्गीहिंस्रादन्तशठैरावतकभल्लातकास्फोतककाण्डीरात्मगुप्ताकाकाण्डेषीकाकरञ्जधान्यकाजमोदा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पृथ्वीकासुमुखसुरसकरकण्डीरकुठेरककालमालकपर्णासक्षवकफणिज्जकभूस्तृणशृङ्गवेरपिप्पलीसर्षपाश्वगन्धारास्नारुहावरोहाबलातिबलागुडूचीशतपुष्पाशीतवल्लीनाकुलीगन्धनाकुलीश्वेताज्योतिष्मतीचित्रकाध्यण्डाम्लचाङ्गेरीवदरकुलत्थमाषाणामेवं विधानामन्येषां चोष्णवीर्याणां यथालाभमौषधानां कषायङ्कारयेत्तेन कषायेण तेषामेव च कल्केन सुरासौवीरकतुषोदकमैरेयमेदकदधिमण्डारनालकट्वरप्रतिविनीतेन तैलपात्रं विपाचयेत्। तेन सुखोष्णेन तैलेनोष्णाभिप्रायेण ज्वरितमभ्यञ्जयात्। तथा शीतज्वरः प्रशाम्यति तैरेव चौषधैश्लक्ष्णपिष्टैः सुखोष्णं प्रदेहं कारयेत्॥ एतेषामेव च सुखोष्णकाथमवगाहनपरिषेकार्थं प्रयुञ्जीत शीतज्वरप्रशमार्थमिति॥

अगर, कूठ, तगर, तालीसपत्र, खस, शैलेय (भूरी छरीला), ध्यामक तृण (कत्तृण), रेणुका, थुनेर, हल्दी, इलायची, प्रियंगुके पत्ते, गूगल, तमालपत्र (तेजपात), अजवायन, रोहिषतृण, सरल वृक्ष (चीरका काष्ट), सल्लकी (सालई वृक्ष), देवदारु, अरणी, बेलछाल, श्योनाक (अरलू) की छाल, खम्भारीकी छाल, पाढलकी छाल, पुनर्नवामूल, वृश्चीर (सफेद सांठ), कटेली, बड़ी कटेली, शालपर्णी पृश्नपर्णी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, गोखरु, अरण्डमूल, सहंजनेकी छाल, वरनेकी छाल, आकके पत्ते, चिरबिल्व (करंजभेद), लोध, कचूर, पोखरमूल, गण्डीर (स्नुही), अरण्डमूल, पत्तूर, सहंजना, अश्मन्तक, सहंजना, बिजौरेकी जड़, मण्डूकपर्णी, पीलुपर्णी (मूर्वा), तिलपर्णी (लाल चन्दन), मेढासिंगी, हिंस्रा (जटामांसी), दन्तशठ (चांगेरी या जम्बीरी नीबू), ऐरावत (नारंगी), भिलावा, आस्फोता, काण्डीर (अपामार्ग या करेला), कौंच, काकमाची, शरमूल, करंज, धनिया, अजमोद, छोटी इलायची, सुमुख, सुरस, कुठेरक, काल, माल, पर्णास, फणिज्झक (ये सातों तुलसीके भेद हैं), करक (बड़ा करेला), कण्डीर (छोटा करेला), क्षवक (राई), भूतृण, सोंठ, पीपल, सरसों, असगन्ध, रास्ना, रुहा (बन्दा), अवरोह (वटादिके अंकुर), खरैटी, कंघी, गिलोय, सोया, दूर्वा, नाकुली, गन्धनाकुली, श्वेत अपराजिता, मालकंगनी, चीता, मुई आमला, खट्टी चांगेरी, तिल, वेर, कुलथी और उड़द तथा और भी इसी प्रकारके उष्ण द्रव्य लेकर उनके क्वाथ और उन्हींके कल्क तथा सुरा, सौवीरक, (तुष रहित जौ की कांजी), तुषोदक (तुष युक्त जौकी कांजी), मैरेय (मध्वासव), मेदक (सुराभेद), दधिमंड (मस्तु), आरनाल (कांजी) और कट्वर (सारयुक्त तक्र); इनके साथ ८ सेर तेल पकावें।

(क्वाथ और सुरा इत्यादि द्रव पदार्थों मेंसे प्रत्येक तेलके बराबर लेना चाहिये और कल्कके लिये सब औषधियां समान भाग मिलित १ सेर लेनी चाहियें।)

शीतज्वरमें इस तेलको मन्दोष्ण करके इसकी मालिश करनेसे ज्वर शान्त हो जाता है।

इन्हीं औषधियोंको बारीक पीसकर मन्दोष्ण करके लेप करने और इन्हींके मन्दोष्ण क्वाथमें अवगाहन करने तथा उसका परिषेक करनेसे भी शीतज्वरमें लाभ होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८८५५) अङ्कोलबीजतैलम्

(वै. म. र. । पटल १६)

अङ्कोलबीजं द्वात्रिंशत्पलं सम्यक् पचेज्जले ।
द्विद्रोणे पादशेषे तु तैलं तत्पतितं क्षिपेत् ॥
प्रस्थोन्मितं वराक्काथे काललोहसमन्वितम् ।
कालारिमेदमम्भूतक्काथप्रस्थेन योजयेत् ॥
इन्द्रवल्लीबकुलयोः कुमारीभृङ्गराजयोः ।
चिञ्चामलकयोश्चापि मालतीनालिकेरयोः ॥
स्वरसं केतकाचैव कल्कं दत्त्वा पचेत्पुनः ।
बिभीतकास्थि सम्भूतं कुडवं, कुडवं तथा ॥
गणादेलादिकाचैव, तदभ्यङ्गे सुयोजितम् ।
केशानां दीर्घकृष्णत्वं करोति च निहन्ति च ॥
पीतत्वं पिञ्जरत्वं च पलितं चेन्द्रलुप्तकम् ।
अश्विभ्यां निर्मितं श्रेष्ठं केशजन्मनि पूजितम् ॥

३२ सेर (६४ सेर) पानीमें २ सेर अंकोल (ढेरा वृक्ष) के बीज कूटकर पकावें। जब १६ सेर पानी शेष रह जाय तो छानकर उसमें २ सेर अंकोलका तेल, २ सेर त्रिफलाका क्वाथ, १ सेर तीक्ष्ण लोह, २ सेर अगर और अरिमेदका क्वाथ, तथा २–२ सेर इन्द्रायनका रस, मौलसिरीकी छाल (या पत्तों)का रस, घृतकुमारीका रस, भंगरेका रस, इमलीके पत्तोंका रस, आमलेका रस, मालती (चमेली)के पत्तोंका रस, नारियलका रस (पानी) और केतकीके पत्तोंका रस एवं निम्न लिखित कल्क मिलाकर पकावें। जब जलांश शुष्क हो जाए तो तेलको छान लें।

कल्क—बहेड़ेकी गुठलीकी मज्जा (मींग) २० तोले एवं एलादि गणका चूर्ण २० तोले।

इसे शिरमें लगानेसे बालोंका पीलापन, पलित और इन्द्रलुप्त नष्ट होकर बाल काले और लम्बे होते हैं।

(८८५६) अजयपालतैलम्

(न. मृ. । त. ६)

कर्षजेपालजं तैलं द्विपलं जातिसम्भवम ।
सम्मेल्य मर्दनं शिश्ने नाडीनां दोषनाशनम् ॥

१० तोले चमेलीके तेलमें १। तोला जमाल-गोटेका तेल मिलाकर इन्द्री पर (सीवन तथा अग्र-भाग छोड़कर) मालिश करनेसे नसोंका दूषित पानी निकल जाता है।

(८८५७) अजामूत्रादितैलम्

(वा. भ. । उ. अ. १८ कर्णशूला)

अजाविमूत्रवंशत्वक्सिद्धं तैलं च पूरणम् ।
सिद्धं वा सार्षपं तैलं हिङ्गुतुम्बरुनागरैः ॥

बांसकी छालके कल्क और बकरी तथा भेड़के मूत्रके साथ सिद्ध तैल कानमें डालनेसे कर्ण-शूलका नाश होता है।

(**कल्क**—१० तोले, मूत्र ४ सेर, सरसोंका तेल १ सेर)

हींग, तुम्बरु और सोंठके कल्क तथा इन्हींके क्वाथ के साथ सिद्ध सरसोंका तेल भी कर्णशूलको नष्ट करता है।

(८८५८) अतिविषादितैलम्

(वा. भ. । उ. अ. १८ कर्णरोगा.)

पक्वं प्रतिविषाहिङ्गुमिशित्वक्स्वर्जिकोषणैः ।
समुक्तैः पूरणात्तैलं रुक्स्रावश्रुतिनादनुत् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतीस, हींग, सौंफ, दालचीनी, सज्जी और काली मच ; इनके कल्क तथा शुक्त *(चुक) के साथ सिद्ध तैल कानमें डालनेसे कर्णस्राव, और कर्णनादका नाश होता है।

(कल्क—२० तोले, शुक्त ८ सेर, तेल २ सेर।)

(८८५९) अपामार्गमूलतैलम्

(रा. मा. । व्रणा. २५)

तिलतैलमपामार्गमूलेनाम्भोन्वितेन यत्।
सिद्धं तत्स्वेदितः शस्त्रघातो न कुरुते व्यथाम्॥

१ सेर तिलके तैलमें ४ सेर पानी और १० तोले अपामार्गकी जड़का कल्क मिलाकर पकावें।

इस तेलसे स्वेदित करनेसे शस्त्राघातमें पीड़ा नहीं होती।

(८८६०) अपामार्गादितैलम्

(धन्व. । शिरोरोगा. ; व. से. ; च. द. ; वृ. मा. । शिरोरोगा.)

अपामार्गफलव्योपनिशाक्षवकरामठैः।
सविडङ्गैः शृतं मूत्रे तलं नस्यं कृमीन् जयेत्॥

कल्क—अपामार्ग (चिरचिटे) के बीज, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, हल्दी, नकछिकनी, हींग और बायबिडंग; सबका चूर्ण २॥-२॥ तोले लेकर एकत्र मिलाकर पानीके साथ पीस लें।

२ सेर तिलके तेलमें यह कल्क और ८ सेर गोमूत्र मिलाकर पकावें।

इसकी नस्य लेनेसे कृमिजन्य शिरोरोग नष्ट होता है।

* शुक्त निर्माण विधि प्रथम भागके परिभाषा प्रकरणमें देखिये।

(८८६१) अरिमेदाद्यं तैलम्

(भै. र. ; धन्व. । मुखरोगा., च. द. ; यो. र. वृ. मा. । मुख. ; शा. ध. । खं. २ अ. ९ ; ग. नि. । तैला. ; यो. त. । त. ६९)

अरिमेदत्वक्पलशतमभिनवमापोथ्य खण्डशः कृत्वा।
तोयाढकैश्चतुर्भिर्निःकाथ्य चतुर्थशेषेण॥
क्राथेन तेन मतिमान् तैलस्यार्द्धाढकं शनैर्विपचेत्
कल्कैरक्षसमांशैर्मञ्जिष्ठालोध्रमधुकानाम्॥
अरिमेदखदिरकटफललाक्षान्यग्रोधमुस्तासूक्ष्मैला-
कर्पूरागुरुपद्मकलवङ्गकक्कोलजातीफलानाम्॥
पत्तङ्गगैरिकवराङ्गनागकुसुमधातकीनाञ्च।
सिद्धं भिषग्विदध्यादिदं मुखोत्थेषु रोगेषु॥
परिशीर्णदन्तविद्रधिशौषिरशीतादवन्तहर्षेषु।
कृमिदन्तदालनचलितमहृष्टमांसावशीर्णेषु।
मुखदौर्गन्ध्येषु कार्यं प्रागुक्तेष्वामयेषु तैलमिदम्

क्वाथ—अरिमेद (दुर्गंधित खदिर) की छाल ६। सेर लेकर कूटकर ३२ सेर पानीमें पकावें और ८ सेर पानी रहने पर छान लें।

कल्क—मजीठ, लोध, मुलैठी, अरिमेद छाल, खैर छाल, कायफल, लाख, बड़की छाल, नागरमोथा, छोटी इलायची, कपूर, अगर, पद्माक, लौंग, कंकोल, जायफल, पतङ्गकी लकड़ी, गेरु, दालचीनी, नागकेसर और धायके फूल; इनका चूर्ण १।-१। तोला लेकर सबको एकत्र मिलाकर पानीके साथ पीस लें।

४ सेर तिलके तेलमें उपरोक्त क्वाथ और कल्क मिलाकर मन्दाग्नि पर पाक करें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह तैल शीर्ण दन्त (दांतोंका किरना), दन्त विद्रधि, शौषिर, शीताद, दन्तहर्ष, कृमिदन्त, चालन, दालन, अधिमांस और मुख दौर्गन्ध्य आदि रोगोंको नष्ट करता है।

टि. योग त. में ४-४ सेर गोदुग्ध और लाखका रस भी लिखा है।

(इसे मुखमें धारण करना चाहिये)

(८८६२) अर्कतैलम्

(न. मृ. । त. ६.)

वस्त्रं वा अर्कदुग्धेन सप्तवारं विभावयेत् ।
निरातपे विशोष्याथ नवनीतेन लेपयेत् ॥
वर्तिकां कारयित्वा तु वह्निना योजयेत्ततः ।
वर्तितः पतितं तैलं कांस्यपात्रे विनिःक्षिपेत् ॥
तत्तैलं लेपयेच्छिश्ने पत्रैरण्डेन वेष्टयेत् ।
नाशयेद्धस्तजं दुःखं तथा वै गुदसम्भवम् ॥

स्वच्छ सफेद वस्त्रको आकके दूधमें भिगोकर छायामें सुखावें। इसी प्रकार सात बार आकके दूधमें भिगोवें और सुखावें। फिर उसे नवनीत (मक्खन) में तर करके उसकी बत्ती बनालें और उसके एक सिरेको चिमटे आदिसे पकड़कर दूसरे सिरेमें आग लगादें तथा उल्टा लटकादें। उससे जो तेल टपके उसे कांसीके पात्रमें एकत्रित करलें। शिश्न पर (सीवन और अग्र भागको छोड़कर) यह तैल लगाकर अरण्डका पत्ता बांध दें।

(इसी प्रकार कई दिन करनेसे) इस प्रयोगसे हस्तदोष और गुद-व्यभिचार जनित विकार नष्ट हो जाते हैं।

(८८६३) अलम्बुषाद्यं तैलम्

(व. से. । स्त्रीरोगा.)

अलम्बुषा कणाकल्कैः सिद्धं तैलं करोति वनितायाः ।
पिचुधारणनस्यदानात्कुचद्वयं श्रीफलाकारम् ॥

गोरखमुण्डी और पीपलके कल्क से सिद्ध तैलमें रुई भिगोकर स्तनों पर रखने तथा इस तेलकी नस्य लेनेसे स्त्रियोंके स्तन दृढ़ और उन्नत हो जाते हैं।

(कल्क २० तोले, तिल तेल १ सेर, पानी ८ सेर।)

(८८६४) अलाबुतैलम्

(वै. म. र. । पटल १३)

कटुकालाबुसंसिद्धं तैलमभ्यञ्जनाद्भवेत् ।
योनिदोषहरं नार्या गर्भमुत्पादयेदपि ॥

कड़वी तूंबीसे सिद्ध तैलकी योनि पर मालिश करनेसे योनि दोष नष्ट होते और स्त्रियोंको गर्भ धारणकी शक्ति प्राप्त होती है।

(कड़वी तूंबीका रस ४ सेर, तैल १ सेर, कड़वी तूंबीका कल्क १० तोला।)

(८८६५) अश्वगन्धातैलम्

(भा. प्र. । म. खं. २ कार्श्या.)

अश्वगन्धस्य कल्केन क्वाथे तस्मिन्पयस्यपि ।
सिद्धं तैलं कृशाङ्गानामभ्यङ्गादङ्गपुष्टिदम् ॥

असगन्धके कल्क, उसीके क्वाथ और दूधके साथ सिद्ध तैलकी मालिश करनेसे कृश शरीर पुष्ट हो जाता है।

(कल्क १० तोले, क्वाथ २ सेर, दूध २ सेर, तेल १ सेर।)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८८६६) अश्वगन्धादितैलम्

(भा. प्र. । म. खं. २ शूकदोषा. ;
च. द. । वृष्या. ६६)

अश्वगन्धा वरी कुष्ठं मांसी सिंहीफलान्वितम् ।
चतुर्गुणेन दुग्धेन तिलतैलं विपाचयेत् ॥
तत्तैलं मेढ्रवक्षोजकर्णपालिविवर्द्धनम् ॥

कल्क—असगन्ध, शतावर, कूठ, जटामांसी और कटेलीके फल ४–४ तोले लेकर पानीके साथ पीस लें।

२ सेर तिलके तेलमें यह कल्क और ८ सेर दूध मिलाकर पकावें।

इसकी मालिशसे शिश्न, स्तन और कर्णपाली की वृद्धि होती है।

(८८६७) अश्वगन्धाद्यं तैलम्

(ग. नि. । तैला.)

मूलानि चाश्वगन्धायाः शतं स्यात्खण्डशः कृतम्
द्विद्रोणेऽपां पचेत्क्राथमष्टभागावशेषितम् ॥
तैलाढकं समावाप्य क्षीरं दद्याच्चतुर्गुणम् ।
एतत्समालोड्य पचेत्कल्कांश्चेमान् समावपेत् ॥
तगरं शतपुष्पां च मुस्तं व्याघ्रनखं त्वचम् ।
मधुकं शृङ्गवेरं च पृश्निपर्णी बलां स्थिराम् ॥
रास्नां पुष्करमूलं च भूतीकं सपुनर्नवम् ।
मञ्जिष्ठां नलदं पत्रं द्रवन्तीं सुरसां वचाम् ॥
श्वदंष्ट्रां च मृणालं च वयस्थां बहुपुत्रिकाम् ।
श्लक्ष्णपिष्टार्धपलिकान् दत्त्वा गर्भं विपाचयेत् ॥
तत्सिद्धमविदग्धं च ततः समवतारयेत् ।
बस्तौ पाने तथाऽभ्यङ्गे नस्यकर्मणि भोजने ॥
यत्र यत्र विधातव्यं तन्मे निगदतः शृणु ।
खञ्जमूकजडत्वे च तिमिरे च तथाऽर्बुदे ॥
पक्षाघाते तथाऽऽयामे च्युतभग्नास्थिसन्धिषु ।
विधेयं पृष्ठभग्नेषु हनुमन्याग्रहे तथा ॥
स्तम्भकम्पेषु शोफेषु रुजासु विविधासु च ।
ज्वरे च विषमे गुल्मे तथा मारुतशोणिते ॥
प्लीह्नि प्लीहोदरे चैव विद्रधिगृध्रसीषु च ।
क्षीणेन्द्रिया नष्टशुक्रा ये चान्ये षण्ढका नराः ॥
भूतोपहतचित्ताश्च शस्यते तेषु नित्यशः ।
व्यापन्नयोनौ वन्ध्यासु पाययेत तदा भिषक् ॥
पुत्रदं परमं प्रोक्तं धन्वन्तरिवचो यथा ।

क्वाथ—६। सेर असगन्धको कूटकर ६४ सेर पानीमें पकावें और ८ सेर रहने पर छान लें।

कल्क—तगर, सोया, नागरमोथा, नखी, दालचीनी, मुलैठी, सोंठ, पृष्ठपर्णी, खरैटीकी जड़, शालपर्णी, रास्ना, पोखरमूल, अजवायन, पुनर्नवा (बिसखपरे) की जड़, मजीठ, खस, तेजपात, द्रवन्ती, तुलसी, बच, गोखरु, कमलनाल, हर्र और शतावर; सबका २॥–२॥ तोले चूर्ण लेकर पानीके साथ पीस लें।

८ सेर तैलमें उपरोक्त क्वाथ, कल्क और ३२ सेर दूध मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब पानी जल जाए तो तेलको छान लें।

इसे बस्ति और नस्य कर्मद्वारा प्रयुक्त करना, भोजनके साथ देना और पिलाना चाहिये। तथा इसकी मालिश भी करनी चाहिये।

यह तैल खञ्जता, मूकता, जड़ता, तिमिर, अर्बुद, पक्षाघात, आयाम, अस्थिच्युत होना, अस्थि भंग, संधि भंग, पृष्ठभग्न, हनुग्रह, मन्याग्रह, शरीरस्तम्भ, शरीर कम्प, शोथ, अनेक प्रकारकी पीड़ा, विषम ज्वर,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुल्म, वातरक्त, प्लीहोदर, विद्रधि, गृध्रसि, इन्द्रियोंकी क्षीणता, शुक्रक्षय, नपुंसकता, भूतोन्माद, योनिरोग और बन्ध्यत्व आदि रोगोंको नष्ट करता है। इसके सेवनसे पुत्र प्राप्ति होती है।

(८८६८) अश्वत्थपत्रतैलम्

(वृ. मा.; व. से. । कर्णरोगा. वृ. यो. त. । त. १२९)

अश्वत्थपत्रखल्लं वा विधाय बहुपत्रकम् ।
तैलाक्तमङ्गारपूर्णं निदध्याच्छ्रवणोपरि ॥
यत्तैलं च्यवते तस्मात्खल्लादङ्गारतापितात् ।
तत्प्राप्तं श्रवणस्रोतः सद्यो गृह्णाति वेदनाम् ॥

पीपलके हरे पत्तोंको तेल लगाकर ऊपर नीचे रखकर उसका खरलसा बनावें और उसमें अंगारे भरकर उसे कानके छिद्रसे जरा ऊपर इस प्रकार रक्खें कि उससे जो तेल टपके वह कानके भीतर गिरे। इस तेलके कानमें जानेसे कर्ण पीड़ा शीघ्रही बन्द हो जाती है।

(८८६९) असनाद्यं तैलम्

(ग. नि. । तैला. २)

असनसारकषायविपाचितं
त्रिफलया मधुकेन च संयुतम् ।
भवति नावनतैलमनुत्तमं
पलितनेत्रविकाररुजापहम् ॥

असना वृक्षके सारके क्वाथ और त्रिफला तथा मुलैठीके कल्कके साथ सिद्ध तैलकी नस्य लेनेसे पलित और नेत्रविकार तथा नेत्रपीड़ाका नाश होता है।

(असना वृक्षका सार २ सेर, पानी १६ सेर, पकाकर ४ सेर रक्खें। तिल तेल १ सेर, कल्क १० तोले।)

इत्यकारादितैल-प्रकरणम्

अथाकारादिलेपप्रकरणम्

(८८७०) अगस्त्यादिलेपः

(वृ. मा. । वातरक्ता.)

अगस्तिपुष्पचूर्णेन साधितं माहिषीपयः ।
तदुत्थनवनीताक्तं वातासृक्प्रबलं जयेत् ॥

अगथियाके फूलोंके चूर्णके साथ भैंसका दूध सिद्ध करें और उसका दही जमाकर घी निकाल लें। यह घी लगानेसे प्रबल वातरक्त नष्ट हो जाता है।

(अगथियाके फूलोंका चूर्ण २० तोले, दूध २ सेर, पानी ८ सेर। मिलाकर पानी जलने तक पकावें।)

(८८७१) अङ्कोलबीजादिलेपः

(वै. म. र. । पट. १७)

अङ्कोलजातानि बीजानि पिष्ट्वा यः
काकमाचीरसेनैव लिम्पेत् ।
कण्डूतिमिच्छन् विजेतुं मनुष्यस्तां
चापि जित्वा सुवर्णं लभेत ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंकोलके बीजोंको मकोयके रसमें पीसकर लेप करनेसे खाज नष्ट होकर शरीरका वर्ण सुन्दर हो जाता है।

(८८७२) अङ्कोल्लकादियोगः

(ग. नि. । कुष्ठा. ३६)

अङ्कोल्लः करवीरमूलमुशलीधत्तूरपत्रं जटा
शिग्रुर्लाङ्गलिका च कुष्ठतुलसीमूलं च बीजानि च ।
भृङ्गैरण्डगजार्कपत्रसहितं युक्तं तथा सर्षपै-
र्देहश्वित्रहरं सकाञ्जिकमिदं तक्रेण सञ्चूर्णितम् ॥

अंकोलकी जड़, कनेरकी जड़, मूसली, धतूरेके पत्ते, जटामांसी, सहंजनेकी छाल, लांगली (कलियारी) की जड़; कूठ, तुलसीकी जड़, तुलसीके बीज, भंगरा, अरण्डके पत्ते, गजपीपल, आकके पत्ते और सरसों समान भाग लेकर चूर्ण बनावें। इसे कांजी या तक्रमें पीसकर लेप करनेसे श्वित्र नष्ट हो जाता है।

(८८७३) अजापुरीषादियोगः

(वै. म. र. । पटल १७)

अजापुरीषवल्मीकमृदश्वत्थजलैः कृतः ।
प्रलेपः पातयत्याशु चर्मकीलं दशाहतः ॥

बकरीकी मींगनी और बल्मीक (बांबी)की मिट्टी बराबर बराबर लेकर घोड़ेके मूत्रमें पीसकर लेप करनेसे दश दिनमें चर्मकील नष्ट हो जाती है।

(८८७४) अतस्यादिलेपः

(यो. त. । त. ७७)

अतसीकारवीमुस्तासर्षपैः सपयोधरैः ।
दार्वीभूनिम्बमूर्वार्कहरिद्राभिश्च लेपकः ॥
ज्वरं निहन्ति बालस्य महान्तमपि वासरैः ॥

अलसी, कलौंजी, मोथा, सरसों, नागरमोथा, दारुहल्दी, चिरायता, मूर्वा, आककी जड़ और हल्दी, इनके समान भाग चूर्णको एकत्र मिलाकर पानीमें पीसकर शरीर पर लेप करनेसे बालकोंका ज्वर नष्ट होता है।

(८८७५) अपामार्गदलप्रलेपः

(वै. म. र. । पट. १६)

अपामार्गदलालेपः सद्यो बध्नाति शोणितम् ।
अतिप्रवृत्तमप्याशु सेतुबन्ध इवोदकम् ॥

अपामार्ग (चिरचिटे)के पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे (शस्त्राघातादिका) बहता हुवा रक्त तुरन्त बन्द हो जाता है।

(८८७६) अपामार्गभस्मयोगः

(वै. म. र. । पटल ११)

प्रलेपात्सिध्मयात्यस्तमपामार्गस्य भस्मना ।
केवलेन यथा पापं चन्द्रशेखरभस्मना ॥

अपामार्ग (चिरचिटे) की भस्मका लेप करनेसे सिध्म नष्ट हो जाता है।

(८८७७) अपामार्गादिलेपः

(रसे. चि. म. । अ. ९)

अपामार्गस्य पञ्चाङ्गं कदलीद्रवसंयुतम् ।
पुटदग्धं च गोमूत्रैर्लेपनं दद्रुनाशनम् ॥

अपामार्ग (चिरचिटे)के पंचांगको केलेके रसके साथ हाण्डीमें बन्द करके भस्म करें। इस भस्मको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे दाद नष्ट हो जाता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८८७८) अभयादिलेपः

(यो. र. । व्रणा.)

अभयात्रिवृतादन्तीलाङ्गलीमधुसैन्धवैः ।
सुषवीपत्रधत्तूरकर्णमोटकुठेरिकाः ॥
पृथगेते प्रलेपेन गंम्भीरव्रणशोधनाः ॥

हर्र, निसोत, दन्तीमूल, लांगली (कलियारी) की जड़, सेंधा नमक; शहद, करेलेके पत्ते, धतूरेके पत्ते, बबूलके पत्ते और तुलसी; इनमेंसे प्रत्येकका लेप गहरे घावोंको शुद्ध कर देता है।

(८८७९) अमृतादिलेपः

(वै. म. र. । पटल ११)

शीतपित्तेऽमृताराजी कल्कं चाभ्यङ्गलेपनम् ॥

गिलोय और बावची (या राई) को पीसकर लेप करने और मलनेसे शीतपित्त नष्ट हो जाता है।

(८८८०) अरिष्टकादिलेपः

(न. मृ. । त. ६)

त्वचामरिष्टकभवामाकारकरभं तथा ।
तीक्ष्णे मद्ये मर्दयित्वा शिश्ने नित्यं प्रलेपयेत् ॥
ताम्बूलं वेष्टयेत्पश्चाद्विंशैकदिवसानयम् ।
योगोऽयोनिरतोद्भूतषण्ढत्वस्य विलोपकः ॥

रीठेका छिलका और अकरकरा बराबर बराबर लेकर दोनोंको तीक्ष्ण मद्यमें पीसकर शिश्न पर लेप करें और ऊपरसे पान बांध दें।

इसी प्रकार २१ दिन लेप करनेसे अयोनि-मैथुन (गुद व्यभिचारादि) जनित नपुंसकता नष्ट हो जाती है।

(८८८१) अर्कक्षारलेपः

(वै. र. । अर्शो.)

पञ्चाङ्गमार्कमनले विधिवद्विदग्धं
क्षारं प्रकल्पित बुधैः सममस्य योज्यम् ।
सिन्दूरमुत्तममिदं द्वि शिखण्डयुक्तं
लेप्यं निघर्ष्य गुदजानिमुखर्परेण ॥
तेषामुपर्युपरि भक्तदधि प्रलिम्पे—
दुद्घाटयेद्गतवति त्रितये दिनानाम् ।
एवं पतन्ति गुदजान्यचिरेण नूनं
दृष्टं मया बहुश एतदनन्यथास्ति ॥

आकके पञ्चांगको जलाकर इसका क्षार निकालें यह क्षार, सिन्दूर और नीलाथोथा समान भाग लेकर तीनोंको (पानीके साथ) बारीक पीसलें और फिर अर्शके मस्सोंको मिट्टीके ठीकरेसे रगड़ कर उन पर यह लेप लगादें तथा ऊपरसे दही भात बांध दें। इसे तीन दिन पश्चात् खोलें।

इस लेपसे अर्शके मस्से अवश्य गिर जाते हैं। यह प्रयोग अनेक बारका अनुभूत है, कभी निष्फल नहीं जाता।

(८८८२) अर्कक्षारादियोगः

(वै. म. र. । पटल ११)

भास्करकाण्डक्षारं स्वरसेनेक्ष्वाकुजेन संलिप्तम् ।
हन्यात्कपालकुष्ठं क्रौञ्चं गिरिं तारकारिरिव ॥

आकके क्षारको कड़वी तूंबीके स्वरसमें पीसकर लेप करनेसे कपाल कुष्ठ नष्ट हो जाता है।

(८८८३) अर्कक्षीरादिलेपः (१)

(रा. मा. । अधिका. ५)

अर्कक्षीरजपापुष्पतैललाक्षारसैः समैः ।
कण्ठमाला शमं याति प्रलिप्ता सप्तभिर्दिनैः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आकका दूध, जपापुष्प, तिलका तेल और लाखका रस समान भाग लेकर बारीक पीसकर लेप करनेसे सात दिनमें कण्ठमाला नष्ट हो जाती है।

(८८८४) अर्कक्षीरादिलेपः (२)

(व. से. । क्षुद्ररोगा. ; शा. सं. । खं. ३. अ. ११)

अर्कक्षीरहरिद्राभ्यां मर्दयित्वा प्रलेपनात् ।
मुखकार्ष्ण्यं शमं याति चिरकालोद्भवं ध्रुवम् ॥

हल्दीके चूर्णको आकके दूधमें खरल करके लेप करनेसे मुखकी पुरानी श्यामता भी नष्ट हो जाती है।

(८८८५) अर्कक्षीरादिलेपः (३)

(न. मृ. । त. ६)

गोघृतमर्कदुग्धं च माक्षिकं समभागतः ।
कांस्यपात्रे मर्दयित्वा शिश्ने नित्यं विमर्दयेत् ॥
मासैकमर्दनेनैव शैथिल्यं च विनाशयेत् ।
हस्तमैथुनजं दुःखं प्रणश्यति न संशयः ॥

गायका घी, आकका दूध और शहद समान भाग लेकर तीनोंको कांसीके पात्रमें डालकर मर्दन करें।

नित्य प्रति शिश्न पर इसकी मालिश करनेसे १ मासमें शिश्नकी शिथिलता और हस्तव्यभिचार जनित रोगोंका नाश हो जाता है।

(८८८६) अर्कादिलेपः

(व. से. । श्लीपदा.)

निष्पिष्टमारणालेन रूपिकामूलवल्कलम् ।
प्रलेपाच्छ्लीपदं हन्ति बद्धमूलमपि स्थिरम् ॥

श्वेत आककी जड़की छालको कांजी में पीसकर लेप करनेसे बद्धमूल श्लीपद भी नष्ट हो जाता है।

(८८८७) अर्जुनादिलेपः

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ५७)

अर्जुनं च कदम्बं च कुष्ठं गैरिकमेव च ।
लेपनं त्वचो दोषाणां वारणं बालकस्य च ॥

अर्जुनकी छाल, कदम्बकी छाल, कूठ और गेरु समान भाग लेकर सबको एकत्र पीसकर लेप करनेसे बालकोंके त्वग्विकार नष्ट होते हैं।

(८८८८) अर्शोहरलेपः (१)

(र. चि. म. । स्त. ९)

गवास्थि सावरं रोध्रं रसाञ्जनं तथैव च ।
लाङ्गलीमूलमध्यानि समभागानि कारयेत् ॥
एतेन नाभिलेपेन सर्वतश्चतुरङ्गुलात् ।
पतेदर्शांसि सर्वत्र सप्तवारान्न संशयः ॥
सिद्धोऽर्शसां प्रयोगोऽयं न च भूयो भवन्ति च ॥

गायकी हड्डी, लोध, रसौत और कलियारीकी जड़के भीतरका काष्ठ समान भाग लेकर (पानीके साथ) बारीक पीस लें और नाभिके चारों ओर चार अंगुल दूर तक इसका लेप करें। इस प्रयोगसे सात दिन में अर्शके मस्से नष्ट हो जाते हैं और फिर पैदा नहीं होते। अर्शके लिये यह एक सिद्ध प्रयोग है।

(८८८९) अर्शोहरलेपः (२)

(ग. नि. । अर्शो. ४ ; र. चि. म. । स्त. ९)

उलूकास्थिगृध्रलिण्डं मानुषास्थि तथैव च ।
एतेन नाभिलेपेन सर्वतश्चतुरङ्गुलात् ॥
गुदजानि विनश्यन्ति न तु भूयो भवन्ति हि ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उलूक (उल्लू) की हड्डी, गिद्धकी विष्ठा और मनुष्यकी हड्डी समान भाग लेकर (पानीके साथ) बारीक घिसकर नाभिके चारों ओर चार अंगुल तक लेप करनेसे अर्शके मस्से नष्ट हो जाते हैं और फिर कभी नहीं होते।

(८८९०) अर्शोहरलेपः (३)

(ग. नि. । अर्शो. ४ ; र. चि. म. । स्त. ९)

शिरीषस्य तु मूलानि लाङ्गलक्यास्तथैव च ।
एतेन नाभिलेपेन सर्वतश्चतुरङ्गुलात् ॥
सिद्धोऽर्शसां प्रयोगोऽयं न तु भूयो भवन्ति हि॥

सिरसकी जड़ और कलियारीकी जड़ समान भाग लेकर दोनोंका (पानीके साथ) बारीक पीसकर नाभिके चारों ओर चार अंगुल तक लेप करदें इससे अर्श समूल नष्ट हो जाता है और फिर नहीं होता। यह एक सिद्ध प्रयोग है।

(८८९१) अर्शोहरलेपः (४)

(र. चि. म. । स्त. ९)

शिरीषबीजं द्वौ क्षारौ लाङ्गलीसैन्धवं तथा ।
स्नुहीक्षीरेण पिष्टानि गवां मूत्रेण पेषयेत् ॥
नाभिलेपस्तु कर्तव्यस्त्रिवारं यान्ति सर्वजाः ॥

सिरसके बीज, जवाखार, सज्जीखार, कलियारीकी जड़ और सेंधा नमक; इनके समान भाग मिलित बारीक चूर्णको स्नुही (सेहुंड-थूहर) के दूधमें खरल करके सुखा लें।

इसे गोमूत्रमें पीसकर नाभि पर लेप करनेसे तीन बारमें ही सर्व दोषज मस्से नष्ट हो जाते हैं।

(८८९२) अर्शोहरलेपः (५)

(र. र. स. । उ. अ. १५)

देवदाल्याश्च बीजानि सैन्धवेन सुचूर्णितम् ।
आरनालेन लेपोऽयं मूलरोगनिकृन्तनः ॥

देवदाली (बिंडाल) के बीज और सेंधा नमक बराबर बराबर लेकर दोनोंको कांजीके साथ पीसकर अर्शके मस्सों पर लेप करनेसे वे नष्ट हो जाते हैं।

(८८९३) अर्शोहरलेपः (६)

(र. चि. म. । स्त. ९)

देवदाल्यास्तु बीजानां पीतायास्तैलमाहरेत् ।
पातालयन्त्रतस्तेन लिप्यन्ते गुदजानि च ॥
अर्शांसि वक्राकाराणि वक्रपीडाकराणि च ।
एकपक्षप्रयोगेण तानि सर्वाणि यान्ति च ॥
न भूयः सम्भवन्त्येव तस्य वंशे कदाचन ॥

देवदाली (बिंडाल) के बीजोंका पाताल यन्त्रसे तैल निकालें। अर्शके मस्सों पर इसे लगानेसे १५ दिनमें वे समूल नष्ट हो जाते हैं और फिर कभी उस रोगीको या उसकी सन्तानको (पितृ दोषसे) नहीं होते।

(८८९४) अवल्गुजादिलेपः

(व. से. । कुष्ठा.)

कुडवमवल्गुजबीजं हरितालचतुर्थभागसम्मिश्रम् ।
मनःशिलातोलकार्द्धं गुञ्जाफलमग्निमूलञ्च ॥
गोमूत्रेण च पिष्टं सवर्णकरणं परं श्वित्रे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाबचीके बीज २० तोले, हरताल ५ तोले, मनसिल ७॥ माशे, चौंटली (गुंजा) ७॥ माशे और कलियारीकी जड़ ७॥ माशे लेकर सबको बारीक पीसकर गोमूत्रमें खरल करके लेप करनेसे श्वित्र (सफेद कोढ़) नष्ट हो जाता है।

(८८९५) **अश्वगन्धादिलेपः** (१)

(भा. प्र. । म. खं. २)

अश्वगन्धा रुहा लोध्रं कट्फलं मधुयष्टिका ।
समङ्गा धातकीपुष्पं परमं व्रणरोपणम् ॥

असगंध, दूर्वा (दूब घास), लोध, कायफल, मुलैठी, मजीठ और धायके फूल; इनका चूर्ण समान भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर (शहदमें अथवा घीमें मिलाकर) लेप करनेसे व्रण भर जाता है। यह उत्तम प्रयोग है।

(८८९६) **अश्वगन्धादिलेपः** (२)

(वै. म. र. । पटल ११)

अश्वगन्धारसः स्वल्पपारदेन विमिश्रितः ।
लिप्तो मसूरिकार्तानां भवेद्रक्षाकरो नृणाम् ॥

असगन्धके रसमें जरासा पारा मिलाकर खरल करके, मसूरिकाग्रस्त रोगीके शरीर पर लेप करनेसे वह सुरक्षित रहता है।

(८८९७) **अश्वत्थादिभस्मलेपः**

(वृ. मा. । गलगण्डा.)

अश्वत्थकाण्डं निचुलं गवां दन्तं च दाहयेत् ।
सप्ताहमम्लसंयुक्तं भस्म हन्त्यपचीं क्षणात् ॥

पीपल वृक्षका काष्ठ, हिज्जल और गायका दांत समान भाग लेकर हाण्डी में बन्द करके भस्म करें इसे कांजीमें मिलाकर सात दिन तक रक्खा रहने दें। इसका लेप करनेसे अपची शीघ्रही नष्ट हो जाती है।

(८८९८) **अश्वत्थादिलेपः** (१)

(व. से. । बालरोगा.)

अश्वत्थत्वग्दलक्षौद्रैर्मुखपाके प्रलेपनम् ।
दार्वीयष्ट्याभयाजाजीपत्रक्षौद्रैस्तथापरम् ॥

पीपल वृक्षकी छाल और उसके पत्तोंको पीसकर शहदमें मिलाकर लेप करनेसे मुखपाक नष्ट होता है।

दारुहल्दी, मुलैठी, हर्र, जीरा और तेजपात; इनके समान भाग मिलित चूर्णको शहदमें मिलाकर लेप करनेसे भी मुखपाक नष्ट होता है।

(८८९९) **अश्वत्थादिलेपः** (२)

(वृ. मा. । व्रणा.)

अन्तर्दग्धकुठारको दहनजं लेपाद्विहन्तिव्रण-
मश्वत्थस्य विशुद्धवल्कलकृतं चूर्णं तथा गुण्ठ-
नात् ॥

कुठेरक (तुलसी भेद) की अन्तर्दग्ध राख और चीतामूलका चूर्ण समान भाग लेकर एकत्र मिलाकर घाव पर लगानेसे या पीपल वृक्षकी छालका बारीक चूर्ण लगानेसे घाव भर जाता है।

(८९००) **अष्टमङ्गलउद्वर्त्तनम्**

(यो. त. । त. ७७)

शटीकिरातसिद्धार्थमूर्वामुस्तोपकुञ्चिकाः ।
श्वेतः शिरीष इत्येषां छागीक्षीरेण लेपनम् ॥
ज्वरदाहवमीरेकरक्षस्तृष्णानाशनं शिशोः ॥

कचूर, चिरायता, सफेद सरसों, मूर्वा, नागरमोथा, कलौंजी और सफेद सिरसको छाल समान भाग लेकर चूर्ण करें। इसे बकरीके दूधमें पीसकर शरीर पर लेप करनेसे बच्चों के ज्वर, दाह, वमन दस्त और तृषाका नाश होता है।

इत्यकारादि-लेपप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथाकारादिधूपप्रकरणम्

(८९०१) अङ्कोलपत्रधूपः

(रा. मा. । विषा. २८)

अङ्कोलवृक्षदलधूपविधानयोगा-
न्नाशं प्रयाति विषमाशु नरस्य मात्स्यम् ॥

अंकोल के पत्तोंकी धूप देनेसे मछलीका विष नष्ट हो जाता है।

(८९०२) अपराजिताधूपः

(यो. त. । त. १०)

मयूरपिच्छं निम्बस्य पत्राणि बृहतीफलम् ।
मरिचं हिङ्गु मांसी च बीजं कार्पाससम्भवम् ॥
छागरोमाणि निर्मोकं विष्ठा बैडालकी तथा ।
गजदन्तस्य चूर्णं हि किञ्चित् घृतविमिश्रितम् ॥
गृहेषु धूपनं दत्तं सर्वान्बालग्रहाञ्जयेत् ।
पिशाचान्राक्षसान्हत्वा सर्वज्वरहरं भवेत् ॥

मोरका पंख, नीमके पत्ते, कटेलीके फल, काली मिरच, हींग, जटामांसी, कपासके बीज (बिनौले), बकरीके बाल, सांपकी कांचली, बिल्लीकी विष्ठा और हाथीदांतका चूरा समान भाग लेकर चूर्ण बनावें और उसमें थोड़ा घी मिला लें।

इसकी धूप देनेसे समस्त बाल ग्रह, पिशाच, राक्षस, और बच्चोंके ज्वरका नाश होता है।

इत्यकारादिधूपप्रकरणम्

अथाकाराद्यञ्जन-प्रकरणम्

(८९०३) अञ्जनभैरवरसः

(र. चं. । ज्वरा)

सूततीक्ष्णकणागन्धमेकांशं जयपालकम् ।
सर्वैस्त्रिगुणितं जम्बुवारिपिष्टं दिनाष्टकम् ॥
नेत्राञ्जनेन हन्त्याशु सर्वोपद्रवसुल्वणम् ॥

पारद, काली मिर्च, पीपल और गंधक १-१ भाग तथा शुद्ध (तैल रहित) जमालगोटा १२ भाग लेकर सबको एकत्र खरल करके आठ दिन जामनके रसमें खरल करके घोट कर सुखा लें।

इसका आंखमें अंजन लगानेसे समस्त उपद्रवयुक्त सन्निपातका नाश होता है।

(८९०४) अञ्जनरसः (१)

(र. चं. । ज्वरा. ; रसे. सा. सं. । ज्वरा.)

वाह्लीकं रसकं तुल्यं कर्पूरं मृतशुल्वकम् ।
कासमर्दरसैर्मर्द्यं दिनार्धं वटकीकृतम् ॥
अञ्जनं ज्वरदाहघ्नं सर्वदोषसमुद्भवे ॥

हींग, खपरिया, कपूर और ताम्र भस्म समान भाग लेकर सबको एकत्र खरल करके आधे दिन कसौंदी के रसमें घोटकर गोलियां बनालें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसे (पानीमें घिसकर) आंखमें लगानेसे सर्व दोषज ज्वर, और दाहादि उपद्रव नष्ट होते हैं।

(८९०५) अपराजितावर्तिः

(ग. नि. । नेत्ररोगा. ३)

अभयानां पलं दद्यात्तुत्थकाच्च शुभात्पलम् ।
तार्क्ष्यशैलार्धकर्षश्च तत्समं मरिचं सितम् ॥
अभयावर्तिरित्येषा जलपिष्टाऽपराजिता ।
कण्डूतिमिरकाचार्मपिल्लाभिष्यन्दनाशिनी ॥

हर्रका चूर्ण ५ तोले, शुद्ध नीलाथोथा ५ तोले, रसौत ७॥ माशे. और सफेद मिर्चका चूर्ण ७॥ माशे लेकर सबको (पानीके साथ) एकत्र खरल करके वर्तियां बनावें। इसे पानीमें घिसकर आंखमें लगानेसे नेत्रकण्डू, तिमिर, काच, अर्म, पिल्ल तथा नेत्राभिष्यन्दका नाश होता है।

(८९०६) अपामार्गमूलाद्यञ्जनम्

(रा. मा. । नेत्र रोगाः ३)

प्रत्यक्पुष्पीमूलं ताम्रमये भाजने ससिन्धूत्थम् ।
मधुसहितं निर्घृष्टं नयनप्रकोपं हरत्याशु ॥

अपामार्ग (चिरचिटे) की जड़को ताम्रपात्रमें सैंधा नमकके चूर्ण और शहदके साथ घिसकर आंखमें लगानेसे नेत्राभिष्यन्दका शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(८९०७) अम्लिकाञ्जनम्

(वृ. यो. त. । त. १३१)

वातारिपत्रे पुटपाचितानां
द्रवं दलानां वरमम्लिकायाः ।
सम्मर्दयेत्सिन्धुफलेन कांस्ये
तेनाञ्जनेनाञ्जितलोचनस्य ॥
सद्योऽक्षिनिस्यन्दमकाण्डकण्डू-
स्तथाऽधिमन्थानपि हन्ति सत्यम् ॥

इमलीके ताज़े पत्तोंको (धोकर) अरण्डके पत्तोंमें लपेटकर गोलासा बनावें और उस पर मिट्टीका लेप करके कण्डोंकी मन्दाग्नि में पाक करें। जब ऊपरकी मिट्टीका रंग लाल हो जाय तो गोलेमेंसे इमलीके पत्तोंको निकालकर पीसकर रस निकाल लें। कांसीके पात्रमें यह रस डालकर उसमें समन्दर फल घिसकर आंखमें लगानेसे आंखसे पानी बहना, नेत्रकण्डू और अधिमन्थका नाश होता है।

(८९०८) अर्धनारीनटेश्वरो रसः

(र. स. क. । उल्ला. ४ ; र. का. धे. । ज्वरा.)

निम्बबीजं शिलाऽजाजी[1] धूमं कृष्णा समांशकम् ।
कारवेल्ल्या रसैर्भाव्यमेकविंशति वारकान् ॥
यत्पार्श्वतोऽञ्जयेन्नेत्रे ज्वरं तत्पार्श्वजं जयेत् ।
अर्धनारीनटेशाह्वो रसः कौतुककारकः ॥

नीमके बीज (निबौलीकी गिरी), शुद्ध मनसिल, जीरा (पाठान्तरके अनुसार जावित्री), घरका धुवां, और पीपल समान भाग लेकर सबके चूर्णको एकत्र मिलाकर करेलेके रसकी २१ भावना दें।

इसका जिस ओर की आंखमें अंजन किया जायगा उसी ओरका ज्वर जाता रहेगा। यह एक अद्भुत प्रयोग है।

---

१ जातीति पाठान्तरम्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८९०९) अर्धनारीश्वररसः (१)

(र. चं. । ज्वरा.)

व्योषं च त्रिफलां सूतं लोहं भृङ्गं च ताम्रकम् ।
सपुत्रस्त्रीपयश्चैव कारयेद्गुटिकां दृढाम् ॥
दुग्धेन चाञ्जनं कृत्वा एकाङ्गज्वरनाशनम् ॥

सोंठ, मिर्च, पीपल, हर्र, बहेड़ा, आमला, शुद्ध पारद, लोह भस्म, भंगरा और ताम्र-भस्म समान भाग लेकर सबको एकत्र खरल करें और फिर पुत्रवती स्त्रीके दूधमें घोटकर गोलियां बनालें।

(स्त्रीके) दूधमें घिसकर जिस आंखमें इसका अंजन किया जायगा उसी ओरका ज्वर जाता रहेगा।

(८९१०) अर्धनारीश्वररसः (२)

(र. का. धे. । ज्वरा.)

रसस्य भाग एकः स्याच्चत्वारो जयपालजाः ।
सप्त वाकुचिबीजोत्थाः पिप्पल्या एकविंशतिः ॥
सर्वतुल्यं निम्बबीजचूर्णं सर्वं समीकृतम् ।
दोलायन्त्रे निम्बरसे सप्ताहं पाचयेद्भृशम् ॥
अन्तर्धूमेन नाम्ना स्यादर्धनारीश्वरो रसः ।
अञ्जनात्सन्निपातग्रस्ततत्पार्श्वगतो भवेत् ॥

शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध जमालगोटा ४ भाग, बाबचीके बीज ७ भाग, पीपलका चूर्ण २१ भाग और नीमके बीजोंका चूर्ण सबके बराबर (३३ भाग) लेकर सबको एकत्र खरल करके (गोला बनाकर चार तै कपड़े में लपेट कर) दोलायन्त्र विधिसे १ सप्ताह तक नीमके रसमें पकावें।

जिस आंखमें इसका अंजन किया जायगा उसी ओरका सन्निपात ज्वर जाता रहेगा।

(८९११) अर्धनारीश्वररसः (३)

(र. का. धे. । ज्वरा.)

मज्जा निम्बफलानां च राजवृक्षफलस्य च ।
कुनटी च कणा चेति शाणमात्रं पृथक्पृथक् ॥
अतिश्लक्ष्णं वाससा च गुटिका च कृता शुभा ।
कार्या निम्बरसोपेता साक्षान्माषप्रमाणतः ॥
निम्बूकरसयोगेन चक्षुरेकमथाञ्जयेत् ।
सदोषज्वरनाशः स्यादिति धन्वन्तरीरितम् ॥
अर्धनारीश्वरो नाम रसः परमदुर्लभः ।
भैरवेण स्वयं प्रोक्तः पार्वत्याः प्रेमयोगतः ॥

नीमके बीजोंकी गिरी, अमलतासका गूदा, शुद्ध मनसिल और पीपलका चूर्ण समान भाग लेकर एकत्र खरल करके अत्यन्त सूक्ष्म चूर्ण बनावें और उसे नीमके रसमें खरल करके गोलियां बना लें।

इसे नीबूके रसमें घिसकर जिस आंखमें अंजन लगाया जायगा उसी ओरका सदोष ज्वर नष्ट हो जायगा। इस परम दुर्लभ रसका आविष्कार स्वयं भैरव महादेवने किया था।

(८९१२) अश्वत्थपत्रादिवटी

(वै. म. र. । पटल १६)

अश्वत्थपत्रकुवलयदलचन्द्रैः कृता गुटिका ।
तिमिरापहा प्रसिद्धा भास्करकिरणावलीव दिवसमुखे ॥

पीपल वृक्षके पत्ते और नीलोत्पलके फूलकी पंखड़ियां तथा कपूर समान भाग लेकर सबको (पानीसे) बारीक पीसकर गोलियां बना लें।

इसे आंखमें आंजनेसे तिमिरका नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८९१३) अश्वलालाद्यञ्जनम्

(हा सं. । स्था. ३ अ. १८)

घोटकलालामरिचं लवणयुतं
नेत्रयोरञ्जनं शस्तम् ।
विनिहन्ति दिवसतन्द्रां निद्रां वा मानुषस्याशु ॥

काली मिरच और सेंधा नमकका चूर्ण बराबर बराबर लेकर दोनोंको एकत्र मिला कर घोड़ेकी लारमें पीसकर अंजन करनेसे दिनको तन्द्रा और निद्रा आना बन्द हो जाता है ।

(८९१४) अक्षयोगः

(धन्व. । नेत्ररोगा.)

विभीतकास्थिमज्जा तु शङ्खनाभिर्मनःशिला ।
निम्बपत्रमरीचानि अजामूत्रेण पेषयेत् ॥
पुष्पं रात्र्यन्धतां हन्ति तिमिरं पटलं तथा ॥

बहेड़ेकी गुठलीकी गिरी (मज्जा), शंखनाभि, मनसिल, नीमके पत्ते और काली मिर्च इनके समान भाग मिलित चूर्णको बकरीके मूत्रमें खरल करके बर्तियां बना लें ।

इसे आंखमें आंजने से आंखके फूले रात्र्यंधता तिमिर, और पटलका नाश होता है ।

इत्यकाराद्यञ्जनप्रकरणम्

अथाकारादिनस्यप्रकरणम्

(८९१५) अङ्कोलबीजादितैलनस्यम्

(रा. मा. । रसायना. ३२)

अङ्कोलबीजसितसर्षपसम्भवं य-
न्निष्पीडनोक्तविधिना निपुणैर्गृहीतम् ।
तन्नस्यकर्मनिरतस्य करोति नूनं
विंशत्समाभ्यधिकवर्षशतान्तमायुः ॥

अंकोलके बीज और सफेद सरसों समान भाग लेकर दोनोंको एकत्र मिलाकर घानीमें (कोल्हूमें) तेल निकलवावें ।

इस तेलकी नस्य लेने से १०० वर्षका वृद्ध भी २० वर्षके युवाके समान (बलि पलि-रहित) हो जाता है ।

(८९१६) अङ्कोलमूलादिनस्यम्

(रा. मा. । कामला.)

अङ्कोलमूलमथवाऽर्कजटामपिष्टां
स्वच्छेन तण्डुलजलेन समं प्रयत्नात् ।
स्यात्कामलामयहरी कृतनावनाना-
माघ्रातमात्रमपि जालनिकाफलं वा ॥

अंकोलकी जड़ या आककी जड़ अथवा कड़वी तोरीके फलको चावलोंके स्वच्छ धोवनके साथ पीसकर नस्य लेने से कामला रोग नष्ट हो जाता है ।

(८९१७) अञ्जनरसः

(रसे. सा. सं. । सन्निपाता.)

गन्धेशं लशुनाम्भोभिर्मर्दयेद्याममात्रकम् ।
तस्योदकेन संयुक्तं नस्यं तत्प्रतिबोधकृत् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समान भाग शुद्ध पारद और गंधककी कज्जली बनाकर उसे १ पहर ल्हसनके रसमें खरल करें।

इसे ल्हसनके ही रसमें मिलाकर नस्य देनेसे सन्निपात ज्वरकी मूर्छा नष्ट हो जाती है।

(८९१८) अपामार्गादिनस्यम्

(व. से. । शिरोरोगा.)

अपामार्गस्य बीजानि विश्वं सक्षौद्रशर्करम् ।
नस्यं प्रयोजयेन्नित्यं सूर्यावर्तार्द्धभेदयोः ॥

अपमार्ग (चिरचिटे) के बीजोंका चूर्ण, सोंठ, शहद और खांड समान भाग लेकर सबको एकत्र खरल करें।

नित्य इसकी नस्य लेनेसे सूर्यावर्त और अर्धावभेद (आधाशीशी) का नाश होता है।

(८९१९) अर्धनाडीनाटकेश्वरः

(भै. र. । शिरोरोगा.)

वराटं टङ्कणं शुद्धं पञ्चभागसमन्वितम् ।
नवभागं मरीचस्य विषं भागत्रयं मतम् ॥
स्तन्येन वटिकां कृत्वा नस्यं दद्याद्विचक्षणः ।
शिरोविकारान् विविधान् हन्ति श्लेष्मोत्तरानपि॥

कौड़ी भस्म और सुहागेकी खील ५-५ भाग, काली मिर्चका चूर्ण ९ भाग तथा शुद्ध विषका चूर्ण ३ भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर स्त्रीके दूधमें खरल करके गोलियां बना लें।

इसकी नस्य देने से कफज शिर पीड़ा आदि शिररोगों का नाश होता है।

(८९२०) अर्धनारीश्वररसः

(र. चं.; रसे. सा. सं. । ज्वरा.)

रसगन्धौ समौ शुद्धौ विषं ग्राह्यं च तत्समम् ।
जैपालं तत्समं ग्राह्यं मरिचं च चतुर्गुणम् ॥
त्रिफलाया रसैर्मर्द्य भावना पञ्चधा तथा ।
जम्बीराणां द्रवैर्नस्यमेकस्मिन्नासिकापुटे ॥
शरीरार्धगतं घोरं ज्वरं हन्ति न संशयः ।
अर्धनारीश्वरो नाम रसः शम्भुप्रकीर्तितः ॥

शुद्ध पारद और गंधक १-१ भाग, शुद्ध बछनाग २ भाग, शुद्ध जमालगोटा २ भाग और काली मिर्चका चूर्ण ८ भाग लेकर सबको एकत्र खरल करें और फिर त्रिफलाके क्वाथकी ५ भावना दें।

इसे जम्बीरी नीबूके रसमें मिलाकर जिस ओरके नासापुट (नसकोरे) में नस्य दी जायगी उसी ओरका (आधे शरीरका) घोरज्वर अवश्य नष्ट हो जायगा। यह रस स्वयं महादेवका बतलाया हुवा है।

इत्यकारादिनस्यप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथाकारादिरसप्रकरणम्

(८९२१) अग्निकुमाररसः (१)

(र. प्र. सु. । अ. ८)

सूतं चैकं गन्धकं च त्रिभागं
नागं वङ्गं शुल्वतारं च हेम ।
अभ्रं लोहं तारमाक्षीकवज्र-
मेकैकं वै शोधयित्वा प्रदेयम् ॥
मुण्डीश्वेताकाकमाच्यश्वगन्धा-
निर्गुण्ड्यो वै भृङ्गराजेन युक्ताः ।
रसैरेषां वासरान् त्रीन् प्रमर्द्या-
त्खल्वे सम्यग्गोलकं कारयेद्धि ॥
ततो घर्मे शोषयेत्तं च गोलं
लेपाः सम्यक् पञ्च मृद्भिः प्रदेयाः ।
भाण्डं चार्धं पूरयेद्वालुकाभि-
र्मध्ये गोलं निक्षिपेन्मुद्रयेच्च ॥
अग्निं कुर्याद्यामषट्षष्टमात्रं
शीते सिद्धो जायते वै रसोऽयम् ।
कृष्णाक्वाथैर्भावनाः पञ्च देया
आर्द्रेणैवं भावयेत्पञ्चवारान् ॥
ज्वालामुख्याः स्वै रसैः सप्तवारं
भाव्यं चापि सूर्यवारं हि वह्ने ।
निर्गुण्ड्या वै भावना भानुमात्राः
पश्चात्कार्या वल्लमात्रा वटी हि ॥
देया सद्भिः पञ्चमांश. हि कृष्णा
तद्वच्छुण्ठी चूर्णिता तत्प्रमाणा ।
कासे श्वासे मूत्रकृच्छ्रे ग्रहण्या-
मर्शःशोफे चाश्मरीमेदूरोगे ॥
मन्दे ह्यग्नौ वातरोगेऽथ शूलेऽ
पस्मारे वै सन्निपाते बलासे ।
सेव्यो वल्लं चार्द्रकेणापि सम्यक्
क्षारं चाम्लं वर्जयेच्चापिपथ्ये ॥

शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गंधक ३ भाग, तथा नाग (सीसा) भस्म, बंग भस्म, ताम्र भस्म, चांदी भस्म, स्वर्ण भस्म, अभ्रक भस्म, लोहभस्म, रौप्यमाक्षिक भस्म, और हीरा भस्म १–१ भाग लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियां मिलाकर सबको गोरखमुंडी, अतीस, मकोय, असगंध, संभालु और भंगरेके रसमें ३–३ दिन खरल करके गोला बनावें और उसे धूपमें सुखाकर उस पर (कपड़ा लपेट कर) ५ बार मिट्टीका लेप करदें । एवं उसके सूख जाने पर एक हाण्डीमें आधी दूर तक रेत भरकर उसमें वह गोला रक्खें और फिर हाण्डीको मुंह तक रेतसे भरकर उस पर शराव ढककर सन्धिको अच्छी तरह बन्द कर दें । अब इस हाण्डीको चूल्हे पर चढ़ाकर ६८ पहर की अग्नि दें और फिर स्वांग शीतल होने पर औषधको निकालकर पीस लें । तदनन्तर उसे पीपलके क्वाथकी ५, अदरकके रसकी ५, कलियारीके स्वरसकी ७, चीतामूलके क्वाथकी १२ और संभालुके रसकी १२ भावना देकर २–२ रत्तीकी गोलियां बना लें ।

इनमेंसे १–१ गोली पांचवां भाग पीपल और सोंठ का चूर्ण मिलाकर अदरकके रसके साथ सेवन करनेसे कास, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, ग्रहणी–रोग,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्श, शोथ, अश्मरि, उपदंश अग्निमांद्य वातव्याधि, शूल, अपस्मार, सन्निपात और कफ का नाश होता है।

अपथ्य—क्षार और अम्ल पदार्थ।

(८९२२) अग्निकुमाररसः (२)

(र. का. धे. । ग्रहण्य.)

दशनिष्कं शुद्धसूतं शुद्धगन्धं च तत्समम् ।
सार्धनिष्कं च विश्वं स्याद्धंसपाद्या द्रवैर्दिनम् ॥
हस्तिशुण्डया द्रवैर्वाऽथ मर्दितं वटकीकृतम् ।
काचकुप्यां विनिक्षिप्य मृदः संलेपयेद्बहिः ॥
शुष्कां तां वालुकायन्त्रे क्रमवृद्धाग्निना पचेत् ।
षड्यामान्ते समुद्धृत्य सार्धनिष्कविषेण च ॥
सह सञ्चूर्णयेच्छ्लक्ष्णं रसो ह्यग्निकुमारकः ।
गुञ्जैकं पर्णखण्डेन दातव्यं सन्निपातजित् ॥
कासश्वासक्षयं पाण्डुं मन्दाग्निं च विनाशयेत् ॥

शुद्ध पारद १० निष्क, शुद्ध गंधक १० निष्क, और सोंठका चूर्ण १॥ निष्क (७॥ माशे) लेकर सबको एकत्र खरल करके हंसपादीके स्वरस या हाथीसुंडीके स्वरसमें १ दिन खरल करके गोलियां बना लें और उन्हें सुखाकर कपड़मिट्टी की हुई आतशी शीशीमें भरकर ६ पहर बालुका-यन्त्रमें मृदु मध्यम और तीव्राग्नि पर पकावें। तदनन्तर शीशी के स्वांग शीतल होने पर उसमें से औषध को निकालकर उसमें १॥ निष्क शुद्ध वछनागका चूर्ण मिलाकर बारीक पीसकर रक्खें।

इसमें से १ रत्ती रस पानमें रखकर खानेसे सन्निपात ज्वर, कास, श्वास, क्षय, पाण्डु और अग्निमांद्य का नाश होता है।

(८९२३) अग्निकुमाररसः (४)

(र. का. धे. । सन्निपाता.)

भस्मसूतकभागैकं मृतं शुल्वं तथैव च ।
विषं चैतत्समं ग्राह्यं गन्धकं द्विगुणं कुरु ॥
त्रिकटु त्रिफलायुक्तं सर्वमेकत्र मर्दयेत् ।
निर्गुण्डी चाग्निदमनी वह्निव्याघ्रीद्वयं तथा ॥
पातालतुम्बिकी ग्राह्या इन्द्रवारुणिमेव च ।
एतेषां स्वरसेनैव भावना त्वेकविंशतिः ॥
रसो ह्यग्निकुमारोऽयं प्रत्यक्षश्च महेश्वरः ।
सन्निपाते त्रिदोषे च यमालयगतेऽपि वा ॥
मूर्ध्न्यग्रेण प्रदातव्यो मृतो जीवति तत्क्षणात् ॥

पारद भस्म, ताम्र भस्म और शुद्ध वछनाग १-१ भाग तथा शुद्ध गंधक, त्रिकुटा और त्रिफला २-२ भाग लेकर सबको एकत्र खरल करके संभालु, अग्निदमनी, चीता, छोटी कटेली, बड़ी कटेली, पाताल तुम्बी और इन्द्रायण के स्वरसकी २१ (प्रत्येक की ३) भावना दें।

यह रस स्वयं महेश्वर स्वरूप है। इसे सुईकी नोकपर लगाकर प्रयुक्त करने से यमालयके निकट पहुंचा हुवा सन्निपात रोगी भी स्वस्थ हो जाता है।

(शिरपर—तालु प्रदेशमें—छुरे से ज़रा खुरच कर यह रस मल देना चाहिये।)

(८९२४) अग्निकुमाररसः (४)

(र. सं. क. । उ. ४)

सूतं गन्धं विषं शङ्खं कपर्दं टङ्कणोषणे ।
चन्द्रैकाग्निगजत्रिद्विवसुभागैर्मितं क्रमात् ॥
जम्बीरकेण सम्मर्द्य भवेदग्निकुमारकः ।
वाते मन्दानलेऽजीर्णे ज्वरश्लेष्मविषूचिके ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुञ्जामात्रं प्रदातव्यो विण्मूत्रशिरसोग्रहे ।
कासे श्वासे क्षये शूले सर्वरोगेषु योजयेत् ॥

शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गंधक १ भाग, शुद्ध बछनाग ३ भाग, शंख भस्म ८ भाग, कौड़ी भस्म ३ भाग, सुहागेकी खील २ भाग और काली मिर्चका चूर्ण ८ भाग लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य ओषधियां मिलाकर जम्बीरी नीबूके रसमें खरल करें ।

इसके सेवनसे वातव्याधि, अग्निमांद्य, अजीर्ण, ज्वर, कफ, विसूचिका, मूत्रग्रह, मलावरोध, शिरोग्रह, कास, श्वास, क्षय और शूलका नाश होता है ।

मात्रा—१ रत्ती ।

(८९२५) अग्निकुमाररसः (५)

(र. का. धे. । ग्रहण्य.)

एकभागं ताम्रचूर्णं शुद्धसूतं त्रिभागकम् ।
अम्लेन कारयेत्पिष्टीं नवनीतनिभां बुधः ॥
पृथक् पिष्टीसमं गन्धं सैन्धवं चूर्णयेत्ततः ।
पिष्टिकोपरि तच्चूर्णं क्षिप्त्वा निम्बूरसं क्षिपेत् ॥
वारं वारं रसं दत्वा स्थाप्य घर्मे दिनाष्टकम् ।
ततः प्रक्षाल्य पिष्टीं तां पिष्ट्यङ्कं मृतमभ्रकम् ॥
दत्त्वा भृङ्गरसैर्भाव्यं त्रिवारं चार्द्रकद्रवैः ।
त्रिवारं चणकक्षारैस्ततः सिद्धो भवेद्रसः ॥
त्रिगुञ्जं भक्षयेन्नित्यं पथ्याकृष्णागुडैः समम् ।
अयमग्निकुमाराख्यो रसोमन्दाग्निदीपनः ॥

शुद्ध ताम्र चूर्ण (भस्म) १ भाग और शुद्ध पारद ३ भाग लेकर दोनों को नीबूके रसमें एकत्र खरल करके नवनीतके समान कोमल पिष्टी (पिट्ठी) बनावें और उसका एक गोला या टिकिया बना लें । तदन्तर उस पिट्ठीके बराबर शुद्ध गंधक और उतना ही सेंधा नमकका चूर्ण लेकर दोनों को एकत्र खरल करें। इस चूर्णको उपरोक्त टिकिया पर चारों ओर लपेटकर उस पर नीबूका रस डालकर धूपमें सुखालें । जब वह सूख जाय तो पुनः रस डालें । इसी प्रकार बार बार रस डालकर ८ दिन तक धूपमें सुखावें । तदनन्तर उस टिकिया को पानीसे धोकर स्वच्छ करें (लवणांश बिल्कुल निकाल देना चाहिये ।) इसके पश्चात् उसमें उपरोक्त पिट्ठीके बराबर (४ भाग) अभ्रक भस्म मिलाकर ३-३ भावना भंगरेके रस, अदरकके रस और चनेके क्षारजलकी दे कर ३-३ रत्तीकी गोलियां बना लें ।

इसे हर्र, पीपल और गुड़के समान भाग मिश्रित (३ माशा) चूर्णके साथ खानेसे अग्निमांद्यका नाश होकर अग्नि दीप्त हो जाती है ।

(८९२६) अग्निकुमाररसः (६)

(र. का. धे. । ग्रहण्य.)

रसगन्धकणाजाजीटङ्कणं दीप्ययुग्मकम् ।
जातीपत्रफले देवपुष्पं सामुद्रकं फलम् ॥
विषं वचा पारसिका त्रित्रिशाणमिता इति ।
पलद्वयमधुघृते पलार्धं खण्डतस्ततः ॥
सर्वमेकीकृतं चास्य मात्रातः कारयेद् गुटीम् ।
अयमग्निकुमारस्तु कथितो ग्रहणीहरः ॥
दृष्टोऽयं बहुधा वैद्यैः सद्यः प्रत्ययकारकः ॥

शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, पीपल, जीरा, सुहागेकी खील, अजवायन, जावित्री, जायफल, लौंग, समुद्रफल,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुद्ध बछनाग और खुरासानी अजवायन: ३-३ शाण:(१११-१११ माशे), घी ५ तोले, शहद ५ तोले और खांड २॥ तोले लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें: अन्य औषधियों का चूर्ण तथा घृतादि मिलाकर गोलियां बना लें।

यह रस ग्रहणी रोगको नष्ट करता है। इसके सद्यः फल प्रद प्रभावको वैद्योंने अनेक बार देखा है।

(मात्रा—१ माशा।)

(८९२७) अग्निकुमाररसः (७)

(र. का. धे. । ग्रहण्य.)

एकैकं विषसूतं च जातिटङ्कौ द्विकौ द्विकौ।
कृष्णा त्रिकं विश्वषट्कं कपर्द दग्धमेव च॥
देवपुष्पं बाणमितं सर्वं सम्मर्दयेत्ततः।
भवेदग्निकुमारोऽयं नष्टवह्निप्रदीपनः॥

शुद्ध बछनाग और पारद भस्म १-१ भाग, जावित्री और सुहागेकी खील २-२ भाग, पीपल ३ भाग, सोंठ ६ भाग, कौड़ी भस्म ६ भाग और लौंग ५ भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर खरल करें।

इसके सेवनसे अग्नि दीप्त होती है।

(मात्रा—२ माशे।)

(८९२८) अग्निजननीवटी

(र. का. धे. । अग्निमान्द्या.)

पलैकं मूर्छितं सूतं जाती टङ्कौ द्विकं द्विकम्।
प्रतिकर्षं वचा शुण्ठी तत्सर्वं मार्कवद्रवैः॥
दिनं पिष्ट्वा लिहेन्माषं मधुना वह्निदीप्तये।
कर्षैकं भक्षयेच्चानु दाडिमं नागरं गुडैः॥

रससिन्दूर ५ तोले; जावित्री और सुहागेकी खील १०-१० तोले एवं बच और सोंठ १।-१। तोला लेकर सबको एकत्र मिलाकर १ दिन भंगरेके रसमें खरल करके सुरक्षित रक्खें।

मात्रा—१ माशा।

इसे शहदके साथ खाकर ऊपरसे अनारदाना, सोंठ और गुड़का समान भाग मिलित १। तोला चूर्ण खाना चाहिये।

यह वटी अग्नि की वृद्धि करती है।

(८९२९) अग्निजारलक्षणगुणाः

(र. प्र. सु. । अ. ६; आ. वे. प्र. । अ. १०; र. र. स. । पू. अ. ३)

समुद्रेणाग्निनक्रस्य जरायुर्बहिरुज्झितः।
रवितापेन संशुष्कः सोऽग्निजार इति स्मृतः॥
त्रिदोषशमनो ग्राही धनुर्वातहरः परः।
वर्धनो रसवीर्यस्य जारणः परमः स्मृतः॥

समुद्रमें 'अग्निनक्र' नामक जन्तु होता है; उसका जरायु समुद्रके किनारे गिर कर सूख जाता है जिसे '**अग्निजार**' कहते हैं।

अग्निजार त्रिदोष नाशक, ग्राही, धनुर्वातनाशक, तथा रस-वीर्य-वर्द्धक है।

(८९३०) अग्निमुखरसः (१)

(र. र. । शूला.)

शुद्धसूतं समं गन्धं रसार्द्धं मृतताम्रकम्।
दिनैकं शाकजैर्द्रावैर्मर्द्यश्च क्षीरिणीद्रवैः॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रुद्ध्वा लघुपुटे चैव पच्यादग्निमुखो रसः ।
यवानीन्द्रयवापाठा बिल्वशुण्ठीरसाञ्जनम् ॥
चूर्णं शूलहरं चानु पिबेदुष्णाम्बुना सह ॥

शुद्ध पारद और गंधक १–१ भाग तथा ताम्र भस्म आधा भाग लेकर तीनोंको एकत्र खरल करके कज्जली बनावें और उसे १–१ दिन सागौन तथा खिरनी की छालके क्वाथ में खरल करके सबका एक गोला बनावें और उसे सुखाकर शराव संपुटमें बन्द करके लघुपुटमें पकावें। तत्पश्चात् उसके स्वांगशीतल होने पर रसको निकाल लें।

(मात्रा—१ रत्ती।)

इसके सेवनसे शूल नष्ट हो जाता है।

अनुपान—औषध खाने के पश्चात् अजवायन, इन्द्रजौ, पाठा, बेलगिरी, सोंठ और रसौतका समान भाग मिश्रित चूर्ण गरमपानीसे पीना चाहिये।

(८९३१) अग्निमुखरसः (२)

(र. र. स. । उ. अ. १८; र. र. । शूला.)

मृतसूताभ्रकं ताम्रं गन्धकं चाम्लवेतसम् ।
विषं फलत्रयं तुल्यं सर्वं मर्द्यं दिनावधि ॥
विषमुष्टिर्जया वासा विजया रक्तशाकिनी ।
बृहती च महाराष्ट्री धत्तूरः पद्मपत्रकः ॥
नागवल्ली शमी जम्बू भाव्यमेभिर्द्रवैस्त्र्यहम् ।
समांशं पञ्चलवणं दत्वाऽऽर्द्रकरसेन च ॥
दिनं पेष्यं ततः कुर्याद्वटिकां चणमात्रकाम् ।
भक्षयेद्वातशूलार्तः सोऽयमग्निमुखो रसः ॥
हरीतकी प्रतिविषा हिङ्गु सौवर्चलं वचा ।
कलिङ्गेन्द्रयवास्तुल्यं पाययेदुष्णवारिणा ॥
कर्षैकमनुपानं स्याद्वातशूलहरं परम् ।
चिञ्चाक्षारं जलैः पीतं शूलं शान्तिमवाप्नुयात् ॥

पारद भस्म, अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, शुद्ध गंधक, अम्लवेत, शुद्ध बछनाग, हर्र, बहेड़ा और आमला, समान भाग लेकर सबको १ दिन एकत्र खरल करके ३–३ दिन कुचला, जया, बासा, भांग, रक्तशाकिनी, बड़ी कटेली, महाराष्ट्री (जलपीपल), धतूरा, पोखरमूल (या कमल पत्र), पान, शमीवृक्षकी छाल और जामन; उनके रसमें खरल करें। तदनन्तर उसमें उसके बराबर पांचों नमकका चूर्ण मिलाकर १ दिन अदरकके रस में घोटकर चनेके समान गोलियां बना लें।

इनके सेवन से वातज शूल नष्ट होता है।

अनुपान—हर्र, अतीस, हींग, संचल (कालानमक), वच और इन्द्रजौ समान भाग लेकर चूर्ण बनावें। उपरोक्त वटी खानेके पश्चात् १। तोला (व्य. मात्रा–२–३ माशे) यह चूर्ण गर्म पानीसे पीना चाहिये।

इमलीका क्षार उष्णजलसे खानेसे भी शूल शान्त हो जाता है।

(८९३२) अग्निरसः (१)

(र. र. । कासा.)

वज्रहाटकसूतानां भस्मैषां द्वित्रिषट्क्रमात् ।
त्रिकण्टकरसैर्भाव्यं दिनान्ते तद्विचूर्णयेत् ॥
गुञ्जामात्रं प्रयोक्तव्यं सज्वरे राजयक्ष्मणि ।
स्नुहीमूलं च जम्बीरद्रवैः स्यादनुपानकम् ॥
साध्यासाध्यक्षयं हन्ति ह्यनुपानं मृगाङ्कवत् ।
अयमग्निरसं खादेत् त्रिनिष्कं राजयक्ष्मनुत् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हीरा भस्म २ भाग, स्वर्ण भस्म ३ भाग, और पारद भस्म ६ भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर १ दिन गोखरुके रसमें खरल करें।

इसके सेवन से ज्वरसहित राजयक्ष्मा नष्ट हो जाता है। यह रस साध्यासाध्य हर प्रकारके क्षयको नष्ट कर देता है।

साधारणतः इस पर मृगाङ्क रसके समान अनुपान देना चाहिये।

विशेष अनुपान—जम्बीरी नीबूके रसके साथ स्नुही (थूहर) की जड़का चूर्ण खिलाना चाहिये। (पूर्ण लाभ प्राप्त करनेके लिये) यह रस ३ निष्क खिलाना चाहिये।

अग्निरसः (२)

(भै. र. । अग्निमांद्य.)

प्र. सं. ८३२३ स्वयमग्निरसः नं. १ देखिये।

अग्निसूनुरसः

प्र. सं. २६२ अग्निकुमार रस देखिये।

(८९३३) अजीर्णहररसः

(यो. र. अजीर्णा.)

सूतं गन्धकतालकं विषयुतं टङ्कं यवक्षारकं
भार्गी वह्निपुनर्नवा त्रिकटुकं लोहाभ्रकं त्रैफलम्।
चूर्णं भृङ्गरसेन मर्दितमनु निर्गुण्डिकाद्रावकैः
पश्चादार्द्रकबीजपूरकरसैर्देया पुनर्भावना ॥
भुक्तं जीर्यति भोजनं गुरुतरं मांसादिकं पिष्टकं
गुञ्जापञ्चकसम्मितस्य वटिका श्रीभैरवाच्छि-क्षिता।
प्लीहं गुल्मजलोदरं कटिभवं शूलं पुनर्जाठरं
शोफं चामसमुद्भवं बहुरुजं दुग्धोदनं भक्षणे ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध हरताल (या हरताल भस्म), शुद्ध बछनाग, सुहागे की खील, जवाखार, भरंगी, चीतामूल, पुनर्नवा, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, हर्र, बहेड़ा और आमला समान भाग लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य ओषधियोंका चूर्ण मिलाकर १-१ दिन भंगरे, संभालु, अदरक और बिजौरेके रसमें घोट कर ५-५ रत्तीकी गोलियां बना लें।

इनके सेवनसे भारीसे भारी पदार्थ भी पच जाते हैं तथा यह रस प्लीहा-वृद्धि, गुल्म, जलोदर, कमरके शूल, उदरशूल और आम-जनित शोथको नष्ट करता है।

पथ्य—दूध भात।

(८९३४) अपस्मारनाशनरसः

(र. र. ग. । उ. अ. २३)

रसगन्धशिलातुल्यकान्तहेमाब्धिफेनकम्।
रजनी तेजनीबीजं कर्षमात्रं पृथग्युतम् ॥
निम्बुद्रवान्तौ तेनान्तर्लिप्तां ताम्रपलोन्मिताम्।
पात्रीं न्युब्जां सुभाण्डान्तां रुध्वा खर्परिकां भृताम्
भस्मनाऽऽपूर्य भाण्डान्तर्धृत्वाऽधो द्विनिशं पचेत्।
स्वाङ्गशीतं विचूर्ण्याथ रसोऽपस्मारनाशनः ॥
वल्लमस्योदये दद्याद्वाव्योषविडङ्गयुक्।
अनुदेयमजामूत्रं ततोऽर्धप्रहरे गते ॥
सार्षपे षोडशपले तैले तत्कल्कितं पचेत्।
नस्यं तैलेन तेनास्य दद्यात्सव्योषकेण तु ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, शुद्ध मनसिल, शुद्ध नीलाथोथा, कान्तलोह भस्म, स्वर्ण भस्म, समुद्रफेन, हल्दी और मालकंगनीके बीज १।--१। तोला लेकर प्रथम पारे गंधक की कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर सबको नीबू के रसमें खरल करें एवं ५ तोले शुद्ध ताम्रकी कटोरीके भीतर उसका लेप कर दें।

तदनन्तर एक कपरमिट्टी की हुई हाण्डीके भीतर यह कटोरी उल्टी करके रख दें और उसपर मिट्टीका शराव ढक कर हांडीको राखसे भरदें तथा उसके ऊपर ढकना ढककर सन्धिको अच्छी तरह बन्द कर दें और हाण्डीको चूल्हे पर चढ़ाकर उसके नीचे २ दिन (१६ पहर) अग्नि जलावें। तत्पश्चात् स्वांगशीतल होने पर हांडीमेंसे ताम्रकी कटोरीको निकाल कर पीस लें।

इसमें से नित्य प्रति प्रातःकाल २ रत्ती रस बच, सोंठ, मिर्च, पीपल और बायबिड़ंगके समान भाग मिलित (१॥–२ माशा) चूर्णके साथ खिलाकर बकरीका मूत्र पिलाना चाहिये।

१ सेर सरसोंके तेलमें बच, सोंठ, मिर्च, पीपल और बायबिड़ंगका १० तोले कल्क तथा ४ सेर पानी मिलाकर पकावें और पानी जल जाने पर तेलको छान लें।

उपरोक्त रस खानेके आधा पहर पश्चात् इस तेल में त्रिकुटे का बारीक चूर्ण मिलाकर उसकी नस्य लेनी चाहिये।

इसके सेवनसे अपस्मारका नाश होता है।

(८९३५) अपस्मारारि रसः

(र. का. धे. । अपस्मारा.)

मयूरतुत्थं रसगन्धयोर्युतं
गुडूचिकातोयविमर्दितं दृढम् ।
शरावरुद्धं पुटितं प्रयत्नात्
रम्भोत्थतोयेन दिनं विमर्द्यम् ॥
स स्यादपस्मारकरोगनाशनो
हैयं गवीनेन च वल्लयुग्मकः ।
हन्यादपस्मारकमेव यत्नतः
स सेव्यमानः कृतनिश्चयो बुधैः ॥

शुद्ध नीला थोथा, शुद्ध पारद और शुद्ध गंधक समान भाग लेकर कज्जली बनावें और फिर उसे गिलोयके रसमें खरल करके टिकिया बनावें एवं सुखाकर शरावसम्पुटमें बन्द करके पुट लगादें। तत्पश्चात् उसके स्वांग शीतल होने पर औषधको निकाल कर उसे १ दिन केलेके रसमें खरल करें।

इसे ४ रत्ती मात्रानुसार गायके नवनीत (मक्खन) के साथ सेवन करनेसे अपस्मारका नाश होता है।

(व्यवहारिक मात्रा--१–२ रत्ती।)

(८९३६) अपूर्वो रसः (कर्पूररसः)

(र. का. धे. । क्षयरोगा.)

रामठं शुद्धमानीय दशटङ्कं महोत्तमम् ।
मूषिकाद्वितयं कृत्वा रसं दत्वाऽवशोषयेत् ॥
द्वितीया दीयते तस्या उपरिष्टाच्च मूषिका ।
सूक्ष्मं छिद्रं पुनस्तस्या उपरिष्टाच्च कारयेत् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विमुद्रय सन्धिमुभयोर्हण्डिकान्तस्थयोर्दृढम् ।
अत ऊर्ध्वं ततो दद्यात्क्षाराच्छलवणं द्वयोः ॥
दीयन्ते खर्परा गाढा हण्डिकां हण्डिकोपरि ।
दत्वा सन्धिं निरुध्याथ वह्निं दद्यादहर्निशम् ॥
आदाय सुन्दरं भस्मोपरिलग्नं समन्ततः ।
सूताकारं महासारं कनकाभं मनोहरम् ॥
वस्त्रे सूक्ष्मे निधायाथ बध्वा पोट्टलिकां दृढाम् ।
पयसा स्वेदयेत्सूतभस्म तत्प्रहरद्वयम् ॥
आदाय शोषयेत्पश्चादर्धगुञ्जं निषेवयेत् ।
पूर्वमग्नेर्बलं कुर्यात्पाचनं तदनन्तरम् ॥
क्षयादिकानयं हन्याज्जठरादीन्महागदान् ।
अपूर्वोऽयं रसः साक्षान्नाम तस्य प्रकीर्तितम् ॥
अजरामरतां कुर्यात् प्रत्यहं यदि सेव्यते ॥

१० टंक (५० माशे) उत्तम हींग लेकर (पानीके साथ पीसकर) उसकी दो मूषा बनावें और एक मूषामें शुद्ध पारद डालकर दूसरी मूषा उसके ऊपर ढक दें। ऊपरवाली मूषाकी पेंदी में एक छोटासा छिद्र कर देना चाहिये। इन दोनोंकी सन्धिको अच्छी तरह बन्द करके सुखा लें और इस यन्त्रको कपरमिट्टी की हुई हांडीमें रखदें तथा उसे जवाखार और सैंधा नमक के चूर्णसे ढक दें। तत्पश्चात् उस पर मज़बूत ठीकरे रखकर हाण्डी पर एक दूसरी हाण्डी उल्टी ढकदें और दोनोंकी संधिको अच्छी तरह बन्द करके एक दिन रात (८ पहर) पाक करें।

तदनन्तर उसके स्वांग शीतल होने पर हांडीको खोलकर चारों ओर लगीहुई पारदभस्मको निकाललें।

यह भस्म अत्यन्त सुन्दर पारदके समान (सफेद) और स्वर्णके समान (चमकदार) होगी।

इस भस्मको बारीक वस्त्रमें बांधकर मज़बूत पोटली बनावें और उसे २ पहर तक दूधमें स्वेदित करें। फिर निकालकर सुखा लें।

मात्रा—आधी रत्ती।

इसके सेवनसे प्रथम जठराग्नि दीप्त होती है और फिर पाचन शक्ति बढ़ जाती है। यह राजयक्ष्मा और उदर रोगादि महा व्याधियोंको नष्ट कर देता है। यदि इसे सदैव सेवन किया जाय तो मनुष्य अजर अमर हो जाता है। (?)

(८९३७) अभिनवकामदेवरसः

(र. र. ; धन्व. । वाजीकरणा.)

तोलकैकं समादाय पृथग्गन्धकसूतयोः ।
रक्तोत्पलदलाम्भोभिर्मर्दयेद्दिनसत्रयम् ॥
मर्दयित्वा पुनर्देयं गन्धं मासचतुष्टयम् ।
तस्यैव पत्रतोयेन पुनर्दत्त्वा च गन्धकम् ॥
शङ्खिन्याश्चापि तोयेन रुद्ध्वा काचघटे दृढे ।
ततस्तु वालुकायन्त्रे पचेद्यामत्रयं ततः ॥
काचकुप्याः समाकृष्य सिद्धसूतमतः परम् ।
खादेत्तु रक्तिकाः पञ्चरोगैराक्रान्तमानवः ॥
भोजनं पूर्ववद्देयं यत्नतः सततं भिषक् ।
दुर्बलं वपुरत्यर्थं मल्लवज्जायते नृणाम् ॥
मासेनैकेन सूतेन्द्रः पित्तजान्नाशयेद्गदान् ।

१-१ तोला शुद्ध पारद और गंधककी कज्जली बनाकर उसे ३ दिन लाल कमलके पत्तोंके स्वरसमें खरल करें और फिर उसमें ४ माशे शुद्ध गंधक मिलाकर पुनः ३ दिन लाल कमलके पत्तोंके रसमें खरल करें। तत्पश्चात् उसमें पुनः ४ माशे शुद्ध गंधक मिला कर शंखपुष्पीके रसमें खरल करके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुखाकर आतशी शीशी में भरकर बालुकायन्त्र में ३ पहर तक पकावें। तत्पश्चात् शीशीके स्वांग-शीतल होने पर उसमेंसे औषधको निकालकर पीसकर सुरक्षित रक्खें।

मात्रा—५ रत्ती।

इसे १ मास तक सेवन करनेसे समस्त पित्तज रोग नष्ट हो जाते हैं। यह रस दुर्बल शरीरको अत्यन्त पुष्ट पहलवानके समान कर देता है।

(व्यवहारिक मात्रा—१-२ रत्ती।)

(८९३८) अभ्रकद्रुतिः

(र. रा. सु.)

कर्कोटीफलचूर्णं तु मित्रपञ्चकसंयुतम्।
एतत्तुल्यं च धान्याभ्रमम्लैर्मर्द्यं दिनावधिः॥
अथ मूषागतं ध्मातं तद्द्रुतिर्भवति ध्रुवम्॥

ककोड़ेके फलका चूर्ण और मित्रपंचक १-१ भाग लेकर दोनोंको एकत्र मिलावें और फिर उसमें २ भाग धान्याभ्रक डालकर १ दिन नीबूके रस (या कांजी) में खरल करके मूषामें रखकर। अग्निमें ध्मानेसे अभ्रक अवश्य द्रुत (प्रवाही) हो जाता है।

(८९३९) अभ्रकद्रुतिः (२)

(र. रा. सु.)

श्वेताभ्रकं च सञ्चूर्ण्य गोमूत्रेण तु भावयेत्।
कदलीफलसंयुक्तं भावयेत्तद्विचक्षणः॥
धमेत्तदन्धमूषायां त्रिवारं च पुनः पुनः।
द्रुतिर्भवति तद्वज्रं नात्र कार्या विचारणा॥
अनेनैव प्रकारेण कुर्याद् द्रुतिं सुशोभना॥

श्वेताभ्रकको बारीक कूट कर उसमें (उसके बराबर) केलेकी फली मिलाकर गोमूत्रमें खरल करें और फिर उसे अन्धमूषामें बन्द करके आगमें रख कर ध्मावें (धौंकनीसे आग तेज करें।) जब केला जल जाय तो) पुनः इसी प्रकार केले की फलीके साथ गोमूत्रमें घोटकर अन्धमूषामें पकावें। इस प्रकार ३ बार पकानेसे वज्र जातिका श्वेताभ्रक अवश्य द्रुत हो जाता है।

(८९४०) अभ्रकद्रुतिः (३)

(र. रा. सु. ; रसे. चि. म. । अ. ४)

स्वरसेन वज्रवल्याः पिष्टं सौवर्चलान्वितं गगनम्।
पक्वं शरावसंस्थं बहुवारं भवति रसरूपम्॥

अभ्रकमें संचल (काला नमक) मिलाकर वज्रवल्ली (हड़जोड़ी) के रसमें खरल करके शराव में रखकर पकावें। इसी प्रकार अनेक बार पाक करनेसे अभ्रक पारदके समान द्रुत (प्रवाही) हो जाता है।

(८९४१) अभ्रकद्रुतिः (४)

(आ. वे. प्र. । अ. ४)

अगस्त्यपत्रनिर्यासैर्मर्दितं धान्यकाभ्रकम्।
सूरणोदरमध्ये तु निक्षिप्तं लेपितं मृदा॥
गोष्ठभूमौ खनित्वा तु हस्तमात्रे हि पूरितम्।
मासाभिष्कासितं तत्तु जायते पारदोपमम्॥

धान्याभ्रकको अगस्ति (अगथिया) के पत्तोंके (मतान्तर में फूलोंके) रसमें घोटकर जिमिकंद (सूरण)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के भीतर भरदें और उस पर मिट्टीका लेप करके सुखा लें। इसे गोशालामें एक हाथ गहरा गढ़ा खोदकर दबा दें और १ मास पश्चात् निकाल लें। इस प्रकार अभ्रक पारद के समान प्रवाही हो जाता है।

(८९४२) अभ्रकद्रुतिः (५)

(आ. वे. प्र. । अ. ४ ; रसे. चि. म. । अ. ४)

निजरसबहुपरिभावित-
सुरदालीचूर्णमात्रवापेन ।
द्रवति पुनः संस्थानं
भजते गगनं न कालेऽपि ॥

देवदाली (बिंडाल) के चूर्णको उसीके रसकी बहुतसी भावनाएं देकर सुखा लें। अभ्रक (अभ्रक सत्व) को तपाकर उसमें यह चूर्ण डालनेसे वह पतला हो जाता है और फिर कभी कड़ा नहीं होता।

(८९४३) अभ्रकभस्मयोगः (१)

(र. का. धे. । अम्लपित्ता.)

उष्णोदनाम्बुरुबुतैलरसे निमग्नं
कृष्णाभ्रकं वसनबद्धमहानि सप्त ।
पिष्ट्वा च किञ्चिदुपशोष्य पलप्रमाणं
न्यग्रोधदुग्धपलयुक्तमथो पुटेत्तत् ॥
माषाष्टगन्धकपृथक् त्रिकटोर्वरायाः
संयोज्य चाज्यमधुनी च चिरं विमृद्य ।
तप्ताम्बुपानमुपयुक्तमिदं निहन्ति
शूलाम्लपित्तवमनानि हिताशिनोऽद्य॥

कृष्णाभ्रकको कपड़ेकी पोटली में बांधकर चावलोंके मांड, अरण्डीके तेल और अरण्डीके रसमें सात दिन भिगोए रक्खें। (मांड आदि तीनों पदार्थ बराबर बराबर लेकर एकत्र मिला लेने चाहियें।)

इसके पश्चात् उसे पीसकर कुछ सुखाकर उसमेंसे ५ तोला लें और उसमें ५ तोले बड़का दूध मिलाकर खरल करके टिकिया बनावें। तथा शरावसंपुटमें बन्द करके गज पुटमें फूंक दें। इसी प्रकार कई पुट देकर भस्म बनावें। तत्पश्चात् उसमें ८ माशे शुद्ध गंधक तथा ८-८ माशे सोंठ, मिर्च, पीपल, हर्र, बहेड़ा और आमला; इनका चूर्ण मिलाकर शहद और घी के साथ बहुत देर तक खरल करें।

इसे उष्ण जलके साथ सेवन करने और पथ्य पालन करनेसे शूल, अम्लपित्त और वमनका नाश होता है।

(८९४४) अभ्रकभस्मयोगः (२)

(न. मृ. । त. ७; यो. र. ; र. रा. सु. । प्रमेहा. ; वृ. यो. त. । त. १०३)

निश्चन्द्रमभ्रकं भस्म सवरा रजनी रजः ।
मधुना लीढमचिरात्प्रमेहान्विनिवर्तयेत् ॥

निश्चन्द्र अभ्रकभस्म, हर्र, बहेड़ा, आमला और हल्दी समान भाग ले कर सबको एकत्र खरल करें।

इसे शहदके साथ चाटनेसे प्रमेहरोग शीघ्रही नष्ट हो जाता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८९४५) अभ्रकभस्मामृतीकरणम् (१)

(शा. सं. । खं. २ अ. ११; र. र. स. । पू. अ. २;र. रा. सु. ; आ. वे. प्र. । अ. ४; यो. र. ; यो. चि. म. । अ. ७; रसे. चि. म. । अ. ४)

तुल्यं घृतं मृताभ्रेण लोहपात्रे विपाचयेत् ।
घृते जीर्णे तदभ्रं तु सर्वयोगेषु योजयेत् ॥

अभ्रक भस्ममें उसके बराबर घी मिलाकर लोहपात्रमें पकावें । जब घी जल जाय तो अभ्रकको पीसकर रख लें ।

यहभस्म सर्वत्र प्रयुक्त की जा सकती है ।

(८९४६) अभ्रकभस्मामृतीकरणम् (२)

(र. रा. सु. ; आ. वे. प्र. । अ. ४ ; वृ. यो. त. । त. ४१; रसे. चि. म. । अ. ४ ; र. र.)

त्रिफलात्वक्कषायस्य पलायान्यादाय षोडश: ।
गोघृतस्य पलान्यष्टौ मृताभ्रस्य पलान् दश ॥
एकीकृते लोहपात्रे विपचेन्मृदुवह्निना ।
द्रवे जीर्णे समादाय योगवाहे प्रयोजयेत् ॥
अन्येषामपि धातूनाममृतीकरणं त्वयम् ॥

त्रिफलेका क्वाथ १ सेर, गोघृत आधा सेर और अभ्रक भस्म ५० तोले लेकर सबको एकत्र मिलाकर लोहपात्रमें मन्दाग्नि पर पकावें । जब वह शुष्क हो जाय तो पीसकर सुरक्षित रक्खें ।

अन्य धातुओंकी भस्मोंका अमृतीकरण भी इसी प्रकार किया जाता है ।

(८९४७) अभ्रकमारणम् (१)

(यो. चि. म । अ. ७)

कृष्णाभ्रकसमादाय द्विमस्थं चूर्णयेद्बुधः ।
गोमूत्रलोडितं भाण्डे क्षिप्त्वा वन्हौ दिनं पचेत्॥
अर्कदुग्धैः पुनः पिष्ट्वा कृत्वा टिक्किकाः शुभाः।
वेष्टयित्वार्कपत्रैश्च खर्परस्थाः पुनः पचेत् ॥
एवमेवार्कदुग्धस्य दद्यात्सप्तपुटानि च ।
पुटत्रयं कुमार्याश्च त्रिफलायाः पुटत्रयम् ॥
गुडस्य च पुटं दत्वा पुनः पञ्चामृतैः पुटेत् ।
ततो वटजटाक्वाथैः सम्यक् देयं पुटत्रयम् ॥
एवं निश्चन्द्रतां याति सर्वरोगेषु योजयेत् ।
मृतं त्वभ्रं हरेन्मृत्युं जरापलितनाशनम् ॥
योजितं चानुपाने च सर्वरोगहरं परम् ॥

२ सेर कृष्णाभ्रकको पीसकर गोमूत्रमें मिलाकर हाण्डी में डालें और चूल्हे पर चढ़ाकर २४ घंटे पाक करें । तदनन्तर उसे आकके दूधमें खरल करके टिकिया बनावें और उन्हें सुखाकर आकके पत्तोंमें लपेटकर शरावसम्पुटमें बन्द करें एवं गजपुटमें फूंकदें । इसी प्रकार आकके दूधकी सात पुट दें । तदनन्तर उसे घृतकुमारी के रसकी ३, त्रिफला क्वाथकी ३, गुड़के पानीकी ३, पंचामृत की ३ और बड़की जटाके क्वाथकी ३ पुट दें । इस विधिसे अभ्रककी निश्चन्द्र भस्म हो जाती है ।

अभ्रक भस्म जरा, मृत्यु, पलित और अनुपान भेदसे समस्त रोगोंको नष्ट करती है ।

(**पञ्चामृत**—गिलोय, गोखरु, मूसली, गोरखमुंडी, और शतावर समान भाग लेकर एकत्र मिलालें ।)

(८९४८) अभ्रकमारणम् (२)

(र. रा. सु.)

पुनर्नवा कुमारीं च चपलां वानरीं तथा ।
मुशलीं चेक्षुवल्लीं च तथा तामलकीरसैः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्येकैकेन पुटयेत्सप्तवारं पुनः पुनः ।
अर्कसेहुण्डदुग्धेन प्रदेया सप्तभावनाः ॥
एवं स म्रियते वज्रं सर्वरोगहरं परम ॥

अभ्रकको क्रमशः पुनर्नवा (बिसखपरा), घृतकुमारी, पीपल, कौंचकी जड़, मूसली, कृष्ण क्षीरविदारी और भुई आमला; इनके रस या क्वाथकी एवं आक और सेहुंड (थूहर) के दूधकी पृथक् पृथक् सात सात पुट देनेसे वह मर जाता है।

(८९४९) अभ्रकमारणम् (३)

(र. प्र. सु. । अ. ५)

सूक्ष्मचूर्णं ततः कृत्वा पिष्ट्वा हंसपदीरसैः ॥
चक्राकारं कृतं शुष्कं दद्यादर्धगजाह्वये ।
षट् पुटानि ततो दत्त्वा पुनरेवं पुनर्नवा- ॥
रसेन मर्दितं गाढमभ्रांशेन तु टङ्कणम् ।
पुनश्च चक्रिकां कृत्वा सप्तवारं पुटेत्खलु ॥
तण्डुलीयरसेनैव तद्वद्वासारसेन च ।
पुटयेत्सप्तवाराणि पुटं दद्याद्गजार्धकम् ॥
अनेन विधिना चाभ्रं म्रियते नात्र संशयः ।
चन्द्रिकारहितं सम्यक् सिन्दूराभं प्रजायते ॥

धान्याभ्रकका बारीक चूर्ण करके उसे हंसपदीके रसमें खरल करके टिकिया बनावें और उन्हें सुखाकर शरावसम्पुटमें बन्द करके अर्ध गजपुटमें फूंक दें। इसी प्रकार हंसपादीके रसमें घोटकर सात पुट दें। तदनन्तर उसे पुनर्नवा (बिसखपरा) के रसमें खरल करके अभ्रकके बराबर सुहागा मिलाकर घोटकर उपरोक्त विधिसे पुट दें। इसी प्रकार पुनर्नवाके रसमें घोटकर सात पुट दें। (सुहागा हर बार डालनेकी आवश्यका नहीं है, सिर्फ १ बार ही डालना चाहिये।)

तत्पश्चात् चौलाई और बासाके रसमें घोट घोटकर पृथक् पृथक् सात सात पुट दें।

इस विधिसे अभ्रककी निश्चन्द्र और सिन्दूरके समान लाल भस्म हो जाती है।

(८९५०) अभ्रकमारणम् (४)

(र. र. स । पू. अ. २; र. रा. सु.; र. प्र. सु. । अ. ५)

वटमूलत्वचः क्वाथैस्ताम्बूलीपत्रसारतः ।
वासामत्स्याक्षिकाभ्यां वा मीनाक्ष्या सकटिल्लया ॥
पयसा वटवृक्षस्य मर्दितं पुटितं घनम् ।
भवेद्विंशति वारेण सिन्दूरसदृशप्रभम् ॥

अभ्रकको ४ पुट बड़की जड़की छालके क्वाथकी; ४ पुट पानके रसकी, ४ पुट बासा और मछेछीके सम्मिलित रसकी, ४ पुट मछेछी और लाल पुनर्नवाके सम्मिलित रसकी एवं ४ पुट बड़के दूधकी (इस प्रकार कुल २० पुट) देनेसे उसकी सिन्दूरके समान लाल भस्म हो जाती है।

(८९५१) अभ्रकमारणम् (५)

(शा. सं. । खं. ५. अ. ११; र. रा. सु.)

शुद्धं धान्याभ्रकं मुस्तशुण्ठी षड्भागयोजितम् ।
मर्दयेत्काञ्जिकेनैव दिनं चित्रकजैः रसैः ॥
ततो गजपुटं दद्यात्तस्मादुद्धृत्य मर्दयेत् ।
त्रिफलावारिणा तद्वत्पुटेदेवं पुटैस्त्रिभिः ॥
बलागोमूत्रमुसलीतुलसीसूरणद्रवैः ।
मर्दितं पुटितं वह्नौ त्रिस्त्रिवेलं व्रजेन्मृतिम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६ भाग धान्याभ्रक*में १-१ भाग नागरमोथे और सोंठका चूर्ण मिलाकर १ दिन कांजीमें खरल करें और उसके सूखने पर १ दिन चित्रक मूलके क्वाथमें खरल करें तथा टिकिया बनाकर सुखालें और यथा विधि गजपुटमें फूंक दें। तदनन्तर उसे त्रिफलाके क्वाथ; खरैटी (बला)के क्वाथ, गोमूत्र, मूसलीके रस या क्वाथ, तुलसीके रस और सूरण (जिमीकन्द)के रसमें घोट घोटकर पृथक् पृथक् ३-३ पुट दें। बस अभ्रक भस्म तैयार हो जायगी।

(८९५२) अभ्रकमारणम् (६)

(र. रा. सु.)

अङ्गारोपरि विन्यस्तं ध्मातमेव दलीकृतम्।
निक्षिपेत्काञ्जिके कृष्णमभ्रकं वह्निसन्निभम्॥

---

*धान्याभ्रकविधिः

(र. र.)

अथवाभ्रस्य भागौ द्वौ टङ्कश्चैकं जलैः सह।
द्विदिनं स्थापयेत्पात्रे सूक्ष्मं कृत्वा प्रपेषयेत्॥
बध्वा धान्ययुतं वस्त्रे मर्दयेत्काञ्जिकैः सह।
अधोपतद्गालितं सूक्ष्मं शुद्धं धान्याभ्रकं भवेत्॥

२ भाग अभ्रक और १ भाग सुहागेको एकत्र मिलाकर पानीसे भरे हुवे पात्रमें डाल दें और दो दिन पश्चात् निकालकर बारीक पीसकर उसमें धान मिलाकर कपड़ेमें बांधकर पोटली बनावें तथा उसे कांजीसे भरे हुवे पात्रमें डालकर दोनों हाथोंसे रगड़ें। इस क्रियासे जो बारीक अभ्रक पोटलीसे छनकर कांजीमें गिरे उसे निकालकर सुखा लें। यही धान्याभ्रक है।

ततोऽस्य काञ्जिकस्थस्य चिरं घर्मे विधारयेत्।
पेषणं च विधातव्यं पौन पुन्येन पण्डितैः॥
चाङ्गेरीस्वाङ्गनिर्यासैरप्येवं विधिमाचरेत्।
तण्डुलीयकमूलस्य रसेनापि ततः परम्॥
ततोऽस्मिन्खदिराङ्गारैर्नीते नीतेऽग्निवर्णताम्।
क्षिपेत्पुनः पुनः क्षीरे यथा निश्चन्द्रिकं भवेत्॥

कृष्णाभ्रकको खैरके कोयलोंकी अग्नि पर तपाकर खूब लाल करें और कांजीमें बुझा दें। तदनन्तर उसे कांजी समेत कई दिन तक धूपमें सुखावें और कई बार पीसकर बारीक करें।

इसी प्रकार इस चूर्णको तपाकर लाल करके चांगेरीके स्वरसमें बुझावें और फिर सुखाकर तपाकर चौलाईकी जड़के रसमें बुझावें। तत्पश्चात् उसे खैरकी लकड़ीके अंगारो पर तपा तपाकर अग्निके समान लाल करके दूधमें बुझावें। जब तक वह निश्चन्द्र न हो जाय इसीप्रकार दूधमें बुझाते रहें।

(८९५३) अभ्रकमारणम् (७)

(र. रा. सु.)

धान्याभ्रं गुडतुल्यं च श्रेष्ठं क्षीरेण मर्दितम्।
कुर्यात्सचक्रिकां शुष्कां सम्यग्गजपुटे पचेत्॥
ततो धत्तूर पत्तूर कुमारी शशिवाटिका।
प्रत्येकं स्वरसेनैव पुटादाशुमृतिं व्रजेत्॥

धान्याभ्रकमें समान भाग गुड़ मिलाकर दूधसे घोटें और टिकिया बनाकर सुखा लें तथा शराव सम्पुटमें बन्द करके गजपुटमें पकावें। इसी प्रकार धतूरे, पत्तूर (जल पीपल), घृतकुमारी और पुनर्नवाके रसमें घोट घोटकर पुट दें। (हरबार गुड़

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिलाना चाहिये और पुट लगानेके बाद पानीसे बार बार धोकर गुड़के क्षारको निकाल देना चाहिये।) इस विधिसे शीघ्र ही अभ्रक मर जाता है[1]।

(८९५४) अभ्रकमारणम् (८)

(आ. वे. प्र. । अ. ४; र. रा. सु.)

अथ नागबला भद्रमुस्ता दुग्धं वटस्य च।
यद्वा वटजटातोयं हरिद्रावारिणा पुटेत् ॥
मञ्जिष्ठा क्वाथ तोयेन सर्वैरेभिर्यथाक्रमम्।
पुटितं भावनायोगाच्चरमे पुटने मुहुः ॥
जायते त्वरुणं चाति भस्म वज्राभ्रकोद्भवम् ॥

वज्राभ्रकको नागबला (गंगेरन), नागरमोथा, बड़का दूध या बड़की जड़का रस, हल्दी और मजीठ; इनके रसमें पृथक् पृथक् घोटकर पृथक् पृथक् गजपुट दें। इसी प्रकार बहुतसी पुटें देने से अभ्रककी अत्यन्त लाल भस्म बन जाती है।

(८९५५) अभ्रकमारणम् (९)

(वृ. यो. त. । त. ४१; यो. र.)

धान्याभ्रं मेघनादैःकदलिघनजलैष्टङ्कणाङ्कोलतोयैः
खल्वे सम्मर्द्य गाढं तदनु गजपुटाद्द्वादशैवं प्रदद्यात्।
मीनाक्षीभृङ्गतोयैस्त्रिफलजलयुतैर्मर्दयेत्सप्तवारं
गन्धं तुल्यंच दत्त्वा प्रवरगजपुटात्पञ्चतां याति मेघः

अभ्रं कषायं मधुरं सुशीत-
मायुष्करं धातुविवर्धनं च।
हन्यात्त्रिदोषं व्रणमेहकुष्ठं
प्लीहोदरग्रन्थिविषक्रमींश्च ॥
रोगान्हन्ति द्रढति वपुर्वीर्यवृद्धिं विधत्ते
तारुण्याढ्यं रमयति शतं योषितां नित्यमेव।
दीर्घायुष्काञ्जनयति सुतान्सिंहतुल्यप्रभावान्।
मृत्योर्भीतिं हरति च सदा सेव्यमानं मृताभ्रम् ॥
वयःस्तम्भकारी जरामृत्युहारी
बलारोग्यधारी महाकुष्ठदारी।
नृणां मेघ एकः स योगेषु योज्यः
सदा सूतराजस्य तुल्यो गुणेन ॥

(वृ. यो. त.)

धान्याभ्रकको १-१ दिन चौलाईकी जड़, केले और मोथेके रसमें तथा सुहागेके पानी और अंकोलकी जड़के क्वाथमें घोट घोटकर गजपुट दें। इसी प्रकार १२ पुट दें। तदनन्तर उसमें समान भाग गंधक मिलाकर मछेछीके रसमें घोटकर पुट दें। इसी प्रकार गंधक मिलाकर और मछेछीके रसमें घोट घोट कर सात पुट दें। फिर ७-७ पुट भंगरेके रस और त्रिफलाके क्वाथकी दें। (हरबार गंधकभी मिला लेना चाहिये।)

इस विधिसे अभ्रक मर जाता है।

\+ + + +

अभ्रक कषाय और मधुर सर युक्त, शीतल, आयुवर्द्धक, धातुवर्द्धक तथा त्रिदोष, व्रण, प्रमेह, कुष्ठ, प्लीहोदर, उदर ग्रन्थि, विष और कृमिरोगको नष्ट करनेवाला है।

\+ + + +

१ **निश्चन्द्रं च सुसूक्ष्मं च लोचनाञ्जनसन्निभम्।**
तदामृतमिति प्रोक्तमभ्रकं चान्यथामृतम् ॥

जब अभ्रक निश्चन्द्र और आंखोंके अंजनके समान सूक्ष्म हो जाय तब उसे मृत समझना चाहिये। (र. रा. सु.)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसके नित्य सेवन से समस्त रोग नष्ट होकर शरीर–दृढ़ होता है; वीर्यकी वृद्धि होती और यौवनका विकास होकर नित्य १०० बार स्त्री समागमकी शक्ति प्राप्त होती है।

इसके प्रभाव से अत्यन्त पराक्रमी और दीर्घायु पुत्रोंकी प्राप्ति होती है; रोगजनित मृत्युका भय नहीं रहता; वृद्धावस्था नहीं आती और आयु स्थिर रहती है।

अभ्रक बलवर्द्धक, आरोग्य रक्षक और पारदके समान सर्व रोग नाशक है।

(८९५६) अभ्रकमारणम् (१०)

(र. रा. सु.)

ततो धान्याभ्रकं कृत्वा पिष्ट्वा मत्स्याक्षिकारसैः।
चक्रीं कृत्वा विशोष्याथ पुटं दत्वाभ्रके तथा ॥
देयं पुटं हि षड्वारं पुनर्नवरसैः सह ।
कलांशं टङ्कणेनापि सम्मर्द्य चक्रिकाकृतम् ॥
ऊर्द्धभागे पुटेत्तद्वत् सप्तवारं प्रयत्नतः ।
एवं वासारसेनापि तन्दुलीयरसेन च ॥
प्रपुटेत्सप्तवाराणि पूर्वप्रोक्तविधानतः ॥
एतत्सिद्धं घनं सर्वयोगेषु विनियोजयेत् ॥

धान्याभ्रकको मछेछी के रसमें खरल करके टिकिया बनावें और उन्हें सुखाकर शराव सम्पुटमें बन्द करके गजपुटमें फूक दें। इसी प्रकार ६ पुट दें। तदनन्तर उसमें १६ वां भाग सुहागा मिलाकर पुनर्नवा (बिसखपरा)के रसमें खरल करके पुट दें। इसी प्रकार पुनर्नवाके रसमें सात पुट दें।

इसी प्रकार सात पुट बासाके रसमें और सात पुट चौलाईकी जड़के रसमें दें। इस विधिसे अभ्रकभस्म तैयार हो जाती है।

(८९५७) अभ्रकमारणम् (११)

(१ पुटी भस्म)

(र. रा. सु.)

धान्याभ्रकस्य भागौ द्वौ भागैकं शुद्ध गन्धकम्।
वटक्षीरेण सम्मर्द्य अन्धमूषां निरोधयेत् ॥
पचेद्गजपुटेनैव वारमेकं मृतो भवेत् ॥

२ भाग धान्याभ्रक और १ भाग शुद्ध गंधकको एकत्र मिलाकर बड़के दूधमें खरल करें और टिकिया बनाकर सुखा लें तथा अन्धमूषामें बन्द करके गजपुटमें फूंक दें। इस विधिसे १ ही पुटमें अभ्रक मर जाता है।

(८९५८) अभ्रकमारणम् (१२)

(३ पुटी भस्म)

(र. र. स. । पू. अ. २)

गन्धर्वपत्रतोयेन गुडेन सह भावितम् ।
अधोर्ध्वं वटपत्राणि निश्चन्द्रं त्रिपुटैः खगम् ॥
क्षुधं करोति चात्यर्थं गुञ्जार्धमिति सेवया।
तत्तद्रोगहरैर्योगैः सर्वरोगहरं परम् ॥

अभ्रकमें (समान भाग) गुड़ मिलाकर अरण्डके पत्तोंके रसमें घोटकर टिकिया बनावें और फिर उन्हें सुखाकर बड़के पत्तोंमें लपेटकर गजपुटमें फूंक दें। इस प्रकार ३ पुट देनेसे अभ्रक निश्चन्द्र हो जाता है।

यह अभ्रक भस्म अत्यन्त क्षुधावर्द्धक और योगवाही है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मात्रा—आधी रत्ती।

(हर पुटके बाद पानीसे कई बार धोकर गुड़के क्षारको निकाल देना चाहिये।)

(८९५९) अभ्रकमारणम् (१३)

(४ पुटी भस्म)

(रसरत्नाकर)

धान्याभ्रं टङ्कणं तुल्यं गोमूत्रैस्तुलसीदलैः। बाकुच्याः शूरणैरल्पैर्दिनं पिष्ट्वा पुटे पचेत् ॥ जयन्त्याश्च द्रवैः पश्चान्मर्द्यं मर्द्यं त्रिधा पुटेत्। चतुर्गजपुटैनैवं निश्चन्द्रं सर्वरोगजित् ॥

धान्याभ्रक और सुहागा बराबर बराबर लेकर दोनोंको एकत्र खरल करके १–१ दिन गोमूत्र, तुलसीपत्रके रस, बावचीके रस या क्वाथ और ज़िमिकंद (सूरण)के रसमें घोटकर शराव सम्पुटमें बन्द करके गजपुटमें फूंक दें। तदनन्तर उसे जयन्तीके रसमें घोट घोटकर ३ पुट दें। इस प्रकार ४ पुट देनेसे अभ्रक निश्चन्द्र हो जाता है।

(८९६०) अभ्रकमारणम् (१४)

(१० पुटी भस्म)

(र. र. स. । पू. अ. २; र. रा. सु. ; र. प्र. सु. । अ. ५ ; आ. वे. प्र.)

धान्याभ्रं कासमर्दस्य रसेन परिमर्दितम्। पुटितं दशवारेण म्रियते नात्र संशयः ॥

धान्याभ्रकको कसौंदीके रसमें खरल करके टिकिया बनावें और सुखाकर शरावसम्पुटमें बन्द करके गजपुटमें फूंक दें। इसी प्रकार दस पुट देनेसे अभ्रक अवश्य मर जाता है।

(८९६१) अभ्रकमारणम् (१५)

(६० पुटी भस्म)

(र. र. स. । पू. अ. २ ; र. रा. सु.)

तद्वन्मुस्तारसेनापि तण्डुलीयरसेन च। पीतामलकसौभाग्यपिष्टं चक्रीकृताभ्रकम् ॥ पुटितं षष्टि वाराणि सिन्दूराभं प्रजायते। क्षयाद्यखिलरोगघ्नं भवेद्रोगानुपानतः ॥

अभ्रकमें हरताल, आमले और सुहागेका चूर्ण (अभ्रकका साठवां भाग) मिलाकर नागरमोथेके रसमें खरल करें और टिकिया बनाकर सुखालें तथा शरावसंपुटमें बन्द करके गजपुटमें फूंक दें। इसीप्रकार ३० पुट दें। तत्पश्चात् ३० पुट चौलाईकी जड़के रसमें घोट घोट करदें। (हर बार उपरोक्त तीनों पदार्थ डालते रहना चाहिये।) इस प्रकार ६० पुट देनेसे सिन्दूरके समान लाल भस्म हो जाती है जो अनुपान भेदसे क्षयादि समस्त रोगोंको नष्ट करती है।

(८९६२) अभ्रकमारणम् (१६)

(६० पुटी भस्म)

(र. प्र. सु. । अ. ५.)

एवं मुस्तारसेनापि तण्डुलीयशिवारसैः। टङ्कणेन समं पिष्ट्वा चक्राकारमथाभ्रकम् ॥ षष्टिसङ्ख्यपुटैः पक्वं सिन्दूरसदृशं भवेत्। कुष्ठक्षयादिरोगघ्नमभ्रकं जायते ध्रुवम् ॥

अभ्रकमें (समान भाग) सुहागा मिलाकर नागरमोथेके रसमें खरल करें और टिकिया बनाकर सुखालें तथा शराव–सम्पुटमें बन्द करके गजपुटमें फूंक दें इसी प्रकार मोथेके रसकी २० पुट दें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और फिर २०–२० पुट चौलाईकी जड़के रसकी तथा आमलेके रसकी दें। इस प्रकार कुल ६० पुट देनेसे अभ्रककी सिन्दूरके समान लाल भस्म हो जाती है जो कुष्ठ, क्षयादि रोगोंको नष्ट करती है।

(सुहागा हरबार मिलानेकी आवश्यकता नहीं है सिर्फ १ बार ही मिलाना चाहिए।)

(८९६३) अभ्रकमारणम् (१७)

(सहस्रपुटीभस्म)

(र. रा. सु.)

वज्राभ्रकं कुट्टयित्वा सुखल्वे
गोदुग्धेन तप्ते च सिञ्चनीयम् ।
तल्लोहपात्रे मृदुरग्निपक्वं
घृतेन किञ्चिच्च विलोलयित्वा ॥
शालीविमिश्रेण सुवस्त्रमध्ये
बध्वा दृढं पोटलिकाम्भपात्रे ।
विघृष्य तोयान्तरसंस्थितं तं
धान्याभ्रकं शुद्धं भवेच्च पश्चात् ॥
खल्वे सुरम्ये दृढं घर्षयित्वा
जलं चतुःषष्टि वनस्पतीनाम ।
सूर्यातपे शोष्य दिनान्तकाले
वनोत्पलानां पुटमाचरेच्च ॥
एवं विधं मारितमभ्रकं च
वनस्पतीनां क्रम एवमुक्तम् ।
दुग्धं रवेर्वटदुग्धवज्रि-
कुमारिकानामनिलारितिक्ता ॥
मुस्ता गुडूची विजया त्रिकण्ट-
वर्तािकनी पर्णिद्वयं च गुल्मम् ।
सिद्धार्थको वै खरमञ्जरीणां
वटप्ररोहं अजशोणितं च ॥
बिल्वाग्निमन्थोग्निसतिन्दुकानां
हरीतकीपाटलिकासमूहैः ।
गोमूत्रधात्रीकलिमम्भकुम्भो
तालीसपत्रं च सतालमूली ॥
वृषाश्वगन्धा मुनिभृङ्गराज-
रम्भाजलं सार्द्रमुसप्तपर्णम् ।
धत्तूरलोध्रं च सदेवदारु
वृन्दा सदूर्वा द्रयकासमर्दैः ॥
मरीचकं दाडिम काकमाची
सशङ्खपुष्पी नतनागवल्ली ।
पुनर्नवामण्डूकपर्णिका च
इन्द्रावणी भार्गि च देवदाली ॥
कपित्थलिङ्गीकटुकिंशुकानां
कोषातकीमूषकपर्ण्यनन्ता ।
मीनाक्षिकाकारवितैलपर्णी
कुम्भी तथार्द्रा च शतावरीणाम् ॥
एभिश्च तोयैः स्थितखल्वमध्ये
विघर्षयेच्छुष्कभवं तथैव ।
वनोत्पलानां पुटमग्निशीतं
पुनः पुन खल्वतले विघर्षेत् ॥
एभि क्रियां षोडशवारमेकं
वल्लीजलानां पुटमारभेच्च ।
निश्चन्द्रगोपारुणरङ्गतुल्यं
भस्मं सुधा दिव्यं रसायनं च ॥
नानानुपानैरजरामरं च
शरीरिणां सेव्यमिदं वरिष्ठम् ।
गुणैः सहस्रावधि सेवकानां
समस्तरोगारिरसप्रसिद्धम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वज्रा कको उत्तम खरलमें कूटकर तपाकर गोदुग्धमें बुझावें। तत्पश्चात् उसे दूधसे निकालकर थोड़ा घी मिलाकर लोह पात्रमें मन्दाग्नि पर पकावें जब घी जल जाय तो अभ्रकमें शालीधान मिलाकर कम्बलकी थैलीमें डालें और उसका मुख बन्द करके उसे कांजीसे भरी हुई परात (या बड़े मृत्पात्र)में डालकर हाथोंसे मसलें। इस क्रियासे समस्त अभ्रक कांजीमें आ जायगा। इसे धान्याभ्रक कहते हैं।

अब इस अभ्रकको उत्तम खरल में डालकर निम्नलिखित ओषधियोंके रसमें घोट घोटकर टिकिया बनाकर सुखावें और गजपुटमें फूंकें।

ओषधियोंके नाम-

(१) आकका दूध, (२) बड़का दूध, (३) सेहुंड (थूहर)का दूध, (४) घृतकुमारी (५) अरण्डमूल (६) कुटकी (७) नागरमोथा (८) गिलोय (९) भांग (१०) गोखरु (११) कटेली (१२) शालपर्णी (१३) पृष्ठपर्णी (१४) गठौना (ग्रन्थिपर्ण) (१५) सरसो (१६) चिरचिटा (अपामार्ग) (१७) बड़के अंकुर (१८) बकरीका रक्त (१९) बेल छाल (२०) अरणी (२१) चीता (२२) तेंदु (२३) हर्र (२४) पाटला (पाढल) (२५) गोमूत्र (२६) आमला (२७) बहेड़ा (२८) जलकुम्भी (२९) तालीसपत्र (३०) तालमूली (३१) बासा (३२) असगंध (३३) अगथिया (अगस्ति) (३४) भंगरा (३५) केलेका रस (३६) अदरक (३७) सतौना (३८) धतूरा (३९) लोध (४०) देवदारु (४१) तुलसी (४२) दूब (४३) सफेद दूब (४४) कसौंदी (४५) काली मिर्च (४६) अनारकी छाल (४७) मकोय (४८) शंखपुष्पी (४९) तगर (५०) पान (५१) पुनर्नवा (५२) मण्डूकपर्णी (५३) इन्द्रायण (५४) भरंगी (५५) देवदाली (बिंडाल) (५६) कैथ (५७) शिवलिंगी (५८) कड़वा पटोल (५९) पलाश (ढाक) (६०) तुरई (६१) मूषाकर्णी (६२) अनन्तमूल (६३) मछेछी (६४) कलौंजी (६५) तेलपर्णी (६६) कुम्भी [दन्ती] और (६७) हरी शतावर*

इन ओषधियों में से प्रत्येकके रसमें घोटघोट कर १६-१६ पुट दें।

यह भस्म निश्चन्द्र और इंद्र गोप (बीरबहूटी) के समान लाल रंगकी होगी।

यह अमृतके समान गुणकारी दिव्य रसायन है। यह उचित अनुपानके साथ देनेसे समस्त रोगोंको नष्ट करती है।

(८९६४) अभ्रकमारणम् (१८)

(श्वेताभ्रकभस्म विधिः)

(र. रा. सु.)

अभ्रकं त्रिपलं शुद्धं क्षिपेत्शुक्ते चतुर्गुणे।
चत्वारिंशद्दिनान्येव स्थापयेत्तत्र बुद्धिमान् ॥

*ऊपर श्लोकमें ६४ वनस्पतियोंका उल्लेख किया है। परन्तु नाम ६७ ओषधियोंके लिये हैं। अतः इनमेंसे गोमूत्र और बकरीका रक्त निकाल देना चाहिये क्योंकि ये वनस्पतियां नहीं हैं; इनके नाम छन्दकी मात्रा पूरी करनेके लिये ही लिख मारे प्रतीत होते हैं। इसके अतिरिक्त दो प्रकारकी दूबको एक ही मानना चाहिये। और दोनोंमें से जो मिले वही ले लेनी चाहिये। इस से ६४ संख्या पूरी हो जायगी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पलार्द्धं पारदं शुद्धं पलं बब्बूरजं नवम ।
कुसुमं च समादाय मर्दयेद्भिषगुत्तमः ॥
उभयोर्गुटिकामेकां कृत्वा तत्रैव निःक्षिपेत् ।
दण्डेन चालयेन्नित्यं त्रिदिनं नाधिकं ततः ॥
मर्यादा दिवसे पूर्णे खल्वे क्षिप्त्वा विमर्दयेत् ।
घनत्वमागतं दृष्ट्वा चक्रिकां कारयेद्बुधः ॥
घर्मे संशोष्य विधिना ततो गजपुटे पचेत् ।
पुनः शुक्तान्तरेणैव मर्दयेदेकवासरम् ॥
वन्योत्पलैः पचेदेवं कुर्याद्वारत्रयं ततः ।
भस्मीभूतमिदं खादेद्गुञ्जामात्रं निरन्तरम् ॥
अन्धोपि दिव्यदृष्टिः स्यात्तीव्रो वह्निश्च जायते ।
वातपित्तकफातङ्कान् तथैव रुधिरामयान् ॥
प्रमेहान्नाशयेत्सर्वान्नात्र कार्या विचारणा ।
अतीव पुष्टिजनको व्रणतृट्नाशनं परम् ॥
कुष्ठं प्लीहोदरं ग्रन्थिकृमिक्ष्वेडविनाशनम् ॥*

१५ तोले शुद्ध सफेद अभ्रकको चार गुने सिरकेमें डाल दें। ४० दिन पश्चात् २॥ तोले पारद और ५ तोले बबूलके नवीन फूलोंको एकत्र खरल करके सबकी १ गोली बनावें और उसे उपरोक्त अभ्रकवाले पात्रमें डाल दें। इसे रोज डण्डेसे चला दिया करें। ३ दिन पश्चात् उस सबको खरलमें डालकर घोटें और गाढा होने पर छोटी छोटी टिकिया बनाकर सुखा लें तथा उन्हें शराव सम्पुटमें बन्द करके गजपुटमें फूंक दें। तत्पश्चात् उसे पुनः १ दिन सिरके में घोटकर टिकिया बनाकर सुखा लें और गज पुटमें फूंकदें। इसी प्रकार ३ पुट देनेसे अभ्रककी भस्म हो जायगी।

मात्रा—१ रत्ती।

इसे नित्य सेवन करनेसे अन्धे को भी दिव्य (श्रेष्ठ) दृष्टि प्राप्त हो जाती है। इसके सेवनसे जठराग्नि तीव्र होती और वातज, पित्तज, कफज, तथा रुधिर विकार जनित रोग, प्रमेह, व्रण, तृषा, कुष्ठ प्लीहावृद्धि, उदररोग, ग्रन्थि, कृमि और कर्णक्ष्वेड (कानोंमें बांसरीका सा शब्द होना) का नाश होता है।

यह भस्म अत्यन्त पौष्टिक है।

*र. रा. सु. ग्रन्थके रचयिता श्रीयुत् पं. दत्तराम चौबेजी लिखते हैं कि यह क्रिया अत्यन्त चमत्कृत है और हमारी अनुभव की हुई है इसमें सन्देह नहीं है।

(८९६५) अभ्रकमारणम् (१९)

(रसरत्नाकर)

धान्याभ्रकं द्रवैर्मर्द्यं मत्स्याक्षीतुलसीद्रवैः ।
मूलजैः कोकिलाक्षस्य कुमारीश्वेतदूर्वयोः ॥
व्याघ्रीकन्दपुनर्नव्या दिनमेतैर्विमर्दयेत् ।
कुञ्जराख्यैः पुटैः सप्त पिष्ट्वा पिष्ट्वा पचेत्पुनः ॥
तद्वत्पञ्चामृतैः पाच्यं पिष्ट्वा पिष्ट्वा तु सप्तधा ।
एवं निश्चन्द्रतां याति सर्वरोगेषु योजयेत् ॥

धान्याभ्रकको मछेछीके रसमें घोट कर टिकिया बनावें और उन्हें सुखाकर शराव–सम्पुटमें बन्द करके गजपुटमें फूंक दें। इसी प्रकार मछेछीके रससे घोटकर सात पुट दें। फिर क्रमशः तुलसीके रस, तालमखानेकी जड़के क्वाथ, घृतकुमारीके रस, सफेद दूबके रस, कटेलीकी जड़के रस, और पुनर्नवा के रसमें घोटघोट कर पृथक् पृथक् सात सात पुट दें। तत्पश्चात् पञ्चामृत के साथ घोटघोट कर सात पुट दें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस प्रकार अभ्रककी निश्चन्द्र भस्म बन जाती है।

(**पञ्चामृत**—गिलोय, गोखरु, मूसली, गोरखमुंडी और शतावर सब समान भाग एकत्र मिलाकर क्वाथ बनावें।)

(८९६६) अभ्रकमारणम् (२०)

(र. र.)

पुनर्नवामेघनादद्रवैर्धान्याभ्रकं दिनम्।
मर्द्य गजपुटे पच्यात्पुनश्चिञ्चाथ शूरणैः॥
द्रवैर्मुस्तभवैर्मर्द्य पृथग् देयं पुटत्रयम्।
एवमर्कदलैर्वेष्ट्य देयं वा मोचसम्पुटे॥
निश्चन्द्रं जायते ह्यभ्रं यथादोषेषु योजयेत्॥

शुद्ध अभ्रकको पुनर्नवा, चौलाई, इमली, सूरण (जिमिकंद) और नागरमोथा; इनके रसोंमें घोट घोटकर पृथक् पृथक् ३-३ पुट दें। हरेकके रसमें १ दिन खरल करके टिकिया बनाकर सुखाकर आकके पत्तोंमें या केलेके पत्तोंमें लपेटकर शराव संपुटमें बन्द करके गजपुटमें फूंकना चाहिये। इसी प्रकार हरेक द्रव्यके रसकी ३ पुट देनी चाहियें।

इस विधिसे अभ्रक निश्चन्द्र हो जाता है।

(८९६६ अ) अभ्रकयोगः

अभ्रं मृतमपामार्गरजतं क्षीरिकाद्वयम्।
समं गुञ्जाद्वयं प्रातः प्रातरेनं निषेवयेत्॥
मध्याह्ने भोजनं कार्यं कुष्ठं साध्यं भवेद्ध्रुवम्।
उदुम्बरमहाकुष्ठं यदसाध्यं प्रचक्षते॥
विनिहन्ति बलादेतद्योग्यमात्रानिषेवितम्।
सप्तसप्तकमात्रैश्च दिवसैर्नाशयेत्किल॥
अम्लं वस्तु न चाश्नीयाद्विदाहि च गुरूण्यपि।
जीर्णान्नानि च शस्यन्ते रोगिणे घृतदुग्धकम्॥

अभ्रक भस्म, अपामार्ग (चिरचिटे) का चूर्ण, चांदी भस्म और दो प्रकारकी दुद्धी समान भाग लेकर एकत्र खरल करें।

मात्रा—२ रत्ती।

इसे प्रातःकाल खाकर मध्याह्नमें भोजन करना चाहिये।

इसके सेवनसे असाध्य कहा जाने वाला उदुम्बरनामक महाकुष्ठ भी नष्ट हो जाता है।

इसके सेवन कालमें अम्ल, विदाही और गुरु पदार्थों से परहेज़ करना तथा पुराने चावलोंका भात घी और दूध खाना चाहिये।

(८९६७) अभ्रकरसायनम् (१)

(र. र. स. । पू. अ. २; र. प्र. सु. । अ. ५; र. रा. सु.)

खल्वे पिष्ट्वा तु मतिमान् सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत्।
गालितं वस्त्रखण्डेन घृतेन च परिप्लुतम्॥
भर्जितं दशवाराणि लोहखर्परकेण वै।
अग्निवर्णसमं यावत्तावत्पिष्ट्वा तु भर्जयेत्॥
शुकपिच्छसमं पिष्ट्वा क्वाथे तु वटमूलजे।
ततो विंशतिवाराणि पुटेच्छ्रकरसंज्ञिकैः॥
वराकषायैर्मतिमान् तथा कुरु भिषग्वरः।
नीलीगुञ्जावरापथ्यामूलकेन सुभावयेत्॥
संशुष्कं भक्षयेद्विद्वान् सर्वरोगहरं परम्।
अभ्रसत्वात्परं नास्ति रसायनमनुत्तमम्॥
यदि चेच्छतवाराणि पाचयेत्तीव्रवह्निना।
तदाऽमृतोपमं चाभ्रं देहलोहकरं परम्॥

शुद्ध वज्राभ्रक (अभ्रक सत्व)को बारीक पीसकर कपड़ेसे छान लें और उसे घृतसे चिकना करके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोहेकी कढ़ाईमें डालकर अग्नि पर रक्खें। जब घी जल जाय और अभ्रक अंगारों के समान लाल हो जाय तो और घी डाल दें। इसी प्रकार दस बार घी डालकर जलावें। तदनन्तर जब वह अग्निके समान लाल हो जाय तो अग्निसे नीचे उतारकर (ठंडा करके) उसमें उसके बराबर शुद्ध गंधक डालकर घोटें और फिर बड़की जड़की छालके क्वाथमें खरल करके टिकिया बनाकर सुखालें तथा उन्हें शरावसम्पुटमें बन्द करके वराह पुटमें फूंक दें।

इसी प्रकार हर बार गंधक मिलाकर बड़की जड़की छालके क्वाथमें घोट घोट कर २० पुट दें। इसी प्रकार त्रिफलाके क्वाथ में खरल करके २० पुट दें। (हर बार गंधक भी डालना चाहिये)। तदनन्तर नीलके पंचांगके रस, गुञ्जामूलके रस या क्वाथ, त्रिफलाके क्वाथ और हर्र की जड़के क्वाथकी १-१ भावना देकर सुखाकर सुरक्षित रक्खें।*

यदि इसे उपरोक्त विधिसे १०० पुट दिये जायं तो यह अमृतोपम रसायन हो जाती है और शरीरको अत्यन्त दृढ़ करती है।

अभ्रकसत्व से उत्तम अन्य कोई भी रसायन नहीं है।

(८९६८) अभ्रकरसायनम् (२)

(दिव्याभ्रकरसायनम्)

(र. रे. स. । अ. २ ; र. रा. सु.)

सत्त्वस्य गोलकं ध्मातं सस्यसंयुक्तकाञ्जिके ।
निर्वाप्य तत्क्षणेनैव कुट्टयेल्लोहपारया ॥
सम्प्रताप्य घनस्थूलकणान्निक्षिप्त्वाथ कांजिके ।
तत्क्षणेन समाहृत्य कुट्टयित्वा रजश्चरेत् ॥
गोघृतेन च तच्चूर्णं भर्जयेत्पूर्ववत्त्रिधा ।
धात्रीफलरसैस्तद्वद्धात्रीपत्ररसेन वा ॥
भर्जने भर्जने कार्यं शिलापट्टेन पेषणम् ।
ततः पुनर्नवावासारसैः काञ्जिकमिश्रितैः ॥
प्रपुटेद्दशवाराणि दशवाराणि गन्धकैः ।
एवं संशोधितं व्योमसत्त्वं सर्वगुणोत्तरम् ।
यथेष्टं विनियोक्तव्यं जारणे च रसायने ॥
वेल्लव्योषसमन्वितं घृतयुतं वल्लोन्मितं सेवितं
दिव्याभ्रं क्षयपाण्डुरुग्ग्रहणिकाशूलामकुष्ठामयम् ।
ऊर्ध्वश्वासगदं प्रमेहमरुचिं कासामयं
दुर्धरं मन्दाग्निं जठरव्यथां विजयते योगैर-
शेषामयान् ॥

अभ्रक सत्वकी डलीको अग्नि में रखकर ध्मावें। जब वह अंगारेके समान लाल हो जाय तो उसे चावलोंकी कांजीमें बुझा दें और फिर तुरन्त ही निकालकर लोहेकी मूसलीसे कूट लें। जो बड़े बड़े कण रह जाएं उन्हें फिर इसी प्रकार गरम करके कांजीमें बुझावें और तुरन्त ही कूट लें। इसी प्रकार सम्पूर्ण अभ्रकसत्व का बारीक चूर्ण कर लें।

इस चूर्णमें गोघृत मिलाकर लोहेकी कढ़ाईमें डालकर आग पर रक्खें। जब वह आगके समान लाल हो जाय तो अग्निसे नीचे उतारकर अच्छी तरह पीसें और पुनः घी मिलाकर भूनें। इसी प्रकार ३ बार घी डालकर भूनें। इसी प्रकार ३ बार आमलेका रस या आमलेकी पत्तियोंका रस मिलाकर भूनें। हरबार भूननेके पश्चात् शिलापर पत्थरसे पीसना चाहिये।

---

* र. र. स. के मतानुसार त्रिफला, मुण्डी, भांगरेके पत्ते और बहेड़ेकी जड़के क्वाथकी भावना देनी चाहिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तदनन्तर पुनर्नवा (बिसखपरा) का रस, वासा, (अडूसा) का रस, और कांजी समान भाग लेकर तीनोंको एकत्र मिलाकर उसमें उपरोक्त चूर्णको घोटकर टिकिया बनाकर सुखा लें और उन्हें शराव-सम्पुटमें बन्द करके गज पुटमें फूंक दें। इसी प्रकार इस मिश्रण में खरल करके दश पुट दें। फिर उसमें (समान भाग) गंधक मिलाकर (उपरोक्त मिश्रणमें घोटकर) पुट दें। इसी तरह गंधकके साथ घोट घोट कर १० पुट दें।

इस विधिसे अभ्रकसत्वकी सर्वश्रेष्ठ भस्म होजाती है। इसे रसायन और जारणमें प्रयुक्त करसकते हैं।

इसमेंसे २ रत्ती भस्म वायविडंग और त्रिकुटेके चूर्णके साथ मिलाकर घीके साथ सेवन करने से क्षय, पाण्डु, ग्रहणी विकार, शूल, आम, कुष्ठ, ऊर्ध्व-श्वास, प्रमेह, अरुचि, दुर्जय कास, अग्निमांद्य, और उदररोगोंका नाश होता है।

(८९६९) अभ्रकशोधनम् (१)

(र. प्र. सु. । अ. ५)

क्रमप्राप्तमहं वक्ष्ये गगनं तु चतुर्विधम् ।
श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं परमसुन्दरम् ।
श्वेतं श्वेतक्रियायोग्यं रक्तपीतं हि पीतकृत ॥
कृष्णाभ्रं सर्वरोगाणां नाशनं परमं सदा ।
वज्रं पिनाकं नागं च मण्डूकमभिधीयते ॥
अनेन विधिना प्रोक्ता भेदाः सन्तीह षोडश ।
अभ्राणामेव सर्वेषां वज्रमेवोत्तमं सदा ॥
शेषाणि त्रीणि चाभ्राणि घोरान् व्याधीन् सृजन्ति हि ।
तस्माद्यत्नेन सद्वैद्यैर्वर्जनीयानि नित्यशः ॥

÷ ÷ ÷

वज्राभ्रं धमायमानेऽग्नौ विकृतिं न भजेत् कदा ।
सेवितं तन्मृतिं हन्ति वज्राभं कुरुते वपुः ॥

÷ ÷ ÷

पिनाकं चाग्निसन्तप्तं विमुञ्चति दलोच्चयम् ।
सेवितं चैकमासेन कृमिं कुष्ठं करोत्यलम् ॥

÷ ÷ ÷

नागाभ्रं ध्मापितं सम्यङ्नागवत्स्फूर्जते ध्रुवम् ।
सेवितं तत्प्रकुरुते क्षयरोगसमुद्भवम् ॥
विषं हालाहलं पीतं मारयत्येव निश्चितम् ।
तथा नागाभ्रनामानं सद्वैद्यः कथयत्यलम् ॥

÷ ÷ ÷

मण्डूकाभ्रं प्रकुरुते ताप्यमानं हि नित्यशः ।
क्षणं चाग्नौ न तिष्ठेत मण्डूकसदृशां गतिम् ।
मण्डूकाभ्रं न सेव्यं हि कथितं रसवेदिना ॥

÷ + ÷

मृतं वज्राभ्रकं सम्यक् सेवनीयं सदा बुधैः ।
वलीपलितनाशाय दृढतायै शरीरिणाम् ॥
सर्वव्याधिहरं त्रिदोषशमनं वह्नेश्च संदीपनं
वीर्यस्तम्भविवृद्धिकृत्परमिदं कृच्छ्रादिरोगापहम्।
भूतोन्मादनिवारणं स्मृतिकरं शोफामयध्वंसकं
सद्यःप्राणविवर्धनं ज्वरहरं सेव्यं सदा चाभ्रकम्॥

÷ ÷ ÷

यथा विषं यथा वज्रं शस्त्राग्नी प्राणहा यथा ।
भक्षितं चन्द्रिकायुक्तमभ्रकं तादृशं गुणैः ॥

÷ ÷ ÷

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वेदयेद्दिनमेकं तु काञ्जिकेन तथाभ्रकम् ।
पश्चात्कुलत्थजे क्वाथे तक्रे मूत्रेऽथ वह्निना ॥
पाचितं दोषशून्यं तु शुद्धिमायाति निश्चितम् ।

अभ्रक ४ प्रकारका होता है ; (१) सफेद (२) पीला (३) लाल और (४) सुन्दर कृष्ण वर्ण का । श्वेताभ्रक श्वेत क्रिया (चांदी बनाने) में; लाल और पीला पीतक्रिया (स्वर्ण निर्माण)में और काला औषधों में प्रयुक्त होता है ।

उपरोक्त चारों प्रकारके अभ्रकके ४-४ भेद होते हैं-(१) वज्र (२) पिनाक (३) नाग और (४) मण्डूक । इस प्रकार अभ्रकके १६ भेद हैं ।

उपरोक्त भेदोंमें केवल वज्राभ्रक ही औषधों में प्रयुक्त होता है शेष तीन प्रकारके अभ्रक खानेसे अनेक घोर व्याधियां उत्पन्न होती हैं ।

× × ×

वज्राभ्रकको अग्निमें तपानेसे उसमें किसी प्रकारका परिवर्तन नहीं होता-न वह फूलता है, न कूदता है और न शब्द करता है । इसे सेवन करनेसे शरीर वज्रके समान दृढ़ हो जाता है और (रोगजनित) मृत्यु नहीं होती ।

× × ×

जिस अभ्रकको अग्निमें तपानेसे उसके पत्र अलग अलग हो जाएं उसे "**पिनाक**" कहते हैं । इसे सेवन करने से १ मासमें ही कृमि और कुष्ठ रोग उत्पन्न हो जाते हैं ।

× × ×

नागाभ्रक को अग्निमें तपानेसे सर्पकी फुंकारके समान शब्द होता है । इसे सेवन करनेसे क्षय रोग उत्पन्न होता है । नागाभ्रकको वैद्य हालाहल विषके समान मारक मानते हैं ।

\+ + +

मण्डूकाभ्रक को अग्निमें तपानेसे वह मेंढकके समान बारबार कूदता है और जरा देर भी अग्निमें स्थिर नहीं रहता । रस-विज्ञान-वेत्ता इसे भी असेव्य बतलाते हैं ।

\+ + +

बलि पलित का नाश और शरीरको दृढ़ करने के लिये केवल वज्राभ्रककी उत्तम रीतिसे बनी हुई भस्म ही सेवन करनी चाहिये ।

यह भस्म सर्वरोग-नाशक, त्रिदोषशामक, अग्नि दीपक, वीर्यस्तम्भक तथा वर्द्धक, मूत्रकृच्छ्रादि नाशक, एवं भूतोन्माद, शोथ और ज्वरको नष्ट करनेवाली तथा शीघ्र बलवर्द्धक होती है । इसके सेवनसे स्मृति भी बढ़ती है ।

\+ + +

जो अभ्रकभस्म निश्चन्द्र न हो-जिसमें तनिक भी चमक हो उसे कदापि सेवन न करना चाहिये । वह विष, वज्र, शस्त्र और अग्निके समान घातक होती है ।

अभ्रकको १-१ दिन क्रमशः काञ्जी, कुलथीके क्वाथ, तक्र और गोमूत्रमें पकानेसे वह शुद्ध हो जाता है ।

(८९७०) अभ्रकशोधनम् (२)

(र. र. स. । पू. खं. अ. २ ; यो. र.)

प्रतप्तं सप्तवाराणि निक्षिप्तं काञ्जिकेऽभ्रकम् ।
निर्दोषं जायते नूनं प्रक्षिप्तं वापि गोजले ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभ्रकको तपा तपाकर सात बार कांजी या गोमूत्रमें बुझानेसे वह शुद्ध हो जाता है।

(र. प्र. सु. में केवल कांजी-द्वारा शोधन लिखा है।)

(८९७१) अभ्रक शोधनम् (३)

(आ. वे. प्र. । अ. ४ ; वृ. यो. त. । त. ४१ ; यो. र. ; यो. चि. म. । अ. ७ ; भा. प्र. । पू. खं. ; र. र.)

वज्राभ्रकं धमेद्वह्नौ ततः क्षीरे विनिक्षिपेत् ।
सप्तधा भिन्नपत्रं तत्तण्डुलीयाम्लयोर्द्रवैः ॥
भावयेदष्टयामं तदेवं शुध्यति चाभ्रकम् ॥

वज्राभ्रकको अग्निमें तपाकर दूधमें बुझा दें। इसी प्रकार सात बुझाव देनेके पश्चात् जब उसके पत्र अलग अलग हो जाएं तो उसे चौलाईके रस और कांजीकी ८-८ पहर भावना दें। इस विधिसे अभ्रक शुद्ध हो जाता है।

(८९७२) अभ्रक शोधनम् (४)

(र. रा. सु.)

आदौ सुतापितं कृत्वा गगनं सप्तधा क्षिपेत् ।
निर्गुण्डी स्वरसे सम्यक् गिरिदोषप्रशान्तये ॥

अभ्रकको भली भांति तपा तपा कर सात बार निर्गुंडी के स्वरस में बुझाने से उसके गिरिसंभव दोष नष्ट हो जाते हैं।

(८९७३) अभ्रकशोधनम् (५)

(र. प्र. सु. । अ. ५)

वराक्वाथे तथा दुग्धे गवां मूत्रे तथैव च ।
मार्कवस्य रसेनापि दोषशून्यं प्रजायते ॥

अभ्रकको तपा तपा कर (सात सात बार) त्रिफलाके क्वाथ, गोदुग्ध, गोमूत्र और भंगरेके रसमें बुझानेसे वह शुद्ध हो जाता है।

(८९७४) अभ्रकसत्वनिष्कासनविधिः

(आ. वे. प्र. । अ. ४)

पिण्डीकृतं तु बहुधा महिषीमलेन
संशोष्य कोष्ठगतमाशु धमेद्दृढाग्नौ ।
सत्वं पतत्यतिरसायनजारणार्थं
योग्यं भवेत्सकललोहगुणाधिकं च ॥

× × ×

कणशो यद्भवेत्सत्वं मूषायां मणिधाय तत् ।
मित्रपञ्चकयुगध्मातमेकी भवति घोषवत् ॥
घृतमधुगुग्गुलु गुञ्जाटङ्कणमेतत्तु मित्रपञ्चकं नाम ।
मेलयति सप्तधातूनङ्गाराग्नौ तु धमनेन ॥

× × ×

सत्वमभ्रस्य शिशिरं त्रिदोषघ्नं रसायनम् ।
विशेषात्पुंस्त्वजननं वयसः स्तम्भनं परम् ॥
नानेन सदृशं किञ्चिद्भैषज्यं पुंस्त्वकृत्परम् ।
सत्वसेवी वयः स्तम्भं लभते नात्र संशयः ॥

शुद्धाभ्रकके चूर्णको भैंसके गोबरमें मिलाकर छोटे छोटे गोले बनावें और उन्हें सुखाकर मूषामें रखकर तीव्राग्नि पर धमावें। इस विधि से अभ्रकका जारणयोग्य समस्त लोहों (स्वर्णादि) से श्रेष्ठ सत्व निकल आता है।

× × ×

अभ्रकसत्वके जो कण निकलें उन्हें एकत्रित करके मित्रपंचकके साथ मूषामें रखकर तीव्राग्नि पर धमाने से वे सब मिलकर एक हो जाते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घी, शहद, गूगल, गुंजा और सुहागा; इन पांचोंके योगको '**मित्रपंचक**' कहते हैं। मित्र पंचकके साथ मिलाकर एकाधिक धातुओंको अंगारों (कोयलों)की तीव्राग्नि पर धमाने से वे परस्पर मिलकर एक हो जाती हैं। मित्रपंचक सातों धातुओंको मिलाकर एक कर देता है।

× × ×

अभ्रकसत्व शीतल, त्रिदोषनाशक, रसायन, विशेषतः पुंस्त्व वर्द्धक और आयुको स्थिर करनेवाला है। इसके समान पुंस्त्व शक्ति वर्द्धक अन्य एकभी औषध नहीं है।

(८९७५) अभ्रकसत्वपातनम्

(र. र. स. । पू. अ. २; र. प्र. सु. । अ. ५)

पादांशटङ्कणोपेतं मुशलीपरिमर्दितम् ।
रुन्ध्यात्कोष्ठयां दृढं ध्मातं सत्त्वरूपं भवेद्घनम् ॥

अभ्रकमें चौथा भाग सुहागा मिलाकर मूसलीके रसमें खरल करें और उसे मूषामें बन्द करके तीव्राग्नि में रखकर ध्मावें। इससे अभ्रकका सत्व निकल आता है।

अभ्रकसत्वपातनम्

(शा. सं. । खं. २ अ. ११)

प्र. सं. ३०१ देखिये

(८९७६) अभ्रकसत्वमारणम्

(र. रा. सु.)

सूततुल्यं व्योमसत्वं तयोस्तुल्यं च गन्धकम् ।
कुमारीस्वरसैर्मर्द्य यन्त्रे सैकतके पचेत् ॥
दिनद्वयान्ते सङ्ग्राह्यं भक्षयेन्मासमात्रकम् ।
क्षयं शोषं तथा कासं प्रमेहं चापि दुस्तरम् ।
पाण्डुरोगं च कार्श्यं च जयेच्छीघ्रं न संशयः ॥

पारद और अभ्रकसत्व १-१ भाग तथा शुद्ध गंधक २ भाग लेकर प्रथम पारे और सत्वको खरल करें। जब दोनों मिल जाएं तो उसमें गंधक मिलाकर कज्जली बनावें। इसे घृतकुमारीके रसमें घोटकर सुखाकर (आतशी शीशी में डालकर) २ दिन बालुकायन्त्रमें पकावें। इससे अभ्रकसत्वकी भस्म हो जाती है।

यह भस्म क्षय, शोष, कास, प्रमेह, पाण्डु और कृशता को शीघ्र ही नष्ट कर देती है *।

(८९७७) अभ्रकसत्व-शोधनम्

(आ. वे. प्र. । अ. ४; रसे. चि. म. । अ. ४)

अयोवच्छोधनं तस्य मारणं तद्वदेव तु ।

अभ्रकसत्वका शोधन मारण लोहके समान करना चाहिये।

---

*अभ्रकसत्वके अन्य गुण

(र. प्र. सु. । अ. ५)

मृतं सत्वं हरेन्मृत्युं सर्वरोगविनाशनम् ।
क्षयं पाण्डुं ग्रहणिकां श्वासं शूलं सकामलम् ॥
ज्वरान्मेहांश्च कासांश्च गुल्मान् पञ्चविधानपि ।
मन्दाग्निमुदराण्येवमर्शांसि विविधानि च ॥
अनुपानप्रयोगेण सर्वरोगान्निहन्ति च ।

अभ्रकसत्व की भस्म समस्त रोगोंका नाश करके मृत्युको भी जीत लेती है। यह क्षय, पाण्डु, ग्रहणी, श्वास, शूल, कामला, ज्वर, प्रमेह, खांसी, ५ प्रकारका गुल्म, अग्निमांद्य, उदररोग, अर्श, और अनुपान भेद से समस्त रोगोंको नष्ट करती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८९७८) अमरकलानिधि रसः

(र. प्र. सु. । अ. ८, र. चं.)

मुक्ताफलं विद्रुमकं रसेन्द्रं
गन्धं समांशानि ततो विदध्यात् ।
नद्बीजपूरस्य रसेन मर्दितं
गोलं हि कृत्वा वसनेन वेष्टयेत् ॥
मृदाप्रलिप्तं परिशोषितं च
तच्छरावके सम्पुटयेच्च वह्नौ ।
चूर्णीकृतं वल्लमितं च भक्षितं
स्याद्रोगराजस्य निकृन्तनं हि ॥

मोती भस्म, प्रवाल भस्म,[1] शुद्ध पारद और शुद्ध गंधक समान भाग लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियां मिलाकर जंबीरी नीबूके रसमें घोट कर सबका एक गोला बनावें और उसे कपड़ेमें लपेटकर उस पर मिट्टीका लेप करदें तथा (सुखाकर) शराव सम्पुटमें बन्द करके पुट लगादें। तदनन्तर उसके स्वांग शीतल होने पर औषधको निकालकर पीस लें।

मात्रा—२ रत्ती।

यह रस राजयक्ष्माको नष्ट करता है।

(८९७९) अमृतश्रवा रसः

(र. चं. । पाण्डु.)

अभ्रभस्म रसभस्म गन्धकं ।
लोहभस्म मुसली विवृद्धितः ॥
शाल्मलीजरसतो गुडूचिका- ।
क्राथतश्च परिमर्दयेद्दिनम् ॥

[1] र. चं. में विद्रुम का अभाव है

भावयेच्च त्रिफलार्द्रकन्यका ।
वन्हिशिग्रुजरसैश्च सप्तधा ॥
जायते इह रसोऽमृतश्रवा ।
शुष्कपाण्डुविनिवृत्तिदायकः ॥
द्रामयुग्मपरिमाणतस्त्वियं ।
लेहयेत घृतमाक्षिकान्वितम् ॥
पथ्यमत्र परिभावितं पुरा ।
यत्तदेव विवर्ज्यवर्जितम् ॥
शोफपाण्डुविनिवृत्तिदो भवेत् ।
सेवितस्तु यवबिम्बिकाद्रवैः ॥
नागराह्वजयपालकैः समं ।
वज्रिदुग्धपचितेन सर्पिषा ॥
तक्रभक्तमिह भोजयेदिति ।
स्निग्धमन्नमतिनूतनं त्यजेत् ॥

अभ्रक भस्म १ भाग, पारद भस्म २ भाग, शुद्ध गंधक ३ भाग, लोहभस्म ४ भाग और मूसली ५ भाग लेकर सबको एकत्र खरल करें और फिर १-१ दिन सेंमलकी जड़के रस तथा गिलोयके क्वाथ में घोटें एवं त्रिफलाके क्वाथ, अद्रकके रस, घृतकुमारीके रस, चीतामूलके क्वाथ और सहंजनेकी छालके रसकी ७-७ भावना दें।

इसके सेवनसे शुष्क पाण्डुका नाश होता है।

मात्रा—२ ड्राम

इसे घी और शहदके साथ सेवन करना चाहिये।

जौके क्वाथ और कन्दूरीके रसके साथ सेवन करनेसे यह शोथ और पाण्डुको नष्ट करता है।

इसे खानेके पश्चात् सोंठ, जमालगोटा और सेहुंड (थूहर)के दूधके साथ सिद्ध घृत पीना चाहिये।

पथ्य—तक्र भात। **अपथ्य**— स्निग्ध पदार्थ और नवीन अन्न।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८९८०) **अमृतार्णवरसः** (१)

(र. र. स. । उ. अ. २७)

कृत्वा कण्टकवेध्यानि पलस्वर्णदलान्यथ ।
हिङ्गुहिङ्गुलगन्धाश्मताप्यनीलाञ्जनैः समैः ॥
अष्टांशरसलिप्तानि निक्षिपेदुपले त्र्यहम् ।
कृतं चूर्णमधश्चोर्ध्वं पत्राणां विनिधाय च ॥
शतवारं पुटेत्सम्यक् निरुत्थं भस्म जायते ।
तद्भस्मद्विगुणं सूतं तस्माद्विगुणहिङ्गुलः ॥
तस्माच्च द्विगुणं ताप्यं सर्वमेकत्र मर्दयेत् ।
रसेन मातुलुङ्गस्य निरन्तरदिनद्वयम् ॥
तुषैः पुटत्रयं दद्याद्गोकरीषैः पुटत्रयम् ।
पुटानि दश विंशत्या छगणानां प्रकल्पयेत् ॥
त्रिंशद्भिश्छगणैर्दद्यात्पुटानामथ विंशतिम् ।
तस्मिन्वैक्रान्तजं भस्म निक्षिपेत्पादमात्रया ॥
सर्वमेकत्र सञ्चूर्ण्य भृङ्गराजनिजद्रवैः ।
भावयेत्सप्तवाराणि सिद्ध्यत्येवमयं रसः ॥
श्रीमता नन्दिना प्रोक्तो रसोऽयममृतार्णवः ।
गुञ्जाबीजमितःसिताघृतकणासंयोजितः सेवितः।
कुर्याद् वृष्यमनेकशो वरवधूसन्तोषसंपोषणः ॥
यक्ष्मव्याधिविधूननो गरहरः पर्याप्तदीप्तानलो ।
मूलव्याधिनिवारणः किमपरं सर्वामयध्वंसनः॥
रम्भापक्वफलं घृतं दधिपयः क्षैरेयकं मण्डका ।
बालं तालफलं सिता च पललं सन्तानिका मोदकाः
खर्जूरं वरपानकं च वटकाः पुण्ड्रेक्षवः सारसं ।
गुर्वन्नं पनसं तथा शिखरिणी पथ्यं रसेऽस्मिन्मतम्॥

५ तोले स्वर्णके बारीक कंटकवेधी पत्र लेकर उन पर आठवां भाग (७॥ माशे) शुद्ध पारेका लेप करदें और पत्थरके खरलमें रख छोड़ें। तीन दिन पश्चात् हींग, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध गंधक, स्वर्णमाक्षिक और काला सुरमा बराबर बराबर लेकर बारीक चूर्ण करें और उसमें से ५ तोले ७॥ माशे चूर्ण लेकर उपरोक्त स्वर्ण पत्रोंके ऊपर नीचे रखकर उन्हें शरावसम्पुटमें बन्द करके पुट में फूंक दें। इसी प्रकार १०० पुट लगावें। इससे सोनेकी निरुत्थ भस्म हो जायगी।

(हींग आदिका चूर्ण हरबार नहीं डालना चाहिये नहीं तो ५ तोले स्वर्णमें १०० तोला सुरमेकी भस्म मिश्रित हो जायगी।)

तदनन्तर १ भाग यह भस्म, २ भाग शुद्ध पारद, ४ भाग शुद्ध हिंगुल और ८ भाग स्वर्णमाक्षिक भस्म, लेकर सबको एकत्र मिलाकर निरन्तर २ दिन जम्बीरी नीबूके रसमें खरल करें और टिकिया बनाकर सुखाकर शराव-सम्पुटमें बन्द करके तुषाग्निमें (धानकी भूसीकी आगमें) फूंक दें। इसी प्रकार (नीबूके रसमें घोट घोटकर) तुषाग्निमें ३ पुट दें। फिर ३ पुट गायके गोबरकी अग्निमें दें। तदनन्तर १० पुट २०-२० बनकण्डों (अरने उपलों) की आगमें दें और २० पुट ३०-३० कण्डोंकी दें। (हरबार नीबूके रसमें खरल कर लेना चाहिये।)

तदनन्तर उसमें उसका चौथा भाग वैक्रान्त-भस्म मिलाकर भंगरेके रसकी सात भावना दें। बस अमृतार्णव रस तैयार है। यह रस श्रीमान् नन्दिने बतलाया था।

मात्रा—१ रत्ती।

इसे मिश्री, घी और पीपलके चूर्णके साथ सेवन करना चाहिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह अत्यन्त वृष्य है और इसे सेवन करनेवाला अनेक स्त्रियोंको सन्तुष्ट कर सकता है।

इसके अतिरिक्त यह राजयक्ष्मा, विष, अग्निमांद्य, अर्श, और अन्य अनेक रोगों को भी नष्ट करता है।

पथ्य—केलेका पका फल, घी, दही, दूध, दूधके बने पदार्थ, मण्ड, नवीन ताड़फल, मिसरी, तिलकुट, मलाई, लड्डू, खजूर, उत्तम शरबत, वटक (पेड़े), पौंडा, सरोवरका जल, भारी अन्न, कटहल, और शिखरन।

(८९८१) अमृतार्णवरसः (२)

(र. र. स. । उ. अ. १८)

रसभस्म त्रयो भागा भागैकं हेमभस्मकम्।
सर्वांशममृता सत्त्वं सितामध्वाज्यमिश्रितम् ॥
दिनैकं मर्दयेत्खल्वे माषैकं भक्षयेत्सदा।
कृशानां कुरुते पुष्टिं रसोयममृतार्णवः॥
अश्वगन्धापलार्धं च गवां क्षीरैः पिबेदनु ॥

पारदभस्म ३ भाग, स्वर्ण भस्म १ भाग और गिलोयका सत ४ भाग तथा मिश्री, शहद और घी (१-१ भाग) लेकर सबको एकत्र मिलाकर १ दिन खरल करें।

मात्रा—१ माशा।

इसके सेवनसे कृश व्यक्ति पुष्ट हो जाते हैं।

औषध खानेके पश्चात् २॥ तोले असगंधका चूर्ण गोदुग्धके साथ पीना चाहिये।

(८९८२) अमृतेशरसः

(र. र. रसा. खं. । उपदेश २)

मृतसूताभ्रकं कान्तं विषं तार्प्यं शिलाजतु
तुल्यांशं मधुसर्पिर्भ्यां लिहेद्गुञ्जात्रयं सदा।
षण्मासेन जरां हन्ति जीवेद्ब्रह्मदिनं नरः ॥
अश्वगन्धामूलचूर्णं सप्तभागघृतैः समम्।
भागाष्टकं गुडं तस्मिन् क्षिपेद्भागं च पिप्पलीम् ॥
मृद्वग्निना च तत्सर्वं पिण्डितं भक्षयेत् पलम्।
क्रामकं ह्यमृतेशस्य रसराजस्य सिद्धये ॥

पारद भस्म, अभ्रक भस्म, कान्तलोह भस्म, शुद्ध विष, स्वर्णमाक्षिक भस्म और शिलाजीत समान भाग लेकर सबको एकत्र खरल करें।

मात्रा—१ रत्ती।

इसे शहद और घीके साथ सेवन करनेसे ६ मासमें जरा (वृद्धावस्था) का नाश हो जाता है तथा आयु अत्यन्त दीर्घ हो जाती है।

अनुपान—असगंधका चूर्ण ७ भाग, घी ७ भाग, गुड़ आठ भाग और पीपलका चूर्ण १ भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। इसमेंसे ५ तोला दवा उपरोक्त रस खानेके पश्चात् खानी चाहिये।

(८९८३) अयश्चूर्णादियोगः (१)

(यो. र. । पाण्डुवा.)

अयस्तिलत्र्यूषणकोलभागैः
सर्वैः समं माक्षिकधातुचूर्णम्।
तैर्मोदकः क्षौद्रयुतोऽनु तक्रः
पाण्ड्वामये दूरगतेऽपि शस्तः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोहभस्म, तिल, सोंठ, मिर्च और पीपल १-१ भाग तथा स्वर्णमाक्षिक भस्म सबके बराबर लेकर सबको एकत्र खरल करें और शहदमें मिलाकर गोलियां बना लें।

इन्हें तक्रके साथ सेवन करनेसे पुराना पाण्डु भी नष्ट हो जाता है।

(मात्रा—२-३ रत्ती।)

(८९८४) अयश्चूर्णादियोगः (२)

(वृ. मा. । शूला.)

तीक्ष्णायश्चूर्णसंयुक्तं त्रिफलाचूर्णमुत्तमम् ।
प्रयोज्यं मधुसर्पिर्भ्यां सर्वशूलनिवारणम् ॥

तीक्ष्ण लोह भस्म और त्रिफला (हर्र, बहेड़ा आमले) का चूर्ण समान भाग लेकर एकत्र खरल करें।

इसे घी और शहदके साथ सेवन करनेसे समस्त प्रकारका शूल नष्ट होता है।

(मात्रा—२-३ रत्ती।)

(८९८५) अर्केश्वररसः (१)

(र. रा. सु. । कुष्ठ.)

तालं ताप्यं शिलां सूतं शुद्धं सैन्धवटङ्कणम् ।
सवह्निकं च भृङ्गस्य चूर्णं तुल्यं विमिश्रयेत् ॥
अयमर्केश्वरो नाम्ना सुप्तमण्डलकुष्ठजित् ।
चतुर्गुञ्जं लिहेत्क्षौद्रमनुपानञ्च पूर्ववत् [१] ॥

शुद्ध हरताल, स्वर्णमाक्षिक भस्म, शुद्ध मनसिल, शुद्ध पारद (रस सिन्दूर), सेंधानमक, सुहागेकी खील, चीतामूल और भंगरा, इनके समान भाग चूर्णको एकत्र मिलाकर खरल करें।

मात्रा—४ रत्ती।

इसके सेवनसे सुप्त कुष्ठ और मण्डल कुष्ठका नाश होता है।

इसे शहदके साथ खाकर ऊपरसे शुद्ध गूगल, त्रिफला, और गंधकको अरण्डीके तेलमें घोटकर पीना चाहिये।

(८९८६) अर्केश्वररसः (२)

(र. रा. सु. ; रसे. सा. सं. ; र. चं. । कुष्ठा. ; रसे. चि. म. । अ. ९; वृ. यो. त. । त. ९१)

पलानीशस्य चत्वारि बलेर्द्वादश तावती ।
ताम्रस्य चक्रिका देया रसस्योर्ध्वे शरावकम् ॥
दत्वा विरुद्धभाण्डस्थं पूरयेद्भस्मना दृढम् ।
अग्निं प्रज्वालयेद्यामद्वयं शीतं विचूर्णयेत् ॥
पुटेद्द्वादशधा सूर्यदुग्धेनालोडितं पुनः ।
वरापावकभृङ्गानां[१] द्रवैस्त्रीण्येव भावयेत् ॥
अयमर्केश्वरो नाम्ना रक्तमण्डलकुष्ठजित् ॥

शुद्ध पारद २० तोले और शुद्ध गंधक ६० तोले लेकर कज्जली बनावें और उसे कपड़मिट्टी की हुई अच्छी बड़ी हाण्डीमें भरकर उसके बीचमें ६० तोले शुद्ध ताम्रकी चकरी रख दें तथा उस पर शराव ढककर सन्धिको बन्द करके हाण्डीके शेष भागमें अरने उपलोंकी राख दबा दबाकर भरदें एवं उसे चूल्हेपर चढ़ाकर २ पहरकी अग्नि दें और स्वांगशीतल होने पर निकाल कर ताम्र समेत रसको पीस लें। तदनन्तर उसे आकके दूधमें

१ गुग्गुलं त्रिफलां गन्धं सममेरण्डतैलकम् ।
द्विनिष्कमनुपानं स्याद्रक्तमण्डलकुष्ठजित् ॥

१ वरापावकनिर्गुण्डीति पाठान्तरम्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घोट घोटकर १२ पुट दें और अन्तमें ३-३ दिन त्रिफला क्वाथ, चीतामूल क्वाथ और भंगरेके रसमें खरल करके सुरक्षित रक्खें।

इसके सेवनसे रक्तमंडल कुष्ठ नष्ट होता है।

अर्धनाडीनाटकेश्वरः

(भै. र. । शिरोरोगा.)

नस्य प्रकरणमें देखिये।

अर्धनारीनटेश्वरो रसः

(र. स. क. ; र. का. धे. । ज्वरा)

अंजन प्रकरणमें देखिये।

अर्धनारीश्वरो रसः

अंजन प्रकरण तथा नस्य प्रकरणमें देखिये।

अर्धाङ्गवातारिरसः

(र. चं. । पित्ता.)

प्र. सं. ८१७९ सर्वाङ्ग कम्पारिरस देखिये उस पाठकी प्रथम पंक्ति इस प्रकार होनी चाहिये

मृतं सूतं मृतं तीक्ष्णं मर्दयेत्कटुकिद्रवैः ।

तथा अर्थमें ताम्रकी जगह तीक्ष्णलोह भस्म और त्रिकुटे के स्थानमें कुटकी होनी चाहिये।

(८९८७) अर्शः कुठारो रसः (१)

(र. चं. ; रसे. सा. सं. । अर्शो.)

शुद्धं सूतं द्विधा गन्धं मृतलौहं च ताम्रकम् ।
प्रत्येकं द्विपलं दन्ती व्यूषणं शूरणं तथा ॥
शुभाटङ्कयवक्षारसैन्धवं पलपञ्चकम् ।
पलाष्टकं स्नुहीक्षीरं द्वात्रिंशच्च गवां जलैः ॥
आपिण्डितं पचेदग्नौ खादेन्माषद्वयं ततः ।
रसश्चार्शः कुठारोऽयं सर्वरोगकुलान्तकः ॥

शुद्ध पारा ५ तोले, शुद्ध गंधक १० तोले तथा लोहभस्म, और ताम्रभस्म १०-१० तोले एवं दन्तीमूल, सोंठ, मिर्च, पीपल, सूरण (जिमिकंद), बंसलोचन, सुहागेकी खील, जवाखार और सेंधानमक २५-२५ तोले, स्नुही (थूहर-सेंड) का दूध ८० तोले और गोमूत्र ४ सेर लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर समस्त शुष्क चीजों को एकत्र खरल करनेके पश्चात् सबको एकत्र मिलाकर पकावें और गाढ़ा हो जाने पर २॥-२॥ माशेकी गोलियां बना लें।

इनके सेवनसे समस्त प्रकारका अर्शरोग नष्ट होता है।

(८९८८) अर्शः कुठारो रसः (२)

(वृ. यो. त. । त. ६९ ; यो. र. ; र. रा. सु. ; र. का. धे. । अर्शो. ; यो. त. । त. २३)

भागः शुद्धरसस्य भागयुगलं गन्धस्य लोहाभ्रयोः
षड्बिल्वाग्निदलोषणत्रयरजो[१] दन्ती च भागैः पृथक् ।
पञ्च स्नुः स्फुटटङ्कणस्य च यवक्षारस्य सिन्धूद्भवा
भागाः पञ्च गवां जलं सुविमलं द्वात्रिंशदेतत्पचेत् ॥
स्नुग्दुग्धं च गवां जलाचविंशनैः पिण्डीकृतं तद्भवेद्वौ
माषौ गुदकीलकाननजटाच्छेदे कुठारो रसः ॥

शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गंधक २ भाग, लोहभस्म २ भाग, अभ्रकभस्म २ भाग तथा बेलगिरी, चीतामूल, तेजपात, काली मिर्च, सोंठ, पीपल

१ पाठान्तर—षड्बिल्वाग्निहलोषणाभयरजो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और दन्तीमूल, ६-६ भाग एवं सुहागेकी खील, जवाखार और सेंधानमक ५-५ भाग; गोमूत्र ४ सेर, और सेहुंड (थूहर-स्नुही)का दूध ४ सेर लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर समस्त चीज़ोंके चूर्ण में गोमूत्र और स्नुहीका दूध मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब गाढ़ा हो जाय तो उसे अग्निसे नीचे उतारकर २-२ माशेकी गोलियां बनावें।

इनके सेवनसे अर्शके मस्से समूल नष्ट हो जाते हैं।

(८९८९) अर्शोहररसः

(र. र. ; भन्व. । अर्शो.)

रसवैक्रान्तशुद्धाभ्रकान्तभस्म सगन्धकम्।
तुल्यांशं मर्दयेच्चार्द्रदाडिमोत्थै रसैस्ततः॥
भक्षयेन्माषमेकन्तु अर्शसां नाशनो रसः।
अपामार्गस्य बीजानि वह्नि शुण्ठी हरीतकी॥
मुस्ताभूनिम्बतुल्यांशं सर्वतुल्यं गुडं भवेत्।
कर्षैकं भक्षयेच्चानु जीर्णान्नं भक्तभोजनम्॥

शुद्ध पारद, वैक्रान्त भस्म, अभ्रक भस्म, कान्त लोह भस्म, और शुद्ध गंधक समान भाग लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य चीज़ें मिलाकर सबको अद्रक और अनारके रसमें खरल करके १-१ माशेकी गोलियां बनावें।

(व्यवहारिक मात्रा—१ रत्ती।)

इसके सेवनसे अर्शका नाश होता है।

अनुपान—अपामार्ग (चिरचिटे) के बीज, चीतामूल, सोंठ, हर्र, नागरमोथा और चिरायता समान भाग लेकर चूर्ण बनावें और उसे सबके बराबर गुड़में मिला लें। उपरोक्त रस खानेके पश्चात् इसमेंसे १। तोला (व्यहा. मात्रा ३-४ माशे) औषध खानी चाहिये।

पथ्य—पुराने चावलोंका भात।

(८९९०) अलर्कविषहरगुटिका

(र. सं. क. । उ. ५)

कट्फलाम्बुगिलं कृष्णां हिङ्गुलं बोलटङ्कणम्।
गुडेन गुटिका शाणमिता सा नवमेऽहनि॥
उष्णोदकेन दातव्या सद्योऽलर्कविषापहा।
गरभृङ्गोषणं चूर्ण साज्यं वा तद्विषापहम्॥

कायफल, सुगन्धबाला, बिजौरे नीबूकी जड़की छाल, पीपल, शुद्ध हिंगुल, बोल और सुहागा १-१ भाग तथा गुड़ सबके बराबर लेकर सबके चूर्णको गुड़में मिलाकर ४-४ माशेकी गोलियां बना लें।

पागल कुत्तेके काटनेके नवें दिनसे ये गोलियां उष्ण जलसे देनेसे विष नष्ट हो जाता है।

शुद्ध बछनाग, भंगरा और काली मिर्च समान भाग लेकर चूर्ण बनावें। इसे घीके साथ सेवन करनेसे भी पागल कुत्तेका विष नष्ट हो जाता है।

(८९९१) अश्वगन्धापाकः (१)

(वृ. यो. त. । त. १४७)

सञ्चूर्ण्य तुरगीविदारिमुसलीगोक्षुरकं तत्पृथग्-
द्वयाम्रांशं मृदु पाचितं च
महिषीदुग्धाढके गोघृतम्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वयाम्रं चेक्षुरबीजमर्कटि-
भवं मोचारसं पालिकं
जातीपत्रिलवङ्गजातिफलगं भीरुचतुर्जातकम् ॥
शुक्त्यंशं पृथगत्र केशरजटामांस्यब्धिशोषं तुगा
जाजीग्रन्थिकशोथहात्रिकटुकं धात्रीजलाकल्लकम्।
कङ्कोलोच्चटपद्मबीजचविका कर्षांशचूर्णं पृथग्-
द्विमस्था सितशर्करा मृतरसं कर्षं च मन्दाग्निना ॥
युक्त्या वैद्यवरेण पाचितमिदं
संप्रेक्ष्य सात्म्यं बलं
प्रातः सेवितमौषधं पिचुयुगं दुग्धं तदन्ते पिबेत्।
रोगार्तो जरठोऽपि नित्यमसकृत्कन्दर्पदर्पोद्धतं
रामाणां शतकं विजित्य हि भवेत्तेजःप्रतापोद्धतः ॥
वातं पित्तकफक्षयं च कसनं पाण्डुप्रमेहादिका-
ञ्जित्वा मन्मथकान्तिविग्रहधरः
पाकोऽश्वगन्धाभिधः ॥

असगंध, विदारीकन्द, मूसली और गोखरुका चूर्ण १०-१० तोले लेकर सबको ८ सेर भैंसके दूधमें मन्दाग्नि पर पकावे। जब खोवा (मावा) सा हो जाय तो उसे २० तोले घी में भून लें तथा २ सेर खांडकी चाशनी करके उसमें यह खोवा (मावा) तथा तालमखाना, कौंचके बीज और मोचरस; इनका चूर्ण ५-५ तोला एवं जावित्री, लौंग, जायफल, शतावर, दालचीनी, इलायची, तेजपात और नागकेसर, इनका चूर्ण २॥-२॥ तोले तथा केसर, जटामांसी, समुद्रशोष, बंसलोचन, जीरा, पीपलामूल, पुनर्नवामूल, सोंठ, मिर्च, पीपल, आमला, सुगन्धवाला, अकरकरा, कंकोल, सुईआमला, कमलगट्टा, चव, और पारदभस्म; इनका चूर्ण १-१ तोला मिला दें।

इसमेंसे २॥ तोले औषध प्रातःकाल खाकर ऊपरसे दूध पीना चाहिये।

इसके सेवनसे तीनों दोषोंका शमन तथा खांसी, पांडु और प्रमेहादि रोग नष्ट होते एवं कामशक्ति अत्यन्त बढ़ जाती है। यह रोगपीड़ित वृद्धोंको भी कामोन्मत्त कर देता है।

(८९९२) अश्वगन्धापाकः (२)

(यो. त. । त. ८०)

अश्वगन्धा प्रस्थमेकमजाक्षीरे चतुर्गुणे ।
घृतस्य प्रस्थमादाय खण्डप्रस्थत्रयं तथा ॥
प्रस्थार्द्धांश्च तिलान्माषान्पाचयेन्मृदुवह्निना ।
व्योषत्रिजातहपुषाशताह्वाशतमूलिकाः ॥
दीप्यपौष्करकौ जाती शटी गोक्षुरकं बला ।
यवानी ग्रन्थिकं लोहं नागं शुल्बं पलं पलम् ॥
दत्वा सिद्धेऽत्र विधिवत्प्रातः खादेद्यथाबलम् ।
सर्ववातामयान्हन्ति कटिपृष्ठगुदस्थितान् ॥
अस्थिभङ्गं तथा शोफं सन्धिवातं सुदारुणम् ।
व्रणहृद्रोगगुल्मार्शः श्वासकासप्रमेहनुत् ॥
अश्विभ्यां विहितो योगो वाजीकरणमुत्तमम् ॥

असगंधका चूर्ण १ सेर, छिलके रहित तिलका चूर्ण आधा सेर और उड़दकी छिलके रहित दालका चूर्ण आधा सेर लेकर प्रथम सबको २ सेर घीमें भूनें और फिर उसमें ८ सेर बकरीका दूध तथा ३ सेर खांड मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब अवलेहके समान गाढ़ा हो जाय तो अग्निसे नीचे उतार कर उसमें सोंठ, मिर्च, पीपल, दालचीनी, इलायची, तेजपात, हपुषा, सौंफ, शतावर, जीरा, पोखरमूल, जावित्री, कचूर, गोखरु, खरैटीको

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जड़, अजवायन और पीपलामूल; इनका चूर्ण तथा लोहभस्म, सीसाभस्म और ताम्रभस्म ५-५ तोले डाल कर अच्छी तरह मिला दें।

इसे यथोचित मात्रानुसार प्रातःकाल सेवन करनेसे समस्त प्रकारके वातज रोग नष्ट होते तथा पृष्ठ और गुदस्थित वायु; अस्थिभंग, शोथ, दारुण सन्धिवात, व्रण, हृद्रोग, गुल्म, अर्श, श्वास, कास और प्रमेहका नाश होता है। यह अत्यन्त वाजीकर है। इसका आविष्कार अश्विनीकुमारों ने किया है।

(**मात्रा**—आधेसे १ तोला तक।)

(८९९३) अश्वत्थादियोगः

(यो. र. । क्षयरोगा.)

अश्वत्थवल्कलं चैव त्रिकटुलोहकिट्टकम् ।
गुडेन सह दातव्यं क्षयरोगविनाशनम् ॥

अश्वत्थ (पीपल वृक्ष)की छाल, सोंठ, मिर्च और पीपल; इनका चूर्ण तथा मण्डूर भस्म समान भाग लेकर सबको एकत्र खरल करें।

इसे गुड़के साथ मिलाकर सेवन करनेसे क्षय-रोग नष्ट होता है।

(**मात्रा**—१॥ माशा।)

(८९९४) अहिफेनवटिका

(रसे. सा. सं. ; र. चं. । अतिसारा.)

अहिफेनं सखर्जूरं घृष्ट्वा गुञ्जैकमात्रकम् ।
रक्तस्रावमतीसारमतिवृद्धं विनाशयेत् ॥

(१ तोला) खजूर को पीसकर उसमें १ रत्ती अफीम मिलाकर देनेसे प्रवृद्ध रक्तातिसारका नाश हो जाता है।

(८९९५) अहिफेनादियोगः

(वै. म. र. । पटल ६)

सर्वातिसारान् सहसा जयेदन्यैः किमौषधैः ।
तथाऽहिफेनं सक्षौद्रं तुल्यकारस्करत्वचम् ॥

कुचलेके वृक्षकी छाल का चूर्ण और अफीम बराबर बराबर लेकर एकत्र खरल करें।

इसे शहदके साथ खिलाने से समस्त प्रकारके अतिसार नष्ट होते हैं। इस योग की मौजूदगीमें अतिसारके लिये अन्य किसी भी औषधकी आव-श्यकता नहीं रहती।

(**मात्रा**—आधी रत्ती।)

इत्यकारादिरसप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथाकारादि-मिश्रप्रकरणम्

(८९९६) अगारधूमादिवर्तिः

(यो. र. । उदावर्ता.)

अगारधूमः पिप्पल्यो मदनं सजसर्षपाः ।
गोमूत्रपिष्टाः सगुडा फलवर्तिः प्रशस्यते ॥

घरका धुवां, पीपल, मैनफल और राई समान भाग लेकर चूर्ण बनावें और उसे गोमूत्रमें पीसकर (सबके बराबर) गुड़में मिलाकर (कन उंगलीके समान) बत्तियां बना लें ।

इनमें से एक बत्ती मलमार्गमें रखनेसे उदावर्तका नाश होता है ।

(८९९७) अजगन्धादिपानकम्

(ग. नि. । ज्वरा. १)

अजगन्धा त्रिकटुकं तथैव च हरीतकी ।
पाठा मूर्वा समञ्जिष्ठा विडङ्गं सैन्धवं वचा ॥
एतान् सर्वान् समानीय कल्कपेष्यान् प्रकल्पयेत् ।
तस्यार्धशुक्तिं पूतस्य गव्यमूत्रेण पाययेत् ॥
एतद्धि पानकं श्रेष्ठं कासश्वासनिबर्हणम् ।
सन्निपातभवान् व्याधीन् सद्य एव चिकित्सति ॥

अजगन्धा (बन तुलसी या बन अजवायन), सोंठ, मिर्च, पीपल, हर्र, पाठा, मूर्वा, मजीठ, बायबिड़ंग, सेंधानमक और बच समान भाग लेकर पानीके साथ बारीक पीस लें । इसमें से १। तोले कल्क को गोमूत्रमें मिलाकर पीनेसे कास, श्वास और सन्निपात-विकार शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं ।

(**व्यवहारिक मात्रा**—३-४ माशे ।)

(८९९८) अजमूत्रादियोगः

(यो. त. । त. ७५)

वस्तमूत्रं च सघृतं नवनीतं च माहिषम् ।
पलत्रयं पिबेन्नारी वन्ध्या सूते सुतोत्तमम् ॥

बकरेका मूत्र, घी और भैंसका मक्खन ५-५ तोले लेकर सबको एकत्र मिलाकर सेवन करनेसे बन्ध्या स्त्रीको पुत्र प्राप्ति होती है ।

(८९९९) अजाज्यादिमुखधावनम्

(यो. र. । अरोचका. ; ग. नि. । अरोचका. १३)

अजाजी मरिचं कुष्ठं विडं सौवर्चलं तथा ।
मधुकं शर्करा तैलं वातिके मुखधावनम् ॥
करञ्जदन्तकाष्ठं च विधेयमरुचौ सदा ॥

जीरा, कालीमिर्च, कूठ, बिडलवण, संचल, (काला नमक), मुलैठी और खांड ; इनके समान भाग चूर्ण को एकत्र मिलाकर उसमें थोड़ासा तिलका तेल मिला लें ।

इसे जिह्वा और मुखमें मलकर मुख साफ करनेसे वातज अरुचि नष्ट होती है ।

कञ्जेकी दातौन करनेसे भी अरुचि नष्ट हो जाती है ।

(९,०००) अजीर्णनाशकगणः

(यो. र. । अजीर्णा.)

नारीकेलफलेषु तण्डुलमथ क्षीरं रसाले हितं जम्बीरोत्थरसो घृते
समुचितः सर्पिस्तु मोचाफले ।
गोधूमेषु च कर्कटी हिततमा मांसाशने काञ्जिकं
नारङ्गे गुडभक्षणं प्रकथितं पिण्डालुगं कोद्रवे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पनसे कदलं कदले च घृतं
घृतपाकविधावपि जम्भरसः ।
तदुपद्रवशान्तिकरं लवणं
लवणेषु च तण्डुलवारि परम् ॥
गोधूमे कर्कटिका माषे
तक्रं च मूलकं चणके ।
आमलकं किल मुद्गे दीप्यः
पक्वा तु यावनाले स्यात् ॥
खण्डं च खण्डयति माषभवं ह्यजीर्णं
तैलं कुलत्थजमिति प्रवदन्ति केचित् ।
द्राक्षामुकूलकनिकोचकसेवितं वा
वातामवृन्तफलपाककरं लवङ्गम् ॥
कङ्गुश्यामाकनीवारकोरदूषमकुष्ठकाः ।
दध्ना जलेन जीर्यन्ति काञ्जिकं त्वाढकीं पचेत् ॥
पिष्टान्ने शीतलं वारि कृशरान्ने तु सैन्धवम् ।
माषेण्डर्यां निम्बमूलं मुद्गयूषस्तु पायसे ॥
पटोलवंशाङ्कुरकारवल्ली-
फलान्यलाबूनि बहून् जग्ध्वा ।
क्षारोदकं ब्रह्मतरोर्निपीय
भोक्तुं पुनर्वाञ्छति तावदेव ॥
विपच्यते सूरणको गुडेन
तथाऽऽलुकं तण्डुलकोदकेन ।
पिण्डालुकं जीर्यति कोरदूष-
त्कसेरुपाकः खलु नागरेण ॥
क्षारो जीर्यति तक्रेण तद्रव्यं कोष्णमण्डतः ।
माहिषं माणिमन्थेन शङ्खचूर्णेन तद्दधि ॥
रसाला जीर्यति व्योषात्खण्डं नागरभक्षणात् ।
गुडो नागरमुस्ताभ्यां तथेक्षुश्चाऽऽर्द्रकाशनात् ॥

किस वस्तुका अजीर्ण किस वस्तुसे मिटताहै

अथवा

कौन वस्तु किसके योगसे शीघ्र पचती है

नारियल (खोपरा)का	भातसे
आमका	दूधसे
घृतका	जम्बीरी नीबूके रससे
केलेकी फलीका	घीसे
गेहूं का	ककड़ीसे
मांसका	कांजीसे
नारंगीका	गुड़ से
कोदोंका	पिण्डालु से
बढलका	केले से
जम्बीरी नींबूका	लवणसे
लवणका	चावलोंके धोवनसे
उड़दका	तक्रसे
चनेका	मूलीसे
मूंगका	आमलेसे
मक्काका	अजवायनसे
उड़दका	खांडसे
कुलथीका	तेलसे
द्राक्ष, पिस्ता, अखरोट और बादामका	लवंगसे
कंगनी, श्यामाक, नीवार कोदों और मोठ का	दहीके पानीसे
अरहरका	कांजीसे
पिष्टान्न(पिट्ठी)का	शीतल जल से
खिचड़ी का	सेंधा नमक से
माषेण्डरी (उड़द की पिट्ठा के बड़े आदि)का	निम्बमूल से
दूधका	मूंगके यूषसे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पटोल, बासके अंकुर	
करेला और कद्दूका	पलाशके क्षार जलसे
सूरणका	गुड़ से
आलूका	तण्डुलोदकसे
पिण्डालूका	कोदोंसे
कसेरुका	सोंठसे
क्षारका	तक्रसे
गोतकका	मन्दोष्ण मांडसे
भैंसके तक्रका	सेंधानमकसे
भैंसकी दहीका	शंखकी भस्मसे
रसाला (शिखरन)का	सोंठ मिर्च पीपलके चूर्णसे
मिश्रीका	सोंठसे
गुड़का	सोंठ और नागरमोथे से
ईखका	अद्रक से

(९००१) अपामार्गपुनर्नवायोगौ

(रा. मा. । स्त्रीरोगा. ३)

अपामार्गपत्रद्वयं योनिमध्ये
निविष्टं क्षणाद्योनिशूलं निहन्ति ।
सुकुमारमप्येवमेव प्रयुक्तो
विदध्याद्रसस्तत्र पौनर्नवोऽपि ॥

योनिमें अपामार्गके २ पत्ते रखनेसे या पुनर्नवा का रस योनिमें भरनेसे कष्ट साध्य योनि शूल भी तुरन्त नष्ट हो जाता है ।

(९००२) अपामार्गमूलबन्धनम्

(ग. नि. । ज्वरा.)

अपामार्गस्य मूलं तु मातरक्षालितानन: ।
विषमज्वरनाशाय बध्नीयाद्वामपाणिना ॥

अपामार्ग (चिरचिटे)की जड़को प्रातःकाल मुंह हाथ धोकर बाएं हाथ में बांधनेसे विषम ज्वर नष्ट हो जाता है ।

(९००३) अपामार्गादिक्षारः

(ग. नि. । भगन्दरा. ७)

अपामार्गात्पलाशाच्च कदलीकन्दकात्तथा ।
युगपद्द्रोणमादाय सुविशुद्धस्य भस्मनः ॥
अग्नावत्यन्ततप्तेषु षड्द्रोणेष्वम्भसां पचेत् ।
क्वाथः सपिच्छिलो रक्तः स्वच्छो यावद्वि-
भाव्यते ॥
उष्णमेव समादाय तं वारानेकविंशतिम् ।
गालयित्वा प्रयत्नेन कटाहे कृष्णलोहजे ॥
कुडवद्वयमावाप्य स्वर्जिकायाः पुनः पचेत् ।
निक्षिप्य वह्नौ दग्धायाः शङ्खनाभेः पलाष्टकम् ॥
श्लक्ष्णपिष्टं तु विपचेद्यावत्स्याद्बुद्बुदागमः ।
नातिसान्द्रं न चात्यच्छमवतार्य च तं पुनः ॥
उष्णमेव निदध्याच्च लौह एव हि भाजने ।
भगन्दरेषु चार्शःसु नाडीदुष्टव्रणेषु च ॥
यथाविधि प्रयोक्तव्यो भिषजा सिद्धिमिच्छता ॥

अपामार्ग (चिरचिटा), पलाश (ढाक) और केलेकी जड़ ; इनकी समान भाग मिलित १६ सेर भस्मको अत्यन्त उष्ण १९२ सेर पानीमें डालकर पकावें । जब क्वाथमें पिच्छिलता (चिकनाहट) आ जाए और उसका रंग स्वच्छ लाल हो जाए तो उसे गरम को ही २१ बार छान लें और फिर उसमें ४० तोले सज्जीका चूर्ण तथा ४० तोले शंख-भस्म मिलाकर पुनः कृष्णलोह के पात्र में पकावें । जब उसमें बुलबुले उठने लगें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और न अधिक गाढ़ा हो न पतला रहे तब उतार कर गरम गरम को ही लोहपात्रमें भरकर रख दें।

इसे भगन्दर, अर्श और नाड़ी व्रणमें विधिवत् प्रयुक्त करना चाहिये।

(९००४) अपामार्गादियोगः

(व. से. । स्त्रीरोगा.)

अपामार्गशिफां योनिमध्ये निःक्षिप्य धार्य्यते।
सुखं प्रसूयते नारी भेषजस्यास्य योगतः ॥

प्रसवके समय अपामार्ग (चिरचिटे) की जड़को योनिमें रखनेसे सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

(९००५) अरणीक्षारयोगः

(ग. नि. । शोथा. ३३)

अरणीक्षारसम्मिश्रं तोयं क्वथितशीतलम्।
त्रिदिनं पानतोऽभ्यङ्गाच्छोफं हन्त्युदरोद्भवम् ॥

अरनीका क्षार मिलाकर पकाकर ठंडा किया हुवा पानी पीने तथा उसीकी मालिश करनेसे ३ दिनमें उदरशोथ नष्ट हो जाता है।

(९००६) अर्काङ्कुरादियोगः

(व. से. । कर्णरोगा.)

अर्काङ्कुरानम्लपिष्टांस्तैलाक्तांल्लवणान्वितान्।
सन्निसाध्यात्स्नुहीकाण्डे कोरिते तच्छदावृते ॥
पुटपाकक्रमात्स्विन्नं पीडयेदारसागमात्।
सुखोष्णं तद्रसं कर्णे दापयेच्छूलशान्तये ॥

आकके अंकुरों में थोड़ासा सेंधानमक मिलाकर कांजीके साथ पीसें और फिर उसमें तेल मिलाकर लुगदी सी बना लें। तदनन्तर सेहुंड (थूहर) के डंडेको एक तरफसे खोखला करें और उसमें वह लुगदी भरकर उसके मुंहको उसीके (थूहरके) कटे हुवे टुकड़ेसे बन्द करके उसपर कपड़मिट्टी करके कण्डोंकी अग्निमें पकावें। जब ऊपर की मिट्टीका रंग लाल हो जाय तो उसमेंसे वह लुगदी निकाल कर उसे कपड़ेमें रखकर निचोड़ें। इससे जो रस निकले उसे मन्दोष्ण करके कानमें डालनेसे कर्णशूल नष्ट होता है।

(९००७) अर्शोनाशकयोगः

(र. र. स. । उ. अ. १५)

देवदाल्याः कषायेण ह्यर्शोघ्नं शौचमाचरेत्।
गुदनिःसरणं चापि शान्तिं चायाति नान्यथा ॥

देवदाली (बिंडाल) के कषायसे शौच करनेसे (मलमार्ग धोनेसे) अर्श तथा गुदनिःसरण (काच निकलना) को आराम हो जाता है।

(९००८) अर्शोहरयोगः

(र. र. स. । उ. अ. १५)

पीलुतैलेन संलिप्ता वर्तिका गुदमध्यगा।
घातयत्यर्शसां शीघ्रं सकलां वेदनां तथा ॥

रूईकी बत्तीको पीलुके तैलमें भिगोकर गुदामें रखनेसे अर्श और उसकी वेदना नष्ट हो जाती है।

(९००९) अश्वगन्धाक्षीरम्

(ग. नि. । वन्ध्या. ५)

अश्वगन्धाकषायेण क्वथितं शीतलं पयः।
पीत्वा कान्तं समाश्लिष्य ऋतौ वन्ध्या प्रसूयते ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असगन्धके क्वाथके साथ दूध पकाकर ठंडा करके (कुछदिन) पीनेके पश्चात् ऋतु कालमें (ऋतुधर्मकी समाप्ति पर) पति समागम करने से वन्ध्या गर्भ धारण कर लेती है ।

(९०१०) अष्टगुणमण्डः

(शा. सं. । खं. २ अ. २ ; यो. त. । त. १८)

धान्यत्रिकटुसिन्धूत्थमुद्गतण्डुलयोजितः ।
भृष्टश्च हिङ्गुतैलाभ्यां स मण्डोऽष्टगुणः स्मृतः ॥
दीपनः प्राणदो बस्तिशोधनो रक्तवर्धनः ।
ज्वरजित् सर्वदोषघ्नो मण्डोऽष्टगुण उच्यते ॥

मूंग और चावलों को एकत्र मिलाकर १४ गुने पानीमें पकावें और मूंगके भली भांति पक जाने पर उसमें धनिया, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, और सेंधानमकका चूर्ण (स्वाद योग्य) डाल दें तथा मांडको छानकर उसे हींग और तेलसे बघार दें ।

यह मंड अग्निदीपक, बलवर्द्धक, बस्तिशोधक, रक्तवर्द्धक, ज्वरनाशक और त्रिदोष हर है ।

(९०११) अष्टवर्गः

(शा. सं. । खं. २ अ. ६ ; भै. र. ; यो. त. । त. १८)

द्वे मेदे च काकोल्यौ जीवकर्षभकौ तथा ।
ऋद्धिवृद्धी च तैः सर्वैरष्टवर्ग उदाहृतः ॥
अष्टवर्गो बुधैः प्रोक्तो जीवनीयसमो गुणैः ॥

मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि और वृद्धि ; इनके समूहको अष्टवर्ग कहते हैं । इसके गुण जीवनीय गणके समान हैं ।

इत्यकारादिमिश्रप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आ

अथाकारादिकषायप्रकरणम्

(९०१२) आटरूषकादिकषायः

(ग. नि. । कास। १०)

आटरूपकलघुकण्टकारिका
देवदारु च विभीतनागरम् ।
पक्वमाद्यमिदमेव पिप्पली-
कुष्ठचूर्णसहितं च कासजित् ॥

वासा (अडूसा), छोटी कटेली, देवदारु, बहेड़ा और सोंठ समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

इसमें कूठ और पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे कासका नाश होता है।

(९०१३) आम्रत्वक्पुटपाकः

(वै. म. र.। पटल ६)

रसो निहन्त्यतीसारमाम्रत्वक्पुटपाकजः ।
तैलेन युक्तो रक्ताढ्यं सबलासं सनिःस्रवम् ॥

आमकी ताजी छालको कूटकर केले या बड़के पत्तोंमें लपेट कर गोला बनावें और उसे कुशादिसे बांधकर उस पर मिट्टीका लेप करके कण्डोंकी आगमें रखकर पकावें। जब ऊपरकी मिट्टी लाल हो जाए तो आमकी छालको निकाल कर कपड़ेमें बांधकर रस निचोड़ें।

इसमें तेल मिलाकर पीनेसे रक्त युक्त और कफ प्रधान अतिसारका नाश होता है।

(मात्रा—१ तोला।)

(९०१४) आम्रादिफाण्टः

(शा. सं.। खं. २ अ. ३)

आम्रजम्बूकिसलयैर्वटशुङ्गप्ररोहकैः ।
उशीरेण कृतः फाण्टः सक्षौद्रो ज्वरनाशनः ॥
पिपासाच्छर्द्यतीसारान् मूर्च्छां जयति दुस्तराम् ॥

आमकी कोंपल, जामनकी कोंपल, बड़के अंकुर और खस समान भाग लेकर फाण्ट बनावें।

इसमें शहद मिलाकर पीनेसे ज्वर, प्यास, छर्दि, अतिसार, और दुस्तर मूर्च्छाका नाश होता है।

(९०१५) आरग्वधादिक्वाथः (१)

(हा. सं.। स्थान ३ अ. ४२)

आरग्वधो धातकी कर्णिकार
धवार्जुनैः सर्जककिंशुकानाम् ।
कदम्बनिम्बैः कुटजाटरूषैः
खदिरेण युक्ताश्च तथैव मूर्वा ॥
मूलानि चैषामुपहृत्य सम्यक्
अष्टावशेषः क्वथितः कषायः ।
घृतेन तुल्यं प्रतिमानमस्य
निहन्ति सर्वाणि शरीरजानि ॥
कुष्ठानि सर्वाणि विसर्पदद्रु—
विचर्चिकां हन्ति नरस्य शीघ्रम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमलतास, धाय, कर्णिकार (छोटा अमलतास), धव, अर्जुन, सर्ज (रालका वृक्ष), पलास, कदम्ब, नीम, कुड़ा, बासा (अडूसा), खैर और मूर्वा; इनकी जड़ें समान भाग लेकर आठ गुने पानीमें पकावें और आठवां भाग रहने पर छान लें। इसमें घी मिलाकर पीनेसे कुष्ठ, विसर्प, दद्रु और विचर्चिकाका शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(९०१६) आरग्वधादिक्वाथः (२)

(ग. नि. । ज्वरा.)

आरग्वधो मुष्ककश्च मदनः स्वादुकण्टकः।
सप्तपर्णस्तथोशीरं शिरीषः खदिरास्नौ ॥
वत्सकः प्रग्रहो मूर्वा नक्तमालो वितुन्नकः।
पटोलपिचुमन्दौ च हरिद्रा कटुरोहिणी ॥
त्रिफला देवकाष्ठं च भद्रमुस्तं निदिग्धिका।
एतान्याहृत्य तुल्यानि कषायमुपसाधयेत् ॥
तं कषायं पिबेद्युक्त्या सन्निपातोद्भवे ज्वरे।
कासे श्लेष्मप्रसेके च श्वयथावरुचौ तथा ॥

अमलतासका गूदा, मुष्कक (मोखावृक्ष)की छाल, मैनफल, गोखरु, सतौनेकी छाल, खस, सिरसकी छाल; खैरसार, असना वृक्षकी छाल, इन्द्रजौ, छोटे अमलतासकी छाल, मूर्वा, करंज-धनिया, पटोल नीमकी छाल, हल्दी. कुटकी, त्रिफला, देवदारु, नागरमोथा और कटेली समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

यह क्वाथ सन्निपात ज्वर, खांसी, कफ प्रसेक शोथ और अरुचिको नष्ट करता है।

(९०१७) आरग्वधादिक्वाथः (३)

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ३२)

आरग्वधफलगर्भं दुरालभा धान्यकशतावर्यः।
पाषाणभेदपथ्याक्वाथोऽयं मूत्रकृच्छ्रे स्यात् ॥

अमलतासका गूदा, धमासा, धनिया, शतावर, पाषाणभेद (पखानभेद) और हर्र समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

यह क्वाथ मूत्रकृच्छ्रको नष्ट करता है।

(९०१८) आर्द्रकस्वरसः

(शा. सं. । खं. २ अ. १)

आर्द्रकस्वरसः क्षौद्रयुक्तो वृषणवातनुत्।
श्वासकासारुचीर्हन्ति प्रतिश्यायं व्यपोहति ॥

अदरकके स्वरसमें शहद मिलाकर पीनेसे अण्डकोषोंकी वायु, श्वास, कास, अरुचि और प्रतिश्यायका नाश होता है।

(**मात्रा**—३ माशेसे ६ माशे तक।)

(९०१९) आर्द्रकादिस्वरसः

(वृ. मा. । कर्णा.)

आर्द्रकमूर्धावर्तकसौभाञ्जनमूलमूलकस्वरसाः।
मधुसैन्धवतैलयुताः पृथगुष्णाः कर्णशूलहराः ॥

अदरक, हुलहुल, सहंजनेकी जड़ और मूली इनमेंसे किसीके भी स्वरसमें शहद, सेंधा नमक और तेल मिलाकर उष्ण करके कानमें डालनेसे कर्ण शूल नष्ट होता है।

इत्याकारादिकषायप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथाकारादिचूर्णप्रकरणम्

(९०२०) आकारकरभादिचूर्णम्

(शा. सं. । खं. २. अ. ६ ; न. मृ. । त. ३ ; वै. र. । वाजीकरणा. ; यो. चि. म. । अ. ३ ; भा. प्र. । म. ख. २ वाजीकरणा.)

आकारकरभः शुण्ठी कङ्कोलं कुङ्कुमं कणा ।
जातीफलं लवङ्गं च चन्दनं चेति कार्षिकान् ॥
चूर्णानि मानतः कुर्यादहिफेनं पलोन्मितम् ।
सर्वमेकीकृतं सूक्ष्मं माषैकं मधुना लिहेत् ॥
शुक्रस्तम्भकरं चूर्णं पुंसामानन्दकारकम् ।
नारीणां प्रीति जननं सेवेत निशि कामुकः ॥

अकरकरा, सोंठ, कंकोल, केसर, पीपल, जायफल, लौंग और सफेद चन्दन; इनका चूर्ण १।-१। तोला तथा अफीम ५ तोले लेकर सबको एकत्र खरल करके रक्खें।

मात्रा—१ माशा।

इसे रातको शहदके साथ सेवन करनेसे शुक्रस्तम्भन होता और स्त्री समागममें विशेष आनन्द आता है।

(१ माशामें आधामाशा अफीम आती है अतः समझ बूझकर खाना चाहिये।)

(९०२१) आभादिचूर्णम्

(व. से. । रसायना.)

आभाश्च सोमराजीश्च सममागविचूर्णिताम् ।
नरःक्षीरेण संपीत्वा स कृशः स्थूलतां व्रजेत् ॥
देहकम्पे च शोषे च योगमेतत् प्रयोजयेत् ।
मासमात्रोपयोगेन मतिमाञ्जायते नरः ॥
मेधावी स्मृतिमांश्चैव वलीपलितनाशनः ॥

बबूलकी फली, और बाबचीके बीज समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे दूधके साथ पीनेसे कृश व्यक्ति स्थूल हो जाता है।

यह चूर्ण शरीरकम्प और शोष में भी उपयोगी है। इसे १ मास तक सेवन करनेसे बुद्धि, मेधा और स्मृतिकी वृद्धि होती तथा वलि पलितका नाश हो जाता है।

(**मात्रा**—१॥-२ माशा।)

(९०२२-२४) आमलकयोगाः

(रा. मा. । रसायना. ३२)

मासमामलकचूर्णमश्नतः
साज्यमाक्षिकतिलैर्विमिश्रितम् ।
वाक्प्रवृत्तिरचिरात्प्रजायते
कान्तिमच्च नवयौवनं वपुः ॥
घृतामलकशर्करातिलपलाशबीजानि यः
समानि शयनस्थितो मधुयुतानि खादेन्निशि
वलीपलितवर्जितस्तरुणनागतुल्यो बले
बृहस्पतिसमः पुमान्
भवति सोऽचिरेण ध्रुवम् ॥
चूर्णमामलकजं पयसा
सर्पिषाऽथ मधुनाऽथवा निशि ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीयमानमुदराग्निनासिका-
श्रोत्रनेत्रबलयौवनप्रदम् ॥

आमले और तिलोंके समान भाग मिश्रित चूर्णको एक मास तक घी और शहदके साथ सेवन करनेसे वाणि, कान्ति और यौवनकी वृद्धि होती है।

आमला, खांड, तिल और पलाश (ढाक)के बीज १-१ भाग लेकर चूर्ण बनावें तथा उसमें १ भाग घी मिलालें। इसे रात्रिको शैया पर जानेके बाद शहदके साथ सेवन करनेसे बलि पलितका नाश होता और तारुण्यकी वृद्धि होती है। शरीरमें हाथीके समान बल आ जाता है और बुद्धि बृहस्पतिके समान हो जाती है।

रात्रिको पानीके, घीके या शहदके साथ आमलेका चूर्ण सेवन करनेसे जठराग्नि तथा नासिका श्रोत्र और नेत्रोंका बल बढ़ता और यौवन प्राप्त होता है।

(९०२५) आमलकादिचूर्णम् (१)

(रा. मा. कुष्ठा. ८ ; ग. नि. । कुष्ठ. ३६)

यः प्रातरामलकनिम्बदलानि लेढि
चूर्णीकृतान्यनुदिनं प्रविमुक्ततन्द्रः ।
शीर्णाङ्घ्रिपाणिरवगाढतमोऽपि कुष्ठ-
रोगेण कैरपि दिनैः प्रविमुच्यतेऽसौ ॥

आमला और नीमके पत्ते समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे प्रातःकाल (शहदके साथ) चाटनेसे भयंकर गलित कुष्ठ भी कुछ दिनोंमें ही नष्ट हो जाता है।

(९०२६) आमलकादिचूर्णम् (२)

(ग. नि. । परिशि. चूर्णा.)

धात्री भागैकमुक्तं च पथ्या भागत्रयं तथा ।
कणाभागत्रयं चैव द्वौ भागौ चित्रकस्य च ॥
भागैकं सैन्धवस्यैतच्चूर्णमामलकादिकम् ।
क्षुधाकरमिदं चूर्णं मन्दाग्निं विनिवारयेत् ॥

आमला १ भाग, हर्र ३ भाग, पीपल ३ भाग चीतामूल २ भाग और सेंधा नमक १ भाग लेकर चूर्ण बनावें।

यह चूर्ण अग्निमांद्यको नष्ट करके क्षुधावृद्धि करता है।

(मात्रा-१॥-२ माशा । अनुपान-उष्ण जल)

(९०२७) आमलक्यादिचूर्णम् (१)

(च. द. । रसा. ६५)

धात्रीचूर्णस्य कंसं स्वरसपरिगतं
क्षौद्रसर्पिः समांशं
कृष्णा मानी सिताष्टप्रसृतयुतमिदं
स्थापितं भस्मराशौ ।
वर्षान्ते तत्समश्नन्भवति विपलितो
रूपवर्णप्रभावै-
र्निर्व्याधिर्बुद्धिमेधास्मृतिबलवचन-
स्थैर्यसत्वैरुपेतः ॥

४ सेर आमलेके चूर्णको उसीके स्वरसकी अनेक भावनाएं देकर उसमें ४-४ सेर घी तथा शहद और आधासेर पीपलका चूर्ण तथा १ सेर खांड मिलाकर (मृत्पात्रमें भरकर वर्षा ऋतुसे पूर्व)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राखके ढेरमें दबा दें और वर्षा बीत जाने पर निकाल-कर सेवन करें।

इसे सेवन करनेसे वलि पलितका नाश होता तथा रूप, वर्ण, प्रभाव, बुद्धि, मेधा, स्मृति, बल, वाणि, स्थैर्य और साहसकी वृद्धि होती एवं आरोग्य प्राप्त होता है।

(मात्रा—१ तोला)

(९०२८) आमलक्यादिचूर्णम् (२)

(वैद्यामृत । वि. १२)

दुग्धप्रयुक्तामलकिं नराणां
नष्टस्वराणां सुखमातनोति ।
यथामृगाक्षीसुरतं नराणां
कन्दर्पदर्पप्रतिपीडितानाम् ॥

आमलेके चूर्णको दूधके साथ पीनेसे स्वरभंग मिट जाता है।

(मात्रा—३ माशा ।)

(९०२९) आरोग्यलवणम् (१)

(ग. नि. । गुटिका.)

पलानि दश वारुण्याः स्नुकाण्डात्पलविंशतिः ।
शतं सिंहीफलानां तु कुमार्याश्च पलद्वयम् ॥
अर्कपत्रशतं चैकं शतं पूतीकपत्रकात् ।
महिषाख्यात्पाणिमानीं रसोनात्पलपञ्चकम् ॥
पलानि पञ्च सिन्धुत्थाच्चिरबिल्वत्वचस्तथा ।
सौवर्चलात्तथा त्रीणि व्योषात्पञ्च पलानि च ॥
पलद्वयं तु काचस्य सामुद्रलवणाद्दश ।
पलमेकं बिडाख्यस्य कुडवं दरकृष्णतः ॥
यवान्याश्चाजमोदायाः पलार्धं तु पृथक् पृथक् ।
रामठस्य पलं चैकं पलैकं जीरकद्वयात् ॥
कुडवं राजिकायाश्च प्रस्थार्धं चित्रकस्य च ।
सर्वमेकत्र संयोज्य कुट्टयित्वा उलूखले ॥
प्रस्थार्धं चार्कदुग्धस्य मानीं सर्षपतैलतः ।
एकत्र मिलितं कृत्वा चान्तर्धूमं ततो दहेत् ॥
मस्तुना तं पिबेत्क्षारं कर्षार्धं कर्षमेव वा ।
गुल्मं शूलं तथानाहमरुचिं पाण्डुतां तथा ॥
हृद्रोगं ग्रहणीदोषमर्शोजीर्णं विषूचिकाम् ।
अष्ठीलामूर्ध्ववातं च वातकुण्डलिकां तथा ॥
मूत्रग्रन्थिं प्रतिश्यायं कासं श्वासं तथाऽश्मरीम् ।
प्लीहानमामदोषांश्च वातश्लेष्मोद्भवान् गदान् ॥
हन्यादारोग्यलवणं सम्यस्याग्नेश्च दीपनम् ॥

इन्द्रायणकी जड़ ५० तोले, स्नुही (सेंड-थूहर)का डंडा १०० तोले, कटेलीके फल १००, घृत कुमारी (ग्वार पाठा) १० तोले, आकके पत्ते १००, करञ्ज (कण्टक करंज) के पत्ते १००, भैंसिया गूगल १ सेर, लहसन २५ तोले, सेंधा नमक २५ तोले, करञ्जकी छाल २५ तोले, संचल (काला नमक) १५ तोले, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल) २५ तोले, काच लवण (कचलोना) १० तोले, सामुद्र लवण ५० तोले, बिड लवण ५ तोले, शंख २० तोले, काली मिर्च २० तोले, अजवायन २॥ तोले, अजमोद २॥ तोले, हींग ५ तोले, जीरा ५ तोले, काला जीरा ५ तोले, राई २० तोले और चीतामूल ४० तोले लेकर सबको एकत्र मिलाकर ओखलीमें कूटें और फिर उसमें ४० तोले आकका दूध तथा ४० तोले सरसोंका तेल मिलाकर (मिट्टीके) पात्रमें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भरकर उसका मुख बन्द करदें और चूल्हे पर चढ़ाकर सब चीजोंकी भस्म बना लें।

इसे मस्तुके साथ १ कर्ष (१। तोला) या आधा कर्षकी मात्रानुसार सेवन करनेसे गुल्म, शूल, अफारा, अरुचि, पाण्डु, हृद्रोग, ग्रहणी विकार, अर्श, अजीर्ण, विसूचिका, अष्ठीला, ऊर्ध्व वात, वातकुण्डलिका, मूत्रग्रन्थि, प्रतिश्याय, कास, श्वास, अश्मरी, प्लीहा, आमदोष और वातज तथा कफज रोगोंका नाश होता एवं अग्नि दीप्त होती है।

(व्यवहारिक मात्रा—१ माशा।)

(९०३०) आरोग्यलवणम् (२)

(ग. नि. । गुल्मा. २५)

त्र्यूषणं पिप्पलीमूलं शठी भृङ्गी दुरालभा ।
द्वौ क्षारौ पञ्चलवणं समभागानि चूर्णयेत् ॥
सन्नीय चूर्णं लवणैः शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ।
तदग्निवर्णं निर्धूमं चूर्णं कृत्वा सुशीतलम् ॥
अङ्गुलग्रहमालोड्य सुरामण्डेन पाययेत् ।
मस्त्वारनालमूत्रैस्तु युक्तं स्याद्वातगुल्मजित् ॥
शूलवातोदरप्लीहपाण्ड्वामयकिलासजित् ।
हन्यादारोग्यलवणं प्रशस्तं कफवातनुत् ॥

सोंठ, मिर्च, पीपल, पीपलामूल, कचूर, काकड़ासिंगी, धमासा, जवाखार, सज्जीखार और पांचों नमक (सेंधा नमक, काला नमक, बिडलवण, सामुद्र लवण, और उद्भिद् लवण) समान भाग लेकर सबको एकत्र कूट कर मृत्पात्रमें भर करे मन्दाग्नि पर पकावें। जब धुवां निकलना बन्द हो जाए और समस्त चूर्ण अग्निके समान लाल हो जाए तो उसे ठंडा होने पर बारीक पीस लें।

इसमें से एक चुटकी चूर्ण सुरामण्ड, मस्तु, आरनाल या गोमूत्रके साथ खानेसे वात गुल्म, शूल, वातोदर, प्लीहा, पाण्डु, किलास कुष्ठ और कफवायुका नाश होता है।

(९०३१) आरोग्यवटिका (चूर्णम्)

(व. से. । गुल्मा.)

अपामार्गपलाशानां तथैवेक्षुरसस्य च ।
स्नुह्यर्कयोर्मातुलुङ्गकुटजस्याग्निकस्य च ॥
तिलसर्षपमूलानि दग्ध्वा भस्मानि कारयेत् ।
गोजाविण्मूत्रसहितं सर्पिस्तैलसमन्वितम् ॥
त्र्यूषणं पिप्पलीमूलं चित्रकं शुष्कमूलकम् ।
मूर्वामतिविषां पाठां कुष्ठं भल्लातकानि च ॥
चव्यं पूतिकरञ्जञ्च बिल्वं कटुकरोहिणीम् ।
द्वौ क्षारौ पञ्चलवणं समभागानि कारयेत् ॥
सन्नीय चूर्णलवणैः शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ।
तदग्निचूर्णं निर्धूमं कृत्वा चूर्णं सुशीतलम् ॥
अङ्गुलिग्रहमालोड्य सुरामण्डेन पाययेत् ।
मस्त्वारणालमूत्रैस्तु युक्तः स्याद्वातगुल्मनुत् ॥
शूलवातोदरप्लीहपाण्ड्वामयकिलासकम् ।
हन्यादारोग्यलवणं प्रशस्तं कफवातनुत ॥

अपामार्ग (चिरचिटा), ढाक (पलाश), तालमखाना, सेहुंड (थूहर—स्नुही), आक, बिजौरा, कुड़ा, चीता, तिल और सरसों; इनकी जड़ों की राख तथा गोमूत्र, गायका गोबर, बकरीका मूत्र, बकरीकी मेंगनी, घी, तैल, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, पीपलामूल, चीता, सूखी मूली, मूर्वा, अतीस, पाठा, कूठ, भिलावा, चव्य, पूति करंज, बेलछाल,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुटकी, जवाखार, सज्जीखार और पांचों नमक समान भाग लेकर सबको हाण्डीमें बन्द करके मन्दाग्नि पर इस प्रकार पकावें कि जिससे सब चीजें जलकर भस्म हो जाएं और धुंवा बाहर न निकले। तदनन्तर उसके शीतल होने पर औषधको निकालकर पीस लें।

इसमेंसे १ चुटकी (१-१॥ माशा) चूर्ण सुरामण्डके साथ या मस्तु, आरनाल अथवा गोमूत्र के साथ पीनेसे वातज गुल्म, शूल, वातोदर, प्लीहा, पांडु, किलास और कफ तथा वायुका नाश होता है।

इत्याकारादिचूर्णप्रकरणम्

अथाकारादिगुटिकाप्रकरणम्

(९०३२) अजकरीषयोगः

(च. सं. । चि. अ. १८)

क्षारं चाजकरीषाणां स्रुतं मूत्रैर्विपाचयेत् ।
कार्षिकं पिप्पलीमूलं पञ्चैव लवणानि च ॥
पिप्पलीचित्रकं शुण्ठी त्रिफलां त्रिवृतां वचाम् ।
द्वौ क्षारौ शातलां दन्तीं स्वर्णक्षीरीं विषाणिकाम् ॥
कोलप्रमाणां वटिकां पिबेत् सौवीरसंयुताम् ।
श्वयथावविपाके च प्रवृद्धे चोदरे दके ॥

बकरेकी मेंगनियों की राखको क्षार-निर्माण विधिसे गोमूत्रमें मिला कर छान लें। तदनन्तर उसे पकाकर गाढ़ा करें और फिर उसमें १।-१। तोला पीपलामूल, पांचों नमक, पीपल, चीतामूल, सोंठ, त्रिफला, निसोत, बच, जवाखार, सज्जीखार, सातला, दन्तीमूल, स्वर्णक्षीरी (चोक) और काकड़ासिंगी; इनका चूर्ण मिलाकर बेरके समान गोलियां बना लें।

इन्हें सौवीरक कांजीके साथ सेवन करनेसे शोथ, अविपाक और प्रवृद्ध दकोदरका नाश होताहै।

(बकरेकी मेंगनियोंकी राख २५ तोले; गोमूत्र २०० तोले। मिलाकर २१ बार छान लें।)

(९०३३) आमवातारि वटी

(वै. र. । आमवाता.)

अभयासैन्धवं श्यामा विशाला विश्वभेषजम् ।
इन्द्रवारुणिकामज्जा तया सर्वं विमर्दयेत् ॥
लोहभाण्डे विनिक्षिप्य दद्यादग्निं शनैः शनैः ।
बदराभा प्रमाणेन गुटी कार्या भिषग्वरैः ॥
उष्णोदकाम्बुपानेन भुक्त्वा दोषाद्यपेक्षया ।
पथ्यं घृतौदनं देयमामरोगविनाशकृत् ॥

हर्र, सेंधा नमक, निसोत, इन्द्रायणकी जड़ और सोंठ; इनका समान भाग चूर्ण लेकर सबको एकत्र मिलाकर इन्द्रायनके (बीजरहित) गूदेमें खरल करके (पतला कर लें और फिर उसे) लोह-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पात्रमें मन्दाग्नि पर पकाकर गाढ़ा करें तथा बेरके समान गोलियां बना लें।

इन्हें दोषादिका विचार करके उष्ण जलके साथ सेवन करनेसे आमरोग नष्ट होता है।

पथ्य—घी भात।

आनंदभैरवी गुटिका

रस प्रकरणमें देखिये।

इत्याकारादिगुटिकाप्रकरणम्

अथाकारादिलेहप्रकरणम्

(९०३४) आटरूषादिलेहः

(हा. सं. । स्था. ३ अ. १२)

आटरूषकपत्राणि पिचुमन्ददलानि च।
तुलसीस्वरसं चैव शठी भृङ्गी मरीचकम् ॥
शुण्ठीगुडयुतं लिह्यात्कासे वातकफात्मके ॥

अडूसे (वासे)के पत्ते, नीमके पत्ते, कचूर, अतीस, काली मिर्च, सोंठ और गुड़; इनके समान भाग मिलित चूर्णको तुलसीके रसमें मिलाकर चाटनेसे वातकफज कास का नाश होता है।

(९०३५) आमलक्यादिखण्डः

(व. से. । दाहा.)

आमलक्याश्च कुडवं सुस्विन्नं निष्कुलीकृतम्।
प्रस्थेन पयसः पिष्ट्वा पचेत्प्रस्थे च सर्पिषि ॥
प्रस्थं दत्वा सितायाश्च वासापलचतुष्टयम्।
जीरकं मरिचं कृष्णां चातुर्जातं क्षिपेत्पुनः ॥
कर्षं दत्वा ततः स्निग्धे भाण्डे धृत्वोपभोजयेत्।
दाहं सुदुर्जयं हन्ति मूर्च्छां छर्दिं चिरोत्थिताम् ॥

२० तोले आमलेको स्विन्न करके (सिजाकर) उनकी गुठली निकाल दें। तदनन्तर उन्हें २ सेर दूधमें पीसकर २ सेर घीमें भून लें और फिर १ सेर खांडकी चाशनीमें मिलाकर उसमें २० तोले वासाका चूर्ण तथा १।-१। तोला जीरा, काली मिर्च, पीपल, दालचीनी, इलायची और तेजपात; इनका चूर्ण मिलाकर स्निग्ध पात्र में भर कर सुरक्षित रक्खें।

इसके सेवनसे दुर्जय दाह, मूर्च्छा, और पुरानी छर्दिका नाश होता है।

(मात्रा—१ से २ तोले तक।)

(९०३६) आमलक्यादिपाकः

(न. मृ. । त. ४)

सुपक्वधात्रीफलशुष्कचूर्णं
पुनः पुनस्तद्रसभावितं च।
शतैकवारान्परिशोष्य पश्चात्
घृतेन तुल्येन सिताद्वयेन ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घृतार्द्धभागेन च माक्षिकेण
विधाय पाकं सहदुग्धपानैः ।
भुञ्जीत यस्त्वाशु च कामिनीनां
दशं तु विद्रावयते पुरस्तात् ॥

आमले के पके फलोंके शुष्क चूर्णको आमलेहृी के स्वरसकी १०० भावना दें । तदनन्तर उसे समान भाग घीमें भून लें और घीसे दो गुनी खांडकी चाशनी में मिलाकर उसमें घीसे आधा शहद मिलाकर सुरक्षित रक्खें ।

इसे दूधके साथ सेवन करने से शीघ्रही कामशक्ति इतनी बढ़ जाती है कि मनुष्य १० स्त्रियोंको संतुष्ट कर सकता है ।

(मात्रा—१ से २ तोले तक ।)

(९०३७) आमलक्यादिलेहः

(हा. सं. । स्था. ३ अ. १६)

आमलक्या रसेनाथ घृष्टं चन्दनकं मधु ।
गुटिकामलमानेन लेहो हन्ति वमिं ध्रुवम् ॥

आमले के रसमें सफेद चन्दनको घिस लें। इसमें शहद मिलाकर एक आमले के बराबर (१ तोले के लगभग) चाटने से वमन अवश्य नष्ट हो जाती है ।

इत्याकारादिलेहप्रकरणम्

अथाकारादिघृतप्रकरणम्

(९०३८) आमलकघृतम्

(सु. सं. । चि. अ. ५)

सर्वेषु च पुराणघृतमामलक-
रसविपक्वं वा पानार्थे ॥

आमलेके रसके साथ पकाया हुवा पुराना घी पिलाना हर प्रकारके वातरक्तमें लाभ पहुंचाता है ।

(रस ८ सेर, घी २ सेर ।)

(९०३९) आरग्वधादिघृतम्

(वा. भ. । चि. अ. १९)

आरग्वधस्य मूलेन शतकृत्वः शृतं घृतम् ।
पिबन्कुष्ठं जयत्याशु भजन्सखदिरं जलम् ॥

आरग्वध (अमलतास)की जड़के कल्क और क्वाथके साथ १०० बार पकाया हुवा घृत पीने और खैरसारका क्वाथ (पानीकी जगह) पीनेसे कुष्ठ रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाता है ।

(अमलतासकी जड़ २ सेर, पानी १६ सेर, शेषक्वाथ ४ सेर; इसमें १ सेर घी और १० तोले अमलतासकी जड़ का कल्क मिलाकर पकावें । क्वाथ जलनेपर छान लें। उसमें पुनः उपरोक्त क्वाथ और कल्क डालकर पकावें । इसी प्रकार १०० बार पाक करें ।)

(९०४०) आरुष्करघृतम्

(वृ. से. । ग्रहण्य.)

आरुष्करं हिङ्गु कणा सयष्टी
पूतीकशुण्ठी मरीचं गजाह्वा ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अजाजी चव्या रुचकं सवह्नि-
मूलं विडङ्गं सह दीप्यकश्च ॥
सक्षारहिङ्गुत्रिकटूग्रगन्धा
पलार्धभागैर्विपचेद्विधिज्ञः ।
अत्र धान्याकचाङ्गेरीदशमूलीसमं पृथक् ।
हविः प्रस्थं निहन्त्याशु ग्रहणीं सर्वजां नृणाम् ॥
विष्टम्भमामजान्रोगान्कृमिजान्कुक्षिजांस्तथा ।
मन्दानलभवान्सर्वांन्नभस्वानिव वारिदम् ॥

कल्क—भिलावा, हींग, पीपल, मुलैठी, पूतिकरंज, सोंठ, काली मिर्च, गज पीपल, जीरा, चव्य, संचल (काला नमक), चीतामूल, वायबिडंग, अजवायन, जवाखार, हींग, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल) और बच २॥-२॥ तोले लेकर कल्क बनावें ।

२ सेर घीमें उपरोक्त कल्क तथा २-२ सेर धनियेका क्वाथ, चांगेरीका रस, दशमूलका क्वाथ और पानी मिलाकर पकावें । जब जलांश शुष्क हो जाय तो घीको छान लें ।

इसके सेवनसे सर्व दोषज ग्रहणी, विष्टम्भ, आमजनित रोग, कृमि विकार, उदररोग और अग्निमांद्य का नाश होता है ।

(मात्रा—१ से २ तोले तक ।)

(९०४१) आर्द्रकघृतम्

(व. से. । उदरा.)

नवघृतमार्द्रककल्कस्वरसाभ्यां
परिसाधितं च विधिना ।
श्वयथूदराग्निसादैरभिभूतः
पिबेद्भवत्यरोगः ॥

१ सेर ताजे घीमें १० तोले अदरकका कल्क और ४ सेर अदरकका रस मिलाकर पकावें । जब रस जल जाए तो घीको छान लें ।

इसके सेवनसे शोथोदर और अग्निमांद्यका नाश होता है ।

(मात्रा—१ से २ तोले तक ।)

इत्याकारादिघृतप्रकरणम्

अथाकारादितैलप्रकरणम्

(९०४२) आगारधूमाद्यं तैलम्

(धन्व. । नासा.)

गृहधूमकणादारुक्षारनक्ताह्वसैन्धवैः ।
सिद्धं शिखरिबीजैश्च तैलं नासार्शसां हितम् ॥

कल्क—घरका धुवां, पीपल, देवदारु, जवाखार, करञ्जकी छाल, सेंधा नमक और अपामार्ग (चिरचिटे) के बीज समान भाग मिलित (१० तोले) लेकर कल्क बनावें ।

१ सेर तेलमें यह कल्क और ४ सेर पानी मिलाकर पकावें । जब पानी जल जाए तो तेलको छान लें ।

इसे लगानेसे नासार्श (नाकके मस्से) का नाश होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९०४३) आदित्यपाकगुडूचीतैलम्

(र. र. ; च. द. । क्षुद्ररोगा.)

वटावरोहकेशिन्योश्चूर्णेनादित्यपाचितम् ।
गुडूचीस्वरसे तैलं चाभ्यङ्गात्केशरोपणम् ॥

बड़के अंकुर और जटामांसी का चूर्ण (५-५ तोले), गिलोयका स्वरस (४ सेर) और तिलका तेल (१ सेर) लेकर सबको एकत्र मिलाकर धूपमें रख दें। जब गिलोयका रस सूख जाए तो तेलको छान लें।

इसकी मालिश से गिरे हुवे बाल पुनः निकल आते हैं।

(९०४४) आरग्वधादितैलम् (१)

(र. र. स. । उ. अ. २०)

आरग्वधरसो गुञ्जावाकुचीगन्धकत्रयैः ।
सरसैः फल्गुणीतैलं जयेत्सिध्मप्रुदुम्बरम् ॥

अमलतासकी जड़के क्वाथ तथा चौंटली (गुंजा), बावची और गंधकके कल्कके साथ मालकंगनी का तेल सिद्ध करें।

इसकी मालिशसे सिध्म और उदम्बर कुष्ठ नष्ट होता है।

(तेल १॥ सेर, अमलतासमूलका क्वाथ ६ सेर, कल्ककी प्रत्येक ओषधि ५ तोले ।)

(९०४५) आरग्वधादितैलम् (२)

(यो. र. । शोथा.)

कफोत्थेऽत्र पिबेत्तैलं सिद्धमारग्वधादिना ।

कफोत्थ शोथमें आरग्वधादि गणके कल्क और क्वाथसे सिद्ध तेल पिलाना चाहिये।

(आरग्वधादि गण भा. भै. र. भाग १ के आकारादि कषाय प्रकरणमें देखिये ।)

इत्याकारादितैलप्रकरणम्

अथाकारादिलेपप्रकरणम्

(९०४६) आमलकादिलेपः

(शा. सं. । खं. ३ अ. ११)

आमलं घृतभृष्टं तु पिष्टं काञ्जिकवारिभिः ।
जयेन्मूर्ध्नि प्रलेपेन रक्तं नासिकया स्रुतम् ॥

आमलेको घीमें भूनकर कांजीमें पीसकर शिरपर लेप करनेसे नासिकासे होने वाला रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

(९०४७) आमलक्यादिलेपः

(व. से. । बालरो.)

आमलक्याः पलान्यष्टौ गोमूत्रे सप्तभावयेत् ।
भावयित्वातपे पश्चाद्विच्छिन्नलिप्ता प्रशाम्यति ॥

४० तोले आमलोंके चूर्णको गोमूत्रकी सात भावना देकर धूपमें सुखा लें।

इसे (गोमूत्र या पानीमें पीसकर) लेप करने से बालकोंका विच्छिन्न रोग नष्ट होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९०४८) आम्रवल्कलकल्कलेपः

(भै. र. । ज्वरातिसारा.)

आम्रस्य वल्कलं पिष्टं काञ्जिकेन प्रयत्नतः ।
नाभिं संलेपयेत्तेन कल्केन मतिमान् भिषग् ॥
नदीवेगोपमं घोरमतीसारं निवारयेत् ॥

(ताज़े) आमलेको कांजीके साथ बारीक पीसकर उसका नाभिके ऊपर लेप करनेसे नदीके वेगके समान घोर अतिसार भी नष्ट हो जाता है।

(९०४९) आम्रास्थ्यादियोगः

(र. र. रसा. खं. । उप. ५)

आम्रास्थि त्रिफला भृङ्गी प्रियङ्गुर्मातुलुङ्गकम् ।
निशा नीली मृणालानि नागं लोहं च चूर्णितम् ॥
समं कल्कं कान्तपात्रे निम्बतैलेन भावयेत् ।
मासमात्रं ततस्तेन लेपाद्भवति रञ्जनम् ॥

आमकी गुठलीकी मज्जा (गिरी), हर्ड़, बहेड़ा, आमला, अतीस (या भांग), फूलप्रियंगु, बिजौरे नीबूकी जड़, हल्दी, नील, कमलनाल, सीसा धातका बारीक चूर्ण ओर लोहचूर्ण समान भाग लेकर सबको कान्तलोहके पात्रमें १ मास तक नीमके तेलमें घोटें।

इसका लेप करनेसे बाल काले हो जाते हैं।

(९०५०) आरग्वधादिलेपः

(वृ. मा. । विसर्पा.)

आरग्वधस्य पत्राणि त्वचः श्लेष्मातकोद्भवाः ।
शिरीषपुष्पं काकमाची हिता लेपावचूर्णितैः ॥

अमलतासके पत्ते, ल्हिसोड़े की छाल, सिरसके फूल और काकमाची समान भाग लेकर चूर्ण बनावें। इसे (पानीमें पीसकर) लेप करनेसे विसर्प में लाभ पहुंचता है।

(९०५१) आरण्यतुलसीलेपः

(वै. म. र. । पटल १७)

आजेन पयसा पिष्टामारण्यतुलसीशिफाम् ।
आक्षिप्योद्वर्तयेद्वक्त्रं व्यङ्गलोपमना नरः ॥

बन तुलसीकी जड़के चूर्णको बकरीके दूधमें पीसकर चेहरे पर लेप करने और मलने से व्यङ्ग (झांई) का नाश होता है।

इत्याकारादिलेपप्रकरणम्

अथाकारादिनस्यप्रकरणम्

(९०५२) आरग्वधादिनस्यम्

(वृ. मा. ; यो. र. । गलगंडा.)

आरग्वधशिफां क्षिप्रं सम्यक्तण्डुलवारिणा ।
पिष्ट्वा नस्यप्रलेपाभ्यां गण्डमालां समुद्धरेत् ॥

अमलतासकी ताज़ी जड़को चावलोंके पानीके साथ पीसकर उसकी नस्य लेने और उसीका लेप करनेसे गण्डमाला नष्ट हो जाती है।

इत्याकारादिनस्यप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथाकारादिरसप्रकरणम्

(९०५३) आनन्दभैरवरसः

(रसे. सा. सं. । ज्वरा.)

हिङ्गुलश्च विषं व्योषं मरिचं टङ्कणं कणा ।
जातीकोषसमं चूर्णं जम्बीरद्रवमर्दितम् ॥
रक्तिमानां वटीं कुर्यात्खादेदार्द्रकसंयुताम् ।
वटीद्वयं त्रयं वापि सन्निपाते सुदारुणे ॥
ज्वरमष्टविधं हन्ति तथातीसारनाशनः ।
जीर्णज्वरहरश्चैव तथा सर्वाङ्गभेदकः ॥
आमवातादिरोगश्च नाशयेदविकल्पतः ॥

शुद्ध हिंगुल, शुद्ध बछनाग, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल), मिर्च, सुहागेकी खील, पीपल और जावित्री; इनका चूर्ण समान भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर जम्बीरी नीबूके रसमें खरल करके १-१ रत्तीकी गोलियां बना लें ।

मात्रा—२ से ३ गोली तक ।

इसे अदरकके रसके साथ सेवन करनेसे दारुण सन्निपात, आठ प्रकारका ज्वर, अतिसार, जीर्णज्वर, अङ्गमर्द और आमवातादिका नाश होता है ।

(९०५४) आनन्दभैरवी गुटिका

(र. प्र. सु. । अ. ८)

सौभाग्यं वै हिङ्गुलोत्थं विषं च
मारीचं वै हेमबीजेन युक्तम् ।
कृत्वा चूर्णं सर्वमेतत्समांशं
जम्बीरैर्हि मर्दितं यामयुग्मम् ॥
गुञ्जामात्रा निर्मिता भक्षिता च
गुटी हन्यात्सन्निपातातिसारम् ॥

सुहागेकी खील, हिंगुलोत्थ पारद, शुद्ध बछनाग, काली मिर्च और धतूरेके बीज समान भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर, दो पहर जम्बीरी नीबूके रसमें खरल करें और १-१ रत्तीकी गोलियां बना लें ।

इसके सेवन से सन्निपातज अतिसार नष्ट होता है ।

(पारदके स्थानमें शुद्ध हिंगुल लेना अधिक उत्तम है ।)

(९०५५) आनन्दभैरवी वटी

(र. चं. ; र. रा. सु. ; भै. र. । ज्वरा. ; र. सा. सं. । ज्वरा.

विषं त्रिकटुकं गन्धं टङ्कणं मृतशुल्वकम् ।
धत्तूरस्य च बीजानि हिङ्गुलं नवमं स्मृतम् ॥
एतानि समभागानि दिनैकं विजयाद्रवैः ।
मर्दयेत्कणकाभां तु वटीं चानन्दभैरवीम् ॥
भक्षयेच्च पिबेच्चानु रविमूलकषायकम् ।
सव्योषं हन्ति नो चित्रं सन्निपातं सुदारुणम् ॥
शीताङ्गे सन्निपाते वा सामान्ये वा त्रिदोषजे ।
धान्याकं पिप्पली शुण्ठी कुटकी कण्टकारिका ।
क्वाथं पिप्पलिसंयुक्तं चतुर्गुञ्जा च पर्पटी ।
सन्निपातं ज्वरं हन्ति वटिकाऽऽनन्दभैरवी ॥
मूलं च कटुरोहिण्याः समं बिल्वं सजीरकम् ।
दध्ना पिष्टं पिबेच्चानु वटीं चानन्दभैरवीम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्निपातातिसारघ्नीं पथ्यं शाकविवर्जितम् ।
आनन्दभैरवीं पीत्वा क्वाथं वरुणसम्भवम् ॥
पाययेदश्मरीं हन्ति सप्तरात्रान्न संशयः ।
वागुजीसम्भवैस्तैलैर्वटीश्चानन्दभैरवीम् ॥
छेदयेन्निष्कमात्रान्तु गलत्कुष्ठञ्च नाशयेत् ।
दधिमस्तुसिताक्षौद्रैः वटीश्चानन्दभैरवीम् ॥
भक्षयेन्मूत्रकृच्छ्रार्तो यवक्षारं सितान्वितम् ।
गोदुग्धं क्वथितञ्चानु शीतलं मधुना पिबेत् ॥
गुञ्जामूलं पिबेत्क्षीरैरनुपानं प्रशस्यते ।
अनेन चानुपानेन वटिकानन्दभैरवी ॥
देया रुद्रजटाक्षौद्रैः सर्वमेहप्रशान्तये ॥

शुद्ध बछनाग, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, शुद्ध गंधक, सुहागेकी खील, ताम्र भस्म, धतूरेके बीज और शुद्ध हिंगुल समान भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर एक दिन भांगके रसमें खरल करके चनेके समान गोलियां बनावें।

अनुपान—भयंकर सन्निपातमें यह गोली खिलाने के पश्चात् आककी जड़का क्वाथ त्रिकुटे का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिये।

शीतांग सन्निपात और **साधारण त्रिदोष ज्वर** में यह वटी खिलाकर धनिया, पीपल, सोंठ, कुटकी और कटेलीके क्वाथमें पीपलका चूर्ण और ४ रत्ती सौराष्ट्री (सोरठी मिट्टी) मिलाकर पिलाना चाहिये।

सन्निपातातिसार में यह वटी खिलाकर कुटकीकी जड़, बेल गिरी और जीरेका चूर्ण दहीमें पीसकर पिलाना चाहिये। पथ्यमें शाक नहीं देना चाहिये।

आनन्दभैरवी वटी खाकर वरनेकी छालका क्वाथ पीनेसे सात दिनमें **अश्मरि रोग** नष्ट हो जाता है।

यह रस बावचीके तेलके साथ सेवन करनेसे गलत्कुष्ठ नष्ट होता है। **मात्रा**—३॥ माशे।

मूत्रकृच्छ्रमें—दही, मस्तु, मिसरी और शहद के साथ यह वटी खाकर ऊपर से मिश्रीके साथ जवाखार मिलाकर खाना चाहिये।

प्रमेहमें रुद्रजटाके चूर्णको शहदमें मिलाकर उसके साथ यह रस खिलाकर ऊपरसे पकाकर ठंडा किये हुवे दूधमें शहद और चौंटली (गुंजा) की जड़का चूर्ण मिलाकर पीना चाहिये।

(९०५६) आनन्दसूतरसः

(आ. वे. प्र. । अ. १ ; र. चं. । रसायना. ; वृ. यो. त. । त. १४७; रसे. चि. म. । अ. ८)

शुद्धं रसं समविषं प्रहरं विमर्द्य
तद्गोलकं कनकचारुफले निधाय ।
दोलागतं पच दिनं विषमुष्टितोये
प्रक्षाल्य तत्पुनरपीह तथा द्विवारम् ॥
तत्सूतके गिरिशलोचनयुग्मगन्धं
युक्त्याऽवजार्य कुरु भस्म समं च तस्य ।
वैक्रान्तभस्म जयपालनवांशकार्धं
सर्वैर्विषं द्विगुणितं मृदितं च खल्वे ॥
प्रस्तत्रयं कनकभृङ्गरसेन गाढ-
मावेश्य भाजनतले विषधूपभाजि ।
भृङ्गद्रवेण शिथिलं लघुकाचकूप्या-
मापूर्य रुद्धवसनं सिकताख्ययन्त्रे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तां वामरार्धमुपदीप्य निसर्गशीतां
दृष्ट्वा विचूर्ण्य गदशान्तिपु शालिपात्रम् ।
आनन्दमृतमखिलामयकुम्भिसिंहं
गद्याणकार्धसितया सह देहि पश्चात् ॥
रोगानुरूपमनुपानमपि प्रकाशं
क्षोणीभुजां प्रचुरपूजनमाप्नुहि त्वम् ।
कीर्त्या दिशो धवलय स्फुरदिन्दुकान्त्या
वैद्येश्वरेति विरुदं भज वैद्यराज ॥

शुद्ध पारद और बछनाग समान भाग लेकर दोनोंको १ पहर खरल करके गोली बनावें और उसे धतूरेके उतम फल के भीतर रखकर कपड़ेमें लपेटकर १ दिन कुचलेके रस या क्वाथ में दोला-यन्त्र विधिसे पकावें । तदनन्तर स्वांगशीतल होने पर उस गोलीको निकाल कर धोकर धतूरेके अन्य फलमें रख कर इसी प्रकार १ बार और पकावें ।

तदनन्तर उस पारदमें यथाविधि ६ गुना गंधक जारण करके भस्मके समान बना लें ।

अब इसमें उस के समान वैक्रान्त भस्म तथा उससे ४ ॥ गुना शुद्ध जमालगोटा एवं इन सबसे दो गुना (१३ भाग) शुद्ध बछनागका चूर्ण मिला कर ३-३ दिन धतूरे और भांगरेके रसमें खरल करें । तत्पश्चात कपरमिट्टी की हुई आतशी शीशी के भीतर बछनागविषकी धूनी देकर उसमें, उपरोक्त रस को भंगरेके रससे पतला करके भर दें एवं शीशीका मुख बन्द करके उसे आधे दिन बालुका-यन्त्रमें पकावें और फिर स्वांगशीतल होने पर रसको निकालकर पीसकर सुरक्षित रक्खें ।

यह रस समस्त रोगोंका नष्ट करता है ।

मात्रा—२ माशे । इसे मिश्री या रोगोचित अनुपानके साथ देना चाहिये ।

जिस वैद्यके पास यह रस होगा उसे राजाओं से सम्मान प्राप्त होगा, देश देशान्तरोंमें उसकी कीर्ति फैल जायगी और संसार उसे वैद्येश्वरके नामसे पुकारेगा ।

(**व्यवहारिक मात्रा**—आधी रत्ती ।)

इत्याकारादिरसप्रकरणम्

अथाकारादिकल्पप्रकरणम्

(९०५७) आमलककल्पम्

(ग. नि. । औषधिकल्पा. २)

नीरुजार्द्रपलाशस्य छिन्ने शिरसि तत्क्षणम् ।
अन्तर्द्विहस्तगम्भीरं पूर्यमामलकैर्नवैः ॥
आमूलं वेष्टितं दर्भैः पद्मिनीपङ्कलेपितम् ।
आर्द्राप्य गोमयैर्वन्यैर्निवाते स्वेदयेत्ततः ॥

स्विन्नानि तान्यामलकानि तृप्त्या
खादेन्नरः क्षौद्रघृतान्वितानि ।
क्षीरं शृतं चानु पिबेत्प्रकामं
तेनैव वर्तेत च मासमेकम् ॥

वर्ज्यानि वर्ज्यानि च तत्र यत्नात्
स्पृश्यं च शीताम्बु न पाणिनापि ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एकादशाहेऽस्य ततो व्यतीते
पतन्ति केशा दशना नखाश्च ॥
अथाल्पकैरेव दिनैः सुरूपः
स्त्रीष्वक्षयः कुञ्जरतुल्यवीर्यः ।
विशिष्टमेधाबलबुद्धिसत्त्वो
भवत्यसौ वर्षसहस्रजीवी ॥
तद्वदामलकं शीतमम्लं पित्तकफापहम् ॥

पलाशके निरोग (कृमि आदि रहित) और आर्द्र (रसपूर्ण) वृक्षको तनेके उपरसे (जड़के थोड़ा ऊपरसे) काट कर उसमें दो हाथ गहरा गढ़ा करें और उसमें उत्तम ताजे आमले भर दें तथा उसके मुंह पर और चारों ओर जड़ तक दाभ घास लपेटकर कमलिनी की जड़की मिट्टीका (१ अंगुल मोटा) लेप करदें एवं उसके चारों ओर गायके अरने उपले (वनकण्डे) लगाकर उनमें आग लगा दें।

यह कार्य निर्वात स्थानमें होना चाहिये। जब आमले स्विन्न हो जाएं (उसीज जाएं) तो उन्हें निकालकर घी और शहदके साथ पेट भरकर खाना चाहिये। इसके पश्चात् पका हुवा दूध इच्छानुसार पीना चाहिये। इसी प्रकार यह प्रयोग १ मास तक करना चाहिये। (अन्य सब प्रकारका आहार बन्द रखना चाहिये।) इस प्रयोग कालमें परहेज पूरी तरह रखना चाहिये और शीतल जल हाथसे भी न छूना चाहिये।

इस प्रकार यह प्रयोग करनेसे ११ दिन पश्चात् केश, दांत और नख गिर जाते हैं एवं थोड़ेही दिनों पश्चात् (नवीन केशादि उत्पन्न होकर) शरीर सुरूपवान हो जाता है। फिर स्त्री-समागमकी अत्यन्त शक्ति आ जाती है; शरीर हाथीके समान बलशाली हो जाता है; मेधा, बुद्धि और सत्व (मानसिक बल) की विशेष वृद्धि होती है और १ सहस्र वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

आमला शीतल, अम्ल और पित्तकफनाशक है।

इत्याकारादिकल्पप्रकरणम्

अथाकारादिमिश्रप्रकरणम्

(९०५८) आखुकर्ण्यादियोगः

(यो. र. । कृम्य.)

आखुकर्णीदलैः पिष्टैः पिष्टकेन च पूपकान् ।
भुक्त्वा सौवीरकं चानु पिबेत्क्रमिहरं परम ॥

मूषाकर्णी के पत्तों को पीसकर (चावलोंकी या मूंगकी) पिट्ठीमें मिलाकर पूड़े बनावें। ये पूड़े खाकर सौवीरक कांजी पीनेसे कृमि नष्ट हो जाते हैं।

(९०५९) आमलक्यादिस्नानम्

(व. से. । नेत्ररोगा.)

आमलैः सततं स्नानं परं दृष्टिबलावहम् ॥

आमले के कल्कको शिर और शरीर पर मलकर स्नान करनेसे दृष्टि शक्ति बढ़ती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९०६०) आयामकाञ्जिकम्

(भै. र.; च. द. । ग्रहण्य.)

वाटयस्य दध्याश्च यवशकुकानां
पृथक् पृथक् चाढकसम्मितन्तु ।
मध्यप्रमाणानि च मूलकानि
दद्याच्चतुःषष्टि सुकल्पितानि ॥
द्रोणेऽम्भसः प्लाव्य घटे सुधौते
दद्यादिदं भेषजजातयुक्तम् ।
क्षारद्वयं तुम्बुरुवस्तगन्धा
धनीयकं स्याद्विडसैन्धवञ्च ॥
सौवर्चलं हिङ्गु शिवाटिकाश्च
चव्यञ्च दद्याद् द्विपलप्रमाणम् ।
इमानि चान्यानि पलोन्मितानि
विजर्जरीकृत्य घटे क्षिपेच्च ॥
कृष्णामजाजीमुपकुञ्चिकाञ्च
तथासुरीं कारवीचित्रकञ्च ।
पक्षस्थितोऽयं बलवर्णदेह-
वयस्करोऽतीवबलप्रदश्च ॥
काञ्जीवयामीति यतः प्रवृत्त-
स्तत्काञ्जिकेति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ।
आयामकालाज्जरयेच्च भुक्त-
मायामकेति प्रवदन्ति चैनम् ॥
दकोदरगुल्मप्रथप्लीहानं
हृद्रोगमानाहमरोचकञ्च ।
मन्दाग्नितां कोष्ठगतं च शूल-
मर्शोविकारान् सभगन्दरांश्च ॥
वातामयानाशु निहन्ति सर्वान्
संसेव्यमानो विधिवन्नराणाम् ॥

वाटय× और जौके सत्तू ४-४ सेर तथा मध्यम आकारकी (न बहुत पतली न मोटी) मूली ६४ (अथवा ६४ पल-४ सेर) लेकर सबको एक मटकेमें डालकर उसमें ३२ सेर पानी डाल दें तथा उसमें जवाखार, सज्जीखार, तुम्बरु, अज-मोद, धनिया, बिड लवण, सेंधा नमक, संचल, हींग, हिंगुपत्री और चव; इनका चूर्ण १०-१० तोले तथा पीपल, जीरा, काला जीरा, राई, कलौंजी और चीतामूल; इनका चूर्ण ५-५ तोले मिलाकर मटकेका मुख बन्द करदें और १५ दिन पश्चात् कांजीको छान लें ।

यह कांजी बल, वर्ण, शरीर और आयुकी वृद्धि करती है । 'कां जीवयामि' (मैं किस किसको जिलाऊं ? सभी मुझसे नवजीवन प्राप्तिकी आशा रखते हैं) इस विचारसे इसे कांजी कहते हैं । यह आहारको १ आयाम (पहर) में पचा देती है इसी लिये इसे **'आयाम काञ्जिक'** कहते हैं ।

यह कांजी दकोदर, गुल्म, प्लीहा, हृद्रोग, अफारा, अरुचि, अग्निमांद्य, उदरशूल, अर्श, भगन्दर और समस्त वातज रोगोंको नष्ट करती है ।

(९०६१) आरग्वधादियोगः

(व. से. । आमवाता. ; भा. प्र. । म. ख. २)

आरग्वधस्य पत्राणि भृष्टानि कटुतैलतः ।
आमघ्नानि नरः कुर्यात्सूप[1]भक्तावृतानि च ॥

×वाटय—निस्तुष कुटे हुवे जौको १४ गुने पानीमें पकाकर बनाया हुवा मांड (मण्ड) ।

१ सायं भक्तावृतानि चेति पाठभेदः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमलतासके पत्तोंको सरसोंके तेलमें भूनकर भात या दालके साथ खाने से आमवातका नाश होता है।

(१०६२–६५) आर्द्रकयोगः

(ग. नि. । अजीर्णा.)

भोजनाग्रे सदा पथ्यं जिह्वाकण्ठविशोधनम् ।
अग्निसन्दीपनं हृद्यं लवणार्द्रकभक्षणम् ॥

÷ ÷ ÷

शोफहृद्रोगगुल्मार्शोविबन्धानाहनाशनम् ।
दीपनं कफहृद्रुच्यं हर्षणं लवणार्द्रकम् ॥

+ + +

शोफारोचकहृद्रोगगुल्मार्शांस्युदराणि च ।
कासं श्वासं ज्वरं हन्यात्सहसा मधुनाऽऽर्द्रकम् ॥

÷ + ÷

गुडार्द्रकं वातहरं चक्षुष्यं बलवर्धनम ।
कायाग्निजननं चैव वातवर्चोनुलोमनम् ॥

भोजन के पहिले सेंधा नमक लगाकर अदरक खाना सदैव हितकारी है। इससे जिह्वा और कण्ठ शुद्ध होता तथा अग्नि दीप्त होती है। यह हृदयके लिये भी हितकारी है।

+ ÷ +

अदरकमें सेंधा नमक मिलाकर सेवन करनेसे शोथ, हृद्रोग, गुल्म, अर्श, मलमूत्र वायु आदिका अवरोध, आनाह और कफका नाश होता तथा अग्नि दीप्त होती और रुचि बढ़ती है।

+ ÷ +

शहद्के साथ अदरक सेवन करनेसे शोथ, अरुचि, हृद्रोग, गुल्म, अर्श, उदररोग, कास, श्वास और ज्वरका नाश होता है।

+ + ÷

गुड़के साथ अदरक खानेसे वायुका नाश होता है; बल और अग्निकी वृद्धि होती है तथा वायु और मल स्वमार्गमें प्रवृत्त होते हैं। यह प्रयोग नेत्रोंके लिये भी हितकारक है।

(१०६६–६७) आर्द्रकविधिः

(ग. नि. । वाजीकरणा. ; यो. र. । अरोचका.)

धौतं खण्डितमार्द्रकं च सलिलैः क्षिप्तं सुतप्ते घृते
सिन्धूत्थं मरिचं सुजीरयुगलं चूर्णीकृतं प्रक्षिपेत् ।
चूर्णं भृष्टचणोद्भवं[1] च वितुषं हिङ्ग्वाज्यधूपं दहे-
दित्थं दोषविहीनमार्द्रवरं सुस्वादु संजायते ॥

× × ×

तिन्तिण्यामफलानि लाजसलिले संस्थाप्य तत्रार्द्रकं
यामैकं विधृतं च तत्र नितरां रक्तं भवेत्स्वादु तत् ।

अदरकके टुकड़े करके उन्हें धोकर गरम घीमें डाल दें और फिर उसमें सेंधा नमक, कालीमिर्च, जीरा और काला जीरा; इनका चूर्ण उचित मात्रामें मिला दें तथा एक चमचे में भुने हुवे छिलके रहित चनों का या जौका चूर्ण, हींग और घी डाल कर उसे आग पर रखकर गर्म करें और उससे उपरोक्त अदरकको बघार दें। इस विधिसे अदरक निर्दोष और सुस्वादु हो जाता है।

÷ + ÷

१ चूर्णं भृष्टयवोद्भवमिति पाठान्तरम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धानकी खीलोंको पानीमें भिगो दें और उनके फूल जाने पर पानीको छान लें। इस पानीमें इमलीके कच्चे फलोंको भिगो दें और थोड़ी देर बाद उस पानीमें अदरकके टुकड़े भिगो दें। एक पहर पश्चात् यह अदरक अत्यन्त लाल और सुस्वादु हो जायगा।

(९०६८) **आर्द्रवस्त्रधारणम्**

(भा. प्र. । म. खं. २)

काञ्जिकार्द्रपटेनावगुण्ठनं दाहनाशनम् ।
अथ गोतक्रसंस्विन्नशीतलीकृतवाससा ॥

कांजीमें चादर भिगोकर रोगीके शरीर पर लपेटनेसे दाह शान्त हो जाती है।

अथवा कपड़ेको गायके मट्ठेमें डालकर थोड़ी देर पकाकर ठंडा करके रोगीके शरीर पर लपेटनेसे भी दाह शान्त हो जाती है।

इत्याकारादिमिश्रप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

इ

अथ इकारादिकषायप्रकरणम्

(९०६९) इक्षुरसादियोगः

(यो. र. । मूत्रकृच्छ्र.)

भृष्टेक्षुस्वरसं ग्राह्यमाखु विड्विहितं पिबेत् ।
नाशयेन्मूत्रकृच्छ्राणि सद्य एव न संशयः ॥

ईखके रसमें चूहेकी विष्ठा डालकर पीने से मूत्रकृच्छ्र अवश्य नष्ट हो जाता है ।

(९०७०) इन्द्रयवादिक्वाथः

(शा. सं. । ख. २ अ. २)

यवधान्यपटोलानां क्वाथः सक्षौद्रशर्करः ।
योज्यः सर्वातिसारेषु बिल्वाम्रास्थिभवस्तथा ॥

इन्द्रजौ, धनिया और पटोल के क्वाथमें शहद और खांड मिलाकर पीनेसे या बेलगिरी और आमकी गुटलीकी मज्जा (गिरी)का क्वाथ पीनेसे समस्त प्रकारके अतिसार नष्ट होते हैं ।

इति इकारादिकषायप्रकरणम्

अथ इकारादिचूर्णप्रकरणम्

(९०७१) इक्षुरकाद्यं चूर्णम्

(ग. नि. । वाजीकरणा.)

इक्षुरगोक्षुरकौ शतमूली
वानरिनागबलातिलमाषाः ।
चूर्णमिदं पयसा निशि पेयं
यस्य गृहे प्रमदाशतमस्ति ॥

तालमखाना, गोखरु, शतावर, कौंचके बीज (छिलके रहित), नागबला (गुलशकरी), तिल और उड़द समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

इसे रात्रिके समय दूधके साथ सेवन करनेसे कामशक्ति अत्यन्त प्रबल हो जाती है ।

(मात्रा—४-६ माशे ।)

(९०७२) इक्ष्वादिचूर्णम्

(यो. र. । कासा.)

इक्षिक्षुबालिकापद्ममृणालोत्पलचन्दनैः ।
मधुकं पिप्पली द्राक्षा शृङ्गी चैव शतावरी ॥
द्विगुणा च तुगाक्षीरी सिता सर्वैश्चतुर्गुणा ।
लिह्यात्तं मधुसर्पिर्भ्यां क्षतकासनिवृत्तये ॥

तालमखाना, कासकी जड़, कमल, कमलनाल,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नीलोत्पल, सफेद चन्दन, मुलैठी, पीपल, मुनक्का, काकड़ासिंगी और शतावर १-१ भाग तथा बंसलोचन सबसे दो गुना और मिश्री सबसे ४ गुनी लेकर चूर्ण बनावें।

इसे घी और शहदके साथ चाटनेसे क्षतज कासका नाश होता है।

(**मात्रा**—१ तोला।)

(९०७३) **इन्द्रवारुणीमूलयोगः** (१)

(ग. नि. । वृद्धच. ३६ ; वृ. नि. र. । वृद्धच ; रा. मा. । वृद्धच. १६)

वातारितैलमृदितं सुरवारुणीजं
मूलं नरः पिबति यो मसृणं विचूर्ण्य ।
गव्ये निधाय पयसि त्रिदिनावसाने
तस्य प्रणश्यति कुरण्डकृतो विकारः ॥

इन्द्रायणकी जड़के बारीक चूर्णको अरण्डीके तेलमें घोटकर गोदुग्धके साथ पीनेसे ३ दिनमें कुरण्ड रोग नष्ट हो जाता है।

(९०७४) **इन्द्रवारुणीमूलयोगः** (२)

(ग. नि. । ग्रन्थ्य. १)

पिष्टा तन्दुलतोयेन घृतमात्रापरिप्लुतम् ।
मूलं तु शक्रवारुण्या गण्डमालापहं पिबेत् ॥

इन्द्रायणकी जड़को चावलोंके पानीमें पीसकर घीमें मिलाकर पीनेसे गण्डमालाका नाश होता है।

(९०७५) **इन्द्रायणीचूर्णम्**

(र. चि. म. । स्त. ९)

इन्द्राणीफलमादाय पक्वं लवणपञ्चकम् ।
तेन चापूर्यते गाढं तन्मृदा लेपयेत्फलम् ॥
विशोष्य मृत्तिकां तस्य पुटो देयो महानपि ।
स्वाङ्गशीतं समादाय त्रिफलां च कटुत्रिकम् ॥
पिप्पली चव्यचित्रं च पिप्पलीमूलमप्यथ ।
समभागं च तत्सर्वं मिश्रितं खल्वमध्यगम् ॥
टङ्कैकं भक्षयेत्प्रातः क्षुद्बोधं कुरुते तराम् ।
श्लैष्मिकानपि चेद्रोगान्वातिकान्वा विनाशयेत् ।
अतिपुष्टिकरं चैव पाचनं परमं मतम् ॥

इन्द्रायणके पक्के फलके भीतर पंचलवणका चूर्ण (उसमें जितना आ सके उतना) भरकर उस पर मिट्टीका (आध अंगुल मोटा) लेप करदें और उसे सुखाकर गज पुटमें फूंक दें। तदनन्तर जब वह स्वांगशीतल हो जाए तो निकालकर ऊपरकी मिट्टी छुड़ा दें और लवण युक्त फलको पीसकर चूर्ण करें। अब यह चूर्ण तथा त्रिफला, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल); पीपल, चव, चीतामूल और पीपलामूल समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

मात्रा -५ माशे- (**व्यवहा. मा.** १॥—२माशे।)

इसे सेवन करने से भूख खुलती है तथा कफज और वातज रोगोंका नाश होता है। यह अत्यन्त पौष्टिक और पाचक है।

इति इकारादिचूर्णप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ इकारादिगुटिकाप्रकरणम्

(९०७६) इन्द्रवारुणिकामूलाद्या वटी

(र. र. रसा. खं. । उप. ७)

इन्द्रवारुणिकामूलं पुष्ये नग्नः समुद्धरेत् ।
त्र्यूषणैश्च गवां क्षीरैः पिष्ट्वा कुर्याद्वटीं दृढाम् ॥
छायाशुष्का स्थिता वक्त्रे वीर्यस्तम्भकरी नृणाम् ।
वरमङ्कोलतैलेन नाभिलेपोऽपि वीर्यधृक् ॥

पुष्यनक्षत्रमें नंगे होकर इन्द्रायणकी जड़को उखाड़ लें और फिर उसमें उसके बराबर त्रिकुटा (सोंठ मिर्च, पीपल) का चूर्ण मिलाकर गोदुग्धके साथ बारीक पीसकर दृढ गोली बनावें और छायामें सुखा लें ।

इसे मुखमें रखकर स्त्री समागम करनेसे वीर्य-स्तम्भन होता है ।

नाभि पर अंकोल के तेलका लेप करके समागम करनेसे भी वीर्यस्तम्भन होता है ।

इति इकारादिगुटिकाप्रकरणम्

अथ इकाराद्यवलेहप्रकरणम्

(९०७७) इन्द्रोक्तरसायनम्

(च. सं. । चि. अ. १)

दिव्यानामौषधीनां यः प्रभावः स भवद्विधैः ।
शक्यः सोढुमशक्यस्तु स्यात् सोढुमकृतात्मभिः ॥
औषधीनां प्रभावेण तिष्ठतां स्वे च कर्मणि ।
भवतां निखिलं श्रेयः सर्वमेवोपपत्स्यते ॥
वानप्रस्थैर्गृहस्थैश्च प्रयतैर्नियतात्मभिः ।
शक्या ओषधयो ह्येताः सेवितुं विषयाभिजाः ॥
तासु क्षेत्रगुणैस्तेषां मध्यमेन च कर्मणा ।
मृदुवीर्यतया तासां विधिर्ज्ञेयः स एव तु ॥
पर्येष्टुं ताः प्रयोक्तुं वा येऽसमर्थाः सुखार्थिनः ।
रसायनविधिस्तेषामयमन्यः प्रशस्यते ॥
बल्यानां जीवनीयानां बृंहणीयाश्च या दश ।
वयसः स्थापनानां च खदिरस्यासनस्य च ॥
खर्जूराणां मधूकानां मुस्तानामुत्पलस्य च ।
मृद्वीकानां विडङ्गानां वचायाश्चित्रकस्य च ॥
शतावर्याः पयस्यायाः पिप्पल्या जोङ्गकस्य च ।
ऋद्ध्या नागबलायाश्च हरिद्राया धवस्य च ॥
त्रिफलाकण्टकार्योश्च विदार्याश्चन्दनस्य च ।
इक्षूणां शरमूलानां श्रीपर्ण्यास्तिनिशस्य च ॥
रसाः पृथक् पृथग्ग्राह्याः पलाशक्षार एव च ।
एषां पलोन्मितान् भागान् पयो गव्यं चतुर्गुणम् ।
द्वे पात्रे तिलतैलस्य द्वे च गव्यस्य सर्पिषः ।
तत्साध्यं सर्वमेकत्र सुसिद्धं स्नेहमुद्धरेत् ॥
तत्रामलकचूर्णानामाढकं शतभावितम् ।
स्वरसेनैव दातव्यं क्षौद्रस्याभिनवस्य च ॥
शर्कराचूर्णपात्रं च प्रस्थमेकं प्रदापयेत् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नुगाक्षीर्याः सपिप्पल्याः
स्थाप्यं संमूर्च्छितं च तत् ॥
सुचौक्षे मार्तिके कुम्भे मासार्धं घृतभाविते ।
मात्रामग्निसमां तस्य तत ऊर्ध्वं प्रयोजयेत् ॥
हेमताम्रप्रवालानामयसः स्फटिकस्य च ।
मुक्तावैदूर्यशङ्खानां चूर्णानां रजतस्य च ॥
प्रक्षिप्य षोडशीं मात्रां विहायायासमैथुनम् ।
जीर्णे जीर्णे च भुञ्जीत षष्टिकं क्षीरसर्पिषा ॥
सर्वरोगप्रशमनं वृष्यमायुष्यमुत्तमम् ।
सत्त्वस्मृतिशरीराग्निबुद्धीन्द्रियबलप्रदम् ॥
परमूर्जस्करं चैव वर्णस्वरकरं तथा ।
विषालक्ष्मीप्रशमनं सर्ववाचोगतप्रदम् ॥
सिद्धार्थतां चाभिनवं वयश्च
प्रजाप्रियत्वं च यशश्च लोके ।
प्रयोज्यमिच्छद्भिरिदं यथा-
रसायनं ब्राह्ममुदारवीर्यम्
इतीन्द्रोक्तरसायनमपरम् ॥

इन्द्रने ऋषियोंसे कहा—दिव्यौषधियोंके प्रभावको आपके समान संयमी पुरुष ही सहन कर सकते हैं । ओषधियोंके प्रभावसे अपने अपने कर्मो—तपश्चर्यादि में संलग्न आप लोगोंका हर प्रकार से कल्याण होगा ।

उत्तम क्षेत्र (हिमालय)में उत्पन्न होने वाली इन दिव्यौषधियोंके प्रभावको संयमी और प्रयत्नशील गृहस्थी तथा वानप्रस्थी भी सहन कर सकते हैं परन्तु साधारण पुरुष नहीं ।

जो ओषधियां मध्यमक्षेत्र में उत्पन्न होती हैं और [illegible] प्रभाव भी मध्यम होता है उन्हें भी उपरोक्त विधिसे ही सेवन करना चाहिये ।

जो लोग इन दिव्यौषधियोंकी खोज नहीं कर सकते और न इनके प्रभावको ही सहन कर सकते हैं तथापि सुख चाहते हैं उनके लिये यह—निम्न लिखित रसायनप्रयोग उत्तम है—

बल्य गण, जीवनीयगण, बृंहणीय गण तथा वयस्थापन गण एवं खैर, असन, खजूर, महुवा, नागरमोथा, नीलोत्पल, मुनक्का, वायविडंग, बच, चित्रक, शतावर, पयस्या, (क्षीर काकोली), पीपल, अगर, ऋद्धि, नागबला (गंगेरन), हल्दी, धव, त्रिफला, कटेली, विदारीकन्द, लाल चन्दन, ईख, कासकी जड़, गम्भारी और तिनिश; इनके रस और पलाश (ढाक) का क्षार—जल १०—१० तोले लें । (जिनके स्वरस न मिलें उनके क्वाथ ले लेने चाहियें) । इन सबसे चार गुना गोदुग्ध, १६ सेर तिलका तेल और १६ सेर गोघृत लेकर सबको एकत्र मिला कर मन्दाग्नि पर पकावें । जब जलांश शुष्क हो जाय तो स्नेहको छान लें तत्पश्चात् उसमें अपने ही स्वरसमें १०० बार भावित किये हुवे आमलोंका चूर्ण ४ सेर, नवीन शहद ४ सेर, खांड ४ सेर, वंसलोचनका चूर्ण १ सेर और पीपलका चूर्ण १ सेर मिलाकर मिट्टीके चिकने पात्रमें भरकर रखदें और १५ दिन पश्चात् उसमें स्वर्ण, ताम्र, प्रवाल, लोह, स्फटिकमणि मोती, वैदूर्यमणि, शंख और चांदी इनका चूर्ण उपरोक्त सम्पूर्ण औषधसे १६ वां भाग (या ५ तोले) मिलाकर अग्निबलोचित मात्रानुसार सेवन करें ।

इसके सेवनकालमें परिश्रम और मैथुनसे परहेज करना चाहिये तथा औषधके पचने पर साठी चावलोंका भात घी और दूधके साथ खाना चाहिये ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह रसायन सर्वरोगनाशक, उत्तम वृष्य तथा आयुष्य, सत्व (बल), स्मृति, शरीर, जठराग्नि और इन्द्रियों के बलको बढ़ाने वाली है।

इसके सेवन से ओज, वर्ण और स्वरकी अत्यन्त वृद्धि होती तथा विष और अलक्ष्मी (कान्ति हीनता)का नाश होकर समस्त विद्याएं प्राप्त करनेकी शक्ति उत्पन्न होती है। जिन्हें सर्वत्र सफलताकी इच्छा हो, जो नवीन अवस्था चाहते हों और जिन्हें लोकप्रिय बनने तथा यश प्राप्त करने की इच्छा हो उन्हें यह रसायन यथाविधि सेवन करनी चाहिए।

(ताम्रचूर्णादिकी भस्में डाली जाए तो उत्तमहै।)

इति इकाराद्यवलेहप्रकरणम्

अथ इकारादिघृतप्रकरणम्

(९०७८) इक्ष्वादिघृतम्

(वै. म. र. । प. ३)

इक्षुदूर्वामृताधात्रीश्वदंष्ट्रास्त्रस्निकोद्भवैः।
स्वरसैर्नालिकेराम्बुपयोयुक्तैः सुकल्कितैः॥
चातुर्जातपयोवृक्षमुकुलाम्बुपयोधरैः।
सारिवोशीरयष्ट्याह्वसितोपलहिमामयैः॥
सिद्धं घृतं नवं तूर्णं रक्तपित्तहरं परम्।
अस्थिस्रावं च नारीणां तृड्दाहौ च महाबलौ।
उभयायनमप्याशु रक्तपित्तं हिताशिनाम्।
हन्ति पित्तामयान् चान्यान् पाननावनलेपनैः॥

द्रव पदार्थ—ईखका रस, दूबका रस, गिलोय का रस, आमलेका रस, गोखरुका रस, चांगेरीका रस, नारियलका पानी और गोदुग्ध १-१ सेर।

कल्क—दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर, क्षीरीवृक्ष (बड़, गूलर, अश्वत्थ,-पीपलवृक्ष-पिलखन और पारस पीपल) की कोंपलें, सुगंधबाला, नागरमोथा, सारिवा, खस, मुलैठी, मिसरी, लाल चन्दन और कूठ समान भाग मिलित १० तोला।

१ सेर नवीन (ताज़े) गोघृतमें उपरोक्त द्रव पदार्थ और कल्क मिलाकर पकावें। जब जलांश शुष्क हो जाय तो घीको छान लें।

इसे पान, नावन और लेप में प्रयुक्त करने और पथ्य पूर्वक रहनेसे ऊर्ध्वगत तथा अधोगत रक्तपित्त शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। यह घृत स्त्रियोंके अस्थिस्राव एवं प्रबल तृषा, दाह और अन्य पित्तरोगोंको भी नष्ट करता है।

इति इकारादिघृतप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ इकारादितैलप्रकरणम

(९०७९) इक्ष्वाकुतैलम्

(च. सं. । चि. अ. ७ कुष्ठ.)

तिक्तेक्ष्वाकुबीजं द्वे तुत्थे रोचना हरिद्रे द्वे ।
बृहतीफलमेरण्डः सविशालः चित्रको मूर्वा ॥
काशीशहिङ्गुशिग्रूत्र्युषणसुरदारुतुम्बरुविडङ्गम् ।
लाङ्गलकीकुटजत्वक्कटुकाख्या रोहिणी चैव ॥
सर्षपकल्कैरेतैर्मूत्रे चतुर्गुणे साध्यम् ।
कण्डूकुष्ठविनाशनमभ्यङ्गान्मारुतकफघ्नं तैलम् ॥

कड़वी तूंबीके बीज, दो प्रकारका तुत्थ (मयूर तुत्थ और खर्परी तुत्थ), गोरोचन, हल्दी, दारुहल्दी, बड़ी कटेली के फल, अरण्डमूल, इन्द्रायणकी जड़, चित्रकमूल, मूर्वा, कसीस, हींग, सहंजनेकी छाल, सोंठ, मिर्च, पीपल, देवदारु, तुम्बरु, बायबिडंग, कलियारी, कुड़ेकी छाल, कुटकी और सरसों समान भाग मिलित २० तोले लेकर कल्क बनावें ।

२ सेर (सरसोंके) तेलमें यह कल्क और ८ सेर गोमूत्र मिलाकर यथाविधि तैल सिद्ध करें ।

इसकी मालिशसे खुजली, कुष्ठ, वायु और कफका नाश होता है ।

(९०८०) इन्द्रयवाद्यं तैलम्

(ग. मा. । ज्वर. २०)

इन्द्रयवकुडवं मञ्जिष्ठाया पलार्धमादाय ।
तैलप्रस्थं तेन प्रस्थशते काञ्जिके विपचेत् ॥
उपयुक्तं तद्दारुणदाहज्वरनाशनं भवति पुंसाम् ।
अङ्गानां च करोति प्रहर्षमभ्यङ्गयोगेन ॥

इन्द्रजौका चूर्ण २० तोले, मजीठका चूर्ण २॥ तोले, तिलका तेल २ सेर और कांजी २०० सेर लेकर सबको एकत्र मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें । जब कांजी जल जाए तो तेलको छान लें ।

इसकी मालिशसे ज्वर और प्रबल दाहका नाश होता है तथा अङ्गोंमें चैतन्यता आती है ।

(९०८१) इरिमेदाद्यतैलम्

(ग. नि. । तैला. २)

न वृद्धान्नातिबालाच्च त्वक्तुलामिरिमेदकात् ।
अपां द्रोणे समावाप्य पचेत्पादावशेषितम् ॥
ततस्तेन कषायेण क्षीरप्रस्थसमन्वितम् ।
लाक्षारससमायुक्तं तैलप्रस्थं पचेद्भिषक् ॥
लोध्रकट्फलमञ्जिष्ठापद्मकेसरपद्मकैः ।
चन्दनोत्पलयष्ट्याह्वैः पालिकैर्धातकीसमैः ॥
एतद्रुजापहं नाम तैलं गण्डूषधारणात् ।
दारुणं दन्तचालं च हनुमोक्षं कपालिकाम् ॥
शीतादं पूतिवक्त्रं च शौषिरं विरसास्यताम् ।
हन्यादाशु गदानेतान् कुर्याद्दन्तांस्थिरानपि ॥

जो इरिमेद (दुर्गंधित खैर) का वृक्ष न बहुत छोटा हो न बहुत पुराना उसकी ६। सेर छाल लेकर कूटकर ३२ सेर पानी में पकावें और ८ सेर शेष रहने पर छान लें ।

तदनन्तर २ सेर तिलके तेलमें यह क्वाथ, २ सेर गोदुग्ध, २ सेर लाखका रस और निम्न लिखित कल्क मिलाकर पकावें । जब जलांश शुष्क हो जाए तो तेलको छान लें ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कल्क—लोध, कायफल, मजीठ, कमलकेसर, पद्माक, सफेदचन्दन, नीलोत्पल, मुलैठी और धायके फूल; इनका चूर्ण ५-५ ताले लेकर पानीके साथ पीस लें।

इस तेलके गण्डूष धारण करनेसे दन्तपीड़ा, दारण, दन्तचालन, हनुमोक्ष, कपालिका, शीताद, पूतिवक्त्र, शौषिर और मुखकी विरसताका नाश होता तथा दांत दृढ़ होते हैं।

इरिमेदाद्यं तैलम्

प्र. सं. ८८६१ अरिमेदाद्यं तैलम् देखिये।

इति इकारादितैलप्रकरणम्

अथ इकारादिलेपप्रकरणम्

(९०८२) **इक्षुमूलादिलेपः**

(वै. म. र. । पटल १६)

इक्षुमूलमधुकाञ्जनदार्वी
लोध्रगैरिकपटुत्रिफलानाम् ।
लेपनं बहिरिदं नयनानां
क्षीरपिष्टमपहन्ति विकारम् ॥

ईखकी जड़, मुलैठी, सुरमा (या रसौत), दारुहल्दी, लोध, गेरु, सेंधानमक, और त्रिफला; इनके समान भाग मिलित चूर्णको दूधमें पीसकर आंखों के बाहर लेप करनेसे नेत्राभिष्यन्द नष्ट होता है। (यह प्रयोग पित्ताभिष्यन्द में उपयोगी है।)

(९०८३) **इङ्गुदीफलमज्जालेपः**

(रा. मा. । मुखरोगा. ५)

इङ्गुदीफलसमुद्भवमज्जा
पेषिताऽतिशिशिरेण जलेन ।
एकविंशतिदिनमविलिप्ता
व्यङ्गमाननभवं परिमार्ष्टि ॥

इंगुदी (हिंगोट) के फलकी मज्जाको अत्यन्त शीतल जलके साथ पीसकर लेप करने से २१ दिन में मुखव्यङ्ग (झांई)का नाश होता है।

(९०८४) **इङ्गुद्यादिलेपः**

(ग. नि. । ज्वरा. १)

इङ्गुदिनिशाविशाला
सैन्धवसुरदारुकुष्ठरविदुग्धः ।
दत्तः क्रमेण लेपो हरति महाकर्णकग्रन्थिम् ॥

इंगुदी (हिंगोट), हल्दी, इन्द्रायणकी जड़, सेंधा नमक, देवदारु, और कूठ; इनका चूर्ण तथा आकका दूध समान भाग लेकर पीसकर लेप करने से कर्णक-सन्निपातमें होने वाली कानके पीछेकी गांठकी सूजन नष्ट होती है।

(९०८५) **इन्द्रयवलेपः**

(ग. नि. । विस्फोटा. ४०)

विस्फोटव्याधिनाशाय तण्डुलाम्बुप्रपेषितैः ।
बीजैः कुटजवृक्षस्य लेपः कार्यो विजानता ॥

इन्द्रजौ के चूर्णको चावलों के पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे विस्फोटक का नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९०८६) इन्द्रवारुणिमूललेपः (१)

(रा. मा. । व्रणा. २५)

व्रणपर्यन्तालेपान्मूलं जलपिष्टशक्रवारुण्याः ।
कर्षति नष्टं शल्यं कदाचिदजशृङ्गिकामूलम् ॥

यदि लकड़ी, कांटा आदि शरीरमें घुसकर अन्दरही टूट जाय तो इन्द्रायणकी जड़के चूर्णको पानीमें पीसकर घाव पर लेप करदें इससे वह बाहर निकल आएगा।

मेढासिंगीकी जड़का लेप करनेसे भी नष्ट शल्य निकल आता है।

(९०८७) इन्द्रवारुणीमूललेपः (२)

(रा. मा. । वृद्ध्य. १६)

सुरेन्द्रवारुणीमूलं वृषमूत्रेण पेषितम् ।
चर्मकीलाभिहन्त्याशु प्रलेपात्साधनोद्भवान् ॥

इन्द्रायण की जड़के चूर्णको बैलके मूत्रके साथ पीसकर लेप करनेसे चर्मकीलका नाश होता है।

(९०८८) इन्द्रवारुण्यादिलेपः (१)

(शा. सं. । खं. ३ अ. ११)

इन्द्रवारुणिकाबीजतैलेनाभ्यङ्गमाचरेत् ।
प्रत्यहं तेन जायन्ते कुन्तला भृङ्गसन्निभाः ॥

इन्द्रायणके बीजोंके तैलकी नित्य शिर पर मालिश करनेसे बाल भौंरेके समान काले होजाते हैं।

(९०८९) इन्द्रवारुण्यादिलेपः (२)

(वैद्यामृत)

इन्द्रवारुणिकामूललेपाद्याति कुचव्यथा ।
तथा कुमारिकाकन्दहरिद्रालेपनादपि ॥

इन्द्रायणकी जड़का या घीकुमार (ग्वारपाठा) की जड़ और हल्दीका लेप करनेसे स्तनोंकी पीड़ा नष्ट हो जाती है।

(९०९०) इन्द्रवारुण्यादिलेपः (३)

(वैद्यजीवन । वि. ३)

तरण्युत्तरणीमूलं छागीसर्पिः सनागरम् ।
शिवशस्त्राभिधां बाधां योनिस्थां हन्ति सत्वरम्।

इन्द्रायणकी जड़, घृतकुमारी और सोंठके चूर्णको बकरीके घीमें पीसकर योनिमें लेप करनेसे योनिशूल शीघ्रही नष्ट हो जाता है।

(९०९१) इन्द्रायुधादिलेपः

(वृ. मा. । वृद्ध्य.)

इन्द्रायुधरविक्षीरमिश्रैश्चणकसक्तुभिः ।
सिन्दूरसैन्धवोपेतैर्लेपो हन्ति कुरण्डकम् ॥

चनोंका सत्तू, सिन्दूर और सेंधा नमक का चूर्ण समान भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर थूहर (सेहुंड) और आकके दूधमें पीसकर लेप करने से कुरण्ड रोग नष्ट होता है।

इति इकारादिलेपप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ इकारादिनस्यप्रकरणम्

(९०९२) इङ्गुदीफलनस्यम्

(र. चि. म. । स्त. ९)

इङ्गुदीफलचूर्णस्य नस्येन च शिरोगताः ।
पतन्ति कृमयो दुष्टाः श्वेता रक्ताश्च ये स्थिताः॥

इंगुदी (हिंगोट) के फलका बारीक चूर्ण करके उसकी नस्य लेनेसे शिरके श्वेत और लाल कृमि निकल जाते हैं ।

इति इकारादिनस्यप्रकरणम्

अथ इकारादिरसप्रकरणम्

(९०९३) इच्छाभेदीरसः (१)

(र. प्र. सु. । अ. ८; शा. सं. । खं. २ अ. १२; र. का. धे. । उदरा.)

शुण्ठीपिप्पलीटङ्कणं सदरदं प्रत्येकमेवाक्षकं
हेमाह्वा पलमात्रकाऽत्रकथिता दन्तीफलं तत्समम्
चूर्णीकृत्य समांशकानि
सततं गोदुग्धकैर्भावयेत्
वल्लैकः सितया समं
रसवरः संभक्षितो रेचकृत् ॥

सोंठ, पीपल, सुहागे की खील और शुद्ध हिंगुल १।-१। तोला, चोक ५ तोले और शुद्ध जमालगोटा ५ तोले लेकर सबके चूर्णको एकत्र मिलाकर गोदुग्धमें खरल करके २-२ या ३-३ रत्तीकी गोलियां बना लें ।

इनमें से एक गोली मिश्रीके साथ खानेसे विरेचन होता है ।

(**अनुपान**—शीतल जल ।)

(९०९४) इच्छाभेदीरसः (२)

(र. का. धे. । श्वग.)

शुण्ठीपारदटङ्कणं सुविमलं सेहुण्डकं तत्समं
जैपालं त्रिगुणं तदेव निभृतं दन्तीजलैर्घर्षितम् ।
तच्चात्र त्रिवृताजलैर्विलुलितं सूर्यांशुभिः शोषितम्
देयोऽयं गुडसम्मितो मुनिवरैरिच्छाविभेदी स्मृतः ॥
सन्निपाते तथा वाते महाजीर्णे समुद्भवे ।
आमाजीर्णे तथाऽऽध्माने दातव्यं रक्तिकात्रयम् ।
शर्करादधिभक्तं च पथ्यं देयं विचक्षणैः ॥

सोंठका चूर्ण, पारद (रससिंदूर), सुहागे की खील और सेहुंड (थूहर)का दूध १-१ भाग तथा शुद्ध जमालगोटा ३ भाग लेकर सबको एकत्र खरल करके दन्तीमूलके क्वाथमें १ दिन घोटें और फिर १ दिन निसोतके क्वाथमें खरल करके धूपमें सुखा लें ।

इसे गुड़के साथ देनेसे विरेचन होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह रस सन्निपात ज्वर, वायु, अजीर्ण, आमाजीर्ण, और आध्मानमें उपयोगी है ।

मात्रा—३ रत्ती ।

पथ्य—खांड, दही और भात ।

(**अनुपान**—शीतल जल ।)

(९०९५) **इच्छाभेदीरसः** (३)

(र. का. धे. । उदरा.)

त्रिकटु त्रिफला सूतं गन्धकं टङ्कणं समम् ।
सर्वैस्तुल्यं तु जैपालं सर्वव्याधिहरं परम् ॥
रेचनं निष्कमात्रेण हितमुष्णेन वारिणा ॥

सोंठ, काली मिर्च, पीपल, हर्र, बहेड़ा, आमला; इनका चूर्ण, शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक और सुहागेकी खील १–१ भाग तथा शुद्ध जमालगोटा सबके बराबर लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य ओषधियां मिलाकर (पानीके साथ) खरल करके (१–१ रत्तीकी) गोलियां बना लें ।

इनके सेवनसे विरेचन होकर समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं ।

अनुपान—उष्ण जल ।

(९०९६) **इच्छाभेदीवमनम्**

(र. का. धे. । छर्दि.)

अर्धं तालाच्च तुत्थात् द्वावेकं नवसादरम् ।
गन्धाद्बोलाच्च मदनान्मर्दयेत्फेनिलद्रवैः ॥
ताम्रेण तस्य माषस्तु ज्वरं छर्दिं विनाशयेत् ॥

शुद्ध हरताल आधा भाग, शुद्ध नीलाथोथा २ भाग तथा नौसादर, शुद्ध गंधक, बोल और मैनफल १–१ भाग लेकर सबको एकत्र खरल करके १ दिन तांबेकी मूसलीसे रिहसोड़ेके रसमें घोटकर सुखा लें ।

इसे खिलानेसे (वमन होकर) ज्वर और छर्दिका नाश होता है ।

मात्रा—१ माशा ।

(**व्यवहारिक मात्रा**—१ रत्ती ।)

इति इकारादिरसप्रकरणम्

अथ इकारादिमिश्रप्रकरणम्

(९०९७) **इक्ष्वाकुयोगः**

(भा. । प्र. । म. ख. २ स्त्री. ; यो. र. । स्त्री.)

इक्ष्वाकुबीजदन्तीचपलागुडमदनकिण्वयावशूकैः ।
सास्नुक्क्षीरैर्वर्तिर्योनिगता कुसुमसञ्जननी ॥

कड़वी तुंबीके बीज, दन्तीमूल, पीपल, गुड़, मैनफल, जवाखार और सुराबीज समान भाग लेकर सबके चूर्णको स्नुही (थूहर–सेहुंड) के दूधमें मिलाकर बत्ती बनावें ।

इसे योनिमें रखनेसे मासिक धर्म खुल जाता है ।

(९०९८) **इक्ष्वादियोगः**

(यो. र. । क्षतकासा.)

इक्षुविक्षुवालिकापद्ममृणालोत्पलचन्दनैः ।
शृतं पयो मधुयुतं सन्धानार्थं पिबेत्क्षती ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ईखकी जड़, कांसकी जड़, कमल, कमलनाल, नीलोत्पल और लाल चन्दन; इनके साथ सिद्ध दूधमें शहद मिलाकर पीनेसे उरःक्षतका घाव भरता है।

(औषधियां समान भाग मिलित २॥ तोले, दूध २० तोले, पानी १ सेर; पानी जलने तक मन्दाग्नि पर पकावें।)

(९०९९) इन्द्रवारुण्यादियोगः

(रा. मा. । मुखरोगा. ५)

मूलं सुरवारुण्या गोमूत्रयुतं महीध्रकर्ण्या वा ।
अपहरति गण्डमालां पीतं सुश्लक्ष्णपरिपिष्टम् ॥

इन्द्रायणकी जड़ या कोयलकी जड़को गोमूत्रके साथ बारीक पीसकर पीनेसे गण्डमालाका नाश होताहै।

(९१००) ईसबगोलयोगः

(वैद्यामृत)

इसबगोल इति प्रथितं जने
हरति तज्ज्वरभाजमतीसृतिम् ।
अनुभवाल्लिखितं नतु शास्त्रतो
भवतु तद्भिषजामुपयोगिकम् ॥

ईसब गोल नामक औषधि खिलानेसे ज्वरातिसारका नाश होता है। यह प्रयोग किसी शास्त्र का नहीं है मैं अपने अनुभवसे लिख रहा हूं।

(३-४ माशे इसब गोल को रातको पानीमें भिगो दें और प्रातःकाल वह पानी नितारकर मिश्री मिलाकर पिलावें।)

इति इकारादिमिश्रप्रकरणम्

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उ

अथ उकारादिकषायप्रकरणम्

(९१०१) उत्पलपत्रस्वरसयोगः

(वै. म. र. । पट. ३)

उत्पलपत्रस्वरसः किञ्चित्तैलेन सहापीतः ।
अस्थिस्रावं स्त्रीणां नाशयति नरस्य सोम-
रोगं च ॥

नीलोत्पल के पत्तोंके रसमें जरासा तेल मिला-कर पीनेसे स्त्रियोंका अस्थिस्राव और सोमरोग नष्ट हो जाता है ।

(९१०२) उशीरादिकषायः

(ग. नि. । ज्वरा. १)

उशीरयष्टीमधुनिम्बमिश्रं
मुस्तं हरिद्राद्वितयं पटोलम् ।
आरग्वधश्चेति कृतः कषायः
सवातपित्तज्वरजिन्मतोऽयम् ॥

खस, मुलैठी, नीमकी छाल, नागरमोथा, हल्दी, दारुहल्दी, पटोल और अमलतास समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।

यह क्वाथ वातपित्त ज्वरको नष्ट करता है ।

(९१०३) उशीरादिक्वाथः

(ग. नि. । ज्वरा. २)

उशीरपाठाकुटजाटरूष-
श्रीखण्डमुस्तातिविषाविमिश्रः ।
सनागरः क्वाथवरः सुखाय
ज्वरातिसारे मधुनाऽन्वितो भवेत् ॥

खस, पाठा, इन्द्रजौ, वासा (अडूसा), लाल चन्दन, नागरमोथा, अतीस, और सोंठ समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।

इसमें शहद मिलाकर पीनेसे ज्वरातिसारका नाश होता है ।

(९१०४) उशीरादियोगः

(च. सं. । चि. अ. ४ ; ग. नि. । रक्तपित्त. ८)

उशीरपद्मोत्पलचन्दनानां
पक्वस्य लोष्टस्य च यः प्रसादः ।
सशर्करः क्षौद्रयुतः सुशीतो
रक्तातियोगं प्रशमाय देयः ॥

खस, कमल, नीलोफर, लालचन्दन और पकी हुई ईंट समान भाग लेकर कूटकर रातको पानीमें भिगो दें एवं प्रातःकाल वह पानी नितारकर उसमें खांड और शहद मिलाकर रोगीको पिला दें ।

इसके सेवनसे रक्तपित्त रोगमें होने वाला प्रबल रक्तस्राव बन्द हो जाता है ।

इति उकारादिकषायप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ उकारादिचूर्णप्रकरणम्

(९१०५) उच्चटादिचूर्णम्

(न. मृ. । त. ३ ; वृ. मा. । वाजीकरणा.)

उच्चटाचूर्णमप्येवं क्षीरेणोत्तममुच्यते ।
शतावर्युच्चटाचूर्णं पेयमेव सुखार्थिना ॥

उटिंगणके बीजोंका चूर्ण (मिसरी मिले हुवे धारोष्ण) दूध के साथ पीनेसे वीर्य पुष्ट होता है ।

(**मात्रा**—३ माशा)

इसी प्रकार शतावर और उटिंगणके बीजोंका समान भाग मिलित चूर्ण भी वीर्यको पुष्ट करता है।

(९१०६) उत्पलादियोगः

(भै. र. । स्त्रीरोगा.)

कन्दं रक्तोत्पलस्याथ रक्तकार्पासमूलकम् ।
करवीरस्य मूलानि तथा रक्तोड्रमूलकम् ॥
बकुलस्य तथा मूलं गन्धमातृकजीरकौ ।
रक्तचन्दनकश्चैव समभागश्च कारयेत् ॥
तण्डुलोदकसम्पिष्टं रक्तमूत्राय दापयेत् ।
योनिशूलं कटिशूलं कुक्षिशूलञ्च नाशयेत् ॥
योनिशूलहरः प्रोक्तः उत्पलादिर्न संशयः ॥

लाल कमलकी जड़, लाल कपासकी जड़, कनेरकी जड़, लाल गुडहलकी जड़, मौलसिरीकी जड़की छाल, गंधमात्रा, जीरा और लाल चन्दन समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

इसे चावलोंके धोवनमें पीसकर पिलाने से रक्तमूत्र, योनिशूल, कमरकी पीड़ा और कुक्षिशूल का नाश होता है ।

(**मात्रा**—१-१॥ माशा ।)

(९१०७) उदीच्यादिकल्कः

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ३)

उदीच्यधान्यस्य जलेन कल्कं
पाने हितं पाचयतेऽतिसारम् ।
तृष्णापहं दाहविनाशनं च
सशूलहिक्कासु विनाशनं स्यात् ॥

सुगन्धबाला और धनिया समान भाग लेकर पानीके साथ पीसकर पीनेसे अतिसार, तृष्णा, दाह, शूल और हिक्का का नाश तथा आमका पाचन होता है ।

(९१०८) उदुम्बरपर्णीमूलयोगः

(रा. मा. । स्त्रीरोगा. ३०)

स्तम्भयति गर्भमुदुम्बर-
पर्णीमूलं जलेन परिपीतम् ।
ज्येष्ठजलपिष्टमेतत्तत्कुरुते योनिमध्यगतम् ॥

दन्तीमूलके चूर्णको पानीके साथ पीनेसे या चावलोंके पानीमें पीसकर (कपड़ेमें बांधकर) योनिमें रखनेसे गिरता हुवा गर्भ स्थिर हो जाता है ।

(९१०९) उर्वारुबीजकल्कः

(यो. र. । मूत्रकृच्छा. ; व. से. । मूत्रकृच्छ्रा.)

उर्वारुबीजकल्कं च श्लक्ष्णं पिष्ट्वाऽक्षसम्मितम् ।
धान्याम्ललवणैः पेयं मूत्रकृच्छ्रविनाशनम् ॥

ककड़ीके बीजोंके १। तोला चूर्णको कांजीमें पीसकर सेंधा नमक मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नष्ट होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९११०) उर्वारुबीजादियोगः (१)

(यो. र. । उदावर्ता.)

उर्वारुबीजं तोयेन पिबेद्वा लवणान्वितम् ।
पञ्चमूलीशृतं क्षीरं द्राक्षारसमथापि वा ॥

ककड़ीके बीजोंको पीसकर सेंधा नमक मिलाकर पानीके साथ पीनेसे या पञ्चमूल (लघु पंचमूल) से सिद्ध दूध पीनेसे अथवा द्राक्ष (अंगूर) का रस पीनेसे उदावर्त नष्ट होता है।

(मात्रा—१ से २ तोला)

(यह योग मूत्रावरोध–जन्य उदावर्त में मूत्र खोलने के लिये उपयोगी है।)

(९१११) उर्वारुबीजादियोगः (२)

(यो. र. । मूत्रकृच्छ्रा.)

उर्वारुबीजं मधुकं सदार्वि
पित्ते पिबेत्तण्डुलधावनेन ।
दार्वीं तथैवाऽऽमलकीरसेन
समाक्षिकां पित्तकृतेऽथकृच्छ्रे ॥

ककड़ीके बीज, मुलैठी और दारुहल्दी समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे चावलोंके धोवनके साथ पीनेसे अथवा दारुहल्दीके चूर्णको आमलेके रसमें मिलाकर उसमें शहद डालकर पीनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र नष्ट होता है।

(मात्रा—३ माशे ।)

(९११२) उशीरादिचूर्णम्

(यो. र. । मूत्राघाता.)

उशीरं वालकं पत्रं कुष्ठं धात्री च मौसली ।
एला हरेणुकं द्राक्षाकुङ्कुमं नागकेसरम् ॥
पद्मकेसरकन्दं च कर्पूरं चन्दनद्वयम् ।
व्योषं मधुकलाजाश्च अश्वगन्धा शतावरी ॥
गोक्षुरं कर्कटाख्यं च जातीकङ्कोलचोरकम् ।
एतानि समभागानि द्विगुणाऽमृतशर्करा ॥
मत्स्यण्डिकामधुभ्यां च प्रातरेव बुभुक्षितः ।
क्षयं च रक्तपित्तं च पाददाहमसृग्दरम् ॥
मूत्राघातं मूत्रकृच्छ्रं रक्तस्रावं च नाशयेत् ।
अशीतिं वातजान्रोगान्विशेषान्मेहनुत्परम् ॥

खस, सुगन्धबाला, तेजपात, कूठ, आमला, मूसली, इलायची, रेणुका, मुनक्का, केसर, नागकेसर, कमलकेसर, कमलकन्द, कपूर, सफेदचन्दन, लालचन्दन, सोंठ, मिर्च, पीपल, मुलैठी, धानकी खील, असगंध, शतावर, गोखरु, काकड़ासिंगी, जावित्री, कंकोल और चोरक समान भाग लेकर चूर्ण बनावें और उत्तम खांड (अथवा खांड और घी) सबसे २ गुनी लेकर उसमें मिला दें।

इसे प्रातःकाल भूख लगने पर राब और शहदमें मिलाकर सेवन करनेसे क्षय, रक्तपित्त, पाददाह, रक्तप्रदर, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, रक्तस्राव और ८० प्रकारके वातज रोग एवं विशेषतः प्रमेह का नाश होता है।

(मात्रा—१ तोला ।)

इति उकारादिचूर्णप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ उकाराद्यवलेहप्रकरणम्

(९११३) उच्चटाद्यमोदकः

(व. से. । राजयक्ष्मा.)

उच्चटेक्षुरसः क्षौद्रं तुगाक्षीर्याश्च बुद्धिमान् ।
प्रस्थं प्रस्थं पृथग्गृह्य शर्करार्धतुलान्तथा ॥
आत्मगुप्ताफलानाञ्च कुडवं मरिचस्य च ।
त्रिसुगन्धिकृतात्रापं मन्थानेन विमन्थयेत् ॥
पलिकान्मोदकान्कृत्वा स्थापयेद्भाजने वरे ।
एतद्द्विकालमेकं वा खादेदग्निबलं प्रति ॥
वटकान्नियताहारो ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ।
स हन्याद्यक्ष्मिणः सद्य एकादशविधं क्षयम् ॥
स्वरवर्णबलौदार्य्यतुष्टिपुष्टिविवर्धनम् ।
आयुष्यं पौष्टिकं चाग्न्यं भूतोपहतचेतसाम् ॥
व्याकुलीकृतदेहानां वृद्धानां क्षीणरेतसाम् ।
वाजीकरणमप्येवं वन्ध्यानां पुत्रदं परम् ॥
धनुः स्त्रीमद्यभाराध्वखिन्नानां बलवर्धनम् ।
हृत्प्लीहग्रहणीदोषमूत्रकृच्छ्रापतन्त्रकम् ॥
अपस्मारविषोन्मादनाशनं तद्रसायनम् ॥

भुई आमलेका रस, ईखका रस, शहद और बंसलोचन का चूर्ण १-१ सेर; खांड ३ सेर १० तोले, कौंचके बीजोंका चूर्ण २० तोले, काली मिर्चका चूर्ण २० तोले तथा त्रिसुगन्धि (दाल चीनी, इलायची, तेजपात) का चूर्ण २० तोले लेकर सबको एकत्र मिलाकर मथनी से मथें और फिर ५-५ तोलेके मोदक बना लें।

इनमेंसे १-१ मोदक प्रति दिन प्रातः सायं या केवल १ समय खाने और नियत (उचित मात्रा में, ठीक समय पर पथ्य) आहार करने एवं ब्रह्मचर्य से रहनेसे ११ लक्षणों वाले (पूर्ण लक्षण युक्त) राजयक्ष्मा, हृदयरोग, प्लीहावृद्धि, ग्रहणी रोग, मूत्रकृच्छ्र और अपतन्त्रकका नाश होता है । यह मोदक स्वर, वर्ण, बल, तुष्टि, पुष्टि, आयु और अग्निकी वृद्धि करता है तथा भूतोन्माद, शरीरकी विकलता, वृद्धावस्था और वीर्यकी कमी में उपयोगी है । यह वाजीकरण भी है तथा इसके सेवनसे वन्ध्या स्त्रीको पुत्र प्राप्ति होती है । धनुष चलाने, स्त्री समागम करने, मद्य पीने, भार उठाने और मार्ग चलनेसे उत्पन्न हुई दुर्बलता इसके सेवनसे नष्ट हो जाती है ।

(९११४) उच्चटापाकः

(वै. जी. । वि. ५)

उच्चटामर्कटीगोक्षुरैश्चूर्णितैः
शर्करादुग्धसम्मिश्रितैः पाचितैः ।
सेवितैर्वार्धके मानवो मानिनी-
मानमुच्छेदयेत्किं पुनर्यौवने ॥

उटिंगनके बीज, कौंचके बीज और गोखरु; इनका समान भाग चूर्ण एकत्र मिलाकर गायके दूधमें पकावें और कुछ गाढ़ा हो जाने पर उसमें स्वादयोग्य मिश्री मिला दें तथा थोड़ी देर और पकाकर हलुआ सा बना लें ।

इसे सेवन करने से वृद्ध पुरुष भी मानगर्विता रमणियोंका मान मर्दन कर सकता है, फिर यदि इसे युवावस्थामें सेवन किया जाय तब तो कहना ही क्या है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९११५) **उदुम्बरादियोगः**

(वृ. मा. । रक्तपित्ता. ; यो. र. ; व. से. । रक्तपित्ता.)

पक्वोदुम्बरकाश्मर्यपथ्याखर्जूरगोस्तनाः ।
मधुना घ्नन्ति संलीढा रक्तपित्तं पृथक्पृथक् ॥

पके गूलर, खम्भारीके फल, हर्र, खजूर और मुनक्का, इनमें से किसीको भी पीसकर शहद में मिलाकर चाटने से रक्तपित्तका नाश होता है ।

(९११६) **उशबाऽवलेहः**

(न. मृ. । त. ८)

चतुःपलां ध्रुवजटां नवकर्षं किरातकम् ।
दशकर्षा त्रिवृद्ग्राह्या षट्कर्षा स्वर्णपत्रिका ॥
हरीतकीत्रयं चैव त्रित्रिकर्षं पृथक् पृथक् ।
शतपत्री निराधारा शतपुष्पा तथैव च ॥
नीलोत्पलं पर्पटं च सार्द्धकपलवालुकम् ।
कर्षकर्षप्रमाणेन धान्यकं रक्तचन्दनम् ॥
चोपचीनीपलं चैकं योजयेन्मतिमान्नरः ।
सर्वं सङ्कुट्य विधिना श्लक्ष्णं चूर्णं च कारयेत् ॥
वातामकोद्भवे तैले मर्दयेच्च चतुःपले ।
त्रिगुणे माक्षिके शुद्धे विधिना मेलयेद्भिषक् ॥
कर्षमानं भक्षयित्वा कोष्णतोयं ततः पिबेत् ।
वसन्ते भक्षयेन्नित्यं प्रातःकाले यथाबलम ॥
घृतं मुद्गं तथा शालीन्भक्षयेन्मतिमान्नरः ।
अम्लं तैलं दधि दुग्धं गुडं चापि परित्यजेत् ॥
नानायोगेषु योगोयमुत्तमः परिकीर्तितः ।
मेहं कुष्ठं फिरङ्गं हि उपदंशं च नाशयेत् ॥
सर्वान्रक्तभवांश्चैव रोगान्नाशयति ध्रुवम् ।
कृपया ह्येकदा मह्यं मातुलेन प्रकाशितम् ॥

उशवा २० तोला, चिरायता ९ तोला, उत्तम निशोथ १० तोला, सनाय ६ तोला, बड़ी हर्डका बक्कल ३ तोला, काबलीहरडका बक्कल ३ तोला, जंगीहर्ड ३ तोला, गुलाबके फूल १॥ तोला, आकाशवेल (अफतिमुन) १॥ तोला, सौंफ १॥ तोला, नीलोफर १॥ तोला, पित्तपापड़ा १॥ तोला, एलुवा १॥ तोला, चोपचीनी ५ तोला, धनिया १ तोला, लालचंदन १ तोला, इन सबको कपड़छान करके, बीस तोला बादामरोगनमें मसलकर सबसे तीनगुने शुद्ध शहदमें मिलाकर चिकने वर्तनमें भरकर रख देवें । इसमेंसे एक तोला, अथवा जितना वैद्य उचित समझे उतना खिलाकर ऊपरसे थोड़ासा गरम जल पिलावे और मूंग, चावल, घी, आदि पथ्य भोजन करावे । तैल, खटाई, दही, दूध, उड़दकी दाल, लाल मिर्चसे परहेज रक्खे और इसको वसंत ऋतुमें बराबर दो महीने खिलावे तो प्रमेह, कुष्ट, फिरंग उपदंश, और रक्तके विकार नष्ट हो जाते हैं । यह परमोत्तम उशबावलेह एक समय स्नेहवश कृपा करके हमारे मामा केशवानंदजीने कथन किया था ।

(इस योगकी यह टीका उक्त श्लोकों के रचयिता श्रीयुत् पं. रामप्रसादजी वै. पं. की ही की हुइ है ।)

इति उकाराद्यवलेहप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ उकारादिघृतप्रकरणम्

(९११७) उदकषट्पलघृतम्

(व. से. । अर्शो. ; च. द. । अर्शो. ५)

नागरं ग्रन्थिकं चव्यं पिप्पली क्षारचित्रकम् ।
एतैश्च पलिकैः सर्वैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥
उदकस्य त्रयो भागाः क्षीरस्यैकं तदेकतः ।
दुर्नामश्वासकासघ्नं प्लीहपाण्ड्वामयापहम् ॥
विषमज्वरशान्त्यर्थं तृष्णारोचकनाशनम् ।
एतत्षट्पलकं नाम बलवर्णाग्निवर्द्धनम् ॥

कल्क—सोंठ, पीपलामूल, चव, पीपल, जवाखार और चीतामूल; इनका चूर्ण ५–५ तोले ।

२ सेर घी में यह कल्क, ६ सेर पानी और २ सेर गोदुग्ध मिलाकर पकावें । जब जलांश शुष्क हो जाय तो घीको छान लें ।

इसके सेवनसे अर्श, श्वास, कास, प्लीहा, पाण्डु, विषमज्वर, और अरुचिका नाश होता तथा बल वर्ण और अग्निकी वृद्धि होती है ।

इति उकारादिघृतप्रकरणम्

अथ उकारादिलेपप्रकरणम्

(९११८) उत्पलादियोगः

(वृ. मा. । क्षुद्ररोगा.)

उत्पलं पयसा सार्धं मासं भूमौ निधापयेत् ।
केशानां कृष्णकरणं स्नेहनं च विधीयते ॥

नीलोफर को दूधमें पीसकर उसीमें घोल कर (लोहपात्रमें बन्द करके) भूमिमें दबा दें और १ मास पश्चात् निकालकर काममें लावें ।

इसे बालों में लगाने से बाल काले और स्निग्ध हो जाते हैं ।

(९११९) उत्पलाद्युद्वर्तनम्

(र. र. रसा. खं. । उप. ५)

उत्पलानि समूलानि पारदं च समं समम् ।
सप्ताहं मर्दयेत्खल्वे स्वकीयेना शिवाम्बुना ॥
तेनैव मर्दयेद्गात्रं जायते पूर्ववत्फलम् ॥

मूल सहित उत्पल (नीलोफर) और पारद समान भाग लेकर दोनोंको सात दिन तक आमले के स्वरसमें खरल करें ।

इसे शरीर पर मलनेसे बलि (झुर्रियां) नष्ट होती हैं और (बालों पर लगाने से) सफेद बाल काले हो जाते हैं ।

(९१२०) उपोदिकालेपः

(व. से. । अर्बुदा.)

उपोदिकाकाञ्जिकतक्रपिष्टा
तथोपनाहं लवणेन सार्धम् ।
दृष्टोऽर्बुदानां प्रशमाय कैश्चि-
द्दिने वा त्रिषु मर्मजानाम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपोदिका (पोई) को कांजी या तक्रमें पीसकर उसमें सेंधा नमक मिलाकर गाढ़ा गाढ़ा लेप करने से मर्मज अर्बुद नष्ट हो जाता है।

(९१२१) उशीरादिलेपः

(वै. म. र. । पटल ११)

उशीरं बहुशो लिम्पेन्नश्येत्स्वेदमसूरका ।

खसको (पानीके साथ) बारीक पीसकर बारबार लेप करने से स्वेद और मसूरिका का नाश होता है।

इति उकारादिलेपप्रकरणम्

अथ उकारादिधूपप्रकरणम्

(९१२२) उग्रगन्धादिधूपः

(वृ. मा. । मसूरिका.)

उग्राज्यवंशनीलीयवविषकार्पासिकीकसब्राह्मी-
सुरसमयूरकलाक्षाधूपो रोमान्तिकादिहरः ।
आदावेव प्रयुक्तस्य प्रशाम्यन्ति मसूरिकाः
न गृह्णन्ति विषं केचिद्यथालाभ्यं गृहि ॥

बच, बांसके पत्ते, नीलका पंचांग, जौ, वछनाग, कपासके बीज (बिनौले), ब्राह्मी, तुलसी, अपामार्ग (चिरचिटा) और लाख समान भाग लेकर बारीक चूर्ण बनावें तथा उसे घी से चिकना कर लें।

मसूरिका के प्रारम्भमें इसकी धूप देने से वह नष्ट हो जाती है।

इस योगमें कोई कोई वैद्य 'विष' ग्रहण नहीं करते। इसकी जितनी चीजें मिल सकें उतनी ही ले लेनी चाहियें।

इति उकारादिधूपप्रकरणम्

अथ उकाराद्यञ्जनप्रकरणम्

(९१२३) उन्मादभञ्जिनीवटी

(र. रा. सु. । उन्मादा.)

शुद्धं मनःशिलाचूर्णं सैन्धवं कटुरोहिणी ।
वचा शिरीषबीजञ्च हिङ्गु च श्वेतसर्षपम् ॥
करञ्जबीजं त्रिकटु मलं पारावतस्य च ।
एतानि समभागानि गोमूत्रैर्वटिकां कुरु ॥
गिरिमल्लीबीजसमां छायाशुष्कांश्च कारयेत् ।
प्रातःसन्ध्यानिशाकाले चक्षुषोरञ्जनहितम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मधुरादिरसेनाञ्ज्याद् रात्र्यात्रपि जलेन च ।
वटिकैका समाख्याता नाम्ना चोन्मादभञ्जिनी ॥
चातुर्थकमपस्मारमुन्मादश्च विनाशिनी ॥

शुद्ध मनसिल, सेंधा नमक, कुटकी, बच, सिरसके बीज, हींग, सफेद सरसों, करञ्जबीज, सोंठ, काली मिर्च, पीपल और कबूतरकी विष्ठा; सबका समान भाग चूर्ण लेकर गोमूत्रमें घोटकर इन्द्रजौ के समान वटी (वर्तियां) बनाकर छाया में सुखा लें।

इनमें से १ वटी प्रातः, सायं शहदमें घिसकर और रातको पानीमें घिसकर आंखमें अंजन करने से उन्माद, अपस्मार और चातुर्थिक ज्वर का नाश होता है।

इति उकाराद्यञ्जनप्रकरणम्

अथ उकारादिरसप्रकरणम्

(९१२४) उदयभास्कररसः

(र. चं.; र. का. धे.; र. रा. सु.; र. र. । श्वासा.)

धान्याभ्रं सूतकं गन्धं श्वेतापामार्गजै रसैः ।
तुल्यांशं मर्दयेच्चाह्नो यन्त्रे पातनके पचेत् ॥
ऊर्ध्वलग्नं तु तद्ग्राह्यं रसो ह्युदयभास्करः ।
श्वासं पञ्चविधं हन्ति द्विगुञ्जमनुपानतः ॥

धान्याभ्रक, शुद्ध पारद और शुद्ध गंधक समान भाग लेकर कज्जली बनावें और उसे १-१ दिन सफेद कोयल और अपामार्ग के रसमें खरल करके ऊर्ध्व पातन यन्त्रमें डालकर उड़ा लें। ऊपरके पात्रमें जो रस लगा हुवा मिले उसे छुड़ाकर शीशी में भर लें।

मात्रा—२ रत्ती ।

इसके सेवनसे ५ प्रकारका श्वास नष्ट होता है।

(९१२५) उदयमार्तण्डरसः

(यो. र. । उदावर्ता.)

हिङ्गूलं जयपालटङ्कण-
विषाण्यन्त्यार्धभागोत्तरं
सर्वं खल्वतले विमर्द्य
मतिमान्गुञ्जाद्वयं वै ददेत् ।
मार्तण्डोदयको ज्वरादि-
सहिते यः सोदराध्मानके
पाण्ड्वाजीर्णगदेऽनुपानवशतः
पथ्यं च तक्रौदनम् ॥
व्योषेणाऽऽर्द्ररसेन तत्र
सितया युक्तो ज्वरे दारुणे
मान्द्ये गुल्मकफानले च
पवने शूले च शोफोदरे !
वातास्रे स्वरवर्णकुष्ठ
गुदजान्रोगानशेषाञ्जयेत् ॥

शुद्ध हिंगुल ३ भाग, शुद्ध जमालगोटा २॥ भाग, सुहागेकी खील २ भाग, और शुद्ध विष (बछनाग) १। भाग लेकर सबको एकत्र खरल करके रक्खें।

मात्रा—२ रत्ती ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसे यथोचित अनुपानके साथ देनेसे ज्वर, उदराध्मान, पाण्डु और अजीर्णका नाश होता है। इस पर तक्र भात का पथ्य देना चाहिये।

इसे दारुण ज्वरमें सोंठ, मिर्च, पीपलके चूर्ण, अदरकके रस और मिश्री के साथ देना चाहिये।

यह रस अग्निमांद्य, गुल्म, कफ, वायु, शूल, शोफोदर, वातरक्त, कुष्ठ और गुद-रोगों को नष्ट करता है।

(९१२६) उदयादित्यरसः

(र. र. रसा. ख. । उप. २)

पारदाद्विगुणं गन्धं शुद्धं सर्वं विमर्दयेत् ।
मुण्ड्यार्द्रकरसैः खल्वे त्रिसप्ताहं पुनः पुनः ॥
एतत्तुल्यं शुद्धताम्रं सम्पुटे तन्निरोधयेत् ।
वेष्टयेद्वस्त्रखण्डेन वज्रमृत्तिकया बहिः ॥
लिप्त्वा विशोषयेत्तं वै सम्यग्गजपुटे पचेत् ।
उद्धृत्य सम्पुटं चूर्ण्य देवदाल्या द्रवैस्त्र्यहम् ॥
भृङ्गपुनर्नवाद्रावैः पृथग्भाव्यं त्र्यहं त्र्यहम् ।
तत्तुल्यं नागराच्चूर्णं क्षिप्त्वा मध्वाज्यसंयुतम् ॥
लिहेन्माषद्वयं नित्यं यावत्संवत्सरावधि ।
रसोऽयमुदयादित्यो जरामृत्युहरः परः ॥
पुनर्नवादेवदालीभृङ्गचूर्णं समं समम् ।
मध्वाज्याभ्यां लिहेत्कर्षमनुपानात्क्रामणं परम् ॥

शुद्ध पारद १ भाग और शुद्ध गंधक २ भाग लेकर दोनोंकी कज्जली बनाकर उसे २१-२१ दिन गोरखमुण्डी और अदरकके रसमें खरल करें। तदनन्तर उस कज्जली के बराबर शुद्ध ताम्रका चूर्ण मिलाकर सबको शरावसंपुटमें बन्द करें और उस पर कपड़ा लपेटकर उसके ऊपर वज्रमृत्तिकाका लेप कर दें। इसे सुखाकर गजपुटमें फूंक दें और फिर उसके स्वांगशीतल होने पर रसको निकालकर ३-३ दिन देवदाली (बिंडाल), भंगरे और पुनर्नवाके रसमें खरल करें। तत्पश्चात् उसमें उसके बराबर सोंठका चूर्ण मिलाकर सुरक्षित रक्खें।

इसमें से नित्य प्रति २ माशे रस शहद और घीके साथ १ वर्ष तक सेवन करनेसे जरामृत्युका नाश हो जाता है। (?)

अनुपान—पुनर्नवा, भंगरा और देवदालीका चूर्ण बराबर बराबर लेकर एकत्र मिलालें। इसमें से १ कर्ष चूर्ण शहद और घीके साथ मिलाकर उपरोक्त रस खानेके पश्चात् चाटना चाहिये।

(९१२७) उदरारिरसः

(र. का. धे. । उदरा. ; यो. त. । ५२)

सूतगन्धकणापथ्यावचारग्वधकान् समम् ।
मर्दयेद्वज्रिदुग्धेन तन्माषं खादयेद्दिनम् ॥
नृणां जलोदरं हन्ति पथ्यं शाल्योदनं दधि ।
बिम्बाफलरसं चानुपानमस्मिन्प्रयोजयेत् ॥

शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, पीपल, हर्र, बच और अमलतास का गूदा समान भाग लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य ओषधियोंका चूर्ण मिलाकर १ दिन सेहुंड(थूहर)के दूधमें खरल करें और सुखाकर सुरक्षित रक्खें।

मात्रा—१ माशा।

पथ्य—शालि चावलोंका भात और दही।

अनुपान—कन्दूरीके फलोंका रस।

यह रस जलोदरको नष्ट करता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९१२८) उदरारिलोहः

(र. र. ; व. से. । उदरा.)

स्नुह्यर्कदन्तीधववह्निफञ्जी
शोफारिपाशोऽशनकन्दकन्दः ।
माणत्रियामाग्निकवाणरण्डा
तालं तथा मञ्जरिपारिभद्रौ ॥
प्रत्येकशः क्षारचतुः पलांशं
तथा पलाशस्य सर्वैः समः स्यात् ।
चतुर्गुणे क्वाथजलाष्टशेषे
पचेद्विपिक्षा विधिशुद्धलोहम् ॥
चूर्णीकृतं तत्पुटितं पुटेन
तत्तुल्यतं षोडशिकं पलानाम् ।
वर्षाभूभल्लातकवह्निदन्ती
त्रिवृद्द्रवन्तीरविवृद्धमूलम् ॥
कञ्चुकी तालमूली च पीवरी गिरिकर्णिका ।
मीलिनी बृहतीपत्रं शम्पाकं विजया समम् ॥
चतुष्पलांशं क्वथिताष्टशेषं
स्नुह्यर्कदुग्धेन पलाष्टकेन ।
दत्त्वा पचेत्ताम्रमये सुपात्रे
पलैर्द्विरष्टैर्हविषस्तथैव ॥
अमूनि चूर्णानि च सिद्धशीते
क्षिपेत्तथा लोहरजः समानि ।
लवणानि च सर्वाणि क्षारः पञ्चोषणानि च ॥
मरिचं चाजमोदा च हिङ्गुभल्लातकानि च ।
चित्रकं तालमूलश्च गवाक्षी त्रिवृताऽमृता ॥
वर्षाभूः सूरणो मानो विडङ्गं दन्तिग्रन्थिकम् ।
... माक्षिकचूर्णस्य कङ्कुष्ठकशिलाजतोः ॥
गु.गुलोर्गन्धकस्यापि पारदस्य पलं पृथक् ।
शीते पलाष्टकं क्षौद्रं दत्त्वा मधुघृतान्वितम् ॥
लोहदण्डेन सङ्घृष्य लोहपात्रे चिरं भिषक् ।
विधिज्ञोक्तेन विधिना हिताहारविहारवान् ॥
अन्नपानं यथा सात्म्यं कुर्वन्नित्यं निरामयः ।
उदरेषु च सर्वेषु शोथेषु विविधेषु च ॥
अर्शःसु च विशेषेण पाण्डुरोगे सकामले ।
विधिनोक्तेन कुर्वाणो नरो रोगान्न विन्दति ॥

सेहुंड (स्नुही—थूहर), आक, दन्ती, धव, भिलावा, फंजी (भरंगी), पुनर्नवा (बिसखपरा), बरना, असना, जिमीकन्द, विदारीकन्द, मानकन्द हल्दी, चीता, सरफोंका, मूषाकर्णी, ताड़, तुलसी और पारिभद्र (फरहद या नीम); इनका क्षार २०-२० तोले और पलाश (ढाक) का क्षार सबके बराबर लेकर सबको चारगुने (८ गुने) पानीमें पकावें और आठवां भाग शेष रहने पर उसमें १ सेर लोह भस्म तथा निम्न लिखित क्वाथ और १-१ सेर स्नुही तथा आकका दूध एवं २ सेर घी डाल कर ताम्र पात्रमें पकावें ।

क्वाथ—पुनर्नवा, भिलावा, चीतामूल, दन्ती-मूल, निसोत, द्रवंती, आककी जड़, विधारेकी जड़, सरफोंकाकी जड़, तालमूली (मूसली), शतावर, कोयल, नीलकी जड़, कटेलीके पत्ते, अमलतासका गूदा और भांग २०-२० तोले लेकर कूटकर आठ गुने पानीमें पकावें और आठवां भाग शेष रहने पर छान लें ।

जब पकते पकते अवलेहके समान गाढ़ा हो जाय तो ठंडा करके उसमें निम्न लिखित चीजोंका चूर्ण मिलावें—

पांचों नमक, जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, पीपल, पीपलामूल, चव, चीतामूल, सोंठ, काली मिर्च,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अजमोद, हींग, शुद्ध भिलावा, चीतामूल, तालमूली (मूसली), इन्द्रायणकी जड़, निसोत, गिलोय, पुनर्नवा (बिसखपरा), जमीकन्द, मानकन्द, बायबिडंग, दन्तीमूल और पीपलामूल; इनका चूर्ण समान भाग मिश्रित १ सेर (८० तोले)। स्वर्णमाक्षिक भस्म ५ तोले, कंकुष्ठ ५ तोले, शिलाजीत ५ तोले, गूगल ५ तोले तथा ५-५ तोले शुद्ध पारद और गंधककी कज्जली।

इनके अतिरिक्त उसमें १ सेर शहद भी डाल दें और सब को लोहपात्रमें डालकर बहुत देर तक लोहेके मूसलेसे घोटें।

इसके सेवनसे समस्त प्रकारके उदररोग, अनेक प्रकारके शोथ, अर्श, पाण्डु और कामला का नाश होता है।

इसके सेवनकालमें जो अन्न पान सात्म्य (अनुकूल) हो वही खाना पीना चाहिये।

(९१२९) उन्मादकुठाररसः

(र. का. धे. । उन्मादा.)

रसं गन्धं वचा ब्राह्मी शङ्खिनी विषधूर्तकम् ।
वचाधत्तूरजैर्भाव्यं स्यादुन्मादकुठारकः ॥

शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, बच, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, शुद्ध बछनाग और धतूरेके शुद्ध बीज समान भाग लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियोंका चूर्ण मिलाकर सबको १-१ दिन बच और धतूरेके रसमें खरल करें।

इसके सेवनसे उन्माद नष्ट होता है।

(मात्रा—२ रत्ती।)

(९१३०) उन्मादध्वंसिरसः

(र. रा. सु. । उन्मादा.)

तालकं शुल्बकं तुल्यं गन्धकेन ममारयेत् ।
तन्मृतश्च पुटेत्पश्चाद्दत्वा गन्धं समं पुनः ॥
गुञ्जाद्वयं प्रदातव्यमुन्मादे च वचायुतम् ।
अपस्मारे च सततमुन्मादध्वंसनं रसम् ॥

शुद्ध हरताल, शुद्ध ताम्र और शुद्ध गंधक समान भाग लेकर तीनोंको एकत्र खरल करके शराव सम्पुटमें बन्द करें और फिर गज पुटमें फूंक दें। तदनन्तर उसमें समान भाग गंधक मिलाकर पुनः खरल करें और गज पुटमें फूंक दें। (इसी प्रकार कई पुट देकर निरुत्थ भस्म करें।)

मात्रा—२ रत्ती।

इसे बचके चूर्ण के साथ सेवन करनेसे उन्माद और अपस्मारका नाश होता है।

(९१३१) उन्मादपर्पटीरसः

(र. चं. ; र. रा. सु. ; धन्व. । उन्मादा.)

पर्पटीरसगुञ्जाष्टौ धत्तूराद् बीजपञ्चकम् ।
गोघृतेन च संयोज्य खादेदुन्मादशान्तये ॥

८ रत्ती पर्पटी रसमें धतूरे के ५ बीज मिला कर गोघृतके साथ सेवन करनेसे उन्माद रोग नष्ट होता है।

उन्मादभञ्जनी वटी

(र. रा. सु. । उन्मा.)

अञ्जन प्रकरणमें देखिये।

(९१३२) उपदंशघ्नरसः

(न. मृ. । त. ८)

पारदः कर्षमात्रः स्यात्तावन्मात्रं तु गन्धकम् ।
तावन्मात्रस्तु खदिरस्तेषां कुर्यात्तु कज्जलीम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रजनी केशरं त्रुटयौ जीरयुग्मं यवानिका ।
चन्दनद्वितयं कृष्णा वांसी मांसी च पत्रकम् ॥
अर्द्धकर्षमितं सर्वं चूर्णं येत्ता च निक्षिपेत् ।
तत्सर्वं मधुसर्पिर्भ्यां द्विपलाभ्यां पृथक्पृथक् ॥
मर्दयेदथ तत्खादेदर्द्धं कर्षमितं नरः ।
व्रणः फिरङ्गरोगोत्थस्तस्यावश्यं विनश्यति ॥
अन्योऽपि चिरजातोऽपि प्रशाम्यति महाव्रणः।
एतद्भक्षयतः शोथो मुखस्यान्तर्न जायते ॥
वर्जयेदत्र लवणमेकविंशतिवासरान् ।
घृतयुक्तामथो शुष्कां भक्षयेत्करपट्टिकाम् ॥
प्रसंगात्कथिता तात उपदंशहरी क्रिया ।
व्रणवत्कुष्ठवच्चात्र कर्तव्या विविधाः क्रियाः ॥
स्वेदनं वमनं चाथ तीक्ष्णश्चैव विरेचनम् ।
ततश्च औषधीनां वै प्रयोगमुपयोजयेत् ॥

शुद्ध पारद १। तोला, शुद्ध गंधक १। तोला और कत्था १। तोला लेकर तीनोंकी कज्जली बनावें और फिर उसमें हल्दी, केसर, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, सफेद जीरा, काला जीरा, अजवायन, सफेद चन्दन, लालचन्दन, पीपल, बंसलोचन, जटामांसी और तेजपात; इनका ७॥-७॥ माशे चूर्ण मिलावें। तदनन्तर उसमें १०-१० तोला घी और शहद मिलाकर सुरक्षित रक्खें।

मात्रा—७॥ माशे ।

इसके सेवन से मुखमें शोथ हुवे बिना ही फिरंग रोगके व्रण अवश्य नष्ट हो जाते हैं तथा यह रस अन्य प्रकारके पुराने व्रणोंको भी नष्ट कर देता है।

पथ्यापथ्य—२१ दिन तक नमक खाना छोड़ दें और घी के साथ या रूखी रोटी खावें।

फिरंग रोगमें कुष्ठ और व्रणकी चिकित्सा के समान उपचार करने चाहियें। स्नेहन स्वेदन के पश्चात् वमन और तीक्ष्ण विरेचन देना चाहिये और फिर औषधियां सेवन करानी चाहियें।

(९१३३) उपदंशान्धसूर्यः

(वृ. यो. त. । त. ११७)

शङ्खोपलं कोलमितं पलत्रिकं
क्षुद्रारसं निम्बुरसं तथैव ।
लौहे कटाहे विनिधाय सर्वं
संङ्गृह्य सत्वक्पिचुमन्दजेन ॥
दण्डेन यावद्धि घनी भवेच्च
सिद्धो भवेन्मुद्गनिभां च मात्राम् ।
दद्यात्फिरङ्गामयके भिषग्भिः
स्वेच्छं विधेयं किल पथ्यमस्य ॥
तैलाम्लवर्ज्यं निखिलव्रणघ्नं
घृतानुपानैरुपदंशसूर्यः ॥

शंखोपल (शंखके समान सफेद पत्थर अर्थात् संखिया) ५ माशे लेकर उसे लोहेकी कढ़ाहीमें डाल कर उसमें १५-१५ तोले कटेलीका तथा नीबूका रस डालकर छिलके सहित नीमके सोंठेसे घोटें। जब वह गाढ़ा हो जाय तो मूंगके समान गोलियां बना लें। इनमें से १-१ गोली प्रतिदिन घीके साथ देनेसे फिरङ्ग रोग नष्ट हो जाता है।

तेल और खटाईका परित्याग करके पथ्याहार देना चाहिये ।

(यह प्रयोग विषैला है अतः अनुभवी चिकित्सकके परामर्शसे ही खाना चाहिये ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९१३४) उपरसशोधनम्

(यो. त. । त. १७)

कङ्कुष्ठं गैरिकं शङ्खं कासीसं टङ्कणं तथा ।
नीलाञ्जनं शुक्तिभेदाः क्षुल्लकाः सवराटिकाः ॥
जम्बीरवारिणा स्विन्नाः
क्षालिताः कोष्णवारिणा ।
शुद्धिमायान्त्यमी योज्या
भिषग्भिर्योगसिद्धये ॥

कंकुष्ठ, गेरु, शंख, कसीस, सुहागा, नीलांजन, शुक्तिभेद क्षुल्लक (घोंघा) और कौड़ी; ये उपरस जंबीरी नीबूके रसमें (दोलायन्त्र विधिसे) स्वेदित करके गरम पानीसे धो डालनेसे शुद्ध हो जाते हैं।

(९१३५) उपविषशोधनम्

(रसे. सा. सं.)

अर्कसेहुण्डधत्तूरलाङ्गलीकरवीरकाः ।
गुञ्जाहिफेनावित्येताः सप्तोपविषजातयः ॥
धुस्तूरस्य च यद्बीजमन्यच्चोपविषञ्च यत् ।
तच्छोध्यं दोलिकायन्त्रे क्षीरपूर्णेऽथ पात्रके ॥

आकका दूध, सेहुंड (थूहर)का दूध, धतूरा, कलियारीकी जड़, कनेरकी जड़, गुञ्जा और अफीम ये सात उपविष हैं।

धत्तूरबीजादि उपविष दोलिकायन्त्र विधिसे (१ पहर) गोदुग्धमें पकानेसे शुद्ध हो जाते हैं।

इति उकारादिरसप्रकरणम्

अथ उकारादिमिश्रप्रकरणम्

(९१३६) उच्चटादिमर्दनम्

(न. मृ. । त. ६)

कुडवैकमुच्चटाबीजान्मेषीक्षीरे चतुर्गुणे ।
पाचयित्वा विधानेन शिश्ने मासं विमर्दयेत् ॥
औद्दण्ड्यं जायते शिश्ने दोषं हत्वा ह्ययोनिजम् ॥

२० तोले उटिंगणके बीजोंका चूर्ण करके उसे ८० तोले भेड़के दूधमें पकाकर खीर सी बना लें। इसे थोड़ी थोड़ी करके शिश्न पर मर्दन करें। इसी प्रकार १ मास तक करने से अयोनि मैथुन जनित दोष नष्ट होकर शिश्न दृढ़ हो जाता है।

(९१३७) उत्तरिणीमूलयोगः

(रा. मा. । स्त्रीरोगा. ३०)

गर्भं विपन्नमपि पातयति क्षणेन
स्त्रीणां जरायुपटलं च पृथक्करोति ।
पादे स्थितं वलयरूपतयोत्तरिण्या
मूलं व्यथातिशयविक्लवमानमानाम् ॥

यदि प्रसवके समय स्त्रीको अत्यन्त वेदना हो रही हो और प्रसव न होता हो तो इंद्रायणकी जड़को पैरमें लपेट देने से मृत गर्भ भी शीघ्र ही निकल आता है और उसके साथ ही जरायु पटल (जेर) भी निकल जाती है।

(९१३८) उपोदिकादियोगः

(वै. म. र. । पट. १८)

निद्रां करोत्यनिद्राणां प्रदोषे शिरसा धृता ।
उपोदिका कपोतायाः शिफा वाऽथ धृता तथा ॥

सायंकालको उपोदिका (पोई) को या कपोताकी जड़ शिर पर रख कर सो रहने से अनिद्रा दूर होकर नींद आ जाती है।

इति उकारादिमिश्रप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

ए

अथ एकारादिकषायप्रकरणम्

(९१३९) एरण्डसप्तकम्

(वृ. यो. त. । त. ९४; व. से.; वृ. मा. । शूला.; ग. नि. । शूला. २३; हा. सं. । स्था. ३ अ. ७)

एरण्डबिल्वबृहतीद्वयमातुलुङ्ग-
पाषाणभित्रिकटुमूलकृतः कषायः ।
सक्षारहिङ्गुलवणो रुबुतैलमिश्रः
श्रोण्यूरुमेढ्रहृदयस्तनरुक्षु पेयः ॥

अरण्ड मूल, बेलकी जड़की छाल, कटेली, कटेला (बड़ी कटेली), बिजौरेकी जड़की छाल, पाषाणभेद और पीपलामूल समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।

इसमें जवाखार (१ माशा), हींग (१ रत्ती), सेंधा नमक (१ माशा) अरण्डीका तेल (१ तोला) मिलाकर पीनेसे श्रोणी (नितम्ब), ऊरु, मेढ्र, हृदय और स्तन में होने वाला शूल नष्ट होता है ।

(९१४०) एरण्डादिक्वाथः

(धन्व.; र. र. । स्त्रीरोगा.

एरण्डमूलममृतामञ्जिष्ठारक्तचन्दनम् ।
दारुपद्मयुतः क्वाथो गर्भिण्या ज्वरनाशनम् ॥

अरण्डमूल, गिलोय, मजीठ, लाल चन्दन, देवदारु और कमलपुष्प समान भाग लेकर क्वाथ बनावें । यह क्वाथ गर्भिणीके ज्वरको नष्ट करता है ।

(९१४१) एरण्डादियोगः

(सु. सं. । चि. अ. ४२ गुल्मा.)

एरण्डफलमूलानि मूलं गोक्षुरकस्य च ।
शालपर्णीं पृश्निपर्णीं बृहतीं कण्टकारिकाम् ॥
दद्याच्छृगालविन्नाश्च सहदेवां तथैव च ।
महासहां क्षुद्रसहां मूलश्चेक्षुरकस्य च ॥
एतत्सम्भृत्य सम्भारं जलद्रोणे विपाचयेत् ।
चतुर्भागावशेषन्तु यवक्षारयुतं पिबेत् ॥
वातिकं पैत्तिकं वापि श्लैष्मिकं सान्निपातिकम् ।
प्रसह्य नाशयेच्छूलं छिन्नाभ्रमिव मारुतः ॥

अण्डीके बीज, अरण्डमूल, गोखरुकी जड़, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, बड़ी कटेली, छोटी कटेली, पृष्ठपर्णी, सहदेवी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी और ईखकी जड़ समान भाग मिलित ६। सेर लेकर ३२ सेर पानी में पकावें और ८ सेर रहने पर छान लें ।

इसमें जवाखार मिलाकर (रोगीकी शक्ति के अनुसार–थोड़ा थोड़ा बार बार) पिलानेसे पित्तज, कफज, और सान्निपातिक शूल नष्ट होता है ।

(९१४२) एलादिकषायः

(ग. नि. । मूत्राघाता २८)

एलादुरालभैरण्डपथ्यापाषाणभित्समम् ।
गोक्षुरः कर्कटीबीजं तथा बीजं कुरण्टकात् ॥
सम्मिश्र्य क्वाथपानेन मूत्ररोधोनिवर्तते ॥

इलायची, धमासा, अरण्डमूल, हर्र और पाषाणभेद समान भाग लेकर क्वाथ बनावें । इसमें गोखरु, ककड़ीके बीज और इन्द्रजौ; इनका चूर्ण मिलाकर पीनेसे मूत्रावरोध नष्ट होता है ।

इति एकारादिकषायप्रकरणम्

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ एकारादिचूर्णप्रकरणम्

(९१४३) एरण्डमूलाद्यं चूर्णम्

(ग. नि. । कासा. १०)

एरण्डमूलं बृहती च वांशी
कटुत्रयं कर्कटशृङ्गिका च ।
फलत्रयं वै लवणानि पञ्च
चूर्णं हरत्युष्णजलेन कासम् ॥

अरण्डमूल, बड़ी कटेली, बंसलोचन, सोंठ, मिर्च, पीपल, काकड़ासिंगी, हर्र, बहेड़ा, आमला और पांचों नमक समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे उष्ण जलके साथ सेवन करने से खांसी नष्ट होती है।

(मात्रा—२-३ माशे ।)

(९१४४) एरण्डादिकल्कः

(यो. र. । अश्मर्य.)

गन्धर्वहस्तबृहतीव्याघ्रीगोक्षुरकेक्षुरात् ।
मूलकल्कं पिबेद्दध्ना मधुरेणाश्मभेदनः ॥

अरण्डमूल, बड़ी कटेली की जड़, छोटी कटेली की जड़, गोखरु की जड़ और तालमखानेकी जड़ समान भाग लेकर मीठी दहीके साथ बारीक पीसकर पीनेसे अश्मरिका नाश होता है।

(९१४५) एलाचूर्णयोगः

(यो. र. । मूत्रकृच्छ्रा.)

पिबेन्मद्येन सूक्ष्मैलां धात्रीफलरसेन वा ।
शितिवारकबीजं वा तक्रे श्लक्ष्णं च चूर्णितम् ॥

छोटी इलायची के चूर्णको मद्य अथवा आमलेके फलके रसके साथ सेवन करने से या चांगेरी के बीजों के चूर्ण को तक्र के साथ पीने से मूत्रकृच्छ्र का नाश होता है।

(९१४६) एलादिचूर्णम् (१)

(यो. र. । प्रदर.)

एलामंशुमतीं द्राक्षामुशीरं तिक्तरोहिणीम् ।
चन्दनं कृष्णलवणं सारिवालोध्रसंयुतम् ॥
वातासृग्दरशान्त्यर्थं पिबेद्दध्ना सहाङ्गना ।
पित्तासृग्दरशान्त्यर्थं सक्षौद्रं ललना पिबेत् ॥

इलायची, शालपर्णी, द्राक्षा, खस, कुटकी, सफेद चन्दन, काला नमक, सारिवा और लोध समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे दहीके साथ पीनेसे वातज प्रदर और शहदके साथ पीनेसे पित्तज प्रदर नष्ट होता है।

(मात्रा—२-३ माशे ।)

(९१४७) एलादिचूर्णम् (२)

(वै. म. र. । पटल ४)

एलालवङ्गवल्कलतमालदलजं रजो मधुविमिश्रम् ।
लीढं वमिं निहन्याद्बिल्ववराव्योषचूर्णं वा ।

इलायची, लौंग, दालचीनी और तेजपात समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे शहदमें मिलाकर चाटनेसे वमन नष्ट होती है।

(मात्रा—१-१ माशा । १-१ घंटा बाद दिनमें ५-६ बार ।)

बेलगिरी, हर्र, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिर्च और पीपल; इनका चूर्ण भी वमनको नष्ट करता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९१४८) **एलादिचूर्णम्** (३)

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ३२)

एला शिलाजतुयुतं मागधिपाषाणभेदजं चूर्णम् । तण्डुलजलेन पीतं प्रमेहरोगं हरत्येव ॥

इलायची, शिलाजीत, पीपल और पाषाणभेद समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

इसे चावलोंके धोवनके साथ सेवन करनेसे प्रमेह अवश्य नष्ट हो जाता है ।

(९१४९) **एलादिचूर्णम्** (४)

(वैद्य. । विषय २८)

एलामांसिलवङ्गनागरकणामुस्ताहिमं धान्यकं खर्जुरं च तमालपत्रं मधुकोशीरद्वयं दाडिमम् । हिक्काकामलपाण्डुरोगनिचयं मूत्रे च दाहोष्मतां मेहान्विंशतिं नाशयेच्च सततं प्रीतिप्रदं बृंहणम् ॥

इलायची, जटामांसी, लौंग, सोंठ, पीपल, नागरमोथा, लाल चन्दन, धनिया, खजूर, तमालपत्र, मुलैठी, दो प्रकारकी खस और अनारदाना समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

यह चूर्ण, हिचकी कामला, पाण्डु, मूत्रकी दाह और प्रमेहको नष्ट करता है । यह बृंहण भी है ।

(९१५०) **एलादिचूर्णम्** (५)

(हा. सं । स्था. ३ अ. १४)

एलातमालदलनागरवालकौ द्वौ कृष्णा च भार्गिसुरसागुरुचन्दनानि । चूर्णं सिताधिकमिदं पिब शीततोयैः श्वासोर्ध्वकं तमकमेव निहन्ति चाशु ॥

इलायची, तमालपत्र (तेजपात), सोंठ, सुगंधवाला, खस, पीपल, भरंगी, तुलसी, अगर, चन्दन, और खांड समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

इसे शीतल जलके साथ सेवन करनेसे ऊर्ध्व श्वास और तमक श्वास शीघ्र ही नष्ट हो जाता है ।

(मात्रा—२-३ माशा ।)

(९१५१) **एलादिचूर्णम्** (६)

(यो. र. । हृद्रोग.)

सूक्ष्मैला मागधीमूलं पटोलं सर्पिषा सह । नाशयेदाशु हृद्रोगं कफजं सपरिग्रहम् ॥

छोटी इलायची, पीपलामूल और पटोल समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

इसे घीके साथ सेवन करनेसे उपद्रव सहित कफज हृद्रोग नष्ट होता है ।

(**मात्रा**—२-३ माशे ।)

इति एकारादिचूर्णप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ एकारादिगुटिकाप्रकरणम्

(९१५२) एलीयकादिगुटिका

(यो. चि. म. । अ. ३)

एलीयकं कणा पथ्या शुण्ठी चित्रकटङ्कणम् ।
राजिका सर्जिका सौरो विडङ्गाजाजिसैन्धवम् ॥
गुडेन गुटिका कार्या यकृत्प्लीहविनाशिनी ॥

एलवा, पीपल, हर्र, सोंठ, चीतामूल, सुहागा राई, सज्जी, सोरा, बायबिडंग, जीरा और सेंधानमक समान भाग लेकर सबके बराबर गुड़ में मिलाकर गोलियां बना लें ।

इनके सेवन से यकृत् और प्लीहावृद्धि का नाश होता है ।

(मात्रा—१ माशा । अनुपान—उष्ण जल ।)

इति एकारादिगुटिकाप्रकरणम्

अथ एकारादिगुग्गुलुप्रकरणम्

(९१५३) एरण्डादिगुग्गुलुः

(व. से. वातव्या.)

शुक्लैरण्डस्य मूलानि युग्मं सहचरस्य च ।
मुस्ता दुरालभा दीप्या देवाह्वं कटुका शठी ॥
पञ्चकोलं बला पथ्या क्षुद्रे द्वे च पुनर्नवा ।
विषोग्रा वाजिगन्धा च शतावर्याटरूषकम् ॥
धान्यं छिन्नरुहा चैव विडङ्गं व्याधिघातकम् ।
गोक्षुरं वृद्धदारु च दीप्यको निशायुग्मकम् ॥
चतुर्विंशतिको भागः पीतः कौशिकसंयुतः ।
सर्ववातविकारघ्नः पाचनो दीपनो लघुः ॥
आमवातस्य शोथस्य स्रोतसां कफनाशनः ॥

सफेद अरण्डकी जड़, दो प्रकारके (पीले और काले) पियाबांसेकी जड़, नागरमोथा, धमासा, अजवायन, देवदारु, कुटकी, कचूर, पीपल, पीपलामूल, चव, चीतामूल, सोंठ, खरैटीकी जड़, हर्र, छोटी और बड़ी कटेली, पुनर्नवा (बिसखपरा) की जड़, अतीस, बच, असगंध, शतावर, बासा(अडूसा), धनिया, गिलोय, बायबिडंग, अमलतासका गूदा, गोखरु, बिधारा, हल्दी और दारुहल्दी; इनका चूर्ण १-१ भाग तथा शुद्ध गूगल २४ भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर (आवश्यकतानुसार घी मिलाकर) कूटें ।

यह दीपन, पाचन और लघु है तथा समस्त वात विकारों एवं आमवात और शोथको नष्ट करता तथा स्रोतोंमें स्थित कफको दूर करता है ।

(मात्रा—१॥-२ माशा । अनुपान—उष्ण जल ।)

इति एकारादिगुग्गुलुप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ एकाराद्यवलेहप्रकरणम्

(९१५४) एलाद्योवलेहः

(हा. सं. । स्था. ३ अ. १०)

एलादलानि सहपद्मकनागकेशरै-
द्राक्षा घना च मधुपिप्पलिका समांशा ।
एषां समांशसितशर्करयुक्तलेहः
खर्जूरिकां समभिहन्ति च रक्तपित्तम् ॥
दाहं ज्वरार्तिं श्वसनं च विमोहतृष्णा-
मूर्च्छां निहन्ति रुधिरं वमिजित् तथैव ॥

इलायची, तेजपात, पद्माक, नागकेसर, द्राक्ष (किशमिश) नागरमोथा, मुलैठी, पीपल और खजूर समान भाग तथा खांड सबके बराबर लेकर (शहदमें मिलाकर) अवलेह बनावें ।

इसके सेवनसे रक्तपित्त, दाह, ज्वर, श्वास, मोह, तृष्णा, मूर्च्छा और रक्तवमनका नाश होता है ।

इति एकाराद्यवलेहप्रकरणम्

अथ एकारादिघृतप्रकरणम्

(९१५५) एरण्डाद्यं घृतम्

(व. से. । शूला.)

एरण्डमूलं बृहती श्वदंष्ट्रा
पुनर्नवा गोक्षुरकस्य मूलम् ।
शतावरी हंसपदी बला च
महासहा क्षुद्रसहा विदारी ॥
बिल्वस्यमूलं समृणालचित्रं
निदिग्धिकाजीवककर्षभौ च ।
कुशो कुशाख्या सहदेवदेवे
पचेत्कषायं जलपादशेषम् ॥
क्वाथेन कल्केन पचेत्तु धीमान्
रसेन तुल्यं फलपूरकस्य ।
उत्कृष्टदोषो यस्य स्याद्यस्य
शूलो न शाम्यति ॥
तत्र सर्पिरिदं दद्यात्पसह्य विनिवारणम् ।
सर्वस्थानगतं शूलमेतद्धन्ति चतुर्विधम् ॥
एरण्डाद्यमिदं सर्पिः कृष्णात्रेयेण पूजितम् ॥

क्वाथ—अरण्डमूल, बड़ी कटेली, गोखरु, पुनर्नवा (बिसखपरा) की जड़, गोखरुकी जड़, शतावर, हंसपदी, खरैटीकी जड़, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, विदारीकन्द, बेलकी जड़की छाल, कमलनाल, चीता-मूल, कटेली, जीवक, ऋषभक, दो प्रकारकी दाभ (दर्भ), मीठे बिजौरे के वृक्षकी जड़, सहदेवी और देवदारु, समान भाग लेकर आठ गुने पानीमें पकावें और चौथा भाग रहने पर छान लें ।

यह क्वाथ ४ सेर, घी १ सेर, इन्हीं (क्वाथकी) ओषधियोंका कल्क १० तोले और बिजौरे का रस ४ सेर लेकर सबको एकत्र मिलाकर पकावें । जब जलांश शुष्क हो जाय तो घीको छान लें ।

जो शूल अन्य किसी औषधसे शान्त न होता हो वह इसे पीनेसे अवश्य नष्ट हो जाता है । यह हर स्थानके और हरेक दोषसे उत्पन्न शूलको बल-पूर्वक नष्ट कर देता है ।

इति एकारादिघृतप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ एकारादितैलप्रकरणम्

(९१५६) एरण्डतैलयोगः (१)

(वै. म. र. । पटल १२)

एरण्डतैलं निर्गुण्डीस्वरसं च पृथक् समम् ।
पीत्वा कटीप्रदेशस्थं वातं जित्वा सुखी भवेत् ॥

अरण्डीका तेल और संभालुका रस समान भाग लेकर एकत्र मिलाकर पीनेसे कटि (कमर)का वायु नष्ट हो जाता है ।

(९१५७) एरण्डतैलयोगः (२)

(यो. र. ; वृ. मा. । उदरा.)

एरण्डतैलं दशमूलमिश्रं
गोमूत्रयुक्तं त्रिफलारजो वा ।
निहन्ति वातोदरशोथशूलं
क्वाथः समूत्रो दशमूलजश्च ॥

दशमूलके क्वाथमें अरण्डीका तेल मिलाकर पीनेसे या गोमूत्रके साथ त्रिफलाका चूर्ण सेवन करनेसे अथवा गोमूत्रमें दशमूलका क्वाथ बनाकर पीनेसे वातोदर, शोथ और शूलका नाश होता है ।

(९१५८) एरण्डतैलयोगः (३)

(वृ. यो. त. । त. ९३)

आमवातगजेन्द्राणां शरीरवनचारिणाम् ।
एक एव निहन्ताऽस्ति रुबूकस्नेहकेसरी ॥

शरीररूपी वनमें विचरण करने वाले आमवात रूपी हाथीके लिये अरण्डका तेल (कास्ट्रायल) सिंहके समान है ।

(९१५९) एरण्डतैलयोगः (४)

(ग. नि. । अर्शो. ४)

एरण्डतैलं त्रिफलारसेन च विशोधनम् ।
विट्पित्तश्लेष्मवातानुलोमनाद्गुदजापहम् ॥

त्रिफला के क्वाथ में अण्डीका तेल मिलाकर पिलाने से विरेचन होकर मल, पित्त, कफ और वायु स्वमार्गगामी हो जाते हैं और अर्श रोग नष्ट हो जाता है ।

(९१६०) एरण्डतैलयोगः (५)

(वै. म. र. । पट. १६)

दुष्टव्रणेषु सर्वेषु युञ्ज्यादेरण्डसम्भवम् ।

हर प्रकारके दुष्ट व्रणोंमें एरण्डतैल प्रयुक्त करना चाहिये ।

(इसे पिलाकर पेट साफ करना चाहिये और यही तेल घावों पर लगाना चाहिये या इसमें कपड़ा भिगोकर घाव पर रखना चाहिये ।)

(९१६१) एरण्डपत्रादितैलम्

(व. से. । कर्णरोगा.)

एरण्डपत्रपुटपाकविपाचिताम्बु
तुल्यार्द्रकस्य सलिलं मधुकेन मिश्रम् ।
पक्त्वा च तैललवणेन युतं सुखोष्णं
कर्णे रुजं हरति तत्क्षणमेव दत्तम् ॥

अरण्डके पत्तोंका पुटपाक विधिसे पकाकर निकाला हुवा रस, अदरकका रस, मुलैठीका चूर्ण, तिलका तेल और सेंधा नमक एकत्र मिलाकर पकावें और जलांश शुष्क होने पर तेलको छान लें ।

इसे मन्दोष्ण करके कानमें डालनेसे कर्णपीड़ा तुरन्त नष्ट हो जाती है ।

(तेल ५ तोले, दोनों रस २०-२० तोले, मुलैठीका चूर्ण और सेंधानमक ७।।-७।। माशे ।)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९१६२) एरण्डादितैलम्

(व. से. । कर्णरोगा.)

एरण्डशिग्रुवरुणमूलिकापत्रजे रसे ।
चतुर्गुणे पचेत्तैलं क्षीरे चाष्टगुणान्विते ॥
यष्ट्याह्वक्षीरकाकोलीकल्कयुक्तं निहन्ति तत् ।
नादबाधिर्यशूलानि नावनाभ्यङ्गपूरणैः ॥

अरण्डके पत्तोंका रस, सहंजनेके पत्तोंका रस और बरनेके पत्तोंका रस १-१ सेर, तिलका तेल ६० तोले, गोदुग्ध ६ सेर, तथा मुलैठी और क्षीरकाकोलीका कल्क ७॥ तोले लेकर सबको एकत्र मिलाकर पकावें । जब जलांश शुष्क हो जाय तो तेलको छान लें ।

इसे कानमें डालने और इसकी नस्य लेनेसे कर्णनाद, बधिरता और कर्णशूलका नाश होता है ।

इति एकारादितैलप्रकरणम्

अथ एकारादिलेपप्रकरणम्

(९१६३) एकाष्ठीलादिलेपः

(ग. नि. । शिरोरोगा.)

एकष्ठीला पुण्डरीकं मधुकं नीलमुत्पलम् ।
पद्मकं वेतसं मूर्वा लामज्जकमथापि वा ॥
दार्वी हरिद्रा मञ्जिष्ठा फेनिलोशीरमेव च ।
एतैरालेपनं कार्यं शङ्खकस्य विनाशनम् ॥
एतान्येव तु सर्वाणि कषायमुपसाधयेत् ।
तेन शीतेन कर्तव्यं बहुशः परिषेचनम् ॥

पाठा, कमल, मुलैठी, नीलोत्पल, पद्माक, बेत, मूर्वा, लामज्जक, (खसभेद), दारुहल्दी, हल्दी, मजीठ, लिहसोड़ा और खस समान भाग लेकर चूर्ण बनावें । इसको (पानीमें पीसकर) लेप करनेसे शंखक रोग नष्ट होता है ।

अथवा इन्हीं ओषधियों के शीत कषायका बार बार अवसेचन करनेसे भी शंखक रोग नष्ट हो जाता है ।

(९१६४) एडगजादिलेपः

(व. से. । कुष्ठा. ; वृ. मा. ; ग. नि. ; च. द. । कुष्ठा.)

एडगजकुष्ठसैन्धवसौवीरसर्षपैः कृमिघ्नैश्च ।
कृमिसिध्मदद्रुमण्डलकुष्ठानां नाशनो लेपः ॥

पमाड़के बीज, कूठ, सेंधानमक, सौवीराञ्जन, सरसों और बायबिडंगका चूर्ण समान भाग लेकर पानीमें पीसकर लेप करनेसे कृमि, सिध्म (छीप), दाद और मण्डलकुष्ठ का नाश होता है ।

(९१६५) एरण्डादिलेपः (१)

(वै. म. र. । पटल १९)

प्रलेपः स्यात्तु वातारिशाल्मलीक्वथितैर्जलैः ।
गैरिकद्विनिशाभिर्वा नखदन्तविषे हितः ॥

अरण्डमूल और सेंभलकी जड़को गरम पानीमें पीसकर लेप करनेसे या गेरु, हल्दी और दारुहल्दीका लेप करनेसे नख और दन्त विष नष्ट होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९१६६) **एरण्डादिलेपः** (२)

(ग. नि. । श्वयथु. ३३)

एरण्डो मधुकं द्राक्षा वाजिगन्धा पुनर्नवा ।
शुष्कमूलकसंयुक्ता वातशोथप्रलेपनम् ॥

अरण्डमूल, मुलैठी, द्राक्षा, असगंध, पुनर्नवा, (बिसखपरा)की जड़ और सूखी मूली; इनके समान भाग मिलित चूर्णको (पानीमें) पीसकर लेप करनेसे वातज शोथ नष्ट होता है ।

(९१६७) **एलादिलेपः** (१)

(वृ. से. । कुष्ठा. ; यो. र. । कुष्ठा. ; यो. त. । त. ६२)

एलाकुष्ठविडङ्गानि शताह्वा चित्रको वचा[1] ।
दन्तीरसाञ्जनश्चैभिर्लेपः कुष्ठविनाशनः ॥

इलायची, कूठ, बायबिड़ंग, सोया, चीता, बच (पाठान्तरके अनुसार खरैंटीकी जड़), दन्तीमूल और रसौत; इनके समान भाग मिलित चूर्णको (पानीमें) पीसकर लेप करने से कुष्ठ नष्ट होता है ।

(९१६८) **एलादिलेपः** (२)

(र. मृ. । त. ६)

एलाफलं जातिकोशं मूलं करवीरजं सितम् ।
शाल्मलीत्वचमादाय खाफुकं षट् च माषकम् ॥

[1] बला इति पाठान्तरम्

कर्षतैले विनिक्षिप्य सुखोष्णं कृत्वा विलेपयेत् ।
अवश्यं पुंस्त्वमाप्नोति षण्ढत्वं तस्य नश्यति ॥
शीतं वारि न सेवेत मैथुनं चापि वर्जयेत् ॥

इलायची, जावत्री, सफेद कनेरकी जड़, सेंभलकी छाल और अफीम ६-६ माशे लेकर सबको बारीक पीस लें और १ तोला तेलमें मिलाकर गर्म करके शिश्न पर लेप करें । (ऊपरसे पान लपेट कर कच्चे सूतसे बांध दें । रोज़ इसी प्रकार २१ दिन लेप करें ।) शिश्न पर शीतल जल न लगने दें और मैथुनसे परहेज़ करें ।

इससे नपुंसकता अवश्य नष्ट हो जाती है ।

(९१६९) **एलादिलेपः** (३)

(ग. नि. । उपदंशा. ८)

एला दारुहरिद्रा च शङ्खनाभीरसाञ्जनम् ।
लाक्षागोमयनिष्पीडस्तैलं क्षौद्रं घृतं पयः ॥
एभिः सुपिष्टैस्तैलांशैरुपदंशं प्रलेपयेत् ।
व्रणाश्च तेन शाम्यन्ति श्वयथुर्दाह एव च ॥

इलायची, दारुहल्दी, शंखनाभि, रसौत, और लाख; इनका बारीक चूर्ण तथा गायके गोबरका रस, तेल, शहद, घी और दूध समान भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर खूब खरल करें और फिर औषधके ऊपर जो स्नेह आ जाय उसे पृथक् कर लें । इसका लेप करनेसे उपदंशके व्रण, शोथ और दाहका नाश होता है ।

इति एकारादिलेपप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ एकारादिधूम्रप्रकरणम्

(९१७०) एरण्डादिधूमः

(यो. र. । कासा.)

पिष्ट्वा त्रिपुटधत्तूरमूलव्योषमनःशिलाः ।
तेन प्रलिप्य वसनं धूमवर्ति प्रकल्पयेत् ॥
धूमं तस्याः पिबेद्यस्तु त्रिदिनात्कसनं हरेत् ॥

अरण्डमूल, धतूरेकी जड़, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल और मनसिल समान भाग लेकर बारीक चूर्ण बनावें और उसे (घीमें मिलाकर) कपड़े पर लगाकर बर्ति बना लें ।

इसे आगसे जलाकर धूम्र पान करने से ३ दिनमें कास नष्ट हो जाती है ।

इति एकारादिधूम्रप्रकरणम्

अथ एकाराद्यञ्जनप्रकरणम्

(९१७१) एलादिवर्तिः

(वा. भ. । उ. अ. ९)

एलारसोनकतकशङ्खोषणफणिज्जकैः ।
वर्त्तिः कुकूणपोथक्योः सुरापिष्टैः सकट्फलैः ॥

इलायचीके बीज, लहसन, निर्मलीके बीज, शंखचूर्ण, काली मिर्च, तुलसी और कायफल; इनका चूर्ण समान भाग लेकर सुरामें पीस कर बर्तियां बनावें।

इसे आंखमें लगानेसे पोथकी और कुकूणक रोग नष्ट होता है ।

इति एकाराद्यञ्जनप्रकरणम्

अथ एकारादिनस्यप्रकरणम्

(९१७२) एरण्डादिनस्यम्

(वा. भ. । उ. अ. १३)

सितैरण्डजटासिंहीफलदारुवचानतैः ।
घोषया बिल्वमूलैश्च
तैलं पक्वं पयोऽन्वितम् ॥
नस्यं सर्वोर्ध्वजत्रूत्थवातश्लेष्मामयार्त्तिजित् ॥

सफेद अरण्डकी जड़, कटेलीके फल, देवदारु, बच, तगर, बायबिड़ंग और बेलकी जड़; इनके कल्क और दूधके साथ तेल पकावें ।

इसकी नस्य लेनेसे ऊर्ध्व जत्रुगत वातकफज रोग नष्ट होते हैं ।

इति एकारादिनस्यप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ एकारादिरसप्रकरणम्

(९१७३) एकादशायसरसः

(र. चं. ; र. र. । वृद्धय.)

मृतायः पुरुषः शुल्वं खगो दरदगन्धकौ ।
गगनं पुष्परागं च शोणितं चेश्वरोरगौ ॥
विडङ्गं त्रिफला हिङ्गु यमानीं जीरकद्वयम् ।
स्वर्जीफलवचाशृङ्गी मरिचं पिप्पलीद्वयम् ॥
चवी दुरालभा वह्निः शुण्ठीद्रावैर्विमर्दयेत् ।
अण्डवातान्त्रवृद्धिं च कृच्छ्रमूरुग्रहापहम् ॥
ये च अण्डगता रोगास्तान् सर्वानपकर्षति ।
वातारिरपि देयोऽत्र वृद्धिनाशं करोत्यसौ ॥

लोहभस्म, शुद्ध पारद, ताम्रभस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध गंधक, अभ्रक भस्म, पुखराज भस्म, केसर, पीतल भस्म और सीसा भस्म १-१ भाग लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियां मिलाकर खरल करें। तदनन्तर उसे निम्न लिखित औषधियोंके क्वाथ या पानीकी १-१ भावना देकर सुरक्षित रक्खें।

भावनाद्रव्य—बायबिडंग, त्रिफला, हींग, अजवायन, सफेद जीरा, काला जीरा, सज्जी, जायफल, बच, काकड़ासींगी, काली मिर्च, पीपल, गजपीपल, चव, धमासा, चीता और सोंठ। इनके क्वाथ या पानी की पृथक् पृथक् १-१ भावना दें।

इसके सेवनसे अण्डकोषकी वायु, अन्त्रवृद्धि, मूत्रकृच्छ्र, ऊरुग्रह और अण्डकोष के रोगोंका नाश होता है। (**मात्रा**—२ रत्ती ।)

वृद्धि रोगमें अरण्ड (मूल तथा तेल) भी गुणकारी है।

(९१७४) एरण्डपाकः

(र. का. धे. । वृद्धय.)

प्रस्थं वातारिबीजं सलिलहृतमलं
पाचितं धेनुदुग्धेपश्चादेरण्डतैले
द्विपलपरिमिते सार्धमस्यार्धगव्ये ।
पश्चाद् व्योषं विडङ्गं त्वचतगरयुतं
जीरकधान्यदुग्धीबीजं मोचाऽश्वगन्धा
मुसलिकदलिकागोक्षुरं त्वग्दलं च ॥
एलापत्रं पलं श्रीजलनिधितनया-
खण्डकं तुल्यभागं वङ्गं ताम्राभ्रलोहं
द्विपलमिति सकृच्चूर्णितं सर्वमेतत् ।
पश्चात्खण्डं विपाच्य द्विगुणितममलं
लोहपात्रे विधिज्ञस्तद्द्रव्यं कुकुमाद्यै-
र्विलुलितममलं भावयेत्सर्वमेव ॥
आमघ्नं कृमिनाशनं बलकरं ब्रध्नामयध्वंसनं ।
शुक्रस्तम्भकरं रुजश्च सकलान् दूरीकर्तुं क्षमम् ॥
पुष्ट्यायुर्द्युतिवर्धनं सुमतिदं वातोत्थरुग्नाशनं ।
कृत्वेशार्चनकं प्रभुज्य सततं सर्वार्थसिद्धिं व्रजेत् ॥

पानीसे धुले हुवे अरण्डीके बीजोंकी १ सेर गिरी (मज्जा) को (पीसकर ८ सेर) गोदुग्धमें पकावें । जब खोया (मावा) हो जाय तो उसमें २० तोले अरण्डीका तेल और २ सेर गोघृत मिला कर भूनें । तदनन्तर सोंठ, मिर्च, पीपल, बायबिडंग, दालचीनी, तगर, जीरा, धनिया, दुद्धीके बीज, मोचरस, असगंध, मूसली, केलेका कन्द, गोखरु, दालचीनी, तेजपात इलायची, तेजपात और गोला (नारियलकी गिरी); इनका चूर्ण ५-५ तोले; बंग भस्म, ताम्र भस्म,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभ्रक भस्म और लोह भस्म १०-१० तोले, खांड उपरोक्त समस्त ओषधियों (खोवा, चूर्ण और भस्मों) से दो गुनी और केसरादि पदार्थ सुगंध योग्य लेकर लोहपात्रमें खांडकी चाशनी बनाकर उसमें उपरोक्त समस्त द्रव्य मिला दें।

इसके सेवनसे आम, कृमि, ब्रध्न रोग और वायुका नाश होता तथा बल, पुष्टि आयु, कान्ति और मतिकी वृद्धि होती है। यह शुक्रस्तम्भक भी है।

(मात्रा—५ माशे ।)

इति एकारादिरसप्रकरणम्

अथ एकारादिमिश्रप्रकरणम्

(९१७५) एडगजाद्युद्वर्तनम्

(ग. नि. । कुष्ठा. ३६)

एडगजातिलसर्षपकुष्ठं
बाकुचिकारजनीद्वयतक्रम् ।
वर्षशतोपचितामपि कण्डूं
हन्ति विचर्चिकमण्डलदद्रुम् ॥

पमाड़के बीज, तिल, सरसों, कूठ, बाबची, हल्दी और दारुहल्दी; इनके समान भाग मिलित चूर्णको तक्रमें मिलाकर रोगस्थान पर मसलनेसे सौ वर्षकी पुरानी खाज, विचर्चिका, मण्डल कुष्ठ और दादका भी नाश हो जाता है।

(९१७६) एरण्डतैलयोगः

(रा. मा. । स्त्रीरोगा. ३०)

एरण्डतैलेन परिप्लुता स्यात्
कार्पासपिण्डी यदि योनिमध्ये ।
शूलं तदानीं शमयेत्तदीयं
संयावको मुण्डिकया कृतो वा ॥

रुईको अण्डीके तेलमें तर करके योनिमें रखने से या गोरखमुंडीके चूर्णको घी और दूधमें पकाकर (हलवासा करके) योनि में रखने से योनिशूल नष्ट हो जाता है।

(९१७७) एरण्डतैलादियोगः

(यो. र. । शूला.)

एरण्डतैलं षड्भागं लशुनस्य तथाऽष्टकम् ।
एकं हिङ्गु त्रिसिन्धूत्थं सर्वमेकत्र मर्दयेत् ॥
त्रिनिष्कं भक्षयेच्चानु ह्यामशूलप्रशान्तये ॥

अरण्डीका तेल ६ भाग, ल्हसन का कल्क ८ भाग, हींग १ भाग और सेंधा नमक ३ भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर मर्दन करें।

इसे ३ निष्क मात्रानुसार खाने से आमशूल नष्ट होता है।

(व्यवहारिक मात्रा—३-४ माशे ।)

(९१७८) एरण्डबीजपायसः

(वृ. यो. त. । त. ९०; ग. नि. । वाता. १९; भा. प्र. । म. खं. २ आमवाता.)

विशोध्यैरण्ड बीजानि पिष्ट्वा क्षीरे विपाचयेत् ।
पायसः स कटीशूले गृध्रस्यां चौषधं परम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अण्डीके छिलके रहित बीजोंको धोकर पीसकर दूधमें पकाकर खीर बनावें।

इसे खानेसे कटिशूल और गृध्रसी का नाश होता है। यह इन रोगोंकी परमौषध है।

(९१७९) **एरण्डबीजशोधनम्**

(यो. र.)

गन्धर्वहस्तबीजानां नारिकेलोदकेन च।
याममात्राद्भवेच्छुद्धिर्दन्तीबीजं पचेद्यथा॥

अण्डीके बीजोंको दोलायन्त्र विधिसे १ पहर नारियलके पानीमें स्वेदित करनेसे वे शुद्ध होजाते हैं।

इसी प्रकार जमालगोटा भी शुद्ध हो जाता है।

(९१८०) **एरण्डमूलाद्याश्च्योतनम्**

(ग. नि. । नेत्ररोगा. ३)

एरण्डमूलं सफलप्ररोहं
विजर्जरं क्षीरयुतं गवां च।
स्याद्वातरक्तापहमुग्रमेतदा-
श्चोतनं सद्भिषजो वदन्ति॥

अरण्डमूल, अण्डीके बीज और अरण्डकी कोंपलें समान भाग लेकर कूटकर गोदुग्धमें पकाकर छान लें। इसे आंखमें डालनेसे वातज और रक्तज उग्र नेत्राभिष्यन्द नष्ट होता है।

(९१८१) **एलादियोगः**

(व. से. । मूत्रकृच्छ्रा. ; वृ. मा. । मूत्रकृच्छ्रा.)

एलाहिङ्गुयुतं क्षीरं सर्पिर्मिश्रं पिबेन्नरः।
मूत्रहृद्रोगशुद्ध्यर्थं शुक्रदोषहरं परम्॥

दूधमें इलायचीका चूर्ण (३ माशे), हींग (१ रत्ती) और घी (१ तोला) मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र, हृद्रोग और शुक्रदोष नष्ट होते हैं।

इति एकारादिमिश्रप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐ

अथ ऐकारादिकषायप्रकरणम्

(९१८२) ऐरावतीपत्रयोगः

(वै. म. र. । पटल ६)

ऐरावतीपत्रमुसल्लकानि
क्षुण्णानि निष्पीड्य रसः प्रपीतः ।
बलासरक्तं प्रबलातिसारं
विनाशयेद्धित्रिदिनप्रयोगात् ॥

नारंगी के पत्तों और शल्लकी वृक्ष (सलई) के पत्तोंको पीसकर स्वरस निकालें ।

इसे पीनेसे कफज और रक्तज अतिसार २-३ दिनमें ही नष्ट हो जाता है ।

इति ऐकारादिकषायप्रकरणम्

ओ

अथ ओकारादिलेपप्रकरणम्

(९१८३) ओष्ठस्फुटननाशकलेपः

(रा. मा. । मुखरोगा. ५)

सघृतफाणिततैलविमिश्रितं
कनकगैरिकसर्जरसान्वितम् ।
सलवणं मदनं विनिवारयत्य-
धरजान् स्फुटनोच्चटिकाव्रणान ॥

घी, राब, तेल, सोनागेरुका चूर्ण, रालका चूर्ण, सेंधानमक और मोम समान भाग लेकर प्रथम तेलको गरम करके उसमें मोम, घी और राब मिलावें और फिर अन्य ओषधियोंका बारीक चूर्ण मिलाकर खरल करें ।

यदि होंट फटते हों तो इसे लगानेसे आराम हो जाता है ।

इति ओकारादिलेपप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ ओकारादिमिश्रप्रकरणम्

(९१८४) ओषधि-प्रतिनिधिगणः
(यो. र.)

सत्त्वाभावे गुडूच्यास्तु अमृताया रसः स्मृतः ।
चित्रकाभावतो दन्ती क्षारः शिखरिजोऽथवा ॥
अभावे धन्वयासस्य प्रक्षेप्योऽथ दुरालभा ।
तगरस्याप्यभावे तु कुष्ठं देयं भिषग्वरैः ॥
मूर्वाभावे त्वचो ग्राह्या जिङ्गिनीप्रभवा बुधैः ।
अहिंस्राया अभावे तु मानकन्दः प्रशस्यते ॥
लक्ष्मणाया अभावे तु नीलकण्ठशिखा मता ।
बकुलाभावतो देयं कह्लारोत्पलपङ्कजम् ॥
नीलोत्पलस्याभावे तु कुमुदं तत्र दीयते ।
कमलस्याप्यभावे तु कमलाक्ष इति स्मृतः ॥
बकुलस्याप्यभावे तु आभात्वक्तत्र दीयते ।
जातीपत्रं न यत्रास्ति लवङ्गं तत्फलं स्मृतम् ॥
अर्कपर्णादिपयसो ह्यभावे तद्रसो मतः ।
पौष्कराभावतः कुष्ठं तथैरण्डजटा मता ॥
स्थौणेयकस्याभावे तु भिषग्भिर्दीयते गदः ।
चविकागजपिप्पल्यौ पिप्पलीमूलवत्स्मृते ॥
अभावे सोमराज्यास्तु प्रपुन्नाटफलं मतम् ।
यत्र न स्याद्दारुनिशा तदा देया निशा बुधैः ॥
रसाञ्जनस्याभावे तु सम्यग्दार्वी प्रयुज्यते ।
सौराष्ट्र्यभावतो ज्ञेया स्फुटिका तद्गुणा जनैः ॥
तालीसपत्रकाभावे स्वर्णताली प्रशस्यते ।
भार्ग्यभावे तु तालीसं कण्टकारी जटाऽथवा ॥
रुचकाभावतो दद्याल्लवणं पांशुपूर्वकम् ।
लवणानामभावे च सैन्धवं तत्र दीयते ॥
अभावे मधुयष्ट्यास्तु धातकीं च प्रयोजयेत् ।
अम्लवेतसकाभावे चुक्रं दातव्यमिष्यते ॥
तदभावे तु सर्वत्र जम्बीरादिरसः स्मृतः ।
द्राक्षा यदि न लभ्यन्ते प्रदेयं काश्मरीफलम् ॥
तयोरभावे कुसुमं मधूकस्य मतं बुधैः ।
लवङ्गकुसुमं देयं नखस्याभावतः पुनः ॥
वरी विदारी मुसली जीरकं च निशाद्वयम् ।
दीप्यकं देवदारुश्चाभावे त्वेकं प्रयोजयेत् ॥
कण्टकारीयुगं चैव धावनीयुगमेव च ।
शतपुष्पाद्वयं चैव उशीरयुगलं तथा ॥
मुद्गपर्णीमाषपर्णीयुग्मं चैव ततो भवेत् ।
तर्कारीयुगलं चैव सर्वत्रेति विनिश्चयः ॥
पृथक्पृथग्द्वंद्वमध्येऽभावे तत्र प्रयोजयेत् ।
परस्परस्याभावे तु एकं तत्र प्रयोजयेत् ॥
कस्तूर्यभावे कङ्कोलं देयं तत्र भिषग्वरैः ।
कङ्कोलस्याप्यभावे तु जातीपुष्पं प्रदीयते ॥
अथवा मालतीपुष्पं पत्रं वा दीयते बुधैः ।
कर्पूराभावतो देयं सुगन्धिमुस्तकं तथा ॥
कर्पूराभावतो देयं ग्रन्थिपर्णं विशेषतः ।
कुङ्कुमाभावतो दद्यात्कुसुम्भकुसुमं नवम् ॥
श्रीखण्डचन्दनाभावे कर्पूरं देयमिष्यते ।
अभावे च ततो वैद्यः प्रक्षिपेद्रक्तचन्दनम् ॥
रक्तचन्दनकाभावे नवोशीरं विदुर्बुधाः ।
निर्गन्धं च सगन्धं च द्विविधं रक्तचन्दनम् ॥
अन्योन्यस्याप्यभावे तु योजयेन्मतिमान्भिषक् ।
मुस्ता चातिविषाभावे देया तत्र शिवा मता ॥
अभावे च हरीतक्या मता कर्कटशृङ्गिका ।
अभावे नागपुष्पस्य पद्मकेसरमिष्यते ॥
भल्लातकस्याभावे तु नदीभल्लातको मतः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेदाजीवककाकोलीऋद्धिद्वन्द्वेऽपि वाऽसति ॥
वरीविदार्यश्वगन्धावाराहीश्च क्रमात्क्षिपेत् ।
वाराह्याश्च तथाऽभावे चर्मकारालुको मतः ॥
वाराहीकन्दकः प्रोक्तः पश्चिमे गृष्टिसंज्ञकः ।

क्षीरान्विता मूलकतुल्यकन्दा
मत्ताग्रपत्रा सितरक्तकाण्डा ॥
बिभर्ति या पल्लवमब्दमब्दात्सा
कंचुकी श्वेतवपुर्वरेण्या ।

श्यावकर्कशवाराहत्रपणामानकन्दकाः ॥
ताम्बूलवल्ली छद्नावल्ली वाराहकुट्टिका ॥

भल्लाताभावतश्चित्रं नलश्चेक्षोरभावतः ।
कुशस्य चाप्यभावे तु काशो ग्राह्यः प्रयत्नतः ॥
बिल्वकाश्मर्यतर्कारीपाटलाटुण्टुकैर्महत् ।
ह्रस्वं बृहत्यंशुमतीद्वयगोक्षुरकैर्भवेत् ॥
एतेषां दशमूलानामेकमूलं प्रयोजयेत् ।
अभावे तद्गुणं मूलं योज्यं वैद्यविशारदैः ॥

मधु यत्र न लभ्येत तत्र जीर्णगुडो मतः ।
मत्स्यण्डिकाखण्डसिताः क्रमेण गुणवत्तराः ॥
मत्स्यण्डयभावतो देयं खण्डं च परिकीर्तितम् ।
तदभावे सिता योज्या बुधैः सर्वत्र निश्चयः ॥
निर्गुण्ड्याश्चाप्यभावे तु सुरसा दीयते बुधैः ।
तुलस्या अप्यभावे तु निर्गुण्डीं योजयेत्ततः ॥
कुठेरिकायाश्चाभावे तुलसी तत्र योजयेत् ।
पुनर्नवायाश्चाभावे रक्ता सा च प्रकीर्तिता ॥
रास्ना यदि न लभ्येत कोलाञ्जनमिति स्मृतम् ।
सुवर्णस्याप्यभावे तु स्वर्णमाक्षिकमुच्यते ॥
तारमाक्षिकमायोज्यं तदभावे तु यत्नतः ।
माक्षिकस्याप्यभावे तु प्रदद्यात्स्वर्णगैरिकम् ॥

शुद्धो रसो हाटकादि मृतं यत्र न लभ्यते ।
तत्र लोहेन कर्माणि भिषक् कुर्यात्प्रयत्नतः ॥
कान्ताभावे तीक्ष्णलोहं योजयेद्वैद्यसत्तमः ।
अभावे मौक्तिकस्यापि मुक्ताशुक्तिं प्रयोजयेत् ॥
वैदूर्यादीनि रत्नानि न लभ्यन्तेऽत्र धीमता ।
तत्र मुक्तादिभूतिं च योजयेच्च भिषग्वरः ॥
अभावे रसभूत्याश्च सिन्दूरं रसपूर्वकम् ।
तदभावे तु दरदं योजयेत्तत्र बुद्धिमान् ॥
अलाभे यच्च तद्द्रव्यं प्रत्याम्नायेन योजयेत् ।
गोक्षीराभावतश्छागं पयः सर्वत्र दीयते ॥
गोघृतस्याप्यभावे तु चाजं सर्वत्र दीयते ।
अत्र प्रोक्तानि वस्तूनि तानि तेषु च योजयेत् ॥
क्षीराभावे रसो मौद्गो मासुरो वा प्रयुज्यते ॥

(यदि कभी कोई मुख्य (असल) ओषधि प्राप्त न हो तो उसके अभावमें उसका प्रतिनिधि ले सकते हैं। कुछ ओषधियोंके प्रतिनिधियोंकी सूची नीचे दी जाती है।)

मुख्य ओषधि	प्रतिनिधि
गिलोयका सत	गिलोयका रस।
चित्रक	दन्तीमूल या अपामार्ग-क्षार।
धमासा	जवासा
तगर	कुष्ठ
मूर्वा	जिंगनी वृक्षकी छाल
अहिंस्रा	मानकन्द
लक्ष्मणा	नीलकण्ठ शिखा (मयूरशिखा)
बकुल पुष्प	कल्हार कमल
नीलोत्पल	कुमुद

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुख्य औषधि	प्रतिनिधि	मुख्य औषधि	प्रतिनिधि
कमल	कमलबीज	सफेद मूसली	काली मूसली
बकुल छाल	बबूरकी छाल	काली मूसली	सफेद मूसली
जावत्री	लौंग या जायफल	सफेद जीरा	काला जीरा
आक आदिका दूध	उनके पत्तोंका रस	काला जीरा	सफेद जीरा
पोखरमूल	कूठ या अरण्डमूल	हल्दी	दारुहल्दी
स्थौणेय	कूठ	दारुहल्दी	हल्दी
चव	पीपलामूल	अजमोद	अजवायन
गजपीपल	,,	अजवायन	अजमोद
बावची बीज	पंवाड़के बीज	स्निग्ध देवदारु	काष्ठ देवदारु
दारुहल्दी	हल्दी	काष्ठ देवदारु	स्निग्ध देवदारु
रसौत	दारुहल्दी	कटेली	बड़ी कटेली
सौराष्ट्री	फिटकी	बड़ी कटेली	छोटी कटेली
तालीसपत्र	स्वर्णताली	शालपर्णी	पृष्ठपर्णी
भरंगी	तालीसपत्र या कटेलीकी जड़	पृष्ठपर्णी	शालपर्णी
		सोया	सौंफ
रुचक (संचल)	पांसु लवण (खारी नमक)	सौंफ	सोया
कोई भी लवण	सेंधा नमक	पीली खस	सफेद खस
मुलैठी	धाय	सफेद खस	पीली खस
अम्लवेत	चुक्र (चूका शाक या कांजी भेद)	मुद्गपर्णी	माषपर्णी
		माषपर्णी	मुद्गपर्णी
चुक्र (कांजी)	जम्बीरी आदि नीबूका रस	छोटी अरणी	बड़ी अरणी
द्राक्ष	गम्भारीके फल	बड़ी अरणी	छोटी अरणी
गम्भारी के फल	महुवेके फूल	कस्तूरी	कंकोल
नख	लौंग	कंकोल	चमेलीके फूल या मालतीके फूल अथवा पत्र
छोटी शतावर	बड़ी शतावर		
बड़ी शतावर	छोटी शतावर	कपूर	सुगन्धित मोथा या गठीवन
विदारीकन्द	कुम्हड़ा	केसर	कुसुंभके नवीन पुष्प
कुम्हड़ा	विदारीकन्द	श्रीखण्ड चन्दन	कपूर या लाल चन्दन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुख्य ओषधि	प्रतिनिधि
लाल चन्दन	नवीन खस
सुगंधित और निर्गंध लालचन्दन	एकके अभावमें दूसरा
तीन प्रकारका चन्दन	एकके अभावमें अन्य प्रकारका
अतीस	नागरमोथा
हर्रे	काकड़ासिंगी
नागकेशर	कमलकेसर
भिलावा	नदी भल्लातक
मेदा, महामेदा	शतावर
जीवक, ऋषभक	विदारीकन्द
काकोली, क्षीरकाकोली	असगन्ध
ऋद्धि, वृद्धि	वाराहीकन्द
वाराही कन्द	चर्मकाराल्लु

(वाराहीकन्दको पश्चिम में गृष्टिकन्द कहते हैं। वाराही कन्दकी जड़ मूलीके समान और क्षीरयुक्त होती है इसके पौधेमें ७ या ८ पत्ते होते हैं। काण्ड सफेद या लाल होता है एवं इसमें प्रति वर्ष एक एक पत्ता आता है। छाल मुख्यतया सफेद होती है। इसका कन्द श्यामवर्ण खुरदारा और वृषणके समान होता है। इसे ताम्बूलवल्ली, छदनावल्ली और वाराहकुट्टिका भी कहते हैं।)

मुख्य ओषधि	प्रतिनिधि
भिलावा	चीता
ईख	नल
कुश	काश
दशमूल की कोई वस्तु न मिले तो	अप्राप्त वस्तुके समान गुणवाले वृक्षकी जड़ लें
शहद	पुराना गुड़
मत्स्यण्डिका (राब)	खांड
खांड	सिता (मिश्री)

(राब से खांड और खांडसे मिश्री उत्तम होती है)

मुख्य ओषधि	प्रतिनिधि
संभालु	तुलसी
तुलसी	संभालु
कुठरक (सफेद तुलसी)	तुलसी
सफेद पुनर्नवा	लाल पुनर्नवा
रास्ना	कोलाञ्जन (कुलिंजन)
स्वर्णमाक्षिक	रौप्य माक्षिक
तारमाक्षिक	स्वर्णगैरिक
शुद्ध पारद और स्वर्ण भस्मादि	लोहभस्म
कान्तलोह	तीक्ष्ण लोह
मोती	मोती की सीप
वैदूर्यादि रत्न	मोती आदिकी भस्म
पारद भस्म	रससिन्दूर
रससिन्दूर	हिंगुल
गोदुग्ध	बकरीका दूध
गोघृत	बकरीका घृत
दूध	मूंग या मसूरका यूष

इति ओकारादि मिश्रप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

औ

अथ औकारादिमिश्रप्रकरणम्

(९१८५) **औष्ट्रक्षीरयोगः**

(ग. नि. । कुष्ठा. ३६)

जातक्रमीणि कुष्ठानि च्युतरोमनखान्यपि ।
अपि वा शीर्णमांसानि क्षीरमौष्ट्रं विनाशयेत् ॥

ऊंटनी का दूध पीनेसे वह भयंकर कुष्ठ भी नष्ट हो जाता है कि जिसमें कृमि पड़ गये हों, रोम और नख गिर चुके हों तथा शरीरका मांस सड़कर बिखर गया हो ।

इति औकारादिमिश्रप्रकरणम्

क

अथ ककारादिकषायप्रकरणम्

(९१८६) **कटङ्कटेर्यादिक्वाथः** (१)

(व. से. । प्रमेहा.)

कटङ्कटेरीमधुकत्रिफलाचित्रकैः समैः ।
सिद्धः कषायः पातव्यः प्रमेहानां विनाशनः ॥

दारुहल्दी, मुलैठी, हर्र, बहेड़ा, आमला और चीतामूल समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।
यह क्वाथ प्रमेहों को नष्ट करता है ।

(९१८७) **कटङ्कटेर्यादिक्वाथः** (२)

(वै. जी. । वि. ३)

कटङ्कटेरीरसजाब्दवासा-
भूनिम्बभल्लीतिलजः कषायः ।
क्षौद्रान्वितश्चाबललोचनानां
नानाविधानि प्रदराणि हन्यात् ॥

दारुहल्दी, रसौत, नागरमोथा, बासा, चिरायता, भिलावा और तिल समान भाग लेकर क्वाथ बनावें । इसमें शहद मिलाकर पीनेसे स्त्रियोंका अनेक प्रकारका प्रदर रोग नष्ट होता है ।

(९१८८) **कटुकादिक्वाथः** (१)

(वा. भ. । चि. अ. १)

पाचयेत्कटुकां पिष्ट्वा कर्परेभिनवे शुचौ ।
निष्पीडितो घृतयुतस्तद्रसो ज्वरदाहजित् ॥

(ताजी-हरी) कुटकी को पीसकर मिट्टीके शुद्ध नवीन पात्रमें रखकर स्वेदित करें और फिर उसे निचोड़कर रस निकालें । इसमें घी मिलाकर पीनेसे ज्वर और दाहका नाश होता है ।

(**मात्रा**—रस १ तोला, घी १ तोला ।)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९१८९) कटुकादिक्वाथः (२)

(ग. नि. । ज्वरा. १)

कटुकाविजयाद्राक्षामुस्तपर्पटकैः शृतः ।
कषायो नाशयेत्पीतः पित्तश्लेष्मभवं ज्वरम् ॥

कुटकी, भांग, मुनक्का, नागरमोथा और पित्त पापड़ा समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।

यह क्वाथ पित्तकफज ज्वरको नष्ट करता है ।

(९१९०) कटुकादिक्वाथः (३)

(वै. जी. । विलास १)

मम द्रवं विस्मयमातनोति
तिक्ताकषायो मुखतिक्तताघ्नः ।
निपिडितोरोजसरोजकोषा
योषा प्रमुदं प्रचुरं प्रयाति ॥

कुटकीका क्वाथ मुखकी तिक्तताको नष्ट करता है । यह एक विचित्र बात है ।

(९१९१) कटुत्रिकादिक्वाथः

(ग. नि. । ज्वरा. १)

कटुत्रिकं नागपुष्पं हरिद्रा कटुरोहिणी ।
कौटजं च फलं हन्यात्सेव्यमानं कफज्वरम् ॥

सोंठ, मिर्च, पीपल, नागकेसर, हल्दी, कुटकी और इन्द्रजौ समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।

इसे पीनेसे कफज्वर नष्ट होता है ।

(९१९२) कटुरोहिण्यादिक्वाथः

(ग. नि. । ज्वरा. १)

कटुकरोहिणिकारग्वधविश्वाग्निकपिप्पलीमूलम् ।
शूलकफज्वरहारी क्वाथोऽयं पिप्पलीमिश्रः ॥

कुटकी, अमलतासका गूदा, सोंठ, चीता और पीपलामूल समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।

इसमें (१ माशा) पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे शूल और कफज्वर नष्ट होता है ।

(९१९३) कण्टकार्यादिक्वाथः (१)

(व. से. । कासा. ; भा. प्र. म. खं. २)

कण्टकारीकृतः काथः सकृष्णः सर्वकासहा ।
कण्टकार्याः कणायाश्च
चूर्णं मधुयुतं लिहेत् ॥

कटेलीके क्वाथमें पीपलका चूर्ण मिला कर पीनेसे या कटेली और पीपलके समान भाग मिश्रित चूर्णको शहदमें मिलाकर चाटनेसे हर प्रकारकी खांसी नष्ट हो जाती है ।

(९१९४) कण्टकार्यादिक्वाथः (२)

(यो. र. । शूला. ; वृ. यो. त. । त. ९४)

निदिग्धिकाबृहत्यौ च कुशकाशेक्षुबालिकाः ।
श्वदंष्ट्रैरण्डमूलं च वारिणा सह पाचयेत् ॥
पिबेत्सशर्करक्षौद्रं शूले पित्तानिलात्मके ॥

कटेली, बड़ी कटेली, कुश (दाभ) की जड़, कासकी जड़, ईखकी जड़, सुगन्धबाला, गोखरु और अरण्डमूल समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।

इसमें शहद और खांड मिलाकर सेवन करने से पित्तवातज शूल नष्ट होता है ।

(९१९५) कण्टकार्यादियोगः

(वै. र. । कासा.)

लघुभृष्टकण्टकारीस्वरसं चपलारजोमिश्रम् ।
यः पिबति तस्य कासाः सश्वासा नाशमुप-
यान्ति ॥

छोटी कटेली को पुटपाक विधिसे पकाकर स्वरस निकालें । उसमें पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे कास श्वासका नाश होता है ।

(मात्रा—रस १ तोला, पीपल १ माशा ।)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९१९६) कत्तृणादिकषायः

(ग. नि. । ज्वरा. १)

कत्तृणं दारु त्रिफला चन्दनं सपरुषकम् ।
कटुका पत्रकोशीरं विपचेत्कार्षिकान् जले ॥
तत्सर्वं सन्निपातघ्नं पानमात्रेयपूजितम् ।

कत्तृण (गंधतृण), देवदारु, हर्र, बहेड़ा, आमला, लाल चन्दन, फालसे की छाल, कुटकी, तेजपात और खस १।-१। तोला लेकर क्वाथ बनावें।

यह क्वाथ सन्निपात ज्वरको नष्ट करता है ।

(९१९७) कपिकच्छूमूलयोगः

(भा. प्र. म. खं. २ । स्त्रीरोगा. ; यो. र. । स्त्रीरोगा.)

कपिकच्छूभवं मूलं क्वाथयेद्विधिना भिषक् ।
योनिः सङ्कीर्णतां याति क्वाथेनानेन धावयेत् ॥

कौंचकी जड़को पानीमें पकाकर क्वाथ बनावें। इस क्वाथसे योनिको धोनेसे योनि संकीर्ण हो जाती है ।

(९१९८) कपित्थरसयोगः

(सु. सं. । चि. अ. ५० हिक्का.)

रसङ्कपित्थान्मधुपिप्पलीभ्यां
पिचुप्रमाणं प्रपिबेत्सुखाय ॥

कैथके ५ तोले रसमें शहद और पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे हिचकी नष्ट होती है ।

(९१९९) कपित्थादियोगः

(व. से. । कर्णरो.)

कपित्थमातुलुङ्गाम्लशृङ्गवेररसैः शुभैः ।
सुखोष्णैः पूरयेत्कर्णं कर्णशूलोपशान्तये ॥

कैथ, बिजौरा नीबू और अदरख; इनके रसों को एकत्र मिलाकर मन्दोष्ण करके कानमें डालनेसे कर्णशूल नष्ट होता है ।

(९२००) करञ्जादिक्वाथः (१)

(व. से. । ज्वरा.)

करञ्जो बिल्वमञ्जिष्ठे त्रायन्त्यग्निः पटोलकम् ।
बृहत्यौ सुषवी व्योषं क्वाथः स्याद्गलशोधनः ॥

करञ्जकी छाल, बेलछाल, मजीठ, त्रायमाणा, चीता, पटोल, छोटी कटेली, बड़ी कटेली, करेली और सोंठ, मिर्च, पीपल समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।

यह क्वाथ (अभिन्यास सन्निपातमें) गलेको शुद्ध करता है ।

(९२०१) करञ्जादिक्वाथः (२)

(ग. नि. । ज्वरा. १)

नक्तमालगुडूच्यग्निचित्रकारग्वधं समम् ।
मधूकं पाटला मूर्वा शार्ङ्गेष्टा स्वादुकण्टकः ॥
निम्बः सप्तच्छदः पाठा वृक्षकः सुषवी शठी ।
कषायःपूर्ववच्छ्लेष्मज्वरकासगलार्तिषु ॥

करंज की छाल, गिलोय, भिलावा, चीतामूल, अमलतासका गूदा, महुवेकी छाल, पाढल, मूर्वा मकोय, छोटा गोखरु, नीमकी छाल, सप्तपर्ण (सतौने) की छाल, पाठा, इन्द्रजौ, करेला और कचूर समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।

इसे (शहद मिलाकर) पीने से कफज्वर, कास और गलेकी पीड़ा नष्ट होती है ।

(९२०२) करञ्जादिक्वाथः (३)

(यो. र. । वातव्या.)

पूतीकपथ्याशठिपुष्कराणि
बिल्वं गुडूचो सुरदारु शुण्ठी ।
विडङ्गपाठातिविषा कणा च
क्वाथास्त्रयः सामसमीरणघ्नाः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१) पूति करंज, हर्र, कचूर और पोखरमूल;
(२) बेलकी छाल, गिलोय, देवदारु और सोंठ;
(३) बायबिडंग, पाठा, अतीस और पीपल;
ये तीनों क्वाथ आमवातको नष्ट करते हैं।

(९२०३) करञ्जादिवमनकषायः (१)

(ग. नि. । अजीर्णा. ५)

कारञ्जश्च कषायः स्यादथवाऽर्जुनसार्षपः ।
पीतः कषायो वमनात् सद्यो हन्ति विषूचिकाम् ॥

करञ्ज (फल) का अथवा अर्जुनकी छाल और सरसोंका काथ पीनेसे वमन होकर विषूचिका नष्ट हो जाती है।

(९२०४) करञ्जादिवमनकषायः (२)

(ग. नि. । अजीर्णा. ५)

करञ्जनिम्बशिखरीगुडूच्यर्जुनवत्सकैः ।
पीतः कषायो वमनाद्घोरां हन्ति विषूचिकाम् ॥

करञ्ज (फल), नीमकी छाल, अपामार्ग (चिरचिटा), गिलोय, अर्जुनकी छाल और इन्द्रजौ समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

इसे पीनेसे वमन होकर घोर विषूचिका नष्ट हो जाती है।

(९२०५) करञ्जादिस्वरसः

(वृ. मा. । व्रणशोथा.)

करञ्जारिष्टनिर्गुण्डीरसो हन्याद् व्रणक्रिमीन् ॥

करञ्ज, नीम और संभालु; इनके पत्तोंके रस एकत्र मिलाकर व्रणमें भरने से व्रणके कृमि नष्ट हो जाते हैं।

(९२०६) कर्चूरादिक्वाथः

(ग. नि. । ज्वरा. १)

कर्चूरभार्गीकटुकापटोली-
दुरालभापुष्करमूलमैन्द्री ।
व्याघ्री तथा कर्कटशृङ्गिका च
क्वाथोऽयमुक्तः प्रचुरे त्रिदोषे ॥
कालो ह्येष यमश्चैव नियतिर्मृत्युरेव च ।
तस्मिन्नपगते देहान्नन्मेह पुनरुच्यते ॥

कचूर, भरंगी, कुटकी, पटोल, धमासा, पोखरमूल, इन्द्रायणकी जड़, कटेली और काकड़ासिंगी समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

इसे पिलानेसे भयंकर सन्निपात ज्वर भी नष्ट हो जाता है।

(९२०७) कलिङ्गषट्कः

(ग. नि. । अतिसारा. २; वै. जी. । विलास २)

विश्वाकलिङ्गातिविषाब्दबिल्वैः
सबालकैरुत्क्वथितः कषायः ।
तस्मै सशूलाय सशोणिताय
सामाय शस्तोऽथ कलिङ्गषट्कः ॥

सोंठ, इन्द्रजौ,[1] अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी और सुगन्धबाला समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

इसे पीनेसे शूल युक्त अतिसार, रक्तातिसार और आमातिसार का नाश होता है।

(९२०८) कलिङ्गादिकषायः

(वैद्यामृत.)

कलिङ्गशुण्ठीघनतिक्ततिक्ता
निम्बामृताधान्यरजोन्वितानाम् ।

---

१ वै. जी. में इन्द्रजौकी जगह कुड़ेकी छाल है और सोंठका अभाव है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरिङ्गणीपुष्करचन्दनानां
पटोलभार्ङ्गी वृषपद्मकानाम् ॥
कषायकः कासवमीपिपासा
दाहान्विते चाष्टविधज्वरार्ते ।
सजन्तुरोगेऽरुचिकामलार्ते
दोषत्रयार्ते गदितो मुनीन्द्रैः ॥

इन्द्रजौ, सोंठ, नागरमोथा, चिरायता, कुटकी, नीमकी छाल, गिलोय, धनिया, पित्तपापड़ा, कटेली, पोखरमूल, लाल चन्दन, पटोल, भरंगी, बासा और पद्माक समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

यह क्वाथ कास, वमन, पिपासा और दाह युक्त आठ प्रकारके ज्वर, कृमिरोग, अरुचि और कामला को नष्ट करता है।

(९२०९) कलिङ्गादिक्वाथः

(वै. जी. । वि. ४)

गोमूत्रेण कृतः कलिङ्गकटुकापाठावृषाब्दामर-
क्वाथः क्षौद्रयुतो निहन्ति
सकलान्कण्ठामयानुत्कटान् ॥

इन्द्रजौ, कुटकी, पाठा, बासा, नागरमोथा और देवदारु समान भाग लेकर गोमूत्रमें पकाकर क्वाथ बनावें।

इसमें शहद मिलाकर पीनेसे समस्त कण्ठरोग नष्ट होते हैं।

(९२१०) कसेर्वादिक्वाथः

(वृ. मा. । स्त्रीरोगा. ; व. से. ; यो. र. । स्त्रीरोगा.)

कसेरुशृङ्गाटकपद्मकोत्पलं
समुद्गयष्टी[1]मधुकं सशर्करम् ।
सशूलगर्भस्रुतिपीडिताङ्गना
पयो विमिश्रं पयसाऽन्न भुक्पिबेत् ॥

कसेरु, सिंघाड़ा, पद्माक, नीलोत्पल, मुद्गपर्णी और मुलैठी समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

इसमें दूध और खांड मिलाकर पीने और दूध भात खानेसे गर्भशूल नष्ट होता तथा गर्भस्राव रुक जाता है।

1 समुद्गपर्णी।

(९२११) कारव्यादिक्वाथः

(व. से. । ज्वरा. ; वृ. मा. ; ग. नि. ; भै. र. ; धन्व. । ज्वरा.)

कारवी पुष्करैरण्डत्रायन्ती नागरामृता ।
दशमूली शठी भृङ्गी वासा भार्ङ्गी पुनर्नवा ॥
तुल्या मूत्रेण निष्क्वाथ्य पीता स्रोतोविशोधनम् ।
अभिन्यासज्वरायासमाशु घ्नन्ति समुद्धतम् ॥

कालाजीरा, पोखरमूल, अरण्डमूल, त्रायमाणा, सोंठ, गिलोय, दशमूलकी प्रत्येक औषधि, कचूर, काकड़ासिंगी, बासा (अडूसा), भरंगी और पुनर्नवा (बिसखपरा) समान भाग लेकर गोमूत्रमें पकाकर क्वाथ बनावें।

इसे पीनेसे स्रोत शुद्ध होते और अभिन्यास सन्निपात शीघ्रही नष्ट हो जाता है।*

(९२१२) काश्मर्यादिशीतकषायः

(ग. नि. । ज्वरा. १)

काश्मर्यफलमृद्वीकाशीतपाकीपरूषकम् ।
मधुकत्रिफलामुस्तचन्दनोशीरपद्मकम् ॥

* वृ. मा. में सोंठके स्थान पर पाठा और ग. नि. में जवासा है।

भै. र. में वासेके स्थान पर जवासा है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रायन्तीकटुका तुल्या यष्ट्याह्वं चापि तत्समम् ।
पिबेत्पर्युषितं शीतं मधुना श्लेष्मपित्तजित् ॥

खम्भारी के फल, मुनक्का, काकोली, फालसा, मुलैठी, हर्र, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा, लाल चन्दन, खस, पद्माक, त्रायमाणा और कुटकी १-१ भाग तथा मुलैठी सबके बराबर लेकर शीत कषाय बनावें । (५ तोले चूर्ण को ३० तोले पानीमें रातको मिट्टीके बरतन में भिगो दें और सुबहको मलकर छान लें ।)

इसमें शहद मिलाकर पीनेसे कफपित्तज ज्वर नष्ट होता है ।

(मात्रा—१० तोले ।)

(९२१३) किराततिक्तादिक्वाथः

(भै. र. । अतीसारा.)

किराततिक्तकं मुस्तं वत्सकं सरसाञ्जनम् ।
पित्तातिसाररोगघ्नं सक्षौद्रं वेदनापहम् ॥

चिरायता, नागरमोथा और इन्द्रजौ समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।

इसमें (१ माशा) रसौत का चूर्ण और शहद मिलाकर पीनेसे वेदनायुक्त पित्तातिसार नष्ट होता है ।

(९२१४) किरातादिक्वाथः (१)

(वैद्यामृत)

किरातनागरामृता रजोब्दसंभृतं जलम् ।
निहन्तिवातपित्तजज्वरं यथा गजं हरिः ॥

चिरायता, सोंठ, गिलोय, पित्तपापड़ा और नागरमोथा समान भाग लेकर क्वाथ बनावें । यह क्वाथ वातपित्तज ज्वरको नष्ट करता है ।

(९२१५) किरातादिक्वाथः (२)

(भै. र. । ज्वरा. ; हा. सं.[1] । स्था. ३ अ. २)

किराताब्दामृतोदीच्यबृहतीद्वयगोक्षुरैः ।
सस्थिराकलसीविश्वैः क्वाथो वातज्वरापहः ॥

चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सुगंधबाला, छोटी कटेली, बड़ी कटेली, गोखरु, शालपर्णी, पृष्ठ-पर्णी और सोंठ समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।

यह क्वाथ वातज्वरको नष्ट करता है ।

(९२१६) किरातादिक्वाथः (३)

(ग. नि. । ज्वरा. १)

किराततिक्तकटुकामुस्तपर्पटकामृताः ।
पटोलारिष्टरजनीः पिबेत्क्वाथं तु पैत्तिके ॥

चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, गिलोय, पटोल, नीम की छाल और हल्दी समान भाग लेकर क्वाथ बनावें ।

यह क्वाथ पित्तज्वरको नष्ट करता है ।

(९२१७) किरातादिक्वाथः (४)

(ग. नि. । ज्वरा. १)

किरातमुस्तं त्रिफलां गुडूचीं वत्सकात्फलम् ।
पिचुमन्दं पटोलं च पाठां कटुकरोहिणीम् ॥
त्र्यूषणं चाक्षतुल्यांशं पचेत्तोये चतुर्गुणे ।
सन्निपातपरीतानां तृट्छर्दिज्वरनाशनम् ॥

चिरायता, नागरमोथा, हर्र, बहेड़ा, आमला, गिलोय, इन्द्रजौ, नीमकी छाल, पटोल, पाठा, कुटकी, सोंठ, मिर्च और पीपल १।-१। तोला लेकर कूट लें । (इसमें से २॥ तोले दवाको २० तोले पानीमें पकावें और ५ तोले रहनेपर छान लें ।)

यह क्वाथ सन्निपात ज्वर, तृषा और छर्दिको नष्ट करता है ।

---

१ हा. सं. में पीपल और कुटकी अधिक है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९२१८) **किरातादिक्वाथः** (४) (बृहद्)

(भै. र. । ज्वरा. ; हा. सं. । स्था. ३ अ. २)

किराततिक्तामलकशटीनां
द्राक्षोषणानागरकामृतानाम् ।
क्वाथः सुशीतो गुडसंयुतः स्यात्
सपित्तवातज्वरनाशहेतुः ॥

चिरायता, आमला, कचूर, द्राक्षा, कालीमिर्च, सोंठ और गिलोय समान भाग लेकर क्वाथ बनावें। इसे ठंडा करके गुड़ मिलाकर पीनेसे वातपित्त ज्वर नष्ट होता है।

(९२१९) **किरातादिपाचनकषायः**

(ग. नि. । ज्वरा. १)

किराततिक्तकं क्षौद्रं ह्रीवेरामलकीफलम् ।
ज्वरघ्नं तत्पिबेच्छीतं पाचनं पैत्तिके ज्वरे ॥

चिरायता, सुगंधबाला और आमला समान भाग लेकर शीतकषाय बनावें। इसमें शहद मिला कर पीनेसे पित्तज्वर में दोषोंका पाचन होता है।

(९२२०) **कुटजादिक्वाथः** (१)

(वृ. मा. । प्रमेहा.)

कुटजासनदार्व्यब्दफलत्रयभवोऽथवा ।
गुडूच्याः स्वरसः पेयो मधुना सर्वमेहनुत् ॥

कुड़ेकी छाल, असन वृक्षकी छाल, दारुहल्दी, नागरमोथा, हर्र, बहेड़ा और आमला समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

यह क्वाथ या शहद मिलाकर गिलोयका रस पीनेसे समस्त प्रकारके प्रमेह नष्ट होते हैं।

(९२२१) **कुटजादिक्वाथः** (२)

(भै. र. । अतीसारा. ; वृ. मा. ; ग. नि.)

कुटजातिविषां मुस्तं हरिद्रापर्णिनीद्वयम् ।
सक्षौद्रशर्करं शस्तं पित्तश्लेष्मातिसारिणाम् ॥

कुड़ेकी छाल, अतीस, नागरमोथा, हल्दी, शालपर्णी और पृष्ठपर्णी समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

इसमें शहद और खांड मिलाकर पीनेसे पित्त-कफज अतिसार नष्ट होता है।

(कफातिसारमें शहद और पित्तातिसार में खांड मिलानी चाहिये।)

(९२२२) **कुटजादिक्वाथः** (३)

(भै. र. । अतिसारा. ; वृ. मा. ; ग. नि. ; व. से.)

कुटजत्वक्फलं मुस्तं क्वाथयित्वा पिबेज्जलम् ।
अतीसारं जयेदाशु शर्करामधुयोजितम् ॥

कुड़ेकी छाल, इन्द्रजौ और नागरमोथा समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

इसमें शहद और खांड मिलाकर पीनेसे अतिसार शीघ्रही नष्ट हो जाता है।

(९२२३) **कुशमूलादिक्वाथः**

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ३)

कुशकाशेक्षुमूलानां शालीनलदवञ्जुलैः ।
मूलानां क्वाथमाहृत्य शस्तं पित्तातिसारिणाम् ॥

कुशमूल, कासकी जड़, ईखकी जड़, शाली चावलोंकी जड़, खस और बेतकी जड़ समान भाग लेकर क्वाथ बनावें। यह क्वाथ पित्तातिसारको नष्ट करता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९२२४) कुशादिक्वाथः (१)

(वै. जी. । वि. ४)

समौद्रं कुशकाशगोक्षुरशिवाशम्पाकपाषाणभि-
द्दुस्पर्शं परिसेवितं परिहरेत्सद्योऽश्मरीं दुस्तराम् ॥

कुशकी जड़, कासकी जड़, गोखरुकी जड़, हर्र, अमलतास, पाषाणभेद और धमासा समान भाग लेकर क्वाथ बनावें। इसमें शहद मिलाकर पीनेसे दुस्साध्य अश्मरी भी शीघ्रही नष्ट होजाती है।

(९२२५) कुशादिक्वाथः (२)

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ३४)

कुशकाशनलं वेणु अग्निमन्थाश्मरीघ्नकम् ।
श्वदंष्ट्रा मोरटा वापि तथा पाषाणभेदकम् ॥
पलाशस्त्रिफलाक्वाथो गुडेन परिमिश्रितः ।
पानान्मूत्राश्मरीं हन्ति शूलं बस्तौ व्यपोहति ॥

कुश, काश, नल, बांस, अरणी, बरना, गोखरु, मूर्वा, पाषाणभेद, पलाश (ढाक) की जड़ और त्रिफला समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

इसमें गुड़ मिलाकर पीनेसे मूत्राश्मरि और बस्तिशूलका नाश होता है।

(९२२६) कुष्ठादिकषायः

(ग. नि. । ज्वरा. १)

कुष्ठं सातिविषं मुस्तानागरं देवदारु च ।
यवासकः कृतः क्वाथो हितः श्लेष्मज्वरान्विते ॥

कूठ, अतीस, नागरमोथा, सोंठ, देवदारु और जवासा समान भाग लेकर क्वाथ बनावें।

यह क्वाथ कफज्वरमें हितकारी है।

(९२२७) कूष्माण्डयोगः

(व. से. । अश्मर्य.)

कूष्माण्डकरसो हिङ्गुयवक्षारसमायुतः ।
बस्तौ मेढ्रे सशूले च शर्कराश्मरिनाशनः ॥

पेठेके रसमें हींग और जवाखार मिलाकर पीनेसे बस्ती और मेढ्रकी शूलयुक्त शर्करा और अश्मरी नष्ट हो जाती है।

(९२२८) कूष्माण्डरसयोगः (१)

(वृ. यो. त. । त. १०२)

यवक्षारगुडोन्मिश्रं रसं पुष्पफलोद्भवम् ।
पिबेन्मूत्रविबन्धघ्नं शर्कराश्मरिनाशनम् ॥

पेठे (भूरे कुम्हड़े)के रसमें जवाखार और गुड़ मिलाकर पीनेसे मूत्राघात, शर्करा और अश्मरि का नाश होता है।

(९२२९) कूष्माण्डरसयोगः (२)

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ३२ ; ग. नि. । मूत्रकृ. २७ ; वै. म. र. । पटल ७)

कूष्माण्डरसमादाय शर्करासहितं पिबेत् ।
यस्तु त्रिदोषसम्भूतमूत्रकृच्छ्रनिवारणम् ॥

भूरे कुम्हड़े (पेठे) के रसमें खांड मिलाकर पीनेसे त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो जाता है।

(९२३०) कूष्माण्डरसयोगः (३)

(शा. सं. । खं. २ अ. १)

कूष्माण्डकस्य स्वरसो गुडेन सह योजितः ।
दुष्टकोद्रवसञ्जातं मदं पानाद् व्यपोहति ॥

भूरे कुम्हड़े (पेठे) के रसमें गुड़ मिलाकर पीनेसे कोद्रव (कोदों) का मद नष्ट होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९२३१) कृष्णादिक्वाथः

(रा. मा. । विषा. २८)

कृष्णाङ्कोलक्वाथस्तच्चूर्णं वा दिनत्रयं पीतम् ।
पुंसां निहन्ति नूनं दारुणमपि कृत्रिमं गरलम् ॥

पीपल और अंकोल का क्वाथ या चूर्ण पीने से ३ दिनमें दारुण कृत्रिम विष भी अवश्य नष्ट हो जाता है ।

(९२३२) केशराजादिक्वाथः

(व. से. । अतिसारा)

केशराजमुनिषण्णकजटं
दाडिमस्य फलमर्जुनोद्भवम् ।
क्वाथ एष परिशीलितो नृणां
हन्ति साममथ शूलमद्भुतम् ॥

भंगरा, सुनिषण्णक (चौपतिया), जल चौलाई, अनारका फल और अर्जुनके फल समान भाग लेकर क्वाथ बनावें । यह क्वाथ आम और शूल युक्त अतिसारको नष्ट करता है । यह एक अद्भुत प्रयोग है ।

इति ककारादिकषायप्रकरणम्

अथ ककारादिचूर्णप्रकरणम्

कंकुष्ठचूर्णम्

(वृ. यो. त. । त. १०५ ; व. से. उदरा.)

रस-प्रकरणमें देखिये ।

(९२३३) कटभ्यादियोगः

(वृ. मा. । विषा. ; व. से. । विषा)

कटभ्यर्जुनसैरेयशेलुक्षीरिद्रुमत्वचः ।
कषायकल्कचूर्णाः स्युः कीटलूताव्रणापहाः ॥

छोटी मालकंगनी, अर्जुनकी छाल, सैरेय (कटसरैया) लिहसोड़ा और क्षीरीद्रुम (बड़, पीपल, पिलखन, गूलर और सिरस) की छाल समान भाग लेकर एकत्र कूट लें ।

इसका कषाय, कल्क या चूर्ण बनाकर प्रयुक्त करनेसे कीड़ों और मकड़ी के काटेसे उत्पन्न व्रण नष्ट होते हैं ।

(९२३४) कटुकादिकल्कः

(ग. नि. । ग्रहण्य. ३)

कटुकेन्द्रयवौ पाठां कुटजत्वग्रसाञ्जनम् ।
धातक्यतिविषे शुण्ठीं मुस्तां पिष्ट्वा च वारिणा ॥

विष्टम्भमरुचिं रक्तं दाहं च गुदवेदनाम् ।
पित्तोत्थग्रहणीं हन्ति मधुना सह भक्षितः ॥

कुटकी, इन्द्रजौ, पाठा, कुड़ेकी छाल, रसौत, धायके फूल, अतीस, सोंठ और नागरमोथा; इनके समान भाग मिलित चूर्णको पानीके साथ पीसकर शहदमें मिलाकर चाटनेसे विष्टम्भ, अरुचि, रक्तस्राव, दाह, गुदाकी पीड़ा और पित्तजग्रहणी रोग का नाश होता है ।

(मात्रा—३ माशा ।)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९२३५) कटुकायोगः

(ग. नि. । ज्वरा.)

सशर्करासमात्रां कटुकामुष्णवारिणा ।
पीत्वा ज्वरं जयेज्जन्तुः कफपित्तसमुद्भवम् ॥

कुटकी का चूर्ण और खांड समान भाग लेकर एकत्र मिलावें ।

इसे उष्ण जलके साथ पीनेसे कफपित्तज ज्वर नष्ट होता है ।

मात्रा—१। तोला ।

(९२३६) कटुत्रिकादिचूर्णम्

(व. से. । नासा.)

कटुत्रिकं चित्रकतिन्तिडीकं
तालीशपत्रं चविकाम्लसञ्ज्ञम् ।
विचूर्णितं जीरकचूर्णयुक्त-
मेलात्वचा तत्सुरभीकृतं च ॥
मिश्रं पुराणेन गुडेन दद्या-
त्पीनसानां परिपाचनार्थम् ॥

सोंठ, मिर्च, पीपल, चीतामूल, तिन्तड़ीक, तालीसपत्र, चव्य, अम्लवेत, जीरा, इलायची और दालचीनी समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

(मात्रा—२-३ माशे)

इसे समान भाग गुड़में मिलाकर सेवन करनेसे पीनस पक जाती है ।

(९२३७) कट्फलादिचूर्णम्

(यो. त. । त. ७२ ; वृ. यो. त. । त. १३०)

कट्फलं शृङ्गवेरं च पिप्पली मरिचानि च ।
शटी पुष्करमूलं च भार्ङ्गी मधुरसा वरा ॥
अभयाकृष्णलवणं शृङ्गी कर्कटकस्य च ।
एतच्चूर्णवरं प्रोक्तं क्वाथो वा मूत्रमूर्छितः ॥
पीनसे स्वरभेदे च तमके सहलीमके ।
सन्निपातेऽनिलकफे कासे श्वासे च शस्यते ॥

कायफल, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, कचूर, पोखरमूल, भरंगी, मूर्वा, त्रिफला (हर्र, बहेड़ा, आमला), हर्र, काला नमक (संचल) और काकड़ासिंगी समान भाग लेकर चूर्ण बनावें और उसे गोमूत्रकी भावना देकर सुखा लें या इन द्रव्योंको गोमूत्रमें पकाकर क्वाथ बनावें ।

यह चूर्ण या क्वाथ पीनस, स्वरभेद, तमक श्वास, हलीमक तथा सन्निपातज और वातकफज कास श्वासमें उपयोगी है ।

(चूर्णकी मात्रा—२ माशे ।)

(९२३८) कणादिचूर्णम्

(वै. म. र. । पट. ३)

कणोषणनिशापथ्यागुडगोस्तनिकारजः ।
लीढं तैलेन कासानां श्वासानां च निवृत्तये ॥

पीपल, काली मिर्च, हल्दी, हर्र, गुड़ और मुनक्का समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

(मुनक्काको पृथक् पत्थर पर पीस कर मिलाना चाहिये ।)

इसे तेलमें मिलाकर चाटनेसे कास श्वास नष्ट होता है । (यह वातज कास श्वास में उपयोगी है ।)

(मात्रा—६ माशे ।)

(९२३९) कमलकेशरादियोगः

(व. से. । बालरोगा.)

श्वेतकमलकिञ्जल्कं सम्पिष्टं तण्डुलाम्बुना ।
मत्स्यण्डिमधुसंयुक्तं क्षिप्रं हन्ति प्रवाहिकाम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सफेद कमलकी केसरको चावलोंके धोवनके साथ पीसकर उसमें खांड और शहद मिलाकर सेवन करनेसे प्रवाहिका शीघ्र ही नष्ट हो जाती है।

(मात्रा—१ माशा ।)

(९२४०) कम्पिल्लकादियोगः

(ग. नि. । गुल्मा. २५)

कम्पिल्लकं हरीतक्यो बिडं शिग्रुफलानि च ।
श्यामां वचामश्वमूत्रीं विडङ्गान्यम्लवेतसम् ॥
यवक्षारं यवानीं तु पिबेदुष्णेन वारिणा ।
एतद्धि गुल्मनिचयं सशूलं सपरिग्रहम् ॥
भिनत्ति सप्तरात्रेण वायुर्वृद्धो यथा घनान् ॥

कमीला, हर्र, बिड लवण, सहंजनेकी फली, निसोत (काली), बच, शल्लकी (सलई), बायबिड़ंग, अम्लवेत, जवाखार और अजवायन समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे उष्ण जलके साथ सेवन करनेसे शूल और उपद्रवयुक्त गुल्म सात दिनमें नष्ट हो जाता है।

(मात्रा—१॥–२ माशे ।)

(९२४१) कम्पिल्लकाद्यो योगः

(ग. नि. । कृम्य. ६ ; यो. चि. म. । अ. २)

कम्पिल्लको हरीतक्यः क्षारः सैन्धवमेव च ।
पिष्टं तक्रेण पातव्यं नित्यं कृमिविनाशनम् ॥

कमीला, हर्र, जवाखार और सेंधा नमक समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे तक्रमें पीसकर पीनेसे कृमिरोग नष्ट होता है।

(मात्रा—३ माशा ।)

(९२४२) करञ्जबीजयोगः

(वै. म. र. । पटल ८)

करञ्जबीजविश्वोग्राः करञ्जक्वाथपेषिताः ।
पीताः प्रभाते निःशेषं घ्नन्त्याभ्यन्तरविद्रधिम् ॥

करंज के बीज, सोंठ और बच समान भाग लेकर चूर्ण बनावें। इसे करञ्जके क्वाथके साथ पीसकर प्रातःकाल पीनेसे अन्तर्विद्रधि नष्ट हो जाती है।

(मात्रा—२ माशे ।)

(९२४३) करञ्जमूलयोगः

(ग. नि. । अर्शो. ४)

तक्रभुङ्नक्तमालस्य गोमूत्रपरिपेषितम् ।
अर्शसां नाशनं मूलमापिबेद्दिवसत्रयम् ॥

करञ्जकी जड़को गोमूत्रमें पीसकर पीने और केवल तक्र पर रहने से ३ दिनमें अर्श रोग नष्ट हो जाता है।

(मात्रा—२ माशे ।)

(९२४४) करञ्जादिचूर्णम्

(यो. र. । वातशूला. ; वृ. यो. त. । त. ९४; वै. र. । शूला.)

करञ्जसौवर्चल१नागराणां
सरामठानां समभागिकानाम् ।
चूर्णं कदुष्णेन जलेन पीतं
समीरशूलं विनिहन्ति सद्यः ॥

करञ्ज बीज, संचल (काला नमक), सोंठ और हींग समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे मन्दोष्ण जल के साथ सेवन करने से वातजशूल नष्ट होता है।

(मात्रा—४ रत्तीसे १ माशा तक ।)

१ वैद्य रहस्यमें सौवर्चलकी जगह सुहागा है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९१४५) कर्कटीबीजयोगः

(ग. नि. । मूत्राघाता. २८ ; भै. र. । मूत्राघाता.)

वारिणाऽऽपिष्य बीजानि
कर्कट्याः सितया सह ।
पीतानि नाशयन्त्युग्रं मूत्ररोधं सवेदनम् ॥

ककड़ी (खीरे) के बीजोंको पानीके साथ पीसकर उसमें मिश्री मिलाकर पीनेसे पीड़ा युक्त प्रबल मूत्रावरोध शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

(मात्रा—१ तोला।)

(९२४६) कर्कोटीमूलयोगः

(ग. नि. । मूत्राघाता २८)

कर्कोटीमूलिका पीता दशाहं पयसा सह ।
भित्वाऽश्मशर्कराः शीघ्रं पातयत्येव खण्डशः ॥

ककोड़ेकी जड़के चूर्णको दस दिन तक दूधके साथ पीनेसे अश्मरि टुकड़े टुकड़े होकर निकल जाती है।

(९२४७) कर्पूरादिचूर्णम्

(व. से. । व्रणा. ; धन्व. । व्रणा.)

कर्पूरपूरितं बद्धं सघृतं सम्परोहति ।
सद्यः शस्त्रक्षतं तत्तु व्यथापाकविवर्जितः ॥

घीमें मिलाकर कपूरका चूर्ण चाकू तलवार आदिके ताजे घावमें भर कर पट्टी बांध देनेसे वह शीघ्र ही भर जाता है और न तो उसमें पीड़ा होती है, न वह पकता ही है।

(९२४८) कर्पूराद्युद्वर्तनम्

(यो. र. । मेदो.)

चन्द्रांशुशीतलं लोध्रं शिरीषोशीरकेसरैः ।
उद्वर्तनं भवेद्ग्रीष्मे स्वेदोद्गमनिवारणम् ॥

कपूर, सफेद चन्दन, लोध, सिरसकी छाल, खस और नागकेसर समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे ग्रीष्मऋतुमें शरीर पर मलनेसे स्वेद (पसीना) नहीं आता।

(९२४९) कलिङ्गादिकल्कः

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ३)

कलिङ्गपाठातिविषा बला च
सोदीच्य मुस्ता मरिचानि शुण्ठी ।
गुडेन क्षौद्रेण प्रशस्तकल्को
रक्तातिसारे कफजे शमाय ॥

इन्द्रजौ, पाठा, अतीस, खरैटीकी जड़, सुगंधबाला, नागरमोथा, काली मिर्च, सोंठ और गुड़ समान भाग लेकर चूर्ण बनावें। इसे शहदमें मिला कर सेवन करनेसे कफज रक्तातिसार नष्ट होता है।

(मात्रा—३ माशे।)

(९२५०) कलिङ्गादिचूर्णम् (१)

(ग. नि. । अतिसारा. २)

कलिङ्गं कट्फलं मुस्तं दारुः सातिविषा शिवा।
कल्कं तण्डुलतोयेन पिबेत्पित्तानिलात्मगी ॥

इन्द्रजौ, कायफल, नागरमोथा, देवदारु, अतीस और हर्रके समान भाग मिलित चूर्णको चावलोंके धोवनके साथ पीनेसे पित्तज और वातज अतिसारका नाश होता है।

(मात्रा—१॥ माशा।)

कलिङ्गादिचूर्णम् (२)

(व. से. । उदरा.)

रस-प्रकरणमें देखिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९२५१) कल्याणक्षारः

(वा. भ. । चि. अ. ८)

त्रिकटु त्रिपटु श्रेष्ठा दन्त्यरुष्करचित्रकम् ।
जर्जरं स्नेहमूत्राक्तमन्तर्धूमं विपाचयेत् ॥
शरावसन्धौ मृलिप्ते क्षारः कल्याणकाह्वयः ।
स पीतः सर्पिषा युक्तो भक्ते वा स्निग्धभो-
जिना ॥
उदावर्तविबन्धार्शोगुल्मपाण्डूदरकृमीन् ।
मूत्रसङ्गाश्मरीशोफहृद्रोगग्रहणीगदान् ॥
मेहप्लीहरुजानाहश्वासकासांश्च नाशयेत् ॥

सोंठ, मिर्च, पीपल, सैंधा नमक, विड लवण, काचलवण, हर्र, बहेड़ा, आमला, दन्तीमूल, भिलावा और चीतामूल समान भाग लेकर चूर्ण करके उसे घीसे चिकना करें और फिर उसमें थोड़ा गोमूत्र मिलाकर हाण्डीमें बन्द करके इस प्रकार भस्म करें कि उसका धुवां बाहर न निकले। तदनन्तर हाण्डीके शीतल होने पर उसमेंसे भस्मको निकाल कर रख लें। इसका नाम कल्याणक क्षार है।

इसे घी में मिलाकर पीने या भातके साथ खाने और स्निग्धाहार करनेसे उदावर्त, विबन्ध, अर्श, गुल्म, पाण्डु, उदररोग, कृमिरोग, मूत्राघात, अश्मरि, शोथ, हृद्रोग, ग्रहणी, प्रमेह, प्लीहा, पेटका अफारा, श्वास और कासका नाश होता है।

(मात्रा—१॥–२ माशा ।)

(९२५२) कल्याणलवणम् (१)

(सुश्रुत सं. । चिकि. अ. ४ वातव्या.)

गण्डीरपलाशकुटजबिल्वार्कस्नुह्यपामार्ग-पाटलापारिभद्रकनादेयीकृष्णागन्धानीयनिर्द-हन्यटरूषकनक्तमालकपूतिकबृहतीकण्टकारिका-भल्लातकेङ्गुदीवैजयन्तीकदलीवर्षाभूदर्भेक्षुर-केन्द्रवारुणीश्वेतमोक्षकाशोका इत्येवं वर्गसमू-लपत्रशाखमार्द्रमाहृत्य लवणेन सह संसृष्ट पूर्व-वद्दग्ध्वा क्षारकल्पेन परिस्राव्य विपचेदेतत्प्र-तिवापश्चात्र हिङ्ग्वादिभिः पिप्पल्यादिभिर्वा इत्येतत्कल्याणकलवणं वातरोगेषु गुल्मप्लीहाग्नि-सङ्गाजीर्णार्शोऽरोचकार्त्तानां कासादिभिरुप-द्रुतानां चोपदिशन्ति पानभोजनेष्विति ॥

मजीठ, पलाश (ढाक), कुड़ा, बेल, आक, थूहर, अपामार्ग (चिरचिटा), पाढल, पारिभद्र (फरहद या नीम), नादेयी (नागरमोथा या अरण्ड), पीपल, सुगन्धि शाली धान, दूर्वा, अडूसा (बासा), करञ्ज, नाटा करञ्ज, कटेली, बड़ी कटेली, भिलावा, इंगुदी, अरनी, केला, पुनर्नवा (बिस-खपरा), सुगन्धबाला, तालमखाना, इन्द्रायण सफेद आक, मोखा और अशोक; इनके हरे (ताजे) मूल, पत्र और शाखा लेकर कूटकर उसमें सबके बराबर सैंधा नमक मिलाकर हांडीमें बन्द करके कण्डोंकी अग्निमें भस्म करें और राखको निकाल कर क्षार निर्माण विधिसे पानीमें घोलकर स्वच्छ जल टपका लें। तदनन्तर इसे पकाकर गाढ़ा करें और पाकके अन्तमें हिंग्वादि गण या पिप्पल्यादि गण का चूर्ण मिला दें।

इसके सेवनसे वातव्याधि, गुल्म, प्लीहा, अग्नि-मांद्य, अजीर्ण, अर्श, अरुचि और कासादिका नाश होता है।

इसे भोजनके साथ खिलाना या अन्य समय पानीमें मिलाकर पिलाना चाहिये।

(मात्रा—१ माशा ।)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९२५३) **कल्याणलवणम्** (२)

(हा. सं. । स्थान ३ अ. ११)

चित्रकपुष्करमूलसठीनां
तेषु समांशास्तिला विनियोज्याः ।
सूरणकन्दकखण्डसमेतं
तेषु समाऽग्निफला च विदध्यात् ॥
सैन्धवं तस्य चतुर्गुणकं च
भावितमर्कदलेन समस्तम् ।
तं च घृतस्य घटे विनिधाय
काननगोमयवह्निविपक्वम् ॥
क्षारमिदं लवणघृतपक्वं
तक्रयुतं प्रतिपानमतोऽपि ।
नाशयति गुदकीलककीलान्
शूलविसूचिभगन्दरकानि ॥
कामलपाण्डवानाहविबन्धान्
गुल्ममरोचकनाशनकारि ।
मूत्रगदगलगण्डक्रिमीणां
नाशनभद्रकसैन्धवनामा ॥

चीतामूल, पोखरमूल और कचूर १-१ भाग; तिल ३ भाग, जिमीकन्दके टुकड़े ३ भाग, बड़ी मालकंगनी ९ भाग और सेंधा नमक ३६ भाग लेकर सबको कूटकर आकके पत्तों के रसकी एक भावना दें। तदनन्तर उसे घृतसे स्निग्ध किये हुवे घड़ेमें भरकर उसका मुंह बन्द करके बनकण्डों (अरने उपलों) की अग्निमें फूंकें।

इसे तक्रके साथ पीनेसे गुदकील, शूल, विसूचिका, भगन्दर, कामला, पाण्डु, आनाह, विबन्ध, गुल्म, अरुचि, मूत्ररोग, गलगण्ड और क्रिमि का नाश होता है।

(**मात्रा**—१ माशा,

(९२५४) **काकजङ्घाद्यं चूर्णम्**

(ग. नि. । ग्रहण्य. ३)

स्यात्काकजङ्घा लवणानि पञ्च
पाठा यवक्षारकचित्रकौ च ।
कचूरकं पिप्पलिका बृहत्यौ
साध्मानवातग्रहणीषु चूर्णम् ॥

काकजंघा, पांचों नमक (सेंधा नमक, संचल (काला नमक), बिड नमक, सामुद्र लवण, उद्भिद लवण), पाठा, जवाखार, चीतामूल, कचूर, पीपल, कटेली और बड़ी कटेली समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

यह चूर्ण आध्मान युक्त वातज ग्रहणीको नष्ट करता है।

(**मात्रा**—३ माशा । अनुपान तक्र ।)

(९२५५) **काकजङ्घानीलपुष्प्योः योगः**

(रा. मा. । यक्ष्मा. १९)

गव्येन पिष्टा पयसा निपीता
निहन्ति शोषं खलु काकजङ्घा ।
सम्पेष्य पीताऽथ रसाञ्जनेन
स्यान्नीलपुष्पी बत शोषशान्त्यै ॥

काकजंघा को दूधमें पीसकर पीनेसे या रसौत और नीलेफूलकी कोयल को पीसकर पीनेसे शोष रोग नष्ट होता है।

(९२५६) **काकादन्यादिक्षारः**

(व. से. । श्लीपदा. ; ग. नि. । श्लीपदा. २)

काकादनीं काकजङ्घां बृहतीं कण्टकारिकाम् ।
कदम्बपुष्पीं मन्दारीं लम्बां शुकनसं तथा ॥
दग्ध्वा मूत्रेण तद्भस्म स्रावयेत्क्षारकल्पवत् ।
तत्र दद्यात्प्रतीवापं काकोदुम्बरिकारसम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मदनस्य फलक्वाथं शुकाख्यास्वरसं तथा।
एषः क्षारस्तु पानीयः श्लीपदं हन्ति सेवितः॥
अपचीं गलगण्डं च ग्रहणीदोषमेव च।
भक्तस्यानशनञ्चैव हन्यात्सर्वविषाणि च॥
एष्वेव तैलं संसिद्धं नस्याभ्यङ्गेषु योजितम्।
एतान्येवामयान्हन्ति ये च दुष्टव्रणा नृणाम्॥

चौंटली, काकजंघा, बड़ी कटेली, छोटी कटेली, गोरखमुण्डी, लाल आक, कड़वी तूंबी और श्योनाक (अरलु) समान भाग लेकर सबको कूट कर हांडीमें बन्द करके भस्म करें और फिर उसे क्षार निर्माण विधिसे गोमूत्रमें घोलकर छान लें। तदनन्तर उसमें कठूमरका रस, मैनफलका क्वाथ और अरलुका स्वरस (प्रत्येक उक्त क्षार-जल के समान) मिलाकर पकावें और क्षार बना लें।

इसे पीनेसे श्लीपद, अपची, गलगण्ड, ग्रहणी, अरुचि और हर प्रकारके विषका नाश होता है।

(**मात्रा—१** माशा।)

इन्हीं द्रव्योंसे (उक्त क्षार और कठूमर आदिके रससे) तेल सिद्ध करके उसकी नस्य लेने और मालिश करनेसे भी उक्त रोग एवं दुष्ट व्रणका नाश होता है।

(९२५७) काकोदुम्बरयोगः (१)

(व. से. । विषा. ; रा. मा. । विषा २८)

काकोदुम्बरमूलन्तु धत्तूरफलकान्वितम्।
पिबेत्तण्डुलतोयेन सारमेयविषापहम्॥

कठूमरकी जड़ और धतूरेका फल समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे चावलों के धोवनके साथ पीनेसे कुत्तेका विष नष्ट होता है।

(९२५८) काकोदुम्बरयोगः (२)

(र. चि. म. । स्त. ३)

काकोदुम्बरकर्चूरं ब्रह्मदण्डी फलत्रिकम्।
प्रत्यहं मधुना लीढं रक्तकुष्ठापहं नृणाम्॥

कठूमर, कचूर, ब्रह्मदण्डी, हर्र, बहेड़ा और आमला समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे शहदके साथ चाटनेसे रक्त कुष्ठका नाश होता है।

(९२५९) काकोदुम्बरिकादियोगः

(ग. नि. । कुष्ठा. ३६)

मथितेन पिबेच्चूर्णं काकोदुम्बर्यफल्गुजम्।
तैलाक्तो घर्मसेवी स्यात्तक्राशी श्वित्रमुद्धरेत्॥

कठूमरके चूर्णको मथित (वस्त्रसे छनी निर्जल दही) के साथ सेवन करने, तक्राहार पर रहने और रोज शरीरपर तेल मलकर धूपमें बैठनेसे श्वित्र (सफेद कुष्ठ)का नाश होता है।

(९२६०) काकोदुम्बरिकामूलयोगः

(ग. नि. । मुखा. ५ ; रा. मा. । मुखरो. ५)

काकोदुम्बरिकामूलं पिष्टं तन्दुलवारिणा।
पानान्निवारयत्याशु प्रवृत्तं वदनादसृक्॥

कठूमरकी जड़ को चावलोंके धोवनके साथ पीसकर पीनेसे मुंहसे होने वाला रक्तस्राव शीघ्र बन्द हो जाता है।

(९२६१) काञ्चनारयोगः

(व. से. । गण्डमाला. ; ग. नि. । ग्रन्थ्य. १)

पलमर्द्धपलं वापि पिष्ट्वा तण्डुलवारिणा।
काञ्चनारत्वचः पीत्वा मुच्यते गण्डमालया॥

२॥ से ५ तोले तक कंचनारकी छालको चावलोंके धोवनके साथ पीसकर पीनेसे गण्डमाला का नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कामेश्वरचूर्णम्

(र. चि. म. । स्त. ८)

रसप्रकरणमें देखिये ।

(९२६२) कालाजाजीयोगः

(भा. प्र. । म. खं. २)

कालाजाजी तु सगुडा विषमज्वरनाशिनी ।
मधुना चाऽभया लीढा हन्त्याशु विषमज्वरान् ॥

काले जीरेके चूर्णको गुड़के साथ खिलाने से या हर्रके चूर्णको शहदके साथ चटानेसे विषमज्वर नष्ट होता है ।

(**मात्रा**—२ से ६ माशे तक ।)

(९२६३) कासान्तकचूर्णम्

(धन्व. । कास.)

त्रिफला व्योषचूर्णं च समभागं प्रकल्पयेत् ।
मधुना सह पानात्तु दुष्टकासं नियच्छति ॥

त्रिफला और त्रिकुटा का समान भाग मिलित चूर्ण शहदके साथ पिलानेसे दुष्टकास नष्ट होती है ।

(**मात्रा**—३ माशे ।)

कासीसादिचूर्णम्

(यो. त. । त. ५९)

रसप्रकरणमें देखिये

(९२६४) किराततिक्तादिकल्कः

(भा. प्र. । म. ख. २)

किराततिक्तकः कटु कुटजस्य फलं वचा ।
ब्राह्मी फलञ्च पालाशं सर्जिका कृष्णजीरकम् ॥
पिप्पली पिप्पलीमूलं चित्रं नागरमूषणम् ।
एषां कल्कैर्मुहुर्घर्षेज्जिह्विकामार्द्रकारसैः ॥
तेन सम्यग्विजानाति रसना सकलान्रसान् ।
कल्कः किराततिक्तादिर्जिह्वायाः शून्यतां हरेत् ॥

चिरायता, कुटकी, इन्द्रजौ, बच, ब्राह्मी, पलाशके फल, सज्जी, काला जीरा, पीपल, पीपलामूल, चीतामूल, सोंठ और काली मिर्च समान भाग लेकर चूर्ण बनावें । इसे अद्रकके रसमें पीसकर बार बार जिह्वा पर मलनेसे जिह्वाकी शून्यता नष्ट होकर समस्त रसोंका ज्ञान होने लगता है ।

(९२६५) किरातादियोगः

(वृ. मा. । अतिसारा. ; [illegible] । अतिसारा

किराततिक्तकं मुस्तं वत्सकं सरसाञ्जनम् ।
पिबेत्पित्तातिसारघ्नं सक्षौद्रं वेदनाग्रहम् ॥

चिरायता, नागरमोथा, इन्द्रजौ और [illegible] समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

इसमें शहद मिलाकर पीनेसे व[illegible]युक्त पित्तातिसार नष्ट होता है ।

(**मात्रा**—१॥ से ३ माशे तक ।)

(९२६६) कुङ्कुमयोगः

(ग. नि. । रक्तपित्त. ८)

भृतेनाजेन दुग्धेन सुपिष्टं कुङ्कुमं पिबेत् ।
ऊर्ध्वरक्तविनाशाय तेनैवाजेन भोजनम् ॥

बकरीके पके हुवे दूधमें केसरका चूर्ण (४ रत्तीसे १ माशा तक) मिलाकर पीनेसे उर्ध्वगत रक्तपित्त नष्ट होता है ।

उर्ध्व गत रक्तपित्तमें इसी दूधके साथ भोजन (भात) खाना चाहिये ।

कुङ्कुमाद्यं चूर्णम्

(र. चि. म.)

रसप्रकरण में देखिये

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९२६७) **कुटजकल्कः**

(यो. र. । अश्मर्य.)

अपि च कुटजमूलं धेनुदध्यम्बुपिष्टं ।
पिचुमितमवलीढं पातयत्यश्मरीकाम् ॥

१। तोला कुड़ेकी जड़को पानीमें पीसकर चाटनेसे अश्मरि निकल जाती है।

(९२६८) **कुटजादिचूर्णम्** (१)

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ३)

कुटजत्वक् च पाठा च
विश्वं बिल्वं च धातकीकुसुमम् ।
दध्ना सहितं चूर्णं देयं रक्तातिसारघ्नम् ॥

कुड़ेकी छाल, पाठा, सोंठ, बेलगिरी और धायके फूल समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे दहीके साथ सेवन करनेसे रक्तातिसार नष्ट होता है।

(**मात्रा**—३ माशे ।)

(९२६९) **कुटजादिचूर्णम्** (२)

(ग. नि. । ग्रहण्य. ३)

कुटजोऽतिविषा शुण्ठी मधुकं धातकीफलम् ।
शाल्मलीशुष्कनिर्यासः कणा मुस्ता समांशतः ॥
सुश्लक्ष्णं चूर्णमेतेषां मधुना सह भक्षितम् ।
हन्त्यामरक्तपित्तोत्थां ग्रहणीमतिवेगतः ॥

कुड़ेकी छाल, अतीस, सोंठ, मुलैठी, धायके फूल, सेंभलका सूखा हुवा गोंद, पीपल और नागरमोथा समान भाग लेकर बारीक चूर्ण बनावें।

इसे शहदके साथ सेवन करनेसे आम और रक्त युक्त पित्तज ग्रहणी रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

(**मात्रा**—१॥ से ३ माशे तक ।)

(९२७०) **कुटजादियोगः** (१)

(यो. र. । अश्मर्य. ; वृ. यो. त. । त. १०२)

पिबतः कुटजं दध्ना पथ्यमन्नं च खादतः ।
निपतत्यचिरादस्य निश्चितं मेढ्रशर्करा ॥

कुड़ेकी जड़को दहीके साथ खाने और पथ्य पालन करनेसे मेढ्र शर्करा (लिंगकी शर्करा–रेत) अवश्य शीघ्र ही नष्ट हो जाती है।

(९२७१) **कुटजादियोगः** (२)

(ग. नि. । रक्तपित्त. ८)

कुटजत्वक्समायुक्तैर्धातकीरोध्रवालकैः ।
चूर्णमुत्पलसम्मिश्रैः कृतमिन्द्रयवान्वितैः ॥
वासारसेन सम्मिश्रैरवश्यायस्थितं पिबेत् ।
मधुना योजितं ह्येतदूर्ध्वरक्तहरं परम् ॥

कुड़ेकी छाल, धायके फूल, लोध, सुगंधबाला, नीलोत्पल और इन्द्रजौ समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे बासा के रसमें मिलाकर रातको ओसमें रख दें और प्रातःकाल शहद मिलाकर पियें। इसके सेवनसे ऊर्ध्वगत रक्तपित्तका नाश होता है।

(**मात्रा**—चूर्ण २–३ माशे। बासारस १ से २ तोले। मधु ६ माशे।)

(९२७२) **कुटजाद्यं चूर्णम्**

(ग. नि. । चूर्णा.)

कुटजत्वगिन्द्रयवान् पाठां
मुस्तं रसाञ्जनं शुण्ठीम् ।
बालं बिल्वमतिविषां कटुकं
वै धातकीं समाहृत्य ॥
मधुनाऽऽलोड्य निपीतं
तण्डुलपयसा प्रवाहिकां हरति ।
अर्शांसि गुदे शूलं पित्तरक्तातिसारं च ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुड़ेकी छाल, इन्द्रजौ, पाठा, नागरमोथा, रसौत, सोंठ, सुगन्धबाला, बेलगिरी, अतीस, कुटकी और धायके फूल समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे शहदमें मिलाकर चावलोंके पानी के साथ पीनेसे प्रवाहिका, अर्श, गुदशूल तथा पित्तज और रक्तज अतिसारका नाश होता है।

(मात्रा—२-३ माशे।)

कुठेरकाद्यं चूर्णम्

(ग. नि. । परि. चूर्णा.)

रस प्रकरणमें देखिये।

(९२७३) कुबेराक्षयोगः

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ७)

एक एव कुबेराक्षः सर्वशूलापहारकः।
किं पुनः स त्रिभिर्युक्तः पथ्यारुचकरामठैः॥

लता करंजकी मींगी अकेली ही समस्त प्रकारके शूलोंको नष्ट कर देती है। यदि उसके साथ हर्र, काला नमक और हींग मिला लिया जाए तो कहना ही क्या है।

(मात्रा—करंजकी मींगी ४-६ रत्ती। मिश्रित चूर्ण १॥-२ माशे।)

(९२७४) कुरण्टमूलयोगः

(यो. र. । स्त्रीरोगा.)

कुरण्टमूलं धातक्याः कुसुमानि वटाङ्कुराः।
नीलोत्पलं पयोयुक्तमेतद् गर्भप्रदं ध्रुवम्॥

कुरण्टमूल (पीले फूलके पिया बांसेकी जड़), धायके फूल, बड़के अंकुर और नीलोत्पल; इनके समान भाग मिश्रित चूर्णको दूधके साथ सेवन करानेसे स्त्री गर्भ धारण कर लेती है।

(९२७५) कुलत्थादिचूर्णम्

(ग. नि. । ज्वरा. १)

कुलत्थं त्रायमाणां च पिप्पलीं चैव हिङ्गु च।
सैन्धवं काललवणं शृङ्गवेरं सचित्रकम्॥
वयस्थां कोलमज्जानं धन्वयासं हरेणुकाम्।
त्वचं दारुहरिद्रे च सूक्ष्मैलां चोरकं तथा॥
बलां मूर्वां समञ्जिष्ठां विडङ्गं तुम्बरूणि च।
हरीतकीं तामलकीं शिग्रुकस्य फलानि च॥
मरिचं चाजमोदं च यथालाभेन संहरेत्।
चूर्णीकृतानि सर्वाणि लेहयेन्मधुसर्पिषा॥
रसेन मातुलुङ्गस्य पयसाऽम्लेन वा पुनः।
दधिमण्डेन चालोड्य मूत्रेणान्यतमेन वा॥
वातोत्तरं सन्निपातं क्षिप्रमेव चिकित्सति।
समस्तं वर्गमर्धं वा यथालाभमथापि वा॥
प्रयुञ्जीत भिषक् प्राज्ञः कालसात्म्यविभागतः॥

कुलथी; त्रायमाणा, पीपल, हींग, सेंधानमक, संचल (काला नमक), सोंठ, चीतामूल, काकोली, बेरकी गुठलीकी मींगी, धमासा, रेणुका, दालचीनी, हल्दी, दारुहल्दी, छोटी इलायची, चोरक, खरैटी, मूर्वा, मजीठ, बायबिडंग, तुम्बरु, हर्र, भुई आमला, सहंजनेकी फली, काली मिर्च और अजमोद; ये समस्त औषधियां अथवा इनमें से आधी या समयानुसार जितनी मिल सकें उतनी ही समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे घी और शहदमें मिलाकर या बिजौरे नीबूके रसके साथ अथवा दूध, कांजी, दधिमण्ड, और गोमूत्रमें से किसी एकके साथ देनेसे वातप्रधान सन्निपात शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

(मात्रा—२-३ माशे।)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९२७६) कुलित्थचूर्णम्

(व. से. । ज्वरा. ।)

स्वेदोद्गमे भ्रष्टकुलित्थचूर्ण-
निपातनं शस्तमिति ब्रुवन्ति ।
मृत्युश्च तस्मिन्बहुपिच्छलत्वा-
च्छीतस्य जन्तोः परितः सरत्वात् ॥

सन्निपात ज्वरमें अधिक पसीना आने लगे तो भुनी हुई कुलथी के चूर्ण को शरीर पर मलना चाहिये ।

यदि अत्यधिक आने हुवे पसीनोंको न रोका जाय तो शरीर ठंडा होकर मृत्यु हो जाती है ।

(९२७७) कुशमूलयोगः (१)

(व. से. । अर्शो.)

कुशमूलं बलायुक्तं पानं तण्डुलधावनम् ।
रुणद्धि गुदजा स्रावं प्रदरं वापि सर्वजम् ॥

कुशमूल और खरैटी समान भाग लेकर चूर्ण बनावें । इसे चावलोंके धोवनके साथ पीनेसे गुदासे होने वाला रक्तस्राव और सर्वदोषज प्रदर नष्ट होता है ।

(मात्रा — ६ माशे ।)

(९२७८) कुशमूलयोगः (२)

(यो. त. । त. ७४; वृ. मा. ; यो. र. । प्रदरा.)

कुशमूलं समुद्धृत्य पेषयेत्तन्दुलाम्बुना ।
एतत्पीत्वा त्र्यहं नारी प्रदरात्परिमुच्यते ॥

कुशाकी जड़को चावलों के पानीके साथ पीस कर पीनेसे ३ दिनमें प्रदर रोग नष्ट होता है ।

(९२७९) कुष्ठयोगः

(र. र. रसा. खं. । उप. ५)

कुष्ठचूर्णं समध्वाज्यं नित्यं कर्षं लिहेत्तु यः ।
वत्सराद्दिव्यदेहः स्याद्गन्धेन शतपुष्पवत् ॥

× × ×

यः कुष्ठचूर्णं रजनीविरामे
मध्वाज्यसम्मिश्रितमत्ति नित्यम् ।
समाःसमातङ्गबलः सुगन्धि-
र्वाग्मी चिरायुश्च भवेन्मनुष्यः ॥

(यो. त. । त. ८१)

जो व्यक्ति नित्य प्रातःकाल घी और शहदके साथ कूठका १। तोला चूर्ण सेवन करता है वह १ वर्षमें अत्यन्त बलशाली, दीर्घायु और वाग्मी (उत्तम वक्ता) हो जाता है तथा उसके शरीरसे कमलकी सी सुगंध आने लगती है ।

(९२८०) कुष्ठहरचूर्णम्

(र. चि. म. । स्त. ४)

चिरबिल्वं चित्रपथ्या शिरीषं च बिभीतकम् ।
काकोदुम्बरिकामूलं गोजलेन च भावितम् ॥
कर्षमात्रं पिबेद्रोगी गोजलेन समन्वितम् ।
सप्तसप्तकपर्यन्तं सर्वकुष्ठानि नाशयेत् ॥

करञ्ज, अरण्डमूल, हर्र, सिरसकी छाल, बहेड़ा और कठूमरकी जड़ समान भाग लेकर चूर्ण बनावें एवं उसे गोमूत्रकी भावना देकर सुरक्षित रक्खें ।

मात्रा—१। तोला ।

इसे सात सप्ताह तक गोमूत्रके साथ सेवन करनेसे समस्त कुष्ठ नष्ट हो जाते हैं ।

(९२८१) कुष्ठादिकल्कः

(यो. र. । स्नायुरोगा.)

कुष्ठरामठशुण्ठीभिः कल्कं शिग्रुसमन्वितम् ।
पानलेपनयोगेन तन्तुकीटविनाशनम् ॥

कूठ, हींग, सोंठ और सहंजनेकी छाल का चूर्ण समान भाग लेकर पानीके साथ (या सहंजने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के रसके साथ) बारीक पीस लें। इसे पीने और इसका लेप करनेसे स्नायुक (नहरवा) नष्ट होजाता है।

(९२८२) कुष्ठादिचूर्णम् (१)

(व. से. । अतिसारा.)

कुष्ठं पाठा वचा मुस्तं चित्रकं कटुरोहिणी।
पीतमुष्णाम्बुना चूर्णं श्लेष्मातीसारनाशनम् ॥

कूठ, पाठा, बच, नागरमोथा, चीता और कुटकी समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे उष्ण जलके साथ सेवन करनेसे कफातिसार नष्ट होता है।

(मात्रा—२-३ माशे।)

(९२८३) कुष्ठादिचूर्णम् (२)

(ग. नि. । कासा. १०)

कुष्ठं तामलकी भार्गी शठी क्षारौ हरीतकी।
कोलं चोष्णाम्भसा चूर्णं
श्लेष्मकासान्वितः पिबेत् ॥

कूठ, भुईआमला, भरंगी कचूर, जवाखार, सज्जीखार और हर्र समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे उष्ण जलके साथ पीनेसे कफज कासका नाश होता है।

मात्रा—७॥ माशे।

(९२८४) कुष्ठादिचूर्णम् (३)

(भा. प्र. । म. खं. २ ; यो. र. । तालुरोगा.)

कुष्ठोषणवचासिन्धुकणापाठाप्लवैः सह।
सक्षौद्रैर्भिषजा कार्यं गलशुण्डी प्रघर्षणम् ॥

कूठ, काली मिर्च, बच, सेंधा नमक, पीपल, पाठा और केवटी मोथा समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे शहदमें मिलाकर गलशुण्डि पर मलना चाहिये।

(९२८५) कुष्ठादिचूर्णम् (४)

(रा. मा. । रसा. वाजी. ३२)

कुष्ठं मुरा केसरमित्यमूनि
श्लक्ष्णानि सञ्चूर्ण्य घृतान्वितानि।
यो लेढि नित्यं मधुसंयुतानि
स स्यात्सुगन्धिः सुभगश्च लोके ॥

कूठ, मुरमुकी और केसर समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे घी और शहदमें मिलाकर सेवन करने से शरीरसे सुगन्धि आने लगती है और सौन्दर्य बढ़ता है।

(९२८६) कुष्ठादियोगः

(यो. र. । कृत्रिम विषा.)

कुष्ठं वचा मदनकोशवतीफलेन
संयोजितं तदिति चूर्णमिदं चतुर्णाम्।
गोमूत्रपीतमखिलाखुविषं निहन्ति
कोशातकीक्वथनमापिबतोऽथ वाऽपि ॥

कूठ, बच, मैनफल और तुरई (कड़वी तोरी) का फल समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे गोमूत्र के साथ पीनेसे चूहेका विष नष्ट होता है।

अथवा तोरी (कड़वी तोरी)के फलका काथ पीनेसे भी चूहेका विष नष्ट होता है।

(९२८७) कुष्ठाद्यं चूर्णम्

(ग. नि. । उदरा. ३२)

कुष्ठं दन्ती यवक्षारः पाठा त्रिलवणं वचा।
अजाजी दीप्यको हिङ्गु स्वर्जिका चव्यचित्रकौ ॥
शुण्ठी चोष्णाम्भसा पीतं वातोदररुजापहम् ॥

कूठ, दन्तीमूल, जवाखार, पाठा, सेंधा नमक, काला नमक (संचल), बिड़लवण, बच, जीरा,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अजवायन, हींग, सज्जीखार, चव, चीतामूल और सोंठ समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे उष्ण जलके साथ पीनेसे वातोदर नष्ट होता है।

(मात्रा—२ माशे।)

(९२८८) कुष्ठारिरसः (चूर्णम्)

(रसें. चि. म. । अ. ९; र. रा. सु. । कुष्ठा.; रसें. सा. सं. । कुष्ठा.)

काठोडुम्बरिकाचूर्णं ब्रह्मदन्तिबलात्रयम् ।
प्रत्येकं मधुना लीढं वातरक्तापहं नृणाम् ॥
स्वरद्रक्तश्चरन्मांसं मासमात्रेण सर्वथा ।
गलत्पूयं पतत्कीटं त्रिटङ्कं सेव्यमीरितम् ॥

कठूमरकी छाल, ब्रह्मदण्डी, खरैटी, कंघी और गंगेरन; इनके समान भाग चूर्णको पृथक् पृथक् १।–१। तोले की मात्रानुसार शहद में मिलाकर सेवन करनेसे १ मासमें वह वातरक्त भी नष्ट हो जाता है कि जिससे रक्त बहता हो, जिसका मांस सड़ गया हो और जिससे पीप निकलता हो तथा जिसमें कृमि पड़ गये हों।

(९२८९) कुसुम्भयोगः

(व. से. । विषा.)

कुसुम्भपुष्पगोदन्तस्वर्णक्षीरीकपोतविट् ।
दन्तीत्रिवृत्सैन्धवैलाकिणिहीफाणितं तथा ॥
क्षीरेणाखुविषं हन्ति पीता तिलकमञ्जरी ॥

कुसुम्भ (कुसुम्भा) के फूल, गोदन्ती हरताल, स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशी), कबूतरकी विष्ठा, दन्तीमूल, निसोत, सेंधानमक, इलायची और अपामार्ग (चिरचिटे की जड़); इनका चूर्ण समान भाग लेकर सबको फाणित (राब) में मिलाकर दूधके साथ पिलाने से चूहेका विष नष्ट होता है।

तिलकमंजरी (तिलके की मंजरी) पीनेसे भी चूहेका विष नष्ट होता है।

(९२९०) कृष्णमृदादिकल्कः

(भा. प्र. म. खं. २ । रक्तातिसारा.)

कृष्णमृन्मधुकं लोध्रं कौटजं तण्डुलाम्बुना ।
पीतमेकत्र सक्षौद्रं रक्तसङ्ग्राहणं परम् ॥

काली मिट्टी, मुलैठी, लोध और इन्द्रजौ; इन का चूर्ण समान भाग लेकर चावलोंके पानीके साथ पीस लें। इसे चावलोंके पानीमें मिलाकर उसमें शहद डालकर पीनेसे रक्तातिसार नष्ट होता है।

(मात्रा—६ माशा।)

(९२९१) कृष्णाजाजीयोगः

(व. से.; भा. प्र. । म. ख. २ विद्रध्य.)

कृष्णाजाजीविशाला च ह्यपामार्गफलं[1] तथा ।
पीतं शीतम्बिहन्त्याशु विद्रधिं कोष्ठसम्भवाम् ॥

काला जीरा, इन्द्रायण और अपामार्ग (चिरचिटे) के बीज समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

इसे सेवन करनेसे कोष्ठकी विद्रधि (अन्तर्विद्रधि) नष्ट हो जाती है।

(मात्रा—१ माशा।)

(९२९२) कृष्णादिचूर्णम् (१)

(व. से. । छर्दि.)

कृष्णोषणसिताचूर्णं लाजतुल्यं समाक्षिकम् ।
कपित्थबीजपूराम्लकल्कितं छर्दिनाशनम् ॥

पीपल, काली मिर्च और मिश्री १–१ भाग तथा धानकी खील ३ भाग लेकर चूर्ण बनावें।

१ "भामार्गवफलं तथा" (भा. प्र.)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसे कैथके रस या बिजौरे नीबूके रसमें पीस कर शहदमें मिलाकर पीनेसे छर्दिका नाश होता है।

(मात्रा—६ माशे ।)

(९२९३) **कृष्णादिचूर्णम्** (२)

(ग. नि. । अरोचका. १३ ; वृ. मा. । अरोचका.)

वाते बचाम्बुवमनं कृतवान् पिबेत्तु
स्नेहैः सुराभिरथवोष्णजलेन चूर्णम् ।
कृष्णाविडङ्गयवभस्महरेणुभार्गी-
रास्नैलहिङ्गुलवणोत्तमनागराणाम् ॥

पीपल, बायबिड़ंग, जौकी भस्म, रेणुका, भरंगी, रास्ना, इलायची, हींग, सेंधा नमक और सोंठ समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

वातज अरुचिमें बचके क्वाथसे वमन कराने के पश्चात् यह चूर्ण स्नेह (घृत या तैल), सुरा या उष्ण जलके साथ सेवन कराना चाहिये ।

(मात्रा—१॥-२ माशा ।)

(९२९४) **कृष्णादियोगः**

(ग. नि. । मूढगर्भा.)

कृष्णा तन्मूलशुण्ठ्येलाहिङ्गुभार्गीः सदीप्यकाः।
वचामतिविषां रास्नां चव्यं सञ्चूर्ण्य पाययेत् ॥
स्नेहेन दोषशान्त्यर्थं वेदनोपशमाय च ।
क्वाथं चैषां तथा कल्कं चूर्णं वा घृतभर्जितम् ॥

पीपल, पीपलामूल, सोंठ, इलायची, हींग, भरंगी, अजवायन, बच, अतीस, रास्ना और चव समान भाग लेकर चूर्ण बनावें तथा उसे घीमें सेक लें।

इसे घीके साथ खिलानेसे अथवा इन्हीं द्रव्यों का क्वाथ या कल्क देनेसे मूढ गर्भ जनित विकार और पीड़ाका नाश होता है ।

(९२९५) **कोलमज्जादिचूर्णम्**

(यो. र. । मूर्च्छा. ; ग. नि. । मूर्च्छा. १६)

कोलमज्जोषणोशीरकेसरं शीतवारिणा ।
पीतं मूर्च्छां जयेल्लीढा कृष्णा वा मधुसंयुता ॥

बेरकी गुठलीकी मींगी, काली मिर्च, खस और नागकेसर समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

इसे शीतल जलके साथ पीने से या पीपलका चूर्ण शहद के साथ चाटनेसे मूर्च्छा नष्ट होती है ।

(मात्रा—२-३ माशा ।)

(९२९६) **कोलास्थिचूर्णम्**

(सु. सं. । उ. त. अ. ५०)

कोलास्थिमज्जाञ्जनलाजचूर्णम् ।
हिक्कां निहन्यान्मधुना च लीढम् ॥

बेरकी गुठली की मींगी, सुरमा और धानकी खील समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

इसे शहद के साथ चाटने से हिचकी का नाश होता है ।

(मात्रा—२-३ माशे ।)

(९२९७) **क्रव्यादिकल्पः**

(वै. र. । अग्निमांद्य.)

एलालवङ्गमरिचकृष्णाशुक्तिसमन्वितम् ।
चुक्रनागरसिन्धूत्थमूषकपलपञ्चकम् ॥
एषां चूर्णं वस्त्रपूतं क्रव्यादान्नातिरिच्यते ॥

इलायची, लौंग, काली मिर्च और पीपल, २॥-२॥ तोले तथा अमलबेत, सोंठ, सेंधा नमक और ऊष (रेह मिट्टी) २५-२५ तोले लेकर वस्त्रपूत चूर्ण बनावें ।

इसे सेवन करनेसे क्षुधा अत्यन्त बढ़ जाती है।

(मात्रा—१ माशा ।)

इति ककारादिचूर्णप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ ककारादिगुटिकाप्रकरणम्

कनकप्रभावटी

(कनकसुन्दरी गुटिका)

रस प्रकरणमें देखिये

(९२९८) कम्पिल्लकाद्यो मोदकः

(ग. नि. । गुटिका. ४)

कम्पिल्लकत्रिवृत्कृष्णापथ्यानागरकैरपि ।
सितागुडयुतो ह्येष मोदको ज्वरिणां हितः ॥
शीतानुपानस्तृट्छर्दिनाशनः पित्तरोगजित् ॥

कमीला, निसोत, पीपल, हर्र, और सोंठ; इनका चूर्ण १-१ भाग तथा गुड़ और खांड ५-५ भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर (३-३ माशे के) मोदक बना लें।

इनके सेवनसे ज्वर, तृषा, छर्दि और पित्तज रोगोंका नाश होता है।

अनुपान—शीतल जल ।

(**मात्रा**—१ से २ मोदक तक ।)

कर्पूरादिगुटिका

(ग. नि. । परिशि. गुटिका)

रस प्रकरणमें देखिये

(९२९९) कलिङ्गाद्या गुटिका

(ग. नि. । गुटिका. ४; वा. भ. । चि. अ. ८)

कलिङ्गलाङ्गलीकृष्णायष्ट्यपामार्गपिप्पली-
भूनिम्बसैन्धवगुडैर्गुडा गुदजनाशनाः ॥

इन्द्रजौ कलियारी की जड़, पीपल, मुलैठी, अपामार्ग (चिरचिटे के बीज), पीपल, चिरायता और सेंधा नमक; इनका चूर्ण १-१ भाग तथा गुड़ सबके बराबर लेकर (२-२ माशे के) मोदक बना लें।

इनके सेवन से अर्शका नाश होता है।

(९३००) कल्याणका गुटिका

(ग. नि. । गुटिका. ४)

द्राक्षां नियोज्य विधिना द्विगुणां शिवायाः
सञ्चूर्ण्य चाक्षफलमात्रमितां प्रभाते ।
कल्याणकारककृतां गुटिकामिमां यः
संसेवते भवति तस्य हि पित्तनाशः ॥
हृद्रोगरक्तविषमज्वरपाण्डुवान्ति-
कुष्ठानि कासकमलारुचिमेहमुख्याः ।
आनाहगुल्मपिटकप्रभवा विकाराः
सर्वेपि ते विलयमाशु सुखेन यान्ति ॥

हर्र का चूर्ण १ भाग और बीजरहित मुनक्का (द्राक्षा) २ भाग लेकर दोनोंको एकत्र कूट कर बहेड़े के फलके समान गोलियां बना लें।

इन्हें प्रातःकाल सेवन करने से पित्तवृद्धि, हृद्रोग, रक्तविकार, विषमज्वर, पाण्डु, वमन, कुष्ठ, कास, कामला, अरुचि, प्रमेह, आनाह, गुल्म और पिटिका आदि रोगोंका शीघ्र ही सुख पूर्वक नाश होता है।

(९३०१) कस्तूरीमोदकः

(रसे. सा. सं.; र. रा. सु. । प्रमेहा.; रसे. चि. म. । अ. ९)

कस्तूरी वनिता क्षुद्रा त्रिफला जीरकद्वयम् ।
कदलीनां फलं पक्वं खर्जूरं कृष्णतिलकम् ॥
कोकिलाख्यस्य बीजञ्च माषमात्रं समं समम् ।
यावन्त्येतानि चूर्णानि द्विगुणा सितशर्करा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धात्रीरसेन पयसा कूष्माण्डस्वरसेन च ।
विपचेत्पाकविद्वैद्यो मन्दमन्देन वह्निना ॥
अवतार्य सुशीते च यथालाभं विनिःक्षिपेत् ।
अक्षमात्रं युञ्जीत सर्वमेहप्रशान्तये ॥
वातिकं पैत्तिकश्चैव श्लैष्मिकं सान्निपातिकम् ।
सोमरोगं बहुविधं मूत्रातीसारमुल्बणम् ॥
केशराजरसैर्भाव्यं द्विगुञ्जाफलमानतः ।
प्रमेहान्विंशतिश्चैव साध्यासाध्यमथापि वा ॥
मूत्रकृच्छ्रं तथा पाण्डुं धातुस्थञ्च ज्वरं जयेत् ।
हलीमकं रक्तपित्तं वातपित्तकफोद्भवम् ॥
ग्रहणीमामदोषञ्च मन्दाग्नित्वमरोचकम् ।
एतान्सर्वान्निहन्त्याशु वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥
बृहद्वङ्गेश्वरोनाम सोमरोगं निहन्त्यलम् ।
बहुमूत्रं बहुविधं मूत्रमेहं सुदारुणम् ॥
मूत्रातिसारं कृच्छ्रञ्च क्षीणानां पुष्टिवर्द्धनः ।
ओजस्तेजस्करो नित्यं स्त्रीषु सम्यग्वृषायते ॥
बलवर्णकरो रुच्यः शुक्रसञ्जननः परः ।
छागं वा यदि गव्यं पयो वा दधि निर्म्मलम् ॥
अनुपानं प्रयोक्तव्यं बुद्ध्वा दोषगतिं भिषक् ।
दद्याच्च बाले प्रौढे च सेवनार्थं रसायनम् ॥
मूत्रकृच्छ्रं निहन्त्याशु मूत्राघातं तथाऽश्मरीम् ।
ग्रहणीं पाण्डुरोगञ्च कामलां कुम्भकामलाम् ॥
वृष्यो बलकरो हृद्यः शुक्रवृद्धिकरः परः ।
कस्तूरीमोदकाश्चायं चरकेण च भाषितः ॥
एलाबीजं त्वचं यष्टिमधुकं मिषिचालकम् ।
शतपुष्पोत्पलं धात्री मुस्तकं भद्रसञ्ज्ञकम् ॥

कस्तूरी, फूलप्रियङ्गु, कटेली, त्रिफला, काला और सफेद जीरा, केलेकी पकी फली, खजूर, काले तिल और तालमखाना १।-१। माशा (रसे. चि. म. के पाठके अनुसार इलायचीके बीज, दालचीनी, मुलैठी, सौंफ, सुगन्धवाला, सोया, नीलोत्पल, आमला, नागरमोथा; ये ओषधियां भी १।-१। माशा) लें और सबसे २ गुनी खांड लेकर उसमें आमलेका रस, दूध और पेठेका रस (प्रत्येक खांडके बराबर) मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब चाशनी हो जाय तो ठंडा करके उसमें उपरोक्त समस्त ओषधियोंका चूर्ण मिलाकर १।-१। तोलेके मोदक बना लें।

इनके सेवनसे वातज, पित्तज, कफज और सान्निपातिक प्रमेह, सोमरोग, मूत्रातिसार, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, अश्मरी, ग्रहणी, पाण्डु, कामला और कुम्भ कामला का नाश होता है।

यह मोदक वृष्य, बलकारक, हृद्य और शुक्र वर्द्धक है।

(व्यवहारिक मात्रा—३ माशा।)

(९३०२) काङ्कायनगुटिका:

(हा. सं.। स्था. ३ अ. ११

जाजीपिप्पलिमूलकोलमगधापथ्याग्निकं नागरा:
सूक्ष्मैला च पलद्वयेऽपि क्रमशः कृत्वा पलैः सैन्धवम् ।
भल्लातकस्य फलानि पञ्चशतकं तेन समस्तेन तु
द्विगुणोऽपि पुराणसूरणस्ततः सर्वस्य तुल्यो गुडः॥
क्षोदित्वा वटकाक्षमात्रमुपयुञ्जानं विशेषं गुणम्
कुर्वत्यर्शनिवारणं क्षयहरं पुष्टिं नयेत् सुप्रभाम् ।
मन्दाग्नौ वडवासमो भ्रमहरी हृद्रोग पाण्ड्वामय-
शूलानाहभगन्दरामयहरोदावर्त्तनिर्नाशनः ॥
कृतोऽप्यर्शोविकारेऽपि ऋषिणा योगयुक्तिना ।
काङ्कायनेन मतिमन्तेन सौख्यमभीप्सति ॥

---

१ रसे. चि. म. में इसके आगे निम्नलिखित पाठ अधिक है—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीरा, पीपलामूल, बेर, पीपल, हर्र, चीता, सोंठ और छोटी इलायची का चूर्ण १०-१० तोले; सेंधा नमक का चूर्ण ५ तोले और शुद्ध भिलावे १०० नग एवं सबसे दो गुना पुराना सूरण (जिमिकन्द) लेकर सबको एकत्र कूट लें और फिर उसमें सब के बराबर गुड़ मिलाकर १।-१। तोलेके मोदक बना लें।

इनके सेवनसे अर्श, क्षय, अग्निमांद्य, भ्रम, हृद्रोग, पाण्डु, शूल, आनाह, भगन्दर और उदावर्त का नाश होता है। यह पौष्टिक और कान्तिवर्द्धक है।

इसका आविष्कार कांकायन मुनिने किया था।

कामकलादिवटी

(र. र. । वातरक्ता.)

रस प्रकरण में देखिये।

कामेश्वरमोदकः (महाकामेश्वरपाकः)

(यो. र. । वाजी. ; नपु. मृ. । त. ४)

प्र. सं. ५५३३ "महाकामेश्वरः" देखिये।

कामेश्वरीवटिका

(ग. का. धे. । पाण्डु.)

रस प्रकरणमें देखिये।

(९३०३) कितववटिका

(र. सं. क. । उ.)

मूलेन पत्रेण फलेन वाऽपि
व्योषान्विता या कितवोद्भवेन।
बद्धा गुटी सा सहसैव हन्ति
उन्मादरोगं त्रयदुःखजातान् ॥

धतूरे की जड़, या पत्ते अथवा फल और सोंठ, मिर्च, पीपल समान भाग लेकर सबको (पानीके साथ) खरल करके गोलियां बनावें।

इनके सेवनसे उन्माद रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

(मात्रा—४ रत्ती।)

(९३०४) कुष्ठाद्या वटिका

(रा. मा. । मुख. ५)

गदकुवलयजातीकोशजातीफलत्व-
ग्विरचितगुलिकाभिर्वक्त्रमध्ये धृताभिः।
व्रजति झटिति नाशं पूतिरास्यस्य गन्धः
सविभ्रगतनितान्तोद्वेजिताशेषलोकः ॥

कूठ, सफेद कमल, जावित्री, जायफल और दालचीनी समान भाग लेकर पानीमें (या गोंद के पानी में) घोट कर गोलियां बना लें।

इनमें से १-१ गोली मुंहमें रखने से मुखकी दुर्गंध नष्ट होती है।

(९३०५) कृष्णाद्या गुटिका

(ग. नि. । गुटिका. ४ ; मूर्च्छा. १६)

कृष्णाशताह्वाशुण्ठीनामभयानां पलं पलम्।
गुडस्य षट्पलान्येषां गुटिका भ्रमनाशिनी ॥

पीपल, सोया, सोंठ और हर्रका चूर्ण ५-५ तोले तथा गुड़ ३० तोले लेकर (९-९ माशे की) गोलियां बना लें।

इन्हें सेवन करने से भ्रम का नाश होता है।

(९३०६) केशराजादिवटी

(व. से. । अतिसारा.)

केशराजसमुद्भूता जलेन गुटिका कृता।
जयेत्साममतीसारं सशूलं सास्रमाशु च ॥

भंगरे के स्वरस को पकाकर गाढ़ा करें और (१-१ माशे की) गोलियां बना लें।

इनके सेवनसे शूल और रक्तयुक्त आमातिसार शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

इति ककारादिगुटिकाप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ ककारादिगुग्गुलुप्रकरणम्

(९३०७) कंसाख्यो गुग्गुलुः

(ग. नि. । गुटिका. ४)

प्र. सं. ४०११ पथ्यादि गुग्गुलुः देखिये।

उसमें " कृष्णात्रिवृन्नागरसोषणानि " पाठ है उसकीजगह इसमें " कृष्णात्रिवृत्त्र्यूषण चित्रकाणि " पाठ है।

इति ककारादिगुग्गुलुप्रकरणम्

अथ ककाराद्यवलेहप्रकरणम्

(९३०८) कटुकतैलयोगः

(यो. र. । हिक्कास्वासा. ; वै. जी. । वि. ३)

गुडं कटुकतैलेन मिश्रयित्वा समं लिहेत्।
त्रिसप्ताहप्रयोगेण श्वासो निःशेषतां व्रजेत् ॥

सरसों के तेलमें गुड़ मिला कर ३ सप्ताह तक सेवन करनेसे हर प्रकारका श्वास नष्ट हो जाता है।

(मात्रा—हरेक वस्तु ६-६ माशे से १-१ तोले तक।)

(९३०९) कणादिलेहः

(ग. नि. । बालरोगा. ११ ; व. सं. । बालरोगा.)

कणोषणसिताक्षौद्रसूक्ष्मैलासैन्धवैः कृतः।
मूत्रग्रहे प्रयोक्तव्यः शिशूनां लेह उत्तमः ॥

पीपल, काली मिर्च, मिश्री, छोटी इलायची और सेंधा नमक; इनके समान भाग मिलित चूर्णको शहदमें मिलाकर अवलेह बनावें।

इसे चटानेसे बालकका मूत्रावरोध नष्ट होता है।

(९३१०) कपिकच्छुपाकः (१)

(वृ. यो. त. । तः १४७)

प्रस्थं स्वगुप्ताबीजानां सूक्ष्मं चूर्णीकृतं भिषक्।
पचेत्प्रस्थाढके दुग्धे मृत्पात्रे मृदुवह्निना ॥
प्रस्थार्धं गोघृतं दत्वा द्विप्रस्थां शर्करामपि।
जातीफलं जातिपत्रं कङ्कोलं नागकेशरम् ॥
लवङ्गं दीप्यमाकल्लमब्धिशोषं त्रिकट्वयः।
त्रिजातं हेमजीरं च प्रियङ्गुं गजपिप्पलीम् ॥
प्रत्येकं कर्षमादाय भक्षयेत्पलमात्रया।
प्रमेहक्लैब्यकृच्छ्राश्मगुल्मशूलानिलामये ॥
शस्तोऽयं स्त्रीषु गर्भार्थे षण्ढानां शुक्रवृद्धये।
प्रसूतानां हितो रक्तविकारविनिवारकः ॥
पुंसां वाजीकरो बल्यश्चक्षुष्यः कामवर्धनः।
कामिनीदर्पविध्वंसकर्ता निधुवने नृणाम् ॥
नास्त्यनेन समो योगो दस्राभ्यां निर्मितः शुभः।
कपिकच्छुबीजपाको दीपनः पाचनः परः ॥

१ सेर छिलके रहित कौंचके बीजोंके बारीक चूर्णको १ सेर गोघृतमें मिट्टीके पात्रमें मन्दाग्नि पर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूनें और फिर उसमें ४० सेर गोदुग्ध तथा २ सेर खांड मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें । जब गाढ़ा हो जाय तो अग्निसे नीचे उतार कर उसमें १।-१। तोला जायफल, जावत्री, कंकोल, नागकेसर, लौंग, अजवायन, अकरकरा, समन्दरशोषके बीज, सोंठ, मिर्च, पीपल, हर्र, बहेडा, आमला, दालचीनी, इलायची, तेजपात, धतूरेके शुद्ध बीज, जीरा, फूलप्रियंगु और गजपीपल; इनका चूर्ण मिला दें।

मात्रा—५ तोले ।

इसके सेवनसे प्रमेह, क्षीणता, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, गुल्म, शूल, वातरोग और रक्त विकारोंका नाश होता है । इससे स्त्रियों में गर्भधारणकी शक्ति आती और नपुंसक पुरुषों में शुक्रवृद्धि होती है । यह पाक प्रसूताके लिये हितकारी, वाजीकरण, बलकारक, नेत्रोंके लिये हितकारी, कामिनी मदभंजक तथा दीपन पाचन अद्वितीय योग है ।

कपिकच्छुपाकः (२)

(यो. त.)

रस प्रकरणमें देखिये

(९३११) कल्याणावलेहः

(व. से. । अतिसारा.)

शर्कराधातकिलोध्रैः पाठारलुकपिप्पली- ।
समङ्गाभिर्मोचरसपद्मकेसरसंयुतैः ॥
अर्शःप्रभवं कृमिजं विरुद्धपानान्नदोषसम्भूतम् ।
अतिसारामयं शमयति लेहः कल्याणको नाम्ना ॥

खांड, धायके फूल, लोध, पाठा, अरलु (सोना पाठा) की छाल, पीपल, मजीठ, मोचरस और कमलकेसर; इनके समान भाग मिलित चूर्णको (शहदमें मिलाकर) अवलेह बनावें ।

इसके सेवनसे अर्श जनित, कृमिरोग जनित. और विरुद्ध अन्नपान जनित अतिसारका नाश होता है

(**मात्रा**—६ माशे ।)

(९३१२) कसेर्वाद्योऽवलेहः

(ग. नि. । लेहा. ४)

कसेरोस्तु तुलार्धं हि द्विद्रोणेऽपां विपाचयेत् ॥
द्रोणार्धशेषे पूते च दद्याद्गुडतुलां तथा ।
सर्पिषः कुडवं दद्याल्लेहवत्साधु साधयेत् ॥
चतुष्पलं तु व्योषस्य त्रिजातं त्रिपलं तथा ।
पलद्वयं केसरस्य चूर्णं कृत्वा विनिःक्षिपेत् ॥
तद्यथाग्निबलं खादेत्कासकृमिज्वरापहः ।
हृत्पाण्डुरोगवैवर्ण्यं दौर्बल्यनाहनाशनः ॥
कसेरुकावलेहोऽयं स्वरपुष्टिविवर्धनः ।

३ सेर १० तोले कसेरुको कूटकर ६४ सेर पानीमें पकावें और १६ सेर रहने पर छान लें । तदनन्तर उसमें ६। सेर गुड़ और आधासेर घी मिलाकर पुनः पकावें और गाढ़ा हो जानेपर अग्निसे नीचे उतार कर उसमें २० तोले त्रिकुटा (समान भाग मिलित सोंठ, मिर्च पीपल का चूर्ण), १५ तोले त्रिजात (दालचीनी, इलायची, तेजपात का समान भाग मिलित चूर्ण) तथा १० तोले केसरका चूर्ण मिला दें ।

इसके सेवनसे कास, कृमि, ज्वर, हृद्रोग, पाण्डु रोग, विवर्णता, दुर्बलता और आनाह (अफारे)का नाश होता तथा स्वर और पुष्टिकी वृद्धि होती है ।

(**मात्रा**—३-४ तोले ।)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९३१३) कामसुन्दरपाकः

(न. मृ. । त. ४ ; वै. र. । वाजी.)

शतावरी च मुसली गोक्षुरस्त्वग्लवङ्गकम् ।
खर्जूरमेला कृष्णा च शिवा कमलचन्दनम् ॥
कपिकच्छुभवं बीजं पत्रं मुस्ता च नागरम् ।
कोकिलाक्षश्च धनिका शुक्ति पूगं पलद्वयम् ॥
विंशत्पला सिता दर्पकर्पूरश्चार्द्धकार्षिकः ।
विजया सार्धपलिका प्रमेहघ्नो रसायनः ॥
ज्वरघ्नः पुष्टिजननः पाकोयं कामसुन्दरः ॥

सतावर, मूसली, गोखरु, दालचीनी, लौंग, खजूर, इलायची, पीपल, आमला, कमल, सफेद चन्दन, कौंचके बीज (छिलके रहित), तेजपात, नागरमोथा, सोंठ, तालमखाना और धनिया; इनका चूर्ण २॥-२॥ तोले, चिकनी सुपारीका चूर्ण १० तोले एवं कस्तूरी और कपूर ७॥-७॥ माशे और भुनी हुई भांग ७॥ तोले लेकर सबको १। सेर खांडकी चाशनी में मिला दें ।

यह पाक प्रमेह और ज्वर को नष्ट करता है तथा रसायन और पौष्टिक है ।

(मात्रा—१। तोला ।)

(९३१४) कुटजावलेहः

(यो. र. ; वृ. मा. । अतिसारा.)

कुटजस्य पलं ग्राह्यमष्टभागजले शृतम् ।
तथैव विपचेद्भूयो दाडिमोदकसंयुतम् ॥
कुटजक्वाथतुल्योऽत्र दाडिमस्य रसो मतः ।
यावद् दर्विकामासं शृतं तमुपकल्पयेत् ॥
तस्यार्धकर्षं तक्रेण पिबेद्रक्तातिसारवान् ।
अवश्यं मरणीयोऽपि न मृत्योर्याति गोचरम् ॥

५ तोले कुड़ेकी छालको १ सेर पानीमें पकावें और १० तोले रहने पर छान लें । तदनन्तर उसमें १० तोले अनारका रस मिला कर पुनः पकावें । जब अवलेह तैयार हो जाय तो उतार लें ।

मात्रा—७॥ माशे ।

इसे तक्रके साथ सेवन करनेसे रक्तातिसारका मरणासन्न रोगी भी अवश्य स्वस्थ हो जाता है ।

(९३१५) कुलिञ्जनाद्योऽवलेहः

(ग. नि. । परि. अव. ५)

कुलिञ्जनं समानीय नवीनं पलविंशतिम् ।
तुलाद्वये जले क्वाथ्यं तुलार्धमवशेषयेत् ॥
वस्त्रपूते जले तस्मिन् चूर्णान्येतानि दापयेत् ।
कट्फलं पौष्करं भार्गी पञ्चकोलं कटुत्रिकम् ॥
त्रिफला च विडङ्गं च धान्यकं जीरकद्वयम् ।
वासा करञ्जः शिखरी प्रत्येकं च पलद्वयम् ॥
सर्वार्धां प्रक्षिपेच्छुद्धां शर्करां गुडमेव च ।
हन्त्ययं पञ्चकासांश्च हिक्का अपि सवेदनाः ॥
स्वरभङ्गं महाघोरं कण्ठरोगं मुखामयम् ।
मन्दाग्निं च प्रतिश्यायं स्वरभङ्गं विशेषतः ॥

१०० तोले नवीन कुलिंजनको कूटकर २५ सेर पानीमें पकावें और ६। सेर पानी रहने पर छान लें । तदनन्तर उसमें कायफल, पोखरमूल, भरंगी, पीपल, पीपलामूल, चव, चीता, सोंठ, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल), हर्र, बहेड़ा, आमला, बायबिड़ंग, धनिया, सफेद जीरा, काला जीरा, बासा, करञ्ज (की गिरी) और चिरचिटा (अपामार्ग); इनका चूर्ण १०-१० तोले तथा सबसे आधी खांड और उतनाही गुड़ मिला कर पुनः पकावें एवं अवलेह तैयार हो जाने पर उतार लें ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसके सेवन से पांच प्रकारकी खांसी, वेदना करनेवाली हिचकी, घोर स्वरभंग, कण्ठ रोग, मुख-रोग, अग्निमांद्य और प्रतिश्याय का नाश होता है। यह अवलेह स्वरभंगमें विशेष उपयोगी है।

(मात्रा—६ माशे ।)

कुलित्थगुडः (बृहत्)

(व. से. । कासा.)

प्र. सं. ६७१८ "बृहत्कुलत्थगुडः" देखिये।

(९३१६) **कृष्णादियोगः**

(यो. र. । यक्ष्मा. ; वृ. मा. । राजयक्ष्मा.)

कृष्णाद्राक्षासितालेहः क्षये वा क्षौद्रतैलवान् ।
मधुसर्पिर्युतो वाऽश्वगन्धाकृष्णासितोद्भवः ॥

पीपल, मुनक्का और मिसरीको पीसकर शहद और तेलमें मिलाकर सेवन करानेसे या असगन्ध, पीपल और मिसरी को पीसकर शहद और घी में मिलाकर सेवन करानेसे क्षय रोग का नाश होता है।

(९३१७) **कोलमज्जादिलेहः**

(वृ. मा. । छर्दि.)

कोलमज्जाकणाधात्री, लाजाविश्वफलत्रिकम् ।
श्यामाञ्जनाब्दकोलास्थि
माक्षिकाविट्सितायुतम् ॥
कणोषणकपित्थाम्बु, त्वगेलापत्रकं समम् ।
सक्षौद्राः पादिका लेहाः षडेते छर्दिनाशनाः ॥

(१) बेरकी गुठलीकी गिरी, पीपल और आमला; (२) धानकी खील, सोंठ, हर्र, बहेड़ा और आमला; (३) फूल प्रियंगु, सुरमा, नागरमोथा, बेरकी गुठली की गिरी (मींगी); (४) मक्खीकी विष्ठा और मिसरी; (५) पीपल, काली मिर्च, कैथ और सुगन्धबाला तथा (६) दालचीनी, इलायची और तेजपात; ये छः प्रयोग छर्दिको नष्ट करते हैं।

हर एक प्रयोग की ओषधियोंका समान भाग मिलित चूर्ण शहदमें मिलाकर चाटना चाहिये।

इति ककाराद्यवलेहप्रकरणम्

अथ ककारादिघृतप्रकरणम्

(९३१८) **कण्टकारीघृतम्**

(ग. नि. । घृता. १)

पाठाविडव्योषविडङ्गसैन्धव-
त्रिकण्टरास्नाहुतभुग्बलाभिः ।
भृङ्गी वचाम्भोधर देवदारु
दुरालभा भार्ग्यभया शठीभिः ॥
सम्यग्विपक्वं द्विगुणेन सर्पि-
र्निदग्धिकायाः स्वरसेन चैतत् ।
श्वासाग्निसादस्वरभेदभिन्ना-
न्निहन्त्युदीर्णानपि पञ्चकासान् ॥

कल्क—पाठा, बिड लवण, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, वायबिडंग, सेंधा नमक, गोखरु, रास्ना, चीतामूल, खरैटी, काकड़ा सिंगी, बच, नागरमोथा, देवदारु, धमासा, भरंगी, हर्र और कचूर समान भाग मिलित १० तोले लेकर पानीके साथ बारीक पीस लें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्रव पदार्थ—कटेली का स्वरस २ सेर (तथा पानी २ सेर)

१ सेर घीमें यह कल्क और द्रव पदार्थ मिला कर मन्दाग्नि पर पकावें। जब जलांश शुष्क हो जाय तो घी को छान लें।

इसके सेवनसे श्वास, अग्निमांद्य, स्वरभेद और पांच प्रकारकी प्रबल कासका नाश होता है।

(**मात्रा**—१ से २ तोले तक।)

(९३१९) कण्टकार्यादिघृतम्

(यो. र. । कासा.)

कण्टकार्याःसमूलायाः क्षुण्णां कृत्वा द्रोणेऽम्भसः पचेत्
तेनाऽऽढकेन क्वाथस्य घृतप्रस्थं पिचून्मितैः ॥
रास्नादुःस्पर्शषड्ग्रन्थिपिप्पलीद्वयचित्रकैः।
सौवर्चलयवक्षारकृष्णामूलैश्च तज्जयेत् ॥
कासश्वासकफष्ठीवहिक्कारोचकपीनसान् ॥

६। सेर कटेलीको कूट कर ३२ सेर पानी में पकावें और ८ सेर रहने पर छान लें। तत्पश्चात् उसमें २ सेर घी तथा निम्न लिखित कल्क मिला कर पकावें और पानी जलने पर घी को छान लें।

कल्क—रास्ना, धमासा, पीपलामूल, पीपल, गजपीपल, चीतामूल, संचल (काला नमक), जवाखार और पीपलामूल १।-१। तोला लेकर पानीके साथ बारीक पीस लें।

इसके सेवनसे कास, श्वास, रक्त थूकना, हिक्का, अरुचि और पीनसका नाश होता है।

(**मात्रा**—१-२ तोला।)

(९३२०) कपित्थाद्यघृतम्

(व. से. । अर्शो.)

स्वरसे तु कपित्थाम्लदाडिमामलकोद्भवे।
द्विप्रस्थे सर्पिषोः प्रस्थं पचेत्क्षारार्तिदाहनुत् ॥

कैथका रस ४ सेर, खट्टे अनारका रस ४ सेर, आमलेका रस ४ सेर और घी २ सेर लेकर सबको एकत्र मिलाकर पकावें और घृत मात्र शेष रहने पर छान लें।

इसे (लगाने और पीनेसे) क्षार प्रयोगसे उत्पन्न बेचैनी और दाहका नाश होता है।

(९३२१) करञ्जाद्यं घृतम्

(च. द. । व्रणशोथा. ४३ ; वृ. मा. । व्रणा. ; व. से. । विद्रध्य. ; ग. नि. । व्रणा. ४ ; र. र. । व्रणा. ; सु. सं × । चि. अ. १६ विद्रध्य.)

नक्तमालस्य पत्राणि वरुणानि[1] फलानि च।
सुमनायाश्च पत्राणि पटोलारिष्टयोस्तथा ॥
द्वे हरिद्रे मधूच्छिष्टं मधुकं तिक्तरोहिणी।
मञ्जिष्ठा चन्दनोशीरमुत्पलं शारिवे त्रिवृत्।[2]
एतेषां कार्षिकैर्भागैर्घृतप्रस्थं[3] विपाचयेत् ॥

पाठ भेद

× सु. सं. में " प्रियंगुः कुशमूलं च निचुलस्य त्वगेव च " यह पाठ अधिक है।

१ तरुणानि फलानि च।

२ व. से. में " मंजिष्ठा....त्रिवृत् " के स्थान पर प्रियङ्गु कुशमूलञ्च निचुलस्य त्वगेव च " यह पाठ है

३ स्नेहप्रस्थं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुष्टव्रणप्रशमनं तथा नाडीविशोधनम् ।
सद्यश्छिन्नव्रणानां च करञ्जाद्यमिहेष्यते ॥

कल्क—करञ्जके पत्ते, बरने के फल, (पाठान्तरके अनुसार करञ्जके कोमल फल), चमेलीके पत्ते, पटोलपत्र, नीमके पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी, मोम, मुलैठी, कुटकी, मजीठ, सफेद चन्दन, खस, नीलोत्पल, दो प्रकारकी सारिवा और निसोत (पाठान्तरके अनुसार मजीठसे निसोत तक की सात चीजों के स्थानमें फूल प्रियंगु, कुशकी जड़ और हिज्जल वृक्षकी छाल; सुश्रुतके मतानुसार मजीठ आदि सातों द्रव्य भी तथा ये तीनों चीजें भी) १।-१। तोला लेकर पानीके साथ बारीक पीस लें।

२ सेर घीमें यह कल्क (और ८ सेर पानी) मिलाकर पानी जलने तक पकावें और फिर छान लें।

यह घृत दुष्ट व्रणोंको नष्ट करता और नाड़ी (नासूर)को शुद्ध कर देता है तथा तुरन्तके छिन्न व्रणों में भी उपयोगी है।

(व्रणमें लगाना चाहिये ।)

(९३२२) कर्पूरसर्पिः

(रा. मा. । व्रणा. २५)

सद्यः कर्पूरसर्पिर्भ्यां पूरितो वस्त्रयन्त्रितः ॥
शस्त्रप्रहारः संरोहत्यपूयः पाकवर्जितः ॥

शस्त्राघात (चाकू, छुरी आदिके घाव) में कपूर मिला हुवा घी भर कर वस्त्र बांध देनेसे घाव बिना पके और बिना पीप पड़े पक जाता है।

(घी ५ तोले कपूर १। तोला ।)

कल्याणघृतम्

(सु. सं.)

प्र. सं. ५२२१ "महाकल्याणघृत" देखिये।

कल्याणघृतम् (महा)

महा कल्याण घृतम् देखिये।

(९३२३) कह्लाराद्यं घृतम्

(वृ. यो. त. । त. ९८; व. से.; र. र. । गुल्मा.)

कह्लारमुत्पलं पद्मं कुमुदं मधुयष्टिका ।
पक्त्वाम्बुनाथ तत्क्वाथं जीवनीयोपकल्कितम् ॥
घृतं पक्त्वा नवं पीतं रक्तपित्तास्रगुल्मनुत् ।
दाहतृष्णाज्वरच्छर्दियोनिदोषहरं परम् ॥

लाल और सफेद रंग मिश्रित कमल, नीलोत्पल, सफेद कमल, कुमुद और मुलैठी समान भाग मिलित २ सेर लेकर सबको कूट कर १६ सेर पानीमें पकावें और ४ सेर रहने पर छान लें।

इस क्वाथमें १ सेर नवीन घी और "जीवनीय गण"[1] का १० तोले कल्क मिलाकर पकावें और पानी जल जाने पर घीको छान लें।

यह घृत रक्तपित्त, रक्तगुल्म, दाह, तृष्णा, ज्वर, छर्दि और योनिदोषको नष्ट करता है।

(मात्रा—२ तोले ।)

(९३२४) काकोल्यादिघृतम्

(व. से. । बालरोगा.)

क्षीरवृक्षकषाये तु काकोल्यादौ गणे तथा ।
विपक्तव्यं घृतञ्चापि पानीयं पयसा सह ॥

क्षीरवृक्ष (अश्वत्थ-पीपल) की २ सेर छालको कूट कर १६ सेर जलमें पकावें और ४ सेर रहने पर छान लें। एवं इसमें १ सेर घी तथा

१ जकारादि कषाय प्रकरणमें देखिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१० तोले "काकोल्यादि गण[1]" का क्वाथ मिला कर पानी जलने तक पकावें और फिर छान लें।

इसे दूधमें मिलाकर बालकको पिलाना चाहिये।

(यह घृत स्कन्दापस्मार में उपयोगी है। मात्रा १ से ३ माशे तक।)

(९३२५) काञ्जीषट्पलघृतम्

(भा. प्र. म. खं. २ ; व. से. । आमवाता. ; वृ. यो. त. । त. ९३ ; वृ. मा. ; धन्व. ; च. द. । आमवाता.)

हिङ्गु त्रिकटुकं चव्यं माणिमन्थं तथैव च ।
कल्कान्कृत्वा तु पलिकान्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥
आरनालाढकं दत्त्वा तत्सर्पिर्जठरापहम् ।
शूलं विबन्धमानाहमामवातकटिग्रहम् ॥
नाशयेद् ग्रहणीदोषं मन्दाग्नेर्दीपनं परम् ॥

हींग, सोंठ, मिर्च, पीपल, चव्य और सेंधा नमक; इनका चूर्ण ५-५ तोले लेकर पानीके साथ पीसकर कल्क बनावें।

२ सेर घी में यह कल्क और ८ सेर आरनाल (काञ्जी) मिला कर काञ्जी जलने तक पकावें और फिर छान लें।

यह घृत उदररोग, शूल, विबन्ध, अफारा, आमवात, कटिग्रह और ग्रहणीदोषको नष्ट तथा अग्निको दीप्त करता है।

(मात्रा—१ से २ तोले तक।)

(९३२६) कारस्करघृतम्

(वै. म. र. । पट. ११)

कारस्करास्थिनिर्यूहे तत्कल्केन हविः शृतम् ।
गव्यं वा माहिषं प्रात्नं लिप्तं हन्ति विपादिकाम् ॥

कुचलेके क्वाथ और कल्कसे सिद्ध गाय या भैंसका पुराना घी लगाने से विपादिका (बिवाई) का नाश होता है।

(कुचला २ सेर, पानी १६ सेर, पकाकर ४ सेर शेष रक्खें। घी १ सेर, कुचलेका कल्क १० तोले।)

(९३२७) काश्मर्यादिघृतम्

(व. से. । स्त्रीरोगा.)

काश्मरीकुटजक्वाथे सिद्धमुत्तरबस्तिना ।
रक्तयोन्यरजस्का याऽपुत्रा तासां हितं घृतम् ॥

खम्भारीकी छाल और कुड़ेकी छाल १-१ सेर लेकर दोनोंको एकत्र कूटकर १६ सेर पानीमें पकावें और ४ सेर रहने पर छान लें। इस क्वाथ में १ सेर घी मिलाकर पकावें।

इसकी उत्तर वस्ति रक्तयोनि, अरजस्का योनि और अपुत्रा योनि में उपयोगी है।

(९३२८) काश्मर्यादिघृतम् (२)

(व. से. । स्त्रीरोगा.)

काश्मर्य्य वटशुङ्गानि पृथग्दन्त्यास्तथैव च ।
घृतं सिद्धं भवेच्छ्रेष्ठं शोणितप्रदरे पिबेत् ॥

खम्भारी की कोंपल, बड़के अंकुर और दन्तीमूल; पृथक् पृथक् (या सम्मिलित) इन ओषधियों के कल्क और क्वाथ से सिद्ध घृत पीनेसे रक्तप्रदर नष्ट होता है।

(मात्रा—१ से २ तोले तक।)

---

१ **काकोल्यादिगण**—काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, मेदा, महामेदा, गिलोय, काकड़ासिंगी, बंसलोचन, पद्माख, पुण्डरिया, ऋद्धि, वृद्धि, मुनक्का, जीवन्ती, मुलैठी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९३२९) काश्मर्यादिघृतम् (३)

(व. से. । स्त्रीरोगा.)

काश्मरी बदरानन्ता गुडूची मधुकैः शृतम् ।
आजेन पयसा सिद्धमेतद् घृतमसृग्दरे ॥

कल्क—खम्भारी की छाल, बेर, अनन्तमूल, गिलोय और मुलैठी; इनके ४-४ तोले चूर्णको पानीसे पीस लें।

२ सेर घीमें यह कल्क और ८ सेर बकरीका दूध मिलाकर पकावें। जब दूध जल जाए तो घी को छान लें।

यह घृत पीनेसे रक्त प्रदर नष्ट होता है।

(मात्रा—२ तोले ।)

(९३३०) कासमर्दादिघृतम् (१)

(वृ. यो. त. । त. ८१)

स्वरोपघातेऽनिलजे भुक्तोपरि घृतं पिबेत् ।
मरीचचूर्णसहितं मरुत्स्वरहतिप्रणुत ॥
कासमर्दरसं दत्त्वा भार्गीकल्कं शनैः शनैः ।
सिद्धं सर्पिर्हन्ति पीतं स्वरभेदं मरुद्भवम् ॥

भोजनोपरान्त काली मिर्चका चूर्ण मिलाकर घी पीनेसे वातज स्वरभंग नष्ट होता है।

× × × ×

कसौंदी के ४ सेर स्वरसमें १ सेर घी और १० तोले भरंगीका कल्क मिलाकर मंदाग्नि पर पकावें। जब पानी जल जाय तो घी को छान लें।

यह घी पीनेसे वातज स्वरभंग नष्ट होता है।

(मात्रा—१ से २ तोले ।)

(९३३१) कासमर्दादिघृतम् (२)

(ग. नि. । स्वरभंगा. १२)

कासमर्दकवार्ताकमार्कवस्वरसैर्युतम् ।
क्षीरानुपानं चैतेषु पिबेत्सर्पिरतन्द्रितः ॥

घी में कसौंदी का, बैंगनका और भंगरे का स्वरस मिलाकर (या इनके समान भाग मिलित ४ सेर स्वरसमें १ सेर घी पकाकर) दूधके साथ पीनेसे पैत्तिक स्वरभंग नष्ट होता है।

(९३३२) कुङ्कुमादिघृतम्

(भै. र. । क्षुद्ररोगा.)

कुङ्कुमेन निशाभ्याञ्च कणया वह्निवारिणा ।
घृतं पक्वं निराकुर्यान्नीलिकां मुखदूषिकाम् ॥
सिध्मादींस्त्वगगदान् सर्वान् व्याधीन् कफसमुद्भवान् ।
शिरोऽर्त्तिं नाशयेच्चाशु लावण्यं जनयेत्परम् ॥
जगतामुपकाराय दस्राभ्यां विहितन्त्विदम् ।
पानेऽभ्यङ्गे तथा नस्ये युक्त्या योज्यं विचक्षणैः ॥

कल्क—केसर, हल्दी, दारुहल्दी और पीपल; इनका ५-५ तोले चूर्ण लेकर पानीके साथ पीस लें।

क्वाथ—८ सेर चीतामूलको ३२ सेर पानीमें पकावें और ८ सेर रहने पर छान लें।

२ सेर घीमें यह कल्क और क्वाथ मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब पानी जल जाए तो घी को छान लें।

यह घृत नीलिका, मुखदूषिका, सिध्मादि त्वग्रोग, कफरोग और शिरपीड़ाको शीघ्र ही नष्ट कर देता है तथा अत्यन्त सौन्दर्यवर्द्धक है।

इसे पिलाना चाहिये तथा अभ्यंग और नस्य द्वारा यथावसर प्रयुक्त करना चाहिये।

(९३३३) कुटजादिघृतम्

(ग. नि. । अतिसारा. २)

प्रयोग सं. ७७५३ षडङ्ग घृत देखिये। इस में उसकी अपेक्षा—

" कुटज क्वाथ तुल्योऽत्र दाडिमस्य रसो मतः "

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह पाठ अधिक है। अर्थात् ग. नि. के मतानुसार उसमें घीके बराबर कुड़ेकी छालका क्वाथ और उतना ही अनारका रस भी डालना चाहिये।

(९३३४) कुटजाद्यं घृतम्

(व. से. । अतिसारा.)

कुटजत्वक्फलं लोध्रं कृष्णादार्वीमहौषधम।
कटुका चेति तैः सिद्धं घृतं सर्वातिसारनुत् ॥

कुड़ेकी छाल, इन्द्रजौ, लोध, पीपल, दारुहल्दी, सोंठ और कुटकी; इनके क्वाथ और कल्क से सिद्ध घृत समस्त प्रकारके अतिसारोंको नष्ट करता है।

(क्वाथ ४ सेर, कल्क १० तोला, घी १ सेर)

(९३३५) कुलित्थषट्पलघृतम्

(व. से. । श्वासा; र. र. । हिक्काश्वासा.)

कुलित्थदशमूलञ्च तथा ब्राह्मणयष्टिका।
प्रस्थं प्रस्थञ्च संगृह्य वारिद्रोणेन साधयेत् ॥
पादशेषे रसे तस्मिन घृतप्रस्थं विपाचयेत्।
क्षीरकं द्विगुणं दत्वा कल्कितैः पञ्चकोलकैः ॥
सक्षारैः पलिकैः सर्वैः शनैर्मृद्वग्निना पचेत्।
कासश्वासहरञ्चैव हिक्काञ्च विषमज्वरम ॥
हन्यात्तथार्शोग्रहणीहृद्रोगारुचिपीनसान्।
गुल्मं प्लीहामयं हन्याद्बलवर्णाग्निवर्धनम् ॥
अग्निसन्दीपनञ्चैव कौलित्थं षट्पलं घृतम् ॥

कुलथी, दशमूल और भरंगी १-१ सेर लेकर सबको एकत्र कूटकर ३२ सेर पानीमें पकावें और ८ सेर रहने पर छान लें।

इस क्वाथ में २ सेर घी, ४ सेर दूध और निम्नलिखित कल्क मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब पानी जल जाए तो घीको छान लें।

कल्क—पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ, और जवाखार ५-५ तोले लेकर पानी से बारीक पीस लें।

यह घृत कास, श्वास, हिचकी, विषमज्वर, अर्श, हृद्रोग, ग्रहणी, अरुचि, पीनस, गुल्म और प्लीहा को नष्ट तथा बल, वर्ण और अग्नि की वृद्धि करता है।

(**मात्रा**—१ से २ तोले तक।)

(९३३६) केतकीघृतम्

(वै. म. र. । पट. ७)

केतकीस्वरसे सिद्धं तत्परोहाग्रकल्कितम्।
सर्पिः पीतं दिनस्यादौ मूत्रकृच्छ्रं जयेद्द्रुतम ॥

केतकी के स्वरस और उसके अंकुरों के अग्र भाग के कल्क से सिद्ध घृत प्रातःकाल पीनेसे मूत्रकृच्छ्र शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

इति ककारादिघृतप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ ककारादितैलप्रकरणम्

(९३३७) कटुकतुम्ब्यादितैलम्

(ग. मा. । कर्णरोगा.)

कटुकतुम्बकबीजसमुद्भवं
खरजलेऽष्टगुणे सविषं भृतम् ।
भवति तैलमलङ्करणोचितं
श्रवणपाशविवृद्धिविधायकम् ॥

कड़वी तूंबीके बीजोंका तेल ४० तोले, गधेका मूत्र ४ सेर (३२० तोले) और बछनाग विषका चूर्ण ५ तोले ले कर सबको एकत्र मिलाकर पकावें और मूत्र जल जाने पर तेलको छान लें।

इसकी मालिश से कर्णपाली बढ़ती है।

(९३३८) कटुरोहिण्यादितैलम्

(वै. म. र. । पट. २)

चूर्णेन कटुरोहिण्याः पत्रैर्वा छिन्नरोहजैः ।
स्वरसैः सहदेव्या वा सिद्धं तैलं ज्वरं जयेत् ॥

कुटकी के कल्क से या गिलोय के पत्तों के कल्क से अथवा सहदेवी के स्वरस के साथ सिद्ध किया हुवा तैल ज्वर को नष्ट करता है।

कट्वरतैलम्

(भै. र. । ज्वरा.)

प्र. सं. ७७५८ "षड्गुणतक्र तैलम्" देखिये।

(९३३९) कदल्यादिक्षारतैलम्

(वा. भ. । चि. अ. १५ उदरा.; व. से. । उदरा.)

कदल्यास्तिलनालानां क्षारेण क्षुरकस्य च ।
तैलं पक्वं जयेत्पानात्प्लीहानं कफवातजम् ॥

केलेका क्षार, तिलनाल का क्षार और तालमखाने का क्षार समान भाग लेकर एकत्र मिलाकर कल्क बनावें।

इस कल्कसे सिद्ध तैल पीनेसे कफवातज प्लीहाका नाश होता है।

(तैल १ सेर; कल्क १० तोले; पानी ४ सेर; एकत्र मिलाकर पानी जलने तक पकावें।)

(९३४०) कनकसुन्दरतैलम्

(यो. त. । त. ७५)

रसे कनकसम्भवे कटुकतैलमापाचयेद्वचा-
कनकदुग्धिकारजनिनागरैः कल्कितैः ।
इदं कनकसुन्दरं भवति दुष्टसंस्वेदजित्स-
मस्तपवनामयप्रणुदनल्पकान्तिप्रदम् ॥

कल्क—बच, धतूरा, दुद्धी (अथवा धतूरे और दुद्धीके स्थानमें स्वर्णक्षीरी), हल्दी और सोंठ समान भाग मिलित १० तोले लेकर पानी के साथ पीस लें।

१ सेर सरसों के तेलमें यह कल्क और ४ सेर धतूरे का रस मिला कर रस जलने तक पकावें।

इसकी मालिश से दुष्ट स्वेद और समस्त वातज रोगों का नाश होता तथा कान्ति की वृद्धि होती है।

(९३४१) कम्पिल्लकतैलम्

(व. से. । व्रणा.; ग. नि. । विसर्पा.; च. सं. । चि. अ. ११ विसर्पा.)

कम्पिल्लकं विडङ्गानि त्वचं दार्व्यास्तथैव च¹ ।
पिष्ट्वा तैलं विपक्तव्यं व्रणग्रन्थिहरं परम् ॥

१ च. सं. में कल्क द्रव्यों में करञ्ज-फल अधिक हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कमीला, बायबिड़ंग और दारुहल्दी की छाल का चूर्ण समान भाग मिलित १० तोले ले कर पानी के साथ पीस लें। तदनन्तर १ सेर तेल में यह कल्क और ४ सेर पानी मिला कर पकावें। जब पानी जल जाए तो तेलको छान लें।

यह तैल व्रण और ग्रन्थि को नष्ट करता है।

(९३४२) कम्पिल्लकाद्यतैलम्

(व. से. । विस्फोटा.; वृ. यो. त । त. १२५)

कम्पिल्लकं विडङ्गानि वत्सकं त्रिफलां बलाम्।
पटोलं पिचुमन्दञ्च लोध्रं मुस्तांप्रियङ्गुकम्॥
धातकी खदिरं सर्जमेला चागुरु चन्दनम्।
पिष्ट्वा तैलं भवेत्साध्यं तत्तैलं व्रणरोपणम्॥

कल्क—कमीला, बायबिडंग, कुड़ेकी छाल, हर्र, बहेड़ा, आमला, खरैटी, पटोल, नीमकी छाल, लोध, मोथा, फूलप्रियंगु, धायके फूल, खैरसार, राल, इलायची, अगर और सफेद चन्दन, इनका समान भाग मिलित चूर्ण २० तोले ले कर सबको पानीके साथ पीस लें।

२ सेर तिलके तेलमें यह कल्क और ८ सेर पानी मिला कर पकावें। जब पानी जल जाए तो तैलको छान लें।

इसे लगाने से व्रण भर जाते हैं।

(९३४३) करञ्जतैलम्

(वै. म. र. । प. ८)

करञ्जास्थीनि सम्पेष्य वितुषीकृत्य चूर्णयेत्।
स्नुग्दलस्वरसेनैव मृदित्वा रविसन्निधौ॥
तैलं गृहीत्वा तत्तैलं बाह्यान्तरुपयोजयेत्।
अन्तर्विद्रधिमाश्वेव नाशयेद्बाह्यजं तथा॥

करञ्जकी छिलके रहित मींगीको पीस कर उसमें थूहरके पत्तों का रस मिला कर मर्दन करें और उसे धूपमें रख दें। धूपकी गरमी से जो तेल निकले उसे एकत्रित कर लें।

इसे पीनेसे अन्तर्विद्रधि और लगानेसे बाह्य विद्रधि का शीघ्र नाश होता है।

(चूर्णको अधिक गीला नहीं करना चाहिये और चीनीके पात्रमें भर कर उसको तिरछा करके इस प्रकार रखना चाहिये कि जिस से तेल बह कर चूर्ण से पृथक् हो जाए।

(९३४४) करवीरादितैलम्

(वै. म. र. । पटल ११)

रक्तकरवीरमुकुलान्यादाय शतं शतेन मरिचेन।
पिष्ट्वा भृतं तिलोत्थं कुडवं पामां हरेल्लेपात्॥

लाल कनेर की कली १०० नग और काली मिर्च १०० नग लेकर एकत्र पीस लें तथा ४० तोले तिलके तेलमें यह कल्क (पिट्ठी) और २ सेर पानी मिला कर पकावें। जब पानी जल जाय तो तेल को छान लें।

यह तेल लगाने से पामा (खुजली) नष्ट हो जाती है।

(९३४५) करवीराद्यं तैलम् (१)

(र. र. । नासा.)

करवीरस्य नक्तस्य मालत्यास्फोतयोरपि।
पुष्पकल्कैः भृतं तैलं नासार्शो नाशनं परम्॥

कनेर, करञ्ज (डहर करञ्ज), मालती (चमेली) और आस्फोता (कचनार); इनके फूल २॥-२॥ तोले ले कर पानी के साथ पीस लें १ सेर तेलमें यह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कल्क और ४ सेर पानी मिला कर पकावें। जब पानी जल जाए तो तेल को छान लें।

यह तैल नासार्श को नष्ट करता है।

(९३४६) करवीराद्यं तैलम् (२)

(वृ. यो. त. । त. १४३; शा. ध. । खं. २ अ. ९; वं. से. । क्षी.)

करवीरश्चिफादन्ती चित्रको धातकीति च¹।
रम्भाक्षारोदके तैलं प्रशस्तं लोमशातनम् ॥

कल्क—कनेरकी जड़, दन्तीमूल, और धाय के फूल समान भाग मिलित १० तोले ले कर पानीके साथ पीस लें।

१ सेर तैलमें यह कल्क और ४ सेर केलेका क्षारजल मिलाकर पकावें जब पानी जल जाय तो तेल को छान लें।

इसे लगाने से बाल गिर जाते हैं।

(९३४७) कर्कटकादितैलम्

(वृ. मा. । बालरोगा.)

पिष्ट्वा कर्कटकं तैलं सक्षीरं साधितं तु तत्।
पादाभ्यङ्गेन बालस्य दन्तध्वनिनिवारणम् ॥

काकड़ासिंगी के कल्क और दूधके साथ सिद्ध तैल बालकके पैरोंमें लगाने से वह नींदमें दांत कटकटाना छोड़ देता है।

(कल्क १० तोले, तेल १ सेर, दूध ४ सेर)

(९३४८) कर्कोटकाद्यं तैलम्

(धन्व. व्रणा.)

वन्ध्याकर्कोटकी पाठा व्याघ्री कुष्ठपटोलिका।
अङ्कोटहस्तिपर्णी च तालगन्धकसैन्धवम् ॥
मञ्जिष्ठाकरवीरं च निशा हिङ्गु सुवर्चला।
वचासिन्दूरतुल्यांशं जलेन सह पेषयेत् ॥
कल्काच्चतुर्गुणं तैलं तैलात्तोयं चतुर्गुणम्।
पचेत्तैलावशेषं च लेपाद्दुष्टव्रणापहम् ॥

कल्क—बांझ ककोड़ेकी जड़, पाठा, कटेली, कूठ, पटोल, अंकोल, हस्तिपर्णी (मूर्वा), हरताल, गंधक, सेंधा नमक, मजीठ, कनेर, हल्दी, हींग, सुवर्चला (हुलहुल), बच और सिन्दूर समान भाग मिलित २० तोले लेकर पानीके साथ पीस लें।

२ सेर तेल में यह कल्क और ८ सेर पानी मिला कर पानी जलने तक पकावें।

इसे लगानेसे दुष्ट व्रण नष्ट होते हैं।

(९३४९) कर्णामृततैलम्

(र. सं. क । उ. ५; यो. त. । त. ७०)

रामठं निम्बपत्राणि फेनः सागरसम्भवः।
एतानि समभागानि तद्वदेयं सितं विषम् ॥
गोमूत्रेण समायुक्तं कटुतैलं विपाचितम्।
तेनैव पूरयेत्कर्णं नरकुञ्जरवाजिनाम् ॥
कर्णरोगं निहन्त्याशु लेपनाच्छिरसो गदान्।
नाम्ना कर्णामृतं तैलं ब्रह्मणा निर्मितं स्वयम् ॥

---

१ शा. ध. में धायके फूलोंकी जगह निसोत और कड़वी तोरी है। तथा बंगसेनमें तीन प्रकारकी तोरी लिखी है—

करवीरशिखादन्ती त्रिवृत्कोशातकीफलम्। (शा. ध.)

करवीरशिखादन्ती त्रीणि कोशातकानि च। (वं से.)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कल्क—हींग, नीमके पत्ते, समन्दरझाग और सफेद विष (दुधिया बछनाग) समान भाग मिलित १० तोले लेकर पानी के साथ पीस लें।

१ सेर सरसों के तेलमें यह कल्क और ४ सेर गोमूत्र मिला कर पकावें। जब मूत्र जल जाय तो तेल को छान लें।

इसे कानमें भरनेसे मनुष्य, हाथी और घोड़े के कर्णरोग शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं तथा शिरमें लगानेसे शिरके रोग नष्ट होते हैं।

(९३५०) कर्पूरतैलम्

(वै. म. र. । पटल १६)

हिममधुकमधूकसेव्यगर्भं
भुजगलतारससाधितं तिलोत्थम्।
शिरसि रुजमपाकरोति कण्डूं
कचपतनं च करोति हस्तकेशम्॥

कल्क—कपूर, मुलैठी, महुवा और खस; इनका चूर्ण २॥-२॥ तोले लेकर पानीके साथ पीस लें।

नागरवेल (पान) के ४ सेर रसमें यह कल्क और १ सेर तिलका तेल मिलाकर पकावें। जब पानी जल जाए तो तेलको छान लें।

इस तेलकी मालिश से शिरपीड़ा और शिरकी खाज का नाश होता तथा बालोंका गिरना बन्द हो जाता है।

(कपूर को तेल छाननेके पश्चात् मिलाना चाहिये।)

(९३५१) कर्पूरादितैलम्

(वै. म. र. । पट. १६)

कुष्ठोद्भवं व्रणमपोहति शीघ्रमेव
कर्पूरतैलमसकृत् पिचुना निषिक्तम्।
सारुष्करं तिलमहर्मुखभक्षितं च
भक्तिर्यथा तिमिरवैरिपदार्पिता तम्॥

रुईसे कपूरका तेल लगाने से तथा प्रातःकाल शुद्ध भिलावा और तिल मिला कर खाने से एवं सूर्यकी भक्ति करनेसे (सूर्य-किरणों में बैठने से) कुष्ठव्रण नष्ट हो जाते हैं।

(९३५२) कर्पूराद्यं तैलम्

(ग. नि. । तैला. २)

कर्पूरचन्दनवचासुरदारुमूर्वा-
गन्धर्वमूलरजनीद्वयसिन्धुजातैः।
मेदाद्वयत्रिकटुपुष्करमूलकुष्ठ-
रास्नाह्वयामुहरितालककुङ्कुमैश्च॥
पथ्याक्षकास्थितगरागरुसारमेष-
शृङ्गीजटाद्वययुतैः खलु कल्कितैश्च।
गोदुग्धयुक् कटुकतैलमिदं विपक्वं
ख्यातं निहन्ति सहसा विविधा रुजश्च॥

कल्क—कपूर, सफेद चन्दन, बच, देवदारु, मूर्वा, अरण्डमूल, हल्दी दारुहल्दी, सेंधानमक, मेदा, महामेदा, सोंठ, मिर्च, पीपल, पोहकरमूल, कूठ, रास्ना, हरिताल, केसर; हर्रकी गुठलीकी मींगी, बहेड़ेकी मींगी, तगर, काला अगर, मेढासिंगी और जटामांसी; इनका समान भाग मिलित चूर्ण २० तोले ले कर पानी के साथ पीस लें।

२ सेर सरसों के तेलमें यह कल्क और ८ सेर गोदुग्ध मिला कर पकावें। जब दूध जल जाय तो तेल को छान लें।

यह तैल विविध प्रकारकी पीड़ाओंको तुरन्त नष्ट कर देता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(कपूर, तेल छानने के पश्चात् मिलाना चाहिये ।)

(९३५३) **काकजङ्घातैलम्**

(ग. नि. । कर्णरोगा. ३)

समूलकाकजङ्घाया रसस्तैलेन पाचितः ।
तेन पूरितकर्णस्य बाधिर्यं शाम्यति ध्रुवम् ॥

मूलसहित काकजंघाका रस और तेल एकत्र मिलाकर पकाकर कानमें डालनेसे बधिरता अवश्य नष्ट हो जाती है ।

(९३५४) **काकमाच्यादितैलम्**

(र. र रसा. खं । उपदेश ५)

काकमाचीयबीजानि समाः कृष्णतिलास्तथा ।
तत्तैलं ग्राहयेद्यन्त्रे तन्नस्यं केशरञ्जनम् ॥

मकोयके बीज और काले तिल समान भाग लेकर एकत्र मिलाकर कोल्हू (घानी) में पिलवाकर तेल निकलवावें ।

इसकी नस्य लेनेसे बाल काले हो जाते हैं ।

(९३५५) **काकादन्यादितैलम्**

(व. से. । गण्डमाला.)

काकादनीशिफाकल्कैर्निर्गुण्ड्याः स्वरसैः भृतम् ।
आरनालैश्च कटुकं तैलं स्यादपचीहरम् ॥

चौंटली (गुञ्जा) की जड़का कल्क १० तोले, संभालूका रस २ सेर, कांजी २ सेर और सरसोंका तेल १ सेर लेकर सबको एकत्र मिला कर पकावें । जब पानी जल जाए तो तेलको छान लें ।

यह तैल (पीने, लगाने और नस्य द्वारा प्रयुक्त करने से) अपची (गंडमाला भेद) को नष्ट करता है ।

(९३५६) **काञ्जिकादितैलम्**

(वै. म. र. । पट. १२)

धान्याम्लमिश्रं चिञ्चाम्लं पटुतैलमिदं भृतम् ।
लिम्पेद्वातास्रनाशाय मृगनाभिमथापि वा ॥

कांजी ४ सेर, तेल १ सेर तथा इमलीका सत (टाटरी) और सेंधा नमक ५-५ तोले लेकर सबको एकत्र मिलाकर पकावें । जब कांजी जल जाए तो तेल को छान लें ।

इसे लगानेसे वातरक्तका नाश होता है ।

कस्तूरीका लेप करनेसे भी वातरक्तका नाश हो जाता है ।

(९३५७) **कारस्करादितैलम्**

(वै. म. र. । पटल १२)

कारस्करस्याङ्घ्रिचतुःपलेन
क्षीराढके कल्कितलोडितेन ।
प्रस्थं पचेत्तैलमपाकरोति
तद्वातरक्तं न तु तुल्यमस्य ॥

२० तोले कुचलेकी जड़को पीसकर २ सेर तेलमें मिलावें और उसमें ८ सेर गोदुग्ध मिलाकर दूध जलने तक पकावें ।

यह तैल वातरक्तको नष्ट करता है । वातरक्त के लिये इससे उत्तम अन्य कोई प्रयोग नहीं है ।

(इसे रोग स्थान पर लगाना चाहिये ।)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९३५८) कार्पासादितैलम्

(वै. म. र. । पट. ११)

मूलत्वक्पत्रपुष्पाणां कार्पासस्य रसे भृतम् ।
तैलं कपालजान् कुष्ठान् जयेत्तक्राम्लसाधितम् ॥

कपास की जड़, छाल, पत्र और पुष्पोंका स्वरस (या क्वाथ) २ सेर, खट्टा तक्र (छाछ) २ सेर तथा तेल १ सेर लेकर सबको एकत्र मिलाकर पकावें और जब तेलमात्र शेष रह जाए तो उसे छान लें ।

यह तैल शिरके कुष्ठको नष्ट करता है ।

(९३५९) कालानुसार्यादितैलम्

(सु. सं. । चि. अ. २ व्रणा.)

कालानुसार्य्यागुर्व्वेलाजातीचन्दनपद्मकैः ।
शिलादार्व्यमृतातुत्थैस्तैलं कुर्वति रोपणम् ॥

कल्क—तगर, अगर, इलायची, चमेलीके पत्ते, सफेदचन्दन, पद्माक, शिलाजीत, दारुहल्दी, गिलोय और नीलाथोथा समान भाग मिलित १० तोले लेकर पानीके साथ बारीक पीस लें ।

१ सेर तेलमें यह कल्क और ४ सेर पानी मिलाकर पकावें । जब पानी जल जाए तो तेलको छान लें ।

यह तेल लगाने से घाव भर जाते हैं ।

(९३६०) कासीसादितैलम्

(र. चि. म. । स्त. ९)

कासीसं हरितालं च सैन्धवं हयमारकः ।
विडङ्गं पूतिकं चैव घनं जम्बुश्च दन्तिका ॥
चित्रकार्कस्नुहीदुग्धं तैलं पक्वं समैश्च तैः ।
अभ्यञ्जनेन तत्सद्यश्चार्शांसि शातयेद्‌ध्रुवम् ॥

कल्क—कसीस, हरताल, सेंधा नमक, कनेरकी जड़, बायबिडंग, पूतिकरञ्ज, मोथा, जामनकी छाल, दन्तीमूल, चीतामूल, आकका दूध और थूहर का दूध समान भाग मिलित १० तोले लेकर पानीके साथ बारीक पीस लें ।

१ सेर तेलमें यह कल्क और ४ सेर पानी मिलाकर पकावें । जब पानी जल जाए तो तेलको छान लें ।

इसे लगानेसे अर्शके मस्से गिर जाते हैं ।

(९३६१) कासीसाद्यं तैलम् (१)

(वृ. यो. त. । त. १४३ ; वृ. मा. ; व. से. । स्त्रीरोगा. ; यो. चि. म. । अ. ६ ; च. द. । स्त्री. ; भै. र. । स्त्री.)

कासीसतुरगगन्धासावरेगजपिप्पलीविपक्वेन ।
तैलेन यान्ति वृद्धिं स्तनकर्णवराङ्गलिङ्गानि ॥

कल्क—कसीस, असगंध, लोध (पाठान्तर के अनुसार सारिवा) और गजपीपल समान भाग मिलित १० तोले लेकर पानीके साथ पीस लें ।

१ सेर तेलमें यह कल्क और ४ सेर पानी मिलाकर पकावें । जब पानी जल जाए तो तेलको छान लें ।

इसकी मालिशसे स्तन, कान, भग और लिंग बड़े होते हैं ।

(९३६२) कासीसाद्यं तैलम् (२)

(वं. से. । अर्शो. ; ग. नि. । परिशि. तैला.)

कासीसदन्तीसिन्धूत्थकरवीरानलैः पचेत् ।
तैलमर्कपयोन्मिश्रमभ्यङ्गात्पायुकीलजित् ॥

---

१ च. द. में 'सारिवा' पाठ है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कल्क—कसीस, दन्तीमूल, सेंधा नमक, कनेरकी जड़ और चीतामूल २–२ तोले लेकर पानीके साथ बारीक पीस लें।

१ सेर तेलमें यह कल्क और ४ सेर आकका दूध मिलाकर पकावें। जब दूध जल जाए तो तेलको छान लें।

इसे लगाने से अर्शके मस्से नष्ट होते हैं।

(९३६३) कुम्भीकाद्यं तैलम्

(भै. र. ; भा. प्र. ; वृ. मा. ; च. द. ; धन्व. ; र. र. ; व. से । नाड़ीव्रणा.)

कुम्भीकखर्जूरकपित्थबिल्व-
वनस्पतीनान्तु शलाटुवर्गैः ।
कृत्वा कषायं विपचेत्तु तैल-
मावाप्य मुस्तासरलप्रियङ्गुम् ॥
सौगन्धिका मोचरसाहिपुष्पा
लोध्राणि दत्त्वा खलु धातकीश्च ।
एतेन शल्यप्रभवा हि नाडी
रोहेद् व्रणो वै सुखमाशु चैव ॥

क्वाथ—कुम्भी (सुलतान चम्पा), खजूर, एवं कैथ और बेल के कच्चे फल समान भाग मिलित २ सेर लेकर सबको एकत्र कूटकर १६ सेर पानी में पकावें और ४ सेर रहने पर छान लें।

कल्क—नागरमोथा, सरल काष्ठ, फूलप्रियंगु, सुगन्धतृण (अथवा अनन्त मूल), मोचरस, नागकेसर, लोध और धायके फूल समान भाग मिलित १० तोले लेकर पानीके साथ बारीक पीस लें।

१ सेर तेलमें उपरोक्त कल्क और क्वाथ मिलाकर पकावें। जब क्वाथ जल जाए तो तेल को छान लें।

इसे लगानेसे शल्य-जनित नाडी व्रण भर जाता है।

(९३६४) कुष्ठकालानलतैलम् (१)

(ग. नि. । तैला. २)

क्षारद्वयं कटुत्रीणि पञ्चैव लवणानि च ।
वचा कुष्ठं हरिद्रे द्वे विडङ्गं चित्रकं विषम् ॥
हरितालं शिलागन्धं सिन्दूरं तुत्थखर्परम् ।
रामठं च रसोनं च मदनं च रसाञ्जनम् ॥
एतत्सर्वं समांशं च स्नुह्यर्कपयसाप्लुतम् ।
षड्गुणं सार्षपं तैलं तैलान्मूत्रं चतुर्गुणम् ॥
सर्वं मन्दानले पक्वं ग्राह्यं तैलावशेषकम् ।
हन्त्यष्टादश कुष्ठानि मांसमेदोगतानि च ॥
दुष्टव्रणानि शतानि जीर्णनाडीव्रणानि च ।
हन्ति श्वित्रसाध्यं च दद्रुपामाविचर्चिकाः ॥
एतत्तैलं सदाऽभ्यङ्गात्कुष्ठव्याधिहरं नृणाम् ॥

कल्क—जवाखार, सज्जीखार, सोंठ, मिर्च, पीपल, सेंधा नमक, सञ्चल (कालानमक), काच लवण, विड लवण, सामुद्र लवण, बच, कूठ, हल्दी, दारुहल्दी, बायबिडंग, चीतामूल, बछनाग, हरताल, मनसिल, गंधक, सिन्दूर, नीलाथोथा, खपरिया, हींग, लहसन, मैनफल और रसोत समान भाग मिलित २० तोले लेकर एकत्र पीस लें और उसमें थूहर तथा आकका दूध मिलाकर लुगदी बना लें। तदनन्तर ३ सेर सरसों के तेलमें यह कल्क और १२ सेर गोमूत्र मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब जलांश शुष्क हो जाय तो तेलको छान लें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसे लगाने से मांस मेदोगत अठारह प्रकारके कुष्ठ, दुष्टव्रण, पुराना नाडीव्रण, श्वित्र, दाद, पामा और विचर्चिका का नाश होता है।

(९३६५) कुष्ठकालानलतैलम् (२)

(यो. त. । त. ६२)

क्षारास्त्रयस्त्रिकटुकं पञ्चैव लवणानि च ।
वचा कुष्ठं हरिद्रे द्वे बिडङ्गं चित्रकं विषम् ॥
हरितालशिलागन्धसिन्दूरं तुत्थखर्परम् ।
रामठं च रसोनश्च मदनं च रसाञ्जनम् ॥
भल्लातकं बाकुचिका चोकं कर्पूरकं तथा ।
लाङ्गली च पटोली च हंसपादी तथैव च ॥
तेजनी मुरमांसी च कम्पिल्लं खदिरान्तरम् ।
एतच्चूर्णं समांशेन वज्र्यर्कपयसाप्लुतम् ॥
षड्गुणं सार्षपं तैलं कारञ्जं वा विशेषतः ।
तैलं गन्धर्वजं वापि तिलतैलं तथैव च ॥
तैलाच्चतुर्गुणं मूत्रं गोमहिष्यश्वसम्भवम् ।
हस्तिगर्दभजं वापि तथोष्ट्राजाविजं क्षिपेत् ॥
सर्वमेकत्र सम्पक्वं कटाहे मन्दवह्निना ।
तैलावशेषं सङ्गृह्य रुजामभ्यङ्गमाचरेत् ॥
वातरक्तविनाशाय दद्रुकण्डूविचर्चिकाः ।
अष्टादशानि कुष्ठानि मांसमेदोगतानि च ॥
दुष्टव्रणानि सर्वाणि जीर्णनाडीव्रणानि च ।
भगन्दरं च दुर्नामलूतागर्दभजालकम् ॥
एतत्तैलं सदाभ्यङ्गात्सर्वकुष्ठं व्यपोहति ॥

जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, सोंठ, मिर्च, पीपल, सेंधा नमक, सञ्चल (काला नमक), बिड नमक, काच लवण, सामुद्र लवण, बच, कूठ, हल्दी, दारुहल्दी, बायबिड़ंग, चीतामूल, बछनाग, हरताल, मनसिल, गन्धक, सिन्दूर, नीलाथोथा, खपरिया, हींग, ल्हसन, मैनफल, रसौत, भिलावा, बावची, चोक, कपूर, लांगली (कलियारी)की जड़, पटोल, हंसपादी, मालकंगनी, मुरामांसी, कमीला और खैर-सार समान भाग मिलित २० तोले लेकर बारीक चूर्ण बनावें और उसे स्नुही (सेहुंड—थूहर) के दूध तथा आकके दूधमें मिलाकर लुगदी बना लें।

तदनन्तर ३ सेर सरसोंका या विशेषतः करञ्ज (कञ्जे) का अथवा रेंडी या तिलका तेल लेकर उसमें उपरोक्त कल्क और गाय, भैंस, घोड़ी, हथीनी, गधा, ऊंट, बकरी और भेड़में से किसी एकका १२ सेर मूत्र मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें एवं जलांश शुष्क होने पर तेलको छान लें।

इसकी मालिशसे वातरक्त, दाद, खुजली, विचर्चिका; मांसमेदोगत १८ प्रकारके कुष्ठ, समस्त दुष्ट व्रण, पुराने नाड़ी व्रण, भगंदर, अर्श, मकड़ी का विष और गर्दभ जालादि का नाश होता है।

(९३६६) कुष्ठादितैलम्

(वा. भ. । चि. अ. १९ कुष्ठ.)

कुष्ठाश्वमारभृङ्गार्कमूत्रस्नुक्क्षीरसैन्धवैः ।
तैलं सिद्धं विषाढ्यमभ्यङ्गात्कुष्ठजित्परम् ॥

कूठ, कनेर, भंगरा, आकको जड़, (या दूध) गोमूत्र, स्नुही (थूहर—सेंड) का दूध और सेंधा नमक; इनके कल्क (और ४ गुने पानी) के साथ तैल सिद्ध करें।

इसमें बछनागका चूर्ण मिलाकर मालिश करनेसे कुष्ठका नाश होताहै। यह एक उत्तम योग है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९३६७) कुष्ठाद्यस्नेहः

(शा. सं. । ख. २ अ. ९)

कुष्ठं बिल्वकणाशुण्ठीद्राक्षाकल्ककषायवत् ।
साधितं तैलमाज्यं वा नस्यात्क्षवथुनाशनम् ॥

कल्क—कूठ, बेलकी छाल, पीपल, सोंठ और मुनक्का ४-४ तोले लेकर पानीके साथ बारीक पीस लें।

क्वाथ—कल्क की चीज़ें समान भाग मिलित ४ सेर लेकर ३२ सेर पानीमें पकावें और ८ सेर रहने पर छान लें।

२ सेर तेलमें या घी में यह क्वाथ और कल्क मिलाकर पकावें। जब पानी जल जाए तो स्नेह को छान लें।

इसकी नस्य लेनेसे क्षवथु (छींक आना) रोगका नाश होता है।

(९३६८) कुष्ठारितैलम्

(र. र. स. । उ. अ. २०)

नारिकेरं हरिद्रे द्वे बाकुची वचया सह ।
अक्षभृङ्गकभल्लातं शाककाष्ठं च काञ्चनम् ॥
एतानि समभागानि तैलं पातालयन्त्रतः ।
सङ्गृह्य लेपयेत्तेन कुष्ठाष्टादशनाशनम् ॥

नारियल (खोपरा), हल्दी, दारुहल्दी बावची, बच, बहेड़ा, भंगरा, भिलावा, सागौन का काष्ठ और धतूरा समान भाग लेकर पातालयन्त्रसे तेल निकालें।

इसे लगानेसे १८ प्रकारके कुष्ठ नष्ट होते हैं।

(९३६९) कुसुम्भाद्यं तैलम्

(ग. नि. । तैला. २)

कुसुम्भकुङ्कुमोशीरमञ्जिष्ठारक्तचन्दनैः ।
सिक्थसर्जरसातङ्कगुडूचीसैन्धवाम्बुदैः ॥
मूर्वाशतावरीलाक्षामधुकैश्च पलांशकैः ।
चतुर्गुणेन पयसा पचेत्तैलाढकं भिषक् ॥
अर्दितं कर्णशूलं च शिरःशूलं च दारुणम् ।
गृध्रसीं वातरक्तं च पक्षाघातं व्यपोहति ॥
तद्वस्तिषु च पानेषु नस्ये च कर्णपूरणे ।
अभ्यङ्गे च शिरोरोगे तैलं विद्याद्यथाऽमृतम् ॥
पाणिपादांसदाहेषु गुदयोनिरुजासु च ।
सुप्तिवातेऽस्थिभङ्गे च देवदेवेन पूजितम् ॥

कल्क—कुसुम्भ (कसुम्भा—आल), केसर, खस, मजीठ, लालचन्दन, मोम, राल, कूठ, गिलोय, सेंधा नमक, नागरमोथा, मूर्वा, शतावर, लाख और मुलैठी ५-५ तोले लेकर पीसने योग्य चीजों को पानी के साथ बारीक पीस लें।

८ सेर तेलमें यह कल्क और ३२ सेर दूध मिलाकर पकावें। जब दूध जल जाए तो तेलको छान लें।

यह तेल अर्दित, कर्णशूल, दारुण शिरशूल, गृध्रसी, वातरक्त, पक्षाघात, हाथ पैर और कन्धोंकी दाह तथा योनि और गुदाकी पीड़ा एवं सुप्तिवात तथा अस्थिभंगको नष्ट करता है।

इसे आवश्यकतानुसार बस्ति, अभ्यङ्ग, पान, नस्य और कर्णपूरण आदि द्वारा प्रयुक्त करना चाहिये। शिरशूलमें मालिश करने से यह अमृत के समान गुण करता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९३७०) केतक्यादितैलम्

(व. से. । क्षुद्ररोगा.)

केतकं भृङ्गनीलिकाः पार्थपुष्पं सबीजकम् ।
सहचरं तिला कृष्णा पिण्डीतकमयोरजः ॥
अमृता चोत्पलं श्यामा त्रिफलापङ्ककर्दमैः ।
कल्कैरेभिः पचेत्तैलं त्रिफलाक्वाथमार्कवैः ॥
अकालपलितं हन्ति नाशयेदुपजिह्विकाम् ।
केशाश्च तेन जायन्ते स्निग्धाश्चाञ्जनसन्निभाः ॥

कल्क—केतकी के फूल, भंगरा, नीलका वृक्ष, अर्जुनके फूल और बीज, पिया बांसा, काले तिल, तगर, लोहचूर्ण, गिलोय, नीलोत्पल, हल्दी (या काली निसोत), हर्र, बहेड़ा, आमला और कमलकी जड़की मिट्टी समान भाग मिलित २० तोले लेकर सबको पानीके साथ बारीक पीस लें।

२ सेर तेलमें यह कल्क और ४-४ सेर त्रिफलेका क्वाथ तथा भंगरेका रस मिलाकर पकावें। जब पानी जल जाय तो तेलको छान लें।

यह तेल अकाल-पलित (समयसे पहिले बालोंका सफेद होना) और उपजिह्वाको नष्ट करता है। तथा इसके उपयोगसे बाल स्निग्ध और अंजनके समान काले हो जाते हैं।

(इसे मर्दन करना और इसकी नस्य लेनी चाहिये।)

(९३७१) केतक्याद्यतैलम्

(व. से. । क्षुद्रा.)

केतकी त्रिफला दार्वी तत्फलं मदनत्वचः ।
आम्रास्थिमज्जकुष्ठश्च तिला भृङ्गरसाञ्जनम् ॥
पिण्डीतकमयश्चूर्णं नीली पङ्कश्च पद्मजम् ।
कल्कैरेतैः पचेत्तैलं वचाभृङ्गरसेन तु ॥
शिरोऽभ्यङ्गात्प्रणश्यन्ति दारुणं चेन्द्रलुप्तकम् ।
अकालपलितं कण्डूं लूतिकां दद्रुमेव च ॥
करोति कुञ्चितान्केशान् भ्रमरोदरसन्निभान् ।
केतक्याद्यमिदं नाम्ना विदेहादि प्रकीर्तितम् ॥

कल्क—केतकीके फूल, हर्र, बहेड़ा, आमला, दारुहल्दीकी छाल, दारुहल्दीके फल, मैनफलकी छाल, आमकी गुठलीकी मींगी, कूठ, काले तिल, भंगरा, रसौत, तगर, लोहचूर्ण, नीलका पौधा और कमलकी जड़की मिट्टी समान भाग मिलित २० तोले लेकर पानीके साथ बारीक पीस लें।

२ सेर तेलमें यह कल्क और ४-४ सेर बचका तथा भंगरेका रस मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब पानी जल जाए तो तेलको छान लें।

शिरपर मलनेसे यह तेल दारुणक रोग, इन्द्रलुप्त (गंज), अकाल पलित (अकालमें बालोंका सफेद होना), शिरकी खाज, लूतिका और दादको नष्ट करता है।

इसके उपयोगसे बाल काले और घुंघराले हो जाते हैं।

(९३७२) कैडर्यतैलम्

(वै. म. र. । पट. ३)

परिणतकैडर्याच्छकली कृत्वाऽऽज्यकुम्भपरिदग्धात्
तैलं निःसृतमस्यति कासं श्वासं प्रमेहं च ॥

कायफलके पके पत्तों को कूटकर घीके चिकने घड़ेमें भरकर पातालयन्त्र से तेल निकालें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह तेल कास, श्वास और प्रमेह को नष्ट करता है।

(९३७३) **कोशातकीतैलम्**

(व. से. ; भा. प्र. म. खं. २ । उपदंश.)

यस्य लिङ्गस्य मांसन्तु शीर्य्यते मुष्कशेषतः ।
तिक्तकोशातकीलम्बाबीजनागरसाधितम् ॥
तैलं हन्त्यचिराद् घोरं व्रणदुष्टमनेकधा ॥

कल्क—कड़वी तोरी के बीज, कड़वे कदूके बीज और सोंठ समान भाग मिलित १० तोले लेकर पानीके साथ पीस लें।

१ सेर तेलमें यह कल्क और इन्ही ओषधियोंका ४ सेर क्वाथ मिलाकर पानी जलने तक पकावें और फिर छान लें।

यह तैल अनेक प्रकारके घोर दुष्ट व्रणोंको शीघ्र ही नष्ट कर देता है। जिसके लिंगका सब मांस गल गया हो और केवल अण्डकोष ही बचे हों उसे भी इस तेलसे आराम हो जाता है।

(९३७४) **कोशातकीतैलाभ्यङ्गः**

(रा. मा. । स्त्रीरोगा. ३०)

उत्पाट्य गुह्यप्रभवाणि रोमाण्य-
भ्यञ्जनं तत्र ततो विधेयम् ।
कोशातकीबीजसमुद्भवेन
तैलेन लोम्नामपुनर्भवाय ॥

गुह्य प्रदेशके बालोंको उखाड़ने के पश्चात् तोरी (कड़वी तोरी) के बीजोंका तेल लगाने से पुनः बाल नहीं निकलते।

इति ककारादितैलप्रकरणम्

अथ ककाराद्यासवारिष्टप्रकरणम्

(९३७५) **कनकबिन्द्वरिष्टम्**

(च. सं. । चि. अ. ७ कुष्ठा.)

खदिरकषायद्रोणं कुम्भे घृतभाविते समावाप्य ।
द्रव्याणि चूर्णितानि च षट्पलिकान्यत्र देयानि ॥
त्रिफलाव्योषविडङ्ग रजनीमुस्ताटरूषकेन्द्रयवाः।
सौवर्णी च तथा त्वक्
छिन्नरुहा चेति तन्मासम्
निदधीत धान्यमध्ये प्रातः
प्रातः पिबेत्ततो युक्त्या ।
मासेन महाकुष्ठं हन्त्येवाल्पन्तु पक्षेण ॥
अर्शः श्वासभगन्दरकासकिलासप्रमेहशोषांश्च ।
ना भवति कनकवर्णः पीत्वारिष्टं कनकबिन्दुम् ॥

खैरसारका ३२ सेर क्वाथ घृत भावित मृत्पात्रमें भरकर उसमें हर्र, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिर्च, पीपल, बायबिड़ंग, हल्दी, नागरमोथा, अडूसा (बासा), इन्द्रजौ, अमलतासकी छाल और गिलोय; इनका चूर्ण ३०-३० तोले मिलाकर उसका मुख बन्द करके अनाजके ढेरमें दबा दें और एक मास पश्चात् निकालकर छान लें।

इसे प्रातःकाल यथोचित मात्रानुसार सेवन करनेसे १ मासमें महा कुष्ठ और १५ दिनमें क्षुद्र कुष्ठ नष्ट हो जाता है। यह अरिष्ट अर्श, श्वास, भगंदर, कास, किलास कुष्ठ, प्रमेह और शोषको नष्ट करता है। इसके सेवनसे मनुष्य का शरीर स्वर्णके समान कान्तिमान् हो जाता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(इसमें मीठे का अभाव है और बिना मीठा मिलाए आसव नहीं बन सकता अतएव ६। सेर गुड़ और ३ सेर १० तोले शहद भी डालना चाहिये।)

(९३७६) **कुमार्यासवः** (१)

(शा. सं. । खं. २ अ. १०)

सुपक्वरसंशुद्धं कुमार्याः पत्रमाहरेत् ।
यत्नेन रसमादाय पात्रे पाषाणमृण्मये ॥
द्रोणे गुड्तुलां दत्वा घृतभाण्डे निधापयेत् ।
माक्षिकं पक्वलोहं च तस्मिन्नर्धतुलां क्षिपेत् ॥
कटुत्रिकं लवङ्गं च चातुर्जातकमेव च ।
चित्रकं पिप्पलीमूलं विडङ्गं गजपिप्पली ॥
चविकं हपुषा धान्यं क्रमुकं कटुरोहिणी ।
मुस्ता फलत्रिकं रास्ना देवदारु निशाद्वयम् ॥
मूर्वा मधुरसा दन्ती मूलं पुष्करसम्भवम् ।
बला चातिबला चैव कपिकच्छुस्त्रिकण्टकम् ॥
शतपुष्पा हिङ्गुपत्री आकल्लकक्षुटिङ्गणम् ।
पुनर्नवाद्वयं लोध्रं धातुमाक्षिकमेव च ॥
एषां चार्धपलं दत्वा धातक्यास्तु पलाष्टकम् ।
पलं चार्धपलं चैव पलद्वयमुदाहृतम् ॥
वपुर्वयः प्रमाणेन बलवर्णाग्निदीपनम् ।
बृंहणं रोचनं वृष्यं पक्तिशूलनिवारणम् ॥
अष्टावुदरजान रोगान क्षयमुग्रं च नाशयेत् ।
विंशतिं मेहजान् रोगानुदावर्तमपस्मृतिम् ॥
मूत्रकृच्छ्रमपस्मारं शुक्रदोषं तथाश्मरीम् ।
कृमिजं रक्तपित्तं च नाशयेत्तु न संशयः ॥

घृतकुमारी के रससे परिपूर्ण पत्र लेकर उन्हें अच्छी तरह धोकर मिट्टी या पत्थरके पात्रमें रस निकालें। यह रस ३२ सेर लेकर उसमें ६। सेर गुड़ मिला दें और फिर सबको घृत-भावित मृत्पात्रमें भरकर उसमें निम्न लिखित प्रक्षेप डाल कर मिला दें—

प्रक्षेप—शहद ६। सेर; शुद्ध लोहचूर्ण (या भस्म) ३ सेर १० तोले; सोंठ, मिर्च, पीपल, लौंग, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर, चीतामूल, पीपलामूल, बायबिड़ंग, गजपीपल, चव, हपुषा, धनिया, सुपारी, कुटकी, नागरमोथा, हर्र, बहेड़ा, आमला, रास्ना, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, मूर्वा, मुलैठी, दन्तीमूल, पोहकरमूल, खरैटी, कंघी, कौंचके बीज, गोखरु, सोया, हिंगुपत्री, अकरकरा, उटिंगणके बीज, सफेद और लाल पुनर्नवा, लोध और स्वर्णमाक्षिक भस्म २।।-२।। तोले एवं धायके फूल ४० तोले; इन सबका चूर्ण मिलाकर पात्रका मुख बन्द करके रखदें और १ मास पश्चात् निकालकर छान लें।

मात्रा—२॥ तोलेसे १० तोले तक (व्य. मा.—२ तोले।)

इसके सेवनसे बल, वर्ण और अग्निकी वृद्धि होती है। यह पौष्टिक, रुचिवर्द्धक और वीर्यवर्द्धक है। इसके सेवनसे पक्तिशूल, आठ प्रकारके उदर-रोग, उग्र क्षय, २० प्रकारके प्रमेह, उदावर्त, अपस्मार, मूत्रकृच्छ्र, शुक्रदोष, अश्मरी, कृमिरोग और रक्तपित्तका अवश्य नाश हो जाता है।

(९३७७) **कुमार्यासवः** (२)

(सिद्धभेषजमणिमाला)

कन्यारसाढके प्रस्थगुडतः कुडवद्वयम् ।
मण्डूरं टङ्कणं क्षारौ पञ्चैव लवणानि च ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नवसादर इत्यस्माद्वर्गादेयं पलं पलम् ।
काचकोषे समादाय मुखमस्य विमुद्रयेत् ॥
अष्टाहमातपन्यस्तमेकीभूतरसं पिबेत् ।
यकृत्प्लीहोदरेष्वेनं कुमार्यासवमाख्यया ॥

घृतकुमारी (ग्वारपाठे) का रस ८ सेर, पुराना गुड़ ४० तोले तथा मण्डूर भस्म, सुहागेकी खील, जवाखार, सज्जीखार, सेंधा नमक, संचल (काला नमक), बिड नमक, सामुद्र लवण, काच लवण और नौसादर ५-५ तोले लेकर सबको एकत्र मिलाकर कांचके घड़ेमें भरकर उसका मुख बन्द करके धूपमें रख दें। आठ दिनमें सब चीजें एकरस हो जायंगी।

इसके सेवनसे यकृत्, प्लीहा और उदर रोगों का नाश होता है।

(९३७८) कूष्माण्डासवः

(योगचिन्तामणि । अ. ७)

कूष्माण्डं च फलं पक्वं तस्मिञ्छिद्रन्तु कारयेत् ।
छिद्रमध्ये गुडो देयो द्वितुलश्च शनैः शनैः ॥
त्वचाबीजं च उत्कृष्य स्निग्धभाण्डे निधापयेत् ।
बदरीत्वक् पलान्यष्टौ तस्य क्वाथं प्रदापयेत् ॥
द्वौ कसेरौ च धातक्या हपुषा च पलं पलम् ।
त्रिफला ह्रीबेरश्च भृङ्गी भार्ङ्गी च पुष्करम् ॥
तालमूली स्वयंगुप्ता कक्कोलं वंसलोचनम् ।
यष्टी मोचरसं मुस्ता ग्रन्थिकं चाष्टवर्गकम् ॥
चातुर्जातं विडङ्गानि व्योषं चित्रककुङ्कुमम् ।
जातीपत्रं लवङ्गं च करभं मालतीफलम् ॥
दशाङ्घ्रि रक्तसारं च कट्फलं रेणुका शटी ।
तिक्तसारचतुःकर्षमाटरूषकुलिञ्जनम् ॥
अजमोदाश्वगन्धा च चव्यमाजूफलं वरी ।
सारं सूरणतेजबलं तालीसश्यामपूगकम् ॥
एतेषां कर्षमात्रञ्च सूक्ष्मचूर्णन्तु कारयेत् ।
मूलभाण्डे क्षिपेत्सर्वं पलमेकं भजेन्नरः ॥
कासं श्वासं च हृद्रोगं पाण्डुरोगं क्षतक्षयम् ।
गुल्मोदरं ग्रहण्यर्शो मूत्रकृच्छ्रं तथाश्मरीम् ॥
प्रमेहं शोफातीसारे वातपित्तकफापहः ।
कूष्माण्डासव इत्येष बलकृन्मलशोधनः ॥

एक बहुत बड़ा पेठा (सफेद कुम्हड़ा) लेकर उसमें एक बड़ासा छिद्र करें और फिर उस छिद्रके द्वारा उसके भीतर धीरे धीरे १२॥ सेर गुड़ भर दें जब गुड़का पानी हो जाय तब छिलके और बीजों को निकाल दें तथा शेष भाग को घृत-भावित मृत्पात्रमें भरकर उसमें बेरीकी ४० तोले छालका क्वाथ और ५-५ तोले दोनों प्रकारका कसेरु, धायके फूल, हपुषा, हर्र, बहेड़ा, आमला, सुगन्धबाला, काकड़ासिंगी, भरंगी, पोहकर मूल, तालमूली (मूसली), कौंचके बीज, कंकोल, बंसलोचन, मुलैठी, मोचरस, नागरमोथा, पीपलामूल, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली, दालचीनी, इलायची, तेज-पात, नागकेसर, वायविड़ंग, सोंठ, मिर्च, पीपल, चीतामूल, केसर, जावत्री, लौंग, अकरकरा, जायफल, दशमूल, लालचन्दन, कायफल, रेणुका, कचूर और कुटकी; इनका चूर्ण एवं अडूसा (बासा), कुलिंजन, अजमोद, असगंध, चव, माजूफल, शतावर, लोह-भस्म, सूरण (जिमिकंद), तेजबल, तालीसपत्र और चिकनी सुपारी; इनका चूर्ण १।-१। तोला मिलाकर पात्रका मुख बन्द करके रखदें और एक मास पश्चात् निकालकर छान लें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(मात्रा—५ तोला। व्य. मा. २-२॥ तोले।)

इसके सेवनसे कास श्वास, हृद्रोग, पाण्डु, क्षत, क्षय, गुल्म, ग्रहणीरोग, अर्श मूत्रकृच्छ्र, अश्मरि, प्रमेह, शोथ और अतिसार का नाश होता तथा बल बढ़ता है। यह मल शोधक भी है।

इति ककाराद्यासवारिष्टप्रकरणम्

अथ ककारादिलेपप्रकरणम्

(९३७९) कटुकालाब्वादिलेपः

(वं. से. । कुष्ठा.)

कटुकालाबुसव्योषहिंस्त्रार्कहयमारकाः ।
कुष्ठं वल्गुजभल्लातस्नुहीमूलानि सर्षपाः ॥
बिल्वकारिष्टपीलूनां पत्राण्यारग्वधस्य च ।
त्रिफलामुस्तजीमूतविशाला मूत्रपाचिताः ॥
गोगजाश्वाजमूत्राणामाढकं त्वाढकं पचेत् ।
स्नुह्यर्कक्षारकुडवं तैलं युक्त्या प्रदापयेत् ॥
पचेद्दार्वीप्रलेपन्तु घृष्ट्वा कुष्ठानि लेपयेत् ।
श्वित्राणि द्विप्रलिप्तानि यान्ति नाशमशेषतः ॥

कड़वी तूंबी, सोंठ, मिर्च, पीपल, जटामांसी, आककी जड़, कनेर, कूठ, बाबची, भिलावा, स्नुही (सेहुंड-थूहर)की जड़, सरसों, बेलके पत्ते, नीमके पत्ते, पीलूके पत्ते, अमलतासके पत्ते, हर्र, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा, देवदाली (बिंडाल) और इन्द्रायण; समान भाग लेकर सबको अच्छी तरह कूट लें और फिर उस चूर्णमें ८-८ सेर गोमूत्र, हस्तिमूत्र, घोड़ीकामूत्र और बकरीका मूत्र एवं २०-२० तोले स्नुही का तथा आकका क्षार और तेल मिलाकर पकावें। जब करछी को लगने लगे तो उतार कर ठंडा कर लें।

इसका कुष्ठ पर लेप करनेसे सफेद कुष्ठ नष्ट हो जाता है।

(९३८०) कट्फलादिलेपः (१)

(व. से. । व्रणा.)

कट्फलदाडिमरजनीप्रियङ्गुफलताम्रपुष्पिका-पुष्पैः ।
धात्रीरससम्पिष्टैर्दुष्टव्रणरोपणः कल्कः ॥

कायफल, अनारकी छाल, हल्दी, फूलप्रियङ्गु, हर्र, बहेड़ा, आमला और धायकेफूल, समान भाग लेकर बारीक चूर्ण बनावें। इसे आमले के रसमें पीसकर लेप करनेसे दुष्ट व्रण भर जाता है।

(९३८१) कट्फलादिलेपः (२)

(वैद्यामृत)

शान्ते त्रिदोषे श्रुतिमूलजात-
शोथस्य रक्तं प्रविमोचयेत्प्राक् ।
पश्चान्मुहुः कट्फलकृष्णजीर-
विश्वाकुलित्थोद्भवलेपनं स्यात् ॥

सन्निपात ज्वर के शान्त होने पर जो कर्ण-मूल में शोथ हो जाता है प्रथम उससे रक्त निकलवावें और फिर कायफल, कालाजीरा, सोंठ और कुलथी; इनके समान भाग मिलित बारीक चूर्णको पानीमें पीस कर बार बार लेप लगावें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९३८२) **कट्विकादिलेपः**

(वं. से. । क्षुद्र.)

कट्वीकापालिकामूलं पूतीकं सैन्धवं तथा ।
शम्बूकेन श्लक्ष्णपिष्टं चर्मकीलकनाशनम् ॥

कुटकी, कण्टकपाली की जड़, पूतिकरञ्ज सेंधा नमक और घोंघे समान भाग लेकर बारीक पीसकर लेप करने से चर्मकीलका नाश हो जाता है।

(९३८३) **कदल्यादिलेपः** (१)

(व. से. । स्त्रीरोगा.)

कदलीदीर्घवृन्तानां भस्मालं लवणं शमी– ।
बीजं शीताम्भसा पिष्टं लोमशातनमुत्तमम् ॥

केले और अरलु की भस्म, हरताल, सेंधा नमक, और शमी (छोंकर) वृक्षके बीज समान भाग लेकर शीतल जलके साथ पीसकर लेप करनेसे बाल गिर जाते हैं।

(९३८४) **कदल्यादिलेपः** (२)

(र. र. । स्त्री.)

दग्ध्वा शङ्खं क्षिपेद्रम्भास्वरसे तच्च पेषितम् ।
तुल्याललेपनाद्धन्ति रोमगुह्यादिसम्भवम् ॥

शंख भस्म और हरताल को केलेके रसमें घोट कर लेप करनेसे गुह्य स्थानके बाल गिर जाते हैं।

(९३८५) **कपित्थपत्रादिलेपः**

(ग. नि. । बालरोगा. ११)

पत्रैः कपित्थचाङ्गेरीबदरीकाकमाचिजैः ।
शिरोरुक्छर्द्यतीसारनाशनं मूर्ध्नि लेपनम् ॥
शिरोभितापे सघृतैः शिरः शीतैः प्रलेपयेत् ॥

कैथ, चूका, बेरी और मकोय; इनके पत्तोंको पीसकर शिर पर लेप करनेसे बालककी शिरपीड़ा, छर्दि और अतिसार का नाश होता है।

यदि बालकका शिर तपता हो तो शीतल ओषधियों (चन्दनादि को) घी में मिलाकर लेप करना चाहिए।

(९३८६) **कपित्थादिलेपः**

(वा. भ. । चि. अ. १ ज्वरा.)

कपित्थमातुलुङ्गाम्लविदारीरोध्रदाडिमैः ।
बदरी पल्लवोत्थेन फेनेनारिष्टजेन वा ॥
लिप्तेऽङ्गे दाहरुङ्मोहच्छर्दिस्तृष्णा च शाम्यति ॥

कैथके पत्ते, बिजौरे नीबूके पत्ते, खट्टा बेर, बिदारीकन्द, लोध्र और अनारके पत्ते; इन्हें पीसकर लेप करने से अथवा बेरीके पत्तों को पीसकर थोड़े पानी में मिलाकर हाथसे फेन उठाकर वे फेन लगाने से या इसी प्रकार नीमके पत्तोंके फेन बना कर लगाने से शरीर की दाह, पीड़ा, मोह, छर्दि और तृष्णाका नाश होता है।

(९३८७) **कपीतनादित्वग्लेपः**

(ग. नि. । विसर्पा ३९)

कपीतनवटाश्वत्थप्लक्षोदुम्बरजास्त्वचः ।
लेपनाच्छोफवीसर्परक्तपित्तप्रसाधनाः ॥

सिरस, बड़, अश्वत्थ (पीपल वृक्ष), पिलखन और गूलर; इनकी छाल (पानीके साथ) पीस कर लेप करनेसे शोथ, विसर्प और रक्तपित्तका नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९३८८) कपोतवङ्कादियोगः

(ग. नि. । कुष्ठा. ३६)

कपोतवङ्का लशुनस्य शीर्षं
ससैन्धवं चित्रकमूलमिश्रम् ।
तदश्वलिण्डस्य रसेन पिष्टं
व्रणे प्रलेपो जननो हि रोम्णाम् ॥

ब्राह्मी, ल्हसन का शिर (ऊपर का भाग), सेंधा नमक और चीतामूल समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

इसे घोड़ेकी लीदके रसमें पीसकर लेप करने से व्रणके स्थान पर बाल निकल आते हैं ।

(९३८९) करञ्जमूललेपः

(यो. र. । कुरण्डरोगा.)

तण्डुलवारिविमिश्रं घृतपुरसञ्ज्ञं यदुच्यते लोके ।
तन्मूलपिष्टलेपं कुरण्डगलगण्डयोः कुर्यात् ॥

करञ्ज (कञ्जे) की जड़ को चावलों के धोवनके साथ पीसकर लेप करनेसे कुरण्ड और गलगण्ड रोग नष्ट होता है ।

(९३९०) करञ्जयोगः

(व. से. । व्रणा. ; शा. सं. । ख. ३ अ. ११ ; यो. र. । व्रणा. ; भा. प्र. । म. ख. २ व्रणा.)

करञ्जारिष्टनिर्गुण्डीलेपो हन्याद्व्रणक्रमीन् ।
लशुनस्याथवा लेपो हिङ्गुनिम्बभवोऽथवा ॥

करञ्ज, नीम और संभालु (के पत्तों)का लेप करनेसे अथवा ल्हसन को या हींग और नीमके पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे व्रणके कृमि नष्ट हो जाते हैं ।

(९३९१) करञ्जबीजादिलेपः

(ग. नि. । विस्फोटा. ४०)

करञ्जतरुबीजानि युक्तानि तिलसर्षपैः ।
एरण्डफलयुक्ता वा दुग्धिका स्फोटनाशिनी ॥

करञ्ज (कञ्जे) के बीज, तिल और सरसों समान भाग लेकर पीस कर लेप करनेसे या दुद्धी और अण्डीके बीजोंको एकत्र पीसकर लेप करनेसे विस्फोटक का नाश होता है ।

(रा. मा. में प्रथम लेपको दुष्ट पिडिका नाशक लिखा है ।)

(९३९२) करञ्जादिलेपः

(ग. नि. । ऊरुस्त. २१)

करञ्जः सुरसा बिल्वो देवदारुर्वचाऽर्जकः ।
तर्कारीमेषशृङ्गी च शोभाञ्जनकमिङ्गुदी ॥
उभे बृहत्यौ श्योनाकः श्वदंष्ट्रा खदिरासनौ ।
जलपिष्टैरिमैस्तुल्यैः कषायः परिषेचनम् ॥
एतैरेवौषधैस्तुल्यैः क्षीरपिष्टैः प्रलेपयेत् ।
अनेन विधिना क्षिप्रमूरुस्तम्भः प्रशाम्यति ॥

करञ्ज (कञ्जेकी छाल), तुलसी, बेलछाल, देवदारु, बच, अर्जक (छोटे पत्तेवाली तुलसी), अरणी, मेढ़ासिंगी, सहंजनेकी छाल, हिंगोट, छोटी और बड़ी कटेली, अरलुकी छाल, गोखरु, खैरसार और असना वृक्षका सार समान भाग लेकर दूधके साथ बारीक पीस लें । इसका लेप करनेसे और इन्हीं ओषधियोंके क्वाथका अवसेचन करने (तरैडा देने) से ऊरुस्तम्भ में लाभ होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९३९३) **करवीरजटालेपः**

(यो. त. । त. ८०)

करवीरजटालेपं यः करोति नरो मणौ ।
वीर्यस्तम्भं स लभते कार्णाटीसुरतेष्वपि ॥

इन्द्रि की मणि पर कनेरकी जड़का लेप करके स्त्रीसमागम करनेसे वीर्यस्तम्भन होता है ।

(९३९४) **करवीरत्वगादिलेपः**

(न. मृ. । त. ६)

करवीरत्वग्द्विकर्षं दुग्धे प्रस्थद्वये पचेत् ।
तच्च दुग्धं दधि कृत्वा मन्थनेन विलोडयेत् ॥
नवनीतं विनिष्कृष्य स्वौषधिं तत्र निक्षिपेत् ।
जातीफलमजेपालं विषमाखुपाषाणकम् ॥
विधिना मर्दयेत्खल्वे ततो लेपं समाचरेत् ।
त्यक्त्वाग्रभागसीमानौ ताम्बूले तं प्रवेष्टयेत् ॥
पिटिका चेद्भवेच्छुद्धनवनीतेन लेपयेत् ।
षण्ढत्वनाशनार्थाय लेपोयं समुदाहृतः ॥

२॥ तोले कनेरकी जड़ को पीसकर २ सेर दूधमें मिलाकर पकावें और फिर उसका दही जमा कर मक्खन निकालें । तदनन्तर जायफल, जमालगोटा, शुद्ध बछनाग और शंखिया (समान भाग मिलित २॥ तोला) उस मक्खनमें मिलाकर अच्छी तरह खरल करें ।

इन्द्री के अग्रभाग और सीवनको छोड़कर शेष भाग पर यह लेप मलकर ऊपर से नागरबेल पान बांध दें ।

इस प्रकार कुछ दिनों करनेसे नपुंसकता नष्ट हो जाती है ।

यदि लेप लगाने से इन्द्री पर फुंसियां निकल आवें तो उन पर धुला हुवा नवनीत (मक्खन) लगाना चाहिये ।

(रातको रोज़ लेप लगा कर नया पान बांधना और उसे हर समय बांधे रहना चाहिये । प्रयोग कालमें इन्द्री को ठंडा पानी न लगने देना चाहिये ।)

(९३९५) **करवीरलेपः**

(व. से. । उपदंश. ; शा. सं. । ख. ३ अ. ११)

करवीरस्य मूलेन परिपिष्टेन वारिणा ।
असाध्यापि व्रजत्यस्तं लिङ्गोत्था रुक् प्रलेपनात् ॥

कनेरकी जड़को पानीके साथ पीसकर लिङ्ग पर लेप करने से उपदंश जनित असाध्य लिंग पीड़ा भी नष्ट हो जाती है ।

(९३९६) **करवीरादियोगः**

(वा. भ. । उ. अ. ३६)

करवीरार्ककुसुममूललाङ्गलिकाकणाः ।
कल्कयेदारनालेन पाठामरिचसंयुताः ॥
एष व्यन्तरदष्टानामगदः सार्वकार्मिकः ॥

कनेरकी जड़, कनेरके फूल, आककी जड़, आकके फूल, कलियारीकी जड़, पीपल, पाठा और काली मिर्च समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

इसे कांजी में पीसकर लेप करने तथा पिलाने आदि से व्यन्तर (एक विशेष जाति के सर्प) का विष नष्ट होता है ।

(९३९७) **करवीरादिलेपः** (१)

(वा. भ. । चि. अ. १९)

करवीरनिम्बकुटजाच्छ-
म्पाकाच्चित्रकाच्च मूलानाम् ।
मूत्रे दर्वीलेपी क्वाथो लेपेन कुष्ठघ्नः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कनेरकी जड़, नीमकी जड़, कुड़ेकी जड़, अमलतासकी जड़ और चीतेकी जड़ समान भाग लेकर कूट कर आठ गुने गोमूत्र में पकावें और चौथा भाग रहने पर छानकर उसे पुनः पकावें। जब करछी को लगने लगे तो अग्निसे नीचे उतार कर ठंडा कर लें।

इसका लेप करने से कुष्ठ नष्ट होता है।

(९३९८) **करवीरादिलेपः** (२)

(न. मृ. । त. ६)

करवीरमूलत्वचं सम्मर्द्य बृहतीरसे।
विधिनालेपयेच्छिश्ने ध्वजस्योत्तेजनाय वै॥

कनेरकी जड़की छालको बड़ी कटेली के रसमें पीसकर लिंग पर लेप करनेसे कामोत्तेजना तीव्र हो जाती है।

(९३९९) **करवीरादिलेपः** (३)

(व. से. । ज्वरा. ; ग. नि. । ज्वरा.)

करवीरस्य पत्राणि[1] चन्दनं सारिवा तिलाः।
तृष्णाघ्नः शिरसाऽऽलेप आरनालेन पेषितः॥

कनेर के पत्ते (पाठान्तरके अनुसार फूल), लाल चन्दन, सारिवा और तिल समान भाग लेकर कांजीमें पीसकर शिरपर लेप करनेसे ज्वरकी पिपासा शान्त हो जाती है।

(९४००) **कर्कटयोगः**

(व. से. । बालरोगा.)

कर्कटशाकविपक्वक्षीरेण
चरणतललेपनादचिरात्।
दन्तदंष्ट्रागतशब्दं शमयति
बहुधैव दृष्टमिदम्॥

काकड़ासिंगी और सागोनकी लकड़ीके साथ सिद्ध दूधका (सोते समय) बालक के पैरोंके तलुवों पर लेप करनेसे नींद में दांत बजाना शीघ्रही बन्द हो जाता है। यह प्रयोग अनेकबारका परीक्षित है।

(काकड़ासिंगी और सागोन ३-३ माशे, दूध ४ तोले, पानी १६ तोले। पानी जलने तक पकावें।)

(९४०१) **कर्णिकारादिलेपः**

(र. चि. म. । स्त. ३)

कर्णिकारप्रसूनानि कृतसूक्ष्माणि काञ्जिके।
क्षेपणीयानि तेषां वै मर्दनं कारयेद्भिषक्॥
दिनत्रिचतुरादूर्ध्वं दद्रुनाशो भवेद्ध्रुवम्।
मण्डलं न च दृश्येत न च कण्डूः क्वचिद्भवेत्॥

छोटे अमलतास के फूलोंको बारीक पीसकर काञ्जीमें मिलाकर दाद पर मलें। इसी प्रकार ३-४ दिन करनेसे दाद अवश्य नष्ट हो जाता है और मण्डल या खाजका नाम तक नहीं रहता।

(९४०२) **कर्पूरादिलेपः**

(वृ. यो. त. । त. १४७)

कर्पूरं टङ्कणं सूतं तुल्यं पुनिरसं मधु।
सम्मर्द्य लेपयेल्लिङ्गं स्थित्वा यामं तथैव च॥
ततः प्रक्षाल्य रमयेद्वनितानां शतं सुखम्।
वीर्यस्तम्भकरं सम्यक्सम्यङ्नागार्जुनोदितम्॥

कपूर, सुहागा (कच्चा) और पारा समान भाग लेकर एकत्र खरल करें और फिर उसमें थोड़ा थोड़ा अगस्ति (अगथिया) का रस और शहद मिलाकर लेप सा बना लें।

१ पुष्पाणीति पाठान्तरम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसका लिंग पर लेप करके १ पहर तक वैसे ही रहने दें और फिर धोकर स्त्री समागम करें।

इस प्रयोगसे अत्यन्त वीर्यस्तम्भन होता है। यह प्रयोग नागार्जुन-कथित है।

(९४०३) **काकजङ्घादिलेपः**

(ग. नि. ; व. से. । विसर्प.)

काकजङ्घा शिरीषस्य पुष्पं श्लेष्मातकत्वचः।
कृतमालस्य पत्राणि वाजिगन्धा प्रियङ्गवः॥
प्रदेहं कफवीसर्पे कदुष्णं च प्रयोजयेत्॥

काकजंघा, सिरसके फूल, ल्हिसोडे की छाल, छोटे अमलतासके पत्ते, असगन्ध और फूलप्रियंगु समान भाग लेकर पानीके साथ पीस कर मन्दोष्ण करके लेप करनेसे कफज विसर्प में लाभ होता है।

(९४०४) **काकजङ्घालेपः**

(रा. मा. । व्रणा. २५)

दिनत्रयं वायसजङ्घिकायाः
शस्त्रप्रहारे कुरुते प्रलेपम्।
अजातपूयो व्यथया विहीनः
संरोहमभ्येति स तस्य शीघ्रम्॥

शस्त्राघात व्रण पर तीन दिन तक काकजंघा का लेप करनेसे वह बिना पके शीघ्र ही भर जाता है और व्यथा भी नहीं होती।

(९४०५) **काकादनीमूलयोगः**

(रा. मा. । विषा. ८ ; ग. नि. । सर्पविषा. ३)

अपहरति मण्डलिविषं पानेनालेपनेन वा सद्यः।
काकादन्यामूलं काञ्जिकपरिपेषितं पुंसाम्॥

चौंटलीकी जड़को कांजीमें पीसकर पिलाने और लेप करनेसे मण्डलीक सर्पका विष शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

(९४०६) **काकोदुम्बरिकायोगः**

(ग. नि. । अर्शो. ४)

काकोदुम्बरिकायास्तु क्षीरेण परिलेपिताः।
गुदजा घृतपानेन निपतन्त्याशु देहिनाम्॥

कठूमरकी जड़को दूधमें पीसकर लेप करने और घृत पान करनेसे अर्शके मस्से शीघ्र ही गिर जाते हैं।

(९४०७) **काञ्चन्यादिलेपः**

(यो. र. । गण्डमाला.)

जलेन पेषयेत्तुल्यं काञ्चनीचित्रकं विषम्।
सप्ताहं लेपयेद्यस्य यदिस्याद्गण्डमालिका॥
स्फुटन्ती नात्र सन्देहो स्फोटे लेपमिमं कुरु।
आरग्वधशिफां पिष्ट्वा सम्यक्तण्डुलवारिणा॥
तेन नस्यप्रलेपाभ्यां गण्डमालां समुद्धरेत्॥

हल्दी, चीतामूल और बछनाग समान भाग लेकर पानीके साथ पीस कर लेप करनेसे सात दिनमें गण्डमाला अवश्य फूट जाती है। जब गण्डमाला फूट जाए तो उसपर अमलतास की जड़को चावलों के पानीमें पीसकर लेप करना चाहिये और उसीकी नस्य देनी चाहिये।

(९४०८) **कान्तपाषाणादियोगः**

(र. र. रसा. खं. । उप. ५)

कान्तपाषाणचूर्णं तु तैलमध्वाज्यसंयुतम्।
काकतुण्डीफलं सर्वं सममेतत्तु कल्पयेत्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाण्डे रुद्ध्वा क्षिपेन्मासं धान्यराशावथोद्धरेत्।
अनेन लेपयेच्छीर्षं नस्यं कुर्यादनेन वै ॥
त्र्यहाद्भ्रमरसंकाशाः केशाः स्युर्वत्सरार्धकम् ।

कान्तपाषाण का चूर्ण, तेल, शहद, घी और काकतुण्डी (चौंटली) के फलोंका चूर्ण समान भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर पात्रमें बन्द करके अनाजके ढेरमें दबा दें। एक मास पश्चात् निकाल कर इसका बालों पर लेप करें और इसीकी नस्य लें।

इससे ३ दिनमें ही (सफेद) बाल भौंरेके समान काले हो जाते हैं और छः मास तक वैसे ही रहते हैं।

(९४०९) **कारवेल्लीजटायोग:**

(रा. मा. । स्त्रीरोगा. ३०)

योनिः स्त्रीणां निर्गताऽपिप्रवेशं
प्राप्नोत्यन्तः कारवेल्लीजटाभिः ।
सम्पिष्टाभिर्लेपनाद्............
.... ॥

यदि स्त्रीकी योनि बाहर निकल आई हो तो करेलीकी जड़को पीसकर लेप करनेसे वह भीतर प्रविष्ट हो जाती है।

(९४१०) **कार्पासपत्रलेप:**

(यो. त. । त. ७८)

कार्पासपत्रैः सम्पिष्टैः साज्यैर्लेपो विषापहः ।
वृश्चिकस्याथवा वत्सनाभलेपः प्रशस्यते ॥

कपासके पत्तोंको पीसकर घीमें मिला कर लेप करनेसे या बछनाग को पानीके साथ पीस कर लेप करनेसे बिच्छूका विष नष्ट हो जाता है।

(९४११) **कासमर्दमूललेप:**

(ग. नि. । कुष्ठा. ३६)

कासमर्दकजं मूलं सौवीरेण तु पेषितम् ।
दद्रुकिटिभकुष्ठानि जयेदेतत्प्रलेपनात् ॥

कासमर्द (कसौंदी) की जड़को कांजीमें पीसकर लेप करनेसे दद्रु और किटिभ कुष्ठ का नाश होता है।

(९४१२) **कासमर्दादिलेप:**

(वै. म. र. । पट. ११)

जम्बीरस्वरसे पिष्टकासमर्दाङ्घ्रिलेपनम् ।
विचर्चिकानां सर्वेषां परमौषधमुच्यते ॥

कसौंदीकी जड़को जम्बीरी नीबूके रसमें पीसकर लेप करनेसे विचर्चिका (तर खुजली) का नाश होता है। यह इस रोगकी परमौषध है।

(९४१३) **कुमारिकादिलेप:**

(र. र. । उपदंश.)

कुमारीरससम्पिष्टं जीरकं लेपनाद्रुजम् ।
तेन दाहश्च पाकश्च शान्तिमाप्नोति निश्चितम्

कुमारी (ग्वार पाठा) के रसमें जीरेको पीसकर लेप करनेसे उपदंश के व्रणों की पीड़ा, दाह और पाकका अवश्य नाश हो जाता है।

(९४१४) **कुमारीमूलयोग:**

(रा. मा. । स्त्रीरोगा. ३०)

अपत्यनाशप्रभवां निहन्ति
स्तनव्यथामाशु कृते प्रलेपे ।
स्त्रीणां हरिद्रासहितं कुमारी
मूलंविशालाप्रभवं कदाचित् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बच्चा नष्ट हो जाने पर स्त्रीके स्तनोंमें दूध एकत्रित होकर पीड़ा करने लगे तो कुमारी (ग्वार पाठा) की जड़ और हल्दी के चूर्णको एकत्र पीसकर लेप करना चाहिये। इससे पीड़ा शीघ्र ही शान्त हो जाती है।

अथवा इन्द्रायण की जड़ पानीमें पीसकर लेप करनेसे भी लाभ होता है।

(९४१५) **कुलत्थादिलेपः**

(वृ. मा.; यो. र.; ग. नि. । ज्वरा.; यो. त. । त. २०; भा. प्र. । म. ख. २ ज्वरा.)

कुलत्थः कट्फलं शुण्ठी कारवी च समांशकैः ।
सुखोष्णैर्लेपनं कार्यं कर्णमूले मुहुर्मुहुः ॥

कुलथी, कायफल, सोंठ और कलौंजी समान भाग लेकर बारीक पीस कर मन्दोष्ण करके बारबार लेप करनेसे कर्णमूल नष्ट हो जाता है।

(९४१६) **कुलीरशृङ्ग्यादिलेपः**

(ग. नि. । अर्शो. ४)

कुलीरशृङ्गी हस्त्यस्थि वचा लाङ्गलिका शुभा।
हिङ्गु कुष्ठं च तुत्थं च बिल्वं भल्लातकानि च ॥
अर्शसां पातनो लेपः सप्तरात्रात्प्रयोजितः ॥

काकड़ासिंगी, हाथीकी हड्डी, बच, कलियारी, हींग, कूठ, नीलाथोथा, बेलकी छाल और भिलावा; सब का चूर्ण समान भाग लेकर पानीके साथ पीस कर सात दिन लेप करनेसे अर्शके मस्से गिर जाते हैं।

(९४१७) **कुष्ठहरलेपः** (१)

(र. चि. म. । स्त. ४)

अश्वहा रजनी हेम प्रत्यक्पुष्पी च लाङ्गली ।
स्वर्जीक्षारं समं नीत्वा गोजलेन प्रपच्यते ॥
मण्डलानां च यत्स्थानं प्रोञ्छयित्वा प्रलेपयेत्।
ततः सम्भुद्भवन्त्यङ्गे विस्फोटाश्चातिदारुणा ॥
पूर्वं भवन्ति ते रक्ता पश्चात् कृष्णा भवन्ति हि
अल्पैरेव दिनैः पश्चात्प्राकृताङ्गं भविष्यति ॥

कनेर, हल्दी, धतूरा, लाल अपामार्ग, कलियारी और सज्जीखार समान भाग लेकर सबको बारीक पीसकर (८ गुने) गोमूत्रमें पकावें और गाढ़ा होने पर ठंडा करके सुरक्षित रक्खें।

मण्डलकुष्ठ के स्थान पर पछने लगा कर यह लेप लगानेसे उस स्थान पर भयंकर विस्फोट (फफोले) उत्पन्न हो जाते हैं। पहिले तो वे लाल होते हैं और फिर काले हो जाते हैं तथा थोड़े दिनों में त्वचाका रंग अन्य स्वस्थ स्थानके समान हो जाता है।

(९४१८) **कुष्ठहरलेपः** (२)

(र. चि. म. । स्त. ४)

सैन्धवं रविदुग्धेन मेलयित्वाऽथ मण्डलम् ।
प्रोञ्छयित्वा प्रलेपोयं नाशयेत्सकलं गदम् ॥

सेंधा नमकके चूर्णको आकके दूधमें घोट कर लेप करने से मण्डल कुष्ठ नष्ट हो जाता है। कुष्ठ स्थान पर लेप लगानेसे पहिले पछने लगाने चाहियें।

(९४१९) **कुष्ठादिलेपः** (१)

(रा. मा. । शिरोरोगा.)

कुष्ठं समीरणरिपोर्जटया समेत–
मत्यम्लकाञ्जिकयुतं परिपेष्य तेन ।
लिम्पेच्छिरोर्तिशमनाय शिरोऽथ वाऽऽर-
नालप्रपिष्टतरुणै रुबुकस्य मूलैः ॥

कूठ और अरण्डमूल को अत्यन्त खट्टी कांजी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में पीसकर लेप करनेसे या अरण्डके तरुण वृक्षकी जड़को कांजीमें पीसकर लेप करनेसे शिरपीड़ा नष्ट हो जाती है।

(९४२०) कुष्ठादिलेपः (२)

(ग. नि. । भगन्दरा. ७)

कुष्ठं फलत्रितयकाञ्चनपुष्करत्वङ्-
मुस्तावचात्रिकटुकातिविषाजमोदाः।
गोमूत्रमिश्रितमिदं सकलं गुडेन
कुर्याद्भगन्दरविकारयुतः प्रलेपम् ॥

कूठ, हर्र, बहेड़ा, आमला, हरताल, पोहकरमूल, दालचीनी, नागरमोथा, बच, सोंठ, मिर्च, पीपल, अतीस, अजमोद और गुड़ समान भाग लेकर गोमूत्रमें बारीक पीसकर लेप करनेसे भगन्दरमें लाभ होता है।

(९४२१) कुष्ठादिलेपः (३)

(व. से. । विसर्पा.)

कुष्ठं शताह्वा सुरदारुमुस्ता
वाराहिकुस्तुम्बुरुकृष्णगन्धाः।
वातेऽर्कवंशार्तगलाश्च योज्याः
सेके प्रलेपेषु तथा घृतेषु ॥

कूठ, सोया, देवदारु, नागरमोथा, बाराही कन्द, कुस्तुम्बरु, सहंजनेकी जड़की छाल, आककी जड़, बांस और पियाबांसा समान भाग लेकर बारीक पीस कर लेप करनेसे अथवा इन ओषधियों के क्वाथ का तरैडा देनेसे या इनके कल्क और क्वाथके साथ सिद्ध घृत लगानेसे वातज विसर्पमें लाभ होता है।

(९४२२) कुष्ठादिलेपः (४)

(यो. र. । शीतपित्ता.)

ससैन्धवेन कुष्ठेन सर्पिषा लेपमाचरेत्।
सुरसास्वरसैर्वाऽथ लेपयेत्परमौषधम् ॥

कूट और सेंधा नमकके समान भाग मिश्रित चूर्णको घीमें मिलाकर लेप करनेसे या तुलसीके स्वरसका लेप करनेसे शीतपित्त (पित्ती रोग) नष्ट हो जाता है। यह इस रोगकी परमौषध है।

(९४२३) कुष्ठादिलेपः (५)

(रा. मा. ;ग. नि. । शिरोरोगा. ;व. से. । क्षुद्ररो.)

तैलेन मृत्कर्परभृष्टकुष्ठ-
चूर्णान्वितेन प्रविलिप्तमूर्ध्नः।
कण्डूश्च दाहश्च विनाशमेति
शिरोव्रणं शुष्यति रूषिका च ॥

कूठके चूर्णको मिट्टीके ठीकरेमें डालकर मन्दाग्नि पर भून कर तेलमें मिला लें। इसे शिरमें लगानेसे शिर की खाज, दाह और अरुंषिका का नाश होता तथा शिरोव्रण सूख जाते हैं।

(९४२४) कृष्णतिलादिलेपः

(रा. मा. । मुखरोगा. ५)

कृष्णैस्तिलैरसितजीरकजीरकाभ्यां
सिद्धार्थकैश्च विहितैर्मसृणप्रपिष्टैः।
दुग्धान्वितो वदनचन्द्रमसः प्रलेपो
व्यङ्गं विलुम्पति मुहुः परिशीलयमानः ॥

काले तिल, काला जीरा, सफेद जीरा और सफेद सरसों समान भाग लेकर दूधके साथ बारीक पीस कर मुख पर लेप करनेसे कुछ दिनोंमें व्यङ्ग (चेहरेकी झाई) का नाश हो जाता है।

For Private And Personal Use Only

(९४२५) **कृष्णधत्तूरादिलेपः**

(रसे. चि. म. । अ. ९)

कृष्णधत्तूरजं मूलं गन्धतुल्यं विचूर्णयेत् ।
मर्द्य जम्बीरनीरेण लेपनात् सिध्मनाशनम् ॥

काले धतूरे की जड़ का चूर्ण और गंधक समान भाग लेकर दोनोंको जम्बीरी नीबूके रसमें घोटकर लेप करनेसे सिध्म नष्ट हो जाता है ।

(९४२६) **कृष्णलोहादियोगः**

(व. से.; यो. र. । नेत्ररोगा.)

कृष्णलोहरजस्ताम्रशङ्खविद्रुमसिन्धुजैः ।
समुद्रफेनकासीसस्रोतोऽञ्जनसुमस्तुभिः ॥
लेपनं वा कृतं नस्यं परमुत्तममर्म्मणि ॥

कृष्णलोह, ताम्र, शंख, प्रवाल, सेंधा नमक, समुद्रफेन, कसीस और स्रोतोऽञ्जन (सफेद सुरमा); इनके समान भाग मिलित बारीक चूर्ण को मस्तु में पीस कर लेप करना तथा इसकी नस्य लेना नेत्रार्म रोगमें अत्यन्त उपयोगी है ।

(९४२७) **केतक्याद्लेपः**

(र. र. । कर्णरोगा.)

केतकीशिग्रुलवणमारनालेन पेषयेत् ।
कर्णमूलस्थितं स्फोटं लेपनाच्च व्यथापहम् ॥

केतकी की जड़, सहंजनेकी जड़ और सेंधा नमक समान भाग लेकर कांजीके साथ पीस कर लेप करनेसे कर्णमूलके फोड़ेकी पीड़ा नष्ट हो जाती है ।

(९४२८) **कोद्रवमसीलेपः**

(रा. मा. । शिरोरोगा.)

कोद्रवपलालसिद्धा मसी
प्रलेपे प्रयोजिता शिरसः ।
अपहरति रोगमचिरा-
द्दारुणमपि दारुणाभिख्यम् ॥

कोदों की पुराल (नाल—अन्नरहित पौदों) को जलाकर पानीके साथ पीसकर शिर पर लेप करनेसे ' दारुण रोग ' नष्ट हो जाता है ।

(९४२९) **कोलादिलेपः**

(च. द. । वातव्या.)

कोलं कुलत्थं सुरदारु रास्ना-
माषा उमा तैलफलानि कुष्ठम् ।
वचाशताह्वे यवचूर्णमम्ल-
मुष्णानि वातामयिनां प्रदेहः ॥

बेर, कुलथी, देवदारु, रास्ना, उड़द, अलसी, तैलबीज (तिल, रेंडी, सरसों आदि), कूठ, बच, सोया और जौ; इनके समान भाग मिलित चूर्ण को कांजीमें पीस कर गर्म करके वातव्याधिमें पीड़ा-स्थान पर लेप करना चाहिये ।

इति ककारादिलेपप्रकरणम्

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ ककारादिधूपप्रकरणम्

(९४३०) ककुभादिधूपः

(यो. र. । कृम्य.)

काकुभकुसुमविडङ्गं लाङ्गलिभल्लातकं तथोशीरम् ।
श्रीवेष्टकसर्जरसं चन्दनमथ कुष्ठमष्टमं दद्यात् ॥
एषा सुगन्धो धूपः सकृत्कृमीणां विनाशकः प्रोक्तः ।
शय्यासु मत्कुणानां शिरसि च गात्रेषु यूकानाम् ॥

अर्जुनके फूल, बायबिडंग, कलियारी की जड़, भिलावा, खस, धूप सरल, राल, चन्दन और कूठ समान भाग लेकर बारीक कूट लें ।

इसकी धूपसे कृमि नष्ट हो जाते हैं । यदि खाटको इसकी धूप दी जाय तो खटमलोंका और शिर तथा शरीरको दी जाय तो जुवों का नाश हो जाता है ।

(९४३१) कटुतुम्ब्यादिधूपः

(व. से. । स्त्रीरोगा. ; ग. नि. । मूढगर्भा.)

कटुतुम्ब्यहिनिर्मोककृतवेधनसर्षपैः ।
कटुतैलान्वितैर्योनेर्धूपः पातयतेऽपराम् ॥

कड़वी तूंबी, सांपकी कांचली, अमलतास और सरसों समान भाग लेकर एकत्र कूट लें । इसे सरसों के तेलमें मिलाकर योनिको धूप देनेसे अपरा निकल जाती है ।

(९४३२) कटुतैलादिधूपः (मत्स्यदंशे)

(रा. मा. । विषा. २८)

धूपः पुनः कटुकतैलनृकेशसक्तु-
युक्तोऽस्य दंशपदके सुतरां प्रशस्तः ।

मछली काट खाय तो मनुष्यके बाल और सत्तू (जौका सत्तू) कड़वे तेलमें मिलाकर दंश-स्थानपर उसकी धूप देनी चाहिये । यह उत्तम प्रयोगहै

(९४३३) कस्तूरिकादिधूपः

(रा. मा. । स्त्रीरोगा.)

कस्तूरिघनसारकुङ्कुमनखैर्लाक्षातुरुष्कान्वितैः
श्रीखण्डागुरुकुष्ठमाक्षिकयुतैर्धूपो वराङ्गे कृतः ।
स्त्रीणां हन्ति विगन्धतां
वितनुते सौगन्ध्यमत्युत्तमं
सौभाग्यं कुरुते मृदुत्व-
मसमं धत्ते तनोति श्रियम् ॥

कस्तूरी, कपूर, केसर, नखी, लाख, शिलारस (या श्रीवास धूप), चन्दन, अगर और कूठ समान भाग लेकर एकत्र कूट लें । इसे शहदमें मिलाकर योनिको धूप देनेसे योनिकी दुर्गन्ध नष्ट होकर उत्तम सुगन्ध आने लगती है ।

(९४३४) काकमाचीफलधूपः

(ग. नि. । नेत्ररोगा. ३)

काकमाचीफलैकेन घृतयुक्तेन बुद्धिमान् ।
धूपयेत्पिल्लरोगार्तं पतन्ति कृमयोचिरात् ॥

मकोयके एक फल को घृत लगाकर उसे आगपर डालकर आंखमें उसकी धूनी देनेसे तुरन्त आंखसे कृमि निकल कर पिल्ल रोग नष्ट होजाता है ।

(९४३५) कुष्ठादिधूपः

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ११)

कुष्ठं पथ्या तथा निम्बपत्राणि च मनःशिला ।
तस्मान्मधु घृतं मिश्रं निर्धूमाङ्गारके क्षिपेत् ॥
धूपयेद् गुदजांस्तेन यथा सम्पद्यते सुखम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कूठ, हर्र, नीमके पत्ते और मनसिल समान भाग लेकर एकत्र कट लें। इसमें घी और शहद मिलाकर निर्धूम अंगारों पर डालकर अर्शके मस्सों को धूनी देनेसे पीड़ा कम हो जाती है।

इति ककारादिधूपप्रकरणम्

अथ ककाराद्यञ्जनप्रकरणम्

(९४३६) **कणाञ्जनम्**

(वै. जी. । विला. ३)

निराकरोति नक्तान्ध्यं सगोमयरसा कणा ।
यथा रतेन रमणी रमणस्य महाबलम् ॥

गायके गोबर के रसमें पीपलके चूर्णको घोट कर उसका अञ्जन लगाने से रतौंधा नष्ट होजाता है।

(९४३७) **कतकफलाद्यञ्जनम्**

(व. से. । नेत्ररोगा. ; ग. नि. । नेत्ररो. ३ ; वृ. मा. । नेत्ररोगा.)

कतकस्य फलं शङ्खं तिन्दुकं[1] रूप्यमेव च ।
कांस्ये निघृष्य स्तन्येन क्षतशुक्रार्तिरोगजित् ॥

निर्मलीका फल, शंखनाभि, तेंदु के फलकी गुठली (पाठान्तरके अनुसार लोध) और चांदी; इन्हें कांसीके पात्रमें स्त्रीके दूधके साथ घिसकर आंखमें लगाने से क्षतशुक्र का नाश होता है।

(ग. नि. में अन्यत्र इसी प्रयोगमें मुलैठी अधिक है तथा ताम्रपात्रमें घिसने को लिखा है।)

(९४३८) **कपित्थादिवर्तिः**

(वृ. मा. । अपस्मारा. ; वृ. यो. त. । त. ८९)

कपित्थाऽऽशारदान्मुद्गान्मुस्तोशीरयवांस्तथा ।
सव्योषान्बस्तमूत्रेण पिष्ट्वा वर्तीः प्रकल्पयेत् ॥

१ तिल्वकमिति पाठान्तरम्

अपस्मारे तथोन्मादे सर्पदष्टे गरार्दिते ।
विषपीते जलमृते चैताः स्युरमृतोपमाः ॥

कैथका गूदा, हरी मूंग, नागरमोथा, खस, जौ, सोंठ, मिर्च और पीपल; इनके समान भाग मिलित चूर्णको बकरेके मूत्र में खरल करके बत्तियां बनावें।

अपस्मार, उन्माद, सर्पदंश, विषविकार और पानीमें डूबनेसे हुई मूर्छा में इस वर्तिका अंजन अमृतके समान गुणकारी है।

(९४३९) **कमलकन्दादियोगः**

(वै. म. र. । पटल १७)

कृष्णाष्टमीनिशायां पङ्कज
मूलात्तमृत्तिकान्तःस्थम् ।
कन्दं तमसि सुपिष्टं निद्रां
कुरुतेऽञ्जनात् सायम् ॥

कृष्ण पक्षकी अष्टमीको रात्रि में जमीनके भीतरसे कमलकी जड़ निकालकर उसे अन्धेरे में ही घिसकर आंखमें आंजनेसे नींद आ जाती है।

(९४४०) **करञ्जबीजवर्तिः**

(हा. सं. । स्था. ३ अ. १८)

करञ्जबीजं सह सैन्धवेन
रसोनपत्रस्य रसं च यत्र ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मार्कवं पथ्यां च वचां जलेन
पिष्ट्वाञ्जनं हन्ति दिनस्य तन्द्राम् ॥

करञ्ज बीज (कंजेकी मींगी), सेंधा नमक, ल्हसनके पत्तोंका रस, भंगरा, हर्र और बच समान भाग लेकर पानीके साथ अत्यन्त बारीक पीसकर आंखोंमें अंजन लगानेसे दिनमें तन्द्रा आना बन्द हो जाता है ।

(९४४१) करञ्जबीजाद्यञ्जनम्

(वा. भ. । उ. अ. १६ ; वृ. मा. । शिरोरोगा.)

करञ्जबीजं सुरसं सुमनः कोरकाणि च ।
संक्षुद्य साधयेत्क्वाथे पूते तत्र रसक्रिया ॥
अञ्जनं पिल्लभैषज्यं पक्ष्मणां च प्ररोहणम् ॥

करञ्जबीज (कंजेकी गिरी), तुलसी और चमेलीकी कलियां समान भाग लेकर एकत्र कूटकर आठ गुने पानीमें पकावें और चौथा भाग रहने पर छानकर पुनः पकाकर गाढ़ा करें ।

इसका अंजन लगाने से पिल्ल रोग नष्ट होता और पलकों के बाल निकल आते हैं ।

(९४४२) करभास्थ्यञ्जनम्

(वृ. मा. । नेत्ररोगा. ; ग. नि. । नेत्ररोगा.)

तालस्य नारिकेलस्य तथैवारुष्करस्य च ।
करीरस्य[^1]च वंशानां कृत्वा क्षारं परिस्रुतम् ॥
करभास्थिकृतं चूर्णं क्षारेण परिभावितम् ।
सप्तकृत्वोऽष्टकृत्वो वा सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥
एतच्छुक्रेष्वसाध्येषु कृष्णीकरणमुत्तमम् ।
यानि शुक्राणि साध्यानि तेषां परममञ्जनम् ॥

[^1]: करवीरस्येति पाठान्तरम् ।

ताड़ वृक्षका काष्ठ, नारियल, भिलावा, करीर (पाठान्तरके अनुसार कनेर) और बांस; इनकी राख समान भाग लेकर ४ गुने पानी में घोलकर क्षारनिर्माण विधिसे स्वच्छ पानी टपका लें ।

तदनन्तर हाथीके बच्चेकी हड्डीके बारीक चूर्णको इस क्षार-जलकी ७-८ भावना देकर बारीक चूर्ण बनावें ।

इसे लगानेसे असाध्य नेत्रशुक्र (फूला) भी काला हो जाता है और साध्य शुक्रके लिये तो यह परमोत्तम अञ्जन है ।

(९४४३) करवीरादियोगः

(ग. नि. । नेत्ररोगा. ३)

सद्यः प्रकुपिते नेत्रे करवीराग्रपल्लवैः ।
अञ्जयेच्छान्तये यावन्मुखं हि तिक्तकं भवेत् ॥

जब आंखें दुखने आवें तो शीघ्र ही कनेरकी कोंपलोंका रस निकालकर बारबार आंखमें आंजें, यहां तक कि मुंह कड़वा हो जाय ।

(९४४४) कर्पूराद्यञ्जनम्

(र. चं. । शिरोरोगा.)

कर्पूराञ्जनसीसपारदकणा-
तीक्ष्णानि पिष्ट्वा सकृत् ।
नद्यावर्तरसैर्विशोष्य
मधुना पिष्ट्वा पुनर्भाजने ॥
शार्ङ्गे स्फाटिक एव वा
विनिहितं शुक्लार्मकाचापहम् ।
तैमिर्यं च निराकरोति
सहसा नेत्रेऽञ्जनं सर्वदा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कपूर, सुरमा, सीसा, पारद, पीपल और तीक्ष्णलोह भस्म समान भाग लेकर प्रथम पारदमें सीसेको मिलाकर खरल करें और जब दोनों एक जीव हो जाएं तो उसमें अन्य ओषधियोंका चूर्ण मिला कर अच्छी तरह घोटकर उसे तगरके रसकी भावना दें और फिर शहदमें घोट कर सींगके या स्फटिक मणिके पात्रमें भरकर सुरक्षित रक्खें।

इसे आंखमें लगानेसे शुक्र, अर्म, काच और तिमिरका शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(९४४५) कार्पासाद्यञ्जनम्

(यो. र. । नेत्ररोगा.)

कार्पासीफलजम्ब्वाम्रजलैर्घृष्टं रसाञ्जनम् ।
मधुयुक्तं चिरोत्थं च चक्षुःस्रावमपोहति ॥

लाल कपासके फल (डोडे), तथा जामन और आम (की गुठली) एवं रसौत समान भाग लेकर बारीक पीस लें।

इसे शहदमें मिलाकर आंखमें आंजनेसे पुराना नेत्रस्राव (ढलका) रोग नष्ट हो जाता है।

(९४४६) कासीसाद्यञ्जनम् (१)

(व. से. । नेत्ररोगा.)

कासीसजातिकलिकारसा-
ञ्जनक्षौद्रमरिचतुल्यांशैः ।
अपनयति पिल्लकत्वं पिष्टैः पयसाञ्जनं सद्यः ॥

कसीस, चमेलीकी कली, रसौत और काली मिर्च; इनका बारीक चूर्ण तथा शहद समान भाग लेकर सबको दूधके साथ घोटकर अञ्जन बनावें।

इसे आंखमें लगाने से पिल्लरोग शीघ्र नष्ट हो जाता है।

(९४४७) कासीसाद्यञ्जनम् (२)

(वृ. मा. । नेत्ररोगा.)

पुष्पाख्यतार्क्ष्यजसितोदधिफेनशङ्ख-
सिन्धूत्थगैरिकशिलामरिचैः समांशैः ।
पिष्टैस्तु माक्षिकरसेन रसक्रियेयं
हन्त्यर्मकाचतिमिरार्जुनवर्त्मरोगान् ॥

पुष्पाञ्जन, रसौत, सफेद सुरमा, समन्दरफेन, शंख, सेंधा नमक, गेरु, मनसिल और काली मिर्च; इनके समान भाग मिलित बारीक चूर्णको शहदमें घोट कर आंखमें लगाने से अर्म, काच, तिमिर, अर्जुन और वर्म रोगोंका नाश होता है।

(९४४८) कुमारीवर्तिः

(ग. नि. । नेत्ररोगा. ३)

स्यादभयातुल्यसमा तुल्याद्ध्यष्टमो मरिच भागः।
वर्तिरियं हि कुमारी गतमपि चक्षुर्निवर्तयति ॥

हर्रका चूर्ण ८ भाग, नीलेथोथेका चूर्ण ८ भाग और काली मिर्चका चूर्ण १ भाग लेकर पानीमें घोटकर बत्तियां बनावें।

इसे आंखमें लगानेसे नष्ट चक्षु भी ठीक हो जाती है।

(९४४९) कुलत्थाद्यञ्जनम्

(वै. जी. । वि. ३)

सम्यक्स्विन्नाश्छगलजरसे काननोत्थाः
कुलत्थाश्चैलबद्धाः परिहृततुषाः मीढसीधुन्ति-
नीभिः ।
सूक्ष्मं पिष्टाः पटुरसनिशाचूर्णपूर्णाः क्षपायां
चक्षुःक्षिप्ताः सकलरुधिरं संहरन्ति त्र्यहेण ॥

बनकुलथी (चाकसू) को कपड़ेकी पोटलीमें बांध कर दोलायन्त्र विधिसे बकरीके मूत्रमें पकावें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और फिर उसके छिलके अलग करके बारीक पीस कर उसमें सेंधा नमक, बोल और हल्दीका चूर्ण (प्रत्येक उसके बराबर) मिलाकर अच्छी तरह खरल करके सुरमा सा बारीक बना लें।

इसे रातको आंखमें भरनेसे ३ दिनमें रक्तज नेत्राभिष्यन्द नष्ट होता है।

(९४५०) केशराद्यञ्जनम्

(रा. मा. । बालरोगा. ११)

केशरदार्वीलाक्षासुवर्णगैरिकशिलाकृमिघ्नकृतम्। सकलनयनामयघ्नं बालानामञ्जनं कथितम् ॥

केसर, दारुहल्दी, लाख, सोनागेरु, मनसिल और बायबिड़ंग; इनके समान भाग मिलित चूर्णको खरल करके अंजन बनावें।

यह अञ्जन बालकों के समस्त नेत्ररोगों को नष्ट करता है।

(९४५१) कोकिलागुटी

(ग. नि. । नेत्ररोगा. ३)

व्योषायश्चूर्णसिन्धूत्थत्रिफलाञ्जनसंस्कृता। गुटिका जलपिष्टेयं कोकिला तिमिरापहा ॥

सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, लोहचूर्ण, सेंधा नमक, हर्र, बहेड़ा, आमला, और सुरमा, इनके समान भाग मिलित चूर्णको पानीमें पीस कर गुटिका बनावें।

इसे आंखमें लगानेसे तिमिर रोग नष्ट होता है।

(९४५२) कौलीतिकावर्तिः

(ग. नि. । नेत्ररोगा.)

**पलानि विंशतिं दार्व्या मूलतः सम्यकल्पयेत्। जले च षोडशगुणे रात्रिमेकां निधापयेत् ॥
मृदावग्नौ क्वाथयेत चतुर्थांशावशेषितम्। निःस्राव्य क्वाथयेद्भूयस्त्वजाक्षीरेण संयुतम् ॥
पादिकेन भिषग्दद्यादवलेहत्वमागतम्। अदग्धं तु तं कल्कं छायायां परिशोषयेत् ॥
कौलीतिका वर्तिरियं सर्वनेत्ररुजापहा। सर्वाभिष्यन्दशमनी स्वयं प्रोक्ता पिनाकिना ॥**

१०० तोले दारुहल्दी की जड़ को कूट कर १६ गुने (३२ गुने) पानी में एक रात भिगोनेके पश्चात् मन्दाग्नि पर पकावें। जब चतुर्थांश पानी शेष रह जाए तो उसे छानकर उसमें उसका चतुर्थांश बकरीका दूध मिला कर पुनः पकावें और जब अवलेह के समान गाढ़ा हो जाय तो वर्तियां बना कर छाया में सुखा लें। पकाते समय इस बात का ध्यान रक्खें कि औषध जल न जाए।

इसे आंख में लगाने से समस्त प्रकार के नेत्राभिष्यन्द नष्ट होते हैं। यह वर्ति स्वयं भगवान शंकर द्वारा आविष्कृत है।

इति ककाराद्यञ्जनप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ ककारादिनस्यप्रकरणम्

(९४५३) **कटुतुम्बिमूलनस्यम्**

(रा. मा. । मुखरोगा. ५)

संपेषितः पर्युषितोदकेन
पटान्तनिश्चोतननिर्मलश्च ।
घ्राणोद्भवार्शांसि निहन्ति
सद्यो नस्येन कन्दः कटुतुम्बिकायाः ॥

कड़वी तूंबीकी जड़ को बासी पानी में पीस कर कपड़े में लपेट कर निचोड़ें । इस प्रकार निकाले हुवे स्वच्छ रस की नस्य लेनेसे नाक के भीतर को अर्श (मस्सों) का शीघ्र ही नाश हो जाता है ।

(९४५४) **कपित्थपत्रयोगः**

(वै. म. र. । पटल ३)

कपित्थपत्राणि विमर्दितानि
हिक्कासु जिघ्रेदथवाऽर्कतप्तम् ॥

कैथ के पत्तों को पीस कर (रस निकाल कर उसे) धूप में गर्म कर के सूंघने से हिका का नाश होता है ।

(९४५५) **करञ्जादिनस्यम्**

(व. से. शिरोरोगा.)

करञ्जशिग्रुबीजानि पत्रकं शर्करा वचा ।
सर्वेषां शीर्षरोगाणामेतच्छीर्षविरेचनम् ॥

करञ्ज (कञ्जे) के बीजोंकी मींगी, सहजने के बीज, तेजपात, खांड और बच; सबके समान भाग मिश्रित चूर्णको एकत्र मिला कर खरल कर लें ।

यह नस्य समस्त शिरोरोगोंमें शिरोविरेचन कराने के लिये उपयोगी है ।

(९४५६) **कर्कोटमूलादिनस्यम्**

(व. से. । पाण्डुवा)

नस्यं कर्कोटमूलस्य घ्रेयं वा जालिनीफलम् ।
गुडूचीपत्रकल्कं वा पिबेत्तक्रेण कामली ॥
भक्तं तक्रेण भुञ्जीत स जहात्याशु कामलाम् ॥

कामला रोगमें ककोड़े की जड़ के चूर्ण की या कड़वी तोरी के चूर्णकी नस्य देनी और गिलोय के पत्तों को तक्र के साथ पीस कर उसी में मिला कर पिलाना चाहिये ।

पथ्य—तक्र भात ।

इस उपचार से कामला रोग शीघ्र नष्ट हो जाता है ।

(९४५७) **काकोदुम्बरियोगः**

(व. से. । वातव्या)

काकोदुम्बरिदुग्धैः सरामठैर्हरेत्सर्वयोगविद् ।
कपिकच्छुमूलयुक्तैर्नस्यैरपबाहुजां पीडाम् ॥

कठूमरके दूधमें हींग और कौंचकी जड़का चूर्ण मिलाकर उसकी नस्य देने से **"अपबाहुक"** नामक वातव्याधि नष्ट हो जाती है ।

(९४५८) **कार्पासमज्जादिनस्यम्**

(ग. नि. । शिरोरोगा. १; वा. भ. । उ. अ. २४)

कार्पासमज्जात्वङ्मुस्तं सुमनःकोरकाणि च ।
नस्यमुष्णाम्बुपिष्टानि सर्वमूर्धरुजापहम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कपासके बीज (बिनौले) की मींगी, दालचीनी, नागरमोथा और चमेलीकी कलियां समान भाग लेकर बारीक चूर्ण करके गरम पानीमें पीसें और उसे कपड़ेमें रख कर निचोड़ लें। इसकी नस्य लेने से समस्त प्रकार के शिरशूल नष्ट होते हैं।

(९४५९) कुङ्कुमादिनस्यम्

(व. से. । शिरोरोगा.)

शर्कराकुङ्कुमं द्राक्षा चतुर्थांशेन निक्षिपेत् ।
नवनीते ततस्तेन कृत्वैक्यं नस्यमाचरेत् ॥
नस्यमेतत्प्रशंसन्ति सूर्यावर्त्तार्द्धभेदके ।
शिरोरोगे परं वापि वातपित्तसमुद्भवे ॥

खांड, केसर और द्राक्षा (मुनक्का) १-१ भाग ले कर बारीक पीस लें और फिर उसमें १२ भाग मक्खन मिला लें।

इसकी नस्य लेनेसे सूर्यावर्त, अर्धावभेद तथा वातपित्तज शिरोरोगों का नाश होता है।

(९४६०) कुलकमूलनस्यम्

(व. से. । विषा.)

कुलकमूलनस्येन कालदष्टोऽपि जीवति ॥

कुलक (कुचला, पटोल या मरवा) की जड़की नस्य देनेसे काल के समान भयंकर सर्प का विष भी नष्ट हो जाता है।

(९४६१) कुष्माण्डादिनस्यम्

(वै. म. र. । पट. १)

कूष्माण्डपुष्पस्वरसेन नस्यं
सविश्वसारेण कृतं ज्वरघ्नम् ।
वातात्मजेनाहृतमौषधं
तद्घ्राणानुजस्येव नयेत्प्रबोधम् ॥

पेठे के फूलों के रसमें सोंठका (अदरकका) रस मिलाकर नस्य देने से ज्वर नष्ट होता है।

(९४६२) कृतमालादिनस्यम्

(व. से. । शिरोरोगा.)

कृतमालपल्लवरसैः खर-
मञ्जरीमूलकल्कनवनीतम् ।
नस्येन जयति नियतं
सूर्यावर्तं सुदारुणं पुंसाम् ॥

छोटे अमलतासके पत्तों के रसमें अपामार्गकी जड़को बारीक पीस कर उसमें नवनीत (मक्खन) मिलाकर नस्य देने से भयंकर सूर्यावर्त रोग भी अवश्य नष्ट हो जाता है।

इति ककारादिनस्यप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ ककारादिरसप्रकरणम्

(९४६३) कङ्कुष्ठचूर्णम्

(वृ. यो. त. । त. १०५ ; व. से. । उदरा.)

कङ्कुष्ठचूर्णमुष्णाम्बु पीतं संरेच्य मानवम् ।
अष्टाभ्योऽप्युदरेभ्यश्च द्रुतं कुर्याद्विनिर्गतम् ॥

उष्ण जलके साथ कंकुष्ठ (उसारे रेवन्द) का चूर्ण खानेसे विरेचन होकर आठों प्रकारका उदर रोग नष्ट हो जाता है।

(मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक ।)

(९४६४) कङ्कुष्ठशोधनम्

(र. प्र. सु. । अ. ६ ; र. र. स. । पू. अ. ३ ; आ. वे. प्र. । अ. १०)

पर्वते हिमसमीपवर्तिनि
जायतेऽतिरुचिरं कङ्कुष्ठकम् ।
एकमेव नलिकाभिधानकं
रेणुकं तदनु चापरं भवेत् ॥
पीतवर्णमसृणं च वै गुरु
स्निग्धमुत्तमतरं प्रचक्षते ।
श्यामपीतमतिहीनसत्वकं
रेणुकं हि कथितं द्वितीयकम् ॥
वदन्ति कङ्कुष्ठमथापरे हि
सद्यः प्रसूतस्य च दन्तिनः शकृत् ।
तत्कृष्णपीताभमतीव रेचनं
तृतीयमाहुर्विबुधा भिषग्वराः ॥

× × ×

कङ्कुष्ठकं तिक्तकटूष्णवीर्यं
विशेषतो रेचनकं करोति ।
गुदार्तिगुल्मव्रणशूलहृत्परं
प्रचक्षते शास्त्रविदः पुराणाः ॥

× × ×

शुण्ठ्यम्भसा भावितमेव [illegible]
कङ्कुष्ठमायाति हि सत्यमुक्तम् ॥

× × ×

सत्वाकृष्टिर्न च प्रोक्ता यत [illegible] हि तत् ।
यवमात्रं भजेदेन विरेक[illegible] न संश[illegible] ॥
क्षणादामज्वरं [illegible]ति जाते सति विरेचने ।
ताम्बूलेन समं चैवं भक्षितं सारयेद्ध्रुवम् ॥
बब्बूलमूलिकाक्वाथं सौभाग्याजाजीसंयुतम् ।
भूयो भूयः पिबेद्धीमान् विषं कङ्कुष्ठजं जयेत् ॥

कंकुष्ठ हिमालय के निकटवर्ती पर्वतों में होता है । यह देखनेमें सुन्दर मालूम होता है ।

कंकुष्ठ दो प्रकारका होता है; एक तो नलिकाकार और दूसरा चूर्ण रूप ।

नलिकाकार कंकुष्ठ पीला, स्निग्ध और भारी होता है । यह उत्तम माना जाता है । दूसरे प्रकारका (चूर्ण रूप) कंकुष्ठ श्यामता लिये हुवे पीला होता है । इसमें सत्व बहुत कम होता है और इसीसे यह निकृष्ट होता है ।

कोई कोई हाथीके नवजात बच्चेके मल को भी तीसरी प्रकारका कंकुष्ठ कहते हैं । यह काले-पीले रंगका और अत्यन्त रेचक होता है ।

× × ×

कंकुष्ठ तिक्त, कटु, ऊष्ण और विशेष रेचक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होता है। यह गुदपीड़ा, गुल्म, व्रण और शूलको नष्ट करता है।

× × ×

कंकुष्ठको सोंठके क्वाथकी भावना देनेसे वह शुद्ध हो जाता है।

× × ×

कंकुष्ठ सत्वमय होता है अत एव उसका सत्व नहीं निकाला जाता।

इसे १ जौके बराबर पानके साथ खिलाने से विरेचन होकर आमज्वर तुरन्त नष्ट हो जाता है।

× × ×

बबूर (कीकर) की जड़के क्वाथमें सुहागेकी खील और जीरेका चूर्ण मिलाकर पिलानेसे (अन्यथा प्रयुक्त) कंकुष्ठका विष नष्ट हो जाता है।

(९४६५) **कज्जलीयोगः (१)**

(वृ. यो. त. । त. ११० ; भै. र.)

वरुणादिकषायेण रसगन्धककज्जली।
भुक्ता निहन्ति माषैका बाह्यमन्तश्च विद्रधिम् ॥

पारे गन्धककी कज्जली वरुणादि गणके कषायके साथ सेवन करनेसे बाह्य विद्रधि तथा अन्तर्विद्रधि नष्ट हो जाती है।

मात्रा—१। माशा (व्यवहा. मा. २ रत्ती।)

(९४६६) **कज्जलीयोगः (२)**

(र. च.; यो. र. । मदात्यया.)

धात्रीस्वरसनिपीता रस-
गन्धककज्जली सितासहिता।
हरति मदात्ययरोगमाशु
गरुत्मानिवोरगान्सहसा ॥

पारे गंधककी कज्जली को आमलेके रस की भावना देकर सुखाकर उसमें खांड मिला कर सेवन करनेसे मदात्यय रोग नष्ट हो जाता है।

(**मात्रा**—२ रत्ती।)

(९४६७) **कज्जलीयोगः (३)**

(र. च. । उपदंशा.)

कर्षमात्रं रसं शुद्धं द्विकर्षं गन्धकं स्मृतम्।
विधिवत्कज्जलीं कृत्वा तच्च गोघृतसंयुतम् ॥
माषमात्रं प्रतिदिनं दद्यादेवं त्रिसप्तकम्।
गोधूमान्नं घृतं पथ्यं कारयेल्लवणं विना ॥
उपदंशापहः श्रेष्ठो योगो मुनिभिरीरितः।

शुद्ध पारा १। तोला तथा शुद्ध गंधक २॥ तोले ले कर कज्जली बनावें।

इसे १। माशेकी मात्रानुसार गोघृतके साथ सेवन करने से ३ सप्ताहमें उपदंश नष्ट हो जाता है। उपदंश के लिये यह एक उत्तम योग है।

पथ्य—गेहूंकी रोटी और घी।

अपथ्य—लवण।

(व्यवहा. मा. ३ रत्ती।)

(९४६८) **कज्जलीरसायनम्**

(र. र. स. । उ. अ. २६)

रसगन्धकमध्वाज्यशिलाजत्वम्लवेतसम्।
द्विमाषप्रमितं वेगान्मासमात्राज्जरां जयेत् ॥

१-१ भाग शुद्ध पारद और गंधककी कज्जली बना कर उसमें १-१ भाग शहद, घी, शिलाजीत और अम्लवेतका चूर्ण मिला कर अच्छी तरह खरल करें।

इसे २ माशे की मात्रानुसार सेवन करने से एक मास में जरा (वृद्धावस्था) का नाश हो जाता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९४६९) कणाद्यलोहम्

(र. र.; र.का. धे. । ग्रहण्य.; रसे. सा. सं. । ग्रहण्य.)

कणानागरपाठाभिस्त्रिवर्गद्वितयेन च ।
बिल्वचन्दनह्रीबेरैः समं लोहं प्रदापयेत् ॥
सर्वातीसारशमनः सङ्ग्रहग्रहणीहरः ।
सर्वोपद्रवसंयुक्तामपि हन्यात्प्रवाहिकाम् ॥
नानेन सदृशो लोहो विद्यते ग्रहणीगदे ॥

पीपल, सोंठ; पाठा, हर्र, बहेड़ा, आमला, दालचीनी, इलायची, तेजपात, बेलगिरी, चन्दन और सुगन्धवाला; इनका चूर्ण १-१ भाग तथा लोहभस्म सब के बराबर लेकर सबको एकत्र खरल करके रक्खें ।

इसके सेवन से समस्त प्रकारके अतिसार, संग्रहणी और समस्त उपद्रव युक्त प्रवाहिका-पेचिश-का नाश होता है ।

ग्रहणी रोग के लिये इससे उत्तम कोई लोह-प्रयोग नहीं है ।

(मात्रा—२ रत्ती ।)

(९४७०) कनकसुन्दरी गुटिका

(कनकप्रभावटी, कनकसुन्दररसः)

(र. प्र. सु. । अ. ८; भै. र.[1] । ज्वराति.; र. रा. सु.; रसें. सा. सं; र. का. धे. । ज्वराती.)

मारीचं चेटङ्कणं हिङ्गुलं च
गन्धाश्मा वै पिप्पलीवत्सनाभम् ।
धूर्तस्यैवं बीजकानीह शुद्धा-
न्येवं कृत्वा तच्च चूर्णं विधेयम् ॥
प्रातः सायं भक्षितं वल्लमात्रं
जूर्तिं रक्तं नाशयेच्चातिसारम् ।
दध्यन्नं वा भोजयेत्तक्रयुक्तं
हन्यादेवं चाग्निमान्द्यं सुतीव्रम् ॥

काली मिर्च, सुहागेकी खील, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध गन्धक, पीपल, शुद्ध बछनाग, और शुद्ध धतूरे के बीज; सबके समान भाग चूर्णको एकत्र मिला कर खरल करें ।

मात्रा—३ रत्ती ।

इसे प्रातः सायं सेवन करनेसे ज्वरातिसार और रक्तातिसार तथा घोर अग्निमांद्यका नाश होता है ।

पथ्य—दही, भात, तक्र ।

(९४७१) कनकसुन्दरो रसः (१)

(र. चि. म. । स्त. ७; र. का. धे[1] । विद्रध्य.)

गद्याणद्वितयं सूतं गन्धकं तत्समं स्मृतम् ।
तत्समं मरिचं चैव सङ्ग्राह्यं च तथाभ्रकम् ॥
शृङ्गीविषं च गृह्णीयादेवमेतद्विघृष्यते ।
निर्गुण्डिकारसैः साकं मर्दयेदेकतः कृतम् ॥
गोलकं कारयेद्गाढं तत्पश्चादुपरि न्यसेत् ।
अन्धमूषागतं कृत्वा वालुकायन्त्रमध्यगम् ॥
तस्योपरि भवेद्भृङ्गरसोनत्रिफलाजलैः ।
आपूर्यते निरुध्याथ वह्निः स्याद्दिनसप्तकम् ॥
पच्यते च शनैस्तावत्पश्चाच्छीतं समुद्धरेत् ।
रक्तिकैकं द्वयं चाथ वल्लं वास्य प्रयच्छति ॥

---

१ भै. र. में जयाके रसमें खरल करके गोली बनानेको लिखा है । तथा यही प्रयोग "कनक सुंदर रस" के नामसे भी दिया है जिसमें जया के स्थानमें विजया (भांग)की भावना लिखी है ।

१ र. का. धे. में गन्धक के समान ताम्र है तथा मरिचके स्थानमें स्वर्ण लिखा है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्निपाते समायाते सूतमेनं प्रयोजयेत् ।
दुःस्थिते चाप्यतीसारे विज्वरे सज्वरेपि वा ॥
अग्निमान्द्ये तथा दद्यादुदरे च महोदरे ।
विद्रधौ रुद्ररूपे च सामे कामं च दीयते ॥
ग्रहण्यादिविकारेषु कामलासु च पाण्डुके ।
अष्ठीलादिगदेष्वेष प्रयुक्तो हन्ति तान्गदान् ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, काली मिर्च, अभ्रक भस्म और शुद्ध बछनाग समान भाग लेकर प्रथम पारे गंधक की कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य ओषधियोंका चूर्ण मिलाकर संभालू के रसमें खरल करें और उसका एक दृढ़ गोला बनाकर उसे अन्धमूषामें बन्द करके बालुका यन्त्रमें रक्खें। बालुके ऊपर भांग और ल्हसनका रस तथा त्रिफले का क्वाथ भरकर हाण्डीके मुख पर शराव ढककर सन्धिको बन्द कर दें और फिर उसे सात दिन तक मन्दाग्नि पर पकावें । तत्पश्चात् स्वांग शीतल होने पर औषधको निकालकर पीसकर रख लें ।

मात्रा—१ से ३ रत्ती तक ।

यह रस सन्निपात, भयंकर ज्वरातिसार, अतिसार, अग्निमांद्य, उदर रोग, उदरवृद्धि, विद्रधि, ग्रहणी विकार, पाण्डु, कामला और अष्ठीला आदि का नाश करता है ।

(९४७२) कनकसुन्दरो रसः (२)

(र. रा. सु. ; र. का. धे. ; र. र. । अतिसारा ; रसे. चि. म. । अ. ९)

शुद्धसूतं समं गन्धं मरिचं टङ्कणं तथा ।
स्वर्णबीजं समं मर्द्यं भृङ्गद्रावैर्दिनार्द्धकम् ॥
मूततुल्यं विषं योज्यं रसः कनकसुन्दरः ।
युक्तो गुञ्जाद्वयं हन्ति वातातीसारमद्भुतम् ॥
दध्यन्नं दापयेत्पथ्यमाजं वाथ गवां दधि ॥

१-१ भाग शुद्ध पारद और गंधककी कज्जली करके उसमें १-१ भाग काली मिर्चका चूर्ण, सुहागेकी खील, धतूरेके शुद्ध बीजोंका चूर्ण और शुद्ध बछनागका चूर्ण मिलाकर २ पहर भंगरेके रसमें खरल करके २-२ रत्तीकी गोलियां बना लें।

यह रस वातातिसारमें अद्भुत गुण दिखलाता है।

पथ्य—गाय या बकरीकी दही और भात ।

कपर्दिकामारणं तथा शोधनम्

वराटिकामारणं तथा वराटिकाशोधनं देखिये ।

(९४७३) कफकुठाररसः

(र. चं. । कफा.)

शुद्धं सूतं विषबलिसमं शाणमानं त्रयस्त्रिः ।
बीजं रौक्म्यं पिचुपरिमितं टङ्कणं शाणयुग्मम् ॥
जातीपुष्पं त्वकरकरभं सुष्ठु वङ्गं पलैकम् ।
देयं गुञ्जात्रिमात्रं गलगतकफध्वंसनोऽयं कुठारः॥

शुद्ध पारा, शुद्ध बछनाग और शुद्ध गंधक ३॥-३॥ माशे; लोह भस्म ११। माशे, धतूरेके शुद्ध बीज १। तोला, सुहागेकी खील ७॥ माशे तथा जावत्री, अकरकरा और बंग भस्म ५-५ तोले लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य ओषधियोंका चूर्ण मिलाकर अच्छी तरह खरल करें ।

मात्रा—३ रत्ती ।

यह रस गलेमें भरे हुवे कफको नष्ट करता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९४७४) कफान्तकरसः

(र. का. धे. । कासा.)

अमृतं टङ्कमात्रं स्यान्निशाटङ्कं द्विसप्तधा ।
टङ्कणं दशटङ्कं स्यात्कणा स्यात्तावदेव तु ॥
रक्तिकाद्वितयं खादेत्पर्णखण्डेन बुद्धिमान् ।
कफान्तकरसो ह्येष कासश्वासनिबर्हणः ॥

शुद्ध बछनागका चूर्ण १ भाग, हल्दीका चूर्ण १४ भाग, सुहागेकी खील १० भाग और पीपलका चूर्ण १० भाग लेकर सबको एकत्र खरल करें।

मात्रा—२ रत्ती।

इसे पानमें रखकर खानेसे कास श्वासका नाश होता है।

(९४७५) कर्पूरशोधनम्

(यो. र.)

गोदुग्धे त्रिफलाक्वाथे भृङ्गद्रावे समांशके ।
मर्दयेद्यामात्रं तु कर्पूरं शुद्धिमाप्नुयात् ॥

गोदुग्ध, त्रिफलाका क्वाथ और भंगरेका रस समान भाग लेकर एकत्र मिलाकर उसमें १ पहर तक घोटनेसे कपूर शुद्ध हो जाता है।

(९४७६) कर्पूरादिगुटिका

(ग. नि. । परि. गुटिका. ४)

कर्पूरभृङ्गीमुनमत्तबीजं
जातीफलं लोहमृताभ्रकं च ।
रसोऽथ गन्धं त्रपु नागशुल्वे
एला विषं धान्यकटुत्रिकं च ॥
तालीसपत्रं त्वथ नागपुष्पं
तमालपत्रं कपिकच्छुबीजम् ।
सत्त्वं गुडूच्याः क्षुरकस्य बीजं
वटी विधेया सितया समेता ॥
वातप्रमेहं सकफं सपित्तं
श्वासं च कासं बहुसन्निपातान् ।
बलं च हीनं स्वरभङ्गजाड्यं
निहन्ति कामं खलु दीपयत्यपि ॥

कपूर, काकड़ासिंगी, धतूरेके बीज, जायफल, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, बंग भस्म, नाग भस्म, ताम्र भस्म, इलायची, शुद्ध बछनाग, धनिया, सोंठ, मिर्च, पीपल, तालीसपत्र, नागकेसर, तमालपत्र (तेजपात), कौंचके बीज, गिलोयका सत और तालमखाना समान भाग लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य ओषधियोंका चूर्ण तथा (सबके बराबर) खांड मिलाकर (पानीके साथ खरल करके ५-५ रत्तीकी) गोलियां बना लें।

इनके सेवनसे वातज प्रमेह, पित्तप्रमेह, कफप्रमेह, श्वास, कास, सन्निपात, निर्बलता, स्वरभंग और जड़ताका नाश होता तथा कामाग्नि दीप्त होती है।

(९४७७) कलायचूर्णादिगुटिका

(च. द. । परिणामशूला. २७ ; बं. से. ; र. का. धे. ; वृ. मा. । शूला)

कलायचूर्णभागौ द्वौ लोहचूर्णस्य[1] चापरः ।
कारवेल्लपलाशानां रसेनैव विमर्दितः ॥

१ लोहकिट्टस्येति पाठान्तरम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्षमात्रां ततश्चैकां भक्षयेद् गुटिकां नरः ।
मण्डानुपानात्सा हन्ति जरत्पित्तं सुदारुणम् ॥

मटरका चूर्ण २ भाग और लोहभस्म (पाठान्तरके अनुसार मण्डूर भस्म) १ भाग लेकर दोनोंको एकत्र मिलाकर करेले और पलाशके रस में १-१ दिन घोटकर १।-१। तोलेकी गोलियां बना लें।

इसे मण्डके साथ सेवन करनेसे दारुण परिणाम शूल नष्ट हो जाता है।

(व्यवहा. मा. ४ रत्ती ।)

(९४७८) कल्पपादपो रसः

(र. का. धे. । रसाय.)

विंशभागमितं ताम्रं सूताद् भागत्रया शिला ।
तावन्त्यैव प्रमाणेन भव्यभल्लातकानि च ॥
भवन्ति तानि तावन्ति तन्मध्ये सकलानि च ।
हण्डिकायन्त्रमध्यस्थं ताम्रे सर्वं समाक्षिपेत् ॥
द्विगुणं गन्धकं दत्त्वा अधस्ताच्चोर्ध्वकं क्षिपेत् ।
पञ्चयामावधिर्यावत्तावच्चुल्यां परिक्षिपेत् ॥
उत्तार्यते स्वयंशीतं तत्ताम्रं मृतमुच्यते ।
पिप्पल्याः स्वरसेनादौ चिञ्चिकास्वरसेन तत् ॥
भावनाश्च पुटान्दद्यात्प्रत्येकं पञ्चपञ्च च ।
रेचनाय ततः स्थाप्यं किञ्चित्तस्माच्च ताम्रतः ॥
पिप्पल्या सहितं दद्यात्समं पर्णेन माषकम् ।
तदेतद्रेचयेत्सम्यग् यावद्यामावधिर्भवेत् ॥
नैव क्लेदो नातिमूर्च्छा वान्तिर्भ्रान्तिर्न विद्यते
अथान्यद्यद्रवेत्ताम्रं भावयेत्त्रिफलाम्बुभिः ॥
काकमाचीरसस्याथ भावनात्रितयं त्रयम् ।
धुत्तूरस्य रसस्यापि भृङ्गराजस्य भावनाः ॥
चतुर्गुञ्जामितं दद्यात्त्रिकटुस्त्रिफला समा ।
जातीफलं लवङ्गं च चूर्णं कृत्वाऽथ निःक्षिपेत् ॥
पर्णखण्डेन तत्सार्धं पुनस्ताम्बूलचर्वणम् ।
मुखशुद्ध्यर्थमेतस्य तत्फलश्रुतिरुच्यते ॥
सन्निपातेऽपि सञ्जाते विषमे वाग्निनाशने ।
कुष्ठे सकुष्ठे दुष्टे च सव्यये पवनात्यये ॥
सामे निरामे कामे च दातव्योऽसौ महारसः ।
घस्मरे चाप्यपस्मारे कासे श्वासे विशेषतः ॥
पाण्डुरोगे च विड्भेद उदरे अबलेऽपि च ।
घृतादिकश्च यद्युक्तं तत्सर्वं भस्मसाद्भवेत् ॥
कालतः पलितं हन्ति खलितश्च विशेषतः ।
वज्रकायो भवत्येव निरपायो विशेषतः ॥
दीर्घायुः कामरूपी च स्त्रीणामत्यन्तवल्लभः ।
उत्साही स्मृतिमान प्रायो मेधावी सुस्वरः परः
ब्रह्मास्त्रं यद्यसिद्धं स्याद्वरेश्चक्रश्च निष्फलम् ।
शिवशूलमथायाति शक्रशस्त्रं निवर्तते ॥
तदाऽयं सर्वरोगेषु प्रयुक्तः प्रतिहन्यते ।
स्वयं स्वयम्भूर्भगवान् यदि वेधा विधानवित् ॥
जानाति नो नूनमस्य रसराजस्य तन्महः ।
य एनं सेवते नित्यं न कालकलनां व्रजेत् ॥
भृङ्गराजस्य यः कल्पो यः कल्पःशाल्मलीभवः
हरीतक्याश्च यः कल्पो दन्तीकल्पोऽपि विद्यते ॥
सोमराज्याः परः कल्पो रुदन्त्या अपि यः परः ।
भल्लातकस्य यः कल्पस्तथा निर्गुण्डिकाभवः ॥
लोहकल्पोऽपि यः प्रोक्तः कल्पो गोक्षुरकस्य च
ब्रह्मयोगोऽस्ति यो भूमौ विष्णुयोगो महोत्तमः ॥
रुद्रयोगस्तु विख्यातो यागियोगोऽपि दृश्यते ।
गुटिका मूलिका मर्त्ये विद्यन्ते देहसाधने ॥
एतस्मान्नापराः सर्वे विद्यन्ते नाधिका रसाः ।
एवं सम्यग् हृदि ध्यात्वा स्मर्तव्यः कल्पपादपः ॥

शुद्ध ताम्रके पत्र २० भाग, शुद्ध पारद २०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाग, शुद्ध मनसिल ३ भाग, भिलावे ४३ भाग और शुद्ध गंधक १७२ भाग लेकर प्रथम पारद, मनसिल और गंधक को एकत्र खरल करके कज्जली बनावें और फिर भिलावों को कूटकर उसमें मिला दें। तदनन्तर एक हाण्डी में इसमेंसे आधी कज्जली भर कर उस पर उपरोक्त ताम्र पत्र रख दें और उनके ऊपर शेष कज्जली बिछाकर हाण्डीके मुख पर शराव ढक कर उस पर ४–५ कपड़ मिट्टी कर दें एवं उसे चूल्हे पर चढ़ाकर ५ पहर पाक करें। तत्पश्चात् स्वांग शीतल होने पर हाण्डीमें से ताम्रको निकाल लें। इस प्रकार ताम्रकी भस्म हो जाती है।

(हाण्डी अच्छी बड़ी, मजबूत और ४–५ कपड़मिट्टी की हुई होनी चाहिये और समस्त औषध भरनेके पश्चात् आधी हाण्डी खाली रह जानी चाहिये एवं ऊपरके शराव में धुवां निकालनेको एक छिद्र रहना चाहिये। ऐसा न किया जायगा तो गंधक के जलने के समय हाण्डीके टूट जानेका भय रहेगा)

अब इस ताम्र–भस्मको पीपलके स्वरस में खरल करके यथाविधि पुट लगावें। इसी प्रकार पीपलके स्वरसकी ५ पुट देनेके पश्चात् ५ पुट इमलीके स्वरसमें घोट घोटकर दें।

इसमें से १ माशा रस पीपलके चूर्णमें मिला कर पानके साथ खिलानेसे भली प्रकार विरेचन हो जाता है और १ पहर तक दस्त आते रहते हैं। इससे क्लेद, वमन और भ्रान्ति नहीं होती और न ही अधिक मूर्च्छा आती है।

(**व्यवहारिक मात्रा**—१ रत्ती।)

उपरोक्त ताम्रभस्ममें से आवश्यकतानुसार विरेचन कराने के लिये थोड़ी भस्म पृथक् निकाल कर सुरक्षित रक्खें और शेष को त्रिफलाके क्वाथ, तथा मकोय, धतूरा और भंगरा; इनके रसकी पृथक् पृथक् ३–३ भावना दें। बस **"कल्प पादप रस"** तैयार हो गया।

मात्रा—४ रत्ती। (**व्यवहा. मा.**–१ रत्ती)

अनुपान—त्रिकुटा–चूर्ण, त्रिफला–चूर्ण, जायफलका चूर्ण और लौंगका चूर्ण समान भाग लेकर सबको एकत्र मिला लें। उपरोक्त रस और यह चूर्ण पानमें रख कर रोगी को खिलावें तथा उसके पश्चात् मुख शुद्धिके लिये दूसरा पान खिलावें।

इसके सेवन से सन्निपात ज्वर, विषमज्वर, अग्निमांद्य, कुष्ट, वातव्याधि, आमवात, कामज्वर, अपस्मार, कास, श्वास, पाण्डु, अतिसार, उदररोग और निर्बलताका नाश होता है।

इसके सेवन से घृतादि समस्त भारी पदार्थ शीघ्र ही पच जाते हैं।

इसे दीर्घकाल तक सेवन करनेसे पलित और विशेषतः खालित्य (गंज) का नाश होता है तथा शरीर वज्रके समान दृढ़ और निरोग हो जाता है; आयु दीर्घ होती है और रूप लावण्यकी वृद्धि होकर मनुष्य स्त्रीप्रिय हो जाता है। इसके प्रभावसे उत्साह, स्मृति, मेधा और स्वरकी वृद्धि होती है।

यदि ब्रह्मास्त्र, हरिका चक्र, शिवका त्रिशूल और इन्द्रका वज्र निष्फल हो जाय तो यह रस भी निष्फल हो सकता है अन्यथा नहीं। इसके पूर्ण गुणोंको तो कोई जानता भी नहीं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आयुर्वेदमें भृङ्गकल्प, शाल्मलि कल्प, हरीतकी कल्प, दन्तीकल्प, सोमराजी कल्प, रुदन्ती कल्प, भल्लातक कल्प, निर्गुण्डी कल्प, लोहकल्प और गोक्षुर कल्पादि अनेक उत्तमोत्तम प्रयोग हैं परन्तु इस रससे उत्तम कोई भी नहीं है।

(९४७९) कस्तूरीरसः

(र. का. धे. । पाण्डु.)

लोहरजो गिरिजारज ईश-
रजो मृगजरेणवो वृद्धाः ।
क्रमतः खल्वे पिष्टाः कणाङ्घ्रि-
भाविता दिवसम् ॥
कृत्वा गोलममीषां शुष्कं
यन्त्रे प्रवेश्य कच्छपके ।
कृतमुद्रं मृल्लिप्तं सिकता-
यन्त्रे पचेत् त्रिदिनम् ॥
मन्दाग्निना सुशीताद्यन्त्रादुद्धृत्य मेलयेन्मृगजैः ।
षोडशमगधामधुभरभुपानं सर्वरोगेषु ॥
कस्तूरीरससञ्ज्ञो जरारुजां
नाशनोऽलवणभुजाम् ।
अतिवृष्यो वाजीकृत्क्षु-
द्बोधी कामिनीवशकृत् ॥

लोह भस्म १ भाग, शुद्ध गंधक २ भाग और शुद्ध पारद ३ भाग लेकर सबको एकत्र खरल करके १ दिन पीपल के क्वाथमें घोटकर, गोला बनाकर सुखा लें। तदनन्तर पानीसे भरी हुई कढ़ाई में मिट्टी का कूंडा रखकर उसके बीचमें भीगी हुई मिट्टीसे एक कुंडाला बनावें और उसमें वह गोला रखकर उसे लोहेकी कटोरीसे ढक कर सन्धिको अच्छी तरह बन्द कर दें तथा उस कटोरीको रेतीसे ढक दें। अब इस यन्त्रको बालूसे भरी हुई अच्छी बड़ी हाण्डी में रखकर ३ दिन तक मन्दाग्नि पर पाक करें। रेती कढ़ाईके किनारों तक आजानी चाहिये परन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि रेती पानीमें न गिरे। यदि पानी सूख जाय तो और डाल देना चाहिये।

तदनन्तर उसके स्वांग शीतल होने पर निकाल कर उसमें ४ भाग कस्तूरी मिलाकर खरल करके रक्खें।

इसे यथोचित मात्रानुसार १६ काली मिर्चों के चूर्ण और मधुके साथ सेवन करने और लवण रहित आहार करनेसे जराव्याधिका नाश हो जाता है। यह अत्यन्त वृष्य, वाजीकर और क्षुधावर्धक है।

(९४८०) काञ्चनपोटलीरसः

(र. चि. म. । स्त. ७)

शुद्धवर्णसुवर्णस्य गाल्य गद्याणको दश ।
तेषां स्वच्छानि पत्राणि कण्टवेध्यानि कारयेत्
चूर्णं सुवर्णमाक्षीकं दशगद्याणकं स्मृतम् ।
काञ्चनारतरोर्मूलत्वचं श्रीखण्डमर्दितम् ॥
तेन स्वर्णस्य पत्राणां लेपो देयश्च सर्वतः ।
शरावे तानि वै क्षिप्त्वा मृदा वस्त्रेण लेपयेत् ॥
हस्तमात्रां समाधाय गर्तां वन्योपलैर्भृताम् ।
तद्गर्भे सम्पुटं मुक्त्वा वह्निं क्षिप्त्वा प्रदीपयेत् ॥
न म्रियते पुटैकेन तदा देयं पुटद्वयम् ।
म्रियते हेमपत्राणि कर्तव्यो नैव संशयः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्येकं पञ्चकं ग्राह्यं शुद्धगन्धकसूतयोः ।
मधुना हेमभूत्या च समं पेष्यो दिनद्वयम् ॥
कपर्दीषु च पीतासु चूर्णं क्षेप्यं सुसूक्ष्मकम् ।
द्वाराण्यपि कपर्दीनां गोधूमचूर्णतस्ततः ॥
जलमिश्रेण रोध्यानि शोषयेदातपे पुनः ।
लिप्त्वा दग्धाश्मचूर्णेन मध्यं कुहरिकस्य च ॥
तदप्यातपसंशुष्कं मध्ये क्षेप्या कपर्दिकाः ।
चूर्णलिप्तपिधानं च द्वारे देयमधोमुखम ॥
क्षिपेत्प्रागुक्तगर्तायां वेष्टितं वस्त्रमृत्स्नया ।
पूर्वयुक्त्या पुटो देयः स्वाङ्गशीतां समुद्धरेत् ॥
दृश्यते यदि कृष्णाभाः पुटो देयः पुनस्तदा ।
द्वाराणि पूर्ववद्रुद्ध्वा स्वाङ्गशीतां समुद्धरेत् ॥
स्वाङ्गशीतलतां प्राप्ताः पेषयेत्ताश्च शोभनाः ।
तदायं रसराजेन्द्रो जातः काञ्चनपोटली ॥
सर्वरोगेषु दातव्यो रसो वल्लचतुष्टयः ।
दद्याज्ज्वरातिसारेषु ज्वरयो श्लेष्मवातयोः ॥
समसुष्णोदकेनैव समं शीतेन पैत्तिके ।
अष्टादशसु कुष्ठेषु जीर्णे क्षीणबलेषु च ॥
मन्दाग्नावतिसारे च मरिचाज्येन संयुतः ॥

५ तोले उत्तम जातिके शुद्ध स्वर्णके कण्टक-वेधी पत्र बनवा लें । तत्पश्चात् कचनारकी जड़की छाल और सफेद चन्दन के रसमें ५ तोले शुद्ध स्वर्णमाक्षिकको खरल करके उपरोक्त स्वर्ण पत्रों पर उसका लेप कर दें । एवं उन्हें शरावसम्पुटमें बन्द करके १ हाथ गहरे और इतनेही लम्बे चौड़े गढ़ेमें उपले (वन कण्डे) भर कर उसमें फूंक दें । यदि एक पुटमें सोनेकी भस्म न हो जाय तो पुनः इसी प्रकार पुट दें । दो पुटमें भस्म अवश्य हो जायगी।

अब २॥-२॥ तोले शुद्ध पारद और गंधक एवं उपरोक्त संपूर्ण स्वर्ण-भस्मको एकत्र मिलाकर कज्जली बनावें और फिर उसे २ दिन शहदमें घोटकर पीली कौड़ियों में भर दें और उनके मुखको पानीमें भिगोए हुवे गेहूंके आटेसे बन्द करके धूपमें सुखा लें ।

अब एक कुहरि (छोटी हांडी) तथा उसके ढकने के भीतर पत्थरके चूनेका लेप करके धूपमें सुखा लें और उक्त कौड़ियोंको उसमें भरकर उसके ऊपर वह ढकना उलटा करके ढक दें तथा सन्धिको बन्द करके उस कुहरिका पर कपरमिट्टी करके सुखा लें और उपरोक्त गढ़ेमें रखकर पुट लगा दें । यदि एक पुटके पश्चात् कौड़ियों में कुछ श्यामता दिखलाई दे तो पुनः उस कुहरिका को बन्द करके एक पुट और लगा दें एवं स्वांगशीतल होने पर निकाल कर पीस लें ।

मात्रा—४ वाल । (**व्य. मा.** ४ रत्ती ।)

इसे ज्वरातिसार और कफज तथा वातज ज्वरमें उष्ण जलके साथ एवं पित्तज्वरमें शीतल जलके साथ देना चाहिये । कुष्ठ, निर्बलता और मन्दाग्नि तथा अतिसारमें इसे काली मिर्चके चूर्ण एवं घीके साथ खिलाना चाहिये ।

(९४८१) कान्तपाषाणशोधनम्

(रसे. सा. सं. ; र. म.)

राजपट्टं महापट्टं शिखीग्रीवं विराटकम् ।
चूर्णितं कान्तपाषाणं महिषीक्षीरसंयुतम ॥
विपचेदायसे पात्रे गोघृतेन समन्वितम् ।
लवणे न तथा क्षारे शोभाञ्जनरसे क्षिपेत् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अम्लवर्गस्य तोयेन दिनं घर्मे विभावयेत् ।
तथैव दोलिकायन्त्रे दिवसं पाचयेत्सुधीः ॥
कान्तपाषाणशुद्धौ तु रसकर्म्म समाचरेत् ॥

कान्तपाषाण (लोहचुम्बक) को राजपट्ट, महापट्ट, शिखीग्रीव और विराटक भी कहते हैं।

कान्तपाषाणको पीसकर (दोलायन्त्र विधिसे) लोहपात्रमें, भैंसके दूध, गोघृत, नमकके पानी, जवाखारके पानी तथा सहंजनेके रसमें (पृथक् पृथक् २-२ दिन) स्वेदित करके १ दिन अम्लवर्ग* के रसमें धूपमें भावना दें और फिर अम्लवर्गके रसमें १ दिन दोलायन्त्र विधिसे स्वेदित करें। इस विधिसे कान्त पाषाण शुद्ध हो जाता है।

(९४८२) कान्तलोहादियोगः

(र. चं. । वाजीकरणा.)

कान्ताभ्रत्रिफलाविडङ्ग
रजनीताप्याब्ददेवद्रुमः ।
व्योषैलाग्निपुनर्नवाङ्घ्रि-
गिरिजाङ्कोलैः समं गुग्गुलुम् ॥
पिष्ट्वा भृङ्गजलेन सूक्ष्म-
गुटिकां खादेद्यथासात्म्यतो ।
मेहः श्लेष्मसमीरणोल्वण
गदेष्वन्येषु वा पूरुषः ॥

कान्तलोह भस्म, अभ्रक भस्म, त्रिफला, बायबिड़ंग, हल्दी, स्वर्णमाक्षिक भस्म, नागरमोथा, देवदारु, त्रिकुटा, इलायची, चीतामूल, पुनर्नवामूल, शुद्ध शिलाजीत और अंकोल १-१ भाग तथा शुद्ध गूगल सबके बराबर लेकर सबको एकत्र मिलाकर भंगरेके रसमें खरल करके गोलियां बना लें।

इसके सेवनसे प्रमेह और वातकफज अन्य रोग नष्ट होते हैं।

(मात्रा—२ माशे ।)

(९४८३) कामकलावटी

(र. र. । वातर.)

अङ्कोटमूलं त्रिफला कुण्डली मरिचं निशा ।
सप्तच्छदा कुटी कुष्ठं प्रत्येकं कार्षिकं भवेत् ॥
विडङ्गं मुस्तकं काचं तालकं टङ्कणं त्रिवृत् ।
रसगन्धकलोहानां प्रत्येकार्द्धपलं क्षिपेत् ॥
गुग्गुलं त्रिपलं दत्त्वा घृतेन परिपेषितम् ।
वटी कामकलानाम गहनानन्दभाषिता ॥
चतुर्मासा वटी खाद्या गोमूत्रेण जडी कृता ।
वातरक्तं निहन्त्याशु नानादोषसमुद्भवम् ॥
कुष्ठं नानाविधं हन्ति नानादोषसमुद्भवम् ।
दद्रुं कण्डूं विचर्चिंश्च व्रणार्शोगण्डमालिका ॥
भगन्दरोपदंशांश्च विद्रधीं गर्दभार्बुदे ।
श्लीपदं शोथशूलानि कासश्वासमरोचकम् ॥
प्लीहगुल्मोदराष्ठीला मेहमेदोगलामयान् ।
जीर्णज्वरमानाहञ्च पाण्ड्वादि त्रितयं जयेत् ॥
सङ्ग्रहग्रहणीं दुष्टां बलवर्णाग्निवर्द्धनीम् ॥

अंकोटकी जड़, हर्र, बहेड़ा, आमला, गिलोय, कालीमिर्च, हल्दी, सप्तपर्ण (सातविन) की छाल, मुरामांसी और कूठ; इनका चूर्ण १।-१। तोला तथा बायबिड़ंग, नागरमोथा, काचलवण, हरताल भस्म (या शुद्ध हरताल), सुहागेकी खील और

---

* **अम्लवर्ग**—अम्लवेत, जंभीरी नीबू, बिजौरा, चणकाम्ल, नारंगी, तिन्तड़ीक, इमलीके पत्ते, नीबू, चांगेरी (चूका), दाड़िम, करौंदा और कमरख। (रसे. सा. सं.)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निसोत; इनका चूर्ण एवं शुद्ध पारद और गंधक तथा लोहभस्म २।।-२।। तोले और शुद्ध गूगल, १५ तोले लेकर गूगलको घीके साथ बारीक पीस लें और पारे गंधककी कज्जली बनाकर उसमें अन्य औषधियोंका चूर्ण मिलाकर खरल करें। जब सब चीजें अच्छी तरह मिल जाएं तो गूगल मिलाकर घोटकर ४-४ माशेकी वटी बना लें। (व्य. मा.—१ माशा ।)

इनमें से १-१ गोली गोमूत्रमें मिलाकर पीनेसे अनेक दोषों से उत्पन्न वातरक्त तथा कुष्ठ एवं दाद, खुजली, विचर्चिका, व्रण, अर्श, गण्ड-माला, भगन्दर, उपदंश, विद्रधि, अर्बुद, श्लीपद, शोथ, शूल, कास, श्वास, अरुचि, प्लीहा, गुल्म, उदररोग, अष्ठीला, प्रमेह, मेदरोग, गलरोग, जीर्ण-ज्वर, अफारा, पाण्डु, कामला, हलीमक और दुष्ट संग्रहणीका नाश होता तथा बल, वर्ण और अग्नि की वृद्धि होती है।

(९४८४) कामदीपकः

(भै. र. ; धन्व. । वाजीकरणा.)

सितं पुनर्नवामूलं शाल्मलीरसभावितम् ।
शाल्मलीसत्त्वनिर्यासं दद्यात्तत्र समं समम् ॥
गन्धकं सर्वतुल्यश्च खादेद्रक्तिचतुष्टयम् ।
अनुपानं प्रकुर्वीत ततः क्षीरं पलद्वयम् ॥
अयं चाण्डालिनी योगोऽगम्याप्यत्र हि गम्यते
निषेधान्निधनं याति करणात्कामरूपधृक् ॥

सफेद पुनर्नवामूलके चूर्णको सेंभलके रसकी (सात) भावना देकर सुखा लें। तदनन्तर यह चूर्ण १ भाग, मोचरस का चूर्ण १ भाग और शुद्ध गंधक २ भाग लेकर सबको एकत्र मिला कर खरल करें।

मात्रा—४ रत्ती। अनुपान—१० तोले दूध।
इसके सेवनसे कामशक्ति बढ़ती है।

(९४८५) कामदुधा रसः (१)

(र. यो. सा.)

स्वर्णगैरिकं किञ्चिद्घृतभ्रष्टं विचूर्णयेत् ।
धात्रीफलरसेनैव सप्तवारञ्च भावयेत् ॥
शुष्कं कृत्वा ततो घर्मे श्लक्ष्णचूर्णन्तु कारयेत् ।
द्विवल्लप्रमिता मात्रा सिताज्यमधुना सह ॥
रक्तवृद्धिं करोत्याशु पित्तरोगविनाशकृत् ।
प्रमेहं प्रदरश्चैव पाण्डुरोगं च कामलाम् ॥
हलीमकं महाघोरमङ्गदाहं तृषं भ्रमम् ।
जीर्णज्वरहरश्चैव नात्र कार्या विचारणा ॥
वैद्यानां जीवनार्थाय रोगिणाञ्च हिताय वै ।
अल्पमूल्यं बहुगुणं ग्रन्थेऽस्मिन्प्रकटीकृतम् ॥

सोनागेरुके चूर्णको थोड़े घीमें भूनकर आमले के फलोंके रसकी सात भावना दें और धूपमें सुखा कर चूर्ण करके रक्खें।

मात्रा—६ रत्ती।

इसे खांड, घी और शहदमें मिलाकर सेवन करानेसे शरीरमें शीघ्र ही रक्तवृद्धि होती और पित्त रोगोंका नाश हो जाता है।

यह रस प्रमेह, प्रदर, पाण्डु, कामला, हलीमक, भयंकर अंगदाह, तृषा, भ्रम और जीर्णज्वरको अवश्य नष्ट कर देता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थोड़े व्ययमें तैयार होने वाला बहुगुणशाली यह प्रयोग वैद्यों के लिये जीवन दाता (जीविका देनेवाला) और रोगियोंके लिये अत्यन्त हितकारी है।

(९४८६) कामदुधारसः (२)

(र. यो. सा.)

गडूचिकोद्भवं सत्वं पलमेकं प्रमाणतः ।
सुवर्णगैरिकं कर्षमभ्रकं कर्षमेव च ॥
सुचूर्णं कारयेदेषां वल्लमात्रं प्रयोजयेत् ।
प्रदरे गव्यमत्स्यण्ड्यौ मत्स्यण्डीतण्डुलोदकम् ॥
घृतमत्स्यण्डिका पित्ते तथा गव्यञ्च शर्करा ।
मधुपिप्पलिका मेहे मत्स्यण्डीतण्डुलोदकम् ॥
अनुपानविभेदेन सर्वरोगेषु योजयेत् ।
एषः कामदुधा नाम प्रदरेषु प्रशस्यते ॥

गिलोयका सत ५ तोले तथा सोनागेरु और अभ्रक भस्म १।-१। तोला लेकर सबको एकत्र खरल करें।

मात्रा—३ रत्ती।

अनुपान—प्रदरमें गायके दूध और राबके साथ, या राब और चावलोंके पानीके साथ; **पित्त रोगोंमें** घी और राबके साथ या गोदुग्ध और खांडके साथ; **प्रमेहमें** पीपलके चूर्ण और शहद के साथ या चावलोंके धोवन और राबके साथ देना चाहिये

इसे अनुपान भेदसे बहुतसे रोगोंमें प्रयुक्त कर सकते हैं परन्तु प्रदरमें विशेष उपयोगी है।

(९४८७) कामदुधारसः (३)

(र. यो. सा.)

मौक्तिकस्य प्रवालस्य मुक्ताशुक्तिभवस्य च ।
वराटिकायाः शङ्खस्य भस्मानि गैरिकं तथा ॥
गुडूचिकोद्भवं सत्वं समभागानि कारयेत् ।
अजाजिकासिताभ्याञ्च गृह्णीयाद्रक्तिकाद्वयम् ॥
जीर्णज्वरभ्रमोन्मादपित्तरोगेषु शस्यते ।
अम्लपित्ते सोमरोगे योज्यः कामदुधा रसः ॥

मोती भस्म, प्रवाल भस्म, मोतीकी सीपकी भस्म, कौड़ी भस्म, शंख भस्म, गेरु और गिलोयका सत समान भाग लेकर सबको एकत्र खरल करें।

मात्रा—२ रत्ती।

इसे जीरेके चूर्ण और खांडके साथ देनेसे जीर्णज्वर, भ्रम, उन्माद, पित्तरोग, अम्लपित्त और सोमरोग का नाश होता है।

(९४८८) कामदेवो रसः (१)

(र. प्र. सु. । अ. ८)

तारं वज्रं स्वर्णताम्रं च सूतं
लोहं गन्धं भागयुग्मं प्रकुर्यात् ।
कन्याद्राबैर्मर्दयेदेकयामं
चूर्णं कृत्वा काचकूप्यां निवेश्य ॥
कूपीं चापि पूरयेत्सिन्धुचूर्णै-
र्मुद्रां दत्त्वा शोषयेत्तत्प्रयत्नात् ।
वह्निं कुर्याद्वासरैकं प्रयत्नात्
शीतं जातं खल्वमध्ये विचूर्ण्य ॥
अर्कक्षीरेणाथ भाव्यं हि सर्वं
कासस्यैवं पद्मकन्दस्य नीरैः ।
मौशल्या वै गोक्षुरस्य द्रवेण
त्रिस्त्रिर्वेलां भावनां च प्रदद्यात् ॥
काकोल्या वै वाजिगन्धाशताह्वा-
दुःस्पर्शाणां वै रसै रसैर्भावयेच्च ।
चूर्णं कृत्वा मिश्रयेद्व्योषचूर्णं
कर्पूरं वै कुङ्कुमैलालवङ्गम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कस्तूरीं वै पूर्वचूर्णात्षडंशां
कार्या सर्वैः शर्करा वै समा च ।
भक्षेच्चैनं निष्कमात्रं प्रयत्ना-
द्गोक्षीरं वै चानुपाने विधेयम् ॥
मिष्टाहारं सेवयेच्चैव नाम्ल-
मोजस्तेजो वर्धते वै बलं च ।
सौन्दर्यं वै जायते सुन्दरीणां
वृद्धिः कामे नैव हानिश्च वीर्ये ॥
तस्मात्सेव्यः कामदेवो रसोऽयं
वृष्येषूक्तो योग एषो वरिष्ठः ॥

चांदी भस्म, हीरा भस्म, स्वर्ण भस्म, ताम्र-भस्म, शुद्ध पारद, लोह भस्म और शुद्ध गंधक २-२ तोले लेकर एकत्र खरल करके कज्जली बनावें और उसे १ पहर घृतकुमारी के रसमें घोट कर सुखाकर आतशी शीशीमें भर दें एवं इसे डाट लगाकर मुंह पर (मिट्टी मिले हुवे) सेंधा नमकसे मुद्रा करके सुखाकर १ दिन बालुका यन्त्रमें पकावें। तदनन्तर उसके स्वांग शीतल होने पर औषधको निकालकर चूर्ण कर लें और उसे आकके दूध, कासकी जड़के रस या क्वाथ, कमलकन्दके रस, मूसलीके रस, गोखरुके रस, काकोलीके रस, असगंधके रस, शतावरके रस और जवासेके रसकी पृथक् पृथक् ३-३ भावना दें । तत्पश्चात् सोंठ, मिर्च, पीपल, कपूर, केसर, इलायची, लौंग और कस्तूरी समान भाग लेकर एकत्र मिलाकर खरल करके बारीक चूर्ण बनावें और पूर्वोक्त तैयार रसमें उसका छठा भाग यह चूर्ण मिलाकर इस सम्पूर्ण औषधके बराबर खांड मिला दें ।

मात्रा—१ निष्क । (**व्यवहारिक मात्रा**—२-३ रत्ती ।)

अनुपान—गोदुग्ध ।

इसके सेवन कालमें मधुर आहार करना और अम्ल पदार्थों से परहेज़ करना चाहिये ।

इसके सेवनसे तेज (कान्ति) बल और स्त्रियोंका सौन्दर्य बढ़ता है। इसे सेवन करने वाले पुरुषों का वीर्य स्त्री समागम करने पर भी क्षीण नहीं होता । यह एक उत्तम वृष्य योग है ।

(९४८९) कामदेवो रसः (२)

(वृ. यो. त. । त. १४७)

तारं हिङ्गुलसीसकाभ्र-
सहितं लोहं च वङ्गं तथा,
वृद्धांशै रसभस्मना त्रि-
चिनुयात् सर्वं च खल्वे शुभे ।
मर्द्योन्मत्तजयारसेन
मुसलीनीरेण तत्सप्तधा,
सिद्धोऽयं किल कामदेव-
रसराड् राज्ञां भवेद्वल्लभः ॥
वल्लैकप्रमितोऽनुपान-
सहितः सर्वान्गदान्नाशयेत्
स्तम्भे निस्तुषभृष्टचाणक-
जयाजातीसिताज्यैर्युतः ।
पुष्टौ साज्यसिताविदारि-
मुसलीयुक्तः प्रभाते लिहे-
त्स्त्रीणां यौवनदर्पगर्वित-
शतानां द्रावणे विक्रमः ॥

चांदी भस्म १ भाग, शुद्ध हिंगुल २ भाग, सीसा भस्म ३ भाग, अभ्रक भस्म ४ भाग, लोह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भस्म ५ भाग, बंग भस्म ६ भाग और पारद भस्म १ भाग लेकर सबको एकत्र मिला कर धतूरा, भांग और मूसलीके रसकी पृथक् पृथक् सात सात भावना देकर ३-३ रत्तीकी गोलियां बना लें।

यह अनुपान भेदसे देनेसे समस्त रोगोंको नष्ट कर देता है।

यदि वीर्यस्तम्भनके लिये देना हो तो छिलके रहित भुने हुवे चने, भांग, जावत्री और खांड; इनके समान भाग चूर्णको एकत्र मिलाकर उसमें घी मिलाकर उसके साथ देना चाहिये।

यदि इसे पुष्टिके लिये देना हो तो घी, खांड तथा विदारीकंद और मूसलीके चूर्णके साथ प्रातः काल देना चाहिये।

इसके सेवनसे यौवनमदमाती सौ स्त्रियोंका गर्व नष्ट करनेकी शक्ति आ जाती है।

(९४९०) कामदेवो रसः (३)

(र. र. । श्लीपदा.)

रसगन्धकताम्राणि काचं सीसं समं समम्।
पिप्पली त्रिवृता शुण्ठी धन्याकं च हरीतकी॥
रसतस्त्रिगुणो ग्राह्यः प्रत्येकं चूर्णमेव च।
रसपादं प्रदातव्यं हिङ्गु चैव यवानिका॥
अर्द्धमाषा वटी कार्या खादेदेकां यथाबलम्।
निहन्ति श्लीपदं रोगं दोषत्रयसमुद्भवम्॥
पैत्तिके भक्षयेद्यूषं श्लैष्मिके शुण्ठीसैन्धवम्।
वातिके तक्रभक्तानि विष्टम्भं परिवर्जयेत्॥
कामदेवरसश्चायं तद्वद्देहं करोत्यलम्।
श्रीमद्गहननाथेन रचितो विश्वसम्पदि॥

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, ताम्रभस्म, काचभस्म और शीशाभस्म १-१ भाग तथा पीपल, निसोत, सोंठ, धनिया और हर्र इनका चूर्ण ३-३ भाग एवं हींग और अजवायनका चूर्ण चौथाई, चौथाई भाग लेकर प्रथम पारे, गन्धककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियोंका चूर्ण मिलाकर (पानीके साथ) आधे, आधे माशेकी गोलियां बनालें।

इनके सेवनसे त्रिदोषज श्लीपद नष्ट हो जाता है।

अनुपान—पित्तमें (मूंगका) यूष, कफमें सोंठ और सेंधानमकका चूर्ण तथा वातमें तक्र भात।

इसके सेवनकालमें विष्टम्भी पदार्थों से परहेज़ करना चाहिये।

(९४९१) कामनायकरसः

(र. र. रसा. ख. । उप. ६)

शाल्मल्युत्थैर्द्रवैर्मर्द्यः पलैकं शुद्धपारदः।
शुद्धगन्धं त्रिसप्ताहं तद्द्रवैर्मर्दयेत्पृथक्॥
समावेतौ पुनर्मर्द्यौ घृतैर्यामचतुष्टयम्।
तद्गोलं बन्धयेद्वस्त्रे घृतैर्यामद्वयं पचेत्॥
ततस्तं शाल्मलीद्रावैर्मर्दयेद्दिवसत्रयम्।
निक्षिपेत्काचकुप्यन्तर्वालुकायन्त्रगं पचेत्॥
क्षिपेच्छाल्मलिजं द्रावं कुप्या गर्भे दिनावधि।
सार्द्रमेव समुद्धृत्य मिश्रयं तत्सितया समम्॥
निष्कमात्रं सदा खादेद्रसोऽयं कामनायकः।
मुशलीं ससितां क्षीरैः पलैकां पाययेदनु॥
कामिनीनां सहस्रं तु क्षोभयेन्निमिषान्तरे॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुद्ध पारदको १५ दिन सेंभलकी जड़के रसमें खरल करें। इसी प्रकार शुद्ध गंधक को भी २१ दिन सेंभलकी जड़के रसमें खरल करें। तत्पश्चात् दोनोंको एकत्र मिलाकर ४ पहर घी में खरल करें और फिर सबका एक गोला बनाकर उसे कपड़ेमें लपेटकर २ पहर घीमें पकावें। तदनन्तर उसे ३ दिन पुनः सेंभलकी जड़के रसमें खरल करके आतशी शीशीमें भर दें और उसमें सेंभलकी जड़का रस डालकर बालुका यन्त्रमें रख कर एक दिन पाक करें तथा उसके स्वांग शीतल होने पर औषधको निकाल लें। शीशी में रस इतना डालना चाहिये कि १ दिन पाक करने के पश्चात् भी औषध कुछ आर्द्र ही निकले।

मात्रा—१ निष्क (३॥। माशे)।

इसे मिश्रीके साथ मिला कर सेवन करनेसे कामशक्ति अत्यधिक प्रबल हो जाती है।

अनुपान—औषध खानेके पश्चात् समान भाग मिश्रित मूसली का चूर्ण और खांड ५ तोलेकी मात्रानुसार दूधके साथ पीना चाहिये।

(९४९२) कामलाप्रणुद्रसः

(र. र. स. । उ. अ. १९ ; र. चं. । पाण्डु.)

तीक्ष्णमाक्षिककान्ताभ्रशुल्बसूतकतालकम्।
देवदालीरसे पिष्टं वालुकायन्त्रमूर्छितम्॥
अमृतोत्पलकल्हारकन्दद्राक्षासमन्वितम्।
पिष्टं यष्ट्यम्भसा क्षौद्रसिताभ्यां कामलाप्रणुत्॥

तीक्ष्ण लोह भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, कान्तलोह भस्म, अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, पारद भस्म (या रससिन्दूर) और शुद्ध हरताल (या हरताल भस्म) समान भाग लेकर सबको देवदाली (बिडाल) के रसमें खरल करके आतशी शीशी में भर कर (१ दिन) बालुका यन्त्र में पकावें और फिर उसके स्वांग शीतल होने पर रसको निकालकर उसमें १-१ भाग गिलोय, नीलोत्पल और कमलकन्द का चूर्ण तथा पत्थर पर पिसी हुई द्राक्षा (मुनक्का) मिलाकर मुलैठीके रसमें खरल करके सुखाकर रक्खें।

इसे शहद और मिश्रीके साथ सेवन करनेसे कामला रोग नष्ट होता है। (**मात्रा**—२ रत्ती।)

(९४९३) कामबाणो रसः

(वृ. यो. त. । त. १४७)

सूतेन्द्राभ्रमृतमब्धिशोषसुमनाजातीफलाकल्करा
फेनाश्वाह्वजबाह्वदेवकुसुमं कर्पूरकस्तूरिकाम्।
पिष्ट्वा तत्समभागिकं मुनि-
मितैः कृष्णाहिवल्लीरसै-
र्भाव्यं पक्वफले निधाय
सजले तन्नारिकेलोदरे॥
क्षीरद्रोणयुगे विपाच्य
विधिवत्तज्जीर्णदुग्धं हरे-
त्सूक्ष्मं स्वर्णयुतं विधाय
पयसा वल्लत्रयं सेवयेत्।
ताम्बूलेन समं निशासु
समये कामाग्निसन्दीपनं
षण्ढोऽपि प्रमदां विजित्य
तनुते कान्तिं तनोति स्त्रियाः॥
बुद्धिं चातिबलं ददाति नितरां युक्त्यानुपानैरयं।
वृद्धानां मदनोदयं वितनुते स्यात्कामबाणो रसः॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रस सिन्दूर, शुद्ध बछनाग, समन्दरशोषके बीज, जावत्री, जायफल, अकरकरा, अफीम, असगंध, अजवायन, लौंग, कपूर और कस्तूरी समान भाग लेकर सबको एकत्र खरल करके पीपलके क्वाथ और पानके रसकी सात सात भावना दें। तदनन्तर सबको पके, जलयुक्त नारियलके भीतर भरकर उसके मुखको बन्द करके ६४ सेर दूधमें पकावें जब सब दूध जल जाय तो नारियल को तोड़कर औषध समेत उसकी गिरीको निकाल कर पीस लें। **मात्रा**—१ रत्ती।

इसमें (१ रत्ती) स्वर्ण भस्म मिलाकर रातको पानके साथ खाकर ऊपर दूध पीना चाहिये।

इसे इस प्रकार सेवन करनेसे कामशक्ति प्रबल होती है और नपुंसक पुरुष भी स्त्रीसमागम में समर्थ हो जाता है।

इसे यथोचित अनुपान के साथ सेवन करनेसे बल और बुद्धि बढ़ती है तथा वृद्ध पुरुषमें काम जागृत हो जाता है।

(९४९४) कामेश्वरचूर्णम्

(र. चि. म. । स्त. ८)

शुण्ठीमरिचापिप्पल्यश्चित्रं केसरदाडिमम् ।
तिन्तिडीकं यवानी च राजिकाद्वयमेव च ॥
मूलिकायाश्च बीजानि लोणिका च त्रिपत्रिका
चन्दनं कोलकङ्कोलं त्वक् च जातीफलानि च
विभीतकस्य मज्जा च प्रियालश्चापि नूतनः ।
मुद्गपर्णी वरा द्राक्षा वरी शृङ्गाटकस्तथा ॥
गोक्षुरः कपिकच्छुश्च तथैवाकल्लको नवः ।
बहुफल्यम्बुजं कन्दं ज्योतिष्मतिस्तथैव च ॥
बहुवारफलं चैव कुङ्कुमं तालमूलिका ।
कम्बुकी चाश्वगन्धा च विदारीकन्दखर्जुरः ॥
धत्तूरकस्य बीजानि तानि चैकत्र कुट्टयेत् ।
सर्वाणि सममात्राणि कारयित्वाऽथ मेलयेत् ॥
एकादशांशं दातव्यमहिफेनं सुशोभितम् ।
तदेकीकृत्य सकलं गुडपाके विनिक्षिपेत् ॥
सघृते वा सितापाके तस्य गोलांस्तु कारयेत् ।
आनन्दवर्धनं चैतदतिवह्निप्रदीपनम् ॥
इदमुत्साहजननमिदमोजोविवर्धनम् ।
अतिसौख्यप्रदं नित्यमिदमुत्सवकारकम् ॥
इदं सौख्यप्रदं स्त्रीणामिदमानन्दवर्धनम् ।
इदं पुष्टिकरं वृष्यमिदं बलकरं परम् ॥
वातिकाञ्श्लैष्मिकान्दोषान्पैत्तिकानति दारुणान् ।
निहन्ति शीघ्रमेवैतत्तनुहानिर्न जायते ॥
वलीपलितनिर्मुक्तः सर्वदा सुखमाप्नुयात् ॥

सोंठ, काली मिर्च, पीपल, चीतामूल, नागकेसर, अनारदाना, तिन्तड़ीक, अजवायन, सफेद सरसों, राई, मूलीके बीज, लोनी (लोनिया) के बीज, तिपतिया, सफेद चन्दन, बेर, कंकोल, दालचीनी, जायफल, बहेड़ेकी गुठलीकी मींगी, नवीन चिरौंजी, मुद्गपर्णी, हर्र, बहेड़ा, आमला, द्राक्षा (किशमिश), शतावर, सिंघाड़ा, गोखरु, कौंचके छिलके रहित बीज, नवीन अकरकरा, बहुफली, कमलकन्द, मालकंगनी, हिंसोड़ा, केसर, तालमूली (मूसली), कम्बुकी, असगन्ध, बिदारीकन्द, खजूर और धतूरेके बीज १—१ भाग लेकर चूर्ण बनावें तथा उसमें ११ भाग अफीम मिला कर सबको गुड़ या घृतयुक्त खांडकी चाशनीमें मिलाकर गोलियां बना लें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(खांड सबके बराबर लेनी चाहिये । मात्रा-१ माशा ।)

यह अत्यन्त आनन्दवर्धक, अग्निदीपक और उत्साह वर्द्धक है तथा ओज, पुष्टि और बलवीर्यकी वृद्धि करता है। इसके सेवनसे वातज, पित्तज और कफज अनेक रोग नष्ट होते और बलि पलित रहित सुखायु व्यतीत होती है।

(९४९५) कामेश्वररसः (१)

(र. चं. ; वै. र. ; यो. र. । वाजीकरणा. ; न. मृ. । त. ५)

जातीफलं च सौराष्ट्री कृष्णधत्तूरबीजकम् ।
जातीपुष्पमफेनं च नागं हिङ्गुलमेव च ॥
एतानि समभागानि खसक्वाथेन मर्दयेत् ।
गुञ्जामात्रा च वटिका सितया सह भक्षयेत् ॥
नाम्ना कामेश्वरः प्रोक्तो रमते कामिनीशतम् ॥

जायफल, फिटकरी, काले धतूरेके बीज, चमेलीके फूल, अफीम, सीसा भस्म और शुद्ध हिंगुल समान भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर खसके क्वाथ में घोट कर १-१ रत्तीकी गोलियां बना लें।

इन्हें खांडके साथ सेवन करनेसे कामशक्ति अत्यधिक द जाती है।

(९४९६) कामेश्वररसः (२)

(र. म. ; वृ. यो. त. । त. १४७)

सम्यङ्मारितमभ्रकं कटुफलं कुष्ठाश्वगन्धामृता।
मेथी मोचरसो विदारिमुशली गोक्षुरकं क्षुरकम्
रम्भाकन्दशतावरी ह्यजमुदा
माषास्तिला धान्य म् ।
ज्येष्ठी नागबला कचूरमदनं जातीफलं सैन्धवम्
भार्ङ्गी कर्कटशृङ्गिका त्रिकटुकं जीरद्वयं चित्रकम् ।
चातुर्जातपुनर्नवागजकणाद्राक्षासमं वासकम् ॥
बीजं मर्कटिशाल्मली-
त्रिफलकं चूर्णं समं कल्पयेत् ।
कर्षार्द्धा गुटिकावलेहमथवा सेव्यं सदा सर्वथा ॥
पेयं क्षीरसिता तु वीर्यकरणं स्तम्भोऽप्ययं कामिनी
रामावश्यकरं सुखातिसुखदं प्रौढाङ्गनाद्रावकम् ॥
क्षीणे पुष्टिकरं क्षये क्षयहरं सर्वामयध्वंसनम् ।
कासश्वासमहातिसारशमनं मन्दाग्निसन्दीपनम् ॥
धातोर्वृद्धिकरं रसायनवरं नास्त्यन्यदस्मात्परम्
अर्शांसि ग्रहणीप्रमेहनिचयश्लेष्मातिरक्तप्रणुत् ॥
नित्यानन्दकरं विशेषविदुषां वाचां विलासोद्भव-
मभ्यासेन निहन्ति मृत्यु-
पलितं कामेश्वरो वत्सरात् ॥
सर्वेषां हितकारको निगदितः श्रीवैद्यनाथेन यः

भली भांति भस्म किया हुवा अभ्रक, कंकोल, कूठ, असगन्ध, गिलोय, मेथी, मोचरस, बिदारीकन्द, मूसली, गोखरु, तालमखाना, केलेका कन्द, शतावर, अजमोद, उड़द, तिल, धनिया, मुलैठी, गंगेरन, कचूर, धतूरा, जायफल, सेंधा नमक, भरंगी, काकड़ासिंगी, सोंठ, मिर्च, पीपल, सफेद जीरा, काला जीरा, चीतामूल, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर, पुनर्नवा (साठ) की जड़, गजपीपल, द्राक्षा (किशमिश), बासा (अडूसा) की जड़की छाल, कौंचके छिलके रहित बीज, सेंभलकी मूसली, हर्र, बहेड़ा और आमला; समान भाग लेकर चूर्ण बनावें। (इसे सबके बराबर खांडकी चाशनी में मिलाकर गोलियां बना लें या अवलेह ही रहने दें।)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मात्रा—७।। माशे ।

अनुपान—मिश्रीयुक्त दूध ।

इसके सेवनसे वीर्य वृद्धि होती है; क्षीण शरीर पुष्ट हो जाता है तथा क्षय, कास, श्वास, अतिसार, अग्निमांद्य, अर्श, ग्रहणीरोग, प्रमेह, कफविकार और रक्तविकारों का नाश होता है। इसे १ वर्ष तक सेवन करने से पलित रोग भी नष्ट हो जाता है। यह प्रयोग स्तम्भक, स्त्रीद्रावक और श्रेष्ठ रसायन है। इसके सेवनसे वाचाशक्ति भी बढ़ती है।

(९४९७) कामेश्वरी वटिका

(र. का. धे. । पाण्डु.)

शुद्धसूतं तथा गन्धं कर्षं कर्षं समाहरेत् ।
हरीतक्या रजः कर्षस्तावन्तश्चित्रकस्य च ॥
एलापत्रकमुस्तानां योज्यं सार्धपलं पृथक् ।
कणामूलं त्रिकटुकं विषं कर्षं पृथक् भवेत् ॥
पाठा च रेणुकं कर्षं निष्कं स्यान्नागकेशरम् ।
सर्वतुल्येन जीर्णेन गुडेनैव प्रपाचयेत् ॥
घृतेन मर्दयेद्याममथवा कन्यकाद्रवैः ।
कारयेत्कोलबीजाभां नित्यं तां भक्षयेद् गुटिम् ॥
सशोथं कफजं पाण्डुं जयेत्कामेश्वरी वटी ॥

शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, हर्र, चीतामूल, सोंठ, मिर्च, पीपल, शुद्ध बछनाग, पाठा और रेणुका १।-१। तोला; नागकेसर ३।।। माशे तथा इलायची, तेजपात और नागरमोथा ७।।-७।। तोला लेकर प्रथम पारे गंधक की कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य ओषधियों का चूर्ण मिलाकर खरल करें। तत्पश्चात् उसे सबके बराबर पुराने गुड़की चाशनी में मिलाकर घी में या घृतकुमारी के रसमें १ पहर घोट कर बेरकी गुठली के समान गोलियां बना लें।

इसके सेवन से शोथयुक्त कफज पाण्डु का नाश होता है।

(९४९८) काम्वायनरसः

(र. का. धे. । कुष्ठा.)

भस्मसूतं समं गन्धं स्वर्जिकाक्षारकाञ्चनी ।
प्रत्येकं च द्विभागं स्यात्सर्वतुल्यैर्घृतैः सह ॥
पिष्ट्वा मृद्वग्निना पच्याद्यावत्पिण्डत्वमागतम् ।
निष्कार्धं भक्षणाद्धन्ति कुष्ठं काम्वायनो रसः ॥
देवदाल्याः सुचूर्णं तु मध्वाज्याभ्यां लिहेदनु ॥

पारद भस्म, शुद्ध गंधक, सज्जीखार और हल्दी (अथवा स्वर्णक्षीरी मूल-चोक) समान भाग लेकर एकत्र खरल करें और फिर उसमें सबके बराबर घी मिलाकर, खरल करके मन्दाग्नि पर पकावें। जब सबका एक पिण्ड सा हो जाय तो उतार कर, शीतल करके सुरक्षित रक्खें।

मात्रा—आधा निष्क ।

अनुपान—औषध खानेके पश्चात् देवदाली (बिंडाल) का चूर्ण शहद और घीमें मिलाकर खाना चाहिये।

इसके सेवनसे कुष्ठ नष्ट होता है।

(९४९९) कालकूटरसः

(र. यो. सा.; वै. चि. । ज्वरा.)

रुद्रसंख्यस्य विषश्चैव त्रिभागः सूत एव च ।
गन्धकः पञ्च भागः स्याच्छिला स्याद्द्विभागिका ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ताम्रभस्म चतुर्भागमृतुभागश्च टङ्कणम् ।
तालकं रसमल्लश्चाकं वह्निमूलं तथैव च ॥
त्रिकटोर्द्वादशांशेथास्त्रिफला दशभागिका ।
हिङ्गुनश्चन्द्रभागः स्याद्वचायाश्च तथैव च ॥
एवं खल्वे च संस्थाप्यमार्द्रकं वह्निमूलकम् ।
जम्बीरं लशुनश्चैव मार्कण्डाकैस्य मूलकम् ॥
लाङ्गली स्वर्णमूलश्च सिन्धुनागदलं तथा ।
अङ्कोलशिग्रुमूलानि प्रत्येकं याममात्रकम् ॥
पञ्चकोलकषायेण पञ्चमूलेन मर्दयेत् ।
गुञ्जामात्रप्रमाणेन वटकान् कारयेत्ततः ॥
वटीमेकां प्रयुञ्जीत शृङ्गवेराम्भसा युताम् ।
सर्वज्वरहरो योगः सन्निपातकुलान्तकः ॥
स्नानं कुर्यात्प्रयत्नेन श्रीखण्डालेपमाचरेत् ।
दध्यन्नं दापयेत्पथ्यं खर्जूरादिफलान्यपि ॥
ताम्बूलचर्वणं कुर्यात्क्रमादेवं समाचरेत् ।
कालकूटरसो नाम महेशेन प्रकाशितः ॥

शुद्ध बछनाग विष १ भाग, शुद्ध पारद ३ भाग, शुद्ध गंधक ५ भाग, शुद्ध मनसिल ६ भाग, ताम्र भस्म ४ भाग, सुहागेकी खील ६ भाग, शुद्ध हरताल (या हरताल भस्म) ९ भाग, चीतामूल ९ भाग, त्रिकुटा १२ भाग, त्रिफला १० भाग, शुद्ध हींग १ भाग और बच १ भाग लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य ओषधियों का चूर्ण मिलाकर १-१ पहर अदरक, चीतामूल, जम्बीरी, लहसन, मकोय, अर्कमूल, कलियारी, धतूरेकी जड़, संभालु, पान, अंकोलमूल, सहंजनेकी जड़, पंचकोल (पीपल, पीपलामूल, चव, चीता, सोंठ) और पञ्चमूल; इनके रस या क्वाथमें खरल करके १-१ रत्तीकी गोलियां बना लें।

इनमें से १-१ गोली अदरकके रसके साथ देनेसे समस्त ज्वर और सन्निपातका नाश होता है।

इसे खिलानेके पश्चात् युक्ति पूर्वक स्नान कराना और शरीरपर चन्दनका लेप करना चाहिये।

पथ्य—दही, भात तथा खजूर के फलादि खिलाना और ताम्बूल खिलाना चाहिये।

(९५००) कालविध्वंसनरसः

(र. का. धे. ।)

सुवर्णरौप्यताम्राणां पिष्टिं कृत्वा विमर्दयेत् ।
योज्यं सूतेन तद्गोलं दोलायन्त्रे विपाचयेत् ॥
त्र्यहं स्वर्णजले स्वर्णफलस्थं तततः क्षिपेत् ।
इष्टिकायन्त्रगह्वरे वस्त्रबद्धं समन्ततः ॥
जम्बीरनीरसम्पिष्टं बलेर्निष्कं प्रयोजयेत् ।
एवं शतगुणो यावद्रसे जीर्येत गन्धकः ॥
तावद्देयस्ततः पिष्टः समलोहस्य भावयेत् ।
तिस्रः क्षुद्रात्रयेणाथ पृथग्लावपुटे स्थितः ॥
एवं त्रिपुटिते पश्चात्करञ्जान्यर्कजैर्द्रवैः ।
सुपिष्टः पुटितस्त्रिः कालविध्वंसनो रसः ॥
पाण्डुक्षयश्वासकासवह्निसादादिजिद्भवेत् ।
मतान्तरे निष्कमात्रं विषमत्र प्रयोजयेत् ॥
गुञ्जामात्रः सः ताम्बूलीदलेन सह भक्षयेत् ।
गोमूत्रपिष्टामभयां पिबेत्तदनुपानकम् ॥

शुद्ध सुवर्ण, चांदी और ताम्र के बारीक पत्र १-१ भाग (१-१ निष्क) तथा शुद्ध पारद सबके बराबर लेकर सबको एकत्र खरल करके पिष्टी (पिट्ठी) बना लें और उसका गोला बना कर उसे धतूरेके फलके भीतर प्रविष्ट करके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(कपड़ेमें लपेटकर) दोलायन्त्र विधिसे ३ दिन धतूरेके रसमें स्वेदित करें। तदनन्तर फलमेंसे गोलेको निकालकर कपड़ेमें लपेटकर पोटली बनावें एवं उसे इष्टिका यन्त्र में रखकर उसके ऊपर नीचे नीबूके रसमें घुटा हुवा १ निष्क गंधक रखकर लघु पुट लगा दें। इसी प्रकार १०० पुट लगानेके पश्चात् रसको पीसकर उसमें समान भाग लोह भस्म मिलाकर उसे कटेली के रसकी तीन भावना देकर अन्धमूषामें बन्द करके लावपुट में फूंक दें। इसी प्रकार अग्निदमनी (धमासा भेद) और जवासाके रसकी भी पृथक् पृथक् ३-३ भावनादेकर १-१ लाव पुट दें। तत्पश्चात् करञ्ज के रसकी भावना दे देकर ३ पुट दें और इसी प्रकार आकके दूध या स्वरसकी भावना देकर ३ पुट दें।

यह रस पाण्डु, क्षय, श्वास, कास और अग्निमांद्यादि रोगोंको नष्ट करता है।

मात्रा—१ रत्ती। इसे पानमें रखकर खानेके पश्चात् गोमूत्रमें हर्र पीसकर पीनी चाहिये।

मतान्तरके अनुसार इसमें (तैयार रसमें) १ निष्क (५ माशे) शुद्ध बछनाग का चूर्ण भी मिलाना चाहिये।

(९५०१) **कालाग्निरुद्ररसः** (१)

(र. का. धे. । कुष्ठा.)

कांस्यचूर्णं गन्धतालं तुल्यमम्लेन मर्दयेत्।
रुद्ध्वा गजपुटे पश्चात्पुनर्गन्धश्च तालकम्॥
दत्वा चाम्लैर्विमर्द्याऽथ रुद्ध्वा लघुपुटे पचेत्।
विंशांशं गन्धतालं च दत्त्वाम्लैरथ मर्दयेत्॥
रुद्ध्वा लघुपुटं दद्यादेवं विंशपुटैः पचेत्।
अस्य तुल्यं शुद्धसूतं देवदाल्या द्रवैर्दिनम्॥
मर्दयेद्भावयेत्पश्चाच्चतुरङ्गुलजैर्द्रवैः।
भक्षयेन्निष्कमात्रं तु गलत्कुष्ठहरः परः॥
रसः कालाऽग्निरुद्रोऽयमनुपानं यथोचितम्॥

शुद्ध कांस्य चूर्ण, शुद्ध गंधक और शुद्ध हरताल समान भाग लेकर तीनों को एकत्र नीबूके रसमें खरल करके टिकिया बनावें और उन्हें सुखाकर शरावसम्पुटमें बन्द करके गजपुटमें फूंक दें। तदनन्तर उसमें गन्धक और हरताल प्रत्येक बीसवां भाग मिलाकर नीबूके रसमें घोटकर यथाविधि लघुपुटमें फूंक दें। इसी प्रकार हर बार बीसवां भाग गंधक और हरताल मिलाकर नीबूके रसमें घोटकर २० पुट दें।

तदनन्तर यह कांस्य भस्म और शुद्ध पारद समान भाग लेकर दोनोंको एकत्र मिलाकर १-१ दिन देवदाली और अमलतासके रसमें खरल करें।

मात्रा—१ निष्क।

इसे यथोचित अनुपानके साथ सेवन करनेसे गलत्कुष्ठ नष्ट होता है।

(९५०२) **कालाग्निरुद्ररसः** (२)

(र. का. धे. । कुष्ठा.)

तुत्थं ताम्रं स्मरहरशिला भास्करोऽपि द्विभागः
सर्वं यन्त्रे द्विगुणबलिना सैकते पाचयध्वम्।
साक्षादेष त्रिपुरविजयी कुष्ठकालाग्निरुद्रः
सेवाभाजां हरति सकलं मण्डलेनैव कुष्ठम्॥

शुद्ध नीलाथोथा, ताम्र भस्म, शुद्ध पारद, शुद्ध मनसिल और स्वर्ण-भस्म २-२ भाग तथा शुद्ध गंधक २० भाग लेकर सबको एकत्र खरल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करके (आतशी शीशी में भरकर) बालुका यन्त्रमें पकावें ।

इसके सेवनसे १ मण्डल में समस्त प्रकारके कुष्ठ नष्ट हो जाते हैं ।

(९५०३) काशीसरसायनम्

(र. र. स. । पू. अ. ३ ; र. प्र. सु. । अ. ६)

बलिना हतकासीसं कान्तं कासीसमारितम् ।
उभयं समभागं हि त्रिफलावेल्लसंयुतम् ॥
विषमांशघृतक्षौद्रप्लुतं शाणमितं भगे ।
सेवितं हन्ति वेगेन श्वित्रं पाण्डुं क्षयामयम् ॥
गुल्मप्लीहगदं शूलं मूत्ररोगं विशेषतः ।
रसायनविधानेन सेवितं वत्सरावधि ॥
आमसंशोषणं श्रेष्ठं मन्दाग्निपरिदीपनम् ।
पलितं वलिभिः सार्धं विनाशयति निश्चितम् ॥

गंधक के साथ पुट लगाकर भस्म किया हुवा कसीस, कसीसके योगसे भस्म किया हुवा कान्त लोह, हर्र, बहेड़ा, आमला और बायबिडंग समान भाग लेकर एकत्र खरल करें ।

इसमें से १-१ शाण (३॥। माशे) दवा विषम भाग घी और शहदके साथ मिलाकर सेवन करने से श्वित्र, पाण्डु, क्षय, गुल्म, प्लीहा, शूल और विशेषतः अर्शका नाश होता है । इसे १ वर्ष तक रसायन विधिसे सेवन करनेसे शरीरस्थ आम नष्ट हो जाती हैं और अग्नि दीप्त होकर बलि पलित का नाश होता है ।

(व्यवहारिक मात्रा—२ रत्ती ।)

(९५०४) काशीसशोधनम्

(र. र. स. । पू. अ. ३)

काशीसं वालुकाद्येकं पुष्पपूर्वमथापरम् ।
क्षाराम्लागुरुधूमाभं सोष्णवीर्यं विषापहम् ॥
बालुकापुष्पकासीसं श्वित्रघ्नं केशरञ्जनम् ।
पुष्पादिकासीसमतिप्रशस्तं
सोष्णं कषायाम्लमतीव नेत्र्यम् ॥
विषानिलश्लेष्मगदव्रणघ्नं
श्वित्रक्षयघ्नं कचरञ्जनं च ।
सकृद्भृङ्गाम्बुना क्लिन्नं कासीसं निर्मलं भवेत् ।
तुवरीसत्त्ववत्सत्त्वमेतस्यापि समाहरेत् ॥

कसीस **"बालुका काशीस"** और **"पुष्प काशीस"** भेदसे दो प्रकारका होता है ।

बालुका कसीस क्षारयुक्त, अम्ल, अगुरु (न भारी न हल्का), देखनेमें धुंवेके रंगका और उष्ण वीर्य होता है । यह विषको नष्ट करता है ।

दोनों प्रकारका कसीस श्वित्र नाशक और केशरञ्जक है ।

पुष्प कासीस बालुका कासीससे उत्तम होता है । यह उष्ण वीर्य कषाय और अम्लरस युक्त तथा नेत्रोंके लिये अत्यन्त हितकारी है । यह विष, वायु, कफरोग, व्रण श्वित्र और क्षयको नष्ट करता तथा बालोंको रंगता है ।

कसीस को भंगरे के रसकी भावना देनेसे वह शुद्ध हो जाता है ।

कसीस का सत्व फिटकी के सत्वकी तरह निकाला जाता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९५०५) **कासकेसरीरसः**

(वै. र. । कासा.)

मरिचमुस्तककुष्ठवचाविषं
सममथो परिगृह्य सुपेष्य च ।
विमलमार्द्ररसेन वटी कृता
कसनशूलकफामयनाशिनी ॥
प्रसूतिरोगं ग्रहणीं नाशयेच्चणकोपमा ॥

काली मिर्च, नागरमोथा, कूठ, बच, और शुद्ध बछनाग समान भाग लेकर अदरकके रसमें घोटकर चनेके समान गोलियां बना लें ।

इनके सेवन से खांसी, शूल, कफरोग, प्रसूत रोग और ग्रहणी विकारका नाश होता है ।

(९५०६) **कासीसादिचूर्णम्**

(यो. त. । त. ५९)

कासीससैन्धवशिलाजतुहिङ्गुचूर्णं
मिश्रीकृतो वरुणवल्कलजः कषायः ।
अभ्यन्तरोत्थितमपक्वमतिप्रमाणं
नृणामयं जयति विद्रधिमुग्रशोफम् ॥

कसीस, सैंधानमक, शिलाजीत और हींग समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

इसे बरनेकी छालके क्वाथमें मिलाकर पीनेसे अपक्व प्रवृद्ध अन्तर्विद्रधि और शोथका नाश होता है

(मात्रा—४ रत्ती ।)

(९५०७) **कांस्यमारणम्**

(र. र. स. । अ. ५)

त्रिक्षारं पञ्चलवणं सप्तधाऽम्लेन भावयेत् ।
कांस्याऽऽरकूटपत्राणि तेन कल्केन लेपयेत् ॥
रुध्वा गजपुटे पक्वं शुद्धभस्मत्वमाप्नुयात् ॥

जवाखार, सज्जीखार, सुहागा और पांचों नमक समान भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर नीबूके रसकी सात भावना दें । इस का कांसी या पीतलके पत्रों पर लेप करके उन्हें शराव-सम्पुटमें बन्द करके गजपुटमें फूंक दें । इसी प्रकार कई पुट देने से उनकी भस्म हो जाती है ।

(९५०८) **कांस्यशोधनम्**

(वृ. यो. त. । त. ४१ ; र. म.)

कांस्यं तु द्विविधं प्रोक्तं पुष्पतैलिकभेदतः ।
पुष्पं श्वेततमं तत्र तैलिकं कपिशप्रभम् ॥
एतयोः प्रथमं श्रेष्ठं सेव्यं रोगप्रशान्तये ।
राजरीतिस्तथा घोषं ताम्रवच्छोधयेद्भिषक् ॥
ताम्रवन्मारणं चापि तयोरुक्तं भिषग्वरैः ॥

कांसी दो प्रकारकी होती है । एक फूल कांसी और दूसरी तेलिया । फूल कांसी अत्यन्त सफेद होती है और तेलिया में कुछ श्यामता होती है । दोनों में फूल कांसी श्रेष्ठ है और वही औषधोंमें प्रयुक्त की जाती है ।

पीतल और कांसीका शोधन तथा मारण ताम्रके समान होता है ।

(९५०९) **कांस्यशोधनमारणे**

(र. र. स. । अ. ५)

अष्टभागेन ताम्रेण द्विभागखुरकेण च ।
विद्रुतेन भवेत्कांस्यं तत्सौराष्ट्रभवं शुभम् ॥
तीक्ष्णशब्दं मृदु स्निग्धमीषच्छ्यामलशुभ्रकम्
निर्मलं दाहे रक्तं च षोढा कांस्यं प्रशस्यते ॥
तप्तीतं दहने ताम्रं खरं रूक्षं घनासहम् ।
मर्दनादागतज्योतिः सप्तधा कांस्यमुत्सृजेत् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कांस्यं लघु च तिक्तोष्णं लेखनं दृक्प्रसादनम् ।
कृमिकुष्ठहरं वातपित्तघ्नं दीपनं हितम् ॥

घृतमेकं विना चान्यत्सर्वं कांस्यगतं नृणाम् ।*
भुक्तमारोग्यसुखदं हितं सात्म्यकरं तथा ॥

तप्तं कांस्यं गवां मूत्रे वापितं परिशुध्यति ।
म्रियते गन्धतालाभ्यां निरुत्थं पञ्चभिः पुटैः ॥

आठ भाग ताम्र और २ भाग खुरक बंग को एकत्र गलानेसे कांसी बनती है । सौराष्ट्र देशकी कांसी श्रेष्ठ होती है ।

जिस कांसीमें तीक्ष्ण शब्द निकले, जो मृदु, स्निग्ध, जरा श्यामता लिए हुवे सफेद और स्वच्छ हो तथा तपाने से लाल हो जाती हो वह उत्तम होती है ।

जिसका रंग पीला हो, जो तपाने से ताम्रके रंगकी हो जाए, खरखरी और रूक्ष हो तथा चोट न सह सके एवं घिसनेसे जिसमें चमक पैदा हो वह अच्छी नहीं होती । (मूलमें " सप्तधाकांस्य-मुत्सृजेत् " लिखा है परन्तु दोष ६ ही बतलाए हैं ।)

कांसी लघु, तिक्त, उष्ण, लेखन, दृष्टिको स्वच्छ करने वाली, कृमिकुष्ठ नाशक, वातपित्त नाशक और अग्निदीपक है ।

* शुद्ध कांस्यमये पात्रे सर्वमेव हि भोजनम् ।
पथ्यं सञ्जायते नाम्लं घृतशाकादि वर्जितम् ॥
(र. प्र. सु. । अ. ४)

शुद्ध कांसीके पात्रमें अम्ल पदार्थ, घी और शाकादिके अतिरिक्त सभी पदार्थ रखकर भोजन करना हितकर है ।

कांसीके पात्रमें घृतके अतिरिक्त हर प्रकारका भोजन रखना हितकर है ।

कांसीको तपा तपाकर गोमूत्रमें बुझानेसे वह शुद्ध हो जाती है ।

कांसीके पत्रों पर गंधक और हरतालका (नीबूके रसमें घोटकर) लेप करके यथाविधि शरावसम्पुट में बन्द करके गज पुट दें । इसी प्रकार ५ पुट देनेसे निरुत्थ भस्म हो जाती है ।

(९५१०) किन्नरकण्ठरसः

(र. चं. । स्वरभेदा.)

रसं गन्धकमभ्रं च माक्षिकं लोहमेव च ।
कर्षप्रमाणं संगृह्य वैक्रान्तं रसपादिकम् ॥
वैक्रान्तार्धं तथा हेम रौप्यं हेमचतुर्गुणम् ।
वासायाश्च तथा भार्ग्या हृद्गत्या वाऽऽर्द्रकस्य च
स्वरसेन सरस्वत्या भावयित्वा पृथक् पृथक् ।
रक्तिद्वयमिता कुर्याद्वटयश्छाया प्रशोषिताः ॥
स्वरभेदानशेषांश्च कासान् श्वासांश्च दारुणान्
निखिलान् कफजान् व्याधीन् वातश्लेष्मसमुद्भवान् ॥
हन्यात्किन्नरकण्ठाख्यो रसोऽसौ रुद्रनिर्मितः ।
किन्नरस्येव कण्ठस्य स्वरोऽस्य प्राशनाद्भवेत् ॥
योगवाहिरसं चापि योजयन्ति भिषग्वराः ।
सशर्करं शुण्ठिचूर्णं क्षौद्रेण सह योजितम् ॥
कोकिलस्वर एव स्याद् गुटिकां भुक्तमात्रतः ॥

शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, अभ्रक भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म और लोहभस्म १-१ तोला; वैक्रान्त भस्म ३ माशा, स्वर्ण भस्म १॥ माशा और रौप्य भस्म ६ माशा लेकर सबको एकत्र मिलाकर खरल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करें और फिर बासा (अडूसा), भरंगी, बड़ी कटेली, अदरक और ब्राह्मी के रसकी १-१ भावना देकर २-२ रत्तीकी गोलियां बना कर छाया में सुखा लें।

इसके सेवन से हर प्रकार का स्वरभंग, कास, दारुण श्वास, समस्त कफज रोग और वातकफज रोग नष्ट होते हैं तथा स्वर किन्नर-कण्ठसदृश सुरीला हो जाता है।

स्वरभंग रोग में योग वाही रस भी उचित अनुपानके साथ प्रयुक्त होते हैं।

इन्हें खाकर खांड और सोंठका चूर्ण एकत्र मिलाकर शहदके साथ चाटनेसे स्वर मधुर होता है।

(९५११) कुङ्कुमाद्यचूर्णम्

(र. चि. म. । स्त. २)

कुङ्कुमागरुकं मुस्ता चातुर्जातं फलत्रिकम् ।
आकल्लकाभ्रकं धान्यं दाडिमं त्रिकटुं कणा ॥
यवानी तिन्तडीकं च बदरं घनसारकम् ।
तुम्बरुं तगरं तोयं लवङ्गं जातिपत्रिका ॥
समङ्गा पौष्करं शृङ्गी पद्मबीजं तुगा शठी ।
तालीसं चित्रकं मांसी जातीफलमुशीरकम् ॥
मस्तक्यतिबला माषा कुष्ठं ग्रन्थिकमूषकी ।
यावन्त्येतानि द्रव्याणि तावन्मोचरसं क्षिपेत् ॥
सर्वतुल्या सिता योज्या कर्षमात्रं तु भक्षयेत् ।
निशायां भक्षयेन्नित्यं भोजनान्ते विशेषतः ॥
सन्ध्याकाले तथा भक्ष्यं वाजीकरणमुत्तमम् ।
अजीर्णं जरयत्याशु नष्टाग्नेर्दीपनं परम् ॥
अशीतिर्वातजान् रोगांश्चत्वारिंशश्च पैत्तिकान् ।
वसतिः श्लैष्मिकांश्चैव हृद्यं सद्यश्च रोचकम् ॥
अर्शांसि ग्रहणीदोषमतिसारं विशेषतः ।
क्षयमेकादशं श्वासं कासं पञ्चविधं तथा ॥
तथैवोदररोगांश्च मूत्रकृच्छ्रं गलग्रहम् ।
पुत्राञ्जनयते वन्ध्या सेव्यमाने शुभे दिने ॥
सन्निपातहरं चैव विस्फोटकभगन्दरम् ।
हृद्रोगं नेत्ररोगं च शिरोरोगं हनुग्रहम् ॥
हृद्रोगं कण्ठरोगं च जानुजङ्घाश्रितं गदम् ।
सर्वदोषविनाशाय चरकेण प्रकाशितम् ॥

केसर, अगर, नागरमोथा, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर, हर्र, बहेड़ा, आमला, अकरकरा, अभ्रक भस्म, धनिया, अनारदाना, त्रिकुटा, पीपल, अजवायन, तिन्तड़ीक, बेर, कपूर, तुम्बरु (नेपाली धनिया), तगर, सुगन्धबाला, लौंग, जावत्री, मजीठ, पोखरमूल, काकड़ासिंगी, कमलगट्टा, बंसलोचन, कचूर, तालीसपत्र, चीतामूल, जटामांसी, जायफल, खस, रूमी मस्तगी, कंघी, उड़द, कूठ, पीपलामूल और मूषा कन्नी; इनका चूर्ण १-१ भाग तथा मोचरस सबके बराबर लेकर एकत्र मिलावें और फिर उस समस्त चूर्णके बराबर खांड मिलाकर सुरक्षित रक्खें।

मात्रा—१। तोला (व्य. मात्रा-४ माशे)

इसे रात्रि को या भोजनान्त में अथवा सन्ध्या-कालमें सेवन करना चाहिये।

यह उत्तम वाजीकरण योग है। इसके सेवनसे अजीर्ण, अग्निमांद्य, वातजरोग, पित्तज रोग, कफज रोग, अर्श, संग्रहणी, अतिसार, क्षय, श्वास, कास, उदर रोग, मूत्रकृच्छ्र, गलग्रह, सन्निपात, विस्फोटक भगंदर, हृदोग, नेत्ररोग, शिरो रोग, हनुग्रह, कण्ठ-रोग एवं जानु और जंघाके समस्त रोग नष्ट होते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है। इसके प्रभावसे वन्ध्या स्त्रीको पुत्र प्राप्ति होती है। यह हृद्य है और आहारमें तुरन्त रुचि उत्पन्न करता है।

इसे महर्षि चरकने प्रकाशित किया है (?)

(९५१२) कुचिलाशोधनम् (१)

(यो. र.)

किञ्चिदाज्येन संभृष्टो विषमुष्टिर्विशुध्यति।

कुचले को ज़रा घीमें भून लेनेसे वह शुद्ध हो जाता है।

(कुचलेको पहिले २ दिन तक दूधमें भिगोए रक्खें। जब वह फूल जाए तो उसके ऊपरका छिलका और अन्दरकी पत्ती निकालकर सुखा लेना चाहिए तदनन्तर उसे घीमें भूनना चाहिये।)

(९५१३) कुचिलाशोधनम् (२)

(यो. त. । त. १७)

त्रिदिनं काञ्जिकैः स्विन्नः शुद्धः स्याद्विषतिन्दुकः

कुचलेको ३ दिन तक कांजीमें स्वेदित करनेसे वह शुद्ध हो जाता है।

(जब कुचला फूल जाए तो उसके ऊपरका छिलका तथा अन्दरकी पत्ती निकाल देनी चाहिये।)

(९५१४) कुठेरकाद्यं चूर्णम्

(ग. नि. । परि. चूर्णा.)

कुठेरकश्चामलकी यवानी
फलत्रिकं चैव कटुत्रिकं च।
हन्ताकमञ्जीरदुषं सनिम्बं
कुष्ठं तथा चेन्द्रयवा विडङ्गम् ॥
बीजानि दद्याच्चिचुलस्य दार्वी
दुरालभा तिक्तकरोहिणी च।
दूर्वाग्निगन्धाऽतिविषा गुडूची
किराततिक्तं गजपिप्पली च ॥
सर्वाण्युपाहृत्य तु चूर्णमेषां
भागांशयुक्तं लवणं द्विरंशम्।
अयोरजः स्यात्त्रिगुणं च युक्तं
फलत्रिकं स्याच्चतुरंशयुक्तम् ॥
चूर्णीकृतं तद्घृतभाजनस्थं
पिबेच्च मद्येन सुखोदकेन।
चूर्णं यथासात्म्यबलानुरूपं
प्लीहाग्निसादारुचिपार्श्वशूलम् ॥
प्रमेहकुष्ठानथ पाण्डुरोगं
हृद्रोगगुल्मं विषमज्वरं च।
भगन्दरं श्वासगदांश्च हन्यात्
सुदुस्तरान् वातकफोद्भवांस्तु।
एतद्धि चूर्णं बलमांसकारि
ओजस्करं रोगगणापहारि ॥

कुठेरक (छोटे पत्तेकी तुलसी), आमला, अजवायन, हर्र, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिर्च, पीपल, बैंगन, मजीठ, बासा, नीमकी छाल, कूठ, इन्द्रजौ, बायबिड़ंग, समन्दर फलके बीज, दारुहल्दी, धमासा, कुटकी, दूबघास, बच, अतीस, गिलोय, चिरायता और गजपीपल; इनका चूर्ण १-१ भाग, सेंधा नमक २ भाग, लोह भस्म ३ भाग एवं त्रिफला (हर्र, बहेड़े, आमले) का चूर्ण ४ भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर घृतभावित पात्रमें सुरक्षित रक्खें।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसे मद्य या मन्दोष्ण जलके साथ सेवन करनेसे प्लीहा, अग्निमांद्य, अरुचि, पार्श्वशूल, प्रमेह, कुष्ठ, पाण्डु, हृद्रोग, गुल्म, विषम ज्वर, भगन्दर, श्वास और दुःसाध्य वातकफज रोग नष्ट होते हैं। यह बल मांस और ओज वर्द्धक है।

(मात्रा—१॥ माशा।)

(९५१५) कुमुदेश्वरो रसः

(र. प्र. सु. । अ. ८)

सूतभस्म समहेमभस्मकं
मौक्तिकं च रसपादटङ्कणम् ।
गन्धमत्र कुरु सर्वतुल्यकं
चूर्णितं तुषजलेन गोलकम् ॥
लेपयेन्मृदुमृदा विशोषितं
पाचितं सिकतयन्त्रमध्यतः ।
वासरैकमथ शीतलीकृत-
श्चूर्णितो मरिचमाक्षिकैः प्लुतः ॥
भक्षितो हि कुमुदेश्वरो रसो
राजयक्ष्मपरिहाणिकारकः ॥

पारद भस्म, स्वर्ण भस्म और मोती ४-४ भाग, सुहागा १ भाग तथा शुद्ध गंधक १३ भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर कांजीमें खरल करें और फिर सबका एक गोला बनाकर (सुखाकर, कपड़ेमें लपेटकर) उसपर मिट्टीका लेप कर दें। इसे सुखाकर बालुकायन्त्रमें रखकर एक दिन पाक करें और फिर स्वांगशीतल होने पर गोलेको निकाल कर इसकी मिट्टी आदि छुड़ाकर पीस लें।

इसे काली मिर्चके चूर्ण और शहदके साथ सेवन करानेसे राजयक्ष्मा रोग नष्ट होता है।

(मात्रा—१ रत्ती)

(९५१६) कुष्ठकुठाररसः

(र. का. धे. । कुष्ठा.)

पृथक् पलं पलं ग्राह्यं सूर्यभस्म शिलाजतु ।
लोहभस्म मृतं ताम्रं गन्धकं विषमुष्टिका ॥
त्रिफला चित्रकं चैव चूर्णयेत्कज्जलोपमम् ।
दत्त्वा पलं मृताभ्रस्य मध्वाज्याभ्यां विलोडयेत्
घृतभाण्डे विनिक्षिप्य निष्कैकं भक्षयेन्नरः ।
रसः कुष्ठकुठारोऽयं गलत्कुष्ठनिकृन्तनः ॥

स्वर्ण भस्म, शिलाजीत, लोह भस्म, ताम्र भस्म, शुद्ध गंधक, शुद्ध कुचला, हर्र, बहेड़ा, आमला, चीतामूल और अभ्रक भस्म समान भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर खरल करके सुरमेके समान बारीक कर लें। तदनन्तर उसे घी और शहद में मिलाकर घृतभावित पात्रमें भर कर सुरक्षित रक्खें। मात्रा—१ निष्क।

इसके सेवनसे गलत्कुष्ठ नष्ट होता है।

(९५१७) कुष्ठघ्नरसः

(र. प्र. सु. । अ. ८)

शुद्धं सूतं गन्धकं वै द्विभागं
कन्यानीरैर्मर्दयेद्वासरैकम् ।
शुद्धं लोहं मारितं भागमेकं
गोलं कृत्वा लोहपात्रे निधाय ॥
किञ्चित्किञ्चिद्गोजलं तत्र
सिञ्चेच्चुल्यामग्निं यामयुग्मं शनैश्च ।
तीव्राग्निं वै कारयेद्याममर्धं
स्वाङ्गं शीतं चूर्णयेत्तत्प्रयत्नात् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वह्निः काष्ठोदुम्बरी सोमराजी
श्रेष्ठा तद्वद्राजवृक्षो विडङ्गम् ।
लेहं कृत्वा लेपयेद्दद्रुकुष्ठं
गुञ्जायुग्मं भक्षयेद्वै रसं च ॥
दद्रूकुष्ठं श्वेतकुष्ठं विचर्चीं
सत्यं सत्यं नाशयेत्त्वग्गदांश्च ॥

शुद्ध पारद और शुद्ध गंधक २-२ भाग तथा लोहभस्म १ भाग लेकर सबको एकत्र खरल करके कज्जली बनावें और उसे १ दिन घृतकुमारीके रसमें खरल करके सबका एक गोला बना लें । एवं उसे लोहपात्र में रखकर अग्नि पर चढ़ावें और उसमें थोड़ा थोड़ा गोमूत्र डालते हुवे २ पहर मन्दाग्नि पर पाक करें । तत्पश्चात् आधा पहर तक तीव्राग्नि जला कर, स्वांगशीतल होने पर औषधको निकाल कर पीस लें । मात्रा—२ रत्ती ।

इसे खाने और निम्न लिखित लेप लगानेसे दाद, श्वेतकुष्ठ, विचर्चिका और त्वग्दोष अवश्य नष्ट हो जाते हैं ।

लेप—चीतामूल, कठूमर, बावची, हर्र, बहेड़ा, आमला, अमलतासकी छाल और बाय विडंग; सबके बारीक चूर्णको पानीके साथ पीस कर गाढ़ा गाढ़ा लेप बना लें ।

(९५१८) कुष्ठदलनरसः

(रसे. चि. म. । अ. ९ ; र. का. धे. । कुष्ठा.)

गन्धं रसं बाकुचिकोत्थबीजं
पलाशबीजं च कृशानुशुण्ठी ।
श्लक्ष्णानि मध्वाज्ययुतानि कृत्वा
सेवेत कुष्ठी च हिताशनस्तु ॥

शुद्ध गंधक, शुद्ध पारद, बावचीके बीज, पलाश (ढाक) के बीज, चीतामूल और सोंठ समान भाग लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य ओषधियों का चूर्ण मिलाकर खरल करके सूक्ष्म चूर्ण बना लें ।

इसे घी और शहदमें मिलाकर सेवन करनेसे और पथ्य पालन करनेसे कुष्ठ नष्ट हो जाता है ।

(९५१९) कुष्ठनाशनरसः

(र. र. स. । उ. अ. २०)

सूतभस्म द्विनिष्कं स्याद् गन्धकं च चतुष्पलम् ।
सार्धं चतुष्पलं चित्रं चतुर्विंशत्पलं भवेत् ॥
बाकुचीबीजचूर्णस्य द्वादशैव मरीचकम् ।
सर्वमेकत्र संयोज्य निष्कद्वितयसम्मितम् ॥
मधुना लेहयेत्प्रातः सर्वकुष्ठविनाशनः ॥

पारद भस्म २ निष्क (१० माशे), शुद्ध गंधक २० तोले, चीतामूल २२॥ तोले, बावचीके बीज १२० तोले और काली मिर्च ६० तोले लेकर सबको एकत्र खरल करके बारीक चूर्ण बनावें ।

मात्रा—२ निष्क (१० माशे) ।

इसे प्रातः काल शहदके साथ सेवन करनेसे समस्त प्रकारके कुष्ठ नष्ट हो जाते हैं ।

(९५२०) कुष्ठाङ्कुशरसः

(र. का. धे. । कुष्ठा.)

शुद्धसूतं द्विधा गन्धं मर्दयेद्बाकुचीद्रवैः ।
निर्गुण्ड्याश्च द्रवैश्चाहस्तद्गोलं शोषयेत्ततः ॥
गोलतुल्ये ताम्रपात्रे हण्डिकान्तर्निरोधयेत् ।
मृल्लवणैर्लेपयेत्सन्धिं ताम्रपात्रे निरोधयेत् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिकतां पूरयेद्भाण्डे रुद्ध्वा चुल्यां पचेल्लघु ।
यामैस्तत्समुद्धृत्य चूर्णितस्त्रिफलासमम् ॥
त्रिफलांशं भृङ्गिचूर्णं सर्वतुल्या च बाकुचा ।
सर्वमेतद्विचूर्ण्याथ संस्काराश्चात्र कथ्यते ॥
वह्निर्निम्बं राजवृक्षं करवीरं करञ्जकम् ।
मूलवल्कं समं कृत्वा गोमूत्रेऽष्टगुणे पचेत् ॥
पादशेषं समुत्तार्य वस्त्रपूतं पुनः पचेत् ।
ताम्रपात्रे घनीभूते पूर्वचूर्णं पचेल्लघु ॥
तथैव खादिरं क्वाथं क्षिप्त्वा पालाशजं तथा ।
तुल्यैः क्वाथैः पचेत्तावद्यावत्पिण्डत्वमागतम् ॥
भक्ष्यं निष्कं निहन्त्याशु कृष्णं वैपादिकं महत् ।
रसः कुष्ठाङ्कुशो नाम सर्वकुष्ठं नियच्छति ॥
तिक्तकोशातकी यष्टी वचा पटोलमूलकम् ।
निशाऽभयाऽमृतानिम्बैः कषायमनु कल्पयेत् ॥

१ भाग शुद्ध पारद और २ भाग शुद्ध गंधक की कज्जली बना कर उसे १-१ दिन बावची और संभालु के रसमें खरल करके गोला बनाकर सुखा लें । अब इस गोलेको कपड़ मिट्टी की हुई हांडी में रखकर उसपर गोलेके बराबर शुद्ध ताम्रकी कटोरी ढककर सन्धिको सेंधा नमक मिली हुई मिट्टीसे बन्द कर दें । तत्पश्चात् हांडीको रेतसे भरकर चूल्हे पर चढ़ावें और ६ पहर मन्दाग्नि पर पाक करें । तदनन्तर उसके स्वांग शीतल होने पर गोलेको निकालकर पीस लें और फिर उसमें गोलेके बराबर त्रिफला का चूर्ण और उतना ही भंगरे का चूर्ण एवं सबके बराबर बावचीका चूर्ण मिलाकर खरल करें । इसके पश्चात् चीतामूल छाल, नीमकी जड़की छाल, अमलतासकी जड़की छाल, कनेरकी जड़की छाल और करञ्जमूल की छालमें से प्रत्येक उक्त चूर्णके बराबर लेकर कूटकर आठ गुने (१६ गुने) गोमूत्रमें पकावें और चौथा भाग शेष रहने पर छान कर पुनः ताम्रपात्रमें पकावें एवं जब वह गाढ़ा हो जाए तो उसमें उपरोक्त चूर्ण और उस चूर्णके बराबर खैरका तथा पलाश (ढाक) का (अष्टमांश शेष) क्वाथ मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें । जब गोली बनने योग्य हो जाय तो १-१ निष्ककी गोलियां बना लें ।

इसके सेवनसे कृष्ण कुष्ठ और वैपादिक कुष्ठ का नाश होता है ।

अनुपान—कड़वी तोरी, मुलैठी, बच, पटोलकी जड़, हल्दी, हर्र, गिलोय और नीमकी छाल का क्वाथ बनाकर पियें ।

(९५२१) कुष्ठादिलेहः

(ग. नि. । बालरोगा. ११ ; यो. त. । त. ७७ ; च. द. । बालरो ६३)

कुष्ठं वचाऽभया ब्राह्मीकनकं[1] क्षौद्रसर्पिषा ।
वर्णायुःकान्तिजननं लेहं बालस्य दापयेत् ॥

कूठ, बच, हर्र, ब्राह्मी और स्वर्ण भस्म समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ।

इसे घी और शहदमें मिलाकर बालकको चटानेसे उसका रंग स्वच्छ होता और आयु तथा कान्ति बढ़ती है ।

(**मात्रा**—आधी रत्ती से १ रत्ती तक)

---

१ ब्राह्मीकमलमिति पाठान्तरम् ।
१ भार्ङ्गीकैतकमिति पाठान्तरम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९५२२) **कुष्ठारिरसः** (१)

(र. का. धे. । कुष्ठा.)

रसगन्धकतालानि पञ्चविंशतिभागतः ।
प्रत्येकं स्याद्दशगुणं ताम्रं तन्मर्दयेत्त्र्यहम् ॥
स्नुहीक्षीरेण भल्लाततैले तु दिनसप्तकम् ।
पञ्चषष्टिकयामांस्तु काचीयन्त्रगं पचेत् ॥
रसोऽयं सर्वकुष्ठघ्न एकगुञ्जाप्रमाणतः ॥

शुद्ध पारद, गंधक और हरताल २५-२५ भाग तथा ताम्र भस्म १० भाग लेकर सबको एकत्र खरल करें और बारीक र्ण हो जाने पर ३ दिन स्नुही (थूहर-सेंड) के दूधमें और फिर सात दिन भिलावेके तेलमें खरल करके आतशी शीशीमें भरकर ६५ पहर बालुकायन्त्रमें पाक करें।

मात्रा—१ रत्ती ।

यह रस समस्त प्रकारके कुष्ठोंको नष्ट करताहै ।

(९५२३) **कुष्ठारिरसः** (२)

(र. का. धे. । कुष्ठा.)

शुद्धसूते चित्रकस्य रसैर्मासं विमर्दितम् ।
रसोनद्रवतस्तद्वत्तैलैरेतैः पृथक् पुनः ॥
कटभीधूर्तकौन्तीनां गुञ्जानां विषतस्तथा ।
मासैकं स्वेदयेल्लौहे ततो गन्धेन कज्जलीम् ॥
कृत्वा ततः काचकूप्यां पञ्चविंशतियामकम् ।
पाचितोऽयं सर्वकुष्ठदद्रुघ्नः परिकीर्तितः ॥

शुद्ध पारेको १-१ मास चीते के रस और ल्मोन (ल्हसन) के रसमें खरल करें और फिर उसे मालकंगनीके तेल, धतूरेके तेल, रेणुकाके तेल, गुंजा (चौंटली) के तेल और बछनागके तेलमें पृथक् पृथक् १-१ मास लोहपात्रमें स्वेदित करें । तदनन्तर समान भाग गंधक मिलाकर कज्जली बनावें और उसे आतशी शीशीमें भरकर २५ पहर बालुकायन्त्र में पाक करें ।

इसके सेवन से समस्त कुष्ठ और दद्रु नष्ट हो जाते हैं ।

(९५२४) **कुष्माण्डखण्डलेहः**

(र. र. स. । उ. अ. १८)

कुष्माण्डोत्थरसस्य सत्पलशतं तुल्यं गवां क्षीरकं
धात्रीचूर्णपलाष्टकं लघु पचेद्यावद्भवेत्पिण्डितम् ।
धात्रीतुल्यसितं पलार्धममृतं तल्लेहकं लेहये-
त्ख्यातं कुष्माण्डखण्डं क्षपयति
नितरामम्लपित्तं समग्रम् ॥

भूरे कुम्हड़े (पेठे) का रस १२॥ सेर गायका दूध १२॥ सेर और आमलेका चूर्ण ४० तोले लेकर सबको एकत्र मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें । जब वह गाढ़ा होने लगे तो ४० तोले खांड मिला दें और पाक तैयार होने पर उसमें २॥ तोले रस सिन्दूर मिलाकर ठंडा करके सुरक्षित रक्खें ।

इसके सेवनसे अम्लपित्त रोग नष्ट होता है ।

(**मात्रा**—३ तोले ।)

(९५२५) **कुसुमायुधरसः**

(र. र. स. । उ. अ. २७)

सूतस्य द्विपलं चतुष्पल-
मितो गन्धो मृतं काञ्चनं
पादन्यूनपलं सुवर्णविमलाताप्यं रसेनोन्मितम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोहं कान्तमलस्तथासितघनं कर्षोन्मितावेकशो
हन्तव्यं दरदेन लोहमखिलं चूर्णं ततो मर्दितम् ॥
मूषायां विगतावृतौ सिकतया यन्त्रे कृते स्थापयेद्
ब्राह्मीवारि दिनं निधेहि
तदनु प्रत्येकमेकात्र्यहम् ।
वासाकुञ्जरशुण्ठिकात्रिकटुकं मेषी च निर्गुण्डिका
तालीकुञ्जरशुण्डिकाहुत-
वहस्तोयानि दत्वा पचेत् ॥
ततस्तं निखिलाम्भोभिर्विमर्द्य पुटयेल्लघु ।
निर्यासैः शाल्मलैर्ग्राह्यो वल्लत्रयमितो रसः ।
वलीपलितनाशार्थं त्रिमासं मधुराशनः ॥
सुरतेषु सुलोचनाशते-
र्गतवीर्यच्यवनैर्मनो यदि ।
तदमुं रसमाश्रयाश्रयम्
कुसुमास्त्रस्य चिराय धन्विनः ॥
यदि सन्ति सहस्रशः स्त्रिय-
श्चतुराश्लेषमनोहराः प्रसभाः ।
सुकवेरिव गुम्फना गिरां
सुरसोऽनेन युवा रसेन भूयात् ॥

शुद्ध पारद १० तोले, शुद्ध गंधक २० तोले, हिंगुल द्वारा भस्म किया हुवा सुवर्ण ३॥। तोले, सुवर्ण माक्षिक भस्म १० तोले, रौप्य माक्षिक भस्म १० तोले, कान्त लोह भस्म १। तोला, मण्डूर भस्म १। तोला और कृष्णाभ्रक भस्म १। तोला लेकर प्रथम पारे गंधककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य औषधियां मिलाकर, सबको अच्छी तरह खरल करके खुले मुंहवाली मूषामें भर कर उसे बालुकायन्त्रमें रक्खें और नीचे अग्नि जलावें। जब रेत अच्छी तरह गरम हो जाय तो मूषामें थोड़ा थोड़ा ब्राह्मीका रस डालना शुरु करें (और औषध को लोहेकी सलाई आदि से हिलाते रहें।) इसी प्रकार २४ घंटे ब्राह्मी का रस डालते हुवे पाक करें और फिर क्रमशः बासा (अडूसा) का स्वरस, हाथीसुंडीका रस, त्रिकुटेका क्वाथ, मेढासिंगीका रस या क्वाथ, संभालुका रस, ताड़ी, हाथीसुंडीका रस और चीतामूलका क्वाथ डालते हुवे ३-३ दिन पृथक् पृथक् पाक करें। तदनन्तर स्वांग शीतल होने पर औषध को निकालकर उसे उपरोक्त समस्त औषधियोंके रसमें (पृथक् पृथक् १-१ दिन) घोटकर एक एक लघु पुट लगावें।

इसमें (समान भाग) मोचरस मिलाकर ९ रत्तीकी मात्रानुसार सेवन करने और मधुर आहार करनेसे ३ मासमें बलि पलित का नाश होकर बहुतसी स्त्रियों से रमण करनेकी सामर्थ्य प्राप्त हो जाती है।

(९५२६) कूष्माण्डादिरसः

(यो. र. । मूत्रातिसारा.)

कूष्माण्डपत्रस्वरसैः पक्वं पारदनिष्ककम् ।
द्विनिष्कं गन्धकं कृत्वा ज्वलने कज्जलीकृतः ॥
असौ समरिचः सोमरोगातिसृतिनाशनः ॥

१ भाग शुद्ध पारदको भूरे कुम्हड़े (पेठे) के पत्तों के रसमें (१ दिन दोलायन्त्र विधि से) पकावें और फिर उसमें २ भाग शुद्ध गंधक मिला कर कज्जली बनावें। तथा उसे मन्दाग्नि पर पाक करके (पर्पटी बनाकर) सुरक्षित रक्खें।

इसे काली मिर्चके चूर्णके साथ सेवन करनेसे सोमरोग और मूत्रातिसार का नाश होता है।

(मात्रा-रस १ रत्ती। मिर्चोंका चूर्ण १ मा.।)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९५२७) कृमिविनाशनरसः

(रसे. सा. सं. । कृम्य.)

शुद्धसूतं समं गन्धमभ्रं लोहं मनःशिला ।
धातकी त्रिफला लोध्रं विडङ्गं रजनीद्वयम् ॥
भावयेत्सप्तधा सर्वं शृङ्गवेरभवैरसैः ।
चणमात्रां वटीं कृत्वा त्रिफलारससंयुताम् ॥
भक्षयेत्प्रातरुत्थाय कृमिरोगोपशान्तये ।
वातिकं पैत्तिकं हन्ति श्लैष्मिकञ्च त्रिदोषजम् ।
क्रिमिविनाशनामायं क्रिमिरोगकुलान्तकः ॥

शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, शुद्ध मनसिल, धायके फूल, हर्र, बहेड़ा, आमला, लोध, बायबिडंग, हल्दी और दारुहल्दी समान भाग लेकर प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बनावें और फिर उसमें अन्य ओषधियों का चूर्ण मिलाकर सबको एकत्र खरल करके अदरकके रसकी सात भावना दें और चनेके समान गोलियां बना लें।

इनमेंसे (२–२ गोली) प्रातः काल त्रिफलाके क्वाथके साथ सेवन करनेसे वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज कृमिरोग नष्ट होता है।

(९५२८) कृम्यङ्कुशोरसः

(र. प्र. सु. । अ. ९)

निम्बतैलेन सम्मिश्रं पारदं गन्धकं तथा ।
क्रिमिजित्क्वाथसंयुक्तं कृमिकोटिविनाशनम् ॥

समान भाग शुद्ध पारद और गंधककी कज्जलीको नीमके तेलमें खरल करें।

इसे बायबिडङ्ग के क्वाथके साथ सेवन करनेसे कृमिसमूह नष्ट हो जाता है।

(९५२९) कृष्णादिचूर्णम्

(वृ. मा. । परिणामशूला.)

कृष्णाभयालोहचूर्णं लिह्यात्समधुशर्करम् ।
परिणामभवं शूलं सद्यो हन्ति सुदारुणम् ॥

पीपल, हर्र और लोहभस्म समान भाग लेकर एकत्र खरल करें।

इसे खांड और शहद के साथ मिलाकर खानेसे भयंकर परिणाम शूल तुरन्त नष्ट हो जाता है।

(मात्रा—३ रत्ती ।)

इति ककारादिरसप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ ककारादिमिश्रप्रकरणम्

(९५३०) ककुभत्वचादियोगः

(वृ. मा. । राजयक्ष्मा.)

ककुभत्वक्नागबलावानरि-
बीजानि चूर्णितं पयसि ।
पक्वं मधुघृतयुक्तं ससितं यक्ष्मादिकासहरम् ॥

अर्जुनकी छाल, नागबला (गंगेरन) और कौंचके बीज समान भाग लेकर चूर्ण बनावें तथा उसे दूधमें पकाकर उसमें शहद, घी और खांड मिलाकर सेवन करें ।

इसके सेवन से राजयक्ष्मा और कासादि का नाश होता है ।

(९५३१) ककुणीमूलयोगः

(ग. नि. । नाडीव्रणा. ७)

यः ककुणीमूलसमीपकाण्ड-
मश्नाति नित्यं पुरुषोऽभियुक्तः ।
नाडीव्रणो रोहति तस्य
शीघ्रमनारतप्रस्रुतसान्द्रपूयः ॥

नित्य प्रति मालकंगनी की जड़के समीपका कांड खानेसे वह नाड़ी व्रण कि जिससे गाढ़ा गाढ़ा पीप निकलता हो शीघ्र नष्ट हो जाता है ।

(९५३२) कटुतुम्ब्याद्या वर्तिः

(ग. नि. । अर्शो. ४)

कटुतुम्ब्यास्तथा दन्त्याः शकृतः कुक्कुटस्य च ।
मुसल्याश्चाश्वगन्धायाश्चित्रकस्य च यत्नतः ॥
चूर्णैस्तुल्यैः कृतं चूर्णमर्कक्षीरेण भावयेत् ।
स्नुहीक्षीरेण वा सम्यग्वारिणा परिपेषयेत् ॥
वस्त्रवर्तिं बुधस्तेन समालिप्य समन्ततः ।
गुदे विनिःक्षिपेद्यत्नात् प्रातः सायं च बुद्धिमान् ॥
वेदना च भवेत्तीव्रा वह्निना स्वेदयेद्गुदम् ।
नोपशाम्येद्यदा तेन तदा चैवोष्णवारिणि ॥
विनिवेश्य गुदं तिष्ठेद्वेदनाक्षमकारणात् ।
अद्याद्वृष्यमथान्नं च शिशिरं जलमापिबेत् ॥
गुदजानां विनाशाय सप्ताहं तु समाहितः ।
विधिमेनं प्रकुर्वीत गतशङ्कस्तु मानवः ॥

कड़वी तूंबी का चूर्ण, दन्तीमूलका चूर्ण, मुरगेकी विष्ठा, मूसली, असगन्ध और चीतामूल; इनके समान भाग मिलित चूर्णको आकके या स्नुही (सेहुंड—थूहर) के दूधकी भावना दें । तदनन्तर उसे पानीके साथ बारीक पीस कर उसमें कपड़ेकी बत्ती भिगो कर अर्श वाले रोगीकी गुदामें लगा दें । जब तीव्र वेदना हो तो गुदाको अग्निसे सेकें । यदि इससे पीड़ा शान्त न हो तो रोगीको गरम पानी में बिठलावें ।

इस प्रकार प्रातः सायं १ सप्ताह तक उपचार करनेसे अर्शरोग अवश्य नष्ट हो जाता है, इसमें सन्देह न करना चाहिये ।

इस प्रयोगके दिनों में वृष्य अन्न खाना और शीतल जल पीना चाहिये ।

(९५३३) कटूवलाब्वाद्या वर्तिः

(रा. मा. । अर्शो. १८)

कटूवलाबुसुरनाथवारुणी
जालिनीफलरजोगुडैः कृता ।
वर्तिराशु विनिहन्ति देहिनां
पायुमध्यनिहिताऽर्शसां चयम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कड़वी तूंबी, इन्द्रायण और बिण्डाल डोडा (देवदाली का फल) समान भाग लेकर चूर्ण बनावें और उसे गुड़में मिलाकर वर्ति बना लें।

इसे गुदामें रखनेसे अर्शके मस्सों का समूह शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

(९५३४) कदलीकन्दयोगः

(ग. नि. । उदरा. ३२ ; रा. मा. । उदररो.)

सर्पिर्गुडाभ्यां सह पाचयित्वा
यः कदलीकन्दममन्दमत्ति ।
सद्यः पतन्ति कृमयः समग्रा
यात्युग्रदन्तोदरकुक्षिपीडा ॥

केलेकी जड़को घी और गुड़के साथ पकाकर खानेसे उदरकृमि शीघ्र ही निकल जाते हैं तथा दान्त, उदर और कुक्षिकी तीव्र पीड़ा नष्ट हो जातीहै।

(९५३५) कदलीफलयोगः (१)

(रा. मा. । स्त्रीरोगा. ३०)

योषिद्रजस्य नितरां समभिप्रवृत्तौ
सर्पिर्युतानि यदि वा कदलीफलानि ॥

केलेकी फली में घी मिलाकर सेवन करने से रक्तप्रदर नष्ट होता है।

(९५३६) कदलीफलयोगः

(वैद्यामृत । वि. १०)

अन्त्रेण हीनं मरिचैः सगर्भं
रम्भाफलं तच्निशि सन्निधाय ।
प्रातः सुभृष्टं मृदुपावकेऽद्यात्
श्वासान् छिनत्तीव तरून्कुठारः ॥

शामके वक्त केलेके फलको चीरकर उसके भीतरकी नस निकाल दें और उसमें काली मिर्चका चूर्ण भरकर रख दें। दूसरे दिन प्रातः काल इसे मन्दाग्नि पर सेक कर खावें।

यह प्रयोग श्वासको इस प्रकार नष्ट कर देता है जिस प्रकार कुल्हाड़ी वृक्षोंको।

(९५३७) कदलीफलादियोगः

(वै. म. र. । पटल ३)

श्वासायासविनाशार्थमाशयेत् कदलीफलम् ।
मूत्रे मूत्रेऽथवा भृष्टमथवाऽङ्गारपाचितम् ॥

केलेकी फलीको गोमूत्रमें पकाकर या अंगारों पर पकाकर अथवा (भाड़में) भूनकर सेवन करनेसे श्वास रोग नष्ट होता है।

(९५३८) कपित्थादिषाडवः

(ग. नि. । अरोचका. १२)

षाडवश्च कपित्थानां सव्योषमधुशर्करः ।
अरोचकेषु सर्वेषु प्रशस्तो धारितो मुखे ॥

कैथका गूदा, सोंठ, मिर्च, पीपल, शहद और खांड समान भाग लेकर सबको एकत्र मिलाकर मुखमें धारण करनेसे हरप्रकारकी अरुचि नष्ट होतीहै।

(९५३९) करञ्जपत्रयोगः

(यो. र. । छर्दि.)

कोमलकरञ्जपत्रं सलवणमम्लेन संयुक्तम् ।
यः खादति दीनवदनश्छर्दिकफौ तस्य कुत्रेह ॥

करंजके कोमल पत्तों (कोंपलों) को पीसकर उसमें सेंधा नमक मिलाकर नीबूके रसके साथ खानेसे छर्दि और कफका नाश होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९५४०) करञ्जयोगाः

(ग. नि. । अरोचका. २३)

कवलो धूमपानं तु चूर्णानि मुखधावनम् ।
कारञ्जं दन्तकाष्ठं च विधेयमरुचौ सदा ॥

अरुचिमें करञ्जके कवल धारण कराने चाहियें, इसीका धूमपान कराना, इसीके चूर्णका मंजन कराना और इसी की दतौन करानी चाहिये ।

(९५४१) करभस्वेदः

(वै. म. र. । पटल १६)

विघृष्य करभौ प्रायः स्वेदयेन्नयने मुहुः ।
वर्त्मसञ्जातपिडका नाशमायान्त्यसंशयम् ॥

दोनों हाथोंके करभ प्रदेश (पोंहचेसे कनिष्ठ उंगली तक हथेली के किनारों) को परस्पर घिसकर उनसे बार बार सेकने से आंख की पलक की पिडिका नष्ट हो जाती है ।

(९५४२) कर्कन्ध्वादिपानकम्

(ग. नि. । मदात्यय.)

कर्कन्धुबदराणां च मस्थं कुर्यात् सुकुट्टितम् ।
द्विमस्थे गालयेत्तोये सप्तकृत्वः पुनः पुनः ॥
अथनं मृण्मये भाण्डे सुगुप्तं विनिधारयेत् ।
द्वे च दद्याद्गुडपले शर्करायाः पलं तथा ॥
सूक्ष्मं च मरिचात्कर्षं चतुर्थं केसरस्य च ।
त्वक्पत्रधरणे द्वे च सूक्ष्मैला कर्षमेव च ॥
मृणालादर्धकर्षं च सूक्ष्मचुर्णानि कारयेत् ।
जातीवाससमायुक्तं पानकं पानविभ्रमम् ॥
नाशयत्याशु पानेन छिन्नाभ्राणीव मारुतः ।
एतच्छर्दिं तृषां दाहमतीसारं प्रवाहिकाम् ॥
अरुचिं मूत्रकृच्छ्रं च हन्यात्पानात्ययं नृणाम् ।
अष्टानि सप्त चाष्टौ च नृणां पानात्ययः स्मृतः ।
पानं हि भजतेऽजीर्णमत ऊर्ध्वं विमार्गगम् ॥

१ सेर कर्कन्धु (झड़बेरीके बेर) कूटकर ४ सेर पानीमें डाल दें और उन्हें अच्छी तरह मलकर सात बार छान लें । इस पानी को मिट्टीके पात्रमें डालकर उसमें १० तोला गुड़, ५ तोला खांड, १। तोला काली मिर्च, ३।। माशे केसर, ५ माशे दालचीनी, ५ माशे तेजपात, १। तोला छोटी इलायची, ७।। माशे कमलनाल; इनका बारीक चूर्ण तथा सुगन्ध योग्य जावित्री मिलाकर (अथवा चमेली के फूलों से सुगन्धित करके) ढककर रख दें ।

इसे पीनेसे पान विभ्रम, तृषा, छर्दि, दाह, अतिसार, प्रवाहिका, अरुचि, मूत्रकृच्छ्र और पानात्यय का नाश होता है ।

(९५४३) कर्णिकाररसयोगः

(र. चि. म. । स्त. १०)

कर्णिकारस्य निर्दोषाम्पल्लवांश्च समानयेत् ।
कोमलानतिमात्रेण कुट्टयेत्तान्दृढान्खलु ॥
केवलं रसमानीय शोषयेदातपे स्थितम् ।
चूर्णयेच्च रसं शुष्कं द्विटङ्कं तं प्रयच्छति ॥
मरिचानां त्रयं पश्चाद्दद्यात्तदनुपानवत् ।
तेनैवात्र प्रयोगेण त्रिवारं रेचयेन्नरम् ॥
चतुष्टयं यदा दद्याच्चतुर्वारं विरेचनम् ।
एवं भवेत्क्रमेणैव रेचनं पञ्चधाऽपि च ॥
रेचयेदचिरेणैव कर्णिकाररसः परः ॥

कर्णिकार (छोटे अमलतास) के कोमल और निर्दोष (जन्तु आदिसे रहित) पत्तोंको अच्छी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तरह कूटकर रस निकालें और उसे धूप में सुखाकर पीस लें।

इसमें से ८ माशे रस खाकर ऊपरसे ३ काली मिर्च खा लें तो उससे ३ दस्त आ जाएंगे। यदि ४ मिर्च खाई जायंगी तो ४, और ५ खाई जायंगी तो ५ दस्त होंगे।

(९५४४) कलहंसकाञ्जी

(व. से.; भै. र.; र. र.; च. द. । अरोचका.)

अष्टादशशिग्रुफलानि दश
मरिचानि विंशतिपिप्पल्यः।
आर्द्रकपलं गुडपलं प्रस्थत्रयमारनालस्य ॥
विडलवणसहितमेतत्
खजाहतं सुरभिगन्धाढ्यम्।
व्यञ्जनसहस्रघातिज्ञेयं कलहंसकं नाम्ना ॥

सहंजनेकी फली १८, काली मिर्च १०, पीपल २०, अदरक ५ तोले, गुड़ ५ तोले और आरनाल (कांजी) ३ सेर (६ सेर) लेकर कूटने योग्य चीजोंको कूटकर सबको एकत्र मिलावें और उसमें स्वाद योग्य विड नमक मिलाकर मथनीसे मथें। अन्तमें उसे दालचीनी, इलायची तेजपात और नागकेसरके चूर्णसे सुगन्धित कर लें।

यह कांजी अत्यन्त रुचिवर्द्धक है।

(९५४५) कशेरुकादियोगः

(व. से. । नेत्ररोगा.; ग. नि.[१]; वृ. मा. । नेत्ररो.)

कशेरुमधुकानाञ्च चूर्णमम्बरसंभृतम्।
छागीक्षीरे घृते सेकः पित्तरक्ताभिघातजित् ॥

कसेरु और मुलैठीके चूर्णको एकत्र मिलाकर कपड़ेमें बांध कर पोटली बनावें। इसे बकरीके दूध और घी में भिगोकर आंखमें निचोड़नेसे पित्तज और रक्तज नेत्राभिष्यन्द रोग नष्ट होता है।

(९५४६) कसेर्वादिक्षीरम्

(वृ. मा. । स्त्रीरोगा.; व. से. । स्त्रीरोगा.; यो. त. । त. ७५)

कसेरुशृङ्गाटकजीवनीयैः
पद्मोत्पलैरण्डशतावरीभिः।
सिद्धं पयः शर्करया विमिश्रं
संस्थापयेद्गर्भमुदीर्णशूलम् ॥

कसेरु, सिंघाड़ा, जीवनीय गण (प्र. सं. १९८२), कमल, नीलोत्पल, अरण्डमूल और शतावर समान भाग मिलित २ तोले, दूध १२ तोले और पानी १२८ तोले लेकर सबको एकत्र मिलाकर पकावें। जब पानी जल जाय तो दूधको छान लें।

इसमें खांड मिलाकर पीनेसे गर्भशूल नष्ट होता और गिरता हुवा गर्भ रुक जाता है।

(९५४७) काकजङ्घामूलबन्धनम्

(रा. मा. । ज्वरा. २०)

यः सततमेव निद्रापरिघूर्णितलोचनो दिवारात्री
वायसजङ्घामूलं मूर्ध्नि तदीये निबध्नीयात् ॥

यदि ज्वर के रोगी की आंखोंमें दिन रात निद्रा भरी रहती हो तो उसके शिर पर काकजंघाकी जड़ बांधनी चाहिये।

---

१ ग. नि. और वृ. मा. में पोटली को बरसात के पानीमें भिगोनेको लिखा है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९५४८) **काकोदुम्बरयोगः**

(वै. म. र. । पट. ३)

काकोदुम्बरपल्लवं शकलितं दुग्धे गवां पाचितं किञ्चिन्मिश्रितमागधं दिनमुखे पीत्वा पयस्ताहशम् ।
कासश्वासमशेषमाशु शमयेद्राढमप्रसूनान्वितं क्षीरं तद्वदिदं द्वयं च भिषजां कीर्तिप्रदं कीर्तितम् ॥

कठूमरके पत्तोंको कूटकर गोदुग्धमें पकाकर उसमें ज़रासी पीपल मिलाकर प्रातः काल पीने से कास श्वासका नाश होता है ।

(पत्ते २॥ तोले, दूध २० तोले, पानी ८० तोले; सबको मिलाकर पानी जलने तक पकावें और छान लें । पीपलका चूर्ण १ माशा ।)

इसी प्रकार मैनफलके फूलोंके साथ पका हुवा दूध भी कास श्वासको नष्ट करता है ।

ये दोनों प्रयोग वैद्योंको यश दिलाने वाले हैं ।

(९५४९) **काञ्जिकयोगः**

(ग. नि. । अजीर्णा. ५)

कुञ्जराशननवीनपल्लवै राजिकाभिरपि संयुतं शृतम् ।
काञ्जिकं सलवणं विषूचिकां नाशयत्यलसकं च वेगतः ॥

अश्वत्थ (पीपल वृक्ष) के नवीन पत्ते और राई को कांजीमें पकाकर छानकर सेंधा नमक मिलाकर पिलाने से विसूचिका और अलसकका शीघ्र नाश होता है ।

(९५५०) **काञ्जिकादियोगः**

(रा. मा. । स्त्रीरोगा. ३०)

क्वथितकाञ्जिकसंयुतमादृता सुरभिहिङ्गुविचूर्णितमङ्गना ।
पिबति या सितसैन्धवसंयुतं सुखयुतं प्रसवं लभते ध्रुवम् ॥

कांजीमें हींग और सफेद सेंधा नमक मिलाकर पकाकर पिलाने से प्रसव सुखपूर्वक हो जाता है ।

काञ्जीसिद्धहरीतकी

प्र. सं. ८४७४ "हरीतक्यादिचूर्णम्" देखिये ।

(९५५१) **कारवेल्लीमूलाश्च्योतनम्**

(रा. मा. । नेत्ररोगा. ३; ग. नि. । नेत्ररो.)

मूलेन कारवेल्ल्यास्तुरङ्गमूत्रान्वितेन पिष्टेन ।
परिपूरितनयनानां नीलीदोषः शमं याति ॥

करेलेकी जड़को घोड़ेके मूत्रमें पीसकर आंखमें डालनेसे नीली (काच) नामक नेत्र रोग नष्ट होता है ।

(९५५२) **कार्पासभस्मयोगः**

(वै. म. र. । पट. ११)

समूलतूलं संशुष्कं कार्पासं भस्मसात्कृतम् ।
तद्भस्मद्विगुणं शालितण्डुलं पयसौदनम् ॥
घृतेन सह भुञ्जीत सर्वश्वयथुनाशनम् ॥

कपास और उसकी जड़को एकत्र मिलाकर भस्म करें । तदनन्तर १ भाग यह भस्म और २ भाग शाली चावल एकत्र मिलाकर, दूधमें पकाकर भात बनावें । इसमें घृत मिलाकर सेवन करने से हर प्रकारका शोथ रोग नष्ट होता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९५५३) कार्पासिकायोगः

(रा. मा. । स्त्रीरोगा.)

कार्पासास्थि विपक्वमाहिष-
घृताभ्यक्ता पुनश्चूर्णितैः ।
कार्पासास्थिभिरेव च
प्रमृदिता कार्पासमूलोद्भवा ॥
वर्तिर्योनिसमुत्थशूलशमनी सद्यो भवेद्योषिताम्

कपासकी जड़के एक (८–१० अंगुल लम्बे) चिकने टुकड़े पर कपासके बीजोंके कल्क और क्वाथ से पका हुवा भैंसका घी लगाकर उस पर कपासके बीजोंका चूर्ण छिड़ककर योनिमें रखने से योनिशूल शीघ्र नष्ट हो जाता है ।

(९५५४) काश्मरीफलयोगः

(रा. मा. । क्षुद्रा. ८ ; ग. नि. । शीतपित्ता. ३७)

कालेन पाकं मातपश्च शुष्कं
गव्येन सिद्धं पयसोपयुक्तम् ।
काश्मर्यमाशु प्रतिहन्ति
शीतपित्तं हिताहाररतेन लीढम् ॥

खम्भारीके वृक्ष पर स्वयं पके और सूखे हुवे फलों को गायके दूधमें पकाकर खाने और पथ्य से रहने से शीत पित्त शीघ्र ही नष्ट हो जाता है ।

(९५५५) कासमर्दादि योगः

(वृ. मा. । हिक्का. ; यो. र. । हिक्का.)

कासमर्दकपत्राणां यूषः सौभाञ्जनस्य च ।
शुष्कमूलकयूषश्च हिक्काश्वासनिवारणः ॥

१। तोला कसौंदीके पत्तोंको २ सेर पानीमें पकावें और १ सेर रहने पर छान लें और फिर उसमें मूंगका यूष बनावें । इसे पीनेसे हिचकी और श्वास का नाश होता है ।

इसी विधिसे सहंजनेके पत्तोंके या सूखी मूलीके क्वाथमें मूंगका यूष बनाकर देनेसे भी हिचकी और श्वास नष्ट होता है ।

(९५५६) किण्वाद्या वर्तिः

(रा. मा. । स्त्रीरोगा. ३०)

किण्वकणागुडदन्तिमदन-
फलैः कटुकालाबुफलबीजैः ।
यवक्षारयुतैः स्नुहीक्षीर-
भावितैश्च कल्पयेद्वर्तिम् ॥
सा योनिकुहरनिहिता स्त्री-
णामत्यन्त नष्टकुसुमानाम् ।
कुसुमप्रवृत्तिजननी निर्दिष्टा वृद्धभावेऽपि ॥

शराबकी गाद, पीपल, गु , दन्तीमूल, मैनफल, कड़वी तूंबीके बीज और जवाखार; इनके चूर्णको एकत्र मिलाकर स्नुही (थूहर) के दूधकी भावना दें । इस चूर्णको (पानीमें पीसकर कपड़ेमें लगाकर) वर्ति बनावें । इसे योनिमें रखनेसे वृद्धा स्त्री का भी सर्वथा नष्ट हुवा मासिक धर्म भी खुल जाता है ।

(९५५७) किंशुकबीजयोगः

(वै. म. र. । प. ५)

किंशुकबीजपरागैर्लशुनपुनर्भूप्रवालसंयुक्तैः ।
पोट्टलिका तिलजाक्ता स्वेदादर्शांसि नाशयति ॥

पलाश के बीज, पलाशके फूलकी केसर, ल्हसन और पुनर्नवा (बिसखपरा) की कोंपल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समान भाग लेकर सबको एकत्र पीसकर पोटली बनावें। इसे तिलके तेलमें भिगोकर गरम करके (या गरम तेलमें भिगो भिगो कर) उससे स्वेदित करनेसे अर्श रोग नष्ट हो जाता है।

(९५५८) कुङ्कुमादियोगः

(व. से. । शिरोरोगा.)

भृष्टाज्ये कुङ्कुमं किञ्चित्पिहितं सितया समम्।
पिष्टं छगल्या क्षीरेण भुक्तं पित्तविनाशकम् ॥
एतदर्द्धावभेदघ्नं सूर्यावर्तशिरोर्त्तिनुत् ॥

केसरको जरा घीमें भूनकर समान भाग खांड मिलाकर, बकरी के दूधमें पीसकर पीनेसे पित्तज शिरोरोग, अर्द्धावभेद, सूर्यावर्त और शिरशूल का नाश होता है।

(९५५९) कुटजादिक्षीरम्

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ११)

कुटजमूलसकेसरमुत्पलं
खदिरधातुकिमूलभृतं पयः।
पिबति भक्षणयोगमसृग्भवं
गुदजनाशनकारि विचारितम् ॥

कुड़ेकी जड़की छाल, नागकेसर, कमल, खैरसार और धायकी जड़ समान भाग मिलित २ तोले, दूध १६ तोले और पानी ६४ तोले लेकर सबको एकत्र मिलाकर पकावें। जब पानी जल जाय तो दूधको छान लें। इसमें मक्खन मिलाकर पीनेसे रक्तार्शका नाश होता है।

(९५६०) कुबेराक्षयोगः (१)

(वै. म. र. । पटल ४)

प्रयान्ति तद्भक्षयतां प्रभाते
कुबेरनेत्राभिनवं प्रवालम्।
नृणां शमं छर्द्यरुचिप्रसेकाः
ससैन्धवं नागररामठं वा ॥

प्रातः काल लता-करंज के नवीन पत्ते खाने से या सेंधा नमक, सोंठ और हींगका चूर्ण (अथवा इस चूर्णके साथ करंजके पत्ते) खानेसे छर्दि, अरुचि और प्रसेक (मुंहसे थूक आना)का नाश होता है।

(९५६१) कुबेराक्षयोगः (२)

(वै. म. र. । पट. ६)

यक्षलोचनमज्जानं काञ्जिकेन पिबेत्प्रगे।
सश्लेष्मरक्तातीसारं कोष्ठशूलं जयेद् द्रुतम् ॥

लताकरंजके बीजोंकी गिरी कांजीके साथ प्रातः काल पीनेसे कफयुक्त रक्तातिसार तथा उदर शूल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

(मात्रा—४-६ रत्ती)

(९५६२) कुशादिक्षीरम्

(वृ. मा. । स्त्री रोगा. ; व. से. । स्त्रीरोगा. ; यो. र. । स्त्रीरोगा.)

कुशकाशोरुबूकाणां मूलैर्गोक्षुरकस्य च।
मृतं दुग्धं सितायुक्तं गर्भिण्याः शूलनुत्परम् ॥

कुश, कास, अरण्ड और गोखरु; इनकी जड़ समान भाग मिलित २ तोले लेकर कूटकर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१६ तोले दूधमें डालें और उसमें ६४ तोले पानी मिलाकर पानी जलने तक पकावें और छान लें।

इस में मिश्री मिलाकर पीनेसे गर्भिणीका शूल नष्ट होता है।

(९५६३) कुशादिक्षीरयोगः

(व. से. । शूला.)

कुशादिमूलयष्ट्याह्वैः क्षीरमर्द्धोदके शृतम् ।
रक्तपित्तोपशमनं वेदना चोपशाम्यति ॥

कुशादि पंचमूल (कुश, कास, शर, दाभ और ईख; इनकी जड़) और मुलैठी; इनका समान भाग मिलित चूर्ण २ तोले, गोदुग्ध १६ तोले और पानी ८ तोले लेकर सबको एकत्र मिलाकर पानी जलने तक पकावें और फिर छान लें।

यह दूध रक्तपित्त और शूलको नष्ट करता है।

(९५६४) कुष्ठादियोगः

(यो. त. । त. ६९)

कुष्ठैलवालुकैलासमधुकधान्याकपिमधुकवलः ।
हरति मुखपूतिगन्धं रसोनमदिरादिगन्धं च ॥

कूठ, एलवालुक, इलायची, महुवेकी छाल, धनिया और मुलैठी समान भाग लेकर पानीके साथ पीसकर मुखमें धारण करनेसे मुखकी दुर्गन्ध तथा लहसन और मदिरादिकी गंध नष्ट हो जाती है।

(९५६५) कृतमालादिकल्कः

(भा. प्र. । म. खं. २ कुष्ठा.)

कृतमालस्य पत्राणि नक्तमालदलानि च ।
द्रोणपुष्पीपलाशानि सर्षपा राजिका निशा ॥
कुटजो मधुकं मुस्तं नागरं रक्तचन्दनम् ।
धात्री यवानिका दारु कल्क एष प्रकल्पितः ॥
उद्वर्तनादयं कल्कः कटुतैलसमन्वितः ।
कण्डूं पामां हरत्येव शीतपित्तादिकान्गदान् ॥

अमलतासके पत्ते, करञ्जके पत्ते, गूमाके पत्ते, सरसों, राई, हल्दी, इन्द्रजो, मुलैठी, नागरमोथा, सोंठ, लालचन्दन, आमला, अजवायन और देवदारु; इनके समान भाग मिलित चूर्णको पानीके साथ पीसकर सरसोंके तेलमें मिला कर शरीर पर मलने से खाज, खुजली और शीतपित्त (पित्ती) आदिका नाश होता है।

(९५६६) कृष्णतिलयोगः

(ग. नि. । अर्शो. ४)

असितानां तिलानां प्राक् प्रकुञ्चं शीतवारिणा ।
खादतोऽर्शांसि शाम्यन्ति द्विजदाढ्यांङ्गपुष्टि-दम् ॥

प्रातःकाल काले तिल शीतल जलके साथ सेवन करनेसे अर्शका नाश और शरीर पुष्ट होता तथा दांत दृढ़ होते हैं।

मात्रा—५ तोले।

(९५६७) कोद्रवान्नोपयोगः

(ग. भा. । व्रणा. २५; ग. नि. । नाडीव्रणा. ६)

यः माहिषेण दध्ना भुङ्क्तेऽन्नं कोद्रवोद्भवं सततम् ।
नाडीव्रणो विरोहति तस्य भृशं पूर्यमाणोऽपि ॥

जो रोगी हमेशा भैंसके दहीके साथ कोदो

For Private And Personal Use Only

अन्न का सेवन करता है उसका नाडीव्रण (नासूर) रोग नष्ट हो जाता है।

(९५६८) कोशातकीयोगः

(ग. नि. । कुष्ठा. ३६)

कोशातकीफले न्यस्तं जलं पर्युषितं निशि ।
कर्षमात्रं तु तत्पीतं सर्वकुष्ठहरं परम् ॥

कोषातकी (कड़वी तुरई) के भीतर जल भरकर रात भर रक्खा रहने दें।

प्रातःकाल इसे सेवन करनेसे समस्त प्रकारके कुष्ठ नष्ट होते हैं।

मात्रा—१। तोला।

(९५६९) क्रव्याद्रसः

(वै. र. । अग्निमांद्या.)

व्यालछङ्कणधर्मपत्तनरजः कर्षैकैकं चार्द्रकं प्रस्थं
सैन्धवसंयुतं दधिजलप्रस्थेन सम्पेषितम् ।
निम्बूकस्य रसस्तु तस्य तुलितो क्रव्यादनामारसो
विष्टम्भोदरगुल्मशूलहरणो वह्निप्रदो रोचकः ॥

चीतामूल, सुहागा और काली मिर्च; इनका चूर्ण १।-१। तोला, अदरक १ सेर, दहीका पानी १ सेर और नीबूका रस १ सेर तथा स्वाद योग्य सैंधा नमक लेकर अदरकको दहीके पानीमें पीसकर, सबको एकत्र मिलाकर सुरक्षित रक्खें।

इसके सेवन से कब्ज, गुल्म और शूलका नाश होता तथा रुचि और अग्निकी वृद्धि होती है।

इति ककारादिमिश्रप्रकरणम्

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir
For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ख

अथ खकारादिकषायप्रकरणम्

(९५७०) खदिरादिकषायम्

(व. से. । कुष्ठा. ; यो. र. । कुष्ठा.)

खदिरामलककषायं बाकुचिबीजान्वितं पिबे-
न्नित्यम् ।
शङ्खेन्दुकुन्दधवलं श्वित्रं हन्तीह तच्चित्रम् ॥

खैरसार और आमलेके क्वाथमें बाबचीके बीजोंका चूर्ण मिलाकर पीनेसे शंख और चन्द्रमा या कुन्दके फूलोंके समान सफेद श्वित्र (सफेद कुष्ठ) भी नष्ट हो जाता है। यह एक अद्‌भुत प्रयोग है।

(९५७१) खदिरादिक्वाथः

(यो. र. । भगन्दरा. ; शा. सं. । खं. २ अ. २)

खदिरत्रिफलाक्वाथो महिषीघृतसंयुतः ।
विडङ्गचूर्णयुक्तश्च भगन्दरविनाशनः ॥

खैरसार और त्रिफलाके क्वाथमें भैंसका घी और बायबिडंग का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से भगन्दर नष्ट हो जाता है ।

इति खकारादिकषायप्रकरणम्

अथ खकारादिचूर्णप्रकरणम्

(९५७२) खदिरसारादियोगः

(ग. नि. । भगन्दरा.)

उत्तमं खदिरसाररजः
शीलयनसनवारिभावितम् ।
हन्ति तुल्यमहिषाक्षमाक्षिकं
कुष्ठमेहपिटिकाभगन्दरान् ॥

उत्तम खैरसारके चूर्णको असनावृक्षकी छालके क्वाथकी (३ या ७ या २१) भावना देकर उसमें शुद्ध गूगल मिलाकर शहदके साथ सेवन करनेसे कुष्ठ, प्रमेह, पिटिका और भगन्दरका नाश होता है ।

इति खकारादिचूर्णप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ खकारादिगुटिकाप्रकरणम्

(९५७३) खदिरादिगुटिका

(यो. चि. म. । अ. ३)

बिभीतकीहरीतक्यौ धात्री कटुफलानि च ।
शुण्ठीमरीचपिप्पल्या एला कर्कटशृङ्गका ॥
कर्पूरं पिप्पलीमूलं लवङ्गं सठिसंयुतम् ।
एतानि समभागानि सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥
खदिरं च समं देयं आर्द्रकद्रवभावना ।
भावयेत्किङ्करीक्वाथैः वटिका कोलमात्रका ॥
कासं कण्ठे कफं हन्ति स्वरभङ्गं च दारुणम् ।
क्षयं च निहन्त्याशु क्षयरोगहरं परम् ॥

बहेड़ा, हर्रं आमला, इन्द्रजौ, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, इलायची, काकड़ासिंगी, कपूर, पीपलामूल, लौंग और कचूर; इनका चूर्ण १-१ भाग तथा कत्था सबके बराबर लेकर एकत्र मिलाकर अदरक के रस और किंकरी (कंटाई या बबूर) के क्वाथकी (३-३ या ७-७) भावना देकर छोटे बेरके समान गोलियां बना लें ।

इन्हें खानेसे कास, कण्ठस्थित कफ, दारुण स्वर भंग और क्षयका शीघ्र ही नाश हो जाता है ।

इति खकारादिगुटिकाप्रकरणम्

अथ खकाराद्यवलेहप्रकरणम्

खण्डकूष्माण्डः

(र. रा. सु. । रक्तपित्ता.)

कुष्माण्डखण्ड देखिये

(९५७४) खण्डशुण्ठिः

(भा. प्र. । आमवाता.)

नागरस्य पलान्यष्ट घृतस्य पलविंशतिम् ।
क्षीरं द्विप्रस्थसंयुक्तं खण्डस्यार्द्धं शतं पचेत् ॥
व्योषत्रिजातकद्व्यातप्रत्येकं च पलं पलम् ।
निदध्याच्चूर्णितं तत्र खादेदग्निबलं प्रति ॥
आमवातप्रशमनं बलपुष्टिविवर्द्धनम् ।
बल्यमायुष्यमोजस्यं बलीपलितनाशनम् ॥
आमवातप्रशमनं सौभाग्यकरमुत्तमम् ॥

४० तोले सोंठ के चूर्ण को २॥ सेर घीमें भून कर उसमें ४ सेर दूध और ३ सेर १० तोले खांड मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें । जब अवलेह तैयार हो जाय तो उसमें ५-५ तोले सोंठ, मिर्च, पीपल, दालचीनी, इलायची और तेजपात; इनका चूर्ण मिला दें ।

इसे सेवन करनेसे आमवात एवं बलि पलित का नाश होता और बल, पुष्टि, आयु तथा ओजकी वृद्धि होती है ।

(मात्रा —२--२॥ तोले ।)

खण्डशुण्ठ्यवलेहः

रस प्रकरण में देखिये

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९५७५) खण्डाम्रकम्

(भै. र. । वाजीकरणा.)

पक्वचूतरसद्रोणः पात्रं स्यात् शुद्धखण्डतः ।
घृतमर्द्धं ततो ग्राह्यं चतुर्थांशश्च नागरम् ॥
तदर्द्धं मरिचं प्रोक्तं तदर्द्धा पिप्पली मता ।
तोयं खण्डसमं दद्यात् सर्वमेकत्र संस्थितम् ॥
विपचेन्मृण्मये पात्रे यदा दर्वीप्रलेपनम् ।
चूर्णान्येषां ततो दद्यात् पत्रं पलचतुष्टयम् ॥
ग्रन्थिकं चित्रकं मुस्तं धन्याकं जीरकद्वयम् ।
त्र्यूषणं जाति तालीशं चूर्णमेषां पलं पलम् ॥
त्वगेलाकेशराणाञ्च प्रत्येकञ्च पलं तथा ।
सिद्धशीते च मधुनः प्रस्थं दत्त्वा विघट्टयेत् ॥
तत्सर्वमेकतः कृत्वा शुभे भाण्डे निधापयेत् ।
भोजनादावतः खादेत्तोलकद्वयमानतः ॥
गच्छेत् कन्दर्पदर्पान्धो रागवेगाकुलः स्त्रियः ।
शतं वापि तदर्द्धं वा रमेत् स्त्रीणां पुमानयम् ॥
संसेव्य भेषजं ह्येतद् बन्ध्यायां जनयेत् सुतम् ।
वीरं सर्वगुणोपेतं शतायुश्च भवेदयम् ॥
मृतवत्सा च या नारी या च गर्भोपघातिनी ।
सापि सूते सुतं रम्यं नारायणपरायणम् ॥
बन्ध्यापि लभते पुत्रं वृद्धोऽपि तरुणायते ।
तुरङ्ग इव संहृष्टो मातङ्ग इव विक्रमी ॥
सदा भेषजसंसेवी भवेन्मारुतवेगवान् ।
हन्ति सर्वामयं घोरं कासं श्वासं क्षयं तथा ॥
दुर्नामाजीर्णकञ्चैव आम्लपित्तं सुदारुणम् ।
तृष्णां छर्दिञ्च मूर्च्छाञ्च शूलमष्टविधं जयेत् ॥
[illegible]म्रकमिदं प्रोक्तं भार्गवेण स्वयम्भुवा ।
वयस्यं मेध्यमायुष्यं सर्वपापविनाशनम् ॥
ग्रहरक्षःपिशाचघ्नमपस्मारविनाशनम् ।
पाण्डुरोगं प्रमेहञ्च मूत्रकृच्छ्रञ्च नाशयेत् ॥
वश्या योषिद् भवेत्पुंसां पुमान् वश्यश्च योषिताम् ।
दृष्टो वारसहस्रञ्च कथमत्र विचारणा ॥

पके आमोंका रस ३२ सेर, शुद्ध खांड ४ सेर, घी २ सेर (४ सेर) सोंठका चूर्ण आधासेर (४० तोले), काली मिर्चका चूर्ण २० तोले, पीपलका चूर्ण १० तोला और पानी ४ सेर (८ सेर) लेकर सबको एकत्र मिलाकर मिट्टीके पात्रमें मन्दाग्नि पर पकावें और जब करछीको लगने लगे तो निम्न लिखित चूर्ण मिला दें—चूर्ण—तेजपात २० तोले तथा पीपलामूल, चीतामूल, नागरमोथा, धनिया, काला जीरा, सफेद जीरा, सोंठ, मिर्च, पीपल, जावत्री, तालीसपत्र, दालचीनी, इलायची और नागकेसर; प्रत्येकका चूर्ण ५—५ तोले । सब चीजें मिलाने के पश्चात् जब अवलेह ठंडा हो जाय तो उसमें २ सेर शहद मिलाकर सुरक्षित रक्खें ।

मात्रा—२ तोले ।

इसे भोजनके पूर्व सेवन करना चाहिये ।

इसके सेवनसे कामशक्ति अत्यन्त तीव्र हो जाती है और पुरुष कामान्ध होकर अनेक स्त्रियोंसे समागम कर सकता है । इसे सेवन करने वाला पुरुष वन्ध्या स्त्रीमें भी वीर, दीर्घायु और सर्वगुणसम्पन्न पुत्र उत्पन्न कर सकता है । इसके प्रभावसे मृतवत्सा (जिसकी सन्तान उत्पन्न हो कर मर जाती हो वह) तथा जिसके गर्भमें ही बच्चा मर जाता हो वह भी गुणवान् पुत्रको जन्म देती है । इसे सेवन करके वृद्ध पुरुष भी युवाके समान हो जाता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो इसे सदा सेवन करता है उसकी कामाग्नि अत्यन्त प्रबल हो जाती है तथा बल वीर्यकी खूब वृद्धि होती है।

यह पाक कास, श्वास, क्षय अर्श, अजीर्ण, दारुण अम्लपित्त, तृष्णा, छर्दि, मूर्च्छा, आठ प्रकारके शूल, ग्रह, राक्षस, पिशाच, अपस्मार, पाण्डु, प्रमेह और मूत्रकृच्छ्रादि रोगों को नष्ट करता है। यह आयुवर्द्धक और मेध्य है। इसके सेवन करने से पति स्त्रीके और स्त्री पतिके वशीभूत हो जाती है। इसका अनुभव सहस्रों बार हो चुका है। किसी प्रकारके सन्देहको स्थान नहीं है।

(९५७६) खदिरादिलेहः

(व. से.; र. रा. सु. । पाण्डु.)

पचेत् खदिरनिःक्वाथे विडङ्गधान्ययो रजः ।
बला तिक्ता सिता यष्टी त्रिफला रजनीद्वयम् ॥
लेहं लिह्यात्समध्वाज्यैः पाण्डुरोगी हलीमकी ।
स लेहः कामलां हन्यादपि सम्वत्सरोत्थिताम् ॥

खैरके क्वाथमें बायबिडंग, धनिया,[1] खरैटी, कुटकी, मिश्री, मुलैठी, हर्र, बहेड़ा, आमला, हल्दी और दारुहल्दी का चूर्ण मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें और अवलेह तैयार हो जाने पर ठंडा करके सुरक्षित रक्खें।

इसे घी और शहदमें मिलाकर चाटनेसे १ वर्षके पुराने कामला रोग और पाण्डु तथा हलीमकका नाश होता है।

(क्वाथ ४ सेर, समस्त द्रव्योंका समान भाग मिश्रित चूर्ण ४० तोले।)

[1] र. रा सु. में धनिये के स्थान पर नागरमोथा है।

इति खकाराद्यवलेहप्रकरणम्

अथ खकारादिघृतप्रकरणम्

(९५७७) खदिरादिघृतम्

(हा. सं. । स्था. ३ अ. ४२)

खदिरकदरमूर्वाबालकं कर्णिकारः
कुटजसपारिभद्रारग्वधानीपदीप्याः ।
क्वथितमपि समांशं यद्घृतं पानमस्य
विनिहन्ति सकलान्वै कुष्ठवैसर्पदर्पान् ॥

खैरसार, सफेद खैरका सार, मूर्वा, सुगन्धबाला, छोटे अमलतासकी छाल, कुड़ेकी छाल, नीम, अमलतासकी छाल, कदम्बकी छाल और अजवायन; इनके क्वाथके साथ घृत सिद्ध करें।

इसे पीनेसे समस्त प्रकारके कुष्ठ और विसर्प नष्ट होते हैं।

(९५७८) खर्जूराद्यं घृतम्

(व. से. । राजयक्ष्मा.)

घृतं खर्जूरमृद्वीकामधुकैः सपरूषकैः ।
सपिप्पलीकैर्वैस्वर्यकासश्वासज्वरापहम् ॥

खजूर, मुनक्का, मुलैठी, फालसा और पीपल; इनके क्वाथ और कल्क से सिद्ध घृत स्वरभंग, कास, श्वास और ज्वरको नष्ट करता है।

इति खकारादिघृतप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ खकारादितैलप्रकरणम्

(९५७९) खदिरादितैलम्

(वा. भ. । उ. अ. २२ मु. रो. चि.)

खदिरतुलामम्बुघटे पक्त्वा तोयेन तेन पिष्टैश्च ।
चन्दनजोङ्गककुङ्कुमपरिपेलवबालकोशीरैः ॥
सुरतरुरोध्रद्राक्षामञ्जिष्ठाचोचपद्मकविडङ्गैः ।
स्पृक्कानतनखकट्फल-
सूक्ष्मैलाध्यामकैः सपतङ्गैः ॥
तैलप्रस्थं विपचेत्कर्षांशैः पाननस्यगण्डूषैस्तत् ।
हत्वाऽऽस्ये सर्वगदाञ्जनयति
शीघ्रं दृशं श्रुतिं च वाराहीम् ॥

क्वाथ—६। सेर खैरसारको ३२ सेर पानीमें पकावें और ८ सेर शेष रहने पर छान लें।

कल्क—चन्दन (सफेद), अगर, केसर, मोथा, सुगन्धबाला, खस, देवदारु, लोध, दाख (मुनक्का), मजीठ, दालचीनी, पद्माक, वायबिडंग, स्पृक्का (लज्जालु) तगर, नखी, कायफल, छोटी इलायची, ध्यामक (कत्तृण) और पतंग; इनका चूर्ण १।-१। तोला लेकर सबको पानीके साथ एकत्र पीस लें।

२ सेर तेलमें यह क्वाथ और कल्क मिलाकर पकावें। जब पानी जल जाए तो तेलको छान लें।

इसे पीने, इसकी नस्य लेने और इसके गण्डूष धारण करनेसे मुखके समस्त रोग नष्ट होकर दृष्टि और श्रवण शक्ति वराहके समान (अत्यन्त तीक्ष्ण) हो जाती है।

इति खकारादितैलप्रकरणम्

अथ खकारादिरसप्रकरणम्

(९५८०) खगेश्वररसः

(र. र. स. । उ. अ. २० ; र. चं. । कुष्ठ.)

पलेन मितः सूतः पलेन प्रमिता वसा ।
खगः पलमितः सर्वं मर्दयेदर्जुनद्रवैः ॥
गोलीकृत्य विशोष्याथ गोलं मूष्यां निरुध्य च ।
ततस्तां सुदृढे भाण्डे मूषां क्षिप्त्वा निरुध्य च ॥
पचेत्सार्धदिनं पश्चात्स्वाङ्गशीतं विचूर्णयेत् ।
खगेश्वरो रसो वल्लमितः कुटजान्वितः ॥
श्वेतकुष्ठं निहन्त्याशु श्वासकासगदानपि ।
सघृतः पित्तजं कुष्ठं मधुना मेहमेव च ॥
पथ्यं दोषानुरूपेण बुद्धेन मुनिनोदितम् ॥

शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक और स्वर्णमाक्षिक भस्म ५-५ तोले लेकर तीनोंको एकत्र खरल करके कज्जली बनावें और उसे (१ दिन) अर्जुनकी छालके क्वाथमें घोटकर गोला बनाकर सुखा लें।

इस गोलेको मूषामें बन्द करके बालुका-यन्त्रमें रखकर हाण्डी पर शराव ढककर सन्धिको

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बन्द कर दें और ३६ घण्टे आग पर पकावें। तदनन्तर उसके स्वांग शीतल होने पर औषधको निकाल कर खरल कर लें।

मात्रा—२ रत्ती।

इसे कुड़ेकी छालके चूर्ण या क्वाथके साथ देनेसे श्वेत कुष्ठ, श्वास और कासका नाश होता है।

इसे पित्तज कुष्ठमें घीके साथ और प्रमेहमें शहदके साथ देना एवं दोषानुरूप पथ्य पालन कराना चाहिये।

(९५८१) खण्डशुण्ठ्यवलेहः

(यो. र. । आमवाता.)

नागरस्य तुलामेकां घृतस्य पलविंशतिः ।
क्षीरद्रोणार्धके पक्त्वा खण्डस्यार्धं शतं क्षिपेत् ॥
व्योषं त्रिजातकं चैव केशरं पिप्पलीजटा ।
जोङ्गकं जातिपत्रीकं जातीफलकचोरकम् ॥
अश्मभेदस्ताम्रभस्मवङ्गभस्मतथैव च ।
स्वर्णमाक्षिकमभ्रं च तथा लोहत्रयं क्षिपेत् ॥
एतान्पृथक्पलान्भागान् प्रत्येकं चूर्णितं क्षिपेत्।
मन्दानलविपक्वं तु लेहवत्साधु साधयेत् ॥
बल्यं वर्ण्यं तथाऽऽयुष्यं वलीपलितनाशनम् ।
आमवातप्रशमनं सौभाग्यकरमुत्तमम् ॥

६। सेर सोंठके चूर्णको २॥ सेर घीमें भून लें और फिर उसमें १६ सेर दूध डालकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब दूध कुछ गाढ़ा हो जाय तो उसमें ३ सेर १० तोले खांड मिला दें एवं अवलेह तैयार हो जाने पर उसमें सोंठ, मिर्च, पीपल, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर, पीपलामूल, अगर, जावित्री, जायफल, चोरक, पाषाणभेद, ताम्रभस्म, बङ्गभस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, अभ्रक भस्म तथा तीन प्रकारके लोह की भस्म (मुण्डलोह, तीक्ष्ण-लोह और कान्तलोह) ५-५ तोले मिलाकर ठंडा करके सुरक्षित रक्खें।

यह बलकारक, वर्ण संस्कारक, आयुष्यवर्द्धक, और वलिपलितनाशक है तथा आमवातको नष्ट करता है।

(मात्रा—५-६ माशे।)

(९५८२) खदिरसारादिचूर्णम्

(ग. नि. । कुष्ठ. ३६)

सपञ्चनिम्बत्रिफलाक्षताह्वः
सलोहचूर्णः सविडङ्गसारः ।
सबीजसारः खदिरस्य सारः
कुष्ठापहः श्वित्रगदापहश्च ॥

खैरसार, नीमका पंचांग, हर्र, बहेड़ा, आमला, सौंफ (या सोया), लोहभस्म, बायबिडंगकी मींगी, (गिरी) और विजयसार का सार समान भाग लेकर एकत्र खरल करके चूर्ण बनावें।

यह चूर्ण श्वित्र और अन्य कुष्ठों को नष्ट करता है।

(मात्रा—१॥ माशा। अनुपान—खैर-छालका क्वाथ)

(९५८३) खर्परमारणम्

(आ. वे. प्र. । अ. ९)

खर्परं पत्तलं कृत्वा लवणान्तर्गतं पचेत् ।
जायते शोभनं भस्म सर्वरोगापहं स्मृतम् ॥

खर्परके पत्तर करवा के सैंधानमकके बीचमें रखकर (शराव सम्पुटमें बन्द करके) पकानेसे उसकी भस्म हो जाती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९५८४) खर्परशोधनम् (१)

(र. र. स. । पू. खं. अ. २ ; आ. वे. प्र. । अ. ९ ; र. चं.)

रसको द्विविधः प्रोक्तो दर्दुरः कारवेल्लकः ।
सदलो दर्दुरः प्रोक्तो निर्दलः कारवेल्लकः ॥
सत्त्वपाते शुभः पूर्वो द्वितीयश्चौषधादिषु ।
रसकः सर्वमेहघ्नः कफपित्तविनाशनः ॥
नेत्ररोगक्षयघ्नश्च लोहपारदरञ्जनः ।
नागार्जुनेन संदिष्टौ रसश्च रसकावुभौ ॥
श्रेष्ठौ सिद्धरसौ ख्यातौ देहलोहकरौ परम् ।
रसश्च रसकश्चोभौ येनाग्निसहनौ कृतौ ॥
देहलोहमयी सिद्धिर्दासी तस्य न संशयः ।

× × × ×

कटुकालाबुनिर्यासे आलोड्य रसकं पचेत् ॥
शुद्धं दोषविनिर्मुक्तं पीतवर्णं च जायते ॥

रसक (खपरिया) दो प्रकारका होता है । एक दलदार, जिसे "दर्दुर" कहते हैं और दूसरा दल-रहित, जिसे "कारवेल्लक" कहते हैं।

सत्वपातनके लिये दर्दुर नामक खपरिया लेना चाहिये और कारवेल्लकको औषधोंमें डालना चाहिये।

खपरिया प्रमेहनाशक, कफपित्तनाशक, नेत्र-रोग और क्षयको नष्ट करने वाला तथा लोह और पारद को रंगने वाला है।

नागार्जुन ने रसक और रस, इन दोनों श्रेष्ठ और देहको लोहके समान दृढ करने वाले सिद्ध रसोंका वर्णन किया है ।

जो इन दोनोंको अग्निस्थायी कर लेता है उसके लिये देहको लोहमयी (अत्यन्त दृढ) बनाना तनिक भी कठिन नहीं रहता ।

× × ×

खपरियाको कड़वी तूंबीके रसमें पकाने से वह शुद्ध तथा पीतवर्ण हो जाता है ।

(९५८५) खर्परशोधनम् (२)

(भा. प्र. । पू. खं. १ ; शा. ध. । ख. २ अ. ११)

नरमूत्रे च गोमूत्रे सप्ताहं रसकं पचेत् ।
दोलायन्त्रेण शुद्धः स्यात्ततः कार्येषु योजयेत् ॥
खर्परं कटुकं क्षारं कषायं वामकं लघु ।
लेखनं भेदनं शीतं चक्षुष्यं कफपित्तहृत् ॥
विषाश्मकुष्ठकण्डूनां नाशनं परमं मतम् ॥

खर्परको दोलायन्त्र विधिसे सात दिन मनुष्यके मूत्र या गोमूत्रमें पकाने से वह शुद्ध हो जाता है ।

खर्पर कटु, क्षारयुक्त, कषाय तथा शीतल होता है । यह नेत्रोंके लिये हितकारी, कफपित्त नाशक, वामक, लघु, लेखन और भेदन है तथा विष, पथरी, कुष्ठ और कण्डूको नष्ट करता है ।

(९५८६) खर्परशोधनम् (३)

(र. र. स. । पू. खं. अ. २ ; आ. वे. प्र. । अ. ९ ; र. चं.)

खर्परः परिसन्तप्तः सप्तवारं निमज्जितः ।
बीजपूररसस्यान्तर्निर्मलत्वं समश्नुते ॥

खर्परको तपा तपा कर सात बार बिजौरेके रसमें बुझानेसे वह शुद्ध हो जाता है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९५८७) खर्परशोधनम् (४)

(र. र. स. । पू. खं. अ. २ ; र. चं.)

नृमूत्रे वाऽश्वमूत्रे वा तक्रे वा काञ्जिकेथ वा ।
प्रताप्य मज्जितं सम्यक् खर्परं परिशुद्ध्यति ॥

खपरिया को तपा कर मनुष्यके मूत्रमें या घोड़ेके मूत्रमें अथवा तक्र या कांजीमें बुझाने से वह शुद्ध हो जाता है ।

(९५८८) खर्परशोधनम् (५)

(र. र. स. । पू. खं. अ. २)

नरमूत्रे स्थितो मासं रसको रञ्जयेद्ध्रुवम् ।
शुद्धताम्रं रसं तारं शुद्धस्वर्णसमप्रभम् ॥

खपरियाको १ मास तक मनुष्यके मूत्रमें भिगोए रखनेसे वह शुद्ध ताम्र, पारद और चांदीको रंग कर शुद्ध स्वर्णके समान कर देता है ।

(९५८९) खर्परसत्वपातनम् (१)

(र. र. स. । पू. खं. अ. २)

हरिद्रात्रिफलारालासिन्धुधूमैः सटङ्कणैः ।
सारुष्करैश्च पादांशैः साम्लैः सम्मर्द्य खर्परम् ॥
लिप्तं वृन्ताकमूषायां शोषयित्वा निरुध्य च ।
मूषामुखोपरि न्यस्य खर्परं प्रधमेत्ततः ॥
खर्परे प्रद्रुते ज्वाला भवेन्नीला सिता यदि ।
तदा संदंशतो मूषां धृत्वा कृत्वा त्वधोमुखीम् ॥
शनैरास्फालयेद्भूमौ यथा नालं न भिद्यते ।
वङ्गाभं पतितं सत्वं समादाय नियोजयेत् ॥
एवं त्रि चतुरैर्वारैः सत्वं सर्वं विनिःसरेत् ॥

हल्दी, त्रिफला, राल, सेंधा नमक, घरका धुवां, सुहागा और भिलावा; इनका समान भाग मिलित चूर्ण १ भाग तथा खपरिया ४ भाग लेकर सबको एकत्र नीबूके रसके साथ खरल करके वृन्ताकमूषामें लेप कर दें और उसे सुखाकर उसके मुंह पर मिट्टी का खपरा ढक कर अग्निमें धमावें । जब नीली ज्वाला निकलने के पश्चात् सफेद ज्वाला निकले तो मूषा को सिंडासीसे निकालकर उल्टा करके आहिस्ता से झटका देकर पिघले हुवे खर्पर सत्व को निकाल लें जो बंगके समान होगा । इसी प्रकार तीन चार बार धमाने से सम्पूर्ण सत्व निकल आएगा ।

(९५९०) खर्परसत्वपातनम् (२)

(र. र. स. । पू. खं. अ. २ ; आ. वे. प्र. । अ. ९)

लाक्षागुडाऽऽसुरीपथ्या हरिद्रासर्जटङ्कणैः ।
सम्यक् सञ्चूर्ण्य तत्पक्वं गोदुग्धेन घृतेन च[१] ॥
वृन्ताकमूषिकामध्ये निरुध्य गुटिकीकृतम् ।
ध्मात्वा ध्मात्वा समाकृष्य ढालयित्वा शिलातले
सत्त्वं वङ्गाकृति ग्राह्यं रसकस्य मनोहरम् ।

खपरियाको लाख, गुड़, राई, हर्र, हल्दी, राल और सुहागेके साथ खरल करके गोदुग्ध में और फिर गोघृतमें (पाठान्तरके अनुसार केवल गोदुग्धमें ही) पकाकर गोलियां बनावें और उन्हें वृन्ताकमूषामें[२] बन्द करके अग्निमें रखकर धमावें ।

---

१ आ. वे. प्र. में 'गोदुग्धेन प्लुतं तथा' पाठ है.

२ वृन्ताकमूषा—
वृन्ताकाकारमूषायां नालं द्वादशकाङ्गुलम् ।
धत्तूरपुष्पवच्चोर्ध्वं सुदृढं श्लिष्टपुष्पवत् ॥
अष्टाङ्गुलं च सच्छिद्रं सा स्याद् वृन्ताकमूषिका ।
अनया खर्परादीनां मृदूनां सत्वमाहरेत् ॥
(र. र. स.)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जब मूषा खूब लाल हो जाय तो उसे निकालकर पत्थर पर उल्टा कर दें। इस विधिसे खपरियाका बंगके समान सुन्दर सत्व निकल आयेगा। गोलियोंका जो भाग शेष रह जाय उसे पुनः उसी मूषामें रखकर धमावें। इसी प्रकार कई बार करनेसे सम्पूर्ण सत्व निकल आयगा।

(९५९१) खर्परसत्वमारणम्

(र. र. स. । पू. खं. अ. २;)

तत्सत्वं तालकोपेतं प्रक्षिप्य खलु खर्परे ।
मर्दयेल्लोहदण्डेन भस्मीभवति निश्चितम् ॥

खर्पर सत्वको (समान भाग) हरतालके साथ खरल करके कढ़ाईमें डालकर आग पर चढ़ावें और लोहेकी मूसली आदि से घोटते रहें। इस विधिसे उसकी भस्म हो जाती है।

(९५९२) खसर्पणवटिका

(भै. र. । र. रा. सुं. । ग्रह.)

पक्केष्टकहरिद्राभ्यामागारधूमकेन च ।
शोधितं पारदश्चैव कर्षार्द्धं तुलया धृतम् ॥
भृङ्गराजरसैः शुद्धं गन्धकं रससम्मितम् ।
द्वाभ्यां कज्जलिकां कृत्वा भावयेत्तत्तु भेषजैः ॥
सिन्दुवारदलद्रावे मण्डूकपर्णिकारसे ।
केशराजरसे चापि ग्रीष्मसुन्दरजे रसे ॥
रसेऽपराजितायाश्च सोमराजीरसे तथा ।
रक्तचित्रकपत्रोत्थे रसे च परिभावितम् ॥
रसमानसमानेन छायायां शोषयेद्भिषक् ।
सर्षपाभाश्च गुडिकाः कारयेत् कुशलो भिषक् ॥

ततः सप्तवटीर्दद्याद् दधिमस्तुसमप्लुताः ।
नित्यं दध्ना च भोक्तव्यं कोष्ठदुष्टिनिवृत्तये ॥
ग्रहणीमतिसारञ्च ज्वरदोषञ्च नाशयेत् ।
अग्निदार्ढ्यकरं श्रेष्ठमामपर्पटिकाह्वयम् ॥

पक्की ईंटके चूर्ण, हल्दी और घरके धुवें में शुद्ध किया हुवा पारद ७॥ माशे तथा भंगरेके रसमें शुद्ध गंधक ७॥ माशे लेकर दोनोंकी कज्जली बनावें और उसमें संभालु के पत्तोंका रस, मण्डूकपर्णीका रस, भंगरेका रस, गूमाका रस, कोयलका रस, बावचीका रस और लाल चीते के पत्तों का रस ७॥-७॥ माशे डालकर खरल करें। फिर सरसों के समान गोलियां बनाकर छायामें सुखा लें।

इनमें से नित्य सात गोली दहीके पानीके साथ खानेसे कोष्ठ विकार, संग्रहणी, अतिसार और ज्वरका नाश होता तथा अग्नि दीप्त होती है।

पथ्य—दही भात।

इसका दूसरा नाम "आमपर्पटी" है।

(९५९३) खेचरी गुटिका

(र. प्र. सु. । अ. ८ ज्वरा.)

रसकं दरदं ताप्यं गगनं कुनटी समम् ।
सूतं समांशकं दद्यादम्लवेतसजै रसैः ॥
मर्दयेद्दिनमेकन्तु सूर्यघर्मे शिलातले ।
पचेत्तं वालुकायन्त्रे दिनमेकं रसं खलु ॥
स्वाङ्गशीतं समुद्धृत्य चूर्णीकृत्य प्रयत्नतः ।
निम्बूरसेन गुटिका कर्तव्या चाढकीसमा ॥
सर्वज्वरहरा प्रोक्ता गुल्मोदरविनाशिनी ।
गुटिका खेचरी प्रोक्ता देहलोहविधायिनी ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खपरिया, हिंगुल, स्वर्णमाक्षिक भस्म, अभ्रक भस्म मनसिल और पारद समान भाग लेकर सबको एकत्र खरल करके १ दिन अम्लवेतके रसमें पत्थरके खरलमें धूपमें घोटें और फिर उसे आतशी शीशी में भर कर १ दिन बालुका यन्त्रमें पकावें। तदनन्तर स्वांग शीतल होने पर निकालकर नीबूके रसमें खरल करके अरहरके दानेके समान गोलियां बना लें।

यह गुटिका समस्त ज्वरों तथा गुल्म और उदररोगोंको नष्ट करती है।

इति खकारादिरसप्रकरणम्

अथ खकारादिमिश्रप्रकरणम्

खट्टाशीशोधनम्

(र. र. ; व. से.)

महासुगन्धिलक्ष्मीविलास तैलम् प्र. सं. ५३०८ के फुटनोटमें देखिये।

(९५९४) खण्डार्द्रकयोगः

(यो. र. । अरोचका.)

आर्द्रकस्य सितायाश्च द्विगुणाष्टपलानि च।
निष्कद्वादशकं तीक्ष्णमष्टनिष्का च मागधी ॥
अष्टनिष्कं च तन्मूलं पश्चनिष्कं च नागरम्।
जातीफलैलादहनवंशाद्याः पञ्चनिष्ककाः ॥
सर्वाण्येतानि शुष्काणि चूर्णं कृत्वा पृथक्पृथक्
आर्द्रकं खण्डशः कृत्वा गोघृतेऽष्टपले पचेत् ॥
शर्करा पूर्वचूर्णं च चाऽऽर्द्रकं सह मेलयेत्।
मण्डलं सेवयेन्नित्यं महापित्तविनाशनम् ॥
अम्लपित्तं निहन्त्याशु सर्वपित्तविकारजित्।
सर्वारुचिं वातरोगं मन्दाग्निं च नियच्छति ॥

अदरक १ सेर, खांड १ सेर, काली मिर्च १२ निष्क (५ तोले), पीपल ८ निष्क (४० माशे), पीपलामूल ८ निष्क, सोंठ ५ निष्क (२५ माशे), तथा जायफल, इलायची, चीतामूल और बंसलोचन ५-५ निष्क लेकर अदरकके टुकड़े करके १ सेर घीमें भून लें और फिर उसमें खांड तथा अन्य समस्त वस्तुओं का चूर्ण मिलाकर सुरक्षित रक्खें।

इसे १ मण्डल (४८ दिन) सेवन करनेसे अत्यन्त वृद्ध पित्त, अम्लपित्त, अरुचि, वातविकार और अग्निमांद्य का नाश हो जाता है।

(मात्रा—१ तोला)

(९५९५) खदिरयोगः

(ग. नि. । कुष्ठ. ३६)

सुदेशजातं खदिरं निरीक्ष्य
तस्याप्यधस्तादवटं खनेत।
जटां निकृन्त्याशु च तस्य मूलं
ताम्रे निदध्यात्कलशे सुगुप्तम् ॥
तं वेष्टितं मृत्तिकया विलिप्तं
प्रदीपयेच्चारुचितं समग्रम।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्धृत्य तं लोहरजो विमिश्रं
पिबेद्रसं क्षौद्रघृतोपपन्नम् ॥
प्रलेपनाभ्यञ्जनपानयोगै-
र्मासेन हन्यात्प्रबलं हि कुष्ठम् ।
पाण्ड्वामयार्शः श्वयथुप्रमेहा-
नुद्धृत्य दोषान् प्रणुदेच्च सद्यः ॥
य एष दृष्टः खदिरस्य कल्पः
सर्वामयानां शमने समर्थः ।
स एव निम्बासनदेवदारु-
रोहीतकारग्वधशिंशपानाम् ॥

उत्तम भूमि में उत्पन्न हुवे निरोग खदिर वृक्ष के नीचे एक बड़ा सा गढ़ा खोदें और फिर उस वृक्षकी जड़को निकालकर (टुकड़े करके) तुरन्त ताम्रकलशमें भरकर उसका मुख बन्द कर दें। और उस पर चारों ओर मिट्टीका लेप करके उपरोक्त गढेमें रखकर उसे कण्डों से ढककर आग लगा दें। जब अग्नि स्वांग शीतल हो जाय तो कलश से रसको निकालकर सुरक्षित रक्खें।

इसमें लोहभस्म, घी और शहद मिलाकर सेवन करनेसे तथा इसका लेप और अभ्यङ्ग करनेसे १ मासमें प्रबल कुष्ठ, पाण्डु, अर्श, शोथ और प्रमेहका नाश हो जाता है।

उपरोक्त विधिसे नीम, असन, देवदारु, रोहितक, अमलतास और शीशम का पृथक् पृथक् रस निकालकर सेवन करनेसेभी उपरोक्त लाभ होताहै।

(९५९६) खदिररसायनम्

(वृ. मा. । कुष्ठा.)

दह्यमानाच्च्युतः कुम्भे मूलगे खदिराद्रसः ।
साज्यधात्रीरसक्षौद्रो हन्यात्कुष्ठं रसायनम् ॥

खैरके वृक्षको जड़के थोड़ा ऊपर से काट डालें फिर उसकी जड़के भीतर एक गहरा गढ़ा खोदकर उसमें मिट्टीका घड़ा रख दें तथा वृक्षको ईंधनसे ढक कर आग लगा दें। इस विधिसे घड़ेमें जो रस एकत्रित हो उसमें घी, आमलेका रस और शहद मिलाकर पीनेसे कुष्ठ नष्ट होता है।

यह प्रयोग रसायन भी है।

(९५९७) खदिरादियोगः (१)

(वा. भ. । चि. अ. १९ कुष्ठ. चि.)

खदिरवृषनिम्बकुटजाः
श्रेष्ठाः कृमिजित्पटोलमधुपर्ण्यः ।
अन्तर्बहिः प्रयुक्ताः कृमिकुष्ठनुदः सगोमूत्राः ॥

खैरसार, बासा, नीम, कुड़ेकी छाल, त्रिफला, बायबिडंग, पटोल और गिलोय; इनके अन्तः और बाह्य प्रयोग से (क्वाथादि करके पिलाने और लेप, तैल आदि के रूपमें लगाने से) कृमि तथा कुष्ठका नाश होता है। इन्हें गोमूत्रके साथ प्रयुक्त करना चाहिये।

(९५९८) खदिरादियोगः (२)

(वा. भ. । उ. अ. २२)

खदिरायोवरापार्थमदयन्त्यहिमारकैः ।
गण्डूषोऽम्बुमृतैर्धार्यो दुर्बलद्विजशान्तये ॥

खैरसार, लोह, त्रिफला, अर्जुन, मदयन्तिका (चमेली भेद) और विट् खदिर (दुर्गन्धित खैर); इनके क्वाथके गण्डूष धारण करनेसे दुर्बल दांत दृढ हो जाते हैं।

इति खकारादिमिश्रप्रकरणम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाप्त.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाप्त.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भारत-भैषज्य-रत्नाकर

परिशिष्ट

चिकित्सा-पथ-प्रदर्शिनी.

(१) अग्निमांद्याजीर्णविसूचिकाधिकारः

नम्बर	प्रयोग नाम	संक्षिप्त गुण
	कषाय-प्रकरणम्	
८७८८	अमृतादिकषा०	विषूचिका, अजीर्ण, विष
९२०१	करञ्जादिवमन-कषायः	विसूचिका
९२०४	,,	घोरविसूचिका
	चूर्ण-प्रकरणम्	
८८००	अग्निचूर्णम्	वातज अग्निमांद्य
८८०१	अग्निमुख चू०	अग्निमांद्य, शूलादि
८८०७	अजमोदाद्य चू०	अग्निदीपक
८८१३	अभयायोगः	विदग्धाजीर्ण
९०२६	आमलकादि चू०	अग्निमांद्य
९२९७	कन्यादिकल्कः	अत्यन्त क्षुधावर्द्धक
	घृत-प्रकरणम्	
८८४३	अगस्त्यघृतम्	अग्निमांद्य, गुल्म, हृद्रोग
	रस-प्रकरणम्	
८९२५	अग्निकुमार रसः	अग्निदीपक
८९२७	,, ,,	,,
८९२८	अग्निजननी व०	,,
८९३३	अजीर्णहर रसः	गुरु पदार्थों को भी पचा देता है।
	मिश्र-प्रकरणम्	
९०००	अजीर्णनाशक गणः	किस पदार्थका अजीर्ण किस चीज़से मिटता है।
९०६०	आयामकाञ्जि०	अरुचि, शूल, वायु आदि नाशक. १ पहर में आहार को पचा देती है।
९५४९	काञ्जिकयोगः	विसूचिका, अलसक
९५६९	कल्याणद्रवः	कब्ज़, शूल, गुल्म (रुचि और अग्निवर्द्धक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२) अतिसाराधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

८७९४ अरलुत्वक्पुटपाकः	अतिसारमें उत्तम
८७९५ " "	समस्त अतिसार
९०१३ आम्रत्वक् पु० पा०	कफप्रधान रक्तातिसार
९०७० इन्द्रयवादि का०	समस्त अति(सरलयोग)
९१८२ ऐरावतीपत्र यो०	कफज रक्तातिसार
९२०७ कलिङ्गषट्कः	आमातिसार, रक्तातिसार, शूल
९२१३ किराततिक्तादि क्वाथः	वेदनायुक्त पित्तातिसार
९२२१ कुटजादि का०	पित्तज कफज अतिसार
९२२२ " "	अतिसारको शीघ्र नष्ट करता है
९२२३ कुशमूलादि का०	पित्तातिसार
९२३२ केशराजादि का०	आमशूलयुक्त अतिसार

चूर्ण-प्रकरणम्

८८०२ अंकोटमूल क०	अत्यन्त वेगवान अतिसार (सरल योग)
८८०३ " " यो०	अतिसार
८८०९ अतिविषादि चू०	पित्तातिसार
९१०७ उदीच्यादि चू०	अतिसार, तृषा, दाह, आम, हिक्का (मग्ल)
९२४९ कलिंगादि चू०	कफातिसार, रक्तातिसार
९२५० " "	पित्तज तथा वातज अतिसार
९२६५ किरातादि यो०	वेदनायुक्त पित्तातिसार
९२६८ कुटजादि चू०	रक्तातिसार
९२६९ " "	आम और रक्त युक्त पित्तज ग्रहणी को शीघ्र नष्ट करता है ।
९२७२ कुटजाद्यं चू०	पित्तज तथा रक्तज अतिसार, गुदशूल, प्रवाहिका
९२८२ कुष्ठादि चू०	कफातिसार (स०यो०)
९२९० कृष्णमृदादि क०	रक्तातिसार

गुटिका-प्रकरणम्

८८२९ अङ्कोट वटकः	हरप्रकारका भयंकर अति०
८८३० " "	समस्त अतिसार
८८३४ अभयाद्या वट०	अतिसार, पाण्डु, ज्वर, अर्श
९३०६ केशराजादि व०	शूल और रक्त युक्त आमातिसारको शीघ्र नष्ट करता है ।

अवलेह-प्रकरणम्

९३११ कल्याणावलेहः	कृमि जनित, अर्श जनित और विरुद्ध अन्नपान जनित अतिसार
९३१४ कुटजावलेहः	भयंकर रक्तातिसार

घृत-प्रकरणम्

९३३४ कुटजाद्य घृ०	समस्तातिसार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेप-प्रकरणम्

९०४८ आम्रवल्कल-कल्कलेपः — नदीवेगोपम भयंकर अतिसार

रस-प्रकरणम्

८९९४ अहिफेन वटि० — प्रवृद्ध रक्तातिसार
८९९५ अहिफेनादि यो० — अतिसारमें अत्यन्त प्रभाव शाली

९०५४ आनन्दभैरवो — सन्निपातातिसार
९४७२ कनकसुन्दरो — वातातिसारमें अद्भुत् गुण दिखलाता है।

मिश्र-प्रकरणम्

९५६१ कुबेराक्षयोगः — कफज रक्तातिसार, शूल को शीघ्र नष्ट करता है।

(३) अपस्मारोन्मादाधिकारः

गुटिका-प्रकरणम्

९३०३ कितव वटिका — उन्मादको शीघ्र नष्टकरती है। (सरल योग)

अञ्जन-प्रकरणम्

९१२३ उन्मादभञ्जनी वटी — अपस्मार, उन्माद
९४३८ कपित्थादि वर्तिः — ,, ,,

रस-प्रकरणम्

८९३४ अपस्मार नाशन रसः — अपस्मार
८९३५ अपस्मारारि रसः — ,,
९१२९ उन्मादकुठार रसः — उन्माद
९१३० उन्मादध्वंसी रसः — ,,
९१३१ उन्मादपर्पटी रसः — ,,

(४) अम्लपित्ताधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

८७८७ अभयादि क्वाथः — अम्लपित्त, कण्ठदाह
८७९१ अमृतादि ,, — प्रबल अम्लपित्तको शीघ्र नष्ट करता है।

रस-प्रकरणम्

८९४३ अभ्रकभस्म यो० — अम्लपित्त, शूल, वमन
९५२४ कुष्माण्डखण्ड० — अम्लपित्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५) अरोचकाधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

९२९३ कृष्णादि चू० वातज अरुचि

मिश्र-प्रकरणम्

८९९९ अजाज्यादिमुख-धावनम् वातज अरुचि

९०६६ आर्द्रक विधिः अदरकको सुस्वादु बनानेकी विधि

९५३८ कपित्थादिषाडवः हर प्रकारकी अरुचि

९५४० करञ्ज योगः अरुचि

९५४४ कलहंसकांजी अत्यन्त रोचक

९५९४ खण्डार्द्रक यो० अरुचि, प्रवृद्धपित्त, अम्लपित्त, वातविकार, अग्निमांद्य

(६) अर्बुदग्रन्थ्यधिकारः

लेप-प्रकरणम्

९१२० उपोदिकालेपः मर्मज अर्बुद

(७) अर्शोधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

८८१६ अर्कपत्रादिलवणम् वातार्शको शीघ्र नष्ट करता है।

९२४३ करंजमूल यो० अर्शको ३ दिनमें नष्ट करता है। (स०यो०)

९२७७ कुशमूल यो० रक्तस्राव नाशक „

गुटिका-प्रकरणम्

९२९९ कलिङ्गाद्या गु० अर्श

९३०२ कांकायन गु० अर्श, अग्निमां, उदाव०

तैल प्रकरणम्

९१५९ एरण्ड तैलयो० मल और दोषों को अनुलोम करता है।

९३६० कासीसादि तै० मस्सों को नष्ट करता है।

९३६२ कासीसाद्यं तै० मस्से

लेप-प्रकरणम्

८८७३ अजापुरीषादि यो० चर्मकील

८८८१ अर्कक्षार लेपः मस्सों को अवश्य नष्ट करता है।

८८८८ अर्शोहर लेपः ७ दिनमें मस्सों को समूल नष्ट कर देता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

८८८९ अर्शोहर लेपः	नाभि पर लेप करनेसे मस्से समूल नष्ट होतेहैं।
८८९० „ „	ऊपरके समान
८८९१ „ „	„ „
८८९२ „ „	अर्श
८८९३ „ „	१५ दिनमें मस्से समूल नष्ट हो जाते हैं।
९४०६ काकोदुम्बरिका-योगः	मस्सोंको शीघ्र नष्ट करता है।
९४१६ कुलीरशृङ्ग्यादि-लेपः	७ दिनमें मस्से गिर जाते हैं।

धूप-प्रकरणम्

९४३४ कुष्ठादिधूपः	अर्शकी पीड़ा

रस-प्रकरणम्

८९८७ अर्शः कुठारो	समस्त अर्श
८९८८ „ „ „	मस्सोंको समूल नष्ट करता है
८९८९ अर्शोहररसः	अर्श

मिश्र-प्रकरणम्

९००७ अर्शनाशकयोगः	अर्श, गुदनिस्सरण
९००८ अर्शोहरयोगः	अर्शकी पीड़ा
९५३२ कटुतुम्ब्यादिवर्तिः	अर्शको १ सप्ताह में नष्ट करता है
९५३३ कटुवलाम्बाद्या वर्तिः	मस्सोंको समूल नष्ट करता है।
९५५७ किंशुकबीजयोगः	अर्शको लाभ पहुंचाने वाला स्वेद
९५५९ कुटजादिक्षीरम्	रक्तार्श
९५६६ कृष्णतिलयोगः	अर्शनाशक पौष्टिक

(८) अश्मरिशर्कराधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

९२२४ कुशादि क्वाथः	दुस्साध्य अश्मरि
९२२५ „	मूत्राश्मरि, वस्तिशूल
९२२७ कुष्माण्ड योगः	वस्ति और मेढ्र की शूल-युक्त शर्करा
९२२८ कुष्माण्डरस योगः	मूत्राघात, शर्करा, अश्म.

चूर्ण-प्रकरणम्

९१४४ एरण्डादि कल्कः	अश्मरि
९२४६ कर्कोटी मूलयो०	पथरीको तोड़कर निकालता है। (स०यो०)
९२६७ कुटजकल्कः	अश्मरिकोनिकाल देताहै
९२७० कुटजादियोगः	मेढ्रशर्कराको शीघ्र नष्ट करता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९) आमवाताधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

८८२७ असीतक चू० आमवात, अनेक वातरोग

गुटिका-प्रकरणम्

९०३३ आमवातारि वटी आम

अवलेह-प्रकरणम्

९५७४ खण्डशुण्ठिः आमवातनाशक, रसायन

घृत-प्रकरणम्

९३२५ काञ्जीषट्पल घृ० आमवात, कटिग्रह, शूल, अफारा

तैल-प्रकरणम्

९१५८ एरण्डतैल योगः आमवात

रस-प्रकरणम्

९५८१ खण्डशुण्ठ्यवलेहः आमवात नाशक, बल्य, वृष्य

मिश्र-प्रकरणम्

९०६१ आरग्वधादि योगः आमवात

(१०) उदररोगाधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

९२८७ कुष्ठाद्यं चू० वातोदर

घृत-प्रकरणम्

९०४१ आर्द्रक घृ० शोथोदर, अग्निमांद्य

तैल-प्रकरणम्

९१५७ एरण्डतैल यो० वातोदर, शूल, शोथ

आसवारिष्ट-प्रकरणम्

९३७६ कुमार्यासवः अष्टोदर, पक्तिशूल

९३७७ ,, उदररोग, प्लीहा, यकृत्

रस-प्रकरणम्

९१२७ उदरारि रसः जलोदर

९१२८ ,, लोहः समस्त उदर रोग, शोथ, पाण्डु

९४६३ कंकुष्ठ चूर्णम् आठ प्रकारके उदर रोग (रेचक)

मिश्र-प्रकरणम्

९५३४ कदलीकन्द योगः उदररोग, कुक्षिकी तीव्र पीड़ा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(११) उदावर्ताधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

९११० उर्वारुबीजादि यो० मूत्रावरोध जनित उदा०

मिश्र-प्रकरणम्

८९९६ अगारधूमादि वर्तिः उदावर्त

(१२) उपदंशाधिकारः

अवलेह-प्रकरणम्

९११६ उशबावलेहः उपदंश, फिरंग, रक्तदोष

लेप-प्रकरणम्

९१६९ एलादि लेपः उपदंश, व्रण, दाह, शोथ

९३९५ करवीर लेपः उपदंश जनित असाध्य लिङ्ग पीड़ा

९४१३ कुमारिकादि ले० उपदंशव्रणों की दाह, पीड़ा पाकको अवश्य नष्ट करता है (सरल योग)

रस-प्रकरणम्

९१३२ उपदंशघ्न रसः उपदंशको मुख आए बिना नष्ट करता है

९१३३ उपदंशान्ध सूर्यः फिरंग

९४६७ कज्जली योगः उपदंश नाशक उत्तमयोग

(१३) कर्णरोगाधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

९०९९ आर्द्रकादिस्वरसः कर्णशूल

९१९९ कपित्थादि योगः „

तैल-प्रकरणम्

८८५७ अजामूत्रादि तै० कर्णशूल

८८५८ अतिविषादि तै० कर्णस्राव, कर्णनाद

८८६८ अश्वत्थपत्र तै० कर्ण पीड़ाको शीघ्र नष्ट करता है

९१६१ एरण्डपत्रादि तै० कर्णपीड़ाको तुरन्त नष्ट करता है

९१६२ एरण्डादितैलम् कर्णनाद, बधिरता, कर्णशूल

९३३७ कटुतुम्ब्यादि तै० कर्णपालीवर्द्धक

९३४९ कर्णामृत तैलम् मनुष्य, हाथी और घोड़े के कर्ण रोग, शिरो रोग

९३५३ काकजंघा तै० बधिरताको अवश्य नष्ट करता है। (स० यो०)

लेप-प्रकरणम्

९४२७ केतक्यादि लेपः कर्णमूलव्यथा

मिश्र-प्रकरणम्

९००६ अर्काङ्कुरादि यो० कर्णशूल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१४) कासश्वासहिक्काधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

९०१२	आटरूषकादि क०	कास
९०१८	आर्द्रकस्वरसः	प्रतिश्याय, श्वास, कास, अरुचि (स० यो०)
९१९३	कण्टकार्यादि का०	समस्त कास, (स०यो)
९१९५	कण्टकार्यादि यो०	कास, श्वास,(स०यो०)
९१९८	कपित्थरस यो०	हिक्का नाशक(स०यो०)

चूर्ण-प्रकरणम्

८८०६	अजमोदादिभस्म चूर्णम्	५ प्रकारकी कास
८८१०	अभयादिकल्कः	हिक्का, श्वास(स०यो०)
८८१५	अमृतादि चू०	समस्त कास
७०७२	इक्ष्वादि ,,	क्षतज कास
९१४३	एरण्डमूलाद्यं चू०	कास
९१५०	एलादि चू०	ऊर्ध्व श्वास, तमक श्वास
९२३७	कट्फलादि चू०	तमक श्वास, पीनस, स्वरभेद, वातकफज कास
९२३८	कणादिचूर्णम्	वातकास
९२६३	कासान्तक ,,	दुष्ट कास (स० यो०)
९२८३	कुष्ठादि ,,	कफज कास
९२९६	कोलास्थि ,,	हिक्का

गुटिका-प्रकरणम्

८८३६	अमृतप्रभा गु०	कास, श्वास, प्रतिश्याय, पीनस, गलरोग
९५७३	खदिरादि गुटि०	कास, दारुण स्वरभंग, क्षय, कण्ठस्थ कफ

अवलेह-प्रकरणम्

९०३४	आटरूषादि ले०	वातकफज कास
९३०८	कटुतैल योगः	समस्त श्वास (स०यो०)

घृत-प्रकरणम्

८८४६	अभयादि घृ०	कास, श्वास, हिक्का, हृद्रोग
८८५०	अशोक घृ०	कास
९३१८	कण्टकारी घृ०	श्वास, स्वरभेद, ५ प्रकारकी प्रबल खांसी
९३१९	कण्टकार्यादि ,,	कास, श्वास, रक्तष्ठीवन, हिक्का, अरुचि, पीनस
९३३५	कुलित्थषट्पल	कास, श्वास, हिक्का, पीनसादि

धूम्र-प्रकरणम्

९१७०	एरण्डादि धूमः	३ दिनमें कासको नष्ट करता है

रस-प्रकरणम्

९१२४	उदयभास्कर	५ प्रकार का श्वास
९४७४	कफान्तक रसः	कास, श्वास
९५०५	कासकेसरी र०	कास, शूल, कफ, प्रसूतरोग

मिश्र-प्रकरणम्

९५३६	कदलीफल यो०	श्वासको शीघ्र नष्ट करता है। (स० यो०)
९५४८	काकोदुम्बर यो०	कास श्वासमें उत्तम, वैद्यको यश दिलानेवाला

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१५) कुष्ठवातरक्तरक्तविकाराधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

८७९० अमृतादि का०	वातरक्त, कुष्ठ, आम (सरल योग)
८७९३ ,, ,,	सर्वशरीरगत वातरक्तको अवश्य नष्ट कर देता है सरलयोग
९०१५ आरग्वधादि का०	कुष्ठ, विसर्प, दद्रु, विचर्चिका को शीघ्र नष्ट करता है
९५७० खदिरादिक०	श्वेतकुष्ठमें अद्भुत गुणकारी

चूर्ण-प्रकरणम्

८८१४ अमृतादि क०	कफज वातरक्त
८८२० अवल्गुजादि चू०	समस्त कुष्ठ (स०यो०)
९०२५ आमलकादि ,,	भयंकर गलितकुष्ठको शीघ्र नष्ट करता है। (सरल योग)
९२५८ काकोदुम्बर यो०	रक्त कुष्ठ
९२५९ काकोदुम्बरिकादि योगः	श्वित्र
९२८० कुष्ठहर चूर्ण	समस्त कुष्ठ
९२८८ कुष्ठारि चू०	भयंकर वातरक्त

अवलेह-प्रकरणम्

९११६ उशबावलेहः	कुष्ठ, फिरंग, रक्तदोष

घृत-प्रकरणम्

८८४२ अगस्तिपुष्प घृ०	स्फुटित वातरक्त
९०३८ आमलक घृ०	वातरक्त (सरल योग)
९०३९ आरग्वधादि घृ०	कुष्ठ
९५७७ खदिरादि घृ०	समस्त कुष्ठ

तैल-प्रकरणम्

९०४४ आरग्वधादि तै०	सिध्म, उदुम्बर कुष्ठ
९०७९ इक्ष्वाकु तै०	खुजली, कुष्ठ, वायु, कफ
९३४४ करवीरादि तै०	पामा, खुजली
९३५१ कर्पूरादि तै०	कुष्ठ
९३५६ कांजिकादि तै०	वातरक्त
९३५७ कारस्करादि तै०	वातरक्त में अत्युत्तम
९३५८ कार्पासादि तै०	शिरका कुष्ठ
९३६४ कुष्ठकालानल तै०	मांसमेदोगत कुष्ठ, पुराना नाडीव्रण, श्वित्र, पामा
९३६५ कुष्ठकालानल	वातरक्त, दाद, खाज, खुजली, मकड़ीका विष
९३६६ कुष्ठादि तैलम्	कुष्ठनाशक उत्तम

आसवारिष्ट-प्रकरणम्

९३७५ कनकबिन्द्वरिष्टम्	महा कुष्ठको १ मासमें, क्षुद्र कुष्ठ को १५ दिनमें नष्ट करता है कान्तिवर्द्धक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेप-प्रकरणम्

८८७० अगस्त्यादि ले० प्रबल वातरक्त
८८७१ अङ्कोलबीजादि खाज
८८२७ अङ्कोल्लकादि श्वित्र
८८७६ अपामार्ग भस्म-योगः सिध्म
८८७७ अपामार्गादि दाद
८८७९ अमृतादि ले० शीतपित्त
८८८२ अर्कक्षारादियोगः कपालकुष्ठ
८८९४ अवल्गुजादिलेपः श्वित्र
९१६४ एडगजादिलेपः सिध्म, कृमि, दाद, मण्डल कुष्ठ
९१६७ एलादि लेपः कुष्ठ
९१७९ कटुकालाब्वादि लेपः श्वेत कुष्ठ
९३९७ करवीरादिलेपः कुष्ठ
९४०१ कर्णिकारादिलेपः ३-४ दिनमें दादको समूल नष्ट करता है।
९४१७ कुष्ठहरलेपः मण्डलकुष्ठ (फफोला डालता है)
९४२५ कृष्णधत्तूरादिले० सिध्म (सरल)
८९६६ अभ्रकयोगः असाध्य उदुम्बर कुष्ठ

रस-प्रकरणम्

८९८५ अर्केश्वररसः सुप्ति कुष्ठ, मण्डल कुष्ठ
८९८६ ,, ,, रक्तमण्डल कुष्ठ
९४८३ कामकलावटी वातरक्त, कुष्ठ, दाद, खाज आदि
९४९८ काम्बायनरसः कुष्ठ
९५०१ कालाग्निरुद्ररसः गलत्कुष्ठ
९५०२ ,, ,, १ मण्डलमें समस्त कुष्ठों को नष्ट करता है।
९५१६ कुष्ठकुठार गलत्कुष्ठ
९५१७ कुष्ठघ्नरसः श्वेतकुष्ठ, दाद, विचर्चिका और त्वग्दोषको अवश्य नष्ट करता है।
९५१८ कुष्ठदलनरसः कुष्ठ
९५१९ कुष्ठनाशनरसः समस्तकुष्ठ
९५२० कुष्ठाङ्कुशरसः कृष्णकुष्ठ, वैपादिक कुष्ठ
९५२२ कुष्ठारिरसः समस्त कुष्ठ
९५२३ ,, समस्त कुष्ठ, दाद
९५८० खगेश्वररसः श्वेत कुष्ठ, श्वास, कास
९५८२ खदिरसारादि चूर्णम् श्वित्र तथा अन्य कुष्ठ

मिश्र-प्रकरणम्

९१८५ औष्ट्रीक्षीरयोगः वह कुष्ठ कि जिसमें रोम नख गिर गए हों, मांस सड़ गया हो और कृमि पड़ गए हों नष्ट हो जाता है।
९५६५ कृतमालादिक० खाज, खुजली, शीतपित्त
९५६८ कोशातकीयोगः समस्त कुष्ठ (सरलयोग)
९५९५ खदिरयोगः १ मास में प्रबल कुष्ठ, पांडु, अर्श, शोथ को नष्ट करता है।
९५९६ खदिररसायन कुष्ठ
९५९७ खदिरादियोगः कुष्ठ, कृमि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१६) कृमिरोगाधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

९२४१ कम्पिल्लकाद्योयो॰ कृमिरोग (सरल)

धूप-प्रकरणम्

९४३० ककुभादिधूपः खटमल, जू आदि

रस-प्रकरणम्

९५२७ कृमिविनाशनरसः समस्तकृमि रोग

९५२८ कृम्यङ्कुशो रसः कृमि समूहको नष्ट करता है।

मिश्र-प्रकरणम्

९०५८ आखुकर्ण्यादियोगः कृमि

९५३४ कदलीकन्दयोगः उदरकृमि शीघ्र निकल जाते हैं। (सरलयोग)

(१७) क्षयराजयक्ष्माधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

८८२१ अश्वगन्धायोगः शस्त्राघात जन्य क्षीणता (सरलयोग)

८८२४ अश्वगन्धाद्युद्वर्तनम् क्षयके रोगीके शरीर पर मालिशसे लाभ होता है

९२५५ काकजङ्घानीलपुष्प्योः योगः शोष रोग (सरल योग)

अवलेह-प्रकरणम्

८८३९ अमृतप्राशावलेहः राजयक्ष्मा, पाण्डु, अतिसार

९११३ उच्चटायमोदकः एकादश लक्षणयुक्त क्षय, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्र, श्रमजनित निर्बलता

९३१६ कृष्णादि योगः क्षय (सरल योग)

घृत-प्रकरणम्

८८४९ अमृतार्थघृतम् उग्रक्षय, कास, श्वास, दाह, शोथ

९५७८ खर्जूराद्यं घृतम् ज्वर, श्वास, कास, स्वरभंग

आसवारिष्ट-प्रकरणम्

९३७८ कुष्माण्डासवः कास, श्वास, क्षत, क्षय, शोथ, अतिसार

रस-प्रकरणम्

८९३२ अग्निरसः सज्वर साध्यासाध्य क्षय

८९३६ अपूर्वो रसः अग्निवर्द्धक, क्षय, उदररोग (पारदभस्मका सरलयोग)

८९७८ अमरकलानिधिरसः राजयक्ष्मा

८९९३ अश्वत्थादियोगः क्षय रोग

९५१५ कुमुदेश्वरो रसः ,, ,,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिश्र-प्रकरणम्

१०९८ इक्ष्वादियोगः उरः क्षत के व्रण

९५३० ककुभत्वचादि
योगः राजयक्ष्मा, कास आदि

(१८) क्षुद्ररोगाधिकारः

घृत-प्रकरणम्

९३२६ कारस्करघृतम् बिवाई (पाददारी)

९३३२ कुङ्कुमादि ,, मुख दूषिका, नीलिका नाशक सौन्दर्यवर्द्धक

तैल-प्रकरणम्

९३७० केतक्यादितैल अकाल पलित

९३७१ केतक्याद्यतैल इन्द्रलुप्त, दारुणक, पलित, शिरकी खाज

लेप-प्रकरणम्

८८८४ अर्कक्षीरादिलेपः मुखकी पुरानी श्यामता

९०५१ आरण्यतुलसीले० व्यङ्ग

९०८३ इंगुदीफलमज्जा
लेपः २१ दिनमें मुख व्यङ्ग-को नष्ट करता है।

९०८८ इन्द्रवारुण्यादि केशरंजक (सरल योग)

९११८ उत्पलादिलेपः केशरंजक

९३८२ कद्‌विकादिलेपः चर्मकील

९४०८ कान्तपाषाणादि
योगः बाल भ्रमर सदृश काले हो जाते हैं और छः मास तक वैसे ही रहते हैं।

९४२३ कुष्ठादिलेपः अरुंषिका

९४२४ कृष्णतिलादि व्यंग

(१९) गलगण्डगण्डमालाग्रन्थ्यधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

८७९६ अलम्बुषा स्वरसः अपची, गण्डमाला (सरल योग)

९०७४ इन्द्रवारुणी मूल
योगः गण्डमाला

९२६१ काञ्चनार योगः गण्डमाला (सरल योग)

तैल-प्रकरणम्

९३५५ काकादन्यादि तै० अपची

लेप-प्रकरणम्

८८८३ अर्क क्षीरादिलेपः सात दिनमें कण्ठमाला को नष्ट करता है

८८९७ अश्वत्थादि भस्म
लेपः अपचीको शीघ्र नष्ट करता है

९४०७ काञ्चन्यादि ले० ७ दिनमें गण्डमाला अवश्य फूट जाती है

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नस्य–प्रकरणम्

१०५२ आरग्वधादि न० गण्डमाला

मिश्र–प्रकरणम्

१०९९ इन्द्रवारुण्यादि योगः गण्डमाला (सरल योग)

(२०) गुल्माधिकारः

चूर्ण–प्रकरणम्

८८०४ अजमोदादि चू० वातज गुल्म, शूल, उदररोग,

१०३० आरोग्य लवणम् वातगुल्म, वातोदर, शूलादि

१०३१ आरोग्य चूर्णम् „ „ „

१२४० कम्पिल्लकादि योगः सात दिनमें सोपद्रव गुल्म और शूलको नष्ट करता है।

घृत–प्रकरणम्

९३२३ कह्लाराद्यं घृ० रक्तगुल्म, दाह, तृषा, ज्वर, योनि दोष, छर्दि

(२१) ग्रहण्यधिकारः

चूर्ण–प्रकरणम्

८८११ अभयादिचूर्णम् पक्व तथा साम कफ ग्रहणीको शीघ्र नष्ट करता है।

९२३४ कटुकादि कल्कः पित्त ग्रहणी, दाह, रक्तस्राव, गुद पीड़ा, विष्टम्भ

९२५४ काकजङ्घाद्यं वातज ग्रहणी, आध्मान

घृत–प्रकरणम्

९०४० आरुष्कर घृ० सर्व दोषज ग्रहणी, आम, कृमिविकार, विष्टम्भ

रस–प्रकरणम्

८९२६ अग्निकुमार रसः ग्रहणीरोगमें सद्य फल प्रद

९४६९ कणाद्य लोहम् ग्रहणी, सोपद्रव प्रवाहिका, अतिसार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२२) छर्द्यधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

९१४७ एलादि चू० वमन नाशक (स०यो०)

९२९२ कृष्णादि „ छर्दि

अवलेह-प्रकरणम्

९०३७ आमलक्यादिले० वमन में उत्तम (स०यो०)

९३१७ कोलमज्जादिले० छर्दि

मिश्र-प्रकरणम्

९५३९ करञ्जपत्रयोगः छर्दि, कफ

९५६० कुबेराक्षयो० छर्दि, अरुचि, मुखप्रसेक

(२३) ज्वराधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

८७९२ अमृतादिक्वा० ज्वर, छर्दि, तृषा, दाह, हृल्लास

८७९९ अष्टादशांगक्वा० जीर्णज्वर, अरुचि, श्वास, कास, शोथ

९०१४ आम्रादि फाण्टः ज्वर, प्यास, छर्दि, अतिसार, दुस्तर मूर्च्छा

९०१६ आरग्वधादि सन्निपात, खांसी, कफ, प्रसेक, शोथ

९१०२ उशीरादिक० वातपित्त ज्वर

९१८८ कटुकादि क्वा० ज्वर, दाह नाशक (स.यो.)

९१८९ „ „ पित्तकफ ज्वर

९१९० „ „ मुखका कड़वा पन

९१९१ कटुत्रिकादिक्वा० कफज्वर

९१९२ कटुरोहिण्यादि कफज्वर, शूल

९१९६ कत्तृणादि क० सन्निपात

९२०० करञ्जादि क्वा० अभिन्यास सन्निपात

९२०१ „ „ कफज्वर, कास, गलेकादर्द

९२०६ कर्पूरादि „ भयंकर सन्निपात

९२०८ कलिङ्गादि क० कास, वमन, पिपासा, दाह युक्त ज्वर

९२११ कारव्यादि क्वा० अभिन्यास नाशक, स्रोत शोधक

९२१२ काश्मर्यादिशीत-कषायः कफपित्त ज्वर

९२१४ किरातादिक्वा० वातज्वर

९२१५ „ „ „ „

९२१६ „ „ पित्तज्वर

९२१७ „ „ सन्निपात, तृषा, छर्दि

९२१८ „ „ वातपित्त ज्वर

९२१९ किरातादि पाचनकषायः पित्त ज्वर पाचक

९२२६ कुष्ठादिक० कफ ज्वर

चूर्ण-प्रकरणम्

९२३५ कटुकायोगः कफ पित्त ज्वर नाशक सरल योग

९२६२ कालाजाजीयो० विषम ज्वर (स० यो०)

१२७५ कुलत्थादि चू० वातप्रधान सन्निपातको शीघ्र नष्ट करता है

१२७६ कुलित्थ चू० प्रस्वेद

गुटिका-प्रकरणम्

१२९८ कम्पिल्लकाद्यो मो. ज्वर, तृषा, छर्दि, पित्त

तैल-प्रकरणम्

८८५४ अगुर्वादि तै० शीत ज्वर

९०८० इन्द्रयवाद्यं तै० ज्वर, प्रबल दाह

१३३८ कटुरोहिण्यादि ज्वर

लेप-प्रकरणम्

९०८४ इक्ष्वादिलेपः कर्णमूल शोथ

१३८१ कट्फलादि ,, ,,

१३८६ कपित्थादिले० दाह, पीड़ा, मोह, छर्दि, तृषा

१३९९ करवीरादिले० पिपासा

१४१५ कुलत्थादिले० कर्णमूल शोथ

अञ्जन-प्रकरणम्

८९०३ अञ्जनभैरव सोपद्रव सन्निपात

८९०४ अञ्जनरसः सर्वदोषज ज्वर, दाहादि

८९०८ अर्द्धनारीनटेश्वर० जिस आंखमें अंजन किया जाय उसी ओरका ज्वर उतर जाता है

८९०९ अर्धनारीश्वर० ऊपरके समान

८९१० अर्धनारीश्वर० ऊपरके समान

८९११ ,, ,,

८९२३ उन्मादभञ्जिनीवटी चातुर्थिक ज्वर

नस्य-प्रकरणम्

८९१७ अञ्जनरसः मूर्च्छा

८९२० अर्धनारीश्वर जिस ओरके नासापुटमें नस्य दी जाय उसी ओरका घोर ज्वर अवश्य उतर जाता है

९४६१ कुष्माण्डादिन० ज्वर

रस-प्रकरणम्

८९२२ अग्निकुमारर० ज्वर, श्वास, कास, पाण्डु, अग्निमांद्य

८९२३ ,, ,, इंजेक्शन देनेसे सन्निपातका मृतप्रायः रोगी भी बच जाता है

९०५३ आनन्दभैरव सन्निपात, जीर्णज्वर, अङ्गमर्द, अतिसार

९०५५ आनन्दभैरवीव० अनेकविध सन्निपात

९०९६ इच्छाभेदी वमन ज्वर, छर्दि (वामक)

९१२५ उदयमार्तण्ड रसः ज्वर, आध्मान, अजीर्ण

९४८० काञ्चनपोटली ज्वर, अतिसार अग्निमांद्य

९४९९ कालकूटर० समस्त ज्वर, सन्निपात

९५९३ खेचरी गुटिका समस्त ज्वर, गुल्म, उदर रोग

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिश्र-प्रकरणम्

८९९७ अजगंधादि पानकम् — सन्निपात, कास, श्वासको शीघ्र नष्ट करता है

९००२ अपामार्गमूल-वन्धनम् — हाथमें बांधनेसे विषम ज्वर नष्ट होता है

९५४७ काकजङ्घामूल-बन्धनम् — तन्द्रा

(२४) ज्वरातिसाराधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

९१०३ उशीरादिक्वाथः — ज्वरातिसार

रस-प्रकरणम्

९४७० कनकसुन्दर गु० — ज्वरातिसार, रक्तातिसार, अग्निमांद्य

मिश्र-प्रकरणम्

९१०० ईसबगोलयोगः — ज्वरातिसार

(२५) दाहाधिकारः

८७८२ अजगन्धादियो० — दाह, वायु (सरलयोग)

अवलेह-प्रकरणम्

९०३५ आमलक्यादिसं० — दुर्जय दाह, मूर्च्छा, पुरानी छर्दि

मिश्र-प्रकरणम्

९०६८ आर्द्रवस्त्रधारणम् — दाह

(२६) धात्वादिशोधनमारणाधिकारः

८९२९ अग्निजार

८९३८ से ८९४२ तक — अभ्रक द्रुतिः

८९४५ अभ्रकभस्मामृतीकरणम्

८९४६ " "

८९४७ अभ्रकमारणम् — २२ पुटी भस्म

८९४८ " "

८९४९ अभ्रकमारणम् — सिन्दूराभ लाल भस्म

८९५० " " — " " " २० पुटी

८९५१ " "

८९५२ " " — बिना पुट कढ़ाई में भस्म करनेकी विधि

८९५३ " "

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

८९५४ अभ्रकमारणम् लाल भस्म
८९५५ अभ्रक मारणम्
८९५६ " "
८९५७ " " वटदुग्ध तथा गंधकयोग से १ पुटी भस्म
८९५८ " " गुड़ योगसे ३ पुटीभस्म
८९५९ " " ४ पुटी भस्म
८९६० " " कसौंदी द्वारा १० पुटी भस्म
८९६१ अभ्रकमारणम् ६० पुटी भस्म
८९६२ " " ६० पुटी भस्म
८९६३ " " सहस्रपुटी भस्म
८९६४ " " श्वेताभ्रक भस्म
८९६५ अभ्रकमारणम्
८९६६ " "
८९६९ से ८९७३ तक } अभ्रक शोधनम्
८९७४ अभ्रकसत्वपातनम्
८९७५ " " "
८९७६ अभ्रकसत्वमारणम्
८९७७ " " शोधनम्
९१३४ उपरस शोधनम्
९१३५ उपविष "
९४६४ कंकुष्ठ शोधनम्
९४७५ कर्पूर शोधनम्
९४८१ कान्तपाषाण शोधनम्
९५०४ काशीस शोधनम्
९५०७ कांस्यमारणम्
९५०८ " शोधनम्
९५०९ " शोधनमारणे
९५१२ कुचिलाशोधनम्
९५१३ " "
९५८३ खर्परमारणम्
९५८४ से ९५८८ तक } खर्पर शोधनम्
९५८९ खर्परसत्वपातनम्
९५९० " " "
९५९१ " " मारणम्

(२७) नासारोगाधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

९२३६ कटुत्रिकादिचूर्ण पीनसको पकाता है

तैल-प्रकरणम्

९०४२ आगारधूमाद्यंतै० नासार्श
९३४५ करवीराद्यंतैलम् नासार्श
९३६७ कुष्ठाद्यस्नेह क्षवथु (छींक आना)

नस्य-प्रकरणम्

९४५१ कटुतुम्बीमूलन० नाशार्श

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२८) निद्रानाशाधिकारः

अञ्जन-प्रकरणम्

९४३९ कमलकन्दादि योगः निद्रानाश

मिश्र-प्रकरणम्

९१३८ उपोदिकादि योगः निद्रानाश

(२९) नेत्ररोगाधिकारः

लेप-प्रकरणम्

९०८२ इक्षुमूलादिलेपः पित्तजनेत्राभिष्यन्द

९४२६ कृष्णलोहादियोगः नेत्रार्ममें अत्युत्तम

धूप-प्रकरणम्

९४३४ काकमाचीफल धूपः आंखसे तुरन्त कृमि निकलकर पिल्ल रोग नष्ट हो जाता है।

अञ्जन-प्रकरणम्

८९०५ अपराजितावर्तिः नेत्रकण्डू, तिमिर, काच, पिल्ल, अर्म

८९०६ अपामार्गमूलाद्यञ्जनम् नेत्राभिष्यन्दको शीघ्र नष्ट करता है।

८९०७ अम्लिकाञ्जनम् नेत्रस्राव, नेत्रकण्डू, अधिमन्थ

८९१२ अश्वत्थपत्रादिवटी तिमिर

८९१३ अश्वलालाद्यञ्जनम् दिवानिद्रा, तन्द्रा

८९१४ अक्षयोगः पुष्प, नक्तान्ध्य, तिमिर, पटल

९१७१ एलादिवर्तिः पोथकी, कुकूणक

९४३६ कणाञ्जनम् नक्तान्ध्य

९४३७ कतकफलाद्यं० क्षतशुक्र

९४४१ करञ्जबीजाद्यं० पिल्ल नष्ट होकर पलकके बाल निकल आते हैं।

९४४२ करमास्थ्यञ्जनम् असाध्य नेत्रशुक्र भी काला हो जाता है।

९४४३ करवीरादियोगः नवीननेत्राभिष्यन्द

९४४४ कर्पूराद्यञ्जनम् शुक्र, तिमिर, काच, अर्म

९४४५ कार्पासाद्यञ्जनम् पुराना नेत्रस्राव

९४४६ कासीसाद्यञ्जनम् पिल्लरोगको शीघ्र नष्ट करता है।

९४४७ ,, ,, अर्म, काच, तिमिर, अर्जुन, वर्त्मरोग

९४४८ कुमारीवर्तिः नष्टचक्षुः भी ठीक हो जाती है

९४४९ कुलत्थाद्यञ्ज० ३ दिनमें रक्तज नेत्राभिष्यन्द नष्ट होता है

९४५१ कोकिलागुटी तिमिर

९४५२ कौलीतिकाद्य० समस्त नेत्राभिष्यन्द

मिश्र-प्रकरणम्

९०५९ आमलक्यादि स्नानम् दृष्टिवर्द्धक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९५४१ करभस्वेदः पलककी पिडिका
९५४५ कशेरुकादियोगः पित्तज तथा रक्तज नेत्राभिष्यन्द
९५५१ कारवेल्लीमूला-श्च्योतनम् काच

(३०) पाण्डुकामलाधिकारः

गुटिका-प्रकरणम्

८८३७ अमृतवटकः कामला, पाण्डु, ज्वर, शोथ

अवलेह-प्रकरणम्

९६७६ खदिरादिलेहः पुराना पाण्डु, कामला, हलीमक

घृत-प्रकरणम्

८८४८ अमृतलतादि घृ० हलीमक

नस्य-प्रकरणम्

८९१६ अंकोलमूलादि नस्यम् कामला
९४५६ कर्कोटमूलादि नस्यम् ,,

रस-प्रकरणम्

८९७९ अमृतश्रवा रसः शुष्क पाण्डु
८९८६ अयश्चूर्णादियोगः पुराना पाण्डु
९४९२ कामलाप्रणुद रसः कामला
९४९७ कामेश्वरी व० सशोथ कफज पाण्डु

(३१) प्रमेहाधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

८७७८ अग्निमन्थक० वसामेह (सरल योग)
८७९७ अश्वत्थादि क्वा० नील, हारिद्र, शुक्र, क्षार, माञ्जिष्ठ और रक्त मेहके लिये पृथक् पृथक् सरल योग
९१८६ कटङ्कटेर्यादि क्वा० प्रमेह
९२२० कुटजादिक्वा० समस्त प्रमेह

चूर्ण-प्रकरणम्

८८२६ अश्वत्थबीजादि योगः समस्तमेह (सरल योग)
९१४८ एलादि चूर्णम् प्रमेह
९१४९ ,, ,, प्रमेह, मूत्रदाह, हिक्का

गुटिका-प्रकरणम्

९३०१ कस्तूरी मोदकः समस्त मेह, सोमरोग, मूत्रातिसार, मूत्रकृच्छ्र

अवलेह-प्रकरणम्

९३१२ कामसुन्दरपाकः प्रमेह, ज्वर नाशक, रसायन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रस-प्रकरणम्

८९४४ अभ्रकभस्मयोगः प्रमेह

९४७६ कर्पूरादिगुटिका अनेक प्रकारका प्रमेह, स्वरभंग

९४८२ कान्तलोहादि योगः वातकफज प्रमेह

(३२) बालरोगाधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

८७८१ अङ्कोटादि का० उदर विकार

चूर्ण-प्रकरणम्

९२३९ कमलकेशरादि-योगः प्रवाहिका (स० यो०)

गुटिका-प्रकरणम्

८८३२ अतिविषादि गु० अतिसार, ज्वर, पेटमें कुछ जाते ही उल्टी हो जाना

८८३८ अशनादि यो० पश्चात्रुज

अवलेह-प्रकरणम्

९१०९ कणादिलेहः मूत्रावरोध

घृत-प्रकरणम्

९३२४ काकोल्यादि घृ० स्कन्दापस्मार

तैल-प्रकरणम्

९४४७ कर्कटकादि तै० नींदमें दांत कटकटाना

लेप-प्रकरणम्

८८७४ अतस्यादि ले० ज्वर

८८८७ अर्जुनादिले० त्वग्विकार

८८९८ अश्वत्थादिले० मुखपाक

८९०० अष्टमङ्गल उद्वर्त० दस्त, ज्वर, वमन, दाह, तृषा

९०४७ आमलक्यादि विच्छिन्न रोग

९३८५ कपित्थपत्रादि शिरपीड़ा, अति० छर्दि

९४०० कर्कटयोगः नींदमें दांत कटकटाना

धूप-प्रकरणम्

८९०२ अपराजित धूपः समस्त बालग्रह, ज्वर

अञ्जन-प्रकरणम्

९४५० केशराद्यञ्जनम् समस्त नेत्ररोग

रस-प्रकरणम्

९५२१ कुष्ठादिलेहः आयु और कान्ति बढ़ती तथा रंग स्वच्छ होता है

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३३) भगन्दराधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

९५७१ खदिरादि का० भगन्दर

९२७२ खदिरसारादि यो० भगन्दर, कुष्ठ

लेप-प्रकरणम्

९४२० कुष्ठादि लेपः भगन्दर

मिश्र-प्रकरणम्

९००३ अपामार्गादि क्षारः भगन्दर, अर्श, नाड़ीव्रण

(३४) मदात्ययाधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

९२३० कुष्माण्डरस यो० कोद्रव का मद

रस-प्रकरणम्

९४६६ कज्जली योगः मदात्यय

मिश्र-प्रकरणम्

९२५२ कर्कन्ध्वादि-पानकम् पानविभ्रम, पानात्यय, तृषा, छर्दि, दाह

(३५) मसूरिकाविस्फोटकाधिकारः

लेप-प्रकरणम्

८८९६ अश्वगन्धादि मसूरिकाके रोगीको सुरक्षित रखता है

९०८५ इन्द्रयवलेपः विस्फोटक

९१२१ उशीरादिलेपः मसूरिका, स्वेद

९३११ करञ्जबीजादि विस्फोटक, दुष्ट व्रण

धूप-प्रकरणम्

९१२२ उग्रगन्धादिधूपः प्रारम्भमें धूप देने से मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(३६) मिश्राधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

८८१८ अलम्बुषादि चू० शरीरकी दुर्गन्ध

९२४८ कर्पूराद्युद्वर्तनम् ग्रीष्मोद्भव स्वेद

गुटिका-प्रकरणम्

८८४० अमृतरसोनपिण्डः अस्थिकी चोट, हड्डी उतरना तथा टूटना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तैल-प्रकरणम्

९३४० कनकसुन्दर तै० दुष्ट स्वेद नाशक, कान्तिवर्द्धक

९३५२ कर्पूराद्यं तै० पीड़ा शामक

मिश्र-प्रकरणम्

९०१० अष्टगुणमण्डः अग्निदीपक, बलवर्द्धक, बस्तिशोधक

९०११ अष्टवर्गः रक्तवर्द्धक, ज्वरनाशक

९१८४ ओषधि प्रतिनिधि-गणः किस ओषधिके अभाव में कौन ओषधि लेनी चाहिये

९५६४ कुष्ठादियोगः लहसन, मदिरादि की मुख दुर्गन्ध

(३७) मुखरोगाधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

९२६० काकोदुम्बरिका-मूल योगः मुखसे रक्त स्राव होना

९२६४ किरात तिक्तादि कल्कः जिह्वाकी जड़ता

९२८४ कुष्ठादि चूर्णम् गलशुण्डिका

तैल-प्रकरणम्

८८६१ अरिमेदाद्यं तै० शीर्णदन्त, दन्तविद्रधि, शौषिर, शीताद, दन्तहर्ष, कृमिदन्त, चालन, दालन, अधिमांसादि

९०८१ इरिमेदाद्यं तै० दन्त पीड़ा, दारुण दन्त चालन, हनुमोक्ष, शीताद आदि

लेप-प्रकरणम्

९१८३ ओष्ठस्फुटन-नाशक लेपः होठ फटना

मिश्र-प्रकरणम्

९५९८ खदिरादियोगः दुर्बल दांतों को दृढ़ करता है

(३८) मूत्ररोगाधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

८७८३ अतिबलादिक्वा० मूत्रकृच्छ्र (सरल योग)

९०१७ आरग्वधादिक्वा० मूत्रकृच्छ्र

९०६९ इक्षुरसादियो० मूत्रकृच्छ्रको अवश्य नष्ट करता है। स०यो०

९१४२ एलादिकषा० मूत्रावरोध

९२२९ कुष्माण्डरसयो० त्रिदोषज मूत्रकृ०

चूर्ण-प्रकरणम्

९१०९ उर्वारुबीजक० मूत्रकृच्छ्र, (स० यो०)

९१११ उर्वारुबीजादि यो० पित्तज मूत्रकृच्छ्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९११२ उशीरादि चू० मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, पाददाह, रक्तप्रदर

९१४५ एलाचूर्णयोगः मूत्रकृच्छ्र

९२४५ कर्कटीबीजयो० पीड़ायुक्त प्रबल मूत्रा०

घृत–प्रकरणम्

९३३६ केतकी घृ० मूत्रकृ०

(३९) मूर्च्छाधिकारः

चूर्ण–प्रकरणम्

९२९५ कोलमज्जादि चू० मूर्च्छा

गुटिका–प्रकरणम्

९३०५ कृष्णाद्या गु० भ्रम

अञ्जन–प्रकरणम्

९४३८ कपित्थादि वर्तिः सर्पदंश, जलमग्नमूर्च्छा

(४०) यकृत्प्लीहाधिकारः

गुटिका–प्रकरणम्

९१५२ एलीयकादि गु० यकृत, प्लीहा

तैल–प्रकरणम्

९३३९ कदल्यादि क्षारतै० कफवातज प्लीहा

(४१) रक्तपित्ताधिकारः

कषाय–प्रकरणम्

८७९८ अश्वत्थादियो० रक्तप्रवाह (स० यो०)

९१०४ उशीरादियो० प्रबल रक्तस्राव

चूर्ण–प्रकरणम्

८८१२ अभयायोगः रक्तपित्त, शूल, अतिसार, कफादि अनेक रोग, (सरल योग)

९२६६ कुङ्कुमयोगः ऊर्ध्वगतरक्तपित्त

९२७१ कुटजादि यो० ऊर्ध्वगतरक्तपित्त

अवलेह–प्रकरणम्

९११५ उदुम्बरादि यो० रक्तपित्त, (सरल रोग)

९१५४ एलाद्योवलेहः रक्तपित्त, दाह, ज्वर, तृषा, मोह, रक्त वमन

घृत–प्रकरणम्

८८४४ अनन्ताद्यं घृ० रक्तपित्त, रक्तप्रदर, दाह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९०७८ इक्ष्वादि घृ० उभयगत रक्तपित्तको शीघ्र नष्ट करता है तृषा, दाह, पित्तरोग

लेप-प्रकरणम्

९०४६ आमलकादि ले० नासाप्रवृत्त रक्त स० यो०

(४२) रसायनवाजीकरणाधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

८८२२ अश्वगन्धायोगः कृष मनुष्यको पुष्ट करता है (सरल योग)

८८२३ ,, ,, १ मासमें वृद्ध पुरुषको युवाके समान बना देता है।

८८२५ अश्वत्थ फलादि योगः वृद्धोपि तरुणायते स.यो.

९०२० आकारकरभादि स्तम्भक, आनन्दवर्द्धक

९०२१ आभादिचू० कृशता, शोष,कम्प नाशक; बुद्धि मेधावर्द्धक

९०२२ आमलक यो० समस्त शक्तियों की वृद्धि करता है

९०२७ आमलक्यादि चूर्ण वलिपलित नाशक, सम्पूर्ण शक्तियोंको बढ़ाने वाला

९०७१ इक्षुरकाद्य चू० अत्यन्तकाम वर्द्धक

९१०५ उच्चटादि चू० वीर्य पौष्टिक (सरल योग)

९२७९ कुष्ठयोगः १ वर्षमें अत्यन्त बल शाली,दीर्घायु और वाग्मी बना देता है। शरीरसे कमलकी सीं गन्ध आने लगती है।

९२८५ कुष्ठादि चू० सौन्दर्यवर्द्धक; शरीरसे सुगन्ध आने लगती है।

गुटिका-प्रकरणम्

९०७६ इन्द्रवारुणिका-मूलाद्या वटी मुखमें धारण करनेसे वीर्य-स्तम्भन होता है।

अवलेह-प्रकरणम्

८८४१ अश्वगन्धाद्यवलेहः धातुक्षय, ध्वज भंग, वातरोग, वाजीकरण

९०३६ आमलक्यादि पाकः अत्यन्त कामवर्द्धक

९०७७ इन्द्रोक्तरसायनम् रसायन

९११४ उच्चटापाकः अत्यन्त वाजीकरण

९३१० कपिकच्छुपाकः नपुंसकता,क्षीणता नाशक (वाजीकरण)

९६७५ खण्डाभ्रकम् अनेक रोगनाशक,वाजी०

घृत-प्रकरणम्

८८५३ अष्टाङ्ग घृतम् अत्यन्त स्मृति वर्द्धक, वाणी शोधक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तैल-प्रकरणम्

८८५६ अजयपाल तै० नपुंस्कता

८८६२ अर्कतैलम् हस्तदोष और गुदव्यभिचार जनित नपुंस्कता

८८६५ अश्वगन्धा तै० कृश शरीरको पुष्ट करताहै

८८६६ अश्वगन्धादितै० शिश्न, स्तन और कर्णपाली वर्द्धक

९०४३ आदित्यपाक गुडूची तैलम् केशरोपण

९३५४ काकमाच्यादि तैलम् नस्य लेनेसे बाल काले हो जाते हैं।

लेप-प्रकरणम्

८८८० अरिष्टकादिले० अयोनि व्यभिचार जनित नपुंस्कता

८८८५ अर्कक्षीरादिले० १ मासमें हस्तव्यभिचार जनित नपुंस्कता और शिथिलताको नष्ट करताहै

९११९ उत्पलाद्युद्वर्तनम् बलिपलित

९१६८ एलादि लेपः नपुंस्कताको अवश्य नष्ट करता है।

९३९३ करवीरजटा लेपः वीर्यस्तम्भक

९३९४ करवीरत्वगा० ले० नपुंस्कता

९३९८ करवीरादि ले० कामोद्दीपक

९४०२ कर्पूरादिले० अत्यन्त वीर्यस्तम्भक

नस्य-प्रकरणम्

८९१५ अङ्कोल्बीजादि-तैलनस्यम् बलिपलित नाशक, वृद्धों को यौवन दाता

रस-प्रकरणम्

८९३७ अभिनवकामदेवरसः दुर्बल शरीरको अत्यन्त पुष्ट करता है।

८९८० अमृतार्णव रसः अत्यन्त वृष्य, अग्निवर्द्धक

८९८१ ,, ,, कृष व्यक्तिको पुष्ट करताहै

८९८२ अमृतेश रसः ६ मासमें जराको नष्ट करता है। आयुवर्द्धक

८९९१ अश्वगन्धापाकः अत्यन्त कामोत्तेजक, सर्वदोष नाशक

९०५६ आनन्दसून रसः समस्त रोग नाशक, वैद्यको यश दिलाने वाला

९४६८ कज्जलीरसा० ६ मासमें जराको नष्ट करता है।

९४७९ कस्तूरी रसः वृष्य, वाजीकरण क्षुधावर्द्धक

९४८४ कामदीपकः वाजीकरण

९४८८ कामदेवो र० अत्यन्त वाजीकरण

९४८९ ,, ,, स्तम्भक, पौष्टिक, वाजी०

९४९१ कामनायकर० अत्यन्त कामवर्द्धक

९४९३ कामवाणो र० कामशक्ति वर्द्धक, नपुंस्कता नाशक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९४९४ कामेश्वर चू० बल, वीर्य, आनन्द वर्द्धक, अग्निदीपक

९४९५ ,, रसः अत्यन्त कामवर्द्धक

९४९६ ,, ,, वीर्य वर्द्धक, स्तम्भक, स्त्रीद्रावक, क्षीण शरीरको पुष्ट करने वाला

९५२५ कुसुमायुध रसः ३ मासमें बलि पलित नष्ट होकर अनेक स्त्रियोंके साथ समागम करनेकी शक्ति आ जाती है।

मिश्र-प्रकरणम्

९१३६ उत्कटादि मर्दनम् अयोनि व्यभिचार जनित दोष नष्ट होते और शिश्न दृढ़ होता है

(४३) वात व्याध्यधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

९०१८ आर्द्रक स्व० अण्डकोषों की वायु (सरल योग)

९२०२ करञ्जादि का० आमवात

चूर्ण-प्रकरणम्

९२५२ कल्याणलवणम् वातव्याधि, अर्श, गुल्म, अग्निमांद्य

गुटिका-प्रकरणम्

८८२८ अग्निमुख व० वात व्याधि

गुग्गुलु-प्रकरणम्

९१५३ एरण्डादि गु० वातव्याधि, आमवात, शोथ, स्रोतस्थित कफ

घृत-प्रकरणम्

८८५२ अश्वगन्धा घृ० वातव्याधि नाशक, मांस वीर्य वर्द्धक

तैल प्रकरणम्

८८६७ अश्वगन्धाद्य तै० खञ्जता, मूकता, पक्षाघात, अस्थिच्युत

९१५६ एरण्डतैलयो० कटिवात

९३६९ कुसुम्भाद्य तै० अर्दित, गृध्रसी, पक्षाघात, दाह, योनि और गुद पीड़ा, सुप्तिवात शिरशूलमें अत्युत्तम

लेप-प्रकरणम्

९३९२ करञ्जादि ले० ऊरुस्तम्भ

९४२९ कोलादिले० वातव्याधि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नस्य-प्रकरणम्

९४५७ काकोदुम्बरि यो० अपबाहुक

रस-प्रकरणम्

८९९२ अश्वगन्धापाकः पृष्ठ तथा अस्थि गत वायु, अस्थिभंग, शोथ, दारुण सन्धिवात

(४४) विद्रध्यधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

९२४२ करञ्जबीज यो० अन्तर्विद्रधि

९२९१ कृष्णाजाजीयो० कोष्ठविद्रधि

तैल-प्रकरणम्

९३४३ करञ्जतै० वाह्य तथा अन्तर्विद्रधि

रस-प्रकरणम्

९४६५ कज्जली योगः अन्तर्बाह्य विद्रधि

९४७१ कनकसुन्दरो र० विद्रधि, उदरवृद्धि

९५०६ कासीसादि चू० अन्तर्विद्रधि शोथ

(४५) विरेचनाधिकारः

रस-प्रकरणम्

९०९३ इच्छाभेदी रसः विरेचक

९०९४ " " "

९०९५ " " "

मिश्र-प्रकरणम्

९५४३ कर्णिकाररसयोगः जितनी काली मिर्चे अनुपान रूपसे खाई जावें उतने ही दस्त आते हैं।

(४६) विषाधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

८७७९ अङ्कोटमूलयो० पागल कुत्तेका विष (सरल योग)

८७८० " " गरविष

९२३१ कृष्णादि का० कृत्रिम विष

चूर्ण-प्रकरणम्

८८१७ अर्कमूलादि यो० धतूरविष, कनेरका विष, गोनास सर्पका विष

९२३३ कटभ्यादि यो० कीट विष, मकड़ीका विष

९२५७ काकोदुम्बरयो० कुत्तेका विष (स० यो०)

९२८६ कुष्ठादियोगः मूषक विष

९२८९ कुसुम्भ योगः " "

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घृत-प्रकरणम्

८८४७ अमृतं घृतम् अत्यन्त विष नाशक

लेप-प्रकरणम्

९१६५ एरण्डादि ले० नखविष, दन्त विष

९३९६ करवीरादि यो० व्यन्तर (सर्प विशेष) का विष

९४०५ काकादनीमूल योगः मण्डलीकसर्पका विष

९४१० कार्पासपत्र ले० वृश्चिक विष

धूप-प्रकरणम्

८९०१ अङ्कोलपत्र धू० मत्स्य विष

९४३२ कटुतैलादि धू० ,, दंश

नस्य-प्रकरणम्

९४६० कुलकमू० न० भयङ्कर सर्पविष

रस-प्रकरणम्

८९५० अलर्कविषहर गु० पागलकुत्तेका विष

(४७) विसर्पाधिकारः

लेप-प्रकरणम्

९०५० आरग्वधादि लेपः विसर्प

९३८७ कपीतनादित्वग्लेपः शोथ, विसर्प, रक्तपित्त

९४०३ काकजङ्घादि लेपः कफज विसर्प

९४२१ कुष्ठादिलेपः वातज विसर्प

(४८) वृद्धयधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

९०७३ इन्द्रवारुणीमूल योगः ३ दिन में कुरण्ड रोग नष्ट होता है।

लेप-प्रकरणम्

९०९१ इन्द्रायुधादिले० कुरण्ड

९३८९ करञ्जमू० ले० कुरण्ड, गलगण्ड

रस-प्रकरणम्

९१७३ एकादशायसरसः अण्डकोषकी वायु, अन्त्रवृद्धि

९१७४ एरण्डपाकः व्रध्न, वायु, आम, (बल्य, पौष्टिक)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४९) व्रणाधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

८७८५ अपामार्गःसयो० सद्योव्रण (सरल योग०)
९२०५ करञ्जादि स्व० व्रणकृमि

चूर्ण-प्रकरणम्

९२४७ कर्पूरादि चू० शस्त्राघातके व्रणकी पीड़ा को शान्त करता है और पकने नहीं देता (सरल योग)

घृत-प्रकरणम्

९३२१ करञ्जाद्यं घृ० दुष्ट व्रण, नाड़ी व्रण, सद्य छिन्न व्रण

९३२२ कर्पूरसर्पिः शस्त्राघातकी पीड़ा को नष्ट करता और पकनेसे रोकता है

तैल-प्रकरणम्

८८५९ अपामार्ग मू० तै० शस्त्राघातकी पीड़ा
९१६० एरण्डतैलयोगः दुष्ट व्रण
९३४१ कम्पिल्लकतै० व्रण, ग्रन्थि
९३४२ कम्पिल्लकाद्य व्रण
९३४८ कर्कोटकाद्यं दुष्ट व्रण
९३५९ कालानुसार्यादि व्रणरोपण
९३६३ कुम्भीकाद्यं तै० शल्य जनित नाड़ीव्रण
९३७३ कोशातकी तै० अनेक विध दुष्ट व्रणों को शीघ्र नष्ट करता है वह। लिंग व्रण कि जिसमें मांस सड़ गया हो नष्ट होता है

लेप-प्रकरणम्

८८७५ अपामार्गपत्रलेपः रक्त रोधक
८८७८ अभयादि लेपः गम्भीरव्रण शोधक सरल योग
८८९५ अश्वगन्धादि ले० व्रणनाशक उत्तम
८८९९ अश्वत्थादि ले० रोपण
९०८६ इन्द्रवारु० मू० ले० नष्ट शल्यको निकाल देता है
९३८० कट्फलादि लेपः दुष्ट व्रण
९३८८ कपोतवङ्कादि लोम सञ्जनन
९३९० करञ्जयोगः कृमिनाशक
९४०४ काकजङ्घाले० शस्त्राघातका व्रण बिना व्यथा और बिना पके नष्ट हो जाता है

मिश्र-प्रकरणम्

९५३१ कङ्गुणीमूल योगः गाढ़े पीपवाला नाड़ीव्रण
९५६७ कोद्रवान्नोपयोगः नाड़ी व्रण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५०) शिरोरोगाधिकारः

तैल-प्रकरणम्

८८५५ अङ्कोलबीजतै० बालोंका पीलापन, पलित, इन्द्रलुप्त, (केश वर्द्धक)

८८६० अपामार्गादि तै० कृमि जन्यशिरोरोग

८८६९ असनाद्यं तै० पलित

९३५० कर्पूरतैलम् शिरपीड़ा, शिरकी खाज, केशपतन

लेप-प्रकरणम्

९१६३ एकाष्ठीलादि ले० शङ्खक रोग

९४१९ कुष्ठादि लेपः शिर पीड़ा

९४२८ कोद्रवमसीले० दारुण नामक शिरोरोग

नस्य-प्रकरणम्

८९१८ अपामार्गादिन० सूर्यावर्त, अर्धावभेद

८९१९ अर्धनाडीनाटकेश्वरः कफज शिरपीड़ा

९०१२ इङ्गुदीफलन० शिरके श्वेत तथा लाल कृमि

९४५५ करञ्जादिन० शिरोविरेचक

९४५८ कार्पासमज्जादि समस्त शिरशूल

९४५९ कुङ्कुमादिन० सूर्यावर्त, अर्धावभेद, वातपित्तज शिरोरोग

९४६२ कृतमालादिन० भयङ्कर सूर्यावर्तको भी अवश्य नष्ट करता है।

मिश्र-प्रकरणम्

९५५८ कुङ्कुमादियो० शिरशूल, सूर्यावर्त, अर्धावभेद, पित्तज शिरोरोग

(५१) शीतपित्ताधिकारः

लेप-प्रकरणम्

९४२२ कुष्ठादि ले० शीत पित्तकी परमौषध

मिश्र-प्रकरणम्

९५५४ काश्मरिफलयो० शीतपित्त शीघ्र नष्ट होता है।

(५२) शूलाधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

९१३९ एरण्डसप्तकम् नितम्ब, उरु, मेढ़, हृदय और स्तनका शूल

९१४१ एरण्डादि योगः हर प्रकारका शूल

९१९४ कण्टकार्यादिक्वाथः वातपित्तज शूल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चूर्ण–प्रकरणम्

९२४४ करञ्जादिचू० वातजशूल

९२७३ कुबेराक्षयोगः समस्त शूल (सरल योग)

घृत–प्रकरणम्

९१५५ एरण्डाद्यं घृ० हर स्थानका और हर दोषसे उत्पन्न भयङ्कर शू०

रस–प्रकरणम्

८९३० अग्निमुखर० शूल

८९३१ अग्निमुखरस शूल

८९८४ अयश्चूर्णादियो० समस्त शूल

९४७७ कलायचूर्णादि गुटिका दारुण परिणाम शूल

९५२९ कृष्णादिचूर्णम् भयंकर परिणाम शूलको तुरन्त नष्ट करता है।

मिश्र–प्रकरणम्

९५६३ कुशादिक्षीरयोगः शूल, रक्तपित्त

(५३) शोथाधिकारः

चूर्ण–प्रकरणम्

८८०८ अजाज्यादियोगः प्रवृद्ध पुराना त्रिदोषज शूल

गुटिका–प्रकरणम्

८८३१ अजमोदाद्यो मोदकः शोथ, आमवात

९०३२ आजकरीषयोगः शोथ, प्रवृद्ध दकोदर

तैल–प्रकरणम्

९०४५ आरग्वधादितै० कफज शोथ

लेप–प्रकरणम्

९१६६ एरण्डादिले० वातज शोथ

मिश्र–प्रकरणम्

९००५ अरणीक्षारयो० ३ दिनमें उदरशोथको नष्ट करता है।

९५५२ कार्पासभस्मयो० समस्त शोथ

(५४) श्लीपदाधिकारः

चूर्ण–प्रकरणम्

९२५६ काकजम्ब्वादिक्षारः श्लीपद, ग्रहणी, गलगण्ड, अरुचि

लेप–प्रकरणम्

८८८६ अर्कादिलेपः बद्धमूलश्लीपद

रस–प्रकरणम्

९४९० कामदेवो रसः त्रिदोषज श्लीपद

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५५) स्त्रीरोगाधिकारः

कषाय-प्रकरणम्

८७८६ अपामार्गादिका० प्रसूताकी कमरका शोथ (सरल योग)

८७८९ अमृतादिका० सूतिका रोग

९१०१ उत्पलपत्रस्व-रसयोगः स्त्रियोंका अस्थिस्राव, सोमरोग (सरलयोग)

९१४० एरण्डादि का० गर्भिणीका ज्वर

९१८७ कटङ्कटेर्यादि का० अनेकविध प्रदर

९१९७ कपिकच्छूमू० यो० योनि संकोचक स०यो०

९२१० कसेर्वादिका० गर्भशूल, गर्भस्राव

चूर्ण-प्रकरणम्

८८०५ अजमोदादि चू० गर्भिणीका अग्निमांद्य

९११६ उत्पलादियो० योनिशूल, कटिशूल, कुक्षिशूल, रक्तमूत्रता

९१४६ एलादिचू० वातज तथा पित्तज प्रदर

९२७४ कुरण्टमूलयो० गर्भसंस्थापक

९२७७ कुशमूलयो० सर्वदोषज रक्त प्रदर

९२७८ ,, ,, प्रदरको ३ दिनमें नष्ट करता है। (स० यो०)

९२९४ कृष्णादि योगः मूढगर्भविकार, वेदना

घृत-प्रकरणम्

८८५१ अश्वगन्धा घृ० वन्ध्यत्व

९०७८ इक्ष्वाकुघृ० स्त्रियोंका अस्थिस्राव, दाह, तृषा, रक्तपित्त

९३२७ काश्मर्यादि घृ० रक्तयोनि, अरजस्का योनि, अपुत्रादि योनि

९३२८ ,, ,, रक्तप्रदर

९३२९ काश्मर्यादि घृ० रक्तप्रदर

तैल-प्रकरणम्

८८६३ अलम्बुषाद्यं तै० स्तनोंको दृढ़ और उन्नत करता है ।

८८६४ अलाबु तै० योनिदोष नाशक, गर्भ-संस्थापक

९३४६ करवीराद्यं तै० लोमनाशक

९३६१ कासीसाद्यं तै० स्तन, भग, कर्ण और लिंगको बढ़ाता है

९३७४ कोशातकीतै० समूल लोमनाशक

लेप-प्रकरणम्

९०८९ इन्द्रवारुण्यादि ले० स्तन पीड़ा

९०९० ,, ,, योनिशूलको शीघ्र नष्ट करता है

९३८३ कदल्यादि ले० लोमनाशक

९३८४ ,, ,, ,,

९४०९ कारवेल्लीजटायोगः योनिनिर्गम्

९४१४ कुमारीमूलयो० शिशु नष्ट होने पर स्तनोंमें दूध भरकर पीड़ा होना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धूप-प्रकरणम्

१४३१ कटुतुम्ब्यादि धू० अपरा पातक
१४३३ कस्तूरिकादि धू० योनिकी दुर्गन्ध नष्ट होकर सुगन्ध आने लगती है

रस-प्रकरणम्

१४८६ कामदुधा रसः प्रदरमें विशेष उपयोगी
१४८७ „ „ सोमरोग, जीर्ण ज्वर, पित्तरोग

मिश्र-प्रकरणम्

८९९८ अजमूत्रादि यो० वन्ध्यत्वनाशक स०यो०
९००१ अपामार्गपुनर्नवायोगौ कष्टसाध्य योनि शूल (सरल योग)
९००४ अपामार्गादि यो० सुखप्रसवकारक
९००९ अश्वगन्धाक्षीरम् वन्ध्यत्व
९०९७ इक्ष्वाकु योगः ऋतु प्रवर्तक
९१३७ उत्तरिणीमूलयोगः सुख प्रसवकारक
९५३५ कदलीफलयोगः रक्तप्रदरनाशक स०यो०
९५४६ कशेर्वादिक्षीरम् गर्भशूल, गर्भपतन
९५५० काञ्जिकादियोगः सुख प्रसवकारक
९५५३ कार्पासिकायो० योनिशूल
९५५६ किण्वाद्यावर्तिः वृद्धा स्त्रीका भी रुका हुवा मासिक धर्म खुल जाता है
९५६२ कुशादिक्षीरम् गर्भिणीका शूल

(५६) स्वरभेदाधिकारः

चूर्ण-प्रकरणम्

९०२८ आमलक्यादिचू० स्वरभंगनाशक स०यो०

अवलेह-प्रकरणम्

९३१५ कुलिञ्जनाद्यवलेहः घोर स्वरभंग, प्रतिश्याय, कास, हिक्का

घृत-प्रकरणम्

९३३० कासमर्दादिघृ० वातजस्वरभंग
९३३१ „ „ पैत्तिक „

रस-प्रकरणम्

९५१० किन्नरकण्ठर० समस्त स्वर भंग, कास, कफ और वातरोग नाशक, स्वरशोधक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

अष्टांगहृदयम् (वाग्भट कृत, हिन्दी अनु० सहित)—लालचन्द्र वैद्य (सजिल्द) ५५
(अजिल्द) ४५

क्लीनीकल मेडिसिन (दो भागों में) —अत्रिदेव शीघ्र

कायचिकित्सा—धर्मदत्त वैद्य १६

चरकसंहिता—श्री जयदेव विद्यालंकार (हिन्दी अनुवाद सहित) भाग १ (सजिल्द) ४५
(अजिल्द) ३०
भाग २ (अजिल्द) ३०; (सजिल्द) ४५

देहधात्वग्निविज्ञानम्—हरिदत्त शास्त्री १५

भावप्रकाशनिघंटु—विश्वनाथ द्विवेदी कृत हिन्दी टीका सहित २०

भैषज्यरत्नावली—श्री जयदेव विद्यालंकार कृत हिन्दी टीका सहित, आठवां संस्करण
(अजिल्द) ९०; (सजिल्द) १३५

माधवनिदान (मधुकोश संस्कृत टीका, हिन्दी अनुवाद सहित)—नरेन्द्रदेव शास्त्री
(अजिल्द) ३५; (सजिल्द) ५५

रसतरंगिणी (सदानन्द कृत हिन्दी टीका) —काशीनाथ शास्त्री (सजिल्द) ६०
(अजिल्द) ३५

रसरत्नसमुच्चय (धर्मानन्द शर्मा कृत हिन्दी व्याख्या)—अत्रिदेव विद्यालंकार
(अजिल्द) ३०; (सजिल्द) ४५

रसेन्द्रसारसंग्रह—नरेन्द्रनाथ (सजिल्द) २५
(अजिल्द) २०

व्याधिविज्ञान—आशानन्द पञ्चरत्न, प्रथम भाग १५, द्वितीय भाग (सजिल्द) ४५
(अजिल्द) ३०

सुश्रुतसंहिता (सम्पूर्ण)—अत्रिदेव विद्यालंकार कृत हिन्दी टीका सहित (सजिल्द) १२०
(अजिल्द) ९०

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली वाराणसी पटना मद्रास

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आधुनिक चिकित्साशास्त्र

धर्मदत्त वैद्य

इस ग्रन्थ की यह विशेषता है कि इसमें आधुनिक काय-चिकित्सा के वर्णन के साथ-साथ आयुर्वेदिक काय-चिकित्सा का भी उल्लेख है। ये दोनों एक-दूसरे के सहायक सिद्ध हुए हैं। जहां आधुनिक काय-चिकित्सा How के प्रश्न का समाधान करती है वहां आयुर्वेदिक काय-चिकित्सा Why के प्रश्न का समाधान करती है, अर्थात् रोग का मूल कारण बताती है, जिसके फलस्वरूप चिकित्सा सुगम और ठीक होती है। यह स्पष्ट बताती है कि शरीर के तीन मूल तत्त्व देहाग्नि, देहप्राण, तथा देहवृद्धि हैं। इनके किसी अंग में मन्दता आ जाने से रोगोत्पत्ति होती है।

आयुर्वेद का एक विशेष दृष्टिकोण है जिससे त्रैदोषिक या त्रैधातुक चिकित्सा-शास्त्र का अध्ययन किया जाता है और रोगों में औषध, आहार, विहार आदि उपचारों का विधान किया जाता है। आयुर्वेद का मूल त्रैदोषिक दृष्टिकोण कभी नहीं बदला चाहे औषधियाँ भले ही बदलती रहें। अतः आयुर्वेद उपचारों के प्रयोग में स्वतन्त्रता देता है। इस प्रकार आयुर्वेद-चिकित्साशास्त्र का छात्र त्रैधातुक या त्रैदोषिक दृष्टिकोण को कभी दृष्टि से ओझल नहीं होने देता। इसलिए इन दोनों चिकित्साओं के अध्ययन से अवश्यमेव लाभ ही होगा क्योंकि दोनों का लक्ष्य रोगी को रोगमुक्त करना ही है। (सजिल्द) रु० १४०

(अजिल्द) रु० ९५

मानव-शरीर-रचना (दो भागों में)

मुकुन्दस्वरूप वर्मा

सम्पूर्ण चिकित्साशास्त्र आयुर्वेद के जिन तीन मूल आधारों पर आश्रित है उन्हें शरीररचनाविज्ञान, शरीरक्रियाविज्ञान और विकृतिविज्ञान कहते हैं उनमें शरीररचनाविज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके बिना अन्य आयुर्वेद-शाखाओं का ज्ञान होना सम्भव ही नहीं।

इस विषय में पाश्चात्य वैज्ञानिकों के ही अनुसंधान उपयोगिता की दृष्टि से अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध हुए हैं। पाश्चात्य भाषाओं से अपरिचित चिकित्सक इन अनुसंधानों से लाभ नहीं उठा सकते। इस अभाव की पूर्ति के लिए इस ग्रन्थ की रचना की गई है। दुरूहता को हटाने के लिए अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों के अनुवाद में स्वीकृत वैज्ञानिक-तकनीकी-शब्दावली का प्रयोग किया गया है और सैकड़ों चित्रों से समझाया गया है।

प्रथम भाग में ऊतकविज्ञान (Histology), भ्रूणविज्ञान (Embryology) और अस्थिविज्ञान (Osteology) विषयों का वर्णन है और द्वितीय भाग में सन्धिविज्ञान (Syndesmology), मांसपेशीविज्ञान (Myology) और वाहिका-विज्ञान (Angiology) विषयों का विवेचन हुआ है।

यह कृति शरीर-रचना के जिज्ञासुओं के लिए अतीव उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रथम भाग: रु० ५०

द्वितीय भाग: (अजिल्द) रु० ७५; (सजिल्द) रु० १००

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली वाराणसी पटना मद्रास

For Private And Personal Use Only